भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२७७/७३ सृष्टिसंवत् १, ९६, ०८, ५३, १०२
पंजीकरणसंख्या टैक/85-2/2000 ☎ ०१२६२-७७७२२

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र रोहतक

प्रधानसम्पादक : यशपाल आचार्य, सभामन्त्री सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री

वर्ष २९ अंक ७ ७ जनवरी, २००२ वार्षिक शुल्क ८०) आजीवन शुल्क ८००) विदेश में २० डॉलर एक प्रति १.७०

स्वामी श्रद्धानन्द ने अपना बलिदान देकर आर्यसमाज के कार्य को आगे बढ़ाया- आचार्य यशपाल

पलवल २३ दिसम्बर २००१। भारत माता की परतन्त्रता की बेडियो को तोडने वाले वीरसेनानियो के गुरु [illegible] भारतीय समाज मे व्याप्त सामाजिक कुरीतियो, छुआछात, विधवा विवाह, शिक्षा का अभाव तथा धर्म के नाम पर भ्रान्त धारणाओ का निवारण करने के लिए स्वामी दयानन्द द्वारा स्थापित आर्यसमाज आन्दोलन के स्तम्भ स्वामी श्रद्धानन्द ने अपना सर्वस्व समाज और राष्ट्र के लिए न्यौछावर कर दिया। ऐसे वीर सन्यासी के ७५वे बलिदान दिवस पर सभी आर्यो को सगठित होकर आर्यसमाज के आन्दोलन को आगे बढाना होगा और हमारे अन्दर जो थोडा-बहुत आलस्य प्रमाद और निराशा आ गई है उसे दूर करके इस महान् सगठन को सुदृढ करने के लिए आपसी छोटे-मोटे विवादो को दूर करना होगा। ये विचार पलवल के आदर्श नगर मे स्थापित आर्यसमाज के तत्त्वावधान मे आयोजित स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान समारोह मे आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के मत्री आचार्य यशपाल ने व्यक्त किए। सम्मेलन के प्रारम्भ मे विशाल यज्ञ के उपरान्त दिल्ली से पधारे वेदप्रचार अधिष्ठाता स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती ने क्षेत्र के प्रसिद्ध आर्यसमाजी प० तिलकराज शर्मा को गृहस्थ आश्रम त्यागकर वानप्रस्थ आश्रम मे दीक्षित किया। दीक्षा के बाद प० तिलकराज जी का नाम तिलक मुनि व उनकी धर्मपत्नी इन्द्रादेवी का नाम इन्द्रावती रखा गया।

समारोह के मुख्य अतिथि श्री धनसिह डागर जिला सचिव हविपा तथा श्रीमती राजबाला डागर सुपुत्री ससद सदस्य रामचन्द्र बैंदा ने कार्यक्रम मे पधारकर

स्वामी धर्मानन्द जी, श्री धनसिह जी डागर, आचार्य यशपाल जी, प० तिलकराज जी तथा स्वामी स्वरूपानन्द जी मच पर बैठे हैं।

हर प्रकार के सहयोग का भरोसा दिलाया। वैदिक विद्वान् प्रो० सुशील कुमार ने अपने प्रेरणादायक ओजस्वी व्याख्यान मे स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन पर प्रकाश डालते हुए आर्यजनता का आह्वान किया कि आज पहले से अधिक चुनौतिया हमारे सामने खडी है जिनका हमने डटकर मुकाबला करना है। फरीदाबाद से पधारी जिला सचिव श्रीमती दर्शना मलिक ने जिला फरीदाबाद की सभी समाजो से पधारे सभी आर्यो को अपने निजी जीवन मे कथनी करनी के अन्तर को मिटाकर एकरूपता लानी होगी।

अपोलो सीनियर सैकेण्डरी स्कूल मे आयोजित बलिदान दिवस समारोह से पहले आर्यसमाज शकर फलक्ल के प्रधान मनजीत मगला एडवोकेट सरक्षक जगवीर गिरधर नारायणसिह आर्य ने सभी विद्वानो उपदेशको और पलवल के प्रसिद्ध समाजसेवी श्री रमेशचन्द सिगला और होडल से पधारे श्री हेतराम गर्ग का नागरिक अभिनन्दन किया।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के उपमन्त्री हरिश्चन्द्र शास्त्री के सयोजन मे देशराज शास्त्री, श्रीमती राजबाला आर्या, ज्योति आर्या चुन्नीलाल आर्य भजनलाल आर्य, ओमप्रकाश शास्त्री, कर्मचन्द शास्त्री, बलवीर मलिक, होतीलाल आर्य, धनपतराय आर्य जयप्रकाश आर्य, आजाद रहेजा हरीश आर्य, रामप्रकाश आर्य जितेन्द्र आर्य प० अमरचन्द, वीरसिह आर्य हरिवश शास्त्री, ज्ञानचन्द आर्य परमानन्द आर्य, रामजीत योगाचार्य प्रो० सतीश कालडा, वीरेन्द्र शास्त्री मा० हीरालाल आर्य, नगरपरिषद् की चेयरमैन श्रीमती खूबन देवी, जयदेव रावत सरदार सिह कुण्डू, रिछपालसिह [illegible] आर्य शिवराम साधक सतवीर पुथला यशपाल मगला श्रीमती लाज गुप्ता [illegible]देवी, लक्ष्मणसिह आर्य डालचन्द प्रभाकर तथा कुलदीपसिह आदि ने अपने विचार रखे। गाव मीमा व गाव गढी के विद्यार्थियो ने अपने कठिन आसनो से सभी को आश्चर्यचकित कर दिया। कार्यक्रम के बाद [illegible] लगर का आयोजन किया गया।

हिन्दू संगठन कैसे होगा ?

हम तो कहते है "गर्व से कहो हम आर्य है" क्योकि इस शब्द का अर्थ है श्रेष्ठ जन। श्रीराम और श्रीकृष्ण भी आर्यपुत्र थे। हमारे देश का प्रथम नाम भी आर्यावर्त्त है। इसके विपरीत आर.एस.एस वाले कहते है कि "गर्व से कहो हम हिन्दू हैं" चलो हम इस विवाद को समाप्त करके हिन्दू शब्द मे सन्तोष कर लेते हैं परन्तु मै पूछता हू क्या कभी हिन्दू जाति सगठित हो सकती है ? हिन्दू एक सूत्र मे बधकर एक ध्वज के नीचे आ सकते हैं। एक स्वर मे मिलकर बोल सकते है। सब की मान्यताए एक हो सकती है। इनको जोडने मिलाने का क्या उपाय है ? यह [illegible] है।

[illegible] हिन्दू [illegible] हुई है। सबके रास्ते अलग-अलग है। इनकी भिन्न-भिन्न [illegible] देखकर इनका एकत्र करना कठिन हो रहा है। [illegible] पूजा पद्धति और अभिवादन करने के शब्द पृथक्-पृथक् हैं। कोई श्रीराम या श्रीकृष्ण को अपना इष्ट देव मानता है कोई हनुमान [illegible] या शिवजी का भक्त है। कोई दुर्गा माता या काली का पुजारी है। [illegible]

(शेष पृष्ठ दो पर)

वैदिक-स्वाध्याय

विविध युद्धों में मुख्य रक्षक और सहायक परमेश्वर

यमग्ने पृत्सु मर्त्यं, अवा वाजेषु यं जुनाः।
स यन्ता शश्वतीरिषः (ऋ० १।२७।७)

शब्दार्थ–(अग्ने) हे अग्ने ! तू **(य मर्त्यं)** जिस मनुष्य की **(पृत्सु अवा)** युद्धो मे रक्षा करता है और **(यं वाजेषु जुना)** और जिसे युद्धो मे सहायता करता है **(स)** वह मनुष्य **(शश्वती:)** नित्य सनातन **(इष:)** अन्नो को **(यन्ता)** वश करता है–प्राप्त करता है।

विनय–इस ससार मे मनुष्य को प्रत्येक अभीष्ट फल पाने के लिए लडाइया लडनी पडती हैं। ससार मे नाना प्रकार के सघर्ष चल रहे हैं। हे प्रभो ! जिस मनुष्य की तुम इन सग्रामो मे रक्षा करते हो अर्थात् जिस तुम्हारे अनन्य भक्त को सदा तुम्हारी सहायता मिलती रहती है, उस मनुष्य को नित्य अक्षय अन्न प्राप्त होते हैं। उसे रोटी के सवाल के लिये कोई लडाई नहीं लडनी पडती। वह इससे निश्चिन्त हो जाता है क्योंकि उसे एक नित्य अन्न मिल जाता है जिससे कि वह सदा ही तृप्त बना रहता है। वह जानता है कि जिस तूने उसे शरीर दिया है और जो तू उसके इस शरीर की नाना तरह से रक्षा कर रहा है, वही तू उसके शरीर को अन्न भी देता रहेगा। सब दुनिया के पशु-पक्षियों की चिन्ता करनेवाला तू उसके शरीर की भी खुद चिन्ता करेगा, नहीं तो शरीर को वापिस ले लेगा। वह जानता है कि अपने भक्तो के प्रति तेरी यह प्रतिज्ञा है **"तेषा नित्याभियुक्ताना योगक्षेम भजाम्यहम्"** भक्तो के योगक्षेम करने की चिन्ता तूने अपने ऊपर ले रखी है। बस, यही ज्ञान है जिसके कि कारण वे निश्चित रहते हैं–तृप्त रहते है। यही ज्ञान "नित्य अन्न" है। यह रोटी का अन्न तो अनित्य है। आज खाते हैं, कल फिर भूख लग आती है। इससे नित्यतृप्ति नहीं प्राप्त होती, पर उस आत्म-ज्ञान को प्राप्त होकर वे सदा के लिये तृप्त हो जाते हैं। वे इसी आत्म-ज्ञान पर जीते हैं, रोटी पर नहीं जीते। अतएव रोटी न मिलने पर (शरीर छूटने पर) वे मरते भी नहीं वे अमर हो चुके होते हैं। हम लोग रोटी पर ही जीते हैं और रोटी न मिलने पर मर जाते हैं। इस अनित्य अन्न (रोटी) के हमेशा मिलते रहने का प्रबन्ध करके यदि इसे नित्य बनाने का यत्न किया जाये तो भी यह नित्य नहीं बनता, नित्यतृप्तिकारक नहीं रहता क्योकि हमेशा अन्न मिलते रहने पर भी यह शरीर एक दिन बुड्ढा होकर छूट ही जाता है। रोटी उस समय उसकी तृप्ति व रक्षा नही कर सकती है। अत नित्य अन्न तो ज्ञानतृप्ति ही है। हे परमेश्वर ! इस युद्धमय ससार मे तुम जिसके सहायक होते हो उसे यह शाश्वत अन्न देकर–इस शश्वत 'इष' का स्वामी बनाकर-तुम अमर भी कर देते हो।

(वैदिक विनय से)

हिन्दू संगठन कैसे होगा ?................. (प्रथम पृष्ठ का शेष)

की मूर्खता को देखकर आश्चर्य होता है जब अपने देवी देवता को छोडकर मुसलमानो की कब्रो पर जाकर सिर पटकते हैं। इन को अपने किसी देवता पर विश्वास नहीं है। अन्धविश्वास मे भेड चाल चलते हैं। अपनी बुद्धि का प्रयोग नही करते। तान्त्रिक इनको मूर्ख बनाकर लूट रहे हैं। राशिफल के चक्कर मे भाग्यहीन बन बैठे है। हाथ की सब उगलियो मे अगुठिया फसा रखी हैं, फिर भी इनका स्वार्थ सिद्ध नहीं होता बीमार रहते हैं। कौन समझायेगा इनको, कैसे समझेंगे ये जन ? देखकर इनकी जहालत (अज्ञानता) कुन्द हो जाता है मन।

मन्दिर मे जाकर भगवान् के साथ सौदेबाजी करते हैं। इन्हे यह पता नहीं कि भगवान् कौन है ? कहा रहता है ? क्या करता है ? बस पत्थर की मूर्ति को भगवान् मान लिया है। इसलिए इनकी बुद्धि भी पत्थर की तरह जड हो गई है जो सत्य और असत्य को जानने मे सक्षम नहीं है। जब तक सच्चे शिव अर्थात् ईश्वर को जानकर सब की भक्ति भावना एक नहीं होगी और अभिवादन का शब्द नमस्ते जी नही होगा तक तक हिन्दू जाति का कल्याण नहीं हो सकता। आओ ! हम सब बुद्धिजीवी सत्य की खोज मे आगे बढे।

–देवराज **आर्य मित्र**, आर्यसमाज कृष्णा नगर दिल्ली

आर्यपर्वों की सूची

सन् २००२ ई० तदनुसार विक्रमी सम्वत् २०५८-५९

क्र.सं.	पर्व नाम	अंग्रेजी तिथि	दिवस
१	मकर सक्रान्ति	१४-१-२००२	सोमवार
२	पसन्त पचमी	१७-२-२००२	रविवार
३	सीताष्टमी	०६-३-२००२	बुधवार
४	महर्षि दयानन्द जन्मदिवस	०८-३-२००२	शुक्रवार
५	शिवरात्रि (महर्षि दयानन्द बोध दिवस)	१२-३-२००२	मंगलवार
६	लेखराम तृतीया	१७-३-२००२	रविवार
७	नवसस्येष्टि (होली)	२८-३-२००२	गुरुवार
८	आर्यसमाज स्थापना दिवस (वैशाखी)	१३-४-२००२	शनिवार
९	रामनवमी	२१-४-२००२	रविवार
१०	हरि तृतीया	११-८-२००२	रविवार
११	श्रावणी उपाकर्म (रक्षाबधन)	२२-८-२००२	गुरुवार
१२	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	३१-८-२००२	शनिवार
१३	विजयदशमी (प० जगदेवसिह सिद्धान्ती जयून्ती)	१५-१०-२००२	मगलवार
१४	गुरुवर स्वामी विरजानन्द दण्डी जन्मदिवस	१७-१०-२००२	गुरुवार
१५	महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस (दीपावली)	०४-०११-२००२	सोमवार
१६	स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस	२३-१२-२००२	सोमवार

विशेष टिप्पणी : १ आर्यसमाजे इन पर्वो को उत्साहपूर्वक मनाए।
२ देशी तिथियो मे घट-बढ होने से पर्व तिथि मे परिवर्तन हो सकता है।
३ इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय पर्व, १५ अगस्त तथा २६ जनवरी २००२ को कार्यालय का अवकाश रहेगा।

–**यशपाल आचार्य**, मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

हांसी हल्का के हर गांव में आर्यवीर दल का गठन होगा–शास्त्री

आर्यवीर दल हासी के सक्रिय कार्यकर्ता एव वैदिक विद्वान् आचार्यप्रवर पं० रामसुफल शास्त्री ने आर्य वीर दल हासी के दसवे वार्षिक उत्सव के दौरान बोलते हुए घोषणा की कि हासी हल्के के हर गाव मे आर्यवीर दल की इकाई का गठन किया जाएगा, जिसका मुख्यालय हासी होगा। श्री शास्त्री जी ने चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा आज की युवापीढी दिशाहीन व पथभ्रष्ट के कगार पर खडी है और पुराने आर्यसमाजी धीरे-धीरे समाप्त होते जा रहे हैं। यदि आर्यवीरो को आगे नहीं लाया जाएगा तो आर्यसमाज का भविष्य उज्ज्वल नहीं बन सकता।

हे श्रद्धानन्द

दर्शन कर ऋषि दयानन्द का,
जीवन धन्य बनाया तुमने।
ऋषि के जीवन से प्रेरित हो,
ऋषि-पथ कदम बढाया तुमने।
अन्तर्मन को ज्योति मिली जो-
कभी हुई किंचित् ना मन्द।
जय जय हो ! जय श्रद्धानन्द।।

ऋषिवर के सारे स्वप्नों को,
किया तुम्हीं ने था साकार।
दलितोद्धार, अछूतोद्धार तथा
शुद्धि का खोला द्वार।
दिया तुम्हीं ने हमे महात्मन् !
गुरुकुल का अनुपम मकरन्द।
जय जय हो ! जय श्रद्धानन्द।

स्वतत्रता हित मातृभूमि की,
तुमने बलि का पथ अपनाया।
सगीनो के सम्मुख तुमने
शौर्य तथा साहस दिखलाया।
सतत तुम्हारे दिव्य प्रयासो
से आया चहुदिशि आनन्द।
जय जय हे ! जय श्रद्धानन्द।।

आओ ! आर्य सपूतो ! आओ-
स्वामी जी का पथ अपनाएं।
कर सर्वस्व समर्पित अपना,
पावन वैदिक धर्म बचाएं।
सत्कर्मों से पुण्य हमारे-
सत्य-धर्म का निकले छन्द।
जय जय हे ! जय श्रद्धानन्द।।

–**राधेश्याम आर्य**
मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ०प्र०)

राष्ट्रीय सुरक्षा, अनुशासन एवं शान्ति का मूलमन्त्र 'धर्मदण्ड'

– आचार्य आर्य नरेश 'वैदिक गवेषक'

गताक से आगे–

आर्यावर्त (भारत) जो कभी सोने की चिडिया, विश्वगुरु और चक्रवर्ती सम्राट् कहाता था, जिसकी सीमाए कभी अफ्रीका तक फैली थीं। पाकिस्तान, नेपाल, बर्मा, भूटान, बाग्लादेश आदि जिसके अन्तर्गत थे, विश्व मे उसकी पूजा, सुरक्षा और सम्मान का कारण यही दण्ड था। इसी कठोर दण्ड के कारण लोग धार्मिक थे। सम्पूर्ण राष्ट्र मे प्राय कहीं भी मास अण्डा, शराब, जुए के स्थान या वेश्यालय नहीं थे। देश मे कोई रिश्वतखोर नहीं था, कोई व्यभिचारी, कजूस और शोषक नहीं था। कहीं चोरी नहीं होती थी। अत घरो मे कहीं ताला नहीं दीखता था। यह सब कुछ दण्ड के ही कारण था। धर्ममय जीवन का आधार दण्ड ही था। दण्ड ही निष्पक्ष व्यवस्था और क्षमा की कोई आशा न होने मे ही लोग धर्म पर आरूढ रहते थे। इसीलिए मनु महाराज कहते हैं–**"दण्ड धर्म विदुर्बुधा।"** अर्थात् न्यायमुक्त दण्ड ही का नाम राजा और धर्म है। यदि दण्ड नहीं तो राजा का कोई औचित्य नहीं। यदि दण्ड नहीं तो धर्म का भी कोई आधार नहीं।

प्रबुद्ध पाठक यह भलीभाति जानते हैं कि विश्व के उस राष्ट्र मे न्यून अपराध होते हैं जहा दण्ड कठोरतम है। जैसे कि सऊदी अरब आदि। अमेरिका का राष्ट्रपति जब सऊदी अरब के सम्राट् से मिला तो उसने वहा की शासन व्यवस्था की जानकारी ली। जब अपराधविषयक चर्चा चली तो यह जानकर आश्चर्य चकित हुआ आखिर इस देश मे कम अपराध होने का कारण क्या है ? सम्राट् ने उसे बताया कि हम चोरो के हाथ काट देते हैं। गद्दारो के गले काट देते हैं। पापी-अपराधियो को जमीन मे गाडकर पत्थरो से मार देते हैं। पर दूसरे ओर विश्व के धनाढ्य और महाप्रबुद्ध देश अमेरिका मे प्रत्येक मिनट मे अनेक चोरिया, बलात्कार एव हत्याए जैसे अपराध होते हैं। कयोकि वहा दण्ड अल्प होता है। बताया जाता है कि बगदाद मे बहुत शराब पी जाती थी। वहा के सम्राट् ने घोषणा की कि शराब पीने वाले को कोडे से पीट-पीटकर मौत के घाट उतार दिया जाएगा। कुछ शराबियों ने इस राजनियम को ढीला करने के लिए सम्राट् के पुत्र को शराब पिला दी। जब सम्राट् को ज्ञात हुआ तो उसने बिना किसी ननु नच के सामान्य जनता की अपेक्षा अपने पुत्र को दुगुने कोडे मारकर मौत के घाट स्वय अपने हाथो से ही उतार दिया। इस घटना को देखकर एव सुनकर सारे शराबी बगदाद से भाग गये और बगदाद सदा के लिए शराब से मुक्त हो गया।

पाठकवृन्द ! यह विधान हमारे ही देश की वैदिक सस्कृति से गया है। हमारे यहा दण्ड धर्म का सम्मान न होकर राष्ट्र धर्म की हत्या हुई पर उन्होंने इसे अपनाकर अपने राष्ट्र की उन्नति की। देव दयानन्द महाराज भरत की कथा लिखते हैं कि जिसने स्वय अपने हाथो से अपने अनुशासनहीन पुत्र का सार्वजनिक रूप से वध कर दिया था क्योकि वह किसी की शिक्षा को मानने के लिए तैयार नहीं था। इसी प्रकार के न्यायप्रिय एव धर्मदण्ड प्रिय शासको के कारण ही भारत सोने की चिडिया एव विश्वपूज्य बना था। यदि आज पुन वैदिक धर्मानुसार महर्षि मनु एव दयानन्द की बातो को मानकर सर्वप्रथम सामान्य जनों की अपेक्षा विशिष्ट अधिकारियों को हजार गुना अधिक दण्ड दिया जाए तो सामान्य जनता स्वत: ही अपराधवृत्ति छोड दे। यदि देश के चुने हुए स्मगलरो रिश्वतखोरो, घोटालेबाजो, मिलावटखोरो और गोहत्यारो तथा गद्दारो को दूरदर्शन-आकाशवाणी एव समाचार-पत्रो द्वारा पूर्व सूचना देकर १५ अगस्त एव २६ जनवरी के दिन लालकिले तथा भारत द्वार (इण्डिया गेट) जैसे सार्वजनिक स्थानो पर कोडे मार-मारकर अथवा कुत्तो से नुचवाकर मार दिया जाए तो सम्भवत भारत पुन सोने की चिडिया और विश्ववन्दनीय राष्ट्र बन सके। इसमे दो मत नहीं कि उसी घर उसी सस्या, उसी ग्राम अथवा उसी राष्ट्र में बाहर से अधिक आक्रमण होते हैं जिसके लोग कमजोर दण्डहीन अथवा तथाकथित अहिंसा की भावना से क्षमा करने की मूर्खता करते हैं। कयोंकि अहिंसा का अर्थ वैदिक शास्त्रो मे कहीं भी न मारना नहीं है। और न ही न मारना अर्थात् शत्रु अपराधी को छोड देना पुण्य ही है। यदि कोई न्यायाधीश कई व्यक्तियो के हत्यारे व्यक्ति को मृत्युदण्ड देने की अपेक्षा छोड देता है तो जनता उसे पापी, घूसखोर और अन्यायकारी कहती है। इतना ही नहीं अपितु ऐसे एक हत्यारे को छोड देने से अभयदान के कारण कई और हत्यारे जन्म लेते हैं। इसलिए भारत की प्राचीन सस्कृति वैदिक धर्म मे अहिसा का अर्थ छोड देना क्षमा करना या न मरना न होकर न्याय करना लिखा है। जिसे महर्षि दयानन्द ने यथायोग्य व्यवहार की सज्ञा दी है। अत श्रेष्ठ का सत्कार करना जहा धर्म एव अहिंसा है अर्थात् न्यायोचित्त कर्म है वहा दुष्ट को यथायोग्य दण्ड देना भी परम धर्म एव अत्यन्त न्यायोचित कर्म है। यही वास्तविक अहिसा कर्म है। यदि भारत के लोग इस वैदिक अहिसा को समझते और दुष्ट तथा देशद्रोही को मारना परमधर्म अपनाते तो भारत कभी गुलाम न होता। यहा कभी गौए न कटतीं, कभी कहीं भी धर्मान्तरण न होता, कभी मास और शराब की मण्डी न सजती और न ही कहीं जूआखाने तथा वेश्यालय ही दिखायी देते।

सब सज्जन महाशय लोगों के सहयोग से हरयाणा के गांव-गांव में महायज्ञों का शुभारम्भ

25 मन घी से महायज्ञ

आज हमारे परिवार, समाज और देश मे दुर्गुण–दुर्व्यसन बहुत ज्यादा बढ गये हैं इसलिये परिवार का हर व्यक्ति एक दूसरे से असन्तुष्ट अप्रसन्न और दु खी रहता है, आपसी मन–मुटाव सदा बना ही रहता है। श्रीराम, श्रीकृष्ण के निरोग और शान्त देश मे महादु ख, अशान्ति और भयकर रोगो की भरमार दिन–रात बढती ही चली जा रही है। इसको रोकना हम सब का परम कर्त्तव्य बनता है। इस महाविनाश का मूल कारण यही है कि हमने ईश्वर का सच्चा भजन करना छोड दिया, हवन से हमारा कोई लेना–देना नहीं और ऋषि–मुनियों के व्यावहारिक ज्ञान से तो हम बिल्कुल शून्य हो गये हैं। देखिये महर्षि दयानन्द सरस्वती अमरग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश मे लिखते है–"इसीलिये आर्यवर शिरोमणि महाशय, ऋषि, महर्षि, राजे, महाराजे लोग बहुत–सा होम करते कराते थे। जब तक इस होम करने का प्रचार रहा, तब तक आर्यावर्त्त देश रोगो से रहित और सुखो से पूरित था, अब भी प्रचार हो तो वैसा ही हो जाय।" महर्षि के इन्ही वाक्यो से प्रेरित होकर 25 मन घी से अलग–अलग स्थानो पर प्रतिदिन सवा मन घी से 21 दिन तक महायज्ञ का आयोजन किया गया है। महायज्ञ मे अपने–अपने सामर्थ्य के अनुसार तन मन धन से सहयोग देकर महापुण्य के भागी बने और अपने–अपने इष्ट, मित्रो सहित अधिक से अधिक सख्या मे पहुचकर महालाभ प्राप्त करे।

महायज्ञ मे अनेक भजनोपदेशक और वैदिक विद्वान् आमन्त्रित हैं।

किस दिन, कहाँ पर ?

दिनाक 28, 29, 30 जनवरी को गाव कानौंदा (जिला झज्जर, बहादुरगढ से नाहरा–नाहरी रोड पर)। दिनाक 31 जनवरी, 1, 2 फरवरी को गाव साघी (जिला रोहतक गोहाना रोड से जसिया उतरे)। दिनाक 3, 4, 5 फरवरी का गाव निडाना (जिला रोहतक, जीन्द रोड से समरगोपालपुर मोड पर उतरे)। दिनाक 6, 7, 8 फरवरी को गाव भगवतीपुर (जिला रोहतक, जीन्द रोड पर)। दिनाक 9, 10, 11 फरवरी को गाव बालावास (जिला हिसार, तोशाम रोड पर)। दिनाक 12, 13, 14 फरवरी को गाव टिटौली (जिला रोहतक, वाया सुन्दरपुर)। दिनाक 15, 16 फरवरी को गाव सुन्दरपुर (जिला रोहतक)। दिनाक 17 फरवरी को गुरुकुल सुन्दरपुर (जिला रोहतक)

कार्यक्रम

	समय	विषय
प्रतिदिन प्रात	10 बजे से 12 बजे तक	महायज्ञ
प्रतिदिन दोपहर	12 बजे से 3 बजे तक	भजन और उपदेश
प्रतिदिन रात्रि	7 बजे से 9.30 बजे तक	भजन और उपदेश

संयोजक एवं निवेदक

महात्मा प्रभुआश्रित आर्ष गुरुकुल सुन्दरपुर,

रोहतक (हरयाणा) दूरभाष : 01262 - 35023

भव्य ऋषि मेला सम्पन्न

परोपकारिणी सभा द्वारा आयोजित महर्षि दयानन्द सरस्वती का निर्वाण समारोह प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी ऋषि उद्यान (आनासागर घाटी) मे १८ से २० नवम्बर तक सम्पन्न हुआ। वैदिक रीति से महायज्ञ डॉ सोमदेव शास्त्री मुबई के ब्रह्मत्व मे आरम्भ हुआ। नगर के व बाहर से आए गणमान्य नागरिको एव व्यवसायियो ने धार्मिक भावनाओ से अभिभूत होकर अपनी व्यस्ततम दिनचर्या मे मे समय निकालकर यजमान के दायित्व का निर्वहन किया।

ऋषि मेले का शुभारभ परोपकारिणी सभा के प्रधान सभा के प्रधान श्री गजानद आर्य द्वारा ध्वजारोहण के साथ किया गया, ध्वजारोहण समारोह अत्यत आकर्षक रहा, श्री गजानद आर्य प्रधान को आर्यवीर दल के आर्य सैनिको द्वारा गणवेश मे पूर्ण सैनिक सम्मान के साथ ध्वजारोहणस्थल तक लाया गया। ध्वजारोहण समारोह के मुख्य आकर्षक देश के विभिन्न प्रदेशो से पधारे ख्यातनाम सन्यासी रहे। ध्वजारोहण समारोह को देखने हेतु भारी भीड उमड पडी।

ऋषि मेले मे इस वर्ष विशेष रूप से विदेश मे निवास कर रहे भारतीय आर्यों की भारी भीड रही।

वेद एव वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार हेतु आए देश के लब्धप्रतिष्ठित सन्यासीगण यथा स्वामी सर्वानद जी दीनानगर (पजाब) स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती गुरुकुल झज्जर हरयाणा, स्वामी धर्मानन्द जी माउट आबू राजस्थान, स्वामी सुमेधानद राजस्थान द्वारा दिए गए प्रवचनो को सुनने हेतु अपार भीड रही एव जनसमुदाय ने बडी तन्मयता एव श्रद्धा से उनके विचार सुने।

देश के विभिन्न प्रातो से आए वैदिक विद्वानो की उपस्थिति उल्लेखनीय रही। डॉ सोमदेव शास्त्री, डॉ राजेन्द्र जिज्ञासु, डॉ भवानीलाल भारतीय, ब्र राजेन्द्र आर्य राजीव दीक्षित आदि के ओजपूर्ण वैदिक विचारो को उपस्थित जनसमुदाय ने बडी गम्भीरता से श्रवण किया एव उनके विचारो से अध्यात्म की एक नई दिशा प्राप्त की।

वैदिक विद्वानो को आयोजित वेदगोष्ठी के माध्यम से विचारणीय बिन्दु वेद और निरुक्त पर उत्कृष्ट लेख लिखे गए। प्रबुद्ध श्रोतावर्गो द्वारा इसका विशेष ज्ञान लाभ प्राप्त किया गया।

देश के विभिन्न भागो से आए भजनोपदेशको श्री ओमप्रकाश वर्मा हरयाणा, बृजलाल कर्मठ उत्तरप्रदेश, भूपेन्द्रसिह राजस्थान अपने मधुर भजनों एव प्रेरणाप्रद उपदेशो के माध्यम से विशाल जन समुदाय को मत्रमुग्ध कर दिश।

आर्यवीर दल के स्थानीय आर्यवीरो द्वारा व्यायाम आत्मरक्षार्थ जूडो-कराटे लाठी चालन का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया गया, वृक्ष पर रस्से के सहारे योगासनो का प्रदर्शन जनता द्वारा काफी सराहा गया एव उत्कृष्ट प्रदर्शन से प्रभावित हो देश के ख्यातनाम व्यवसायी श्री मस्करा जी (कलकत्ता) द्वारा आर्यवीरो के सहायतार्थ आर्थिक दान की घोषणा की गई।

पाजी पाकिस्तान

टेक . हो ललकारें सै, यो पाजी पाकिस्तान।।

१ आज तक शान्ति की मानी। शान्ति तो अब बन गई नानी।।
गई ब्रिगड देश की शान। हो ललकारे सै यो पाजी पाकिस्तान।।

२ नई-नई रोज स्कीमे घडके। म्हारी सीम के भीतर बडके।
मचा रहे तूफान।। हो ललकारे सै यो पाजी पाकिस्तान।।

३ घर मे आके हाल बनाया। ससद को भी लाल बनाया।
फिर भी ढूढ रहे प्रमाण। हो ललकारे सै यो पाजी पाकिस्तान।।

४ जिसके पास लठोरा उसका गोरा। निर्बल का नहीं घर गोरा।
जिन्दा ए मृत समान।। हो ललकारे सै, यो पाजी पाकिस्तान।।

५ कर कर के केसरिया बाणा। वीर शिवाजी झूझे राणा।
उनकी कहा गई सतान।। हो ललकारे सै यो पाजी पाकिस्तान।।

६ युद्ध से ज्यादा ना कुछ घटिया। पर मा की पाडे जो कोई चुटिया।
उसको पहुचा दो श्मशान।। हो ललकारे सै, यो पाजी पाकिस्तान।।

७ शान्ति शान्ति कर के बख्सा। दुनिया से खत्म करो अब नकशा।
फौजी मजदूर किसान।। हो ललकारे सै, यो पाजी पाकिस्तान।।

८ इच-इच धरती छुटवालो। देश के ऊपर शीश कटालो।
या सहन करो अपमान।। हो ललकारे सै, यो पाजी पाकिस्तान।।

९ जमीन और जर जोरू किसकी ? रहे शीश हाथ पै हैं ये उसकी।
दे जाने जो बलिदान।। हो ललकारे सै, यो पाजी पाकिस्तान।।

१० भारत मा सपने मे बोली। ओमदत्त पहनो चूडी चोली।
बूढे किशोर जवान। हो ललकारे सै, यो पाजी पाकिस्तान।।

राम और रावण युद्ध हुआ केवल राक लकीर के पीछे।
महाभारत का युद्ध हुआ केवल एक चीर के पीछे।
भारत के करा टुकडे-टुकडे बस धार्मिक जमीर के पीछे।
होकर रह गया सर्वनाश केवल अब कश्मीर के पीछे।।

ओमदत्त नैन आर्य, सुबेदार मेजर (रिटायर्ड) बतरा कालोनी पानीपत-१३२१०३

आर्यसमाज खटौटी सुलतानपुर जिला महेन्द्रगढ़ का वार्षिक चुनाव

प्रधान श्री सुल्तानसिह आर्य, उपप्रधान श्री मा० रामनिवास आर्य, मन्त्री श्री मा० यशपाल आर्य, उपमत्री श्री शेरसिह आर्य, कोषाध्यक्ष श्री मनोहरलाल आर्य, पुस्तकाध्यक्ष श्री हवलदार रामसिह आर्य, निरीक्षक श्री मा० महेन्द्रसिह आर्य।

जयपालसिंह आर्य, सभा भजनोपदेशक

आर्यसमाजों के उत्सवों की सूची

आर्यसमाज एचरा कला जिला जीन्द	७-९ जनवरी २००२
आर्यसमाज आर्यनगर जिला हिसार	१२-१३ जनवरी २००२
आर्यसमाज औरगाबाद मित्रोल जिला फरीदाबाद	१-३ फरवरी २००२
श्रीमद्दयानन्द गुरुकुल विद्यापीठ गदपुरी जिला फरीदाबाद	१५-१७ मार्च २००२

–सभामंत्री

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोह

रोहतक नगर की सभी आर्य समाजों, आर्य स्त्री समाजों, आर्य शिक्षण सस्थाओ के सगठित प्रयास से आर्य केन्द्रीय सभा रोहतक के तत्त्वाधान में स्वामी श्रद्धानन्द जी सरस्वती के ७५ वें बलिदान दिवस पर एक भव्य श्रद्धाजलि समारोह का आयोजन सुभाष नगर के पार्क मे अपराह्ण २बजे से श्री जगदीश चन्द्र जी धवन की अध्यक्षता मे आयोजित किया गया। जिसका मच सचालन श्री देशराज आर्य महामत्री ने किया।

इस समारोह मे आचार्य विवेकभूषण जी (रोजड-गुजरात) ने रोहतक की जनता से स्वामी श्रद्धानन्द जी के स्वप्न की पूर्ति हेतु अपने बच्चो को गुरुकुलो मे दाखिल कराने तथा वैदिक धर्म की रक्षा हेतु उन्हें वैदिक विद्वान् बनाने की अपील थी। प्रो० ओमकुमार (जीन्द वाले)ने बताया कि स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपनी निडरता का परिचय देते हुए ३० मार्च १९१९ को अग्रजी सगीनो के सामने असहयोग आन्दोलन का नेतृत्व करते हुए अपनी छाती तान दी थी और शुद्धि एव अछूतोद्धार का नेतृत्व करते हुए एक धर्मान्ध मुसलमान की गोली का शिकार हुए थे। सभा मंत्री श्री देशराज आर्य ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान को राष्ट्र एव भारतीय सस्कृति की रक्षा हेतु उन द्वारा दिया गया बलिदान का मूल्याकन देश की वर्तमान परिस्थिति के परिप्रेक्ष्य मे करते हुए बताया कि आज पाकिस्तान तथा अन्य इस्लामिक देश इस देश का इस्लामीकरण करने पर आमदा हैं। जिसका निराकरण सगठित होकर शुद्धि आन्दोलन चलाकर तथा इस्लामिक मदरसो की तुलना मे अधिक गुरुकुल चलाकर किया जा सकता है। डी ए वी स्कूल, धनवन्ती आर्य कन्या उच्च विद्यालय तथा कई शिक्षण सस्थाओ के बच्चो ने भी इस समारोह मे स्वामी जी को श्रद्धाजलि दी। श्री विनयकुमार आर्य तथा श्री राजवीर शास्त्री तथा बहिन दयावती जी ने अपने भजनो के द्वारा अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी को श्रद्धाजलि दी।

मेघराज आर्य कोषाध्यक्ष

दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार सभा, के तत्त्वाधान में आर्य सम्मेलन

शनिवार १५ दिसम्बर २००१ के श्रीमद् दयानन्द वेदविद्यालय, गौतम नगर दिल्ली मे सायकाल ४ बजे से ६ ३० बजे तक समारोहपूर्वक मनाया गया। इस सम्मेलन मे दक्षिण दिल्ली की सभी आर्यसमाजो ने भाग लिया। सम्मेलन की अध्यक्षता श्री कृष्ण जी सिक्का, प्रधान दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार सभा ने की तथा इसके सयोजक पुरुषोत्तमलाल गुप्ता जी थे। इस सम्मेलन मे उच्च कोटि के विद्वान् तथा आर्यनेता सम्मिलित हुए। प्रमुख वक्ता श्री वेदव्रत जी शर्मा, प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा व मत्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री रामनाथ सहगल स्वामी इन्द्रवेश जी सरस्वती, प्रोफेसर धर्मवीर जी अजमेर वाले, प्रोफेसर राजेन्द्र जिज्ञासु, श्री विजय गुप्ता आदि थे। और श्री सत्यपाल पथिक और ओमप्रकाश वर्मा के भजन हुए और अन्त मे श्री स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती महाराज ने आशीर्वाद दिया। इस कार्यक्रम को सफल करने मे वेद महाविद्यालय के आचार्य श्री हरिदेव जी ने पूर्ण सहयोग दिया।

रोशनलाल गुप्ता महामंत्री

ऊधमसिंह जयंती मनाई गई

बहुराष्ट्रीय गुलामी के खिलाफ एव स्वदेशी, स्वावलबन, स्वरोजगार पर आधारित समाज व्यवस्था के लिए सक्रिय शहर के प्रसिद्ध गैर राजनीतिक सगठन आजादी बचाओ आदोलन द्वारा काठमडी स्थित अपने कार्यालय में शहीद ऊधमसिह जी की जयती मनाई गई। सगठन की जिला ईकाई की बैठक मा० घासीराम की अध्यक्षता मे हुई। इस अवसर पर भगतसिह, तीला बहादुर, राजेश चड्ढा आदि उपस्थित थे।

प्रसिद्ध आर्यसमाजी मा० खजानसिह आर्य को इस कार्यक्रम मे विशेष आमन्त्रित किया गया था। मा० खजानसिंह आर्य ने अपने ओजस्वी भाषण के द्वारा भारतीय स्वतत्रता आदोलन के महान योद्धा शहीद ऊधमसिह के जीवन पर विस्तार से प्रकाश डाला। श्री आर्य ने ऊधमसिह जी को भारत माता का सच्चा सपूत बताते हुए कहा कि उन वीरो की बदौलत ही हम स्वतत्र वातावरण मे सास ले रहे हैं। उन्होने कहा कि हमे उन वीरो के जीवन से शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए। जिससे उन्हे सच्ची श्रद्धाजलि अर्पित की जा सके। मा० खजानसिह ने शहीद ऊधमसिह पर एक स्वरचित कविता प्रस्तुत की। जिसमे कहा गया है कि - डायर, ओडायर, इर्विन तीनो बैठे एक साथ। मौका पाकर ऊधमसिह ने पिस्टल को उठाकर हाथ बाध लिया निशाना। इसके अतिरिक्त बैठक मे शहीद ऊधमसिह के जीवन से जुडी एक अन्य कविता की दो पक्तिया भी काफी प्रशसनीय रहीं। जिनके अनुसार- जलियावाला बाग मे जो निर्दोषो का हत्यारा था, उस डायर को ऊधम सिह ने लन्दन जाकर मारा था।

श्री आर्य ने गहरी चिता प्रकट करते हुए कहा कि आज युवा वर्ग उन अमर शहीदो को भूलता जा रहा है। जिन्होने अपने प्राणो की बलि तक दे दी थी। जो कि सरासर उन शहीदो का अपमान है। उन्होने कहा कि उन शहीदो की शहादत को हमे भूलना नहीं चाहिए। सगठन की आज हुई इस बैठक मे आगे की रणनीति भी तय की गई। जिसमे यह तय किया गया कि २००२ के अक्तूबर और नवम्बर माह मे १००० कि मी लम्बी मानव श्रखला बनाई जायेगी। जिसका प्रमुख उद्देश्य बहुराष्ट्रीय कपनियो का विरोध करना एव आम जनता मे जागृति पैदा करना है।

उपदेशकों तथा भजनोपदेशकों की आवश्यकता

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को सुयोग्य उपदेशक तथा प्रभावशाली भजनमडलियो की तुरन्त आवश्यकता है। उपदेशक पद के इच्छुक उम्मीदवार को वैदिक सस्कार करवाने तथा प्रवचन करने का अभ्यास होना चाहिए तथा भजनोपदेशक पद के उम्मीदवार को ग्रामो तथा शहरो मे प्रभावशाली ढग से प्रचार करने का अनुभव होना आवश्यक है। अपने आवेदन पत्र के साथ अपनी शिक्षण योग्यता, आयु तथा अनुभव आदि का विवरण लिखे। वेतन योग्यता के अनुसार दिया जावेगा।

आचार्य यशपाल
मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक

स्वामी श्रद्धानन्द का प्रेरक जीवन

लेखक डा महेश विद्यालंकार

भारत भूमि धन्य है। यहा उनके ऋषि मुनियो सतो और महापुरुषो ने जन्म लिया। उन्होने अपने व्यक्तित्व एव कृतित्व से ससार को सन्मार्ग दिखया। ऐसे ही महापुरुषो की परम्परा मे स्वनामधन्य अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द [illegible] ाम ससार बडी श्रद्धा, भक्ति तथा आदर से लेता है। उनके जीवन की [illegible] और योगदान के प्रति दुनिया नतमस्तक है। स्वामी जी का जीवन पतन [illegible] उत्थान की प्रेरक कहानी है। यदि कोई दुर्गुण, दुर्व्यसन एव बुराइयो से छूटना और ऊपर उठना चाहे तो स्वामी श्रद्धानन्द से बढिया जीवन चरित्र और कोई न मिलेगा। उनका जीवन खुली किताब है। पढो, समझो, प्रेरणा लो। और दोषो से ऊपर उठ जाओ। स्वामी जी शून्य से शिखर पर पहुचे। दोषो भरे जीवन से निकलकर मानवता के प्रेरक सन्त बन गए। जागे सभले और ऊपर उठे। इतने ऊचे कि हिमालय की चोटी के समान, अलग तथा निरोल नजर आये। यही उस महामानव की प्रेरक विशेषता और प्रेरणा है। हम भी अपने जीवन तथा जगत् का सभाले और उन्नत पथ पर ले चले।

मुशीराम को स्वामी श्रद्धानन्द बनाने का श्रेय गुरुवर देव दयानन्द को है। जिनके दर्शन व वाणी ने मुशीराम की सुप्त धार्मिकता एव आस्तिकता को जागृत किया। बरेली मे ऋषिवर की सभा मे मुशीराम का जाना हुआ। पहले दस मिनट के उपदेश ने उन्हे मन्त्रमुग्ध कर दिया। ऋषि वाणी का जादू ऐसा चढा कि मुशीराम उनके दर्शनो के लिये पागल हो उठे। वे सत्सग मे सबसे पहले आते और बडी तन्मयता व जिज्ञासा से सुनते। मुशीराम कहते है - उस दिन आदित्य मूर्ति को देखकर श्रद्धा उत्पन्न हुई। पादरी स्कॉट और दो तीन अन्य यूरोपियनो को उत्सुकता से बैठे देखा तो श्रद्धा और भी बढी। अभी दस मिनट भी प्रवचन नही सुना था और मन मे विचार आया यह विचित्र व्यक्ति है, केवल सस्कृतज्ञ होते हुए ऐसी युक्तियुक्त बाते करते है कि विद्वान् भी दग रह जाये। व्याख्यान परमात्मा के निज नाम ओम् पर था। पहले दिन का आत्मिक आह्लाद कभी नहीं भूल सकता। एक नास्तिक को आस्तिक मे तबदील कर देना, ऋषि की ही शक्ति थी। उन्ही का चमत्कार था।

मुशीराम के हृदय मे सुप्त सस्कार एव धार्मिक भावना जागृत हो उठी। वे निरन्तर ऋषि के प्रवचनो मे जाने लगे। उन्होने ऋषि के समक्ष अपनी शकाए रखीं। ईश्वर के अस्तित्व पर प्रश्न किए। ऋषि के उत्तर से मुशीराम की तर्क बुद्धि मौन हो गई। वे बोले महाराज आपने मुझे चुप तो करा दिया है लेकिन विश्वास नहीं दिलाया, कि ईश्वर की कोई हस्ती है। ऋषिवर बोले तुमने प्रश्न किये मैंने उत्तर दिए। मैंने कब कहा था मैं तुम्हारा परमेश्वर पर विश्वास करा दूगा ? मुशीराम लिखते है उस समय ऋषि ने उपनिषद् वाक्य बोले यमेवैष वृणुते तेन लभ्य जब प्रभु कृपा करेगे, तो तुम्हारा उस पर विश्वास भी हो जाएगा। तभी हृदय के सशय दूर होगे। अन्दर के कपाट खुलेगे।

ऋषि के सत्सग और प्रभाव से मुशीराम कल्याण मार्ग की और बढने लगे। उन्हे ऋषि के रूप मे सजीवनी शक्ति मिल गई। अधेरे जीवन मे प्रकाश आ गया। नास्तिक सोच-विचार आस्तिकता मे बदलने लगे। जीवन सन्मार्ग की और प्रेरित हो उठा। मुशीराम के जीवन परिवर्तन, उत्थान एव निर्माण मे उनकी धर्मपत्नी शिवदेवी की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। सच्चे अर्थ मे शिवदेवी ने धर्मपत्नी का दायित्व निभाया। प्रेम सेवा और त्याग से मुशीराम को ऋषि मार्ग की और अग्रसर किया। मुशीराम विधिवत् आर्यसमाज के सदस्य बने। सत्यार्थ प्रकाश को बडी श्रद्धा और लगन से पढा। अधकार मे प्रकाश मिल गया। वे आर्यसमाज के दिवाने हो गए। उन्होने अपने जीवन सुधार तथा निर्माण मे तीन गुरु बनाए थे। पहला ऋषि दयानन्द दूसरा सत्यार्थ प्रकाश तीसरा उनकी धर्मपत्नी शिवदेवी। तीनो ने मुशीराम के जीवन की कायाकल्प कर दी। [illegible] बढते गए, कभी पीछे मुडकर नही देखा। स्वामी श्रद्धानन्द बनकर उन्होने देश-धर्म जाति सस्कृति शिक्षा नारी उत्थान आदि के लिये जो ऐतिहासिक कार्य किये हैं वे अविस्मरणीय रहेगे। गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय हरिद्वार स्वामी श्रद्धानन्द का जीवन स्मारक है। यह आर्यसमाज का अकेला विश्वविद्यालय है जहा आर्यसमाजी गढे और बनाये जा सकते हैं। आज हम उसे ईमानदारी और सच्चाई से सभाल व उपयोग नहीं कर पा रहे हैं। गुरुकुल को बचाना, सभालना और चलाना हम सब आर्यजनो का कर्त्तव्य है। गुरुकुल का गुरुकुलत्व, स्वरूप एव परम्पराए जीवित रहेगी, तो स्वामी श्रद्धानन्द भी जीवित और अमर रहेगे। स्वामी श्रद्धानन्द ने अपना तन-मन-धन सर्वस्व समाज हित के लिये न्यौछावर कर दिया था।

निराश-हताश किंकर्त्तव्यविमूढ स्वार्थ व पदलोलुपता आदि मे फसी आर्य जनता स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन से प्रेरणा व शिक्षा लेना चाहे तो बहुत कुछ ले सकती है। उनका जीवन प्रेरक और श्रद्धेय है। उनका जीवन प्रकाश स्तम्भ है। महापुरुषो के जीवन चरित्र प्रेरणा, आदर्श तथा सद्भाव जागृत करते हैं। जीवन को सभालने और ऊपर उठने की प्रेरणा देते हैं। स्वामी श्रद्धानन्द का जीवन चरित्र हम सबका आदर्श बन सकता है यदि हम सच्चाई व ईमानदारी से अपने जीवन और जगत् मे परिवर्तन करना चाहे ?

यह तब होगा जब हमारे अन्दर सत्य श्रद्धा एव सकल्प आयेगा। जब हम अपने दुर्गुण-दुर्व्यसन और दोषो को देखेगे, उन्हे दूर करने की बेचैनी व्रत एव सकल्प लेगे। सच्चे अर्थ मे आस्तिक बनेगे।

आर्यो प्रतिवर्ष स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस आता है, जलसे, जुलूस लगर फोटो, माला आदि के धूम धडाके मे निकल जाता है। हम वहीं के वहीं खडे है। हमारे जीवन, आचरण, स्वभाव, व्यवहार, सोच आदि मे कही परिवर्तन, सुधार एव उत्थान नजर नहीं आता है। हम वाणी से महापुरुषो की जय बोलते हैं। हमारी कथनी और करनी मे फासला बढता जा रहा है। इसी कारण हम पिछड रहे है। स्वामी श्रद्धानन्द का पचत्तरवा बलिदान दिवस पुकार-पुकार कर कह रहा है उठो जागो, अपने को सभालो। बहुत विवाद कर लिया ? जीवन को पवित्र बनाओ, मिल बैठकर मिशन के लिये सोचो और काम करो। इसी मे कल्याण है।

सभा को वेद प्रचारार्थ दान

१ गुरुकुल झज्जर के कर्मठ कार्यकर्ता म० फतेहसिह जी भण्डारी ने अपने स्वर्गीय भाई की स्मृति मे सभा को १०१ वेद प्रचारार्थ दान दिया।

२ प० धर्मचन्द शास्त्री स्नातक गुरुकुल भैंसवाल जिला सोनीपत ने दिनाक २३/१२/२००१ को डा० गोबिन्दसिह बल्हारा म न० २३आर माडल टाऊन रोहतक (आजकल अमेरिका तथा जर्मनी मे कार्यरत हैं) मे यज्ञ करवाया। वहा भी आर्यसमाज तथा जाट सभा स्थापित करवाई हैं। प्रतिवर्ष अपनी माता जी से मिलने आते हैं और घर पर यज्ञ आदि करवाकर प्रीतिभोज देते हैं। इस अवसर पर उन्होने आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्द मठ रोहतक को ११०० तथा आर्यसमाज माडल टाऊन को ११०० वेद प्राचारार्थ दान दिया।

३ ग्राम मोरखेडी जिला रोहतक वासी श्री शेरसिह सुपुत्र श्री रामचन्द्र ने २०० तथा श्री हरनारायण ने २०२ सभा को वेदप्रचारार्थ दान दिया।

इन सभी दानदाताओ का सभा की ओर से धन्यवाद।

केदार सिंह आर्य सभा उपमत्री

"सन्त वचन संग्रह"

१ प्रतिज्ञा करने मे ढीले बनिये, परन्तु पालन करने मे जल्दी कीजिए।

२ उठिए वीर बनिये, प्रसन्न रहिए। ईश्वर पर निर्भर रहिए। अन्दर से शक्ति तथा ज्ञान प्राप्त कीजिए।

३ किसी वस्तु से किसी कारण से भय न कीजिए। आप अजर-अमर आत्मा हैं। शान्ति बनाए रखिए।

४ जिज्ञासु बन। जागिए, साधना कीजिए, सिर पर मृत्यु खडी नाच रही है।

५ जो ईश्वर से प्रेम करते हैं। उसका [illegible] करते हैं। वे ही जीवित है। शेष सब मुर्दों के समान है।

आर्य प्रतिनिधि राभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ७६८७४, ५७७७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ७७७२२) से प्रकाशित।

पत्र मे प्रकाशित लख सामग्री स मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री का सहमत होना आवश्यक नहीं। पत्र के प्रत्येक प्रकार के विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक होगा।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३   सृष्टिसंवत् १, ९६, ०८, ५३, १०२
पंजीकरणसंख्या टैक/85-2/2000   ☎ ०१२६२-७७७२२

ओ३म्   कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र   रोहतक

प्रधानसम्पादक : यशपाल आचार्य, सभामन्त्री   सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री

वर्ष २९   अंक ८   १४ जनवरी, २००२   वार्षिक शुल्क ८०)   आजीवन शुल्क ८००)   विदेश में २० डॉलर   एक प्रति १.७०

मकर संक्रान्ति–पर्व का महत्त्व एवं रहस्य

सुखदेव शास्त्री, महोपदेशक, दयानन्दमठ, रोहतक (हरयाणा)

आर्यों के आदि देश भारत के प्राचीन ऋषि-मुनियों ने राष्ट्र मे बनाये जानेवाले प्रत्येक पर्व को वेदो मे आए उसके महत्त्व के आधार पर मनाने का निश्चय एव प्रावधान किया था। उन्होने लाखों वर्षों से मनाए जानेवाले, श्रावणी उपाकर्म, दीपावली, विजयदशमी, होली इत्यादि चार पर्वों को मुख्यता प्रदान की थी। इनके अतिरिक्त अन्य भी पर्व त्यौहार भी किसी महत्त्व को मानते हुए मनाये जाते हैं। अनेक तिथिया अमावस्या, पूर्णमासी तथा वर्षभर मे त्यौहारो की भरमार रहती है। भारत पर्व-तिहारो का देश है। यहा जेठ की तपती गर्मी में भी "निर्जला एकादशी" का व्रत रक्खा जाता है। अनेक राष्ट्रीय महापुरुषो के जन्मदिन भी मनाए जाते हैं। जैसे रामनवमी, श्रीकृष्णजन्माष्टमी। देश के स्वतन्त्र होने पर १५ अगस्त, २६ जनवरी भी सरकारी तौर पर मनाये जाते हैं। ये सभी पर्व राष्ट्र के सभी निवासियो द्वारा आपस में मिलजुलकर उल्लासपूर्वक मनाये जाने चाहिए। इससे राष्ट्र मे एकता की शक्ति बढेगी।

यहा राष्ट्र मे कुछ ऐसे भी साम्प्रदायिक लोग हैं जो इन पर्वो को महत्त्व नहीं देते। वे रहते यहा हैं पर्व-त्यौहार मनाते हैं विदेशों के। वे खाते यहा हैं, गीत गाते हैं परदेश के। जैसे अभी २५ दिसम्बर और १ जनवरी मनाया गया। १ जनवरी हमारा नया वर्ष नहीं है। किन्तु आज भी राष्ट्र मे अग्रेजी दासता की जड़ें जनता में मजबूत हैं। अपने विक्रमीय सम्वत् को तो कोई जानता ही नहीं है। अत· आओ 'सौर मकर संक्रान्ति के पर्व पर वेदों से सम्बन्धित मानकर विचार करे।

अथर्ववेद के काण्ड आठ में, सूक्त ९ में मन्त्र २५ व २६ में कुछ प्रश्न किये गए हैं, २५वें मन्त्र मे प्रश्न ये हैं–**"को नु गौ: क ऋषि: किमु धाम का आशिष:। यक्षं पृथिव्यामेकवृदेकर्तु कतमो नु स:।।"**

प्रश्न यह है कि–'वह महान् "गौ" सबका चलानेवाला, इस ब्रह्माण्डरूपी रथ को खींचनेवाला "बैल" कौन है ? और इस चराचर का ऋषि-द्रष्टा, एकमात्र अध्यक्ष कौन है ? इन सबको धारण करनेवाला क्या है ? सब पदार्थों पर शासन करनेवाली, सबको नियम में रखनेवाली शक्तिया कौन-सी हैं ? पृथिवी पर एकमात्र वरण करने और पूजन योग्य, एकमात्र ऋतु के साथ सवत्सर रूप काल, सब पदार्थों को परस्पर संगति कराने और व्यवस्थित करनेवाला, वह भी कौन-सा है ? इन प्रश्नों का उत्तर देते हुए अथर्ववेद के २६वें मन्त्र में कहा है–
एको गौ: एक ऋषिरेकं धामैकधाशिष:। यक्षं पृथिव्यामेकवृदेकर्तुर्नाति रिच्यते।।

वह एक परमात्मा ही इस चराचर को चलानेवाला एकमात्र महावृषभ है। वही एकमात्र सर्वाध्यक्ष है। वही सबका धारण करनेवाला, सबका आश्रित है। वह नियामक शक्तियां भी ब्रह्ममय हैं। पृथिवी पर सबसे श्रेष्ठ एकमात्र सबका प्रेरक प्राणरूप, व्यवस्थित करनेवाला वही एक परमात्मा है। उससे बढ़कर दूसरा कोई और नहीं।

इस प्रकार वह परमात्मा ही इस सारे सौर मण्डल का होता बनकर वर्ष, मास, तिथि, नक्षत्र, ऋतु राशि, उत्तरायण व दक्षिणायन रूप कालचक्र का संचालक है। इन सबमें वह परमात्मा यथासमय परिवर्तन एवं परिवर्धन करता रहता है। इस सौर मण्डल के कालचक्र का सचालक परमात्मा है। इस कालचक्र का विशेष ज्ञान एव उपदेश ऋग्वेद मण्डल १, सूक्त १६४, मन्त्र ४८ मे दिया गया है।

द्वादशप्रधयश्चक्रमेकं त्रीणि नभ्यानि क उ तच्चिकेत।
तस्मिन्त्साकं त्रिशता न शङ्कवोऽर्पिता षष्टिर्न चलाचलास ।।

प्रस्तुत मन्त्र का अर्थ महर्षि यास्क ने अपने ग्रन्थ निरुक्त मे अध्याय ४, पाद ४, पृष्ठ सख्या ३०२ पर इस प्रकार से किया है–**एक चक्रम्**–सवत्सर रूपी एक चक्र है, जिसमे **द्वादशप्रधय:**–बारह महीने १२ परिधिया हैं, **त्रीणि नभ्यानि**–तीन ऋतुए तीन नाभिया हैं, तत् क. उ **चिकेत**–उस चक्र को कौन पूर्णतया जानता है ? **तस्मिन् साकम्**–उस चक्र मे एक साथ, **त्रिशता**. शङ्कव न–शकुवो की तरह ३००, **षष्टि:**–और ६० अहोरात्र, **अर्पिता**.–लगे हुए हैं, **चलाचलास:**–जो सदा चलायमान रहते हैं। सवत्सर (वर्ष) के ३६० दिन होते हैं। यहा दिन और रात को मिलाकर गिनने से वर्ष ३६० दिन का होता है। इस विषय का विस्तार करते हुए महर्षि यास्क ऋग्वेद म० १, सू० १६४, मन्त्र ११ को पुन लिखते हैं–

द्वादशारं न हि तज्जराय वर्वर्ति चक्रं परिद्यामृतस्य।
आपुत्रा अग्ने मिथुनासो अत्र सप्तशतानि विशतिश्च तस्थु ।।

अर्थात् **द्यां परि**–सूर्य के चारो ओर पृथिवी के प्रदक्षिणा करने पर, **द्वादशारम्**–बारह महीनोवाले, आरो से युक्त, **ऋतस्य चक्र**–सवत्सरकाल का चक्र, वर्वर्ति–निरन्तर घूमता है। **न हि तत् जराय**–वह कालचक्र कभी क्षीण नहीं होता। **अग्ने ! हे विद्वान् !** अत्र–इस सवत्सर चक्र में, **सप्तशतानि विंशति न मिथुनास पुत्रा:**–७२० अहोरात्र रूपी दो पुत्र, **आतस्थु** –आस्थित हैं। मन्त्र का भाव इतना है कि पृथिवी सूर्य की प्रदक्षिणा करती है, उससे महीने तथा दिन रात आदि काल की उत्पत्ति होती है। यह वैज्ञानिक सिद्धान्त इस मन्त्र से विदित होता है। सवत्सर के दिन और रात ये यमक पुत्र हैं। ३६० दिन और ३६० रात्रिया । दिन और रात मिलकर ७२० हुये। मन्त्र का सरल अर्थ इतना ही है कि यह परमात्मा द्वारा सचालित कालचक्र कभी जीर्ण-शीर्ण नहीं होता। यह नियमित गतिवाला है। इस वर्तमान सृष्टि के चार अरब, बत्तीस करोड वर्ष तक यह नियमित रूप से गतिवाला रहेगा। इसके बारह मास रूप बारह चक्र हैं और दिन-रात रूपी ७२० पुत्र हैं। इसी १६४वे सूक्त का १२वा मन्त्र भी देखिये–

'पञ्चपादं पितरं द्वादशाकृतिं दिव आहु'

इस मन्त्र में आये **'पञ्चपादम्'** शब्द का अर्थ महर्षि दयानन्द, क्षण-मुहूर्त, प्रहर, दिवस, पक्ष करते हुए काल के भेदों का उल्लेख करते हैं।

महर्षि जी सत्यार्थप्रकाश मे **'क्षण'** की परिभाषा करते हुए लिखते है कि 'जितनी देर में परमाणु पलटा खाता है, उसको क्षण कहते हैं। उसी प्रकार समय निर्धारण के उत्तरोत्तर सयोग से घडी, पल, विपल या घण्टा, मिनट, सैकिण्ड का मान स्थापित किया गया है। अत इस वर्ष या सवत्सर चक्र मे बारह प्रधि-आरे हैं। महर्षि यास्क 'प्रधि' की व्युत्पत्ति करते हुए लिखते हैं–

(शेष पृष्ठ दो पर)

वैदिक-स्वाध्याय

अहो आश्चर्य ! पानी में मीन प्यासी

अपां मध्ये तस्थिवान्सं तृष्णाऽविदत् जरितारम्।

मृडा सुक्षत्र मृडय (ऋ० ७.८९.४)

शब्दार्थ–(**जरितारं**) मुझ स्तोता को (**अपा मध्ये तस्थिवांसं**) पानी के बीच मे **बैठे** हुए भी (**तृष्णा**) प्यास (**अविदत्**) लगी है। (**सुक्षत्र**) हे शुभशक्तिवाले ! (**मृड**) मुझे सुखी कर, (**मृडय**) सुखी कर।

विनय–हे प्रभो ! क्या तुम्हे मेरी दशा पर तरस नहीं आता ? संत लोग मेरे जैसो पर हस रहे हैं और कह रहे हैं "मुझे देखत आवत हासी, पानी मे मीन प्यासी।" सचमुच मैं तो पानी के बीच में बैठा हुआ भी प्यास से व्याकुल होरहा हू। तेरे करुणा-सागर मे रहता हुआ भी मैं दु खी हू, सतप्त हूं। जबकि तूने मेरी इच्छाओं को पूरा करने ही के लिये यह ससार ऐश्वर्यों से भर रखा है और तुम प्रतिक्षण मेरी एक-एक आवश्यकता को बडी सावधानी से ठीक-ठीक स्वय पूरा कर रहे हो, तब मुझे अपने मे कोई इच्छा या कामना रखने की क्या जरूरत है ? पर फिर भी न जाने क्यो मुझे अनेकों तृष्णाये लग रही हैं, सैकडो कामनाए मुझे जला रही हैं। हे नाथ ! मैं क्या करू ? इस विषम दशा से मेरा कौन उद्धार करेगा ? हे उत्तम शक्तिवाले ! मैं इतना अशक्त होगया हू–इतना निर्बल हू कि सामने भरे पडे हुए पानी से भी अपनी प्यास बुझा लेने मे असमर्थ हू। मैं जानता हू कि मुझे क्या करना चाहिए, किन्तु कमजोरी इतनी है कि उसे मैं कर नहीं सकता। हे सच्चिदानन्दरूप ! मैं देखता हू कि आत्मा मे सचमुच अपरिमित बल है, तो भी मैं उस बल को ग्रहण नहीं कर सकता। मैं जानता हूं कि मेरी आत्मा अमूल्य ज्ञान-रत्नो का भडार है, पर मैं इस रत्नाकार के बीच मे बैठा हुआ भी ज्ञान का भिखारी बना हुआ हू। मैं जानता हू कि तुम मेरे आनन्दमय प्रभु सर्वदा सर्वत्र हो, सदा मेरे साथ हो, पर फिर भी मैं कभी आनन्द नहीं प्राप्त कर पाता। अरे, मैं तो अमृत के सागर मे पडा मरा जारहा हू। तेरी अमृतमय गोद मे बैठा हुआ, स्वय अमृततत्त्व होता हुआ बार-बार मौत के मुह मे जारहा हू। हे नाथ ! अब तो मुझ पर दया करो, मुझे इस विषम अवस्था से क्षत्र–इतना बल–तो दे दो कि मैं सामने भरे पडे जल का सेवन तो कर सकू, इससे अपनी तृष्णा शान्त करके सुखी तो हो सकू। हे शक्तिवाले ! जिस तूने मुझे इस पानी के सागर मे रखा है वही तू मुझे इसके पीने का सामर्थ्य भी प्रदान कर जिससे कि मैं अपनी प्यास बुझाकर सुखी हो सकू। हे नाथ ! मुझे सुखी कर, सुखी कर, अब तो अपनी शक्ति देकर मुझे सुखी कर। यह तेरा स्तोता कब से चिल्ला रहा है, इसे अब तो सुखी करदे।

(वैदिक विनय से)

पुस्तक-समीक्षा

पुस्तक–महर्षि दयानन्द का कर्णवास प्रवास

सपादक–डा० भवानीलाल भारतीय, नन्दनवन, जोधपुर (राज०)

प्रकाशक–महर्षि दयानन्द स्मारक कर्णवास, जिला बुलन्दशहर (उ.प्र.)

मूल्य १० रुपये

महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन चरितों मे कर्णवास का प्रसग आता है, वहा प हीरावल्लभ शास्त्री से शास्त्रार्थ और राव कर्णसिह की तलवार के दो टुकडे करने की घटना भी अंकित है। किन्तु इस पुस्तक मे स्व० ठाकुर शेरसिह जी ने, जो इस सम्पूर्ण घटनाक्रम के प्रत्यक्षदर्शी थे, इस शास्त्रार्थ का तथा अन्य घटनाओं का जैसा वास्तविक रोमाचक और तथ्यपरक वर्णन किया है वैसा अन्यत्र नहीं मिलता।

महर्षि दयानन्द सरस्वती सवत् १९२४ वि से १९३३ वि (सन् १८६७ से १८७६ ई०) तक नौ वर्ष के अन्तराल मे १० बार कर्णवास में पधारे, प्रचार किया, यज्ञ करवाया, यज्ञोपवीत दिये और गायत्री मत्र एव सन्ध्या यज्ञ करना सिखाया। विशेषतया वहा के ठाकुरो को सस्कारित किया।

डा शेरसिह जी के पुत्र ठाकुर गवेन्द्रसिंह द्वारा लिखित कर्णवास सम्बन्धी सस्मरण भी उपयोगी हैं। कर्णवास स्थित महर्षि दयानन्द स्मारक का इतिहास भी इस पुस्तक मे लिखा गया। पुस्तक अत्यन्त रोचक और प्रेरणादायक है। बुलन्दशहर (उ०प्र०) जानेवाले आर्यो को कर्णवास जाकर इस स्मारक के भी दर्शन करने चाहिएं।

पुस्तक के सम्पादक और प्रकाशक एतदर्थ बधाई के पात्र हैं।

–वेदव्रत शास्त्री

(पृष्ठ एक का शेष) **मकर संक्रान्ति-पर्व का महत्त्व एवं रहस्य**

'**प्रधि: प्रहितो भवति प्रहित: प्रश्लिष्य चक्रे निहित:**' अर्थात् जो सयुक्त करके चक्र मे सस्थापित है। इसी मानदण्ड के अनुसार १२ घण्टे का एक दिन अथवा २४ घण्टे का एक अहोरात्र होता है। सात दिन का एक सप्ताह, पन्द्रह दिन का एक पक्ष ज्योतिषशास्त्र मे बताया गया है। ३० दिन का एक मास, १२ मासों का एक वर्ष।

अब बारह मासों का विवरण भारतीय ज्योतिषशास्त्र की परम्परानुसार **कुछ नक्षत्रों से सम्बन्धित करते हुए देते हैं**–

१ चैत्र-चित्रा नक्षत्र से सम्बन्ध। २ वैशाख-विशाखा नक्षत्र से सम्बन्ध। ३. ज्येष्ठ-ज्येष्ठा नक्षत्र से सम्बन्धित। ४ आषाढ-आषाढानक्षत्र से सम्बन्ध। ५. श्रावण-श्रवणा नक्षत्र से। ६. भाद्रपद-भाद्रपदा से। ७ आश्विन-अश्विनी से। कार्तिक-कृत्तिका से। ९ मार्गशीर्ष-मृगशिरा से। १० पौष-पुष्य से। ११ माघ-मघा से। १२ फाल्गुल-फाल्गुनी नक्षत्र से सम्बन्धित है। इन बारहमासों की नक्षत्रो समेत सत्यता सार्वभौमिक है। अथर्ववेद के अनुसार नक्षत्र २८ होते हैं। उनमें कुछो को छोड़कर लिखा गया है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के सृष्टिविद्याविषय मे ऋतुओं के बारे में यजुर्वेद के ३१-१४ के मन्त्र '**यत्पुरुषेण हविषा देवा०**' अर्थात् परमात्मा ने उत्पन्न किया है। जो यह ब्रह्माण्ड रूप यज्ञ है इसमें वसन्त ऋतु अर्थात् चैत्र और वैशाख घृत के समान हैं। ग्रीष्म ऋतु जो ज्येष्ठ और आषाढ ईधन है। श्रावण और भाद्रपद वर्षा ऋतु। आश्विन और कार्तिक शरद ऋतु। मार्गशीर्ष और पौष हेमन्त ऋतु। माघ और फाल्गुन शिशिर ऋतु कहलाती है। यह इस यज्ञ मे आहुति है। इस प्रकार दो-दो महीनो मे एक ऋतु होती है। यजुर्वेद के अध्याय २४, मन्त्र ११ मे भी छ ऋतुओ का विषय वर्णन किया गया है, वहा देख ले।

राशिया १२ होती हैं। जैसे–१ मेष,२ वृष, ३ मिथुन, ४ कर्क, ५ सिह, ६ कन्या, ७ तुला, ८ वृश्चिक, ९ धनु, १० मकर, ११ कुम्भ, १२ मीन। आकाशस्थ प्रत्येक नक्षत्र की आकृति 'राशि' कहलाती है। जब पृथिवी एक राशि से दूसरी राशि मे सक्रमण करती है तो उसको 'सक्रान्ति' कहते हैं। छ मास तक सूर्य क्रान्तिवृत्त से उत्तर की ओर उदय होता रहता है और छ मास तक दक्षिण की ओर निकलता रहता है। प्रत्येक छ. मास की अवधि का नाम 'अयन' होता है। सूर्य के उत्तर की ओर उदय की अवधि को 'उत्तरायण' और दक्षिण की ओर उदय की अवधि को 'दक्षिणायन' कहते हैं।

इसे ऐसे समझ लीजिए–सूर्य २३ जून से २२ दिसम्बर तक छ महीनो तक दक्षिणायन मे रहता है और २३ दिसम्बर से २२ जून तक छ मास तक उत्तरायण मे रहता है। सूर्य उत्तरायण काल मे अपनी रश्मियो से जल आकर्षण करके उन्हे अन्तरिक्ष मे धारण करता रहता है और जब वह दक्षिणायन की ओर जाने लगता है तभी वर्षा ऋतु आरम्भ होती है। दक्षिणायन मे रात्रि बढती जाती है और दिन घटता जाता है। सूर्य की मकर राशि की सक्रान्ति से उत्तरायण और कर्क राशि की सक्रान्ति से दक्षिणायन शुरु होता है। सूर्य के तेज प्रकाश के कारण उत्तरायण का विशेष महत्त्व माना जाता है। इन दोनो की चर्चा अथर्ववेद के काण्ड ८, सूक्त १, मन्त्र १७ में भी की गई है–'**षडाहु: शीतान् षडु मास उष्णान् ऋतुं नो ब्रूत यतमोऽतिरिक्त.**' अर्थात् इन छ मासो को शीत कहते हैं और छ मासों को उष्ण कहते हैं तो बताओ, इनमे कौन बडा है ? आगे मन्त्र में उत्तरायण को ही उष्ण होने के कारण बडा महत्त्व दिया गया है। पितामह भीष्म भी तो उत्तरायण काल में ही ससार से विदा हुए थे। उत्तरायण सुखदायक है, इसलिए ही उत्तरायण से आरम्भ दिवस पर मकर की सक्रान्ति को ही अधिक महत्त्व दिया गया है। मकर सक्रान्ति के २२ दिन पूर्व धनुराशि के ७ अंश, २४ कला पर उत्तरायण होता है। आज १४ जनवरी २००२ को मकर सौर संक्रान्ति का महापर्व धूमधाम से मनाना चाहिये। यह थोडा-सा संक्रान्ति पर्व के विषय में महत्त्व व रहस्य लिखा। अलमति विस्तरेण।

कैसे मनायें–प्रार्थना उपासना के मन्त्रों व स्वस्तिवाचन, शान्तिकरण के मन्त्रोच्चारण पश्चात् बृहद् यज्ञ करें। यजुर्वेद अध्याय १४, मन्त्र २७ तक व यजु० अ० १५, मन्त्र ५ तक मन्त्रों से विशेष आहुतियां दें। तिलों के बने लड्डू खावें, तिल के तेल के प्रयोग करें। तूल, रूई, रिजाई से जाड़ा दूर करें। नई बहुएं अपने जेठ, देवर, स्वसुरों को कम्बल भेंट में दें और आशीर्वाद लें। यज्ञ हवन के पश्चात् शान्तिपाठ। परमात्मा की जय। महर्षि दयानन्द की जय। ओ३म् शम्।

जब दीवारें भी बोलने लगेंगी

–सन्तोष कण्व

बोलो ! बोलना भी एक कला है। बोलने के ढंग हैं। वक्त के हर दौर में बोलना पडता है। जीवन में कुछ ऐसे मोड भी आते हैं, जब चुप रहना एक अपराध बन जाता है–

जो चुप रहेगी जुबाने-खंजर।
लहू पुकारेगा आस्तीं का।।

बहरों को सुनाने के लिए भगतसिंह नेशनल असेम्बली में बम का धमाका करता है। साफ शब्दों मे अपनी बात कहता है। कुछ मंच पर खडे होकर बोलते हैं। कुछ धीरे से कान मे बोलते हैं। कुछ चुपचाप बोलते हैं। कुछ मुह से नहीं हाथ से बोलते हैं। कुछ लात से बोलते हैं। कुछ के चेहरे बोलते हैं। कुछ की आंखें बोलती हैं। ढग कोई भी हो, बोलना सीखना पडता है।

धीरे बोले या जोर से, सुननेवाले सुन ही लेते हैं। कहावत है–दीवारो के भी कान होते हैं। कान तो कान, जुबान भी होती है। जी हां ! दीवारे भी बोलती हैं। हिसाब सीधा है–जो सुनता है, वह बोलता भी है। बहरा ही गूंगा होता है। गूंगा बहरा एक साथ ! मानो कान और जिह्वा का जोडा हो।

आपके चारों ओर दीवारे हैं दीवारे ही दीवारें ! चीख रही हैं ! चिल्ला रहीं है ! रगी पडी हैं-दीवारे ! 'शादी के पहले और शादी के बाद', मर्दाना ताकत का राज खोल रही हैं-दीवारे ! आप स्वयं देखिए ! दीवारों को पढिए। सोचिए-समझिए !

दीवारे तो दीवारें ठहरीं, दीवारो का क्या ! जैसा बुलवाओगे, वैसा बोलेगी। बोलना भी सिखाना पडता है। चाहें तो आप भी सिखा सकते हैं। दीवारों से बुलवा सकते हैं। वे तो बेचारी तैयार हैं, बोलने को, कोई बुलवाने वाला चाहिए।

तो आइए ! कुछ रंग घोलिए ! अधिक नहीं तो गेरु और कालिख ही ले लीजिए। घुला हुआ चूना भी चलेगा। खडिया और गेरु की डेली भी काम देगी। टिकाऊ घोल बनाना है, तो शीरा या सरेस में बनाइए। न ज्यादा पतला न ज्यादा गाढ़ा। डिब्बों में भरिए और उठाइए–कूर्चिका (ब्रुश)। न हो तो लीजिए, किसी वृक्ष की लकड़ी। एक सिरे से थोडा कुचल लीजिए। बस, आपका ब्रुश तैयार !

सड़क पर आइये ! दीवारें आपके सामने हैं। लिखिए– सडे हो या मडे-कभी न खाओ अंडे।

जी हां ! यही तो जवाब है-सरकारी प्रचार का। वह रोज खिला रही है। न खानेवालों को प्रोत्साहित कर रही है–

सडे हो या मडे-रोज खाओ अंडे।

आप मारो डंडे। अडे भी फूटेंगे और खिलानेवाले मुसटंडे भी ! मुकाबला करना पड़ेगा। माना, कि विशाल प्रचार-तत्र है–सरकार का ! आपके साधन सीमित हैं। लेकिन महत्त्व साधनों का नहीं, इरादो की नेकी और बदी का है। संकल्प की दृढता का है। सीधे न भिड सको तो ऐसे भिडो–

अंडे खाओ रोग बढ़ाओ।
जल्दी अपनी मौत बुलाओ।।

मरने दो खानेवालो को ! कुछ खा-खाकर मरेंगे तो कुछ पी-पीकर ! जिसने मरने का निश्चय ही कर लिया हो, उसे बचा भी कौन सकता है ! पीने वालो का क्या, उन्हें तो बस बहाना चाहिए। आप भी कोई बहाना ढूढिए और चुपचाप अपना काम कीजिए–

बाप पियेंगे दारू,
बच्चे लगायेंगे झाड़ू।

गरीबों की बस्ती मे दारू सस्ती मिलती है, लेकिन दारू की मस्ती कितनी सस्ती है, यह तो बस्ती के घर ही बताते हैं। आपको बताना नहीं, दीवार पर लिख देना है–

बाप शराब पीते हैं,
बच्चे भूखे मरते हैं।

आशा मत छोडिए। बाप नहीं बदलेंगे तो उनके बच्चे बदलेंगे। घर की हालत देखकर शराब से दूर रहेंगे। आपके आन्दोलन मे साथ रहेंगे। भ्रष्टाचार से त्रस्त देश को आप चाहे तो सचेत कर सकते हैं–

बोतल में डूबी सरकार।
क्यों न फैले भ्रष्टाचार।।

शराब पीनेवाले अपना घर लुटाते हैं–शराबी शासन और प्रशासन पूरा देश लुटा देता है। खुद भी लुटता है-औरों से भी लुटवाता है। इसीलिए देश कंगाल हो रहा है। कर्ज के समुद्र में डूब रहा है। सारा वैभव नष्ट हो रहा है। अब बात, बातों से नहीं बनेगी। समग्र समाज को आन्दोलित होना होगा। शराब के विरुद्ध खड़ा होना होगा। शराब पिलाकर देश को नष्ट और जनता को भ्रष्ट करनेवाली सरकारों का अन्त करना होगा। आपको तो बस एक आवाज देनी है–

मिल के सब आन्दोलन छेड़ो।
पीनेवालो शासन छोडो।।

यह आवाज हर शहर और गाव से उठनी चाहिए। शराब के विरुद्ध आवाज। शराब के ठेको के विरुद्ध आवाज। इसके लिए प्रचण्ड जन आन्दोलन का आह्वान करना होगा। माध्यम बनेंगी दीवारे ! जहा भी जगह मिले, बस यह लिख दीजिए–

शहर-गांव आन्दोलन छेड़ो।
ठेके तोड़ो-बोतल फोडो।।

ठेके भी टूटेगे। बोतल भी फूटेगी। तोड-फोड के बिना काम नहीं बनेगा। शराब रहेगी या घर रहेगा। दोनो एक साथ नही रह सकतीं। अच्छे-अच्छे घर शराब की भट्टी ने ही उजाडे हैं। इस बरबादी को रोकना है, तो यही आह्वान करना होगा–

जिसने फूका है घर बार।
उस भट्टी को फूंको यार।।

शराब की भट्ठिया बन्द कराने का सकल्प, जन-जन का सकल्प बन जाए, बच्चो, युवको और महिलाओं का सकल्प बन जाए, इसके लिए हर गाव और बस्ती की दीवार पर यह गूजना चाहिए–

घर-घर अलख जगायेंगे।
भट्टी बन्द करायेंगे।।

शराब के विरुद्ध महात्मा गाधी द्वारा छेडा गया सघर्ष एक बार फिर सडको पर आना चाहिए और गांधी का नाम लेकर सत्ता सुख भोगने वालो की नींद हराम हो जानी चाहिए। गाधी का नाम और शराब का व्यापार अब साथ-साथ नहीं चलेंगे। आज सवाल एक भट्ठी का नहीं है, यहा तो नशे का पूरा जाल है, जिसे तार-तार करना है ! लोगों को प्यार से समझाना है–

चरस स्मैक भांग और गांजा।
इनसे बचकर रहना राजा।।

प्यार से समझाइए भी, साथ ही कुछ मांगे भी उठाते जाइए–

शराब का उत्पादन बन्द करो।

शराब पीकर गाडी चलानेवाले आए दिन सड़को को लाल कर देते हैं। किसी के हाथ-पैर तोडते हैं, तो किसी को सीधे ही दुनिया से विदा करते हैं। पूर्ण नशाबन्दी की लडाई तो लम्बी है। जीतने में समय लग सकता है। अत: बीच बीच में मांग करते रहने के अपने लोकतान्त्रिक अधिकार का उपयोग करना मत छोडिए–

शराबी ड्राइवरों के लाइसेंस जब्त करो।

माग के साथ-साथ जनता को भी सचेत करते रहिए। शराब शरीर को नष्ट और बुद्धि को भ्रष्ट करती है।

सब जानते हैं कि शराब पीकर आदमी कभी-कभी तो पशुओ को भी मात कर देता है। तीन-तीन वर्ष की बच्चियो से बलात्कार कर उनकी हत्या करने की घटनाए शराबी मनुष्यो के समाज मे ही घटती हैं, पशुओं में नहीं–आपका काम स्मरण कराते रहना है–

शराब मनुष्य को शैतान बनाती है।

क्योंकि–

दारू अन्दर-बुद्धि बाहर।

लोग चाहते हैं कि शराब बन्द हो पीने वाले नहीं, तो उनके घर वाले चाहते हैं। न पीने वाले तो साथ हैं ही। सवाल साहस का है–शासन से भिडने का साहस ! जो आज सकोच कर रहे हैं, कल भिड जाएगे। आज इतना लिख दीजिए–

जन जन की उठती आवाज।
दारू करती सत्यानाश।।

अब सत्यानाश तो लाटरी भी कर रही है। दौलत के सपने दिखाकर कगाल कर रही है। मुह की रोटी छीन कर सल्फास की गोलिया खिला रही है। अच्छे-भले लोगो को फासी पर लटका रही है। आपका काम लिखना है–

लाटरी का धन्धा-फांसी का फन्दा।

घर तो बरबाद हो ही रहे हैं। दीवारों के माध्यम से बताना काम आपका है–

लाटरी ने क्या किया।
सारा घर बरबाद किया।।

जिसने दिन का चैन और रात की नींद उडा दी हो उसके विषय मे सवाल भी आप ही पूछिए और जवाब भी आप ही दीजिए–

घर की दौलत कहां गयी।
लाटी में फूक दयी।।

छल-प्रपच का यह मायाजाल इतना आसानी से नहीं कटेगा। इसके लिए तो जनता जनार्दन का आह्वान करना पडेगा–

लाटी एक धोखा है।
मारो धक्का मौका है।।

सब मिलकर धक्का मारेंगे, तब जाकर यह धन्धा बन्द होगा, नहीं तो इसी तरह लालच में अन्धे लोगों के गले का फन्दा बनता रहेगा।

(क्रमश:)

गुरुकुल में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस श्रद्धापूर्वक सम्पन्न

कुरुक्षेत्र। निर्भीक स्वतत्रता सेनानी व गुरुकुल शिक्षा पद्धति के पुनरुद्धारक अमरशहीद स्वामी श्रद्धानन्द के ७५वे बलिदान दिवस के उपलक्ष्य मे गुरुकुल कुरुक्षेत्र के प्रागण मे एक भव्य समारोह आयोजित किया गया। इस समारोह की अध्यक्षता आर्यसमाज सगरूर (पजाब) के सरक्षक महाशय वीरेन्द्र ने की तथा विशिष्टअतिथि के रूप मे भारतीय खाद्य निगम सगरूर (पजाब) के प्रबन्धक मनोहरलाल अरोडा व मुख्यातिथि के रूप मे पुण्डरी (कैथल) के विधायक चौ० तेजवीरसिह उपस्थित थे।

इस अवसर पर महाशय वीरेन्द्रसिह ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे कहा कि अमरहुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द महान् व्यक्तित्व के धनी थे। उन्होने अग्रेजो से बगावत करके अपने साहसिक व्यक्तित्व का परिचय दिया था। उन्होंने स्वामी श्रद्धानन्द को शाति का दूत बताते हुए कहा कि वे एक महान् शिक्षाशास्त्री थे। उनके करकमलो द्वारा की गई १९०२ मे गुरुकुल कागडी व १९१२ मे गुरुकुल कुरुक्षेत्र की स्थापना विश्व इतिहास मे महानतम घटना के रूप मे उल्लेखनीय है। उन्होने कहा कि ये दोनो गुरुकुल उनके जीवन की सर्वोत्कृष्ट कृति हैं। गुरुकुल शिक्षाप्रणाली के प्रवर्तन मे उनका योगदान चिरस्मरणीय है। उन्होने कहा कि ऐसा निर्भीक, सैद्धान्तिक व्यक्तित्व वास्तव में ही अनुकरणीय है। इस अवसर पर उन्होने गुरुकुल कुरुक्षेत्र को ११,०००/- रुपये भी भेटस्वरूप दिए।

मुख्यातिथि के रूप में उपस्थित पुण्डरी (कैथल) के विधायक तेजवीरसिह ने अपने उद्बोधन मे कहा कि मानव अपने कर्मो से महान् बनता है न कि जन्म से। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण स्वामी श्रद्धानन्द जी थे। वे समर्पण, त्याग और श्रद्धा की विलक्षण प्रतिमूर्ति थे। त्याग, समर्पण और साहस की ऐसी मिशाल विश्व इतिहास के पन्नो मे दुर्लभ है। उन्होने अपना पुत्र, धन, वैभव, सुख सब कुछ मानवता को अर्पित कर दिया। वे अपने जीवन की शहादत की अतिम घडियों तक साहस और कर्मयोग की अनुपम मूर्ति बने रहे। उन्होंने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा बताए गए मार्ग पर चलें, यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धाजलि होगी।

उन्होने अपने करकमलो से स्वामी श्रद्धानन्द जी के परम स्नेही व सेवक धर्मसिह गाव मिर्जापुर (कुरुक्षेत्र) की पत्नी श्रीमती तुलसीदेवी को शाल ओढाकर तथा विभिन्न प्रतिस्पर्धाओं में उल्लेखनीय प्रदर्शन व कीर्तिमान स्थापित करनेवाले गुरुकुल के छात्रो को आशीर्वाद व पारितोषिक देकर सम्मानित किया।

इस समारोह मे गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने अमरशहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी के बहु-आयामी जीवन चरित्र, व्यक्तित्व और योगदान पर भाषण व गीत प्रस्तुत करके सभी श्रोताओ को मत्रमुग्ध कर दिया। इनमें बडी सख्या मे नगरवासी, अध्यापकवृन्द, ब्रह्मचारी तथा उनके अभिभावकगण उपस्थित थे। गुरुकुल प्रबन्ध समिति ने अध्यक्ष, मुख्यातिथि व विशिष्टअतिथि को स्मृति चिन्ह व उपहार भेट कर सम्मानित भी किया।

—प्राचार्य, गुरुकुल कुरुक्षेत्र

ऋग्वेद पारायण महायज्ञ व वैदिक सत्संग सम्पन्न

बाबा हरिदास लोकसेवा मण्डल झाडौदा कला, नई दिल्ली ७२ के तत्त्वाधान में मल्लाह तीर्थ पर भव्य यज्ञशाला का उद्घाटन २१ दिसम्बर २००१ को आचार्य बलदेव जी महाराज प्रधान हरयाणा गोशाला सघ गुरुकुल कालवा (जीन्द) हरयाणा के करकमलो द्वारा हुआ। तदुपरान्त स्वामी वेदरक्षानन्द जी सरस्वती के ब्रह्मत्व में २१ दिसम्बर से प्रारम्भ होकर ३० दिसम्बर को पूर्णाहुति हुई। इस यज्ञ मे छ मन घृत लगाया गया। जिसमे इस क्षेत्र के विधायक श्री कवलसिह जी यादव तथा क्षेत्रीय जनता ने सामग्री की आहुतिया प्रदान की। २८-२९ व ३० दिसम्बर को विशेष उत्सव मनाया गया। जिसमे स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज, आचार्य राजसिह जी (दिल्ली), आचार्य हरिदत्त जी गुरुकुल लाढौत रोहतक, श्री ओमप्रकाश जी मुख्याध्यापक (पानीपत), श्री लक्ष्मणसिंह जी बेमोल (रुडकी), श्री रामरख जी आर्य (भिवानी) आदि के उपदेश तथा वेदप्रचार हुआ।

मच का सचालन आचार्य चेतनदेव जी "वैश्वानर" भैया चामड, अलीगढ (उ०प्र०) ने किया। ३० दिसम्बर को गुरुकुल लाढौत के ब्रह्मचारियों द्वारा कार रोकना, जजीर तोडना, दण्ड-बैठक आसनादि का अद्भुत व्यायाम प्रदर्शन हुआ। जिसका क्षेत्र पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ा।

—पं० अनिलकुमार आर्य, झाडौदा कलां, नई दिल्ली-७२

सूचनार्थ निवेदन

आर्यजगत् मूर्धन्य विद्वान् संन्यासी स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती बहुत समय से बीमार चल रहे हैं। वे इस समय लिखने और पढने मे असमर्थ हैं। उनके पास आर्यजगत् से सिद्धान्त, परम्परा, इतिहास और आर्यसमाज सम्बन्धी जानकारी के लिए लोग सूचना मागते हैं। वे पत्रोत्तर देने मे असमर्थ हैं। अत जो भी सज्जन उनसे किसी तरह की जानकारी चाहते हैं उनसे व्यक्तिगत मिलकर प्राप्त कर सकते हैं।

उनका पता है : डी. १४/१६ माडल टाऊन, दिल्ली-६

निवेदक - महेश विद्यालकार

उपदेशकों तथा भजनोपदेशकों की आवश्यकता

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को सुयोग्य उपदेशक तथा प्रभावशाली भजनमडलियों की तुरन्त आवश्यकता है। उपदेशक पद के इच्छुक उम्मीदवार को वैदिक सस्कार करवाने तथा प्रवचन करने का अभ्यास होना चाहिए तथा भजनोपदेशक पद के उम्मीदवार को ग्रामों तथा शहरो मे प्रभावशाली ढग से प्रचार करने का अनुभव होना आवश्यक है। अपने आवेदन पत्रों के साथ अपनी शिक्षण योग्यता, आयु तथा अनुभव आदि का विवरण लिखे। वेतन योग्यता के अनुसार दिया जावेगा।

—आचार्य यशपाल, मत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक

भल्लेराम आर्य सेवानिवृत्त

भल्लेराम आर्य ने मैनेजर पद से पाठ्यपुस्तक भडार के कार्यालय में यज्ञ करके ३१ दिसम्बर २००१ को सेवानिवृत्ति पर विदाई ली। यज्ञ पर कार्यालय के सभी कर्मचारी पुस्तक विक्रेता दुकानदार भलेराम के सम्पर्क तथा आर्यसमाज साघी के सदस्य उपस्थित थे। यज्ञ के ब्रह्मा गुरुकुल सिघपुरा के आचार्य सत्यव्रत थे। आचार्य ने ईश्वरस्तुति प्रार्थना उपासना पर प्रकाश डाला। यज्ञ के बाद कार्यालय के कर्मचारियों ने आर्य जी को एक साफा, बैंत, चद्दर, सूटकेश देकर सम्मानित किया। आर्यसमाज साघी ने भगवा पगड़ी बाधकर सम्मानित किया। भलेराम जी ने भी यज्ञ पर आनेवाले सभी सदस्यों को एक कलेण्डर जिसमे स्वामी दयानन्द का चित्र व आर्यसमाज के नियम व आर्य जी का परिचय छपा हुआ था और साथ में एक-एक व्यवहार भानु के साथ चाय-पानी पिलाकर सभी का धन्यवाद किया।

—ओमप्रकाश आर्य, मंत्री, आर्यसमाज सांघी

आर्यसमाजों के उत्सवों की सूची

राष्ट्रीय गोशाला घडौली जिला जीन्द	१४ जनवरी २००२
आर्यसमाज औरगाबाद मित्रोल जिला फरीदाबाद	१-३ फरवरी २००२
श्रीमद्दयानन्द गुरुकुल विद्यापीठ गदपुरी जि फरीदाबाद	१५-१७ मार्च २००२

—सभामंत्री

ऋषि दयानन्द की संक्षिप्त जीवनी

प्रतापसिंह शास्त्री, एम ए पत्रकार, गोल्डन विहार, गंगवा रोड, हिसार

(गतांक से आगे) **वेदारम्भ संस्कार**

पाच वर्ष की आयु में बालक मूलशंकर का वेदारम्भ सस्कार किया था। पिता ने चाखडी से (बत्ती व स्लेट) कृष्ण वर्ण के प्रस्तर पर मूलशकर के हाथ से स्वर और व्यंजन वर्ण (दिवनागरी) लिखवाये थे। इसी उपलक्ष्य मे पूजा-पाठ और ब्राह्मण भोजन हुआ था। पौराणिक ब्राह्मणो को भोजन के साथ-साथ दान दक्षिणा भी दीगई थी। सम्वत् १८८५ विक्रमी (लगभग सन् १८२९-३०) में पाच वर्ष की अवस्था से अक्षर, अभ्यास कुलधर्म, रीति, नीति तथा मन्त्र श्लोक आदि की शिक्षा दीगई थी। यह शिक्षा पाच वर्ष की आयु होने से पूर्व ही प्रारम्भ कर दीगई थी। दादाजी, पिताजी, चाचाजी, माताजी आदि कुल परम्परागत धर्माचरण के साथ-साथ धर्मशास्त्र पाठ और भिन्न स्तवन श्लोक, मन्त्र, रामायण, महाभारत, पुराण, उपपुराण आदि से कहानिया आदि याद कराने लगे। इस रूप से तीन वर्ष बीत गये थे। स्वामीजी ने सस्कृत की अपनी आत्मकथा में कलकत्ता में आगे कहा था–"मेरे अपर भ्राताओ को भी इस रूप की शिक्षा दी जाती थी। मेरी बहनों के लिए इस रूप की शिक्षा-दीक्षा का कोई प्रबन्ध न था। हम माताजी के पास भाई-बहन सब मिलकर महाभारत और रामायण की कहानियां सुना करते थे। मेरी माताजी ने बोल दिया था कि लडकियो के लिये लिखना पाप है और पढ़ना पुण्य है। गुरुजनो के प्रति अतिथियो के प्रति कैसे व्यवहार होने चाहिये, माताजी और पिताजी हम सब भाई-बहनो को यह शिक्षा देते थे। घर मे हमको तीन वर्ष में इस रूप की कुल परम्परागत धर्म की और व्यवहार की शिक्षा मिल गई थी।

यज्ञोपवीत संस्कार

सम्वत् १८८८ विक्रमी (सन् १८३२ ई० मे) आठवे वर्ष मे बालक मूलशकर का यज्ञोपवीत सस्कार हुआ था। इसके उपलक्ष्य मे एक सौ वेदपाठी औदीच्य ब्राह्मणो को आमन्त्रित किया गया था। इन ब्राह्मणो ने एक दिन पहले ही आकर प्रारम्भिक यज्ञ और वेदपाठ आरम्भ कर दिया था। पिता ने मूलशकर के लिये सोने का तीन तार वाला यज्ञोपवीत बनवाया था। प्रत्येक ब्राह्मण को भोजन के बाद एक-एक कपडा, लोटा और दस-दस रुपये दक्षिणा दीगई थी। यज्ञोपवीत सस्कार के बाद बालक मूलशकर को १० दिन के लिए घर मे बन्द रहना पडा था। यह १० दिन का समय गायत्री मन्त्र के जप मे और सन्ध्योपासना मे ही बीता था। इस दिन के बाद यज्ञोपवीत धारण करके बाहर निकलने पर बालक मूलशकर की झोली मे कुछ न कुछ भिक्षा (भेट) स्वरूप सबने दिया था। बडौदा और पूना के दो राजकर्मचारी भी पिता कर्षन तिवारी के बन्धुओ के रूप में इस यज्ञोपवीत सस्कार मे उपस्थित थे। इन दोनो ने कर्षन तिवारी के साथ ही बालक मूलशकर की झोली में कई एक मोहरे डाली थीं। माता यशोदाबाई ने फल और कच्चे चावल डाले थे। यज्ञोपवीत सस्कार के बाद प्रतिदिन तीन बार सन्ध्योपासना करने के उपदेश आदेश थे। साथ ही गायत्री मन्त्र का जप करने का उपदेश था। पिता कर्षन तिवारी ने स्वय मूलशकर को रुद्राध्याय की शिक्षा के साथ-साथ समग्र शुक्ल यजुर्वेद पढाना आरम्भ कर दिया था। सभी प्रकार की उपलब्ध आत्मचरित्र से सम्बन्धित सक्षिप्त व विस्तृत जीवनियों मे स्वामीजी ने स्वीकार किया है–"मैंने दो वर्ष के अन्दर शुक्ल यजुर्वेद और शेष तीन वेदो के चुने हुए अंशों को कण्ठस्थ कर लिया था। इसके बाद पिताजी ने शिवपूजा की नियमविधि व्यवस्था की शिक्षा दी थी। शिवपूजा के लिए भिन्न-भिन्न उपासना, व्रतधारण और उपवास आदि की भी शिक्षा दी जाती थी। हमने स्वय शिवपूजा करना शुरु कर दिया था।

दादा लालजी तिवारी का देहान्त

बालक मूलशकर जब ९ वर्ष के हुए तब उनके पितामह (दादाजी) की मृत्यु होगई थी। घर के सब आदमी रोते थे। शोक का वातावरण था। पौराणिक विधि से तत्कालीन प्रथा अनुसार क्रिया, कर्म, पिण्डदान, ब्राह्मणभोज आदि आदि सब हुआ था लेकिन बालक मूलशंकर को मृत्यु का विशेष आभास अथवा मृत्यु के सम्बन्ध में विशेष जिज्ञासा अभी नहीं हुई थी। हां, मृत्यु क्या है ? इसके कुछ संस्कार अवश्य हृदयपटल अंकित होने लगे थे।

विधिवत् शिवपूजा का आग्रह

अब बालक मूलशंकर को दसवां वर्ष लग गया। पिता चाहते थे कि बालक नियमानुकूल उपवास करना, शिवरात्रि का व्रत धारण करना, कथा का श्रवण करना, रात्रि जागरण करना, पार्थिव पूजन करना आदि सीखकर पक्का शैव बन जाए। परन्तु विष्णुभक्त माता इस शीघ्रता का विरोध करती थी। इस धार्मिक प्रथा को लेकर कभी-कभी माता-पिता मे कलह हो जाती थी। पिताजी मूलशकर को वेदमन्त्रो के अतिरिक्त व्याकरण की भी शिक्षा देते थे। मन्दिर मे पूजा के लिए तथा लोगो मे मेल-मिलाप करने के समय जहा-तहा मूलशकर को साथ लेजाया करते थे। कहा करते थे कि शिव की पूजा उपासना सबसे श्रेष्ठ है। इस प्रकार की खींचातानी मे मूलशकर की अवस्था १४ वर्ष होगई। इस अवस्था तक सम्पूर्ण यजुर्वेद कण्ठस्थ होचुका था।

ऐतिहासिक शिवरात्रि व्रत बनाम बोधरात्रि

पिता कर्षन तिवारी ने पुत्र मूलशकर को सम्वत् १८९४ विक्रमी (सन् १८३८-३९) मे १४ वर्ष की आयु मे शिव चतुर्दशी का व्रत धारण के लिये आदेश दिया कि इसके लिये कठोर उपवास करना है। मूलशकर की माता ने प्रतिवाद किया था। इस विषय मे माता और पिता के अन्दर कलह (विवाद) विसम्वाद शुरु होगया था। माताजी ने पराजय स्वीकार किया था और मूलशकर ने शिवपूजन के लिये व्रत धारण कर लिया था। पिताजी ने कहा था कि शिवरात्रि को चार प्रहर तक जागते हुए चार बार पूजा करने से शिवजी स्वय आकर दर्शन देगे। मूलशकर परम श्रद्धा-भक्ति के साथ पूजा के लिए तैयार होगया तथा जगत् के प्रलयकर्त्ता शिवजी के दर्शन के लिए लालायित होगया था। मूलशकर की माता इस सौभाग्य से वचित करना चाहती थी इसलिए मूलशकर ने माताजी की बाते नहीं सुनी और शिवपूजा के लिए सब कष्ट सहन करने के लिए उद्यत होगया।

गुजरात प्रान्त के महाराष्ट्र के शासनाधीन होने से वहा महाराष्ट्र प्रान्त के सर्वप्रधान धर्म शैव मत का व्यापक प्रचार था। बिट्ठलरावदेव जी ने सारे गुजरात प्रान्त मे सैकडो शिव मन्दिरो की स्थापना की थी। मूलशकर के पिताजी ने पास स्थित नदी के किनारे कई शिव मन्दिर बनवाये थे। मूलशकर के पूर्वजो ने कुल के नियम बनाये थे कि उनके कुल मे उत्पन्न होनेवाले पुत्रो को पाच वर्ष की वय मे ही देवनागरी अक्षर का परिचय, वर्णमाला का लेखन और पठन की शिक्षा पूरी होनी चाहिये। ८ वर्ष की वय मे यज्ञोपवीत सस्कार होने के साथ ही वेदाध्ययन और मृण्मय शिवलिग पूजा का अभ्यास शुरु होना चाहिये। १४ वर्ष की आयु मे शिव चतुर्दशी के उपलक्ष्य मे व्रतधारण करके शिवपूजा की दीक्षा लेनी चाहिये। मूलशकर के पिता इस कुल धर्म के अनुसार मूलशकर के जीवन को बनाना चाहते थे लेकिन माता यशोदाबाई मूलशकर को बच्चा समझकर शिवपूजा तथा उपवास रखना आदि को कष्टदायक मानते हुए इन बातो से सहमत न थी तथा मूलशकर के उद्यत होजाने पर भी चिन्तित थी। बालक मूलशकर को व्रत धारण करने के माहात्म्य को सुनकर वह बहुत ही रुचिकर मालूम हुआ था। नगर से बाहर नदी के किनारे बने हुए शिव मन्दिर मे पूजा करने और दर्शन के लिए रात्रि को बहुत जनसमुदाय एकत्र होने लगा। मूलशकर भी अपने पिताजी के साथ वहा पहुच गया। व्रत धारण किया गया, अब पूजा और दीक्षा लेनी बाकी है। (क्रमशः)

वेदों में वेदाध्ययन का फल

–स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती, आर्ष गुरुकुल कालवा, जिला जीन्द

वेद किसी व्यक्ति-विशेष की सम्पत्ति नहीं है। वेद तो सार्वभौम और मानवमात्र के लिये है। प्रभु उपदेश देते हैं कि इस वेदरूपी कोश को सकुचित मत करो, अपितु जैसे मैं मनुष्यमात्र के लिये इसका उपदेश देता हूं इसी प्रकार तुम भी मनुश्यमात्र के लिये इसका उपदेश करो। ब्राह्मण और क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र मित्र और शत्रु अपना और पराया, कोई भी वेद-ज्ञान से वञ्चित नहीं रहना चाहिये। जो मनुष्य वेद का प्रचार करते हैं वे विद्वानो के प्रिय बनते हैं, दानशील मनुष्यो के प्रिय बनते हैं और उनकी सभी कामनाये पूर्ण होती हैं। वेद की शिक्षाये अत्यन्त गहन, गम्भीर और उदात्त हैं। वेदाध्ययन करनेवाले का जीवन वेद के अनुसार होना चाहिये। कैसा हो वह जीवन ? १ वेदाध्ययन करनेवाले किसी की हिसा नहीं करते। मन, वचन और कर्म से किसी भी प्राणी के प्रति वैर की भावना नहीं रखते। २ वैदिकधर्मी फूट नहीं डालते और न ही किसी व्यक्ति को मोहित करके प्रलोभनो मे फसाते हैं। ३ वेदभक्त मन्त्रो के अनुसार वैदिक शिक्षाओ के अनुसार अपने जीवन का निर्माण करते हैं। वेद के विधि और निषेधो का पूर्णरूपेण पालन करते हैं। ४ वेदभक्त तुच्छ सहायको के साथ भी प्रेम और समता का व्यवहार करते हैं। ५ वैदिकधर्मी आलसी नहीं होता अपितु वह सदा सर्वदा उद्योग करता रहता है। वेद का आदेश है हमारे पुत्र वेद सुने–

उप न सूनवो गिर शृण्वन्त्वमृतस्य ये।
सुमृळीका भवन्तु न.।। (यजु० ३३।७७)

अर्थ –(ये) जो (न) हमारे (सूनव) पुत्र हैं वे (अमृतस्य) अमर, अखण्ड, अविनाशी प्रभु की (गिर) वेदवाणियो को (शृण्वन्तु) सुने और उसे सुनकर (न) हमारे लिये (सुमृळीका) उत्तम सुखकारी (भवन्तु) हो।

भाव यह है कि प्रत्येक घर मे प्रतिदिन वेद-पाठ होना चाहिये। जब हमारे घरो मे यज्ञ और हवन होगे, स्वाहा और स्वधाकार की ध्वनि उठेगी, वेदो का उद्घोष होगा तभी हमारे पुत्र वेद-ज्ञान को सुन सकेगे। वेद सभी ज्ञान और विज्ञान का मूल है और अखिल शिक्षाओ का भण्डार है। जब हमारे पुत्र वेद के इस प्रकार के मन्त्रो को सुनेगे–**"अनुव्रत: पितु: पुत्रो मात्रा भवतु सम्मना.।"** (अथर्व० ३।३०।२)='पुत्र पिता के अनुकूल चलनेवाला हो और माता के साथ समान मनवाला हो।' तो ये शिक्षाये उनके जीवन मे आयेगी। इन वैदिक शिक्षाओ पर आचरण करते हुये वे अपने माता-पिता के लिये, परिवार, समाज और राष्ट्र के लिये सुख, शान्ति, मगल और कल्याण का कारण बनेगे।

वेदाध्ययन का फल–

पावमानीर्यो अध्येत्यृषिभि सभृत रसम्
तस्मै सरस्वती दुहे क्षीरं सर्पिर्मधूदकम्।। (ऋग्वेद ९।६७।३२)

अर्थ .–(य) जो व्यक्ति, उपासक (ऋषिभि) ऋषियों द्वारा (सम्, भृतम्) धारण की गई (पावमानी) अन्त करण को पवित्र करनेवाली (रसम्) वेद की ज्ञानमयी ऋचाओं का (अध्येति) अध्ययन करता है (सरस्वती) वेदवाणी (तस्मै) उस मनुष्य के लिये (क्षीरम्) दूध (सर्पि.) घी (मधु उदकम्) मधुर जल शरबत आदि (दुहे) प्रदान करती है।

वेदाध्ययन से क्या मिलता है ? मन्त्र में वेदाध्ययन से मिलनेवाले फलो का सुन्दर वर्णन है। वेद के अध्ययन और उसके अनुसार आचरण करने से मनुष्य के जीवन-निर्वाह के लिये सभी उपयोगी वस्तुओं की प्राप्ति होती है। जो व्यक्ति वेद का स्वाध्याय करते हैं उन्हे दूध और घी आदि शरीर के पोषक तत्त्वों की कमी नहीं रहती। वैदिक विद्वान् जहां जाते हैं वहीं घी, दुग्ध और शर्बत आदि से उनका स्वागत और सत्कार होता है। जीवन की आवश्यकताओ की प्राप्ति के लिये प्रत्येक व्यक्ति को वेद का अध्ययन करना चाहिये–

वेद-मन्त्रो से मुह भर ले–

मिमीहि श्लोकमास्ये पर्जन्य इव ततन:।
गाय गायत्रमुक्थ्यम्।। (ऋग्वेद १।३८।१४)

अर्थ .–हे विद्वन् ! तू (श्लोकम्) वेदवाणी (आस्ये) अपने मुख में (मिमीहि) भरले, फिर उस वेदवाणी को (पर्जन्य: इव ततन:) मेघ=बादल के समान गर्जता हुआ दूर-दूर तक गम्भीर स्वर से फैला, उसका सर्वत्र उपदेश कर। (गायत्रम्) प्राणो की रक्षा करनेवाले (उक्थ्यम्) वेद-मन्त्रों को (गाय) स्वय गान कर, स्वय पढ और दूसरो को पढ़ा।

प्रस्तुत मन्त्र में मनुष्यमात्र के लिये कई सुन्दर शिक्षाओ का समावेश है। १ प्रत्येक मनुष्य को वेद-मन्त्रों से अपना मुख भर लेना चाहिये। मन्त्रो को पढ-पढकर उन्हें कण्ठस्थ कर लेना चाहिये। २ वेद पढकर जो ज्ञानामृत प्राप्त हो उसे अपने तक ही सीमित नहीं रखना चाहिये, अपितु जिस प्रकार बादल समुद्र से जल लेकर उसे गम्भीर गर्जन के साथ सर्वत्र बरसा देता है उसी प्रकार मनुष्यों को भी वेदरूपी समुद्र से रत्नो और मोतियों का संचय कर उनका लेखन और वाणी से प्रचार करना चाहिये। ३ वेद मे आयुवृद्धि के, स्वास्थ्यरक्षा के और प्राणशक्ति को बलिष्ठ बनाने के सहस्रों मन्त्र भरे पडे हैं। शरीर-रक्षा के लिये इस प्रकार के मन्त्रो को स्वयं पढना चाहिये और दूसरो को पढ़ाना चाहिये। महर्षि दयानन्द ने इसी मन्त्र के आधार पर आर्यसमाज के तृतीय नियम का निर्माण इस प्रकार किया है–"वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है, वेद का पढना-पढाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परमधर्म है।"

राजभाषा संघर्ष समिति द्वारा प्रकाशित

एक संग्रहणीय स्मारिका

राजभाषा और राष्ट्रभाषा हिन्दी की उन्नति के लिए सैकडो सगठन उपयोगी काम कर रहे हैं। इन सब सगठनों में राजधानी स्थित राजभाषा सघर्ष समिति अपनी अलग ही पहचान के साथ आगे बढ रही है। समिति का मानना है कि हिन्दी तथा दूसरी प्रान्तीय भाषाओं का पूर्ण विकास तभी होगा जब इनका प्रयोग प्रशासनिक कामकाज, नीचे से ऊपर तक के न्यायालयों, विश्वविद्यालयो तथा अन्य सभी शिक्षण सस्थानो मे होने लगेगा। समिति इसी मान्यता को आधार बनाकर एकाधिक प्रयासरत है। इसी लक्ष्य को ध्यान में रखकर समिति ने 'वैज्ञानिक शिक्षा के माध्यम' विषय पर एक वृहदाकार २०० पृष्ठीय स्मारिका का पिछले दिनो प्रकाशन किया है।

इस स्मारिका मे उच्चकोटि के अधिकारी वैज्ञानिको के लेख दिये गए हैं। चिकित्सा, इंजीनियरी, कृषि, रसायन, गणित, कम्प्यूटर तथा अन्य सब विज्ञान विषयो की शिक्षा का सर्वश्रेष्ठ माध्यम मातृभाषा अथवा हिन्दी ही हो इस तथ्य को स्मारिका मे सप्रमाण उद्घाटित किया गया है।

स्मारिका में एक पृथक् खड में सरकार की भाषा नीति तथा वर्तमान स्थिति पर विशद रूप से प्रकाश डाला गया है। इस खड में दी गई सभी जानकारिया राष्ट्रभाषा की उन्नति में रुचि रखने वाले बुद्धिजीवियों के लिए बहुत उपयोगी हैं। तीसरे खण्ड में समिति के पिछले वर्षों के किए गए उल्लेखनीय कार्यों का संक्षिप्त वर्णन है।

सक्षेप मे प्रस्तुत स्मारिका एक सग्रहणीय प्रकाशन है। सम्पादन, सकलन तथा मुद्रण मे सम्पादक मण्डल तथा प्रकाशकों ने भरपूर परिश्रम किया है। उनका यह प्रयास प्रशसनीय है। हिन्दी जगत् में स्मारिका का स्वागत होगा, ऐसा हमें विश्वास है। **–सम्पादक**

सम्पर्क : राजभाषा संघर्ष समिति
ए-४/१५३, सेक्टर ४, रोहिणी, दिल्ली-८५, दूरभाष : ७०५८४२३

पिता की स्मृति में अनुकरणीय दान

श्री हरिसिंह प्रधान ग्राम जसराणा जिला सोनीपत के पिताजी श्री जुगतीराम का स्वर्गवास दि० २४ दिसम्बर २००१ को ९० वर्ष की आयु में होगया। उनकी स्मृति में श्रद्धांजलि सभा ३० दिसम्बर २००१ को यज्ञ की कार्यवाई के साथ सम्पन्न हुई। श्री रामचन्द्र आर्य तथा डा० धर्मपाल देशवाल ने दिवंगत महानुभाव के गुणों का गुणगान किया। इस अवसर पर उनके परिवार ने निम्नलिखित संस्थाओं को दान दिया–

१	आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक	५००/-
२	आर्यसमाज जसराणा जिला सोनीपत	५००/-
३.	धर्मशाला भरतसिंह राठी ट्रस्ट भरत कालोनी रोहतक	१०००/-
४	गोशाला ग्राम पहरावर जिला रोहतक	२००/-

–केदारसिंह आर्य, सभा उपमन्त्री

सत्यार्थप्रकाश महोत्सव २६ फरवरी २००२ से २८ फरवरी २००२ तक

सत्यार्थप्रकाश महोत्सव २६ फरवरी २००२ से २८ फरवरी २००२ के सुअवसर पर पुण्यभूमि नवलखा महल उदयपुर मे नवगठित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान, युवा हृदयसम्राट, आर्यरत्न माननीय कै० देवरत्न आर्य व उनकी कार्यकारिणी के सदस्यों का भावभीना अभिनन्दन किया जावेगा। कृपया अधिकाधिक संख्या में परिवार पधारें। आगमन की अग्रिम सूचना अवश्य देवे ताकि उपयुक्त व्यवस्था की जा सके।

—स्वामी तत्त्वबोध सरस्वती, न्यास अध्यक्ष

गया नगर स्थित विरजानंद भवन का गरिमामय उद्घाटन

दिनांक २३ दिसबर २००१ आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश विदर्भ एव छत्तीसगढ के अंतर्गत आर्य शिक्षा समिति मठपारा दुर्ग द्वारा सचालित महर्षि दयानद आर्य विद्यालय, गयानगर दुर्ग में नवनिर्मित स्वामी विरजानन्द सभा भवन का उद्घाटन एवं स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोह आचार्य जगदेव नैष्ठिक "प्रधान" आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ, विदर्भ के मुख्य आतिथ्य मे किया गया।

१०८ कुण्डीय गायत्री महायज्ञ गुजरात में आये भीषण भूकम्प मे मृतकों की प्रथम पुण्यतिथि पर आयोजित

गुजरात कई वर्षों से दैवीय आपदाओं से पीडित रहा है। अकाल एव भूकम्प ने इस बुरी तरह से इस श्रद्धाभूमि को अपनी चपेट मे लिया था। २६ जनवरी २००१ मे आए विनाशकारी भूकम्प से पूरा विश्व परिचित है। इस विनाशकारी भूकम्प ने कई व्यक्तियो को मौत के घाट उतारा, जिसमे नर-नारी एव छोटे बच्चे भी थे। इस सदर्भ मे श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टकारा के तत्त्वावधान मे ट्रस्ट परिसर मे शनिवार दिनाक २६ १ २००२ को प्रात ८ बजे से १२ बजे तक भजन एव प्रवचनो का आयोजन किया जारहा है।

एक वर्ष पूरा होने पर २६ जनवरी २००२ को समस्त सौराष्ट्र एव कच्छ की शाति एव समृद्धि के लिये ट्रस्ट उपरोक्त गायत्री महायज्ञ का आयोजन करने जारहा है इस महायज्ञ मे ४३२ यजमान दम्पती भाग ले सकेंगे। यजमान बनाने के लिए आचार्य विद्यादेव जी से श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट, टकारा, राजकोट-३६३६५० गुजरात के पते पर अथवा दूरभाष न० ०२८२२-८७७५६ पर सम्पर्क करें। आप इस अवसर पर सादर आमन्त्रित हैं।

—श्री रामनाथ सहगल, मंत्री,
श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टकारा

मुंबई में अमर हुतात्मा-स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई आर्य समाज माटुगा, नप्पू गार्डन मुम्बई के खुले मैदान में मुम्बई महानगर की स्थानीय समस्त आर्यसमाजों की ओर से स्वामी श्रद्धानन्द जी का ७७वां बलिदानदिवस २३ दिसम्बर, २००१ को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली के प्रधान आर्यनेता कैप्टन देवरत्न आर्य की अध्यक्षता में मनाया गया।

दयानन्द बालक/बालिका विद्यालय माटुंगा एवं कान्दिवली मुम्बई के छात्र-छात्राओं ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन एव कार्यो पर प्रकाश डाला। छात्राओं के स्वामी श्रद्धानन्द जी से सम्बन्धित गीत, कविता एवं भाषणों से उपस्थित लोग मन्त्रमुग्ध होगये।

इस अवसर पर श्रीमती शिवराजवती आर्या के भजन हुए। तत्पश्चात् श्री अरुणकुमार आर्य, श्री प्रभामित्र, पं. विजयपाल शास्त्री एव मुम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा के युवा वैदिकविद्वान् पं. प्रभारंजन पाठक जी के ओजस्वी प्रवचन हुए। जिसमें देश की वर्तमान परिस्थितियो मे स्वामी श्रद्धानन्द जी के कार्यो की प्रासंगिकता पर गहरा प्रकाश डाला गया।

आर्य प्रतिनिधि सभा मम्बई के प्रधान श्री ओकारनाथ जी आर्य ने कहा कि- बाहर से कहीं ज्यादा खतरनाक हमारे भीतर के शत्रु है। इनका मुकाबला करने के लिये एक-एक हिन्दू को अपने अन्दर स्वामी श्रद्धानन्द जी की श्रद्धा को पैदा करना होगा।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान आर्यनेता कैप्टन देवरत्न आर्य ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे कहा कि आज समाज को स्वामी श्रद्धानन्द जी जैसे हजारो समाज सुधारकों की आवश्यकता है। वैदिक सस्कृति के विकास के लिये स्वामी जी के जीवन एव कार्य प्रणाली से हम शिक्षा लेवे, जिससे व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र की सर्वांगीण उन्नति होसके। कार्यक्रम का सचालन आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के महामत्री श्री मिठाईलाल सिह ने किया।

शंका-समाधान

श्री रामफलसिंह आर्य ८२/३०३ बी एस एल कालोनी, सुन्दरनगर जिला मण्डी (हि०प्र०)

शंका—सस्कारविधि के सामान्य प्रकरण मे लिखा है कि स्विष्टकृद् आहुति के पश्चात् एक मौन आहुति देकर चार आज्याहुति घृत की देवे 'ओ भूर्भुव स्व । अग्न आयूषि०' इत्यादि। परन्तु-ये आहुतिया चौल, समावर्तन और विवाह मे मुख्य हैं। अत क्या ये आहुतियां सामान्य यज्ञो मे नहीं देनी चाहिये ?

समाधान—महर्षि दयानन्द ने सस्कारविधि का सामान्य प्रकरण सस्कारो की विधि के लिये लिखा है जिससे उस-उस सस्कार मे उन-उन विधियो का पुन पुन· उल्लेख न करना पडे। अत यह लेख सस्कार सम्बन्धी है।

आर्यो के पास बृहद्यज्ञ का कोई विधान विद्यमान नहीं था, अत सस्कारविधि के सामान्य प्रकरण को ही बृहद्यज्ञ का विधान मानकर एक बृहद्यज्ञ पद्धति प्रारम्भ करली। सामान्य अग्निहोत्र का विधान पञ्चमहायज्ञविधि मे तथा सस्कारविधि के गृहाश्रम प्रकरण मे भी विद्यमान है।

महर्षि के लेख से स्पष्ट है कि उक्त चार आहुतिया चौल (चूडाकर्म) आदि सस्कारो मे प्रधान भाव से तथा अन्य सस्कारो मे गौणभाव से दी जा सकती हैं, यदि चाहे तो ये आहुतिया दे देवे अन्यथा नही। **—सुदर्शनदेव आचार्य**

स.रा. की भाषा बनाने के लिए पहले भारत हिन्दी अपनाए

हिन्दी को यदि सयुक्त राष्ट्र मे कामकाज की भाषा बनाना है तो सबसे पहले भारत मे उसे राजकाज की भाषा बनाना होगा। जापान के ओसाका विश्वविद्यालय मे हिन्दी के प्रोफेसर डा तोमियो मिजोकामी ने कल यहा यूनीवार्ता के साथ एक विशेष भेट मे कहा कि हिन्दी को अतराष्ट्रीय स्तर पर स्थापित करने के लिए भारतीयो और हिन्दीभाषियो को पहल करनी होगी। उन्होने कहा कि सयुक्त राष्ट्र की भाषा बनाने से पहले हिन्दी को भारत मे राजकाज की भाषा के रूप मे अपनाया जाना चाहिये।

उन्होने कहा कि हिंदी विश्व मे तीसरी सबसे बडी भाषा है इसलिए उसे सयुक्त राष्ट्र मे स्थान मिलना ही चाहिए। उन्होने कहा कि दुनिया के कई छोटे-छोटे देशो की भाषाओं को सयुक्त राष्ट्र से मान्यता प्राप्त है तो कोई कारण नहीं है कि भारत की भाषा को स्वीकार नहीं किया जाए। लगभग ३५ वर्ष से हिदी का अध्ययन कर रहे डा मिजोकामी ने कहा कि हिदी का अतराष्ट्रीय स्तर पर तेजी से प्रचार प्रसार हो रहा है। विश्व के विभिन्न भागो मे रहे भारतवासियो ने इसके प्रसार प्रचार मे मुख्य भूमिका निभाई है।

(साभार दैनिक जागरण)

महापर्व-मकर सक्रांति का महत्व

मकर सक्राति महापर्व को, अच्छी तरह मनाओ रे।
दुर्गुण त्यागो, सद्गुण धारो, वैदिक धर्म निभाओ रे।।
चौदह जनवरी को, प्रतिवर्ष यह आता है।
उन्नति पथ पर बढो निरन्तर, पाठ पढाकर जाता है।।
अच्छाई जीवन मे धारो, सत्यमार्ग दर्शाता है।
आर्यों का इस महापर्व से, रहा सदा से नाता है।।
मकर सक्राति महापर्व का, जग को महत्व बताओ रे।
दुर्गुण त्यागो, सद्गुण धारो, वैदिक धर्म निभाओ रे।।
वैदिक मार्ग विसार आर्यो ! व्याकुल है दुनिया सारी।
पापाचार गया बढ जग मे, आतंकित नर-नारी।
खाओ, पीओ, मौज उडाओ, कहते हैं भ्रष्टाचारी।
आपा-धापी मची हुई है, नफरत की है बीमारी।।
राम, कृष्ण, ऋषिदयानन्द बन, स्वर्ग धरा पर लाओ रे।
दुर्गुण त्यागो, सद्गुण धारो, वैदिक धर्म निभाओ रे।।
विषय, वासनाओ की आँधी, छाई है भूमण्डल पर।
वेद, सभ्यता, सदाचार को, भूल गये हैं, नारी, नर।।
प्रेम-प्यार ना रहा दिलो मे, नर्कवास है अब हर घर।
चरित्रहीनता बढा रहे हैं, दुनियां में नेता पामर।।
अर्जुन, भीम, नकुल बन जाओ, पापाचार मिटाओ रे।
दुर्गुण त्यागो, सद्गुण धारो, वैदिक धर्म निभाओ रे।।
खान-पान पहरान गया है बिगड, बने पापी मानव।
शक्ले तो हैं मानव की, कर्मो से हैं पक्के दानव।।
जलचर, थलचर, नभचर मानव ने ही दुखि बनाये हैं।
मूर्गे, चूहे, सूअर, कछुए, मार-मार कर खाए हैं।।
गौ हत्या को बद कराओ, चन्द्रगुप्त बन जाओ रे।
दुर्गुण त्यागो, सद्गुण धारो, वैदिक धर्म निभाओ रे।।
सूर्य उतरायण में बढता, ऋषियों की है बात सही।
आगे बढो, हटो मत पीछे, सक्राति का महत्त्व यही।।
ऋषियों के वशजो जगत् में, वेदों का प्रचार करो।
अबली, दीन, अनाथ जनों के, हे वीरो ! संताप हरो।।
भ्रष्टाचार की ज्वालाओं से, जलता विश्व बचाओ रे।
दुर्गुण त्यागो, सद्गुण धारो, वैदिक धर्म निभाओ रे।।

**—पं० नन्दलाल निर्भय, ग्राम पत्रालय बहीन,
जनपद फरीदाबाद (हरयाणा)**

राष्ट्रीय सुरक्षा सम्मेलन का आयोजन

आर्यसमाज करोलबाग के वार्षिकोत्सव तत्त्वावधान में राष्ट्रीय सुरक्षा सम्मेलन का आयोजन किया गया। सुरक्षासम्बन्धी विषयों के विशेषज्ञों तथा आर्यजगत् के विशिष्ट नेताओ ने अपने विचार प्रकट किये। आर्यसमाज के प्रधान श्री कीर्ति शर्मा ने **वयं तुभ्यं बलिहत स्याम** मत्र का उद्घोष करते हुए मातृभूमि की रक्षा के लिये हसते-हसते प्राणो को न्यौछावर करने का सकल्प करवाया। उन्होने कहा राष्ट्रवाद तो तलवार की धार पर चलने से चमकता है तभी एकता व अखण्डता की रक्षा होपाती है। राष्ट्रवाद के पुरोधा समझौते की नौकाओं पर सवार न होकर तलवार की धार पर चलने का साहस जुटाये तभी भारत की एकता, अखण्डता व आजादी की सुरक्षा की गारण्टी मिलेगी।

राष्ट्रीय स्वय सेवक संघ के अखिल भारतीय सम्पर्क प्रमुख श्री इन्द्रवेश जी ने धारा ३७० की समाप्ति, आतंकवादियों के प्रशिक्षण शिविरो को खत्म करना व पाकिस्तान का विघटन तथा इसके लिए आवयकता होने पर युद्ध करना तथा कश्मीर राज्य पुनर्गठन करके बीमारी को सीमित करते हुए उसका इलाज करना। उन्होने बताया १९४७ मे जम्मू तथा कश्मीर क्षेत्रफल २२२२३६ वर्ग किलोमीटर पर वर्तमान मे भारत के पास १०१३८७ वर्ग किलोमीटर शेष बचा है। १५८५३ वर्ग किलोमीटर कश्मीर घाटी, २६२९३२ वर्ग किलोमीटर जम्मू तथा ५९२४१ वर्ग किलोमीटर लद्दाख का क्षेत्रफल है।

स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती ने वेदों मे राष्ट्र सुरक्षा का वर्णन करते हुए कई मत्र उघत किए। हिन्दुओ के पूर्वजो ने मातृभूमि की रक्षा और स्वराज्य प्राप्ति के लिए वेदो की आज्ञाओ से सदैव महान प्रेरणा ली है। आज जब हमारा राष्ट्र आन्तरिक एवं बाह्य षड्यन्त्रो का शिकार है, शत्रुओ की राष्ट्रविरोधी गतिविधियो की अनदेखी की जारही है। मुझे विश्वास है कि इस सकट की घड़ी मे राष्ट्रीय सुरक्षा के प्रति कटिबद्ध युवक-युवतिया, प्रसिद्ध नेता, अध्यापकगण, राष्ट्रभक्त नागरिक **इन्द्रस्य त्वा वर्मणा परिधापयाम:** अर्थात् हम आत्मशक्ति के कवच से राष्ट्र को ढकते हुए ऐसी शपथ लेते हैं।

इस सम्मेलन के अध्यक्ष सर्वोच्च न्यायालय के वरिष्ठ अधिवक्ता श्री रामफल बसल ने उपस्थित आर्यजनों से भारत को परम वैभवशाली राष्ट्र बनाने का आह्वान किया।

—प्रधान कीर्ति शर्मा

आर्यों का इतिहास

**आर्यों का गौरवमय इतिहास है,
देशरक्षार्थ आक्रांताओं का नाश है।
हरिश्चन्द्र ने सत्य अपनाया,
सत्य के खातिर कष्ट उठाया,
श्मशान में जाकर डेरा लाया,
पत्नी से भी कर उघाया।
धर्म पर दृढ विश्वास है,
आर्यों का गौरवमय इतिहास है।
श्री राम ने रावण को मारा,
राक्षसों का वंश संहारा,
ऋषियों को कष्टों से उभारा।
राम-राज्य प्रतीक खास है,
आर्यों का गौरवमय इतिहास है।
श्री कृष्ण ने कंस मिटाया,
अन्यायी को नष्ट कराया,
अर्जुन का उत्साह बढाया,
गीता का उपदेश सुनाया।
राज्य भोग या स्वर्ग में वास है,
आर्यों का गौरवमय इतिहास है।
शक, हूण, यूनान भगाये,
शिवाजी ने मुगल हराये,
गांधी जी ने अंग्रेज हटाये,
गुरुओं ने निज शीश कटाये,
'बंसल' नेता दयानंद सुभाष है,
आर्यों का गौरवमय इतिहास है।
जो वेदों की शिक्षा पायेगा,
इतिहास का ज्ञान कर पायेगा,
अक्रांताओं को समझ पायेगा,
यह कहता रामनिवास है,
आर्यों का गौरवमय इतिहास है।**

लेखक रामनिवास बंसल, ६१/६ आश्रम रोड, चरखीदादरी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ७६८७४, [illegible]) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : [illegible]) से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३ मुद्रितसंख्या १, ९६, ०८, ५३, १०२
पंजीकरणसंख्या टैक/85-2/2000 ☎ ०१२६२ ...७२२

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र रोहतक

प्रधानसम्पादक : यशपाल आचार्य, सभामन्त्री सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री

वर्ष २६ अंक ६ २१ जनवरी, २००२ वार्षिक शुल्क ८०) आजीवन शुल्क ८००) विदेश में २० डॉलर एक प्रति १.७०

तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा, के उद्घोषक नेता जी की जयन्ती २३ जनवरी पर विशेष

यदि आज देश में नेता जी सुभाषचन्द्र बोस होते ?

—**सुखदेव शास्त्री,** महोपदेशक, दयानन्दमठ, रोहतक (हरयाणा)

वेदोत्पत्ति कर्ता परमेश्वर ने मनुष्य जीवन को सर्वोत्तम उत्कृष्ट बनाने के लिए अथर्ववेद के काण्ड १८, सूक्त ३, मन्त्र ३८ से लेकर ४४ तक महत्त्वपूर्ण उपदेश देते हुए आदेश दिया है कि–

इमा मात्रां मिमीमहे यथापर न मासातै।
शते शरत्सु नो पुरा।।३८।।

अर्थात् मनुष्य को अपने जीवन की इस कालमात्रा को अपने जीवन के समस्त समय को इस प्रकार से उत्तमता से मापना चाहिए जैसे और किसी वस्तु को नहीं मापते। ऐसा जीवन बिताना चाहिए जैसे इन सौ वर्षो मे भी किसी ने भी नहीं जिया हो, नहीं बिताया हो, इन जीवन के १०० वर्षो में तेरे जैसा और कोई भी न हुआ, सभी यह कहे कि–**'भूतो न भविष्यति।'**

मानवो के प्रति वेद के इसी आदेश को मानकर 'पचतन्त्र' के रचयिता प० विष्णु शर्मा ने लिखा था–

स जातो येन जातेन याति वशः समुन्नतिम्।
परिवर्तिनि संसारे मृतः को वा न जायते।।

अर्थात् ससार में या राष्ट्र वंश मे वही आदमी पैदा हुआ माना जाता है, जिसने अपने वंश अथवा देश की सर्वतोमुखी उन्नति के लिए ही अपना जीवन समर्पित किया हो, वैसे तो संसार में मरकर जन्म तो लेते ही रहते हैं।

ऐसे राष्ट्र के प्रति समर्पित करने वाले वीरो को उनकी जन्म जयन्ती पर इसलिए ही उन्हे स्मरण किया जाता है कि हम भी सभी राष्ट्रवासी उनके जीवन से देशभक्ति की शिक्षा प्राप्त करे।

ऐसे भारतीय वीरों मे नेता जी सुभाषचन्द्र बोस का नाम भी महान् देशभक्तों मे सबसे अग्रणी है। भारतीय क्रान्तिकारियो एवं स्वतन्त्रता सेनानियों में वैसे तो अनेक वीरों के नाम भारतीय इतिहास के पृष्ठो में स्वर्णाक्षरों मे अंकित हैं। इनमे विशेषकर बगालियों के नाम भी प्रमुख रूप से उल्लिखित हैं, जिनमें योगी अरविन्द घोष, चितरंजनदास, रासबिहारी बोस, शचीन्द्रनाथ सान्याल, खुदीराम बोस, यतीन्द्रनाथ दास आदि-आदि विशेष हैं। इनमें "नेता जी सुभाषचन्द्र बोस" भी अपना सबसे महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थान रखते हैं।

इसलिए आज २३ जनवरी को उनकी जन्म जयन्ती पर हम अपनी हार्दिक भावनापूर्ण श्रद्धांजलि देने के लिए उपस्थित हुए हैं।

ऐसे महान् देशभक्त नेता जी सुभाषचन्द्र का जन्म वीरभूमि बगाल के कटक नगर में २३ जनवरी १८९७ को जानकीनाथ पिताश्री के घर में हुआ था। श्री जानकीनाथ जी बडे शिक्षा विशेषज्ञ थे। नेता जी की माता जी भी बडी धर्मप्रिय, बुद्धिमती देवी थी। अपनी सन्तानो को सुशिक्षित बनाने मे उनका सहयोग सराहनीय था। इनके पिता जानकीनाथ ने अपना सुन्दर मकान कलकत्ता के एलगिन रोड पर बनवाया था, जहा नेता जी १९१३ तक इसी मकान मे रहते थे। नेता जी ने प्रथम १९०९ मे ही कटक के कॉलेजिएट स्कूल मे पढे थे। १९१३ तक एफ.ए. की तथा कुछ समय पश्चात् कलकत्ता के स्काटिश कॉलेज से बी.ए. की परीक्षा पास की। बी.ए. की परीक्षा पास करने के पश्चात् इनके पिता ने इन्हे आई.सी.एस. की परीक्षा के लिए इग्लैण्ड भेज दिया। वहा जाकर सुभाष कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी मे प्रविष्ट हो गए। इग्लैण्ड मे पढते हुए इनका सम्पर्क "इण्डिया हाउस" मे भारत के महान् देशभक्तो से हुआ। जिनमे "इण्डिया हाउस" के सस्थापक क्रान्तिकारियो के गुरु श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा तथा वीर सावरकर तथा अन्य अनेक ब्रिटेन मे पढने के लिए आए हुए विद्यार्थियो से हुआ, जो आगे जाकर महान् क्रान्तिकारियो की पक्ति मे शामिल हुए।

भारतीय भवन (इण्डिया हाउस) मे अनेक क्रान्तिकारियो के सम्पर्क मे आने के कारण स्वदेश भक्ति की भावनाए मजबूत होती गई। अग्रेजो से घृणा बढती गई, उनकी घृणा का कारण उनके द्वारा अपने सहपाठी सस्कृत के विद्वान् क्षत्रेशचन्द्र चट्टोपाध्याय को लिखे उनके पत्रो से पता लगता है। उन्होने कैम्ब्रिज से १२ फरवरी, १९२१ को जो पत्र लिखा था उसके अश इस प्रकार हैं–

"साधारण अग्रेज युवक भारत के सम्बन्ध मे न अधिक जानता है, न जानना चाहता है। वह समझता है कि अग्रेज जाति महान् जाति है। वह भारतीयो को सभ्य बनाने के लिए ही भारत गई है। वे भारत से मगवाकर फोटो दिखाते हैं कि भारत के लोग नगे रहते हैं। भारत सदा पराजित देश रहा है। आदि-आदि।"

कैम्ब्रिज मे पढते हुए यह सब कुछ देखा था सुभाष बोस ने। आई.सी.एस. परीक्षा पास करने के बाद उनके माता-पिता को बडी प्रसन्नता हुई, बडी-बडी आशाए लगी। किन्तु नेता जी इस पराधीनता के आई.सी.एस. के प्रमाणपत्रो को पाकर उसे पराधीनता का ही प्रमाणपत्र मानते थे। इसलिए उन्होने स्वदेश लौटने से पूर्व ही भारतमत्री के हाथो मे उस गुलामी की नौकरी के प्रमाणपत्र को फाडकर फेक दिया। स्वाभिमान के साथ भारत लौटे।

भला, जिस आई.सी.एस. के प्रमाणपत्र को पाने के लिए युवको को इग्लैण्ड जाना पडता था, उसे पास करके वापस आने पर शुरू मे ही डिप्टी कमिश्नर का पद मिल जाता था, उसे सुभाष ने ठोकर मार दी।

भारत लौटने पर वे गाधी जी द्वारा सचालित "असहयोग आन्दोलन" मे शामिल हो गए। उस समय रौलट एक्ट, पजाब हत्याकाण्ड आदि का दमन चल रहा था। उन्होंने गाधी जी से भेट की। किन्तु गाधी जी के इस आन्दोलन से वे सन्तुष्ट नहीं हुए। नेता जी गर्म विचारो के थे। इसलिए उनकी गाधी जी

(शेष पृष्ठ सात पर)

वैदिक-स्वाध्याय

दीनता त्यागपूर्वक जीवन में दृढ़ता

ऋत्वः समह दीनता प्रतीपं जगमा शुचे।
मृडा सुक्षत्र मृडय।। (ऋ० ७।८९।३)

शब्दार्थ–(**समह**) हे तेजोयुक्त ! (**शुचं**) हे दीप्यमान ! (**दीनता**) दीनता, अशक्तता के कारण मैं (**ऋत्व**) अपने क्रतु से, सकल्प से, प्रज्ञा से, कर्त्तव्य से (**प्रतीप**) उलटा (**जगम**) चला जाता हूं (**सुक्षत्र**) हे शुभ शक्तिवाले ! (**मृड**) मुझे सुखी कर। (**मृडय**) मुझे सुखी कर।

विनय–हे मेरे तेजस्वी स्वामिन् ! मुझ दीन की प्रार्थना सुनो। मैं इतना दीन हू, इतना अशक्त हू कि अपने कर्त्तय के विरुद्ध आचरण कर देता हू। मैं जानता हुआ कि यह करना नहीं चाहिये, फिर भी कर देता हू। मैं कोई शुभ सकल्प करता हूं कि मैं आज से नित्य व्यायाम करूगा, नित्य सन्ध्या करूगा, पर दीनतावश इसे निभा नहीं सकता। हृदय मे कई अच्छी-अच्छी प्रज्ञाये (बुद्धिया) स्थान पाती हैं पर झूठे लोकलाज के वश मैं उस पर अमल करना नहीं शुरू करता। उसके विरुद्ध ही चलता जाता हूं। यह मैं जानता होता हू कि मेरा "क्रतु" क्या है–कर्त्तव्य कर्म क्या है, अन्दर, से दिल कहता जाता है कि तू उलटे मार्ग पर चला जा रहा है, फिर भी मैं दुर्बल किसी भय का मारा हुआ, उसी उलटे मार्ग पर चलता जाता हू। हे दीप्यमान देव ! हे मेरे स्वामी ! तू मुझे वह तेज क्यो नहीं देता जिससे कि मैं निर्भय होकर अपने कर्त्तव्य पर डटा रहू, किसी के कहने से या हसी उडाने से उलटा आचरण करने को प्रवृत्त न होऊ, किसी क्लेश से डरकर अपने "क्रतु" को न छोडू। मुझे यह अवस्था बडी प्रिय लगती है पर दीनतावश मैं इस अवस्था को प्राप्त नहीं कर रहा हू। हे 'सुक्षत्र' ! हे शुभ बल वाले ! मुझे अदीन बना दे। मैं दीनता का मारा हुआ तेरी शरण आया हू। इस दीनता के कारण मुझ से सदा उलटे काम होते रहते हैं। और फिर मेरा अन्तरात्मा मुझे कोसता रहता है, इसलिए मैं सदा बेचैन रहता हू। हे प्रभो ! मुझे सुखी कर। मुझ मे तेज देकर मेरी बेचैनी दूर कर। इस अशक्तता के कारण मैं जीवन मे पग-पग पर असफल हो रहा हू–मेरा जीवन बडा निकम्मा हुआ जा रहा है। हे प्रभो ! क्या कभी मेरे वे सुख के दिन न आयेगे जब मैं अपने क्रतु पर दृढ रहा करूगा, अपने सकल्पो पर अटल रहा करूगा। हे मेरे स्वामी ! ऐसी शक्ति देकर अब मुझे सुखी कर दो, मुझे सुखी कर दो। **(वैदिक विनय से)**

वेद में अयोध्या नगरी

–**स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती**, आर्ष गुरुकुल कालवा

वेद मे मानव-शरीर की बडी महिमा है। यह अयोध्या नगरी है। इसी को ब्रह्मपुरी कहते हैं। इसे दिव्य-रथ भी कहा गया है। यह ससार-सागर से पार करने वाली नौका है। इसी मानव-देह मे मनुष्य अपने जीवन के परम-उद्देश्य मोक्ष को प्राप्त कर सकता है। अत यह शरीर विद्वानो को अत्यन्त प्रिय है। संयोग का परिणाम वियोग है। जन्म के साथ मृत्यु अवश्यम्भावी है। जन्म से ही मृत्यु मनुष्य के साथ लगी हुई है। कोई कितना ही महान् हो, राजा हो या योगी, तपस्वी हो या सन्यासी, मृत्यु के मुख से बच नहीं सकता। यद्यपि मृत्यु निश्चित है परन्तु बुढापे से पूर्व नहीं मरना चाहिये। प्रत्येक व्यक्ति को अपना आहार-विहार, आचार और विचार इस प्रकार के बनाने चाहिये जिससे वृद्धावस्था से पूर्व वह मृत्यु के मुख मे न जाये। वेद मे अयोध्या नगरी का वर्णन इस प्रकार किया है–

अष्टाचक्रा नवद्वारा देवाना पूरयोध्या।
तस्या हिरण्यय कोश स्वर्गो ज्योतिषावृतः।। (अथर्व० १०।२।३१)

अर्थ–यह मानव-शरीर (अष्टाचक्रा) आठ चक्र और (नवद्वारा) नौ द्वारो से युक्त (देवानाम्) देवो की (अयोध्या) कभी पराजित न होनी वाली (पूः) नगरी है (तस्याम्) इस पुरी मे (ज्योतिषा) ज्योति से (आवृत) ढका हुआ, परिपूर्ण (हिरण्यय) हिरण्यमय स्वर्णमय (कोश) कोश है, यह (स्वर्ग) स्वर्ग है, आत्मिक आनन्द का भण्डार परमात्मा इसी मे निहित है।

मन्त्र मे मानव-देह का बहुत ही सुन्दर चित्रण हुआ है। हमारा शरीर आठ चक्रो से युक्त है। वे आठ चक्र हैं–१ मूलाधार चक्र–यह गुदामूल मे है। २ स्वाधिष्ठान चक्र–मूलाधार से कुछ ऊपर है। ३ मणिपूरक चक्र–इसका स्थान नाभि है। ४ अनाहत चक्र–हृदय स्थान मे है। ५ विशुद्धि चक्र–इसका स्थान कण्ठमूल है। ६ ललना चक्र–जिह्वामूल मे है। ७ आज्ञाचक्र–यह दोनो भ्रुवो के मध्य मे है। ८ सहस्रार चक्र– मस्तिष्क मे है। नौ द्वार ये हैं–दो ऑख, दो नासिका-छिद्र, दो कान, एक मुख, दो मल और मूत्र के द्वार। इस नगरी मे जो हिरण्यमय कोष=हृदय है वहा ज्योति से परिपूर्ण आत्मिक आर्नन्द का भण्डार परमात्मा विराजमान है। योगी लोग योग-साधना के द्वारा इन चक्रो का भेदन करते हुये उस ज्योतिस्वरूप परमात्मा का दर्शन करते हैं।

त्रुटि की पूर्णता–**तनूपा अग्नेऽसि तन्वं मे पाह्यायुर्दा अग्नेऽस्यायुर्मे देहि वर्चोदा अग्नेऽसि वर्चो मे देहि। अग्ने यन्मे तन्वा ऊनं तन्म आपृण।।**
(यजुर्वेद ३।१७)

अर्थ–हे (अग्ने) परमेश्वर ! तू (तनूपा असि) हमारे शरीरो का रक्षक है अत तू (मे तन्वम्) मेरे शरीर की (पाहि) रक्षा कर। (अग्ने) हे परमात्मन् ! तू (आयुर्दा असि) दीर्घायु, दीर्घ-जीवन का प्रदाता है (मे आयु. देहि) मुझे भी सुदीर्घ जीवन प्रदान कर। (अग्ने) हे प्रभो ! तू (वर्चोदा असि) तेज और कान्ति देनेवाला है (मे वर्चः देहि) मुझे भी तेज और कान्ति प्रदान कर। (अग्ने) हे ईश्वर ! (मे तन्व) मेरे शरीर मे (यत् ऊनम्) जो न्यूनता, कमी, त्रुटि हैं (मे तत्) मेरी उस न्यूनता को (आ पृण) पूर्ण कर दे।

भावार्थ–१ प्रभो ! आप प्राणिमात्र के शरीरो की रक्षा करनेवाले हो, अत मेरे शरीर की भी रक्षा करो। २ आप दीर्घजीवन के प्रदाता हैं मुझे भी दीर्घ जीवन से युक्त कीजिये। ३ आप तेज, ओज, शक्ति और कान्ति प्रदान करनेवाले हैं, मुझे भी तेज, ओज, शक्ति और कान्ति प्रदान कीजिये। ४ प्रभो ! अपनी न्यूनताओ को कहा तक गिनाऊ और क्या-क्या मागू। ठीक बात तो यह है कि मुझे अपनी न्यूनताओ का भी ज्ञान नहीं है। मेरे जीवन मे किस वस्तु की कमी है, मुझे किस वस्तु की आवश्यकता है इसे तो आप ही अच्छी प्रकार जानते हैं, अत मैं तो यही प्रार्थना करूगा भगवन् ! मेरे जीवन मे जो न्यूनता, कमी और त्रुटि है आप उसे पूर्ण कर दे।

दान सोच समझकर दो

प्रिय सज्जनो ! दान अवश्य दो परन्तु जहा भी दो, सोच-समझकर दो। भावुकता मे आकर कभी दान मत दो। कहीं ऐसा न हो कि आपके दिये हुए दान का दुरुपयोग किया जाये। आज साफ देखने मे आ रहा है कि दान मे दिया गया रुपया पैसा और जमीन का उपयोग अपने स्वार्थ सिद्ध करने के लिए किया जा रहा है। सच्चाई और ईमानदारी पर पानी फेरकर केवल प्रदर्शन किया जाता है।

हम देखते हैं कि भवन निर्माण के लिये दान की अपील होती रहती है। दानी महानुभावो को बुलाकर मच पर फूलमालाओ से स्वागत किया जाता है। उनकी तारीफ (प्रशसा) के पुल बाधे जाते हैं। दान दाता भारी दान की घोषणा कर देता है। दान देनेवाला व्यक्ति चाहे शराबी, कबाबी, भ्रष्टाचारी कुछ भी हो, इसकी परवाह नहीं, उन्हे तो हजारो लाखो चाहिये।

भवन निर्माण के बाद परोपकार की बजाय धन उपार्जन के लिये प्रयोग किया जाता है। उसमे सह-शिक्षा के इग्लिश मीडियम स्कूल खोले जाते हैं। उनको बारात घर बनाया जाता है। जनता की भलाई के लिये नि शुल्क कार्य कुछ नहीं किया जाता। इन भवनो के अधिकारी धूम्रपान मद्यपान करते देखे गये हैं। इनके घरो मे मीट, मछली, अण्डा पकाया और खाया जाता है। पश्चिम की सभ्यता में पल रहे हैं।

वेद का सन्देश है कि "मनुर्भव" अर्थात् मनुष्य बन। इसका पालन नहीं हो रहा। गरीब जनता की सहायता के काम नहीं हो रहे हैं। इसलिये वो लोग कहीं और जगह जा रहे हैं जहा उनको रोटी कपडा मिलता है। यदि यह क्रम जारी रहा तो आर्य क्या हिन्दू जाति अल्पमत मे आकर पतन हो जायेगा। यदि समाज देश की सेवा करना चाहते हो तो ईमानदारी और नि स्वार्थ भावना से काम करो। बुरी आदतों को छोडो और बच्चो को बचाओ। चरित्रवान् और श्रेष्ठ व्यक्ति को उत्साहित करने के लिये तन-मन-धन से दान दो।

–**देवराज आर्य मित्र**, आर्यसमाज कृष्ण नगर, दिल्ली-५१

जब दीवारें भी बोलने लगेंगी

गतांक से आगे-

—सन्तोष कण्व

कुछ धन्धे गले के फन्दे बने हैं, तो कुछ धारणाए पैरो की बेडियां बन गई है, जिनमे जकडे हुए लोग छटपटा रहे हैं। इन धरणाओ के पीछे कोई तर्कसगत आधार नहीं है। बस बन गई हैं। लागो ने बिना विचार इन्हे पकड लिया है। अब इनसे व्यर्थ का मोह हो गया है। इनसे परिश्रम करना पडेगा। आप दीवार पर लिखने का परिश्रम कीजिए-

जात-पांत और छुआछूत।
मार भगाओ दोनों भूत।।

यह संदेश वाक्य भूतों से लडने के लिये लोगो को खडा करेगा। फिर, यहा कोई एक भूत नहीं है। भूतों की पूरी फौज है। कोई अच्छी सी दीवार छाटिए और लिखिए, यह सदेश वाक्य-

लेन देन की शादी
घर-घर की बरबादी।

चारो ओर दीवारो पर देखिये—हर तरफ अश्लील पोस्टरो की भरमार है! एक से एक कामोत्तेजक पोस्टर। हिसा और सेक्स से भरपूर पोस्टर। आपके बच्चे और बच्चिया जब सडक पर निकलती है, तो उनकी नजरे इन्हीं पोस्टरो पर पडती हैं। अभी आपने सोचा है कि किशोरावस्था मे इनके मन-मस्तिष्क पर यह पोस्टर क्या प्रभाव डालते हैं ? जाने-अनजाने मे देखे गए यह पोस्टर उनके जीवन को किस दिशा मे ले जाते हैं, इस पर विचारने का कभी समय आपने निकाला है ? इन भित्तिपत्रो को आप कब तक सहन करेगे ? चिपकाने वाले तो चिपकाने से बाज नहीं आएगे और बच्चे आपके बिगडेगे ! इस पर भी आप मूकदर्शक बने रहेगे । आखिर कब तक ? नहीं, यह सब बन्द होना चाहिए। उठाइए कूर्चिका और एक सन्देश दीजिए आज के किंकर्त्तव्यविमूढ समाज को-

उत्तेजक तस्वीरें नंगी।
पोतो इन पर कालिख जल्दी।।

यह दूसरो के लिए ही नहीं, आपके लिए भी प्रेरक वाक्य है। कोलतार लीजिए और जहा भी अश्लील पोस्टर मिले उन पर पोत दीजिए। फाड सके तो फाड दीजिए।

पोस्टर तो पोस्टर, आज गदे गानो से सारा आकाश गूज रहा है। घर बैठे आपका दिमाग खराब कर रहा है। 'चोली के पीछे क्या है', पूछने वालो को एक बार बता ही दो कि क्या है !

गन्दे गाने करे विनाश।
खुद का घर का सत्यानाश।।

ऋषि-मुनियो के इस देश मे लाखो पशु-पक्षी सूर्योदय के साथ ही काट कर फेंक दिये जाते हैं। गो आदि महा उपकारी पशु धडा धड कट रहे हैं। गोतम बुद्ध और महावीर स्वामी के देश की धरती की हर सुबह इन निर्दोष प्राणियो के रक्त से लाल हो जाती है। उठो ! और पूरे देश को आज ही यह सन्देश दो-

गाय कटेगी गांव मरेगा।
भूखा हिन्दुस्तान रहेगा।।

अर्थव्यवस्था का आधार है-गाय। राष्ट्र की सम्पन्नता का प्रतीक है-गाय।भारत गावो मे बसता है। गाव,गाय और गरीब का आपसी नाता है। गाव बचेगा तो भारत बचेगा, नहीं तो मर जायेगा। लेकिन गाव कब बचेगा ? कैसे बचेगा ? भित्तियो के माध्यम से यह सदेश भी दीजिए-

गाय बचेगी गाव बचेगा।
नंगा भूखा नहीं रहेगा।।

रोटी-कपडा-मकान सबको देना है। तो जीव हत्या बन्द करनी होगी। महर्षि दयानन्द की चेतावनी को भूलना मत-गौ आदि प्राणियो के नाश से राजा और प्रजा दोनो का नाश होता है।

आज यही तो हो रहा है। हर कोई रो रहा है। ऐसे मे एक सन्देश आपकी ओर से जाना चाहिए-

गो-रक्षा में सबकी रक्षा
और
गो-हत्या में सबकी हत्या।

और सब सदेशो का एक सदेश-

मानवता का करते ह्रास।
अडा मछली मदिरा मास।।

इस तरह के बहुत से सन्देश-वाक्य शहर और गाव की दीवारो पर लिखे जा सकते हैं या फिर कागज पर लिखकर यत्र-तत्र चिपकाए जा सकते हैं। इनके बैनर शोभा-यात्राओ व उत्सवो की शोभा बढा सकते हैं। अपनी बात ये स्वय कहेगे, किसी उपदेशक के उपदेश की आवश्यकता नहीं है। बिना किसी विशेष व्याख्या की अपेक्षा इनकी अपनी सशक्त अभिव्यक्ति है। हा ! हर वाक्य के नीचे 'आर्यसमाज' लिखना न भूलें, केवल "आर्यसमाज" वह भी इस तरह-

कटती गउएं करे पुकार।
बन्द करो यह अत्याचार।।
-आर्यसमाज

यह कार्य वर्ष भर चल सकता है। व्यक्तिगत रूप से भी, जब आप समय हो किसी भी भित्ति पर लेखन कर दीजिये। यह प्रभावी प्रचार सस्ता और सरल है। लिख नहीं सकते तो उत्तेजक अश्लील पोस्टरो को फाड दीजिये। या उन पर कालिख पोत दीजिये।

कुछ दिन इसे भी करके देखिए। आपके आस-पास की दीवारे बोलने लगेगी, और बोलती दीवारे क्या रग लाएगी, यह तो आने वाला समय ही बतायेगा।

हा ! भित्ति-लेखन के बाद अपने क्षेत्र मे होने वाली जन-प्रतिक्रिया से हमे समय-समय पर अवगत कराना कभी न भूले।

सभा को वेदप्रचारार्थ दान

१ श्री भीमसिह देशवाल प्रेमनगर रोहतक ने मकर सक्रान्ति के शुभावसर पर सभा को दिनाक १४ मार्च को २१ रुपये दान दिया।

२ सभा के प्रचारक श्री जयपाल भजनोपदेशक के सुपुत्र श्री सत्यवीर सिह हुडा आर्य प्रीत विहार रोहतक ने अपने नव निर्मित भवन निर्माण करने पर सभा को वेद प्रचारार्थ ५०० रुपये दान दिया है। सभा की ओर से धन्यवाद।

आशा है अन्य दानी महानुभाव भी शुभावरो पर सभा के वेद प्रचार, प्रसार हेतु उदारतापूर्वक दान भेजकर सहयोग देगे।

—केदारसिह आर्य, सभा उपमन्त्री

वर्षों से प्यासी भूमि को पानी मिलेगा—बेरी

हरयाणा प्रदेश के किसानो के लिए जीवन रेखा सतलुज यमुना सम्पर्क नहर का फैसला उच्चतम न्यायालय द्वारा हरयाणा के हक मे आने से किसानों मे खुशी की लहर है। वहीं राजनैतिक दलो के नेताओ ने न्यायालय द्वारा हरयाणा की प्यासी धरती के हक मे दिये फैसले का स्वागत किया है। लेकिन पिछले कई वर्षों से प्रदेश की राजनीति मे छाया रहने वाला सुलगता मुद्दा राजनैतिज्ञो के हाथ से निकलने से मायूसी भी हाथ लगी है। बावजूद इसके सभी पार्टियो के नेता इस फैसले को हरयाणा के हक मे आने का श्रेय स्वय लेने के प्रयास मे लगे हैं। नेता एव पूर्व विधायक ओमप्रकाश बेरी ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट के फैसले से वर्षों से प्यासी हरयाणा की लाखो एकड भूमि की इससे मिलने वाले पानी से प्यास बुझेगी। वहीं दक्षिण हरयाणा मे लाखो एकड भूमि बजर होने से बच जायेगी। यही नहीं प्रदेश का किसान नहरी पानी की कमी के चलते कगाली के कगार पर पहुच रहा था, लेकिन अब एस वाई एल का पानी मिलने की सम्भावना बढ जाने से दक्षिणी हरयाणा के किसानो के लिए उच्चतम न्यायालय का यह फैसला वरदान ही नहीं, बल्कि मील का पत्थर साबित होगा। उल्लेखनीय है कि बेरी ने प्रदेश के किसानो को एस वाई एल का निर्माण करवाने के लिए व न्याय दिलाने के लिए न केवल लम्बा सघर्ष किया, बल्कि इस मुद्दे को लेकर आन्दोलन भी चलाया। जिसका परिणाम यह निकला कि उन्हे मत्री मडल मे स्थान भी नहीं दिया गया। दक्षिणी हरयाणा के विधायको से मिलकर इस मुद्दे को लम्बे समय तक गमयि रखा। अब उच्चतम न्यायालय द्वारा प्रदेश के किसानो के हक मे फैंसला अपने पर बेरी ने इस फैंसले का स्वागत करते हुए कहा है कि सुप्रीम कोर्ट के फैसले से उन्हे सबसे अधिक खुशी होगी।

उपदेशकों तथा भजनोपदेशकों की आवश्यकता

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को सुयोग्य उपदेशक तथा प्रभावशाली भजनमडलियो की तुरन्त आवश्यकता है। उपदेशक पद के इच्छुक उम्मीदवार को वैदिक सस्कार करवाने तथा प्रवचन करने का अभ्यास होना चाहिए तथा भजनोपदेशक पद के उम्मीदवार को ग्रामो तथा शहरो में प्रभावशाली ढग से प्रचार करने का अनुभव होना आवश्यक है। अपने आवेदन पत्र के साथ अपनी शिक्षण योग्यता, आयु तथा अनुभव आदि का विवरण लिखे। वेतन योग्यता के अनुसार दिया जावेगा।

—आचार्य यशपाल, मत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक

'ऐसा हो गणतंत्र हमारा'

—राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति, मुसाफिरखाना, सुल्तानपुर (उ०प्र०)

जन हित के प्रति रहे समर्पित,
शासन तथा प्रशासन सारा।
खुशियो से हो भरा राष्ट्र यह,
गुजित हो 'जयहिन्द' सुनारा।
बढे सुपथ पर, मिलकर सारे-
राष्ट्र बने प्राणो से प्यारा।
ऐसा हो गणतत्र हमारा।।
देश भक्ति की धार सुपावन,
जन-जन मे हो पुन प्रवाहित।
युवक हमारे निकले निर्भय,
प्राण हथेली पर ले, परहित।
आतको के, उग्रवाद के-
हामी सारे कसे किनारा।
ऐसा हो गणतत्र हमारा।।
भ्रष्टाचार रहित हो शासन,
कर्मी सारे बने हितैषी।
जगे हमारे अन्तर्मन मे,
निश्च्छलता से भाव स्वदेशी।
कभी न मानव बने यहा का-
मानवता का ही हत्यारा।
ऐसा हो गणतत्र हमारा।।
समता-समरसता-समृद्धि का,
हो कण-कण मे नव सचारण।
सभी समस्याओ का हो फिर,
आज राष्ट्र की, शीघ्र निवारण।
निर्बलतम जो भारत-जन हैं-
उनको भी अब मिले सहारा।
ऐसा हो गणतत्र हमारा।।
भीष्म-भीम व पार्थ सदृश हो,
वीर जयी सेनानी सारे।
अपराजित हो सैन्य-वाहिनी,
विश्व विजय के हित हुकारे।
वसुन्धरा को मार्ग बताए-
जय ध्वज भारत न्यारा।
ऐसा हो गणतत्र हमारा।।

सत्यार्थ प्रकाश प्रतियोगिता परिणाम

सर्वहितकारी के अक दिनाक १४-९-२००१ मे पूछे गये प्रश्नो के उत्तर तीस प्रत्याशियो से प्राप्त हुये हैं। परिणाम निम्नलिखित है।

प्रथम—श्रीमती किरण आर्या, कोटा (राजस्थान)
द्वितीय—शास्त्री महेन्द्रकुमार आर्य, आर्यसमाज कैराना (उ०प्र०)
तृतीया—श्रीमती सौभाग्यवती प्रधाना,
स्त्री आर्यसमाज, कृष्णनगर, दिल्ली-५१

इनके पुरस्कार शीघ्र धनादेश द्वारा भेज रहे हैं। पन्द्रह प्रत्याशियो को सान्त्वना पुरस्कार के रूप मे पुस्तके भेजी गई हैं। प्रतियोगिता मे भाग लेने वालो को हार्दिक धन्यवाद देता हू। सर्वहितकारी सम्पादक महोदय का भी बहुत आभारी हू जिनके माध्यम से यह प्रचार कार्य पुरा हुआ।

सयोजक
—देवराज आर्य मित्र, आर्यसमाज कृष्णा नगर दिल्ली-५१

ऋषि दयानन्द की संक्षिप्त जीवनी

प्रतापसिंह शास्त्री, एम.ए. पत्रकार, गोल्डन विहार, गगवा रोड, हिसार

गतांक से आगे–

रात्रि मे जागते हुए चारो प्रहरों मे चार बार पूजा करने के नियम हैं। प्रथम प्रहर मे दूध के द्वारा, द्वितीय प्रहर में दधि (दही) के द्वारा, तृतीय प्रहर में घृत (घी) के द्वारा और चतुर्थ प्रहर में मधु के द्वारा शिवलिग को स्नान कराके अर्घ्यदान और पूजा आदि करने का नियम था और आज भी है। मूलशकर ने देखा कि प्रथम और द्वितीय प्रहर की पूजा के बाद एक-एक करके सबके सब व्रतधारी सोने लगे। मूलशकर के पिताजी भी सो गए। पुजारी लोग एक-एक करके बाहर चले गए। मूलशकर शिवजी का दर्शन करने की लालसा से जागरूक रहा। बालक मूलशकर ने देखा कि एक चूहे ने शिवजी के सिर पर चढकर चावल, दूध, दही और शक्कर खाना आरम्भ कर दिया और पत्थर के बने शिवजी चुपचाप ही रह गये। मूलशकर के दिमाग मे तत्काल चिन्ता उत्पन्न हुई कि जगत् के प्रलयकर्त्ता यह शिव नहीं हैं ? ये सब पूजा, उपवास और रात्रि जागरण ढोग मिथ्या और वृथा हैं। मूलशकर ने अपने पिताजी को जगाया और शिवजी की अकर्मण्यता के बारे मे प्रश्न किया। उन्होंने मूलशकर को धमका दिया और बोले-"कलिकाल मे शिवजी का दर्शन सदा नहीं होता। इस रूप से पूजा करने से प्रसन्न होकर कभी-कभी दर्शन भी देते हैं। मूलशकर का प्रश्न था-कि यह शिव वही शिव है कि नहीं ?" पिता ने कहा-"यह शिव उनकी प्रतीक है। तब मूलशकर ने अपने मन मे कहा और शका उठाई कि जिसकी हमने कथा सुनी थी वह क्या यह महादेव है ? या वह कोई और है क्योकि वह तो मनुष्य के समान एक देवता है जिसके विकराल गण, पाशुपतास्त्र, वृषभवाहन, त्रिशूल, हाथ में जो डमरू बजाता है, कैलाश का पति है, इत्यादि प्रकार का महादेव जो कथा मे सुना था क्या सम्भव है कि यह पारब्रह्म हो ? जिसे सिर पर चूहे दौडे-दौडे फिरते हैं चूहे की यह लीला देख बालक मूलशकर की बाल बुद्धि को ऐसा प्रतीत हुआ कि जो शिव अपने पशुपतास्त्र से बड़े-बड़े प्रचण्ड दैत्यों को मारता है क्या उसमें एक साधारण चूहे को भी भगा देने की शक्ति नहीं ? पिता जी के उत्तर से मूलशकर को कुछ भी शाति न मिली। प्रत्युत मन मे और भ्रम हो गया कि इसमे कुछ गडबड अवश्य है। मूलशकर को अपने पिता जी की बातो मे कुछ कपट और लाग लपेट प्रतीत हुई। तब उसने सकल्प किया कि जब मैं उस शिव को प्रत्यक्ष देखूगा तभी पूजा करूगा अन्यथा नहीं। इस प्रकार यह शिवरात्रि मूलशकर के लिए बोधरात्रि बन गई। थोडे समय पश्चात् बालक मूलशकर को भूख और थकान से दुर्बलता प्रतीत होने लगी इसलिए पिता जी से पूछा कि अब मैं घर जाना चाहता हू। पिता जी ने एक सिपाही के साथ मूलशकर को घर भेज दिया और बोल दिया कि घर जाकर भोजन नहीं करना। व्रत को नहीं तोडना। मूलशकर ने घर जाकर भूख के कारण अपनी माता जी से मिठाई मागकर भर पेट खा ली। माता ने ममतावश, स्नेह के कारण पिता जी डरते-डरते मूलशकर को खिला दिया। और मूलशकर सो गया तथा सवेरे देर से उठा और जागते ही देखा कि माता पिता मे झगडा हो रहा है कारण मूलशकर का उपवास तोड देना ही था। मूलशकर भयभीत होकर रोने लगा। पिता जी भी बालक का कल्याण उसे भूखा रखने मे सोचते थे अत वे भी रोने लगे। पिता जी भूखे थे वे इसी अवस्था मे घर छोडकर चले गए और एक सिपाही को साथ ले लिया।

व्रतभंग के महापाप का प्रायश्चित

मूलशकर द्वारा व्रत भग के महापाप का प्रायश्चित क्या है ? इसका विधान जानने के लिए दो कोस की दूरी पर एक स्मृति शास्त्र के पडित के पास मूलशकर के पिता जी पहुच गये। पडित जी अन्य पडितो से सलाह करने के लिये अगल-बगल दो एक गाव मे गए। चार पडितो ने निर्णय दिया कि- यह महापाप उस नाबालिग लडके मूलशकर को नहीं लगा, यह महापाप मूलशकर के पिता कर्षन जी तिवारी को ही लग गया है। पुराणो के पूजा धर्म की अवज्ञा की गई है। इसके लिए यही प्राश्चित है कि घर पर शुक्ल पक्ष मे एक-एक करके रोजाना १८ पुराणो और कृष्ण पक्ष मे १८ उप पुराणो का पाठ हो। तदनुसार दान दक्षिणा हो और अन्तिम दिन इन कुल ३६ ब्राह्मणो को एक साथ भोजन और दक्षिणा देने की व्यवस्था हो। तय हो गया कि आगामी शुक्ला द्वितीया तिथि से ही पुराण का पाठ शुरू होगा। मूलशकर के पिता ने पडितो के हाथ का पानी पीकर उपवास का पारण कर लिया। पिता कर्षन तिवारी मच्छोकहाटा (डेमीनदी) मे स्नान कर सायकाल घर पहुचे। और सबको प्रायश्चित करने का पूरा विवरण सुना दिया। इस प्रायश्चित का नाम-"महापापघ्न प्रायश्चित" है। आगामी दिन अमावस्या मे मूलशकर के घर मे ३६ पुराण पाठी ब्राह्मणो का शुभआगमन हुआ। सकल्प पाठ के साथ उन सबको वरण किया गया और भोजन करवाके दक्षिणाए दी गई। तृतीय दिवस शुक्ला द्वितीया तिथि से पुराण पाठ शुरु होगा। मूलशकर ने जाकर पडितो से पूछा मे भी तो पुराण पाठ सुन सकूगा। पडितो से पूछा मैं भी तो पुराण पाठ सुन सकूगा। पण्डितो ने हर्ष के साथ सम्मति दी। एक वृद्ध पण्डित ने मूलशकर को आशीर्वाद दिया-"वत्स तुम यशस्वी बनो।" मूलशकर के पिता जी ने पण्डितो से प्रार्थना की-"पुराणो के अश्लील अशो को छोड दिया जाय।" पण्डितो ने स्वीकार कर लिया।

तीसरे रोज यथा रीति (पुराण पारायणरीति आज भी पौराणिक जगत् मे प्रचलित है जिस पर कई हजार रुपया खर्च होता है) पुराण पाठ आरम्भ हो गया। क्रम इस प्रकार रहा-पहले छ दिन सात्विक महापुराणो का पाठ हुआ यथा-विष्णु पुराण, भागवत पुराण, नारदीय पुराण, गरूड पुराण, पद्म पुराण, वराह पुराण।

दूसरे छ दिन राजसिक पुराणो का पाठ हुआ यथा-ब्रह्म पुराण, ब्रह्माण्ड पुराण, ब्रह्मवैवर्त पुराण, मार्कण्डेय पुराण, भविष्य पुराण और वामन पुराण।

तीसरे छ दिन तामसिक पुराणो का पाठ हुआ-यथा-शिव पुराण, लिग पुराण, स्कन्द पुराण, अग्नि पुराण मत्स्य पुराण और कूर्म पुराण।

शेष १८ दिन १८ उपपुराणो का पाठ हुआ यथा-सनतकुमार पुराण, नरसिह पुराण, वायु पुराण, शिव धर्म पुराण, आश्चर्य पुराण, नारद पुराण, नान्दिकेश्वर पुराण, उशना पुराण, कपिल पुराण, वरुण पुराण, साम्ब पुराण, कालिक पुराण, महेश्वर पुराण,कल्कि पुराण, देवी पुराण, पराशरपुराण, मरीचि पुराण और सौर पुराण। प्रतिदिन पुराण पाठको को एक मोहर, एक कपडा, एक लोटा और दक्षिणा के साथ भोजन दिया जाता था। ३६ दिन के बाद दूसरे दिन ३६ पुराण पाठी पण्डितो ने एकत्र होकर सामूहिक रूप मे भोजन किया और सबने अलग-अलग रूप मे भोजन किया और सबने अलग-अलग रूप से (एकत्र होकर) दक्षिणा प्राप्त की और कर्षन तिवारी मूलशकर आदि परिवार जनो को आशीर्वाद दिया। मूलशकर के पिता उस दिन महापाप से मुक्त होकर प्रसन्न हो रहे थे। बालक मूलशकर ३६ दिन तक अपने पिता कर्षन तिवारी के साथ बैठा और प्रात साय नियमित रूप से पुराणो की कहानिया सुना करता था। उनके पिता जी के निर्देशानुसार पुराणो के अश्लील, भद्दे अशो को छोड दिया जाता था। केवल उल्लेख करते जाते थे। जैसे कि गोपियो का वस्त्र हरण या रास लीला या शिव जी का मोहिनी मूर्ति धारण या कीर्तिकेय का जन्म लाभ आदि-आदि। इस रूप से मूलशकर के पिता ने अपने सनातन कौलिक धर्म की रक्षा की थी और मूलशंकर ने (स्वामी जी ने) पुराणो के रहस्य को जान लिया था इसीलिए स्वामी दयानन्द सारे जीवन भर पुराणो की असत्य बातो की रचनात्मक आलोचना करते रहे, लोगो को पुराणो की झूठी लीला से रोकने के लिए आर्षग्रन्थो व वेदो का उपदेश करते रहे।

इस प्रायश्चित के बाद कर्षन तिवारी ने अपने पुत्र मूलशकर के अध्ययन की ओर अधिक ध्यान दिया। मूलशकर की अब मूर्ति पूजा मे कोई श्रद्धा न रही थी। उन्होने अपने चाचा जी से इस विषय मे साफ-साफ बता दिया था। मूलशकर के चाचा जी ने मूलशकर के पिता को समझा बुझा कर शान्त कर दिया और कहा अब इस बालक को अच्छी प्रकार पढने दो। इसके बाद मूलशकर ने पढने मे बडी उन्नति की। (क्रमश)

हक के लिए जेल जाने को तैयार : स्वामी ओमानन्द

झज्जर। स्थानीय गुरुकुल के आचार्य स्वामी ओमानन्द सरस्वती ने कहा कि अगर पजाब के मुख्यमन्त्री प्रकाशसिह बादल हरयाणा को पानी देने के विरोध मे एक जेल भर सकते है तो हरयाणा के लोग अपने हक के लिए दर्जनो जेल भरने को तैयार हैं। स्वामी ओमानन्द सरस्वती ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद पूरे हरयाणा मे खुशिया मनाई जा रही हे तथा राजनीतिक पार्टिया इस जीत का सेहरा अपने-अपने सिरो पर बाध रही हैं, मगर इस जीत की असली हकदार को सुप्रीम कोर्ट व समाचारपत्र हैं जिन्होने इसका प्रचार किया। वे आज स्थानीय गुरुकुल के प्रागण मे एक पत्रकार वार्ता को सम्बोधित कर रहे थे।

उन्होने कहा कि सुप्रीम कोर्ट द्वारा एसवाईएल के मामले मे हरयाणा के पक्ष मे फैसला सुनाने के बाद स्थानीय जनता खुशिया मना रही है तथा हरयाणा की सभी राजनैतिक पार्टिया भी इस जीत मे अपनी खुशिया लोगो के बीच आकर बाट रही हैं। पजाब के मुख्यमन्त्री प्रकाशसिह बादल के इस बयान की उन्होने कडी निदा की, जिसमे श्री बादल ने कहा कि पजाब के लोग जेले भर देगे, हर कुर्बानी देगे, मगर पजाब की नदियो का एक बूद पानी भी हरयाणा को नहीं देगे। स्वामी ओमानन्द सरस्वती ने कहा कि पजाब के मुख्यमन्त्री प्रकाशसिह बादल क्या जेल भरेगे, अगर जरूरत पडी तो हरयाणा के लोग अपने हक के लिए न सिर्फ जेल भर देगे, बल्कि हरयाणा रास्ता जाम भी करने मे पीछे नहीं रहेगा। श्री सरस्वती ने कहा कि आर्यसमाज इससे पूर्व कई बार जेले भर चुका है तबा अब भी पीछे नहीं रहेगा। हैदराबाद मे धार्मिक सत्याग्रह, गोरक्षा व हरयाणा हिन्दी आन्दोलन का जिक्र करते हुए उन्होने कहा कि इन आन्दोलनो मे आर्यसमाज के हजारो लोगो ने बढ- चढकर भाग लिया था तथा जेलो मे गए थे। उन्होने कहा कि एसवाईएल का पानी पाकिस्तान में जा रहा है, मगर पजाब के मुख्यमन्त्री प्रकाशसिंह बादल इस पानी को हरयाणा की जनता को नहीं देना चाहते, जो कि उनकी तुच्छ व छोटी नियत के कारण हो रहा है। उन्होने कहा कि पजाब सरकार को चाहिए कि वह सुप्रीम कोर्ट के फैसले का पालन करे तथा हरयाणा के हक का पानी उसे दे, चूकि यह हरयाणा के लोगो का हक है, वे कोई भिक्षा नहीं माग रहे हैं।

अमर रहे गणतंत्र हमारा

आओ ! हम गणतत्र मनाए।
प्रेम प्यार की रीति चलाए।।
अमर रहे गणतत्र हमारा।
जब तक गगा, यमुना की धारा।।
भारत मा की शान बढाए।
प्रेम प्यार की रीति चलाए।।
महापर्व गणतत्र निराला।
मान रहा है अदना, आला।।
जग को इसका महत्त्व बताए।
प्रेम प्यार की रीति चलाए।।
जागो ! भारत वीरो जागो।
द्वेष, ईर्ष्या, घृणा त्यागो।।
बिछुडो को हम गले लगाए।
प्रेम प्यार की रीति चलाए।।
उग्रवाद बढ गया देश मे।
फिरे भेडिया, भेड वेष मे।।
मिलकर आतकवाद मिटाए।
प्रेम प्यार की रीति चलाए।।
दुनिया भर के मानव सारे।
ईश्वर के सब सुत हैं प्यारे।।
छुआछात का रोग मिटाए।
प्रेम प्यार की रीति चलाए।।
भारत वीरो कदम बढाओ।
आर्य बनो दुनिया को बनाओ।।
निर्भय वैदिक नाद बजाए।
प्रेम प्यार की रीति चलाए।।

—प० नन्दलाल निर्णय, ग्राम बहीन
जिला फरीदाबाद (हरयाणा)

गांव माछरौली में आर्यसम्मेलन सम्पन्न

दिनाक ६ जनवरी रविवार को गाव माछरौली जि० झज्जर के नवयुवको ने सगठित होकर स्वामी ओमानन्द जी के सम्मान मे एक आर्यसम्मेलन का आयोजन किया। अनेक वर्षों के बाद आर्यसमाज के प्रचार से गाव मे उत्साह का वातावरण दिखाई दिया, सम्मेलन मे गाव की महिलाओ, बुजुर्गों, नवयुवको और बच्चो ने उपस्थित होकर आर्यसमाज के प्रचार को सुना। सम्मेलन प्रात काल विशेष दैनिकयज्ञ के द्वारा स्वामी जीवानन्द जी नैष्ठिक की अध्यक्षता मे गुरुकुल के ब्रह्मचारियो द्वारा सम्पन्न किया गया, यज्ञ पर यजमानो को यज्ञोपवीत और आशीर्वाद दिया गया और प्रतिज्ञाये कराई गई। ५ जनवरी को सायकाल आर्य प्रतिनिधि सभा के भजनोपदेशक श्री जयपाल जी ने प्रचार किया। सम्मेलन मे प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री आशाराम जी ने भी अपने मधुर भजनो के द्वारा उपस्थित जनसमूह को मत्रमुग्ध कर दिया। गाववासियो की तरफ से स्वामी ओमानन्द जी द्वारा निर्मित कैसर हस्पताल के लिए एक कमरा बनाने हेतु धनराशि भेट की गई।

सम्मेलन मे स्वामी इन्द्रवेश जी, वरिष्ठ उपप्रधान श्री वेदव्रत जी शास्त्री, आचार्य यशपाल जी सभामत्री गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के अधिष्ठाता भगत मगतूराम आदि उपस्थित विद्वानो ने अपने-अपने विचार रखे। इस अवसर पर जिला झज्जर के अतिरिक्त उपायुक्त श्री कौशिक जी ने भी स्वामी ओमानन्द जी द्वारा आर्यसमाज के लिए किए गए कार्य की प्रशसा करते हुए अपने उद्गार व्यक्त किए और कैसर हस्पताल के लिए मैचिग ग्राट दिलाने का आश्वासन दिया।

सम्मेलन के पश्चात् गुरुकुल झज्जर के ब्रह्मचारियो द्वारा आकर्षक व्यायाम प्रदर्शन किया गया। जिसकी ग्रामवासियो ने मुक्त कठ से प्रशसा की। इसके पश्चात् श्री हवासिह सु श्रीरामकिशन के घर पर सभी उपदेशको व ब्रह्मचारियो को भोजनादि कराया गया।

इस सम्मेलन को सफल बनाने के लिए जिन नौजवानो, बुजुर्गों ने सगठित होकर घर-घर से चन्दा एकत्रित किया उनमे विशेष रूप से श्री वेदप्रकाश श्री हवासिह श्री जगदीशप्रसाद, श्री रणसिह, श्री पवन, श्री रामनिवास, श्री रिसाल साहब, श्री प्यारेलाल, श्री प्रकाश मेहरा का सहयोग सराहनीय था, इनके साथ श्री रामफल, श्री सुखीराम, श्री अभेसिह, श्री रामचन्द्र आदि ने पूर्ण सहयोग देकर सम्मलेन को सफल बनाया। सम्मेलन के द्वारा गाववासियों पर आर्यसमाज के प्रचार की अमिट छाप रही।

यदि आज देश में नेता जी................. (प्रथम पृष्ठ का शेष)

के क्रियाकलापो एव अहिंसात्मक सत्याग्रह से सन्तुष्टि नहीं हुई। नेता जी काग्रेस मे तो शामिल हो ही गए थे, किन्तु पार्टी मे रहते हुए भी कभी भी गाधी जी से उनके विचार नहीं मिलते थे। कलकत्ता आकर वे देशबन्धु चित्तरजनदास से मिले। उनके साथ मिलकर काम करते रहे। १९२१ में वे जेल मे भी रहे। चित्तरजन के साथ जेल मे रहते हुए वे बीमार हो गए थे। नेता जी जेलो मे रहते-रहते सख्त बीमार होते रहे। स्वास्थ्य लाभ के लिए उन्हे योरोप भी जाना पडा। सरकार ने उनके योरोप से वापिस आने पर पाबन्दी भी लगा दी थी किन्तु फिर भी नेता जी वापिस आ ही गए। १९३५-३६ मे नेता जी काग्रेस के अध्यक्ष चुने गए। इनके मुकाबले मे खडे पट्टाभिसीतारमैया की हार होने पर गाधी जी ने कहा था–यह तो मेरी हार है। नेता जी के साथ काग्रेस के गाधीवादी सदस्यो ने सहयोग करना बन्द कर दिया था।

उस समय काग्रेस के प्रधान होने के कारण नेता जी उस समय मुस्लिम लीग के नेता जिन्ना के साथ हिन्दू-मुस्लिम समस्या का समाधान करने के उद्देश्य से उनके निवास पर बम्बई गए। जिन्ना ने बात करने से इनकार कर दिया। वे खाली हाथ लौटे। जहा से वे सीधे दादर बम्बई मे स्थित वीर सावरकर से मिलने सावरकर सदन गए। शिष्टाचार कुशलता पूछने पर नेता जी ने अपने आगामी कार्यक्रम के बारे मे बताया। बाते होने पर वीर सावरकर ने उन्हें समझाया कि आप की योग्यता, प्रतिभा आपकी देशभक्ति की भावना, एव आपकी सगठन शक्ति से देश को भी लाभ हो कसता है, यदि आप किसी प्रकार इस समय जर्मनी जाकर हर हिटलर से भेट करे, वहा से जापान पहुचे। वहा जापान मे महान् क्रान्तिकारी रासबिहारी बोस ने "इण्डियन नेशनल आर्मी" का सगठन कर रखा है, उनसे मिलकर सेना का नेतृत्व सम्भालिये और ब्रह्मा के रास्ते से अग्रेजों द्वारा पराधीन भारत पर हमला कर देश को आजाद कराइये।" सावरकर जी से सलाह लेकर कलकत्ता गए, वहा जाकर "हालवैल मैमोरियल को तोडने का प्रयास किया। पकडे गए। जेल मे डाल दिये गए। जेल मे रहते हुए सावरकर जी की सलाह पर विचार करते रहे। अग्रेज सरकार ने इन्हे उनके निवास पर ही नजरबन्द कर दिया। जेल मे रहते हुए नेता जी ने अपनी डाढी बढा ली। एक दिन रात के समय घर से भाग निकले, गुप्त रूप से काबुल के रास्ते से जर्मनी पहुचे, वहा हिटलर से भेट की, हिटलर ने उन्हे भारत का बेताज बादशाह कहकर उनका स्वागत किया। हिटलर की सहायता से जर्मनी की पनडुब्बी मे बैठकर जापान पहुच गए। वहां रासबिहारी बोस निर्मित आजाद हिन्द फौज की कमान संभाली। फौज की कमान सम्भालते हुए रासबिहारी बोस ने अपनी सेना का धन्यवाद करते हुए कहा कि मैं अब बूढा हो गया हू, अत सेना का नेतृत्व करने के लिए मैंने सुभाष को भारत से बुलाया है। आज से वे ही आपके वरिष्ठ कमाण्डर होगे, मैं आज से ही उन्हे "नेता जी" के नाम से पुकारता हूं। "दिल्ली चलो" के नारो से तथा "जय हिन्द" के उद्घोषो से आकाश गूज उठा। नेता जी ने भी मातृभूमि की स्वतन्त्रता के लिए जवानो मे तीव्र भावना भरते हुए कहा–"तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हे आजादी दूंगा" फिर जय हिन्द के नारो से आकाश गूज उठा। नेता जी ने २५ जून १९४४ को आकाश वाणी सिगापुर से भाषण देते हुए, उस समय वीर सावरकर को भी स्मरण करते हुए कहा था–"When due to misguided political whims and look of vision almost all the leaders of Congress Party have been decrying all the soldiers in Indian Army as mercenaries it is heartening to know that Veer Savarkar is fearlessly enharting the youths of India to enlist themselves in the armed forces. These enlisted youths themselves provided us with trained men & soldiers of our Indian National Army" अर्थात् जिन दिनों पथभ्रष्ट राजनीतिक भ्रान्त धारणाओ और दूरदर्शिता के अभाव के कारण काग्रेस के समस्त नेता भारतीय सेना के सम्पूर्ण सैनिको को भाडे के टट्टू कहकर अपमानित कर रहे हैं, यह जानना खुशी का विषय है कि वीर सावरकर निर्भीक होकर भारतीय युवकों को सशस्त्र सेनाओ मे भर्ती होने को उत्साहित करते रहते हैं, यही स्वय भर्ती हुए युवा सेनानी ही हमारी "इण्डियन नेशनल आर्मी" के लिए रगरूट और सिपाही बनते हैं।" (क्रान्ति का नाद पृष्ठ ९०)

युद्ध के चलते नेता जी की आजाद हिन्द के सेनानियो ने ब्रह्मा के मार्ग से अग्रेजी सेनाओ पर आक्रमण किया। किन्तु राष्ट्र के दुर्भाग्य के कारण उस समय राष्ट्र स्वतन्त्र नहीं हो सका, किन्तु स्वतन्त्रता की नींव रखी जा चुकी थी। अग्रेजी साम्राज्य भी काप उठा था। ५० हजार सैनिक अपनी गिरफ्तारी देकर दिल्ली के लालकिले में बन्द कर दिए गए। उस समय "जय हिन्द" के नारो से दिल्ली का आकाश भी गूजता रहता था। इस सकट की घडी मे नेता जी भी सिगापुर से विमान द्वारा जापान जाते हुए १९४५ मे मार्ग मे विमान के दुर्घटनाग्रस्त हो जाने के कारण असमय ही मृत्यु को प्राप्त हो गए। मुकदमा चलने के बाद आजाद हिन्द सेना के सभी सेनानी मुक्त कर दिए गए। १५ अगस्त १९४७ को भारत विभाजित होकर आजाद हुआ।

भारत का विभाजन–तत्कालीन काग्रेसी नेताओ के कारण ही भारत विभाजित हुआ। विभाजन में तीन नेताओ की मुख्य भूमिका रही। वे थे–पूज्य राष्ट्र के पिता श्री महात्मा गाधी जी। वायसराय माऊटबेटन के मित्र प० जवाहरलाल नेहरू जी तथा लौहपुरुष सरदार पटेल। महात्मा गाधी ने कहा था कि पाकिस्तान भारत विभाजन मेरी लाश पर बनेगा। किन्तु बाद मे गाधी जी ने मुस्लिम तुष्टीकरण के कारण विभाजन की स्वीकृति काग्रेस कमेटी को दे दी। पाकिस्तान को साथ ही अनशन करके ५५ करोड रुपया भी दिलवा दिया। पश्चिमी पजाब से २० लाख लोग उजडकर भारत आए। दो लाख मारे गए। हजारो लडकिया मुस्लिमो ने उठा ली। भयकर कारकाट हुई। इसी प्रकार पूर्वी बगाल भी विभाजित हुआ। लाखो लोग बेघर हो गए व मारे गए। गाधी जी ने नोआखली की यात्रा की, हिन्दुओ को दिलासा देने के लिए। आज वह वीरभूमि बंगाली बोस की धरती कम्युनिस्टो के कब्जे मे है, जिन्होने कभी नेता जी को "तोजो का कुत्ता" कहकर पुकारा था। बगला देश से लाखो शरणार्थी वहा आ गए हैं, जिन्हे वहा पर शरण नहीं दी जा रही है। यदि आज नेताजी होते तो यह कुछ भी न होता।

श्रीमान् प० नेहरू जी ने ३७०वीं धारा के रूप मे कश्मीर मे जो विष वृक्ष बोए थे, वे आज खूब फल-फूल रहे हैं। नेहरू जी की भयकर भूले ही आज कश्मीर मे आतक का कारण बनी हैं। वहा से सभी हिन्दू निकाल दिए गए हैं। रोजाना सीमाओ पर पाकिस्तान की तरफ से गोलाबारी हो रही है। रोजाना आतकवादी लोगो को मार रहे हैं। जनरल मुशर्रफ कश्मीर को अपनी रगो मे बता रहे हैं। नेहरू जी की भूलो का ही यह सब परिणाम है जो आज देश को भुगतना पड रहा है। सीमाओ पर दोनो ओर सेनाए तैनात हो गई हैं। कोई भी मसझौता नहीं हो सकता। लडाई अवश्य होगी। भारत विजयी होगा। पाकिस्तान समाप्त होगा। यह निश्चित है।

यदि नेता जी १९४७ तक जीवित रहते तो पाकिस्तान नहीं बनता। वे मि० जिन्ना से पहले ही मिल चुके थे। नेता जी हिन्दू-मुस्लिम समस्या का समाधान करना चाहते थे। किन्तु हमारा दुर्भाग्य था कि १९४५ मे ही चले गए। नेता जी को मरणोपरान्त "भारत रत्न" से सम्मानित करना चाहिए था, किन्तु ऐसा आज तक भी नहीं किया जा सका। यह ठीक ही कहा है–

उन शहीदों की समाधि पर आज एक दीवा भी नहीं,
जलते थे जिनके खून से चिरागे वतन।
आज जगमगाते हैं मकबरे उनके,
जो चुराते थे शहीदो के कफन।।

नेता जी को सादर श्रद्धाजलि।

क्या आप ध्यान से पढ़ोगे ?

यदि आप को जरा भी देश व राष्ट्र से प्रेम है तो अपने देश मे राष्ट्र भाषा हिन्दी का प्रयोग करे। जैसे हिन्दी में हस्ताक्षर करे, अग्रेजी में सिगनेचर न करे। निमत्रण पत्र इत्यादि हिन्दी मे छपवायें। अग्रेजी सीखने या पढने का मतलब यह नहीं है कि हम अपनी मातृभाषा को भूल जाये।

आजकल लडकिया शर्म की सीमा को पार कर रही हैं अग प्रदर्शन इनका फैशन बनता जा रहा है। इनको पढाने का यह अर्थ नहीं है कि उनको मिस वर्ल्ड या मिस इण्डिया बनाया जाये। उर्दू की निम्न पंक्तिया बताती हैं कि -

तालीम लड़कियो की जरूरी है तो मगर,
वो खातून खाना हों किसी सभा की परि न हों।

अर्थात् शिक्षा ग्रहण करके उन्हे अच्छी गृहिणी बनना आवश्यक है।

आर्यसमाज मे एक लहर चल पडी है। नमस्ते को भूलकर नमस्कार जी करते हैं। नमस्ते और नमस्कार में जो अन्तर है उसे समझने पर भी नहीं समझते। जब भी मिलो तुम कभी किसी से करो नमस्ते जी, नमस्ते जी।

कुछ अधिकारी आर्यसमाज मे स्वामी विवेकानन्द को थोपने का प्रयास कर रहे हैं। स्वामी दयानन्द और विवेकानन्द मे जो विरोधी अन्तर है उसे समझने की चेष्टा नहीं करते। इनसे सतर्क हरने की आवश्यकता है।

आर्यसमाज को केवल चन्दा देनेवाले नकली फजली सदस्य मत बनो। सच्चे सदाचारी और असली समाजी बनो। अपनी बुद्धि का प्रयोग करो। अधविश्वास मे फसकर भेड चाल मत चलो। सत्य और असत्य को जानकर धर्माचरण करो। आज हम देखते हैं कि आर्यसमाज केवल यज्ञ हवन करके अपने कर्त्तव्य की इतिश्री समझता है जबकि इतिहास बताता है कि आर्यसमाज बुराइयो और कुप्रथाओ के विरुद्ध एक आन्दोलन है। अत: इसको ईमानदारी से सक्रिय बनाओ। कृण्वन्तो विश्मार्यम् से पूर्व कृण्वन्तो स्वय आर्यम् को करो। केवल जय घोष लगाने से काम नहीं चलेगा।

—देवराज आर्य मित्र, आर्यसमाज कृष्ण नगर, दिल्ली-५१

संस्कृत क्यों सीखें ?

१ सुरससुबोधा विश्वमनोज्ञा ललितहृदया रमणीया।
अमृतवाणी सस्कृतभाषा नैव क्लिष्टा न च कठिना।

२ यह किसी भी व्यक्ति विशेष, देश विशेष, काल विशेष, सम्प्रदाय विशेष, समुदाय विशेष, की धरोहर न होकर सूर्य-चन्द्र-जल-वायु के समान मनुष्य मात्र के लिए लाभदायक है।

३ यह सस्कृत भाषा विश्व की सभी भाषाओ की जननी है।

४ सस्कृत व्याकरण एक समृद्ध, सुनिश्चित, नियमित, सर्वाधिक शब्द समुदाय से युक्त एव शब्द-अर्थ के सबध का बोध कराने मे अद्वितीय रुप से सक्षम है।

५ यह सस्कृत भाषा मानव मात्र के सपूर्ण भावो को अभिव्यक्त करने मे सर्वथा समर्थ है।

६ वेद, उपवेद, ब्राह्मण, ६ वेदाग, ६ दर्शन शास्त्र, स्मृति ग्रन्थ, महाभारत, रामायण, गीता इत्यादि समस्त विद्याओ का आधार मात्र सस्कृत ही है।

७ यह तीनो कालो मे आदि सृष्टि से लेकर वर्तमान तथा भविष्य मे भी एक ही स्वरूप मे रहने वाली अपरिर्वतनशील, अजर-अमर अर्थात् विकार से रहित शुद्ध और नित्य अर्थात् चिरस्थायी है।

८ यह आधुनिक तकनीकी के अनुकूल होने से विश्व के वैज्ञानिकों के द्वारा कम्प्यूटर के लिए चुनी जाने योग्य सब भाषाओं मे सर्वाधिक उपयुक्त सिद्ध है।

९ बडे से बडे जैसे सूर्य, चन्द्र, नक्षत्रादि तथा छोटे से छोटे जैसे अणु, परमाणु, सत्व, रज, तम अर्थात् प्रकृति पर्यन्त सभी पदार्थो का यथार्थ ज्ञान सस्कृत भाषा से ही सभव है।

१० ईश्वर प्राप्ति का एक मात्र उपाय है अष्टांग योग और अष्टाग योग का सम्पूर्ण विधि विधान संस्कृत भाषा के ग्रन्थों में ही सन्निहित है।

११ आदि सृष्टि से वर्तमान पर्यन्त तर्क व प्रमाणों के ही आधार पर गवेषणा करनेवाले विवेकी तत्त्वदर्शियों, ऋषियों, मुनियो, मेधावियो के चितन, मनन व निदिध्यासन को सर्वाधिक उत्कृष्ट, समृद्ध एव परिपुष्ट आधार प्रदान करने वाली यही मूल सस्कृत भाषा है।

१२. अन्त में यदि कहा जाये कि मनुष्य के जीवन का सर्वस्व अर्थात् शान्ति, निर्भयता, स्वतत्रता आदि की प्राप्ति सस्कृत भाषा मे ही सन्निहित है तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

१३ सस्कृतेन सम्भाषणं कुरुऽऽ, जीवनस्य परिवर्तन कुरु यत्र यत्र गच्छसि पश्य तत्र सस्कृत सस्कृते सरक्षण कुरुऽऽ

—बी वेदप्रकाश वैदिक खगोल अभ्यासक

आर्यसमाज भिलाई नगर में ऋग्वेद महायज्ञ एवं वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज भिलाई नगर, जिला दुर्ग (छत्तीस गढ) का ४२ वा वार्षिक महोत्सव २० से २३ दिसम्बर २००१ तक बडे हर्षोल्लास के वातावरण मे मनाया गया। इस अवसर पर वैदिक विद्वान् आचार्य डा० सजयदेव जी (इन्दौर) के ब्रह्मत्व मे "ऋग्वेद महायज्ञ" भी हुआ। महायज्ञ मे गुरुकुल आमसेना के विद्यार्थियो ने वेद पाठ किया।

—इन्द्रकुमार हरवानी मत्री
आर्य समाज भिलाई, सेक्टर-६ जिला दुर्ग (छत्तीसगढ)

आर्यसमाज घाटकोपर मुम्बई का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज घाटकोपर मुम्बई का त्रिदिवसीय उत्सव सम्पन्न हुआ। जिसमे आये हुए वैदिक विद्वानो ने अपने विचार प्रस्तुत किए। जिसमे गोरक्षा सम्मेलन, महिला सम्मेलन तथा राष्ट्र रक्षा सम्मेलन पर मुख्य ओजस्वी वक्त ब्रह्मचारी धर्मबन्धु जी महाराज उपदेशक महाविद्यालय टकारा ने देश के विभिन्न विषयो पर बडे सरल तरीके से अपने विचार प्रस्तुत किये। उन्होने देश की रक्षा हेतु चिन्ता व्यक्त करते हुए बताया कि आज भारत जिस प्रकार भ्रष्टाचार, अराजकता, अनैकतिकता, भुखमरी, भूकप, लडाई-झगडे पशु-हत्या इसका मूल कारण हम और हमारे देश के राजनेता दोषी हैं। उन्होने सी बी आई रिपोटो के आधार पर जानकारी देते हुए कहा कि हमारे देश मे हमारे देश के लगभग सभी राजनैतिक दल के राजनेता भ्रष्टाचार और अराजकता फैलाने के दोषी हैं। जिन महान् क्रातिकारी राणा प्रताप, शिवाजी ने मुगलो से इस देश को सुरक्षित रखा, जिस देश को भगतसिह, चद्रशेखर, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस आदि वीरो ने अपना बलिदान देकर सुरक्षित रखा। आज इस के ही रक्षको ने इस देश को टुकडे-टुकडे मे नीलाम किया, उन्होने आज देश मे बढ रहे आतकवाद के लिए कुरान में आये सिद्धान्तो पर टिप्पणी करते हुए कहा कि जब तुम कुरान मे लिखी २४ आयतो का खात्मा नहीं किया जायेगा तब तक भारत मे या विश्व मे शाति नहीं हो सकती और कहा कि इन्हीं आयतो के कारण इस्लाम को मानने वाले मजहब के नाम पर भाईचारा समाप्त करके विश्वासघात लडाई-झगडे कर रहे है। ऐसे रूढिवादी इस्लामी लोग कभी भी राष्ट्रभक्त नहीं हो सकते। डॉ सोमदेव शास्त्री ने देश की उन्नति के विषय मे दयानन्दजी की सोच तथा वेदोक्त प्रमाण देकर अपने विचार व्यक्त किये तथा कहा कि, यदि राष्ट्र का नौजवान जागता है, तो देश उन्नत है। यदि नौजवान सोता रहे, और उद्यमी न हो तो देश अवनति के कगार पर पहुच जाता है। डॉ सत्यपाल जी ने कहा कि राष्ट्र को मजबूत बनाने के लिए राष्ट्र की आर्थिक स्थिति का बेहतर होना और साथ ही राष्ट्र के रक्षक सैनिक बल का पूरा सक्रिय होना, राष्ट्रभक्ति होना बहुत आवश्यक है।

—दिलीप नेताजी मत्री

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ७६८७४, ७७८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ७७७२२) से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३ सृष्टिसंवत् १,९६, ०८, ५३, १०२
पंजीकरणसंख्या टैक/86-2/2000 ०१२६२-७७७२२

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
सर्वहितकारी
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र रोहतक
प्रधानसम्पादक : यशपाल आचार्य, सभामन्त्री सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री
वर्ष २६ अंक १० २८ जनवरी, २००२ वार्षिक शुल्क ८०) आजीवन शुल्क ८००) विदेश में २० डॉलर एक प्रति १.७०

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग सभा के महत्त्वपूर्ण निश्चय

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग सभा की बैठक सभा के कार्यालय दयानन्दमठ रोहतक में १९ जनवरी २००२ को सभाप्रधान स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस अवसर पर स्वामी इन्द्रवेश जी, प्रो० शेरसिंह जी, श्री महेन्द्रसिह शास्त्री, वैद्य ताराचन्द जी, प्रो० सत्यवीर शास्त्री डालावास, श्री जगदीश सींवर, म० श्रीचन्द, श्री हरेन्द्र कुमार, श्री महेन्द्रसिह एडवोकेट आदि ने सभा के कार्यों को प्रगतिशील तथा वेदप्रचार के कार्य को प्रगतिशील तथा वेदप्रचार के कार्य को प्रभावशाली बनाने आदि हेतु सुझाव दिये।

विचार-विमर्श के पश्चात् निम्न- लिखित महत्त्वपूर्ण निश्चय किए गए-

१. प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन ३१ मार्च को रोहतक में–हरयाणा में आर्यसमाज के सगठन को सुदृढ करने तथा जिन नगरो तथा ग्रामो मे जहा आर्यसमाजों की अभी तक स्थापना नहीं हो सकी थी, वहा स्थापना करने एव शराब, मांस, दहेज आदि की सामाजिक बुराइयो को दूर करने के लिए योजना तैयार की जायेगी। इस अवसर पर हरयाणा के सभी आर्यसमाजों, आर्य शिक्षण सस्थाओं के कार्यकर्ताओं को आमन्त्रित किया जायेगा। इस सम्मेलन की तैयारी के लिए सभा के अधिकारी तथा प्रचारक हरयाणा की सभी समाजों से सम्पर्क करेंगे। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए प्रभावशाली उपदेशकों तथा भजनमण्डिलयो की सेवायें प्राप्त की जा रही हैं। एक फरवरी से प्रचार अभियान आरम्भ हो जायेगा। सभा ने आर्यसमाजो तथा संस्थाओ के अधिकारियों से अनुरोध किया है कि वे ३१ मार्च को अपने उत्सव आदि न रखें और सम्मेलन में पहुंचकर संगठन का परिचय देवें।

२. आर्यसमाज के बलिदान भवन का उद्घाटन–आर्यसमाज के बलिदान भवन का उद्घाटन भी ३१ मार्च को ही आर्य महासम्मेलन के अवसर पर किया जायेगा। आर्यसमाज के आन्दोलनों, सत्याग्रहों में शहीद होने वाले बलिदानियों के चित्र तथा उनके परिचय बलिदान भवन में अंकित किए जावेंगे।

३. उच्चतम न्यायालय द्वारा एक महत्त्वपूर्ण फैसले में सतलुज यमुना लिक नहर को पजाब सरकार को एक वर्ष की अवधि मे निर्माण करने के आदेश की सराहना की गई तथा हरयाणा सरकार से भी अनुरोध किया गया कि हरयाणा की सीमा में नहर की खुदाई को शीघ्र पूरा करवाये। यदि पजाब सरकार कोई बाधा डाले तो उसके विरुद्ध मानहानि का मुकदमा डाले। हरयाणा की जनता समेत भी अपील की गई है कि इस सघर्ष मे सभा का तन, मन, धन से सहयोग देवे। सभी राजनैतिक दल भी हरयाणा के हित को सर्वोपरि मानते हुए इस फैसले को शीघ्र लागू करने का प्रयत्न करें। इस कार्य हेतु सभा प्रधान स्वामी ओमानन्द सरस्वती ने ११०० रुपये का दान देकर श्रीगणेश किया। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की आर्य विद्या परिषद्, विद्या सभा, शिष्ट परिषद् (गुरुकुल कांगडी) गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ आदि की समितियों के गठन का अधिकार भी सर्वसम्मति से स्वामी ओमानन्द जी सभा प्रधान को दिया गया।

–आचार्य यशपाल, मन्त्री–आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

सभा कार्यालय में संयुक्त पत्रकार सम्मेलन

हरयाणा रक्षा वाहिनी के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह एवं पूर्व सांसद स्वामी इन्द्रवेश जी पत्रकारों से बातचीत करते हुए। श्री केदारसिह आर्य सभा उपमंत्री बीच में बैठे हैं।

हरियाणा रक्षा वाहिनी के अध्यक्ष एव पूर्व केन्द्रीय मत्री प्रो० शेरसिंह तथा पूर्व सासद स्वामी इन्द्रवेश ने कहा कि पजाब के मुख्यमन्त्री प्रकाश सिंह बादल तथा सिचाई विभाग के अभियन्ता पर सर्वोच्च न्यायालय के फैसले को लेकर विपरीत टिप्पणिया करके अदालत की अवमानना कर रहे हैं।

आज दयानन्द मठ मे पत्रकारो से बातचीत करते हुए सभा के नेताओ ने कहा कि हरयाणा सरकार को पजाब के मुख्यमन्त्री और सिचाई विभाग के अभियन्ता के खिलाफ सर्वोच्च न्यायालय की अवमानना का मुकदमा दायर करना चाहिए। उन्होने कहा कि केन्द्र सरकार के ढीलेपन के कारण हरयाणा को नहरी पानी के मामले मे नुकसान झेलना पडा है। पूर्व सासद स्वामी इन्द्रवेश ने कहा कि आर्यसमाज एक साल के भीतर राज्य के सभी गावो मे सघर्ष समितियो का गठन कर देगा। अगर पजाब सरकार ने एक साल के भीतर नहर निर्माण का कार्य पूरा नहीं करवाया तो सघर्ष का बिगुल बजा दिया जायेगा। उन्होने कहा कि केन्द्र सरकार का भी नैतिक दायित्व बनता है वह पजाब पर दबाव डालकर सर्वोच्च न्यायालय के फैसले पर अमल करवाए। प्रो० शेरसिह ने कहा कि सर्वोच्च न्यायालय के फैसले को लागू करने मे रोडे अटकाने के उद्देश्य से पजाब के मुख्यमन्त्री सरदार प्रकाशसिह बादल सर्वोच्च न्यायालय के फैसले पर पुनर्विचार याचिका दायर करने की घोषणा कर चुके हैं।

वैदिक-स्वाध्याय

प्रभु के बुद्धियोग से जीवनयज्ञ में सफलता

यस्मादृते न सिध्यति यज्ञो विपश्चितश्चन।
स धीनां योगमिन्वति। (ऋ० ११८७)

शब्दार्थ—(यस्मात् ऋते) जिस प्रकाशक प्रभु के बिना (विपश्चित: च न) बडे-बडे बुद्धिमान् अक्लमंद का भी (यज्ञ:) यज्ञ (न सिद्धयति) सिद्ध नहीं होता (स) वह प्रभु (धीना योगं इन्वति) बुद्धियो के योग मे व्याप्त हो जाता है।

विनय—हममे बहुत से लोगों को अपनी अक्ल का-अपनी बुद्धि का-बहुत अधिक अभिमान होता है। वे समझते हैं कि वे अपनी अक्ल व चतुराई के बल पर हर एक कार्य मे सिद्धि पा लेगे, उन्हें अपने बुद्धि-बल के सामने कुछ भी दु साध्य नहीं दीखता। पर उन्हे यह मालूम नहीं कि बहुत बार उन्हे जिन कार्यो मे सफलता मिलती है वह इसलिये मिलती है कि अचानक उस विषय मे उनकी समझ (बुद्धि) प्रभु के बुद्धियोग के अनुकूल होती है। असल में तो इस जगत् का एक-एक छोटा-बडा कार्य उस प्रभु के योगबल (बुद्धियोग) द्वारा सिद्ध हो रहा है। हम मनुष्यो की बुद्धि जब प्रभु के बुद्धियोग के अनुकूल (जानबूझ कर अनुकूल होती है या अचानक) होती है तब हमे दीखता है कि हमारी बुद्धि से किया कार्य सफल हो गया। पर अचानक हुई अनुकूलता के कारण जो हमे अपनी सफलता का अभिमान हो जाता है वह सर्वथा मिथ्या होता है। वह हमे केवल धोखे मे रखने का कारण बनता है और कुछ नहीं। पर जो जानबूझकर प्राप्त की गई अनुकूलता होती है वही सच्ची है। यदि मनुष्य अपने कार्यो की सिद्धि चाहता है—अपने कार्यों को सफल यज्ञ बनाना चाहता है, तो उसे यत्नपूर्वक अपनी बुद्धि को प्रभु से मिलाना चाहिए, अपनी बुद्धि का प्रभु मे योग करना चाहिये। हमारी बुद्धि प्रभु से युक्त हो गई है—उसकी बुद्धि से जुड गई है कि नहीं—यह पूरी तरह से निर्णीत कर लेना तो हम अल्पज्ञ पुरुषो के लिये सदा सभव नहीं होता। हमारे लिये तो इतना ही पर्याप्त है कि हम युक्त करने का यत्न करते जाय। प्रभु सत्यमय हैं अत हमारी बुद्धि सदा सत्य और न्याय के अनुकूल ही रहे (हमारे ज्ञान मे जो कुछ सत्य और न्याय है, बुद्धि उसके विपरीत जरा भी निर्णय न करे) यह यत्न करना ही पर्याप्त है। हमारी बुद्धि के प्रभु से योग करने का यत्न करते हुए जब यह योग परिपूर्ण हो जाता है अर्थात् इस योग मे प्रभु व्याप्त हो जाते हैं, तभी वह कार्य सिद्ध हो जाता है। अत हमे अपनी बुद्धियो का अभिमान छोडकर, हमारे यज्ञ-कार्य मे जो बडे प्रसिद्ध अक्लमद लोग हैं उनके बुद्धिबल पर भरोसा करना छोडकर, नम्र होकर अपनी बुद्धियो को सत्य और न्याय-तत्पर बनाकर प्रभु से जोडने का यत्न करना चाहिये। हम चाहे कितने बुद्धिमान् हों पर हमे सदा अपनी बुद्धि प्रभु से जोडकर रखनी चाहिये। प्रभु के अधिष्ठान के बिना कोई भी यज्ञ-कार्य सफल नहीं हो सकता है। **(वैदिक विनय से)**

यदि देव दयानन्द न आते

अज्ञान, पाखण्ड के अन्धकार से हो रहा देश बर्बाद था।
यदि देव दयानन्द न आते तो होता न भारत देश आजाद था।।

राम, कृष्ण की इस पावन भूमि मे लग गई अनेकों बीमारी थी,
सीता, सावित्री, गार्गी को न पढाने से रखी जाती भीतर चारदीवारी थी,
तेरह वर्ष की कन्या, अस्सी वर्ष के बूढे से विवाह की हो जाती तैयारी थी,
जल्दी ही विधवा हो जाने से बाकी उम्र कटनी हो जाती बडी भारी थी,
घर में इज्जत न होने से नारकीय जीवन जीने की हो जाती उसे लाचारी थी,
नारी ही क्यो शूद्र भाइयों को प्रेम की जगह घृणा, द्वेष की चोट जाती मारी थी,
जिससे दुखित होकर वे अपने ही भाई विधर्मी बनने की कर लेते तैयारी थी,
घटते जा रहे थे हमारे हिन्दू भाई समाप्त हो जाने की आ रही जल्दी बारी थी,
ऋषि दयानन्द ने आकर किया इलाज शुद्धि दवा से उस फोडे का जिसमे पड गया मवाद था।

यदि देव दयानन्द न आते

हमारी वैदिक संस्कृति में गऊ, गायत्री, ब्राह्मण की इज्जत होती सबसे न्यारी थी,
गऊ माता की तो बात न पूछो, उसके ऊपर चल रही जालिम की तेज कटारी थी,
वेदों का पठन-पाठन बहुत वर्षों से बन्द होने से गायत्री माता फिरती मारी-मारी थी,
ब्राह्मण वैदिक मार्ग छोड व्यवसायी हो गये, कर दी अनेको अवैदिक प्रथा जारी थी,
स्वार्थ सिद्धि हीं मुख्य ध्येय हो गया, लगा दी पेट भरने मे ही अपनी बुद्धि सारी थी,
मूर्ति पूजा, मृतक श्राद्ध तो थे ही, कई देवी देवताओ की कथा पढी जाने लगी न्यारी थी,
वेदो का लोप हो जाने से धर्म, न्याय, सदाचार, सच्चाई, त्याग, सबने हिम्मत हारी थी,
वैदिक आधार पचमहायज्ञो, वर्णों, आश्रमो की हालत होती जा रही माडी थी,
ऐसे मे देव दयानन्द आये, किया वेदो का प्रचार तब से वेदों को किया जाने लगा याद था।

यदि देव दयानन्द न आते

वेदों के ज्ञान से अज्ञान, अन्ध विश्वास, पाखण्ड का अन्धेरा दूर भाग गया,
उस ज्ञान के दिय प्रकाश से सिर्फ भारत देश ही नहीं सम्पूर्ण विश्व जाग गया,
कम हुये सभी मत मतान्तर जिनसे अलपा जाता रहा झूठा अर्थहीन राग गया,
अज्ञान, पाखण्ड, अन्धविश्वास प्राय नष्ट हो जाने से मानो जल रोशनी का चिराग गया,
जिससे आई नव जागृति तब कुटिल अग्रेज १५ अगस्त १९४७ को भारत त्याग गया,
लेकिन जाते-जाते हिन्दू-मुस्लिम मे झगडा लगवा कर लगा देश मे आग गया,
भारत की छाती पर मूंग दलने के लिये पाकिस्तान रूपी, छोड विषैला नाग गया,
अब आणविक शक्ति व कुशल प्रशासन से पाक समेत सभी विदेशो से भय भाग गया।
अब जल्दी ही 'खुशहाल' देखना चाहता भारत को जैसा वैदिककाल में उन्नत, आबाद था।

यदि देव दयानन्द न आते

—खुशहाल चन्द्र आर्य, १८० महात्मा गाधी रोड (दो तल्ला), कलकत्ता

एस.वाई.एल. का पानी कोई भीख नहीं, हरयाणा का हक है

आदरणीय सज्जनो ! रावी व्यास के जल बटवारे में सर्वोच्च न्यायालय ने जो फैसला हरयाणा के पक्ष मे दिया है, वह स्वागत योगय तथा सराहनीय है इसलिए हरयाणावासियों ने इस न्यायालय के न्याय से प्रसन्न होकर बहुत खुशिया मनाई और मनानी भी चाहिएं क्योंकि यह रावी-व्यास का पानी हर हरयाणावासी की जीवनरेखा है। इस पर सभी राजनीतिक पार्टियों को भी मिल-जुलकर एकता दिखानी चाहिए। चाहे किसी ने इस नहर के पानी के लिए जोर लगाया हो, इन सभी बातों को भुलाकर अब नहर-निर्माण कराने में पूरा-पूरा सहयोग देना चाहिए क्योंकि श्री बादल साहब के बयान से जो हरयाणावासी खुशियां मना रहे हैं, वह किरकिरी हो गई हैं हम तो ऐसे खुशिया मना रह हैं जैसे कल ही हमारे खेतो में पानी आ जाएगा। पर बादल साहब जो हरयाणा का हक ३५ साल से खा रहे हैं, अब और नहीं खाने देंगे। सम्पूर्ण हरयाणा जाग रहा है और हर कुर्बानी के लिए तैयार है। हमारे हरयाणावासी वीरों को कौन नहीं जानता, इसलिए बादल साहब को बिना देर किए हमारे हक का पानी तुरन्त दे देना चाहिए क्योंकि यह कोई भीख नहीं है यह तो हमारा अधिकार है।

—दयाकिशन सैनी, अध्यक्ष—राष्ट्रीय सैनी पंचायत जिला रोहतक

विश्व प्रदूषण का विकल्प वैचारिक क्रान्ति एवं प्राकृतिक आयुर्वेदिक जीवन

❑ डॉ० आर्य नरेश नाणा

आज विश्व मे जितना हाहाकार मचा है लडाई झगडे युद्ध हो रहे हैं इस सब के पीछे एक ही कारण है। **वैचारिक मतभेद।** दुनिया मे रिश्ते विचारो के होते हैं, खून के रिश्ते भी वहीं तक रहते हैं जहा तक विचार मिलते हैं। मानव मे सबसे पहले गन्दगी विचारो से ही आती है। आपके सगे भाई से भी वही एक रिश्ता रहता है जहा तक विचार मिलते हैं और विचार नहीं मिलने पर एक दूसरे के जानी दुश्मन बन जाते हैं। आज मानव समाजो में सर्वत्र यही हो रहा है। इतिहास इस बात के साक्षी हैं विभीषण व रावण सगे भाई थे किन्तु विचार नही मिलने से एक-दूसरे के दुश्मन बने और राम से विचार मिले तो एक-दूसरे के अच्छे मित्र बने। श्री कृष्ण और कस मामा भाणजे होते हुए भी वैचारिक मतभेद की कट्टरता से एक-दूसरे के दुश्मन थे। यही हाल आज देश-राष्ट्रो का है वर्तमान मे **पाकिस्तान-भारत वैचारिक टकराव** ही तो युद्धो मे बदल रहा है। इन सब बातो से सिद्ध होता है कि सत्य की वैचारिक क्रान्ति से दुनिया मे शान्ति स्थापित हो सकती है। यह सब हमारे प्राचीन ऋषियो को ज्ञात था इसी लिए उन्होने **मानवीय नियमावली वैदिक सिद्धान्तो** पर बनाई थी जो पूर्णत वैज्ञानिक थी तभी तो करोडो वर्षो तक सम्पूर्ण पृथ्वी पर आर्यो का चक्रवर्ती राज्य रहा था। उस पद्धति के ज्ञाताओं का महाभारत युद्ध मे विनाश हो गया तब से ससार में अन्धकार फैला किन्तु १९वी सदी मे एक महान् ऋषि दयानन्द का आविर्भाव हुआ उन्होने कराहती भटकती मानवता को सदेश दिया कि **वेदों की ओर लौटो। वैचारिक क्रान्ति का शोध ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश** दुनिया को दिया विश्व के सभी धर्मग्रन्थो और मत-मतान्तरों का गहन विश्लेषण कर ऋषि ने सत्य के अर्थो का प्रकाश किया। **सभी प्रदूषणों की जड विचारो की गन्दगी होती है** व्यक्ति के सबसे पहले विचार ही गन्दे होते है फिर विचार से उनका मन मस्तिष्क बदलता है फिर कर्म करता है। अच्छे विचारो से मानव मन अच्छा कर्म करता है और गन्दे विचारों से बुरे कर्म करता है। [illegible] की बात है व्यक्ति के विचारों की उत्पत्ति मन से होती है और मन बनता है हमारे आहार के सूक्ष्म तत्त्वों से अर्थात् **"आहारशुद्धौ सत्त्वशुद्धिः"** जैसा अन्न वैसा मन बनता है।

आज वैचारिक क्रान्ति की आवश्यकता है सभी प्रदूषणो का कारण मानव मन के विचार है आज तरह-तरह के प्रदूषणो से मानव जाति परेशान है। हमारा अन्न जल वायु दवा-दारू सभी मे विषैले कैमिकल व्याप्त हो गए हैं जिसका परिणाम तरह-तरह के विकराल जटिल रोग, प्राकृतिक आपदाए, मानव भुगत रहा हैं। विश्व के वैज्ञानिक डॉक्टरो के सामने आज यह एक ज्वलन्त समस्या है कि पृथ्वी के प्राणियो को कैसे प्रदूषणो से बचाया जाये। उनका ध्यान हमारे भारतीय ऋषियो की वैदिक सस्कृति और सभ्यता पर पुन विचार करने लगा है। आज दुनिया हमारे वेदज्ञान, योग साधना, आयुर्वेद विज्ञान पर अनुसधान कर समस्याओ का समाधान खोज रही है। क्योकि आज प्राकृतिक प्रकोप, अनावृष्टि अतिवृष्टि बाढ, तापमान के बढने से पहाडो की बर्फ तीव्रता से पिघल कर समुद्रो का जल स्तर बढना, वनो के सहार, पहाडो के दोहन आदि से विश्व के वैज्ञानिक चिन्तित है। इन सब समस्याओ का विकल्प सिर्फ भारत के प्राचीन वैदिक ज्ञान के भण्डार होने से विश्व समुदाय अब अनुसधान कर रहे हैं। हरिद्वार मथुरा के शान्तिकुज मे यज्ञ विज्ञान पर वैज्ञानिक बडी-बडी मशीने लगाकर यज्ञ पर अनुसधान कर रहे है। अमेरिका मे तो यज्ञ सोसायटी बनाकर गहन खोज हो रही है। यज्ञ विज्ञान पर मेरा अलग लेख है उसे पढियेगा। यज्ञ-योग-आयुर्वेद से रोगो का इलाज करने के तरीके विदेशी सीख रहे हैं। हमारे आयुर्वेद का महत्त्व अब विदेशी भी समझ रहे है एलोपैथी दवाओं के साईड इफेक्ट से परेशान होकर आयुर्वेद मे लौट रहे हैं। योग सिखने के लिए विदेशी हमारे योगाश्रमो में आ रहे हैं उन्हे शान्ति चाहिये वे इस भौतिकता से ऊब चुके हैं। अतः आज संसार को तबाही से बचाना है तो एक ही विकल्प है कि हमारे ऋषियों के वैदिक विज्ञान की तरफ मानव को लौटना पडेगा। सब समस्याओ की जड़ यदि विचार हैं। क्योकि विचार ही व्यक्ति को कर्म कराते है। आतकवाद, धर्मान्धिता आखिर क्या हैं ? विचार ही तो हैं। विचारो की कट्टरता ही धर्म के नाम पागलपन करा रही है जिससे पृथ्वी पर आतंक पैदा होता है। हम पुन मुख्य बिन्दु पर आ रहे हैं। विचारो का प्रदूषण ही सब प्रदूषणो की जड है और विचार बनते हैं हमारे मन मस्तिष्क से, मन का निर्माण हमारे भोजन के सूक्ष्म तत्त्व. से अर्थात् जैसा आहार लेगे वैसे हम बनेगे यह एक प्रकृति का नियम है। हमारे ऋषियो ने कहा है कि अच्छे मानवो का निर्माण करना हो, विश्व शान्ति चाहते हो तो अपना भोजन शुद्ध करो। ऋषियो ने आयुर्वेद के माध्यम से कहा है कि आयुर्वेद आयु को बढाने वाला ज्ञान है। अपना आहार शुद्ध करो क्योकि आहार से ही तो शरीर का निर्माण विकास होता है, जैसा बनना है वैसा आहार से बन सके। **"आहारशुद्धौ सत्त्वशुद्धि सत्त्वशुद्धौ ध्रुवा स्मृति"** अर्थात् हमारा भोजन शुद्धि सात्त्विक होगा तो मन शुद्ध बनेगा और मन शुद्ध होगा तो बुद्धि शुद्ध बनेगी और फिर हमारी बुद्धि शुद्ध होगी तो हमारे विचार शुद्ध होगे यानि हमारे विचार शुद्ध अच्छे बने तो पूरा ससार अच्छा बनेगा ही। जैसा अन्न वैसा मन, अन्न अच्छा होगा तो मन अच्छा होगा फिर यह मन विचार ही तो सब समस्याओ की जड है, जो बुरा होने पर तबाही मचाते है। क्योकि मन विचारो की गन्दगी कर्म के रूप मे प्रदूषण फैलाती है। प्राणियो की हिसा क्रूरता से कर उस मुर्दा मास को अपने पेट मे डालकर अपने पेट को कब्रिस्तान बनाकर [illegible] पाक (पवित्र) [illegible] करता हू। यह कैसी [illegible] है कि पेट मे मुर्दे गाडकर आदमी अपने को पवित्र कहता है। क्रूरता का आहार तो क्रूरमन मस्तिष्क का निर्माण ही करेगा फिर ऐसे व्यक्ति के विचार अगर क्रूर बन आतक फैलाते है तो कोई आश्चर्य नहीं करियेगा क्योकि यह मूल की भूल है। हमारे आहार का सूक्ष्म अश ही हमारे विचारो का निर्माण करता है और हमारे विचार ही हमारे कर्म (कार्यो) का मूर्त रूप हैं। प्रदूषित आहार तो प्रदूषित विचारो का निर्माण करेगे और प्रदूषित विचार ही प्रदूषण कार्यो का रूप होता है।

वायु प्रदूषण का सरलतम विकल्प—एक दिन किसी अखबार मे पढा कि दिल्ली जैसे शहरो मे इतना वायु प्रदूषण बढ रहा है कि लोगो का दम घुट रहा है। यही हालात रहे तो एक दिन सरकार को पैट्रोल पम्पो की तरह ऑक्सीजन पम्प जगह-जगह लगाने पडेगे और मानव को अपने पीठ पर ऑक्सीजन सैलेण्डर लटकाकर घूमना पडेगा। इसे पढकर मुझे हसी आई कि मानव जाति कितनी दुःखी हो रही है। अपने कर्म से ही मानव सुखी दुःखी होता है। काश ! ऐसे लोगो ने वैदिक आर्षज्ञान प्राप्त किया होता तो इस समस्या का विकल्प सरलता लिख देते। समस्या लिखने वाले की विकराल गभीर है किन्तु **इसका विकल्प बहुत सरल सस्ता है। मेरा भारत सरकार से भी आग्रह है** कि मेरे इस जनहितकारी सरल निःशुल्क सुझाव पर अमल करे तो इस विकराल समस्या वायुप्रदूषण का सरलतम वैज्ञानिक तरीका ऑक्सीजन समस्या दूर की जा सकती है। हमारे दूरदर्शी ऋषि-मनीषियो को यह आभास था कि भविष्य मे मानव जाति को जीवित रखने के लिए प्राण वायु की सुरक्षा जरूरी होगी। गीता उपदेश मे श्रीकृष्ण ने कहा कि 'हे अर्जुन ! वृक्षो मे पीपल मै हू" आखिर कृष्ण ने पीपल को इतना महत्त्व क्यो दिया हमारे देश मे महिलाए पीपल पूजती हैं अनपढ व्यक्ति भी पीपल काटने मे पाप मानता है आखिर कारण क्या है। वैज्ञानिक अनुसधानो से यह सिद्ध हुआ है कि विश्व मे पीपल एक ऐसा [illegible] है जो रात-दिन ऑक्सीजन [illegible] है और [illegible] कार्बन [illegible] ग्रहण करता है। दूसरे [illegible] दिन मे [illegible] देते है और रात मे [illegible] देते है सिर्फ पीपल रात-दिन [illegible] देता है। कितना तथ्य है हमारी [illegible] परम्पराओ मे। अत हमारी सलाह है कि वायु प्रदूषण से रक्षा [illegible] नहीं, **घर घर पीपल के पेड लगाए जाए** इनकी रक्षा की जाए। है न कितना सरल विकल्प वायु प्रदूषण की जटिल समस्या का सरल विकल्प है।

दीर्घायु का खजाना है आयुर्वेद—हमारे वेदो के उपवेद आयुर्वेद विज्ञान का खजाना है, मानव को निरोगी स्वास्थ्य के साथ दीर्घायु देने का दावा सदियो से करता आ रहा है वेद ज्ञान के भण्डार हैं, इसी वैदिक ज्ञान से हमारा देश जगत् गुरु कहलाता था वेदो की भाषा यौगिक होने से विदेशी पहले समझ नहीं पाते थे, तो वेदो को उन्होने गडरियो के गीत कह दिया था किन्तु आज उन्हीं विदेशियो की औलाद वेदाध्ययन कर रही है। अब उन्हे पता चल रहा है कि वेद विज्ञान के भण्डार हैं। जब दुनिया के लोगो को कपडा पहनने का ज्ञान नहीं था बन्दरो की तरह नगे रहते थे उन बन्दरों को अपना पूर्वज मानते थे तब हमारे वैज्ञानिक ऋषियो ने यतो पूर्व वैदिक ज्ञान के आधार पर अनेक मानव हितकारी वैज्ञानिक अनुसधान कर दिये थे। जिसके प्रमाण हमारे देश के प्राचीन इतिहासो मे उल्लेखित हैं। हजारो वर्षो की गुलामी ने हमे गुमराह किया, हमारा शुद्ध इतिहास, ज्ञान ध्यान सब तोड मरोड कर रख दिया था क्योकि विदेशी यह जानते थे कि किसी जाति को अपना गुलाम बनाना है तो उसके गौरवशाली इतिहास को उल्टा-सीधा कर दो या नष्ट कर दो। ऐसी स्थिति मे उन्नसवीं सदी मे महान् वेदोद्धारक ऋषि दयानन्द का प्रादुर्भाव हुआ। उन्होने पुन वेदो की ओर लौटने का नारा दिया। उनके शिष्यो ने वेदाध्ययन गुरुकुलीय परम्पराओ से किया। गुलामी की जजीरों को तोडने का मूलमत्र इस ऋषि से लेकर उनके क्रान्तिकारी अनुयाइयो ने आजादी की लडाई लडी जिसमे ८५ प्रतिशत क्रान्तिकारी ऋषि भक्त थे। आज वेद-आयुर्वेद-योग को विश्व भारत से सीख रहा है। अमेरिका अपने यहा आयुर्वेद कॉलेज खोल रहा है भारत के प्रसिद्ध वैद्य विशेषज्ञो को पढाने हेतु निमन्त्रण दे रहा है। यह कैसी विडम्बना है कि विदेशी हमारी वैज्ञानिक सस्कृति को अपना रहे हैं और हम विदेशी सस्कृति की तरफ भाग रहे है। आधुनिक दवाओं के साईड इफेक्ट से परेशान दुनिया का चिकित्सा जगत् यह मानने लगा है कि ओनली आयुर्वेद मेडिसिन नो साइड इफेक्ट ! नो रिएक्शन ! ओल्ड इज गोल्ड ! आयुर्वेद दवाए जितनी पुरानी होती हैं उतनी अच्छी प्रभावी होती हैं। आयुर्वेद चिकित्सा निर्दोष स्वास्थ्य का विकल्प है। यह मानव की प्रकृति के निकट लाता है रोग प्रतिरोधक की जीवनीय शक्ति देता है।

"आयुर्वेद के राष्ट्रीय सदस्य"
—डॉ० हनुवन्तदेवसिह आर्य नरेश
(अखिल भारतीय आयुर्वेद सघ दिल्ली)
पो० नाणा गाव जिला पाली (राज)

६० ईसाई परिवारों के १५० से अधिक ईसाइयों ने वैदिक धर्म ग्रहण किया

सार्वदेशिक सभा के निर्देशन मे चल रहे धर्म रक्षा महाभियान के अन्तर्गत श्री पू स्वामी धर्मानन्द जी के निर्देश मे उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से निरन्तर पुनर्मिलन कार्यक्रम चल रहा है। इसी शृखला मे कन्धमाल जिले मे मध्यगिरि देवभवन गुडिकिया मे १३, १४ जनवरी को होने वाले वार्षिक मोहत्सव पर टिकाबाली और धरमपुर अचल के ६० परिवार के १५० से अधिक ईसाइयो ने उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी व्रतानन्द जी की अध्यक्षता में होने वाले यज्ञ में अत्यन्त श्रद्धा भक्ति के साथ आहुति देकर ईसाई मत छोडकर वैदिक धर्म ग्रहण किया। यज्ञ का सारा कार्यक्रम सभा के उपप्रधान श्री प० विशिकेसन शास्त्री जी ने करवाया। उत्सव के अन्तिम दिन क्षेत्र से ५ हजार से अधिक धर्मप्रेमी आर्य नरनारी दीक्षित बन्धुओ को आशीर्वाद देने के लिए उपस्थित थे। इस आयोजन मे उन क्षेत्र के आर्य सगठन के प्रमुख श्री राधानाथ मल्लिक, श्री दाशरथी प्रधान तथा सभा के प्रचारक श्री नारायण प्रधान तथा शिवराम प्रधान आदि का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण योगदान रहा।

धर्मवीर हकीकत राय बलिदान दिवस समारोह एवं बसन्तोत्सव

गत वर्षो की भाति इस वर्ष भी धर्मवीर हकीकत राय का बलिदान दिवस रविवार १७ फरवरी २००२ को आर्यसमाज मन्दिर, बाई ब्लॉक, सरोजिनी नगर, नई दिल्ली मे प्रात ८-३० बजे से दोपहर १-३० बजे तक बडे समारोहपूर्वक मनाया जाएगा। प्रात ८-३० बजे से ९-३० बजे तक बृहद् यज्ञ, ९-३० बजे से १०-०० बे तक भजन, १०-०० बजे से १२-०० बजे तक रतनचन्द आर्य पब्लिक स्कूल के बच्चो का विशेष कार्यक्रम व हकीकत राय का ड्रामा एव अन्य स्कूल के बच्चो के भाषण व कविता आदि होगे। १२-०० बे से १-३० बजे तक श्रद्धाजलि सभा होगी जिसमे उच्चकोटि के विद्वान् व आर्यनेता पधारकर अपने विचार रखेगे। दोपहर १-३० बजे ऋषि लगर का सुन्दर प्रबन्ध होगा।

बच्चों की प्रतियोगिता—शनिवार १६ फरवरी, २०० को प्रात १०-०० बजे से दोपहर १२-०० बजे तक गत वर्षो की भाति इस वर्ष भी पाचवीं से बारहवीं कक्षा के बच्चो की प्रतियोगिता होगी जिसमे बच्चे धर्मवीर हकीकत राय के बलिदान सम्बन्धी कविता व भाषण प्रस्तुत करेगे। पाचवीं से आठवी तक तथा नौवीं से बारहवीं कक्षा तक के बच्चो के अलग-अलग प्रतियोगिता होगी व अलग-अलग इनाम दिए जाएगे। कविता व भाषण के अलग-अलग इनाम होगे।

सभी से प्रार्थना है कि अपने बच्चो के नाम शीघ्र, महामत्री अखिल भारतीय हकीकत राय सेवा समिति, आर्यसमाज, सरोजिनी नगर, नई दिल्ली-११००२३ के पते पर भेज दे।

दूरभाष ४६७७०६३
—रोशनलाल गुप्त, महामत्री

ग्राम लाऊमुण्डा जिला बलांगीर में ३८ परिवारों के सदस्य वैदिक धर्म में शामिल हुए

पुनर्मिलन (शुद्धि) की शृखला मे ही ३० दिसम्बर को बलागीर जिला के लाऊमुण्डा ग्राम के प्रभु भक्ति आश्रम के वार्षिक महोत्सव पर ३८ परिवारो के १२० ईसाइयो ने वैदिक धर्म ग्रहण किया। ये सज्जन वैदिक धर्म ग्रहण करने के लिए आसपास के ५-६ ग्रामो से आये थे। यह दीक्षा का कार्यक्रम सभा के उपप्रधान श्री प० विशिकेसन शास्त्री जी ने करवाया। दीक्षितो को आशीर्वाद देने के गुरुकुल आश्रम आमसेना के उपाचार्य ब्र० कुजदेव जी मनीषी, परिव्राजक शुकदेव जी आदि अनेक विद्वान् उपस्थित थे। आरम के सचालक श्री स्वामी मुक्तानद जी इसमे विशेष पुरुषार्थ रहा।

—सुदर्शनदेवार्य, उपमन्त्री
उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा
गुरुकुल आश्रम आमसेना,
नवापारा (उडीसा)

उपदेशकों तथा भजनोपदेशकों की आवश्यकता

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को सुयोग्य उपदेशक तथा प्रभावशाली भजनमडलियो की तुरन्त आवश्यकता है। उपदेशक पद के इच्छुक उम्मीदवार को वैदिक सस्कार करवाने तथा प्रवचन करने का अभ्यास होना चाहिए तथा भजनोपदेशक पद के उम्मीदवार को ग्रामो तथा शहरों मे प्रभावशाली ढग से प्रचार करने का अनुभव होना आवश्यक है। अपने आवेदन पत्र के साथ अपनी शिक्षण योग्यता, आयु तथा अनुभव आदि का विवरण लिखे। वेतन योग्यता के अनुसार दिया जावेगा।

—आचार्य यशपाल, मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक

व्यक्ति का शृंगार, राष्ट्रशक्ति का आधार–सदाचार कैसे ?

पहले सदाचार का अर्थ समझले तो अच्छा रहेगा। सद्+आचार= सदाचार। सद् अर्थात् अच्छा, बढिया, श्रेष्ठ एव आचार यानि व्यवहार अर्थात् बोलचाल की भाषा में चालचलन भी कहते हैं। जिस व्यक्ति का व्यवहार या चालचलन समाज के स्तर पर बढिया अच्छा श्रेष्ठ होता है उसी को सदाचारी कहा जाता है। जिस व्यक्ति, परिवार, समाज तथा राष्ट्र मे जब तक सदाचार जीवित रहता है तब तक वह व्यक्ति परिवार समाज तथा राष्ट्र प्रगति की पूरी ऊचाइयो को छूता है तथा दूसरे व्यक्ति, परिवार, समाज एव राष्ट्र उसका लोहा मानते है, नतमस्तक होते हैं। अब सदाचारी व्यक्ति के गुण कर्म स्वभाव का सक्षेप मे वर्णन करते हैं, ऐसे व्यक्ति का शरीर स्वस्थ एव सुन्दर मिलेगा। चेहरा आकर्षण वाला होगा। बोलचाल मे नम्रता, सम्मानजनक भाषा, सर्वदा दूसरो को सहयोग सहानुभूति की वाणी से प्रसन्न रखता है। कर्म मे ईमानदारी, सच्चाई, निष्ठा कूट-कूट कर भरी होती है। राष्ट्रप्रेम एव राष्ट्रभक्ति उसके जीवन का मूल है। ब्रह्मचर्य पालन, विद्याध्ययन, स्वाध्याय, प्रात -सायं सन्ध्या, उपासना एवं निराकार सर्वशक्तिमान् सर्वव्यापक ईश्वर मे विश्वास रखते हुए जितेन्द्रिय रहने का भरसक प्रयास करता है। अतिथि सेवा-सत्कार मे सदा तत्पर रहता है। यम-नियमानुसार जीवनचर्या रखने को अपना सौभाग्य समझता है और परमात्मा का इन गुणो के प्रदान करने पर कोटि-कोटि आभार प्रकट करता है। वास्तव मे ऐसे युवा, पुरुष एव महिलाए समाज व राष्ट्र की धरोहर होते हैं और इन्हीं के चारित्रिक बल पर राष्ट्र व देश शक्तिशाली बनता है ना कि सोना-चांदी और अन्य धातुओं की खादानों से।

उपरोक्त वर्णित गुणों को ही नैतिकता कहते हैं या ऐसे व्यक्ति या समाज को चरित्रवान् भी कहा जाता है। नैतिक मूल्य और चरित्रता एक ही सिक्के के दो पहलू हैं ये एक दूसरे के पूरक हैं। जहां नैतिकता है वहां चरित्र है, जहां चरित्र है वहीं नैतिकता है।

अब देखते हैं ऐसे व्यक्तियो से समाज या राष्ट्र का निर्माण कैसे होता है। ये गुण हमे हमारे पूर्वजों से यानि माता-पिता, आचार्य, समाजसेवी, राजनेताओ से ही विरासत में प्राप्त होने चाहिए। आजकल आप एक बात सबके मुख से यानि माता-पिता से, अध्यापको से, समाज सेवकों से, धर्मगुरुओ और धर्म प्रचारको से, राजनेताओं से सुनते होगे कि नैतिक मूल्य खत्म हो चुके हैं चरित्रता एवं सदाचार लुप्तप्राय हो गया है तो बडा आश्चर्य होता है क्योकि जिनसे ये गुण मिलने हैं वे तो बिल्कुल कोरे और केवल भाषण झाडते हैं व उपदेश, प्रवचन देते हैं। जैसे रामायण मे लिखा है, **"पर उपदेश कुशल बहुतेरे, जे आचरहि ते नर न घनेरे"** यानि उनके भाषण व प्रवचन दूसरों के लिए होते है स्वय के आचरण के लिए नही। ये तो वही बात है कि **"स्वय आचरण किया नहीं औरो को बहकाए, ऐसे उपदेश, प्रवचन हवा में उड जाए।"** अर्थात् बबूल का पेड लगाने वाले को आम खाने की आशा नहीं करनी चाहिए।

आजकल आप प्रतिदिन दैनिक समाचार पत्रो मे पढते हैं कि अमुक राजनेता ने इतने करोड का घोटाला किया, फला धर्मगुरु सदाचारी लडकी का अपहरण करके ले गया या बलात्कार के केस मे फस गया। या फला अध्यापक पैसे लेकर नकल करवाता पकडा गया। दूसरी ओर फला गाव या शहर मे युवती को दहेज के भेडियो ने तेल डालकर जिन्दा जला दिया और अमुक युवक ने अपनी चचेरी बहन या कथित प्रेमिका से कामवासना पूरी ना होने पर जहर खाकर या फांसी लगा कर आत्महत्या करली। ये है आज के व्यक्ति, समाज एव देश मे चल रहा वातावरण का सही एव वास्तविक चित्रण।

अब संक्षेप में दुराचार का वर्णन करते हैं, दुराचारी व्यक्ति स्वार्थी, लोभी, कामी, क्रोधी होता है और अपने लक्ष्य की पूर्ति के लिए झूठ, छल, कपट, ढोंग, बगुला भक्त बनकर कुछ भी कर सकता है और कभी किसी सूरत मे अपना दोष नही मानता। चूकि **"स्वार्थी दोषं न पश्यति"**। तुलसीदास जी ने कहा है– **"नहि असत्य सम पातक दूजा"** अर्थात् झूठ बोलने के समान और कोई पाप नहीं है। असत्य बोलने वाला दुनिया मे ऐसा कौनसा पाप है जो वह न कर सकता हो।

सस्कृत मे एक कहावत है कि **एका लज्जा परित्यज्य विजयी सर्वत्र भवेत्** यानि जिसकी उतर गई लोई उसका क्या करेगा कोई। **शुचात् शुभकर्मणो द्रवति इति शूद्र** अर्थात् शुभ कर्मों से जो गिर जाए वह शूद्र हो जाता है।

महान् ग्रथ महाभारत में लिखा है कि वृद्धावस्था सुन्दर रूप को, निराशा, धीरता को, मृत्यु प्राणो को, असूया (चुगली) धर्माचरण को, क्रोध लक्ष्मी को, नीच पुरुषो की सेवा सत् स्वभाव को, काम लज्जा को और अभिमान सर्वस्व को नष्ट कर देता है उसी प्रकार चरित्रहीनता मनुष्य का जीवन बरबाद कर देती है।

अग्रेजी भाषा मे एक कहावत है कि "If wealth is lost, nothing is lost If health is lost something is lost If charecter is lost everything is lost " अर्थात् धन-सम्पत्ति चला गया कोई बात नहीं और कमा लेगे। यदि शरीर रुग्ण हो गया तो कुछ बिगड गया क्योकि पहला सुख निरोगी काया। तो उपचार आदि से शरीर पुन स्वस्थ हो सकता है। यदि मनुष्य आचरण से गिर गया यानि चरित्रहीन हो गया तो समझो उसका सब कुछ खो गया या लुट गया। महाभारत मे लिखा कि **"आचारहीन न पुनन्ति वेदा "** अर्थात् वेद भी आचारणहीन व्यक्ति/महिला को पवित्र नही कर सकता। कवि ने लिखा है कि **"गिरी से गिरकर जो मरे, मरे एक ही बार, चरित्र गिरी से जो गिरे, बिगडे जन्म हजार।"**

नैतिक मूल्यो को व्यावहारिक जीवन मे अपनाने से ही मनुष्य सदाचारी बन सकता है। मैं यहा आधुनिक युग के महान् विचारक एव द्रष्टा ऋषि अरविन्द के शब्दो मे नैतिक मूल्यो की पराकाष्ठा प्रकट करता हू। "Human values are not deceiptive or false These are true and serve as pointers however dim to something that is yet to come and to reach where the human beings torelessly strive to arrive " अर्थात् नैतिक मूल्यो की सार्थकता आज भी उतनी है जितनी रामायण मे है।

देखिए जितने भी किसी धर्म समाज या सगठन के founder यानि बनाने वाले हुए है जैसे महर्षि दयानन्द, गुरु नानकदेव, गुरु गोविन्दसिंह, गुरु जम्भेश्वर, भगवान् महावीर, भगवान् गौतम बुद्ध आदि ने त्याग तप बलिदान ब्रह्मचर्य, **जितेन्द्रिय सर्वजन हिताय** व **सर्वजन सुखाय** नैतिक मूल्यों को जीवन मे धारण करके ही इतना उच्च कोटि का मानव जीवन बनाकर प्राणिमात्र का कल्याण किया और ऋषि महर्षि गुरुओ और देवताओ की श्रेणी पाकर आज सर्वत्र मान्य है, पूज्य है।

आइए जागे, उठे और नैतिक मूल्यो को जीवन मे अपनाकर अपने गुरुओ ऋषियों के बताए मार्ग पर चलकर अपना और अपने समाज का पुन निर्माण करे ताकि हमारा समाज और देश एक शक्तिशाली राष्ट्र के रूप मे उभरकर दुनिया का मार्गदर्शक बन सके।

एक महान् विचारक एव दार्शनिक शेख शादी ने लिखा है कि यदि राजनेता एव धर्मप्रचारक व विचारक जो कहते हैं अगर ऐसा ही करे तो सारी दुनिया का नक्शा-चित्र एक सप्ताह मे ही बदल जाए और इस धरती पर स्वर्ग उतर आए।

अत साराश रूप मे कह सकते हैं कि नैतिक मूल्य ही चरित्रता के आधार स्तम्भ हैं और सदाचार का जीवन ही चरित्रता का दूसरा नाम है और इसको अपनाए बिना व्यक्ति समाज और देश का कदापि भला एव कल्याण नहीं हो सकता। क्योकि **सदाचार है व्यक्ति का शृगार, समाज का पुनरुद्धार और राष्ट्र की शक्ति का मूल आधार।।**

–आर्य अतरसिंह ढाण्डा,
उपप्रधान आर्यसमाज, हिसार
म०न० ११, साकेत कालोनी, हिसार

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के बढ़ते कदम

दयानन्दमठ, रोहतक। आर्यसमाज का युवा सगठन सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् पूरे देश-देशान्तर मे युवको मे चरित्र एवं राष्ट्रभक्ति की भावना भरने हेतु नगर-नगर तथा गाव-गाव मे ब्रह्मचर्य एव व्यायाम प्रशिक्षण शिविरो की व्यवस्था करके उनमे समर्पण एव बलिदान की भावनाओ से ओतप्रोत करता है। इस सगठन की हरयाणा प्रदेश इकाई के प्रदेशाध्यक्ष एव प्रेस प्रवक्ता श्री सन्तराम आर्य ने बताया कि सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् की ओर से पिछले बत्तीस (३२) वर्षो मे हजारो शिविरो का आयोजन किया जा चुका है लेकिन इस वर्ष ८ फरवरी से १७ फरवरी २००२ तक राष्ट्रीय स्तर का सबसे महत्त्वपूर्ण शिविर आर्यसमाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती के जन्मस्थान टकारा (गुजरात) मे लगाया जा रहा है जिसमे पाच हजार युवक भाग लेगे। सम्भवत आर्यसमाज के इतिहास मे यह पहला बडा शिविर होगा।

शिविर के बारे मे विस्तार से चर्चा करते हुए श्री सन्तराम आर्य ने बताया कि यह शिविर प्राथला गऊशाला के प्रागण मे लगाया जायेगा जो कि टकारा के साथ लगता है। इसकी अध्यक्षता स्वामी धर्मबन्धु जी करेगे। परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगवीरसिह जी एडवोकेट इस शिविर के सयोजक होगे। भारत के प्रथम कोटि के व्यक्ति महामहिम राष्ट्रपति के०आर० नारायण इस शिविर का उद्घाटन करेगे।

मुख्य वक्ताओ मे प्रमुख है–तहलका के श्री तरुण तेजपाल, प्रसिद्ध वैज्ञानिक अब्दुल कलाम आजाद, सी०बी०आई० के पूर्व निदेशक सरदार जोगेन्द्रसिह, आर्यसमाज के प्रसिद्ध एव क्रान्तिकारी सन्यासी व बन्धुआ मुक्ति मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष स्वामी अग्निवेश जी आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान् डा० वेदप्रताप वैदिक सासद डा० कर्णसिह जम्मू आदि विद्वान् पहुच रहे है। श्री सन्तराम आर्य ने बताया कि हरयाणा से ५० व्यायाम शिक्षक प्रशिक्षण देने के लिए भेजे जा रहे है। इस शिविर के समापन पर युवको से दहेज न लेने एव भ्रष्टाचार मुक्त समाज की रचना मे महत्त्वपूर्ण सहयोग करने एव अन्य सामाजिक बुराइयो व कुरीतियो को छोडने की प्रतिज्ञा भी करवाई जायेगी।

–रवीन्द्र आर्य

दयानन्दमठ का उनतीसवां वैदिक सत्संग

रोहतक। आर्यसमाज की प्रमुख सस्था दयानन्दमठ रोहतक मे वैदिक सत्सग समिति दयानन्दमठ द्वारा सचालित वैदिक सत्सग की २९वीं कडी ३ फरवरी सन् २००२ रविवार को मनाया जा रहा है। सत्सग के सयोजक आचार्य सन्तराम आर्य ने बताया कि यह सत्सग सामाजिक कुप्रथाओ, धार्मिक अन्धविश्वासों, छुआछूत, अशिक्षा, अन्याय एव शोषण के बारे मे वैदिक धर्म की मान्यताओ का प्रचार-प्रसार करने हेतु प्रारम्भ किया गया है। यह सत्सग हर महीने के प्रथम रविवार को मनाया जाता है। कार्यक्रम की जानकारी देते हुए श्री सन्तराम आर्य ने बताया कि प्रात ९-०० बजे ब्रह्मयज्ञ व देवयज्ञ से प्रारम्भ होता है फिर यज्ञ के बाद ईशभक्ति गीतो का कार्यक्रम चलता है। भक्ति सगीत मे पुरुष व महिलाए तथा छोटी आयु के छात्र भी सम्मिलित होते हैं। पूरा वातावरण भक्तिमय सा दिखाई देता है। फिर किसी एक विद्वान् का आध्यात्मिक प्रवचन होता है। विद्वान् को बोलने अथवा अपनी बात कहने के लिए एक घण्टे का समय निश्चित है। यह कार्यक्रम १२-०० बजे दोपहर तक चलता है। इसके बाद ऋषिलगर, जो कि वैदिक सत्सग समिति दयानन्दमठ द्वारा चलाया जा रहा है, उसमे सभी मिलकर भोजन करते हैं। पिछला सत्सग ६ जनवरी २००२ को मनाया गया था। अठाईसवे सत्सग पर मुख्य वक्ता श्री भद्रसेन शास्त्री थे तथा श्रद्धाजलि देनेवालो मे श्री दयानन्द शास्त्री, श्री सुखदेव शास्त्री, श्री गुरुदत्त आर्य, मा० देवीसिह आर्य व देशराज आर्य आदि के इलावा बहिन दयावती आर्या के गीतो की विशेष चर्चा रही। इस अवसर पर महाशय भरतसिह की पुण्यतिथि भी मनाई गई।

इस सत्सग समारोह के सयोजक एव व्यवस्थापक सन्तराम आर्य ने आनेवाले एक वर्ष के भावी कार्यक्रमो की घोषणा की। दयानन्दमठ का सस्थागत उत्सव मनाने का भी फैसला किया गया।

इस बार ३ फरवरी २००२ रविवार को सभी सज्जनो, बहनो एव भाइयो से निवेदन है कि दल बल सहित अपने परिवार के सभी सदस्यो के साथ पधारने के लिए सयोजक महोदय ने अपील की है।

–रवीन्द्र आर्य

वैदिक आश्रम पिपराली, सीकर के वार्षिकोत्सव पर
दिव्य सत्संग एवं सामवेद पारायण महायज्ञ
दिनांक ८, ९ व १० फरवरी २००२

सादर आमंत्रण

मान्यवर सज्जनो!

वैदिक आश्रम पिपराली जिला सीकर (राजस्थान) के वार्षिकोत्सव के अवसर पर उपरोक्त तिथियो मे तीन दिवसीय सत्सग का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर देश-विदेश मे ख्यातिप्राप्त मूर्धन्य सन्यासी विद्वान् एव भजनोपदेशको द्वारा आध्यात्मिक सामाजिक पारिवारिक तथा विभिन्न विषयो पर सारगर्भित प्रवचन एव भजनोपदेश होगे। इस पुनीत अवसर पर आप सादर आमत्रित है। अपने परिजनो एव इष्टमित्रो सहित पधार कर ज्ञानामृत का लाभ उठावे।

वैदिक आश्रम पिपराली, ग्राम से १ कि०मी० नीम का थाना की ओर सीकर शहर से १२ कि०मी० की दूरी पर स्थित हैं। आश्रम के लिए सीकर बस स्टैड तथा रेलवे फाटक से बस तथा अन्य साधन उपलब्ध रहते हैं।

–स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती, अध्यक्ष

वैदिक विद्वान् आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री सम्मानित

नई दिल्ली। ६ जनवरी को आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान् एवं अनेक पुस्तकों के यशस्वी लेखक श्री चन्द्रशेखर शास्त्री जी को अर्जुन अपार्टमैंट मैत्री संगठन एवं आर्यसमाज ग्रुप हाउसिंग विकासपुरी के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित 'शान्ति-सद्भावना वृहद् यज्ञ' के पावन अवसर पर शाल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया।

द्वारकानाथ सहगल बौद्धिक विकास केन्द्र की ओर से प्रसिद्ध समाजसेवी श्रीमती वैष्णो सहगल ने आचार्य श्री को शाल, प्रशस्ति पत्र एव ग्यारह सौ रुपये की सम्मान राशि प्रदान की।

कार्यक्रम के संयोजक श्री अशोक सहगल ने कहा कि आचार्य श्री चन्द्रशेखर जी ने जिस निष्ठा, तप, त्याग से आर्यसमाज की सेवा की है तथा वैदिक सस्कृति के प्रचार-प्रसार एवं मानव सेवा के पुनीत कार्य में सलग्न है, यह सभी आर्यजनों के लिए आदर्श एवं प्रेरणाप्रद है। ऐसे विद्वान् को हम अपने बीच पाकर गौरवान्वित हैं।

—धर्मस्वरूप बजाज, मन्त्री

पुस्तक विमोचन कार्यक्रम सम्पन्न

डबवाली। आर्यसमाज मण्डी डबवाली, हरयाणा के वार्षिक सत्सग समारोह के अवसर पर डॉ० अशोक आर्य द्वारा लिखित तथा श्रुति प्रकाशन, मण्डी डबवाली तथा पं० गगाप्रसाद उपाध्याय प्रकाशन मन्दिर अबोहर के साझे सौजन्य से प्रकाशित पुस्तक "आर्यसमाज की उपलब्धिया" का विमोचन स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती ने अपने हाथों से किया। आर्यसमाज मण्डी डबवाली के लग्नशील कार्यकर्ता डॉ० अशोक आर्य द्वारा लिखित इस पुस्तक की प्रथम कापी उत्साही व कर्मठ आर्यनेता श्री अमरनाथ गोयल प्रधान आर्यसमाज मण्डी कालांवली को भेंट की गई। द्वितीय पांच प्रतियां क्रमश. स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती, पं० ओमप्रकाश वर्मा भजनोपदेशक, प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु, साध्वी विशोका जी तथा श्री राजेन्द्रकुमार को भेट की गई। इस असर पर बोलते हुए प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु ने डॉ० अशोक आर्य का परिचय देते हुए बताया कि डॉ० आर्य युवक समाज अबोहर की उपज है। पं० गगाप्रसाद उपाध्याय प्रकाशन मन्दिर के प्रकाशन मन्त्री के रूप में इन्होंने भारी मात्रा मे वैदिक साहित्य प्रकाशित कर देश-विदेश में पहुंचाया है। हिन्दी जीवनी साहित्य को आर्यसमाज का योगदान विषय पर पी-एच डी की है तथा वर्तमान में केरल वैदिक मिशन के महामन्त्री हैं, उनकी यह पुस्तक बहुत उपयोगी है। इसे आर्यसमाज की मान्यताओं से आरभ करके, आर्यसमाज की उपलब्धियों का विशद विवेचन करने के पश्चात् विभिन्न कवियों के ऐसे भजन दिए हैं जिनसे आर्यसमाज के कार्यो की झलक मिलती है। अन्त में आर्यसमाज के कार्यों सम्बन्धी जयघोष दिए हैं। मात्र आठ रुपये से आर्यसमाज की झलक मिल जाती है। पुस्तक पठनीय है।

—अरुणेश आर्य

आर्यसमाज रोहणा (सोनीपत) में विशेष यज्ञ

दिनांक २४-१२-२००१ से ३०-१२-२००१ तक ब्रह्मचारी श्री राजसिंह जी (आचार्य) ने यज्ञ के ब्रह्मा बनकर प्रातः ८ बजे से ११ बजे तक एव रात्रि को ८ से ११ बजे तक कथा की। प्रातः यज्ञ एवं कथा रात्रि को भजन एवं कथा चली। आचार्य जी ने यज्ञ के माध्यम से योग एवं ईश्वरभक्ति के गूढ़ विषयों को सरल भाषा व सरल उदाहरणों द्वारा ईश्वरभक्ति की प्रेरणा दी। कथा एवं यज्ञ में प्रतिदिन लगभग ५०० पुरुष एवं महिलाओं की संख्या होती थी। इस समायोजन में गांव मटिण्डू, बरोणा, सिसाना, खरखौदा व सुरमपुर की आर्यसमाजों ने भी भाग लिया।

यह आयोजन संरक्षक (आर्यसमाज) महाशय श्री [illegible] जी आर्य तथा श्री जयकरण जी प्रधान व उपप्रधान श्री बनवारीलाल जी आर्यसमाज रोहणा की अध्यक्षता में चला। इस समायोजन की सहायतार्थ श्री वेदप्रकाश महाशय, ब्र० आनन्द, प्र० प्रवीण, ब्र० सुरेन्द्र, ब्र० देवेन्द्र तथा श्री जयप्रकाश व श्री शक्तिसिंह ने बहुत श्रद्धा, रुचि एवं कर्मठता से कार्य किया। ३०-१२-२००१ को अन्तिम दिन श्री हरकिशन, श्री श्रीकिशन सुपुत्र श्री नफेसिंह ने पाच ५ हजार रुपये का देशी घी का हलुवा बनवाकर प्रसाद आर्यजनों मे वितरित किया।

—शास्त्री रामचन्द्र, मन्त्री, आर्यसमाज

बेटी ने किया अपने पिता का अन्तिम संस्कार

यमुनानगर। समाज मे प्रचलित यह मान्यता यहां निकटस्थ ग्राम साबापुर में बिखर गई कि मृतक पिता का दाह कर्म केवल उसका पुत्र, भाई या भतीजा ही कर सकता है, जब ग्राम निवासी मास्टर अजमेरसिह की चिता को उनकी बडी बेटी वीरता ने अग्नि दी व वेदमन्त्रों के बीच घी की आहुतिया देकर दाह कर्म पूर्ण किया। अजमेरसिंह का अन्त्येष्टि सस्कार जिला यमुनानगर वेदप्रचार मण्डल के वरिष्ठ उपप्रधान श्री भानुराम आर्य ने कराया। इस घटना से गाव तथा क्षेत्र मे तरह-तरह की चर्चा फैल गई व प्रतिक्रियास्वरूप कुछ लोगो ने इसका समर्थन किया जबकि कुछ लोगो ने इससे असहमति प्रकट की। असहमति प्रकट करने वालो को भानुराम आर्य ने समझाया कि पुत्र तथा पुत्री मे भेद नहीं मानना चाहिए। सत्यवादी हरिश्चन्द्र के पुत्र के मरने पर उनकी पत्नी तारामती ही अपने पुत्र का दाह कर्म करने के लिए श्मशान मे गई थी। मास्टर अजमेर सिह मृतक के परिवार मे दस दिनो तक हवन-यज्ञ व मृत्यु तथा जीवन सम्बन्धी उपदेश भी चलता रहा। रस्म उठाला प्राथमिक विद्यालय के प्रागण मे शान्ति यज्ञ करके सम्पन्न हुई। इस अवसर पर आर्य केन्द्रीय सभा के प्रचारमत्री व उपदेशक श्री प० इन्द्रजित् देव ने मृत्यु व जीवन सम्बन्धी विवेचन किया। यमुनानगर, जगाधरी व दूर निकट से पधारे जनसमूह को सम्बोधित करते हुए पं० इन्द्रदेव ने कहा कि वेद का कोई भी मन्त्र ऐसा नहीं है जो बेटी, बहन, मा अथवा पुत्रवधू को दाहकर्म करने से वचित करता हो। किसी मृतक की मिट्टी को ठिकाने लगाना पुण्य का कार्य है व ऐसा पुण्य कार्य कोई भी कर सकता है। महिलाओ को श्मशान में जाने की मनाही इसलिए है क्योंकि प्राय महिलाए भावुक होती हैं व अधिक रोती पीटती हैं उनके ऐसा करने से दाह कर्म मे बाधा उपस्थित होती है व श्मशान का वातावरण अधिक कारुणिक व दु खमय हो जाता है। यदि महिला जागरूक व गभीर है तो उसे भी अन्तिम सस्कार करने का पूर्ण अधिकार है। आपने आगे कहा कि पहले बेटियो के विवाह उनके रजस्वला होने से पहले ही कर दिए जाते थे, बेटियो के ससुराल मे जाकर पानी पीना भी पाप समझा जाता था। परन्तु अब ये दोनो मान्यताए ढहकर बिखर चुकी हैं। इसी प्रकार महिलाओ को किसी के दाह कर्म न करने देने की गलत मान्यता भी समाप्त होनी चाहिए।

—महेन्द्रपाल आर्य, ५०३, रूपनगर कालोनी, जगाधरी

शोक समाचार—

जयकिशनदास जी आर्य दिवंगत

श्री जयकिशनदास जी आर्य हासी, भूतपूर्व प्रधान आर्यसमाज, हांसी का स्वर्गवास ९० वर्ष की आयु में ८-१-२००२ दिन मगलवार को रोहिणी मे हो गया। आप मानवती आर्य कन्या हाई स्कूल हासी तथा वेदप्रचार मण्डल, हासी के प्रधान थे। आप पी सी एस डी हाई स्कूल, हासी, एस डी महिला कॉलेज, हासी, डी ए वी कॉलेज मैनेजिंग कमेटी दिल्ली की कार्यकारिणी के सदस्य थे तथा जीवन भर हरयाणा गोशाला तथा अनेक सामाजिक व धार्मिक संस्थाओं से जुड़े रहे।

उनका श्रद्धांजलि कार्यक्रम दिनांक २०-१-२००२ को अग्रवाल धर्मशाला सैक्टर-८, पैट्रोल पम्प के सामने, रोहिणी, दिल्ली-११००८५ में सम्पन्न हुआ।

सुख व आनन्द की परिभाषा

जन साधारण सुख को आनन्द का ही पर्याय मान लेते हैं यानि सुख और आनन्द दोनो को एक ही मान लेते हैं, जबकि सुख और आनन्द मे काफी अन्तर है। सुख दो अक्षरो से बना है सु और ख। "ख" का अर्थ होता है इन्द्रिय और 'सु' का अर्थ होता है अच्छा लगना। यानि जो इन्द्रियो को अच्छा लगे तो वह सुख और जो अच्छा न लगे वह दुःख कहलाता है। ईश्वर ने हमको पाच ज्ञानेन्द्रिया और पाच ही कर्म इन्द्रिया दी हैं। ज्ञानेन्द्रियो से हम हर वस्तु व द्रव्य का ज्ञान व अनुभव प्राप्त करते हैं और पाच कर्मेन्द्रियो से हम अपने शरीर व जीवन की आवश्यकताओ को पूरा करने के लिये कर्म करते हैं, इसलिये वे ज्ञानेन्द्रिया और कर्म इन्द्रियां कहलाती हैं। पाच कर्म इन्द्रिया हाथ, पैर, मुख और मल-मूत्र द्वार। पाच ही ज्ञानेन्द्रिया हैं आख, कान, नाक, जिह्वा और त्वचा। इनके पाच ही विषय (भोग) और पाच ही देवता हैं। इनके विषय हैं, क्रमश रूप, शब्द, गन्ध, रस (स्वाद) और स्पर्श और इनके पाच देवता है। क्रमश अग्नि, आकाश, पृथ्वी (मिट्टी) पानी और हवा जिनके सहयोग से यह ज्ञानेन्द्रिया विषयो के सुख व दुःख का अनुभव करती हैं। आख अग्नि (प्रकाश) के द्वारा रूप देखती है, कान आकाश के द्वारा शब्द सुनता है, नाक पृथ्वी के द्वारा गन्ध को ग्रहण करती है, जिह्वा पानी मे रस प्राप्त करती है और त्वचा हवा से स्पर्श का अनुभव करती है। इन पाचो ज्ञानेन्द्रियों द्वारा जो अनुभूति होती है, उसी का नाम सुख व दुःख है। यदि हम आखो से अच्छा रूप देखेगे, कानो से अच्छा शब्द सुनेगे, नाक से अच्छी गन्ध ग्रहण करेगे, जिह्वा से अच्छा स्वाद चखेगे और त्वचा से अच्छे स्पर्श की अनुभूति करेगे तो हमको सुख प्राप्त होगा। इसके विपरीत अच्छी अनुभूति नहीं होने से दुःख प्राप्त होगा। इस प्रकार हमारे शरीर मे दस तो बाहर की इन्द्रियां हैं जिनको बाह्य इन्द्रिया कहते हैं और चार आन्तरिक इन्द्रिया हैं जिनके नाम हैं मन, बुद्धि, चित्त व अहकार जिनको अन्तःकरण भी कहते हैं। इनमे मन प्रधान है, जो आत्मा की आज्ञा से बाहर की दसो इन्द्रियो से काम करवाता है। चित्त, बुद्धि और अहकार, मन के सहयोगी हैं। आत्मा शरीर का स्वामी है जो चेतन है बाकी दसो इन्द्रिया जड हैं।

अब यह बता देना भी उचित है कि सुख व दुःख आत्मा को होते हैं शरीर को नहीं। साधारण लोग सुख व दुःख शरीर को होना मानते हैं, कारण दीखने मे शरीर मे ही जान पडता है लेकिन वास्तविकता यह है कि यह सुख और दुःख शरीर की पाच ज्ञानेन्द्रियो द्वारा आत्मा को अनुभव होता है, शरीर को नहीं कारण शरीर तो जड (निर्जीव) है। अनुभव व अनुभूति जड को कभी नहीं। होती, चेतन को ही होती है। आत्मा चेतन (गतिशील) है इसलिये सुख व दुःख की अनुभूति आत्मा को होगी। उदाहरण के तौर पर जैसे हमारे पैर मे कांटा लगने से पैर मे दर्द होता है इसीलिये साधारण लोग सुख, दुःख को शरीर का विषय मान लेते हैं लेकिन काटा लगने से त्वचा के द्वारा आत्मा को दुःख की अनुभूति हुई और आत्मा ने मन के द्वारा हाथो को काटा निकालने का निर्देश दिया और हाथों ने काटा निकाल दिया। यदि शरीर को दर्द होता तो शरीर से आत्मा निकलने के बाद मृतक शरीर (शव) को दर्द क्यों नहीं होता ? इससे तात्पर्य यही निकला कि सुख व दुःख शरीर को नहीं, आत्मा को होता है।

अब अपने विषय की तरफ आता हुआ यह समझाना चाहूगा कि सुख और आनन्द मे क्या अन्तर है ? सुख आत्मा को पाचो ज्ञानेन्द्रियों द्वारा प्राप्त होता है जिसको ऊपर विस्तारपूर्वक लिख चुके हैं और आनन्द आत्मा का स्वय का विषय है और उसका (आत्मा का) देवता आनन्द का भण्डार सर्वशक्तिमान् सर्वव्यापक ईश्वर है। आत्मा, ईश्वर से सीधे ही आनन्द की प्राप्ति करता है, इसके प्राप्त करने के लिये ज्ञानेन्द्रियो की आवश्यकता नहीं, कारण आत्मा और परमात्मा दोनो ही हमारे हृदय-स्थान मे उपस्थित हैं, यदि आत्मा पर अज्ञान व विकारो के मल का पडदा न पड़ा हो।

आनन्द ईश्वर का ही विषय है, इसको पाने के दो मार्ग हैं, जिनसे आत्मा को ईश्वर से आनन्द की प्राप्ति होती है। पहला यम नियमों से आरम्भ करके समाधि अवस्था तक पहुंचना। दूसरा ईश्वर के गुण जैसे दया, करुणा, परोपकार, सुहृदयता, निष्पक्ष भावना आदि को अपने जीवन में धारण करके अच्छे कार्य, व्यवहार व आचरण करते हुए और प्राणिमात्र का कल्याण करते हुए जीवन यापन करना। यह दोनो कार्य हम जितना ज्यादा करते जायेगे उतना ही ज्यादा हमें आनन्द प्राप्त होता जायेगा जैसे अग्नि गर्मी का भण्डार है, हम अग्नि के जितना समीप जायेंगे उतनी ही ज्यादा गर्मी लगेगी। यही बात ईश्वर के समीप जाने की है। इन दोनो के अतिरिक्त गहरी निद्रा मे भी हमे आनन्द की अनुभूति होती है, कारण निद्रा भी समाधि की एक छोटी अवस्था है। जिस प्रकार समाधि मे व्यक्ति अपने शरीर की सुध-बुध भूल जाता है उसी प्रकार गाढी निद्रा मे भी व्यक्ति कुछ समय के लिये सुध-बुध भूल जाता है और उसे सीमित आनन्द प्राप्त होता है। स्वप्न अर्धनिद्रा की अवस्था मे आता है, उस समय हमारी कुछ ज्ञानेन्द्रिया काम करती रहती हैं, इसलिये उसमे हमे जो अनुभव होता है वह सुख व दुःख है, आनन्द नहीं।

सुख और आनन्द का अन्तर समझने में एक बात और ध्यान रखनी चाहिये कि सुख ज्यादा से कम होता जाता है यानि घटता जाता है और अन्त में दुःख मे भी परिणत हो जाता है। वह एक रस व एक रूप न रहकर बदलता रहता है। उदाहरण के तौर पर जैसे आपने हलवा खाना शुरू किया, जैसे-जैसे भूख कमती होती जायेगी वैसे-वैसे सुख (स्वाद) की अनुभूति भी कमती होती जायेगी। यदि भूख से ज्यादा खा लोगे तो पेट दर्द या बदहजमी होने से सुख, दुःख मे परिवर्तित हो जायेगा। दूसरी बात यह है कि आज हलवा खाया तो कल खीर खाने की इच्छा होवेगी, परसो मालपवे खाने की, तरसो अन्य मिष्ठान्न खाने की, इस प्रकार खाने की इच्छा बदलती रहती है। यह जिह्वा के सुख की बात हुई, यही कहानी बाकी चारो ज्ञानेन्द्रियो की है। आज जो सिनेमा देख लिया कल दूसरा सिनेमा देखने की इच्छा होगी, परसो थियेटर देखने की इच्छा होगी। लेकिन आनन्द बदलता नहीं है और अपनी अवधि के अनुसार बढता ही जायेगा, घटने का नाम तक नहीं लेगा। एक घण्टे की समाधि से दो घण्टों की समाधि मे ज्यादा और तीन घण्टो की समाधि मे उससे भी ज्यादा, इस प्रकार आनन्द बढता ही जायेगा। यही बात ईश्वरीय (परोपकारी) कार्यों के बारे मे है। जितना ज्यादा परोपकारी (यज्ञीय) काम करोगे उतना ही ज्यादा आनन्द आवेगा। आनन्द एक रस व एक रूप रहता है बदलता नहीं। पूर्ण आनन्द मृत्यु के बाद मोक्ष की स्थिति (हर समय ईश्वर के सान्निध्य मे) मे आत्मा को मिलता है जो मानव योनि का अन्तिम लक्ष्य है। जिसकी प्राप्ति के लिये ईश्वर जीव को मानव योनि मे भेजता है।

—खुशहालचन्द्र आर्य
१८०, महात्मा गाधी रोड (दो तल्ला) कलकत्ता-७०००७

शोक समाचार—

धर्मशास्त्री की छोटी बहन का देहान्त

आर्यसमाज के निष्ठावान् सेवक वैदिक धर्मप्रचारक धर्मपाल आर्य शास्त्री (मन्त्री आर्यसमाज भाण्डवा) की छोटी बहन ज्ञानवती का देहान्त १५ जनवरी को वेस चिकित्सालय दिल्ली मे दिल के वाल्व बन्द होने के कारण हो गया है। आर्यपरिवार के लिए यह असामयिक निधन वज्रपात के समान है। इस हृदय विदारक दुखद देहान्त से शास्त्री जी को गहरा धक्का लगा है। मर्मान्तक पीडा से शोकग्रस्त भागवत्परिवार के प्रति आर्यसमाज भाण्डवा हार्दिक सवेदना व्यक्त करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता है कि बहन की दो सुपुत्रियो व एक सुपुत्र की सब प्रकार से रक्षा करे व सन्तप्त परिवारो को दुःखसागर से पार करे।

—रामार्य, प्रधान—आर्यसमाज भाण्डवा

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ७६८७४, ७७८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ७७७२२) से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३ दूरभाष : ०१२६२-७७७२२
पंजीकरण संख्या टैक/HR-2/2000

प्रधानसम्पादक : यशपाल आचार्य, सभामन्त्री सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री

वर्ष २६ अंक ११ ७ फरवरी, २००२ वार्षिक शुल्क ८०) आजीवन शुल्क ८००) विदेश में २० डॉलर एक प्रति १.७०

आर्यसमाज महर्षि दयानन्द उच्च विद्यालय जीन्दमार्ग, रोहतक का वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज महर्षि दयानन्द उच्च विद्यालय, जीन्द मार्ग, रोहतक का ११वा वार्षिक उत्सव २० जनवरी २००२ को धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आचार्य सुदर्शनदेव जी ने यज्ञ पर वेदप्रवचन किया तथा पुन. वेदो की ओर लौटने का महर्षि दयानन्द का संदेश दिया। प्रसिद्ध आर्य उद्योगपति दानवीर श्री मित्रसेन जी ने विद्यालय के कम्प्यूटर कक्ष का उद्घाटन किया और एक कम्प्यूटर का दान दिया। हरयाणा प्रदेश के प्रभावशाली भजनोपदेशक पं० रामनिवास आर्य एव आर्य प्रतिनिधिसभा हरयाणा की मण्डली चौ० जयपाल बेधड़क, पं० सत्यपाल आर्य ने अपने भजनों द्वारा ऋषि दयानन्द तथा आर्यसमाज के द्वारा किये गये परोपकारी कार्यों का गुणगान किया। इस विद्यालय की प्रधानाचार्य श्रीमती सुमित्रा वर्मा द्वारा छात्राओं की तैयार की गई एक भजन मण्डली कुमारी सुमन आर्या तथा उसकी सहयोगियों ने आर्यसमाज प्रचारार्थ मनोहर भजन तथा शहीद भगतसिंह, राजगुरु सुखदेव चन्द्रशेखर पर प्रभावशाली नाटक का प्रदर्शन किया, जिसकी श्रोताओं प्रशसा की तथा उनका उत्साहवर्धन हेतु इनाम दिया। आशा है इन छात्राओं द्वारा भविष्य में आर्यसमाज के प्रचार का प्रसार किया जायेगा। सभा के महोपदेशक प० सुखदेव शास्त्री ने अपने व्याख्यान द्वारा आर्यसमाज के आन्दोलनों तथा विशेष कार्यों पर प्रकाश डाला। सभा के पूर्व प्रचारक क्रान्तिकारी वक्ता श्री अतरसिंह आर्य ने राष्ट्र मे पनप रहे भ्रष्टाचार को बन्द करने का आह्वान किया और जनता से आर्यसमाज के परोपकारी कार्यों में सहयोग देने की अपील की।

मंच पर विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती सुमित्रा वर्मा, श्री अतरसिंह क्रान्तिकारी, दानवीर डॉ० समुद्रसिंह लाठर, श्री केदारसिंह आर्य तथा श्री बलराज शास्त्री बैठे हैं।

दोपहर पश्चात् की कार्यवाही में गुरुकुलों तथा आर्यविद्यालयों मे उदारतापूर्वक दान देने वाले डॉ० समुद्रसिंह लाठर ने विद्यालय के ऊपरी तल का उद्घाटन करते हुए इस विद्यालय की आवश्यक आवश्यकता की पूर्ति करने का वचन दिया और छात्राओं को कडा परिश्रम करके परीक्षाओं मे उच्च स्थान प्राप्त करने का परामर्श दिया। विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती सुमित्रा वर्मा ने सभी वक्ताओं का धन्यवाद करते हुए विश्वास दिलाया कि वे महर्षि के सिद्धान्तो के अनुसार छात्राओं को वैदिक कर्म में दीक्षित करने के कार्यों में सभा के वेदप्रचार के कार्यों में सहयोग देती रहूंगी। आपने इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभामन्त्री आचार्य यशपाल शास्त्री के किसी कारणवश न पधार सकने पर हरयाणा के उपमन्त्री श्री केदारसिंह आर्य, अन्तरग सदस्य श्री सुखवीर शास्त्री, पूर्व वेद प्रचाराधिष्ठाता आचार्य सुदर्शनदेव, सभा महोपदेशक प० सुखदेव शास्त्री, चौ० मित्रसेन, डॉ० समुद्रसिंह लाठर, श्री अतरसिंह क्रान्तिकारी, श्री जयपाल सिंह, पं० सत्यपाल आर्य, पं० रामनिवास आर्य, महाशय पर्वतसिंह स्वतन्त्रता सेनानी, आर्यसमाज के उपप्रधान श्री बलराज आर्य, श्री सुरेन्द्रसिंह आर्य (कानोन्दा) आर्य कार्यकर्ताओं को केसरिया पगड़ियां भेंट करके सम्मानित किया। मंच का संचालन सभा के अन्तरंग सदस्य श्री सुखवीर शास्त्री ने सफलतापूर्वक किया। सभा को वेदप्रचारार्थ ६०० रुपये दान दिया।

—ओम्प्रकाश वर्मा, प्रधान

सभी आर्यसमाजें ध्यान दें

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्त्वावधान मे, "हरयाणा प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन" ३०-३१ मार्च २००२ को रोहतक में होगा, आप सभी तन, मन, धन से सम्मेलन को सफल बनाने मे सहयोग दे, इन तारीखो में अपने उत्सव अथवा अन्य गतिविधिया स्थगित रखे।

उदयपुर में सभी आर्यों का निमन्त्रण

महर्षि दयानन्द ने जिस स्थान पर सत्यार्थप्रकाश लिखा था, उसे सुन्दर, पवित्र स्मारक के रूप मे विकसित किया गया। १६-२७-२८ फरवरी को सार्वदेशिक सभा के प्रधान कैप्टन देवरत्न जी की अध्यक्षता मे सत्यार्थप्रकाश महोत्सव का आयोजन होगा, सभी आर्य भारी सख्या मे पहुचकर महर्षि के पवित्र स्थल का दर्शन करे।

हरिद्वार महाकुम्भ पर आर्यो का आमन्त्रण

आर्यसमाज की महान् सस्था, स्वामी श्रद्धानन्द की पवित्र स्थली 'गुरुकुल कागडी हरिद्वार' मे गुरुकुल की स्थापना को १०० वर्ष पूरा होने पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली तथा आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के सहयोग से सचालित गुरुकुल कागडी मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के नेतृत्व मे २५-२६-२७-२८ अप्रैल २००२ को गुरुकुल शताब्दी आर्य महासम्मेलन होने जा रहा है। पूरे देश और विदेशो से आर्यसमाज के कार्यकर्ता प्रतिनिधि सभाओ के अधिकारी महासम्मेलन को सफल बनाने मे जुट गये हैं। अमर हुतात्मा को श्रद्धाजलि देने गुरुकुल माता के दर्शन करने और आर्यसमाज की ताकत का परिचय देने के लिये तन-मन-धन से सहयोग देकर भारी सख्या मे पहुंचें।

—सभामन्त्री

वैदिक-स्वाध्याय

मरणशील मनुष्यों का अमरदेव ही स्तुत्य

तमध्वरेषु ईडते देव मर्त्ता अमर्त्यम् ।
यजिष्ठं मानुषे जने ।। (ऋ० ५।१४।२)

शब्दार्थ—(**अध्वरेषु**) सब यज्ञो मे (**मर्त्ता**) हम करणशील मनुष्य (**त अमर्त्य देवं**) उस अमर-कभी न मरनेवाले-देव की ही (**ईडते**) पूजा करते हैं जो कि देव (**मानुषे जने**) प्रत्येक मनुष्य के अन्दर (**यजिष्ठं**) यजनीय है।

विनय—नाना प्रकार के यज्ञों मे जो हम विविध कर्म करते हैं, असल मे हम उन सब कर्मो द्वारा उस अमर देव का ही पूजन करते हैं। हम मरणशील मनुष्यो को अमर देव के ही यजन करने की जरूरत है। प्रत्येक यज्ञ-कर्म का प्रयोजन यही है कि हम उस द्वारा मृत्यु से पार हो जाये-अमर हो जाये। यज्ञ मर्त्य को अमर बनाने के लिए ही है। पर हम यज्ञो द्वारा जिस अमर देव की पूजा करते हैं, वह अमरदेव कहा पर है? सुनो, वह अमरदेव प्रत्येक मनुष्य जन मे है, प्रत्येक मनुष्य मे 'यजिष्ठ' होकर विद्यमान है। हमे प्रत्येक मनुष्य मे उसका यजन करना चाहिये। इसीलिये कहा जाता है कि यज्ञ सब मनुष्यो के हित के लिए होता है। यज्ञ का स्वरूप परोपकार है—एक-एक मनुष्य का हितसाधन है। मनुष्यो की सेवा करना ही यज्ञ करना है। जितना हम मनुष्यो की सेवा करते हैं—मनुष्यो की पीडाओ और दुखो को दूर करने के लिये निःस्वार्थ भाव से यत्न करते हैं—उतना ही हमारे ये कार्य यज्ञ होते हैं—अग्निहोत्र द्वारा किये जानेवाले पुराने ऋतु यागादि भी आधिदैविक देवो की अनुकूलता प्राप्त करके मनुष्य जनता के हित के प्रयोजन से ही किये जाते थे। पर इतने से भी यज्ञ का तात्पर्य पूरा नहीं होता। मनुष्यो की जिस किसी प्रकार की सेवा करने से यज्ञ नहीं हो जाता। हमने तो प्रत्येक मनुष्य मे उस अमरदेव का ही यजन करना है, जिस सेवा से मनुष्य के अमरदेव की सेवा नहीं होती, वह सेवा सेवा नहीं है, वह सेवा यज्ञ नहीं है। भोगविलास की सामग्री जुटाने से बेशक मनुष्यो की तृप्ति होती दिखती है पर यह मनुष्यो की सच्ची सेवा नहीं है। ऐसा 'परोपकार' यज्ञ नहीं, अयज्ञ है। इसी प्रकार भूखो को इस तरह अन्न देना, रोगियो को इस तरह औषध देना भी जो कि उनकी सच्ची उन्नति मे—उन्हे अमर बनाने मे—बाधक होवे, यह भी यज्ञ नही है। अर्थात् जनता की भौतिक उन्नति साधना तभी तक यज्ञ है जब तक कि यह भौतिक उन्नति उनकी आध्यात्मिक उन्नति के लिए ही हो। आध्यात्मिक उन्नति करना ही—दूसरे शब्दो मे—मर्त्य से अमर बनना है। आओ, हम मर्त्य अमरदेव की पूजा करे, मनुष्य की ऐसी सेवा करने मे अपने को खो देवे जो सेवा उन के अमर बनने मे सहायक हो। ऐसी सेवा करने मे अपने को खो देवे जो सेवा उनके अमर बनने मे सहायक हो।

(वैदिक विनय से)

भ्रम-निवारण

श्री हीरालाल जी,

नमस्ते। आपका पत्र मिला। आपने ८ जनवरी के सर्वहितकारी मे छपे ऋग्वेद ७।८९।४ के भाष्य को बिल्कुल त्रुटिपूर्ण बतलाया है। यह भी लिखा है कि आपने स्यात् ऋग्वेद देखकर नहीं लिखा।

वैदिक विनय पुस्तक के लेखक आचार्य अभयदेव शर्मा विद्यालकार गुरुकुल कागडी के प्राथमिक सुयोग्य स्नातको मे गिने जाते हैं और स्वामी श्रद्धानन्द जी के काल मे गुरुकुल कागडी के आचार्य भी रहे हैं। वैदिक विनय तीन भागो में छपा है। ३६५ वेदमन्त्रो की उपासना परक सुन्दर व्याख्या है आज तक किसी विद्वान् ने उनकी व्याख्या पर आपत्ति नहीं की है आपको छोडकर।

अपा मध्ये तस्थिवास तृष्णाविदज्जरितारम् ।
मृडा सुक्षत्र मृडय ।। (ऋ ७।८९।४)

मन्त्र इतना सरल और स्पष्ट है कि इसे कम पढा लिखा व्यक्ति भी समझ सकता है। (अपा मध्ये) जल के बीच मे (तस्थिवांसम्) बैठे हुए (जरितारम्) मुझ स्तोता या उपासक को (तृष्णा) प्यास (अविदत्) लगी है। यह सरलार्थ है। ऐसा ही अर्थ वैदिक विनय के लेखक आचार्य अभयदेव जी ने किया। आचार्य सायण ने भी यही अर्थ इस मन्त्र का किया है। वैदिक निघण्टु २।१ मे अप कर्मनाम है किन्तु १।१२ में उदकनाम भी यास्क ने ही लिखा है। आप १।३ मे अन्तरिक्ष नाम और ५।३ मे पदनाम है। यास्क ने निघण्टु ३।१६ मे जरिता का अर्थ स्तोता किया है। जबकि आर्य मुनि जी ने जृ वयोहानौ (पा०धा०) से जरितारम् का अर्थ बुढापा और अपा का अर्थ कर्म किया है।

"अनेकार्था हि धातवो भवन्ति" धातुओ के अनेक अर्थ होते हैं। धातु अनेकार्थक हैं तो धातुज शब्दों के अर्थ भी बदल जाते हैं। वेदमन्त्रों के अर्थ भी अनेक प्रकार से सभव है। महर्षि दयानन्द जी ने भी तीन प्रकार के अर्थ ऋग्वेद के प्रथम सूक्त के किए थे। आर्याभिविनय पुस्तक में भी ऐसा ही निर्देश मिलता है। वेद को समझने के लिए वेदाग उपाग ब्राह्मण प्रातिशाख्य आदि शास्त्रों का अध्ययन आवश्यक है। केवल एक शास्त्र पढकर किसी अर्थ का निश्चय सभव नहीं। **एक शास्त्रमधीयानो न गच्छेच्छास्त्रनिश्चयम् ।** निरुक्तकार यास्क ने लिखा है—**पारोवर्यवित्सु खलु वेदितृषु भूयोविद्यः प्रशस्यो भवति ।**

—वेदव्रत शास्त्री

वैदिक आश्रम पिपराली, सीकर के वार्षिकोत्सव पर

दिव्य सत्संग एवं सामवेद पारायण महायज्ञ

दिनांक ८, ९ व १० फरवरी, २००२

सादर आमन्त्रण

मान्यवर सज्जनो !

वैदिक आश्रम पिपराली जि० सीकर (राजस्थान) के वार्षिकोत्सव के अवसर पर उपरोक्त तिथियो मे तीन दिवसीय सत्सग का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर देश-विदेश में ख्याति प्राप्त मूर्धन्य सन्यासी, विद्वान् एव भजनोपदेशको द्वारा आध्यात्मिक, सामाजिक पारिवारिक तथा विभिन्न विषयो पर सारगर्भित प्रवचन एव भजनोपदेश होगे। इस पुनीत अवसर पर आप सादर आमन्त्रित हैं। अपने परिजनो एव इष्टमित्रो सहित पधारकर ज्ञानामृत का लाभ उठावे।

वार्षिकोत्सव में पधारने वाले पूज्य संन्यासी एवं विद्वान्

श्रद्धेय पूज्य स्वामी ओमानन्द सरस्वती जी, आचार्य महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर (हरयाणा), **पूज्य स्वामी सम्पूर्णानन्द जी** चरखीदादरी (हरयाणा), **वैदिक विद्वान् डॉ० महावीर 'मुमुक्षु'** मुरादाबाद (उ०प्र०), **प्रो० आचार्य रामनारायण शास्त्री,** लोहिया कॉलेज चूरू (राज०), **वैदिक प्रवक्ता प्रो० ओमकुमार आर्य किसान कॉलेज,** जीन्द (हरयाणा), **वैदिक प्रचारिका माननीया बहन पुष्पा शास्त्री** रेवाडी (हरयाणा), **प्रसिद्ध भजनोपदेशक पं० मंगलदेव जी** भरतपुर (राज०), **प्रसिद्ध भजनोपदेशक कैप्टन बच्चनसिंह आर्य** सीकर (राज०), **वैदिक मिशनरी मा० सत्यपाल आर्य** (दिल्ली), **माननीय प्रो० रासासिंह रावत** सासद अजमेर (राज०) इत्यादि महानुभावो के उपदेश एव प्रवचन होगे।

विशेष—दिनाक ९-२-२००२ को दोपहर २ बजे से ५ बजे तक महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर के ब्रह्मचारियो का आकर्षक व्यायाम प्रदर्शन होगा। जिसमे योगासन, लाठी, भाला, तलवार, मलखम्भ, गले से सरिया मोडना, लोहे की जंजीर तोडना, छाती पर पत्थर तुडवाना, जीप रोकना इत्यादि कार्यक्रम होगे। इसी अवसर पर युवाओ के जीवन सम्बन्धित भजन व व्याख्यान भी होगे।

प्रतिदिन का कार्यक्रम

प्रात ९-०० बजे से १२-०० बजे तक यज्ञ, भजन एव प्रवचन
दोपहर २-०० बजे से ५०० बजे तक प्रवचन एवं भजनोपदेशक
रात्रि ७-३० बजे से १०-०० बजे तक प्रवचन एव भजनोपदेशक

मार्ग निर्देश—वैदिक आश्रम पिपराली, ग्राम से १ किलोमीटर नीम का थाना की ओर सीकर शहर से १२ किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। आश्रम के लिए सीकर बस स्टैण्ड तथा रेलवे फाटक से बस तथा अन्य साधन उपलब्ध रहते हैं।

निवेदक · **स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती,** अध्यक्ष
वैदिक आश्रम पिपराली, सीकर (राज०)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के महत्त्वपूर्ण निश्चय

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की एक बैठक दिनांक ३ फरवरी २००२ रविवार को प्रातः ११ बजे दयानन्दमठ, रोहतक में सभाप्रधान स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में हुई। इस बैठक में प्रो० शेरसिंह जी पूर्व रक्षा राज्यमन्त्री एवं अध्यक्ष हरयाणा रक्षावाहिनी, स्वामी कर्मपाल जी, अध्यक्ष सर्वखाप पंचायत, श्री यशपाल आचार्य मत्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, श्री वेदव्रत शास्त्री वरिष्ठ उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, आचार्य विजयपाल, श्री महेन्द्र शास्त्री, श्री सुरेन्द्र शास्त्री, श्री हरिश्चन्द्र शास्त्री, श्री केदारसिंह आर्य सभा उपमन्त्री, प्रिं लाभसिंह जी, श्री सुखवीर शास्त्री, बलवीर शास्त्री व आर्यसमाज के प्रमुख कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। बैठक में निम्नलिखित निश्चय किए गए।

(१) ३०-३१ मार्च २००२ को रोहतक में प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया जाएगा। इस अवसर पर हरयाणा के सभी आर्यसमाजों, आर्य शिक्षण संस्थाओं के अधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं, आर्यजगत् के उच्चकोटि के संन्यासी, विद्वान्, नेता एवं भजनोपदेशकों को आमन्त्रित किया गया है। इन तिथियों में कोई आर्यसमाज सस्था अपने उत्सव आदि न रखें।

(२) इस आर्य महासम्मेलन के अवसर पर ३० मार्च २००२ को रोहतक में एक विशाल शोभायात्रा निकाली जाएगी। ३१ मार्च के सम्मेलन में सतलुज-यमुना लिंक नहर के शीघ्र निर्माण को पूरा करवाने के लिए एक ठोस कार्यक्रम बनाया जाएगा एवं युवक सम्मेलन तथा महिला आदि सम्मलन भी होंगे।

(३) इस आर्य महासम्मेलन की तैयारी एवं सतलुज-यमुना लिंक नहर निर्माण पूरा करवाने हेतु १६ फरवरी २००२ को दयानन्दमठ, रोहतक में एक बैठक का आयोजन किया जा रहा है। इस बैठक में हरयाणा के आर्यसमाजों के विशेष कार्यकर्ता एवं विभिन्न राजनैतिक दल के नेताओं, किसान यूनियन हरयाणा, सर्वखाप पंचायत आदि को आमन्त्रित किया गया है।

(४) आर्य महासम्मेलन के अवसर पर सभा की ओर से एक स्मारिका का भी प्रकाशन किया जाएगा जिसमें हरयाणा प्रदेश में आर्यसमाज के इतिहास तथा गतिविधियों पर प्रकाश डाला जायेगा।

(५) उच्चतम न्यायालय ने पंजाब सरकार को आदेश दिया है कि सतलुज-यमुना लिंक नहर का निर्माण एक वर्ष की अवधि में पूरा करे। इसकी जिम्मेदारी भारत सरकार की होगी। परन्तु पंजाब के मुख्यमन्त्री श्री प्रकाशसिंह बादल ने घोषणा की है कि वे एक बूंद पानी भी हरयाणा को नहीं देंगे और हम न्यायालय के आदेश की परवाह नहीं करेंगे। इस प्रकार उन पर मानहानि का मुकदमा डालना चाहिए।

स्वामी ओमानन्द जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, प्रो० शेरसिंह जी अध्यक्ष हरयाणा रक्षा वाहिनी एवं स्वामी कर्मपाल जी अध्यक्ष सर्वखाप पंचायत ने हरयाणा सरकार से मांग की है कि पानी के सम्बन्ध में हरयाणा के पक्ष को मजबूती से उठायें, इसमें हमारा सहयोग होगा। आर्यसमाज हरयाणा के हितों पर कुठाराघात नहीं होने देगी। पंजाब के मुख्यमंत्री का बयान अशोभनीय और कोर्ट की अवमानना है।

(६) सभा ने हरयाणा सरकार से मांग की है कि वे **'हरयाणा में शराब बन्द करे और पानी का प्रबन्ध करे।'** यह हरयाणा की जनता को नारा दिया गया है।

(७) हरयाणा रक्षावाहिनी की ओर से प्रो० शेरसिंह जी अध्यक्ष हरयाणा रक्षा वाहिनी को पंजाब के मुख्यमन्त्री के विरुद्ध उनके बयान के अनुसार हरयाणा को पानी की एक बूंद न देने की घोषणा न्यायालय की अवमानना का केस करने का अधिकार दिया गया है।

(८) सभा ने हरयाणा में वेदप्रचार का संदेश हरयाणा के कोने-कोने तक पहुंचाने के लिए नये उपदेशक तथा भजन मण्डलियों की सेवाएं प्राप्त की हैं। ३१ मार्च को आर्य महासम्मेलन के बाद हरयाणा के प्रत्येक जिले में आर्यसम्मेलन किये जायेंगे। इस उद्देश्य के लिए सभा ने एक वेदप्रचार वाहन की व्यवस्था की है।

(९) आर्य विद्या परिषद् हरयाणा के प्रस्तोता प्रिं० लाभसिंह जी तथा श्री सुरेन्द्र सिंह शास्त्री को कार्यकर्ता प्रस्तोता पद पर मनोनीत किया है। आर्य विद्यालयों में वैदिक धर्मशिक्षा को अनिवार्य रूप से पढ़ाने की व्यवस्था की जावेगी।

—यशपाल आचार्य, सभामन्त्री

ऋषि बोध उत्सव पर विशेष गीत

तर्ज . चांदी की दीवार न तोड़ी.. .....

शिवरात्रि की घटना से ऋषिवर ने सब कुछ छोड दिया।
सच्चे शिव की खोज की खातिर सारा कुनबा छोड़ दिया।।

देख के चूहे शिव के ऊपर, मूल के मन सशय जागा।
मन का सशय दूर करन हित, मूल रात भर था जागा।।
मूल के मन से उसी समय से, सदा की खातिर भ्रम भागा।
तब से जड मूर्ति का पूजन, झूठा नाता तोड दिया।।१।।

आकर पुत्र माता से बोला, मां ये नकली शकर है।
जिसे समझता था मैं शिव जी, वो पूजा जड पत्थर है।
सच्चे शिव की आड में ये तो, और ही कोई चक्कर है।
मैं तो शिव की खोज करूंगा, ऐसा कह मुह मोड लिया।।२।।

निकल पडे घर बार छोडकर, दर-दर खाक छान डाली।
तीन वर्ष में वेद शास्त्र पढ, शिक्षा पूरी कर डाली।
फिर सींचा ये वैदिक बगीचा बन करके सच्चा माली।
'रामसुफल' के जीवन को भी सच्चे शिव से जोड दिया।।३।।

रचयिता—रामसुफल शास्त्री, लाल सडक, हासी

शान्ति यज्ञ सम्पन्न

आर्यसमाज महम के प्रधान स्व० श्री रत्नप्रकाश जी आर्य की स्मृति मे ३/२/२००२ को श्री आचार्य विजयपाल जी सभा उपमन्त्री की अध्यक्षता मे शान्ति यज्ञ सम्पन्न हुआ। जिसमे डॉ० रामकुमार आचार्य झज्जर व आचार्य विजयपाल जी गुरुकुल झज्जर ने दिवगत आत्मा की शान्ति एव सद्गति के लिए परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना की तथा शोक सन्तप्त परिवार को इस वियोग में धैर्य, शक्ति प्रदान करने की प्रभु से कामना की। उनके सुपुत्र श्री ब्रह्मप्रकाश जी व श्री अजय प्रकाश ने अपने स्व० पिता जी के पद्चिह्नो पर चलने का संकल्प कर आर्यसमाज के कार्य को और अधिक दृढता से चलाने का प्रण किया।

इस अवसर पर परिवार ने गुरुकुल झज्जर को ११०० रु० तथा आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को १००० रुपये दान दिया।

—सम्पादक

।।ओ३म्।।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक। फोन . 77722

क्रमांक.... .... दिनाक . ४-२-२००२

माननीय महोदय,

नमस्ते।

निवेदन है कि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के आर्य कार्यकर्ताओ की एक विशेष बैठक दिनांक १६ फरवरी, २००२ शनिवार को प्रात ११ बजे सभा कार्यालय, सिद्धान्ती भवन दयानन्दमठ, रोहतक मे सभा प्रधान स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता मे होगी। इस बैठक मे आपका पहुंचना आवश्यक है। अत· आप समय पर पधारने की कृपा करें।

विचारणीय विषय

१ ३०-३१ मार्च, २००२ को रोहतक मे प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन की तैयारी एवं कार्यक्रम की रूपरेखा पर विचार किया जावेगा।
२. सतलुज-यमुना लिंक नहर के निर्माण और सुप्रीम कोर्ट के फैसले को लागू करवाने पर विचार।
३ जिला स्तर पर भी आर्य सम्मेलनों के प्रोग्राम बनाना।
४. वेदप्रचार मण्डलों के कार्यक्रम पर विचार।
५. अन्य विषय प्रधान जी की आज्ञा से।

भवदीय : **यशपाल आचार्य**, सभामन्त्री

वार्षिक महोत्सव

गुरुकुल आश्रम आमसेना, नवापारा का ३४वा वार्षिक महोत्सव अत्यन्त समारोह के साथ दिनाक ९-१०-११ फरवरी, २००२ को उत्साहमय वातावरण मे मनाया जा रहा है। इस अवसर पर

दीक्षा समारोह—गुरुकुल एव आर्यसमाज के इतिहास मे नया अध्याय बनाने वाला एक महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम श्री साहिब जी वर्मा उपाध्यक्ष भा ज पा की अध्यक्षता मे कन्या गुरुकुल की तीन स्नातको-कु सुजाता, कु अजलि, कु पुष्पाजलि तथा गुरुकुल आश्रम आमसेना के पाच युवक स्नातक ब्रह्मचारी मनोजकुमार, ब्र उमेश कुमार, ब्र वीरेन्द्रकुमार, ब्र दिलीपकुमार एव ब्र गदाधर आर्य का नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षा लेकर अपना जीवन वैदिक धर्म, सस्कृति एव देश के लिए अर्पित करना है। इन्हे दीक्षा देने के लिए तपस्वी सन्त पूज्य आचार्य बलदेव जी नैष्ठिक गुरुकुल कालवा, कन्याओ को दीक्षा देने के लिए पाणिनि महाविद्यालय बनारस की विदुषी बहन मेधादेवी तथा इनको आशीर्वाद देने के लिए श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानन्द जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा महाराष्ट्र पधार रहे हैं।

अति ! इस शुभावसर पर श्री स्वामी इन्द्रवेश जी (पूर्व सासद) हरयाणा, श्री स्वामी सुधानन्द जी (भुवनेश्वर), श्री स्वामी मुक्तानन्द जी, श्री स्वामी विशुद्धानन्द जी, वैदिक विद्वान् श्री आचार्य हरिदेव जी दिल्ली, श्री जगद्देव जी नैष्ठिक (प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा म प्र विदर्भ), श्री बिट्ठल राव जी मत्री (आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश), श्री देशपाल जी दीक्षित, श्री कृष्ण देव जी सारस्वत (रायपुर), ओजस्वी वक्ता श्री सारस्वत मोहन मनीषी (दिल्ली), श्री डॉ सु ब काले मत्री (महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा), श्री यशपाल जी (मत्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा), श्री रमेशचन्द्र जी श्रीवास्तव, श्री गुलाब मुनि वानप्रस्थी, श्री मोहनलाल जी चड्ढा, श्री सुदर्शन जी बहल, श्री धर्मपाल खण्डूजा जी (भिलाई), आर्य भजनोपदेशक श्री सेवकराम जी, श्री ई प्रियव्रत दास जी, श्री रामचन्द्र जी हस, श्री अनादि वेदसेवक (भुवनेश्वर), श्री प चन्द्रपाल जी राणा (हरयाणा), श्री योगेन्द्र कुमार जी, श्री भरतकुमार जी, श्री धूमकेतु जी, श्री वीरेन्द्र कुमार जी, श्री दयासागर जी, आदि विद्वान् नवापारा जिलापाल श्री सुदर्शन जी नायक तथा स्थानीय विधायक श्री बसत कुमार जी पडा आदि राजनेताओ को भी आमन्त्रित किया गया है।

त्यागी, विद्वान् ब्रह्मचारियो का सम्मान—इस शुभावर पर १० फरवरी को चौ० शीशराम की स्मृति मे आर्ष पाठविधि के गुरुकुलो की सेवा मे सलग्न तीन विद्वान् त्यागी ब्रह्मचारी **श्री आचार्य विजयपाल जी**, (गुरुकुल झज्जर), **विदुषी बहन कलावती** (ब्रह्मवादिनी आश्रम गणियार, हरियाणा), **श्री आचार्य आनन्द प्रकाश जी** (गुरुकुल अलियाबाद आन्ध्र प्रदेश) का सम्मान श्री चौ मित्रसैन जी आर्य (रोहतक) ग्यारह-ग्यारह हजार रु की थैली, शाल, श्रीफल तथा चौ शीशराम स्मृति चिन्ह, अभिनन्दन पत्र देकर करेगे।

ऋग्वेद पारायण महायज्ञ—७ फरवरी को हरयाणा एव पजाब के प्रसिद्ध भजनोपदेशक चौ० शीशराम आर्य पिता श्री चौ मित्रसेन आर्य का निर्वाण दिवस है। अत ७ फरवरी से ही उनकी स्मृति मे ऋग्वेद पारायण महायज्ञ का प्रारम्भ श्री प विशिकेसन शास्त्री के ब्रह्मत्व मे होगा, इसकी पूर्णाहुति ११ फरवरी को प्रात काल होगी, यज्ञ प्रेमी श्रद्धालु यज्ञ मे भाग लेकर अपना जीवन पवित्र बनावे।

गुरुकुल सम्मेलन—प्रतिवर्ष की भाति इस वर्ष भी गुरुकुल के ब्रह्मचारी व ब्रह्मचारिणियो के द्वारा अनेक आकर्षक कार्यक्रम व्यायाम प्रदर्शन आदि श्री कुजदेव जी मनीषी उपाचार्य की निर्देशन मे सम्पन्न होगे। आप सभी सादर आमन्त्रित है।

निवेदक स्वामी धर्मानन्द सरस्वती

वेदमन्दिर (साउथ सिटी), गुरुगांव का

षष्ठ वार्षिक सम्मेलन, यजुर्वेद परायण यज्ञ एवं युवा सम्मेलन

शनिवार, दिनांक २३ फरवरी, २००२ को प्रातः ८ बजे से

स्थान : वेद मन्दिर, एच. ब्लाक, साउथ सिटी-१, गुरुगांव (हरयाणा)

सभी के प्रेम और सहयोग से स्थापित 'भारतीय सेवा सदन' वेद मन्दिर (मोहन कुण्ड, झाडसा) साउथ सिटी-१, गुरुगाव का षष्ठ वार्षिक सम्मेलन शनिवार, दिनाक २३ फरवरी, २००२ को होने जा रहा है। जिसमे विशेष तौर पर प्रकाण्ड वैदिक विद्वानो द्वारा 'यजुर्वेद पारायण' यज्ञ करवाया जा रहा है। इस अवसर पर वेदामृत का पान करने के लिए अनेक राष्ट्रीय विद्वान्, साधु-सन्यासी, ओजस्वी वक्ता, कार्यकर्ता एव गायक (भजनोपदेशक) पहुच रहे हैं। निम्नलिखित कार्यक्रम मे आप अवश्य पहुचने का कष्ट करें।

१ **यजुर्वेद पारायण यज्ञ**—१७ से २३ फरवरी प्रतिदिन प्रात ७ से ९ बजे तथा साय ४ से ६-३० बजे तक।

नोट . यज्ञमान बनने वाले सज्जन शीघ्र 'वेदमन्दिर' मे सम्पर्क करे।

२. **यज्ञपूर्णाहुति**—२३ फरवरी प्रात ८ से १० बजे तक।

३. **राष्ट्रीय सस्कृति सम्मेलन**—१० से १ बजे दोपहर तक।

४ **भोजन (प्रसाद)**—१ से २ बजे तक।

५ **युवा सम्मेलन**—३ से ५ बजे तक साय।

विशेष—इस पवित्र अवसर पर आप सभी के सहयोग से उपरोक्त वेदमन्दिर मे विशेष सामाजिक गतिविधियो के सचालन हेतु निर्णय भी लिया जायेगा। जिसमे प्रमुखत उपदेशक विद्यालय, धर्मार्थ औषधालय, वैदिक पुस्तकालय, वाचनालय, प्राकृतिक योग चिकित्सालय एव वानप्रस्थ (वृद्ध) सेवा केन्द्र की स्थापना पर आप सभी के विचार एव सभी प्रकार के सहयोग की अपेक्षा रहेगी।

—**महेन्द्र शास्त्री**, संस्थापक एव मुख्याधिष्ठाता—भारतीय सेवा सदन वेद मन्दिर (मोहन कुण्ड) एच ब्लाक, साउथ सिटी-१, गुरुगांव (हरयाणा) फोन ०१२४-६३८४३७६

ओ३म्।

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा

जिला राजकोट-363650 (गुजरात) दूरभाष 02822-87756

ज्योति पर्व

ऋषि बोधोत्सव का निमन्त्रण एवं आर्थिक सहायता की अपील

मान्यवर, सादर नमस्ते।

इस वर्ष ऋषि बोधोत्सव का आयोजन 11, 12, 13 मार्च 2002 (सोमवार, मगलवार, बुधवार) को ऋषि जन्म स्थली टकारा मे समारोह पूर्वक किया जा रहा है। आपसे प्रार्थना है कि आप इस कार्यक्रम मे परिवार एव मित्रो सहित अधिक से अधिक सख्या मे पधारने की कृपा करे।

यजुर्वेद पारायण यज्ञ—दिनांक 5 मार्च से 13 मार्च तक

ब्रह्मा—आचार्य विद्यादेव एवं श्री रामदेव जी।

भक्ति संगीत—श्री सत्यपाल पथिक एवं श्री नरेन्द्र आर्य।

सम्पूर्ण कार्यक्रम के मुख्य अतिथि .

श्री बृजमोहन मुंजाल (प्रबन्ध निर्देशक हीरो ग्रुप इन्डस्ट्रीज)

बोधोत्सव

(दिनाक 12-3-2002 को दोपहर 3 बजे से 5 बजे तक)

मुख्य अतिथि **श्री नरेन्द्र मोदी**, मुख्यमन्त्री, गुजरात सरकार

मुख्य वक्ता **कैप्टन देवरत्न आर्य**

प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली

श्री बल्लभभाई कथीरिया (उद्योग राज्यमन्त्री, भारत सरकार), एव

मोहन भाई कुन्डारिया (विधायक गुजरात सरकार)

कार्यक्रम के आमन्त्रित विद्वान्

स्वामी आत्मबोध सरस्वती (पूर्व महात्मा आर्य भिक्षु), **श्री ज्ञान प्रकाश चोपडा** (प्रधान, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एव डी ए वी), **श्री सत्यानन्द मुजाल** (वरिष्ठ ट्रस्टी टकारा ट्रस्ट, उपप्रधान डी ए वी एव सभा), **प्रो० रासासिह सासद** (राजस्थान) **आचार्य भगवान्देव चैतन्य** (हि प्र), **श्री वेदप्रकाश श्रोत्रिय** (वेद प्रवक्ता दिल्ली) **स्वामी गोपाल सरस्वती** (नोएडा, उ०प्र०), **श्रीमती पुष्पा शास्त्री** (रिवाडी) **डॉ० सारस्वत मोहन मनीषी** (राष्ट्रकवि दिल्ली), **आचार्य रामकिशोर शास्त्री** (सोरो एटा उ प्र), **श्री टी एस के कण्णन** (चैन्नई), **श्री गुरुदत्त तिवारी** (समाज सेवी दिल्ली), **श्री विद्यामित्र ठुकराल** (समाजसेवी दिल्ली), **श्री दत्तात्रेय तिवारी** (पत्रकार दिल्ली) **श्री एस के दुआ** (इजीनियर, दिल्ली) **श्रीमती शिवराजवती** (मुम्बई) **श्रीमती स्नेहलता हाण्डा** (इन्दौर) **सुश्री शान्ति भण्डारी** (बीकानेर) **श्रीमती सुलक्षणा राखडा** (हैदराबाद) **श्रीमती राम चमेली** (दिल्ली) **श्री विजय सहगल** (सम्पादक ट्रिब्यून चण्डीगढ)।

विशेष कार्यक्रम—श्रीमद् दयानन्द कन्या विद्यालय जामनगर द्रोण स्थली कन्या गुरुकुल देहरादून आर्य कन्या गुरुकुल पोरबन्दर, आर्ष कन्या गुरुकुल दाधिया की कन्याये तथा आर्यवीर दल धाम्धा द्वारा।

ट्रस्ट की गतिविधियो से आप भली भाति परिचित ही है। ट्रस्ट निरन्तर वेदप्रचार और वैदिक साहित्य प्रकाशन मे विशेष योगदान दे रहा है। ट्रस्ट उपदेशक विद्यालय चला रहा है, जिसमे पुरोहित धर्मशिक्षक, उपदेशक एव भजनोपदेशक तैयार किये जाते है। इस समय 125 छात्र शिक्षा प्राप्त कर रहे है। इसके साथ ही एक भव्य गौशाला है जिसमे लगभग 50 गाय एव बछडे है।

ऋषि भक्तो के अनुरोध पर 12 फ्लैट/कमरो/शौचालय/स्नानागार सहित पूर्ण कर लिये गये हैं। विश्वदर्शनीय यज्ञशाला का निमाण कार्य प्रगति पर है। दानी महानुभावो से प्रार्थना है कि यज्ञशाला के निर्माण हेतु अथवा ऋषि लकर हेतु एव ट्रस्ट द्वारा चलाये जा रहे कार्यो को सुचारू रूप से चलाने हेतु अधिकाधिक आर्थिक सहयोग देकर पुण्य के भागी बनें। यह दान आप नकद/क्रास चैक/ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा "महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टकारा" के नाम केवल खाते मे दिल्ली कार्यालय आर्यसमाज 'अनारकली' मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली के पते पर अथवा टकारा, जिला राजकोट—363650 (गुजरात) के पते पर भिजवाने की कृपा करे। **ऋषि लगर हेतु खाद्य सामग्री देना चाहें तो ऋषि बोधोत्सव से पूर्व भिजवाने की कृपा करें।**

आपसे सानुरोध है कि आप आर्यसमाज, अपनी शिक्षण संस्था तथा सम्बन्धित सस्थाओं की ओर से अधिकाधिक राशि भेजने की कृपा करे और ऋषि ऋण से उऋण होकर पुण्य के भागी बनिए। बाहर से आने वाले ऋषि भक्त ऋतु अनुकूल बिस्तर साथ लावे।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

निवेदक

ओंकारनाथ	**शान्ति प्रकाश बहल**	**रामनाथ सहगल**
मैनेजिंग ट्रस्टी	कार्यकारी प्रधान	मत्री

उपकार्यालय : आर्यसमाज 'अनारकली' मदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001

दूरभाष 3360059, 3362110, 3363718 टेलीफैक्स 4615195

ओ३म्

झीलों की विश्वप्रसिद्ध सुरम्य नगरी उदयपुर में, कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के लेखन एवं श्रीमती परोपकारिणी सभा के स्थापना स्थल पवित्र एतिहासिक नवलखा महल में :-

26 से 28 फरवरी 2002

सप्तम सत्यार्थप्रकाश महोत्सव का भव्य आयोजन

प्रमुख कार्यक्रम :— ● यज्ञ ● शोभायात्रा ● भजन सन्ध्या वेद सम्मेलन ● कैप्टन देवरत्न आर्य अभिनन्दन समारोह ● महिला सम्मेलन ● सत्यार्थप्रकाश सम्मेलन।

आमन्त्रित प्रमुख विभूतियां

● पू० स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ● महात्मा गोपाल स्वामी सरस्वती ● कै० देवरत्न आर्य ● श्री वेदव्रत शर्मा ● श्री विमल वधावन एव सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पदाधिकारी एव सदस्यगण ● माननीय श्री सोमपाल जी सदस्य योजना आयोग ● माननीया जयवन्ती बेन मेहता (केन्द्रीय उर्जा राज्य मन्त्री) ● माननीया गिरिजा व्यास (सासद व अध्यक्षा राजस्थान प्रदेश काग्रेस कमेटी) ● माननीय रासासिह जी सासद ● माननीय त्रिलोक पूर्बिया नगर विधायक ● माननीय गुलाबचन्द कटारिया ● माननीय शिवकिशोर जी सनाढ्य ● माननीय धर्मजित् जी जिज्ञासु (अमेरिका) ● सर्वश्री जयसिह जी राव गायकवाड ● पूर्व विधायक हरिसिह जी सैनी (हिसार) ● धर्मपाल जी आर्य (दिल्ली) ● सत्यानन्द जी मुजाल (पजाब) ● हरवशलाल जी शर्मा (जालधर) ● श्री ओंकार नाथ जी आर्य एव श्रीमती शिवराजवती जी आर्य ● सोमदत्त जी महाजन ● मित्रसैन जी चौधरी ● जस्टिस आर एन मित्तल ● सर्वश्री आचार्य वेदप्रकाश जी श्रोत्रिय ● डॉ वागीश जी शर्मा ● डॉ० आशारानी जी कानपुर ● श्रीमती सुषमा जी शर्मा (दिल्ली) ● पुष्पा जी शास्त्री (रेवाडी) ● उज्जवला जी वर्मा (दिल्ली) ● आचार्या सुशीला जी, आर्ष कन्या गुरुकुल दाधिया ● श्रीप्रकाश आर्य एव साथी गण महु व आचार्य यशपाल मत्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा व अन्य आर्यजगत् की मूर्धन्य विभूतिया।

अनुरोध—सार्वदेशिक सभा के नवीन निर्वाचन के पश्चात् आर्यजगत् मे आशा की किरण का सचार हुआ है, उसी के आलोक मे अधिकाधिक सख्या मे पधारकर आर्यजगत् की शक्ति का परिचय देवे तथा समारोह की शोभा मे अभिवृद्धि करे। मूर्धन्य विद्वान् विदुषियो को श्रवण करे। मुक्त हस्त से अर्थ सहयोग प्रदान करे। यह सहयोग आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अन्तर्गत कर मुक्त होगा।

निवेदक

स्वामी तत्त्वबोध सरस्वती	**सुदर्शन कुमार शर्मा**	**अशोक आर्य**
अध्यक्ष	स्वागताध्यक्ष	सयोजक समारोह
लालचन्द मित्तल	**गोपीलाल एरन**	**डॉ. अमृतलाल तापडिया**
कोषाध्यक्ष	मत्री	उपमत्री

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, महर्षि दयानन्द मार्ग, गुलाब बाग, उदयपुर-313001 दूरभाष : 0294-522822, 417694

उपदेशकों तथा भजनोपदेशकों की आवश्यकता

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को सुयोग्य उपदेशक तथा प्रभावशाली भजनमडलियो की तुरन्त आवश्यकता है। उपदेशक पद के इच्छुक उम्मीदवार को वैदिक सस्कार करवाने तथा प्रवचन करने का अभ्यास होना चाहिए तथा भजनोपदेशक पद के उम्मीदवार को ग्रामो तथा शहरो मे प्रभावशाली ढग से प्रचार करने का अनुभव होना आवश्यक है। अपने आवेदन पत्र के साथ अपनी शिक्षण योग्यता, आयु तथा अनुभव आदि का विवरण लिखे। वेतन योग्यता के अनुसार दिया जावेगा।

—आचार्य यशपाल, मत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक

बीड़ी, सिगरेट, शराब पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है, इनसे दूर रहें।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

दयानन्दमठ, सिद्धान्ती भवन, रोहतक

आर्यसमाजों के लिए आवश्यक परिपत्र

सेवा मे,

मान्यवर प्रधान/मन्त्री जी,

आर्यसमाज · जिला

आशा है परमपिता परमात्मा की अनुकम्पा से आप एव आपका परिवार तथा आर्य कार्यकर्त्ता आनन्दमय होगे। आज मैं आपके विचारार्थ आर्यसमाज के सगठन को सुदृढ एव गतिशील बनाने हेतु कुछ सुझाव प्रस्तुत कर रहा हू, जो आपकी सहमति के बाद सभी आर्यसमाजो के लिए पालनीय होगे। क्योकि हमारा लक्ष्य **"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्"** है इसके लिए यह भी आवश्यक है कि ससार को आर्य बनाने से पहले हम स्वय अपने को आर्य बनाये। आर्यसमाज के नियम उपनियमो का पालन हम दृढता से करें। आर्यसमाज के नियम उपनियमो की एक प्रति सभा कार्यालय से मगवा सकते हैं।

यह आप सभी जानते हैं कि आर्यसमाज कोई मत, सम्प्रदाय मजहब नहीं है और न ही आर्यसमाज किसी जातिवाद, वर्गवाद का पक्षधर है, आर्यसमाज एक क्रान्तिकारी आन्दोलन है, जो सत्य धर्म, अहिसा, न्याय और नैतिकता के सिद्धान्तो पर स्थिर है। मानव समाज मे फैली कुरीतियो, आडम्बरो अन्धविश्वास को समाप्त कर उनमे सुख, शान्ति, एकता और सत्य को स्थापित करना है, समाज मे फैली हुई भेदभाव की दीवारो को समाप्त कर उनमे भाई-भाई की भावना उत्पन्न करना है क्योकि सभी मानव एक पिता परमेश्वर के पुत्र हैं, अत सभी भाई-भाई हैं, और सभी एक दूसरे के दुख-सुख के हकदार हैं। एक दूसरे को मित्र की दृष्टि से देखे, **"सर्वे भवन्तु सुखिन, सर्वे सन्तु निरामया"** हम सभी एक सर्वे सन्तु निरामया के प्रति समर्पित रहे। आप सभी स्वार्थ, मोह, लोभ, ईर्ष्या आदि दुर्गुणो से अपने को बचाने का प्रयत्न करते रहे। इससे अलग मेरी सभी आर्यसभासदो से प्रार्थना है कि आर्यसमाज के सगठन को मजबूत करने के लिये निम्न कर्त्तव्यों का दृढता से पालन करे।

३१ मार्च २००२ तक अपने आर्यसभासदो से उनकी आय का शताश रूप मे वार्षिक शुल्क प्राप्त करने का पूरा प्रयत्न करे। इस प्रकार आर्यसमाज तथा सभा की आय मे वृद्धि होगी। सभा ने नये उपदेशक तथा भजनोपदेशको की सेवाए प्राप्त की हैं। अत. अपने आर्यसमाजों मे वार्षिक उत्सव अथवा प्रचार अवश्य करावे। आपकी माग आने पर सभा की ओर से प्रभावशाली उपदेशक तथा भजनोपदेशक भेजे जावेगे।

कुछ आवश्यक तथा महत्त्वपूर्ण सुझाव

१ सभी आर्यसभासदो को आवश्यक है कि वे नित्यप्रति प्रात-साय सन्ध्या एव प्रार्थना करे तथा वैदिक ग्रन्थो का स्वाध्याय करे।

२ जो सज्जन प्रतिदिन अपने घर मे दैनिक यज्ञ अथवा आर्यसमाज मन्दिर मे सामूहिक स्थान पर यज्ञ करते हैं वे हम सभी के लिए आदर्श हैं, हमे उनका अनुसरण करना चाहिए।

३ जिन घरो में दैनिक यज्ञ नहीं होता, वहा साप्ताहिक एव पाक्षिक यज्ञ का आयोजन अवश्य करें। साप्ताहिक यज्ञो, सत्सगो मे प्रयत्न किया जाये कि बच्चे व महिलाओ की उपस्थिति बढ सके। जिससे उनमे जो सस्कार पड जाते हैं उनका प्रभाव आयु भर रहता है। बच्चों की वैदिक सिद्धान्तो पर भाषण प्रतियोगिताए भी करावे।

४ अपने माता-पिता एव गुरुजनो की सेवा करते हुए पितृयज्ञ श्रद्धापूर्वक करे। जीवित पूर्वजो की सेवा करना ही सच्चा श्राद्ध है।

५ घर पर व आर्यसमाज मन्दिर मे आर्य अतिथि के आने पर उसका समुचित सत्कार तथा सेवा कर अतिथि यज्ञ का पालन भी हमारे उत्तम सस्कारो का प्रतीक है। आर्यसमाज में पुरोहित तथा सेवक अवश्य रखे, जिससे मन्दिर दिन मे खुले रहे। यहा पुस्तकालय की भी स्थापना करे।

६ यज्ञ के उपरान्त कम से कम एक वेदमन्त्र का अर्थ सहित अध्ययन करे। अथवा किसी धर्म शास्त्र उपनिषद् अथवा सद्ग्रन्थ का कम से कम एक पृष्ठ अथवा एक अध्याय का स्वाध्याय अवश्य करें। स्वाध्याय हमारे जीवन को महान् बनाने का सच्चा मित्र है। स्वाध्याय उपयोगी पुस्तकें सभा कार्यालय से प्राप्त हो सकती हैं।

७ हम अपने जीवन मे महर्षि दयानन्द कृत संस्कारविधि के अनुसार सस्कारो का पालन यथा समय करते रहें।

८ आर्य पद्धति मे निर्दिष्ट सभी पर्वो को हम वैदिक रीति से ही मनायें। आर्य पर्वो की सूचि सभा कार्यालय से मगवा सकते हैं। सूची सर्वहितकारी मे छप चुकी है।

९ सभी आर्यसमाजो में आय-व्यय विवरण लिखने के लिए रसीद बुक तथा रोकडा आदि पजिका होनी चाहिए और आर्यसमाज की साधारण सभा एव अन्तरग सभा आदि की कार्यवाही का रजिस्टर भी नियमपूर्वक लिखा जाना चाहिए। यदि कोई कठिनता होतो सभा कार्यालय से सम्पर्क करें।

१० आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का दशाश, वेदप्रचार तथा सर्वहितकारी पत्रिका का शुल्क समय पर भेजने का प्रयत्न करे।

११ आर्यसमाज का आर्थिक वर्ष ३१ मार्च २००२ को समाप्त हो रहा है। अत· अपने आर्यसभासदस्यो से वार्षिक शुल्क प्राप्त करके अधिक से अधिक वेदप्रचार, दशाश राशि तथा सभा के साप्ताहिक पत्र सर्वहितकारी का वार्षिक शुल्क ८० रुपये अथवा आजीवन शुल्क ८०० रुपये सभा कार्यालय मे भेजने की कृपा करे। सभा के प्रचारको को बुलाकर धनसंग्रह करने मे सहायता प्राप्त करे।

१२ आपके आर्यसमाज द्वारा जो भी सार्वजनिक कार्यक्रम सम्पन्न हो, उनका समाचार प्रकाशित करवाने के लिए सर्वहितकारी मे भेजे ताकि अन्य आर्यसमाजो को प्रेरणा मिल सके।

१३ आर्यसमाजो मे आर्यवीर दल की स्थापना करे तथा स्कूलो के अवकाश के दिनो मे शिक्षण शिविरो का आयोजन करें ताकि आर्यसमाज मे नई पीढी का आगमन हो सके।

१४ हरयाणा के आर्यसमाजो के अधिकारियो से अनुरोध है कि वे आर्यसमाज का पृथक् रजिस्ट्रेशन न करावे। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा रोहतक एक रजिस्टर्ड सस्था है। इससे सम्बन्धित आर्यसमाजे स्वत रजिस्टर्ड मानी जाती है। पृथक् रूप मे आर्यसमाज रजिस्टर्ड कराना अनैतिक एव आपराधिक कार्य है। इस प्रकार आर्यसमाज का सघटन कमजोर होगा। सामूहिक शक्ति का प्रभाव रहता है।

अत मेरी सभी आर्यसमाज के अधिकारियो से प्रार्थना है कि वे इनका दृढता से पालन करे। समय-समय सगठन सम्बन्धी सुझाव आप अवश्य सभा को भेजते रहे।

—आचार्य यशपाल, सभामन्त्री

श्रीमती प्रेमदेवी के सेवानिवृत्त होने पर हवन यज्ञ का आयोजन

सभा के अन्तरग सदस्य तथा रा० उ० विद्यालय गांगटान (झज्जर) मे सस्कृत अध्यापक के पद पर कार्यरत श्री सुखबीरसिह शास्त्री द्वारा श्रीमती प्रेमदेवी के ३१-१-०२ को सेवानिवृत्त होने पर यज्ञ करवाया गया। उन्होने अपने प्रवचन मे पच महायज्ञ के विषय में प्रकाश डाला। यज्ञ पर विद्यालय की छात्राओ ने यज्ञ महिमा पर भजन सुनाया। अन्त मे श्रीमती प्रेमदेवी अध्यापिका तथा विद्यालय के मुख्याध्यापक श्री मित्रसिह अहलावत ने श्री शास्त्री जी द्वारा करवाये गये यज्ञ एवं प्रवचन की प्रशंसा की तथा कहा कि अध्यापकों ने सेवानिवृत्ति के समय यज्ञ अवश्य करवाना चाहिए। इससे अध्यापको एव विद्यार्थियो पर अच्छे सस्कार पडते हैं।

—श्री रोहतास सिह, गणित अध्यापक रा०उ० विद्यालय, गागटान (झज्जर)

आर्यसमाज के उत्सव की सूची

आर्यसमजा एन एच ४, फरीदाबाद	८ से १० फरवरी
कन्या गुरुकुल नरेला (दिल्ली)	९, १० फरवरी
आर्यसमाज मौती चौक, रेवाडी (चतुर्वेदशतकम् यज्ञ एव रामकथा)	१२ से १७ फरवरी
श्रीमद्दयानन्द गुरुकुल विद्यापीठ गदपुरी (फरीदाबाद)	१५ से १७ फरवरी
गुरुकुल झज्जर	१५ से १७ मार्च
आर्यसमाज घरोण्डा जिला करनाल	१५ से १७ मार्च
प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन रोहतक	३१ मार्च, २००२

—सभामन्त्री

आर्य-संसार

वार्षिक उत्सव एवं वेद प्रवचन समारोह सम्पन्न

कालका दिनाक ६-१२-२००१ को आर्यसमाज मन्दिर से दोपहर २ बजे शोभायात्रा वैदिक मन्त्रोच्चरण से आरम्भ हुई। शोभायात्रा मे श्रीराम, श्रीकृष्ण, भारतमाता व ऋषियो की झाकिया एक जीवन्त दृश्य प्रस्तुत कर रही थी। आर्य भजनोपदेशक, वैदिक मन्त्रो व भजनो का गायन करते रहे।

शोभायात्रा का सचालन ला० पूर्णचन्द (सरक्षक) ला० महेन्द्रलाल (प्रधान), श्री सुरेन्द्रपाल मन्त्री एवम् श्रीमती इन्द्रा मल्होत्रा प्रधानाचार्या जी ने तथा आर्यसमाज के अन्य सदस्यो ने अपनी देखरेख मे पूर्ण श्रद्धा एवम् अनुशासित ढग से कराया। स्थान-स्थान पर नगरवासियो ने बच्चो को फल व मिठाइया भी वितरित की। आर्य कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियो ने डम्बल, टिपरी तथा बैंड आदि का प्रदर्शन नगर मे प्रस्तुत किया। कालका के सभी स्कूलो ने इस शोभायात्रा मे बढ-चढकर भाग लिया।

६-१२-२००१ को वेद प्रवचन समारोह मे यज्ञ एवम् ध्वजारोहण ला० राम निरजन जी ने किया। भजनोपदेशक श्री आशाराम जी व प्यारेलाल जी ने भजनो द्वारा सन्देश दिया कि वेद ईश्वरीय ज्ञान हैं परमात्मा का प्रमुख नाम ओ३म् है, बाकी सब नाम गौणिक हैं। ईश्वर सर्वदा सबको प्राप्त है। माननीय श्री यशपाल आर्यबन्धु (मुरादाबाद) वालो ने बताया कि परमात्मा के असख्य और अनन्त नाम हैं। उपासना के धरातल पर परमात्मा का प्रमुख नाम ओ३म् जिस गूगा भी बोल सकता है। परमात्मा हिरण्यगर्भा है सारी दुनिया उस के गर्भ मे है।

७-१२-२००१ यज्ञ के उपरान्त गायत्री महामन्त्र की महिमा की कडी से ईश्वर, स्तुति, उपासना, प्रार्थना के मन्त्रो के गायन के साथ शुभारम्भ किया। जो मनुष्य अभियान छोडकर प्रभु की शरण मे आते हैं तो प्रभु उन्हे कभी निराश नही करते। भजनो द्वारा बताया कि अभिमान करना पाप है तथा स्वाभिमान खोना महापाप है। स्वामी दयानन्द जी ने लिखा है कि स्वाभिमानी रहोगे तो कोई तुम्हारी बात नही ठुकरायेगा। आर्य बन्धु जी ने कहा कि स्तुति से ही प्रीति उत्पन्न होती है और प्रीति से प्रतीति और प्रतीति से प्राप्ति की इच्छा होती है। वेद सूर्य है, शान्ति लाने के लिए वेद रूपी सूर्य की शरण मे आना होगा। प्रभु के सामने पाप नहीं ठहरता।

८-१२-२००१ भजनोपदेशको ने बताया कि धर्म का वास्तविक मूल्य सत्य है। ईश्वर भक्ति कभी नहीं छोडनी चाहिए। 'याज्ञिक बनो' क्योकि यज्ञ करनेवाला कभी नहीं मरता। आर्यबन्धु जी ने कहा कि प्रार्थना का अर्थ 'मागना' नहीं अपितु 'चाह' बताया। प्रार्थना उससे की जाती है जो सामर्थ्यवान् हो ? हम उस ईश्वर से प्रार्थना करे जो हर प्रकार से समर्थ है।

९-१२-२००१ यज्ञ के उपरान्त यज्ञ की महिमा बताते हुए कहा कि यज्ञ की आत्मा क्या है–स्वाहा २ यज्ञ का प्राण क्या है–इदम् मम ३ सुरभि– सुगन्धि अग्नि देवताओ का मुख है, इन्द्रियो का स्वामी इन्द्र है। माननीय आर्य बन्धु जी ने कहा परमात्मा हमारी कामना पूरी करे त्रुटियो को क्षमा करे। प्रवचन मे कहा कि शिक्षा का अभिप्राय सर्वागीण विकास है स्त्री ब्रह्मा है। जो परमात्मा की प्रार्थना, स्तुति, उपासना करता है उसके चेहरे पर तेज, मन शुद्ध और वे पहाड जैसी विपत्ति से भी नहीं घबराता।

श्री आशाराम जी व प्यारेलाल जी ने भजनो द्वारा वीरो की गाथाए स्वामी दयानन्द जी के उपकारो के बारे मे बताया।

माननीय आर्यबन्धु जी ने माननीय ला० पूर्णचन्द जी को आर्यसमाज का कर्मठ सदस्य है कहा तथा आशीर्वाद देकर उनके सम्मान मे चार चाद लगाये।

मन्त्री श्री सुरेन्द्र पाल शर्मा जी ने स्वामी दयानन्द जी के स्त्रियो पर किये गये उपकारो को छोटी-छोटी कथाओ से वर्णन किया तथा सभी महानुभावो का धन्यवाद किया। उन्होने कहा कि धन्य हैं वे ऋषि जिन्होने इस फुलवाडी को सजाया तथा हमे वेदो के ज्ञान से अवगत कराया। हम उनके ऋणी हैं। अन्त मे ऋषिलगर हुआ।

–प्रधानाचार्या, आर्य गर्ल्ज सीनियर सैकेण्डरी स्कूल, कालका

वेद प्रचार हेतु सूचना

बन्धुवर, आपको जानकर हर्ष होगा कि प्रभु कृपा से मैंने गाजियाबाद (उ०प्र०) मे आर्यविद्वान् सभा की स्थापना कर दी है। इस सभा मे लगभग ३० वैदिक प्रवक्ता, २० भजनोपदेशक हैं। जिसमे योग प्रशिक्षण के विद्वान्, सन्यासी एव महिलाए भी हैं।

आप सबसे विनम्र निवेदन है कि आर्यसमाज के वार्षिकोत्सवो, पर्वो एव सत्सगो मे विद्वानो को बुलाने हेतु सभा कार्यालय से सम्पर्क करके वेदप्रचार मे सहयोग करे। धन्यवाद !

–**कुलदीप कुमार जौली,** वैदिक प्रवक्ता अध्यक्ष–आर्य विद्वान् सभा
५३४ तुराब नगर, गली गोपाल मन्दिर गाजियाबाद

कन्या गुरुकुल का वार्षिकोत्सव

जैसा कि पहले सूचित किया जा चुका है कि आठ वर्ष तक आर्यसमाज बोइनपल्ली मे चलकर 'आर्ष-कन्या-गुरुकुल' यहा अपने भवन मे २७ अक्तूबर २००० ई० को स्थानान्तरित हो गया है। प्रथम बार इसका वार्षिकोत्सव १७ फरवरी २००२ ई० को मनाया जाएगा।

इसमे अनेक विद्वानो एव छात्राओ के व्याख्यान/प्रवचन, भजन आदि सुनने का अवसर प्राप्त होगा। इसी अवसर पर दिल्ली-निवासी श्री बलवीरसिह जी 'बत्रा' तथा श्रीमती शान्ता जी बत्रा १०५वी बार सामवेद-पारायण भक्ति-यज्ञ करके पूर्णाहुति सम्पन्न करेगे।

आपसे निवेदन है कि इष्टमित्रो सहित समारोह मे भाग लेकर धर्मलाभ प्राप्त करे।

–आचार्य आनन्दप्रकाश एव गुरुकुल सचालन समिति
आर्ष शोध-सस्थान (आर्ष-कन्या-गुरुकुल) आलियाबाद, म०-शामीरपेट, जिला रगारेड्डी-५०००७८ (आ०प्र०), दूरभाष-९२८-४४९५३, ४४९९७
एस टी डी (०८४१८)-४४९५३, ४४९९७

एक पल आत्मचिन्तन का

'आर्य सज्जनो !

जैसा कि हम सब जानते हैं आज के युग मे व्यस्तताओ के कारण सबके पास समय का अभाव है। इस अभाव के कारण हम अपने परिवार समाज स्वास्थ्य और यहा तक कि ईश्वर भजन तक के लिए भी समय नहीं निकाल पाते। धन समृद्धि एव ऐशो-आराम के चक्कर मे इतने अन्धे हो चुके है कि उस परमपिता परमात्मा को भी भूलते जा रहे हैं जिसने सूर्य, चन्द्रमा, ग्रह, नक्षत्र पृथ्वी, सागर तथा हमे भी बनाया है। जो इस सृष्टि का पालनहार है जो सर्वव्यापक हमारे रोम-रोम, नस-नस मे विद्यमान है जिस प्रभु की अनुकम्पा से ही हम सम्पूर्ण जगत् मे सबसे सुन्दर व कुशल बुद्धियुक्त मनुष्य का शरीर प्राप्त कर विचरते है वही हमारा प्राणाधार है, उसी परमात्मा ने हमारे लिए अनेक प्रकार की वनस्पतिया, औषधिया, फल-फूल, अन्न, जल दूध, दही, कन्द मूल आदि के साथ-साथ उत्तम बुद्धि प्रदान कर हमे कृतार्थ किया है, जिस प्रभु ने हमारे सुख के लिए इतना कुछ किया है तो क्या हमारा कर्त्तव्य नही बनता कि उस जगत्पिता की सच्चे मन से स्तुति करने के लिए दैनिक दिनचर्या मे से कुछ समय निकाल कर उसका आभार प्रकट कर सके ? महर्षि पतञ्जलि ने भी **"ईश्वर प्रणिधानाद् वा"** के द्वारा यही सबको उपदेश दिया है कि ईश्वर से अधिक प्रिय किसी को नहीं मानना, प्रत्येक कर्म ईश्वर को समर्पित करना, ईश्वर की आज्ञा के अनुकूल ही आचरण करते हुये ओ३म् के जप और चिन्तन से अन्तरात्मा का साक्षात्कार होता है।

परन्तु इसके विपरीत आज हम परमात्मा के साथसाथ अपनी प्राचीन आर्य सस्कृति व मर्यादाओ से अपनी सतानो को भी वचित कर रहे हैं जिन पर कभी हमे गर्व होता था। आज हमारी सतानो की अपनी प्राचीन सस्कृति व मातृभाषा मे भी रुचि नहीं है वे विदेशी सभ्यता मे इस प्रकार लिप्त हो चुके हैं कि हमारी परम्पराओ का उल्लघन करने मे जरा भी सकोच नहीं करते।

एक समय था जब हमारी सस्कृति से प्रभावित होकर सारे विश्व ने भारत को गुरु की पदवी से सुशोभित किया था। शिक्षा व विज्ञान के साथ-साथ हम प्रत्येक क्षेत्र मे शिखर पर थे। ऐसे राष्ट्र की सतान होने का गर्व हमे अवश्य ही होना चाहिए, रामायण मे कहा है–**"जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी"** अर्थात् जन्म देनेवाली माता व जन्मभूमि स्वर्ग से भी महान् है। **गायन्ति देवा किल गीतकानि, धन्यास्तु ये भारतभूमिभागे।** हमारे देश मे श्रवणकुमार ध्रुव, प्रह्लाद, भरत, राम, कृष्ण जैसी महान् आत्माओ ने जन्म लिया है जिन्हे हम भगवान् के रूप मे मानते हैं। इस भारत वर्ष मे महर्षि दयानन्द, वशिष्ठ विश्वामित्र, व्यास व पतञ्जलि आदि अनेक ऋषि-मुनियो ने जन्म लिया और सत्यार्थप्रकाश, रामायण, महाभारत, वेद उपनिषद् व महाभाष्य आदि अमूल्य ग्रन्थो की रचना की। इन महान् ग्रन्थो के द्वारा जो विस्तृत व नीतिगत ज्ञान हमे प्राप्त हुआ उसकी तुलना तो विश्व मे कहीं भी नहीं की जा सकती, परन्तु आज हम इन ग्रन्थो की महिमा को भूलते जा रहे हैं। विज्ञान मे आज तक जो प्रगति की है इससे भी कई गुणा तो हजारो वर्ष पहले हमारे विद्वान् महापुरुष कर चुके थे। उदाहरण के लिए गुरुत्वाकर्षण बल की खोज का श्रेय हम प्रसिद्ध विद्वान् व वैज्ञानिक न्यूटन को देते हैं परन्तु न्यूटन के जन्म से भी हजारो वर्ष पूर्व महर्षि पतञ्जलि अपने महाभाष्य मे गुरुत्वाकर्षण बल का वर्णन कर चुके हैं परन्तु हम इन महान् ग्रन्थो की महिमा को भुलाकर विदेशी सभ्यताओ के पीछे दौड रहे हैं।

यह आवश्यक है कि आज प्रतिस्पर्धा के युग मे हमे ज्यादा से ज्यादा भाषाओ व सभ्यताओ का ज्ञान होना चाहिए परन्तु हमे अपनी सस्कृति एव सभ्यताओ का भी पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर प्रमाणित करना चाहिए कि हममे आज भी पूर्वजो के सभी गुण विद्यमान हैं। इसी ज्ञान के कारण हमारे पूर्वज ध्यान, समाधि व प्राणायाम आदि के द्वारा रोगो से बचकर सैकडों वर्ष की आयु प्राप्त कर भगवान् का भजन करते थे।

परन्तु हम छोटी उम्र में ही बीमारियो के शिकार होकर अपनी अमूल्य निधि 'स्वास्थ्य' की हानि होने देते हैं। उच्च रक्तचाप मधुमेह कब्ज व चिता जैसी छोटी-छोटी बीमारियो के कारण सुन्दर, स्वादिष्ट व्यजनो का सेवन करने मे असमर्थ हैं कि अपनी विरासत को भी नहीं सभाल पा रहे है ? ये सब विचारणीय विषय हैं और इन पर हमे ध्यान देना होगा और अवश्य देना चाहिए क्योकि स्वस्थ शरीर मे स्वस्थ आत्मा निवास करती है।

अत आज वह समय आ गया है जब प्रत्येक भारतवासी को अपनी प्राचीन सस्कृति का लाभ उठाते हुए स्वस्थ शरीर से परमपिता का ध्यान कर **"जीवेम शरद शतम्"** को सार्थक करते हुए भावी पीढी को भी उत्तम सस्कारो से ओतप्रोत करते हुए मानवमात्र के कल्याण की भावना को जागृत करे। नर सेवा नारायण सेवा को अपने जीवन का मुख्य लक्ष्य रखे।

विचारक **अजयकुमार धनखड, शिवनगर, सोनीपत**

एक आदर्श मृत्यु

श्री स्वामी सर्वानन्द जी अनेक वर्षो से दयानन्दमठ, रोहतक मे एक साधक के रूप मे रहते थे। यज्ञ मे आपकी अत्यधिक श्रद्धा थी। आप महात्मा प्रभु आश्रित जी के शिष्य थे। २९ जनवरी को प्रात काल दैनिक नित्यकर्मो के उपरान्त अपनी साइकल को स्टेशन पर रखकर रेल से देहली गये। वहा यज्ञ करवाकर रेल द्वारा ही वापिस रोहतक आ गये लगभग तीन बजे। रेल के पुल से उतरते समय अन्तिम पैडी पर बैठ गये और एक मिनट पश्चात् प्राण त्यागकर वही लुढक गये। पुराने या मैले वस्त्र को त्यागने मे जितना समय लगता है उतने ही काल मे आप अपना चोला और झोला छोडकर चले गये। देखनेवाले लोगो ने भी आश्चर्य किया और कहा कि ऐसी मृत्यु भगवान् सब को दे।

इस समय आपकी आयु ७० वर्ष थी, २६ वर्ष की आयु मे घर परिवार को छोड दिया था। आप सेना मे भी रहे। विवाह के बन्धन मे भी नही बधे। आपका पूर्व नाम कर्मचन्द था। आपका जन्म डाडा लखौन जिला देहरादून मे हुआ था। वहा से भी परिवार के ७ सम्बन्धी सूचना मिलने पर रोहतक पधारे। दयानन्दमठ, वैदिक भक्ति साधन आश्रम, आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, गुरुकुल झज्जर और गुरुकुल लाढौत एव रोहतक नगर से पधारे मान्य व्यक्तियो ने अपराह्ण दो बजे रोहतक की श्मशान भूमि मे वैदिक रीति से आपका अन्त्येष्टि सस्कार सम्पन्न करवाया।

–वेदव्रत शास्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ०१२६२–७६८७४, ७७८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ०१२६२–७७७२२) से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० न० २३२०७/७३ सृष्टिसवत् १, ९६, ०८, ५३, १०२
पजीकरणसख्या टैक/85-2/2000 ☎ ०१२६२-७७७२२

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र रोहतक

प्रधानसम्पादक : यशपाल आचार्य, सभामन्त्री सम्पादक - वेदव्रत शास्त्री

वर्ष २६ अंक १२ १४ फरवरी, २००२ वार्षिक शुल्क ८०) आजीवन शुल्क ८००) विदेश में २० डॉलर एक प्रति १.७०

धर्मशहीद बाल हकीकतराय और वसंतपंचमी

पं० नन्दलाल निर्भय 'पत्रकार'

हमारा प्यारा आर्यवर्त्त (भारतवर्ष) ईश्वरभक्त धर्मात्माओ, वीरशहीदो की पावनभूमि है। जिन वीरो ने देश-धर्म मानवता की रक्षा मे अपना जीवन न्यौछावर कर दिया था उन्हीं वीरो मे से एक था धर्मशहीद हकीकतराय। हकीकतराय का बलिदान मोहम्मदशाह रगीला के शासनकाल मे वसतपचमी के दिन सन् १७३४ ई० मे हुआ था। उसकी याद मे अभी भी आर्यसमाज तथा अन्य धार्मिक सस्थाए वसतपचमी के दिन शहीददिवस धूम-धाम से मनाती हैं।

हकीकतराय का जन्म १७१९ ई० मे सियालकोट पूर्व पजाब (पाकिस्तान) मे हुआ था। उसके पिता का नाम भागमल महाजन तथा माता का नाम कौरादेवी था। बालविवाह की प्रथा के अनुसार अज्ञानतावश हकीकतराय का विवाह सन् १७३२ ई० मे बटाला की लक्ष्मीदेवी के साथ कर दिया गया था। हकीकतराय के माता-पिता धार्मिक एव ईश्वरभक्त थे इसलिए हकीकतराय भी धार्मिकवृत्ति का था।

हकीकतराय को सात वर्ष की आयु मे सियालकोट के एक मदरसे (पाठशाला) मे प्रवेश दिलाया गया। वह कुशाग्र बुद्धि का बालक था। इसलिए मौलवी साहिब (अध्यापक) उस पर बेहद प्यार करते थे। यह देखकर मुसलमान बच्चे हकीकतराय से भारी ईर्ष्या करते थे।

एक दिन मौलवी साहिब जरूरी काम से पाठशाला से बाहर चले गये तथा पाठशाला की देखभाल करना हकीकतराय को सौंप गये। मौलवी साहब के चले जाने पर मुस्लिम बच्चो ने हुडदग मचाना शुरु कर दिया। हकीकत राय ने जब उन्हे ऐसा करने से रोका तो उन्होंने हकीकतराय को गालिया दीं और बुरी तरह पीटा। मौलवी साहिब के आने पर हकीकतराय ने उन्हे सारा किस्सा सुना दिया। मौलवी साहिब ने हकीकतराय को पुचकारकर अपनी छाती से लगा लिया तथा मुसलमान बच्चो को दडित किया। मुसलमान बच्चो ने नाराज होकर हकीकतराय पर बीबी फातिमा को गालिया देने और मौलवी साहब पर हकीकतराय की तरफदारी करने का आरोप लगाकर नगर के काजी सुलेमान से दोनो की शिकायत करदी।

उन दिनो काजियो का बोलबाला था। इसलिये काजी सुलेमान ने हकीकतराय को मुसलमान बनाने का फतवा जारी कर दिया तथा घोषणा करदी कि अगर हकीकतराय मुसलमान न बने तो उसका सिर कटवा दिया जाये। काजी ने फतवा जारी करके मामला नगर के हाकिम अमीरबेग को सौप दिया। अमीरबेग एक शरीफ आदमी था। उसने काजी सुलेमान को समझाया के यह बच्चो का झगडा है, इसे ज्यादा बढाना समझदारी नहीं है किन्तु काजी नहीं माना। कुछ मुसलमान भी काजी के समर्थक बन गये इसलिए अमीरबेग ने सारा मामला लाहौर के नवाब सफेदखान की अदालत मे भेज दिया। भागमल और कौरादेवी कुछ हिन्दुओ को साथ लेकर लाहौर पहुचे और नवाब से हकीकतराय को माफ कर देने की प्रार्थना की।

लाहौर के नवाब ने सारे मामले को ध्यान से पढा और सुना। दोनो पक्षो की बाते सुनकर तथा हकीकत की सुन्दर, कम उम्र को देखकर हकीकत राय से खुश होकर कहा -

बाल हकीकतराय ! मान तू,
बात एक बेटा मेरी।
मुसलमान बन जान बचा ले,
ज्यादा मत कर तू देरी।।
अपनी प्यारी सुन्दर बेटी,
के सग निकाह करा दूगा।
अपनी सारी दौलत का मैं,
मालिक तुझे बना दूगा।।
रख मेरा विश्वास लाडले,
बैठा मौज उडाएगा।
इस सूबे का हर नर-नारी,
तेरा हुक्म बजाएगा।
सोच समझ ले बेटा मन मे,
बात अगर ना मानेगा।
पछताएगा जीवर भर तू,
यदि ज्यादा जिद ठानेगा।।

नवाब की बाते सुनकर हकीकतराय ने गभीरतापूर्वक नवाब से पूछा-"अय नवाब साहिब, आप मुझे पहले एक बात बतादो, यदि मैं मुसलमान बन जाऊ तो मैं कभी मरूगा तो नहीं ? इन काजी और मौलवियो से भी पूछलो कि ये और आप भी क्या सदा जीवित रहोगे ?" नवाब ने सिर नीचा करके कहा-"बेटा हकीकतराय ससार मे जो जन्म लेता है वह अवश्य ही मरता है। मैं भी मरूगा, तू भी मरेगा और काजी, मौलवी भी जरूर मरेंगे। बेटा मैं पुत्रहीन हू अगर तू मेरी दुख्तर से निकाह कर लेगा तो मेरी सपत्ति का मालिक बन जायेगा और जीवनभर मौज उडाएगा। अरे हकीकतराय, अब तू ठीक तरह सोच-समझकर उत्तर दे बेटा।

नवाब का प्रस्ताव सुनकर हकीकतराय मुस्कारते हुए बोला-

"यह सृष्टि का है नियम अटल,
जो इस दुनिया मे आता है।
वह कर्मो का फल पाता है,
ईश्वर न्यायकारी दाता है।।
जब आप मानते हो इसको,

(शेष पृष्ठ २ पर)

चौ० राजेन्द्रसिंह धनखड़ राजस्व अधिकारी की वैदिकरीति से अन्त्येष्टि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के अन्तरग सदस्य चौ० धर्मचन्द जी के सुपुत्र चौ० राजेन्द्रसिह धनखड, (आयु ४८ वर्ष), राजस्व अधिकारी, रेवाडी का दिनाक ८ फरवरी २००२ को सरकारी ड्यूटी करते हुए हृदयगति बन्द होने से निधन हो गया। आज ९ फरवरी को उनके पैतृक ग्राम मोरवाला जिला भिवानी मे वैदिकरीति से अन्तिम सस्कार गुरुकुल झज्जर के ब्रह्मचारियो द्वारा करवाया। इस अवसर पर गुडगाव के कमिश्नर, अतिरिक्त उपायुक्त तथा अन्य सरकारी अधिकारियो के अतिरिक्त हजारो की सख्या मे व्यक्ति उपस्थित हुए। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से श्री केदारसिह आर्य सभा-उपमत्री के साथ श्री परसराम सभा मुख्तारेआम, श्री सत्यवान आर्य, श्री विजयकुमार सुपुत्र श्री वेदव्रत शास्त्री सभा-उपप्रधान सम्मिलित हुए। सभा के पूर्व उप-प्रधान श्री सूबेसिह मा० हुकमसिह पूर्व मुख्यमत्री हरयाणा, पूर्व विधायक श्री ओमप्रकाश बेरी आचार्य ऋषिपाल चरखीदादरी तथा श्री फतेहसिह भण्डारी गुरुकुल झज्जर आदि ने मृतक के परिवार तथा रिश्तेदारो को शोक सान्त्वना प्रकट की। १९ फरवरी, मगलवार को ११ बजे ग्राम मोरवाला (निकट चरखीदादरी) जिला भिवानी मे यज्ञ तथा शोकसभा का आयोजन होगा।

—केदारसिह आर्य, सभा-उपमन्त्री

वैदिक-स्वाध्याय

सर्वद्रष्टा

य एक इत् तमु ष्टुहि कृष्टीना विचर्षणि ।
पति र्जज्ञे वृषक्रतु. ।। ६ ४५ १६ ।।

शब्दार्थ–(**य एक इत्**) जो एक ही है और जो (**कृष्टीना**) मनुष्यो का (**विचर्षणि**) सर्वद्रष्टा और (**वृषक्रतु**) सर्वशक्तिमान् (**पति**) पालक (**जज्ञे**) हुआ है (त उ) उसकी ही (**स्तुहि**) तू स्तुति कर।

विनय–हे मनुष्य ! तू किस-किस की स्तुति करता फिरता है ? ससार मे तो एक ही स्तुति के योग्य है। ससार मे हम मनुष्यो की एक ही पति, पालक और रक्षक है। हे मनुष्य ! तू न जाने किस-किसको अपना पालक समझता है और उस-उसकी स्तुति करने लगता है। कही तू रुपये पैसेवाले व्यक्ति को अपना रक्षक समझता है, कहीं तू किसी लब्धप्रतिष्ठ रोबदाब वाले व्यक्ति को अपना स्वामी बनाकर रहता है। कहीं तू किसी दार्शनिक व कवि की प्रज्ञा व प्रतिभा के स्तुति-गीत गाने लगता है, उनके ज्ञान व कवित्व पर तू मोहित रहता है। ससार मे ऐसे भी मनुष्य बहुत हैं जो कि किन्हीं जीवित व जीवरहित आकृतियो के सौन्दर्य को देखकर ही ऐसे मोहित होजाते हैं कि उनका मन उस सौन्दर्य की प्रशसा करता नही थकता। परन्तु ससार मे मनुष्य की स्तुति के पात्र बहुत नही हैं। एक ही है, केवल एक ही है, और वह इन सब स्तुत्य वस्तुओ का एक स्रोत है। उसकी स्तुति न कर, इन शाखाओ की स्तुति करने से कल्याण नही होता-रक्षा नहीं मिलती। रूप, रस आदि ऐन्द्रियिक विषयो की स्तुति तो मनुष्य का विनाश ही करती है, पालन कदापि नही। इनकी स्तुति तो अति अज्ञानी पुरुष ही करते हैं। पर जो ससार मे हमारे अन्य रक्षा करनेवाले बल, ज्ञान और आनन्द है (बली, ज्ञानी और सुखी लोग हैं) वे भी "विचर्षणि" "वृषक्रतु" नही हैं उनमे ज्ञान और बल पर्याप्त नहीं है। ससार के ये बल, ज्ञान और आनन्द तो उस एक सच्चिदानन्द महासूर्य की क्षुद्र किरणे मात्र हैं। इन किरणो की स्तुति करने से अपने को बडा धोखा खाना पडेगा। हे मनुष्य ! ये ससार के क्षुद्र बल और ज्ञान मनुष्य का पालन न कर सकेंगे, ये बीच मे ही छोड देगे। इनमे पूरा ज्ञान और बल नहीं है। अत इनमे आसक्त होकर इनकी स्तुति मत कर। स्तुति उस 'मनुष्यो के एक पति' की कर, जो "विचर्षणि" होता हुआ पालक है और "वृषक्रतु" होता हुआ पालक है। वह एक-एक मनुष्य को विशेषतया देख रहा है। प्रत्येक मनुष्य को और उसके सब ससार को वह इतनी अच्छी तरह देख रहा है कि प्रत्येक मनुष्य यही अनुभव करेगा कि उस मेरे प्रभु को मानो एकमात्र मेरी फिक्र है। और उस पालक पति का एक-एक ऋतु एक-एक सकल्प, एक-एक कर्म ऐसा 'वृष' अर्थात् बलवान् है कि उसकी सफलता के लिये उसे दुबारा सकल्प व यत्न करने की जरूरत नहीं होती। हे मूर्ख मनुष्य ! अपने उस 'पति' की ही स्तुति कर उसकी सैकडो किरणो की स्तुति छोडकर उस असली सूर्य की ही स्तुति कर, उस एक की ही स्तुति कर।

(वैदिक विनय से)

(पृष्ठ एक का शेष)

धर्मशहीद बाल हकीकतराय...

मृत्यु सबको खा जाती है।
वह घोर नर्क मे जाएगा,
जो नर पापी उत्पाती है।।
मैं राम, कृष्ण का वशज हू,
मैं वैदिकधर्म निभाऊगा।
लालच के चक्कर मे फसकर,
इस्लाम नहीं अपनाऊगा।।"

हकीकतराय का उत्तर सुनकर नवाब भारी नाराज होगया और हकीकतराय पर रौब जमाते हुए बोला-

"तू कान खोलकर सुन लडके,
मैं अब जल्लाद बुलाऊगा।
मैं तेग दुधारी के द्वारा,
तेरे सिर को कटवाऊगा।।
गुस्ताख बडा है तू लडके,
मैंने तुझको पहचान लिया।
तू नर्मी के ना लायक है,
यह मेरे दिल ने मान लिया।।
तू बातूनी मत बन ज्यादा,
ले बात मान सुख पाएगा।
छोटी सी उम्र मे तू पगले,
वृथा ही मारा जाएगा।।"

हकीकत राय ने जब नवाब की बाते सुनी तो गरजते हुए बोला-

"तू अन्यायी सुन कान खोल,
क्यो ज्यादा बात बनाता है।
मेरी तो मौत सहेली है,
तू जिसका खौफ दिखाता है।।
अमर आत्मा, तन नश्वर है,
वेदशास्त्र दर्शाते हैं।
धर्मवीर, बलिदानी मानव,
जग मे पूजे जाते हैं।।
मैं साफ बताता हू, पापी,
तू घोर नर्क मे जाएगा।।
इस दुनिया का हर नर-नारी,
अत्याचारी बतलाएगा।।
मेरा यह बलिदान, दुष्ट सुन,
कभी न खाली जाएगा।
इस आर्यवर्त्त का हर मानव,
वीरो की गाथा गाएगा।।
धर्मवीर, बलवानो की,
गाथा नर-नारी गाते हैं।
तेरे जैसे अत्याचारी,
नफरत से देखे जाते हैं।।"

हकीकतराय की निर्भीकता देखकर नवाब आपे से बाहर होगया और उसने जल्लाद को बुलाकर हकीकतराय का सिर काटने का हुक्म देदिया। हकीकतराय उस समय हस रहा था। जल्लाद ने जब हकीकतराय की कम उम्र और सुन्दर सूरत को देखा तो उसका भी पत्थर दिल पिघल गया तथा तलवार उसके हाथ से गिर गई। यह देखकर हकीकतराय ने जल्लाद को समझाते हुए कहा-"अरे भाई जल्लाद ! तू अपना फर्ज पूरा कर और मुझे भी अपना धर्म निभाने दे। कहीं मेरी वजह से तेरे ऊपर भी कोई मुसीबत न आजाए।" जल्लाद ने अपने आसुओ को पोछकर तलवार को उठाकर हकीकतराय की गर्दन पर भरपूर वार किया जिससे हकीकतराय का सिर कटकर लुढक गया। धन्य था धर्मशहीद बाल हकीकतराय, जिसने अपना सिर कटवाकर भारतमाता का मस्तक ससार मे ऊचा कर दिया जब तक सूरज, चाद-सितारे और पृथ्वी रहेगी यह ससार उस वीरशहीद की बलिदानगाथा गाता रहेगा।

सज्जनो ! कुछ लोगो का विचार है कि बाल हकीकतराय का बलिदान मुगलबादशाह शाहजाहा के शासनकाल मे हुआ था तथा शाहजहा ने न्याय करते हुए नवाब और काजियो, मौलवियो को मृत्युदण्ड दिया था। किन्तु यह कथन सत्य से कोसो दूर एव निराधार है। शाहजहा के पुत्र औरगजब की मृत्यु सन् १७०७ मे हुई थी तथा हकीकतराय का बलिदान सन् १७३४ मे हुआ था। फिर उस समय शाहजहा कहा से आ गया ? वास्तव मे यह सब मुसलमान शासको एव इतिहासकारो की हिन्दुओ को मूर्ख बनाने की एक सोची-समझी चाल है। हमे विधर्मी लोगो के षड्यन्त्रो से सदैव सावधान रहना चाहिये। सच्चाई तो यह है कि उस समय मौहम्मदशाह रगीला का कुशासन था जो शराब पीकर औरतो के साथ दिल्ली के लालकिले मे नाचता रहता था। ज्ञातव्य है कि ईरान के हमलावर नादिरशाह ने उसे शराब पीये हुए जनाने कपडो मे गिरफ्तार करके उसके हरम की हजारो स्त्रियो को अपने सैनिको मे बाट दिया था तथा तख्तेताऊस को लूटकर ईरान लेगया था।

आर्यो, आज भारत मे छूआछात, ऊच-नीच, जाति-पाति का बोलबाला है। उग्रवाद, आतकवाद बढ रहा है। भारत के नेतागण भ्रष्टाचार की कीचड मे लिप्त है। विधर्मी लोग रात-दिन भारत की गरीब जनता को ईसाई, मुसलमान बनाने मे लगे हुए हैं। धर्म के नाम पर पशु-पक्षियो की बलि दी जाती है। सीमा पर चीन और पाकिस्तान भारत पर आक्रमण करने को तैयार खडे हैं। ऐसे घोर सकट मे भारत को वीरशहीद बाल हकीकतराय जैसे ईश्वरभक्त, धर्मात्मा देशभक्त युवक-युवतियो की आवश्यकता है। परमात्मा से अन्त मे यही प्रार्थना है-

हे भगवान् दया के सागर,
भारत पर तुम कृपा करदो।
भारत मा की गोद दयामय,
वीर सपूतो से अब भरदो।।
वीर हकीकत राय सरीखे,
भारत मे पैदा हो बच्चे।
धर्मवीर ईश्वर विश्वासी
आन-बान के हों जो सच्चे।।
जिससे ऋषियो का यह भारत,
सारे जग का गुरु कहाये।
भूख नगा आर्य वर्त्त मे,
कोई कहीं नजर न आये।।

–गाव व डाकघर बहीन
जनपद फरीदाबाद (हरयाणा)

वेद में उपासनापद्धति

–स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती, आर्ष गुरुकुल, कालवा

उपासक जब उपासना करने के लिये बैठता है तो उसकी इन्द्रिया उसे विषयो मे भटकाती हैं। कान शब्दों की ओर भागते हैं आख रूप की ओर दौड लगाती हैं। हृदय मे विराजमान 'अह' ज्योति भी टिक नहीं रही है। मन दूर-दूर की सोचता है। ऐसी स्थिति मे क्या स्तुति और क्या उपासना हो सकती है। सचमुच जब मनुष्य साधना मे बैठता है तब इन्द्रिया इधर-उधर दौड लगाती हैं और साधक को अपने उद्देश्य से भटकाती हैं, परन्तु मनुष्य दृढनिश्चय के साथ साधना आरम्भ कर देता है तो एक दिन ऐसी स्थिति आती है कि-

वि मे कर्णा पतयतो वि चक्षुर्वीदं ज्योतिर्हृदय आहित यत्।
वि मे मनश्चरति दूर आधी. कि स्विद् वक्ष्यामि किमु नु मनिष्ये।।

(ऋग्वेद ६।९।६)

अर्थ –(मे कणा वि पतयत) मेरे कान प्रभु-स्तुति के गाने मे लगते हैं (चक्षु वि) आख प्रभु की छवि को निहारने लगती हैं (इद ज्योति) यह ज्योति (हृदये आहित यत्) जो हृदय मे रखी हुई है (वि) विशेषरूप से परमात्मा मे सन्निविष्ट होगई है। (मे मन) मेरा मन जो (दूरे आधी) दूर-दूर की सोचता था (वि चरति) अब केवल परमात्मा का ही स्मरण करता है। (कि स्वित वक्ष्यामि, कि उ नु मनिष्ये) मैं अपनी इस स्थिति को क्या कहू और क्या मानूं ! शब्द इसे व्यक्त करने मे असमर्थ हैं।

उपासना से पूर्व तैयारी–

विश्वाहा त्वा सुमनस सुचक्षस प्रजावन्तो अनमीवा अनागस ।
उद्यन्त त्वा मित्रमहो दिवे दिवे ज्योग्जीवा प्रतिपश्येम सूर्य।।

अर्थ –(सूर्य) हे प्रकाशस्वरूप प्रभो ! (मित्र-मह) हे स्नेहीजनो से पूजनीय ! (जीवा) हम जीवगण, तेरे उपासक (विश्वाहा) सदा (सुमनस) उत्तम मनवाले (सुचक्षस) निर्मल दृष्टिवाले (प्रजावन्त) शक्तिशाली, वीर्यवान् होकर (अनमीवा) रोगरहित होकर (अनागस) पाप वासनाओ से पृथक् रहकर (दिवे दिवे) प्रतिदिन (उद्यन्त त्वा) हृदय मन्दिर मे उदय होते हुये आपको (ज्योक्) निरन्तर (प्रतिपश्येम) देखा करे, आपके दर्शन किया करे।

मन्त्र का आशय यह है कि किसी भी कार्य को करने से पूर्व तैयारी करनी पडती है। प्रभु-उपासना से पूर्व हमे अपने जीवन को कैसा बनाना चाहिये इस बात का मन्त्र मे सुन्दरता से निर्देश किया गया है। १ चित्त की वृत्तियो को निरुद्ध करो, मन को शुद्ध, पवित्र और निर्मल बनाओ। २ निर्मल दृष्टिवाले बनो। 'सुचक्षस' यहा सभी इन्द्रियो का उपलक्षण है। अपनी सभी इन्द्रियो को निर्मल बनाओ। ३ शरीर की उपेक्षा मत करो। शरीर को बलवान् और शक्तिशाली बनाओ। ४ अपना खान-पान दिनचर्या इस प्रकार की रखो कि रोग आपके ऊपर आक्रमण न करे। ५ वासनाओ ऐषणाओ और तृष्णाओ को दूर हटाकर मन, वचन और कर्म से शुद्ध-पवित्र बन जाओ। ६ ऐसा बनने पर हृदय मे उदय होनेवाले परमात्मा के निरन्तर दर्शन होते रहते हैं।

उपासना का समय और फल–

नाम नाम्ना जोहवीति पुरा सूर्यात् पुरोषस ।
यदज प्रथम सबभूव स ह तत् स्वराज्यमियाय यस्मान्नान्यत् परमस्ति भूतम्।। (अथर्व० १०।७।३१)

अर्थ –(यत्) जो (अज) अजन्मा, प्रगतिशील महात्मा (प्रथमम्) सर्वश्रेष्ठ ब्रह्म के प्रति (उषस पुरा) उषाकाल से पूर्व, सूर्योदय से पूर्व और (सूर्यात् पुरा) सूर्यास्त से पूर्व (सबभूव) सयुक्त हो जाया करता है और (नाम) नमस्कार करने योग्य परमेश्वर को (नाम्ना) नाम ओकार के द्वारा (जोहवीति) जपता है (स ह) वह ही (तत्) उस (स्वराज्यम्) स्वराज को, आत्मप्रकाश को, मुक्ति को (इयाय) प्राप्त करता है (यस्मात् परम्) जिससे बढकर (अन्यत् भूतम्) अन्य कुछ भी, अन्य कोई भी पदार्थ (न अस्ति) नहीं है।

वैदिक सच्छास्त्रो मे दो ही समय सन्ध्या करने का विधान, पूर्व और सूर्यास्त के समय। इस मन्त्र मे दो ही समय सन्ध्या करने का विधान है। त्रिकाल सन्ध्या अवैदिक है। जो भक्त, जो उपासक सूर्योदय और सूर्यास्त के समय परमात्मा से सयुक्त होते हैं, प्रभु-उपासना करते हैं, उन्हे आत्म-राज्य की मोक्ष की प्राप्ति होती है जिससे बढकर ससार मे और कोई पदार्थ नहीं है। उस परमात्मा का जप किस प्रकार करे। (नाम द्वारा) वह नाम कौन-सा है ? यजुर्वेद ४०।१५ मे कहा है-'ओ३म् क्रतो स्मर।' हे कर्मशील जीव ! तू ओ३म् का स्मरण कर। ओ३म् परमात्मा का निज नाम है अत ओम् द्वारा परमात्मा का स्मरण करना चाहिये।

क्रियात्मक योग-साधना (मेडिटेशन) शिविर

आर्यसमाज थर्मल कालोनी पानीपत के तत्वावधान मे दिनाक १२ फरवरी २००२ से २० फरवरी २००२ तक क्रियात्मक योग-साधना शिविर का आयोजन किया जारहा है। आज देश व विदेश मे "योगा" नाम की बडी चर्चा है। यह "योगा" यानी योग नहीं है। यह तो आज केवल आसन-व्यायाम का नाम है। तथाकथित योगाचारियो ने "योगा" के नाम से भोली जनता को योग-साधना के वास्तविक मार्ग से भटकाकर उल्टे पथ का पथिक बना दिया है। योग आसन तो वही है-जिसमे सुख-सुविधापूर्वक ईश्वर उपासना मे घण्टो तक एक ही अवस्था मे बैठा जासके। योग अर्थात् जोड मिलना तो दो पदार्थो मे होता है। जब दो पदार्थ नहीं तो योग भी नहीं हुआ। योग का आध्यात्मिक अर्थ तो आत्मा और परमात्मा का मिलन है।

अत योग के वास्तविक स्वरूप एव योग साधना (मेडिटेशन) के ठीक-ठीक स्वरूप की वास्तविक जानकारी का ज्ञान कराने हेतु वैदिकविद्वान् योगनिष्ठ ब्र० विष्वङ् जी दर्शनाचार्य (ऋषि उद्यान अजमेर) पधार रहे हैं। इस शिविर मे ब्रह्मचारी जी द्वारा "योग विषय" पर बहुत कुछ सुनने को मिलेगा।

परिस्थिति अनुसार कार्यक्रम की समय सारिणी मे परिवर्तन भी किया जा सकता है। अत आप सभी से नम्र निवेदन है कि इस शिविर मे इष्ट मित्रो सहित कार्यक्रमानुसार सम्मिलित होकर धर्म लाभ उठाए तथा हमे अनुग्रहीत करे।

निवेदक कार्यकारिणी एव सदस्यगण,
आर्यसमाज थर्मल कालोनी, पानीपत

सत्संग में जाया कर

प्रिय सज्जनो ! वो बहुत भाग्यशाली हैं जो वैदिक सत्सग की गगा मे स्नान करके अपने को शुद्ध पवित्र करते हैं। सत्सग की महिमा एक गीत मे बताई गई है –

अपनी अपनी सबने कही पर सत्य बराबर वाणी ना।
सत्सग बराबर लाभ नहीं और कुसग जैसी हानि ना।।

वास्तव मे सत्सग ऐसा साबुन है जो बुराइयो के मैल को धो देता है। पथिक जी का एक भजन है उसमे पहली पक्ति यही है कि बुराइयो को कभी जीवन मे अपनाना नहीं चाहिये। तुलसीदास जी का निम्न दोहा भी ये सकेत देरहा है।

तुलसी सगत साध सौ दुर्जन भवतर जाये।
जैसे लोह समुद्र में काठ सग तर जाये।।

अर्थात् साधु-सन्तो की सगत मे दुर्जन भी भवसागर को पार कर जाते हैं जैसे लोहा काठ के सग तर जाता है। सत्सग परमतीर्थ है। तीर्थ उसे कहते हैं जहा जाने से कल्याण होता है।

सत्सग एक ऐसा चुम्बक है जिसके छू जाने पर उसमे अद्भुत आकर्षण आ जाता है। इसमे थोडी देर बैठने का भी बहुत लाभ है। विद्वानो के आर्षवचन सुनकर जीवन का काटा बदल जाता है और भविष्य का मार्ग प्रशस्त होजाता है। सत्सग मे आकर कितने ही चोर डाकू सुधर गये। मुगला जैसा डाकू सन्त फकीर बन गया।

कुछ बनने या बिगडने का समय जवानी की उम्र होती है। परन्तु उसकी नींव (बुनियाद) शैशव अवस्था होती है। बडे अफसोस की बात है कि आप अपने बच्चो को सत्सग मे नहीं लाते। घर पर टेलीविजन देखकर बिगड रहे हैं। मनमानी कर रहे हैं। उन पर कोई अकुश नहीं है। इसलिये बचपन मे ही दिशाहीन होजाते हैं। बडे होकर नाक मे दम कर देते हैं क्योकि काबू से बाहर होजाते हैं। यदि आप अपने बच्चो का जीवन बनाना चाहते हैं तो अब ही से उनका मार्गदर्शन करो। उनके सामने कोई गलत काम मत करो। उन्हे सत्सग मे जाने की प्रेरणा दो बल्कि अपने साथ लाओ। सत्सग सुगन्धित फूलो का उपवन है और कुसग दुर्गन्धियुक्त कीचड है जिसके पास खडा होना भी हानिकारक है।

सत्सग मे आकर विद्वानो की बात को ध्यानपूर्वक सुना करो। सुनकर मनन किया करो। आपको प्रभु ने बुद्धि दी है। इसका ठीक प्रयोग करो। जीवन-उपयोगी सत्य बातो को पल्ले मे बाधलो जैसे रुपये पैसे को उठाकर गाठ मे बाध लेते हो। यदि कोई बात समझ न आये तो शका का समाधान किया करो। बहुत से लोग सुनते-सुनते सो जाते हैं वो हमेशा घाटे मे रहते हैं क्योकि जो सोवत है सो खोवत है, जो जागत है सो पावत है। सत्सग तो पुष्पो की शैय्या है जहां नींद आना स्वाभाविक है। परन्तु याद रखो यात्रा मे तो यात्री सो जाता है वह लुट जाता है और वह स्थान भी निकल सकता है जहा जाना है। फिर बाद मे पछताने से कुछ नहीं होता। जीवन के सफर मे सावधान रहोगे तो दुर्घटनाओं से बच जाओगे, नहीं तो लुटेरे हर समय लूटने को तैयार रहते हैं।

आपसे पुन· निवेदन है कि सत्सग मे अवश्य आया करो और अपने परिवार को भी लाया करो। यहा आकर कुछ सुनो और सुनाया करो। घर के काम कभी खत्म नहीं होगे। यू ही एक दिन जीवन की शाम हो जाएगी। पशु-पक्षियो की तरह खाने-पीने, सोने और भोग विलास मे जीवन व्यतीत करके सुनहरी अवसर को हाथ से मत जाने दो। यह पूर्व जन्म के शुभकर्मो का परिणाम है जो इस मनुष्य जीवन का सुख भोग रहे हो। इस जीवन मे शुभकर्मो का खजाना जमा करो जो मरने के बाद भी आपके साथ जाएगा। इतना कहकर आप सबके लिये मगलकामना करता हू।

कुछ भी न साथ जाएगा, केवल धर्म ही जाएगा,
सत्सग मे जाके धर्म की दौलत कमाया कर।
भगवान् ने इन्सान को दो पाव दिये हैं,
इनका सदुउपयोग कर सत्सग में जाया कर।
फुरसत न होगी काम से सारी उमर तुझे,
थोडा समय निकालकर सत्संग में जाया कर।
घर मे पडे रहने कोई लाभ नहीं है,
आलस्य को तज करके, सत्संग में जाया कर।
दुर्जन भी पार हो गये सत्संग मे बैठकर,
जीवन की नैया पार हो, सत्सग मे जाया कर।
गंगा मे जाके नहाने से होगा न शुद्ध मन,
सत्सग की गगा में सदा डुबकी लगाया कर।
सत्संग ही सच्चा तीर्थ है बच्चो को लाया कर,
प्रतिदिन नहीं तो सप्ताह मे अवश्य आया कर।

–ले० देवराज आर्यमित्र

वैदिक भक्ति साधन आश्रम आर्यनगर रोहतक में

सामवेद पारायण महायज्ञ सम्पन्न

परमपिता परमात्मा के सृष्टिक्रम मे अनेक महापुरुष ससार मे आते हैं और परमात्मा के विधान के अनुसार अपना कर्तव्य पूर्ण करके ससार सागर से विदा हो जाते हैं। उनके जीवन से प्रेरणा पाकर अनेक श्रद्धालुजन भी जीवन सुधारने मे सफल होते हैं। ग्राम डाण्डा लाखौन जिला देहरादून के स्वामी सर्वानन्द जी महाराज की श्रद्धाजलि सभा दिनाक १०-२-२००२ रविवार को बडे ही श्रद्धा एव प्रेमपूर्वक मनाया गया। यह कार्यक्रम सुबह ७ बजे से दोपहर १२ बजे तक वैदिक भक्ति साधन आश्रम के अधिष्ठाता महात्मा व्यासदेव जी तथा गुरुकुल ब्रह्मचारियो द्वारा किया गया।

यज्ञोपरात दूर-दराज से आये स्वामी जी के अनन्य भक्तो ने स्वामी जी के प्रति श्रद्धाजलि अर्पित की, जिनमे वैदिक भक्ति साधन आश्रम के अधिष्ठाता महात्मा व्यासदेव जी, श्री वेदप्रकाश जी मन्त्री, ब्रह्मर्षि ध्यानानन्द जी नैष्ठिक नारायण आश्रम, प० खुशीराम जी, श्री वेदप्रकाश अग्निहोत्री (दिल्ली), ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी दयानन्दमठ रोहतक, श्री सुरेन्द्रकुमार चतुर्वेदी तथा अनेक महापुरुषो ने स्वामी जी के प्रति श्रद्धाजलि अर्पित की।

इस श्रद्धाजलि सभा मे स्वामी सर्वानन्द जी महाराज को ऋषिभक्त, परोपकारी तथा उदार हृदय सन्यासी बताया गया तथा परमात्मा से उनकी आत्मा को शान्ति के लिए प्रार्थना की गई। इस महायज्ञ के पश्चात् ऋषि लगर का भी आयोजन किया गया तथा सभी लोगो ने प्रसाद पाकर श्रद्धाजलि सभा को सफल किया।

–**सुरेन्द्रकुमार चतुर्वेदी**, सूर्यनगर कालोनी, गोहाना रोड, रोहतक

भारत के मूल निवासी

आर्य भारत के मूल निवासी हैं,
ये कौन कहे प्रवासी हैं।
जो कहे वे असत्यभाषी हैं,
उन्हे ज्ञान नहीं इतिहासी है।।

आर्य न मासाहारी हैं,
गुरु तेग बडे वफादारी हैं।
जाट वतन बलिहारी हैं,
वे सच्चे देश हितकारी हैं।।

कुछ लोगो ने चाटुकारी की,
शासको की तरफदारी की।
रोजी रोटी की तैयारी की,
भारत मा से गद्दारी की।।

वे कभी न माफ किये जाये,
उनके कुकृत्य साफ किये जाये।
इतिहास में इन्साफ किये जाये,
साक्षी दरियाप्त किये जाये।।

वे वेदो के विज्ञाता हैं,
स्वराज के अधिष्ठाता हैं।
न्याय के सच्चे दाता हैं,
'बसल' वे राष्ट्र निर्माता हैं।।

लेखक–**रामनिवास बंसल**
सेवा प्रवक्ता
६१/६, आश्रम रोड,
चरखी दादरी-१२७३०६

सभा के प्रभावशाली उपदेशक एवं भजन मण्डलियों को बुलाकर वेदप्रचार कार्य में सहयोग देवें

आर्यप्रतिनिधिसभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक की ओर से आसुकवि आचार्य शकरमित्र वेदालकार, प० सुखदेव शास्त्री सहायक वेदप्रचाराधिष्ठाता, आचार्य धर्मवीर उपदेशक, प० तेजवीर जी, प० सीताराम जी आदि नये उपदेशक तथा भजनोपदेशको की सेवाएं प्राप्त की हैं। प० चिरजीलाल जी, प० जयपाल, सत्यपाल, प० विश्वमित्र जी, स्वामी देवानन्द जी, प० मुरारीलाल जी बेचैन, पं० शेरसिह जी पूर्व ही निरन्तर प्रचाररत हैं। अत आर्यसमाजो तथा आर्य सस्थाओ से निवेदन है कि अपने उत्सवों, प्रचार आदि के अवसरो पर सभा को पत्र लिखकर लाभ उठावें।

–**सभामन्त्री**

तीर्थयात्रियों के प्रति आर्यसमाज की आवश्यकता एवं दायित्व

लेखक डॉ० मनोहर लाल आर्य, ५४७-१५ ए फरीदाबाद

सर्वहितकारी के १४ अगस्त के अक मे तीर्थयात्रा और आर्यसमाज का लेख पढकर मुझे प्रेरणा मिली के मैं तीर्थो के प्रति आर्यसमाज का कर्त्तव्य और आर्यसमाज की आवश्यकता पर अपने विचार लिखू। आप सब जानते हैं कि स्वामी दयानन्द जी ने वेदप्रचार को मूर्तरूप देने के लिये हरद्वार मे ही कुम्भ मेले के अवसर पर पाखण्ड खण्डनी पताका लहराकर वेदप्रचार कार्य शुरु किया था। उन्होने यह अनुभव किया कि आर्यसमाज का सही रूप तीर्थो पर ही प्रदर्शित हो सकता है। उपरोक्त लेख केवल तीर्थो पर जानेवाले यात्राओ के पत्रिकाओं मे छपे आकडे देकर ही इतिश्री करदी गई है। लेखक ने तीर्थो के प्रति आर्यसमाज के दायित्व का जिक्र तक नहीं किया। मैंने हरद्वार के अतिरिक्त अन्य कई तीर्थो की यात्रायें की हैं, और जो कुछ मैंने अनुभव किया है उसके बारे मे अपने विचार देरहा हू। इन तीर्थो पर देश-विदेश के यात्री बडी सख्या मे जाते हैं, सबसे पहले हरयाणा के प्रसिद्ध तीर्थ कुरुक्षेत्र को ले, जहा पर आर्यसमाज का अच्छा वर्चस्व है और हरयाणा आर्य प्रतिनिधि सभा की अपनी काफी जगह है, दुकाने आदि है, उसको आर्यसमाज एव यात्रीगृह का रूप देदिया जाये जिसमे यात्रियों को सत्सग भी मिले और ठहरने की भी अच्छी व्यवस्था हो। यहा पर सूर्यग्रहण के मेले के अवसर के अलावा सारा साल ज्योतिसर और पेहवा आदि की यात्रा पर तो यात्री आते ही रहते हैं।

इसी प्रकार आर्यसमाज के बडे स्थान अजमेर के बगल में ही पुष्करराज का यहा तीर्थ पडता है जहा पर ब्रह्माजी के मन्दिर मे एक कमरे मे बैठकर स्वामी दयानन्द जी महाराज ने यजुर्वेद का भाष्य किया था। यह यात्रा भी सारा साल चलती है, वहा पर आर्यसमाज ही नहीं है, वहा पर इसी प्रकार का आर्यसमाज एव धर्मशाला हो, यह सारा कार्य परोपकारणी सभा अजमेर के जिम्मे हो, आगे भी जिन तीर्थ स्थानों पर आदमी जाते हैं सारे ही पौराणिक विचारो के होते हैं। नहीं, ऐसे भी होते हैं जो केवल ऐसे स्थानो को देखने के लिए ही जाते हैं, और धार्मिक विचारों के व्यक्ति होते हैं जोकि होटलो में ठहरने की बजाय धर्म स्थानों मे ठहरना पसन्द करते हैं।

वैष्णोदेवी की यात्रा पर सारा साल लाखो की सख्या मे लोग जाते हैं जम्मू से आगे कटडा तक बसे जाती हैं आगे के लिए पैदल का रास्ता है, आमतौर पर यात्रियो को आते-जाते कटडा मे रात को ठहरना पडता है क्योकिं वैष्णोदेवी भवन पर तो यात्रियो को मजबूरन ही ठहरना पडता है इसलिये यही कटडा मे ही आर्यसमाज एव यात्रीगृह होना चाहिए, जिसमे ठहरने की अच्छी व्यवस्था हो, और रोजाना सत्सग का भी प्रबन्ध हो, इसका सारा प्रबन्ध जम्मू आर्यसमाज करे, हमने तकरीबन बीस वर्ष पूर्व वैष्णोदेवी की यात्रा की थी, आते-जाते दो रात कटडा मे ही दुर्गाभवन मे ठहरे थे, अच्छा प्रबन्ध था।

अब हरद्वार को ले, जोकि देश का सबसे बडा तीर्थ है, और जहा प्रतिदिन लाखो की सख्या मे यात्री पहुचते हैं और वहा से आगे उत्तराखण्ड की यात्रा के लिये ही जाते हैं! यह ठीक है कि हरद्वार मे आर्यसमाज की कई बडी-बडी सस्थाये गुरुकुल कागडी, आर्य वानप्रस्थ आश्रम, मोहन आश्रम, प्रकाशवीर शास्त्री आदि भवन हैं। पर कहीं भी आर्यसमाज की ओर से यात्रियो के ठहरने का प्रबन्ध नहीं है, जहा पर यात्रियो को हर प्रकार की सुविधा और साथ ही सत्सग का आनन्द भी प्राप्त होता आर्यसमाज की ओर भी ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए।

इससे आगे चलकर ऋषिकेश ऐसा स्थान है और ऐसा पडाव है जहा से आगे गगोत्री, बद्रीनाथ और केदारनाथ आदि की तीर्थो की यात्रा शुरु होती है, हेमकुण्ड, नीलकठ के यात्री भी यहीं से जाते हैं, यहा पर कई सस्थाओ के यात्रीगृह, आश्रम आदि हैं, सिखो का भी एक बडा गुरुद्वारा और यात्रीगृह है जिसका बडा अच्छा प्रबन्ध है और हर प्रकार की ठहरने की सुविधा मिलती है, ऋषिकेश मे आर्यसमाज मन्दिर भी है। पर इसमे न तो कोई महात्मा रहते हैं, और दैनिक सत्सग होता है, साप्ताहिक भी होता है, इसमे दो परिवार रहते हैं और उन्होने ही व्यवस्था बिगाड रखी है, इसी आर्यसमाज का पुनर्निर्माण होना चाहिये, बडा मौके पर घाट और रेलवेरोड के ऊपर पडता है, इसी की आर्यसमाज धर्मशाला का रूप देदिया जाये, प्रतिदिन सत्सग हो और ठहरने की व्यवस्था हो ऋषिकेश से बस द्वारा चलकर गगोत्री की यात्रा के लिए पहला पडाव उत्तरकाशी आता है और बसे तो गगोत्री तक जाती है, पर जाते आते रात को उत्तरकाशी ही ठहरना पडता है, उत्तरकाशी एक बडा रमणीक स्थान है, यहा यात्रियो के ठहरने के लिये कई धर्मशालाये हैं, सडक के ऊपर गगातट पर एक बडा अच्छा स्थान कैलाश आश्रम है, वहा पर यात्रियो को हर प्रकार की सुविधा मिलती है, पर यहा भी आर्यसमाज नहीं है। अच्छा सुन्दर कस्बा है, यहा पर भी आर्यसमाज मन्दिर एव यात्रीगृह होना चाहिये, इसी प्रकार ऋषिकेश से आगे केदारनाथ और बद्रीनाथ के लिये अलग सडक जाती है, पहला पडाव रुद्रप्रयाग आता है, यहा पर गगा और अलखनन्दा दो नदियो का सगम है, अलखनन्दा नदी के साथ-साथ सडक जाती है, इसके बाद अगला पडाव जोशी मठ है, यहा पर अलखनन्दा मे मन्दाकिनी नदी आकर मिलती है। केदारनाथ की यात्रा के लिये मन्दाकिनी नदी के साथ-साथ सडक जाती है। केदारनाथ से १२ कि मी पहले गोरीकुण्ड तक सडक बसो आदि के लिये है, आगे पैदल या घोडी आदि से यात्री जाते हैं, पर जाते आते रात को गौरीकुण्ड ठहरना पडता है, पर यहा ज्यादा अच्छी ठहरने की व्यवस्था नहीं है, स्थान के पण्डो आदि की ओर से कुछ व्यवस्था होती है, वैसे स्थान सुन्दर है, ऊपर मन्दिर के पास गर्म पानी का चश्मा है, और नीचे मन्दाकिनी नदी का बर्फीला जल बहता है। केदारनाथ तीर्थ भी मन्दाकिनी नदी के तट पर है। वहा पर मन्दिर के पण्डो की ओर से ही ठहरने का प्रबन्ध है। यहा पर एक सरकारी यात्रीगृह भी है, पर आर्यसमाज कोई नहीं है। हालाकि यहा काफी यात्री पहुचते हैं यहा पर भी आर्यसमाज की तरफ से व्यवस्था होनी चाहिए। केदारनाथ से भी वापिस आकर बद्रीनाथ की यात्रा के लिये जोशीमठ से अलग सडक है। यह मिल्ट्री रोड है जो कि यातायात के लिये पब्लिक के लिये निश्चित समय पर ही खुलती है। इसलिये यात्रियो को आते-जाते दो रातो के लिये रुकना पडता है। यहा पर और सस्थाओ की कई धर्मशालाये हैं, पर यहा तो आर्यसमाज भी नहीं है। यह वह स्थान है जहा पर स्वामी दयानन्द जी योगियो की खोज मे घूमते-घूमते कई रोज रुके थे। यहा पर भी आर्यसमाज की ओर से व्यवस्था होनी चाहिए। ओखीमठ का भी स्वामी जी की जीवनी मे जिक्र आता है। नजदीक ही पडता है, यहा जोशी मठ मे एक विद्यालय भी है जहा ब्रह्मचारी रहते है और चारो वेदो का पठनपाठन होता है। केदारनाथ और बद्रीनाथ की यात्रा मई से सितम्बर तक चलती है। जोशीमठ से ही Flower Velly और हेमकुण्ड के लिये भी यात्री जाते है, इसलिये यहा पर देश-विदेश से काफी यात्री पहुचते है वैसे आगे बद्रीनाथ तक जाती है बद्रीनाथ भी एक बडा रमणीक स्थान है, यहा पर आम तौर यात्री रात को ठहरते हैं। यहा पर इसी प्रकार पण्डो के द्वारा ठहरने का प्रबन्ध होता है। वैसे दो तीन अच्छे होटल भी है पर आमतौर पर लोग धार्मिक स्थानो पर ही ठहरना पसन्द करते हैं। यहा पर तो एक बडा आर्य यात्रीगृह होना चाहिये। जिसमे ठहरने की अच्छी व्यवस्था के अलावा रोजाना सत्सग का कार्यक्रम भी होना चाहिये। यह काफी खुली जगह है यहा पर आर्यसमाज के निर्माण के लिये जगह भी मिल सकती है। मैं न केवल थोडे ही तीर्थस्थानो का उल्लेख किया है इसी प्रकार सारे भारतवर्ष के तीर्थो के सुधार के लिये अपने दायित्व को निभाये। आर्यसमाज ने हर क्षेत्र मे बीसवीं शताब्दी मे बहुत कार्य किया है। परन्तु अभी बहुत कुछ करना बाकी है। इस युग मे रूढी परम्पराये हटनी चाहिये और स्वच्छ और हितकारी परम्पराये स्थापित होनी चाहिये इसलिये सब तीर्थो और मार्ग पर पडने वाले स्थानो पर आर्यसमाज मन्दिर एव यात्रीगृह होने चाहिये। जिनमे एक साधु-सन्यासी स्थायी तौर पर रहे प्रतिदिन सत्सग हो और यात्रियो के ठहरने की पूरी व्यवस्था हो। यह महान् कार्य सार्वदेशिक प्रतिनिधि सभा से ही हर प्रान्त की आर्य प्रतिनिधि सभा के माध्यम से ही हो सकता है, इसी कार्य से ही आर्यसमाज के छठे नियम "ससार का उपकार आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है,' अर्थात् शारीरिक, सामाजिक आध्यात्मिक उन्नति करना की पूर्ति हो सकेगी। केवल खण्डन से नहीं अपितु मण्डन और मिलवर्तन से ही।

दयानन्दमठ दीनानगर में लोहपुरुष स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज का जन्मदिवस मनाया और चतुर्वेद पारायण यज्ञ आरम्भ

दयानन्दमठ की पवित्र तपोस्थली मे पूज्यपाद गुरुदेव १०१ वर्षीय सतशिरोमणि स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के सान्निध्य मे २८ जनवरी, २००२ सोमवार को पूज्यपाद आचार्य स्वामी सदानन्द जी की अध्यक्षता मे लोहपुरुष स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज का जन्मदिवस बडे हर्षोल्लास के साथ मनाया गया और उनकी पुण्यस्मृति कर चतुर्वेद पारायण यज्ञ आरम्भ किया।

यज्ञ के पश्चात् स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने अपने प्रवचन मे कहा- **यज्ञोदाधार पृथ्वीम् उत्थाम् हिमम् धरणम् सचाधाय यूपान् कृत्वा पर्वतान् वर्षाजाव इजायते रोहितस्या सर्वविद ।**

अर्थात् ईश्वर ने सारा ससार यज्ञस्वरूप बनाया है ससार की प्रत्येक वस्तु इस यज्ञ मे अपना भाग देरही है। इस यज्ञ को हवा पानी आदि पचतत्व चला रहे है। वेद मे कहा है-

"ईजाना· स्वर्गयन्ति लोकम्" अर्थात् जो यज्ञ करते हैं वे स्वर्गलोक को प्राप्त करते हैं।

"यजुर्वेद मे एक मन्त्र मे कहा गया है-**"आयुर्यज्ञेन कल्पताम्"** अर्थात् यह जीवन यज्ञ के द्वारा सफल होता है **"यज्ञ स्वर्गस्य सोमपानम्"** ससार मे स्वर्ग जाने के जो उपाय है वह केवल यज्ञ कर्म है इसे स्वर्ग को प्राप्त करने की सीढी कहा गया है।

यह यज्ञ स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज की स्मृति मे आरम्भ किया गया है। स्वामी बडे कर्मठ थे। प० रुचिराम जी को उन्होने प्रचार के लिए अरब भेजा और कइयो को बर्मा भेजा। इनका जन्म लुधियाना जिला के मोही ग्राम मे हुआ। इस जिले मे लाला लाजपतराय आदि अनेक आर्यनेताओ ने जन्म लिया। इनके पिताजी का नाम श्री भगवानसिह और उनका नाम केहरसिह था। आज ये सत स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज के नाम से विख्यात हुए। हैदराबाद का सत्याग्रह भी इन्होने जीता था। स्वामी जी महाराज, मॉरीशस, अफ्रीका और कई मुल्को मे गये। आज उनके जन्मदिवस पर सभी को बधाई। हम सब उनके पदचिन्हो पर चलकर धर्म के कार्य करे।

वैशाखी के दिन गुरुदेव स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के जन्मदिवस पर होगी तब तक इस यज्ञ मे भजनोपदेशक तथा विद्वानो द्वारा निरन्तर प्रवचन होते रहेगे। इसके बाद ऋषि लगर के बाद साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ।

–ब्र० रामदास आर्य, दयानन्दमठ, दीनानगर (पजाब)

एक ईसाई पास्टर (ईसाई प्रचारक) एवं उसके साथ २५ ईसाइयों ने वैदिकधर्म ग्रहण किया

उत्कल आर्यप्रतिनिधिसभा द्वारा चलाये जारहे धर्मरक्षा महाभियान को उस समय एक अच्छी सफलता मिली जब ३० जनवरी को नवापारा जिले के खरियार क्षेत्र के दो ग्रामो के ५ ईसाई परिवारो के २५ लोगो ने अपने मुखिया ईसाई प्रचारक व पास्टर श्री रथिराम बाग के साथ श्रद्धापूर्व यज्ञोपवीत ग्रहण किया। इसके पहले इन्होने वैदिकधर्म ग्रहण करने की मजिस्ट्रेट से अनुमति भी ले ली थी। इस अवसर पर उस क्षेत्र के अनेक प्रभावशाली सज्जन भी उपस्थित थे। कार्यक्रम का सचालन श्री विशिकेसन जी शास्त्री ने किया। दीक्षा लेनेवाले लोगो को आशीर्वाद देने के लिए श्री गुरदयाल जी साधक, श्री ईश्वरचन्द्र जी पटेल, श्री दाशरथी माझी, श्री सुशातकुमार विशि आदि उपस्थित थे। इन्हे तैयार करने के लिए हेमराज जी शास्त्री व श्री पीताम्बरप्रसाद आर्य का विशेष पुरुषार्थ रहा। आर्यप्रतिनिधिसभा के प्रधान स्वामी व्रतानन्द जी भी उपस्थित थे। उन्होने दीक्षितो को सत्यार्थप्रकाश आदि पुस्तके भेट की।

–सुदर्शनदेवार्य, उपमन्त्री, उ आर्य प्रति सभा)

आर्यसमाज थर्मल कालोनी पानीपत की नई कार्यकारिणी का चयन

आर्यसमाज थर्मल कालोनी पानीपत की नई कार्यकारिणी का चयन इस समाज के आजीवन सरक्षक श्री वेदपाल जी आर्य की अध्यक्षता मे दिनाक १८-१-२००२ को सर्वसम्मति से निम्नलिखित पदाधिकारियो का हुआ

प्रधान-यज्ञदेव आर्य, कार्यकारी प्रधान-अशोककुमार परमार, उपप्रधान-रणवीरसिह कुण्डू, मन्त्री-रणवीरसिह भाटी, उपमन्त्री-विश्वामित्र भीमवाल, कोषाध्यक्ष-आनन्दसिह आर्य, लेखा निरीक्षक-रमेशचन्द्र गुप्ता, पुस्तकालयाध्यक्ष-केहरसिह आर्य, प्रचारमन्त्री-रणजीतसिह भटाल।

शान्ति महायज्ञ सम्पन्न

आर्यसमाज साघी (रोहतक) की तरफ से विश्वशान्ति के लिये किया गया महायज्ञ जिसमे १८ टीन देसी घी व उच्चस्तर की ३ बोरी सामग्री का प्रयोग हुआ जिसका कुल खर्च ३५००० रुपये हुआ। इस महायज्ञ मे आर्यसमाज साघी के सदस्य ब्र० धर्म श्री चतरसिह, श्री भलेराम आर्य, ओमप्रकाश आर्य, मा० दीपचन्द व युवा क्लब जिसमे देवेन्द्र आर्य व उसके साथियो का विशेष सहयोग रहा। महायज्ञ ३१ दिसम्बर से शुरु होकर २ फरवरी को सम्पन्न हुआ। २ फरवरी को हरयाणा प्रदेश काग्रेस अध्यक्ष श्री भूपेन्द्रसिह हुड्डा सहधर्मपत्नी समेत यज्ञ के यजमान बनकर यज्ञ के लिये ५१०० रुपये दान देकर अपने को कृतार्थ किया। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य सत्यव्रत गुरुकुल सुन्दरपुर व उपदेशक प० नरदेव ने ३ दिन-रात श्रोताओ को अपने मधुर भजन व वेदवाणी से श्रोताओ को मुग्ध कर दिया जिससे रोजाना श्रोताओ की सख्या बढती चली गई।

–ओमप्रकाश आर्य, मन्त्री आर्यसमाज साघी (रोहतक)

आर्यसमाज के नेता श्री धर्मवीरसिंह मलिक नहीं रहे

आर्यसमाज के वयोवृद्ध नेता श्री धर्मवीरसिह जी मलिक स्वतन्त्रता सेनानी का ८७ वर्ष की आयु मे सोनीपत मे हृदयगति बन्द होने से ९ फरवरी २००२ को निधन होगया। इनकी अन्त्येष्टि ग्राम बीधल मे वैदिकरीति से की गई। वे आर्यसमाज बीधल जिला सोनीपत के काफी समय तक प्रधान रहे हैं। आर्यप्रतिनिधिसभा हरयाणा को पूरा सहयोग देते रहे। महात्मा भक्त फूलसिह जी के साथ रहकर आपने गुरुकुल भैंसवाल तथा कन्या गुरुकुल खानपुरकला को उन्नत करने मे प्रमुख भूमिका निभाई थी। उन्होने १९४२ मे भारत छोडो आन्दोलन मे जेलयात्रा की थी। जिला सोनीपत स्वतन्त्रता सगठन के अध्यक्ष पद पर कार्य करके स्वतन्त्रता सेनानियो को सुविधाए दिलवाई थी।

इनकी स्मृति मे १८ फरवरी को ग्राम बीधल मे यज्ञ तथा शोकसभा होगी। आचार्य यशपाल जी सभामन्त्री ने इनके निधन पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए इनके परिवार तथा रिश्तेदारो को सान्त्वना दी है और परमात्मा से दिवगत आत्मा को सद्गति देने की प्रार्थना की है। –केदारसिह आर्य, सभा-उपमन्त्री

आर्यसमाज काठमण्डी सोनीपत का चुनाव

श्री सत्यवीरसिह शास्त्री-प्रधान, श्री सूरजसिह मलिक-वरिष्ठ उपप्रधान, श्री भगतसिह धनेरवाल-उपप्रधान, महावीर दहिया-मन्त्री, श्री प्रतापसिह शास्त्री-उपमन्त्री, श्री जानकीदास-कोषाध्यक्ष, श्री दयाव्रत शास्त्री-पुस्तकालयाध्यक्ष, श्री जयसिह दहिया-लेखानिरीक्षक।

स्वामी नित्यानन्द तथा कुंवर जौहरीसिंह के गीतों पर कैसेट तैयार

उत्तरी भारत के प्रभावशाली एव मधुर गायक चौ० ईश्वरसिह गहलोत के सुयोग्य शिष्य स्वामी नित्यानन्द जी (पूर्व नोनन्दसिह जी) तथा कुवर जौहरीसिह जी द्वारा गाये गये भजनो की कैसेट तैयार होगई है। कुवर जी की दोहती श्रीमती सुदेशार्या जी ने उनकी तर्जो पर गाकर पुरानी माग पूरी करदी है। अत इन तर्जो के प्रेमी निम्नलिखित पते पर पत्र-व्यवहार अथवा सम्पर्क करके मगवा लेवे। –रामपाल आर्य, ऋषि रेडियोज, कच्चा बेरी रोड, समीप बस स्टैण्ड गेट, रोहतक, फोन न० ९५१२६२-६५३७७

आर्यसमाज के उत्सव की सूची

आर्यसमाज मौती चौक, रेवाडी (चतुर्वेदशतकम् यज्ञ एव रामकथा)	१२ से १७ फरवरी
श्रीमद्दयानन्द गुरुकुल विद्यापीठ गदपुरी (फरीदाबाद)	१५ से १७ फरवरी
आर्यसमाज अटायल जिला रोहतक	२३-२४ फरवरी
दयानन्द उपदेशक विद्यालय शादीपुर यमुनानगर	१ से ३ मार्च
आर्यसमाज जुरहरा जि० भरतपुर (राज०)	१ से ३ मार्च
आर्यसमाज सफीदो जिला जीन्द	१५ से १७ मार्च
गुरुकुल झज्जर	१५ से १७ मार्च
आर्यसमाज घरोण्डा जिला करनाल	१५ से १७ मार्च
प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन रोहतक	३१ मार्च, २००२

–सभामन्त्री

आर्य-संसार

महर्षि दयानन्दपीठ

महर्षि दयानन्दपीठ की स्थापना चौधरी भजनलाल जी के मुख्यमन्त्रित्वकाल १९९६ ई० मे हुई थी। उनके आदेशानुसार इसकी स्थापना महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक मे की गई थी।

विश्वविद्यालय के अधिकारियो ने इसका कार्यभार डा० यज्ञवीर दहिया, अध्यक्ष सस्कृत विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक को सौंपा। डा० यज्ञवीर दहिया विश्वविख्यात सस्कृत के प्रोफेसर हैं। इनकी पाच पुस्तके "दि लैंग्वेज आफ दी अथर्ववेद", "सस्कृत व्याकरण की रूपरेखा" "पाणिनि एज ए लिग्विष्ट आईडियाज एण्ड पैटरन्स्", "सस्कृतभाषादर्शन्", एव "ट्रिटमेन्ट आफ फोनोलोजि इन दयानन्द" तथा ८५ शोधपत्र हैं।

आपने हाल ही मे "ट्रिटमेन्ट आफ फोनोलोजि इन दयानन्द" पुस्तक लिखकर महर्षि दयानन्दपीठ की शोभा बढाई है। यह पुस्तक अग्रेजी मे है ताकि पाश्चात्य जगत् भी आर्यसमाज की विचारधारा को समझ सके।

आजकल डा० दहिया अनेक शोधग्रन्थो के प्रणयन मे व्यस्त हैं।

टंकारा का ऋषि मेला

महर्षि दयानन्द की जन्मभूमि टकारा मे १०, ११ व १२ मार्च ऋषि मेले का आयोजन किया गया है। आर्य परिवारो को बस द्वारा टकारा लेजाने के लिए आर्यसमाज मन्दिर मार्ग नई दिल्ली से स्पेशल बस चलाई जारही है। यह बस ०५/०३/२००२ प्रात ७ बजे चलेगी जो १५/०३/२००२ रात्रि वापिस देहली पहुचेगी। यात्री मथुरा, उदयपुर, जोधपुर, अजमेर के अतिरिक्त द्वारका, बेट द्वारका, पोरबन्दर, सोमनाथ का मन्दिर, माउन्ट आबू श्री कृष्ण जन्मभूमि के साथ चित्तौड और पुष्कर भी देखेगे। किराया बस केवल २१६५/- प्रति यात्री होगा। निवास एव भोजन व्यवस्था आर्यसमाजो मे होगी, ऐसा नहीं हुआ तो यात्री अपने व्यय से करेगे।

निवेदक **रामचन्द्र आर्य, प्रबन्धक**, टकारा यात्रा, ४६६, भीमनगर, गुडगाव **दूरभाष** ६३२६४४६६

वार्षिक उत्सव

वैदिक साधना आश्रम, गोरड जिला सोनीपत का वार्षिकोत्सव ११ फरवरी से २४ फरवरी २००२ तक बडी धूमधाम से मनाया जारहा है। जिसमे आर्यसमाज के उपदेशक तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

११ फरवरी से २४ फरवरी तक ऋग्वेद पारायण यज्ञ आरम्भ होरहा है जिसमे आप सभी सादर आमन्त्रित हैं। पूर्णाहुति २४ फरवरी प्रात १०-३० बजे। उत्सव मे पहुचकर धर्म लाभ उठाए।

नोट रविवार दिनाक २४ फरवरी २००२ को श्री भगवानसिह जी राठी प्रेमनगर, रोहतक (भापडौदा वाले) वानप्रस्थ की दीक्षा लेगे।

रविवार दिनाक २४ फरवरी २००२ को साय ५-०० बजे आसन तथा बेल तोडने का कार्यक्रम दिखाया जायेगा। अध्यक्ष **स्वामी ध्रुवानन्द**

आर्यसमाज चरखी दादरी द्वारा भयंकर दुर्घटना में हड़ोदी के मृतकों के लिये शान्तियज्ञ एवं श्रद्धांजलि

गत दिनो भयकर सडक दुर्घटना मे २२ आदमियो की मौके पर ही मृत्यु होगई थी। यह विनाशकारी दुर्घटना बाढडा से हडोदी आते समय हुई है। गाव मे मातम छा गया तथा जिसमे किसी से इस दर्दनाक दृश्य को देखा तथा सुना वह उनके रोगटे खडे होगये। गाव के मौजिज आदमी बाढडा बिजली के कार्यालयमे अपने गाव की बिजली सम्बन्धी शिकायत के लिये गये थे। आखिर यह दुर्घटना क्यो हुई, एक तो चालक मे विवेक एव चतुरता की कमी दूसरे की इस सडक पर अवैध यातायात रहती है।

दादरी आर्यसमाज से साप्ताहिक सत्सग मे एक शोक प्रस्ताव भी पारित किया तथा सामूहिक रूप मे गाव हडौदी मे जाकर शान्तियज्ञ किया तथा शोक सतप्त परिवारो को सान्त्वना भी दिलवाई।

चरखी दादरी आर्यसमाज के बढते कदम

जिला भिवानी की ही नहीं बल्कि हरयाणा की सबसे बडी तहसील दादरी की आर्यसमाज पिछले ६२ वर्षो से निरन्तर समाज के कल्याण कार्य आयोजन कर रही है। देश की आजादी से लेकर आजके युग मे निरन्तर कार्यरत है।

अब पिछले दिनो दादरी मे एक कालेज छात्र की हत्या के बाद छात्रगण आक्रोश मे आगये थे। सागवान खाप ने एक फैसला लिया कि आज के छात्रो मे शिष्टाचार एव अच्छे सस्कार के लिये आर्यसमाज जैसे सस्था से सहयोग लिया जाये। उसी समय से यह समाज सागवान खाप के गावो मे अपना कार्यक्रम प्रारम्भ कर दिया तथा सबसे पहले इस खाप के बडे गाव चरखी से प्रारम्भ किए। यहा दो दिन का कार्यक्रम जिसे देशभक्ति के गीत समाजसुधार शिष्टाचार की बातो पर प्रकाश डाला गया। जिसमे आर्यप्रतिनिधि सभा रोहतक के श्री जयपाल बेधडक, मन्त्री आर्यसमाज हरीश लाम्बा तथा प्रचारमन्त्री डा० धर्मवीर सागवान शामिल थे। इसके तुरन्त बाद डोहकी चन्देनी गोकल रुदडौल आदि ऐसे दो दशक गावो मे अब तक कार्यक्रम रखा जाचुका है। स्कूलो मे तथा कालेजो मे जाकर बच्चो को शिष्टाचार एव अच्छे सस्कारो की बातो को कहा गया जिससे काफी असर पड रहा है। यह मानव सेवा ट्रस्ट श्री अतरसिह श्योराण पत्रकार द्वारा मीटिग बुलाकर प्रारम्भ किया था। कर्नल रिसालसिह प्रधान एव बाबू धर्मवीर सागवान महासचिव ने भरसक प्रयत्न किया। शराब जैसी बुरी आदत को छुडवाने के लिये पुन शराब बन्द के लिये एक साहसी कदम भी उठाया गया था। आर्यप्रतिनिधिसभा हरयाणा रोहतक के सहयोग से प० गुरुदत्त शताब्दी समारोह राष्ट्रीय स्तर पर बडी धूमधाम से मनाया गया। विद्वानो द्वारा शास्त्रार्थ भी आर्यसमाज चरखीदादरी ने करवाया उसमे भी बडी उपलब्धि हुई है।

अब आर्यसमाज निकट भविष्य मे एक औषधालय तथा पुस्तकालय का निर्माण कर रही है। जमीन मिलते ही यह जनकल्याण कार्य प्रारम्भ हो जायेगा। इसके लिये जमीन देने की घोषणा स्वय मुख्यमत्री महोदय श्री ओमप्रकाश चौटाला जी भिवानी मे कर चुके है तथा जमीन सरकार से शीघ्र मिलने वाली है। विधायक श्री रणवीरसिह स्वय इसके लिए भरसक प्रयत्न कर रहे है। वह दिन दूर नही कि यह सस्था अपने कार्यो मे निरन्तर सफलता की ओर अग्रसर चलते हुए अपने लक्ष्य को पूरा कर लेगी।

गणतन्त्रदिवस पर चन्देनी में रंगारंग कार्यक्रम का आयोजन

गणतन्त्र दिवस पर राजकीय वरिष्ठ विद्यालय चन्देनी (भिवानी) मे प्राचार्य श्री सूबेसिह फोगाट की अध्यक्षता मे एक रगारग एव सास्कृतिक कार्यक्रम मनाया गया है। इस कार्यक्रम के मुख्यअतिथि ब्रिगेडियर श्री हरण्तसिह जी थे। इन्होने पाठशाला मे जिन छात्रो ने भाग लिया है उनको ५१००/- रुपये पारितोषित के रूप मे दिये हैं। समारोह का कुशल सचालन श्री रामकिशन शर्मा शास्त्री जी ने किया। छात्रो ने देशभक्ति कार्यक्रम के आर्यसमाज चन्देनी के पदाधिकारियो के द्वारा किया गया है।

आर्यसमाज सान्ताक्रुज (प०) मुम्बई द्वारा आयोजित पुरस्कार समारोह २००२

प्रात १० से मध्याह्न १२-३० बजे तक

अध्यक्ष-कैप्टन देवरत्न जी आर्य (प्रधान, सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधिसभा दिल्ली), मुख्यअतिथि-श्री वेदप्रकाश जी गोयल (केन्द्रीय जहाजरानी मन्त्री भारत सरकार), विशिष्टअतिथि-श्री ओकारनाथ जी आर्य (प्रधान, आर्यप्रतिनिधि सभा, मुम्बई), श्री मिठाईलाल जी सिह (मन्त्री आर्यप्रतिनिधिसभा मुम्बई)

पुरस्कार प्राप्तकर्त्ता-वेदवेदाग पुरस्कार-प० राजवीर जी शास्त्री (सम्पादक दयानन्द सन्देश), वेदोपदेशक पुरस्कार-प० उत्तमचन्द जी शरर (पानीपत हरियाणा), श्रीमती लीलावती महाशय "आर्य महिला पुरस्कार आचार्य कमला जी आर्या (कन्या गुरुकुल सासनी, हाथरस, उ०प्र०) श्रीमती शिवराजवती आर्या "बाल पुरस्कार", ब्र० ऋषिकुमार शुक्ल (गुरुकुल अयोध्या) सुश्री सुनेश आर्या (कन्या गुरुकुल चोटिपुरा) सयोजक-यशप्रिय आर्य (महामत्री आर्यसमाज सान्ताक्रुज)।

वेदों में गोहत्या मिथ्या और काल्पनिक

–डा० कृष्णलाल, विश्वनीड-ई ९३७, सरस्वती विहार, दिल्ली-११००३४

प्रस्तुत विषय पर सप्रमाण बहुत लिखा जा चुका है। मेरी अपनी पुस्तिका वैदिक यज्ञो का स्वरूप (पशुबलि के विशेष सन्दर्भ मे) १९८९ मे प्रकाशित हुई थी। वेदो मे गाय का एक नाम ही 'अघ्न्या'(जो हिसा के योग्य नहीं) है। स्वय यजुर्वेद (१ १) मे यजमान मे पशुओ की रक्षा की प्रार्थना की गई है-यजमानस्य पशून् पाहि। ऐसे वाक्य वेदो मे भरे पडे हैं। इनके होते हुए भी यदि कोई पशुहत्या या गोहत्या वेदमन्त्रो द्वारा सिद्ध करना चाहे तो उसे केवल सत्य के विरुद्ध दुराग्रह कहा जायेगा।

वैदिक शब्दो की मूलभावना तक पहुचने के लिये उनमे निहित धातु, निघटु शब्दार्थ और यास्क के निर्वचनो का ध्यान रखना आवश्यक है। वैदिक शब्दो की व्याख्या सामान्य लौकिक सस्कृत के शब्दो के समान नही हो सकती क्योकि उनमे अभिप्रेत अर्थ रहस्यमय होता है-निण्या वचासि। इसी तथ्य को ब्राह्मण ग्रन्थे मे यह कहकर बताया गया है कि देवो को प्रत्यक्ष अर्थ प्रिय नही होता, उन्हे तो परोक्ष अर्थ ही प्रिय होता है-**परोक्षप्रिया हि देवा प्रत्यक्षद्विष ।**

वेदो मे स्पष्ट शब्दो मे गाय की हिसा का निषेध किया गया है-**मा गामनागामदिति वधिष्ट** (ऋ० ८ १०१ १५)। गोहत्या करनेवाले को मृत्यु को देने की बात कही गई है-**अन्तकाय गोघातम्** (यजु० १७ २)। वेद मे घास जैसी क्षुद्र ओषधि की भी जड को हिसित न करने (न काटने) की प्रतिज्ञा कीगई है-**ओषध्यास्ते मूल मा हिसिषम्** (यजु० १ २५)। वेदो के इन वचनो के परिप्रेक्ष्य मे यदि कोई वेदो मे गोहत्या प्रतिपादित करने का प्रयत्न करता है तो वह केवल निन्दा और उपहास का ही पात्र है।

डी एन झा महोदय ने हिन्दुस्तान टाइम्स मे प्रकाशित लेख के आरम्भ मे गौओ नही, भैंसो के अग्नि द्वारा पकाये जाने के सन्दर्भ दिये हैं। यह स्मरणीय है कि पाणिनीय धातुपाठ मे पच् धातु के सेचन और सेवन अर्थ भी दिये गये हैं। झा महोदय द्वारा सन्दृब्ध प्रथम मन्त्र (५ २९ ७) का पूर्वार्ध निम्नलिखित है **सखा सख्ये अपचत् तूयमग्निरस्य क्रत्वा महिषा त्री शतानि।** इस इन्द्र की मित्रता मे उसके वृष्टिरूपी यज्ञ के लिये अग्नि ने तीन सौ महिषो (महान् मेघो) को शीघ्र सिक्त किया।) स्पष्ट ही यहा अग्नि सूर्य का द्योतक है जो वाष्पीकरण द्वारा मेघो का निर्माण कर उन्हे बढाता है।

पाश्चात्य विद्वान् मोनियर विलियम्स ने भी अपने सस्कृत-इग्लिश कोष मे ऋग्वेद के आधार पर पच् का अर्थ परिपक्व, बडा करना, पूर्ण करना, विकास करना दिया है (टु राइपन, मैच्योर, ब्रिग टु पर्फेक्शन, डिवेलप)।

इसी प्रकार **"पचच्छत महिषा इन्द्र तुभ्यम्"** (ऋ० ६ १७ ११) मे जहा ऊपरी सामान्य शब्दार्थ से इन्द्र के लिये अग्नि द्वारा सौ भैंसो के पकाये जाने की भ्रान्ति होती है वहा भी सूर्य द्वारा सौ (बहुत) मेघो के बडा करने का भाव स्पष्ट है। निम्नलिखित मन्त्र (ऋ० ८ १२ ८) भी परीक्ष्य है-

यदि प्रवृद्ध सत्पते सहस्र महिषा अघ
आदित्त इन्द्रिय महि प्र वावृधे।।

यहा सायण के भाष्य मे बडे-बडे वृत्रादि असुरो के वध को माना गया है (महिषान् महन्तमैतत् महतोऽसुरान वृत्रादीन् अवधी)। पूर्ण मन्त्र का अर्थ होगा-हे सज्जनो के रक्षक इन्द्र अति विशाल आपने जब सहस्र महिषो (महान् मेघो) को नष्ट किया तब आपका बडा बल और बढ गया।

इसी प्रकार ऋ० १० ९१ १४ मे जहा उक्षा (साडो की आहुति दिये जाने का उल्लेख प्रकट रूप मे दिखाई देता है वहा भी वेदो के प्रामाणिक भाष्यकार यास्क के अनुसार उक्षा साड नहीं है अपितु वर्षा को सेचन करनेवाले मेघ हैं। ऐसे वर्णनो को प्राकृतिक घटनाओ के रूप मे समझा जाना चाहिये। (तु०नि० १२.९ उक्षण उक्षतेर्वृद्धिकर्मण । उक्षत्युदकेनेति वा)।

वेद मे जहा भी गौ शब्द आया है, आवश्यक नहीं कि वहा सर्वत्र ही गाय अभिप्रेत हो। उदाहरणार्थ ऋ० १० ८९ ७ के मन्त्राश **"आ गा इन्द्रो अकृणुत स्वयुग्भि "** का सायण भाष्य यह है **स्वय युज्यमानै मरुद्भि गा उदकानि आ अकृणुत अस्मदभिमुख करोति।** (स्वय सयुक्त हुए मरुतो के द्वारा इन्द्र जल को हमारी ओर बहाता है।) इसी आधार पर ऋ० १० ८९ १४ मे भी गा से "प्रशसनीय जल पृथ्वी पर (मेघ से काटकर अलग किया गया) पडा रहता है" अर्थ उचित है।

स्वय वेद मे अनेक पशुओ के प्रतीकार्थ भी ध्यान देने योग्य है। तदनुसार अनड्वान् (बैल) प्राण है-**अनड्वान् प्राण उच्यते** (अथर्व० ११ ४ १३)। अश्व भी महान् प्रजननात्मक तत्त्व है-**अश्व आसीद् बृहद्वय** (यजु० २३ १२)।

अथर्ववेद (१९ ३ २) का निम्नलिखित मन्त्र पूर्ण अहिसा की भावना व्यक्त करता है -

यस्ते अप्सु महिमा यो वनेषु य ओषधीषु पशुष्वप्स्वन्त ।
अग्ने सर्वास्तन्व स रभस्व ताभिर्न एहि द्रविणोदा अजस्र ।।

वैदिक सहितायें सम्पूर्ण हिन्दू-चिन्तन का मूल आधार हैं। परवर्ती साहित्य (विशेष रूप से सूत्र-साहित्य) मे व्यक्तियो के स्वार्थ और खण्डित असम्यक् ज्ञान के कारण अनिष्ट अमिश्रण हुआ है। वह पतनोन्मुख साहित्य है जिसे आधार-रूप मे प्रस्तुत नही किया जा सकता। यदि कही उसमे प्रकट रूप मे मासभक्षण का या पशुहिसा का विधान है तो उसे अन्तिम प्रमाण नही माना जा सकता। प्रमाण वही है जो वेद की परोक्ष, यास्कसम्मत व्याख्या से सिद्ध होता है। निश्चित ही वह मासभक्षण अथवा पशुहिसा की पोषक नहीं है। विस्तृत विवेचन के लिये मेरी लघु पुस्तिका "वैदिक यज्ञो का स्वरूप (पशु-बलि के विशेष सन्दर्भ मे)" या "वैदिक वाड्मय-विश्लेषण" (जे०पी० पब्लिशिग हाउस, दिल्ली) देखी जा सकती है।

–डा० **कृष्णलाल**, पूर्व आचार्य, सस्कृत विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

आर्यसमाज बिसोहा (रेवाड़ी) का चुनाव

प्रधान-नेकीराम यादव, उपप्रधान-श्री धनपतसिह, श्री हरद्वारीलाल, मन्त्री व कोषाध्यक्ष-श्री यजपाल, उपमन्त्री-श्री गजराजसिह, प्रचारमन्त्री-ओमप्रकाश पूनिया, सम्पत्ति सरक्षक-श्री सत्यदेव शर्मा। **–नेकीराम यादव**

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ०१२६२–७६८७४, ७७८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ०१२६२–७७७२२) से प्रकाशित।
पत्र मे प्रकाशित लेख सामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री का सहमत होना आवश्यक नहीं। पत्र के प्रत्येक प्रकार के विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक होगा।

भारत सरकार द्वारा रजि० न० २३२०७/७३ सृष्टिसवत् १, ९६, ०८, ५३, १०२

पजीकरणसख्या टैक/85-2/2000 ☎ ०१२६२-७७७२२

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र रोहतक

प्रधानसम्पादक : यशपाल आचार्य, सभामन्त्री सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री

वर्ष २६ अंक १३ २१ फरवरी, २००२ वार्षिक शुल्क ८०) आजीवन शुल्क ८००) विदेश में २० डॉलर एक प्रति १.७०

ऋतुविज्ञान एवं ऋतुराज वसन्त के आगमन पर विशेष–

आई बहार ऋतुराज वसन्त की

लेखक : सुखदेव शास्त्री, महोपदेशक, दयानन्दमठ, रोहतक

आर्यो के आदि देश आर्यावर्त्त (भारत) के महर्षियो ने वेदो के आधार षड् ऋतुओ के अन्दर आनेवाले सभी पर्वो का विज्ञानपूर्वक अध्ययन करके भारतीयो के सामाजिक व्यवहार मे पर्वो के महत्त्व का वर्णन किया था। सभी पर्व ऋतुओ के ही आधार पर प्रचलित किये थे। इन पर्वो से विशेष शिक्षा प्राप्त करके मानव जीवन को सार्थक बनाते थे। इन पर्वो का आयोजन ठीक-ठीक मास-महीनो के अनुसार ही किया गया था। इनका आयोजन कोई साधारण कार्य नहीं था। सभी समाज के लोग सामूहिक रूप से इन्हे मनाकर अपने पवित्र सगठन का परिचय देते थे।

इनके साथ ही इन ऋतुओं के परिवर्तन के साथ-साथ ही वायुमण्डल मे भी भारी परिवर्तन आता है। वन-जगल-पर्वतो मे भी प्रत्येक ऋतु का अपना महत्त्व दिखाई देता है। अतएव इन छ ऋतुओ का अपना-अपना पृथक् रूप से महत्त्व है।

अब आपकी सेवा मे वेदो के आधार पर इनका वर्णन किया जाता है–

"ग्रीष्मो हेमन्त शिशिरो वसन्त शरद् वर्षा स्वित्ते नोदधात।
आ नो गोषु भजता प्रजाया निवात इद् व शरणे स्याम।।"

सरलार्थ सार इस प्रकार है–ग्रीष्म, हेमन्त, शिशिर, वसन्त, शरद्, वर्षाकाल ये छ ऋतुए हैं। ये ऋतुए हमे सुखपूर्वक गुजरने वाले जीवन मे ही स्थित रखे। इनमे हम कभी कष्ट मे न पडे। इनमे हम गौ आदि पशु और प्रजा पुत्र आदि मे सुख से बसे।

हम सदा प्रबल वायु के झोको और उपद्रवो से रहित छ ऋतुओ के अनुकूल अपने घर मे निवास करे। इसी प्रकार ऋग्वेद मण्डल १, सूक्त ९५, मन्त्र ३ में वसन्तादि ऋतुओ का उपदेश करते हुए लिखा है–

"त्रिणि जाना. .ऋतुन् प्रशासद् विदधौ अनुष्ठु" इसका अभिप्राय यह है कि सूर्य की गति ही सवत्सरात्मक कालको वसन्तादि छ ऋतुओं मे बाटती है और सूर्य इन वसन्त आदि ऋतुओ से इन पार्थिव प्राणियों-मनुष्यो को उपदेश सा देता प्रतीत होता है-१ वसन्त की भाति खिले हुए चित्त-पुष्पवाला बनकर रहना है। २ ग्रीष्म की भाति तेजस्वी बनकर रहना है। ३ वर्षा की भाति सब के सन्ताप को हरनेवाला एव सुखों की वर्षा करनेवाला बनना है। ४ शरद् से मर्यादा का पाठ पढना है, शरद् ऋतु मे जल मर्यादा मे बहते हैं। ५ हेमन्त से वृद्धि का पाठ पढना है। ६ शिशिर से अत्यन्त क्रियाशील होना है। इस प्रकार सूर्य द्वारा स्थापित इन ऋतुओ को अपने जीवन मे क्रियान्वित करना चाहिए।

वैसे तो समझने के लिये १२ महीनो का ऋतुओ मे अन्तर्भाव ऐसे भी जाना जा सकता है–१ मुख्य रूप से ऋतुए दो हैं। (१) ग्रीष्म, (२) शीत। २ ऋतुए तीन हैं–(१) ग्रीष्म, (२) वसन्त, (३) शरद्। इन तीनो ऋतुओ का वर्णन यजुर्वेद ३१, १४ मे देखा जा सकता है। मन्त्र है–

"यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत। वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्म शरद्धवि:।" पर पिता परमात्मा द्वारा जब इस सृष्टि यज्ञ की रचना प्रक्रिया आरम्भ हुई तो मानो, इस सृष्टि यज्ञ का घृत वसन्त, ईधन ग्रीष्म तथा हवि-सामग्री शरद् ऋतु थी।

इसी अनुक्रम मे ऋ १, १६४, मन्त्र २३ मे **"पचारे चक्रे परिवर्त्तमाने"** इस वेद मन्त्र की व्याख्या मे 'आचार्य यास्क' ने हेमन्त ऋतु मे शिशिर को मिलाकर लिखा–पञ्चारे, वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद् तथा हेमन्त रूपी पाच अरो वाले सवत्सर चक्र मे यह सारा विश्व स्थित है।

किन्तु इतना सब कुछ होने पर भी समस्त भूमण्डल मे भासमान सूर्य के चारो ओर पृथिवी के परिभ्रमण की गति से मौसम मे छ प्रकार का परिवर्तन आता है।

अत ऋ १, १६४, मन्त्र १२ के अन्तिम वाक्य मे कहा गया है–**सप्त चक्रे षडर आहुरर्पितम्।"** इस मन्त्र के अन्तिम "षडरे" शब्द का अर्थ करते हुए महर्षि दयानन्द लिखते है–जिसमे छ ऋतुए अरा रूप और "सप्तचक्रे" सात चक्र घूमने की परिधि विद्यमान है, उस मेघमण्डल मे वाणी के विषय को तुम जानो।

ऋतुराज वसन्त का आगमन–"वसन्त ऋतु का आगमन तो चैत्र और बैशाख महीने मे होता है। वेद के प्रमाण के आधार पर **"मधु माधवश्च वासन्तिकावृतौ"** इन दो महीनो मे होती है। किन्तु प्रकृति देवी का यह सारा समारोह ऋतुराज वसन्त के स्वागत के लिए ४० दिन पूर्व ही प्रारम्भ हो जाता है। जब स्वय प्रकृति देवी सर्वतोभावेन वसन्त के स्वागत मे निमग्न है तो मनुष्य के वश की क्या बात है, वह भी वसन्त का स्वागत करता है।

प्राचीन आर्यो ने इस सुन्दर सुखद सुरम्य ऋतु का आनन्द मनाने के लिए "वसन्त पचमी" के पर्व की रचना की थी। माघ सुदी पचमी के दिन ही वसन्त पंचमी का आरम्भ हो जाता है। इसके बीच मे ही "फागन" का मस्त महीना भी आ जाता है। जाडा समाप्त सा हो गया है। शिशिर ऋतु समाप्त हो गई है। सरस वसन्त मे वन-उपवन मे, एव सारी ही वसुधाभर मे अपने आने की घोषणा कर दी है।

"उन्मादित पुष्प करे लताओ से दुलार, कूके कोयल, प्रकृति करे शृगार।
पीताम्बर सी सरसो कहे बार-बार, लो, फिर आई वसन्त बहार।।"
"अब रजत मजरियो से, लद गई आम्रतक की डाली।
झर रहे ढाक, पीपल के दल, हो उठी कोकिल मतवाली।"

(शेष पृष्ठ २ पर)

वैदिक-स्वाध्याय

प्रभु के महान् प्यारे

महीरस्य प्रणीतय. पूर्वीरुत प्रशस्तय: ।
नास्य क्षीयन्त ऊतय: ।। ऋ० ६ ४५ ३ ।।

शब्दार्थ–(अस्य) इस परमेश्वर के (**प्रणीतय.**) आगे लेजाने के-उन्नत करने के मार्ग (**मही:**) बडे **हैं** (**उत प्रशस्तय पूर्वी**) और इसकी प्रशसाए सनातन हैं (**अस्य ऊतय न क्षीयन्ते**) इसकी रक्षाये कभी क्षीण नहीं होतीं।

विनय–मैं क्या बतलाऊ प्रभु किन-किन अद्भुत ढगो से मनुष्य को उन्नत कर रहे हैं। जब मनुष्य रोता और पीटता रहता है, जब उसके अन्दर ऐसे युद्ध चल रहे होते हैं कि उसे विफलता पर विफलता ही मिलती जाती है, पीछे से पता लगता है कि उस समय मे, उन्हीं दिनो मे, उसने अपनी उन्नति का बहुत बडा रास्ता तय कर लिया होता है। मनुष्य प्रभु की कल्याणमयी घटनाओ को नहीं समझ पाता कि उन घटनाओ से कभी–सुदूर भविष्य मे–उसका कल्याण कैसे सधेगा। प्रभु के उन्नत करनेवाले मार्ग इतने महान् और विशाल हैं कि अल्पदृष्टि मनुष्य उन्हे पूर्णता मे कभी नहीं देख सकता, अतएव वह कल्याण की तरफ जाता हुआ भी घबराया रहता है। प्रत्येक मनुष्य अपनी-अपनी प्रकृति–स्वभाव-के अनुसार अपने-अपने निराले ढग से उन्नत व विकसित होरहा है। जब मनुष्य अपने ही उन्नति-मार्ग को नहीं समझ पाता तो उसके लिये दूसरे मनुष्यो के विकास का दावा भरना कितना कठिन साहस है ! उस अगम्य लीलावाले प्रभु की जिस 'प्रणीति' से जिस व्यक्ति ने उन्नति पायी होती है वह व्यक्ति उसी रूप मे उस प्रभु के गीत गाता फिरता है। इस तरह अनादिकाल से मनुष्य नानाप्रकार से उसकी प्रशस्तिया गाते आरहे हैं और गाते रहेगे। मनुष्य उसकी स्तुतियो का कैसे पार पावे ? भक्त पुरुष तो उस प्रभु की रक्षाओ का–रक्षा के प्रकारो का–ही अन्त नहीं देखता। प्रभु की रक्षण-शक्ति कभी क्षीण नहीं होती, वहा के रक्षणो का एक ऐसा सनातन प्रवाह बह रहा है कि वह सब मनुष्य, पशु, पक्षी, कीट-पतगो की, सब स्थावर और अस्थावर जगत् की, एक ही समय मे अकल्पनीय तरीको से रक्षा कर रहा है। मनुष्य अपने पिछले कुछ अनुभवो के आधार पर सोचता है कि ऐसा होने से मेरी रक्षा हो जायगी अत वह वैसा ही होने की प्रभु से प्रार्थना करता है और वैसी ही आशा करता है। पर इस बार प्रभु एक बिल्कुल नये मार्ग से रक्षा करके मनुष्य को आश्चर्यचकित कर देते हैं एव नये से नये अकल्पनीय ढगो से मनुष्य को प्रभु का रक्षण मिलता जाता है। तब पता लगता है कि प्रभु ससार का सब प्रकार से कल्याण ही कर रहे हैं। हम माने या न माने, पर वे तो हमे मारते हुए भी हमारी रक्षा कर रहे हैं। अहो, देखो उस प्रभु के उन्नति-मार्ग महान् हैं, उसकी रक्षा के प्रकार अनन्त हैं, सब जाननेवाला ससार उसकी स्तुतिया ही स्तुतिया गाता है। **(वैदिक विनय से)**

आई बहार ऋतुराज वसन्त की... (पृष्ठ एक का शेष)

कविशिरोमणि कालिदास वसन्त का वर्णन करते हुए लिखते हैं–

"कुसुमजन्म ततो नवपल्लवास्तदनुषट्पदकोकिलकूजितम् ।"

अर्थात् पहले फूल आते हैं, फिर पल्लव आते हैं फिर भौंरे मण्डराते हैं और फिर कोयल अपनी मीठी आवाज मे कुहू, कुहू करके कूकने लगती है, मानो,वह कुहू-कुहू करके कह रही है ओ सृष्टि रचानेवाले ! तू कहा है ?

चारो तरफ हरियाली ही हरियाली, मानो, परमात्मा ने खेतों में लाकर सारा "हरयाणा" ही बसा दिया है। फूलो फलो से आच्छादित लताए, सुन्दर सुगन्धित, सुवासित खिले हुए फूल, उन पर अपनी प्रेयसी भोरी से वार्त्तालाप करते हुए भौंरे, सरसो की पीली चादर से ढकी वसुन्धरा, मानो, वानप्रस्थी पीले वस्त्र पहिने खेतों मे सुगन्धित यज्ञ मे आहुतिया दे रहे हो। मौज, मस्ती का आलम, यही तो है वसन्त। चारो ओर वसन्त का ही साम्राज्य है।

वसन्त पचमी का महत्त्व तब और भी बढ जाता है, जब इस दिन वीर बालक हकीकत राय का बलिदान हुआ था। वैदिक धर्म की रक्षा करते हुए चोटी, जनेऊ की रक्षा करते हुए यह वीर बालक शहीद हुआ था। इसी प्रकार २३ मार्च, १९३१ को वसन्ती रग की प्रशंसा करते हुए–**"मेरा रंग दे वसन्ती चोला, मेरा रग दे हो, मेरा रग दे वसन्ती चोला।"** गीत को गाते हुए, इन्कलाब जिन्दाबाद के नारे लगाते हुए **"माए रग दे वसन्ती चोला"** के गीत गाते हुए भगतसिह, राजगुरु, सुखदेव ने हसते-हसते फासी के फंदे को अपने गले मे डाल लिया था। वसन्ती रग ने उनके मनोबल को बढाया था।

इसी "वसन्त पचमी" को स्वतन्त्रता की अलख जगाने वाले, महान् गोरक्षक सतगुरु रामसिह नामधारी का भी जन्म हुआ था। नामधारी सिक्खो ने गोरक्षा के लिए अनेक बलिदान दिए थे।

किसानो के मसीहा, दीनबन्धु श्री छोटूराम जी की जयन्ती भी वसन्त पचमी को ही मनाई जाती है। अब यह १७ फरवरी को मनाई जा रही है। दीनबन्धु चौ० छोटूराम का जन्म १८८१ मे रोहतक जिले के सापला के पास 'गढी" ग्राम मे हुआ था। इनका जन्म साधारण किसान के घर मे हुआ था। छोटूराम बचपन से ही परिश्रमी थे। उन्होने बडे परिश्रम से बी ए व एल एल बी की परीक्षाए पास की। रोहतक मे ही वकालत की। २६ मार्च, १९१३ मे जाट सस्कृत हाई स्कूल की नींव रखी। वे १९२३ से कौंसिल के चुनाव मे विजयी रहे। १९२३ से १९२६ तक वे पजाब मे मन्त्री रहे। १९३७ मे वे पजाब के विकासमन्त्री रहे। उन्होने किसानो के लिए अनेक कानून बनवाए। मुस्लिम किसान भी उन्हे "छोटाराम" कहकर पुकारते थे। उन्होने अपने जीवन मे सबसे मुख्य कार्य मि० जिन्ना को धमकाकर किया था। मि० जिन्ना पाकिस्तान की योजना को लेकर चौधरी छोटूराम से सहमति चाहते थे, किन्तु छोटूराम ने उन्हे आदेश दिया कि २४ घण्टे मे पजाब से बाहर हो जाओ, नहीं तो गिरफ्तार कर लि जाओगे। जिन्ना पजाब छोडकर चला गया। चौ० छोटूराम जी ने म० गांधी को भी पत्र लिखा था कि "जिन्ना को मान्यता मत दो" किन्तु गाधी जी ने इसे नहीं समझा। काग्रेस के नेताओ की स्वीकृति से पाकिस्तान बना, यदि चौ० छोटूराम की मान लेते तो पाकिस्तान नहीं बनता। यह है वसन्त पचमी का महत्त्व।

इस ऋतुराज वसन्त के विषय में अन्त मे–

फाल्गुन के महीने का सुहाना परिवेश,
धारे हैं लता-पुष्प वसन्ती गणवेश।
सोती हुई कलियो को जगाकर चुपके,
पहुंचाती हैं तितलिया पिया का सन्देश।।

गुलाब देना महंगा पड़ा मंजनू को

रोहतक। वेलेन्टाइन-डे पर गुलाब का फूल देना उस समय एक मजनू को महगा पडा जब उसने झज्जर रोड से कालेज जा रही छात्रा का रास्ता रोककर उसे गुलाब देने का प्रयास किया। गुलाब का फूल लेने की बजाय उक्त छात्रा ने मजनू के गाल पर जोरदार तमाचा जडा। यह देखकर राहगीर हक्के-बक्के रह गये और मजनू दुम दबाकर भाग गया।

इधर शिवसेना की झज्जर इकाई ने वेलेन्टाइन-डे का विरोध जताते हुए जिला अध्यक्ष शिशुपाल मलिक की अध्यक्षता में काले बिल्ले लगाकर प्रदर्शन किया। **(दैनिक ट्रिब्यून से साभार)**

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की साधारण सभा की बैठक के निश्चय

हरयाणा प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन अब ६, ७ अप्रैल को होगा

दिनाक १६ फरवरी २००२ शनिवार को प्रात ११ बजे सभा कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ रोहतक मे सभा प्रधान स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता मे बैठक हुई। इस बैठक मे प्रो० शेरसिह जी पूर्व रक्षाराज्यमन्त्री एव अध्यक्ष हरयाणा रक्षावाहिनी, स्वामी कर्मपाल जी अध्यक्ष सर्वखाप पचायत, श्रीयशपाल आचार्य मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, श्री हीरानन्द आर्य पूर्व एम एल ए व श्री वेदव्रत शास्त्री सभा उपप्रधान, श्री सुरेन्द्र शास्त्री व श्री केदारसिह आर्य सभाउपमन्त्री, श्री चौ सूबेसिह पूर्व एसडीएम वैद्य ताराचन्द आर्य, श्री सुखवीर शास्त्री, श्री किशनचन्द्र सैनी गुडगाव, श्री आजाद सिह सोनीपत, श्री रामचन्द्र शास्त्री सोनीपत, आचार्य सुदर्शनव, श्री पूर्णसिह झज्जर। सभा के अन्तरग सदस्यो विशेष आमन्त्रित सदस्यो, वेदप्रचार मण्डल के अधिकारियो व आर्यसमाज के प्रमुख कार्यकर्ताओ ने भाग लिया। बैठक मे निम्नलिखित निश्चय किए गए–

१ रोहतक मे होने वाले प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन की तिथि ३०, ३१ मार्च से परिवर्तित कर ६-७ अप्रैल, २००२ को रोहतक मे आयोजित करने का निर्णय किया गया। २८, २९ मार्च को होली तथा फाग के कारण यह परिवर्तन किया गया है।

२ इस आर्य महासम्मेलन के अवसर पर ६ अप्रैल २००२ को रोहतक मे एक विशाल शोभायात्रा निकाली जाएगी। ७ अप्रैल के सम्मेलन मे सतलुज-यमुना लिग नहर के शीघ्र निर्माण को पूरा करवाने के लिए एक ठोस कार्यक्रम बनाया जाएगा। सभा ने उच्चतम न्यायालय के निर्णय का स्वागत किया है। भारत सरकार से अनुरोध किया है कि एक वर्ष पूरा होने से पूर्व नहर का पूरा निर्माण पजाब सरकार से करवाया जाए।

३ ७ अप्रैल को आर्य महासम्मेलन के बाद हरयाणा के प्रत्येक जिले मे भी आर्य सम्मेलन आयोजित किये जाएगे। हरयाणा मे वेदप्रचार का सदेश गावो-गावो तथा हरयाणा के प्रत्येक शहरो तक पहुचाने हेतु सभा के लिये एक वेदप्रचार वाहन खरीदा जाएगा। जिसमे सभा के प्रचारक तथा अधिकारियों द्वारा प्रचार करवाया जाएगा। सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रन्थों को अधिक से अधिक नरनारियो तक पहुचाने का यत्न किया जावेगा।

४ इस आर्यमहासम्मेलन की तैयारी के लिए सभाप्रधान स्वामी ओमानन्द जी, सभामन्त्री आचार्य यशपाल जी एवं सभा कोषाध्यक्ष श्री बलराज एलाबादी पानीपत एक-एक लाख रुपया एकत्रित करके सभा को देंगे। सभा के सभी उपप्रधान प्रत्येक ५१००० रु० तथा सभा उपमंत्री प्रत्येक २५००० रु० सभी अन्तरग सदस्य एव विशेष आमन्त्रित सदस्य प्रत्येक एक लाख रुपये एकत्रित करके देगे। सभा उपप्रधान भगत मगतूराम जी ने यह प्रस्ताव रखा तथा सभामत्री ने इसका समर्थन किया। भगत जी ने ५१ हजार रु० स्वय देने का वचन दिया।

श्री पृथ्वीसिह चहल जीद सभा अन्तरग सदस्य ने २१ हजार रुपये व्यक्तिगत रूप से तथा जिला जींद की तरफ से ५१ हजार रुपये, महाशय श्रीचन्द अन्तरग सदस्य अनगपुर (फरीदाबाद) ने २५ हजार से अधिक देने का वचन दिया तथा श्री भूषण कुमार ओबराय ने पहली किश्त २५ हजार रुपये से अधिक शीघ्र देने का तथा जिला अम्बाला की तरफ से ५१ हजार रुपये एकत्रित करके देने की घोषणा की और अधिक से अधिक सख्या मे रोहतक आने का आश्वासन भी दिया।

५ प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन के अवसर पर ६ व ७ अप्रैल २००२ को यज्ञ श्री आचार्य भद्रसैन शास्त्री की देखरेख मे होगा। प्रसाद व यज्ञ का खर्च भी वे स्वय [illegible]हन करेगे। जो २१ हजार रुपये के [illegible]रीब होगा।

६ आर्य महासम्मेलन के अवसर पर सभा की ओर से एक स्मारिका का प्रकाशन किया जाएगा। इसमे आर्यसमाज के इतिहास तथा गतिविधिया एव आर्य बलिदानियो के परिचय छापे जायेगे। इस अवसर पर आर्य बलिदान भवन का उद्घाटन होगा।

७ सतलुज यमुना लिग नहर के निर्माण और सुप्रीम कोर्ट के फैसले को लागू करवाने के लिए सभी राजनैतिक पार्टियो का एक सम्मेलन बुलाने का निर्णय हुआ।

८ श्री हीरानन्द आर्य पूर्व एम एल ए ने कहा कि सतलुज यमुना लिक नहर के बारे तत्कालीन मुख्यमन्त्री श्री सुरजीत सिह बरनाला ने काम किया था। अब तक थीन डैम बन चुका है पानी रुकने के बाद जो बिजली तैयार हो रही है हरयाणा का उसमे कितना हिस्सा हो यह तय नहीं है। हरयाणा के मुख्यमन्त्री से इस सम्बन्ध मे कार्यवाही करने का अनुरोध किया। सतलुज यमुना लिक नहर हरयाणा के किसानो की जीवनरेखा है हरयाणा सरकार को इस सम्बन्ध मे प्रभावशाली कदम उठाने चाहिए। पानी का हक हमारा है और पजाब सरकार से भीख नहीं माग रहे हैं। आर्यसमाज सदा से जनहित कार्य करता रहा है। पानी आने से हरयाणा का ही नहीं अपितु सारे राष्ट्र का हित है। पजाब पाकिस्तान को मुफ्त पानी देकर राष्ट्र के साथ द्रोह कर रहा है।

९ प्रो० शेरसिह जी पूर्व रक्षा राज्यमन्त्री ने कहा कि सतलुज यमुना लिक नहर निर्माण बारे हम सुप्रीम कोर्ट के फैसले का स्वागत करते हैं। सुप्रीम कोर्ट के फैसले पर भारत सरकार व पजाब सरकार को अमल करना चाहिए। पजाब की सभी राजनैतिक पार्टिया इस मुद्दे पर एक हो गई है। हरयाणा की सभी राजनैतिक पार्टियो को भी इस पर सगठित होना चाहिए। प्रजातन्त्र मे जिसकी आवाज ज्यादा होती है उसकी कीमत होती है। इस बैठक मे प्रो० शेरसिह जी ने घोषणा की कि वे भविष्य मे कोई राजनैतिक चुनाव नही लडेगे।

१० आर्यसमाज के विस्तार के लिए हरयाणा प्रान्तीय आर्य अध्यापक सघ का गठन किया जाएगा। इसका प्रधान सत्यवीर शास्त्री गढी बोहर तथा मन्त्री श्री ईश्वरसिह शास्त्री खरावड को बनाया गया। इस प्रकार हरयाणा प्रान्तीय आर्य छात्र सघ का भी गठन किया जाएगा।

११ **सभा के अधिकारियो का हरयाणा का तूफानी भ्रमण**–सभा के अधिकारियो ने गत सप्ताह पानीपत, कुरुक्षेत्र, शाहबाद मार्कण्डा, लाडवा, यमुनानगर, अम्बाला आदि आर्यसमाजो तथा आर्य शिक्षण सस्थाओ का भ्रमण करके आर्य महासम्मेलन की तैयारी हेतु तूफानी भ्रमण किया है और जहा-जहा विवाद हैं, उन्हे सभामन्त्री आचार्य यशपाल जी शास्त्री, श्री सुरेन्द्र शास्त्री सभाउपमन्त्री तथा अन्तरग सदस्य वैद्य ताराचन्द आर्य ने समाप्त करवाने का यत्न किया है। सभी आर्यसमाजो तथा शिक्षण सस्थाओ के अधिकारियो आर्य महासम्मेलन को सफल करने के लिए तन, मन तथा धन से सहयोग देने का आश्वासन दिया है। शीघ्र ही जिला सोनीपत फरीदाबाद गुडगाव, रेवाडी तथा झज्जर आदि के आर्यसमाजो तथा आर्य शिक्षण सस्थाओ मे भी सम्पर्क करके सहयोग प्राप्त किया जावेगा।

–केदारसिह आर्य
सभा उपमन्त्री

पन्द्रहवां अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक पुरोहित प्रशिक्षण शिविर इस वर्ष हैदराबाद में

विगत सोलह वर्षो से अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान हैदराबाद द्वारा सचालित अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक पुरोहित प्रशिक्षण शिविर हैदराबाद मे आयोजित किया जा रहा है। विगत वर्षो मे एक हजार से अधिक पुरोहित हमारे द्वारा आयोजित शिविर मे प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके हैं। इस शिविर मे जहा मन्त्रो का उच्चारण शुद्ध कराया जाता है वहीं पर सस्कारो की विधि भी महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रणीत सस्कार विधि के सर्वथा अनुरूप कराई जाती है। साथ ही आर्यसमाज का सैद्धान्तिक ज्ञान तथा समस्त शकाओ का समाधान भी कराया जाता है। प्रशिक्षणार्थियो को १५ अप्रैल तक आवेदन पत्र मगवाकर प्रतिष्ठान के कार्यालय मे भेज देने होगे। इस वर्ष ५० (पचास) प्रशिक्षणार्थियो से अधिक प्रशिक्षणार्थियो को प्रवेश नहीं दिया जायेगा। आवेदन पत्र की प्राप्ति के क्रम से प्रवेश दिया जायेगा। अत शीघ्र ही आवेदन पत्र के लिए निम्न पते पर पत्र व्यवहार द्वारा प्रार्थना पत्र भेजियेगा।

पता–अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान,
वेद मन्दिर महर्षि दयानन्द मार्ग, हैदराबाद-५०००२७ आ प्र

आर्यसमाज कनीना (महेन्द्रगढ़) का चुनाव

प्रधान–श्री देवराज आर्य, उपप्रधान–श्री रामपत आर्य, मन्त्री–श्री बलवान आर्य, उपमन्त्री–श्री हिम्मत आर्य, कोषाध्यक्ष–मा० रामप्रताप आर्य।

वैदिक संस्कृति में अतिथियज्ञ की महत्ता

लेखक : प्रतापसिंह शास्त्री, पत्रकार, हिसार

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने ग्रन्थो मे वेदमन्त्रो के माध्यम से अतिथियज्ञ की महत्ता पर जो प्रकाश डाला है और विशेषकर अथर्ववेद के काण्ड-९ सूक्त-६, काण्ड-१५ सूक्त-११ तथा ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका और ऋग्वेद मे व मनुस्मृति आदि ग्रन्थो मे अतिथियज्ञ का जो वर्णन उपलब्ध है उस अतिथियज्ञ के स्वरूप से आज का मानव अनभिज्ञ सा प्रतीत होता है। क्योकि वह अतिथि के स्वरूप को नहीं जानता यही कारण है कि आजके इस युग मे अतिथियो का सत्कार कम किया जाता है। वैदिक सस्कृति ही यज्ञीय सस्कृति है। पच महायज्ञ आत्मोत्थान के लिए उसी प्रकार सहायक हैं जैसे सोलह सस्कार सहायक हैं। आर्यो के दैनिक कर्त्तव्यो मे पाच महायज्ञो का महत्त्वपूर्ण स्थान है। महर्षि दयानन्द ने आर्यो के लिए "पच महायज्ञविधि" नाम से लघुग्रन्थ लिखकर इन्हे अनिवार्य बताया है। मैं इस लेख मे केवलमात्र अतिथियज्ञ के विषय मे चर्चा करूगा। आचार्य यास्क ने अपने "निरुक्त" ग्रन्थ मे अतिथि शब्द की व्युत्पत्ति करते हुए लिखा-"**अतिथि रमयतितो गृहान्भवति, अभ्येतितिथि षु परकुलानिति वा**" अर्थात् अतिथि इधर-उधर घरो मे पहुचता रहता है या पौर्णमासी आदि तिथियो मे वह पर गृह या परकुलो मे जाता है।

अथर्ववेद के हिन्दी भाष्यकार श्री क्षेमकरणदास त्रिवेदी ने लिखा है-मन्त्र देखिए-

"**तद् यस्यैव विद्वान् व्रात्योऽतिथि-र्गृहानागच्छेत।।१।।**

स्वयमेनभभ्युदेत्य ब्रूयाद व्रात्य-क्वाऽवात्सीर्व्रात्योदं व्रात्य तर्पयन्तु व्रात्य यथा ते प्रिय तथास्तु व्रात्य यथा ते वशस्तथास्तु व्रात्य यथा ते निकाम-स्तथास्त्विति। अथर्ववेद काण्ड-१५। सूक्त-११-म० १, २)

अतिथि सत्कार विधान का उपदेश :—इन मन्त्रो मे अतिथि के स्वरूप की ओर सकेत है कि जो पूर्ण विद्वान्, परोपकारी, जितेन्द्रिय, धार्मिक, सत्यवादी छलकपटरहित, नित्य, भ्रमण करनेवाले मनुष्य होते हैं उनको अतिथि कहते है और जो घर मे पूर्वोक्त गुणयुक्त विद्वान् उत्तम गुण विशिष्ट सेवा करने योग्य अतिथि आवे तथा जिसके आने-जाने की कोई भी तिथि निश्चित न हो अचानक आवे और जावे। जब इस प्रकार का अतिथि गृहस्थो के घर मे प्राप्त हो। तब उसको गृहस्थ अत्यन्त प्रेम से उठकर नमस्कार करके उत्तम आसन पर बैठाकर उससे पूछे आपको जल व किसी अन्य वस्तु की इच्छा हो तो कहिए इस प्रकार उसको प्रसन्न कर और स्वय प्रसन्न होकर प्रसन्नचित्त होकर अतिथि से पूछे कि हे व्रात्य ! उत्तम पुरुष आपने यहा आने से पूर्व कहा वास किया था ? हे अतिथि ! यह जल लो तथा हम अपने सत्य प्रेम से आपको तृप्त करते हैं और सब हमारे मित्र लोग आपके उपदेश से विज्ञानयुक्त होकर सदा प्रसन्न रहें। जिससे आप और हम लोग परस्पर सेवा और सत्सगपूर्वक विद्या वृद्धि से सदा आनन्दमय हो।

उक्त दोनो मन्त्र महर्षि दयानन्दकृत ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका अतिथि यज्ञ विषय मे व्याख्यात हैं। अथर्ववेद के उक्त काण्ड-१५ मे सूक्त ११ मे मन्त्र-३, ४ ५, ६, ७, ८, ९, १० ११ तथा सूक्त-१२ मे भी इसी प्रकार से अतिथियज्ञ का सविस्तारपूर्वक वर्णन है। भावार्थ यह है कि गृहस्थअतिथि की प्रधानता मानने से अपनी प्रधानता को दृढ करे तथा गृहस्थ लोग अतिथि महात्माओ का सत्कार करके उनके सदुपदेश से अपना जीवन उत्तम बनावे।

इसके अतिरिक्त अथर्ववेद मे तीन अग्नियो का प्रयोग अतिथि के निमित्त किया गया है उस अग्नि की सज्ञा आहवनीय अग्नि से की गई है और जिस अग्नि का प्रयोग गृहकार्य के निमित्त किया जाता है उस अग्नि का नाम गार्हपत्य अग्नि है तथा जिस अग्नि का प्रयोग अतिथि के भोजन आदि पकाने के निमित्त किया जाता है उसकी उपमा दक्षिणाग्नि से दीगई है। यथा-"**अतिथिना स आहवनीयो योवेश्मनिस गार्हपत्यो यस्मिन्पचन्ति स दक्षिणाग्नि।।**" इस प्रकार से अतिथि सेवा का फल स्वत ही प्राप्त होता है और इसके विपरीत अतिथि सत्कार न करने से अनेक प्रकार के अनर्थ तथा प्रजा, पशु, कीर्ति आदि का नष्ट होना बताया गया है। इन भावनाओ का स्पष्टीकरण करने के लिए अथर्ववेद काण्ड-९ सूक्त-६ के १ से ६ मन्त्रो पर विचार कीजिए-

वेद भाष्यकार श्री क्षेमकरणदास त्रिवेदी निम्न मन्त्रों पर अपने विचार लिखते रहे हैं- मन्त्र-"**इष्ट च वा एष. पूर्त च गृहाणमश्नाति य पूर्वोऽतिथिरश्नाति।।१।।**

अर्थ—वह गृहस्थ निश्चय करके इष्ट सुख (सुख, वेदाध्ययन आदि) और अन्नदान आदि को घरो के बीच (अश्नाति) भक्षण (अर्थात् नाश) करता है जो अतिथि से पहले (अश्नाति) खाता है। भावार्थ यह है गृहस्थो को उचित है कि अपने सुख वृद्धि के लिए उपस्थित अतिथियो को जिमाकर आप जीमे।

यह मन्त्र महर्षि दयानन्दकृत सस्कारविधि सन्यासाश्रम प्रकरण मे व्याख्यात है। मन्त्र-२ "**पश्यत वा एष रस च गृहाणामश्नाति य पूर्वोऽतिथेरश्नाति।**" मन्त्र-३ "**ऊर्जा च वा एष स्फाति च गृहाणामश्नाति य पूर्वोऽतिथेरश्नाति।**" मन्त्र-४ "**प्रजा च वा एष पशूश्च गृहाणामश्नाति य. पूर्वोऽतिथेरश्नाति।।** मन्त्र-५ "**कीर्ति वा एष यशश्च गृहाणामश्नाति य पूर्वोऽतिथेरश्नाति।।**" मन्त्र-६ "**श्रिय च वा एष सविद च गृहाणामश्नाति य पूर्वोऽतिथेरश्नाति।**" मन्त्र-७ "**एष वा अतिथिर्यच्छोत्रियस्तस्मात पूर्वो नाश्नीयात्।।**

इन उक्त सात मन्त्रो का वास्तविक अभिप्राय यही है कि जो गृहस्थ अतिथि से पूर्व भोजनादि करता है वह गृहस्थ प्रजा, पशु, कीति, यज्ञ, क्रिया आदि सम्पूर्ण सम्पत्ति को अतिथि से पूर्व भोजन कर स्वय ही नष्ट कर लेता है। जो घर आये अतिथि का आद तथा सत्कार विधिपूर्वक नहीं करता वह अपनी अनेक विध सम्पत्ति को नष्ट कर पाप को भोगनेवाला होता है। अत प्रत्येक गृहस्थ को उक्त मन्त्रो के आधार पर ही सकेत किया गया है कि जो अतिथि होता है वह "**श्रोत्रिय**" कहाता है उसकी सेवा से यश, आयु तथा स्वर्ग (सुख विशेष) की प्राप्ति होती है। क्षेमकरणदास त्रिवेदी जी लिखते हैं-"गृहस्थ लोग अतिथि का तिरस्कार करने से महाविपत्तियो मे फसते हैं। अतिथि का सत्कार करने से गृहस्थ के शुभकर्म निर्विघ्न होकर सदा चलते रहते हैं। गृहस्थ को यही सुखदायी है कि अतिथि को अच्छे-अच्छे रोचक बुद्धिवर्धक पदार्थ फल, अक्षोट आदि जिमाकर आप जीमें, जिससे वह सत्कृत विद्वान् यथावत उपदेश करे।" महर्षि मनु महाराज ने मनुस्मृति मे भी ऐसा ही उपदेश दिया है किन्तु वर्तमान युग मे प्राय प्रश्न स्वाभाविक है कि आज मनुष्य स्वय अपनी उदरपूर्ति करने में असमर्थ सा होरहा दिखाई देता है अत वह अतिथि के लिए नाना व्यजन कहा से जुटाए ? इस प्रश्न का समाधान करते हुए मनु महर्षि लिख गये थे- "**तृणानि भूमि उदक वाक् चतुर्थी च सूनृता।। एतान्यपि सतां गेहे नोच्छिद्यन्ते कदाचत।।** (३।१०१) सोने के लिए तृण (तिनके, घास आदि), विश्राम के लिए भूमि, चरण धोने के लिए जल, और मधुरवाणी, प्रियवचन, अतिथिसेवा के लिए यह चार वस्तुए सज्जन पुरुषो, भद्रपुरुषो के घर से कभी नष्ट नहीं होते। अभिप्राय यह है कि सज्जन पुरुष के यहा यदि नाना पदार्थ उपलब्ध न हो तो उक्त वस्तुओ से ही अतिथि सेवा करे। लेकिन वेद तो उपदेश देता है-"**स्याम पतयो रयिणाम्**" हम धन के स्वामी बने। सज्जनो को परिश्रम व बुद्धिपूर्वक धन कमाना चाहिए ताकि वे उस धन से परोपकार कर सके। पाच महायज्ञो मे अतिथि यज्ञ को महर्षि ने विशेष महत्त्व प्रदान किया है। जिस प्रकार ब्रह्म यज्ञ देवयज्ञ आदि से मनुष्य जीवन की उन्नति होती है उसी प्रकार अतिथि यज्ञ के द्वारा मनुष्यमात्र की उन्नति स्वाभाविक है। इसमे प्रमाण के लिए अथर्ववेद के सैकडो मन्त्र प्रस्तुत किये जा सकते हैं जिनमे अतिथि यज्ञ के करने से विभिन्न प्रकार के फलो की प्राप्ति और उसके न करने से अनेक प्रकार की हानियो का वर्णन मिलता है। इस प्रकार का विवेचन अथर्ववेद के मन्त्रो के आधार पर किया जारहा है। मन्त्र प्रस्तुत है-**सर्वो वा एष जग्ध पाप्मा यस्यान्नमश्नन्ति** अथर्व० काण्ड-९ मा ८ सूक्त-६ पर्याय-२। **सर्वो वा एषोऽजग्ध पाप्मा यस्यान्न नाश्नन्ति।।** अथर्व० काण्ड-९ मन्त्र-९ सूक्त-६ अर्थात् जिस मनुष्य का अन्न अतिथि द्वारा ग्रहण किया जाता है उस मनुष्य की सम्पूर्ण बुराइयो से मुक्ति हो जाती है और जिस मनुष्य का अन्न अतिथि के द्वारा ग्रहण नहीं किया जाता उसकी बुराइयो से निवृत्ति नहीं होती। ऐसे सकेत उक्त दो मन्त्रो मे उपलब्ध हैं। भाव ये है कि अतिथि भोजन करके गृहस्थ को उत्तम उपदेश देकर दुखों से छुडाते हैं इससे गृहस्थ विद्वानों को

महात्माओ को संन्यासियो को वेदप्रचारको को उपदेशको को भोजनदान करके उनसे शिक्षा लेकर ज्ञान प्राप्त कर बुराइयो को छोडकर सुखी हो सकते हैं। महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश के चौथे समुल्लास मे अतिथियज्ञ के वर्णन मे लिखा है-समय पाके गृहस्थ और सजादि भी अतिथवत सत्कार करने योग्य हैं परन्तु-**पाषण्डिनो विकर्मस्यान वैडालवृत्तिकान शठान्। हैतुकान बक वृत्तिश्च वाड्मात्रेणापि नार्चयते ।।** (मनु० ४-३०) अर्थात्-देवनिन्दक, वेदविरुद्ध आचरण करनेहारे, जो वेदविरुद्ध कर्म का कर्त्ता मिथ्याभाषणादियुक्त, जैसे विडाला छिप और स्थिर रहकर ताकता-ताकता झपट से मूषे आदि प्राणियो का मार अपना पेट भरता है वैसे जनो का नाम वैडालवृत्तिक है, शठ् अर्थात् हठी दुराग्रही अभिमानी आप जाने नही औरो का कहा माने नहीं, कुतर्की, व्यर्थ बकनेवाले जैसे कि आजकल के वेदान्ती बकते हैं कि हम ब्रह्म और जगत् मिथ्या है, वेदादि शास्त्र और ईश्वर भी कल्पित है इत्यादि गपोडा हाकनेवाले, बकवृत्ति-जैसे बक एक पैर उठा ध्यानावस्थित के समान होकर झट मच्छी के प्राण हरके अपना स्वार्थ सिद्ध करता है वैसे आजकल के वैरागी और खाखी आदि हठी, दुराग्रही वेदविरोधी है। ऐसो का सत्कार वाणिमात्र से भी न करना चाहिए क्योकि इनका सत्कार करने से ये वृद्धि को पाकर ससार को अधर्मयुक्त करते हैं। आप तो अवनति के काम करते ही हैं परन्तु साथ मे सेवक को भी अविद्यारूपी महासागर मे डुबा देते हैं।"

यदि सूक्ष्म दृष्टि से विचार किया जाये तो गृहस्थ और अतिथि का घनिष्ट सम्बन्ध है क्योकि विवाह सस्कार मे सबसे पहले मधुपर्क आदि विधि से जो वर का स्वागत किया जाता है वह अतिथि-सत्कार का ही सकेत करता है। जिस प्रकार से वधू के द्वारा किया गया वर का स्वागत है उसी प्रकार गृहस्थो को चाहिए कि वह भी अतिथि का सम्मान तथा सत्कार विधिपूर्वक करे। क्योकि गृहस्थ ही एक ऐसा आश्रम है जहा अन्य आश्रम ब्रह्मचर्याश्रम, वानप्रस्थाश्रम, सन्यास आश्रम उसी के व्यवहार पर चलते हैं।

आज के आर्थिक युग मे जहा सयुक्त परिवार-प्रणाली बडी तेजी से टूटती जारही है और नई पीढी तथा पुरानी पीढी मे बहुत-सी बातो मे "जनरेशनगैप" विशेष परिवर्तन तथा अन्तर आगया है और पश्चिमी सभ्यता और संस्कृति भारतीय सभ्यता और संस्कृति पर हावी होती जारही है, समाज मे धन के आधार पर अयोग्य अपात्र लोग बडप्पन या गौरव का लेबल लगाकर समाज के हर क्षेत्र मे आगे आने लगे हैं इस असत्यता की प्रतिच्छाया मे अतिथि का स्वरूप ही आच्छादित होचुका है फिर भी गृहस्थो के पास अतिथि का वैदिक स्वरूप दुर्लभ है तथापि वैदिक गृहस्थी का भी वैदिक स्वरूप दुर्लभ है किन्तु अतिथियज्ञ की टूटती परम्परा को घटते वैदिक स्वरूप को बनाए रखने के लिए आर्यो को अतिथि सेवा करने का सकल्प दृढ करना चाहिए। अतिथियज्ञ का इतिहास अति प्राचीन है। रामायणकाल मे कैकेय देश मे राजा थे अश्वपति महाराज जो राजा दशरथ की रानी कैकेई के पिता थे। उनके शासनकाल मे कुछ ऋषि लोग उनके राज्य मे घूमते हुए पहुचे। सम्राट ने जब आतिथ्य सत्कार मे उन्हे भोजन करने के लिए कहा तो वे बोले-राजाओ का अन्न दूषित होता है हम भोजन नहीं करेगे। तब महाराजा अश्वपति ने जो उत्तर दिया उससे आज के शासक यदि चाहे तो प्रेरणा ले सकते हैं। उसका उत्तर था-"**न मे जनपदे राज्ये न कदर्यो नानाहिताग्नि न स्वैरी स्वैरिणी कुत ।।** मेरे राज्य में न कोई चोर है न चरित्रहीन है न शराबी है तब व्यभिचारी या व्यभिचारिणी हो कैसे सकते है इत्यादि।

इसके पश्चात् ही ऋषियो ने अश्वपति का आतिथ्य-सत्कार स्वीकार किया था। मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने वनवास के समय ऋषि-मुनियो के आश्रमो में पहुचकर उनका आतिथ्यत्कार स्वीकार किया था। पचवटी प्रदेश मे उनकी पर्णकुटी पर छलकपट वेशधारी रावण जब भिक्षा लेने पधारा तब सीता ने अतिथि सत्कार किया था जिसके कारण उसका अपहरण हुआ। इसीलिए महर्षि दयानन्द ने वेदविरुद्ध आचरण करनेवालो के लिए लिखा है-"वाणी मात्र से भी सत्कार न करे।" महाभारत मे योगिराज कृष्णजी ने दुर्योधन का आतिथ्य सत्कार स्वीकार न करके विदुर जी के घर सादा भोजन करना ही श्रेयस्कर माना था ऐसा वर्णन अतिथियज्ञ की महत्ता को दर्शाता है। फिर भी अतिथियज्ञ को सम्प्रदाय, राजनीति आदि से ऊपर उठकर हमे पुन स्थापित करने के यत्न करने चाहिए ताकि वैदिक सस्कृति मे अतिथि यज्ञ की महत्ता को आम जनता अनुभव कर सके और इस पर आचरण की ओर आकर्षित होसके।

आर्यसमाज के उत्सव की सूची

१	आर्यसमाज अटायल जिला रोहतक	२३-२४ फरवरी
२	आर्यसमाज गोहाना मण्डी (सोनीपत) योग साधना शिविर	२१-२७ फरवरी
	एव १६वा वैदिक सत्सग समारोह	२८ फरवरी से ३ मार्च
३	दयानन्द उपदेशक विद्यालय शादीपुर यमुनानगर	१ से ३ मार्च
४	आर्यसमाज जुरहरा जि० भरतपुर (राज०)	१ से ३ मार्च
५	आर्यसमाज सफीदो जिला जीन्द	१५ से १७ मार्च
६	गोशाला बहीन (फरीदाबाद)	१६-१७ मार्च
७	आर्यसमाज जोहर खेडा (फरीदाबाद) (ऋग्वेद पारायण यज्ञ)	१९ से २८ मार्च
८	आर्ष गुरुकुल आटा, डिकाडला जिला पानीपत	१६-१७ मार्च
९	गुरुकुल झज्जर	१५ से १७ मार्च
१०	आर्यसमाज घरोण्डा जिला करनाल	१५ से १७ मार्च
११	हरयाणा प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन रोहतक	६-७ अप्रैल

—सभामन्त्री

आर्यसमाज मिर्जापुर बाछौद (महेन्द्रगढ़) का चुनाव

प्रधान-श्री बाबूलाल उपप्रधान-श्री बनवारी लाल, मन्त्री-श्री लालचन्द उपमन्त्री-श्री रामअवतार।

विधानसभा चुनाव-२००२

इलैक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन–चुनाव सुधार की ओर एक महत्त्वपूर्ण कदम

हाल ही के वर्षो मे चुनाव सुधारो के लिए यू तो बहुत से कदम उठाये गये हैं लेकिन इलैक्ट्रोनिक वोटिग मशीन की शुरुआत एक ऐसा कदम है जिससे पूरी मतदान की प्रक्रिया पहले से अधिक आसान व कम खर्चीली और जल्दी नतीजे देनेवाली हो गई है।

पिछले कुछ चुनावो मे इसके सफल प्रयोग ने हमारे पडोसी ही नही बल्कि दक्षिणी अमरीकी और यूरोपीय देशो मे भी हमारी वोटिग मशीन के प्रति उत्सुकता जगायी है।

इस बार चारो राज्यो की विधान सभाओ और फरवरी मे होने वाले उपचुनावो मे निर्वाचन आयोग ने इलैक्ट्रोनिक वोटिग मशीन का बडे पैमाने पर उपयोग करने का फैसला किया है।

उत्तर प्रदेश, पजाब, उत्तराचल मे जहा मतदान पूरी तरह इन मशीनो के जरिये होगा वही मणिपुर के कुछ शहरी भागो मे इन मशीनो को उपयोग मे लाया जायेगा।

चुनाव ही प्रजातन्त्र की बुनियाद है, स्वतन्त्र निष्पक्ष निर्वाचन ही इसका धर्म है। चुनाव कोई साधारण कार्य नही है। यह बहुत खर्चीला है, इसका सीधा असर देश की अर्थव्यवस्था पर पडता है। 'इलैक्ट्रोनिक वोटिग मशीन' का प्रयोग सरकारी चुनावी खर्च को कुछ सीमा तक कम कर सकता है। मतदान पत्र (बेलेट पेपर) के जरिये होने वाले मतदान मे करोडो रुपये मतपत्रो की छपाई, मतदान स्थल तक पहुचाने और पुन मतगणना स्थल तक एकत्रीकरण और मतगणना मे खर्च हो जाते है। "इलैक्ट्रोनिक वोटिग मशीन" के प्रयोग से इस भारी भरकम आर्थिक भार से जहा सरकार बच सकती है वहीं चुनाव प्रक्रिया मे समय, श्रम की बचत और निष्पक्षता की भी तमाम सभावनाए है। इलैक्ट्रोनिक वोटिग मशीन को लेकर किसी को भी किसी प्रकार का भ्रम या शक नही होना चाहिए। शिक्षित-अशिक्षित सभी प्रकार के मतदाता बडी आसानी से अपने मताधिकार का प्रयोग कर सकते है।

"इलैक्ट्रोनिक वोटिग मशीन" मे दो इकाइया, कन्ट्रोल यूनिट और बैलेटिग यूनिट पाच मीटर लम्बी केबुल से जुडी होती है। मतदान केन्द्र पर कन्ट्रोल यूनिट पीठासीन अधिकारी या मतदान अधिकारी के पास रहेगी और बैलेटिग यूनिट मतदान कक्ष मे रहेगी, जैसे मतपत्र द्वारा मतदान के समय मतदान अधिकारी मतदाताओ को मतपत्र देता था, उसी प्रकार मतदान अधिकारी मतदाता की पहचान आदि के बाद कन्ट्रोल यूनिट से "बैलट बटन दबायेगा और उसके बाद मतदाता बैलेटिग यूनिट पर अपने मनपसन्द प्रत्याशी के चुनाव वाला नीला बटन दबा देगा, बटन दबाया नही नही कि बीप की ध्वनि के साथ उसका वोट पड जायेगा।"

सवाल उठ रहा है कि बहुत से ऐसे मतदान केन्द्र है जहा बिजली नही है, वहा कैसे इलैक्ट्रानिक वोटिग मशीन चलेगी। बिजली रहे या न रहे, इलैक्ट्रोनिक वोटिग मशीन अपना काम ०६ वोल्ट की बैटरी से करेगी और इलैक्ट्रोनिक वोटिग मशीन के स्पर्श से किसी प्रकार का करेन्ट या झटका नही लगता। एक इलैक्ट्रोनिक वोटिग मशीन मे ३८४० मतो को रिकार्ड करने की क्षमता होती है। प्राय एक पोलिग स्टेशन पर १५०० वोट पड जाते हैं। इसलिए एक स्टेशन के लिए एक मशीन पर्याप्त होती है। सवाल यह भी उठ रहा है कि मतपत्र प्रत्याशियो की सख्या के अनुसार छोटा-बडा प्रकाशित हो जाता था क्या इलैक्ट्रोनिक वोटिग मशीन पर प्रत्याशियो की सख्या का प्रभाव पडेगा, इलैक्ट्रोनिक वोटिग मशीन से ६४ प्रत्याशियो तक के लिए वोट डाले जा सकते है। ६४ से अधिक उम्मीदवार वाले निर्वाचन क्षेत्र मे इलैक्ट्रोनिक वोटिग मशीन का प्रयोग नही किया जा सकता है। ऐसे क्षेत्रो मे बैलेट मतपत्र के जरिये ही मतदान सभव है। यदि किसी निर्वाचन क्षेत्र मे १६ उम्मीदवार चुनाव मैदान मे रहते हैं तो कन्ट्रोल यूनिट से एक ही बैलेट यूनिट जोडी जाती है। सोलह से अधिक सख्या होने पर दूसरी बैलेट यूनिट उसी के समानान्तर जोड दी जाती है। इसी प्रकार ३२ से अधिक होने पर तीसरी ४८ से अधिक होने पर चौथी यूनिट समानान्तर जोड दी जाती है। एक कन्ट्रोल यूनिट मे अधिकतम ४ बैलेट यूनिट जोडी जा सकती है।

सयोगवश यदि किसी मतदान केन्द्र की ई०वी०एम० खराब हो जाती है तो उसको बदलने की भी व्यवस्था की जाती है। इसके लिए १० मतदान केन्द्र के लिए एक अधिकारी की तैनाती की जाती है जिसके पास अतिरिक्त ई०वी०एम० रहती है, जो सूचना मिलते ही खराब हो गयी मशीन को बदल देगा। उसके स्थान पर दूसरी मशीन लगा देगा। पहली खराब हुई मशीनो मे पडे मत पूरी तरह से सुरक्षित रहेगे उसमे किसी प्रकार का हेर-फेर नहीं किया जा सकता है। मतदान की प्रक्रिया यथावत रहेगी, नये सिरे से मतदान नही होगा।

चुनाव जीतने के लिए कई प्रकार के अवैधानिक तरीके अपनाए जाते हैं। मतपत्रों को लूट लिया जाना, मतपेटिका मे पानी, तेजाब आदि डालने की घटनाये होती हैं और बूथ कैप्चरिग करके मनमाफिक मतदान कर दिया जाता है। ई०वी०एम० के प्रयोग से भी इसे रोका नहीं जा सकता है, हा कम किया जा सकता है। बूथ कैप्चरिंग की स्थिति में पीठासीन अधिकारी "क्लोज" बटन दबाकर ई०वी०एम० बद कर सकता है। बूथ लुटेरे ई०वी०एम० को भी नष्ट कर सकते हैं या अपनी इच्छा अनुसार मत डाल सकते हैं किन्तु जिस ढग से बूथ कैप्चरिग करने वाले तत्त्व मिनटो मे सैकडो मतपत्रो पर मुहर लगाकर मतपेटिका मे डाल देते थे, वैसा ई०वी०एम० के साथ नहीं है। यदि बूथ कैप्चरिग करने वाले ई०वी०एम० से वोट डालते हैं तो आधा से एक घण्टा के बीच अधिक से अधिक १५० वोट डाल सकते हैं। क्योकि एक मिनट मे मशीन ०५ मत रिकार्ड कर सकती है। इस बीच इसकी सूचना प्रशासनिक व पुलिस अधिकारियो को दी जा सकती है। इसमे स्पष्ट है कि बूथ कैप्चरिग जैसी घटना को रोका तो नहीं जा सकता लेकिन बूथ कैप्चरिग करने वालो के मनसूबे पूरे नही होगे।

ई०वी०एम० के प्रयोग से चुनाव की प्रक्रिया में गति आयेगी। अधिकाश मतदान केन्द्रो पर मतदान शुरू होने से लेकर खत्म होने तक कतार लगी रहती है, लेकिन ई०वी०एम० के प्रयोग से कम समय में अधिक से अधिक वोट पड सकेंगे, क्योंकि मतपत्र के जरिये मतदान की प्रक्रिया में मतपत्र को मोडकर देना, फुन मतपेटिका मे डालना आदि कार्य मे काफी समय लगता है। ई०वी०एम० से इस कार्य से छुटकारा मिलेगा। मतपत्र के जरिये पडे मतो की गिनती मतदान केन्द्र के आधार पर न होकर सम्पूर्ण मतो को मिलाकर की जाती है किन्तु ई०वी०एम० से ऐसा संभव नहीं है। मतगणना मतदान केन्द्र के अनुसार होगी, किन्तु यदि चुनाव आयोग विशेष तौर पर किसी निर्वाचन क्षेत्र की मतगणना मिलाकर करने के लिए अधिसूचित करता है तो ई०वी०एम० को मास्टर काउटिग मशीन मे डालकर पूरे निर्वाचन क्षेत्र की मतगणना हो सकती है। इससे किसी बूथ पर उसे कितना मत मिला यह जानकारी नहीं हो सकेगी।

मतपत्र के जरिये होने वाले चुनाव में मतपत्रो को सुरक्षित रखा जाता है। ई०वी०एम० में सामान्यतया १० वर्ष तक मतो का रिकार्ड सुरक्षित रह सकता है। ई०वी०एम० मशीन की बैलेट यूनिट को चाहे जितनी बार दबाई जाय लेकिन वह एक ही वोट रिकार्ड करेगी, ई०वी०एम० "एक मतदाता एक मत" के सिद्धान्त का पालन करती है। ई०वी०एम० के बैलेट यूनिट पर प्रत्याशी का नाम और उसका चुनाव चिह्न रहेगा, मतदाता अपनी पसद के उम्मीदवार के चुनाव निशान के सामने वाला नीला बटन दबायेगा। चुनाव निशान के बाये तरफ छोटी सी लालबत्ती जल जायेगी और साथ में ही एक लम्बी आवाज़ सुनाई देगी, इस तरह से मतदाता, लालबत्ती देखकर सीटी सुनकर पूर्ण रूप से आश्वस्त हो जायेगा कि उसका मत पड गया।

मतदान के बाद मतपेटिकाओ को लूटने, बदलने और नष्ट करने की घटनाए प्राय होती रही है लेकिन ई०वी०एम० यदि बदली गयी तो इसका पता उसके आई०डी० नम्बर से आसानी से लगाया जा सकता है। प्रत्येक कट्रोल यूनिट पर एक आई०डी० नम्बर होगा, जिसे पोलिग एजेट नोट कर सकते है। इलैक्ट्रोनिक वोटिग मशीन में कहीं पहले से वोट रिकार्ड नहीं है ? इसके समाधान के लिए मतदान अधिकारी, पोलिग एजेटो को मशीन चैक करायेगे और जब पोलिग एजेट सतुष्ट हो जायेगे, तभी मतदान की प्रक्रिया शुरू होगी। इसी तरह से मतदान खत्म होने के समय अन्तिम मतदाता जैसे ही अपना मत देगा, तभी मतदान अधिकारी कट्रोल यूनिट की "क्लोज बटन" दबा देगा। तुरन्त ही बैलेटिंग यूनिट का कट्रोल यूनिट से सम्पर्क टूट जायेगा और मतदान अधिकारी मतदान बन्द कर देगा। बाद मे सभी पोलिग एजेटों को पडे हुए मतदान की सख्या बता दी जायेगी जिससे चुनावो के समय टैली की जा सकती है। इसी तरह मतगणना भी इस वोटिग मशीनो से कम समय मे हो जायेगी।

पत्र सूचना कार्यालय, भारत सरकार

शोक समाचार

आर्यसमाज मिर्जापुर बाछौद जिला महेन्द्रगढ के पूर्व प्रधान श्री रामचन्द्र आर्य का गत वर्ष १४ अक्तूबर २००१ को हृदयगति रुकने से निधन हो गया। वे आर्यसमाज के कार्यो मे बहुत सहयोग देते थे। परमात्मा दिवगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे तथा उनके परिवार को इस दु ख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

–लालचन्द मंत्री
आर्यसमाज मिर्जापुर बाछौद (महेन्द्रगढ)

आर्य-संसार

वर्ष १६६०८५३१०१ का आर्यरत्न सम्मान स्वामी सर्वानन्द जी सरस्वती दयानन्दठ दीनानगर (पंजाब) को

राव हरिश्चन्द्र आर्य चेरिटेबल ट्रस्ट नागपुर द्वारा पूर्व मे घोषित आर्यरत्न सम्मान वर्ष १९६०८५३१०१ के लिये आर्यजगत् के तपस्वी, श्रद्धा और सम्मान के प्रतीक सर्वमान्य जीवनदानी, विद्वान् १०१ वर्षीय वयोवृद्ध संन्यासी पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी सरस्वती दयानन्दमठ दीनानगर (पजाब) को देने का चयन समिति ने सर्वसम्मत निर्णय किया है।

अत: यह सम्मान पूज्य स्वामी जी को नागपुर मे दिनांक २४ मार्च, २००२ रविवार, दोपहर १ बजे सम्मान राशि एक लाख रुपये एव स्मृति चिह्न और सम्मान पत्र के साथ सादर भेंट किया जाएगा। इस शुभावसर पर नगर की अन्य सामाजिक व शैक्षणिक तथा धार्मिक, संस्थाओं द्वारा भी स्वामी जी का स्वागत होगा। बाहर से आने वाले महानुभावों की निवास व भोजन की व्यवस्था ट्रस्ट की ओर से रहेगी।

सम्पर्क–राव हरिश्चन्द्र आर्य चेरिटेबल ट्रस्ट, रूईकर मार्ग, महल नागपुर फोन : ०७१२-७२९५८४, ७२२४३४, ७७८१८२

वयोवृद्ध आर्यसमाज को मिलेगा नागरिक सम्मान
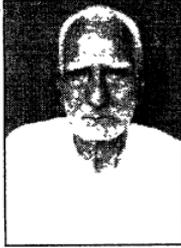
महाशय तोताराम

ग्राम लूखी आयु ९५ वर्ष। तीन वर्ष के थे तब गांव मे आर्यसमाज की स्थापना हुई थी। बचपन की कई बातें याद हैं। वैदिकमन्त्रो का अविस्मृत उच्चारण अब भी करते हैं।

ग्राम लूखी तहसील कोसली के वयोवृद्ध निष्ठावान् आर्यसमाजी महाशय तोताराम एक ऐसे आदर्श आर्य हैं जिन्हे ९५ वर्ष की दीर्घायु प्राप्त हो चुकी है। उनका जन्म वि०स० १९६४ मे हुआ था। लूखी गाव मे आर्यसमाज की स्थापना वि०स० १९६७ मे शिकोहपुर निवासी प० दीनदयाल तथा आर्योपदेशक प० बलदेव ने सर्वश्री मोजीराम, नथुराम, सेठ तोखराम के सहयोग से की थी। श्री मोजीराम पहले प्रधान, नथुराम जी मन्त्री और तोखराम जी को खजान्ची नियुक्त किया गया था। महाशय तोताराम बताते हैं कि यद्यपि लूखी मे आर्यसमाज की स्थापना के समय उनकी आयु मात्र तीन वर्ष की थी, किन्तु उनको कुछ घटनाएं याद हैं।

महाशय तोताराम की स्कूली शिक्षा उर्दू की चौथी कक्षा तक सीमित थी परन्तु सन्ध्या यज्ञ हवन, स्वस्तिवाचन, शान्तिप्रकरण एव दैनिक व्यवहार स्नान, भोजन, राष्ट्रगान आदि आरम्भ करने से बोले जानेवाले मन्त्र उन्हे मौखिक याद थे और आज भी जो कोई उनसे भेट करने जाता है उसके सामने मन्त्रोच्चारण करने और कराने में खूब रुचि लेते हैं।

दिनाक १०-२-०२ को दडौली आश्रम में जिला रेवाडी वेदप्रचार मण्डल की बैठक मे ग्राम कारोली आर्यसमाज के प्रधान हरिराम आर्य ने उक्त आशय का प्रस्ताव पेश किया। उन्होने निवेदन किया कि वयोवृद्ध आर्यजनो का सम्मान करना वर्तमान पीढी का कर्त्तव्य बनता है।

वैदिक कर्मकाण्ड में पौराणिक घुसपैठ रोकिए

–हरिराम आर्य, प्रधान आर्यसमाज कारोली

दैनिक आर्यजीवन व्यवहार तथा विशेष सस्कार अवसरो पर कर्मकाण्डो को पौराणिक पुरोहितो के गोरखधन्धे से उबारकर महर्षि दयानन्द सरस्वती ने शास्त्रोक्तविधि अनुसार आर्यो के हित के लिए सस्कारविधि मे प्रकाशित कर दिया था। तत्पश्चात् आर्यसमाजी पुरोहित हित चित्त से उसका पालन करते रहे थे, परन्तु कालान्तर मे पौराणिक रूढ़िया कुछ तथाकथित आर्य पुरोहितों पर भी हावी होने लगी हैं–१ पुरोहित द्वारा यजमान के माथे (ललाट) पर रोली या हल्दी का टीका लगाना। कई संस्कारों में माथे पर चावल भी चढाने लगे हैं। २ यजमान के हाथ (पोहचे) पर डोरा बाधना। ३ फूलमालाए डालना, साथ ही ऊपर-नीचे अनेक छोटे-बडे जलपात्र रखकर उन पर नारियल सजाना (अनावश्यक सजावट)। ४ हवन करते हुए आहुतियां देते समय "स्वाहा" शब्द से पूर्व भी "ओ३म् स्वाहा" ऐसा उच्चारण करना। ५ हवन के पश्चात् जलपात्र के शेष मे यज्ञाग्नि की राख या कोयले बुझाकर उस जल के छींटे घर में लगवाना। ६ जलपात्र के गले पर डोरा बाधना। ७ टीका करते-कराते सिर पर हाथ रखवाना आदि। (स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवा के मन्त्रार्थ चाहे जो हो, उसके उच्चारण मात्र के साथ यजमान तथा अन्य अतिथियों के माथे पर टीका लगाया जाने लगा है। हाथ के पोंहचे पर डोरा बान्धते समय, भद्र कर्णेभि: शृणुयाम देवा: का उच्चारण करते हैं। एक पुरोहित जी, यज्ञोपवीत परमं पवित्र का उच्चारण हाथ के पोंहचे पर डोरा बान्धते समय कर रहे थे। डोरा बाधने का महत्त्व या माहात्म्य क्या है ? उनका उत्तर था–"पौराणिक पुरोहित ब्राह्मणेतरों का यज्ञोपवीत धारण नहीं कराते थे तब वंचितो ने हाथ के पोहचे पर लाल-पीला डोरा बाधना आरम्भ कर दिया, आगे चलकर यह रूढि बन गई।" कितनी मिथ्या तथा लचर दलील है। पाठको को विदित हो कि वह पुरोहित दस वर्षो से अधिक हरयाणा आर्यप्रतिनिधिसभा में भजनोपदेशक रह चुका है और वैदिक संस्कार भी कराता है। उसे पता नहीं कि पौराणिक पुरोहित न केवल यजमान के पोहचे पर लाल-पीला डोरा बाधते हैं अपितु जलपात्र तथा गणेश की प्रतीक मिट्टी की डली को भी उसी डोरे से जकड कर बाधते हैं। पौराणिक पुरोहित ने तो आपको यज्ञोपवीत से वंचित रखा, उसका कोई निकृष्ट स्वार्थ रहा होगा–आप अपने यजमान को यज्ञोपवीत कराने की बजाए डोरा क्यो बाधते हैं ? इसका उनके पास कोई उत्तर नहीं था।

हाथ के पोहचे पर डोरा बाधना, माथे पर रोली या हल्दी का टीका लगाना, यज्ञ जल शेष मे कोयले बुझाकर जल छिडकवाना, मन्त्रोच्चारण, आहुति डालने मे अतिशयोक्ति दिखाना आदि कार्य पौराणिक रूढियों को अपनाने के अतिरिक्त शुभ नहीं है।

सम्भवत ऐसा अन्धानुसरण वे तथाकथित आर्य पुरोहित करते है जो यजमान से दक्षिणा प्राप्ति की अधिक आशा रखते हैं और दोगले यजमान को प्रसन्न रखने के लिए विधि तथा सिद्धान्त से हटकर अनुष्ठान कराते हैं। उचित कर्म तो यह है कि आर्य पुरोहित अपने यजमानो को मिथ्या लोकाचार और पाखण्डो के बारे में सस्कार के समय सचेत भी करे। जो निषिद्ध कर्म वैदिक कर्मकाण्ड मे घुसपैठ करने लगे हैं, वे सर्वथा त्याज्य हैं।

देखने में आया है कि नवीन आर्यसमाजियों में एक ऐसा वर्ग पनपने लगा है जो उदारता के नाम पर तुष्टिकरण की नीति पर चल पडा है। परिणामस्वरूप वैदिक सिद्धान्तो का हनन होने लगा है।

–हरिराम आर्य, कारोली

शराब के ठेकों की नीलामी बंद

निश्चित आरक्षित मूल्य तय करने के बाद टेंडर मांगे जाएंगे

हरयाणा सरकार ने शराब के ठेकों के लिए नीलामी की प्रणाली को बदलकर अब टेडर आमन्त्रित करना तय किया है। वित्तीय वर्ष २००२-२००३ के लिए घोषित नई आबकारी नीति को मुख्यमंत्री ओमप्रकाश चौटाला की अध्यक्षता मे हुई कैबिनेट मीटिग मे मजूरी दी गई। नई आबकारी नीति की मुख्य बात यह है कि अब शराब के ठेको के लिए एक निश्चित आरक्षित मूल्य तय करने के बाद ही टेडर (निविदा) आमन्त्रित किए जाएंगे।

मन्त्रिमण्डल का फैसला

- **राज्य की नई आबकारी नीति को मंजूरी**
- **शराब प्लास्टिक थैलियों में नहीं भरी जाएगी**
- **ठेको की सख्या १५५० से बढ़ाकर १६०० की जाएगी**

धार्मिक शहरों में ठेके नहीं

कैबिनेट की बैठक में यह भी फैसला लिया गया कि कुरुक्षेत्र, थानेसर और पेहोवा शहरो के धार्मिक महत्त्व को देखते हुए इन शहरो मे नगरपालिका सीमाओ में शराब का कोई ठेका नहीं खोला जाएगा। किसी मान्यताप्राप्त स्कूल अथवा कॉलेज, मुख्य बस अड्डे और पूजा स्थलों के मुख्यद्वार से १५० मीटर की दूरी तक शराब का ठेका नहीं खोला जाएगा। **(दैनिक ट्रिब्यून १४ फरवरी)**

आर्यसमाज सान्ताक्रुज का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

दिनाक २४ जनवरी से २७ जनवरी, २००२ तक आर्यसमाज सान्ताक्रुज का वार्षिकोत्सव हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर यजुर्वेदीय यज्ञ का आयोजन किया गया जिसके ब्रह्मा प्रो० धर्मवीर जी (अजमेर) एव वेदपाठी प० नामदेव आर्य, प० विनोद शास्त्री, आचार्य उमेश, प० नरेन्द्र शास्त्री एव प० प्रभारजन पाठक जी थे।

इस अवसर पर भजन, प्रवचन, वेदगोष्ठी, अध्यात्मचर्चा (सर्वधर्म सम्मेलन), शास्त्र चर्चा (शास्त्रार्थ), फलित ज्योतिष पर विशेष चर्चा, अन्धविश्वास निर्मूलन एव शका-समाधान, आर्य महिला सगठन सम्मेलन तथा आर्य कार्यकर्त्ता गोष्ठी के साथ-साथ भव्य पुस्तक मेले का आयोजन किया गया।

अन्धविश्वास निर्मूलन—इस सम्मेलन के अन्तर्गत समाज व देश मे व्याप्त अन्धविश्वास का खुलासा करते हुए अन्धविश्वास निर्मूलन समिति सदस्यों ने कई बार हाथ सफाई के कारनामे व प्रचलित आडम्बर, जादू टोना आदि को मिथ्या साबित कर दिखाया, जिससे अनेक प्रत्यक्षदर्शियो का अन्धविश्वास दूर हुआ।

दिनांक २६ जनवरी, २००२ को प्रात यज्ञ के उपरान्त आर्यसमाज सान्ताक्रुज के प्रधान डॉ सोमदेव शास्त्री ने ध्वजारोहण किया। तत्पश्चात् राष्ट्रगीत एव सास्कृतिक कार्यक्रम आर्यविद्या मन्दिर सान्ताक्रुज की छात्राओ ने किया। इसके उपरान्त प्रात १० बजे से वेदगोष्ठी का आयोजन प्रो धर्मवीर जी (मन्त्री-परोपकारिणी सभा, अजमेर) की अध्यक्षता मे प्रारम्भ हुआ। सर्वप्रथम प्रो० शेरसिह जी (पूर्व रक्षा राज्यमन्त्री, भारत सरकार, दिल्ली) ने उद्घाटन भाषण दिया।

अध्यात्मचर्चा २६ जनवरी को साय ४ बजे प्रारम्भ हुई। इसके अन्तर्गत हिन्दू धर्म के प्रतिष्ठित विद्वान् आचार्य रामरूप मिश्रा (पूर्व प्राचार्य मुम्बादेवी सस्कृत महाविद्यालय भारतीय विद्या भवन, मुम्बई), जैन धर्म के प्रखर वक्ता एव शोधकर्ता श्री रश्मिभाई झवेरी और ईसाई मतावलम्बी फादर एडवर्ड डिमेलो तथा वैदिक धर्म के मूर्धन्य विद्वान् डॉ० भवानीलाल भारतीय ने ईश्वर और उसकी प्राप्ति के उपाय नामक विषय पर अपने-अपने मन्तव्यों के अनुसार विचार प्रस्तुत किये। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान आर्यनेता कैप्टन देवरत्न आर्य की अध्यक्षता मे यह चर्चा सम्पन्न हुई। इस चर्चा मे मुख्य अतिथि के रूप मे मुम्बई महानगर के सुप्रसिद्ध उद्योगपति एव ख्याति प्राप्त समाजसेवी श्री सत्यप्रकाश आर्य उपस्थित थे। अपने अध्यक्षीय भाषण मे कैप्टन देवरत्न आर्य ने ईश्वर की अनुभूति कैसे की जाय इस विषय को उन्होने अनेक उदाहरणो से स्पष्ट किया। ईश्वर की सर्वव्यापकता और सर्वशक्तिमत्ता पर प्रकाश डाला।

आर्यसमाज सान्ताक्रुज के पदाधिकारियो ने आमन्त्रित सन्यासियो, विद्वानों एव मुख्य अतिथि, विशेष अतिथि को शाल और मोती माला भेंटकर सम्मानित किया। इस प्रकार यह वार्षिकोत्सव हर दृष्टि से सफल रहा, जयघोष एव प्रीतिभोज के साथ समारोह सम्पन्न हुआ।

—यशप्रिय आर्य, महामन्त्री

संस्कृत पढ़ने से पूर्ण ज्ञान संभव : उपायुक्त

महेन्द्रगढ। स्थानीय योगस्थली बूचौली रोड पर आज के परिवेश मे आर्यसमाज विषय पर हरयाणा आर्य युवक परिषद् (रजि०) के तत्त्वावधान मे विचार सगोष्ठी का आयोजन किया गया। समारोह मे मुख्य अतिथि डॉ० आर०बी० लाग्यान उपायुक्त महेन्द्रगढ थे तथा अध्यक्षता यतिमण्डल दक्षिणी हरयाणा ने की। आर्यजनो को सम्बोधित करते हुए उपायुक्त डॉ० आर बी लाग्यान ने कहा कि सस्कृत पढने से पूर्ण ज्ञान होता है तथा व्यक्ति सदाचारी, उपकारी बनता है। उन्होने सस्कृत की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आज के कम्प्यूटर युग मे २०५ करोड शब्द फीड हो चुके हैं फिर भी अपूर्ण है।

सस्कृत ऐसी भाषा है जिसमे ४ करोड शब्द हैं जो कि अपने आप मे पूर्ण है। उन्होने कहा कि प्रत्येक घर मे वेद होना चाहिए। वेद का ज्ञान ४ वर्ष मे पूरा हो जाता है। वेद पढने से व्यक्ति स्वय तो सुखी रहता है तथा दूसरो को भी सुखी रखता है। सगोष्ठी मे शिवराम आर्य विद्यावाचस्पति अध्यक्ष हरयाणा आर्य युवक परिषद्, शिवराज आर्य अध्यक्ष जिला महेन्द्रगढ हरयाणा आर्य युवक परिषद्, स्वामी धर्मानन्द परिव्राजक पानीपत, आचार्य राजकुमार, डॉ० श्रीभगवान् शर्मा सचिव हरयाणा आर्ययुवक परिषद् ने भी अपने विचारो से उपस्थित लोगो को अवगत करवाया।

(हरिभूमि से साभार)

जीवन उपयोगी सूत्र

१ नशे और विषयो मे सलिप्त आत्मा कभी भी आध्यात्मिक उन्नति नहीं कर सकती।

२ जिस प्रकार बादल के हटते ही सूर्य दिखाई देता है उसी तरह अहकार के शून्य होते ही परमात्मा दिखाई देने लगता है।

३ स्वच्छ जगह मे शान्ति से रहने वाले देवता कहलाते हैं।

४ प्रेम तो मन से ही होता है बोलकर तो केवल उसका इजहार किया जाता है।

५ विद्या से मनुष्य विद्वान्, सदाचार व सयम से चरित्रवान् और त्याग से सदा महान् बनता है।

६ मनुष्य यदि खुद ही चरित्रहीन होगा तो वह दूसरो को चरित्रवान् बनने की क्या खाक शिक्षा देगा।

—आर्य इन्द्रसिह वर्मा, एम कॉम., एम ए (इंग्लिश), बी एड, झाड़ौदा कलां, नई दिल्ली-११००७२

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ०१२६२-७६८७४, ७७८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ०१२६२-७७७२२) से प्रकाशित।
पत्र में प्रकाशित लेख सामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री का सहमत होना आवश्यक नहीं। पत्र के प्रत्येक प्रकार के विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक होगा।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३ सृष्टिसंवत् १,९६,०८,५३,१०२
पंजीकरणसंख्या टैक/85-2/2000 ☎ ०१२६२-७६

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र रोहतक

प्रधानसम्पादक : यशपाल आचार्य, सभामन्त्री सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री

वर्ष २६ अंक १४ २८ फरवरी, २००२ वार्षिक शुल्क ८०) आजीवन शुल्क ८००) विदेश में २० डॉलर एक प्रति १.७०

आर्यो ६-७ (शनिवार, रविवार) अप्रैल को रोहतक चलो !

हरयाणा की ऐतिहासिक पवित्र धरती रोहतक में ६-७ अप्रैल को आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्त्वाधान में विशाल आर्य महासम्मेलन होने जा रहा है, इस अवसर पर आर्यसमाज, समाज सुधार, गरीबी, असमानता, धर्मपरिवर्तन देश की सुरक्षा राज आर्य सभा आदि मुद्दों पर विशेष चिन्तन किया जाएगा, सम्मेलन में साधु संन्यासी, विद्वान्, उपदेशक, राजनेता एवं अन्य धर्माधिकारियो को भी आमंत्रित किया गया है।

१ अप्रैल २००२ से सभा कार्यालय मे यजुर्वेद पारायण महायज्ञ प्रारम्भ होगा तथा ७ अप्रैल को पूर्णाहुति होगी।

"सभी आर्यसमाजों व आर्य कार्यकर्त्ताओं से विशेष नम्र निवेदन"

आर्य महासम्मेलन को सफल बनाने के लिए आप सबके सहयोग की अत्यन्त आवश्यकता है, आप तन, मन, धन से सम्मेलन मे अपनी आहुति श्रद्धा एव सामर्थ्यानुसार अवश्य प्रदान करें, आज पुनः आर्यसमाज का संगठन अपने पुराने गौरव को प्राप्त करना चाहता है, आप वेद के आदेश पर चलें "संगच्छध्वं संवदध्वम्" की उदात्त भावना अपनायें, "संघे शक्तिः कलौ युगे" सगठन में ही शक्ति है आज देश में बढ़ते हुए भ्रष्टाचार, बेईमानी, जातिवाद, राजनैतिक गिरावट, विदेशी व्यापार, गोहत्या, प्रान्तवाद अपनी चरम सीमा पर है, देश में आर्यसमाज ही एकमात्र ऐसा आन्दोलन है जिसने देश को आजाद कराने मे अहम् भूमिका निभाई। महात्मा गाधी के शब्दो मे देश की आजादी के लिए जेल काटने वाले ८० प्रतिशत आर्य विचारधारा के सत्याग्रही थे। महात्मा गांधी को महात्मा की उपाधि देने वाले अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द ही थे। हिन्दी भाषा की रक्षा के लिए प्रतापसिंह कैरों सरकार के खिलाफ हिन्दी सत्याग्रह का आन्दोलन चलाया। जिस समय हैदराबाद निजाम के नवाब उस्मान अलीखां ने हिन्दुओं के धार्मिक कार्यक्रमों, मंदिरों पर प्रतिबंध लगाया तो आर्यसमाज ने आगे बढकर मुकाबला किया, जेलें भरी, यातनायें सहीं, बलिदान दिये।

हैदराबाद के निजाम से मुक्ति पाने के लिए आर्यसमाज ने नवाब की जेलों में असहनीय कष्ट सहे, अन्ततः नवाब को आर्यसमाज की शक्ति के आगे झुकना ही पडा।

इसी प्रकार सिंध हैदराबाद के नवाब ने सत्यार्थप्रकाश के १४ वें समुल्लास पर प्रतिबंध लगाया तो लाला लाजपतराय आदि के नेतृत्व में आर्यसमाज ने संघर्ष किया, लुहारू के नवाब अमीनुद्दीन ने जब अपनी रियासत में आर्यसमाज के प्रचार पर प्रतिबध लगाया तो स्वामी स्वतंत्रानन्द जी के नेतृत्व में आर्यसमाज ने आन्दोलन चलाया। जब-जब आर्यसमाज ने अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध संगठित होकर आन्दोलन किया, तब-तब सफलता ने हमारे कदम चूमे, और आर्यसमाज विजयी होकर निकला।

किंतु आज फिर देश के सामने अनेक चुनौतियां खड़ी हैं। उनका सामना करने के लिए आर्यसमाज को संगठित होना पडेगा। देश और समाज के हित को सर्वोपरि समझें, अपने अहम् को मर्यादा में रखते हुए स्वार्थ, लोभ को छोडकर आर्यसगठन को दृढ बनाए। इन सभी ज्वलंत समस्याओ के समाधान हेतु आप सब आर्यों का आह्वान करते हैं कि आप दलबल के साथ आर्यसम्मेलन मे पधारें, जहां से आपको विशेष प्रेरणाए मिलेगी। ६ अप्रैल की शोभायात्रा का विहगम दृश्य आर्यसमाज की शक्ति का एक प्रतीक सबके लिए आकर्षक का प्रमुख केन्द्र होगा।

आप आज से ही आर्य महासम्मेलन के प्रचार और सहयोग के लिए जुट जाएं। इसकी सफलता मे ही संगठन की सफलता है। हर क्षेत्र मे आर्यसमाज ने एक आदर्श स्थापित किया है, चाहे वह समाज सुधार का हो, सामाजिक न्याय का हो, सास्कृतिक समता का हो, स्त्री शिक्षा का हो, निष्ठावान् कार्यकर्ताओ का बलिदान का हो या राष्ट्रीयता का हो।

आवश्यक सूचना

आर्य विद्वानों एवं विज्ञापनदाताओं से विशेष निवेदन

मान्यवर महोदय,

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्त्वावधान मे हरयाणा प्रान्तीय विशाल आर्य महासम्मेलन दिनांक ६ ७ अप्रैल, २००२ को आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर एक स्मारिका का प्रकाशन भी किया जायेगा। इसमे विद्वान् लेखक महानुभाव अपना लेख भेजें। इसमें आर्यसमाज के प्रमुख बलिदानियों की जीवनी भी प्रकाशित की जायेगी, विज्ञापनदाता अपने उद्योग एवं शिक्षण संस्था का परिचय विज्ञापन के रूप मे देकर सहयोग के भागी बनें।

विज्ञापन दरें निम्न प्रकार हैं–

अन्तिम कवर पृष्ठ	२१०००/- रुपये
अन्दर द्वितीय कवर पृष्ठ	१६०००/- रुपये
अन्दर तृतीय कवर पृष्ठ	१६०००/- रुपये
पूरा पृष्ठ	५०००/- रुपये
आधा पृष्ठ	२५००/- रुपये
चौथाई पृष्ठ	१५००/- रुपये

—यशपाल आचार्य
सभा मन्त्री

वैदिक-स्वाध्याय

प्रभु कृपा से

उत नः सुभगाँ अरिर्वोचेयुर्दस्म कृष्टयः ।
स्यामेत् इन्द्रस्य शर्मणि ।। ऋ० १.४.६ ।।

शब्दार्थ–(दस्म) हे पापनाशक इन्द्र ! (अरि. उत) शत्रु भी (नः सुभगान् {वोचेयु}) हमारी अच्छाइयो को, हमारे सौभाग्यों को कहे (कृष्टयः वोचेयुः) सामान्य मनुष्य तो कहे ही। फिर भी हम (इन्द्रस्य इत्) तुम परमेश्वर के ही (शर्मणि) सुख मे (स्याम) रहे, होवे।

विनय–हे पापो और बुराइयो का उपक्षय करने वाले जगदीश्वर ! तुम्हारी कृपा से मैं इतना उच्च हो जाऊ कि मेरी अच्छाइयो का बखान मेरे शत्रु भी करे। मेरी तरफ से तो मेरा कोई शत्रु नहीं होना चाहिये, पर जो मेरे प्रतिद्वन्द्वी हैं–जिनके कि विचार मेरे विचारो से नहीं मिलते, जो कि मेरे वायुमण्डल से बिलकुल उलटे वायुमण्डल मे रहते हैं–उन मेरे विरोधी भाइयो के लिये यह स्वाभाविक होगा कि उनके कानो में सदा मेरे अवगुण ही पहुचे और उनका दृष्टिकोण ही ऐसा होगा कि उन्हे मेरी बुराइयो ही सहज मे दिखाई देवें। पर हे प्रभो ! यदि मेरा जीवन बिलकुल पवित्र होगा, मेरे आचरण मे सर्वथा सच्चाई और शुद्धता होगी तो मेरे जीवन का उस दूरस्थ (विचारो से मुझ से दूर रहनेवाले) भाई पर भी असर क्यो न होगा ? बस हे प्रभो ! मेरे अन्दर से सब बुराइयो का नाश करके मुझे ऐसा उच्च बना दो कि जो मुझसे इतनी विपरीत परिस्थिति मे रहते हैं, उन पर भी मेरी अच्छाई की, उच्चता की, छाप पडे बिना न रहे। सामान्य मनुष्य तो मुझे अच्छा कहेगे ही, मेरी स्तुति करेगे ही, पर इन विरोधियो के अन्त करण भी मेरी विशुद्धता को पहिचाने, यही इच्छा है। अपने सच्चे विरोधियो से जो यश मिलेगा वह खरा यश होगा, उसमे अत्युक्ति आदि का खोट न होगा। मित्रो और उदासीनो से तो यश मिला ही करता है उसमे कुछ विशेषता नहीं, उसका कुछ मूल्य नहीं।

पर हे प्रभो ! इस यश को पाकर मैं फूल नहीं जाऊगा, तुम्हे भूल नहीं जाऊंगा, बल्कि इस यश को भूला रहकर सदा तुम्हारी ही याद मे सुखी रहूंगा। यह यश तो मेरी विशुद्धता की पहचानमात्र होगा, यह मेरे सुख का कारण कभी नहीं होगा। मेरा सुख तो तुम्हारी शरण में है। बाहिरी दुनिया चाहे मेरी घोर निन्दा करे, मुझे अपमानित करे तो भी मैं तेरे प्रसाद से पाये सुख से वैसा ही सुखी रहूगा जैसा कि बाहिरी यश पाने पर हू। मेरा सुख या दु.ख बाहिरी यश या अपयश पर अवलम्बित न होगा। हे प्रभो ! ऐसी कृपा करो कि तुझ परमेश्वर की प्रसन्नता से पाये हुए सुख में ही मैं सदा सुखी, आनन्दित और सन्तुष्ट रहूं। बाहिरी यश द्वारा सुख पाने की चाह मुझे कभी उत्पन्न न हो, बाहिरी यश मिलते होने पर भी उस यश से सुख पाने की चाह मुझे कभी न उत्पन्न हो। मैं तुम्हारे ही सुख मे रहू। (वैदिक विनय से)

सत्यार्थप्रकाश निबन्ध प्रतियोगिता २००२ के परिणाम घोषित

उदयपुर श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर आयोजित सत्यार्थप्रकाश निबन्ध प्रतियोगिता २००२ के परिणाम आज न्यास अध्यक्ष स्वामी तत्त्वबोध सरस्वती ने घोषित किये। प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार क्रमश. रामकृष्ण आर्य कोटा, प० राधेश्याम जागडा भीलवाडा व इन्द्रजित देव यमुनानगर को प्राप्त हुए। प्रथम द्वितीय व तृतीय पुरस्कार विजेताओ को नवलखा महल उदयपुर २६ से २८ फरवरी मे आयोजित होने वाले सप्तम सत्यार्थप्रकाश महोत्सव के अवसर पर दिनांक २८ को प्रात काल क्रमश ३१००, २१०० व १५०० रुपये व प्रमाणपत्र से पुरस्कृत किया जाएगा। उक्त तीनो पुरस्कारों के अतिरिक्त १००-१०० रुपये के सात सान्त्वना पुरस्कार भी दिये जायेगे। सान्त्वना पुरस्कार विजेताओं के नाम क्रमश सर्वश्री मूलाराम आर्य उदयपुर, मुनीन्द्रसिह भाटी उदयपुर, आचार्य भगवान्देव चैतन्य मण्डी, मोहनप्रसाद जी शास्त्री, बकरी दोआ, आचार्य अभय वेदार्य आमसेना, सुश्री सुबोध बाला गुप्ता बीकानेर व श्री देवी हरदोई हैं।

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
अशोक आर्य, सयोजक प्रतियोगिता

आर्यसमाज के उत्सवों की सूची

१	दयानन्द उपदेशक विद्यालय शादीपुर यमुनानगर	१ से ३ मार्च
२	आर्यसमाज जुरहरा जि० भरतपुर (राज०)	१ से ३ मार्च
३	आर्यसमाज उचाना मण्डी जिला जीन्द	८ मार्च
४	आर्यसमाज लीलोढ जिला रेवाडी	९ से १० मार्च
५	आर्यसमाज शाहबाद मारकण्डा जिला कुरुक्षेत्र	६ से ८ मार्च
६	श्रीमद्दयानन्द गुरुकुल विद्यापीठ गदपुरी (फरीदाबाद)	१५ से १७ मार्च
७	आर्यसमाज घरोण्डा जिला करनाल	१५ से १७ मार्च
८	आर्यसमाज सफीदो जिला जीन्द	१५ से १७ मार्च
९	महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर	१६ से १७ मार्च
१०	आर्ष गुरुकुल आटा, डिकाडला जिला पानीपत	१६-१७ मार्च
११	गोशाला बहीन (फरीदाबाद)	१६-१७ मार्च
१२	आर्यसमाज जोहरखेडा (फरीदाबाद) (ऋग्वेद पारायण यज्ञ)	१९ से २८ मार्च
१३	आर्यसमाज धर्मगढ जिला करनाल	१९ से २१ मार्च
१४	हरयाणा प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन, रोहतक	६-७ अप्रैल

–सभामन्त्री

गृह-प्रवेश

महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर के सुयोग्य स्नातक श्री राजेन्द्रकुमार शास्त्री ने अपने नये मकान प्रेमनगर, रोहतक मे गृहप्रवेश दिनाक १७-२-२००२ के शुभ अवसर पर यज्ञ का आयोजन किया जिसके ब्रह्मा आचार्य विजयपाल जी योगार्थी थे। वैदिक परम्परा के अनुसार यज्ञ के साथ-साथ प्रिंसीपल डॉ० राजकुमार जी आचार्य व विजयपाल जी के सारगर्भित भाषण हुए। अन्त में श्री राजेन्द्रकुमार शास्त्री ने सभी अभ्यागतों का धन्यवाद करते हुए १०१ रुपये आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को तथा १०१ रुपये आर्यसमाज मन्दिर मकडौली कलां व ५०० रुपये गुरुकुल झज्जर को दान दिये।

–सत्यवान आर्य, मकड़ौली कलां, रोहतक

शोक समाचार

आर्यसमाज फतेहपुर जिला कैथल के प्रधान श्री युधिष्ठिर पाल आर्य का देहान्त दिनाक ९ फरवरी २००२ को हो गया। उनका सारा परिवार वैदिक धर्म का अनुयायी है। भगवान् उनकी आत्मा को सद्गति देवे तथा शोक संतप्त परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति देवें।

–सुरक्षा देवी आर्या, रोहतक

हरयाणा प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन की तैयारी हेतु सभामन्त्री का जिला गुड़गांव तथा फरीदाबाद का भ्रमण

सभा की अन्तरग सभा दिनांक १६ फरवरी २००२ के निश्चय के अनुसार आर्यसमाज का सन्देश अधिक से अधिक नरनारियों तक पहुचाने एवं वैदिक धर्म के प्रचार का विस्तार करने के लिए दिनाक ६, ७ अप्रैल २००२ शनिवार तथा रविवार को रोहतक में रखा गया है। यह महासम्मेलन की सफलता समस्त हरयाणा की आर्यजनता के सहयोग एवं समर्थन से ही मिलेगी। इसी उद्देश्य हेतु हरयाणा के कोने-कोने मे आर्यसमाज एव आर्य शिक्षण संस्थाओं के अधिकारियों एव कार्यकर्ताओं से सम्पर्क करना आवश्यक है।

मैं सभामन्त्री आचार्य यशपाल जी शास्त्री के निर्देशानुसार दिनाक १९ फरवरी की सायं को फरीदाबाद पहुचा। २० फरवरी को कचेहरी जाकर सभा के एक अभियोग की कार्यवाही करके सभा के मुख्त्यारेआम श्री परसराम पटवारी के साथ आर्यसमाज से सम्बन्धित वकीलो तथा कचेहरी में आये हुए कार्यकर्ताओ से मिले और उनसे सम्मेलन मे सम्मिलित होने तथा सहयोग देने का अनुरोध किया। इन्होने सहयोग देने का आश्वासन दिया। २० फरवरी को प्रात मैं आर्यसमाज सैक्टर-१९ फरीदाबाद के प्रधान एव सभा के अन्तरग सदस्य श्री लक्ष्मीचन्द्र आर्य से उनके घर पर मिलने गया। सम्मेलन को सफल करने पर विचार-विमर्श किया। उन्होने उपयोगी सुझाव दिये तथा फरीदाबाद के अन्य आर्यसमाज के अधिकारियो से सम्पर्क करने को कहा। सभा के उपमन्त्री श्री हरिश्चन्द्र शास्त्री पलवल से फोन द्वारा वार्ता की। उन्होने भी पूरा सहयोग तथा समर्थन करने का आश्वासन दिया।

दिनाक २१ फरवरी को प्रात. आर्यसमाज नेहरू ग्राउण्ड में आर्य केन्द्रीय सभा फरीदाबाद की अध्यक्षा एव सभा की उपप्रधाना श्रीमती विमल जी महता के कार्यालय में गया और सम्मेलन को सफल करने हेतु चर्चा की। उन्होने बताया कि दिनाक २४ फरवरी को दोपहर बाद ५ बजे आर्य केन्द्रीय सभा फरीदाबाद की बैठक में फरीदाबाद के सभी अधिकारी भाग लेगे। केन्द्रीय सभा के मन्त्री एवं आर्य वीर दल हरयाणा के अधिकारी श्री अजीतकुमार आर्य से टेलीफोन द्वारा निर्देश दिया कि बैठक में सभा द्वारा आयोजित सम्मेलन की सफलता पर विचार विमर्श करने का प्रस्ताव भी प्रस्तुत करें। २१ फरवरी को अन्य आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं से मिला तथा सम्मेलन में पहुचने के लिए निवेदन किया। आर्य केन्द्रीय सभा फरीदाबाद की बैठक में सम्मिलित होने की सूचना सभामन्त्री को फोन द्वारा दी तथा उन्हे २४ फरवरी को ५ बजे तक अवश्य पधारने का निवेदन किया। सभामन्त्री जी की स्वीकृति मिलने पर श्रीमती विमल जी महता तथा केन्द्रीय सभा के अन्य अधिकारियों को इसकी सूचना दी।

२३ फरवरी को सभा के उपमन्त्री एव वेदमन्दिर एच ब्लाक साउथ सिटी गुडगाव के प्रधान श्री महेन्द्रसिंह शास्त्री द्वारा आयोजित राष्ट्रीय सस्कृति सम्मेलन मे सभा के मन्त्री श्री यशपाल आचार्य, सभा अन्तरंग सदस्य डा० ताराचन्द आर्य पत्रकार, श्री सुखवीरसिह शास्त्री, श्री बलवीर शास्त्री एव आर्यसमाज के ओजस्वी वक्ता श्री राममेहर एडवोकेट, सभा के गणक श्री ओमप्रकाश शास्त्री आदि के साथ पधारे। यहा कन्या गुरुकुल लोवाकला (बहादुरगढ) से पधारी कु० राजन मान तथा उनकी शिष्याए १७ फरवरी से यजुर्वेद पारायण यज्ञ करवा रही थी तथा सभा के भजनोपदेशक प० सीताराम एव ओमप्रकाश के मनोहर भजन हो रहे थे। यज्ञ की पूर्णाहुति होने के पश्चात् सम्मेलन मे सभामन्त्री आचार्य यशपाल, श्री महेन्द्र शास्त्री सभा उपमत्री, अन्तरग सदस्य श्री बलवीर शास्त्री, श्री सुखवीर शास्त्री, वैद्य ताराचन्द आर्य तथा सभा के उपमत्री श्री हरिश्चन्द्र शास्त्री, सभा प्रतिनिधि मा० छत्तरसिह आर्य, मा० ज्ञानसिह आर्य (सोनीपत), श्री कन्हैयालाल आर्य प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा गुडगाव, श्री सुरेन्द्रसिंह, महासचिव क्रान्तिकारी युवा परिषद् आदि के व्याख्यान तथा पं० सीताराम एवं ओमप्रकाश की भजनमण्डली के प्रभावशाली सगीत हुए। सभा को २१००/- दान प्राप्त हुआ। श्री महेन्द्र शास्त्री ने यहा ऋषिलगर की उत्तम व्यवस्था कर रखी थी। सभामन्त्री जी ने इस सम्मेलन मे उपस्थित सभी आर्य नरनारियो का सभा द्वारा आयोजित आर्य महासम्मेलन मे ६, ७ अप्रैल को रोहतक दलबल के साथ भाग लेने का निमन्त्रण दिया।

इसके पश्चात् दोपहर बाद ३ बजे सभा अधिकारी आर्यसमाज मन्दिर नई कालोनी गुडगांव मे पहुंचे। वहां पूर्व ही आर्यसमाज के अधिकारी एवं अन्तरग सदस्य आदि श्री के०एल० अड़लखा प्रधान, श्री नरेन्द्र तनेजा मन्त्री, श्री ओ०पी० मक्कड़ पूर्व प्रबन्धक आर्य विद्यालय, श्री हरीश बत्रा पूर्व मन्त्री, श्रीमती सलोचना भल्ला प्रधाना स्त्री आर्यसमाज, श्री कश्मीरीलाल वर्मा, श्री महेश कालरा तथा श्री एन०डी० भल्ला अन्तरग सदस्य आदि उपस्थित थे। इस आर्यसमाज के चुनाव पर वाद-विवाद चल रहा था। सभा अधिकारियों ने सभी बात सुनकर समझौता करके आर्यसमाज का कार्य मिलजुलकर तथा आपसी मतभेद भुलाकर करने की प्रेरणा की। अन्त मे इन्होने भविष्य मे आर्यसमाज के हित मे कार्य करने का वचन दिया। सभामन्त्री जी ने सभा के महासम्मेलन ६, ७ अप्रैल को भारी सख्या मे रोहतक पहुचने तथा आर्थिक सहयोग देने की अपील की। सभी ने विश्वास दिलाया कि शीघ्र ही आर्य केन्द्रीय सभा की बैठक करके सम्मेलन को सफल करने का निश्चय किया जायेगा। इनका धन्यवाद करके सभा अधिकारी सभा के पूर्व प्रचारक श्री जयपाल आर्य के निवास पर गये तथा उनके सुपुत्र प्रो० मलिक जो कि आजकल अस्वस्थ हैं, को शीघ्र स्वस्थ होने की कामना की। हुडा कार्यालय मे सम्पदा अधिकारी से भेट करके गुडगाव मे नए बन रहे सैक्टरो मे आर्यसमाज मन्दिरों के लिए भी प्लाट अलाट करने की प्रार्थना की। उनका आश्वासन मिलने पर उनका धन्यवाद किया।

२४ फरवरी को प्रात काल गुरुकुल मटिण्डू जिला सोनीपत के वार्षिक उत्सव मे सम्मिलित हुए। यज्ञ के पश्चात् सभा के प्रधान स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता मे उत्सव की कार्यवाही आरम्भ हुई। सभा के भजनोपदेशक प० चिरजीलाल आर्य, एव श्री जगवीरसिह आर्य के प्रभावशाली भजन हुए। सभा के अन्तरग सदस्य श्री बलवीर शास्त्री (भैंसवाल), श्री सुखवीरसिह शास्त्री (रोहतक) आदि के गुरुकुल शिक्षा प्रणाली पर व्याख्यान हुए। सभामन्त्री आचार्य यशपाल ने उत्सव मे सभाप्रधान स्वामी ओमानन्द सरस्वती, गुरुकुल कालवा जिला जीन्द तथा गोशाला के सचालक स्वामी बलदेव जी महाराज गोप्रेमी का हार्दिक स्वागत किया तथा उन्हें विश्वास दिलाया कि हम उनके मार्गदर्शन तथा सरक्षण मे आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार में वृद्धि करेंगे। गोरक्षा तथा शराबबन्दी अभियान को प्रभावशाली बनाया जावेगा। आर्य महासम्मेलन में गोरक्षा सम्मेलन आदि का भी आयोजन होगा। यहा की जनता को भारी सख्या मे पहुचने की अपील की।

स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ने अपने प्रवचन मे उपस्थित नरनारियों तथा गुरुकुल के ब्रह्मचारियो का आह्वान करते हुए कहा कि जीना है तो आर्यसमाज मे आओ तथा आर्यसमाज को तन, मन तथा धन से सहयोग करे। आर्यसमाज के सिद्धान्तो का पालन करने से राष्ट्र का सुधार हो सकेगा। आपने रोहतक में होनेवाले प्रान्तीय सम्मेलन मे सहयोग देने की अपील की। स्वामी बलदेव जी महाराज ने अपने भाषण मे हरयाणा की जनता को सावधान करते हुए कहा कि यदि मेवात क्षेत्र मे गोहत्या बन्द नहीं करवाई गई तो आप पाप के भागी बनोगे और वैदिक सस्कृति नष्ट हो जावेगी। अत सभी को गोरक्षा के लिए बलिदान देने के लिए तैयार होना चाहिए। उत्सव के अन्त मे श्री ओमानन्द सरस्वती तथा स्वामी बलदेव महाराज द्वारा गुरुकुल के कार्यो मे बढचढकर भाग लेनेवाले कार्यकर्ताओ तथा गुरुकुल के मेधावी छात्रो को पुरस्कार वितरित किये गये।

२४ फरवरी को ही सायकाल ५-३० पर सभामन्त्री जी आर्य केन्द्रीय सभा फरीदाबाद की बैठक मे पधारे। आर्य केन्द्रीय सभा की ओर से सभा उपप्रधान भक्त मगतुराम, श्रीमती विमल महता, सभामन्त्री आचार्य यशपाल, सभा उपमत्री केदारसिह आर्य आदि का स्वागत किया। सभामन्त्री जी ने फरीदाबाद के आर्यसमाज के अधिकारियों तथा कार्यकर्ताओं से अनुरोध किया कि ६, ७ अप्रैल को प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन रोहतक मे कम से कम १० बसो पर आर्यसमाजो के नाम-पट तथा ओ३म् के झण्डे लगाकर भारी सख्या मे रोहतक पहुचकर आर्यसमाज की शक्ति तथा सगठन का परिचय देवें और सम्मेलन को सफल करने के लिए कम से कम एक लाख रुपए का योगदान करे। आर्यसमाज के सभी अधिकारियो ने सभामन्त्री जी को आश्वासन दिलाया कि वे अपनी आर्यसमाज तथा केन्द्रीय सभा की बैठक करके तन, मन तथा धन से पूरा सहयोग देगे।

बैठक के अन्त मे सभा के अन्तरग सदस्य श्री धर्मचन्द के नौजवान सुपुत्र श्री राजेन्द्रसिंह जिला राजस्व अधिकारी रेवाडी के आकस्मिक निधन पर शोक-प्रस्ताव पास किया गया।

—केदारसिंह आर्य, सभा उपमन्त्री

आर्यसमाज के विस्मृत भजनोपदेशक : ठाकुर उदयसिंह 'ठाकुर कवि'

डा. भवानीलाल भारतीय

आर्यसमाज के मूर्धाभिषिक्त भजनोपदेशक भ्रातातुल्य प० ओमप्रकाश वर्मा के मुख से अनेक बार ठाकुर कवि के पद्य तथा सुन्दर सूक्ति-सुमनो को सुनने का अवसर मिला तो इस कवि के बारे मे जानने की जिज्ञासा हुई। अवसर आया आर्यसमाज बडाबाजार सोनीपत के वार्षिकोत्सव के अवसर पर जब मैं और वर्माजी साथ ही आमन्त्रित थे। उसके बाद जो जानकारी उनसे मिली और कवि ठाकुर की सरस काव्य रचना के कुछ नमूने उनके स्मृतिकोश से प्राप्त किये उन्हे यहा प्रस्तुत किया जारहा है। कवि ठाकुर का वास्तविक नाम ठाकुर उदयसिह था और वे अलीगढ के प्रेमपुर ग्राम के निवासी थे। उनका जन्म १८९२ मे हुआ और ९० वर्ष की आयु प्राप्त कर १९८२ मे दिवगत हुए। उनका अध्ययन तो शायद दसवीं श्रेणी तक हुआ था किंतु हिन्दी, उर्दू, तथा अग्रेजी का उनका ज्ञान पर्याप्त था। आर्यसमाज के प्रारंभिक काल मे अधिकाश भजनोपदेशक उत्तरप्रदेश के मेरठ, अलीगढ, सहारनपुर, मुजफ्फरनगर तथा बुलन्दशहर आदि जिलो मे ही हुए हैं। उन्होने मध्यकालीन इतिहास की अमरकथाओ को काव्य का रूप दिया। इनमे कुछ थी–महाराणाप्रताप, चन्द्रहास, रणसिह और कुवरदेवी आदि। लगभग पचास वर्ष तक वे आर्यप्रतिनिधिसभा पजाब के अतर्गत वैदिकधर्म का प्रचार करते रहे।

यहा उनकी कुछ काव्य रचनाओ को उद्धृत किया जारहा है। इससे उनके काव्य रचना कौशल का अच्छा परिचय मिल सकेगा। ऋषि दयानन्द की महिमा मे लिखी गई उनकी उर्दू गजल का मुलाहिजा फरमाये–

बताए हम तुम्हे दयानन्द क्या था, वो दस्ते कुदरत का एक मौजिजा था।
(प्रकृति के हाथ का एक आश्चर्य था)
सुनाता था अहकाम वो आसमानी, इसी वास्ते वो रसूले खुदा था।
(ईश्वरीय सदेश सुनाने के कारण उसे ईश्वर का दूत कहा जा सकता है)
लुटाता था वैदिकधर्म का खजाना
महादानी दानी करण से सवा (सवाया-उत्कृष्ट) था।
आदित्य ब्रह्मचारी बन कर रहा वो
कलियुग का वो मिस्ले (तुल्य) भीषम पिता था।
उसे याद करते हैं सब दोस्त दुश्मन।
कहो क्यो न 'ठाकुर' कि वह औलिया (उच्च कोटि का साधु) था।

भारत के कतिपय देशभक्तो तथा प्रतिभावान् पुरुषो मे दयानन्द की आत्मा का प्रकाश दिखाई देता है। उस भाव को कवि ने इस प्रकार व्यक्त किया है-

कोकिला न कूके काहू देश मे सरोजिनी सी,
कोविद कवीन्द्र मे रवीन्द्र ही सितारो है।
काहू देश कोश मे मिले न जगदीश बोस,
गामा (पहलवान) जगजीत को जीत न अखारो है।
मोती अक जवाहर (निहरू) मिले न रत्नाकर मे,
साधु न मिलेगा जैसा ये लगोटी वालो (गाधी) है।
कहे कवि ठाकुर मानो चाहे मत मानो
सबकी आत्मा मे दयानन्द को उजारो है।।

यदि स्वामी दयानन्द का धराधाम पर अवतरण पर नहीं होता तो कैसी स्थिति हो जाती इसे कवि ने निम्न सवैया मे बताया है। कवि भूषण ने शिवाजी महाराज की प्रशसा मे कुछ ऐसे ही भाव व्यक्त किये हैं जो 'शिवाजी न होते तो सुन्नत होती सबकी' जैसे वाक्यो मे व्यक्त हुए हैं।

दयानन्द महिमा का ठाकुरकृत पद्य–

वेद के भेद कहा खुलते अरु पुरानन की प्रति मोटी होती।
तुलती ही गप्पो की तोल धडाधड, खोटे खरे की कसौटी न होती।
हिन्दू न हिन्दी न हिन्द रहे थे, अग में फाटी लगोटी न होती।
'ठाकुर' राम के वशज कर गौ बोटी तो होती, पर चोटी न होती।।

भौतिकता को प्रधानता देने वाले वर्तमान युग की विडम्बना को कवि ने निम्न कवित्त में चमत्कारपूर्ण शैली मे व्यक्त किया है–

सोचो ले जाया जाय पार किस तरह धर्म की नैया को।
जब लगा पूजने जग सारा ईश्वर की जगह रुपैया को।
वेदो की कथा को सुनने को आये तो आये चार जना।
लाखो की जनता टूट पड़ी सुनने ताता थैया (विश्या-नृत्य) को।
बाबू साहब के कुत्ते भी यहा दूध सूघ कर हट जाते हैं।
खल (गौ का खाद्य) का टुकडा दिया नहीं भारत की गैया मैया को।
हो एक बात तो बतलाऊ 'ठाकुर' इस पागलखाने की।
जब राष्ट्रपति को दस हजार, मिलता दस लाख सुरैया (अभिनेत्री) को।।

सृष्टि रचयिता की रचना तो बुद्धिपूर्वक ही हुई है, चाहे हम अल्पज्ञो को उसका रहस्य समझ मे न आये, यह भाव इस कविता मे देखे-

दुनिया बनानेवाले दुनिया बनाई, रचना समझ मे मेरे न आई।
निर्जन वन मे फूल खिलाये सोने मे क्यो न सुगध समाई।
गन्ने मे फल भी लगाया तो होता, चदन में क्यो न कलिया खिलाई।
काबुल मे किशमिश ब्रज मे है टैंटी (करील के फल)।
पशुओ में कैसी कस्तूरी जमाई।
यदि कोई और होता ठाकुर कविजी, उसे मूरख बनाती सारी खुदाई।

सासारिक विषयो मे तल्लीन जीव को प्रबोधन देता कवि कहता है-

विषयो मे फसकर ए मूरख, भगवान् भजन क्यो छोड दिया।
है शोक ऋषि और मुनियो के सब चाल-चलन को छोड दिया।
यहा बडे-बडे मतिवाले भी माया मे हुए मतवाले,
पापन के कटीले काटो मे गुलजार चमन (प्रफुल्लित उद्यान) को छोड दिया।
स्वार्थ के इन टुकडो पर तू कुत्तो की तरह दर-दर भटका,
दो रोटी के बदले हमने सध्या हवन को छोड दिया।
तेरे प्रेम का चस्का लगते ही देखा राजा महाराजो को
देही पर भस्म रमा बैठे और तख्ते वतन को छोड दिया।
तेरे अनुराग के दीपक पर मेरा मन जब पतग बना,
तब पार हुआ भवसागर से आवागमन को छोड दिया।
'ठाकुर' जिस पर तूने तन मन धन सब वारा था
उसने श्मशान मे जाकर के चार हाथ कफन को छोड दिया।।

जिस दीपवली के दिन महावीर स्वामी, स्वामी रामतीर्थ तथा ऋषि दयानन्द ने महाप्रस्थान किया उसे उलाहना देते हुए कवि ने लिखा-

जैन अचारी (आचार्य) गुणधारी तपी ब्रह्मचारी महावीर स्वामी की जोत बुझाई है।
भक्ति रससना मस्ताना स्वामी रामतीर्थ उसकी छटा तूने गगा मे डुबोई है।
जगहितकारी वेद धर्म के प्रचारी दयानन्द ब्रह्मचारी को अनन्त मे विलाई है।
कहे कवि 'ठाकुर' ऐसे अधम अघन (पाप) कर कारे मुखवारी तू दिवाली फिर आई है।

यहा इस प्रतिभाशाली कवि ठाकुर के रससिक्त काव्य की एक झलक ही दी जासकी है। हमारा प्रयत्न होना चाहिये कि आर्यसमाज से जुडे इन दिवगत कवियो, गायको और भजनोपदेशको के जीवन और कृतित्व का लेखा-जोखा एक बार पुन लिया जाये।

–८/४२३ नन्दन वन जोधपुर।

*नोट - सन् १९७६ मे सुदर्शनदेव आचार्य के द्वारा ठाकुर उदयसिह प्रेमपुरी की हस्तलिखित पुस्तक "**ठाकुर सर्वस्व**" मेरे पास प्रेस मे छपने के लिए आई थी। विगत २६ वर्षो के अन्तराल मे इसके लेखक और प्रकाशक भी दिवगत होचुके हैं। यदि कोइ सज्जन इस पुस्तक के प्रकाशन का व्यय वहन करना चाहे तो उसका परिचय भी चित्रसहित इस पुस्तक के साथ प्रकाशित कर दिया जायेगा।*

कवि की १ उदयप्रकाश, २ चन्द्रहास, ३ छत्रपति शिवाजी, ४ महाराणा प्रताप, ५ योद्धा छत्रसाल, ६ ठाकुर तरग, ७ ठाकुर विलास, ८ वेद और कुर्आन के दो-दो हाथ आदि अन्य रचनाये भी हैं।

उपदेशको की दशा का वर्णन ठाकुर कवि ने इस प्रकार किया है-

शीष पर बिस्तर और बगल मे छतरी लगी,
एक हाथ बैग दूजे बालटी सभाली है।
दिन गया धक-धक में रात गई बक-बक में,
कभी है अपच और कभी पेट खाली है।
जगल में सलूना और सडक पै दशहरा मना,
मोटर में होली और रेल मे दिवाली है।
पुत्र मरा सावन मे और पत्र मिला फागुन मे,
'ठाकुर' इन उपदेशकों की दशा भी निराली है।।

—वेदव्रत शास्त्री

ओ३म्

हरयाणा के आर्यसमाजों के नाम अपील

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्त्वावधान मे ६-७ अप्रैल २००२ को रोहतक में विशाल हरयाणा प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन होगा। इस सम्मेलन की सफलता सभी आर्यसमाजो के निष्ठावान्, कार्यकर्त्ताओ और अधिकारियो पर निर्भर है। अत हमारा आर्यसमाज के सभी विद्वानो, उपदेशको, लेखको और आर्यसमाज एव शिक्षण-सस्थाओ के अधिकारियो, कार्यकर्त्ताओ से निवेदन है कि आप तन, मन, धन से आर्य महासम्मेलन को सफल बनाने मे सभा के अधिकारियो का पूरा सहयोग करे, इस सम्मेलन मे भारी उत्साह और संख्या मे उपस्थित होकर आर्यसमाज की सगठनशक्ति का परिचय देवे।

आचार्य यशपाल — मन्त्री
स्वामी ओमानन्द सरस्वती — प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक

जाग उठो ! भारतीयो क्रान्ति बिगुल बजाओ

(भारत-पाक की तनाव स्थिति पर रचना)

जरा देश मे आओ भारतीयो इतिहास के गौरव को सम्भालो।
यदि है दम तो नया इतिहास क्रान्ति का फिर से रचाओ।।
आज कसौटी के कगार पर राष्ट्र हमारा खडा है।
फूटपरस्ती की राजनीति का ये मसला विकराल रूप से अडा है।।
यदि युवाशक्ति के पास आत्मशक्ति का जरा भी बल होगा।
हमें अटल विश्वास है हमारा हर अभियान सफल होगा।।
संस्कृति है उच्च हमारी, उज्ज्वल है इतिहास हमारा।
भविष्य देश का है वीर भारतीयो आज तुम्हारे हाथो में।।
जरा जगाओ अपने पौरुष को नेताओ, फिर से क्रान्ति सुभाष नेता की लाओ।
जगाओ अपने ससद को फिर से सरदार पटेल सा बिगुल बजाओ।।
यदि है साहस तो दुश्मन की बार-बार ललकार को हुकार से प्रतिकार करो।
राष्ट्र भारती की बलिवेदी आज तुम्हें फिर से पुकार रही है।।
ओ मेरे नौनिहलो ! समय तुम्हे आज पुकार रहा है मा का आचल बचाने को।
शत्रुदल पर कुश करने को सेना को आजाद करो भारत मा की लाज रखो।।
ओ मेरे ! राम लक्ष्मणो ! पुनः अरिदल से तापित है वसुधा हमारी।
बन धनुर्धर फिर से आर्यावर्त को रामराज्य का दर्जा दो।।
ओ ! मेरे प्यारे कृष्ण के वंशजो ! फिर से इस महाभारत की डोर सम्भालो।
जरा अर्जुन का गांडीव फिर से तानो, पाचजन्य का शंखनाद करो।।
राष्ट्र भारती की तरुणाई फिर से अगडाई ले मचल रही है।
समय आज पुकार रहा है सब मतभेदो को भुलाकर आतकवाद पर हुकार करो।।
सदा की जीक जीक वृत्तिका प्रतिकार कर भारत की सीमा पर शान्ति करो।
देश के इर्द-गिर्द मण्डराते हुए कुकरमुत्तो को सदा-सदा के लिए साफ करो।।
इन आतंकवाद भस्मासुरो की अब भस्म करो समय यही कह रहा है।
पृथ्वीवासी मानवता को शान्ति-सुख का जीवन दो, ओ धरती के वीर पुत्रो।।
भविष्य भारत का उज्ज्वल है फिर से दुनिया को वेदो का संदेश देगे।
इन महाविनाशकारी युद्धों से आसुरीवृत्ति का शीघ्र संहार होगा।।
खम ठोक ठेलता दुर्योधन अब युद्ध होगा ऐसा कि फिर कभी न होगा।
जब नाश मनुष्य पर चाहता है पहले विवेक मर जाता है।।

रचयिता—डॉ० आर्य नरेश नाणा (पाली) राज०

हरयाणा के आर्यसमाजों से आवश्यक निवेदन

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से वेदप्रचार के प्रसार के लिए प्रभावशाली उपदेशक प० शकरमित्र वेदालकार, पं० तेजवीर, प० सीताराम, पं० प्रताप की सेवाए प्राप्त की हैं। भजनोपदेशक पं० चिरंजीलाल, प० मुरारीलाल बेचैन, स्वामी देवानन्द, पं० जयपाल, पं० सत्यपाल, पं० शेरसिंह तथा प० रामकुमार आदि पूर्ववत् प्रचारकार्य में सहयोग दे रहे हैं। **—यशपाल आचार्य सभामन्त्री**

जुआँ जिला सोनीपत में ऋषि बोधोत्सव

आर्यसमाज जुआँ जिला सोनीपत में शिवरात्रि के शुभावसर पर ११, १२ मार्च २००२ को ऋषि बोधोत्सव मनाया जायेगा। **—खजानसिंह आर्य मन्त्री**

दयानन्दमठ का तीसवां वैदिक सत्संग

दयानन्दमठ, रोहतक। आर्यसमाज की प्रमुख सस्था दयानन्दमठ, गोहानारोड, रोहतक का तीसवा वैदिक सत्सग समारोह ३ मार्च, सन् २००२ रविवार को बडी धूमधाम से मनाया जारहा है। यह सत्सग पिछले तीस महीने से निरन्तर चल रहा है। इस सत्सग के सयोजक सन्तराम आर्य ने बताया कि हर महीने के पहले रविवार को यह समारोह मनाया जाता है जो प्रात ९-०० बजे देवयज्ञ से प्रारम्भ होता है तथा एक घण्टे का विशेष वक्तव्य एक विद्वान् द्वारा दिलवाया जाता है। अध्यात्म-प्रवचन के बाद वैदिक सत्सग समिति, दयानन्दमठ, रोहतक की ओर से ऋषि लगर मे भोजन की व्यवस्था होती है जहा सभी मिलकर भोजन करते हैं। इस बार तीसवे वैदिक सत्सग मे विषय रखा है 'साधना के मार्ग मे विघ्न'। वक्ता के रूप मे आर्यसमाज के मूर्धन्य सन्यासी व पूर्व सासद स्वामी इन्द्रवेश जी। सभी आर्यबन्धुओ को इस अवसर पर सयोजक की ओर से विशेष आग्रह के साथ निमन्त्रित किया गया है। जो व्यक्ति साधनाशील है उसके लिए इस बार का सत्सग विशेष महत्त्व रखता है।

जन्मा एक बालक सुखदाई

रचयिता : स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

गीत तर्ज (जहा डाल-डाल पर सोने की चिडिया कर रही बसेरा)

जहा कदम कदम पर घोर अविद्या ने डाला था डेरा, छाया चहुंओर अधेरा।
भारत के कोने-कोने करता पाखण्ड बसेरा, छाया चहु ओर अधेरा।।
भारत मे उस समय निरन्तर थी कुप्रथा जारी।
स्त्री और शूद्र नहीं थे विद्या पढने के अधिकारी।।
भेद-भावनाओ ने आशाओ पर पानी फेरा।।१।।
बाल-वृद्ध बहु विवाह सतीप्रथा का चालोचलन था।
ऊच-नीच और छूआछूत मे जकडा हुआ वतन था।।
विधवा दीन अनाथो को अति कष्ट घनेरा।।२।।
सम्वत् अठारह सौ इक्यासी फागुन की दसमी आई।
टकारा गुजरात प्रान्त जन्मा एक बालक सुखदाई।।
कर्षन जी के घर आगन खुशियो का रग बखेरा।।३।।
जन्मा मूल नक्षत्र मे मूलशकर शुभ नाम धराया।
यही मूलशकर बालक ऋषि दयानन्द कहलाया।।
दूर अधेरा किया देश मे लाया सुखद सवेरा।।४।।
छाया चहु ओर अधेरा।

बिन्दु में सिंधु

डॉ. नरेश सिहाग 'बोहल' गुगन निवास, २६-पटेलनगर भिवानी (हरयाणा)

कर्त्तव्य कभी आग और पानी की परवाह नहीं करता। -प्रेमचन्द
कर्म ही मनुष्य के जीवन को पवित्र और अहिंसक बनाता है। -विनोबा भावे
सारी कला सिर्फ प्रकृति का ही अनुकरण है। -सेनेका
कष्ट हृदय की कसौटी है। -जयशकर प्रसाद
जहा न पहुचे रवि, तहा पहुचे कवि। -कहावत
क्रोध मस्तिष्क के दीपक को बुझा देता है। -इगरसोल
प्रसन्नचित्त मनुष्य अधिक जीते हैं। -शेक्सपीयर
गरीब वह है जिसका खर्च आमदनी से ज्यादा है। -ब्रूएयर
जो गलतिया नहीं करता वह प्राय कुछ नहीं कर पाता। -एडवर्ड जे फेलप्स
चरित्र ही मनुष्य की पूजी है। -एमर्सन
प्राणियो के लिए चिन्ता ही ज्वर है। -स्वामी शकराचार्य
जीवन एक पुष्प है और प्रेम उसका मधु। -विक्टर ह्यूगो
दान देना ही आमदनी का एकमात्र द्वार है। -स्वामी रामतीर्थ
गुरु का भी दोष कह देना चाहिए। -स्वामी रामतीर्थ
ज्ञानवान् मित्र ही जीवन का सबसे बडा वरदान है। -यूरीपीडीज
धन राष्ट्र का जीवन-रक्त है। -स्विफ्ट

आर्यसंस्कृति का मूर्तरूप है महर्षि दयानन्द शिक्षण-संस्थान

महर्षि दयानन्द शिक्षण संस्थान की अध्यक्षा डा० विमल महता जी एवं श्रीमती नीलम स्वामी ओमानन्द जी महाराज प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का स्वागत करते हुए तथा मन्त्री श्री बी.एल. भाटिया जी साथ में स्वागत करते हुए।

कल कारखानों के शहर फरीदाबाद को हरयाणा की औद्योगिक राजधानी माना जाता रहा है। पाकिस्तान के मैलसी गाव मे जन्मे और आजादी के बटवारे के पश्चात् फरीदाबाद को अपनी कर्मभूमि बनानेवाले उस स्वप्नद्रष्टा के लिए कोई कार्य असभव नहीं था। क्रान्ति के अग्रदूत महर्षि दयानन्द सरस्वती और आर्यसमाज के मूल्यों को अपने हृदय में सजोए वर्तमान समय मे महर्षि दयानन्द शिक्षण सस्थान जिसके सतत प्रयत्नो और त्याग से मूर्त रूप पा सका है वह महान् विभूति हैं स्व कन्हैयालाल महता जी।

महर्षि दयानद शिक्षण सस्थान को फरीदाबाद के शैक्षिक विकास का पर्याय माना जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। वस्तुत इस सस्थान का प्रारभ जब हुआ, तब टाउन मे शिक्षा का लगभग अभाव था। सरकारी स्कूलो के गिरते स्तर और मिशनरी स्कूलो के ईसाई प्रचार से भारतीय सस्कृति को बचाए रखने का उद्देश्य इस सस्थान का आधारस्तम्भ बना। सन् १९५४ मे नेहरू ग्राउड में आर्यसमाज की स्थापना करके उन्होने इस नगर मे आर्य पताका फहराई और सन् १९६९ मे मात्र एक बच्चे से महता जी ने ज्ञान की ज्योति प्रज्वलित की। आज वह महर्षि दयानद शिक्षण सस्थान की १६ विद्यालयो की ज्योतिशिखाओ और एक महिला महाविद्यालय के रूप में प्रकाश फैला रहा है।

स्व महता जी का उद्देश्य विद्यालयो के माध्यम से सभी समुदाय को शिक्षित करना चाहते थे। वे जरूरतमद विद्यार्थियो की फीस तक कई बार अपने पास से जमा करते और उन्हे विद्यालय आने को प्रेरित करते। सन् १९७० मे सैक्टर-७ मे विद्यालय तथा २ ई/२७ का विद्यालय, १९७१ मे ३ जी, १९७३ मे सैक्टर-१६ मे दयानद विद्यालय, १९७७ मे १ ई/६४, १९७९ मे २ एम २५ मे, १९८० मे जवाहर कालोनी और सैक्टर-२३ का विद्यालय, १९८४ मे मुजेसर और इसके साथ-साथ सैक्टर १० तथा सैक्टर १७ मे विद्यालय दर विद्यालय स्थापित कर उन्होने बडे-बडे उद्योगपतियो और पूजीपतियो के समक्ष एक आदर्श स्थापित किया। नारी शिक्षा के उच्च विकास का स्वप्न महता जी के लिए बहुत बडा था। सरकार से इस महिला महाविद्यालय के लिए उचित स्थान पर भूमि प्राप्त करने के लिए इन्हे अनशन तक करना पडा। प्रारभ में दयानन्द महिला महाविद्यालय को पजाब विश्वविद्यालय से मान्यता प्राप्त हुई। तत्पश्चात् हरयाणा प्रदेश का शिक्षा केन्द्र कुरुक्षेत्र को मिला और वर्तमान समय मे यह एमडी विश्वविद्यालय रोहतक से मान्यता प्राप्त है। दयानद महिला महाविद्यालय में वर्तमान समय मे २००० के लगभग लडकिया शिक्षा प्राप्त कर रही हैं। निरतर श्रम करते करते अस्वस्थता इनकी ऐसी सगिनी बनी कि अतत इस तापस की जीवन ज्योति २८ जनवरी वसत पचमी को काल की क्रूर आधी मे बुझ गई।

वर्तमान समय में के एल महता दयानन्द महिला महाविद्यालय एक भव्य इमारत से सुसज्जित दो हजार के लगभग कन्याओं को शिक्षा के हर विभाग वाणिज्य, विज्ञान, कला और गृहविज्ञान से जोडे हुए है। इस वर्ष यहा एम काम की कक्षाए खुल्ने की सभावना है जिसे विश्वविद्यालय से अनापत्ति पत्र प्राप्त करनेवाली छात्राओ को नि शुल्क शिक्षा एव स्वर्णपदक देकर उत्साहवर्धन किया जाता है। सस्थान की अध्यक्षा विमल महता समय से पूर्व अपने रीडर पद से अवकाश ग्रहण करके निष्ठा भाव से इसके विकास कार्य में प्रयासरत है।

आर्यसमाज रेवाड़ी की रामायण कथा सम्पन्न

आर्यसमाज मौली चौक रेवाडी के वैदिक समारोह मे रामायण कथा सम्पन्न हुई। १७ फरवरी दिन रविवार को वैदिक समारोह के माध्यम से प० वेगराज भजनोपदेशक द्वारा सुनाई गई रामायण कथा सम्पन्न हुई। एक सप्ताह से प्रात कालीन यज्ञ तथा २ बजे से ५ बजे तक रामायण कथा जिनको सुनकर श्रोताओ ने अमृतपान किया तथा वेदो के विद्वान् मनीषी वेदप्रकाश जी ने गायत्री मन्त्र के एक-एक शब्द की व्याख्या करके सावित्री और गायत्री मे अन्तर बताकर सभी को मन्त्रमुग्ध किया।

बहन सुमित्रा भजनोपदेशिका की शिष्या सुमन आर्या व उसके सहयोगियो ने ईश्वरभक्ति के भजन प्रस्तुत किये। बहन सुमित्रा जी ने महर्षि दयानन्द द्वारा किये गए नारी जाति पर उपकारों का वर्णन किया और आई हुई महिलाओ को गुरुडमों से बचकर वैदिक सत्सग मे आने के लिए प्रेरित किया और बहन सुमित्रा बहन जी से गाए भजनों को लिखवाने का आग्रह किया। —मन्त्री, आर्यसमाज

आर्य-संसार

आर्यसमाज सान्ताक्रुज का "पुरस्कार समारोह सम्पन्न"

१० फरवरी, २००२ को आर्यसमाज सान्ताक्रुज (प) मुम्बई द्वारा आयोजित पुरस्कार समारोह आर्यसमाज के विशाल सभागृह मे प्रात १० बजे माननीय कैप्टन देवरत्न जी आर्य (प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली) की अध्यक्षता में आरम्भ हुआ। आर्यसमाज सान्ताक्रुज के विद्वान् धर्माचार्यो द्वारा मन्त्रोच्चार के साथ-साथ मच पर मुख्यअतिथि डा भालचद्र मुणगेकर (कुलगुरु मुम्बई विद्यापीठ), श्री वेदप्रकाश जी गोयल (प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, मुम्बई) एवं विशिष्ट अतिथि, श्री मिठाईलाल सिह (मत्री आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई), का आगमन हुआ। पुरस्कार परिचय महामन्त्री श्री यशप्रिय जी आर्य ने दिया।

सर्वप्रथम श्रीमती शिवराज आर्या "बाल पुरस्कार" से ब्र ऋषि कुमार शुक्ल, गुरुकुल् अयोध्या को प्रथम पुरस्कार स्वरूप रु ५,००१ रुपये तथा सुश्री सुनेश आर्या, कन्या गुरुकुल चोटिपुरा को पुरस्कार स्वरूप रु ५,००१ रुपये शाल, मोतिमाला, ट्राफी भेटकर सम्मानित किया गया। इसी क्रम मे श्रीमती यशबाला गुप्ता ने आर्य विदुषी आचार्या कमला जी आर्या, कन्या गुरुकुल सासनी, हाथरस, (उ०प्र०) का जीवन परिचय प्रस्तुत किया। श्रीमती लीलावती महाशय "आर्य महिला पुरस्कार" से आचार्या कमला जी आर्या, हाथरस को रु० ११,००१ की थैली, स्वर्ण ट्राफी, शाल, श्रीफल एव मोतिमाला से सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर आचार्या कमला जी आर्या ने कहा कि स्वामी दयानन्द सरस्वती की महान् कृपा है कि नारी आज शिक्षा के क्षेत्र मे प्रगति कर रही है और एक नारी की शिक्षा एक परिवार की, एक समाज एव एक राष्ट्र की शिक्षा है। आचार्या कमला जी ने अपनी पुरस्कार मे प्राप्त राशि को गुरुकुल मे दान देने की घोषणा करके अपने समर्पित जीवन को प्रस्तुत किया।

इसके पश्चात् श्री विश्वभूषण जी आर्य ने प० उत्तमचन्द जी शरर का जीवन परिचय प्रस्तुत किया। "वेदोपदेशक पुरस्कार" से प० उत्तमचन्द जी शरर को रु० १५,००१ की थैली, स्वर्ण ट्राफी, शाल, श्रीफल एव मोतियो की माला से सम्मानित किया गया।

तत्पश्चात् डॉ सोमदेव जी शास्त्री (प्रधान आर्यसमाज सान्ताक्रुज, मुम्बई) ने प० राजवीर जी शास्त्री (सम्पादक दयानन्द सदेश, दिल्ली) का जीवन परिचय दिया। "वेद वेदाग पुरस्कार" से प० राजवीर जी शास्त्री को २५,००१ रुपये की थैली, स्वर्ण ट्राफी, शाल, श्रीफल एव हार देकर सम्मानित किया गया। इस सम्मान के अवसर पर प० राजवीर जी शास्त्री ने कहा कि– "मैं आर्यसमाज का प्रहरी हू व कलम का सिपाही हू। ऋषि के मिशन को आगे बढाते रहने की दृढ प्रतिज्ञा है। आपका हृदय से आभारी हू। आर्यसमाज सान्ताक्रुज का यश चारों ओर फैले इस प्रकार की कामना करता हू।

मुम्बई विद्यापीठ के कुलगुरु श्री डॉ० भालचन्द्र मुणगेकर जी का जीवन परिचय आर्यसमाज के मन्त्री सगीत जी आर्य ने प्रस्तुत किया। तत्पश्चात् डॉ० भालचन्द्र मुणगेकर जी ने अपने भाषण में कहा कि-यह महर्षि दयानन्द जी की देन है कि आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार के निमित्त, गुरुकुलीय शिक्षा के अन्तर्गत कार्य कर रही किसी महिला को सम्मानित करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। इसी शृंखला में श्री मिठाईलाल सिह (मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा, मुम्बई) ने श्री वेदप्रकाश ज गोयल (केन्द्रीय जहाज रानी मंत्री, भारत सरकार) का जीवन परिचय दिया। तत्पश्चात् माननीय श्री मन्त्री जी ने कहा-परिवर्तन काल के सर्वश्रेष्ठ नेता स्वामी दयानन्द जी सरस्वती थे, मेरा यह सौभाग्य है कि मैं आज आर्यसमाज सान्ताक्रुज के पुरस्कार समारोह मे उपस्थित हूं। आर्यसमाज देश के कोने-कोने में है तथा श्रेष्ठ आर्य प्रतिनिधियो द्वारा राष्ट्र निर्माण का कार्य जारी है।

विशिष्ट अतिथि के पद से बोलते हुए माननीय श्री ओकारनाथ आर्य (प्रधान : आर्य प्रतिनिधि सभा, मुम्बई) ने कहा कि-आर्य शिक्षण संस्थाएं देश के उत्थान की दिशा सतत प्रक्रिया है। हमें अपने गुरुकुलो की ओर विशेष ध्यान देना होगा। तत्पश्चात् श्री यशप्रिय जी आर्य ने समारोह के अध्यक्ष, आर्यनेता कैप्टन देवरत्न जी आर्य का परिचय दिया, माननीय कैप्टन आर्य जी ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन मे अनेक भावी कार्यक्रमो को उजागर करते हुए, शास्त्र, शस्त्र व शुद्धि के त्रिसूत्रीय कार्यक्रम को सफल बनाने का अपना सकल्प दुहराते हुए सभी से सहयोग की अपील की तथा आगामी होलिकोत्सव पर छुआछूत के भेदभाव को मिटाकर "मिलन पर्व" के रूप मे मनाने का आह्वान किया।

अन्त मे डॉ सोमदेव जी शास्त्री (प्रधान आर्यसमाज सान्ताक्रुज, मुम्बई) ने सभी का धन्यवाद ज्ञापन दिया। तत्पश्चात् शान्ति पाठ एव जयघोष हुआ। प्रीतिभोज के साथ समारोह सम्पन्न हुआ।

–यशप्रिय आर्य, महामन्त्री

१५१ कुण्डीय गायत्री महायज्ञ

गुजरात में आए भीषण भूकम्प में मृतकों की प्रथम पुण्य तिथि पर आयोजित

श्री महर्षि दयानन्द जन्मस्थान टकारा द्वारा पिछले वर्ष २६ जनवरी को आये भूकम्प मे अकाल मृत्यु के घाट उतरे असख्या नर-नारियो की प्रथम पुण्य तिथि पर १५१ कुण्डीय गायत्री महायज्ञ उनकी स्मृति मे आयोजित किया गया।

उपरोक्त स्मृति यज्ञ टकारा से १०० किलोमीटर के दायरे मे आने वाले लगभग समस्त गाव के निजी व्यक्तियो, पचायतो, तहसीलदारो ने भाग लिया। इस आह्वान के पीछे उपदेशक विद्यालय के उन सभी ब्रह्मचारियो का योगदान है जो कि एक वर्ष से इन गावो मे निरन्तर सामूहिक यज्ञो का आयोजन करते रहे है। इस सारे आयोजन की परियोजना ब्रह्मचारी विजेन्द्र के मन मस्तिष्क की ही उपज थी। कार्यक्रम मे १०८ कुण्डीय यज्ञ की व्यवस्था थी लेकिन उस दिन लोगो का उत्साह देखते हुए तुरन्त ही ४३ कुण्डो की व्यवस्था करनी पडी और एक कुण्ड पर ५ दम्पतियो को बिठाया गया। इस हिसाब से १५१० केवल यजमान ही थे और लगभग ५००० व्यक्तियो का अपार जन समूह इसमे सम्मिलित हुआ। गाव वासियो का उत्साह देखते ही बनता था। सभी यजमान अपने-अपने गाव से शोभायात्रा निकालते हुए टकारा गाव मे घूमते हुए महर्षि दयानन्द जन्मस्थान का दर्शन करते हुए उत्सव स्थल पर उपस्थित हुए। प्रत्येक यजमान एक-एक किलोग्राम घृत इस यज्ञ हेतु लाया था, यह उनकी यज्ञ के प्रति अपार श्रद्धा का ही प्रतीक था।

इस सारे कार्यक्रम मे टकारा, मोरवी, जोडिया, धोल, पडधरी, तहसील के ग्रामों ने भाग लिया और सारे कार्यक्रम के मुख्य आयोजक के रूप मे आचार्य विद्यादेव जी ने ब्रह्मा का पद ग्रहण कर सम्पूर्ण कार्यक्रम सम्पन्न कराया।

सभी पधारे हुए यज्ञ प्रेमियो ने आग्रह किया कि यह या प्रतिवर्ष २६ जनवरी को इसी प्रकार आयोजित किया जाये। हम उन सभी महानुभावो के, ग्रामवासियो, पचायत प्रमुखो एवं तहसीलदारो का आभार प्रकट करते हैं जिन्होने इस यज्ञ को सफलतापूर्वक सम्पन्न कराने में सहयोग दिया।

–आचार्य विद्यादेव

आर्यवन में योग शिविर

दर्शन योग महाविद्यालय, आर्यवन मे २ अप्रैल से ११ अप्रैल, २००२ तक १० दिन के योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन पू० स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक की अध्यक्षता मे किया जा रहा है, जिसमे माताए भी भाग ले सकेगी। शिविरार्थी १ अप्रैल को सायकाल ४ बजे तक शिविर स्थल तक पहुच जावे।

शिविर मे योगदर्शन के सूत्रों का अध्यापन तथा क्रियात्मक योग साधना सिखाने के साथ-साथ यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि, विवेक-वैराग्य-अभ्यास, जप-विधि, ईश्वरसमर्पण, स्वस्वामी सम्बन्ध ममत्व को हटाने जैसे अनेक सूक्ष्म आध्यात्मिक विषयों पर विस्तार से प्रकाश डाला जाएगा।

शिविर शुल्क रु० ३०० निर्धारित किया गया है। कृपया शिविर शुल्क राशि मनीआर्डर द्वारा ही व्यवस्थापक योग शिविर, आर्यवन के नाम से भेजें। चैक, ड्राफ्ट न भेजे। अपना लौटने का आरक्षण पूर्व ही करवा लेवे।

पत्र व्यवहार–दर्शन योग महाविद्यालय,
आर्यवन रोजड़, पत्रालय-सागपुर, जिला साबरकांठा, गुजरात-३८३३०७

आर्यसमाज अटेली मण्डी (महेन्द्रगढ़) का चुनाव

प्रधान–श्री रामपत आर्य, उपप्रधान–श्री रामोतार आर्य, मन्त्री–श्री सूरजभान आर्य, उपमन्त्री–श्री रामसिंह, कोषाध्यक्ष–श्री सावंतराम आर्य, पुस्तकाध्यक्ष–श्री बलवन्तसिंह आर्य।

परमात्मा जो भी करता है अच्छा ही करता है

एक बार अकबर बादशाह और मन्त्री बीरबल घूमते हुए जा रहे थे कि एक कटीली झाडी मे उलझने से उगली मे जख्म हो गया। मन्त्री बीरबल ने कहा कि परमात्मा जो भी करता है अच्छा ही करता है। अकबर ने क्रोध मे आकर बीरबल को अपने मन्त्री पद से हटा दिया। बीरबल ने फिर कहा कि यह भी अच्छा हुआ, परमात्मा जो भी करता है अच्छा ही करता है।

अकबर अपने अगरक्षक के साथ आगे चला गया। घूमते-घूमते दूसरे देश की सीमा पर पहुच गए। वहा के राजा को ऐसे व्यक्ति की खोज थी जिसकी देवी पर बलि चढ सकती हो। उसी समय खोजते-खोजते दो सिपाही आ पहुचे और अकबर बादशाह को अच्छा, मोटा, ताजा, स्वस्थ एव सुन्दर देखकर निश्चित किया कि यह व्यक्ति देवी पर बलि चढाने के लिए उपायुक्त रहेगा। अकबर को पकडकर अपने राजा के पास ले गए। अकबर बहुत गिडगिडाया और कहने लगा कि राजन् मैं भी आपकी ही तरह अपने देश का राजा (बादशाह) हू मगर उस राजा ने अकबर की एक ना सुनी और अकबर को बलि चढाने के लिए देवी के मन्दिर मे भेज दिया गया।

पुजारी ने जब निरीक्षण किया तो कहा कि इसकी बलि देवी स्वीकार नहीं करेगी। क्योकि वह अग भग है। इतना कहकर देवी के पुजारी ने अकबर को बलि चढने के अयोग्य घोषित कर दिया। अकबर वहा से सकुशल वापिस आया और सीधे बीरबल के पास पहुचा। अकबर ने कहा कि बीरबल यह बात तो समझ मे आ गई है कि जब मेरी उगली मे जख्म हुआ था तो आपने कहा था कि परमात्मा जो भी करता है अच्छा ही करता है क्योकि मेरी उगली मे जख्म ना होता तो आज मेरी बलि चढ गई होती लेकिन यह बात समझ मे नहीं आई कि जब मैंने क्रोध मे आकर आपको मन्त्री पद से हटा दिया था तब भी आपने यही कहा था कि यह भी अच्छा हुआ परमात्मा जो भी करता है अच्छा ही करता है। तब बीरबल ने बादशाह अकबर ने कहा कि यदि मुझे आप मन्त्री पद से नहीं हटाते और मैं आपके साथ होता तो आप उगली मे जख्म होने से अग भग होने के कारण बलि चढने से बच गए थे लेकिन मैं अवश्य बलि चढ जाता। यह विवेकयुक्त दूरदर्शी बात सुनकर अकबर बहुत प्रसन्न हुआ और पुन बीरबल को अपना मन्त्री नियुक्त कर लिया। अत परमात्मा जो भी करता है अच्छा ही करता है। उस प्रभु का विधान मगलमय है।

—आचार्य रामसुफल शास्त्री
वैदिक प्रवक्ता, लाल सडक, हासी

बोध-पर्व पर विशेष—

टंकारा की किरण-सुबोध

टकारा की किरण सुबोध, शान्त कर गयी तम का क्रोध।
पाया किसने ऐसा बोध, हारे जिससे सब अवरोध।।
अन्तरिक्ष मे असख्य सूरज, उनमे एक हमारा सूरज।
सूरज कुल के नक्षत्रो मे, यह पृथ्वी रही हमारी सज।
पृथ्वी के सब देश-देश मे, एक हमारा भारत प्यारा।
भारत के गुजरात प्रान्त मे, बसता एक ग्राम टकारा।
टकारा का एक अबोध, नया दे गया सूरज शोध।
पाया किसने ऐसा बोध, हारे जिससे सब अवरोध।।
कर्षन जी उत्तम अधिकारी, जिनकी रही प्रतिष्ठा भारी।
उनके घर सन्तान पधारी, अमृता यशोदा महतारी।
वे बालक धन्य मूलशकर, जिनमे जगे ज्ञान के अकुर।
यजुर्वेद शिव शास्त्र शुभकर, पढने लगे 'मूलजी' सुखकर।
पाया नित्य शैव-सम्बोध, पूजा शिव की बिना विरोध।
पाया किसने ऐसा बोध, हारे जिससे सब अवरोध।।
चौदह वर्ष अवस्था आई, शिव की महिमा बहुत सुहाई।
निशा-जागरण व्रत धारण में, अपनी निष्ठा खूब दिखाई।
पिता-पुजारी सोये सारे, मूल रहे निज नयन पसारे।
आयेगे शिव आज हमारे, पायेगे हम दर्शन प्यारे।
किया पिता ने था अनुबोध, किया मूषको ने गतिरोध।
पाया किसने ऐसा बोध, हारे जिससे सब अवरोध।
सोयी अग्नि बनी अगारा, जग में चमका रवि टकारा।
हो गयी यात्रा अब आरम्भ, गिरने लगे अवैदिक खम्भ।
सच्चे शिव का मान होगया, सुरभित यज्ञ विधान होगया।
वेदो का उत्थान होगया, दयानन्द का गान होगया।
गुञ्जित हुआ धर्म-उद्बोध, करने लगा विश्व अनुरोध।
पाया किसने ऐसा बोध, हारे जिससे सब अवरोध।।

रचयिता · देव नारायण भारद्वाज, 'वरेण्यम्' एम आई जी ४५पी
अवन्तिका कालोनी (प्रथम), रामघाट मार्ग, अलीगढ-उ०प्र०

आर्य केन्द्रीय सभा करनाल द्वारा महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव एवं बोध समारोह का आयोजन

आर्य केन्द्रीय सभा, करनाल (हरयाणा) द्वारा प्रतिवर्ष की भांति महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव एव बोध समारोह ८ मार्च, २००२ से १२ मार्च २००२ तक बडे हर्षोल्लास के साथ मनाया जा रहा है। इसमें आर्यजगत् के उच्चकोटि के विद्वान्, संन्यासी एव भजनोपदेशक पधार रहे हैं। उनमे अमेठी से श्री ज्वलन्तकुमार शास्त्री, गुरुकुल कागडी, हरिद्वार से डॉ महावीर, चण्डीगढ से डॉ रामप्रकाश, कुरुक्षेत्र से डॉ राजेन्द्र विद्यालकार, आर्ष कन्या गुरुकुल से प्रियवदा, श्री वेदभारती आदि पधार रहे हैं। भजनोपदेशको में श्री रामनिवास आर्य तथा मानसिंह आर्य होगे।

अन्य जानकारी/सम्पर्क हेतु श्री वेदप्रकाश आर्य, प्रधान (फोन २५०१९५), श्री लोकनाथ आर्य, महामन्त्री (फोन २६१२०१) से सवाद करे।

आप सब सपरिवार एव इष्टमित्रो सहित इन कार्यक्रमो मे भाग लेकर समारोह को सफल बनाये। सभा को दान देकर सहयोग के पुण्यभागी बने।

—प्रो० चन्द्रप्रकाश आर्य, अध्यक्ष—स्नातकोत्तर हिन्दी
दयालसिंह कॉलेज, करनाल-१३२२००१, फोन २८१४३२ (आवास)
संयोजक प्रेस-एव सूचना समिति

आर्यसमाज को बचाओ

ऐसे व्यक्ति को सदस्य मत बनाओ

जो

१ झूठ बोलता है और सत्य को ग्रहण नहीं करता।
२ धूम्रपान या मद्यपान करता है।
३ मीट मछली अण्डे खाता है।
४ ताश जुआ खेलता है।
५ कभी सन्ध्या हवन नहीं करता।
६ यज्ञोपवीत धारण नहीं करता।
७ आर्यसमाज के माध्यम से दयानन्द का लेबल लगाकर ठगता है।
८ जिसके बीबी (पत्नी) बच्चे कहना नहीं मानते और वैदिक सिद्धान्त के विरुद्ध चलते हैं।
९ सेवा करने की भावना नहीं रखता, केवल पद और अधिकार के लिए लडता झगडता है।
१० अग्रेजी मे निमन्त्रण पत्र आदि छपवाकर राष्ट्रभाषा का अपमान करता है।

विशेष—ऐसे भजन उपदेशकों को भी मत बुलाओ जिसका आचरण शुद्ध नहीं है। अर्थात् मैंने देखा है अनेक भजन गीत गाने वाले धूम्रपान/मद्यपान करते हैं। यदि आर्यसमाज में कूडा करकट जमा होता रहा तो खण्डित हो जाएगा।

—देवराज आर्य मित्र
आर्यसमाज कृष्ण नगर, दिल्ली-५१

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ०१२६२—७६८७४, ७७८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ०१२६२—७७७२२) से प्रकाशित।
पत्र में प्रकाशित लेख सामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री का सहमत होना आवश्यक नहीं। पत्र के प्रत्येक प्रकार के विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक होगा।

भारत सरकार द्वारा रजि० न० २३२०७/७३ सृष्टिसवत् १, ९६, ०८, ५३, १०२
पंजीकरणसख्या टैक/85-2/2000 ☎ ०१२६२-७७७२२

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र रोहतक

प्रधानसम्पादक : यशपाल आचार्य, सभामन्त्री सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री

वर्ष २६ अंक १५ ७ मार्च, २००२ वार्षिक शुल्क ८०) आजीवन शुल्क ८००) विदेश मे २० डॉलर एक प्रति १.७०

ऋषिबोध अंक

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम ओ३म्

पाडिचेरी के योगिराज अरविन्द ने कहा 'ससार के महापुरुषो को पहाड की चोटिया माना जाए तो दयानन्द सबसे ऊची चोटी है।'

देखा न कोई देवता, प्यारे ऋषि की शान का।
लाखो सही मुसीबते, भला किया जहान का।।
महर्षि दयानन्द सरस्वती के १७८वे जन्मदिवस पर
धन्य है तुझको ऐ ऋषि, तूने हमे जगा दिया
सो सो के लुट चुके थे हम, तूने हमे बचा लिया

भारतीय नवजागरण के पुरोधा, स्वराज्य उद्घोषक, स्वतन्त्रता सग्राम उद्बोधक, दलितउद्धारक, छूआछूत, जाति-पाति उन्मूलक, स्त्री शिक्षा पोषक, अन्याय, शोषण, अत्याचार, अधविश्वास, पाखण्ड विरोधक, वेद-उद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती।

साधना स्वाध्याय एवं सेवा शिविर

परोपकारिणी सभा द्वारा ऋषि उद्यान, अजमेर मे साधना स्वाध्याय एव सेवा शिविर का आयोजन १६ मार्च से २५ मार्च २००२ तक आचार्य श्री अमृतलाल जी खडवा के मार्गदर्शन मे किया जा रहा है। इस शिविर मे जो साधक-साधिकाए भाग लेना चाहे वे समय से पूर्व अपने नाम का पजीयन परोपकारिणी सभा मे करा सकते हैं एव शिविर सबधी पूर्ण जानकारी प्राप्त करने हेतु सभा से पत्रव्यवहार कर सकते हैं।

पता . परोपकारिणी सभा, दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर

—डा० धर्मवीर, मत्री परोपकारिणी सभा केसरगज अजमेर

हरयाणा प्रांतीय आर्यमहासम्मेलन ६-७ अप्रैल, २००२ को

आर्यो ! रोहतक चलो।

हरयाणा के सभी आर्यसमाजो एव आर्यशिक्षणसस्थाओ व आर्य कार्यकर्त्ताओ से विशेष नम्र-निवेदन है कि, आर्यमहासम्मेलन ६-७ अप्रैल २००२ को रोहतक की ऐतिहासिक पवित्र धरती पर होने जारहा है, इसको सफल बनाने के लिए सबके सहयोग की अत्यन्त आवश्यकता है, आप अधिक से अधिक अपना सहयोग प्रदान करे। प्रत्येक आर्यसमाज के अधिकारी अपना आर्थिक, सहयोग सभा कार्यालय के पते पर भेजने का कष्ट करे तथा सम्मेलन मे पहुचने के लिये, सभी आर्यसमाज अपने सदस्यो को साथ लेकर कम से कम एक वाहन के साथ ट्रैक्टर, बस आदि से पहुचे। सभी केन्द्रीय सभाये, सभी आर्यवीरदल एव अन्य सगठन पूरी तैयारी के साथ मोटो व ओम् के ध्वज लेकर सम्मेलन मे पधारे, सार्वदेशिक आर्यवीरदल के प्रधान देवव्रत जी नेतृत्व मे हरयाणा आर्यवीरदल के नौजवान शोभायात्रा तथा आर्यमहासम्मेलन के प्रबन्ध मे सहयोग प्रदान करेगे, गुरुकुलो के ब्रह्मचारियो तथा कन्या गुरुकुलो की ब्रह्मचारिणियो के कार्यक्रम भी आकर्षण का केन्द्र होगे। सभी आर्यसमाजो से कितनी सख्या मे अधिकारी एव कार्यकर्त्ता पधारेगे इसकी सूचना भी पूर्व ही सभा कार्यालय को पत्र द्वारा दीजाए जिससे सभी के भोजन एव आवास की व्यवस्था सुचारुरूप से की जासके। सम्मेलन मे पधारनेवाले सभी आर्यमहानुभावो का स्वागत है। सम्मेलन मे भारी सख्या मे पहुचकर आर्यसमाज की सगठनशक्ति का परिचय देवे।

सभी शिक्षण संस्थाओं से अनुरोध

६-७ अप्रैल २००२ को रोहतक मे होनेवाले हरयाणा प्रान्तीय आर्यमहासम्मेलन के अवसर पर एक स्मारिका का प्रकाशन किया जायेगा इसमे आप अपनी शिक्षण सस्था का परिचय प्रकाशनार्थ भेजने का कष्ट करे।

प्रान्तीय आर्यमहासम्मेलन ६-७ अप्रैल को निम्न कार्यक्रमो का आयोजन रहेगा–

१ यजुर्वेद पारायण महायज्ञ की पूर्णाहुति ७ अप्रैल को।
२ विशाल शोभायात्रा ६ अप्रैल को ११ बजे से।
३ आर्य युवा सम्मेलन, आर्य महिला सम्मेलन, आर्य राजनीति सम्मेलन आर्य सस्कृति एव गोरक्षा सम्मेलन।

--सभामन्त्री

वैदिक-स्वाध्याय

मन की दिव्यशक्ति

वय सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रत ।
प्रजावन्त सचेमहि ।। ऋ० १० ५७ ६ ।।

शब्दार्थ–(**सोम**) हे सोमदेव ! (**तनूषु**) अपने शरीरो मे (**मन**) मन को, मन शक्ति को (**बिभ्रत**) धारण किये हुए (**वय**) हम लोग (**तव व्रते**) तुम्हारे व्रत मे है–तुम्हारे व्रत का पालन करते हैं और (**प्रजावन्त**) प्रजासहित हम लोग (**सचेमहि**) तुम्हारी सेवा करते रहे।

विनय–हे सोम ! तुम्हारा दिया हुआ, तुम्हारी महाशक्ति का अशभूत मन हमारे शरीरो मे विद्यमान है। इस मन का–इस तुम्हारी अमूल्य देन का–हमे गर्व है। इस मन के कारण ही हम मनुष्य हैं। इस मननशील के कारण ही हम पशुओ से ऊचे हुए है। तो क्या अपने शरीरो मे मन जैसी प्रबल शक्ति को धारण किये हुए भी हम लोग तुम्हारे व्रत मे न रह सकेगे ? बेशक तुम्हारे व्रत का पालन करना बडा कठिन है। तुमने जगत् मे जो उन्नति के नियम बनाये है, ठीक उनके अनुसार चलना बडा दु साध्य है। पर जहा तुमने ये कठिन नियम बनाये हैं वहा तुमने ही हम मे मन की अतुलशक्ति भी दी है। अत हमारा दृढ निश्चय है कि हम अपनी मन शक्ति के प्रयोग द्वारा सदा तुम्हारे व्रत मे ही रहेगे–कभी इसका भग न करेगे–कठिन से कठिन प्रलोभन व विपत्ति के समय मे भी मन शक्ति द्वारा व्रत मे स्थिर रहेगे।

पर यह सब व्रतपालन किस लिये है ? यह तुम्हारी सेवा के लिये है। यह तुम्हारा दिया मन इसी काम के लिये है। हम चाहते है कि केवल यह हमारा मन ही नही किन्तु हमारे मन की प्रजा भी तुम्हारी सेवा मे ही काम आवे। मन मे जो एक रचना-शक्ति (Creative Power) है उस द्वारा प्रत्येक मनुष्य का कर्त्तव्य है कि वह कुछ रचना कर जावे कुछ निर्माण कर जावे। यह रचना ही मन की प्रजा है। यदि हम हे सोम ! सर्वथा तुम्हारे व्रत मे होगे तो हमारी यह रचना (प्रजा) भी नि सन्देह तुम्हारी सेवा के लिये ही होगी–इसी मे व्यय होगी। एव हम और हमारी प्रजा सदा तुम्हारी सेवा मे रहे, तुम्हारी सेवा मे ही अपना जीवन बिता देवे। अब यही सकल्प है, यही इच्छा है, यही प्रार्थना है।

(वैदिक विनय से)

बिना दहेज की शादी

दिनाक २२-२-२००२ को श्री अशोककुमार आर्य प्रधान आर्यसमाज, मौहल्ला पुराना महल के भतीजे श्री विकास आर्य सुपुत्र श्री कर्णसिह दहेज रहित विवाह सस्कार विद्वान् भजनोपदेशक विश्वमित्र द्वारा शान्तिपूर्वक १-१ रुपया ही लिया हम सब इनके परिवार का आभार व्यक्त करते हैं। सभा को १०१ रु० दान दिए।

महर्षि दयानन्द शोधपीठ की गतिविधियां

डा० यज्ञवीर दहिया

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक मे स्थापित महर्षि दयानन्द शोधपीठ अपने लक्ष्य की ओर अग्रसरित है। महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय के कुलपति श्री भीमसिह (रिटायर्ड मेजर जनरल) ने महर्षि दयानन्द शोधपीठ के लिए १५००० रुपये दिये हैं जिससे महर्षि दयानन्द शोधपीठ का पुस्तकालय स्थापित किया जासके। इसके लिए कुलपति जी बधाई के पात्र हैं। पुस्तकालय के लिए यह राशि अल्प है अत हम आशा करते हैं कि कुलपति महोदय पुस्तकालय के विकास के लिए दिल खोलकर और अधिक राशि प्रदान करेगे।

डा० यज्ञवीर दहिया के नेतृत्व मे यह शोधपीठ निरन्त उन्नति की तरफ बढ रही है। डा० दहिया ने महर्षि दयानन्द पर "Treatment of Phonology in Dayanand" पुस्तक लिखकर सम्पूर्ण ससार को चकाचौंध कर दिया है। सम्पूर्ण पाश्चात्य जगत् इस शोधकर्म से अत्यन्त प्रभावित हुआ है तथा महर्षि दयानन्द की विचारधारा एव उनके महान् कार्य से प्रेरणा लेरहा है। डा० दहिया से आर्यजगत् अपेक्षा रखता है कि वे इस दिशा मे और अधिक महनीय कार्य करेगे। डा० दहिया एक ऐसे विद्वान् हैं जो सस्कृत, हिन्दी व अग्रेजी तीनो ही भाषाओ मे निर्बाध गति से लिखते हैं। पाश्चात्य जगत् मे इनका महान् सम्मान है तथा पाश्चात्य जगत् को महर्षि दयानन्द एव आर्यसमाज की विचारधारा से अवगत करा रहे है। अत आर्यजगत् डा० दहिया से आशा करता है कि वे अपनी लेखनी से आर्यसमाज एव महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तो का निरन्तर प्रचार एव प्रसार करते रहेगे। आप गुरुकुल झज्जर के पुराने योग्य स्नातको मे से हैं तथा आर्यप्रतिनिधिसभा हरयाणा के सगठन से आरम्भ से ही जुडे हुए हैं। इनके पिता चौधरी दरबारीलाल भी आर्यसमाज रोहणा (सोनीपत) के सस्थापको मे से है तथा आर्यसमाज के कार्यो मे पर्याप्त रुचि रखते हैं।

–केदारसिंह आर्य, सभा उपमत्री

आर्यसमाज के उत्सवों की बहार

क्र०	स्थान	तिथि
१	आर्यसमाज उचाना मण्डी जिला जीन्द	८ मार्च
२	आर्यसमाज शाहबाद मारकण्डा जिला कुरुक्षेत्र	६ से ८ मार्च
३	आर्यसमाज लीलोढ जिला रेवाडी	९ से १० मार्च
४	आर्यसमाज बादली जिला झज्जर	८ से १० मार्च
५	आर्यसमाज सेक्टर ९ पचकूला (महर्षि दयानन्द सरस्वती जन्मदिवस)	१० मार्च
६	आर्यसमाज चरखीदादरी (जिला भिवानी)	११ से १२ मार्च
७	आर्यसमाज जूआ (जिला सोनीपत)	११ से १२ मार्च
८	आर्यसमाज कनीना (जिला महेन्द्रगढ)	१२ मार्च
९	श्रीमद्दयानन्द गुरुकुल विद्यापीठ गदपुरी (फरीदाबाद)	१५ से १७ मार्च
१०	आर्यसमाज घरोण्डा जिला करनाल	१५ से १७ मार्च
११	आर्यसमाज सफीदो जिला जीन्द	१५ से १७ मार्च
१२	महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर	१६ से १७ मार्च
१३	आर्ष गुरुकुल आटा, डिकाडला जिला पानीपत	१६-१७ मार्च
१४	गोशाला बहीन (फरीदाबाद)	१६-१७ मार्च
१५	ओम् साधना मण्डल गली न० ३ शिवकालोनी, करनाल (यज्ञ, सत्सग कार्यक्रम प्रात ९ से १२ बजे तक)	१७ मार्च
१६	आर्यसमाज अस्तौली जिला गौतमबुद्धनगर (नोएडा)	१८ से २० मार्च
१७	आर्यसमाज छतेहरा (बुसाना) जिला सोनीपत	१९ से २० मार्च
१८	आर्यसमाज धर्मगढ जिला करनाल	१९ से २१ मार्च
१९	आर्यसमाज जोहरखेडा (फरीदाबाद) (ऋग्वेद पारायण यज्ञ)	१९ से २८ मार्च
२०	आर्यसमाज चोरामाजरा जिला करनाल	२२ से २४ मार्च
२१	आर्यसमाज सूरजपुर जिला गौतमबुद्धनगर (नोएडा)	२३ से २५ मार्च
२२	आर्यसमाज मुआना जिला जीन्द	५ से ७ अप्रैल
२३	हरयाणा प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन, रोहतक	६-७ अप्रैल

–सुखदेव शास्त्री, सहायक वेदप्रचाराधिष्ठाता

आर्यसमाज स्वाभिमान का उदय

❑ रामधारीसिंह दिनकर (राष्ट्रकवि)

सत्यार्थप्रकाश के एकादश समुल्लास में स्वामी दयानन्द ने ब्रह्मसमाज और प्रार्थनासमाज के विषय में निम्नलिखित बाते लिखी हैं–

'जो कुछ ब्रह्मसमाज और प्रार्थनासमाजियों ने ईसाई मत में मिलने से थोडे मनुष्यों को बचाए और कुछ-कुछ पाषाणादि मूर्ति-पूजा को हटाया, अन्य जालग्रन्थो के फन्दो से भी बचाए इत्यादि अच्छी बात हैं। परन्तु इन लोगो में स्वदेश-भक्ति बहुत न्यून है। ईसाइयो के आचरण बहुत से लिए हैं। खान-पान विवाहादि के नियम भी बदल दिए हैं। अपने देश की प्रशंसा और पूर्वजो की बडाई करनी तो दूर रही, उसके बदले पेट भर निन्दा करते हैं। व्याख्यानो मे ईसाई आदि अग्रेजो की प्रशसा भरपेट करते हैं। ब्रह्मादि महर्षियो का नाम भी नहीं लेते। प्रत्युत, ऐसा कहते हैं कि बिना अग्रेजो के सृष्टि मे आज पर्यन्त कोई विद्वान् नही हुआ। आर्यावर्तीय लोग सदा से मूर्ख चले आए हैं। वेदादिको की प्रतिष्ठा तो दूर रही, परन्तु निन्दा से भी पृथक् नहीं रहते, ब्रह्म-समाज के उद्देश्य की पुस्तक मे साधुओ की सख्या मे ईसा, मूसा, मुहम्मद, नानक और चैतन्य लिखे हैं। किसी ऋषि-महर्षि का नाम भी नहीं लिखा।'

केशवचन्द्र और रानाडे की तुलना मे दयानन्द वैसे ही दीखते है, जैसे गोखले की तुलना मे तिलक। जैसे राजनीति के क्षेत्र मे हमारी राष्ट्रीयता का सामरिक तेज, पहले-पहल, तिलक में प्रत्यक्ष हुआ वैसे ही सस्कृति के क्षेत्र मे भारत का आत्माभिमान स्वामी दयानन्द मे निखरा, ब्रह्मसमाज और प्रार्थना-समाज के नेता अपने धर्म और समाज मे सुधार तो ला रहे थे, किन्तु उन्हे बराबर यह खेद सता रहा था कि हम जो कुछ कर रहे हैं, वह विदेश की नकल है। अपनी हीनता और विदेशियों की श्रेष्ठता के ज्ञान से उनकी आत्मा, कहीं न कहीं, दबी हुई थी। अतएव, कार्य तो प्राय उनके भी वैसे ही रहे, जैसे स्वामी दयानन्द के, किन्तु आत्महीनता के भाव से अवगत रहने के कारण वे दर्प से नहीं बोल सके। यह दर्प स्वामी दयानन्द मे चमका। रूढियो और गतानुगतिकता में फसकर अपना विनाश करने के कारण उन्होंने भारतवासियों की कडी निन्दा की और उनसे कहा कि तुम्हारा धर्म पौराणिक सस्कारो की धूल वैदिक धर्म है, जिस पर आरूढ होने से तुम फिर से विश्व-विजयी हो सकते हो। किन्तु इससे भी कडी फटकार उन्होंने ईसाइयो पर और मुसलमानो पर भेजी, जो दिन-दहाडे हिन्दुत्व की निन्दा करते फिरते थे। ईसाई और मुस्लिम पुराणो मे घुसकर उन्होने इन धर्मो मे भी वैसे ही दोष दिखला दिए जिनके कारण ईसाई और मुसलमान हिन्दुत्व की निन्दा करते थे। इससे दो बाते निकली। एक तो यह कि अपनी निन्दा सुनकर घबरायी हुई हिन्दू-जनता को यह जानकर कुछ सन्तोष हुआ कि पौराणिकता के मामले मे ईसाइयत और इस्लाम भी हिन्दुत्व से अच्छे नहीं हैं। दूसरी यह कि हिन्दुओ का ध्यान अपने धर्म के मूलरूप की ओर आकृष्ट हुआ एव वे अपनी प्राचीन परम्परा के लिए गौरव का अनुभव करने लगे।

आक्रामकता की ओर राममोहन और रानाडे ने हिन्दुत्व के पहले मोर्चे पर लडाई लडी थी जो रक्षा या बचाव का मोर्चा था। स्वामी दयानन्द ने आक्रामकता का थोडा बहुत श्रीगणेश कर दिया क्योकि वास्तविक रक्षा का उपाय तो आक्रमण की ही नीति है। सत्यार्थप्रकाश मे जहा हिन्दुत्व के वैदिक रूप का गहन आख्यान है, वहा उसमे ईसाइयत और इस्लाम की आलोचना पर भी अलग-अलग दो समुल्लास है। अब तक हिन्दुत्व की निन्दा करनेवाले निश्चिन्त थे कि हिन्दू अपना सुधार भले करता हो, किन्तु बदले मे हमारी निन्दा करने का उसे साहस नहीं होगा। किन्तु इस मेधावी एव योद्धा सन्यासी ने उनकी आशा पर पानी फेर दिया। यही नहीं, प्रत्युत जो बात राममोहन, केशवचन्द्र और रानाडे के ध्यान मे भी नहीं आयी थी, उस बात को लेकर स्वामी दयानन्द के शिष्य आगे बढे और उन्होने घोषणा की कि धर्मच्युत हिन्दू प्रत्येक अवस्था मे अपने धर्म मे वापस आ सकता है एव अहिन्दू भी यदि चाहे तो हिन्दू धर्म मे प्रवेश पा सकते हैं। ये केवल सुधार की वाणी नही थी, जाग्रत हिन्दुत्व का समर-नाद था और, सत्य ही, रणारूढ हिन्दुत्व के जैसे निर्भीक नेता स्वामी दयानन्द हुए, वैसा और कोई नहीं हुआ।

इतिहास का क्रम ऐसा बना कि स्वामी दयानन्द की गिनती महाराणा प्रताप, शिवाजी और गुरु गोविन्द की श्रेणी मे की जाने लगी। किन्तु स्वामी दयानन्द मुसलमानो के विरोधी नहीं थे। स्वामीजी का जब स्वर्गवास हुआ, तब सुप्रसिद्ध मुस्लिम नेता सर सैय्यद अहमद खा ने जो सवेदना और शोक प्रकट किया, उससे स्पष्ट प्रतीत होता है कि मुस्लिम जनता के बीच भी स्वामी जी का यथेष्ट आदर था। स्वामीजी के बाद आर्यसमाज और मुस्लिम सम्प्रदाय के बीच का सम्बन्ध अच्छा नहीं रहा, यह सत्य है, किन्तु स्वामीजी के जीवनकाल मे ऐसी बात नहीं थी।

सच पूछिए तो स्वामीजी केवल इस्लाम के ही आलोचक नही थे, वे ईसाइयत और हिन्दुत्व के भी अत्यन्त कडे आलोचक हुए हैं। सत्यार्थप्रकाश के त्रयोदश समुल्लास मे ईसाई मत की आलोचना है और चतुर्दश समुल्लास मे इस्लाम की। किन्तु, ग्यारहवे और बारहवें समुल्लासो मे तो केवल हिन्दुत्व के ही विभिन्न अगों की बखिया उधेडी गई हैं और कबीर, दादू, नानक, बुद्ध तथा चार्वाक एव जैनो और हिन्दुओ के अनेक पूज्य पौराणिक देवताओ मे से एक भी बेदाग नही छूटा है। बल्लभाचार्य और कबीर पर तो स्वामीजी इतना बरसे हैं कि उनकी आलोचना पढकर सहनशील लोगो की भी धीरता छूट जाती है। किन्तु यह सब अवश्यम्भावी था। यूरोप के बुद्धिवाद ने भारतवर्ष को इस प्रकार झकझोर डाला था कि हिन्दुत्व के बुद्धि-सम्मत रूप के आगे लाए बिना कोई भी सुधारक भारतीय सस्कृति की रक्षा नही कर सकता था। स्वामीजी ने बुद्धिवाद की कसौटी बनाई और उसे हिन्दुत्व, इस्लाम और ईसाइयत पर निश्छल भाव से लागू कर दिया। परिणाम यह हुआ कि पौराणिक हिन्दुत्व तो इस कसौटी पर खड-खड हो ही गया, इस्लाम और ईसाइयत की भी सैकडो कमजोरिया लोगो के सामने आगई।

किसी का भी पक्षपात नहीं चूकि ईसाइयत और इस्लाम हिन्दुत्व पर आक्रमण कर रहे थे, इसलिए हिन्दुत्व की ओर से बोलनेवाला प्रत्येक व्यक्ति ईसाइयत या इस्लाम अथवा दोनो का द्रोही समझ लिया गया। किन्तु इस प्रसग से अलग हटने पर स्वामी दयानन्द विश्व मानवता के नेता दीखते हैं। उनका उद्देश्य सभी मनुष्यो को उस दिशा मे लेजाना था, जिसे वे सत्य की दिशा समझते थे। उन्होने सत्यार्थप्रकाश की भूमिका मे स्वय लिखा है कि 'जो जो सब मतो मे सत्य बाते है, वे सब मे अविरुद्ध होने से उनको स्वीकार करके जो जो मत-मतान्तरो मे मिथ्या बाते हैं, उन उन का खण्डन किया है। इसमे यह भी अभिप्राय रखा है कि जब मत-मतान्तरो की गुप्त या प्रकट बुरी बातो का प्रकाश कर विद्वान्-अविद्वान् सब साधारण मनुष्यो के सामने रखा है, जिससे सबसे सबका विचार होकर परस्पर प्रेम होकर एक सत्य मतस्थ होवे। यद्यपि मै आर्यावर्त देश मे उत्पन्न हुआ और बसता हू, तथापि जैसे इस देश के मतमतान्तरो की झूठी बातो का पक्षपात न करके यथातथ्य प्रकाश करता हू, वैसे ही, दूसरे देशस्थ या मतोन्नति वालो के साथ भी बर्तता हू। जैसा स्वदेशवालो के साथ मनुष्योन्नति के विषय मे बर्तता हू वैसा विदेशियो के साथ भी तथा सब सज्जनो को भी बर्तना योग्य है। क्योकि मै जो भी किसी एक का पक्षपाती होता, तो जैसे आजकल के स्वमत की स्तुति, मण्डन और प्रचार करते और दूसरे मत की निन्दा, हानि और बन्द करने मे तत्पर होते है, वैसे मै भी होता परन्तु ऐसी बाते मनुष्यपन से बाहर हैं।" अन्यत्र चौदहवे समुल्लास के अन्त मे स्वामीजी ने कहा है कि 'मेरा कोई नवीन कल्पना व मत-मतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नही है। किन्तु जो सत्य है, उसे मानना-मनवाना और जो असत्य है, उसे छोडना-छुडवाना मुझको अभीष्ट है। यदि मै पक्षपात करता तो आर्यावर्त के प्रचलित मतो मे से किसी एक मत का आग्रही होता। किन्तु मै आर्यावर्त व अन्य देशो मे जो अधर्मयुक्त चाल-चलन है उनको स्वीकार नही करता और जो धर्मयुक्त बाते है, उनका त्याग नही करता न करना चाहता हू क्योकि ऐसा करना मनुष्य धर्म के विरुद्ध है।

सुधार नही, क्रान्ति उन्नीसवी सदी के हिन्दू नवोत्थान के इतिहास का पृष्ठ-पृष्ठ बतलाता है कि जब

यूरोप वाले भारतवर्ष मे आए, तब यहा के धर्म और सस्कृति पर रूढि की पर्ते जमी हुई थी एव यूरोप के मुकाबले मे उठने के लिए यह आवश्यक हो गया था कि ये पर्ते एकदम उखाड फेकी जाए और हिन्दुत्व का यह रूप प्रकट किया जाए जो निर्मल और बुद्धिगम्य हो।

स्वामीजी के मत से यह हिन्दुत्व वैदिक हिन्दुत्व ही हो सकता था। किन्तु यह हिन्दुत्व पौराणिक कल्पनाओ के नीचे दबा हुआ था। उस पर अनेक स्मृतियो की धूल जम गयी थी एव वेद के बाद के सहस्रो वर्षो मे हिन्दुओ ने जो रूढिया और अन्धविश्वास अर्जित किए थे उनके नीचे ये धर्म दबा पडा था। राममोहन राय, रानाडे, केशवचन्द्र और तिलक से भिन्न स्वामी दयानन्द की विशेषता यह रही कि उन्होने धीरे-धीरे पपडिया तोडने का काम न करके, उन्हे एक ही चोट से साफ कर देने का निश्चय किया। परिवर्तन जब धीरे-धीरे आता है, तब सुधार कहलाता है। किन्तु वही जब तीव्र वेग से पहुच जाता है तब उसे क्रान्ति कहते हैं। दयानन्द के अन्य समकालीन सुधारक केवल सुधारक मात्र थे, किन्तु दयानन्द क्रान्ति के वेग से आए और उन्होने निश्छल भाव से यह घोषणा करदी कि हिन्दू धर्म ग्रन्थो मे केवल वेद ही मान्य है, अन्य शास्त्रो और पुराणो की बाते बुद्धि की कसौटी पर कसे बिना मानी नही जानी चाहिए। छह शास्त्रो और अठारह पुराणो को उन्होने एक ही झटके से साफ कर दिया। वेदो मे मूर्तिपूजा अवतारवाद, तीर्थो और अनेक पौराणिक अनुष्ठानो का समर्थन नही था अतएव, स्वामीजी ने इन सारे कृत्यो और विश्वासो को गलत घोषित किया।

वेद को छोडकर कोई अन्य धर्मग्रन्थ प्रमाण नहीं है, इस सत्य का प्रचार करने के लिए स्वामीजी ने सारे देश का दौरा करना आरम्भ किया और जहा-जहा वे गए प्राचीन परम्परा के पण्डित और विद्वान् उनसे हार मानते गए। सस्कृतभाषा का उन्हे अगाध ज्ञान था। सस्कृत मे वे धाराप्रवाह रूप से बोलते थे, साथ ही वे प्रचण्ड तार्किक थे। उन्होने ईसाई और मुस्लिम धर्मग्रन्थो का भी भलीभाति मन्थन किया था। अतएव अकेले ही उन्होने तीन-तीन मोर्चो पर सघर्ष आरम्भ कर दिया। दो मोर्चे तो ईसाइयत और इस्लाम के थे किन्तु तीसरा मोर्चा सनातनधर्मी हिन्दुओ का था, जिनसे जूझने मे स्वामीजी को अनेक अपमान, कुत्सा, कलक और कष्ट झेलने पडे। उनके प्रचण्ड शत्रु ईसाई मुसलमान नहीं, सनातनी हिन्दू ही निकले और कहते हैं, अन्त मे इन्हीं हिन्दुओ के षड्यन्त्र से उनका प्राणान्त भी हुआ। दयानन्द ने बुद्धिवाद की जो मशाल जलायी थी, उसका कोई जवाब नहीं था।

वे जो कुछ कह रहे थे, उसका उत्तर न तो मुसलमान दे सकते थे, न ईसाई न पुराणो पर पलने वाले हिन्दू पण्डित और विद्वान्। हिन्दू नवोत्थान अब पूरे प्रकाश मे आगया था और अनेक समझदार लोग, मन ही मन, यह अनुभव करने लगे थे कि, सच ही पौराणिक धर्म मे कोई सार नहीं है।

आर्यसमाज की स्थापना

सन् १८७२ ई० मे स्वामीजी कलकत्ते पधारे। वहा देवेन्द्रनाथ ठाकुर और केशवचन्द्र सेन ने उनका बडा सत्कार किया। ब्रह्मसमाजियो से उनका विचार-विमर्श हुआ। किन्तु ईसाइयत से प्रभावित ब्रह्मसमाजी विद्वान् पुनर्जन्म और वेद की प्रामाणिकता के विषय मे स्वामीजी से एकमत नही होसके। कहते हैं कलकत्ते मे ही केशनचन्द्र सेन ने स्वामीजी को यह सलाह दी कि यदि आप सस्कृत छोड हिन्दी मे बोलना आरम्भ करे तो देश का असीम उपकार हो सकता है। तभी से स्वामीजी के व्याख्यानो की भाषा हिन्दी होगई और हिन्दी प्रान्तों मे उन्हे अगणित अनुयायी मिलने लगे। कलकत्ते से स्वामीजी बम्बई पधारे और वहीं १० अप्रैल सन् १८७५ ई० को उन्होने आर्यसमाज की स्थापना की। बम्बई मे उनके साथ प्रार्थना-समाजवालो ने भी विचार-विमर्श किया। किन्तु यह समाज तो ब्रह्मसमाज का ही बम्बई सस्करण था। अतएव, स्वामीजी से इस समाज के लोग भी एकमत नहीं होसके।

बम्बई से लौटकर स्वामीजी दिल्ली आए। वहा उन्होने सत्यानुसन्धान के लिए ईसाई, मुसलमान और हिन्दू पण्डितों की एक सभा बुलाई किन्तु दो दिनों के विचार-विमर्श के बाद भी लोग किसी निष्कर्ष पर नहीं आसके। दिल्ली से स्वामीजी पजाब गए। पजाब मे उनके प्रति बहुत उत्साह जाग्रत हुआ और सारे प्रान्त मे आर्यसमाज की शाखाए खुलने लगीं। तभी से पजाब आर्यसमाजियो का प्रधान गढ रहा है।

गुरुकुल आश्रम आमसेना में नैष्ठिक दीक्षा एवं विद्वान् ब्रह्मचारियों का स्वागत समारोह

गत ९, १०, ११ फरवरी को गुरुकुल आश्रम आमसेना के ३४वे वार्षिक महोत्सव पर नैष्ठिक ब्रह्मचारियो की दीक्षा का आर्यसमाज के इतिहास मे अपूर्व कार्यक्रम श्री चौ० मित्रसेन जी आर्य रोहतक की अध्यक्षता में उल्लासमय वातावरण मे सम्पन्न हुआ। तीन कन्याओ को नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षा आचार्य मेधादेवी जी बनारस ने एव पाच ब्रह्मचारियो को त्यागी, तपस्वी एव व्याकरण के मूर्धन्य विद्वान् गोभक्त आचार्य बलदेव जी गुरुकुल कालवा ने दी। इन दीक्षार्थियो को चौ० मित्रसेन जी आर्य ने ११-११ हजार की थैली भेट की तथा इन्हे आशीर्वाद देने के लिए श्री स्वामी इन्द्रवेश जी रोहतक, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधन श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी, वहा के मन्त्री श्री डॉ० सु०ब०काले, म०प्र० एव विदर्भ आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री आचार्य जगद्देव जी, वहा के मन्त्री श्री लक्ष्मीनारायण जी भार्गव, राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ प्रधान श्री सत्यव्रत जी सामवेदी एव मन्त्री श्री ओमप्रकाश जी, आन्ध्रप्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री प्रो० बिट्ठलराव जी, उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी व्रतानन्द जी, वरिष्ठ उपप्रधान श्री स्वामी सुधानन्द जी तथा मन्त्री श्री अनादि वेदसेवक एव हरयाणा आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री आचार्य वेदव्रत जी, श्री आचार्य अमृतलाल जी, श्री चन्द्रपाल जी आदि अनेक वरिष्ठ विद्वान् एव पाच-छ प्रान्तो की आर्यजनता भारी सख्या मे उपस्थित थी।

इस अवसर पर एक गरिमामय समारोह मे श्री आचार्य हरिदेव जी की अध्यक्षता मे आर्ष गुरुकुल की सेवा में नि स्वार्थ भाव से सेवारत श्री आचार्य विजयपाल जी गुरुकुल झज्जर, श्री आनन्दप्रकाश जी कन्या गुरुकुल आलियाबाद, बहन कलावती जी गुरुकुल गणियार का स्वागत चौ० मित्रसेन जी आर्य ने अपने स्वर्गीय पिता श्री चौ० शीशराम जी आर्य की स्मृति में ११-११ हजार रुपये की थैली, स्मृति चिन्ह, शाल, श्रीफल देकर किया। इस अवसर पर गुरुकुल के विशेष सहयोगी नवापारा के विधायक श्री बसन्तकुमार जी पण्डा, नवापारा जिले के जिलापाल श्री सुदर्शन जी नायक आदि अनेक अधिकारी भी उपस्थित थे। महोत्सव पर ऋग्वेद पारायण महायज्ञ का आयोजन श्री प० विशिकेसन जी शास्त्री के ब्रह्मत्व मे एव कन्या गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियो तथा गुरुकुल आमसेना के ब्रह्मचारियो का आकर्षक अद्भुत व्यायाम प्रदर्शन गुरुकुल के उपाचार्य श्री कुजदेव जी मनीषी की देखरेख मे हुआ। इस प्रदर्शन को देखने के लिए लगभग १० हजार लोग उपस्थित थे। इस प्रदर्शन को देखकर सभी मन्त्रमुग्ध होगये।

उत्सव के अन्तिम दिन पूर्णाहुति पर छ ईसाई परिवारो ने माता प्रेमलता खन्ना की अध्यक्षता मे वैदिकधर्म ग्रहण किया तथा पाच लोगो ने पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी से वानप्रस्थ दीक्षा ली।

महोत्सव के प्रथम दिन ऋषि लगर श्री सूरजमल जी आर्य जुलानी (हरयाणा) तथा दूसरे दिन का लगर माता परमेश्वरी देवी (धर्मपत्नी चौ० मित्रसेन जी आर्य) रोहतक की ओर से हुआ। गुरुकुल के सस्थापक एव सचालक पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी की प्रेरणा से नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षा लेने की लहर उठ रही है। गुरुकुल के प्रधान एव कुलपति हरयाणा के प्रसिद्ध उद्योगपति, ऋषिभक्त, दानवीर चौ० मित्रसेन जी आर्य की छत्रछाया मे यह गुरुकुल फलफूल रहा है।

निवेदक : ब्र० सुदर्शनदेव आर्य, मुख्याध्यापक, गुरुकुल आमसेना

वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज बनौन्दी तहसील नारायणगढ जिला अम्बाला का वार्षिकोत्सव दिनांक २२-२३-२४ फरवरी को बडे उत्साहपूर्वक मनाया गया। जिसमें ग्राम के सभी लोगों ने धर्मप्रचार से लाभ उठाया। उत्सव मे आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के सहायक वेदप्रचाराधिष्ठाता श्री सुखदेव शास्त्री महोपदेशक तथा श्री सहदेव जी बेधडक भजनोपदेशक पधारे। श्री सुखदेव शास्त्री के धारावाहिक वैदिक व्याख्यानों तथा श्री सहदेव बेधडक के जोशीले भजनों से जनता प्रभावित होती रही। अनेक युवकों ने यज्ञोपवीत लिये। प्रात-सायं बृहद्यज्ञ श्री सुखदेव शास्त्री की अध्यक्षता में हुआ। ६-७ अप्रैल २००२ को रोहतक में आयोजित आर्य महासम्मेलन में अनेकों आर्यजन शामिल होंगे।

—रघुवीरसिंह आर्य, मन्त्री आर्यसमाज बनौन्दी नारायणगढ

स्वामी दयानन्द बन जाओ

□ पं० नन्दलाल निर्भय, भजनोपदेशक

जगद्गुरु ऋषि दयानन्द जी का फिर बोध-दिवस है आया।
टंकारा वाले स्वामी जी ने, सोया कुल संसार जगाया।
शिवरात्रि को देव पुरुष ने, शिवलिंग पर चूहों को देखा।
शिवमन्दिर मे देख नजारा, बदल गई थी जीवन रेखा।
सोचा बाल मूलशकर ने, सच्चा शिव यह नजर न आता।
क्षुद्र मूषको को जो अपने, ऊपर से है नही भगाता।
अपने पिता अम्बाशंकर से, सहज भाव से प्रश्न उठाया।
टंकारा वाले स्वामी जी ने, सोया कुल ससार जगाया।
पूज्य पिताजी ! कृपा करके, मेरी शका आप मिटाओ।
दैत्य-दलन हैं महादेव जी, ठीक तरह मुझको समझाओ।
देखो नन्हे-नन्हे चूहे, शिवलिग पर हुडदग मचाते।
बडे ढीट हैं ये चूहे तो, शिव का मधुर चढावा खाते।
अचरज है त्रिशूल उठाकर, शिव ने इनको नहीं भगाया।
टंकारा वाले स्वामी जी ने, सोया कुल ससार जगाया।
बोले अम्बा शंकर बेटा, असली शिव तो है कैलाशी।
कलियुग मे शिवलिग पूजता है, भोला शकर सुखराशी।
कहा मूलशकर ने मैं तो, असली शिव की खोज करूगा।
धर्म की खातिर जीऊगा मैं, धर्म की खातिर सुनो मरूगा।
इतना कहकर बाल मूलशंकर फिर अपने घर को धाया।
टकारा वाले स्वामी जी ने, सोया कुल ससार जगाया।
सजे-सजाये घर को छोडा, बना मूलशकर वैरागी।
जीवन के सारे सुख त्यागे, ऐसा बना तपस्वी त्यागी।
स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती से, श्रद्धा से सन्यास लिया था।
वेद पढे गुरु विरजानन्द से, मथुरापुरी निवास किया था।
करो वेदप्रचार जगत् मे, गुरुवर ने ऋषि को समझाया।
टकारा वाले स्वामी जी ने, सोया कुल ससार जगाया।
धन्य-धन्य थे देवदयानन्द, परहित मे थे कष्ट उठाये।
भूखे-प्यासे फिरे रात-दिन, कभी ना जीवन मे घबराये।
छुआ-छात के, ऊच-नीच के, वेदविरोधी बन्धन तोडे।
मुल्ला-पोप पुजारी पडों के, योगी ने मुख थे मोडे।
कर्म प्रधान बताया जग में, जन्म-जाति का रोग मिटाया।
टकारा वाले स्वामी जी ने, सोया कुल संसार जगाया।
निराकार, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर बतलाया ईश्वर।
पवित्र, अजन्मा, नित्य, अनादि, दयावान्, न्यायकारी, सुखकर।
प्यारे ऋषि ने साफ कहा था, यदि खुश करना है प्रभु प्यारा।
सब जीवो पर दया करो तुम, दु खियो को दो सदा सहारा।
पराधीनता नर्क जगत् मे, स्वतन्त्रता का पाठ पढाया।
टकारा वाले स्वामी जी ने, सोया कुल ससार जगाया।
'माता निर्माता भवति' का, ऋषिवर ने उद्घोष किया था।
गऊमाता है मोक्ष की दाता, जग को शुभसन्देश दिया था।
सच कहता हू देवदयानन्द, अगर नहीं दुनिया मे आते।
राम, कृष्ण, ऋषियो के वशज, जग में ढूढे से ना पाते।
सत्रह बार विष पिया हलाहल, जग को वेदामृत पिलाया।
टकारा वाले स्वामी जी ने, सोया कुल ससार जगाया।
सुनो आर्यो ! कान खोलकर, तुम भी वैदिक धर्म निभाओ।
कहने का यह वक्त नहीं है, करके उत्तम कर्म दिखाओ।
धन पद का तुम लालच त्यागो, अपना जीवन श्रेष्ठ बनाओ।
करो वेदप्रचार जगत् में, 'स्वामी दयानन्द बन जाओ'।
नन्दलाल 'निर्भय' अब जागो, जीवन क्यों बेकार गंवाया।
टंकारा वाले स्वामी जी ने, सोया कुलं संसार जगाया।

ग्राम व डाकघर बहीन, जनपद फरीदाबाद (हरयाणा)

आर्यसमाज सिरसा द्वारा ढाई मास में व्यापक वेदप्रचार कार्य करवाया गया

सिरसा २२ फरवरी। सिरसा आर्यसमाज मन्दिर कमेटी ने गत १५ दिसम्बर से आर्यसमाज के प्रसिद्ध उपदेशक श्रवणकुमार कर्मशाना के नेतृत्व मे प० रणधीर जी शास्त्री, बलवीर जी ढोलक वादक की भजन मण्डली ने जिले के अरनियावाली, डडबाकला, रन्धावा, किशनपुरा, कर्मशाना, मिठनपुरा, ढाणी शेरा, नीमला धोलपालिया बेहरवाला, ममेरा दोनी, शेखूपुरिया, फतेहपुरिया, जोधपुरिया, पीरखेडा, खारिया, चक्का, भूना, घोडावाली, केहरवाला, ममडखेडा, करीवाला ढुढियावाली, साधेवाला, मतुवाला, रत्ताखेडा, रामगढिया, रिसालिया खेडा, ठुईया, कागदाना, तरक्कावाली, शाहपुरिया, जोधका, ढावी बडी, रामसरा, खाबडा कला, मेहवाला डींग, शक्र मन्दोरी, नाथूसरी, गिगोरानी, मोडिया, गुडिया खेडा, बकरिया पाली, धिगतानिया, निरवाण, ताजिया, सहवाला, शेरपुरा, फलका, कवरपुरा, बाजेका आदि गावो मे वेदप्रचार आदि किया गया और फतेहाबाद जिला के गाव जाडवाला मे गत १५-१६ फरवरी को आर्य महासम्मेलन किया गया दोनो दिन ३ सभाये होती। प्रमुख विद्वान् स्वामी सर्वदानन्द धीरणवास, स्वामी रुद्रवेश जी हरिद्वार, रामनिवास पानीपत, प० चन्द्रभान जीन्द आदि भजनोपदेशको ने वेदप्रचार किया इससे पूर्व २५-२६-२७ जनवरी को पडोसी राज्य राजस्थान के हनुमानगढ जिला के टोपरिया गाव मे स्वामी सुमेधानन्द जी की अध्यक्षता मे वेदप्रचार तीन दिन किया गया उसमे सिरसा के उपदेशको ने भी वेदप्रचार किया। वेदप्रचार कार्य जारी है। लोगो मे आर्यसमाज के प्रति आज प्यार केवल सस्कार जगाने की आवश्यकता है। लोग आर्यसमाज की तरफ नजरे लगाये बैठे हैं। केवल मात्र लोगों को अब अपना भविष्य आर्यसमाज के भरोसे ही सुखमय नजर आता है।

—राजेन्द्र जी आर्य, मन्त्री आर्यसमाज सिरसा

बोध दिवस, हमें भी बोध प्रदान करे

❑ **राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति**, मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ०प्र०)

'शिवरात्रि महापर्व' भारत मे धार्मिक, राष्ट्रीय, सामाजिक, शैक्षिक, राजनीतिक, पुनर्जागरण एव पुनरुत्थान के अपराजेय योद्धा पुरोधा महर्षि दयानन्द सरस्वती के लिए 'बोध दिवस' बन गया था। बालक मूलशकर का मन सच्चे शिव की खोज के लिए लालायित-आन्दोलित हो उठा था। अपने समस्त व्यक्तिगत सासारिक सुखो को, सम्पूर्ण शक्ति से तिलाजलि देकर मूलशंकर ने सत्य शिव, सत्य धर्म का अन्वेषण कर, सारे ससार के लिए सत्य सनातन वैदिक धर्म का पावन पथ प्रशस्त किया। महर्षि दयानन्द ने समाज, राष्ट्र व समग्र मानवता के हित जो अनुपमेय कार्य किया, वह विश्व इतिहास का अविस्मरणीय पृष्ठ है।

महर्षि दयानन्द द्वारा प्रशस्त पथ आज पुन तिमिराच्छित होने लगा है। वेद-भानु की प्रखर रश्मियां पाखण्ड, अधविश्वास, भोगवादी पश्चिमी सस्कृति, अनाचार, दुराचार, नारी अपमान, भ्रष्टाचार तथा दानवी प्रवृत्ति के घने अधकार से ढकती हुई लग रही है। 'वर्तमान युग' उस महान् संन्यासी द्वारा प्रशस्त किए गए सत्य सनातन वैदिक धर्म के लिए निरन्तर अविजित चुनौती बनता जा रहा है। हमारा परिवार, हमारा समाज, हमारी राष्ट्रीय अस्मिता सर्वनाश की ओर अग्रसर है। मर्यादा पुरुषोत्तम राम तथा योगेश्वर कृष्ण द्वारा सरक्षित, महान् ऋषियो द्वारा परिमार्जित सनातन वैदिक परम्पराओ की जडें सूख रही हैं।

इन भयावह परिस्थितियो मे दयानन्द का नाम लेनेवाले लोगो को उस पथ का अनुसरण करना होगा, जिस पथ पर अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द, पडित लेखराम आर्यमुसाफिर, लाला लाजपतराय, महाशय राजपाल जैसे पराक्रमी योद्धा चले थे। महर्षि दयानन्द की निर्भीकता, विद्वत्ता, ब्रह्मचर्य, सत्यनिष्ठा, नि स्वार्थता, वेदप्रचार की उत्कट सदिच्छा से अनुप्राणित होकर आर्यसमाज के पूज्य सन्यासियो, विद्वानो, पदाधिकारियो, कार्यकर्ताओ, उपदेशकों भजनोपदेशको को वैदिक धर्म की रक्षार्थ तथा वर्तमान भयावह स्थितियो से सघर्ष करने हेतु कटिबद्ध होकर निकलना पडेगा। वैदिक सिद्धान्तो का अजेय अस्त्र-शस्त्र हमे जय दिला सकता है, आवश्यकता है तो केवल अपनी सुख-सुविधाओ तथा स्वार्थो को त्याग कर, रणभूमि मे दृढ इच्छा शक्ति के साथ डट जाने की। यदि हम ऐसा नहीं कर सकते, तो हमे दयानन्द का नाम लेने और दयानन्द के नाम पर धन सग्रह करने का कोई अधिकार नहीं है। आज अपने अन्त करण मे सर्वस्व बलिदान की भावना को जगाना होगा। हमे गहरी निद्रा त्याग कर स्वय जगना तथा सारे राष्ट्रवासियो को जगाना होगा। तभी बचेगी आर्ष सस्कृति तथा वैदिक गरिमा।

योग का महत्त्व

योग साधन आत्मा-परमात्मा का जोड है।
मानव धर्म और कर्म की साधना का तोड है।
जीवन पद्धति जीने का एक वाजिब तोड है।
अल्पायु-दीर्घायु मे निरन्तर होड है।
योगदर्शन है उसी का जिसने हमको जीवन दिया।
योगसाधन है उसी का जिसका हमने दर्शन किया।
योगसाधन के बिना ईश्वर को पाना भूल है।
योग ही ईश्वर को पाने का सुदृढ मूल है।।
योग से नाकाम भी सकाम सम्भव हो गया।
योग से सब रोग मानो क्षण भर मे खो गया।
जिन्दगी मे लोग जो नित्य योग को अपनाएगा।
आधि-व्याधि को कभी जीवन मे वो नहीं पायेगा।
योग केवल कर्म नहीं यह प्रकृति की देन है।
जीव जन्तु पशु-पक्षी के लिये सुख चैन है।
योग साधन से जीवन अधकार को मिटाइये।
परमपिता परमात्मा से 'बसल' एक हो जाइये।

—**रामनिवास बंसल**, से नि प्रवक्ता ६१/६ आश्रम रोड, चरखी दादरी

देश की अखण्डता के प्रति सजग राष्ट्रभक्तों से एक निवेदन

धर्मरक्षा महाभियान पुनर्मिलन (शुद्धि) के लिए अपील

श्रीमन्नमस्ते !

हमारे राष्ट्रिय राजनेताओ की अदूरदर्शिता और पदलोलुपता से विदेशीमत ईसाई, मुसलमान बढते जारहे हैं। इसी के फलस्वरूप पाकिस्तान और बगलादेश बने। देश में जहा-जहा इन विदेशी मतो का बहुमत है, वहा-वहा पृथक्ता की माग हो रही है और आतकवाद फैल रहा है। नागालैण्ड, मिजोरम, त्रिपुरा आदि मे तो उनका बहुमत हो ही गया है। देश के अन्य कई प्रान्तों में भी जैसे आसाम, बिहार, झारखण्ड, उडीसा, छत्तीसगढ आदि अनेक प्रान्तों मे भी ये मौलवी और पादरी विदेशी पैट्रोडालर के बल पर गरीब लोगों के धर्म को खरीदकर अपने मतो को फैलाने के लिए पूरी शक्ति से लगे हुए हैं। ऐसे समय मे हमें भी सक्रिय होना चाहिए। यदि देश के एकताप्रेमी जनता हमे कुछ सहयोग दे तो हम इस बढते तूफान को कुछ रोकने का प्रयत्न करेगे।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देश पर उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से उत्कल वैदिक यतिमण्डल गुरुकुल आमसेना के द्वारा धर्मरक्षा महाभियान (शुद्धि) कार्यक्रम चलाया जारहा है। इस कार्यक्रम को तीव्र गति देने के लिए इस वर्ष के लिए हमे निम्न प्रकार से सहयोग चाहिए–

१	वाहन व्यवस्था–इसमे एक यूटीलिटी गाडी, एक मार्शल महिन्द्रा जीप और तीन मोटर साइकिल। इनका लागत मूल्य लगभग	१०,०००००-००
२	इन दो जीपो का ईंधन तथा मरम्मत, डाइवर के वेतन आदि।	२,५००००-००
३	१० प्रचारको का वेतन और मार्ग व्यय आदि का वार्षिक खर्च	३,०००००-००
४	पुनर्मिलन (शुद्धि) सस्कार पर प्रति व्यक्ति एक नया वस्त्र तथा भोजन आदि पर १०० व्यक्ति की दर से १० हजार व्यक्तियो के शुद्ध सस्कार पर	१०,०००००-००
५	शुद्धि क्षेत्र मे आगनबाडी खोलने के लिए तथा स्टेशनरी आदि विविध व्यय	१,५००००-००
	कुल राशि	२७,०००००-००

मत्री	प्रधान	सचालक
अनादि वेदसेवक	**स्वामी व्रतानन्द सरस्वती**	**स्वामी धर्मानन्द सरस्वती**

उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा, गुरुकुल आश्रम आमसेना खरियार रोड, नवापारा (उडीसा)।

आर्य-संसार

आर्य केन्द्रीय सभा, फरीदाबाद के तत्त्वावधान में फरीदाबाद की सभी आर्यसमाजों की ओर से सामूहिक रूप से

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जन्म-दिवस (ज्योति-पर्व) एवं ऋषि बोधोत्सव

रविवार, दिनाक १० मार्च, २००२ को आर्यसमाज सैक्टर १५ (सेन्ट्रल) मे धूमधाम से समारोह पूर्वक मनाया जारहा है। इसमे आर्यजगत् के उच्चकोटि के विद्वान् एव राष्ट्रीय स्तर के गायक-भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

कार्यक्रम--प्रभातफेरी प्रात ५-३० बजे, यज्ञ भजन एव प्रवचन प्रात ८-३० से १२-३० बजे तक।

स्थान--आर्यसमाज मन्दिर, सेक्टर १५ (सेन्ट्रल), फरीदाबाद

आमन्त्रित विद्वान्--श्री सच्चिदानन्द शास्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली, डॉ० शिवकुमार शास्त्री पूर्व प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली प्रदेश, प० दिनेशदत्त गायक एव भजनोपदेशक, प० श्यामवीर राघव भजनोपदेशक।

ज्योतिपर्व एवम् ऋषि पर्व के अन्य विस्तृत कार्यक्रम

शुक्रवार	८ मार्च आर्यसमाज नेहरू ग्राउण्ड, फरीदाबाद	प्रात ९-११ बजे
शनिवार	९ मार्च आर्यसमाज सैक्टर-१९, फरीदाबाद	साय ९-११ बजे
सोमवार	११ मार्च ओ३म् योग सस्थान, पाली	साय ३-५ बजे
मगलवार	१२ मार्च आर्यसमाज सैक्टर-७, फरीदाबाद	साय ३-५ बजे

डा० विमल महता	**अजीतकुमार आर्य**	**महेशचन्द गुप्ता**
प्रधाना	महामत्री	कोषाध्यक्ष

पुरोहित प्रशिक्षण शिविर

श्रीमद्दयानन्द गुरुकुल विद्यापीठ गदपुरी तह० पलवल (बल्लभगढ) के ६२वे वार्षिकोत्सव पर दिनाक ११ मार्च से १७ मार्च तक पुरोहित प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया है। इस प्रशिक्षण मे कोई भी स्त्री-पुरुष जिन्होने १०वीं पास कर रखी है, वह भाग ले सकते हैं। प्रशिक्षणार्थियो के लिए भोजन व आवास की व्यवस्था नि शुल्क की गई है। प्रशिक्षण के बाद प्रतिभागियो को प्रमाण-पत्र भी दिए जायेगे।

भाग लेनेवाले व्यक्ति अपने आने की सूचना ७ मार्च तक भिजवादे। अपने साथ प्रतिभागी १ कापी, १ सस्कारविधि और १ चालू पचाग लेकर आए।

--स्वामी विद्यानन्द

नवीन आर्यसमाज की स्थापना व वेदप्रचार

ग्राव नैन जिला पानीपत में २१, २२, २३ को प० रामकुमार भजनोपदेशक की मण्डली द्वारा प्रचार किया गया। पडित जी ने समाज मे फैली हुई कुरीतियो पर जमकर व्याख्यान दिए। इन्होने मूर्तिपूजा, दहेजप्रथा, बालविवाह, पर्दाप्रथा आदि के विषय मे भजनो के माध्यम से लोगो को बहुत अधिक प्रभावित किया। इससे प्रभावित होकर गाव नैन मे प० रामकुमार जी की अध्यक्षता मे आर्यसमाज नैन जिला पानीपत की स्थापना हुई। इसके सदस्य इस प्रकार हैं--प्रधान--सरदारसिह आर्य, मन्त्री-प्रीतमसिह आर्य, कोषाध्यक्ष-राकेश कुमार आर्य। **--प्रीतमसिंह आर्य,** मन्त्री आर्यसमाज नैन जिला पानीपत

वेदप्रचार

आर्यसमाज धर्मगढ (पानीपत) मे दिनाक १६-२-२००२ को सभा के भजनोपदेशक श्री प० चिरंजीलाल आर्य द्वारा प्रात काल गाव की बडी चौपाल मे यज्ञ किया गया। इस यज्ञ मे आर्यवीर श्री जगतसिह मान, कर्णसिह सैनी, शुगनचन्द, सूरजमल, रामफल सैनी, मौजीराम सैनी, अरुण आर्य व गाव के प्रमुख व्यक्तियों ने भाग लिया। यज्ञ के बाद पंडित जी के प्रभावशाली भजन हुए।

इस अवसर पर आर्य महासम्मेलन रोहतक के लिए सभा को ११००/- रु० दान दिए गए। १९-२०-२१ मार्च को आर्यसमाज का वार्षिक उत्सव मनाने का निर्णय हुआ। **--मन्त्री,** आर्यसमाज धर्मगढ (पानीपत)

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

दक्षिण भारत के एकमात्र 'आर्ष-कन्या-गुरुकुल' अलियाबाद का प्रथम वार्षिकोत्सव १७ फरवरी को सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर दिल्ली-निवासी श्री बलवीरसिह 'बत्रा' एव श्रीमती शान्ता 'बत्रा' ने १०५वीं वार सामवेद-पारायण यज्ञ सम्पन्न करके पूर्णाहुति की। साथ ही श्री बलवीरसिह बत्रा जी, पू० स्वामी सत्यपति जी महाराज से 'वानप्रस्थाश्रम' की दीक्षा लेकर 'बलेश्वर' बने।

--आचार्या, आर्ष कन्या गुरुकुल अलियाबाद,
म० शामीरपेट, जिला रगारेड्डी (आ०प्र०)-५०००७८

आर्यसमाज के भवन निर्माण का शिलान्यास समारोह सम्पन्न

१७-२-२००२ को आर्यसमाज डिफेस कालोनी, नई दिल्ली के भवन निर्माण की आधारशिला पद्मश्री ज्ञानप्रकाश चोपडा, प्रधान डी ए वी कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति एव आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के करकमलो द्वारा रखी गई।

इसके उपरान्त भवन की आधारशिला चारो वेद स्थापित कर रखी गई। ध्वजारोहण पद्मश्री ज्ञानप्रकाश चोपडा जी द्वारा किया गया और गुरुकुल गौतमनगर नई दिल्ली के ब्रह्मचारियो एव महर्षि दयानन्द टीचर ट्रेनिंग कालेज कस्तूरबानगर, नई दिल्ली की छात्राओ द्वारा ध्वज गीत प्रस्तुत किया गया।

अन्त मे श्री रामनाथ सहगल के आह्वान पर भवन निर्माण हेतु आर्य जनता ने दिल खोलकर दान दिया।

--अजय सहगल, आर्यसमाज ६०६ चेतक वीथी, डिफेस कालोनी, नई दिल्ली

वार्षिक सम्मेलन

गुरुकुल महाविद्यालय पूठ-गढमुक्तेश्वर (गाजियाबाद) उ०प्र० का १२वा वार्षिक सम्मेलन समारोह १५-१६-१७ मार्च २००२ को कुलभूमि मे उत्साहपूर्वक मनाया जारहा है जिसमे आर्यजगत् के उच्चकोटि के विद्वान्-महात्मा-नेतागण एव भजनोपदेशक पधार रहे हैं। अत आपसे सानुरोध प्रार्थना है कि आप अपने इष्ट मित्रो सहित अधिक से अधिक सख्या मे दर्शन देकर धर्मलाभ उठावे।

--धर्मपाल आचार्य, सचालक

वेदपारायणयज्ञ सम्पन्न

वेद साधना आश्रम गोरड (सोनीपत) का यज्ञ वेदपारायणयज्ञ दिनाक ११ फरवरी से २४ फरवरी २००२ तक स्वामी वेदरक्षानन्द जी एव स्वामी चन्द्रवेश जी के नेतृत्व मे सम्पन्न हुआ।

यज्ञ मे अनेक भजनोपदेशको ने प्रचार किया। इस अवसर पर श्री भगवानसिह राठी प्रेमनगर रोहतक ने स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज से वानप्रस्थ की दीक्षा ग्रहण की तथा भविष्य मे वे भगवत मुनि के नाम से जाने जायेगे।

आवश्यक सूचना

आर्य विद्वानों एवं विज्ञापनदाताओं से विशेष निवेदन

मान्यवर महोदय,

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्त्वावधान मे हरयाणा प्रान्तीय विशाल आर्य महासम्मेलन दिनाक ६ ७ अप्रैल, २००२ को आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर एक स्मारिका का प्रकाशन भी किया जायेगा। इसमे विद्वान् लेखक महानुभाव अपना लेख भेजे। इसमे आर्यसमाज के प्रमुख बलिदानियो की जीवनी भी प्रकाशित की जायेगी, विज्ञापनदाता अपने उद्योग एव शिक्षण सस्था का परिचय विज्ञापन के रूप मे देकर सहयोग के भागी बने।

विज्ञापन दरे निम्न प्रकार हैं--

अन्तिम कवर पृष्ठ	२१०००/- रुपये
अन्दर द्वितीय कवर पृष्ठ	१६०००/- रुपये
अन्दर तृतीय कवर पृष्ठ	१६०००/- रुपये
पूरा पृष्ठ	५०००/- रुपये
आधा पृष्ठ	२५००/- रुपये
चौथाई पृष्ठ	१५००/- रुपये

--यशपाल आचार्य, सभा मन्त्री

गुरुकुल मटिण्डू के वार्षिक सत्संग महोत्सव सम्पन्न

गुरुकुल मटिण्डू के वार्षिक सत्संग महोत्सव मे मच पर उपस्थित स्वामी ओमानन्द जी, आचार्य बलदेव जी, आचार्य विजयपाल जी, आचार्य यशपाल जी, राजहस मैत्रेय जी, प० चिरजीलाल, जगवीर हुड्डा एवं सम्बोधित करते हुए आचार्य महेश जी।

गुरुकुल मटिण्डू के वार्षिक सत्सग महोत्सव पर आचार्य महेश जी व श्री राजहस मैत्रेय जी के निर्देशन मे सामवेद पारायण महायज्ञ सम्पन्न हुआ। इस पावन अवसर पर स्वामी ओमानन्द जी, आचार्य बलदेव जी, आचार्य यशपाल जी ने यज्ञमहिमा, गोरक्षा एव राष्ट्ररक्षा पर सारगर्भित प्रवचन दिए। ब्रिगेडियर सत्यदेव जी ने गुरुकुल के ऊपर प्रकाश डाला। बाद मे आचार्य श्री विजयपाल जी के सान्निध्य मे गुरुकुल के ब्रह्मचारियो ने भव्य व्यायाम प्रदर्शन के द्वारा जनता को प्रफुल्लित कर दिया।

फिर चला शराबबन्दी का दौर, ग्रामीणों ने उठाया बीड़ा

जीद जिले के भिडताना गाव के लोगो ने शराब जैसी बुराई को खत्म करने का बीडा उठाया है। उन्होने इसकी शुरुआत अपने ही गाव से की है।

भिडताना गाव के धर्मपाल आर्य, प्रेमसिह व ओमप्रकाश ने बताया कि ग्राम पचायत व ग्राम सभा की सामूहिक बैठक हुई। बैठक की अध्यक्षता गुलाबसिह आर्य ने की। बैठक मे शराब जैसी बुराई पर विस्तार से चर्चा की गई। अधिकाश वक्ताओ ने कहा कि उनके गाव मे भी अवैध रूप से शराब बिक रही है। बैठक मे सर्वसम्मति से फैसला लिया गया कि सबसे पहले गाव मे बिक रही अवैध शराब पर रोक लगवाई जाए।

सर्वसम्मति से यह भी फैसला लिया गया कि जो व्यक्ति शराब पीए हुए पाया गया, उस व्यक्ति को सभा द्वारा दडित करके उससे ११०० रुपये जुर्माना लिया जाएगा। इसकी रसीद ग्राम पचायत द्वारा दी जाएगी।

बैठक मे गाव के काफी सख्या मे लोगो ने भाग लिया, जिसमे ताराचद, दरियासिह, किदारा, सतपाल, सूबेसिह, किशनलाल अभिमन्यु, बनवारीलाल, सितार राजवीर, गोधा, ताराचद, चतरु आदि थे।

भिडताना गाव के प्रेमसिह आदि ने बताया कि उनका प्रयास है कि शराब जैसी बुराई को जडमूल से समाप्त किया जाए। जब उनसे पूछा गया कि तत्कालीन बसीलाल सरकार द्वारा बद की गई शराबबन्दी आपको कैसी लगी थी। इस सवाल पर ग्रामीण लोगो ने कहा कि बसीलाल सरकार तो चाहती थी कि शराबबदी ठीक ढग से लागू हो लेकिन लोगो के सहयोग न मिल पाने के कारण सफल नहीं हो सकी।

४ मार्च, साभार–दैनिक जागरण

हरयाणा के आर्यसमाजों से आवश्यक निवेदन

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से वेदप्रचार के प्रसार के लिए प्रभावशाली उपदेशक प० शकरमित्र वेदालकार, प० तेजवीर, प० सीताराम, प० प्रताप की सेवाए प्राप्त की हैं। भजनोपदेशक प० चिरजीलाल, प० मुरारीलाल बेचैन स्वामी देवानन्द, प० जयपाल, प० सत्यपाल, प० शेरसिह तथा प० रामकुमार आदि पूर्ववत् प्रचारकार्य मे सहयोग दे रहे हैं।

–यशपाल आचार्य सभामन्त्री

ओ३म्

हरयाणा के आर्यसमाजों के नाम अपील

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्त्वावधान मे ६-७ अप्रैल २००२ को रोहतक मे विशाल हरयाणा प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन होगा। इस सम्मेलन की सफलता सभी आर्यसमाजो के निष्ठावान्, कार्यकर्त्ताओ और अधिकारियो पर निर्भर है। अत हमारा आर्यसमाज के सभी विद्वानो, उपदेशको, लेखको और आर्यसमाज एव शिक्षण-सस्थाओ के अधिकारियो, कार्यकर्त्ताओ से निवेदन है कि आप तन, मन, धन से आर्य महासम्मेलन को सफल बनाने मे सभा के अधिकारियो का पूरा सहयोग करे, इस सम्मेलन मे भारी उत्साह और सख्या मे उपस्थित होकर आर्यसमाज की सगठनशक्ति का परिचय देवे।

आचार्य यशपाल — मन्त्री
स्वामी ओमानन्द सरस्वती — प्रधान

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक

मोक्ष पद को पाना है

ऐ मूर्ख ! क्यो गर्व है करता, एक दिन तुझको जाना है।
छुट जायेगे सभी मित्र व साथी, बस एक अकेले ही जाना है।।
क्यो खोटे कर्म है करता, जब फल किये का तुझे पाना है।
नेकी का पुण्य क्यो न कमाले, जिसे साथ तुम्हारे जाना है।।
धन, सम्पत्ति सब यहीं छूट जायेगी, पाप-पुण्य ही सग जाना है।
दीन-दुखियो की आह ! को सुनले, यदि चाहता तू सुख पाना है।।
वेदविद्या पढ, योगसाधना करले, यदि आनन्द अपार उठाना है।
जीवन मे परोपकार तू करले, यदि उत्तम योनि मे जाना है।।
"खुशहाल" बनु इस जीवन मे तो काम, क्रोध को मार भगाना है।
निष्काम कर्म करले तू बन्दे, यदि चाहता मोक्ष पद को पाना है।।

–खुशहालचन्द्र आर्य, १८०, महात्मा गान्धी रोड (दो तल्ला), कलकत्ता

सर्वहितकारी के स्वामित्व आदि का विवरण फार्म ४ (नियम ८ देखिए)

१	प्रकाशन स्थान	–दयानन्दमठ, रोहतक
२	प्रकाशन अवधि	–साप्ताहिक
३	मुद्रक का नाम	–वेदव्रत शास्त्री
	क्या भारत का नागरिक है	–है
	पता	–दयानन्दमठ, रोहतक
४	प्रकाशक का नाम	–वेदव्रत शास्त्री
	क्या भारत का नागरिक है	–है
	पता	–दयानन्दमठ, रोहतक
५	सम्पादक का नाम	–वेदव्रत शास्त्री
	क्या भारत का नागरिक है	–है
	पता	–दयानन्दमठ, रोहतक
६	उन व्यक्तियो के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हो तथा जो समस्त पूजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझीदार या हिस्सेदार हो।	वेदव्रत शास्त्री के द्वारा 'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा' दयानन्दमठ रोहतक इसके प्रकाशन का सम्पूर्ण आय-व्यय वहन करती है। अन्य कोई हिस्सेदार नहीं है।

मैं वेदव्रत शास्त्री एतद् द्वारा घोषित करता हू कि मेरी अधिकतम जानकारी एव विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

प्रकाशक के हस्ताक्षर

(वेदव्रत शास्त्री)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ०१२६२–७६८७४, ७७८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ०१२६२–७७७२२) से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३ सृष्टिसंवत् १, ९६, ०८, ५३, १०२
पंजीकरणसंख्या टैक/85-2/2000 ☎ ०१२६२-७७७२२

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
सर्वहितकारी
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र रोहतक
प्रधानसम्पादक : यशपाल आचार्य, सभामन्त्री सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री
वर्ष २९ अंक १६ १४ मार्च, २००२ वार्षिक शुल्क ८०) आजीवन शुल्क ८००) विदेश मे २० डॉलर एक प्रति १.७०

वेद में तीन देवियां

❑ स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती, आर्ष गुरुकुल कालवा

वेद का आदेश है–'**कृण्वन्तो विश्वमार्यम्**' सारे संसार को आर्य बनाओ। प्रश्न यह है कि ससार आर्य कैसे बने ? धर्म-धर्म चिल्लाने से कोई आर्य नहीं बनता। आचरण को देखकर लोग प्रभावित होते हैं। गुणो की सुगन्धि मनुष्य को अपनी ओर खींच लेती है। वे कौन-से गुण हैं जिनसे लोग आपकी ओर आकर्षित हो सकते हैं ? वेद मे मन्त्र आता है–

अमाजरश्चिद् भवथो युवं भगोऽनाशोश्चिदवितारापमस्य चित्।
अन्धस्य चिन्नासत्याकृशस्य चिद्युवामिदाहुर्भिषजा रुतस्य चित्।।
(ऋग्वेद १०।३९।३)

अर्थ–(ना सत्या) कभी असत्य भाषण और असत्याचरण न करनेवाले स्त्री-पुरुषो ! (युवम्) आप दोनो (अमाजर) वृद्धावस्था तक, आजीवन सगी बनकर (भग.) कल्याणप्रद (भवथ·) साधक बनो। आप दोनों (अनाशो· चित्) भूखों के (अपमस्य चित्) निकृष्ट जघन्य, दीनजनो के, नीचो के (अन्धस्य चित्) अन्धों के (कृशस्य चित्) दुर्बल अशक्त के (अविता) रक्षक (भवथ) बनो। (युवाम् इत्) आप दोनो को ही (रुतस्य चित्) रोग से पीडित मनुष्य का (भिषजा) चिकित्सा द्वारा कष्ट दूर करनेवाला (आहु) कहते हैं।

वेदमन्त्र में धर्म-विस्तारक गुण बताये गये हैं। (१) हे स्त्री-पुरुषो ! तुम असत्य भाषण और असत्याचरण मत करो। जीवनपर्यन्त कल्याणप्रद पथ के पथिक बने रहो और दोनो भूखो के रक्षक बनो, भूखों को भोजन दो। (२) जो नीच हैं उनसे घृणा मत करो, उनकी भी रक्षा करो। (३) जो अन्धे हैं उनके सहायक बनो। (४) जो दुर्बल हैं उनकी रक्षा करो। (५) जो रोगी हैं उनकी चिकित्सा कराओ। मानवमात्र के सहायक और सेवक बनो। सेवा और प्रेम हृदय जीत लेता है। सेवा और प्रेम से प्रभावित होकर ही मनुष्य किसी धर्म को अपनाता है।

वेद में तीन देवियां–

इळा सरस्वती मही तिस्रो देवीर्मयोभुवः।
बर्हिः सीदन्त्वस्रिधः।। (ऋग्वेद १।१३।९)

अर्थ–(इळा) मातृभाषा (सरस्वती) मातृसभ्यता एव संस्कृति और (मही) मातृभूमि (तिस्र देवी·) ये तीनों देविया (मयोभुव) कल्याण करनेवाली हैं, अत ये तीनो (अस्रिधः) सम्मान एव आदरपूर्वक अहिंसित होती हुई (बर्हि) अन्त.करण में, हृदय मन्दिर में (सीदन्तु) बैठें, विराजमान हो।

भाव यह है कि प्रत्येक मनुष्य को अपनी मातृभाषा मे श्रद्धा रखनी चाहिये। अपनी भाषा का आदर करना चाहिये। हम अन्य देशो की भाषाये भी सीखें परन्तु अपनी देशभाषा को प्रमुख गौरव और महत्त्व प्रदान करे। पहले अपनी भाषा का ज्ञान कर फिर अन्य भाषाओं का अभ्यास करे, अपनी भाषा की उपेक्षा और पराई भाषा से प्यार करना घृणित है। हम अपना सारा कार्य अपनी मातृभाषा में ही करे, इसी में हमारा गौरव है। प्रत्येक मनुष्य को अपनी सभ्यता और सस्कृति से प्यार होना चाहिये। हमारा रहन-सहन, खान-पान, वेश-भूषा, सभी कुछ अपनी सभ्यता और संस्कृति के अनुकूल होना चाहिये। आज कुछ व्यक्ति पाश्चात्यों का अनुकरण करने में अपना गौरव समझते हैं, यह उनकी भूल है। भारतीय सस्कृति तो ससार की सर्वप्रथम सस्कृति है। यजुर्वेद ७।१४ मे कहा है–'**सा प्रथमा सस्कृतिर्विश्ववारा।**' हमे अपनी सस्कृति और सभ्यता पर गर्व होना चाहिये। प्रत्येक मनुष्य को अपनी मातृभूमि से प्रेम होना चाहिये। अपनी मातृभूमि के लिये मरमिटने की भावना होनी चाहिये। ये तीनो देवियां हमारा कल्याण करनेवाली हैं, अत हमारे हृदयो मे इनके लिये सम्मान होना चाहिये।

हड़प्पा में रहते थे आर्य ही !

चडीगढ, ८ मार्च। पजाब यूनिवर्सिटी मे आयोजित वैदिक और हडप्पा सभ्यताओ के सम्बन्धो पर आयोजित एक सेमिनार मे इस धारणा को पूरी तरह नकारा गया कि ये दोनो सभ्यताए अलग-अलग हैं। प्रसिद्ध पुरातत्त्वविद् प्रो० बी०बी० लाल ने कहा कि **न तो ये दोनो सभ्यताए एक-दूसरे से अलग हैं न ही आर्य आक्रमणकारी थे।**

प्रो० लाल ने कहा कि इस बात के समर्थन मे कई सबूत हैं कि आर्य और हडप्पा के लोग एक ही हैं। विभिन्न स्थानो पर हुई खुदाई मे मिले सिक्को, मूर्तियो और मोहरो की स्लाइडो से उन्होने स्पष्ट किया कि इनमे खोदी गई मुद्राए और चिह्न आज भी भारत मे इस्तेमाल होते हैं। हडप्पा मे कई स्थानो पर अभिवादन करने के लिए उसी तरह से हाथ जोडे हुई मूर्तिया मिली हैं जैसे आम भारतीय करते हैं। उन्होने इसके लिए महिलाओं द्वारा माग में सिदूर भरने का भी उदाहरण दिया। प्रो० लाल ने कहा, 'यह भी कहना गलत है कि हडप्पाकालीन लोग तीलियोवाले पहियो का इस्तेमाल नहीं जानते थे और घोडे से अपरिचित थे।' आर्यो के बारे मे इस तर्क का भी उन्होने खडन किया कि वे बजारे थे। 'उनकी एक सुसगठित सरकार थी और शासको को उनके क्रम मे रखते थे। शासको ने बस्तियो की किलेबदी की और जमीनी-समुद्री व्यापार किया,' उन्होने कहा। ऋग्वेद को २००० ईसा पहले से भी पुराना बताते हुए उन्होने कहा कि दोनो ही सभ्यताए भारत के उत्तरी और पश्चिमी क्षेत्र मे पनपी थीं।

बगलौर के प्रो० एन०एस० राजाराम ने अपने लेक्चर मे कहा कि हडप्पा मे मिली मोहरो और वैदिक साहित्य मे समानता है। उन्होने कहा कि इन मोहरो मे अकित चिह्न वैदिक हैं। इसके बारे मे उन्होंने ओम् और स्वस्तिक चिह्नो का उदाहरण दिया जो हडप्पा की बस्तियो मे मिली मोहरो मे अकित हैं। उन्होंने कहा, 'हडप्पा से मिली ओंकार मुद्रा से सबधित श्लोक भगवद्गीता मे भी मिलते हैं और उपनिषद् मे भी। अब तक इतने सारे सबूत मिल चुके हैं जिनसे यह स्पष्ट है कि वैदिक और हडप्पा कालीन सभ्यता एक ही हैं।' उन्होने इस बात को भी नकारा कि आर्यो ने हमलो और सामूहिक नरसहार के जरिये हडप्पा के लोगो का विनाश किया। उन्होने द्रविड और वैदिक सभ्यता को भी एक बताते हुए कहा कि **आर्य कोई जाति नहीं थी बल्कि सभ्य लोगो को आर्य कहते थे और असभ्य लोगों को अनार्य।** द्रविड सस्कृति से आर्य सस्कृति का अलगाव भौगोलिक है, लेकिन ये दोनो सस्कृतिया एक ही हैं। उन्होने कहा कि दक्षिण भारत के राजाओं मे **अय्या** और आयंगर लगाने की प्रथा थी जो कि **आर्य** शब्द से निकली थी।

प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति व पुरातत्त्व विभाग के अध्यक्ष प्रो० अश्विनी अग्रवाल ने कहा कि अब भारतीय उपमहाद्वीप की पुरानी बस्तियो के बारे मे पुरातत्त्वविदों को अपनी धारणाए बदलने की जरूरत है।

(साभार–दैनिक भास्कर, ९ मार्च २००२)

वैदिक-स्वाध्याय

आत्मजीवन निर्माण

अहमिद्धि पितु. परि मेधामृतस्य जग्रभ।
अह सूर्य इवाजनि।।

ऋ० ८।६।१०।। साम० पू० २।२।६।८।। अथर्व० २०।११५।१।।

शब्दार्थ–(अह इत्) मैंने तो (हि) निश्चय से (पितु) पालक पिता (ऋतस्य) सत्यस्वरूप परमेश्वर की (मेधा) धारणावती बुद्धि को (परिजग्रभ) सब तरफ से ग्रहण कर लिया है, अत (अह) मैं (सूर्य इव) सूर्य के समान (अजनि) होगया हू।

विनय–मैं सूर्य के सदृश होगया हू। मैं अनुभव करता हू कि मैं मनुष्यो मे सूर्य बन गया हू। मुझ सूर्य से सत्य ज्ञान की किरणे सब तरफ निकल रही हैं। जैसे इस हमारे सूर्य से प्राणिमात्र को ताप, प्रकाश और प्राण मिल रहा है, सबका पालन हो रहा है, इसी तरह मैं भी ऐसा होगया हू कि जो कोई भी मनुष्य मेरे सम्पर्क मे आता है उसे मुझसे ज्ञान, भक्ति और शक्ति मिलती है। मैं कुछ नहीं करता हू पर मुझे अनुभव होता है कि मुझसे स्वभावत जीवन की किरणे चारो तरफ निकल रही हैं और चारो तरफ के मनुष्यो को उच्च, पवित्र और चेतन बना रही हैं। इसमे मेरा कुछ नहीं है, मैंने तो प्रभु के आदित्य (सूर्य) रूप की ठीक तरह से उपासना की है अत उनका ही सूर्यरूप मुझ द्वारा प्रकट होने लगा है। मैंने बुद्धि द्वारा सूर्य की उपासना की है। मनुष्य का बुद्धि-स्थान (सिर) ही मनुष्य मे द्युलोक (सूर्य का लोक) है। मैंने अपनी बुद्धि द्वारा सत्य का ही सब तरफ से ग्रहण किया है और ग्रहण करके इसे धारण किया है। धारण करनेवाली बुद्धि का नाम ही 'मेधा' है। इस प्रकार मैंने मेधा को प्राप्त किया है, द्युलोक के साथ अपना सम्बन्ध जोडकर द्युलोक को अपने मे ग्रहण किया है, इसीलिए मैं सूर्य के समान होगया हू। द्युलोक मे स्थित प्रभु का रूप ऋतरूप है, सत्यरूप है। मैंने अपनी सब बुद्धिया, सब ज्ञान, उन सत्यस्वरूप पिता से ही ग्रहण किये हैं। मैंने इसका आग्रह किया है कि मैं सत्य को ही–केवल सत्य को ही–अपनी बुद्धि मे स्थान दूगा। इस तरह मैंने प्रभु के द्युरूप की सतत उपासना की है, ऋत की मेधा का परिग्रह किया है। इस सत्य बुद्धि के धारण करने के साथ-साथ मुझमे भक्ति और शक्ति भी आगई है, मेरा मन और शरीर भी तेजस्वी होगया है। पालक पिता के सब गुण मुझमे प्रकट होगये हैं। मैं सूर्य होगया हू। हे मुझे सूर्यसमान करनेवाले मेरे कारुणिक पिता! तुझ ऋत की मेधा को सब तरह से पकडे हुए मैं तेरे चरणो मे पडा हुआ हू।

(वैदिक विनय से)

महर्षि दयानन्द की अग्निपरीक्षा

प्रसग बनारस के पौराणिक पंडितों द्वारा रचा गया षड्यन्त्र, एक रूपवती वेश्या को स्वर्ण मुद्रा का थाल अर्पण करते महर्षि को कलकित करने का जाल रचा, लेकिन प्रभुभक्त देवदयानन्द इन अग्निपरीक्षा मे निष्कलकित विजयी हुये।

बिना इन्कार का मां का आशीर्वाद

रात हो चुकी थी, छिटक रहे तारे थे, रजत चन्द्र किरणो ने ढक लिया शिवालय को, मन्दिर को, शिवालय को, गगा की लहरो को, वायु के थपेडे स्वेत हो चुके थे, कोलाहल सौ चुका था, शान्ति थी चारों ओर।

तब नगर के एक भाग मे होती थी शान्ति भग, पायल की रूम-झुम से तबले की थाप से, गायन की आलाप से, हो रहे थे श्रोतागण मुग्ध, उसी समय नगर के पडित लोग, धर्म्म के धुरन्धर पोप, श्रद्धालिये-मुद्रालिये रूपवती वेश्या के यहा पहुचे, एक साथ बोले देवी एक इच्छा है, भिक्षा है, अर्पण करेगे मुद्रा का थाल यह है।

जीवन मे यौवन मे, रूपवती बोली आज कुछ बात नई-नई क्या है ? कहो कैसा यह जाल है ? पंडित लोग बोले एक साधु, एक ब्रह्मचारी, एक अनुरागी, अपने शहर मे आया है। हम सब चाहते हैं, उसका मान गर्व गल जाय, वह तुम्हारी रूप गरिमा में मिल जाय।

मुस्कुरा उठी रूपवती, बोली तुम भी तो ब्रह्मचारी हो, ब्रह्म अनुरागी हो, मैं हू समझती खूब कपडे रगकर, जगत् दिखाने को बनते हैं ब्रह्मचारी सब।

चल पडी उसी समय उसी क्षण-देव के शिविर को, जहा ब्रह्मानन्द हो रहे थे देवदयानन्द, उर्वशी-रम्भासी, किन्नरीसी, झूमती लतिकासी, आखो मे मदिरा लिये, होठो पर वासना, अन्तर मे कामना, नूपुर बजाती हुई, वायु सग गाती हुई पहुची।

देखा सामने एक मोटे कुशासन पर बैठे हैं महात्मा। आखो मे शान्ति लिये, विद्युत्सी क्रान्ति लिये, गौर वर्ण सम बैठे हैं तपस्वी है, काप उठी रूपवती, वासना सदा के लिए दूर हो चली गई।

छलने चली थी, जो स्वय ही छली गई हो गई बेभावो मे अपने विचारो मे, फिर भी सम्भाल निज मन को, सोचा परीक्षा लू–कैसा यह योगी है, या सचमुच न भोगी है।

योगमुद्रा समाधि से जागृत हुए ऋषि, कोमल सुवाणी से बोल उठे महर्षि दयानन्द, देवी चाहिए क्या ? रूपवती बोली एक पुत्र चाहिए। आप-सम रूपवान्–विद्वान्, क्रान्तिवान्, देव बोल उठे–मा मैं ही तुम्हारा पुत्र हू, रूपवती का हृदय गद्गद् हुआ, अश्रु नयन पूरित थे, कालिमा सदा के लिये धुल गई, गगा वात्सल्य की ओर से बहने लगी, हाथ उठा बोल उठी रूपवती बेटा मैं धन्य हुई–बिना इन्कार का मा का आशीर्वाद।

देव दयानम्द तुम महान् योगी हो, तपस्वी हो, वीतराग सन्यासी हो, पतित पावन हो, निष्कलकित निर्मल हो, मानव प्राणिमात्र के उद्धारक हो। प्रभु तुम्हारी तपश्चर्या को सफल करे–यही बस कामना।

गुरुवर दयानन्द सा, योगी मिलना कठिन जहान।
शिष्य जिन्हों के जो बने, स्वामी श्रद्धानन्द महान्।।

–**स्वामी केवलानन्द सरस्वती,** ज्ञानसागर वैदिक साहित्य प्रचार केन्द्र,
कर्मवीर भाई बसीलाल आर्य स्मारक वस्तीगृह,
श्यामलाल अभियान्त्रिकी महाविद्यालय, उद्गीर जिला लातूर-४१३५१७

ओ३म्

हरयाणा के आर्यसमाजो के नाम अपील

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्त्वावधान मे ६-७ अप्रैल २००२ को रोहतक मे विशाल हरयाणा प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन होगा। इस सम्मेलन की सफलता सभी आर्यसमाजों के निष्ठावान्, कार्यकर्त्ताओं और अधिकारियो पर निर्भर है। अत हमारा आर्यसमाज के सभी विद्वानो, उपदेशको, लेखको और आर्यसमाज एवं शिक्षण-संस्थाओ के अधिकारियो, कार्यकर्त्ताओ से निवेदन है कि आप तन, मन, धन से आर्य महासम्मेलन को सफल बनाने मे सभा के अधिकारियों का पूरा सहयोग करे, इस सम्मेलन में भारी उत्साह और सख्या में उपस्थित होकर आर्यसमाज की सगठनशक्ति का परिचय देवे।

आचार्य यशपाल – मन्त्री
स्वामी ओमानन्द सरस्वती – प्रधान

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक

आओ ! सच्चे शिव की खोज के लिए ऋषि का अनुकरण करें

प्रतापसिंह शास्त्री, एम०ए० पत्रकार, २५ गोल्डन विहार, गंगवा रोड, हिसार

जीवन में सत्य को धारण करनेवाले आर्यसमाज के संस्थापक ऋषि दयानन्द के जीवन से बढकर और क्या दृष्टान्त सत्य के लिए दिया जा सकता है। आओ ! प्रेरणा लेने के लिए ऋषि के जीवन को सत्य की कसौटी पर परखते हैं और सच्चे शिव की खोज के लिए ऋषि के जीवन का अनुकरण करते हैं। आपने कभी शिव की एक तस्वीर देखी होगी जिसके सिर पर गंगा बहती दिखाई गई है और शिव के माथे पर चन्द्रमा दिखाया गया है, गले में नीलकंठ है। इसके अतिरिक्त शिवशंकर के गले में सांप लटका रखा है उसे त्रिनेत्रधारी भी दिखाया गया है। जो लोग शिवशंकर के भक्तजन हैं वे वेद से अनभिज्ञ हैं, अंधविश्वासी हैं, उन्हें अग्निश्वास ऋषि के पुत्र शिवजी महापुरुष का तथा कनल क्षेत्र के शासक राजा दक्ष की पुत्री पार्वती का इतिहास ज्ञात नहीं है। इनके पुत्र कार्तिकेय तथा गणेश के बारे में भी शिव के भक्त कोई ऐतिहासिक ज्ञान नहीं रखते। इसीलिए वे उपरोक्त शिव की तस्वीर का अभिप्राय भी सत्य नहीं समझते। मैं तथाकथित शिव की तस्वीर पर विचार करके ऋषि दयानन्द को ही शिव बताने जारहा हू। शिव का अर्थ है–कल्याण करनेवाला। जो महर्षि दयानन्द की भांति संसार का कल्याण करता है वह शिव है वह शकर है। ऋषि के जीवन का आधार ही सच्चे शिव की खोज है। शंकर के सिर पर गंगा बहती है। गंगा जड वस्तु है वह सिर पर कैसे आ सकती है, सिर पर गंगा बह ही नहीं सकती। क्योंकि वह नदी है किन्तु शिव की तस्वीर में यह गंगा ज्ञान की प्रतीक है। इस दृष्टि से ऋषि दयानन्द को देखते हैं तो वे शिवशंकर से कम नहीं हैं। ऋषि दयानन्द के मस्तिष्क में, सिर में ज्ञान की गंगा बहती थी। सत्यार्थप्रकाश और ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका जैसे महान् ग्रन्थ उनके ज्ञान की गंगा के ही परिणाम हैं। लोग कहते थे वेदों को शंकासुर ले गया। महर्षि दयानन्द ने जर्मनी (संस्कृत विश्वविद्यालय कैल जर्मनी) से चारों वेद मंगवाकर लोगों को पुन· दिये। वेदों का भाष्य करके उन्हे ज्ञान-विज्ञान, कर्म-कांड तथा सब सत्य विद्याओं का ईश्वरीय ज्ञान का महान् ग्रन्थ बताया। ऋषि दयानन्द की सूझ निराली थी। उन्होंने ईसाइयत और मुस्लिम मज़्हब की बाढ को रोका। मुसलमान धर्मगुरु बोले–'कुरान खुदा का उपदेश है'। महर्षि ने प्रश्न किया कि–'खुदा का उपदेश खुदा किसी के द्वारा भेज रहा है अत: यह ईश्वरीय पुस्तक नहीं है।' मोहम्मद साहब को मृगी का रोग था उन्हें मृगी दौरे लगभग २९ साल तक आते रहे और यह कुरान भी २९ वर्ष तक लिखी गई) जिस पुस्तक में मार डालो, लूट लो, पशुओं को मारो, हत्या करदो, महिलाओं को शिक्षा मत दो, पर्दे में रखो, ये खेतिया हैं आदि अव्यावहारिक बातें लिखी पड़ी हैं। उसे तुम ईश्वर का पुस्तक बताते हो। परमेश्वर तो संसार का कल्याण किया करता है फिर ये मत-सम्प्रदाय मोहम्मद और ईसा से पूर्व थे ही कहां ?

महात्मा बुद्ध ने कहा–यह संसार दु:खों का घर है। ऋषि दयानन्द की सूझ रखनेवालों ने कहा–सुख तो पहले ही स्वीकार कर लिया अत: यह दयानन्द की जीत है।

शिव की तस्वीर में माथे पर चन्द्रमा दिखाया गया है। माथे पर चन्द्रमा कैसे आ सकता है ? धरती से लाखों करोड़ों मील दूर है चन्द्रमा। फिर चन्द्रमा किस बात का प्रतीक है अर्थात् शीतलता, सहनशक्ति, ठण्डापन। वेद में आया है–'सोमं राजानं अग्निं वरुणं अनु आरभामहे' आओ ! हम अपने जीवन का आरम्भ सोम (चन्द्रमा) से करें। इस दृष्टि से भी ऋषि दयानन्द सत्य की कसौटी पर खरे उतरते हैं। ऋषि के मस्तक पर, माथे पर चन्द्रमा था।

महर्षि के पूना में प्रवचन हो रहे थे। सत्य के विरोधियों ने गधे पर नकली दयानन्द बनाकर एक व्यक्ति को बैठाकर और उसके ऊपर दयानन्द लिखकर, नामपट लगाकर पूना के बाजारों में जुलूस निकाला और महर्षि दयानन्द को अपशब्द बकते रहे। ऋषि के भक्तों को यह सहन न हुआ वे दयानन्द के पास आकर कहने लगे–महाराज ! आपका बड़ा भारी अपमान किया जारहा है। सुनकर शान्तचित्त दयानन्द बोले–सब अच्छा होरहा है असली दयानन्द तो मैं तुम्हारे सामने हूं और कोई नकली दयानन्द होगा तो उसका वही हाल होगा। यह थी दयानन्द के माथे पर चन्द्रमा की बात।

इस दृष्टि से दयानन्द शकर थे। कितनी सहनशीलता थी उस महापुरुष मे इसकी आज कल्पना भी नहीं की जा सकती। शकर के गले में नीलकण्ठ है इसका अभिप्राय है जो विष पीता है और अमृत बांटता है वह शिव है, शंकर है। ऋषि दयानन्द इस दृष्टि से भी सत्य की कसौटी पर खरे उतरते हैं। महर्षि दयानन्द विद्वानो की नगरी काशी में पहुचे और शास्त्रार्थ करने के लिए पौराणिक विद्वदजगत् को ललकारा। काशी के पण्डितों मे उन दिनों सबसे बडे विद्वान् विशुद्धानन्द थे ? सभी पण्डित विशुद्धानन्द के पास गये और शास्त्रार्थ के लिए उनसे सलाह की। विशुद्धानन्द ने कहा–"तुम सब हारोगे, वेद मे कहीं भी मूर्तिपूजा का विधान नहीं है। कहां से दिखाओगे ? तुम कहते हो परमात्मा की मूर्ति होती है तो सिद्ध तुमने करना है, दयानन्द तो कहता है परमात्मा की मूर्ति नहीं होती। दयानन्द कहता है ईश्वर निराकार है तुम कहते हो साकार है सिद्ध करना तुमने है, कैसे करोगे ? तुम हार गये। दयानन्द कहता है सगुण और निर्गुण का प्रश्न तो हर वस्तु के साथ लगा है। ईश्वर निराकार है इसमे कोई संदेह नहीं है फिर ईश्वर का सगुण और निर्गुण होने का प्रश्नोत्तर तो तुमने देखा है। तुम दयानन्द की बात को तो मान रहे हो, तुम्हारी बात का तुम्हें ही तर्क देना है कैसे दे सकोगे ? दयानन्द कहता है गुण कर्म स्वभाव से ब्राह्मण होता है ऐसा वेद शास्त्र मानते हैं। तुम कहते हो जन्म से ब्राह्मण होता है तर्क व प्रमाण तुमने देना है कैसे और कहा से दोगे ? दयानन्द कहता है जीवित माता-पिता की गुरु व ब्राह्मण की, अतिथि की सेवा करो। तुम कहते हो–मृत माता-पिता गुरु ब्राह्मण आदि की सेवा करो। हा, दयानन्द की बात तो ठीक है पर तुम्हें प्रमाण देना है तर्क देना है मरे हुए माता-पिता गुरु ब्राह्मण की सेवा कैसे करें ? अत. तुम हार गये। पण्डित वर्ग विशुद्धानन्द जी के समझाने पर भी नहीं माना। बल्कि विशुद्धानन्द पर दबाव डालकर जबरदस्ती उन्हे अपना अग्रणी बनाकर शास्त्रार्थ के लिए तैयार होगया। दयानन्द अकेला एक तरफ है दूसरी तरफ बीस-पच्चीस काशी के विद्वान् विशुद्धानन्द बाल शास्त्री आदि बैठे हैं। काशी के राजा भी स्वय मध्यस्थ व श्रोतागण जनसमूह के साथ बैठे हैं।

प्रश्न किया दयानन्द ने विशुद्धानन्द से। विशुद्धानन्द जी क्या वेद का पुस्तक लाये हो ? विशुद्धानन्द भी ऋषि दयानन्द को तर्क से घेरकर भगा देना चाहते थे, बोले–दयानन्द जी, यदि तुम्हे वेद कठस्थ नहीं है तो काशी में क्यो आगये। दयानन्द ने कहा–क्या तुम्हें और तुम्हारे पण्डित वर्ग को सब कुछ याद है ? विशुद्धानन्द बोले–हां, सब कुछ याद है। दयानन्द ने प्रश्न किया–विशुद्धानन्द तुम्हें यदि सब याद है तो धर्म के लक्षण बताओ ? विशुद्धानन्द को धर्म के लक्षण याद नहीं थे। अत· चुप होगया। फिर महाराजा काशी नरेश के आग्रह पर ऋषि दयानन्द ने धर्म के लक्षण बताए और मनुस्मृति का निम्न श्लोक सुना दिया–

धृतिक्षमादमोऽस्तेऽयमशौचं इन्द्रिय निग्रह: ।
धीर्विद्या सत्यं अक्रोध: दशक धर्मलक्षणम् । ।

विशुद्धानन्द के पराजित होने पर बालशास्त्री आगे आये और बोले हमें सब याद है जो पूछना चाहो पूछो। दयानन्द ने कहा–तुम अधर्म के लक्षण बताओ ? बस, बाल शास्त्री भी पराजित होगये। इसके बाद कुछ शोर-शराबे मे एक पण्डित ने एक हस्तलिखित फटी हुई पुस्तक दयानन्द को पढने के लिए दी कि यह कुछ प्रमाण पढो। दयानन्द ने वह वापिस विशुद्धानन्द आदि की तरफ बढाई और पौराणिक मण्डली ने बस एक साथ शोर-शराबा करते हुए दयानन्द हार गया के नारे लगवा दिये। यह राजा सहित सारे पण्डित वर्ग का एक षड्यन्त्र था क्योंकि पण्डित वर्ग मूर्तिपूजा के अतिरिक्त किसी प्रश्न के बारे मे पूछने की बात सोच ही नहीं सकता था। अत· इस प्रकार अन्यायपूर्ण व्यवहार को, घोर अपमान को भी दयानन्द जैसा आदित्य ब्रह्मचारी ही विष का प्याला समझकर पी सकता है किन्तु उनके चेहरे पर उदासी का अब भी कोई चिह्न नहीं था। दयानन्द पूर्ववत् हंसमुख प्रसन्नचित्त थे। यह सब सुनकर एक सन्यासी ईश्वरसिंह आये यह जानने कि दयानन्द कैसा है ? आकर दयानन्द से घण्टाभर बातचीत करते रहे। उन्होंने देखा दयानन्द के चेहरे पर न क्रोध का भाव है, न उदासी है, केवल प्रसन्नता मुस्करा रही है और दयानन्द ने स्वय ऐसी कोई चर्चा भी नहीं की है। वे बोले–दयानन्द तू तो सचमुच ऋषि है।

यह थी ऋषि दयानन्द की अद्भुत साधना। वे नीलकठ थे, शिव थे, शकर थे। उन्होने स्वय विषपान किया और ससार को वेदज्ञान का, सत्य ज्ञान का अमृत पिलाया। शकर के गले मे साप है इसका भाव है विषपान करना। जो हमे नुकसान दे हम उसे भी गले लगायें। दयानन्द इस दृष्टि से भी सत्य की कसौटी पर खरा उतरता है। ऋषि ने एक बार नहीं, सतरह बार विषपान किया। ऋषि का पाचक (रसोईया) जगन्नाथ था उसने एक षड्यत्र के तहत महर्षि को दूध मे भयकर विष मिलाकर दे दिया। महर्षि रातभर उलटी करते रहे किसी को बताया तक नहीं, बल्कि जगन्नाथ से कहते हैं, जगन्नाथ तूने यह बहुत बुरा किया है, मैंने बहुत कार्य करना था। वेदो का भाष्य भी मैं अधूरा छोड रहा हू जा, तू इस देश से दूर नेपाल भाग जा। यदि मेरे भक्तों को पता चल गया और तू पकडा गया तो तेरे प्राण भी सकट में पड जायेगे। ऋषि के पास पाच सौ रुपये थे उसे वे देते हैं और कहते हैं। शीघ्र तू नेपाल देश मे भाग जा। वह राष्ट्र दूसरे राज्य की रियासत है वहा तुझे कोई कुछ नहीं कहेगा। वाह रे! ऋषि तू सचमुच कितना महान् दयालु था जो अपने कातिल को भी क्षमा करता है और उस जमाने मे पाच सौ रुपये भी देता है। ऐसा महापुरुष ससार मे सिवाय दयानन्द के और कोई नहीं हुआ। गाधी जी की सभा मे उनके मरने से ९ दिन पहले नन्दलाल नामक युवक ने बम फैंका था, वह जेल में था उसे गाधी जी ने माफी नहीं दी। गाधी जी दयानन्द बनने का अवसर चूक गये और १० दिन बाद नत्थूराम गोडसे की गोली से शहीद होगये। विषपान करना तथा अपमान के विष को पीना, कातिल को क्षमा करना और आर्थिक सहायता कर उसके प्राण बचाना यह कितना कठिन है पर दयानन्द के जीवन को देखो, सत्य की रक्षा के लिए, सत्य की खोज के लिए, सच्चे शिव की तलाश के लिए अपना बलिदान तक दे देते हैं।

इसके अतिरिक्त दयानन्द आदित्य ब्रह्मचारी, महान् सयमी थे जो व्यक्ति दयानन्द बनना चाहते हैं, उन्हे कामवासना को जीतना होगा। वे केवल आदित्य ब्रह्मचारी ही नहीं अपितु महान् योगी तथा मन्त्रद्रष्टा ऋषि भी थे।

प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् आचार्य नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ और महर्षि के शिष्य एव वेदभाष्य मे उनके सहयोगी लेखक प० ज्वालादत्त शर्मा के बीच निम्न वार्तालाप द्रष्टव्य है–"आचार्य नरदेव जी ने प० ज्वालादत्त शर्मा से पूछा कि स्वामी दयानन्द जी वेदभाष्य कैसे करते थे? पण्डित जी ने बतलाया–प्रात नित्यकर्मो से निपटकर हम सब पण्डित (तीन या चार) नियत समय पर, नियत स्थान पर एकत्र हो जाते थे। इतने मे स्वामी जी आ विराजते। आते ही स्वामी जी कहते–चलो, वेदमन्त्र पढो। हम मे से कोई वेदमन्त्र पढता (प्राय मैं ही पढता था)। दो-तीन बार वेदमन्त्र पढने के पश्चात् स्वामी जी हमको पदच्छेद, अन्वय लिखवाते थे फिर पूछते थे 'निरुक्त' क्या कहता है पूर्व वेदमन्त्र मे क्या है, अगले मन्त्र मे पढो इत्यादि। यह सब कुछ हो जाता तब स्वामी जी पासवाले कमरे मे चले जाते, कमरे के दरवाजे बन्द होजाते और घण्टे के पश्चात् स्वामी जी बाहर आकर सस्कृत मे भाष्य लिखवाते, भावार्थ भी लिखवाते। फिर हमसे कहते कि इसकी हिन्दी करदो। भीतर कमरे मे स्वामी जी समाधि लगाते थे उन्हे १८ घण्टे की समाधि सिद्ध थी। उनकी समाधि का फल ही वेदभाष्य है। किसी-किसी समय स्वामी जी आधा घण्टे मे ही बाहर आजाते थे। स्वामी जी की समाधि और तर्क ऋषि ही निर्णय करते थे।" इस कथन की पुष्टि स्वामी जी के साक्षात्कर्ता इतिहास पुरुष श्री नथमल तिवाडी के 'परोपकारी' के अगस्त १९८६ के अक मे प्रकाशित लेख से भी होती है। ऋषि दयानन्द को परमेश्वर का (सच्चे शिव का) प्रत्यक्ष था। परमेश्वर से अनभिज्ञ व्यक्ति न वेदो का सत्यार्थ कर सकता था और न–**'त्वमेव प्रत्यक्ष ब्रह्मासि त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि, सत्य वदिष्यामि, ऋत वदिष्यामि'** की घोषणापूर्वक प्रतीज्ञा कर सकता था। महर्षि दयानन्द वेदविद्या में निपुण, पारगत, मन्त्रद्रष्टा, परम तपस्वी एव योग विद्या मे निष्णात योगी एव वैज्ञानिक थे जो वेदज्ञान-विज्ञान के शोधकर्ता थे। साक्षात्कृतधर्मा होने के कारण ही उन्होने सत्यार्थप्रकाश के प्रारम्भ मे घोषणा की–**'त्वामेव प्रत्यक्ष ब्रह्मवदिष्यामि'** और अपनी प्रतिज्ञा का उन्होने अक्षरस पालन किया। इसलिए सत्यार्थप्रकाश के अन्त मे घोषणा की–**'त्वामेव प्रत्यक्ष ब्रह्मवादिषम्, सत्य वादिषम्, ऋत वादिषम्।'**

शिव की तस्वीर मे तीसरा नेत्र दिखाया गया है। वस्तुत. यह नेत्र विवेक का प्रतीक है। दो नेत्र ज्ञानचक्षु तथा तीसरा नेत्र विवेक से काम करना है। ऋषि दयानन्द इस दृष्टि से भी सत्य की कसौटी पर खरे उतरते हैं।

सामवेद ब्रह्मपारायण महायज्ञ

दिनांक १८ मार्च से २४ मार्च, २००२ तक

स्थान : वैदिक भक्ति साधन आश्रम, आर्यनगर, रोहतक

सभी गुरुभक्तो एव यज्ञप्रेमियो को यह जानकर अति हर्ष होगा कि **पूज्यपाद महात्मा प्रभु आश्रित जी महाराज** के निर्वाणदिवस के उपलक्ष्य मे **दिनांक १८ मार्च से २४ मार्च**, २००२ तक पवित्र सामवेद ब्रह्मपारायण महायज्ञ आश्रम अधिष्ठाता **महात्मा व्यासदेव जी वानप्रस्थी** की अध्यक्षता में होगा। यज्ञ के ब्रह्मा होगे सुविख्यात अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक विद्वान् मूर्धन्य सन्यासी **पूज्य स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती** साथ ही **डॉ० देव शर्मा, आचार्य सत्यव्रत और प० खुशीराम आर्य** जी के प्रवचन सुनने को मिलेंगे। वेदपाठी होगे गुरुकुल गौतम नगर के ब्रह्मचारीगण। **–वेदप्रकाश आर्य, मन्त्री**

आवश्यक सूचना

आर्य विद्वानों एवं विज्ञापनदाताओं से विशेष निवेदन

मान्यवर महोदय,

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्त्वावधान में हरयाणा प्रान्तीय विशाल आर्य महासम्मेलन दिनाक ६-७ अप्रैल, २००२ को आयोजित किया जारहा है। इस अवसर पर एक स्मारिका का प्रकाशन भी किया जायेगा। इसमे विद्वान् लेखक महानुभाव अपना लेख भेजे। इसमे आर्यसमाज के प्रमुख बलिदानियों की जीवनी भी प्रकाशित की जायेगी, विज्ञापनदाता अपने उद्योग एव शिक्षण संस्था का परिचय विज्ञापन के रूप मे देकर सहयोग के भागी बने।

विज्ञापन दरें निम्न प्रकार हैं–

अन्तिम कवर पृष्ठ	२१०००/- रुपये
अन्दर द्वितीय कवर पृष्ठ	१६०००/- रुपये
अन्दर तृतीय कवर पृष्ठ	१६०००/- रुपये
पूरा पृष्ठ	५०००/- रुपये
आधा पृष्ठ	२५००/- रुपये
चौथाई पृष्ठ	१५००/- रुपये

–यशपाल आचार्य, सभा मन्त्री

हरयाणा के आर्यसमाजों से आवश्यक निवेदन

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से वेदप्रचार के प्रसार के लिए प्रभावशाली उपदेशक पं० शकरमित्र वेदालकार, प० तेजवीर, प० सीताराम की सेवाएं प्राप्त की हैं। भजनोपदेशक प० चिरजीलाल, प० मुरारीलाल बेचैन, स्वामी देवानन्द, प० जयपाल, प० सत्यपाल, पं० शेरसिंह तथा प० रामकुमार आदि पूर्ववत् प्रचारकार्य मे सहयोग दे रहे हैं। **–यशपाल आचार्य सभामन्त्री**

आर्यसमाज के उत्सवों की बहार

१	श्रीमद्दयानन्द गुरुकुल विद्यापीठ गदपुरी (फरीदाबाद)	१५ से १७ मार्च
२	आर्यसमाज घरोण्डा जिला करनाल	१५ से १७ मार्च
३	आर्यसमाज सफीदों जिला जीन्द	१५ से १७ मार्च
४	महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर	१६ से १७ मार्च
५	आर्ष गुरुकुल आटा, डिकाडला जिला पानीपत	१६-१७ मार्च
६	गोशाला बहीन (फरीदाबाद)	१६-१७ मार्च
७	ओम् साधना मण्डल गली न० ३ शिवकालोनी, करनाल (यज्ञ, सत्संग कार्यक्रम प्रात· ९ से १२ बजे तक)	१७ मार्च
८	आर्यसमाज अस्तौली जिला गौतमबुद्धनगर (नोएडा)	१८ से २० मार्च
९	आर्यसमाज छतेहरा (बुसाना) जिला सोनीपत	१९ से २० मार्च
१०	आर्यसमाज धर्मगढ जिला करनाल	१९ से २१ मार्च
११	आर्यसमाज जोहरखेड़ा (फरीदाबाद) (ऋग्वेद पारायण यज्ञ)	१९ से २८ मार्च
१२	आर्यसमाज चोरामाजरा जिला करनाल	२२ से २४ मार्च
१३.	आर्यसमाज सूरजपुर जिला गौतमबुद्धनगर (नोएडा)	२३ से २५ मार्च
१४	आर्यसमाज मुआना जिला जीन्द	५ से ७ अप्रैल
१५.	हरयाणा प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन, रोहतक	६-७ अप्रैल

–सुखदेव शास्त्री, सहायक वेदप्रचाराधिष्ठाता

सिख भाई मुसलमानों के अधिक समीप हैं या कि हिन्दुओं के ?

❑ **आचार्य नरेश वैदिक गवेषक**, उद्‌गीथ साधना स्थली 'हिमाचल'

कुछ काल पूर्व पंजाब में सत्य सनातन वैदिक धर्म का प्रचार करते हुए जब मैंने यह नारा सुना कि सिख-मुस्लिम भाई-भाई, हिन्दू कौम कहां से आई ? तो मेरा माथा ठनका। क्योंकि मैं बाल्यकाल से ही 'स्वर्ण मन्दिर' तथा गुरुवाणी से जुडा हू। अत यह बात सुनकर मुझे हार्दिक दु.ख हुआ। तब मैंने पंजाबी भाषा अर्थात् गुरुमुखी लिपि मे एक पुस्तक छपवाई और उसे पजाब तथा जम्मू में नि·शुल्क वितरित किया। क्योकि जम्मू में सिखों के साथ-साथ मुसलमान भी रहते हैं। अत. मैं सर्वप्रथम उपरोक्त समस्या का समाधान करने वहीं पहुंचा।

जम्मू मे एक सरदार साहब एडवोकेट मेरे प्रवचनो को सुनने आते थे। एक दिन प्रवचन के पश्चात् मैंने उन्हें वहीं रोक लिया और प्रश्न पूछा कि आप बतायें श्री गुरु नानकदेव जी हिन्दु थे या मुसलमान ? प्रश्न पर बिना विशेष विचार किए वे सिख भाई बोल उठे–श्री गुरु नानकदेव जी सिख ही थे। मैंने कहा देखो मेरे प्रश्न का ठीक उत्तर नहीं मिला क्योकि 'सिख' शब्द जो कि 'शिष्य' शब्द का अपभ्रंश है उसका वास्तविक अर्थ है 'चेला', तो क्या श्री गुरु नानकदेव जी आपके चेले थे ?

मेरी इस विवेचना को सुनकर वह सिख एडवोकेट महोदय गहरी चिन्ता मे डूब गये। जब वे थोडी देर के लिए चुप रहे तो मैंने पुन प्रश्न किया कि बताइये ना श्री गुरु नानकदेव जी मुसलमान थे या हिन्दू ? उन्होने दबी आवाज मे कहा–जो मैं जानता था बता दिया। मैंने कहा आप तो पढे-लिखे व्यक्ति ही नहीं अपितु एडवोकेट हैं जो कि बात की गहराई मे जाते हैं और तर्क-वितर्क तथा बहस से केस लडते हैं। यदि आप नानक जी को सिख कहते हैं तो यह उनका अपमान है, क्योंकि वे आपके पूज्य गुरु थे न कि शिष्य। और यदि आप उन्हे मुसलमान कहते हैं तो यह उससे भी बडा अपमान होगा क्योंकि उनका सम्पूर्ण जीवन तथा उपदेश सार ओम्, वेद, यज्ञ, चारों वर्ण, योग तथा धोती और सनातन वैदिक सस्कारों से भरा मिलता है।

गत दिनों मुझे पंजाबी विश्व-विद्यालय से छपी श्री गुरु नानकदेव जी की जन्म साखी में छपा एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण चित्र मिला है। उस चित्र के देखने से यह बात बिल्कुल साफ सिद्ध हो जाती है कि आखिर वे कौन थे ? प्राप्त रगीन चित्र मे श्री गुरु नानकदेव जी को स्नान करते हुए दिखाया गया है। क्योकि स्नान वस्त्रो का उतारकर अर्थात् टोपी, पगडी एव कुर्ते को उतारे बिना नहीं होता तथा सभी प्राचीन चित्रों में उन्हे टोपी मे ही दिखाया जाता है। वर्त्तमान के सभी लम्बी दाढी व पगडीवाले चित्र स्व० श्री शोभासिह चित्रकार को धमकी देकर बने थे।

इस चित्र मे जो कि मुझे पटियाला से मिला है, यह दिखाया गया है कि उनके नगे सिर पर केशो के स्थान पर चोटी है तथा बदन पर छुरी के स्थान पर 'यज्ञोपवीत' है। आज से लगभग पच्चीस वर्ष पूर्व जब मै E S I.R. नेशनल फिजिकल लैबोरेटरी दिल्ली मे एक इजीनियर के रूप मे सेवारत था तो वहां ठेकेदार की ओर से एक बडी आयु के इजीनियर सिख सज्जन भी कार्यरत थे। एक दिन भोजन अवकाश के समय मैंने उनसे पूछा कि आप यज्ञोपवीत रखते हैं ? कहने लगे नहीं। तो मैंने कहा कि आप नही मै पक्का सिख हू। क्योकि मै यज्ञोपवीत रखता हू। उन्होने हडबडाकर कहा 'यह कैसे हो सकता है ? क्योकि तुम्हारे पास न तो केश है, न पगडी है, न कडा है और न ही कृपाण। अत आप सिख कभी नहीं हो सकते। मैंने कहा लगता है आपने गुरुवाणी का ध्यान से पाठ नहीं किया। उन्होंने कहा–आप कैसे बोलते हैं ? मैंने कहा मैं बिल्कुल ठीक बोल रहा हू और गुरुमर्यादा के अनुसार ही बोल रहा हू। मैंने कहा–गुरुवाणी में लिखा है–'केश धरे न मिले हरि प्यारे' तथा 'सुन अंधी लोई बेपीर इन मुण्डियन सरन भज कबीर' अर्थात् केवल यूं ही केश रखने से ईश्वर नहीं मिलता और यदि ईश्वर को पाना है तो किसी मुण्डे-मुण्डाये ब्रह्मनिष्ठ बिना बालवाले संन्यासी की शरण में जा।

मेरी इस सप्रमाण बात को सुनकर उस वृद्ध सिविल इजीनियर ने उत्तर तो कुछ नहीं दिया, अपितु अपने सिर पर जोर-जोर से हाथ मारकर रोने लगा। इससे मैं डर गया क्योकि उस समय मैं बहुत छोटा था कि कहीं यह इस सरकारी कार्यालय मे मेरे विरुद्ध कुछ मजहब की तौहीन की शिकायत न कर दे। मैंने केशो के न रखने के समर्थन मे उन्हें यह भी कहा था कि देखिए केश, कडा आदि नित्य रखने की व्यवस्था श्री गुरु गोबिन्दसिह जी ने तब युद्ध के लिए ही की थी। अब तो हमारे देश की एक अलग ही फौज बन चुकी है, अत अब इसकी क्या आवश्यकता है ? इतना ही नहीं अपितु यह बात भी आप ध्यान मे रखे कि किसी व्यक्ति के देश व धर्महित सेना (फौज) मे भरती होने मात्र से उसकी जाति या धर्म नहीं बदल जाता। क्या किसी व्यक्ति के द्वारा भारत की मिलेट्री मे भर्ती होने से और खाकी कमीज-पैंट पेटी, बोतल किट या खास जूते रखने से अब उसका धर्म खाकी, फौजी या फोजा अथवा फौजिस्तानी होजाना चाहिए। क्या फौज मे भर्ती हो जाने से उसका प्रचीन धर्मग्रन्थ वेद अथवा इष्टदेव राम, कृष्ण या शिव न रहकर उनका ब्रिगेडियर आदि होगे ? अत बुद्धिजीवियो को यह कदापि न भूलना चाहिए कि श्री गुरु गोविन्दसिह जी ने एक देश धर्मरक्षक सेना 'खालसा पथ' सजाया था न कि पृथक् मत-पथ या मजहब।

श्री गुरु गोविन्दसिह का धर्म क्या था और उन्होने फौज किसलिए बनाई ?

गुरुद्वारा श्री दशमी पा० रिवालसर जिला मण्डी (हिमाचल) वहा बोर्ड पर गुरुमुखी हिन्दी तथा इगलिश मे छपे शब्द–(इसकी असली कैमरा फोटो जिसमे साथ ही वहा का ग्यानी भी खडा है मेरे पास सुरक्षित है)।

"श्री गोविन्दसिह जी महाराज ने, मुसलमान बादशाह औरगजेब के 'हिन्दू धर्म' के विरुद्ध अत्याचार को रोकने हेतु तथा भारत देश की आजादी हेतु रिवालसर मे सम्वत् १७८५ मे एक बैठक की थी"।

इन वाक्यो से यह स्पष्ट सिद्ध हो जाता है कि गुरु गोविन्द जी तथा उनकी फौज हिन्दू-धर्म को ही मानती थी और किसी पृथक् स्थान की बात न करके भारत को ही अपना देश समझती थी।

मैं मन्दिरो के साथ गुरुद्वारों मे भी प्रवचन करता हू। दिसम्बर २० से २२ विक्रमी २०५७ मे मेरे गुरुद्वारा सिंह सभा उडलानाकला पानीपत मे निम्नलिखित विषयो पर प्रवचन हुए। इससे पूर्व भी मैं भारत के रिवालसर, मुरादाबाद, हरिद्वार बी एच ई एल नरकटियागंज, सूरत तथा भुवनेश्वर के गुरुद्वारों मे बोल चुका हूं। स्वर्ण मन्दिर अमृतसर से प्रकाशित श्री ग्रथ साहब मे ओ३म् के स्थान पर ओ ही लिखा है।

कुछ वर्ष पूर्व हुई मेरी बातचीत—

वर्तमान की स्थिति में शहीद भगतसिंह का परिवार क्या कहता है?

(१) हमारे दादा सरदार अर्जुनसिंह जी कहते थे कि हमारा धर्म वेद है। उन्होने अपनी एक पुस्तक "हमारे सिख गुरु वेदो की पैरवी थे" मे लिखा है कि सब 'गुरु' वेदभक्त थे।

(२) सरदार अर्जुनसिह जी कहा करते थे कि गुरु का सच्चा सिख बनने के लिए केश रखने की आवश्यकता नहीं, जितनी कि प्राचीन वेदमर्यादा पर चलने की आवश्यकता है। इसलिए उन्होंने हम सब भाइयों को सिर पर लम्बे-लम्बे बाल रखने के लिए बाध्य नहीं किया।

(३) प्राचीन चित्रों को देखने से पता चलता है कि नौ गुरुओं के सिर पर लम्बे-लम्बे केश नहीं थे। विशेष जानकारी के लिए दिल्ली की कोतवाली का चित्र देखें। जो लोग शहीद भगतसिह को बिना बालों के टोपी में नहीं चाहते, वे वास्तव मे उसे हृदय से नहीं चाहते और यदि चाहते हैं तो केवल अपने स्वार्थ के लिए।

उन्होने मास, मछली, अण्डा खाना छोड़कर ऋषि दयानन्द से प्रभावित होकर यज्ञोपवीत लिया था तथा वे प्रतिदिन सध्या व यज्ञ (हवन) करते थे। उन्होंने हम सबको भी यज्ञोपवीत पहनाया था।

(४) वे ग्रामों में वैदिक संस्कृति की रक्षा के लिए साइकिल द्वारा यज्ञ व वेदप्रचार करते थे।

(५) वे जन्म से जातिवाद व कौमवाद को नहीं मानते थे।

(६) उनके हृदय में अद्भुत राष्ट्रभक्ति थी और वे राष्ट्र एकता व सुरक्षा के समक्ष और किसी विवाद को कुछ न समझते थे। ऐसे ही शिक्षा देशहित पर मरमिटाने की उन्होंने हम सब भाइयों को दी।

(७) वे जड वस्तुओं को सिर झुकाना पाप समझते थे। उनका सिर तो परमात्मा के हृदय मन्दिर में ही झुकता था।

(८) हमारे पिता श्री किशनसिह जी ने एक पुस्तक दसों गुरुओं के विवाह संस्कार पर लिखी थी। जिसमे उन्होंने जन्म साखियों के प्रमाण देकर सिद्ध कर दिया था कि हमारे दसों सिख गुरुओं का विवाह यज्ञ एवं वेदमत्रों की वैदिकरीति से ही हुआ था।

(९) वर्तमान के सिखों के द्वारा बिना यज्ञ केवल वेदमंत्रो के गुरुग्रन्थ साहब के चारों और चक्र काटकर विवाह करने की रीति को वे दसों गुरुओं की मर्यादा के विरुद्ध समझते थे।

(१०) वे कहते थे कि मिस्टर मैकालिफ नामक धूर्त अंग्रेज की कूटनीति से यह वेदविरुद्ध परम्परा सिखों में प्रचलित हुई है। मि० मैकालिफ नामक अंग्रेज की भी यह चाल थी कि भारत पर शासन करने के लिए उसे कमजोर किया जाए और कमजोर करने के लिए उसे फिरकों में बांटा जाए। उसकी चाल सफल हुई और बहुत से गुरुभक्त अज्ञान से आदि गुरुओं की वैदिक रीति को छोडकर नए मजहब में फंस गये। ईश्वर उनको सद्बुद्धि दे जिससे कि वे आदि पुरुषों के आदर्श पर चलकर तथा विदेशी मुसलमानों व अंग्रेजों की चाल से बचाकर, राष्ट्र को संगठित तथा शक्तिशाली बना सकें और सच्चे सिख (शिष्य) कहला सकें।

शहीद भगतसिंह के भाई
सरदार कुलवीरसिंह जी

कुछ ज्वलन्त प्रमाण :–

(१) श्री ग्रन्थ साहब 'वाहेगुरु' से नहीं एक ओकार से शुरू होता है।

(२) उसमे सबसे पहले किसी अन्य ग्रन्थ या वाणी के पाठ का विधान न होकर 'सुनये शास्त्र सिमरत वेद' का विधान है।

(३) उसमें सर्वप्रथम किसी जप तप या क्रिया का नहीं 'योग' युक्त तन मन 'मेघ' करने का विधान है।

(४) ग्रन्थ साहब में सनातन संध्या तथा 'होम' का विधान है।

(५)श्रीराम व श्रीकृष्ण की स्तुति का विधान है।

(६) श्री गुरु गोविन्दसिंह जी ने अपने अमर ग्रन्थ दशम ग्रन्थ के विचित्र नाटक में 'पंथ चलना' पडे पात अपने ते जले से नया पंथ चलाकर केवल प्राचीन धर्म को ही मान्यता की है।

नवसस्येष्टि महायज्ञ (होली) का महत्त्व

पं० नन्दलाल 'निर्भय' भजनोपदेशक

सकल विश्व के सब नर-नारी, वैदिक धर्म निभाओ रे।
नवसस्येष्टि महायज्ञ का, जग को महत्त्व बताओ रे।
नवसस्येष्टि महायज्ञ है, पर्व आर्यों का पावन।
आदिकाल से प्रेमपूर्वक, इसे मनाते है सज्जन।
नए अन्न से यज्ञ जगत् में, करते थे सब ऋषिमुनिगण।
यह सारा ससार सुखी था, कहीं न थे निर्बल निर्धन।
नवसस्येष्टि महायज्ञ को मिलकर सभी मनाओ रे।
नवसस्येष्टि महायज्ञ का, जग को महत्त्व बताओ रे।
चना, मटर, गेहू, सरसों की, फसलें पक जाती हैं जब।
सुन्दर फसलें देख-देख, कृषक हर्षित होते हैं सब।
अपनी उत्तम आय देखकर, कौन न खुश होते हैं कब।
आर्य पर्व होली का मित्रो, अर्थ जगत् भूला है अब।
नवसस्येष्टि यज्ञ है होली, समझो अरु समझाओ रे।
नवसस्येष्टि महायज्ञ का, जग को महत्त्व बताओ रे।
नवसस्येष्टि महापर्व के दिन, सब संध्या-हवन करो।
प्रदूषण को दूर भगाओ, शुद्ध विश्व की पवन करो।
वीर व्रतधारी बन जाओ, पापी मन का दमन करो।
वेद, शास्त्र, उपनिषद् पढो तुम, सर्व विश्व में गमन करो।
श्रीराम, श्रीकृष्ण बनो, दुनियां मे आदर पाओ रे।
नवसस्येष्टि महायज्ञ का, जग को महत्त्व बताओ रे।
जुआ खेलना, चोरी करना, पाप कर्म कहलाते हैं।
मासाहारी दुष्ट शराबी, घोर नर्क मे जाते हैं।
परोपकारी नर अरु नारी, जीवन में सुख पाते हैं।
ईश्वरभक्तो की यश गाथाएं, नर-नारी गाते हैं।
जगद्गुरु ऋषि दयानन्द की, मिलकर महिमा गाओ रे।
नवसस्येष्टि महायज्ञ का, जग को महत्त्व बताओ रे।
होली का संदेश यही है, अब तक होली सो होली।
तजो ईर्ष्या-द्वेष साथियो! बोलो सब मीठी बोली।
प्रेम-प्यार का रग बिखेरो, युवक युवतियों की टोली।
मानवता के हत्यारों के, सीनों में मारो गोली।
नन्दलाल 'निर्भय' जागो! मानव बनकर दिखलाओ रे।
नवसस्येष्टि महायज्ञ का, जग को महत्त्व बतलाओ रे।

ग्राम व डाकघर बहीन, जनपद फरीदाबाद (हरयाणा)

चतुर्थ नवसस्येष्टि (होली) भव्य महोत्सव

२८ व २९ मार्च २००२ ग्राम भड़ताना (जीन्द)

प्राचीन परम्परानुसार खेतों में लहराती पकती फसल से प्रसन्न होकर नए अन्न की आहुति यज्ञ में डालकर लोग खुशी-खुशी होली त्यौहार मनाते रहे हैं। आज इसका स्वरूप विकृत हो चुका है। ऋषि-मुनियों के वैदिक पथ पर बढ़ते गांव भड़ताना में प्रतिवर्ष की भांति होली पर्व बड़े हर्षोल्लास से मनाया जा रहा है। जो अश्लीलता, अभद्र व्यवहार से परे यज्ञ-सत्संग व भजनों के माध्यम, प्यार-प्रेम के माहौल में मनाया जाएगा।

गांव ललित खेड़ा भी इसी भावना से ओतप्रोत हो, अपने गांव में ऐसा वातावरण बना रहा है। साथ ही गांगोली गांव के आर्यवीरों ने भी विशेष अंगड़ाई ली है, अतः यहां भी होली वैदिक रीति से मनाने की योजना बनाई है।

आर्य-संसार

वैदिक आश्रम पिपराली का उत्सव सम्पन्न

वैदिक आश्रम पिपराली जिला सीकर (राजस्थान) का वार्षिकोत्सव दिनाक ८, ९ व १० फरवरी को आयोजित तीन दिवसीय समारोह मे विभिन्न कार्यक्रमो के साथ हुआ। इस कार्यक्रम में स्वामी सम्पूर्णानन्द जी सरस्वती चरखी दादरी, स्वामी ब्रह्मानन्द जी भरतपुर, डा० महावीर मुमुक्षु मुरादाबाद, आचार्य प्रो० रामनारायण जी शास्त्री चुरू, प्रो० ओमकुमार आर्य जींद, पुष्पा शास्त्री रेवाडी, प० मगलदेव भरतपुर, कै० बच्चनसिह आर्य सीकर, श्री राजेन्द्र पारीक विधायक सीकर, श्री रणमलसिह पूर्व विधायक कटराथल सीकर, आचार्य विद्यावती कन्या गुरुकुल लोआ कला बहादुरगढ (हरयाणा) इत्यादि के व्याख्यान एव भजन उपदेश हुए।

एक सौ सत्यार्थप्रकाश एवं वैदिक साहित्य वितरण

इस अवसर पर जिला सीकर, झुझनू व चुरू जिलो के विद्यालयो को पुस्तकालय हेतु नि शुल्क सत्यार्थप्रकाश व महर्षि दयानन्द के चित्र व साहित्य भेट किये गए।

व्यायाम प्रदर्शन

दिनांक ९ फरवरी को महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर के ब्रह्मचारियो का आकर्षक व्यायाम प्रदर्शन हुआ।

सामवेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति

दिनाक १० फरवरी को प्रात ११ बजे सामवेद पारायण यज्ञ आचार्य आचार्य रामनारायण शास्त्री के ब्रह्मत्व मे सम्पन्न हुआ। वेदपाठ कन्या गुरुकुल लोआकला की कन्याओ ने किया। उत्सव का सम्पूर्ण कार्यक्रम आश्रम के अध्यक्ष पूज्य श्री स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती के निर्देशन एव सान्निध्य मे सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती ने कहा कि गत वर्ष मे आश्रम की ओर से प्रान्त के अनेक ग्रामो मे वेदप्रचार किया गया। एक विशेष वेदप्रचार यात्रा की गई। लगभग ५० विद्यालयो मे भी कार्यक्रम आयोजित किये गये।

वैद्य इन्द्रदेव जी द्वारा १०० सैट बर्तन दान

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामत्री वैद्य इन्द्रदेव जी ने इस अवसर पर आश्रम को १०० थाली, सौ गिलास तथा अन्य पात्र दान दिए।

आश्रम के उत्सव मे आयोजित कार्यक्रम से राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्रो मे विशेष जागृति आई है। स्वामी सुमेधानन्द जी ने सभी विद्वानो, श्रोताओ एव दानियो का आभार व्यक्त किया।

नि:शुल्क आयुर्वेद चिकित्सा शिविर सम्पन्न

वैदिक आश्रम पिपराली जिला सीकर (राज०) मे भारत सरकार द्वारा सचालित राष्ट्रीय आयुर्वेद सस्थान जयपुर के सौजन्य से दिनाक २ फरवरी २००२ को नि शुल्क आयुर्वेद जाच एव चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर मे राष्ट्रीय आयुर्वेद सस्थान के सुयोग्य वैद्यो द्वारा ५७२ रोगियों की जाच व चिकित्सा की गई। सस्थान की ओर से लगभग एक लाख रुपये की औषधिया नि शुल्क वितरित की गई। रोगियो की जाच व चिकित्सा करने के लिए संस्थान के सुप्रसिद्ध वैद्य डा० सहदेव आर्य एम०डी०, वैद्य डा० प्रदीपकुमार 'प्रजापति', वैद्य डा० कमलेशकुमार शर्मा तथा उनके साथ अन्य सहयोगियो का दल पहुचा। शिविर की स्थानीय व्यवस्था एव प्रबन्ध वैदिक आश्रम के अध्यक्ष पूज्य श्री स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती जी ने वैदिक आश्रम की ओर से किया। —**ब्र० हरिबन्धु आर्य** (कार्यालय सचिव),
वैदिक आश्रम पिपराली, जिला सीकर (राजस्थान)

आर्य सत्संग केन्द्र का उद्घाटन

भजनपुरा। पूर्वी दिल्ली के भजनपुरा क्षेत्र मे करावलनगर के समीप आर्य सत्संग केन्द्र की स्थापना की गई है। यह केन्द्र DLF की नई विकसित होरही कालोनी अकुर विहार के ब्लाक-C मे रोड न० १० पर प्लाट न० C-2 पर निर्माणाधीन है। इस केन्द्र का उद्घाटन शनिवार २७ अप्रैल २००२ को साय ६-०० बजे स्वामी इन्द्रवेश जी (भूतपूर्व ससद् सदस्य) के द्वारा होगा।

शोक प्रस्ताव

आर्य वीरदल के कर्मठ कार्यकर्ता एव गुडगाव मण्डल के पूर्व मण्डलपति श्री किशनचद चुटानी का २१ फरवरी की रात्रि मे आकस्मिक निधन होगया। वे ६२ वर्ष के थे। श्री चुटानी गुडगाव क्षेत्र की विभिन्न धार्मिक, सामाजिक एव शिक्षण सस्थाओ से जुडे रहे। वह आर्य केन्द्रीय सभा गुडगाव के प्रधान तथा महामत्री भी रहे। उनके निधन से आर्यजगत् की महती अपूर्णनीय क्षति हुई है। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा उनके निधन पर शोक व्यक्त करती है तथा परमपिता परमात्मा से दिवगत आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना करती है। ईश्वर शोकसतप्त परिवार को सात्वना प्राप्त कराए।

—**केदारसिंह आर्य,** सभा उपमत्री

आर्यसमाज हिण्डौन सिटी (राज०) का चुनाव

प्रधान-श्री हरिप्रसाद आर्य, उपप्रधान-श्री ब्रह्मदेव आर्य, मन्त्री-श्री वेदप्रकाश आर्य, उपमत्री-श्री प्रदीपकुमार आर्य, कोषाध्यक्ष-श्री महेशचन्द्र आर्य, पुस्तकालयाध्यक्ष-श्री सुरेशकुमार आर्य, भण्डारी-श्री अनिलकुमार आर्य, परीक्षा मत्री-श्री रामबाबू आर्य।

—**हरिप्रसाद आर्य,** प्रधान आर्यसमाज हिण्डौन सिटी

व्रत नूतन प्रभात लाया

रचयिता—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती 'आयुर्वेदाचार्य'

फागुन की शिवरात्रि का पर्व आया।
प्रिय मूलशकर को पिता ने समझाया।
जो श्रद्धा से शिवजी का पूजन करेगा।
वही भक्त जीवन मे खुशिया भरेगा।
रात भर जागकर शिवव्रत को निभाना।
प्रिय मूला तुम दर्श शकर के पाना।
समझले तुझे बात समझा रहा हू।
व्रत निष्फल न जाये यह बतला रहा हू।
कहा मूलशकर ने व्रत मैं करूगा।
करू जागरण व्रत पूर्ण करूगा।
रेशम की धोती पहिन रुद्राक्षी माला।
बडे हर्ष से शिवमन्दिर को चाला।
जला करके दीपक चढावा चढाया।
किया कीर्तन नाम भोला का गया।
न पिडी फटी न शिवजी ही आया।
चढावा सभी चूहो ने ही उडाया।
खुले ज्ञान-चक्षु वृथा जड की पूजा।
यह शकर है झूठा प्रभु और दूजा।
सच्चे शकर की खोज मे उठ धाया।
यह शिव व्रत नूतन प्रभात लाया।

१५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ (फोन ३३६०१५०)

योग की नींव को मजबूत बनाओ

आज बडे-बडे नगरो मे योग के केन्द्र खुले हुये हैं। वहा प्रात साय कुछ आसन प्राणायाम की क्रियाए कर-कराकर योग अभ्यास की प्रेरणा देते हैं। श्रद्धालु बहिन-भाई शरीर को स्वस्थ रखने के लिये योगकेन्द्रो मे आते जाते रहते हैं। योग अभ्यास करनेवाले व्यक्तियो से पूछा गया कि अब तक आपने क्या सीखा ? आपको कुछ लाभ हुआ है ?

उनका उत्तर है कि अब हमे आलस्य नहीं आता और पाचन-क्रिया ठीक रहती है। योग की शिक्षा के अनुसार हमने अपने खानपान मे भी सुधार किया है। हमारी मनोवृत्ति मे भी परिवर्तन हुआ है। मैंने पूछा, क्या आपको यम-नियमो का ज्ञान है ? उनमे से एक ने कहा, यम-नियमो को सुना तो है परन्तु हमारी समझ मे नहीं आते। मैंने कहा, **यम-नियम** योग अभ्यास की नींव हैं। जब तक नींव को दृढ नहीं बनाओगे तब तक भवन खडा करना व्यर्थ है। योगी को यमनियमो का पालन करना आवश्यक है। आसन प्राणायाम शरीररूपी भवन को सुन्दर उज्ज्वल बनाते हैं परन्तु उसका आधार यम और नियम है।

प्राय यम-नियमो की ओर कम ध्यान दिया जाता है। यदि सचमुच योग का भरपूर आनन्द लेना चाहते हो तो यम-नियमो को समझकर आचरण करना आरम्भ कर दो। जीवन मे खुशिया आने लगेगी। आपकी जानकारी के लिये यम-नियमो का सक्षिप्त विवरण नीचे लिख रहे हैं–

यम पाच प्रकार के हैं जिनका सामाजिक दृष्टिकोण से पालन करना आवश्यक है। पहला **अहिसा** है जो हिसा का विपरीतार्थक शब्द है जिसका अर्थ है–मन, वचन, कर्म से किसी प्राणी को दुख या कष्ट न देना। मन मे किसी के प्रति ईर्ष्या-द्वेष मत रखो। वचनो से किसी को चुभनेवाले कठोर शब्द मत कहो। कर्म करते समय हाथ-पांव से प्राणी को मत सताओ। अब यहा एक प्रश्न उठता है कि शत्रु के साथ क्या व्यवहार करे ? उत्तर है कि जो प्राणी हमारा विरोधी या शत्रु है और वह जानबूझकर हमे परेशान करता है तो दुष्ट के साथ यथायोग्य व्यवहार करना चाहिये।

दूसरा यम **सत्य** है अर्थात् झूठ को छोडकर सत्य बोलना चाहिए। सम्भव है सच बोलने मे कुछ कठिनाई आये परन्तु एक बार सच बताकर बार-बार झूठ बोलने के कष्ट से बच जाओगे। **'सच कहना सुखी रहना'** एक कहावत है।

तीसरा **अस्तेय** अर्थात् चोरी न करना। किसी की चीज को बिना आज्ञा (इजाजत) हाथ लगाना भी चोरी है। चोरी करने की अपेक्षा माग लेना उत्तम है परन्तु चुराना अपराध है।

चौथा **ब्रह्मचर्य** अर्थात् वीर्य की रक्षा करना। अपनी और समाज की सेवा करने के लिये शरीर मे शक्ति होनी चाहिये। शरीर को शक्तिशाली बनाने के लिये मूल्यवान् धातु वीर्य की रक्षा करना बहुत आवश्यक है।

पाचवा यम **अपरिग्रह** है। यह दुनिया मुसाफिरखाना है। हम सब यात्री हैं। यात्रा मे जितना सामान कम होगा उतना ही आराम होगा। अत आवश्यकता से अधिक जमा मत करो। अपनी भौतिक इच्छाओ और आवश्यकताओ को सीमित रखोगे तो जीवन मे चिन्तामुक्त होकर आनन्द का अनुभव करोगे।

नियम ये भी पाच प्रकार के हैं जो व्यक्तिगत जीवन के लिये उपयोगी होने के कारण अनिवार्य हैं–

पहला नियम है **शौच** अर्थात् सब प्रकार के मलो को दूर करना, शरीर के अन्दर और बाहर जो मल जमा हो जाते हैं, उन्हे त्यागना आवश्यक है अन्यथा रोग उत्पन्न करेगे। जैसे मल, मूत्र आदि को त्यागना, स्नान करना, वस्त्रो को साफ करते रहना आदि ऐसे ही मन की मलीनता को भी सत्य आचरण से दूर करते रहो। यह स्वस्थ रहने का सीधा मार्ग है।

दूसरा नियम **सन्तोष** है। सच्चाई और ईमानदारी से परिश्रम करने पर जो कुछ प्राप्त होता है उसमे ही निर्वाह करो। एक कहावत है–**'देख पराई चुपड़ी मत ललचाये जी, रूखा सूखा खायके ठण्डा पानी पी'**। सन्तोष का फल मीठा होता है और सन्तोषी सदा सुखी रहता है। जब सन्तोष का धन पास होगा तो अन्य प्रकार के धन धूल के समान लगेंगे।

तीसरा नियम है **तप** अर्थात् सुख-दुख, सर्दी-गर्मी, भूख-प्यास आदि द्वन्द्वो को सहन करने का नाम तप है। कुछ ज्ञान प्राप्त करने के लिये तप त्याग करना पडता है। जब कठिनाइयो को सहन करने का अभ्यास हो जाता है तो बडी से बडी विपत्ति भी विचलित नहीं कर सकती। सच पूछो तो इन्द्रियो को वश में रखने का नाम ही तप है।

चौथा नियम है **स्वाध्याय** मोटे-मोटे ग्रन्थो को पढना ही स्वाध्याय नहीं है अपितु पढने के बाद आत्मनिरीक्षण करने की क्रिया को स्वाध्याय कहते हैं। बुराइयों से बचते रहने के लिये प्रतिदिन स्वाध्याय करना आवश्यक है।

पांचवां नियम **ईश्वरप्रणिधान** है। क्या आपने कभी सोचा है कि इस सृष्टि को बनानेवाला और चलानेवाला कौन है ? वह कैसा है ? कहा है ? उसने प्राणिमात्र की सुविधा के लिए क्या प्रबन्ध किया है ? इस तथ्य को जानकर उसके साथ जुडना, उसके असख्य उपकारो का धन्यवाद करना और उसकी आज्ञापालन करना ईश्वरप्रणिधान है।

–देवराज आर्य मित्र,
आर्यसमाज कृष्णनगर, दिल्ली-५१

खोल आंखें..........

–नाज सोनीपती

खोल आंखे होश कर, तू क्या अभी नादान है ?
आदमी बन आदमी यह वेद का फरमान है।
खाक में जब मिल चुकी है आबरू[१] इसान की,
आजकल शैतान की दुनिया मे ऊची शान है।
आदमी ने कर दिया है आदमियत[२] का लहू,
आदमी काहे को है, अब आदमी हैवान[३] है।
आदमी बनने मे मेहनत की जरूरत है बहुत,
देवता बनना कोई मुश्किल नहीं आसान है।
बेकसो[४]-मज्लूम पर, रख इनायत[५] की नजर,
आ पडा है वक्त अब तू वक्त का सुलतान[६] है।
सिर कटा देगा वह कल क्योंकर धर्म की राह पर,
आज का इन्सान भूला धर्म की पहचान है।
जान-ओ-दिल कुर्बान कर दूंगा वतन के वास्ते,
'नाज़' अपना धर्म यह है और यह ईमान है।

१ इज्जत, २ मानवता, ३ पशु, ४ गरीब, ५ कृपा, ६ राजा।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ०१२६२–७६८७४, ७७८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ०१२६२–७७७२२) से प्रकाशित।
पत्र में प्रकाशित लेख सामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री का सहमत होना आवश्यक नहीं। पत्र के प्रत्येक प्रकार के विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक होगा।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३ सृष्टिसंवत् १, ९६, ०८, ५३, १०२
पंजीकरणसंख्या टैक/85-2/2000 ☎ ०१२६२-७७७२२

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

[illegible] रोहतक

प्रधानसम्पादक : यशपाल आचार्य, सभामन्त्री सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री

[illegible] एक प्रति १.७०

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्त्वावधान में

हरयाणा प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन

६-७ अप्रैल, २००२ शनिवार, रविवार

स्थान : सभा कार्यालय, पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक

इस सम्मेलन में आर्यजगत् के निम्नलिखित संन्यासी, विद्वान्, नेतागण पधार रहे हैं—**स्वामी सदानन्द** (दयानन्दमठ दीनानगर), **स्वामी यज्ञमुनि** (मुजफ्फरनगर), **प्रो० शेरसिंह** (पूर्व रक्षा राज्यमन्त्री, भारत सरकार), **श्री धर्मबन्धु** (गुजरात), **स्वामी इन्द्रवेश जी** (पूर्व सासद), **स्वामी सुमेधानन्द जी** (वैदिक आश्रम पिपराली, राज०), **स्वामी कर्मपाल जी** (अध्यक्ष सर्वखाप पचायत), **आचार्य बलदेव जी** (गुरुकुल कालवा, जीन्द), **श्री साहबसिंह वर्मा** (सासद), **श्री रामचन्द्र बैंदा** (लोकसभा सदस्य), **डॉ० सुलतानसिंह** (पूर्व राज्यपाल), **डॉ० रामप्रकाश** (पूर्व मन्त्री हरयाणा सरकार), **श्री हरबंसलाल शर्मा** (प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब), **श्री हरवंशलाल कपूर, चौ० राममेहर हुड्डा** एडवोकेट, **आचार्य देवव्रत** (कुरुक्षेत्र), **प्रो० राजेन्द्र विद्यालंकार** (कुरुक्षेत्र), **प्रो० सत्यवीर विद्यालंकार** (चण्डीगढ), **डॉ० धर्मवीर** (मंत्री परोपकारिणी सभा अजमेर), **डॉ० सुरेन्द्रकुमार** (रीडर महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक), **श्रीमती प्रभातशोभा** (दिल्ली), **श्रीमती शकुन्तला** (पूर्व प्राचार्य कन्या गुरुकुल खानपुर कला), **श्री राजसिंह मांदल** (प्रधान जाट शिक्षण सस्था रोहतक), **श्री भरतलाल शास्त्री** (हासी), **आचार्य हरिदेव** (गुरुकुल गौतमनगर, दिल्ली), **भगत मंगतूराम, डॉ० विमल महता, चौ० सूबेसिंह** (पूर्व सभा मन्त्री), **श्री महेन्द्रसिंह शास्त्री** (गुडगांव), **जयपाल आर्य** (यमुनानगर), **आचार्य विजयपाल** (गुरुकल झज्जर), **श्री देशराज** (मन्त्री आर्य केन्द्रीय सभा रोहतक)।

आर्यजगत् के दानवीर—चौ० मित्रसेन सिन्धु, चौ० प्रियव्रत रोहतक, चौ० हरिसिंह सैनी हिसार, चौ० समुन्द्रसिंह लाठर, ला० लक्ष्मणदास **आर्य बल्लबगढ़।**

प्रसिद्ध भजनोपदेशक—श्री सहदेव बेधडक, श्री तेजवीर आर्य, पं० चिरंजीलाल आर्य, बहन कलावती आचार्या, बहन पुष्पा शास्त्री, बहन सुमित्रा शास्त्री आदि।

निवेदक :

सभा प्रधान :	सभा मन्त्री :
स्वामी ओमानन्द सरस्वती	**आचार्य यशपाल**

आर्य महासम्मेलन के प्रबन्ध हेतु समितियां गठित

१७-३-२००२ को रोहतक शहर की सभी आर्यसमाजो के अधिकारी एव प्रमुख कार्यकर्ताओ की मीटिग महासम्मेलन के प्रबन्ध हेतु सम्पन्न हुई, जिसमे निम्न प्रकार से व्यवस्था को सुचारू रूप से सम्पन्न कराने के लिए समितियो का गठन किया गया।

आवास समिति

संयोजक—डॉ० जितेन्द्र (आर्यसमाज सैनीपुरा), रोहतक

सहसंयोजक—श्री सुखवीर शास्त्री (आर्यसमाज हनुमान कालोनी), रोहतक
श्री महिपाल (आर्यसमाज सैनीपुरा), रोहतक

भोजन समिति—सभी अतिथियों को भोजन वितरण कार्य श्री वेदप्रकाश जी आर्य आर्य वीरदल हरयाणा के सहयोग से करेगे।

भोजन निर्माण का कार्य आर्यसमाज गोहाना के कार्यकर्ताओ के सहयोग से श्री सुरेन्द्रसिह जी शास्त्री उपमन्त्री सभा के निर्देशन मे होगा।

सामान लाने की जिम्मेदारी—श्री ओमप्रकाश सभागणक।

शोभायात्रा में जल एवं प्रसाद व्यवस्था—श्री गुरुदत्त आर्य, श्री मामनसिह आर्य, श्री महीपालसिह रोहतक।

पानी समिति

संयोजक—श्री गुरुदत्त आर्य, श्री नन्दलाल आर्य, श्री यज्ञदत्त आर्य, श्री मदनलाल आर्य, रोहतक।

पत्रकार व्यवस्था—श्री केदारसिह आर्य, सभा-उपमन्त्री।

शोभायात्रा मार्ग—सभा कार्यालय दयानन्दमठ रोहतक से गोहाना अड्डा, किला रोड, भिवानी स्टैण्ड, रेलवे रोड, झज्जर रोड, सिविल रोड होते हुए दयानन्दमठ में ही सम्पन्न होगी।

श्री मेघराज आर्य, श्री मुलखराज आर्य, श्री उमेश आर्य, रोहतक।

सामान सुरक्षा व्यवस्था—श्री जयवीर आर्य दयालपुर, श्री प्रदीपकुमार कार्यालय कर्मचारी, मा० महासिह टिटौली रोहतक, मा० रामलाल मोरवाला भिवानी।

पाण्डाल समिति—यशवीर आर्य (बोहर), वैद्य चन्द्रभान आर्य (मोरवाला), सत्यवान आर्य (कार्यालय लिपिक), शेरसिह (कार्यालयाध्यक्ष), बलराज आर्य (हनुमान कालोनी), रोहतक।

शोभायात्रा समिति

संयोजक—श्री वेदप्रकाश आर्य (आर्यवीर दल हरयाणा के सहयोग से)

सहायक—आचार्य विजयपाल (गुरुकुल झज्जर)
आचार्य महेश (गुरुकुल मटिण्डू)

शोभायात्रा में स्टेज सचालन

श्री भरतलाल शास्त्री (हासी), श्री सुखदेव शास्त्री (आसन), श्री विश्वामित्र आर्य, श्री देशराज आर्य, श्री अजीतकुमार आर्य, फरीदाबाद।

लाऊड स्पीकर व्यवस्था—श्री जगदीश मित्र आर्य, रोहतक।

—**आचार्य यशपाल**, सभामन्त्री

वैदिक-स्वाध्याय

मन्यु का पात्र !

समस्य मन्यवे विशो विश्वा नमन्त कृष्टय:।
समुद्रायेव सिन्धव:।।

(ऋ० ८६४।। साम० पू० २१५३।। अ० २०१०७१)

शब्दार्थ—**(अस्य)** इस परमेश्वर की **(मन्यवे)** मन्यु, 'क्रोध', दीप्ति के सामने **(विश्वा विश:)** सब प्रजाये **(कृष्टय:)** सब मनुष्य **(सं नमन्त)** ऐसे झुक जाते हैं **(समुद्राय इव सिन्धव.)** जैसे कि नदिया समुद्र में समा जाने के लिये उधर स्वय बही जाती हैं।

विनय—इन्द्र परमेश्वर जहा हमारे पिता हैं, उत्पादक और पालक हैं, वहा वे हमारे कल्याण के लिये रुद्र भी हैं, सहारकर्ता भी हैं। जब जगत् में किसी स्थान पर सहार की आवश्यकता आ जाती है तो प्रभु अपने मन्यु को प्रकट करते हैं, मानो अपना तीसरा नेत्र खोल देते हैं, अपने तीसरे रूप को प्रकाशित करते हैं। उस कल्याणकारी शिव के मन्यु का तेज जब देदीप्यमान होने लगता है तो सब नाश होने योग्य ससार पतगे की तरह आ आकर उसमे भस्म होने लगता है, मन्यु का पात्र कोई भी व्यक्ति बच नहीं सकता, सब बहे चले आते हैं। देखो, समय-समय पर बडे-बडे सग्राम, दुष्काल या महामारी आदि रूपो मे प्रभु का वह महाबलवाला मन्यु जगत् मे प्रकट होता रहता है। सब मनुष्य अपने विनाश की तरफ खिचे चले जा रहे होते हैं पर उन्हे यह मालूम नहीं होता। जैसे कि सब नदिया समुद्र की तरफ बही चली जाती रही हैं कि उसमे जाकर समाप्त हो जायेगी, लीन हो जायेगी, उसी तरह प्रभु का मन्यु काल समुद्र बनकर उन सब प्राणियो को अपनी तरफ खींचता जारहा है जिनका कि समय आ गया है। मनुष्यो के किये हुए पाप उन्हे विनाश की ओर वेग से खींचे ले जारहे हैं। जिन्होने इस ससार को जरा भी तह के अदर घुसकर देखा है वे देखते हैं कि किस-किस विचित्र ढग से मनुष्य अपने मृत्यु-स्थल की तरफ खिचे चले जारहे हैं। धन्य होते हैं अर्जुन जैसे दिव्यदृष्टिप्राप्त पुरुष जिन्हे कि काल का यह आकर्षण दिखाई दे जाता है और जो देखते हैं कि **'यथा नदीना बहवोम्बुवेगा समुद्रमेवाभिमुख द्रवन्ति। तथा तवामी नरलोकवीरा विशन्ति वक्त्राण्यभिज्वलन्ति'** पर हम लोग तो मौत के मुह मे घुसे जारहे होते हैं पर कुछ पता नहीं होता। हममे से अपनी शक्तियो का बडा गर्व करनेवाले बडे-बडे प्रख्यात लोग जिस समय ससार को जितने अभिमान के साथ अपना पराक्रम दिखा रहे होते हैं, उसी समय वे उतने ही वेग से मृत्यु की तरफ दौडे जारहे होते हैं, पर उन्हे कुछ पता नही होता। जबकि उनका सब ठाठ एक क्षण मे गिर पडता है। प्यारो! तो तुम अभी से क्यो नहीं देखते कि उसके मन्यु के सामने सब ससार झुका पडा है—पापी होकर कोई भी मनुष्य उसके सम्मुख खडा नही रह सकता है—जिससे तुम अभी से उसके मन्यु का पात्र न बनने की समझ पा सको।

(वैदिक विनय से)

ओ३म्

हरयाणा के आर्यसमाजों के नाम अपील

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्त्वावधान मे ६-७ अप्रैल २००२ को रोहतक मे विशाल हरयाणा प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन होगा। इस सम्मेलन की सफलता सभी आर्यसमाजो के निष्ठावान् कार्यकर्त्ताओ और अधिकारियो पर निर्भर है। अत हमारा आर्यसमाज के सभी विद्वानो, उपदेशको, लेखको और आर्यसमाज एव शिक्षण-सस्थाओ के अधिकारियो, कार्यकर्त्ताओ से निवेदन है कि आप तन मन धन से आर्य महासम्मेलन को सफल बनाने मे सभा के अधिकारियो का पूरा सहयोग करे इस सम्मेलन मे भारी उत्साह और सख्या मे उपस्थित होकर आर्यसमाज की सगठनशक्ति का परिचय देवे।

आचार्य यशपाल — मन्त्री
स्वामी ओमानन्द सरस्वती — प्रधान

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक

हरयाणा प्रांतीय आर्यमहासम्मेलन

६-७ अप्रैल, २००२ को

आर्यो ! रोहतक चलो।

हरयाणा के सभी आर्यसमाजों एवं आर्यशिक्षणसंस्थाओ व आर्य कार्यकर्त्ताओं से विशेष नम्र-निवेदन है कि आर्यमहासम्मेलन ६-७ अप्रैल २००२ को रोहतक की ऐतिहासिक पवित्र धरती पर होने जारहा है, इसको सफल बनाने के लिए सबके सहयोग की अत्यन्त आवश्यकता है, आप अधिक से अधिक अपना सहयोग प्रदान करें। प्रत्येक आर्यसमाज के अधिकारी, अपना आर्थिक, सहयोग सभा कार्यालय के पते पर भेजने का कष्ट करें तथा सम्मेलन मे पहुंचने के लिये, सभी आर्यसमाज अपने सदस्यों को साथ लेकर कम से कम एक वाहन के साथ ट्रैक्टर, बस आदि से पहुंचें। सभी केन्द्रीय सभाये, सभी आर्यवीरदल एव अन्य सगठन पूरी तैयारी के साथ मोटो व ओम् के ध्वज लेकर सम्मेलन मे पधारे, सार्वदेशिक आर्यवीरदल के प्रधान देवव्रत जी नेतृत्व मे हरयाणा आर्यवीरदल के नौजवान शोभायात्रा तथा आर्यमहासम्मेलन के प्रबन्ध में सहयोग प्रदान करेंगे, गुरुकुलों के ब्रह्मचारियों तथा कन्या गुरुकुलो की ब्रह्मचारिणियों के कार्यक्रम भी आकर्षण का केन्द्र होगे। सभी आर्यसमाजो से कितनी सख्या में अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता पधारेंगे इसकी सूचना भी पूर्व ही सभा कार्यालय को पत्र द्वारा दीजाए जिससे सभी के भोजन एव आवास की व्यवस्था सुचारुरूप से की जासके। सम्मेलन मे पधारनेवाले सभी आर्यमहानुभावो का स्वागत है। सम्मेलन मे भारी सख्या मे पहुंचकर आर्यसमाज की सगठनशक्ति का परिचय देवे।

सभी आर्य शिक्षण संस्थाओं से अनुरोध

६-७ अप्रैल २००२ को रोहतक में होनेवाले हरयाणा प्रान्तीय आर्यमहासम्मेलन के अवसर पर एक स्मारिका का प्रकाशन किया जायेगा, इसमे आप अपनी शिक्षण सस्था का परिचय तुरन्त प्रकाशनार्थ भेजने का कष्ट करे।

प्रान्तीय आर्यमहासम्मेलन ६-७ अप्रैल मे निम्न कार्यक्रमो का आयोजन रहेगा—

१ यजुर्वेद पारायण महायज्ञ की पूर्णाहुति ७ अप्रैल को।

२ विशाल शोभायात्रा ६ अप्रैल को ११ बजे से।

३ आर्य युवा सम्मेलन, आर्य महिला सम्मेलन, आर्य राजनीति सम्मेलन, आर्य सस्कृति एवं गोरक्षा सम्मेलन।

—सभामन्त्री

सम्पादकीय.....

आर्यो जागो, उठो, सगठित हो जाओ, और मिलकर 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का सन्देश फैलाओ । आज हम पुनः इसका चिन्तन करें कि–

'हम कौन थे, क्या हो गये...और क्या होंगे अभी।
आओ विचारें आज मिलकर ये समस्यायें सभी।।

यह आर्यवर्त देश रहा है। इस देश के निवासी श्रेष्ठ आर्यनरनारी रहे हैं, पृथ्वी के सभी मानव यहां आकर अपने उच्च आदर्शों की शिक्षा ग्रहण करने के लिए ऋषि-मुनियों के चरणों में बैठकर विद्याग्रहण करते थे। किन्तु जब यहां के वीरों में ईर्ष्या, द्वेष, स्वार्थ, अभिमान, मादकता, विलासिता, अविद्या ने जन्म लिया तो, यह देश पतन की दिशा में चला गया, भाई-भाई का दुश्मन हो गया। मानवता, दया, धर्म का लोप होने लगा, जो जीवन परोपकार के लिए था, वह स्वार्थ पोषण में ही लग गया।

येन-केन-प्रकारेण अर्थोपार्जन के लिए ही सीमित होकर रह गया, इन हालातो में मानवता के दुश्मन विदेशी आक्रान्ताओं ने इस देश को परोधीनता की बेडियों में जकड दिया, जिस समय अन्याय और अत्याचार अपनी चरम सीमा पर था। मानवता कराह रही थी। इस देश के इतिहास को दूषित किया जा रहा था, ऐसे विकट काल मे देव दयानन्द ने अधेरे मे डूबे लोगो को एक रोशनी दी, वेद की ज्योति जगाई और आजीवन विधर्मियो से मानवता के दुश्मनो से नानाविध मत सम्प्रदायो से लडते रहे। देव दयानन्द को किसी भी कार्यक्षेत्र से उठाकर देखे, वहीं से देशभक्ति का उद्घोषक मानवता का पुजारी, विद्या का प्रचारक, सत्य का प्रकाशक, दया धर्म न्याय अहिंसा का पक्षधर, योगियों का योगी, परम ईश्वरभक्त दिखाई देता है और सोचता है कि ईश्वर के मानव पुत्रों को वेद का अनुयायी बना दू। उनके कष्टो को उनके दर्द को मैं हर लूं और प्राणिमात्र को सुख-शान्ति प्रदान कर उन्हें सन्मार्ग का पथिक बना दू। इन्हीं विचारों की गंगा को आगे निरन्तर प्रवाहित करने के लिए उन्होंने आर्यसमाज की स्थापना की और सभी को पालन करने के लिए आर्यसमाज के दस नियमों का सृजन किया। आर्यसमाज के काम को आगे बढ़ाने के लिए–स्वामी श्रद्धानन्द जी, प० लेखराम जी, प० गुरुदत्त विद्यार्थी, लाला लाजपतराय, स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी, स्वामी आत्मानन्द जी, भक्त फूलसिह जी, पं० जगदेवसिह सिद्धान्ती आदि साधु-सन्यासियो, विद्वानों, उपदेशको तथा क्रान्तिकारियों ने अपने जीवन बलिदान कर दिये, लाठियां खाईं किन्तु आर्यसमाज के झण्डे को ऊंचा रखा। देश में आर्यसमाज का प्रचार बढने लगा। इस देश का युवा वर्ग, बुजुर्ग, बालक और महिलाए आर्य सगठन के साथ जुडने लगे, देश और समाज के ऊपर आने वाली हर विपत्ति का, हर अन्याय और अत्याचार का आर्यसमाज ने आगे बढकर विरोध किया और आर्यसमाज की विचारधारा को पूरे विश्व मे फैलाने के लिए आजीवन सघर्ष किया। कई सत्याग्रह किये, आन्दोलन चलाये, सरकार की दमनकारी नीतियो के खिलाफ जेलो में यातनाएं सही और इस देश को आजाद कराने मे आर्यसमाज ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

आज पुन. देश पर आपत्ति के बादल मडरा रहे हैं, देश की आजादी पूरी तरह खतरे मे है, एक तरफ विदेशी कम्पनियां इस देश की अर्थव्यवस्था को नष्ट करने में लगी हुई हैं, वहीं अधविश्वास, पाखण्ड, मूर्तिपूजा, नाना सम्प्रदायो, अनेक गुरुओं की बाढ में लोग बहते हुए अपने सत्य मार्ग से भटक रहे हैं, मुस्लिम और ईसाई मिशनरिया बहुत तेजी से धर्म परिवर्तन मे जुटी हुई हैं और हम आर्यसमाज के अधिकारी एवं कार्यकर्ता अपने तुच्छ स्वार्थो के लिए लड रहे हैं तथा अनेक गुटों में बंटे हुए हैं। जहां आर्यसमाज की संस्थाओ से त्यागी, तपस्वी, विद्वान्, वेदवेत्ता, उपदेशक, लेखक, देशभक्त, समाज सुधारक तैयार होने चाहिए थे, उसे हमने छोड दिया। आर्य शिक्षण संस्थाओ को आमदनी का साधन बना लिया।

ऊपर का आवरण (दिखावा) हमारा बहुत अच्छा है और भवन भी हमने खूब बनायें हैं। महर्षि की पाठविधि हमने छोड दी, आज आर्ष पाठविधि का एकमात्र स्थान है गुरुकुल झज्जर किन्तु उपदेशक और वैदिक विद्वान् कहीं से तैयार नहीं हो रहे। प्रारम्भ में प्राचीन सभी गुरुकुलों से अच्छे विद्वान् स्नातक देश को मिले। हम असली उद्देश्य से भटक रहे हैं, अनुशासन में रहना नहीं चाहते, आपस के विवादों में ही समय बीत रहा है जो जहां जिस पद पर, जिस संस्था में बैठ गया उसे छोड़ना नहीं चाहता, और नाही हम आने वाली पीढ़ी को जिम्मेदारी सौंपकर प्रशिक्षित कर रहे हैं, जब भी जिस समय भी हम कोई जिम्मेदारी लेते हैं, उसके उत्तराधिकारी को अर्थात् दूसरी पक्ति के कार्यकर्ताओ को भी साथ में प्रशिक्षित कर तैयार करना चाहिए, त्याग के आदर्श को सामने रखकर हमें कार्य करना चाहिए। इससे किसी प्रकार की पीडा नहीं होगी। ईर्ष्या, द्वेष, स्वार्थ को जितना कम किया जाए उतना ही जीवन मे लाभदायक है। हमारी कमी को दर्शानेवाले, उत्तम सुझाव देनेवालो को हम अपना सहयोगी समझे। सच्ची भावना से उत्तम विचारों से पहले अपना चिन्तन करे 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' को अपने जीवन में उतारे। हमे परनिन्दक नहीं पर गुणग्राही होना चाहिए। सगठन किसी एक आदमी से नहीं चलता अपितु सबके सहयोग की आवश्यकता होती है, सबके सुझावों का विचारों का पूरा सम्मान करना चाहिए, और हम अब नहीं संभले तो कभी नहीं।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा प्रान्त मे स्थित सभी आर्यसमाजो का तथा सभी आर्य शिक्षण संस्थाओ का गुरुकुलो का तथा आर्य वीरदल, आर्य वीरागना दल व अन्य आर्य सगठनो का प्रतिनिधित्व करती है। हमारे प्रदेश मे यह सर्वोच्च सस्था है। सभा के निर्देशों एव सुझावों को हम सभी ने सम्मानपूर्वक कर्त्तव्य मानकर पालन करना चाहिये और जिन संस्थाओ और समाजो के सभा से सम्बन्ध स्थापित नहीं किया है उन्हे इस दिशा मे आगे कदम बढाना चाहिये, जिन आर्यसमाजो, सस्थाओ तथा सगठनो का पहले से ही सम्बन्ध चला आ रहा है, उन्हे दृढता से सभा के अनुशासन मे रहना चाहिये। स्थानीय प्रबन्ध व्यवस्था को आप अधिक महत्त्व देगे तो आपका सगठन कमजोर होगा। हम आपसी विवादो मे उलझकर रह जायेंगे, जिसका समाज पर बुरा असर होगा। इसलिए मेरी सभी स्थानीय इकाइयों के अधिकारियों एव प्रबन्धकों से निवेदन है कि वे अपनी समाजो, सस्थाओ तथा सगठनो की हर प्रमुख गतिविधियो से सभा को अवगत कराते रहे, और सभा के आदेशो का निर्णयो का ईमानदारी से पालन करे। आपके सुझावो एव विचारों पर पूरा ध्यान रखा जायेगा, सगठन की मजबूती हम सबकी मजबूती है। आओ हम सब मिलकर "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" के लक्ष्य को पूरा करने के लिये दृढता से आगे बढे।

–यशपाल आचार्य, सभामन्त्री

ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करना कठिन कार्य : आचार्य विजयपाल

झज्जर। गुरुकुलो के प्रति विद्यार्थियो का रुझान बढने लगा है क्योकि बाहर का वातावरण इतना दूषित हो चुका है कि विद्यार्थी पतन की तरफ लगातार अग्रसर हैं और यही कारण है कि अब हमारे गुरुकुल में भी जहा सौ विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण कर रहे थे, उनकी तादाद बढकर अब चार सौ होगई है। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाण के उपमन्त्री एव स्थानीय गुरुकुल महाविद्यालय के प्राचार्य आचार्य विजयपाल जी योगार्थी ने जागरण से बातचीत मे कही।

आचार्य जी ने कहा कि जवानी के दिनो मे उन्हे शक्तिप्रदर्शन का बड़ा शोक था और प्राणायाम के जरिये वह दो जीपो को हाथों से रोक देते थे और यह प्रदर्शन वह लगभग समस्त भारत मे कर चुके हैं। उन्होने बताया कि दो गाडियो का हाथो से रोकना, गर्दन से सरिये मोडना, कमर से मोटी बैल तोडना, कांच को हाथों से पीसना आदि शक्ति प्रदर्शन वह करते रहे हैं। श्री आचार्य का कहना है कि ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करना एक कठिन कार्य है परन्तु अगर व्यक्ति वातावरण देखकर और अपने लक्ष्य को सामने रखकर चलता है तो वह कुछ भी कर गुजर सकता है।

उन्होंने बताया कि ब्रह्मचारी रहने के लिए प्राणायाम और अपने मन पर काबू अति आवश्यक है, इसलिए ही उन्होंने इस गुरुकुल मे आने के बाद सफेद धोती और भगवा चादर के अलावा कुछ भी नहीं पहना क्योंकि अगर मन पर काबू नहीं रखा जायेगा तो ब्रह्मचारी व्रत का पालन हो ही नहीं सकता।

आचार्य जी का मानना है कि विद्यार्थी के नकल पर आश्रित रहने का कारण उसके अभिभावक, अध्यापक एव स्वय विद्यार्थी तीनों ही दोषी हैं, क्योंकि सरकारी स्कूलों में अध्यापक अपने कर्त्तव्य का पालन बखूबी नहीं करते और विद्यार्थी भी परिश्रम करने से कतराने लगे हैं।

एक सवाल के जवाब में आचार्य विजयपाल जी योगार्थी ने कहा कि हिन्दी आन्दोलन के प्रति सरकार ही जागरूक नहीं है क्योकि सरकारी कार्यालयों मे सभी काम हिन्दी की बजाए अंग्रेजी में हो रहे हैं और जब तक ऐसा होता रहेगा हिन्दी आन्दोलन का कुछ भी नहीं हो सकता। **(दैनिक जागरण से साभार)**

हरयाणा प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन के प्रति लोगों में भारी उत्साह

सिरसा के आर्यसमाजों द्वारा आर्य महासम्मेलन को पूरा सहयोग देने का निर्णय

दिनाक ६ मार्च २००२ को सभा के अधिकारी आर्यसमाज मन्दिर सिरसा की बैठक मे सम्मिलित हुए। आर्यसमाज के अधिकारियो तथा कार्यकर्ताओ ने उत्साहपूर्वक स्वागत किया। सभामन्त्री ने सम्बोधित करते हुए बताया कि हरयाणा मे आर्यसमाज के सघटन को सुदृढ तथा प्रभावशाली बनाने हेतु एकजुट होकर कार्य करे तथा ६, ७ अप्रैल को प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन रोहतक को सफल करने के लिए भारी सख्या में रोहतक पहुचकर तन, मन तथा धन से योगदान करे। जिला सिरसा तथा फतेहाबाद में सभा के प्रभावशाली प्रचारक भेजकर वेदप्रचार का प्रसार किया जायेगा। आर्यसमाज की ओर से सभामन्त्री को विश्वास दिलाया कि यहा के कार्यकर्ता पूरी शक्ति से सभा को तन, मन तथा धन से सहयोग देगे।

आर्यसमाज कोर्ट रोड तथा आर्य वरिष्ठ उच्च विद्यालय सिरसा के अधिकारियो ने भी इसी प्रकार बढ-चढकर पूरा सहयोग दिया जायेगा और विशेष बसो द्वारा भारी सख्या में सम्मेलन मे भाग लेगे तथा आर्थिक सहयोग भी दिया जायेगा।

कन्या गुरुकुल खानपुर कलां तथा गुरुकुल भैंसवाल के छात्र तथा छात्राएं शोभायात्रा में भारी संख्या में सम्मिलित होंगे

दिनाक १५ मार्च २००२ को सभामन्त्री आचार्य यशपाल वरिष्ठ उपमन्त्री ब्र० महेन्द्रसिह शास्त्री, सभा उपमन्त्री, श्री केदारसिह आर्य, श्री सुरेन्द्र सिह शास्त्री तथा अन्तरग सदस्य श्री सुखवीर शास्त्री आदि गुरुकुलो के इन्चार्ज श्री जोगेन्द्रसिह मलिक एडवोकेट से मिले तथा उनसे सभा के सम्मेलन ६, ७ अप्रैल मे सहयोग करने का निवेदन किया। उन्होने बडी प्रसन्नता के साथ आश्वासन दिया कि दोनो गुरुकुलों के शिक्षक तथा छात्र/छात्राए विशेषकर बसो में ६ अप्रैल की शोभायात्रा मे भाग लेंगे।

इसी प्रकार आर्यसमाज गोहाना के कार्यकर्ताओं ने भी आर्य महासम्मेलन के लिए तन, मन तथा धन से पूरा सहयोग करने का वचन दिया।

१५ मार्च को सभा अधिकारी आर्यसमाज सफीदों मण्डी जिला जीन्द के वार्षिक उत्सव पर पधारे। सभा उपप्रधान श्री रामधानी शास्त्री, सभा मन्त्री आचार्य यशपाल, सभा वरिष्ठ उपमन्त्री ब्र० महेन्द्र शास्त्री ने आर्यजनता को सम्बोधित करते हुए रोहतक सम्मेलन को सफल करने की अपील की। आर्यसमाज के अधिकारियो ने विश्वास दिलाया कि हमारी ओर से पूरा सहयोग दिया जायेगा।

—**केदारसिंह आर्य**, सभा उपमन्त्री

आर्य केन्द्रीय सभा गुड़गांव की बैठक में आर्य महासम्मेलन को तन, मन तथा धन से सहयोग देने का निश्चय

आर्य केन्द्रीय सभा गुडगाव की बैठक आर्यसमाज मन्दिर भीमनगर में दिनाक १७ मार्च, २००२ को दोपहर बाद २ बजे सम्पन्न हुई जिसमें स्थानीय आर्यसमाजों के सभी अधिकारी तथा अन्य आर्य कार्यकर्ता सम्मिलित हुए। बैठक की अध्यक्षता श्री कन्हैयालाल जी ने की। केन्द्रीय सभा के अधिकारियों ने बैठक मे पधारे सभा के मन्त्री आचार्य यशपाल, वरिष्ठ उपमन्त्री ब्र० महेन्द्रसिंह शास्त्री, उपमन्त्री श्री केदारसिह आर्य तथा म० महासिंह आर्य (टिटौली) का हार्दिक स्वागत किया। स्वागत के उत्तर में सभामन्त्री आचार्य यशपाल ने आभार प्रकट करते हुए कहा कि सभा गुड़गांव के आर्य कार्यकर्ताओं की सराहना की और आश्वासन दिया कि वे इस क्षेत्र की समस्याओं का समाधान करेंगे और यथाशक्ति यहा वेदप्रचार के प्रसार तथा मेवात में हो रही गोहत्या बद करवाने हेतु वहा सम्मेलन का आयोजन किया जाएगा। इस क्षेत्र के सभी आर्यसमाजों से अनुरोध किया कि वे ६, ७ अप्रैल को भारी संख्या में रोहतक पहुंचकर अपना योगदान करें। ब्र० महेन्द्रसिंह शास्त्री वरिष्ठ उपमन्त्री तथा केदारसिंह आर्य, उपमन्त्री, श्री जयप्रकाश आर्य ने भी सभा के कार्यों में तन, मन तथा धन से सहयोग देने की अपील की। केन्द्रीय सभा के अधिकारियों ने सभा को विश्वास दिलाया कि वे भारी सख्या में विशेष बसों में रोहतक पहुंचेंगे तथा धन का भी सहयोग देगे।

—**सोमनाथ आर्य**, मन्त्री

पं० हरिराम आर्य की धर्मपत्नी का निधन

आर्यसमाज के नेता एव आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रतिनिधि प० हरिराम आर्य स्वतन्त्रता सेनानी की धर्मपत्नी श्रीमती गिदोडी देवी का ७७ वर्ष की आयु में ३ मार्च को ग्राम कारोली जिला रेवाडी में निधन हो गया। वे धार्मिक कार्यों मे रुचि लेती थी तथा आर्यसमाज के प्रचार कार्यों में सहयोग देती थी। वे कुछ मास से बीमार थी। १५ मार्च को विशेष यज्ञ तथा शोक सभा की गई।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से हम सभी दिवंगत आर्य महिला के निधन पर शोक प्रकट करते हुए ईश्वर से उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करने तथा उनके परिवार को इस वियोग को सहन करने की प्रार्थना करते है।

—**केदारसिंह आर्य**, सभा उपमन्त्री

आर्य केन्द्रीय सभा फरीदाबाद में बैठक में सभामन्त्री आचार्य यशपाल जी आर्यसमाज के अधिकारियों को सम्बोधित कर रहे हैं। श्री केदारसिंह आर्य सभा-उपमन्त्री, भक्त मंगतूराम सभा-उपप्रधान, श्रीमती विमल महता सभा-उपप्रधान एवं प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा बैठे हैं।

आवश्यक सूचना

आर्य विद्वानों एवं विज्ञापनदाताओं से विशेष निवेदन

मान्यवर महोदय,

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्त्वावधान में हरयाणा प्रान्तीय विशाल आर्य महासम्मेलन दिनाक ६ ७ अप्रैल, २००२ को आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर एक स्मारिका का प्रकाशन भी किया जायेगा। इसमें विद्वान् लेखक महानुभाव अपना लेख भेजे। इसमें आर्यसमाज के प्रमुख बलिदानियों की जीवनी भी प्रकाशित की जायेगी, विज्ञापनदाता अपने उद्योग एव शिक्षण संस्था का परिचय विज्ञापन के रूप में देकर सहयोग के भागी बनें।

विज्ञापन दरें निम्न प्रकार हैं—

अन्तिम कवर पृष्ठ	२१०००/- रुपये
अन्दर द्वितीय कवर पृष्ठ	१६०००/- रुपये
अन्दर तृतीय कवर पृष्ठ	१६०००/- रुपये
पूरा पृष्ठ	५०००/- रुपये
आधा पृष्ठ	२५००/- रुपये
चौथाई पृष्ठ	१५००/- रुपये

—**यशपाल आचार्य**, सभा मन्त्री

आओ वेद का स्वाध्याय करें

कर्म करते हुए सौ वर्ष जीने की इच्छा करें (यजुर्वेद)

–प्रो० चन्द्रप्रकाश आर्य, अध्यक्ष–स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग
दयालसिंह कॉलेज, करनाल–१३२००१

जीवन बडा मूल्यवान् है। संसार में प्रत्येक प्राणी जीना चाहता है, मरना कोई नहीं चाहता। चींटी को भी हाथ लगाओ तो वह भी अपने प्राण बचाकर भागती है। महाभारत में यक्ष ने युधिष्ठिर से पूछा कि ससार में सबसे बड़ा आश्चर्य क्या है ? तो युधिष्ठिर ने कहा कि प्रतिदिन प्राणी मृत्यु को प्राप्त होते हैं किन्तु फिर भी बाकी जीना चाहते हैं, इससे बडा आश्चर्य और क्या हो सकता है ?

शेषा: जीवितुमिच्छन्ति किमाश्चर्यमत: परम्।।

अत. जीवन एक अनुपम वरदान है। कालिदास रघुवश (८/८७) मे लिखते हैं कि मरना प्राणियों का स्वभाव है, प्राणी यदि क्षणभर भी जीता है तो यह बड़े सौभाग्य की बात है-

मरणं प्रकृति: शरीरिणाम् विकृतिर्जीवनमुच्यते बुधै:।
क्षणमपि अवतिष्ठते श्वसन्यदि जन्तुर्ननु लाभवानसौ।। (रघुवश ८/८७)

जबकि वेद तो बार-बार कहता है कि हम सौ वर्ष जीयें, सौ वर्ष देखें, सौ वर्ष सुनें और उससे भी अधिक, सौ वर्ष से भी अधिक जीयें-

'पश्येम शरद: शतम्, जीवेम शरद: शतम् शृणुयाम् शरद: शतम् प्रब्रवाम शरद. शतमदीना: स्याम शरद: शतं भूयश्च शरद: शतात्' (यजु० ३६/२४)

परन्तु साथ में वेद यह भी कहता है कि कर्म करते हुए सौ वर्ष जीने की इच्छा करें किन्तु कर्म में लिप्त न हों। इससे भिन्न जीवन जीने का अन्य मार्ग नहीं है–

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतँ समा:।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे।। (यजु० ४०/२)

संसार मे सब कुछ कर्म के अधीन है। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष ये चार पुरुषार्थ कहलाते हैं। इनमे मानव जीवन में प्राप्त करने योग्य सभी कुछ आ जाता है किन्तु इनकी प्राप्ति कर्म से ही सम्भव है। फिर मनुष्य जीवन तो कर्म करने के लिए ही है। गीता कहती है कि कर्म किए बिना कोई रह ही नहीं सकता-

न हि कश्चित्क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत्।
कार्यते ह्यवश: कर्म सर्व: प्रकृतिजैर्गुणै:।। (गीता ३/५)

मध्यकाल में कुछ लोगों ने कहा कि कर्म करने की आवश्यकता नहीं, भगवान् सबको देता है जैसे पंछी/पक्षी कोई काम नहीं करते–

अजगर करे न चाकरी पंछी करे ना काम।
दास मलूका क गए सबके दाता राम।।
अनहोनी होनी नहीं, होनी होये सो होय।
राम भरोसे बैठकर रहो खाट पर सोय।।

किन्तु ऐसी बातें आलसी या भाग्यवादी किया करते हैं। कर्मप्रधान, कर्मशील व्यक्ति संसार में सब कुछ प्राप्त कर सकता है। जैसे मिट्टी के ढेले से कुम्हार घड़ा, सुराही, दीया आदि जो वस्तु बनाना चाहता है, बना सकता है इसी प्रकार मनुष्य अपने किए गए कर्म से इच्छानुसार फल प्राप्त कर सकता है। हितोपदेश (श्लोक ३४) में कहा है–

यथा मृत्पिण्डत: कर्त्ता कुरुते यद् यद् इच्छति।
एवम् आत्मकृतं कर्म मानव: प्रतिपद्यते।।

भाग्य या किस्मत की बात तो कायर पुरुष करते हैं। कर्म करने में भी असफलता रह गई तो यह देखना चाहिए कि उसमें कोई दोष या त्रुटि तो नहीं रह गई। इसलिए भाग्य का सहारा छोड़कर मनुष्य को अपने पुरुषार्थ से कर्म करना चाहिए-

उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मी:।
दैवेन देयमिति कापुरुषा वदन्ति।।
दैवं निहत्य कुरु पौरुष स्वशक्त्या।
यत्ने कृते यदि न सिध्यति कोऽत्र दोष:।।

आज मनुष्य धरती, समुद्र तथा आकाश पर विजय प्राप्त कर रहा है। धरती का उसने नक्शा ही बदल दिया है, समुद्रों को चीरकर वहां के खजानो का बाहर लाने में लगा हुआ है। आकाश पर उसका अभियान जारी है। मगल ग्रह पर जाने के लिए दिन रात लगा हुआ है। अगले २०-२५ वर्षों मे मगल ग्रह पर बस्तिया बसाने मे लगा होगा। यह सब कर्म/उद्यम की महिमा है। इसलिए कवि दिनकर ने 'कुरुक्षेत्र' मे कहा है-

नर समाज का भाग्य एक है, वह श्रम, वह भुजबल है।
जिसके सम्मुख झुकी हुई पृथ्वी, विनीत नभतल है।।

गीता में कर्म की महिमा भरी पडी है। लोकमान्य तिलक ने गीता पर लिखे अपने ग्रन्थ 'गीता रहस्य' का दूसरा नाम 'कर्म योगशास्त्र' रखा है। गीता (२/४७) कहती है कि कर्म करने मे ही मनुष्य का अधिरकार है, फल की इच्छा में नहीं। कर्म किए बिना संसार में जीवन यात्रा भी नहीं चल सकती। जनक आदि बडे-बडे राजा, महाराजा भी कर्म करते आये हैं। ससार मे कर्म का ही प्रसार दिखाई देता है-

'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषुकदाचन' (गीता ३/४७)
कर्मणैव संसिद्धिमास्थिता: जनकादय:।
लोक संग्रहमेवापि संपश्यन्कर्त्तुमर्हति।। (गीता ३/२०)

किन्तु कर्म मे लिप्त नहीं होना चाहिए। कर्म में लिप्त होना उसके प्रति आसक्ति फल के बधन मे बधना यही सब अनर्थों का मूल है। आसक्ति या लिप्तता के कारण मनुष्य जीवन पर्यन्त ससार के बन्धनो मे बधा रहता है। कर्म का अनुकूल फल मिलने पर मनुष्य प्रसन्न होता है और प्रतिकूल फल मिलने पर उद्विग्न होता है, निराश, हताश हो जाता है, आत्महत्या तक कर लेता है या फिर दूसरों की हत्या कर डालता है। जीवन के हर क्षेत्र मे हम आसक्ति या लिप्तता की डोर से बधे हुए हैं। इसी कारण ससार मे धर्म और राजनीति मे बडे-बडे बखेडे एवं उत्पात होते हैं। इसीलिए वेद ने कहा कि कर्म मे लिप्त नहीं होना चाहिए-'न कर्म लिप्यते नरे'। गीता (२/४७) ने कहा **"मा कर्मफलहेतुर्भू।"** गीता फिर कहती है कि सिद्धि, असिद्धि, सफलता, असफलता, जय-पराजय मे सम होकर आसक्ति रहित होकर कर्म करना चाहिए-

योगस्थ: कुरु कर्माणि संगं त्यक्त्वा धनंजय।
सिध्यसिध्यो: समो भूत्वा समत्व योग उच्यते।। (गीता २/४८)

परन्तु फल की इच्छा को त्यागकर वह कर्म क्यो करे ? ससार मे मूर्ख व्यक्ति भी बिना प्रयोजन के किसी कार्य मे नहीं लगता, किसी कर्म को नहीं करता। फिर आसक्ति रहित होकर या संग त्यागकर कर्म करने से क्या मिलता है ? इसका उत्तर (गीता ३/२०) देती है कि जो व्यक्ति अनासक्त होकर, सग या आसक्ति को त्यागकर कर्म करता है वह भगवान् को प्राप्त कर लेता है-

तस्मादसक्त: सततं कार्यं कर्म समाचर।
असक्तो ह्याचरन्कर्म परमाप्नोति पूरुष.।। (गीता ३/२०)

वेद का (का उपर्युक्त मत्र) आगे कहता है कि इससे भिन्न ससार मे जीने को अन्य कोई मार्ग नहीं है–'नान्यथेतोऽस्ति' वेद के इस मन्त्र से निम्न बाते स्पष्ट होती हैं-

१ मनुष्य को सौ वर्ष जीने की इच्छा करनी चाहिए।

२ किन्तु कार्य करते हुए सौ वर्ष जीने की इच्छा करनी चाहिए, निष्कर्म होकर नहीं।

३ कर्म में आसक्ति या लिप्तता नहीं होनी चाहिए। आसक्ति या सग रहित होकर या, निर्लिप्त होकर कर्म करने चाहिए।

४ संग या लेप/आसक्ति ही सब दु.खों का मूल है।

५ अनासक्त होकर/निर्लिप्त होकर जो मनुष्य करता है वह परमात्मा को प्राप्त कर लेता है।

६ इससे भिन्न संसार में जीवन जीने का अन्य रास्ता नहीं है अर्थात् अनासक्ति से कर्म करते हुए जीने का मार्ग सर्वश्रेष्ठ मार्ग है। अत हमें श्रेष्ठतम कर्म करते हुए जीवन जीना चाहिए।

महर्षि दयानन्द आयुर्वेदिक धर्मार्थ औषधालय गुड़गांव, रविवार, २४ मार्च २००२ प्रात: १० बजे से १ बजे तक नि:शुल्क आयुर्वेदिक चिकित्सा शिविर का आयोजन किया जायेगा।

आर्यसमाज जुआं जिला सोनीपत का वार्षिक उत्सव सम्पन्न

जुआ मे खजानसिह छिक्कारा का स्वागत करते हुए आर्यप्रतिनिधिसभा हरयाणा के मन्त्री आचार्य यशपाल।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा से सम्बन्धित आर्यसमाज जुआ जिला सोनीपत का वार्षिक उत्सव शिवरात्रि (ऋषि बोध) के अवसर पर ११, १२ मार्च २००२ को सम्पन्न हो गया। दिनाक ११ मार्च को प्रात आर्यसमाज के मन्त्री म० खजानसिह आर्य ने यज्ञ करवाया जिसमे स्थानीय राजकीय विद्यालयो तथा आर्यसमाज मन्दिर मे चल रहे महर्षि दयानन्द विद्यापीठ के छात्र एव छात्राए आदि सम्मिलित हुए। यज्ञ के बाद देशी घी के हलवे का वितरण किया और यज्ञोपदेश दिया गया। रात्रि को कालनो वाली चौपाल मे सभा की नवयुवक प्रभावशाली प० तेजपाल की मण्डली के मनोहर भजन हुए।

दिनाक १२ मार्च ऋषि बोध दिवस पर यज्ञशाला मे विशेष यज्ञ किया गया। प० तेजवीर जी ने ऋषि दयानन्द जीवनी तथा उन द्वारा किये गये परोपकारी उपकारो का गुणगान किया। यज्ञ वितरण के बाद १० से २ बजे तक प्रिं० होशियारसिह जी पूर्व जिला शिक्षा अधिकारी श्री होशियारसिह बीधल, श्री जिलेसिह (सहायक शिक्षा कमीश्नर दिल्ली), प्रिं० राममेहर जी, मा० ज्ञानसिंह आर्य, आचार्य यशपाल शास्त्री, मन्त्री आर्य प्रतिनिधिसभा हरयाणा आदि आर्यनेताओने ऋषि दयानन्द द्वारा दिखाये गये मार्ग पर चलने पर बल दिया। आचार्य यशपाल जी का सभामन्त्री, आर्यसमाज जुआ के प्रधान श्री केदारसिह आर्य तथा श्री सुरेन्द्र शास्त्री (छतेहरा) गोहाना को सभा उपमन्त्री बनने पर स्वागत किया गया। आचार्य यशपाल जी सभामन्त्री ने आर्यसमाज के उत्साही तथा कर्मठ मन्त्री श्री खजानसिह आर्य का आर्यसमाज मन्दिर हेतु अपनी उपजाऊ भूमि दान देने पर तथा जिला सोनीपत मे आर्यसमाज के कार्यो मे बढ-चढकर योगदान देने पर स्वागत करते अपनी ओर से ५०१ रुपये दान दिया और ग्रामवासियो से सभा द्वारा आयोजित आर्य महासम्मेलन रोहतक के ६, ७ अप्रैल को अधिक से अधिक सख्या मे पहुचने की अपील की। सभामन्त्री ने ग्राम के उन छात्र तथा छात्राओं को पुरस्कार दिये जिन्होने परीक्षाओं तथा खेलो में उच्च स्थान प्राप्त किया है। इसकी राशि प्रिं० राममेहर जी ने दान दी। इस अवसर पर प्रो० राजसिह जी (अमेरिकावासी) द्वारा वैदिक पुस्तकालय के लिए दिये गये दान से बनाये जा रहे कक्षा का शिलान्यास किया गया। श्री सुमेरचन्द जी सोनीपत द्वारा चलाए जा रहे बेसहारा मन्दबुद्धि के बच्चो को आर्यसमाज की ओर से वस्त्र भेट किये गये। दोपहर बाद कुश्तियो का दगल तथा रात्रि मे श्री अतरसिह सरपंच की बैठक के पास प० तेजवीर जी की भजनमण्डली द्वारा वेदप्रचार हुआ। आर्यसमाज सभा की ओर से सभा को १७०० रुपये वेदप्रचार, दशाश तथा आर्य महासम्मेलन के लिए दान दिया गया।

—जितेन्द्रसिंह आर्य, उपमन्त्री

आर्यसमाज के उत्सवों की बहार

१	आर्यसमाज जोहरखेडा (फरीदाबाद) (ऋग्वेद पारायण यज्ञ)	१९ से २८ मार्च
२	जिला हिसार वेदप्रचार मण्डल बैठक (स्थान-आर्यसमाज मदिर नागोरीगेट, हिसार) (समय-प्रात १० बजे)	२४ मार्च
३	आर्यसमाज चोरामाजरा जिला करनाल	२२ से २४ मार्च
४	आर्यसमाज सूरजपुर जिला गौतमबुद्धनगर (नोएडा)	२३ से २५ मार्च
५	आर्यसमाज सैनीपुरा रोहतक विशाल अग्निहोत्र एव होलिकोत्सव पर्व (स्थान-सैनी धर्मशाला सामने सुभाष सिनेमा रोहतक)	२४ मार्च
६	आर्यसमाज मन्धार जिला यमुनानगर	२९ से ३० मार्च
७	हरयाणा प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन, रोहतक	६-७ अप्रैल
८	वैदिक आश्रम न्याणा जिला हिसार	१ से ३ अप्रैल

—सुखदेव शास्त्री, सहायक वेदप्रचाराधिष्ठाता

वेदप्रचार मण्डल की बैठक आयोजित

सोनीपत। स्थानीय काठमण्डी स्थित आर्यसमाज मन्दिर के परिसर मे आज वेदप्रचार मण्डल की जिला इकाई की बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के मत्री आचार्य यशपाल ने की। आयोजित बैठक को सम्बोधित करते हुए आचार्य यशपाल ने कहा कि आगामी ६-७ अप्रैल को रोहतक मे होने जा रहे हरयाणा प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन को सफल बनाने हेतु सभी एक जुट हो। सम्मेलन को सफल बनाने के लिए बैठक मे उपस्थित आर्य महानुभावो को अलग-अलग से जिम्मेदारियां सौंपी गई तथा इस कार्यक्रम को सफल बनाने व बढ-चढकर भाग लेने का सकल्प किया। बैठक को आचार्य यशपाल के अलावा काठमण्डी आर्यसमाज के प्रधान सत्यवीरसिह शास्त्री, मत्री महावीर दहिया, सुरेन्द्र शास्त्री, बलवीर शास्त्री व आजादसिह दून ने भी सम्बोधित किया।

(हरिभूमि से साभार)

आर्य-संसार

आर्यो संगठित होकर चलो

६-७ अप्रैल को रोहतक दयानन्दमठ में

विशाल आर्य महासम्मेलन होने जा रहा है

सभी आर्यसमाजें दल बल के साथ ओ३म् ध्वज और बैनर लेकर सम्मेलन में अपनी शक्ति का परिचय दे। आज से ही आप तैयारी आरम्भ कर दे, विशाल शोभायात्रा मे वैदिक झाकिया प्रदर्शित की जायेंगी, आप भी अपनी समाज या संस्था की तरफ से वैदिक झाकी तैयार करके लाये, जैसे यज्ञ करते हुए नरनारी, वेद का पठन-पाठन करते हुए ब्रह्मचारी, उपदेश एव प्रवचन करते हुए महात्मा, सत्सग और स्वाध्याय करते पुरुष महिलाये। इस तरह से पूरी तैयारी के साथ आप सम्मेलन स्थल पर पधारे। शोभायात्रा सभा कार्यालय दयानन्दमठ से गोहाना अड्डा, किला रोड, भिवानी स्टैण्ड, रेलवे रोड, झज्जर रोड, सिविल रोड, छोटूराम पार्क करनाल, रैस्ट हाउस, अम्बेडकर चौक, सुभाष मार्ग, गोहाना अड्डा होते हुए पुन सभा कार्यालय दयानन्दमठ मे ही सम्पन्न होगी।

यज्ञ की पूर्णाहुति प्रात १० बजे होगी। ११ बजे शोभायात्रा आरम्भ होगी। भोजन एव आवास की व्यवस्था सभा के लिए उत्तम की गई है, आने वाले महानुभावो के लिये प्रबन्ध मे कोई कमी नहीं रहने दी जायेगी। आप तन मन धन से सम्मेलन को अभूतपूर्व बनायें, सम्मेलन मे अनेक महत्त्वपूर्ण फैसले लिये जायेंगे, हर क्षेत्र में आर्यक्रान्ति का आर्यविचारो का बिगुल बजाया जायेगा।

निवेदक .

सभा प्रधान–**स्वामी ओमानन्द सरस्वती** सभामन्त्री–**आचार्य यशपाल**

महर्षि दयानन्द जन्मदिवस समारोह सम्पन्न

स्वामी इन्द्रवेश जी के साथ प्रधानाचार्या श्रीमती सुमित्रा आर्या

महान् समाजसुधारक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती का जन्मदिवस ९ मार्च शनिवार को महर्षि दयानन्द पब्लिक विद्यालय जीन्द मार्ग, रोहतक के अन्दर बडी धूमधाम से मनाया गया। विद्यालय की प्रधानाचार्या व बच्चो ने प्रात काल यज्ञ किया। फिर प्रभुभक्ति के भजनो के बाद देशभक्ति के भजन विद्यालय की छात्राओ ने प्रस्तुत किए। बच्चो का उत्साह बढाने के लिए स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज ने प्रात विद्यालय मे पहुचकर बच्चो का उत्साह बढाया। विद्यार्थी जीवन पर प्रकाश डालते हुए उनके जीवन से शिक्षा लेने की प्रेरणा दी और बताया कि विद्यार्थी जीवन एक त्याग का जीवन होता है। विद्या चाहनेवाले विद्यार्थियो को सुख की इच्छा नहीं करनी चाहिए। इसके अतिरिक्त अनेक शिक्षाप्रद बातो से अवगत कराया। विद्यालय की मुख्याध्यापिका सुमित्रा वर्मा ने स्वामी इन्द्रवेश जी का हार्दिक धन्यवाद किया और बच्चो के अन्दर नैतिकता, धार्मिकता, सदाचार, देशभक्ति की भावना पर बल दिया। स्वामी जी ने बहन सुमित्रा के इन विचारों की भूरि-भूरि प्रशसा की। अन्त मे वार्षिक परीक्षा २००१ के सभी कक्षा के विद्यार्थी जो प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान पर आए उन सब बच्चों को पुरस्कार देकर प्रोत्साहित किया। अन्त मे शान्तिपाठ किया।

महर्षि दयानन्द जन्मदिवस सम्पन्न

आर्यसमाज यमुनानगर मे ९ और १० मार्च, २००२ दिन शनिवार, रविवार को महर्षि दयानन्द जन्म दिवस बडे ही धूमधाम से समारोहपूर्वक मनाया गया। जिसमे यज्ञ-हवन से मुख्य समारोह का शुभ आरम्भ हुआ। जिसमे आर्यजगत् के विद्वान्, श्री प० राजन शास्त्री, श्री रमेशचन्द निश्चिन्त श्री धर्मेन्द्र शास्त्री आदि विद्वानो ने महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित यज्ञ पद्धति ईश्वरभक्ति, राष्ट्रभक्ति तथा उनके जीवन पर सविस्तार चर्चा की और लोगो को उनके बताये मार्ग पर चलने के लिए आह्वान किया। जिसमे यमुनानगर और उसके आसपास से काफी सख्या मे आर्यजन उपस्थित होकर विद्वानो के विचार सुने और करतल ध्वनि से स्वागत किया और इसके अलावा स्थानीय आर्यसमाज के कार्यकर्ता श्री केशवदास आर्य (प्रधान), केन्द्रीय आर्य सभा यमुनानगर, श्री प्रेमचन्द्र आर्य, श्री प्रमोदकुमार गर्ग, श्री हरिराम आर्य, श्री जगदीशचन्द्र शास्त्री, श्री ललित डाग, श्री राजपाल आर्य और आर्यसमाज के पुरोहित श्री प० अशोक शास्त्री भी उपस्थित थे। आर्यसमाज यमुनानगर मे बाहर से आनेवाले लोगो के लिए ऋषिलगर का आयोजन किया गया था। जिसमे काफी सख्या मे लोगो के शान्तिपाठ के पश्चात् ऋषि लगर मे भोजन ग्रहण किया।

–कृष्णचन्द्र आर्य, प्रधान–आर्यसमाज, रेलवे रोड, यमुनानगर

शोक समाचार

बडा दु खद समाचार है कि स्वर्गीय महाशय भरतसिह जी वानप्रस्थी के पौत्र कामरेड श्री ईश्वरसिह जी का पुत्र श्री दीपककुमार का २८ वर्ष की अल्पायु मे ही एक कार दुर्घटना मे निधन हो गया। जिससे सारे शहर मे शोक की लहर दौड गई। इस हृदय विदारक असामायिक निधन पर आर्यसमाज सैनीपुरा, रोहतक हार्दिक सवेदना प्रकट करता है तथा ईश्वर से प्रार्थना करता है कि दिवगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे तथा परिवार को इस पहाड जैसे दु ख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

–दयाकिशन, उपप्रधान आर्यसमाज सैनीपुरा, रोहतक

अन्तरंग सभा में आर्य महासम्मेलन की रूपरेखा तैयार

१६-३-२००२ को गुरुकुल झज्जर मे सभाप्रधान स्वामी ओमानन्द जी की अध्यक्षता मे आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरग सभा हुई जिसमे ६-७ अप्रैल को सभा कार्यालय दयानन्दमठ, रोहतक मे होनेवाले आर्यमहासम्मेलन को सफल बनाने के लिये विस्तृत कार्यक्रम तैयार किया गया और निश्चय किया गया कि आर्यसमाज के सभी शिक्षण सस्थाओ के अधिकारी, अध्यापक कर्मचारी, छात्रगण अधिक से अधिक सख्या मे सम्मेलन मे ओ३मध्वज, अपनी सस्था का बैनर लेकर पधारे। सभी आर्यजनो से निवेदन है कि वे ६ अप्रैल को प्रात १० बजे तक सभा कार्यालय, दयानन्दमठ, रोहतक मे पधारे। भोजन एव आवास की उत्तम व्यवस्था की जा रही है। २ बजे से शोभायात्रा प्रारम्भ हो जायेगी। सभी सदस्यो ने सर्वसम्मति से प्रस्ताव पास करते हुए सभी आर्यजनो से अपील की है कि वे दल बल के साथ अधिक से अधिक वाहनो के साथ आर्यजनो को लेकर सम्मेलन मे उपस्थित हो।

इस अवसर पर सभामन्त्री आचार्य यशपाल ने सभी सदस्यो को सूचित किया है कि सम्मेलन के लिये लोगो मे भारी उत्साह है, और सभी आर्यसमाजो एव सस्थाओ से दान की अपील की जा रही है, पानीपत की तरफ से श्री लाभसिह जी व श्री महेन्द्रसिह एडवोकेट ने बताया कि पानीपत की आर्यसमाजो की तरफ से कम से कम एक लाख रुपये तीन बसे पहुचेगी, इसी तरह से गुरुकुल कुरुक्षेत्र की प्रबन्धक समिति ने तथा फरीदाबाद की केन्द्रीय सभा ने जिला हिसार, जिला सिरसा, जिला गुडगाव की भी समाजो ने इससे अधिक सहयोग का आश्वासन दिया है। नारायणगढ अम्बाला, शाहाबाद, यमुनानगर, सफीदो, नरवाना, रोहतक, झज्जर, महेन्द्रगढ, रिवाडी, भिवानी, दादरी आदि मे भी सम्मेलन को सफल बनाने की तैयारी चल रही है, आर्यसमाज के सगठन को सुदृढ बनाने और आगामी कार्यक्रम की रूपरेखा और अनेक महत्त्वपूर्ण फैसले होने के कारण आर्य महासम्मेलन अपने आपमे अपूर्व होगा। आप तन-तन-धन से महासम्मेलन को सफल बनायें। सभामन्त्री–**आचार्य यशपाल**

हरयाणा नस्ल की गायें कम हुई

देश में भदावरी भैंस व जमनापाली बकरी की संख्या घट रही है

करनाल। देश मे भदावरी भैंसो और जमनापाली बकरियो की सख्या में तेजी से गिरावट आ रही है। राष्ट्रीय पशु आनुवाशिक ससाधन ब्यूरो के वैज्ञानिक कई चिहित पशुओ की घटती सख्या को लेकर सकते मे हैं और इनकी लुप्त होती जा रही नस्लो पर अध्ययनरत हैं।

देश के विभिन्न प्रान्तो मे पाई जाने वाली दुधारू भैंसो और बकरियो की सख्या मे चिताजनक गिरावट दर्ज की गई है। हरयाणा में पाई जाने वाली हरयाणा नस्ल गाय की सख्या मे पिछले कुछ वर्षों मे भारी कमी आई है। राज्य की सर्वाधिक प्रसिद्ध रही हरयाणा नस्ल की गायों की सख्या का ग्राफ इतनी तेजी से गिर रहा है कि आने वाले एक दो साल बाद इस नस्ल की गिनती की गाये नजर आयेगी। इस नस्ल की गायो का राज्य मे दुधारू पशु के रूप मे तो उपयोग किया जाता ही है, साथ ही हल जोतने और बुग्गी खींचने मे किया जाता रहा है। मौजूदा दौर मे आधुनिक ससाधनो की अधिकता के चलते किसानो ने उक्त नस्ल को लगभग नजरअदाज कर दिया है। किसानों का मुर्रा भैंसो के प्रति बढते लगाव के कारण हरयाणा नस्ल की गाय उपेक्षित होती चली गई। रिसर्च सस्थान के वैज्ञानिको के सामने लुप्त होती इस नस्ल को लेकर कई बिन्दु सामने आए, जिसमे मुख्य रूप से यह बात उभरकर आई कि इस नस्ल की गायो की दूध देने की क्षमता कम है। इस समय राज्य में मुश्किल से हरयाणा नस्ल की गायो की सख्या दो हजार के लगभग आकी गई है।

इस बात का खुलासा संस्थान द्वारा प्रथम दृष्ट्या कराए गए एक सर्वे से हुआ। मुख्य रूप से उत्तर प्रदेश के इटावा, चंबल, आगरा और एटा मे पाई जानेवाली भदावरी नस्ल की भैंसो का अस्तित्व भी खतरे में नजर आ रहा है। उत्तर प्रदेश की भदावरी नस्ल की भैंसो की सख्या गत दिनो कराए गए एक सर्वे के मुताबिक घटकर दो से ढाई हजार के बीच रह गई है। जबकि उक्त जिलो मे पाई जाने वाली इस नस्ल की भैंसो की सख्या कभी २५ हजार से तीन हजार के बीच थी। वैज्ञानिक अभी तक यह निश्चित नहीं कर सके हैं कि इस नस्ल की भैंसों की संख्या कम होने के पीछे प्रमुख कारण क्या है ?

(दैनिक भास्कर ११ मार्च)

आवश्यकता है

आर्यसमाज गाव व डॉ० तुगलकाबाद नई दिल्ली-४४ को एक पुरोहित की आवश्यकता है। गाव मे वैदिक सस्कृति का प्रसार व सभी कर्मकाण्ड करने हैं। जो भी दान आयेगा सब पुरोहित को ही मिलेगा। समाज मे रहने की उचित व्यवस्था है। सन्यासी-वानप्रस्थी को प्राथमिकता मिलेगी। मासिक वेतन की माग न करे। –**भगवतसिंह**, मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिग प्रेस, रोहतक (फोन : ०१२६२–७६८७४, ७७८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ०१२६२–७७७२२) से प्रकाशित।
पत्र में प्रकाशित लेख सामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री का सहमत होना आवश्यक नहीं। पत्र के प्रत्येक प्रकार के विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक होगा।

प्रधानसम्पादक : यशपाल आचार्य, सभामन्त्री — सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री

वर्ष २९ अंक १८ २८ मार्च, २००२ वार्षिक शुल्क ८०) आजीवन शुल्क ८००) विदेश में २० डॉलर एक प्रति १.७०

ओ३म्

६-७ अप्रैल को रोहतक चलो

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्त्वावधान में

हरयाणा प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन

६-७ अप्रैल, २००२ शनिवार, रविवार

स्थान : सभा कार्यालय, पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा अपने उन सभी आर्य महानुभावो, आर्यसमाज के अधिकारियों तथा शिक्षण संस्थाओं के प्रबन्धकों एवं प्रबन्धक समिति का आभार प्रकट करती है जिन्होने ६-७ अप्रैल २००२ के महासम्मेलन हेतु आर्थिक सहयोग एवं अधिकाधिक उपस्थिति लाने के लिए संकल्प लिया है। सम्मेलन में सभी आर्यसमाजें कम से कम एक-एक वाहन लेकर अवश्य पहुंचे, आज से ही आप सम्मेलन में दल बल के साथ पधारने के लिए तैयारी मे जुट जायें। यह सम्मेलन आर्यसमाज की शक्ति का प्रतीक है। इस अवसर पर अनेक महत्त्वपूर्ण निर्णय लिए जायेंगे। जिनको आर्यसमाजो ने पूरा करने के लिए आगे कदम बढाना है। सम्मेलनो के माध्यम से हमे सगठित होने का, आत्मचिन्तन का एक अवसर प्राप्त होता है। नये कार्यक्रम को लेकर समाज के बीच जाने का सुअवसर होता है और सम्मेलन के अवसर पर हमें संकल्प लेना चाहिए कि हम आपसी विवादों से दूर हटकर, सगठित होकर आर्यसमाज की एव वैदिक विचारधारा को प्रवाहित करें, आप तन मन धन से सम्मेलन को सफल बनाने मे पूरा सहयोग करें।

विशाल शोभायात्रा

प्रान्तीय महासम्मेलन के अवसर पर विशाल शोभायात्रा का आयोजन ६ अप्रैल को होगा जो अपने आप मे महत्त्वपूर्ण होगा, जिसमे सभी आर्यसमाजों के अधिकारी और संस्थाओ के प्रतिनिधि एवं आर्यजनता उत्साह के साथ भाग लेने को आतुर है। इस अवसर पर अनेक आकर्षक वैदिक झांकियां देखने को मिलेंगी। आप भी कोई वैदिक झाकी की कल्पना कर उसे शोभायात्रा मे शामिल करे। अपने आर्यसमाज तथा शिक्षण संस्थाओं के मोटो तथा ओ३म् के झण्डे लगाकर शोभायात्रा में चले। सस्थाओ के छात्र/छात्राएं गणवेश मे चले। सम्मेलन और शोभायात्रा के अवसर पर आप सभी अनुशासन बनाए रखें, सभा द्वारा भोजन एव आवास की उत्तम व्यवस्था की जा रही है। आप सबके सहयोग में ही सफलता निहित है। आपसे पुन: निवेदन है कि आप पूरी तरह से तैयारी के साथ सम्मेलन मे अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित हों।

—यशपाल आचार्य, सभामन्त्री

वैदिक-स्वाध्याय

हे नाथ !

नामानि ते शतक्रतो विश्वाभिर्गीर्भिरीमहे।
इन्द्रा अभिमातिषाह्ये।।

(ऋग्वेद० ३ ३७ ३।। अथर्व० २० १९ ३)

शब्दार्थ–**(शतक्रतो)** हे अनन्तकर्म ! हे अनन्तप्रज्ञ ! **(विश्वाभिः गीर्भिः)** मैं अपनी सब वाणियो से **(ते नामानि)** तेरे नामो को **(ईमहे)** लेता हू-लेता रहता हू, **(इन्द्र)** हे परमेश्वर ! **(अभिमातिषाह्ये)** शत्रु का–अभिमान शत्रु का–पराभव करने के लिए लेता हू।

विनय–हे परमेश्वर ! मुझे यह वाणी तेरे नामोच्चारण के लिए ही मिली है। मैं निरन्तर तेरे पवित्र नामो का उच्चारण करता रहता हूं। [illegible] हुई इस वाणी से मैं अन्य कुछ कर ही नहीं सकता, कोई भी निरर्थक [illegible], कोई भी अनीश्वरीय बात, मेरी वाणी से नहीं निकल सकती। मेरे **एक-एक** कथन मे तेरी ही धुन होती है, तेरा ही निवास होता है। हे इन्द्र ! मैं इस प्रकार अपनी सब वाणियो से नानारूप मे तेरे ही नामों का कीर्तन करता रहता हू। यदि मैं ऐसा न करू तो मैं अपने शत्रुओ को कैसे पराजित कर सकू ? उनसे कैसे रक्षित रहू ? तेरा पवित्र नामोच्चारण करता हुआ ही मैं निरन्तर सब शत्रुओं पर विजयी हुआ हू और हो रहा हू। मेरा सबसे बडा शत्रु "अभिमाति" है, अभिमान है। आजकल इस महाशत्रु को मार डालने के लिये विशेषतया तेरा नाम मेरा महाअस्त्र हो रहा है। जब मनुष्य के काम, क्रोध आदि अन्य शत्रु जीते जा चुके होते हैं, मनुष्य आत्मिक उन्नति की ऊची अवस्था को पहुचा होता है, तब भी यह अभिमान, अहकार, अस्मिता, मनुष्य का पीछा नहीं छोडता। यह है जो कि अविद्या का कुछ अश शेष रहने तक भी आत्मा का मुकाबला करता रहता है। यही है जो कि, हे मेरे परमेश्वर ! मुझे अन्त तक तुमसे जुदा किये रहता है। जब मनुष्य खूब उन्नत हो जाता है, तब उसे और कुछ नहीं तो, अपनी उन्नतावस्था का, अपने पुण्यात्मा होने का अभिमान हो जाया करता है। यह अभिमान ही मनुष्य को बिल्कुल पतित कर देने के लिये पर्याप्त होता है। इसीलिये ही हे शतक्रतो ! हे अनन्तवीर्य ! हे अनन्तप्रज्ञ ! इसीलिए मैं निरतर तेरे नाम को जपता रहता हू, जीभ पर तेरा परमपवित्र नाम रखे फिरता हू। जब जरा भी अभिमान मन मे आता है "यह बडा भारी काम मैं कर रहा हू" "यह मैंने किया है" जो तुरन्त मेरे हाथ जुड जाते हैं और मुख से तेरा नाम निकल पडता है। इस तरह इस महाशत्रु से मेरी रक्षा हो जाती है। तेरा नाम मुझे तुरन्त नमा देता है, तेरा स्मरण आते ही मैं अवनत-शिर होकर भूमि पर मस्तक टेक देता हू–तो उस महाबली अभिमान को क्षण भर मे विलीन हो चुका पाता हू, चारो तरफ कोसो दूर तक उसका पता नहीं होता, सब पृथ्वी पर तुम ही तुम होते हो, और मैं तुम्हारे चरणो मे। मैं उस समय तेरे पृथ्वी रूप विस्तृत चरणो मे लगी हुई धूल का एक परम तुच्छ कण बनकर निरभिमानता के परम सात्त्विक सुख का उपभोग पाता हू। हे नाथ ! तेरे नाम की अपार महिमा का मै क्या वर्णन करू ?

(वैदिक विनय से)

हरयाणा प्रांतीय आर्यमहासम्मेलन

६-७ अप्रैल, २००२ को

आर्यो ! रोहतक चलो।

हरयाणा के सभी आर्यसमाजों एवं आर्यशिक्षणसस्थाओ व आर्य कार्यकर्त्ताओ से विशेष नम्र-निवेदन है कि आर्यमहासम्मेलन ६-७ अप्रैल २००२ को रोहतक की ऐतिहासिक पवित्र धरती पर होने जारहा है, इसको सफल बनाने के लिए सबके सहयोग की अत्यन्त आवश्यकता है, आप अधिक से अधिक अपना सहयोग प्रदान करे। प्रत्येक आर्यसमाज के अधिकारी, अपना आर्थिक, सहयोग सभा कार्यालय के पते पर भेजने का कष्ट करे तथा सम्मेलन में पहुंचने के लिये, सभी आर्यसमाज अपने सदस्यो को साथ लेकर कम से कम एक वाहन के साथ ट्रैक्टर, बस आदि से पहुचें। सभी केन्द्रीय सभाये, सभी आर्यवीरदल एव अन्य सगठन पूरी तैयारी के साथ मोटो व ओम् के ध्वज लेकर सम्मेलन मे पधारे। नौजवान शोभायात्रा तथा आर्यमहासम्मेलन के प्रबन्ध मे सहयोग प्रदान करेगे, गुरुकुलो के ब्रह्मचारियो तथा कन्या गुरुकुलो की ब्रह्मचारिणियो के कार्यक्रम भी आकर्षण का केन्द्र होगे। सभी आर्यसमाजों से कितनी सख्या मे अधिकारी एव कार्यकर्त्ता पधारेगे इसकी सूचना भी पूर्व ही सभा कार्यालय को पत्र द्वारा दीजाए जिससे सभी के भोजन एव आवास की व्यवस्था सुचारुरूप से की जासके। सम्मेलन मे पधारनेवाले सभी आर्यमहानुभावो का स्वागत है। सम्मेलन मे भारी संख्या मे पहुचकर आर्यसमाज की सगठनशक्ति का परिचय देवें।

सभी आर्य शिक्षण संस्थाओं से अनुरोध

६-७ अप्रैल २००२ को रोहतक मे होनेवाले हरयाणा प्रान्तीय आर्यमहासम्मेलन के अवसर पर एक स्मारिका का प्रकाशन किया जायेगा, इसमे आप अपनी शिक्षण सस्था का परिचय तुरन्त प्रकाशनार्थ भेजने का कष्ट करें।

प्रान्तीय आर्यमहासम्मेलन ६-७ अप्रैल मे निम्न कार्यक्रमो का आयोजन रहेगा–

१ यजुर्वेद पारायण महायज्ञ की पूर्णाहुति ७ अप्रैल को।

२ विशाल शोभायात्रा ६ अप्रैल को ११ बजे से।

३ आर्य युवा सम्मेलन, आर्य महिला सम्मेलन आर्य राजनीति सम्मेलन, आर्य सस्कृति एव गोरक्षा सम्मेलन।

–सभामन्त्री

ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्त्वावधान में

स्वामी ओमानन्द सरस्वती

हरयाणा प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन

दिनांक : 6-7 अप्रैल, 2002 शनिवार, रविवार

स्थान : सभा कार्यालय, पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक

इस सम्मेलन में आर्यजगत् के निम्नलिखित सन्यासी, विद्वान्, नेतागण पधार रहे हैं—**स्वामी सदानन्द** (दयानन्दमठ दीनानगर), **स्वामी यज्ञमुनि** (मुजफ्फरनगर), **प्रो० शेरसिंह** (पूर्व रक्षा राज्यमन्त्री, भारत सरकार), **श्री धर्मबन्धु** (गुजरात), **स्वामी इन्द्रवेश** (पूर्व सांसद), **स्वामी सुमेधानन्द** (वैदिक आश्रम पिपराली, राज०), **स्वामी कर्मपाल** (अध्यक्ष सर्वखाप पंचायत), **आचार्य बलदेव** (गुरुकुल कालवा, जीन्द), **श्री साहबसिंह वर्मा** (सासद), **श्री रामचन्द्र बैंदा** (लोकसभा सदस्य), **चौ० सुलतानसिंह** (पूर्व राज्यपाल), **डॉ० रामप्रकाश** (पूर्व मन्त्री हरयाणा सरकार), **श्री हरवंशलाल कपूर** (दिल्ली), **चौ० रामबेहर हुड्डा** एडवोकेट, **आचार्य देवव्रत** (गुरुकुल कुरुक्षेत्र), **प्रो० राजेन्द्र विद्यालंकार** (कुरुक्षेत्र), **प्रो० सत्यवीर विद्यालंकार** (चण्डीगढ), **डॉ० धर्मवीर** (मंत्री परोपकारिणी सभा अजमेर), **डॉ० सुरेन्द्रकुमार** (रीडर महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक), **श्रीमती प्रभातशोभा** (दिल्ली), **श्रीमती शकुन्तला** (पूर्व प्राचार्य कन्या गुरुकुल खानपुर कला), **श्री राजसिंह नांदल** (प्रधान जाट शिक्षण सस्था रोहतक), **श्री भरतलाल शास्त्री** (हांसी), **आचार्य हरिदेव** (गुरुकुल गौतमनगर, दिल्ली), **भगत मंगतूराम, डॉ० विमल महता** (फरीदाबाद), **चौ० सूबेसिंह** (पूर्व सभा मन्त्री), **श्री महेन्द्रसिंह शास्त्री** (गुडगांव), **जयपाल आर्य** (यमुनानगर), **आचार्य विजयपाल** (गुरुकल झज्जर), **श्री देशराज आर्य** (मन्त्री आर्य केन्द्रीय सभा रोहतक)।

आर्यजगत् के दानवीर—चौ० मित्रसेन सिन्धु, चौ० प्रियव्रत रोहतक, चौ० हरिसिंह सैनी हिसार, चौ० समुन्द्रसिंह लाठर, ला० लक्ष्मणदास आर्य बल्लबगढ़।

प्रसिद्ध भजनोपदेशक—श्री सहदेव बेधड़क, श्री तेजवीर आर्य, पं० चिरजीलाल आर्य, बहन कलावती आचार्या, बहन पुष्पा शास्त्री, बहन सुमित्रा शास्त्री आदि।

7 अप्रैल को गोरक्षा सम्मेलन की अध्यक्षता गोभक्त तपस्वी आचार्य बलदेव गुरुकुल कालवा करेंगे। इसके अतिरिक्त वेद सम्मेलन, महिला सम्मेलन, युवा सम्मेलन, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन भी होंगे।

स्वामी ओमानन्द सरस्वती	**सभा के अधिकारी एवं**	**आचार्य यशपाल**
सभा प्रधान	**अन्तरंग सदस्यगण**	**सभा मन्त्री**

६-७ अप्रैल, २००२ को रोहतक चलो
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्त्वावधान में
हरयाणा प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में सभी आर्य दल-बल के साथ भाग लेकर संगठन शक्ति का परिचय दें।

महर्षि दयानन्द की विचारधारा को ससार मे फैलाने की भावना रखने वाले आर्यो, उठो आलस्य को दूर कर मानवता के सिद्धान्तो से भटके राहगिरो को वेदपथ पर लाने के लिए मिलकर चलो, आज फिर इस देश मे धर्मान्धता अपनी चरम सीमा पर है, पत्थर पूजा, गुरुडम अन्धविश्वास, पौराणिकवाद, सम्प्रदायवाद बहुत तेजी से बढ रहे हैं। कान मे मन्त्र पढने वाले गुरुओं की बाढ आ रही है, ईसाई और मुस्लिम धर्म-परिवर्तन करा रहे हैं, अधर्म, अन्याय, असत्य, अराजकता का बोलबाला है। दलित-समाज उपेक्षा घृणा तथा बहिष्कार का शिकार है, महिलाओ पर अत्याचार बढ रहे हैं, गरीबी बढ रही है। जनसाधारण मे राष्ट्रभक्ति, राष्ट्राभिमान तथा अतीत के प्रति गौरव के भाव आदि भावनाए समाप्त होगई है। अंग्रेजी भाषा अग्रेजीयत तथा पाश्चात्य सस्कृति के प्रति लोगो का झुकाव तेजी से बढ रहा है। इन हालातो से डटकर सघर्ष करना आर्यसमाज का परम कर्त्तव्य है। आर्यसमाज के नेता कब तक अधिकारो और पदो के लिए उलझते रहेगे। आज सबको अपने भविष्य की चिन्ता है। दयानन्द के समाज की नहीं, त्याग और बलिदान की भावना कहीं नहीं दिखाई देती। नये विद्वान्, उपदेशक, लेखक तैयार नहीं हो रहे, शुद्धि आन्दोलन का कार्य ठप्प है, शास्त्रार्थ की परम्परा नहीं रही, जो जिस सस्था मे बैठा है, उसको उसी की चिन्ता ज्यादा है। बडी-बडी सस्थाए बडे-बडे आश्रम खोलकर मठाधीश की भूमिका निभा रहे हैं। **"गतानुगतिको लोक:"** की परम्परा अनुवर्ती भी अपना रहे हैं, हमारे मे कार्यकर्ता बनने की भावना कम तथा नेता बनने की भावना अधिक है। हम दूसरे के विचारो को भावना को सुनना व समझना नहीं चाहते, "सतवचन महाराज" को ठीक मानते हैं। हम योजनाए, प्रोग्राम, सुझाव तो बहुत अच्छे-अच्छे दे देते हैं किन्तु उन्हें क्रियान्वित करने मे सहयोग नहीं देते, आदि विचार अधिकतर देखने को मिल रहे हैं। इसलिए हम कहते हैं कि जैसा व्यवहार आप अपने लिये चाहते हैं, वैसा ही दूसरो के साथ करे और इसके साथ ही हमे आर्य माज के दसवे नियम का पालन भी ईमानदारी से करना है—**"सब मनुष्यो को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने मे परतन्त्र रहना चाहिये और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहे।"** यदि आप महर्षि दयानन्द के सच्चे अनुयायी हैं और आर्यसमाज की विचारधारा को ससार में फैलाना चाहते हैं तो आपकी कथनी व करनी मे समानता होनी चाहिये। गरीब, अनाथ, असहाय, बीमार, बच्चे और वृद्धो के प्रति आपको दयालु होना चाहिये। सत्य, धर्म, न्याय का पक्षपातरहित होकर पालन करना चाहिये। स्वार्थसिद्धि के लिये दूसरे के जीवन का शोषण कदापि नहीं करना चाहिये। अन्याय, अत्याचार, अधर्म का विरोध करना चाहिये। एक बार मोहनलाल विष्णुलाल पाण्डया महर्षि दयानन्द से पूछ बैठे कि, महाराज इस देश मे एकता कैसे मजबूत हो सकती है। महर्षि बोले—जब तक एक भाषा, एक धर्म और समाज मे सबको एक जैसा सम्मान नहीं मिलेगा तब तक एकता आनी कठिन है। इसलिये फिर से अपनी अन्तरात्मा मे झाककर देखे कि महर्षि देव दयानन्द के बताये रास्ते पर हम कहा तक चले हैं। उनकी विचारधारा का प्रचार आज हम कितना कर रहे हैं। आज प्रत्येक छोटे से छोटे कार्यकर्ता को जागरूक होना चाहिये। सगठन के प्रत्येक निर्णय समाज हित मे सहमति से लिये जाने चाहिये। थोपने से विघटन की सम्भावना बनी रहती है। आज इस बात पर भी गम्भीरता से विचार होना चाहिये कि जिस भारत देश को स्वाधीन कराने मे आर्यसमाज ने सबसे बडी भूमिका निभाई है, सबसे अधिक बलिदान दिये हैं और जब देश की बागडोर सम्भालने का समय आया तो उसमें शामिल भी नहीं हुये। अपना अस्तित्व ही नहीं रखा, दूसरे राजनैतिक दलो में घुसकर अपनी राजनैतिक इच्छा पूरी करते रहे। आर्यसमाज के पास सबसे अधिक विचारशील, नीतिनिर्माता, देशभक्त, विद्वान्, लेखक, सही दिशा देनेवाले महान् पुरुष थे, किन्तु हम अपना राजनैतिक संगठन बनाकर मैदान मे नहीं उतरे, और हमारा नारा है—**"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्"**।

बौद्ध, ईसाई, मुस्लिम, सम्प्रदाय का विस्तार राजसत्ता से ही हुआ है। हम जोर-जोर से बोल रहे हैं, यह देश आर्यावर्त था, इस देश के निवासी आर्य थे, यहा पर आर्य राजा हुआ करते थे, जिनके राज मे प्रजा सुखी रहती थी। हम प्राचीन इतिहास को पढकर सुनकर ही महान् बनने मे जुटे हैं। वर्तमान में हम कहा खडे हैं, इसका चिन्तन करना चाहिये। अपने वर्चस्व की लड़ाई को छोडकर अहम् और पदो का त्याग कर मिलकर, ग्रामीण और शहरी भावना को समाप्त कर जातिवाद, वर्गवाद को भुलाकर, सभी आर्य इकट्ठे हो जाये, पूरे विश्व पर महर्षि की विचारधारा लागू करने के लिये, उस पर शासन कायम करने की तरफ बढना चाहिये।

राजार्य सभा का गठन जितना शीघ्र किया जाये उतना उत्तम है। इसमे जितना विलम्ब किया जायेगा, उतना हम पिछडते चले जायेगे। आर्यसमाज की शक्ति अपार है, आत्मविश्वास, उत्साह के साथ हम आगे बढेगे। कठिन रास्ता आसान हो जायेगा। इस प्रकार के महत्त्वपूर्ण निर्णयो के लिये आप तैयार होकर आये। ६-७ अप्रैल को रोहतक में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्त्वावधान मे होने जा रहे इस विशाल आर्य महासम्मेलन मे, ठोस निर्णय लिये जायेंगे, आप दल बल के साथ महासम्मेलन में पहुचकर अपनी सगठन शक्ति का परिचय दें। आप तन मन धन से इसको सफल बनाने मे सहयोग देवे।

वह पथ क्या पथिक कुशलता क्या,
जिस पथ पर बिखरे शूल न हों।
उस नाविक की धैर्य परीक्षा क्या,
जब धारा ही प्रतिकूल न हो।।

—**यशपाल आचार्य**, सभामन्त्री

ओ३म्

हरयाणा के आर्यसमाजों के नाम अपील

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्त्वावधान मे ६-७ अप्रैल २००२ को रोहतक मे विशाल हरयाणा प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन होगा। इस सम्मेलन की सफलता सभी आर्यसमाजो के निष्ठावान्, कार्यकर्त्ताओ और अधिकारियो पर निर्भर है। अत हमारा आर्यसमाज के सभी विद्वानो, उपदेशको, लेखको और आर्यसमाज एव शिक्षण-सस्थाओ के अधिकारियो, कार्यकर्त्ताओ से निवेदन है कि आप तन, मन, धन से आर्य महासम्मेलन को सफल बनाने मे सभा के अधिकारियो का पूरा सहयोग करे, इस सम्मेलन मे भारी उत्साह और सख्या मे उपस्थित होकर आर्यसमाज की सगठनशक्ति का परिचय देवे।

आचार्य यशपाल — मन्त्री
स्वामी ओमानन्द सरस्वती — प्रधान

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक

होली का सन्देश

पर्व होली का मनाओ,
लेकिन प्रेम और प्यार से।
ज्ञान की ज्योति जगाओ,
मिलकर हर इसान से।।
अज्ञानता को दूर कर दो,
वेद के प्रचार से।
हो उजाला सबके मन में,
सत्य के प्रकाश से।।
नाश हो जाता है सब कुछ,
जूआ और शराब से।

मानव बनकर जीना सीखो,
धन कमा पुरुषार्थ से।
रग बरसाओ न ऐसे,
जिनमे कुछ खुशबू नहीं।
खुद हसो उसको हंसाओ,
जो कभी हंसता नहीं।।
मधुमास के यौवन की मस्ती,
छा रही सब ओर है।
आओ ! उसे गले लगाओ,
जो बैठा हुआ उदास है।।

—**ले० देवराज आर्यमित्र**, आर्यसमाज कृष्णनगर, दिल्ली-५१

नोट—एक बार ध्यान से पढो आपको अच्छा अनुभव होगा।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा इतिहास के आइने में

सन् १९६६ तक हरयाणा क्षेत्र पंजाब प्रान्त मे सम्मिलित रहा है। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का कार्यक्षेत्र पजाब के अतिरिक्त जम्मू-कश्मीर, हिमाचल, दिल्ली तथा हरयाणा तक था। यहा के आर्यसमाजों तथा आर्य शिक्षण संस्थाओं का सम्बन्ध आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के साथ था। हरयाणा क्षेत्र में आर्यसमाज का आरम्भ से ही प्रभाव रहा है। सन् १९३८ के हैदराबाद आर्य सत्याग्रह तथा सन् १९५७ के हिन्दी रक्षा आन्दोलन आदि जो आर्यसमाज की ओर से सचालित किए गये थे, उनमे हरयाणा क्षेत्र के आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं ने अन्य क्षेत्रो से अधिक सख्या मे भाग लिया था। आर्यसमाज के नेताओ ने आर्यसमाज के प्रचार तथा प्रसार के लिए रोहतक, रेवाड़ी, चरखी दादरी आदि मे हरयाणा प्रान्तीय आर्य महासम्मेलनों का भव्य आयोजन किया, जिनमे भारी सख्या में लोग सम्मिलित हुए थे। इनमे आर्यसमाज के उच्चकोटि के नेता स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी व स्वामी आत्मानन्द जी आदि पधारे थे।

आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब का कार्यालय भारत विभाजन सन् १९४७ से पूर्व गुरुदत्त भवन लाहौर था, बाद मे जालन्धर मे आगया। उस समय हरयाणा क्षेत्र के आर्यसमाजो तथा आर्य शिक्षण सस्थाओ की सम्पत्तियो की रजिस्ट्रिया आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के नाम होती थी। लाहौर में दयानन्द उपदेशक विद्यालय था, जहा स्वामी वेदानन्द जी वेदतीर्थ आदि विद्वानो के आचार्यत्व मे उपदेशक तैयार होते थे। इनमे सभा के महोपदेशक प० रामचन्द्र (वर्तमान स्वामी सर्वानन्द जी) स्वामी सोमानन्द जी, स्वामी सुरेन्द्रानन्द जी, स्वामी ईशानन्द जी, प० मुनीश्वरदेव जी सिद्धान्तशिरोमणि, प० निरजनदेव जी सिद्धान्तभूषण, प० शान्तिप्रकाश जी शान्त शास्त्रार्थमहारथी, प० भरतसिह शास्त्री लोहारू, प० हरिदेव जी सिद्धान्त विशारद, प० जगदेवसिह सिद्धान्ती, प० रामस्वरूप आदि यहा से स्नातक बने और इन्होने पजाब के अतिरिक्त दिल्ली तथा हरयाणा क्षेत्र मे आर्यसमाज का सराहनीय प्रचार कार्य किया है।

पुराने समय मे पजाब सभा का उपकार्यालय आर्यसमाज मदिर जींद शहर मे था। वहा प० रामस्वरूप जी शान्त तथा प० समरसिह वेदालकार ने अधिष्ठाता के रूप मे हरयाणा मे बडी लगन के साथ प्रचार कार्य किया है। इनकी देखरेख मे प० रामचन्द्र जी, प० चिरजीलाल जी, प० ब्रह्मानन्द दयाचन्द, प० मुशीलाल जी, प० विक्रमसिह आर्य, पं० हरयाणानन्द जी, पं० उदयचन्द जी, प० रामकृष्ण आदि की भजनमण्डलिया हरयाणा क्षेत्र मे प्रभावशाली प्रचार करती थी। भारत विभाजन के पश्चात् दयानन्द उपदेशक विद्यालय स्वामी आत्मानन्द जी के आचार्यत्व में शादीपुर (यमुनानगर) खोला गया।

भारत विभाजन के पश्चात् स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज के आदेशानुसार गोहाना मार्ग रोहतक में दयानन्दमठ की स्थापना की गई।

२३ दिसम्बर १९७३ को पंजाब हरयाणा उच्च न्यायालय चण्डीगढ की देखरेख मे आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का वार्षिक चुनाव आर्य महाविद्यालय पानीपत में हुआ। इस चुनाव में स्वामी इन्द्रवेश जी सभा के प्रधान चुने गए। अत. पजाब सभा के उपकार्यालय का सारा रिकार्ड नियमानुसार पहले झज्जर रोड, माडल टाउन तथा बाद मे सुभाष रोड रोहतक के किराए के मकानो मे ले गए। वहीं से सभा के उपदेशक तथा भजनोपदेशक हरयाणा क्षेत्र मे आर्यसमाज का प्रचार कार्य स्वामी इन्द्रवेश जी के निर्देशानुसार करते रहे। श्री केदारसिह आर्य कार्यालय अध्यक्ष थे। आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब का त्रिशाखन होने पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले के आदेशानुसार आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का मुख्य कार्यालय दयानन्दमठ रोहतक मे स्थापित किया गया। अत श्री केदारसिह आर्य पजाब सभा उपकार्यालय को सुभाष रोड से पुन दयानन्दमठ रोहतक मे ले आये।

सन् १९५१ के सार्वदेशिक सभा के प्रस्तावानुसार राजकीय सीमाओ के आधार पर आर्य प्रतिनिधि सभाओ का गठन किया जाये, उस निर्देशानुसार दिनाक २०-५-१९६९ को दयानन्दमठ रोहतक मे हरयाणा के आर्यसमाजो के प्रमुख ४६ आर्य प्रतिनिधियो की एक बैठक स्वामी नित्यानन्द जी महाराज की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई, जिसमे सर्वसम्मति से आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का गठन किया गया। इसमे स्वामी नित्यानन्द जी प्रधान, स्वामी सोमानन्द जी, महाशय प्रभुदयाल आर्य तथा वैद्य बलवन्तसिह आर्य उपप्रधान, श्री वेदव्रत शास्त्री मत्री, श्री रामचन्द्र आर्य तथा प्रो० सत्यवीर जी विद्यालकार उपमत्री, वैद्य भरतसिह आर्य कोषाध्यक्ष तथा श्री वेदपाल वाचस्पति को पुस्तकाध्यक्ष चुना गया। नियमानुसार आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को रजिस्टर्ड करवाने का भी निश्चय किया गया। इस प्रकार रजिस्ट्रार फर्म एव सोसाइटी हरयाणा द्वारा १४ जून १९६९ को यह सभा विधिवित् रजिस्टर्ड की गई।

दिनाक ५-९-१९७१ को सभा का दूसरा अधिवेशन दयानन्दमठ रोहतक मे किया गया इसमे वैद्य बलवन्तसिह आर्य प्रधान, स्वामी ईशानन्द जी लोहारू, श्री हरबसलाल गुप्त रेवाडी तथा वानप्रस्थी, फकीरचन्द जी उपप्रधान, श्री वेदव्रत शास्त्री मन्त्री तथा श्री रणवीर शास्त्री आसन, श्री मनुदेव शास्त्री डालावास उपमत्री, श्री भाई इन्द्रसिह रोहतक कोषाध्यक्ष तथा श्री सत्यवीर विद्यालकार (तिहाड) सोनीपत को सभा का पुस्तकाध्यक्ष सर्वसम्मति से चुना गया। इस अधिवेशन मे शराब आदि सामाजिक बुराइयो के विरुद्ध प्रचार करने तथा नवयुवको का आर्यसमाज के सम्पर्क मे लाने के लिए स्कूलो के लिए अवकाश के दिनों मे सदाचार शिक्षण शिविर लगाने का कार्यक्रम बनाया गया।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का त्रिशाखन

आर्यसमाज की शिरोमणि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने अपनी अन्तरग सभा दिनाक २२ जनवरी १९५१ द्वारा यह प्रस्ताव स्वीकार किया था कि प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओ और आर्यसमाज के कार्यक्षेत्र की सीमा सरकार द्वारा निर्धारित सीमाओ के अनुसार प्रान्तीय प्रादेशिक और स्थानीय मानी जावे। सर्वसम्मति से यह भी निश्चय हुआ कि उक्त प्रस्ताव को सभा की नियमावली की धारा १० के प्रकाश मे अन्तरग सभा क्रियान्वित करे। तदुपरान्त सार्वदेशिक सभा के कार्यालय ने आर्य प्रान्तीय सभाओ की सम्मति प्राप्त की जो सभा के निश्चय के पक्ष मे थी। ये सब सम्मतिया सार्वदेशिक सभा की २४-१०-१९७४ की अन्तरग की बैठक मे प्रस्तुत की गई और सभा ने यथा आवश्यकता एव यथा परिस्थिति प्रान्तीय सभाओ की सीमाए राजकीय सीमाओ के अन्तर्गत कर देने का कार्यालय का निर्णय अकित किया गया। इससे पूर्व दिल्ली, जम्मू-कश्मीर और हरयाणा प्रदेश की पृथक्-पृथक् प्रतिनिधि सभाए बन चुकी थी जो पजाब सभा से सम्बद्ध थी।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अन्तरंग सभा का प्रस्ताव

आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की अन्तरग बैठक दिनाक १६-११-१९७४ को गुरुदत्त भवन जालन्धर मे हुई। उसमे सार्वदेशिक के उक्त प्रस्ताव को स्वीकृत किया और विभाजन की रूपरेखा तैयार करने के लिए एक उपसमिति नियुक्त करदी। इस उपसमिति मे (१) स्वामी इन्द्रवेश जी (सभाप्रधान), (२) आचार्य पृथ्वीसिह आजाद, (३) श्री सोमनाथ मरवाह एडवोकेट, (४) श्री प्रो० शेरसिह जी, (५) डा० हरिप्रकाश, (६) स्वामी अग्निवेश जी, (७) स्वामी रामेश्वरानन्द जी, (८) श्री वीरेन्द्र जी (सभामन्त्री), (९) प्रि० नन्दलाल जी।

इस उपसमिति ने अन्तरग सभा को अपने विचार भेजे और सार्वदेशिक सभा के प्रस्ताव का समर्थन किया। तत्पश्चात् पजाब सभा की अन्तरग बैठक दिनाक २६-४-१९७५ मे निश्चय किया गया कि सभा के विभाजन की पूरी प्रक्रिया सिद्धान्तो के अनुसार सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले को अधिकार दिया गया। वे उन दिनो पजाब सभा के उपप्रधान भी थे। वैसे भी सार्वदेशिक सभा के नियमानुसार सभा को किसी प्रान्तीय सभा की सीमा निर्धारण का अधिकार प्राप्त है। इसी अधिकार के आधार पर जम्मू तथा हिमाचल प्रदेश की पृथक् आर्य प्रतिनिधि सभाए सार्वदेशिक सभा ने स्वीकृत की थीं।

आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के विभाजन के प्रस्तावानुसार पजाब, दिल्ली और हरयाणा सभा की अलग-अलग प्रतिनिधि सभाए राजकीय सीमाए तत् तत् राज्य की सीमाओं के अनुसार होगी और इन सीमाओ के अन्तर्गत आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के नाम रजिस्टर्ड सम्पत्तियो तथा शिक्षण सस्थाओ आदि का स्वामित्व व अधिकार तत् तत् प्रदेश की आर्य प्रतिनिधि सभा का रहेगा। पजाब सभा के साझे कोष का बटवारा ३५ प्रतिशत पजाब, ३५ प्रतिशत हरयाणा तथा ३० प्रतिशत दिल्ली के हिसाब से किया जावेगा।

–यशपाल आचार्य

राग-द्वेष की जले होलिका

राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति, मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ०प्र०)

सकट ग्रस्त हुआ है भू पर, आज मनुजता का अस्तित्व,
मनुष्यता से रहित हुआ है, आज व्यक्तियो का व्यक्तित्व।
है अज्ञान-अभाव-अनय का, फैल रहा कलुषित अधियारा,
आज तिमिर ने शक्ति सृजित कर, प्रभापुज को ही ललकारा।
स्वार्थ-अन्धता बढी चतुर्दिक्, बढी जा रही है पशु-वृत्ति,
फैल रही है आज धरा पर, जन-जन मे आसुरी प्रवृत्ति।
आज बिहसती अभय होलिका, सकटग्रस्त हुआ प्रहलाद,
गली-गली मे उठता निर्मम, दुखी जनो का आर्त-निनाद।
उग्र रूप है धारण करती, आतको की कलुषित साया,
घनीभूत होरही चतुर्दिक्, दुष्ट दनुजता की प्रतिच्छाया।
लोभ-मोह-मद-मत्सर से है, मानव मन दिग्भ्रमित हुआ,
पश्चिम की निकृष्ट प्रथा से, भारत का जन भ्रमित हुआ।
प्रेम परस्पर आज हमारा, अतिशय निश्चित हुआ मलीन,
द्वेष-घृणा मे व कटुता मे, हुआ हमारा मन तल्लीन।
बिखर रहा परिवार हमारा, विघटित होता आज समाज,
बढती हृदय-हृदय की दूरी, आती हमे न किचित् लाज।
जन-जन आज बना है भू पर, जन के ही शोणित का प्यासा,
धू-धू जलती है धरती पर, मानवता की शुचि अभिलाषा।
कर्त्तव्यो को हम भूले है, चाह रहे केवल अधिकार,
पग-पग पर हिसा का ताडव, फैला जग मे हाहाकार।
सत्य-धर्म है रुदन कर रहा, मिलता मिथ्या को सम्मान,
जातिवाद कर रहा बिहस कर, मानवता का कटु अपमान।
भीषण भ्रष्टाचारो की चक्की मे पिसता है जनतत्र,
बना नही यह भारत प्यारा पूर्ण रूप से अभी स्वतत्र।
होली के इस शुभ अवसर पर, आओ ! लें हम दृढसकल्प,
खोले सभी समस्याओ के, समाधान का नया विकल्प।
राग-द्वेष की जले होलिका, मिले मनुजता का उपहार,
मतभेदो को भूल, मनाए, हम सब होली का त्यौहार।

सभा अधिकारियों एवं अन्तरंग सदस्यों व विशेष आमन्त्रित सदस्यों की सेवा में आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्त्वावधान मे हरयाणा प्रान्तीय विशाल आर्य महासम्मेलन दिनाक ६-७ अप्रैल २००२ को दयानन्दमठ रोहतक मे आयोजित किया जारहा है। इस अवसर पर सभा की ओर से एक स्मारिका प्रकाशित की जारही है। सभा अधिकारियो एव सभी अन्तरग सदस्यो एव विशेष आमन्त्रित सदस्यो से अनुरोध है कि यथाशीघ्र अथवा एक अप्रैल २००२ तक अपना पासपोर्ट साइज का फोटो एवं १००/- रु० सहयोग राशि सभा कार्यालय मे भेजने का कष्ट करे ताकि सभी फोटो स्मारिका में प्रकाशित किये जा सकें। स्मारिका की एक प्रति आपको नि शुल्क भेट की जावेगी। आपसे यह भी निवेदन है कि ६ अप्रैल को प्रत्येक अवस्था में रोहतक पधारे, जिससे प्रत्येक कार्यक्रम में आप सम्मिलित हो सके।

वैदिक साहित्य विक्रेताओं को आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्त्वावधान मे हरयाणा प्रान्तीय विशाल आर्य महासम्मेलन दिनाक ६-७ अप्रैल २००२ को दयानन्दमठ रोहतक में आयोजित किया जारहा है। इस अवसर पर जो महानुभाव वैदिक साहित्य, आयुर्वैदिक औषधिया एव अन्य धार्मिक वस्तुओं का स्टाल लगाना चाहते हैं, उन्हें ४०० रुपये प्रतिदिन के हिसाब से भुगतान करना होगा। प्रार्थी शीघ्र सूचना भेजें।

—**यशपाल आचार्य,** मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

आर्य महासम्मेलन हेतु प्राप्त दानराशि

१	सर्वश्री स्वामी ओमानन्द सरस्वती सभाप्रधान (गुरुकुल झज्जर)	११००-००
२	श्री केदारसिह आर्य सभा उपमंत्री (हनुमान कालोनी, रोहतक)	१००-००
३	श्री भूषणकुमार आर्य १०५७ पुरानी सब्जी मण्डी मार्ग, यमुनानगर	२१००-००
४	श्री मा० राजेन्द्रसिंह व श्री नरेन्द्रसिंह मलिक ग्राम बीघल जि० सोनीपत	५०१-००
५	श्री डा० प्रेमसिह मान, मान हास्पीटल रोहतक	५००-००
६	आर्य विद्या मन्दिर वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सै० ७ गुडगाव	२५००-००
७	श्री महीपाल जी भनवाला, सनदीप प्रापर्टी डीलर गोहाना (सोनीपत)	२१००-००
८	प्रो० रामकुमार मलिक, आर०के० फाइनेंस कार्पोरेशन गोहाना (सोनीपत)	११००-००
९	डा० सरला मलिक सुपुत्री चौ० बदलूराम जी ग्राम साघी (रोहतक)	२५०-००
१०	चौ० लालचन्द जी सु० चौ० शीशराम ग्राम गढी बोहर (रोहतक)	५००-००
११	श्रीमती तारादेवी पत्नी डा० सोमवीर जी भरत कालोनी (रोहतक)	५००-००
१२	डा० मनोहरलाल आर्य म०न० ५४७ सै० १५८ फरीदाबाद	५००-००
१३	श्री डा० सुभाष सेठ सु० स्व० कैप्टन सीताराम सेठ रोहतक	११००-००
१४	श्री अत्तरचन्द गुगनानी ग्रीन रोड रोहतक	२५०-००
१५	श्री यज्ञदत्त आर्य सु० स्वर्ग० महा० हरद्वारीलाल जी आर्य स्वर्णकार रेलवे रोड रोहतक	५०१-००
१६	चौ० होशियारसिह राठी सीनियर वकील काठमण्डी रोहतक	५००-००
१७	श्री धर्मवीरसिह छिकारा, खेडी आसरा, रोहतक	५०१-००
१८	श्री प्रवीण तहलान म०न० ११९९ सै० ६ बहादुरगढ (झज्जर)	२५०-००
१९	मा० ब्रह्मजीतसिह आर्य मन्त्री आर्यसमाज सै० ६ बहादुरगढ (झज्जर)	५००-००
२०	श्री पदमचन्द आर्य, आर्य एजेसी आर्यसमाज जैकमपुरा गुडगाव	१०१-००
२१	आर्यसमाज पिनगवा जिला गुडगाव	५००-००
२२	आर्यसमाज पुनाहना जिला गुडगाव	५००-००
२३	श्री राजवीर आर्य म०न० ११८४ एम०सी०एफ० ४५१ न्यू बसेलवा कालोनी फरीदाबाद ओल्ड	२५०-००
२४	चौ० प्रियव्रत जी ठेकेदार शिवाजी कालोनी रोहतक	१०००-००
२५	चौ० सुरेन्दसिह सु० चौ० प्रियव्रत जी शिवाजी कालोनी रोहतक	१०००-००
२६	श्री राजेन्द्रसिह सुपुत्र चौ० प्रियव्रत जी राजौरी गार्डन नई दिल्ली	१०००-००
२७	श्री युवराजसिह सुपुत्र श्री सुरेन्द्रसिह शिवाजी कालोनी रोहतक	१०००-००
२८	श्री आदित्यकुमारसिह सुपुत्र श्री सुरेन्द्रसिह शिवाजी कालोनी रोहतक	१०००-००
२९	श्रीमती बाला धर्मपत्नी श्री सुरेन्द्रसिंह शिवाजी कालोनी रोहतक	१०००-००
३०	श्रीमती मीना धर्मपत्नी श्री राजेन्द्रसिह जे I/१६० राजौरी गार्डन, दिल्ली	१०००-००
३१	कुमारी आकाक्षा सुपुत्री श्री राजेन्द्रसिह जे I/१६० राजौरी गार्डन, दिल्ली	१०००-००
३२	कुमारी अभिरुचि सुपुत्री श्री राजेन्द्रसिह जे I/१६० राजौरी गार्डन, दिल्ली	१०००-००
३३	अभिषेक सुपुत्र श्री राजेन्द्रसिह जे I/१६० राजौरी गार्डन, दिल्ली	१०००-००
३४	मा० महासिंह आर्य ग्राम टिटौली जिला रोहतक	५०१-००
३५	आचार्य दयानन्द जी, दयानन्द ब्रह्ममहाविद्यालय हिसार	१००-००
३६	बाबू मामनसिह मन्त्री दयानन्दमठ रोहतक	१००-००
३७	श्री म० गुरुदत्त जी प्रधान आर्यसमाज प्रधाना मौहल्ला रोहतक	११००-००
३८	डा० सुधीर चौधरी सुपुत्र वैद्य भरतसिंह गुरुकुल कागडी फार्मेसी गोहाना रोड, रोहतक	५००-००
३९	सैनी एजुकेशन सोसाइटी रोहतक	११००-००
४०	श्रीमती सुमित्रा आर्या भजनोपदेशिका महर्षि दयानन्द स्कूल रोहतक	११००-००
४१	श्री सत्यवीर शास्त्री गढी बोहरवाले देव कालोनी, रोहतक	११००-००
४२	श्री भगत मंगतुराम, तावडू, गुडगाव	२५०००-००
४३	चौ० धर्मचन्द जी डी०एल०एफ० कालोनी, रोहतक	१००-००
४४	श्रीमती सजान कौर प्रधान आर्यसमाज प्रीतनगर जालन्धर (पंजाब)	२५०-००
४५	श्री निवास आर्य ग्राम मकड़ौली कलां (रोहतक)	२५०-००
४६	महा० हरदेव आर्य, प्रधान आर्यसमाज किरंज (गुड़गांव)	१००-००
४७	श्री वेदव्रत शास्त्री, आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक	११००-००

(क्रमशः) —**बलराज, सभा कोषाध्यक्ष**

आर्य-संसार

महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्मदिन मनाया

पलवल ८ मार्च। आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द जी का १७८वा जन्मदिन आर्य केन्द्रीय सभा पलवल के तत्त्वावधान में सामान्य हस्पताल मे धूमधाम से मनाया गया। सभा की ओर से हस्पताल में दाखिल रोगियों को फल बाटे गए। विदूषी बहन राजबाला आर्या व अमरचन्द्र जी शास्त्री के ब्रह्मत्व मे बृहद् यज्ञानुष्ठान किया गया। कार्यक्रम मे श्री संजीव मगला एडवोकेट, आदित्य कुलदीप आर्य, आचार्य केसरीसिह जी, श्री जयप्रकाश आर्य, श्री शिवराम विद्यावाचस्पति, धनसिह जी योगाचार्य, ज्ञानचन्द जी शर्मा, श्री आजाद रहेजा मत्री, मा० हरिश्चन्द्र जी आर्य, जितेन्द्रकुमार जी आर्य, रामप्रकाश जी आर्य, वीरसिह जी आर्य, श्री मोतीराम गुप्ता आदि ने भाग लिया। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के भजनोपदेशक श्री मुरारीलाल बेचैन ने उपस्थित जनसमूह को सम्बोधित किया। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए एक सौ रुपये दान दिये। प्रसाद वितरण व शान्ति पाठ के पश्चात् कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

—**यशपाल मगला,** मत्री, आर्यसमाज पलवल शहर

आर्यसमाज के सस्थापक एव युगपुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती के १७८वे जन्मदिन के उपलक्ष्य मे फरीदाबाद जनपद के विभिन्न गावों मे आर्यसमाज के तत्त्वावधान मे कार्यक्रमो का आयोजन किया गया। श्री शिवराम विद्यावाचस्पति व महात्मा गिरिराज याज्ञिक ने गाव-गाव मे जनसम्पर्क किया। उनके परामर्श पर आर्य कन्या गुरुकुल हसनपुर, आर्यसमाज वनचारी औरगाबाद- मितरोल, पिगोड, बडोली, रसूलपुर-घोडी, टीकरी ब्राह्मण, भमरोला, गहलव, कौंडील, हथीन, धतीर, गुरुकुल गदपुरी, पृथला, असावटा, मोहना, गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ आदि गावो मे महर्षि दयानन्द जी का जन्मदिन धूमधाम से मनाया गया। स्थानीय आर्य जनो से सामूहिक स्थानो पर यज्ञ किये तथा अनभिज्ञ लोगो को महर्षि दयानन्द जी के जीवन भर के सघर्ष की जानकारी दी। इस अवसर पर गाव-गाव मे वेदप्रचार करने का सकल्प दोहराया या।

—**विवेकरत्न शास्त्री,** प्रवक्ता, हरयाणा आर्य युवक परिषद्

हिन्दी की राह में रोड़े खड़े करने के विरुद्ध एक जुट होने की अपील

उदयपुर। १२-३-२००२ भारतीय सविधान के अनुच्छेद ३४३ द्वारा हिन्दी को राजभाषा घोषित कर दिया गया, इसके बावजूद यह उपेक्षा का शिकार हो रही है। अनुच्छेद ३४४ के तहत संसदीय राजभाषा समिति का गठन किया जाता है, इस समिति के प्रथम प्रतिवेदन पर राष्ट्रपति जी के आदेश ३०-१२-८८ के तहत 'मेडिकल कॉलेज मे हिन्दी माध्यम से शिक्षण' शुरू करना था। इस बाबत केन्द्र सरकार ने भी राज्य सरकारो को १५-११-८९ को निर्देश जानी कर दिये, परन्तु इसके बाद स्मरण पत्र तक नहीं भेजे, स्वय भी कार्यवाही नहीं की।

केन्द्र सरकार ने लखनऊ के प्रो मुकुलचन्द पाण्डे की अध्यक्षता मे 'चिकित्सा शिक्षा हिन्दी माध्यम समिति' का गठन किया, इसकी रिपोर्ट १९९१ मे प्रस्तुत कर हिन्दी को शिक्षण का माध्यम बनाने की सिफारिश की परन्तु कोई भी कार्यवाही नहीं हो रही है। प्रयोग भाषा का प्राण है, शिक्षा का माध्यम बनाने से ही भाषा का तीव्र गति से विकास होता है।

राष्ट्रपति जी के आदेश, केन्द्र सरकार के निर्देश, पुस्तके, सदर्भ ग्रन्थ, शब्दावली, अध्यापक होने के बावजूद लगातार जब अग्रेजी मे ही शिक्षण चलता रहा तब सैकडों हिन्दीविदो, प्रमुख सासद सर्वश्री बालकवि वैरागी, डॉ० महेशचन्द्र शर्मा, प्रो० रासासिह रावत, डॉ० लक्ष्मीमल सिधवी, डॉ० लक्ष्मीनारायण पाण्डेय एव प्रमुख हिन्दी सस्थाओं ने जब ज्ञापन भेजे तब स्वास्थ्यमत्री ने अपने अर्धशासकीय पत्र क्रमाक यू.-१२०१२/११८/९९/एमई (पी.) दिनांक २८-१-२०० द्वारा माननीय सांसदों को सूचित किया है कि 'चिकित्सा शिक्षा मे हिन्दी माध्यम शुरू करने के विषय की पुन जांच के लिए समिति गठित की जायेगी।'

राष्ट्रपति जी के आदेश डॉ० पाण्डेय समिति की रिपोर्ट पर कार्यवाही नहीं करने की जगह, पुन जाच के लिए समिति गठित करना संविधान के अनुच्छेद ३४३, ३४४ एव ३५१ के अनुकूल नहीं है। हिन्दी की राह मे रोडे खडे करने जैसा है, स्वय तो स्वास्थ्य मत्रालय कार्य नहीं कर रहा, अब इस मामले को अगले १० वर्षों के लिए दफन करना चाहता है, अत इस चाल के विरुद्ध हिन्दी-सेवियो, प्रचारको को एकजुट होकर विरोध करना चाहिए। यह हमारे मौलिक अधिकार के हनन का मामला है। भाषा की गुलामी से मुक्ति का सवाल है, अत हमे एकजुट होना समय की माग है।

—**दर्शनसिह रावत,** सयोजक राष्ट्रीय हिन्दी सेवी महासघ,
ज-१०, सैक्टर न० ५, हिरण मगरी, उदयपुर-३१३००२ (राज०)

उदयपुर जिले के ग्रामों में हुआ वेदप्रचार

दिनाक १९ जनवरी से २२ फरवरी तक श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास के वेदप्रचार वाहन द्वारा न्यास की प्रचार मण्डली के उपदेशक श्री प० रघुनाथदेव वैदिक भूषण, भजनोपदेशक श्री कृष्णकुमार एव श्री पूरणचन्द तथा ढोलकवादक भटून, दरोली, भटेवर, खरसाय, वल्लभनगर, इटाली, रूण्डेदा, नवाणिया, वाना, मेनार, डूगला, बिलोदा, कानोड, बलीचा ढाकिया, लसाडिया, कूण, धरियावद, बडी सादडी, वोहेडा, वानसी, लूणदा, भीण्डर, अमरपुरा, बग्गड व खेरोदा ग्रामो के विद्यालयो मे तथा अनेक सार्वजनिक स्थानो पर प्रवचन एव भजन प्रस्तुत कर वेदो का सदेश पहुचाया। कुछ स्थानो पर यज्ञ भी आयोजित हुये। इस अवधि मे लगभग १३,२६० छात्र-छात्राए अध्यापक व ग्रामीणो ने प्रचार का लाभ उठाया। १२६ लोगों ने वेदप्रचार मण्डल की सदस्यता ग्रहण की तथा लगभग ७३०० रुपयों का वैदिक साहित्य क्रय किया।

—**स्वामी तत्त्वबोध सरस्वती,** अध्यक्ष, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास

आर्यसमाज के उत्सवों की बहार

१	आर्यसमाज मन्धार जिला यमुनानगर	२९ से ३० मार्च
२	हरयाणा प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन, रोहतक	६-७ अप्रैल
३	वैदिक आश्रम न्याणा जिला हिसार	१ से ३ अप्रैल

—**सुखदेव शास्त्री,** सहायक वेदप्रचाराधिष्ठाता

शराब कितनी खराब ? राष्ट्र के विनाश की सबसे बड़ी समस्या—

शराब में डूबा हरयाणा, इसका उद्धार कौन करे ?

सुखदेव शास्त्री, महोपदेशक, दयानन्दमठ, रोहतक

आर्यो के आदिदेश आर्यावर्त भारत में प्राचीन वैदिककाल मे कोई भी मद्य-मास-अण्डो का सेवन नहीं करता था। इस आर्यो के सार्वभौम चक्रवर्ती दुव्यर्सनों से दूर रहने की शिक्षा सभी भारतीय बालको को दी जाती थी। अतएव भारत सारे विश्व मे सर्वश्रेष्ठ चक्रर्ती साम्राज्य था। यहा पर घी, दूध, अन्न, फल ही भोजनो का सार होते थे। गौओ के घी, दूध के सेवन से उन देशवासियो की बुद्धि भी सात्त्विक रहती थी। कहीं कोई उपद्रव नहीं होता था। सभी नरनारी वेदो के अनुयायी होते थे। अतएव सारे ससार का शिरोमणि यह देश भारत कहलाता था।

प्राचीनकाल में आर्यो के राज्य मे शराब-मास-अण्डे अथवा वेश्यागमन कोई भी नहीं करता था। सारे ही वैदिक साहित्य मे इन सब बातो का सर्वथा निषेध किया गया है।

विशेषकर ब्रह्मऋषि देश हरयाणा मे तो कोई भी शराब, अण्डे, मास का सेवन नहीं करता था। कवि शकरनाथ ने लिखा था—

देश अनूप एक हरयाणा,
जहां दूध-दही का खाणा।

इसीलिए ही सस्कृत के कवि ने लिखा—

देशोऽस्ति हरयाणाख्य,
पृथिव्या स्वर्गसन्निभ.।

इसी प्रकार हरयाणा की सभ्यता एव सस्कृति की महिमा गाते हुए सस्कृत के कवि ने हरयाणावी शक्ति का समर्थन करते हुए लिखा था—

यत्र वीरा वृषस्कन्धा भीमार्जुनसमा युधि,
तरुण्य चञ्चलापाङ्ग्यो नृत्यसगीततत्पराः।
कृषिदक्षा धरापुत्रा कुण्डोघ्न्यश्च सुधेनवः,
पुण्यभू. हरयाणेय शौर्य-सौन्दर्य-सुसंवृता।।

हरयाणा मे ही सारे ससार मे श्रेष्ठता मे सर्वोच्चता मे ऋषि-मुनियो का निवास था। अश्वपति जैसे सम्राट् ऋषियो के सामने प्रतिज्ञापूर्वक घोषणा किये करते थे कि—**'न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न मद्यप'** अर्थात् मेरे राज्य मे कोई चोर, कोई धनहीन कगाल एव कोई भी शराबी नहीं है। कोई भी व्यभिचारी पुरुष व स्त्री नहीं है।

आज तो हरयाणा में शराब की नदिया बहती हैं, शराब की नदी मे डूब रहा है हरयाणा।

आपकी विशेष जानकारी के लिए—

२ मार्च को आबकारी (शराब की नीति) के लिये शराब के ठेको के लिये टेण्डर मांगे गए। ३७ समूहो के टेण्डरो को शराब के ठेकेदारों की उपस्थिति में खोला गया। करनाल के कालिदास रंगशाला मे ठेकेदारो ने देशी व अग्रेजी शराब के ठेके लिए। इस पहले चरण में फरीदाबाद, यमुनानगर, रोहतक, नारायणगढ, अम्बाला, भिवानी, फतेहाबाद, झज्जर, जीन्द, कैथल, कुरुक्षेत्र, महेन्द्रगढ, पानीपत, नारनौल और रिवाडी के लिए ठेकों के टेण्डर खोले गए। दूसरे चरण मे ९ मार्च को टेण्डर खोले जाएगे। इन शराब के ठेको की निविदाओ से हरयाणा को २३७ करोड रुपये प्राप्त हुए। कौन सा जिला कितना शराब बेचेगा, कितनी शराब पिलाएगा, विवरण भी सुन लीजिए—

१ फरीदाबाद और यमुनानगर के ठेके "अशोक वाडिया एण्ड ग्रुप" ने लिये हैं। इस ग्रुप ने फरीदाबाद के ठेके १८ करोड ४६ लाख, सूरजकुण्ड के ठेके १६ करोड २५ लाख, सारण के ठेके १४ करोड १९ लाख, बल्लबगढ के ठेके १४ करोड ७३ लाख, होडल के ठेके १२ करोड ८६ लाख रुपये मे लिये हैं। इसी ग्रुप ने यमुनानगर के ठेके १४ करोड, २९ लाख, जगाधरी के ठेके १८ करोड ७० लाख मे लिये हैं।

और अम्बाला वाइन ट्रेडर्स ने अम्बाला के ठेके २ करोड, ९६ लाख, ७७ हजार २५१ रुपये, सूरजनसिंह एण्ड कम्पनी ने नारायणगढ के ठेके ४ करोड ६६ लाख, २२ हजार, २२४ मे, रणवीरसिह एण्ड कम्पनी ने भिवानी के ठेके एक करोड, ५९ लाख, ९९ हजार, ५९९ रुपये में खरीदे। बलजीतसिह एण्ड कम्पनी ने बाढडा के ठेके २ करोड, ६१ लाख, ९९ हजार, ९९९ मे खरीदे। राजेन्द्र कुमार एण्ड कम्पनी ने बहल के ठेके ३ करोड, ५ लाख, ११ हजार २२५ रुपये मे खरीदे। कविराम एण्ड कम्पनी ने भट्टु मण्डी के ठेके दो करोड, ६२ रुपये मे लिये।

१ शिव ट्रेडिग कम्पनी ने भूना के ठेके २ करोड, ६१ लाख, २१ हजार, ४०१ रुपये मे खरीदे।
२ राजकुमार एण्ड कम्पनी ने झज्जर के ठेके ४ करोड, ३२ लाख, ६९ हजार, ९९९ रुपये मे खरीदे।
३ अशोक कुमार मान कम्पनी ने बहादुरगढ के ठेके ९ करोड, ८१ लाख, ६० हजार रुपयो मे खरीदे।
४ कुरुक्षेत्र के ठेके अशोक कुमार एण्ड कम्पनी ने ५ करोड, २५ लाख, २५ हजार रुपये मे खरीदे।
५ कृष्ण कुमार एण्ड कम्पनी ने मिर्जापुर के ठेके ४ करोड, ६५ लाख, २५ हजार रुपयो मे खरीदे।
६ आर के एण्ड कम्पनी ने लाडवा के ठेके ३ करोड, ५८ लाख, ५१ हजार रुपयो मे प्राप्त किए।
७ कालडा एण्ड कम्पनी ने बबैन के ठेके २ करोड, २१ लाख, ११ हजार, १११ रुपये मे खरीदे।
८ डी वाई ट्रेडर्स कम्पनी ने सफीदों के ठेके ६ करोड, ५ लाख, एक हजार रुपये में खरीदे।
९ राजीव कुमार एण्ड कम्पनी ने पुण्डरी के ठेके ४ करोड, ५ लाख, २५ हजार रुपयों मे खरीदे।
१० देवीदयाल एण्ड कम्पनी ने कलायत के ठेके ३ करोड, ८६ लाख, रुपयो में खरीदे।
११ राजवीर एण्ड कम्पनी ने पानीपत के पास बापोली के ठेके २ करोड, ४ लाख, १० हजार में खरीदे।
१२ यूपी एसोसिएट्स ने सब्जी मण्डी के ठेके ४ करोड, ६१ लाख, ११ हजार रुपये मे खरीदे।
१३ इसी कम्पनी ने माडल टाउन पानीपत के ठेके ३ करोड, ६० लाख, ११ हजार रुपये मे लिये।
१४ इसी प्रकार विकास याद एण्ड ग्रुप ने महेन्द्रगढ़ के ठेके ६ करोड, ६ लाख, ६ हजार रुपये मे लिये।
१५ शक्ति वाइन एण्ड ग्रुप ने कलानौर के ठेके ५ करोड, ३० लाख, ५० हजार रुपये मे लिये।
१६ इसी कम्पनी ने महम के ठेके ५ करोड, ९१ लाख, ५ हजार मे लिए।
१७ लाखनमाजरा ग्राम का ठेका ४ करोड, ७६ लाख, ५० हजार रुपये मे उठा।
१८ कर्णसिह यादव एण्ड कम्पनी ने नारनौल के ठेके ३ करोड, २२ लाख, १० हजार, ७५२ रु० मे लिए।
१९ विक्रान्त यादव कम्पनी ने अटेली के ठेके २ करोड, १३ लाख, १३ हजार रुपये मे लिए।
२० इसी ग्रुप ने नारनौल के ठेके ६ करोड, ६ लाख, ६०० रुपये मे खरीदे।
२१ विष्णुदास एण्ड कम्पनी ने रिवाडी के ठेके ४ करोड, ३५ लाख रुपये में खरीदे।
२२ नोवल वाइन कम्पनी ने कुण्ड के ठेके २ करोड, ५४ लाख, २७ हजार रुपये मे लिए।
२३ शक्ति वाइन एण्ड कम्पनी ने रोहतक शहर के ठेके ६ करोड, ३५ लाख मे लिए।
२४ इसी कम्पनी ने सापला के ठेके ६ करोड, २२ लाख, ५० हजार मे लिए है।

इस प्रकार हरयाणा सरकार ने हरयाणा मे शराब की नदिया बहा दी हैं। सतलुज-यमुना लिक नहर तो पता न कब आएगी, शराब की नदी तो सरकार ले ही आई है।

इसमे हरयाणा बेशक डूब कर मर जाये चाहे शराब पीकर आत्महत्या भी कर ले, शराब पीकर अपनी पत्नी की भी हत्या कर दे, यह कोई बात न होगी। शराब से सभी परिवार बर्बाद होते जा रहे हैं।

आर्यसमाज ने नेताओ ने व जनता ने शराबबन्दी सत्याग्रह करके शराब बन्द करवाई, बसीलाल शराबबन्दी के वायदे के कारण ही मुख्यमन्त्री बने थे। किन्तु बसीलाल ने शराब फिर से लागू कर दी, उनकी पार्टी के लोगो ने शराब बन्दी मे करोडो रुपये कमाए। आर्यसमाज ने शराबबन्दी में अपनी सारी शक्ति लगा दी थी। उसके साथ धोखा किया।

आज शराब पिलाने में हरयाणा सारे देश में सबसे आगे है।

अब फिर ६-७ अप्रैल को रोहतक दयानन्दमठ मे होने वाले प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में शराबबन्दी पर फिर से विचार होगा। इस महासम्मेलन में बहुत बडी सख्या में लोग पधारेंगे। इसमें आप भी आए और आर्यसमाज को तन-मन-धन से सहयोग दे।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिग प्रेस, रोहतक (फोन : ०१२६२-७६८७४, ७७८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ०१२६२-७७७२२) से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३ सृष्टिसंवत् १, ९६, ०८, ५३, १०३
पंजीकरणसंख्या टैक/85-2/2000 ☎ ०१२६२-७७७२२

रोहतक

प्रधानसम्पादक : यशपाल आचार्य, सभामन्त्री सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री

वर्ष २६ अंक १६ ७ अप्रैल, २००२ वार्षिक शुल्क ८०) आजीवन शुल्क ८००) विदेश में २० डॉलर एक प्रति १.७०

ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
दयानन्दमठ, रोहतक के तत्त्वावधान में

हरयाणा प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन

का

कार्यक्रम

दिनांक ६ अप्रैल, २००२

महायज्ञ
प्रात ७ बजे से ९ बजे तक
ब्रह्मा–पं० सुदर्शनदेव आचार्य, रोहतक
अध्वर्यु–स्वामी श्री वेदरक्षानन्द
गुरुकुल कालवा, जीन्द

ध्वजारोहण
प्रात ९ बजे से ९-१५ बजे तक।
स्वामी ओमानन्द सरस्वती
आचार्य गुरुकुल झज्जर

आर्य बलिदान भवन का उद्घाटन
प्रात. ९-१५ बजे से ९-३० बजे तक
चौ० मित्रसेन सिन्धु, रोहतक

आर्य संगीत
९-३० बजे से १०-०० बजे तक
सहदेव बेधड़क, तेजवीर आर्य, पुष्पा शास्त्री, कलावती आचार्या, जयपालसिह, रामरख आर्य, पं० दाऊदयाल आर्य (अम्बाला छावनी), प० चिरंजीलाल आदि।

वैदिक धर्म सम्मेलन
प्रात १० बजे से दोपहर १२ बजे तक
अध्यक्ष : श्री धर्मबन्धु (गुजरात)
प्रमुख वक्ता–प्रो० शेरसिंह

आर्यराज सम्मेलन
दोपहर १२ बजे से साय २ बजे
अध्यक्ष–चौ० साहिबसिंह वर्मा, दिल्ली
प्रमुखवक्ता–स्वामी अग्निवेश
चौ० राममेहर एडवोकेट

नगर कीर्तन (शोभायात्रा)
सायं २ बजे से ५ बजे तक
संयोजक–वेदप्रकाश आर्य (आर्यवीर दल)

सन्ध्या–भोजन आदि
नित्यकर्म–साय ५ बजे से ७ बजे तक

आर्य संगीत
रात्रि ७ बजे से ८ बजे तक

आर्य महिला सम्मेलन
रात्रि ८ बजे से १० बजे तक
अध्यक्ष–कु० शकुन्तला प्राचार्या (सोनीपत)
प्रमुखवक्ता–श्रीमती प्रभातशोभा

दिनांक ७ अप्रैल, २००२

महायज्ञ
प्रात ७ बजे से ९ बजे तक

गोरक्षा सम्मेलन
प्रात ९ बजे से ११ बजे तक
अध्यक्ष–आचार्य बलदेव
गुरुकुल कालवा, जीन्द
प्रमुख वक्ता–स्वामी गोरक्षानन्द, उचाना

भोजन–विश्राम
प्रात ११ बजे से दोपहर १ बजे तक
प्रबन्धक–श्री सुरेन्द्र शास्त्री, गोहाना

आर्यवीर सम्मेलन
साय १ से ४ बजे तक
अध्यक्ष–स्वामी इन्द्रवेश, रोहतक
प्रमुखवक्ता–डॉ० देवव्रत आचार्य
प्रधान सेनापति आर्यवीर दल

धन्यवाद एवं शान्तिपाठ
साय ४ बजे से ४-१५ बजे तक
सयोजक द्वारा

निवेदक :

सभाप्रधान	सभा उपप्रधान	सभामन्त्री
स्वामी ओमानन्द सरस्वती	**वेदव्रत शास्त्री**	**यशपाल आचार्य**
अध्यक्ष	स्वागताध्यक्ष	सयोजक

वैदिक-स्वाध्याय

प्रभु की प्राप्ति !

सदा व इन्द्रश्चर्कृषत् आ उपो नु स सपर्यन्।
न देवो वृत. शूर इन्द्र.।। सामo पूo ३।१।१।३।।

शब्दार्थ–हे मनुष्यो ! **(इन्द्र.)** परमेश्वर **(व)** तुम्हे **(सदा)** सदैव **(आचर्कृषत्)** अपनी तरफ आकर्षित कर रहा है। **(स)** वह **(नु)** नि सदेह **(उप उ)** समीप ही, समीपता के साथ **(सर्पयन्)** तुम्हारी सेवा करता हुआ है। **(शूर इन्द्र देव)** वह महापराक्रमी इन्द्रदेव **(न वृत)** ढका हुआ, आच्छादित नहीं है।

विनय–हे मनुष्यो ! तुम अपने परमात्मा से प्रेम क्यो नहीं करते ? जहा हरिकथा होती है वहा से तो तुम भाग आते हो। बार-बार प्रभु चर्चा होती देखकर तुम ऊबते हो जबकि विषयो की चर्चाये सुनने के लिये सदा लालायित रहते हो। तुम्हारे उस अपने पिता से इतना हटाव क्यो है ? तुम चाहे जो करो, पर वह देव तो तुम्हे कभी भुला नही सकता। वह तो तुम्हे प्रेम से अपनी तरफ आकर्षण ही कर रहा है सदा आकर्षण कर रहा है, निरन्तर अपनी तरफ खींच रहा है। तुम जानो या न जानो पर व अत्यन्त समीपता के साथ माता की तरह तुम पुत्रो की निरन्तर परिचर्या भी कर रहा है। वह परमेश्वर हमारे रोमरोम मे रमा हुआ हमारे एक-एक श्वास के साथ आता-जाता हुआ, हमारे मन के एक-एक चिंतन के साथ तद्रूप हुआ, और क्या कहे, हमारी आत्मा की आत्मा होकर, एक अकल्पनीय एकता के साथ हमसे जुडा हुआ है। हमे ससार मे जो कुछ प्रेम, आराम, वात्सल्य, भोग, सेवा, सुख मिल रहा है वह किन्ही मित्रो या प्राकृतिक वस्तुओ से नही मिल रहा है। वह केवल हमे अपनी तरफ खीच ही नही रहा है, किन्तु इतनी समीपता से निरन्तर हमारी सेवा भी कर रहा है, प्रेमप्रेरित होकर हमारी खिदमत कर रहा है, हमारा पालन, पोषण, रक्षण दु खनिवारण आदि सब परिचर्या कर रहा है। अरे ! वह तो कहीं छिपा हुआ भी नही है। उसके और हमारे बीच मे कोई भी आवरण नही है। उसे ढका हुआ, आच्छादित भी कौन कहता है ?

हे मनुष्यो ! सच बात तो यह है कि यदि हम उसके प्रेमाकर्षण को जानने लग जाये-वे प्रभु देव सदा प्रेम से हमे अपनी तरफ खीच रहे है, यह हम सचमुच अनुभव करने लग जाये-तो हमे यह भी दीख जाये कि वे हमारे अत्यन्त निकट है और अत्यन्त निकटता के साथ हमारी सेवा-शुश्रूषा कर रहे हैं, और फिर एक दिन हमे यह भी दीख जाये कि वे सब ब्रह्माण्ड के रचयिता महापराक्रमी इन्द्र प्रभु-जिनके कि विषय मे परोक्षतया हम इतनी बाते सुना करते थे, वे-हमसे किसी आवरण से ढके हुए भी नही हैं, वे प्रत्यक्ष हमारे सामने हैं और यह दीख जाना ही परमात्मा का साक्षात्कार करना है परम प्रभु को पा लेना है। **(वैदिक विनय से)**

हरयाणा प्रांतीय आर्यमहासम्मेलन ६-७ अप्रैल, २००२ को

आर्यो ! रोहतक चलो।

हरयाणा के सभी आर्यसमाजो एवं आर्यशिक्षणसस्थाओ व आर्य कार्यकर्त्ताओ से विशेष नम्र-निवेदन है कि आर्यमहासम्मेलन ६-७ अप्रैल २००२ को रोहतक की ऐतिहासिक पवित्र धरती पर होने जारहा है, इसको सफल बनाने के लिए सबके सहयोग की अत्यन्त आवश्यकता है, आप अधिक से अधिक अपना सहयोग प्रदान करें। प्रत्येक आर्यसमाज के अधिकारी, अपना आर्थिक, सहयोग सभा कार्यालय के पते पर भेजने का कष्ट करे तथा सम्मेलन मे पहुचने के लिये, सभी आर्यसमाज अपने सदस्यो को साथ लेकर कम से कम एक वाहन के साथ ट्रैक्टर, बस आदि से पहुचे। सभी केन्द्रीय सभाये, सभी आर्यवीरदल एव अन्य सगठन पूरी तैयारी के साथ मोटो व ओम् के ध्वज लेकर सम्मेलन मे पधारे। नौजवान शोभायात्रा तथा आर्यमहासम्मेलन के प्रबन्ध मे सहयोग प्रदान करेंगे, गुरुकुलो के ब्रह्मचारियो तथा कन्या गुरुकुलो की ब्रह्मचारिणियो के कार्यक्रम भी आकर्षण का केन्द्र होगे। सभी आर्यसमाजो से कितनी सख्या मे अधिकारी एव कार्यकर्त्ता पधारेगे इसकी सूचना भी पूर्व ही सभा कार्यालय को पत्र द्वारा दीजाए जिससे सभी के भोजन एव आवास की व्यवस्था सुचारुरूप से की जासके। सम्मेलन मे पधारनेवाले सभी आर्यमहानुभावो का स्वागत है। सम्मेलन मे भारी सख्या मे पहुचकर आर्यसमाज की सगठनशक्ति का परिचय देवे।

–सभामन्त्री

ओ३म्

हरयाणा के आर्यसमाजों के नाम अपील

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्त्वावधान मे ६-७ अप्रैल २००२ को रोहतक मे विशाल हरयाणा प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन होगा। इस सम्मेलन की सफलता सभी आर्यसमाजो के निष्ठावान् कार्यकर्त्ताओ और अधिकारियो पर निर्भर है। अत हमारा आर्यसमाज के सभी विद्वानो, उपदेशको लेखको और आर्यसमाज एव शिक्षण-सस्थाओ के अधिकारियो, कार्यकर्त्ताओ से निवेदन है कि आप तन, मन धन से आर्य महासम्मेलन को सफल बनाने मे सभा के अधिकारियो का पूरा सहयोग करे इस सम्मेलन मे भारी उत्साह और सख्या मे उपस्थित होकर आर्यसमाज की सगठनशक्ति का परिचय देवे।

आचार्य यशपाल — मन्त्री
स्वामी ओमानन्द सरस्वती — प्रधान

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक

यज्ञोपवीत का सन्देश

यज्ञोपवीत के तीन तार — देता है सदेश अपार।
देव, पितृ और ऋषि ऋण — तीन ऋणो का हम पर है भार।
कैसे ये ऋण चुका सकोगे — इस पर करो जरा विचार।
माता–पिता और गुरुजनो का — करते रहो आदर सत्कार।
ईश्वर जीव और प्रकृति — आधारित इन पर ससार।
सत–रज–तम तीन गुणो का — सृष्टि मे चलता व्यवहार।
देवपूजा सगतिकरण दान — इन मे है यज्ञ का सार।
ज्ञान कर्म और उपासना — भवसागर से कर दें पार।
वात–पित्त और कफ शरीर में — सम रहे ऐसा करो आहार।
छल कपट और झूठ को त्यागो — करो सच्चाई का व्यापार।
भूर्भुव स्व के अर्थो का — जन जन मे होवे सचार।
जीवन को शुद्ध सरल बनाओ — मनुर्भव का करो प्रचार।
प्रतिज्ञा और पवित्रता का — ध्यान रहे करो उपकार।
द्यौ अन्तरिक्ष और पृथ्वी पर — वैदिक धर्म की हो जयकार।

–**देवराज आर्य मित्र**, आर्यसमाज कृष्ण नगर, दिल्ली-५१

आर्य युवको – आगे बढ़ो

युवा वर्ग उस महासागर के दरिया के समान है, जैसे बहते हुए दरिया के पानी में रचनात्मक और विध्वंसात्मक गुण विद्यमान हैं, ठीक दिशानिर्देशन करके यदि दरिया के पानी को नहरे बनाकर शुष्क भूमि को सिञ्चित करने के लिये प्रयुक्त किया जाये तो वह जल लहलहाती हरी भूमि को परिवर्तित कर सबका जीवनाधार अन्न उत्पादन का हेतु हो जाता है और यदि उस महासागर के दरिया को बाध और नहरो मे न बांधा जाये तो वहीं जल बाढ का रूप धारण कर सर्वनाश का ताण्डव रच देता है और समाज मे त्राहि-त्राहि मचा देता है। यही स्थिति युवा की है। युवा वह अवस्था है जिसमे रवानगी, तूफानी व अद्भुत कार्यशक्ति होती है। नौजवान की करवट बदलने पर युग का इतिहास बदल जाता है। उसकी भुजा उठाने पर युग का विश्वास और जग की आशाये बध जाती हैं। सगठित होकर श्वास लेने पर, आकाश और पाताल बदल जाया करता है। ऐसे महासागर के समान युवा शक्ति को जब सही दिशा निर्दिष्ट हो जाये तो कठिन से कठिन कार्य को आसान कर उसे सम्पादित कर देती है, और जब उसे दिशा निर्देशन नहीं मिलता हो तो, वही युवा शक्ति उच्छृखलता, अराजकता और अनुशासनहीनता का कारण बन जाती है तथा विभिन्न प्रकार के दोष और कमजोरिया घर कर जाती हैं और ये आदते जीवन का आवश्यक अग का रूप धारण कर लेती है जिसे जोश के बाद होश आने पर दुश्चरित्रता और हानिकारक समझते हुये उसे छोड नही पाते और जीवन दिन प्रतिदिन हानिकारक, क्लेशमय, कष्टप्रद होता जाता है। खासतौर से ऐसे बिगडे हुये, बुराइयो से लिप्त नौजवानो के लिये, स्वामी श्रद्धानन्द अत्युत्तम उदाहरण हैं। स्वामी श्रद्धानन्द एक ऐसे महापुरुष थे जो कीचड मे फसे हीरे के समान थे। जो बाद मे सबके लिये एक आदर्श बने और राजनीतिक तथा समाज सुधार के बहुत बडे क्रान्तिवीर बनकर भारतीय इतिहास पटल पर अवतरित हुये।

इसी प्रकार यदि आज का युवा भी स्वामी श्रद्धानन्द जैसे महापुरुषो को अपना आदर्श माने अपनी भारतीय संस्कृति और सभ्यता के प्रति समर्पित हो, आर्यसमाज के नेतृत्व मे अधिक से अधिक युवा सगठित होकर चले तो समाज परिवर्तन की विशेष भूमिका निभा सकते हैं। रण, भक्ति और दान इनको नौजवान उत्साह और अपनी क्षमता से पूरा कर सकता है। नौजवानो की बहादुरी और बलिदान से देश आजाद हुआ है। आर्यसमाज के दीवाने शहीद रामप्रसाद बिस्मिल ने फासी पर चढने से पहले 'विश्वानि देव०' मन्त्र का पाठ किया और देशभक्ति की यह कविता पढी जो आज इस देश के वीरो को झकझोरती है।

"सरफरोसी की तमन्ना आज हमारे दिल मे है,
देखना है जोर कितना बाजुए कातिल में है।
खुश रहो अहले वतन हम तो सफर करते हैं,
वतन की आबरू का पाश देखें कौन करता है।
सुना है आज मकतल में हमारा इम्तिहा होगा,
एक मिट जाने की हसरत बस दिले बिस्मिल है।।

इस प्रकार की वीरता भरी कविताओ को गाते हुए, झूमते हुए इस देश के वीरो ने बलिदान दिये, फांसी पर चढे, जेलें काटी, यातनाये सहीं और इस भारतवर्ष को आजाद कराया। किन्तु आज फिर इस देश को उन नौजवानों की आवश्यकता है जो दयानन्द के सच्चे सिपाही हैं। आर्यसमाज के दीवाने हैं।

अंग्रेज इस देश से चले गए किन्तु अंग्रेजो के बनाये कानून इस देश मे चल रहे हैं। अंग्रेजो की भाषा इस देश में लागू है, उनकी वेशभूषा, पाश्चात्य शिक्षा-दीक्षा और सभ्यता मे रगा आज का समाज अत्यन्त स्वार्थी हो गया है। देशभक्ति समाप्त होती जा रही है। विदेशी कम्पनिया इस देश को बुरी तरह से समाप्त करने पर तुली हैं। लूटपाट, चोरी, डकैती, हिंसा, अपहरण की घटनाए दिन-प्रतिदिन बढ रही हैं। आतकवाद, अराजकता, घोर निराशा का वातावरण चारो तरफ दिखाई दे रहा है। राजनैतिक दल जातिवाद, सम्प्रदाय के उग्रवाद को बढावा दे रहे हैं तथा बदमाशो को पूरा सरक्षण प्रदान किया जा रहा है। आज देश की अफसरशाही से समाज का हर वर्ग परेशान है। अन्धविश्वास और पौराणिकवाद, मठाधीशवाद, गुरुडमवाद ने भयंकर रूप धारण कर लिया है। दया, धर्म, अहिंसा का उपदेश तो है, आचरण मे समाप्तप्राय है। धार्मिकता, सज्जनता, साधुता, सत्यता जीवन मे दिखाई नहीं देती है। अर्थलोलुपता, पदलोलुपता, अधिकारवाद चहु ओर छाया हुआ हे। समाज मे यत्र-तत्र त्राहि-त्राहि की आवाजे सुनाई दे रही हैं।

इस समय फिर देश को स्वामी दयानन्द और श्रद्धानन्द की आवश्यकता है। नेता जी सुभाषचन्द्र बोस और लाला लाजपतराय की आवश्यकता है। भगतसिह, बिस्मिल, चन्द्रशेखर आजाद, महाराणा प्रताप, शिवाजी जैसे वीरो की आज आवश्यकता है। इसलिये आप सभी आर्य पूरी तैयारी के साथ ६-७ अप्रैल २००२ को होनेवाले आर्य महासम्मेलन मे पधारे। इस अवसर पर उन तमाम समस्याओ के समाधान हेतु गम्भीर चिन्तन होगा और ठोस कार्यक्रम बनाया जायेगा। अत मैं उन सभी आर्यवीरो का आह्वान करता हू जिनके दिलो मे आर्यसमाज की ज्वाला जल रही है। महर्षि दयानन्द और श्रद्धानन्द जिनके मन मे बसे हुए हैं, भारतीय सस्कृति और सभ्यता के जो उपासक है, देशभक्ति जिनकी रगो मे बह रही है। वे सभी फिर से ओ३म् के झण्डे के नीचे सगठित होकर समाज निर्माण का सकल्प ले और विश्व को वेदपथगामी बनाने के लिये कार्य करे। हर क्षेत्र मे आर्यवीरो को क्रान्ति की मशाल जलानी होगी। आर्यवीर दल और आर्य वीरागना दल गाव स्तर तक अपना सगठन स्थापित करे। आर्यसमाजे तथा आर्य शिक्षण सस्थाये जगह-जगह उपदेशक, विद्यालय, गुरुकुल, व्यायामशाला खोलने के लिये आर्थिक साधन उपलब्ध कराये। स्वाध्याय और लेखन की प्रवृत्ति को बढाया जाये। आर्यसमाज मन्दिरो का निर्माण और उपयोग, समाजहित कार्यों मे किया जाये। उपासना स्थल के साथ-साथ आर्यसमाज की छावनिया भी हैं। आर्यवीरो के प्रशिक्षण केन्द्र के रूप मे भी इनका उपयोग होना चाहिये। उत्तम खेती, उत्तम व्यापार के अनुसधान केन्द्र भी स्थापित हो। आधुनिक प्रचार साधनो का आर्यसमाज की विचारधारा को फैलाने के लिये पूरा उपयोग करना चाहिये। आर्यों का अपना अलग एक राजनैतिक मच होना चाहिए। इसमे जितनी देरी होगी उतना ही नुकसान है।

महर्षि दयानन्द जब तीनो ही सभाओ के गठन की बात कहते हैं, हमे दूसरो का दामन पकडने की क्या आवश्यकता है। बिना राजार्य सभा के "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" का उद्घोष अधूरा है। हम आगे बढने की अपेक्षा पीछे हटते चले जायेंगे। इसलिये आओ आज हम इन सब ज्वलन्त समस्याओ पर गम्भीरत से चिन्तन करे। स्वार्थ और अहम् का परित्याग कर सगठित होकर, आगे बढे। आर्याभिविनय मे ईश्वर से प्रार्थना करते हुए महर्षि दयानन्द लिखते हैं-हमको सत्यविद्या से युक्त सुनीति देके साम्राज्याधिकारी सद्य कीजिये। हम पर सहाय करो जिससे सुनीति युक्त होके हमारा स्वराज्य अत्यन्त बढे। महर्षि की इस भावना को हमने नहीं समझा, वे बहुत जल्दी राजार्य सभा के द्वारा देश पर आर्यों का शासन देखना चाहते थे। इसलिए आओ हम सब आर्य मिलकर महर्षि के विचारो को पूरा करने का सकल्प ले।

—आचार्य यशपाल, सभामन्त्री

बेरोजगारी की समस्या

भारत एक विशाल देश है। जनसख्या के हिसाब से तो आज यह विश्व का प्रथम बडा गणतन्त्र देश है। निरन्तर तेजी से बढती हुई जनसख्या भी भारत मे एक समस्या बन गई है। परन्तु इतने विशाल देश मे एक ही समस्या नही है वरन् अनेक समस्याए हर समय मुहबाये खडी रहती हैं। उदाहरण के तौर पर महगाई व बेरोजगारी आदि। परन्तु महगाई के इस जमाने मे जिस समस्या ने विकराल रूप धारण कर रखा है उसका नाम है-बेरोजगारी।

यह तो सर्वविदित है कि भारत मे रोजगारी के साधन बहुत कम हैं, परन्तु जनसख्या वृद्धि ने तो इस दैत्य को बहुत सहारा दिया है। लाखो की सख्या मे बेरोजगार नवयुवक-नवयुवतिया काम की तलाश मे जूते चटकारते घूम रहे हैं। परन्तु कहीं भी कार्य न मिलने पर उनके चेहरो पर निराशा का स्थायी अधिकार साफ झलकता है।

यदि आम भारतीय नागरिक बेरोजगारी के कारणो पर ध्यान दे तो वह स्वय समझ सकता है कि इस समस्या के जन्मदाता वे स्वय एव देश की राजनैतिक, सामाजिक अर्थव्यवस्था है। सर्वप्रथम यहा की सामाजिक व्यवस्था विचारणीय है। पुरुष प्रधान समाज मे पहले शिक्षा सिर्फ पुरुषो के लिए

(शेष पृष्ठ ६ पर)

तीर्थयात्रा और आर्यसमाज

–डॉ० मनोहरलाल आर्य, ५४७, सैक्टर-१५ए, फरीदाबाद

सर्वहितकारी के १४ अगस्त के अक मे छपे तीर्थयात्रा और आर्यसमाज का लेख पढकर मुझे भी प्रेरणा मिली कि मैं तीर्थो के प्रति आर्यसमाज का कर्त्तव्य और आर्यसमाज की आवश्यकता पर अपने विचार लिखू। आप सब जानते हैं कि देव दयानन्द जी ने वेदप्रचार को मूर्तरूप देने के लिए हरिद्वार मे ही कुम्भ मेले के अवसर पर पाखण्ड खण्डनी पताका फिराकर वेदप्रचार कार्य आरम्भ किया था। उन्होने यह अनुभव किया था कि आर्यसमाज का सही रूप तीर्थो पर ही प्रदर्शित हो सकता है। उस लेख मे केवल तीर्थो पर जाने वाले यात्रियो के समाचार पत्रो मे छपे आकडे देकर ही इतिश्री कर दी है। लेखक ने तीर्थो के प्रति आर्यसमाज के कर्त्तव्य का कुछ जिकर नही किया। मैंने हरिद्वार के इलावा उत्तरी भारत के कई तीर्थो की यात्राये की हैं उनके बारे मे अपने विचार दे रहा हू। मैने अनुभव किया है कि आर्यसमाज के प्रचार के लिये तीर्थ ही उचित क्षेत्र हैं। मगर आर्यसमाज ने अभी तक इस ओर ध्यान ही नही दिया। यह सब ऐसे तीर्थ है जहा पर अपने देश के इलावा विदेशो के यात्री भी बडी सख्या मे आते हैं।

१ सबसे पहले आप पुष्पकरराज जो कि आर्यसमाज के बडे स्थान अजमेर की बगल मे है, को ले जिसको भूमि का चौथा नेत्र माना जाता है। जहा पर बडी तादाद मे यात्री जाते हैं। पुष्कराज मे स्थित ब्रह्मा जी के मन्दिर के एक कमरे मे बैठकर स्वामी दयानन्द जी महाराज ने यजुर्वेद का भाष्य किया था। जिसमे अभी तक स्वामी जी के प्रयोग मे आनेवाली छोटी मेज, आसन की चौकी सब सामान आदि सुरक्षित पडा है। उस समय यह कमरा बद रहता था। पर अब यह कमरा आर्यसमाज के कब्जे मे है। जिसको आर्यविचारो के यात्री बडी श्रद्धा से देखने जाते हैं। इस स्थान पर भी आर्यसमाज नहीं है। तीर्थस्थानो पर सारे पौराणिक विचारो के लोग ही नहीं जाते अपितु बहुत से लोग खासकर विदेशी पर्यटक भी आते हैं। जोकि होटलो और पौराणिक पाडो के आश्रमो मे ठहरते है। यहा पर आर्यसमाज मन्दिर और यात्रीगृह होना चाहिए जिस मे यात्रियो के ठहरने की पूरी व्यवस्था हो। प्रात सत्सग हो, प्रचार और सत्सग एक विद्वान् महात्मा द्वारा कराने का प्रबध हो, इससे आर्यसमाज के कार्य को बढावा मिलेगा। यात्रियो को सुख मिलेगा और यात्रियो द्वारा दान से कार्य भी चलता रहेगा। इस आर्यसमाज का सारा प्रबन्ध परोपकारिणी सभा अजमेर के हाथ मे हो।

२ वैष्णो देवी की यात्रा पर साल मे लाखो लोग जाते है, जम्मू से आगे कटरा तक बसें जाती हैं। कटडा से आगे पैदल यात्रा शुरू होती है। कटडा मे आर्यसमाज मन्दिर और यात्रीगृह होना चाहिए। जिस मे यात्रियो के ठहरने की पूरी व्यवस्था हो। इसके साथ रोजाना हवन यज्ञ और सत्सग का प्रबन्ध हो। क्योकि वैष्णो देवी भवन पर तो यात्री मजबूरी मे ही ठहरते हैं। वरना आमतौर पर तो यात्री आते-जाते रात को कटडा मे ही विश्राम करते हैं। इससे यात्रियो पर आर्यसमाज का बहुत अच्छा प्रभाव पडेगा। इसका सारा प्रबन्ध जम्मू आर्यसमाज के ही जिम्मे हो।

३ अब हरिद्वार को लें जोकि भारत का सबसे बडा तीर्थ है। वहा पर रोजाना लाखो की सख्या मे यात्री पहुचते हैं और आगे उत्तराखण्ड की यात्रा पर लोग जाते हैं। यह ठीक है कि हरिद्वार मे आर्यसमाज की गइ सस्थाये हैं पर उनमे आम यात्री के ठहरने की कोई व्यवस्था नहीं है। इसके मुकाबले मे बडे-बडे यात्री गृह दूसरी सस्थाये, जैराम आश्रम, हरमिलाप भवन, भगवान भवन, पजाब सिंध क्षेत्र आदि है जिनमे हर प्रकार की सुविधा प्राप्त है और साथ ही रोजाना सत्सग का आनन्द भी मिलता है। यहा पर आर्यसमाज मन्दिर और यात्री गृह अवश्य होना चाहिए, जिसमें ठहरने और सत्सग की पूरी व्यवस्था हो।

४ इससे आगे ऋषिकेश एक ऐसा स्थान है और ऐसा पडाव है जहा से उत्तराखण्ड की यात्रा शुरू होती है। यहा पर भी कई दूसरी सस्थाओ के आश्रम है जिनमे ठहरने की पूरी व्यवस्था मिलती है। एक बडा भारी गुरुद्वारा और यात्री गृह भी है। जिसमें आम यात्री और खासतौर पर हेमकुण्ड के यात्री ठहरते हैं, जहा पर चौबीस घण्टे लगर भी चलता है।

परन्तु आर्यसमाज की ओर से ऐसा कोई प्रबन्ध नही है। यहा आर्यसमाज मन्दिर तो है पर वहा की तो सारी व्यवस्था ही बिगडी हुई है। इसका पुनर्निर्माण होना चाहिए। बडी ही मौके की जगह पर है। गगा घाट और रेलवे रोड पर पडता है। इसमें यात्री गृह और यज्ञशाला का निर्माण हो। रोजाना सत्सग हो, सेवक के इलावा किसी साधु महात्मा के रहने का भी प्रबन्ध किया जाये। इससे आगे बद्रीनाथ, किदारनाथ और गगोत्री की यात्राये शुरू होती हैं। आमयात्री आरम्भिक स्थानो पर ही रहना पसद करता है। पहले आप गगोत्री की यात्रा को ले। ऋषिकेश से गगोत्री तक बसे आदि जाती हैं। ऋषिकेश से अगला पडाव उत्तरकाशी है जो कि बडा मनोरजक स्थान है। सडक के ऊपर और गगा तट पर ही एक यात्रीगृह (कैलाश आश्रम) है जिसमे हर किस्म की सुविधा प्राप्त है। साफ सुथरे बिस्तर आदि मिलते हैं। यह आश्रम यात्रियो के दान से ही चलता है। इस प्रकार कई आश्रम हैं पर वहा पर भी आर्यसमाज नहीं है। इसी प्रकार यहा पर भी आर्यसमाज, यात्रीगृह की बडी भारी आवश्यकता है। जिसमे प्रतिदिन सत्सग हो और ठहरने की पूरी व्यवस्था हो। आगे गगोत्री मन्दिर को देखकर यात्री वापिस आकर रात को उत्तरकाशी मे ही रुकते हैं। इस यात्रा के दौरान हमे विदेशी यात्री खासकर अमरीकन यात्री बहुत मिले हैं। ऋषिकेश से आगे किदारनाथ और बद्रीनाथ के लिये सडक अलग जाती है। इस पर पहला पडाव रुद्रप्रयाग है जहा पर अलखनन्दा और गगा दोनो नदियो का सगम है। आगे अलखनन्दा के किनारे चलने से जोशीमठ का पडाव आता है। यहा पर अलखनन्दा में मदाकिनी नदी आकर मिलती है। यहा से किदारनाथ और बद्रीनाथ के लिये अलग-अलग सडकें हैं। किदारनाथ के लिये मन्दाकिनी नदी के किनारे जाकर किदारनाथ से पहले गौरीकुण्ड तक बसे आदि जाती हैं। आगे किनारनाथ के लिये १२ कि०मी० पैदल का मार्ग है इसलिये यात्री को आते-जाते रात को यहीं ठहरना पडता है। बडा रमणीक स्थान है। नीचे बरफानी नदी बहती है पर मन्दिर के बाहर ऊपर पहाडी से बहुत गर्म पानी का स्रोत चल रहा है। यहा यात्रियो के ठहरने के लिये बहुत थोडी व्यवस्था है। यहा पर आर्यसमाज और यात्रीगृह की बडी आवश्यकता है। आगे किदारनाथ यात्रियो के ठहरने के लिये एक सरकारी यात्री गृह तो है पर उसमे भी आम यात्री के ठहरने का प्रबन्ध नहीं है। बाकी यात्रियो के लिये पूजा पाठ कराने वाले पण्डे ही करते हैं। इसलिये यदि यहा आर्यसमाज मन्दिर और यात्रीगृह हो तो बहुत उपकार का कार्य होगा ओर आर्यसमाज का अच्छा प्रभाव पडेगा। यह जगह नदी के किनारे समतल जगह पर है। यहा आर्यसमाज के लिये जमीन भी उपलब्ध हो जायेगी। बद्रीनाथ की यात्रा के लिये ऋषिकेश से अलग पडाव जोशीमठ है। यहा पर हर यात्री को आते-जाते दो राते अवश्य रुकना पडता है। क्योंकि यह मिलट्री रोड है। जोशीमठ से आगे १० किलोमीटर पर ट्रैफिक केवल दो-दो घण्टे के लिये दिन मे दो बार निश्चित समय के लिये खुलता है। जोशीमठ मे दूसरी सस्थाओं के यात्रीगृह हैं पर आर्यसमाज का मन्दिर तक भी नहीं है। यह यात्रा मई मास से सितम्बर तक रहती है और यात्रियो को ठहरने के लिये स्थान भी नहीं मिलता, स्वामी दयानन्द जी महाराज की उत्तराखण्ड की यात्रा मे इसका जिकर आता है। यहा पर आर्यसमाज मन्दिर और यात्रीगृह अवश्य होना चाहिये। आगे बद्रीनाथ मे यात्रियों की काफी भीड रहती है। बडा ही सुन्दर स्थान है। एक किस्म की वादी है। यहा पर देश-विदेश से काफी यात्री आते है। पण्डे-पुजारियो ने अपने यात्री गृह बना रखे हैं। होटल और रेस्टोरेंट आदि बहुत हैं। नीचे अलखनदा बहती है। और उन पर आबादी मे गर्म पानी के चश्मे है। यहा पर भी आर्यसमाज मन्दिर और यात्री गृह अवश्य होना चाहिए। मैं थोडे से तीर्थो के बारे में लिखकर आर्यसमाज का आह्वान करता हू कि आर्यसमाज एव समाजी आगे आयें और तीर्थों का सुधार करके रूढिवादी मिटाने के लिये अपने दायित्व को निभायें। स्वामी दयानन्द ने जिस पाखण्ड का खण्डन किया था पर यह थोडा अलग है और इसका सुधार खण्डन, मण्डन और सेवा कार्य से होगा। इसलिये सब तीर्थ स्थानो पर आर्ययात्री गृह हों। जिनमें सारी सुविधायें हो, बाकायदा सत्सग का प्रबन्ध हो, सेवक के अलावा किसी साधु-सन्यासी के रहने का स्थाई प्रबन्ध हो। आर्यसमाज के पास त्यागी, वानप्रस्थी की कमी नहीं पर आर्यसमाजियो मे श्रद्धा की कमी के कारण ऐसे महात्मा लोग अपने जीवन निर्वाह के लिये भी कठिनाई मे रहते हैं। यह महान् कार्य सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओ द्वारा ही करवा सकती है। तभी हम "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" के उद्देश्य को पूरा कर सकेंगे।

ओ३म् शम्।

आर्यसमाज लाहड़पुर जिला यमुनानगर का चुनाव

प्रधान–श्री रामचन्द्र आर्य, कोषाध्यक्ष–श्री ज्ञानचन्द आर्य, मत्री–श्री हरिओम आर्य, सचिव–श्री मदनलाल आर्य, उपप्रधान–श्री केशवशरण आर्य, उपमन्त्री–श्री नरेन्द्र कुमार आर्य, उपसचिव–श्री राकेश कुमार आर्य।

ब्रह्मचर्य महिमा

–डॉ० नरेश आर्य 'धर्माधिकारी', भिवानी

मनुष्य के जीवन को उन्नत बनाने के लिये ब्रह्मचर्य की आवश्यकता उसी प्रकार है, जिस प्रकार किसी सुदृढ भवन का निर्माण करने के लिए गहरी नींव की। जिस मकान की नींव गहरी नहीं होती है वह आधी, तूफान के झटको मे धराशायी हो जाते है। इसी प्रकार जिस मनुष्य मे ब्रह्मचर्य का अभाव है, कदापि उन्नतिशील नहीं हो सकता। महर्षि दयानन्द ने कहा है–"देखो जिसके शरीर मे सुरक्षित वीर्य रहता है तब उसको आरोग्य, बुद्धि, बल, पराक्रम बढके बहुत सुख की प्राप्ति होती है। इसके रक्षण मे यही रीति है विषयो की कथा, विषयी लोगो का सग, विषयो का ध्यान, स्त्री का दर्शन, एकान्त सेवन सभाषण और स्पर्श आदि कर्म से ब्रह्मचारी लोग पृथक् (अलग) रहकर उत्तम शिक्षा और पूर्ण विद्या को प्राप्त होवे। जिसके शरीर मे वीर्य नहीं होता। वह नपुसक, महाकुक्षणी, दुर्बल, निस्तेज, निर्बुद्धि, उत्साह, साहस, धैर्य, बल, पराक्रम आदि गुणों से रहित होकर नष्ट हो जाता है।"

ब्रह्मचर्य है क्या ? ब्रह्मचर्य दो पदो से बनता है ब्रह्म+चर्य। 'ब्रह्म' शब्द के अनेक अर्थ हैं किन्तु ब्रह्म के मुख्य अर्थ हैं, ईश्वर, वेद, ज्ञान और वीर्य। इसी प्रकार 'चर्य' के अर्थ हैं चिन्तन, वेदाध्ययन, ज्ञानोपार्जन और वीर्यरक्षण। ब्रह्मचर्यरक्षा ही जीवन है वीर्यनाश ही मृत्यु है। अथर्ववेद मे कहा है–"ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमुपाघ्नत" (११-५-१९) अर्थात् ब्रह्मचर्य के प्रताप से ही देवताओ ने मृत्यु को जीत लिया। इसी प्रकार छन्दोग्य उपनिषद् मे कहा है–"तद् ब्रह्मचर्येण ह्येवेष्ट्वात्मानमनुविन्दते" (८-५-१) अर्थात् ब्रह्मचर्य से ही ईश्वर को पूजकर उपासक आत्मा को प्राप्त करता है।

यह वीर्य क्या होता है। मनुष्य चालीस दिन मे जितना भोजन करता है, आयुर्वेद के मतानुसार यदि वह ठीक रूप से पच जाये तो एक सेर (१ किलोग्राम) शुद्ध रक्त बनता है। एक सेर से दो तोला[1] वीर्य बनता है। यदि इसका सचय किया जाये तो मनुष्य मे ओज शक्ति बनती है। कीथ नामक पाश्चात्य विद्वान् ने वीर्य रक्षा के सम्बध में बडे सुन्दर शब्द कहे हैं। "यह वीर्य तुम्हारी हड्डियो का सत्व तुम्हारे मस्तिष्क का भोजन तुम्हारे जोडो के लिए तेल और तुम्हारे श्वास का मिठास है। यदि तुम मनुष्य हो तो तुम्हे ३० वर्ष की आयु से पूर्व इसकी एक बूद भी नष्ट नहीं होने देनी चाहिए।[2]

जिस प्रकार बाजार मे कोई वस्तु लेने जाओ तो आपको उसका मूल्य चुकाना पडता है, इसी प्रकार यदि तुम तेज, बल, बुद्धि या विद्या प्राप्त करना चाहते हो तो उसके लिये ब्रह्मचर्य का पालन करना ही पडेगा। प्यारे बन्धुओ ! अब तक हुआ सो हुआ अब भी सम्भल जाओ। कोई देर नहीं हुई है। अगर आप अपने जीवन को सुखमय बनाना चाहते हो तो निम्न नियमो का पालन करें।

पवित्र तथा दृढ सकल्प–यह वीर्य रक्षा का पहला साधन है। विचारो का जीवन पर बडा गहरा प्रभाव पडता है। कहा भी है As aman thinketh so he becomes जैसा मनुष्य सोचता है वह वैसा ही हो जाता है। "मन एव मनुष्याणां कारण बधमोक्षयो" मन ही मनुष्य के बधन और मोक्ष का कारण है।

प्रात:काल उठना–प्रात काल उठना भी अत्यन्त आवश्यक है। ४ बजे ही शय्या (चारपाई) त्याग कर देना चाहिए। एक बार उठकर फिर आलस्यवश दोबारा नहीं सोना चाहिये। पशु पक्षी भी प्राकृतिक नियम के अनुसार सूर्योदय से १ घण्टा पूर्व अपना-अपना घोसला छोड देते हैं। इससे अनेक लाभ हैं, तभी तो कहा है–

"उषाकाल में उठो उषर्बुध, बनो 'सूर्य' सम तेजस्वी।
बल विद्या में सुखद स्वास्थ्य में बढ़े वीरवर वर्चस्वी।।"

सूर्य उदय के बाद उठने वालो के लिए वेद भगवान् कहते हैं–"उद्यन् सूर्य इव सुप्तानां वर्च आददे" अथर्व० १२-१३-२ अर्थात् शत्रुओ का तेज मैं ऐसे हर लेता हू जैसे उदय होता हुआ सूर्य सोने वाले का। आचार्य चाणक्य ने कहा है–"सूर्योदय चास्तमिते शयान जहाति लक्ष्मीर्यदि शारङ्गपाणि।" अर्थात् सूर्य उदय और सूर्य अस्त के समय सोने वाले मनुष्यो को लक्ष्मी (धन की देवी) छोड देती है फिर चाहे वो स्वय विष्णु ही क्यो न हो। अत हमे सूर्योदय से पूर्व अवश्य ही उठ जाना चाहिये।

शौच जाने से पूर्व थोडासा जल अवश्य पीना चाहिये इससे शौच शुद्धि हो जाती है। इससे अनेक प्रकार के रोग नष्ट हो जाते है। ऋग्वेद मे कहा है–"आप सर्वस्य भेषजी" १३७-८ अर्थात् जल सर्वस्व हित करने वाला औषधि रूप है और अथर्ववेद में कहा है–"भिषग्भ्यो भिषक्तरा आप" १९-२-३ अर्थात् जल वैद्यो से भी बढकर वैद्य है। शौच फिरते समय बहुत जोर नहीं लगाना चाहिये। जोर लगाने से कभी-कभी वीर्य निकल जाता है। यदि कोष्ठबद्धता (कब्ज) रहती है तो मयूर तथा सर्वांगासन करने चाहिये।

व्यायाम–व्यायाम ब्रह्मचारी ही क्या सभी के लिये बहुत उपयोगी है क्योकि "आसनेन रुजो हन्ति" आसनों से रोग नष्ट होते है। सर्वांगासन तथा सिद्धासन तो ब्रह्मचर्य रक्षा के प्राण हैं। इस सम्बन्ध मे एक बात विशेष ध्यान देने योग्य है और वह है नियमबद्धता के बिना उत्तम से उत्तम आसन अथवा व्यायाम कोई भी लाभप्रद नहीं हो सकता। प्रतिदिन नियमपूर्वक समय पर आसनो का अभ्यास करे। आसन हमेशा खुले वस्त्र पहनकर खुली जगह पर करने चाहिये। आसनो के बाद थोडी देर खुली हवा मे टहलना चाहिये। लगोट का प्रयोग करना चाहिये। रात्रि मे अवश्य।

निरन्तर पेज ६

---

१ प्राचीनकाल में एक तोला १२ ग्राम का होता था, किन्तु आजकल १ तोला १० ग्राम का प्रचलित है।

२ This seed is morrow to your bones, good to your brain, ail to your breath and if you are a man, you sould never lose a drop of it, until you are fully thirty years of age, and then only for the purpose of having a child. – Malvil Keith

भोजन–भोजन हमेशा हितकारी समय पर और थोडी मात्रा मे करना चाहिये। पेट के चार भाग करके दो भाग पेट अन्न से एक भाग जल से तथा एक भाग वायु के लिये खुला रहना चाहिये। तामसिक तथा उत्तेजक पदार्थों का सेवन नहीं करना चाहिये। शाम का भोजन सोने से तीन घण्टा पूर्व कर लेना चाहिये। भोजन के पश्चात् लघुशका (पेशाब) अवश्य करनी चाहिये इससे मधुमेह कभी नहीं होता और पथरी होने की सम्भावना भी नहीं रहती है।

मन–मन को बेकार मत रहने दो। "मन को इधर-उधर न भटकाकर सर्वहित मे लगाना चाहिए।" (ऋग्वेद ८-२५-१) कहा भी है–An idle mans brain is the devilsstop अर्थात् बेकार आदमी का मस्तिष्क शैतान का घर होता है। तभी सामवेद मे कहा है–"मन की शक्ति जानकर उस पर शासन करना चाहिए। (1468) जब कुछ काम न हो तो धार्मिक ग्रन्थो का स्वाध्याय करो। उपनिषद् का वचन है–"स्वाध्यायान्मा प्रमदः।" तै शि 11-1 अर्थात् स्वाध्याय मे प्रमाद न करो।

सत्सग–विद्वान्, धर्मात्मा और सदाचारी पुरुषों के समीप बैठना सत्सग कहलाता है। कहा भी है–

"सत्सग किजे साधु की हरे ओर की व्याधि।
ओछी सगत नीच की, आठो पहर उपाधि।।"

जिस सत्सग के प्रभाव से मूर्ख कालिदास उच्चकोटि का कवि बन सकता है, डाकू वाल्मीकि ऋषि वाल्मीकि बन सकता है। "सत्सग कि न करोति" सत्सग क्या नहीं करता। सत्सग की महिमा बडी महान् है। इसलिए विद्वानों का सग करे मूर्खों का नही।

बेरोजगारी की समस्या.......(पृष्ठ तीन का शेष)

आवश्यक थी परन्तु धीरे-धीरे श्रीमद्देव दयानन्द जैसे महापुरुषो के प्रयासो से सामयिक मूल्य बदलते गये और शिक्षा स्त्रियो के लिए भी अभिन्न होती चली गई। आज हालात यह है कि लगभग बराबर की सख्या शिक्षित बेरोजगार युवको एव युवतियो की है। स्नातक व अल्पशिक्षित छात्र-छात्राओ की एक पूरी फौज रोजगार कार्यालयो मे लम्बी-लम्बी दीर्घाओ मे देखी जा सकती है। इसका महत्त्वपूर्ण कारण जो मै अनुभव करता हू वह है 'तकनीकी शिक्षा का अभाव।"

वर्तमान समय मे भारतीय राजनीति इतनी गदली हो चुकी है कि आम नेता भी छात्रो का राजनीति मे प्रयोग करने से परहेज नहीं करते। छात्रों का यही शोषण उन्हे पथभ्रष्ट कर देता है। नेताओ द्वारा दिखाये गये सब्जबाग उन्हे उनके रास्ते से विचलित कर देते है और वे अपने लक्ष्य से दूर सपनों की दुनिया मे विचरण करते हुए रातो रात करोडपति बनने की इच्छा रखते है। उनके लिए पैसा कमाना ही मात्र उद्देश्य बन जाता है चाहे वह किसी भी साधन से प्राप्त हो और इसके लिए राजनीति ही एक छोटा रास्ता उन्हे दिखाई देता है। परन्तु समय गुजरने के साथ जब वे ठोकर खाकर सच्चाई जानते हैं तो देर हो चुकी होती है। ऊची नौकरी का ख्वाब उन्हे दर-दर की ठोकरे खाने पर मजबूर कर देता है और उनकी हालत धोबी के कुत्ते जैसी हो जाती है।

बेरोजगारी का एक अन्य कारण देश की अर्थव्यवस्था है। समुचित उद्योगो के अभाव मे ही यहा मनुष्य शक्ति का सही उपयोग नही हो पाता। यह हमारी खोखली अर्थव्यवस्था को दर्शाता है। शिक्षा का देश में समुचित प्रसार हुआ है परन्तु हमारी दोषपूर्ण शिक्षा नीति ने इस समस्या मे वृद्धि ही की है।

बेरोजगारी को समाप्त करने के लिए हमे समुचित पग उठाने पडेगे। सर्वप्रथम तो हमें शिक्षानीति का अवलोकन करना पडेगा। लोगो को तकनीकी शिक्षा, हथकरघा उद्योग व कृषि उद्योग का समुचित ज्ञान दिया जाना चाहिए। शहरीकरण को कम किया जाना चाहिए ताकि कृषि उद्योग जीवित रह सके। इसके लिए बेरोजगारो को ऋण दिये जाने चाहिये।

शहरो व गावो मे बडे व लघु उद्योग लगाने चाहिये ताकि शिक्षित युवक उनकी तरफ आकर्षित हो सके। एक सुचारू अर्थव्यवस्था का निर्माण बेरोजगारी को कम कर सकता है। यदि हम उद्योग, कृषि एव अर्थव्यवस्था मे आत्मनिर्भर हो सके तभी इस भयानक राक्षस से मुक्ति पाई जा सकती है।

आर्यसमाज पाना दारा शिकोपुर फरमाना तह० महम जिला रोहतक का चुनाव

प्रधान–श्री बलबीरसिह आर्य, मत्री–श्री महावीरसिह मन्देरना, कोषाध्यक्ष–श्री सत्यवीर शर्मा।

आर्य महासम्मेलन हेतु प्राप्त दानराशि

गतांक से आगे–

४८	प्रबन्धक समिति गुरुकुल कुरुक्षेत्र द्वारा आचार्य देवव्रत	५०,०००-००
४९	चावला बिल्डिग मैटिरियल सप्लायर्स, भिवानी रोड, रोहतक	५००-००
५०	श्री लेखराज ढीगरा, गोहाना रोड, रोहतक	२५०-००
५१	महा० मामचन्द आर्य, दयानन्दमठ, रोहतक	१,१००-००
५२	श्री गोविन्द राम आर्य, गोहाना रोड, रोहतक	११-००
५३	सम्पादक श्रुतिपथ, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक	५०१-००
५४	श्री मंगतराम सैनी, डाकघर, दयानन्दमठ, रोहतक	५१-००
५५	श्री विजय कुमार, दयानन्दमठ, रोहतक	११-००
५६	श्री प्रमोद कुमार आर्य, दयानन्दमठ, रोहतक	५१-००
५७	श्री कुलदीप सिह छिकारा, दीप प्रिंटर, दयानन्दमठ, रोहतक	५१-००
५८	राजधानी फर्नीचर हाउस, दयानन्दमठ, रोहतक	१५०-००
५९	सोनी मेडिकल हाल, दयानन्दमठ, रोहतक	२१-००
६०	श्री सोमनाथ जी, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक	२५०-००
६१	श्री खुराना मेडिकल, गोहाना रोड, रोहतक	५१-००
६२	मै० किरण फोटो, गोहाना रोड, रोहतक	५१-००
६३	मै० साजन टैण्ट हाउस, गोहाना रोड, रोहतक	२५०-००
६४	श्री जगन्न तनेजा, गोहाना रोड, रोहतक	१००-००
६५	श्री सतीश कुमार रगा, एडवोकेट, गोहाना रोड, रोहतक	१००-००
६६	श्रीमती तेजकौर सैनी, नगर पार्षद् रोहतक	१००-००
६७	डॉ० राजपाल सैनी, रोहतक	१००-००
६८	श्री वासदेव शास्त्री, स्वतन्त्रतासेनानी, आनन्दपुरा, रोहतक	२५०-००
६९	श्री महेन्द्र सिह (पूर्व सरपच), गाव गढी बोहर, रोहतक	२५०-००
७०	श्री विनोद कुमार सुपुत्र मा० राजेन्द्र सिह आर्य, गढी बोहर, रोहतक	२५०-००
७१	श्री जयपाल सिह, गाव गढी बोहर, रोहतक	१००-००
७२	श्री रणवीर शास्त्री, गाव गढी बोहर, रोहतक	५०१-००
७३	मै० मेहर गैस सर्विस, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक	१०१-००
७४	आर्यसमाज सैनीपुरा, रोहतक	११००-००
७५	श्री राजपाल सैनी, भारत वैल्डिग वर्क्स, रोहतक	१००-००
७६	श्री जयपाल, दयानन्दमठ, रोहतक	११-००
७७	श्री विकास सु० श्री शान्ता कुमार, रोहतक	५००-००
७८	श्री किशनलाल, दयानन्दमठ, रोहतक	११-००
७९	श्री हरिराम आर्य, ग्राम कारोली जिला रेवाडी	१००-००
८०	रामप्रकाश जी आर्य वानप्रस्थी, लाल बहादुर शास्त्री नगर, रोहतक	५००-००
८१	डॉ० राममेहर आर्य, चुन्नीपुरा, रोहतक	१००-००
८२	श्री जितेन्द्र छिक्कारा मुख्याध्यापक सु० श्री धर्मपाल आर्य, जुआ	१००-००
८३	श्री रामगोपाल आर्य सु० श्री आशाराम गाव टिटोली जिला रोहतक	२५०-००
८४	मा० प्रतापसिह आर्य, गाव चाग जिला भिवानी	२५०-००
८५	मा० रामप्रकाश आर्य, गाव लाढौत जिला रोहतक	२२१-००
८६	आर्यसमाज गढी बोहर (रोहतक)	२५०-००
८७	अशोककुमार अफलातून सु० चौ० हरितसिह, लक्ष्मीनगर, रोहतक	५००-००
८८	सेठ श्री किशनदास पूर्वमत्री, बाबरा मोहल्ला, रोहतक	५००-००
८९	श्री जगदीश प्रसाद सर्राफ प्रधान आर्यसमाज नया बाजार, भिवानी	२२००-००
९०	श्री सन्तराम आर्य, दयानन्दमठ, रोहतक	१००-००
९१	प्रिं० लाभसिह प्रस्तोता आर्य विद्यापरिषद् हरयाणा, पानीपत	१००-००
९२	आ० सत्यव्रत सु० म० बलवन्तसिह, आर्यसमाज मकडौलीकला (रोहतक)	५००-००
९३	वानप्रस्थी बलदेव जी, दयानन्दमठ, रोहतक	२५०-००
९४	राजेन्द्रकुमार शास्त्री, हैफेड रोड, प्रेम नगर, रोहतक	२५०-००
९५	आ स गिवाना जिला सोनीपत द्वारा महा० परवतसिह स्वतन्त्रतासेनानी	११११-००
९६	म० दयाकिशन आर्य, दी आदर्श ग्रामोद्योग सघ, गोहाना रोड, रोहतक	२५०-००
९७	आर्यसमाज स्वामी दयानन्द मार्ग, बगाली मोहल्ला, अम्बाला छावनी	२१०००-००

(क्रमशः) **–बलराज, सभा कोषाध्यक्ष**

आर्यसमाज के उत्सवों की बहार

१	आर्यसमाज सिही जिला फरीदाबाद	१२ से १३ अप्रैल
२	आर्यसमाज मन्दिर समालखा जिला पानीपत (चतुर्थ वेदो का महापारायण यज्ञ)	१७ अप्रैल से २१ मई

–सुखदेव शास्त्री, सहायक वेदप्रचाराधिष्ठाता

आर्य-संसार

श्री रामनाथ सहगल को सिक्कों से तोला गया

१२ मार्च २००२ को ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर रात्रि सत्र मे दिल्ली से पधारे श्री सोमदत्त महाजन एव जामनगर से पधारे श्री धर्मवीर खन्ना जी द्वारा मच के बीचोबीच एक बडी तराजू रख दी गई जिसे देखकर सभी व्यक्ति चकित रह गये। मच सचालन से पाच मिनट का समय माग कर जब उन्होने अपनी बात कही कि मध्यरात्रि होने जा रही है और श्री रामनाथ सहगल का जन्मदिवस जो कि १३ माच को पडता है कुछ ही क्षणो मे आने वाला है हमारी ऐसी इच्छा है कि हम सभी आर्यजन इस समय पर उनके जन्म दिवस को सम्मिलित रूप से मनावे और श्री खन्ना जी जामनगर से एक बहुत बडे ट्रक मे सिक्के लाये हुए थे जिसे कि चार व्यक्ति उठाए हुए थे और वह सहगल साहब के वजन के बराबर थे और उन्होने यह घोषणा की कि सहगल को इस अवसर पर सिक्को से तोला जायेगा, यह सुनकर उपस्थित जनसमूह ने करतल ध्वनि पर इस कार्य के लिए अपनी स्वीकृति दी।

श्री सहगल जी ने यह सुनते ही अपनी आपत्ति जताते हुए कहा कि मेरे लिये यह विचित्र घडी है क्योकि मैं कार्यकर्ता होने के नाते कुछ ऐसा नही कर पाया हू कि मुझे इस रूप से तोला जाये और मै तो निरन्तर लोगो को सम्मानित करने के लिए प्रख्यात हू मुझे स्वय इस प्रकार से तोला जाना आपत्तिजनक लग रहा है। इसलिए अगर यह आर्यक्रम न किया जाये तो अधिक उपयुक्त होगा, लेकिन सभी उपस्थित जनसमूह के आग्रह पर एव परिवार वालो के समझाने पर वह इस कार्य के लिए तैयार हुए और उन्होने घोषणा की कि जितनी भी राशि इस तराजू मे रखी जायेगी वह टगारा ट्रस्ट के कार्यो एव प्रचार प्रसार हेतु दे दी जावे।

कार्यक्रम के अन्त मे श्री सोमदत्त जी महाजन ने सहगल साहब के विषय मे बताते हुए उनसे अपनी ३५ साल की घनिष्ठता एव सबध के विषय मे बताया और कहा कि वह सहगल जी को अपने बडे भाई के रूप मे मानते है और निरन्तर उनसे प्रतिदिन किसी न किसी नये विषय मे प्रेरणा प्राप्त करते है और यह आदरणीय सहगल जी का ही उत्साह एव सहयोग है जिसके कारण मैं निरन्तर आर्यसमाज के क्षेत्र मे कार्य कर रहा हूं।

इसी अवसर पर उपस्थित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री देवरत्न आर्य ने कहा कि सहगल साहब का जन्मोत्सव इस प्रकार से मानना और उन्हे सम्मानित करना यह उनका निजी सम्मान नही है बल्कि उस देव दयानन्द के एक ऐसे अनुयायी का सम्मान है जिसने अपना पूरा युवाकाल और उसके उपरान्त अभी तक पूरा जीवन दयानन्द और आर्यसमाज के नाम से अर्पित किया हुआ है। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हुए उनकी १०० वर्ष से भी अधिक आयु की कामना की और माल्यार्पण कर उनका स्वागत किया। इसके उपरान्त लगभग सभी उपस्थित जनसमूह ने सहगल साहब को घेर लिया और सभी शुभकामनाए देने लगे एव माल्यार्पण करने लगे।

मध्यरात्रि उपरान्त शान्ति पाठ के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ।

गुरुकुल गदपुरी का ६५वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

श्रीमद्दयानन्द गुरुकुल विद्यापीठ, गदपुरी (फरीदाबाद) का ६५वा वार्षिकोत्सव सामवेद-पारायण-महायज्ञ के द्वारा सम्पन्न हुआ। यज्ञ के ब्रह्म डॉ० धर्मदेव शर्मा ने पूर्णाहुति के समय अपने सदेश मे शतपथ ब्राह्मण-ग्रन्थ के आधार पर बताया कि 'यो न सुनाति न यजते स निऋतिम् गच्छति।' जो व्यक्ति ससार मे मनुष्य का जन्म लेकर समाज के लिए कार्य नहीं करता है, यज्ञ भी नहीं करता है, अर्थात् परहित मे आस्था नहीं रखता है। वह पापियो के श्रेणी से नहीं बच सकता है। अत पापियो की श्रेणी से बचने की लिए सामाजिक-सेवा परहित के कार्य यज्ञ आदि को निरन्तर करना चाहिए।

स्व० मूलशंकर शर्मा की स्मृति मे उनके परिवार द्वारा सस्कृत भाषण प्रतियोगिता सम्पन्न हुई जिसमे पहला स्थान गुरुकुल गदपुरी और दूसरा स्थान बशी विद्या निकेतन विद्यालय बल्लबगढ ने प्राप्त किया।

इस अवसर पर श्री लक्ष्मणसिह बेमोल, श्री जनार्दन बैसय्या, प० चिरञ्जीलाल, खुशीराम, रामचन्द पाराशर, रामचन्द बेधडक आदि भजन मण्डलियो के सुमधुर गीत हुए जिनमें सामाजिक सेवा की प्रेरणाए दी गई। सभी ने इनकी मुक्तकठ से प्रशसा की।

गुरुकुल के छात्रो ने रामजीत व्यायामाचार्य के सान्निध्य मे व्यायाम प्रदर्शन किया। इस अवसर पर उन्होने व्यायाम की महत्ता पर भी प्रकाश डाला।

श्री तिलकमुनि के द्वारा कवि मच का सचालन किया गया जिसमे अनेक रचनाए पढी गई। दर्शको ने कविताओ का रसस्वादन किया। मुनि जी ने सीमा के प्रहरियो पर कविता पाठ करते हुए बताया कि उनका जीवन भी परोपकार से युक्त है।

श्री शिवराम विद्यावाचस्पति ने गौ को सबसे बडा उपकारी पशु बताते हुए अपने घरो मे गाय पालने की प्रतिज्ञा कराई।

इस अवसर पर डॉ० रुद्रदत्त, कर्मचन्द, रामगोपाल, सत्यपाल, बिजेन्द्र महेन्द्र, हरिओम्, सोमदत्त, यज्ञदत्त ओकारदेव आदि शास्त्रियो ने तथा फतेहसिह, मा० छज्जूसिह, खेमचन्द, किशोरसिह, ब्रह्मदेव, कर्णसिह आदि गणमान्य व्यक्तियो का सम्बोधन समाज-सेवा के लिए हुआ।

–स्वामी विद्यानन्द, मुख्याधिष्ठाता

शोक समाचार

आर्यसमाज सिहोर (महेन्द्रगढ) के सस्थापक एव सरक्षक महाशय सीताराम का निधन २८ फरवरी २००२ को ८३ वर्ष की आयु मे उनके गाव सिहोर मे होगया। उनका सारा जीवन आर्यसमाज को समर्पित रहा। महर्षि दयानन्दकृत ग्रन्थो का स्वाध्याय करना उनके जीवन का सदा लक्ष्य रहा। १० फरवरी २००२ को उनकी श्रद्धाजलि यज्ञ मे निम्न सस्थाओ को दान दिया गया–

गुरुकुल किसनगढ घासेडा ५०० रुपये, गऊशाला के लिये ५०० रुपये आर्यसमाज सिहोर १०० रुपये आर्यसमाज कनीना १०० रुपये आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा १०० रुपये।

मन्त्री–आर्यसमाज सिहोर (कनीना)

ज्योति पर्व/ऋषिबोधोत्सव हर्षोल्लास से सम्पन्न

ऋषि जन्मभूमि टकारा मे ४ मार्च से १३ मार्च तक आयोजित किये जाने वाले ऋषि बोधोत्सव ऋषि मेले मे ठीक एक सप्ताह पूर्व साम्प्रदायिक दगो ने पूरे गुजरात को अपनी चपेट मे ले लिया लेकिन ट्रस्ट और ऋषि भक्तो का उत्साह देखिए कि कार्यक्रम निरन्तर इसी प्रकार होगा इसका निश्चय बडी दृढता से लिया और कार्यक्रम अपने निश्चित समय पर ४ मार्च को यजुर्वेद पारायण यज्ञ आचार्य विद्यादेव एव आचार्य रामदेव जी के ब्रह्मत्व मे आरम्भ हुआ।

नि सदेह ऋषिभक्तो की सख्या मे कुछ कमी अवश्य रही फिर भी शिवरात्रि के मुख्य कार्यक्रम मे लगभग २००० ऋषि भक्तो की उपस्थिति से कार्यक्रम मे चार चाद लग गये।

१० मार्च की रात्रि को भजनो की विशेष सध्या का आयोजन किया गया जिसमे प० सत्यपाल पथिक अमृतसर वाले युवा सगीतकार श्री नरेन्द्र आर्य उपदेशक विद्यालय के भजनोपदेशको की भजनमण्डली जिसमे प० जयप्रकाश एव साथी सम्मिलित थे ने अपने भजन प्रस्तुत किये। इसी के साथ अलीगढ (उ०प्र०) से पधारी कु० ऋचा के भजनो का विशेष आकर्षण रहा।

११ मार्च को प्रात यज्ञोपरान्त उपस्थित जनसमूह शोभायात्रा के रूप मे ट्रस्ट परिसर से जन्मभूमि पर नवनिर्मित भवन एव जन्मकक्ष के उद्घाटन हेतु जन्मभूमि मे निर्माण मे सहायक श्री गुरुदत तिवारी एव श्री एस के दुआ जी के नेतृत्व मे पहुचा। टकारा ट्रस्ट के ट्रस्टी एव टकारा समाचार के सम्पादक श्री अजय सहगल ने जन्मग्रह के प्रथम तल पर की जाने वाली गतिविधियो की रूपरेखा से सभी ऋषिभक्तो को अवगत कराया। इसी अवसर पर मॉरीशस से पधारे प्रतिनिधियो का भी सम्मान किया गया।

रात्रि सत्र मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के युवा प्रधान माननीय कैप्टन देवरत्न आर्य की अध्यक्षता मे व्यायाम प्रदर्शन का कार्यक्रम था। इसी अवसर पर आर्यसमाज जामनगर से सम्बन्धित दयानन्द कन्या विद्यालय की छात्राओ द्वारा सास्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया गया। इस अवसर पर कैप्टन देवरत्न आर्य ने अपने उद्बोधन मे युवको को आर्यसमाज की नीव एव आने वाले भविष्य की धरोहर कहते हुए इन द्वारा प्रस्तुत कार्यक्रम की सराहना की।

इस वर्ष से टकारा ट्रस्ट द्वारा यह निश्चित हुआ कि प्रतिवर्ष दो महानुभावो एक किसी पुरुष एव दूसरी किसी महिला को टकारा रत्न और टकारा श्री की उपाधि से अलकृत किया जायेगा।

१२ मार्च को प्रात यज्ञ से पूर्व कैप्टन देवरत्न आर्य द्वारा विश्वदर्शनीय यज्ञशाला, जिस पर लगभग २० लाख रुपये की राशि व्यय हुई है, का विधिवत् उद्घाटन हुआ। आचार्य रामदेव जी द्वारा वैदिक मन्त्रो का उच्चारण पर कैप्टन साहब को यज्ञवेदी पर आमन्त्रित किया और विधिवत् पूर्णाहुति का यज्ञ प्रारम्भ हुआ। पूर्णाहुति के दिन मुख्य यजमान कैप्टन देवरत्न आर्य, श्री अरुण अब्रोल सपत्नीक, श्री ओकार नाथ सपत्नीक, श्रीमती रामचमेली एव श्रीमती स्नेहलता हाण्डा मुख्य थे। यज्ञोपरान्त आचार्य विद्यादेव एव स्वामी आत्मबोध सरस्वती का उद्बोधन हुआ।

सभी वरिष्ठ व्यक्ति केसरिया पगडी पहने और महिलाए गले मे केसरिया अगवस्त्र पहने जयघोष कर रहे थे। कैप्टन साहब द्वारा ध्वजारोहण किया गया और ध्वजगीत प० सत्यपाल पथिक एव श्री नरेन्द्र आर्य द्वारा प्रस्तुत किया गया।

इसके उपरान्त उपस्थित अपार जनसमूह एक शोभायात्रा मे परिवर्तित हुआ जिसका नेतृत्व कैप्टन देवरत्न आर्य, श्री ओकारनाथ, श्री अरुण अब्रोल एव स्वामी गोपाल सरस्वती आदि कर रहे थे। लगभग डेढ कि०मी० लम्बी शोभायात्रा टकारा के बाजारो से होती हुई आर्यसमाज टकारा के प्रागण मे एकत्र हुई उसके बाद जन्मस्थल से होती हुई ट्रस्ट परिसर मे समाप्त हुई।

अपराह्ण सत्र मे विशेष श्रद्धाजलि सभा का आयोजन किया गया जिसमें स्थानीय विधायक एव गुजरात के ग्राम विकास मन्त्री श्री मोहन भाई कुडारिया मुख्य अतिथि के रूप मे उपस्थित थे। विशेष अतिथि अजन्ता वाच कम्पनी के स्वामी श्री ओ आर पटेल एव श्री कानजी भाई चकूभाई भाम्भर राजकोट से विशेष रूप से श्रद्धाजलि सभा मे उपस्थित हुए।

श्री मोहनभाई कुडारिया टकारा के ही मूल निवासी हैं और श्रीमद् दयानन्द विविधलक्षी विद्यालय जोकि ट्रस्ट परिसर मे ही है, के विद्यार्थी रहे है। इसलिये उनका ऋषि जन्मभूमि एव ट्रस्ट से विशेष लगाव है।

रात्रि सत्र मे आकर्षण का विशेष केन्द्र ट्रस्ट मन्त्री श्री रामनाथ सहगल को सिक्को से तोला जाना था, जिसके सयोजक श्री सोमदत्त महाजन दिल्ली एव श्री धर्मवीर खन्ना जामनगर थे। इसी अवसर पर बोधरात्रि के दिन को चुना गया। मुख्य उत्सव स्थल पर सुसज्जित तराजू मे एक ओर श्री रामनाथ सहगल को बिठाया गया और दूसरी ओर सिक्कों से भरी थैलियो को रखा गया। ट्रस्ट मन्त्री ने अपने वजन के बराबर सिक्को को ट्रस्ट गतिविधियो के लिये टकारा ट्रस्ट को समर्पित कर दिया।

इस अवसर पर प० सत्यपाल पथिक एव श्री नरेन्द्र आर्य के मुधर भजन प्रस्तुत किये गये। इसके उपरान्त अन्त मे मध्यरात्रि को स्वामी आत्मबोध सरस्वती का उद्बोधन हुआ जिसमे उन्होने आये हुए जनसमूह को ऋषि जन्मभूमि के महत्त्व को बताते हुए प्रण करवाया कि वे निरन्तर हर वर्ष ऋषि जन्मभूमि पर पधारे और इसकी धूलि को चदन के समान अपने मस्तक पर लगाये। इस प्रकार वे अपने ऋषि के प्रति श्रद्धाजलि अर्पित कर सकते है।

यज्ञ वन्दना

नहा धो करके नित्यकर्म मे यज्ञदेव अपनाइये,
पूजा-पाठ-वन्दना करके, जीवन सफल बनाइये।
यज्ञदेव की पूजा हेतु शुद्ध सामग्री लाइये,
शुद्ध समिधा ले विधिपूर्वक अग्निदेव जलाइये।
वेद-ऋचाओ, शास्त्रमत्रो का शुद्ध उच्चारण कीजै,
एक स्वर मे, एक लय से सब आहुति दीजै।
शुद्ध, वायु, फल, फूल, वनस्पति यज्ञदेव देते हैं
पचतत्त्व शुद्ध करने हेतु यज्ञ-शरण लेते हैं।
वर्षा होती अन्न-धन बढता, पेड-पौधे उगते हैं,
कार्बन डाइ-ऑक्साइड हर ऑक्सीजन देते हैं।
आयु, बल, बुद्धि बढती है, सस्कार मिलते है,
तन-मन-धन पावन करके ईश वन्दन करते हैं।
जिनके घर नित्य हवन-यज्ञ हो, वेद-शास्त्र पढते हैं,
उनके घर हो स्वर्गसमान धर्म-कर्म फलते हैं।
'बसल' हवन यज्ञ सन्ध्या से पाप नष्ट होते है,
यज्ञदेव आशीष कृपा से मनचाहे फल मिलते हैं।।

लेखक–रामनिवास बसल, से नि प्राध्यापक,
चरखीदादरी-१२७३०६ (भिवानी)

गृहप्रवेश यज्ञ

दिनाक १७ फरवरी २००२ (बसन्त पचमी २०५८) को श्री रामकिशन जी काकडौली हट्ठी के नवभवन का उद्घाटन श्री जगदीश आर्य गोपीवासी (भारत बीज भण्डार, बाढडा) ने वैदिक रीति से सम्पन्न करवाया। इस शुभ अवसर पर यजमान ने कन्या गुरुकुल पचगाव के लिए १०१) एक सौ एक रुपये दान दिया।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ०१२६२–७६८७४, ७७८७४) मे छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ०१२६२–७७७२२) से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० न० २३२०७/७३ सृष्टिसंवत् १, ९६, ०८, ५३, १०३
पंजीकरणसंख्या टैक/85-2/2000 ☎ ०१२६२-७७७२२

ओ३म् ... विश्वमार्यम्
सर्वहितकारी
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र रोहतक
प्रधानसम्पादक : यशपाल आचार्य, सभामन्त्री सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री
वर्ष २६ अंक २० १४ अप्रैल, २००२ वार्षिक शुल्क ८०) आजीवन शुल्क ८००) विदेश में २० डॉलर एक प्रति १.७०

रोहतक में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा आयोजित सभा के इतिहास में प्रभावशाली

हरयाणा प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन धूमधाम से सम्पन्न

मंच पर विराजमान बहिन कलावती आचार्या, चौ० मित्रसेन सिन्धु, स्वामी ओमानन्द जी, स्वामी इन्द्रवेश जी व आचार्य यशपाल

आर्य महासम्मेलन में उपस्थित विशाल जनसमूह

हरयाणा प्रदेश के ऐतिहासिक स्थान जहा हिन्दीरक्षा, कुण्डली हत्या विरोध, गोरक्षा, शुद्धि, हरयाणा लोक समिति, हरयाणा रक्षावाहिनी, हरयाणा निर्माण सघर्ष तथा शराबबन्दी आदि आन्दोलनो का छावनी रहा है। पर ६-७ अप्रैल २००२ को बडी धूमधाम तथा हर्षोल्लास के साथ आर्य महासम्मेलन सम्पन्न हुआ। दिनाक ४ अप्रैल से चौ० लखीराम अनाथालय की भव्य यज्ञशाला मे प० सुदर्शनदेव आचार्य पूर्व सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता यज्ञ के ब्रह्मा, अध्वर्यु स्वामी वेदरक्षानन्द गुरुकुल कालवा (जीन्द) द्वारा आरम्भ हुआ जिसमे सैकडो नर-नारियो ने भाग लिया। इसकी पूर्णाहुति दिनांक ७ अप्रैल को हुई, जिसमे हजारो नर-नारी उपस्थित थे।

ध्वजारोहण प्रात ९ बजे सभा के प्रधान स्वामी ओमानन्द सरस्वती द्वारा किया गया। जो अपने आप मे एक आकर्षण का केन्द्र था। आर्य वीर दल हरयाणा के मन्त्री श्री वेदप्रकाश आर्य तथा उनके सहयोगी आर्यवीरो ने इसका सचालन किया। स्वामी जी ने इस अवसर पर उपस्थित आर्य जनता को सम्बोधित करते हुए ओ३म् ध्वज को किसी भी अवस्था मे झुकने न देने की प्रेरणा की। इस अवसर पर सभामन्त्री आचार्य यशपाल ने स्वामी ओमानन्द जी के स्वस्थ दीर्घायु की ईश्वर से प्रार्थना की और सगठित होकर आर्यसमाज के कार्य को आगे बढाने का सकल्प लिया। सभा द्वारा १८ लाख रुपयो से नवनिर्मित आर्य बलिदान भवन का उद्घाटन प्रात ९-१५ पर प्रसिद्ध आर्य उद्योगपति एव दानवीर आर्यनेता चौ० मित्रसैन सिन्धु ग्राम खाण्डाखेडी (हिसार) वर्तमान रोहतक निवासी द्वारा किया गया। उन्होने इस शुभावसर पर एक लाख ग्यारह हजार रुपए का दान देकर बलिदान भवन के निर्माण मे महान् योगदान दिया। उपस्थित जनसमूह ने इनका तालिया बजाकर स्वागत किया। स्वामी ओमानन्द जी ने आशीर्वाद दिया, स्वामी इन्द्रवेश जी ने धन्यवाद दिया। उसके बाद आर्य सगीत सम्मेलन मे उत्तरी भारत के प्रमुख आर्य भजनोपदेशक श्री सहदेव बेधडक, श्री तेजवीर, श्री सत्यपाल, स्वामी देवानन्द, श्रीमती दयावती आर्या, श्रीमती पुष्पा शास्त्री, कु० कलावती आर्या, श्रीमती सुमित्रा आर्या की मण्डली आदि के मनोहर भजनों ने समा बाध दिया। इसके बाद सभामन्त्री आचार्य यशपाल शास्त्री ने सम्मेलन मे बाहर से पधारे सन्यासी वानप्रस्थी आर्यनेताओ का सभा अधिकारियो की ओर से स्वागत करवाया। इसमे प्रमुख श्री महेन्द्र शास्त्री वरिष्ठ सभा उपमन्त्री, श्री सुरेन्द्र शास्त्री सुखवीर शास्त्री हरिश्चन्द्र शास्त्री, बलराज कोषाध्यक्ष आदि और हरयाणा के कोने-कोने से भारी सख्या मे पहुचे आर्यसमाज के कार्यकर्ताओ, आर्यवीर दलो के स्वयसेवको का आभार प्रदर्शित किया। आर्यसमाज की नवयुवती प्रभावशाली उपदेशिका श्रीमती पुष्पा शास्त्री द्वारा गीतो के तैयार करवाये कैसेटो का सभाप्रधान स्वामी ओमानन्द व स्वामी इन्द्रवेश ने विमोचन किया तथा आचार्य सुदर्शनदेव द्वारा सम्पादित वैदिक उपासना पद्धति का विमोचन सर्वखाप पचायत के अध्यक्ष स्वामी कर्मपाल ने किया और आर्यसमाज प्रचार के लिए इन्हे उपयोगी बताया।

वैदिक धर्म सम्मेलन की कार्यवाही ऋषि दयानन्द की जन्मभूमि गुजरात से पधारे नवयुवक विद्वान् श्री धर्मबन्धु जी की अध्यक्षता मे आरम्भ हुई। इसमे स्वामी ओमानन्द जी ने इस सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए ऋषि दयानन्द के सन्देश वेदो की ओर लौटने की प्रेरणा दी और जीवन मे वेदोपदेशो पर स्वय चलकर अन्यों को चलाने के लिए तैयार करने पर बल दिया- **'जीना है तो आर्यसमाज में आओ'** का अपना नारा दोहराया। सर्वखाप पचायत के प्रधान

सर्वहितकारी के सभी पाठकों के लिए नव-सृष्टि संवत्सर एवं आर्यसमाज स्थापना दिवस के शुभावसर पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनायें।

चैत्र शुक्ला १, शनिवार २०५९ वि० (१३ अप्रैल, २००२)

—सम्पादक

स्वामी कर्मपाल जी ने सम्बोधित करते हुए बताया कि हमे केवल भाषण देने पर ही सन्तुष्ट नहीं होना चाहिए अपितु अपने जीवन को साफ-सुथरा, चरित्रवान् तथा बेदाग रखकर ही औरो को उपदेश देना चाहिए। पाखण्ड तथा आडम्बर से दूर रहना चाहिए। तभी हमारा प्रभाव नवयुवकों पर पड सकता है। वेदप्रचार का प्रसार इसी आधार पर होगा। सभा उपप्रधान श्री रामधारी शास्त्री, सहायक वेदप्रचाराधिष्ठाता प० सुखदेव शास्त्री, प्रो० रामविचार, कु० कलावती आर्या, डा० रामप्रकाश अध्यक्ष दयानन्द महिला महाविद्यालय कुरुक्षेत्र आदि विद्वानो ने वेदप्रचारार्थ प्रभावशाली प्रचारक तैयार करने के उपयोगी सुझाव दिये। श्री धर्मबन्धु जी ने अपने अध्यक्षीय आकर्षक भाषण में ऋषि दयानन्द के आर्य राष्ट्र निर्माण के स्वप्न को पूरा करने के लिए कहा कि भारतवर्ष क्षेत्र को पूर्व की भाति सघटित करना पडेगा। भारतवर्ष का १३ बार विभाजन हो चुका है। श्रीलका, पाकिस्तान, ब्रह्मा, तिब्बत, भूटान नेपाल, अफगानिस्तान, ईरान, ईराक, बागला देश, कश्मीर (पाकिस्तान द्वारा अनाधिकृत) आदि भारत के अग थे और यहा वेदप्रचार बिना बाधा के होता था, परन्तु आज यहा वेद का नाम लेनेवाले नहीं रहे। अत हमे अपनी वीर सेना जो कि सारे ससार मे शक्तिशाली है को आदेश देकर इन वेदविरोधी देशो को पुन भारत मे मिलाना होगा। दोपहर १२ बजे से २ बजे तक आर्य राज सम्मेलन की अध्यक्षता दिल्ली के पूर्व मुख्यमन्त्री चौ० साहिबसिह जी वर्मा सासद की अध्यक्षता मे आरम्भ हुआ। इस अवसर पर पूर्व सासद स्वामी इन्द्रवेश ने प्रस्ताव प्रस्तुत करते हुए कहा कि आज हरयाणा मे सभी राजनैतिक दलो को जनता ने आजमा लिया है। इन पर विश्वास नहीं रहा। अत आर्यो को अपना राजनैतिक दल बनाना चाहिए और इसकी तैयारी के लिए सभी विधान सभा के ९० हल्को मे वेदप्रचार मण्डलो को सुदृढ करना होगा। प्रत्येक हल्को मे प्रचार किया जावे। सतलुज यमुना लिक नहर यदि वर्ष के अन्त तक न बन सके तो उसमे बाधा डालनेवालो का डटकर विरोध किया जावे।

आर्य महासम्मेलन का शेष भाग अगले अंक में–

मोक्षप्राप्ति का मार्ग केवल योग

सर्वप्रथम योग शब्द का अर्थ समझ ले। योग युज धातु से बना है जिसका अर्थ है मिलाना, जोडना, एकता स्थापित करना। मन को आत्मा से मिलाना तथा आत्मा को परमात्मा से। महर्षि पतजलि जी ने अष्टाग योग लिखकर आर्यावर्त को ऐसी अनुपम अनूठी विद्या से विभूषित किया है कि मनुष्य चाहे तो योग के तप बल से मोक्षप्राप्ति तक पहुचने मे सफलता प्राप्त कर सकता है और समय-समय पर योगनिष्ठ पुरुषो को ऐसा सौभाग्य प्राप्त हुआ है। वर्तमान मे जो योग प्रतियोगिताओ का चलन हो रहा है यह तो स्वार्थपूर्ण दिखावा है और शरीर का प्रदर्शन मात्र है। योग मे प्रतियोगिता हो ही नहीं सकती। चूकि योग तो आत्मा को परमात्मा से मिलाने का शुद्ध विज्ञान है। वेदशास्त्रो में योग की परिभाषा अपने-अपने दृष्टिकोण से बडी सारगर्भित दी है। आचार्य मनु जी महाराज ने लिखा है–

दह्यन्ते ध्यायमानाना धातूनां हि यथा मला।
तथेन्द्रियाणा दह्यन्ते दोषा प्राणस्य निग्रहात्।।

अर्थात् जिस प्रकार आग मे तपाने या गलाने से धातुओ का मैल कट जाता है उसी तरह मनुष्य की इन्द्रियो के दोष दूर होते हैं तथा प्राणायाम से मन की चचलता दूर होकर एकाग्रता प्राप्त होती है। अत्रिसहिता मे वर्णन किया है कि–

योगात् सप्राप्यते ज्ञान योगो धर्मस्य लक्षणम्।
योग पर तपो ज्ञेयमस्माद् योग समभ्यसेत्।।
न च तीव्रेण तपसा न स्वाध्यायैर्न चेज्यया।
गति गन्तुं द्विजा शक्ता योगात् सप्राप्नुवन्ति याम्।।

अर्थात् योग अभ्यास से ज्ञान प्राप्त होता है। योग ही धर्म का लक्षण है और योग ही तप है इसलिए मनुष्य को योग का निरन्तर अभ्यास करना चाहिये। शास्त्रो का अध्ययन तथा यज्ञ करने से भी बडी तपस्या योग अभ्यास है चूकि इसके अभ्यास से सद्गति प्राप्त होती है।

गरुडपुराण मे भी योग की प्रशसा इस तरह की है कि '**भवतापेन तप्ताना योगो हि परमौषधम्**' अर्थात् मनुष्य को व्यर्थ ही साधु-सन्तो की तरह आग के अगारो मे तपाकर शरीर को व्यर्थ कष्ट नहीं देना चाहिए अपितु योग अभ्यास करके शरीर एव मन को स्वस्थ व निर्मल रखना चाहिये। स्कन्दपुराण ने भी योग की सुन्दर व्याख्या की है कि–

आत्मज्ञानेन मुक्ति स्यात्तच्च योगादृते नहि।
स च योगाश्चर कालमभ्यासाद्येन सिध्यति।।

अर्थात् ज्ञान द्वारा मुक्ति मिलती है परन्तु ज्ञान प्राप्ति का साधन केवल योगाभ्यास ही है। आदि शकराचार्य जी पार्वती को समझाते हुए कहते हैं कि–

ज्ञाननिष्ठो विरक्तो वा धर्मज्ञोऽपि जितेन्द्रिय.।
विना योगेन देवोऽपि न मोक्ष लभते प्रिये।।
ब्रह्मादयोऽपि त्रिदशा. पवनाभ्यासतत्परा।
अभूरन्न तक भ्यात् तस्मात् पवनमभ्यसेत्।।

अर्थात् हे पार्वती! मनुष्य कितना ज्ञानी, ध्यानी, विरक्त, धर्मात्मा तथा जितेन्द्रिय क्यो ना हो बिना योगाभ्यास के मोक्ष नहीं प्राप्त कर सकता। जबकि देवताओ ने भी मुक्ति की खातिर योग अभ्यास किया। यानि सृष्टि के रचयिता ब्रह्मा जी ने भी मोक्ष प्राप्ति हेतु निरन्तर वर्षो तक योगाभ्यास किया था।

शिवसहिता मे भगवान् शिवजी महाराज ने कहा है कि–

आलोड्य सर्वशास्त्राणि विचार्य च पुन पुन।
एकमेव सुनिष्पन्न योगशास्त्र पर मतम्।।

अर्थात् सारे शास्त्रो का गहन अध्ययन व चितन के पश्चात् यह निष्कर्ष निकला कि योगशास्त्र ही मनुष्य के अध्ययन तथा जीवन व्यवहार मे लाने के सर्वोत्तम हैं तथा मोक्षप्राप्ति का साधन है।

योगिराज श्रीकृष्ण जी ने भी गीता मे उपदेश देते हुए लिखा है कि–

वेदेषु यज्ञेषु तप.सु चैव दानेषु यत्पुण्यफल प्रतिष्ठम्।
अत्येति तत्सर्वमिदं विदित्वा योगी परं स्थानमुपैति चाद्यम्।।

अर्थात् मनुष्य योग अभ्यास करने की उचित विधि जानकर, तप द्वारा यौगिक जीवन व्यतीत करता है तो समझो वह मुक्तिधाम की ओर अग्रसर हुआ है।

गीता उपदेश देते हुए योगिराज श्रीकृष्ण जी ने आगे कहा कि '**योगश्चित्तवृत्ति-निरोध:**' अर्थात् योग के अभ्यास से मन अथवा चित्त की वृत्तियो का निरोध होता है तथा योगाभ्यासी निर्विचार होकर एकाग्रता को प्राप्त होता है।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

वह दौर स्थापना का

वेद को छोडकर कोई अन्य धर्मग्रन्थ प्रमाण नहीं है। इस सत्य का प्रचार करने के लिए स्वामी जी ने सारे देश का दौरा करना प्रारम्भ किया और जहा-जहा वे गये प्राचीन परपरा के पंडित और विद्वान् उनसे हार मानते गये। सस्कृत भाषा का उन्हे अगाध ज्ञान था। संस्कृत मे वे धारावाहिक रूप से बोलते थे। साथ ही वे प्रचण्ड तार्किक थे। उन्होने ईसाई और मुस्लिम धर्मग्रन्थो का भलीभाति मथन किया था। अत एव अकेले ही उन्होंने तीन-तीन मोर्चों पर सघर्ष आरम्भ कर दिया। दो मोर्चे तो ईसाइयत और इस्लाम के थे कितु तीसरा मोर्चा सनातनधर्मी हिदुओ का था, जिनसे जूझने मे स्वामी जी को अनेक अपमान, कुत्सा, कलक और कष्ट झेलने पडे। उनके प्रचड शत्रु ईसाई और मुसलमान नहीं, बल्कि सनातनी हिन्दू निकले और कहते हैं अत मे इन्हीं हिंदुओ के षड्यन्त्र से उनका प्राणात भी हुआ। दयानन्द ने बुद्धिवाद की जो मसाल जलाई थी, उसका कोई जवाब नहीं था। वे जो कुछ कह रहे थे, उसका उत्तर न तो मुसलमान दे सकते थे न ईसाई, न पुराणो पर पलने वाले हिन्दू पडित और विद्वान्। हिंदू नवोत्थान अब पूरे प्रकाश मे आ गया था और अनेक समझदार लोग मन ही मन अनुभव करने लगे थे कि सच ही पौराणिक धर्म मे कोई सार नहीं है।

सन् १८७२ ई० मे स्वामी जी कलकत्ता पधारे। वहा देवेद्रनाथ ठाकुर और केशवचन्द्र सेन ने उनका बडा सत्कार किया। ब्रह्मसमाजियो से उनका विचार-विमर्श भी हुआ किन्तु ईसाइयत से प्रभावित ब्रह्मसमाजी विद्वान् पुनर्जन्म और वेद की प्रामाणिकता के विषय मे स्वामी जी से एकमत नही हो सके। कहते हैं कलकत्ते मे ही केशवचन्द्र सेन ने स्वामी जी को यह सलाह दे डाली कि यदि आप सस्कृत छोडकर हिदी मे बोलना आरभ करे, तो देश का असीम उपकार हो सकता है। तभी से स्वामी जी के व्याख्यानो की भाषा हिदी हो गई और हिदी प्रान्तो मे उन्हे अगणित अनुयायी मिलने लगे। कलकत्ते से स्वामी जी बम्बई पधारे और वहीं १० अप्रैल १८७५ ई० को उन्होने आर्यसमाज की स्थापना की। बबई मे उनके साथ प्रार्थना समाजवालो ने भी विचार-विमर्श किया। कितु वह समाज तो ब्रह्मसमाज का ही बबई सस्करण था। अत एव स्वामी जी से इस समाज के लोग भी एकमत नहीं हो सके।

बबई से लौटकर स्वामी जी दिल्ली आये। वहा उन्होने सत्यानुसधान के लिए ईसाई, मुसलमान और हिंदू पडितो की एक सभा बुलाई। किन्तु दो दिन के विचार-विमर्श के बाद भी लोग किसी निष्कर्ष पर नहीं आ सके। दिल्ली से स्वामी जी पजाब गये। पजाब मे उनके प्रति बहुत उत्साह जाग्रत हुआ और सारे प्रात मे आर्यसमाज की शाखाए खुलने लगीं। तभी से पजाब आर्यसमाजियो का प्रधान गढ रहा है।

संस्कृति के चार अध्याय, रामधारीसिंह 'दिनकर'

क्या है आर्यसमाज

आर्य शब्द का अर्थ है श्रेष्ठ और प्रगतिशील। आर्यसमाज का अर्थ हुआ श्रेष्ठ और प्रगतिशीलो का समाज, जो वेद के अनुकूल चलने की कोशिश करते हैं। दूसरों को उस पर चलने को प्रेरित करते हैं। हमारे आदर्श मर्यादापुरुषोत्तम राम और योगिराज कृष्ण हैं। महर्षि दयानन्द ने उसी वेद मत को फिर से स्थापित करने के लिए आर्यसमाज की नींव रखी।

आर्यसमाज के सब सिद्धात और नियम वेदो पर आधारित हैं। फलित ज्योतिष, जादू-टोना, जन्मपत्री, श्राद्ध, तर्पण, व्रत, भूत-प्रेत, देवी जागरण, मूर्तिपूजा और तीर्थयात्रा मनगढत हैं। वेदविरुद्ध हैं।

आर्यसमाज सच्चे ईश्वर की पूजा करने को कहता है। यह ईश्वर वायु और आकाश की तरह सब जगह है। वह अवतार नहीं लेता। वह सब मनुष्यो को उनके कर्मानुसार फल देता है। अगला जन्म देता है। उसका ध्यान घर मे किसी भी एकांत मे हो सकता है।

परमाणुओं को कोई नहीं बना सकता। न उसके टुकडे हो सकते हैं। यानी वह अनादि काल से हैं। उसी तरह एक परमात्मा और हम जीवात्माए भी अनादि काल से हैं। परमात्मा परमाणुओं को गति देकर सृष्टि रचता है। आत्माओ को कर्म करने के लिए प्रेरित करता है। फिर चार ऋषियो के मन मे २०,३७८ वेदमन्त्रों का अर्थ सहित ज्ञान और अपना परिचय देता है।

आर्यसमाज के और माननीय ग्रन्थ हैं–उपनिषद्, षड् दर्शन, गीता व वाल्मीकि रामायण वगैरह। महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश में इन सबका सार दे दिया है। १८ घंटे समाधि मे रहने वाले योगिराज दयानन्द ने लगभग आठ हजार किताबो का मथन कर अद्‌भुत और क्रातिकारी सत्यार्थप्रकाश की रचना की।

आर्यसमाज हवन और यज्ञ का घर-घर प्रचार करना चाहता है। आज से तीन हजार साल पहले हर घर मे हवन होता था। तब पर्यावरण प्रदूषण कोई समस्या नहीं थी।

ईश्वर का सर्वोत्तम और निज नाम ओ३म् है। उसमे अनत गुण होने के कारण उसके ब्रह्मा, महेश, विष्णु, गणेश, देवी, अग्नि, शनि वगैरह अनत नाम हैं। इनकी अलग-अलग नामो से मूर्तिपूजा ठीक नहीं है। आर्यसमाज वर्णव्यवस्था यानी ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र को कर्म से मानता है, जन्म से नही। आर्यसमाज स्वदेशी, स्वभाषा, स्वसस्कृति और स्वधर्म का पोषक है।

आर्यसमाज सृष्टि की उत्पत्ति का समय चार अरब ३२ करोड वर्ष और इतना ही समय प्रलय काल का मानता है। योग से प्राप्त मुक्ति का समय वेदो के अनुसार ३१ नील १० खरब ४० अरब यानी एक परात काल मानता है। आर्यसमाज 'वसुधैव कुटुम्बकम्' को मानता है। लेकिन भूमण्डलीकरण को देश, समाज और सस्कृति के लिए घातक मानता है। आर्यसमाज 'वैदिक समाज रचना के निर्माण व आर्य चक्रवर्ती राज्य स्थापित करने के लिए प्रयासरत है।

आर्यसमाज मास, अडे, बीडी, सिगरेट, शराब, चाय, मिर्च-मसाले वगैरह को वेदविरुद्ध मानता है।

–मुमुक्षु आर्य

हिंदुओं का धर्म जगमगा उठा

आर्यसमाज के जन्म के समय हिंदू कोरा फुसफुसिया जीव था। उसके मेरुदड की हड्डी थी ही नहीं। कोई उसे गाली दे, उसकी हसी उडाए, उसके देवताओ की भर्त्सना करे या उसके धर्म पर कीचड उछाले जिसे वह सदियो से मानता आ रहा है। फिर भी इन सारे अपमानो के सामने वह दात निपोर कर रह जाता था। लोगो को यह उचित शका हो सकती थी कि यह आदमी भी है या नही। इसे आवेश भी चढता है या नहीं अथवा यह गुस्से मे आकर प्रतिपक्षी की ओर घूर भी सकता है या नही। कितु आर्यसमाज के उदय के बाद अविचल उदासीनता की यह मनोवृत्ति विदा होगई। हिंदुओ का धर्म एक बार फिर जगमगा उठा है। आज का हिंदू अपने धर्म की निदा सुनकर चुप नही रह सकता।'

–पडित चमूपति

अपना नवसंवत्सर

भारतीय कालगणना विक्रम सवत् पर आधारित है। विक्रम सवत् को उज्जैन के एक शासक विक्रमादित्य ने शको पर विजय प्राप्त करने के उपलक्ष्य मे शुरू किया था। विक्रम सवत् ५८ ईसा पूर्व से शुरू हुआ था। यह माना जाता है कि सृष्टि का प्रारभ भी गुडी पर्व यानी विक्रम सवत् के पहले दिन वर्ष प्रतिपदा (चैत्र शुक्ल एक) को ही हुआ। इस दिन सृष्टि के रचयिता ब्रह्मा की पूजा भी की जाती है। इसी दिन प्रथम सूर्योदय हुआ इसलिए वह दिन रविवार कहलाया। उस दिन सभी नक्षत्र मेष राशि मे थे। भारतीय कैलेडर यानी विक्रम सवत् मे महीनो के नाम नक्षत्रो के आधार पर रखे गए हैं। चित्रा नक्षत्र से चैत्र मास, विशाखा नक्षत्र से वैशाख, ज्येष्ठा से ज्येष्ठ का माह, उत्तरा आषाढ से आषाढ, श्रवण से श्रावण, उत्तरा भाद्र नक्षत्र से भादो, अश्विनी से अश्विन, कृतिका नक्षत्र से कार्तिक, मृगशिरा से मार्गशीर्ष या अगहन, पुष्य से पौस एव मघा नक्षत्र से माघ माह का नाम रखा गया है। विक्रम सवत् को फसली सवत् भी कहा जाता है क्योकि रबी की फसल की कटाई का सही समय यही होता है। इसी वजह से भारतीय ग्रामीण क्षेत्रो मे उल्लास का माहौल बना रहता है।

वर्ष प्रतिपदा के दिन का सृष्टि रचना के अलावा और भी महत्त्व है। माना जाता है कि इसी दिन मर्यादापुरुषोत्तम राम का राज्याभिषेक हुआ, महाराज युधिष्ठिर का राजतिलक हुआ, महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज की स्थापना की व संत झूलेलाल का जन्म भी इसी दिन हुआ था।

–विष्णु शर्मा

(साभार–दैनिक अमर उजाला)

आर्यसमाज का अन्तर

❑ भद्रसेन, बी-२,९२/७ बी, शालीमारनगर, होशियारपुर-१४६००१

एक बार श्री ओमप्रकाश जी आर्य प्रेमनगर, करनाल आर्यसमाज होशियारपुर के वार्षिक-उत्सव पर कथा के लिए आए। मैं उनसे इन दिनो कई बार मिला, उन्होने जाते हुए कहा–यहा के औषधालय मे कार्य कर रहे डाक्टर जी से अवश्य वार्तालाप कीजिए। मैं उनकी प्रेरणा पर डाक्टर जी से मिला, तब डाक्टर जी ने कहा–मैं अभी किसी धार्मिक सगठन से सम्बद्ध नहीं हुआ, अत यह बताइए आर्यसमाज का दूसरो से क्या अन्तर है ? मैंने यही प्रश्न श्री ओमप्रकाश जी से भी पूछा था और उन्होने मूर्तिपूजा का विशेष सकेत किया था। इतने मे वहा कुछ रोगी दवा लेने आ गए, अत अपनी 'आर्यसमाज दिग्दर्शन' पुस्तक देकर मैं आगया। डाक्टर जी का वहा से स्थानान्तरण हो जाने के कारण उनसे पुन भेट न हो सकी।

आर्यसमाज का दूसरो से क्या अन्तर है, इस पर गहराई से विचार करने के लिए कुछ प्रश्न उभरते हैं कि आर्यसमाज का स्वरूप क्या है ? आर्यसमाज के मन्तव्यो की मूल भावना कौनसी है ? क्योंकि तभी आर्यसमाज का दूसरो से क्या अन्तर है स्पष्ट हो सकता है। यह ठीक है कि धर्म शब्द से अभिहित होनेवाले अर्थो से भी इस प्रश्न पर विचार किया जा सकता है।

आर्यसमाज के प्रादुर्भाव की कहानी–इक्कीस वर्षीय शिक्षित युवा मूलशकर सच्चे शिव के दर्शन करने और मौत को जीतने अर्थात् उसके रहस्य को जानने की भावना को लेकर घर से चला। वे इस लक्ष्य को सिद्ध करानेवाले गुरु की खोज मे मूलशकर से शुद्ध चैतन्य ब्रह्मचारी और फिर दयानन्द सन्यासी बनकर लगातार १४ वर्ष नगरों, जगलो, पहाडो मे बसे विद्वानो, योगियो के चरणों में पहुचे। जिसने जो पढाया सो पढा, योग के रूप मे जिसने जो सिखाया सो एक विनीत शिष्य के रूप मे सीखा। अन्त मे ब्रह्मर्षि गुरु विरजानन्द जी दण्डी के यहा मथुरा पहुचे। वहा लगभग ढाई-तीन वर्ष अष्टाध्यायी-महाभाष्य का विशेष अध्ययन किया। मानसिक सकल्प को सिद्ध करानेवाला रास्ता जब हाथ मे आने लगा, तो विदा के लिए अनुमति लेने गुरु के चरणो मे पहुचे। तब स्वामी दयानन्द सन्यासी के जीवन का काटा ही बदलते हुए ब्रह्मर्षि दण्डी गुरु ने आर्षज्ञान की ज्योति को सारे ससार मे फैलाने का व्रत धारण करा दिया।

इस व्रत को पूर्ण करते हुए स्वामी दयानन्द सरस्वती भारत के सैकडो नगरो मे प्रचारार्थ पहुचे। लगभग चार हजार ग्रन्थों को पढने और जनता की भावनाओ को समझने के पश्चात् महर्षि दयानन्द ने १८७५ मे आर्यसमाज की स्थापना की। जिससे अपने कल्याण के लिए जनता स्वय सगठित तथा सनद्ध हो।

आर्यसमाज की विचारधारा–महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज के नियमो के द्वारा आर्यसमाज की विचारधारा को परिपक्व रूप मे प्रस्तुत किया। जिनमे सारे साहित्य का जहा सार है, वहा जीवन विकास के सर्वागीण सूत्र भी हैं। आर्यसमाज एक धर्मप्रचारक सगठन होने से आर्यसमाज से सम्बद्ध या आर्यसमाजी होने का अभिप्राय है–स्वय आर्यसमाज के मूल मन्तव्यो को अपनाना और दूसरो को भी वैसा बनने के लिए प्रेरित करना। जिससे आर्यसमाज की विचारधारा का प्रचार-प्रसार हो सके।

मूल भावना–आर्यसमाज की विचारधारा तथा क्रियाकलाप को या उसकी मूल भावना को मेरे विचार से दो सूत्रो मे इस प्रकार से कह सकते हैं। इसका पहला सूत्र है–सुसम्बद्ध-सार्थक प्रक्रिया, बातो, सिद्धान्तो, विचारो को अपनाना और दूसरा सूत्र है–सामाजिक भावना अर्थात् जन-जन के कल्याण की कामना, चाहना रखना, चिन्ता करना तथा इसके लिए हर प्रकार से सहयोग देना।

आर्यसमाज की मूल भावना के पहले सूत्र के अनुसार आर्यसमाज की मान्यताओ की कसौटी है–उसी-उसी सिद्धान्त, बात को मानना, जो-जो सुसम्बद्ध और सार्थक हो। अत अन्यो से आर्यसमाज का मूर्तिपूजा की पद्धति तथा उससे सम्बद्ध तीर्थयात्रा, व्रत, अवतारवाद आदि का ही अन्तर नहीं है, अपितु पितृयज्ञ के अन्तर्गत माने जानेवाले श्राद्ध-तर्पण का भी अन्तर व्यावहारिक रूप मे स्पष्ट है। इस बात की चर्चा करने से पहले आइए ! सर्वप्रथम इस मूल कसौटी को एक मोटे से उदाहरण से स्पष्ट कर ले। तब कसौटी के स्पष्ट हो जाने पर अन्यो की भी जाच-पडताल सरल हो जाएगी। मूलत कसौटी रूपी सुसम्बद्धता का यही भाव है कि जैसे हमारे कारोबार, रसोई, खेती मे हर बात उस-उस उत्पाद्यमान वस्तु से सुसम्बद्ध होती है। तभी तो वहा सार्थकता सामने आती है।

नमस्ते–जैसे कि हम सब जब आपस मे मिलते हैं, तो परस्पर अभिवादन, स्वागत, जी आया के लिए कोई न कोई शब्द बोलते हैं और कुछ न कुछ हाथ आदि से क्रिया करते हैं। इस अवसर पर आजकल अनेक प्रकार के शब्द आदि प्रचलित हैं। जिनका अर्थ प्राय अपने इष्टदेव का स्मरण, उस समय के काल का निर्देश या तब की जानेवाली क्रिया का सकेत होता है।

इस प्रसग में आर्यसमाज का विचार है कि दोनों हाथ जोडकर छाती के आगे रखते हुए नमस्ते शब्द का प्रयोग करना चाहिए जिसका सीधा-सा भाव है कि मैं आपका आदर करता हू। हा, बडा छोटे को इस आदर के लिए आशीर्वाद अर्थात् फूलने-फलने की भावना, चाहना, शुभकामना प्रकट करता है। इस प्रकार प्रचलित शब्दों में से नमस्ते शब्द प्रसंग के अनुरूप सुसम्बद्ध-सार्थक भाव अभिव्यक्त करता है।

आइए ! इस सोदाहरण कसौटी के आधार पर अब श्राद्ध, तर्पण जैसी व्यावहारिक बात पर कुछ विचार करें। श्राद्ध का अर्थ है–जो श्रद्धा से किया जाए और तर्पण का अर्थ है–तृप्त करना, सन्तुष्ट रखना। इस अवसर पर खीर, हलवा आदि का भोजन तैयार किया जाता है तथा फल, वस्त्र आदि प्रस्तुत किये जाते हैं।

पितृयज्ञ–इस सम्बन्ध में आर्यसमाज का विचार है कि पितृयज्ञ, पितृश्राद्ध, तर्पण प्रतिदिन जीवित माता-पिता आदि का ही करना चाहिए। क्योकि भोजन, फल, वस्त्र आदि से सेवा जीवित की ही हो सकती है। तभी वे तृप्त, सन्तुष्ट होकर सुसम्बद्ध रूप से तर्पण शब्द को सार्थक करते हैं। इसीलिए मनुस्मृति मे कहा है–

कुर्यादहरह. श्राद्धमन्नाद्येनोदकेन वा।
पयोमूलफलैर्वाऽपि पितृभ्य प्रीतिमावहन्।। ३,८२

पितरो की प्रीति को प्राप्त करने के लिए प्रतिदिन उनका अन्नादि, जल या दूध, कन्द मूल फलो से सत्कार करे। हा, इन भोजन, वस्त्र आदि भौतिक चीजों की जरूरत जीवित को ही होती है, मृतक को नहीं। इस व्यावहारिक बात से भी स्पष्ट होता है कि आर्यसमाज का प्रत्येक मन्तव्य सुसम्बद्ध-सार्थक है और यह इसी रूप मे ही प्रत्येक मान्यता को मानने के पक्ष मे है। आइए ! अब कुछ पूजा, ईश्वर भक्ति की बात करे।

हां, मैंने जब डाक्टर जी की दृष्टि से इस बात पर विचार आरम्भ किया। उसी दिन सायकाल आकाशवाणी जालन्धर पर पजाबी मे प्रचलित लोकगीत के कार्यक्रम मे पीपल, बड, तुलसी से सम्बद्ध लोकगीत आदि प्रस्तुत किये गए। जिस कार्यक्रम मे पीपल आदि की पूजा की चर्चा थी, पर उस-उसके उपयोग की कोई बात नहीं थी। अगले दिन जब एक पीपल के पास से गुजरा, तो वहा जलसिचन के साथ, चारो ओर धागा लपेटते हुए एक को देखा और बाद मे उसने गुलगुले जैसे कुछ भोज्य पदार्थ तथा फूल, धूप चढाया, हाथ जोड़कर माथा नवाया। प्राय साय या रात को वहां दीपक जलते देखा जाता है, अनेकदा पीपल पर लाल लगोट या वस्त्र बन्धे हुए भी देखा जाता है।

ऐसे ही तुलसी और कबर पर वस्त्र चढाने, दीपक जलाने, तेल-फूल-धूप-भोज्य पदार्थ भेट करने, मत्था नवाने, मनौती मागने आदि के कार्यक्रम यत्र-तत्र देखने मे आते हैं।

मूर्ति–आइए ! इन रूपो के आधार पर मूर्तिपूजा पर कुछ विशेष विचार किया जाए। मूर्ति शब्द मूलत. '**मूर्छा घन**' ठोस के लिए आता है, पर विशेषत किसी द्वारा तैयार हुई आकृतियुक्त वस्तु के लिए प्रचलित होगया है। अत पूजा मे कागज आदि पर अंकित सीसे से मडित के साथ मिट्टी, रेत, पत्थर तथा विविध धातुओ से बनी आकृति युक्त का भी प्रयोग होता है।

पूजा–शब्द आदर, सत्कार का जहा वाचक है, वहां मूर्तिपूजा इस समस्त शब्द का भाव है कि इष्टरूप मे मान्य वस्तु का दर्शन, माथा टेकना, पूजा सामग्री (=धूप, दीप, पुष्प, भोज्य-प्रसाद आदि) का अर्पण, तत्सम्बद्ध मन्त्र, शब्द का उच्चारण, वर-कामना का प्रकट करना आदि पद्धति का पालन करना।

आज के प्रचलित मूर्तिपूजा के कारण व्यक्ति इतने मे ही सन्तुष्ट हो जाता है कि मैंने इष्टदेव के दर्शन, पूजा-भेंट चढाकर अपना कर्तव्य पूर्ण कर लिया। अत इतनी पूजा से ही मेरी सारी इच्छायें पूर्ण हो जायेगी, तभी तो आरती मे गाया जाता है–'मनोवांछित फल पाए'। इसीलिए हम प्राय देखते-सुनते हैं कि 'दे तैल की पली-कुल बला टली' अर्थात् शनिवार को तैल दान से सारे कष्ट, क्लेश दूर हो जाते हैं। प्राय यह भावना घर कर गई है कि धन, सफलता आदि प्राप्त करने के लिए इस पूजा से अतिरिक्त और कुछ करने की आवश्यकता नहीं है। इसी प्रकार की भावनाओं के सामने रखकर ही मुण्डक उपनिषद् के ऋषि ने कहा है–वय कृतार्था-इत्यभिमन्यन्ति बाला' (१,२,९)। हा, पूजा से सारी कामनाये पूर्ण हो जाती हैं कि पुष्टि मे हमारे धार्मिक जगत् में अनेक कहानिया भी प्रचलित हैं।

इसी का परिणाम है कि प्रचलित मूर्तिपूजा की भावना से प्रभावित होकर हम न तो योगसाधना में लगते हैं और न ही उसके लिए कुछ समय निकालना आवश्यक समझते हैं। कई बार अनेक धन, सफलता प्राप्त करने के लिए मेहनत, पढाई आदि भी छोड बैठते हैं।

महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश के एकादश समुल्लास में मूर्तिपूजा के सारे पहलुओ पर विचार करते हुए, वहा १६ दोषो की ओर ध्यान आकर्षित किया है। इस प्रकरण मे सबसे पहले इस बात को उजागर किया है कि हमारे मान्य वेद, उपनिषद्, दर्शन आदि शास्त्रो मे कहीं भी मूर्ति और उसकी पूजा का विधान नही है। दूसरी यह बात है कि मूर्तिपूजा की प्रचलित प्रक्रिया योग, ध्यान, जाप, भक्ति की पद्धति से बिल्कुल उलटी है। योग, ध्यान मे स्वाभाविक रूप से यह नियम है कि–

आख-कान मुख मूदकर, नाम निरञ्जन लेय।
अन्दर के पट तब खुले, बाहर के पट देय।।

और कबीर जी सावधान करते हैं–

कर का मनका डालकर, मन का मनका फेर।

अर्थात् हाथ आदि से किए जानेवाले पूजा के ढग को छोडकर मन को लगा। वैसे कहीं भी कोई भी मूर्तिपूजा द्वारा ध्यान, योग, भक्ति करता हुआ नहीं मिलता। वैष्णोदेवी, अमरनाथ यात्रा आदि मे तो आंख भरकर दर्शन का अवसर नहीं मिलता।

हां, आज की मूर्तिपूजा मे मूर्तिपूजा शब्द एक ईश्वर के स्थान पर अनेक इष्टो की पूजा का वाचक बनकर सामने आरहा है जिसको बहुदेववाद भी कह सकते हैं।

ईश्वर–ईश्वर के सम्बन्ध मे आर्यसमाज का विचार है कि मेरे-आपके चारो ओर सूर्य, जल, वायु, धरती जैसे ऐसे करोडो भौतिक पदार्थ हैं जिनका बनानेवाला हम जैसा कोई भी नहीं है, ये प्राकृतिक पदार्थ और इन सबकी नियमित व्यवस्था अपने कर्ता, धर्ता की ओर संकेत करती है। उसी ससार के बनाने-चलानेवाले का नाम ईश्वर है। ये प्राकृतिक पदार्थ तथा इनकी व्यवस्था किसी एक क्षेत्र, काल तक सीमित नहीं है। अत. ईश्वर सर्वव्यापक, नित्य, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान् आदि गुणवाला है। हा, सर्वव्यापक सदा एक ही होता है, अन्यथा वह सर्वव्यापक, सर्वज्ञ आदि नहीं कहला सकता। सर्वव्यापक निराकार ही होता है, क्योंकि साकार सदा सीमित, भौतिक, परिवर्तनशील, विकारी होता है।

भक्ति–जल, वायु जैसी अमूल्य वस्तु देनेवाले का हमें सदा धन्यवाद, कृतज्ञता ज्ञापन करना चाहिए। ऐसा करने से हमें स्वाभाविक रूप से आत्मिक बल, मानसिक शान्ति भी प्राप्त होती है। इसी का नाम ही उपासना, योग, ध्यान, पूजा, भक्ति है। इसलिए कहा जाता है–

हर जगह मौजूद है–पर नजर आता नहीं।
योगसाधन के बिना–इसको कोई पाता नहीं।।

हां, योग, ध्यान मे स्वत: ही यह स्थिति हो जाती है–

आंख-कान-मुख मूंदकर–नाम निरंजन लेय।
अन्दर के पट तब खुलें–बाहर के पट देय।।

सर्वव्यापक परमात्मा निराकार, अभौतिक है, अत. उसकी मूर्ति कहीं भी, कभी भी, कोई बना नहीं सकता अर्थात् हो नहीं सकती। इसीलिए आर्यसमाज का मूर्तिपूजा से मतभेद है। मूर्ति सदा साकार की एक रूप मे ही होती है, पर आजकल चारो ओर एक-दूसरे से भिन्न अनेको मूर्तिया मिलती है, वे एक सर्वव्यापक प्रभु की कैसे हो सकती हैं? हा, उनके प्रचलित नाम तथा तत्सम्बद्ध जीवन चर्चा यह बताती है कि ये महापुरुषो, गुरुओ, अवतारो, देवताओ की है। जब ईश्वर सर्वव्यापक, निराकार, अभौतिक है, तो जहा उसकी किसी प्रकार की मूर्ति नहीं हो सकती, वहा परमात्मा के पूर्णकाम होने से प्रचलित मूर्तिपूजा के अनुसार उसकी खिलाने, वस्त्र पहनाने की प्रक्रिया कैसे की जा सकती है। अत आर्यसमाज का विचार है कि मन के द्वारा ही हमे ईश्वर के स्वरूप का चिन्तन करते हुए उसके गुणो को विचारने मे लगाना चाहिए। इसीलिए कबीर जी ने सचेत करते हुए कहा है–'कर का मनका छोडकर–मन का मनका फेर' अर्थात् हाथ आदि बाह्य इन्द्रियो से होनेवाली पूजा की पद्धति को छोडकर अभौतिक प्रभु का मन से मनन, चिन्तन करना चाहिए।

अवतार–प्रभु जब सर्वव्यापक, नित्य, अजन्मा है, तो उसका कही से अवतरण, आना-जाना, जन्म कैसे हो सकता है।

तीर्थ–तीर्थ का अर्थ है तारने का साधन, अत अच्छी सीख देनेवाले गुरु ज्ञानी, सत्सग, धर्म, ईश्वर ही तीर्थ है।

प्रस्तुत विवेचन से स्पष्ट हो जाता है कि आर्यसमाज का दूसरो से यही स्पष्ट अन्तर है कि वेदादि शास्त्रो द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तो के सुसम्बद्ध-सार्थक स्वरूप को ही वह स्वीकार करता है और उन-उन व्यावहारिक तत्त्वो को अपनाने की बात करता है।

आर्यसमाज न्यात (सोनीपत) का चुनाव

प्रधान-श्री रामफल आर्य, मन्त्री-श्री महेन्द्र शास्त्री, उपप्रधान-श्री राजेन्द्रसिंह, कोषाध्यक्ष-श्री मुकेशकुमार।

मरी हुई मूर्ति के आगे टेक रहे हैं मत्था

आर्यो के घर मे हो रही वैदिक सिद्धान्त की हत्या।
मरी हुई मूर्ति के आगे टेक रहे है मत्था।।टेक।।

वेदोपदेश करण की ब्राह्मण कर गये बिल्कुल टाल।
घर और गावो मे फैला रहे पाखण्ड रूपी जाल।
पर उपदेश कुशल बहुतेरे यह है जिनका हाल।
ऐसो पर चरितार्थ होती बैंगण की सब्जी की मिसाल।

कीचड उछाल कर औरो पर दिखा रहे है धत्ता।
मरी हुई मूर्ति के आगे टेक रहे हैं मत्था।।१।।

पत्थर फेके औरो पर शीशे के बैठ मकान मे।
आप सुरक्षित रहना चाहता अकल नहीं नादान मे।
सबसे उत्तम नाम आर्य श्रेष्ठ और श्रीमान् मे।
शत्रु को भी मित्र बनाले रस हो जिसकी जबान मे।

मिलनसार होना चाहिये मत बनो भिरड़ का छत्ता।
मरी हुई मूर्ति के आगे टेक रहे है मत्था।।२।।

भौरा फूल सुगन्धि चाहता मक्खी देखे घाव।
कुटिल करोत, कुल्हाडी, कैंची, काटण का स्वभाव।
मानवता हर व्यक्ति मे होना चाहिये भाव।
तभी तो बन्दे भवसागर से पार होगी तेरी नाव।

रूठे हुओ को मिला लो तुम मत बनो पान का कत्था।
मरी हुई मूर्ति के आगे टेक रहे हैं मत्था।।३।।

औरो के मत दोष निहारो देखो मै हू कैसा।
मनसा वाचा और कर्मणा पवित्र बनो तुम ऐसा।
घर और गाव बाहर भी अच्छे सुचरित्र बनो तुम ऐसा।
और भी सुधरे तुम्हे देखकर मित्र बनो तुम ऐसा।

फिर तो एक दिन होवेगी यहा श्रेष्ठ जनो की सत्ता।
मरी हुई मूर्ति के आगे टेक रहे है मत्था।।४।।

–विश्वमित्र भजनोपदेशक, ग्राम-पो० लूखी (रेवाडी)

मोक्ष प्राप्ति का मार्ग......

(पृष्ठ २ का शेष)

हठयोग प्रदीपिका मे दृढतापूर्वक यह लिखा है कि–

ब्राह्मणक्षत्रियविशा स्त्रीशूद्राणा च पावनम् ।
शान्तये कर्मणामन्यद् योगान्नास्ति विमुक्तये ।।
युवा वृद्धोऽतिवृद्धो वा व्याधितो दुर्बलोऽपि वा ।
अभ्यासात् सिद्धिमाप्नोति सर्वयोगेष्वतेन्द्रित ।।

अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य, शूद्र एव स्त्रियो को पवित्र करनेवाला व इनके भाग्य मे लिखे अशुभ कर्मो को मिटानेवाला तथा मोक्ष प्रदान करनेवाला केवल योगविद्या है और कोई विधि नही। इतना ही नहीं वृद्ध अतिवृद्ध बीमार और दुर्बल क्यो न हो, प्रत्येक योग अभ्यास एव तप द्वारा सिद्धि एव मोक्ष प्राप्त कर सकता है।

महर्षि पतजलि जी ने योग के आठ अग लिखे हैं–ये हैं यम, नियम, आसन, प्राणायाम प्रत्याहार धारणा ध्यान समाधि। परन्तु इस आठ पावोवाली सिढी पर चढने से पहले मनुष्य को बाह्य ससार को त्यागकर अन्तर्मुखी होने की जरूरत है जो हमे यम, नियम के जीवन मे पालन से मिलती है। अब देखे यम नियम क्या हैं? यम पाच है–सत्य, अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह। जो जैसा देखा सुना वैसा ही बताया सत्य कहा जाता है। प्रकृति के प्रत्येक प्राणी से वैर त्याग कर, निर्वैर होकर प्रेम करना अहिंसा कहलाता है। चोरी न करना और ना ही दूसरो को इसके लिए उकसाना अस्तेय कहा जाता है। २५ वर्ष तक विद्या अध्ययन एव वीर्य रक्षा करना तथा गृहस्थी को मर्यादित जीवन जीना ब्रह्मचर्य माना जाता है। अपनी आवश्यकता से अधिक सामान व सम्पत्ति न रखना और न ही खरीदना अपरिग्रह कहलाता है।

नियम भी पाच है, शौच, सन्तोष तप, स्वाध्याय, ईश्वरप्रणिधान। शरीर की बाहर और भीतर की सफाई शुद्धि को शौच माना है। अपने मानसिक एव शारीरिक परिश्रम से जो प्राप्त होता है उससे निर्वाह करना सन्तोष है। यम और नियमो का अक्षरश पालन करना तप है, आर्षग्रन्थो का अध्ययन एव मनन चिन्तन करना स्वाध्याय कहा जाता है और ईश्वर के प्रति अपनी श्रद्धा व सच्ची निष्ठा ईश्वरप्रणिधान को बल देती है। हम इस निष्कर्ष पर पहुचे कि यम-नियम का पालन ही योग मे प्रगति की आधारशिला है। लेकिन कहा जाता है कि **शरीरमाद्य खलु धर्मसाधनम्।** यानि सभी धार्मिक कार्यो को सफलतापूर्वक करने का साधन स्वस्थ शरीर है तो स्वस्थ शरीर व्यायाम तथा आसनो, सात्विक भोजन के निरन्तर अभ्यास से मिलता है। परन्तु धारणा, ध्यान, समाधि पर अग्रसर होने के लिए शरीर की आन्तरिक शुद्धि भी आवश्यक है जो हमे योग मे बताए गए षट् कर्म अर्थात् छ क्रियाओ से प्राप्त होती है। ये शुद्धि क्रियाए हैं–(१) नेति (जलनेति सूत्रनेति दुग्धनेति) (२) कपालभाति, (३) बस्ती, (४) धोती (वमन धोती) (५) गजकरणी या कुजलक्रिया, (६) दण्ड धोती, वस्त्र धोती, (७) न्यौली, (८) त्राटक, (९) आतो की शुद्धि के लिए शख प्रक्षालन। अर्थात् उपरोक्त वर्णित शुद्धि क्रियाओ के अभ्यास द्वारा मनुष्य आन्तरिक शुद्धि प्राप्त करके शरीर को एकदम स्वस्थ रख सकता है और आख, नाक गला उदर और आमाशय के रोगो से छुटकारा पा सकता है। योग मे आसनो के बाद चौथी कडी प्राणायाम है। इसका अर्थ है प्राणो का व्यायाम तथा श्वास-प्रश्वास की क्रिया पर नियन्त्रण करना। चूकि श्वास-प्रश्वास की गति को सामान्य बनाना ध्यान मे अति आवश्यक है क्योकि मन को एकाग्रता प्रदान करती है। प्राणायाम के तीन भेद हैं पूरक रेचक व कुम्भक। बाहर से श्वास को भीतर लेना पूरक, भीतर से बाहर निकालना रेचक और श्वास को यथास्थिति मे रोकना कुम्भक या स्तम्भवृत्ति भी कहा जाता है।

कुम्भक चार प्रकार से किया जाता है–(१) बाह्य, (२) आभ्यन्तर, (३) स्तम्भवृत्ति, (४) विषयापेक्षी, (५) नाडी शुद्धि, (६) अनुलोम-विलोम, (७) भस्त्रिका, (८) उज्जायी, (९) शीतकारी, (१०) शीतली, (११) भ्रामरी।

आसन प्राणायाम या षट्कर्म (शुद्धि की छ क्रियाए) किसी भी योग शिक्षक से सीख सकते हैं।

सावधान–यदि टी०वी० आदि पर देखकर आसन, प्राणायाम एव षट् कर्म करना शुरू कर दिया तो लाभ की बजाए हानि भी हो सकती है। मैंने बहुत लोगो को योग से लाभ लेने की बजाए हानि उठाते देखा है किसी ने ठीक कहा है कि **'देखा देखी सीखे योग, बह जाए काया रह जाए रोग'**। इसीलिए आसन, प्राणायाम एव छ क्रियाए किसी जानकार या विशेषज्ञ या योग केन्द्र की देखरेख में सीखने व करने चाहिए।

प्रत्याहार–योग का छठा अग है जिसके अन्तर्गत योगाभ्यासी अपनी ज्ञानेन्द्रियो को मन द्वारा सासारिक विषयो से हटाकर अन्तर्मुखी करता है जिसके फलस्वरूप मनुष्य का ध्यान ईश्वर मे धारणा की ओर बढता है।

इसके आगे योग अभ्यासी की बुद्धि एव शरीर स्वस्थ व निर्मल होकर ईश्वर को एक परमशक्ति धारण करके ध्यान मे मग्न हो जाता है और ईश्वरीय शक्ति मे दृढ विश्वास बन जाता है फिर तो ध्यान लगाना उसके लिए बच्चो का खेल हो जाता है जब भी साधक ध्यान मे बैठ जाता है तो उसका ध्यान उस परमशक्ति के साथ तन्मय होकर चिरस्थायी समाधि को प्राप्त कर लेता है। **पहली विशेष बात ये है** कि योगाभ्यासी को यम-नियमो का पालन मन वचन एव कर्म से श्रद्धापूर्वक करना चाहिए। **दूसरी विशेष बात है** कि योगाभ्यासी दूसरे के गुणो को ही देखे दोषो को नहीं और अपने दोषो को देखे गुणो को नहीं। केवल तभी योगाभ्यासी भोग से पैदा होनेवाले रोगो से निवृत्ति पाकर धारणा, ध्यान व समाधि मे अग्रसर होता हुआ मोक्ष प्राप्त करने का अधिकारी बन सकता है।

वर्तमान युग के महान् योगी एव समाज सुधारक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने ईश्वर उपासना विधि मे लिखा है कि योगाभ्यासी धारणा एव ध्यान करते समय ईश्वर के गुण-कर्मो का मनन, चिन्तन करके ये दृढ निश्चय करे कि जैसे ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव पवित्र हैं, वैसे ही अपने करना, ईश्वर को सर्वव्यापक, अपने आपको व्याप्य जान के ईश्वर के समीप हम और हमारे समीप ईश्वर है ऐसा निश्चय योगाभ्यास से साक्षात्कार करना उपासना कहाती है। इसका फल विवेक ज्ञान की प्राप्ति होके योगी का मोक्ष की ओर अग्रसर होना है।

हम इस निष्कर्ष पर पहुचे कि मनुष्य को आध्यात्मिक जीवन जीना है और मोक्ष प्राप्ति की इच्छा है तो योग की आधारशिला अर्थात् यम, नियम एव प्रत्याहार को पूर्णतया व्यावहारिक जीवन मे ढालकर धारणा ध्यान एव समाधि की उच्च पराकाष्ठा की ओर अग्रसर होकर मोक्ष प्राप्ति की सिद्धि को पाना है। क्योंकि नैतिक मूल्यो के पालन बिना हमारी ईश्वर मे सच्ची आस्था नहीं बन सकती और नैतिक मूल्य हमे यम-नियम के अनुसार जीवन चलाने से ही मिल सकते हैं अन्यथा कोरे दिखावे और छल, कपट के जीवन, व्यवहार से तो ससार मे योही सुखो-दु खो एव कष्टो के झमेले मे चक्र लगाते रहोगे। आइए योग मे दर्शाए गए जीवन व्यवहार को अपनाए और परिवार समाज एव राष्ट्र को सुखी व समृद्ध बनाए।

–आर्य अतरसिंह ढाण्डा, उपप्रधान आर्यसमाज लाजपतराय चौक, हिसार

हरयाणा प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन की झलकियां

स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती सभा प्रधान ध्वजारोहण करते हुए

चौ० मित्रसेन जी स्वामी ओमानन्द जी को एक लाख ग्यारह हजार रुपये की राशि भेंट करते हुए।

श्री वेदप्रकाश आर्य महामंत्री आर्यवीर दल हरयाणा भजगान गाते हुए

श्री राजेन्द्र कुमार आर्य व सुखवीर शास्त्री शोभायात्रा का नेतृव करते हुए

स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती बलिदान भवन की ओर जाते हुए

श्री बलराज आर्य रोहतक श्री जगदीश सीवर सिरसा आदि घोडो पर सवार शोभायात्रा का नेतृत्व करते हुए

चौ० मित्रसेन सिन्धु बलिदान भवन का उद्घाटन करते हुए

श्री महेन्द्रसिह शास्त्री सभा उपमन्त्री शोभायात्रा का नेतृत्व करते हुए

रथ पर शोभायमान स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती

श्री बलवानसिंह टिटौली अन्य आर्यजनो के साथ जीप मे सवार शोभायात्रा का नेतृत्व करते हुए

आर्य केन्द्रीय सभा गुडगाव के वरिष्ठ सदस्य शोभायात्रा मे भाग लेते हुए

शोभायात्रा मे गुरुकुल झज्जर के ब्रह्मचारी

स्वामी दयामुनि विद्यापीठ शिवनगर सोनीपत की छात्राए शोभायात्रा मे भाग लेती हुए

कन्या गुरुकुल लोवा कला की छात्राए शोभायात्रा मे भाग लेती हुए

मच पर विराजमान स्वामी ओमानन्द जी, श्री साहिब सिह वर्मा पूर्व मुख्यमन्त्री दिल्ली एव स्वामी इन्द्रवेश जी आर्य राज सम्मेलन मे

मच पर विराजमान आचार्य यशपाल जी सभामत्री, श्री बलराज एलावादी सभा कोषाध्यक्ष एव बहन कलावती आर्या

गोरक्षा सम्मेलन मे मच पर विराजमान आचार्य बलदेव जी, स्वामी ओमानन्द जी, प्रो० शेरसिह जी, स्वामी गोरक्षानन्द जी व स्वामी इन्द्रवेश जी।

श्री महेन्द्रसिह शास्त्री सभा उपमत्री चौ० मित्रसेन सिन्धु का स्वागत करते हुए

श्री साहिब सिह वर्मा पूर्व मुख्यमन्त्री दिल्ली आर्यराज सम्मेलन मे सम्बोधित करते हुए

चौ० राममेहर एडवोकेट आर्यराज सम्मेलन मे सम्बोधित करते हुए

श्री धर्मबन्धु गुजरात वैदिक धर्म सम्मेलन मे सम्बोधित करते हुए

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ०१२६२–७६८७४, ७७८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष . ०१२६२–७७७२२) से प्रकाशित।
पत्र मे प्रकाशित लेख सामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री का सहमत होना आवश्यक नहीं। पत्र के प्रत्येक प्रकार के विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक होगा।

भारत सरकार द्वारा रजि० न० २३२०७/७३ सृष्टिसंवत् १,९६,०८,५३,१०२
पजीकरणसंख्या टैक/85-2/2000 ☎ ०१२६२-७७७...

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र रोहतक

प्रधानसम्पादक : यशपाल आचार्य, सभामन्त्री सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री

वर्ष २६ अंक २१ २१ अप्रैल, २००२ वार्षिक शुल्क ८०) आजीवन शुल्क ८००) विदेश में २० डॉलर एक प्रति १.७०

विशाल हरयाणा प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन ६-७ अप्रैल

परिशिष्ट विवरण

मंच पर बैठे हुए श्री धर्मबन्धु गुजरात, स्वामी इन्द्रवेश, डॉ० रामप्रकाश कुरुक्षेत्र एवं प्रो० रामविचार

सम्मेलन मे उपस्थित जनसमूह

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्त्वावधान मे प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन ६-७ अप्रैल, २००२ को धूमधाम से सम्पन्न हुआ। विषम परिस्थितियो के बाद सम्मेलन की सफलता के लिए आर्यजनता बधाई की पात्र है। सभा अधिकारियो ने सम्मेलन की तैयारी के लिए जहा भी दौरा किया वहीं से आर्यजनता पूरी तैयारी के साथ पधारी है। पानीपत, कुरुक्षेत्र, अम्बाला, पंचकूला, शाहबाद, यमुनानगर, करनाल, नरवाना, जींद, सफीदो, सिरसा, हासी, होडल, पलवल, गुडगावा, सोनीपत आदि से आर्यजनता पूरी तैयारी के साथ सम्मेलन में पधारी तथा आर्थिक सहयोग प्रदान किया। इसी तरह सम्मेलन की सूचना जहा भी पहुची, वहीं से आर्यजनता तैयारी के साथ चल पडी। भिवानी, लोहारू, महेन्द्रगढ, रिवाडी, कैथल, दादरी आदि सभी स्थानो से लोग पधारे।

इस अवसर पर निम्न प्रकार से सम्मेलनो का आयोजन किया गया जो विषयानुसार है–

सम्मेलन की रूपरेखा

१. वैदिक धर्म सम्मेलन

१ वेदों का सत्य स्वरूप। २ वैदिक वर्णव्यवस्था (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र)। ३. वैदिक आश्रम व्यवस्था (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, सन्यास)। ४ वेद और भारतीय सस्कृति। ५ वैदिक धर्म तथा मत-मतान्तरो की तुलना। ६ वैदिक धर्म के मूल तत्त्व। ७ वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द। ८ वेदप्रचार और महर्षि दयानन्द। ९ आर्यसमाज का शुद्धि आन्दोलन। १० वैदिक धर्म की परिभाषा।

प्रस्ताव–वैदिक धर्म के प्रचार के लिये उपदेशक महाविद्यालय की स्थापना।

२. गोरक्षा सम्मेलन

१ गोरक्षा और महर्षि दयानन्द। २ वेदो मे गौ का गुणगान। ३ गावो विश्वस्य मातर। ४ श्रीकृष्ण की गोभक्ति। ५ गौ के दुग्ध आदि पदार्थो का आयुर्वेदिक मूल्याकन। ६ गौ की कोख मे सवा मण सोना। ७ आर्यसमाज का गोरक्षा आन्दोलन।

प्रस्ताव–१. प्रत्येक आर्य अपने घर मे गाय रखे। २ महर्षि दयानन्द, महात्मा गांधी आदि महापुरुषो की जयन्ती के अवसर पर तथा दीपावली आदि पर्वों पर समस्त भारत मे गोहत्या बद रहे (बूचडखाने बद रहे)।

३. आर्य महिला सम्मेलन

१ वैदिक नारी का स्वरूप। २ नारी जाति के उत्थान मे आर्यसमाज का योगदान। ३ महर्षि दयानन्द और नारी शिक्षा। ४ यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते। ५ वैदिक कालीन ऋषिकाये। ६ भारत की वीरागनाये। ७ नारी के शोषण उत्पीडन और दहेज आदि से मुक्ति। ८ भ्रूण हत्या एक अभिशाप।

प्रस्ताव–अपने क्षेत्र की विधवा, अनाथ कन्या आदि के सरक्षण मे स्थानीय आर्यसमाज महत्त्वपूर्ण भूमिका प्रदान करे।

४. आर्यराज सम्मेलन

१ भारत मे स्वतन्त्रता और महर्षि दयानन्द। २ ...समाज का

पहली कक्षा से ही संस्कृत पढ़ायेंगे—सिंह

प्रदेश के शिक्षामंत्री ने कहा कि सर्व शिक्षा अभियान भी सफलतापूर्वक चलाया जाएगा

पानीपत, १ अप्रैल। राज्य सरकार पहली कक्षा से अंग्रेजी शिक्षा लागू करने के बाद अब संस्कृत शिक्षा पर जोर देगी। इसके अलावा सरकार का प्रयास है कि सभी सरकारी स्कूलो मे सर्व शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया जाए जिसके लिए एक अभियान भी चलाया जाएगा।

प्रदेश के शिक्षामंत्री बहादुरसिंह ने रविवार को सरकारी रेस्ट हाउस मे एक भेंट मे चर्चा करते हुए कहा कि अंग्रेजी शिक्षा अनिवार्य घोषित किये जाने पर सरकार की चौतरफा निंदा की जा रही थी, लेकिन आज निंदा करनेवाले ही सरकार की इस योजना की सराहना कर रहे हैं कि हरयाणा मे अंग्रेजी की शिक्षा जरूरी है। उन्होंने एक प्रश्न के जवाब मे कहा कि सरकार का संस्कृत के बढावे पर ध्यान है और इसे अंग्रेजी की तरह लागू किया जाएगा, ताकि बच्चे देश की संस्कृति से आत्मसात् हो सके।

शिक्षामंत्री ने कहा कि प्रदेश के दो कालेजो को छोडकर सभी कालेजो मे कम्प्यूटर शिक्षा बेहतर ढग से लागू हो चुकी है तथा इस सत्र मे इसराना व सापला के डिग्री कालेजो मे लागू करा दी जाएगी। बहादुरसिंह ने कहा कि इसके अलावा केंद्र सरकार के आदेश पर एक अप्रैल से ही सर्व शिक्षा अभियान शुरू कर दिया गया है, जिसमे छह स चौदह वर्ष तक के बच्चो को शिक्षा अनिवार्य है, ताकि उन्हे आठवीं कक्षा तक शिक्षा दिलाई जा सके। शिक्षामंत्री ने कहा कि केंद्र सरकार की इस योजना को प्रदेश मे सफलता पूर्वक लागू कराया जाएगा।

उन्होंने इस बात को स्वीकारा कि सरकारी स्कूलो मे जगह व ससाधनो की कमी से कम्प्यूटर शिक्षा पूरी तरह से लागू नहीं हो पा रही है, लेकिन इसके बढावे के प्रयास किये जायेंगे। एक अन्य सदर्भ मे उन्होंने कहा कि प्रदेशभर मे शिक्षको की सभी पदो मे नई भर्ती भी इस सत्र मे कर दी जाएगी। उन्होंने कहा कि जहा से माग आ रही हैं, वहा नए सरकारी स्कूल खोले जा रहे हैं।

विशाल हरयाणा आर्य प्रान्तीय........ (पृष्ठ १ का शेष)

भारतीय स्वतन्त्रता मे योगदान। ३ आर्यों का चक्रवर्ती राज्य ऐतिहासिक पक्ष। ४ आदर्श भारत के निर्माण के लिये आर्य राजसभा की स्थापना। ५ आर्यवीरो के बलिदान। ६ भारत के मूल निवासी आर्य।

प्रस्ताव—आर्य राजसभा की स्थापना करके तत्काल कार्य आरम्भ किया जाए।

५. आर्यवीर सम्मेलन

१. आर्यवीरों के नवनिर्माण के लिये उपाय :—

१ ब्रह्मचर्य शिक्षण शिविर। २ योग एव व्यायाम शिविर। ३ नैष्ठिक ब्रह्मचर्य दीक्षा। ४ आर्यसमाज मे युवको को दीक्षित करने का अभियान। ५ देश की आजादी मे युवकों के बलिदान। ६ राष्ट्र निर्माण मे युवक-युवतियो की भूमिका।

इस तरह अपने आप मे सम्मेलन बेहद सफल रहा है, इसके लिए सभी आर्यजनता बधाई की पात्र है। आर्यवीर दल के सहयोग से निकाली गई शोभायात्रा, एक आकर्षण का केन्द्र थी। सभी आर्यजनता ने एकता का परिचय दिया। इस तरह भविष्य मे भी आर्यसमाज के संगठन को सुदृढ करने हेतु सहयोग प्रदान करते रहे, सम्मेलन की व्यवस्था प्रबन्ध मे कहीं कोई त्रुटि रह गई हो, अथवा सम्मेलन मे जिस वक्ता महानुभावो को समय का अभाव रहा, उनके लिए हम क्षमाप्रार्थी हैं। भविष्य मे कोई त्रुटि न हो इसका पूरा ध्यान रखा जाएगा। आप समय-समय पर अपने सुझाव भेजते रहे। सहयोग के लिए मैं पुन आपका आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की तरफ से धन्यवाद करता हू तथा आपका स्वागत है।

सभामंत्री द्वारा सम्मेलन में स्वागत भाषण एवं संक्षिप्त कार्यक्रम

आदरणीय अध्यक्ष महोदय, संन्यस्त वृन्द, आर्य नेताओ, आर्य प्रतिनिधियो, आर्य बन्धुओ, आर्य बहिनो मैं आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की तरफ से आपका हार्दिक स्वागत करता हूं, मैं आप सभी का हृदय से आभारी हू कि आप लोग अपने अनेक आवश्यक कार्य छोड़कर महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज के प्रति अपनी गहरी आस्था प्रकट करने हेतु महासम्मेलन मे पधारे हैं। विशेष रूप से मैं अपने उन ग्रामीण भाइयों का विशेष रूप से आभारी हू जो फसल की कटाई के महत्त्वपूर्ण कार्य को छोडकर यहा पधारे हैं। इस सम्मेलन मे अनेक विषयो पर गहराई से विचार करने के लिये प्रबुद्ध और विद्वान् वक्ताओ को आमत्रित किया गया है और आप सभी के लिये आर्य प्रतिनिधि सभा की तरफ से सम्मेलन और शोभायात्रा तथा भोजन एव आवास की व्यवस्था की गई है, पूरे महासम्मेलन की तैयारी मे जिनमे निमन्त्रण पत्र स्मारिका का प्रकाशन भी है, मे कहीं कोई त्रुटि रह गई हो तो उसके लिये आप क्षमा करेगे। भविष्य मे उसकी पुनरावृत्ति न हो इसका पूरा ध्यान रखा जाएगा।

श्रद्धेय सभापति महोदय ! युग कवि मैथिलीशरण गुप्त ने हमारे कर्तव्य की ओर ध्यान आकर्षित करते हुये कहा है कि–

"हम कौन थे, क्या होगये और क्या होंगे अभी।
आओ विचारे आज मिलकर ये समस्याये सभी।।

यह तो ठीक है कि आर्यसमाज ने वेदप्रचार के कार्य को आगे बढाया है, आर्यसमाज ने अनेक आन्दोलन भी किये हैं। समाज सुधार के किसी भी क्षेत्र मे आर्यसमाज कभी पीछे नहीं रहा, यहां तक कि हरयाणा प्रान्त बनाने मे भी आर्यसमाज की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है, किन्तु आज इस हरयाणा प्रान्त मे भी अनेक प्रकार की बुराइया पनप रही हैं। जगह-जगह ग्रुपबाजी, अन्याय, अत्याचार, अनाचार, नशाखोरी, दहेज, भ्रूणहत्या, जूआ, जातिवाद आदि अपराध तेजी से बढ रहे हैं, ईसाइयो का चक्र भी इस प्रदेश मे जगह-जगह फैल रहा है, मुस्लिम सम्प्रदाय भी तेजी से फैल रहा है, अन्य मतावलम्बी, पौराणिकवाद, गुरुडमवाद को बढावा दे रहे हैं। इन हालातो से डटकर मुकाबला करना आर्यसमाज का ही परम कर्तव्य है। इस आर्य महासम्मेलन के माध्यम से आज हम मिलकर आलस्य और निराशा को दूर कर ऋषि की विचारधारा को आर्यसमाज के सिद्धान्तो को ससार मे फैलाने की ठोस योजना तैयार करे जिस पर सभी आर्य मिलकर काम कर सके। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की तरफ से कार्यक्रम को आगे बढाने के लिये एक प्रारूप तैयार किया गया है, जिस पर आपकी सहमति और सहयोग आवश्यक है। सर्वप्रथम आर्यसमाज के महोपदेशको को तैयार करने के लिये प्रतिवर्ष एक उपदेशक विद्यालय का शुभारम्भ किया जाये, इस वर्ष जुलाई से सभा कार्यालय परिसर मे ही उपदेशक विद्यालय मे प्रवेश आरम्भ करने की योजना है, जिसके प्रधानाचार्य पद पर काम करने की जिम्मेदारी वैदिक विद्वान् आचार्य सुदर्शनदेव जी ने स्वीकार कर ली है। इससे अलग सभा प्रत्येक जिले मे एक वेदप्रचार वाहन जिनमे आर्यसमाज का सस्ता साहित्य, एक भजनमण्डली ही लेकर गाव-गाव मे प्रचार अभियान करती रहेगी और इससे अलग प्रत्येक जिले मे एक भजन मण्डली भी वेदप्रचार के लिये उपलब्ध कराई जायेगी। एक वर्ष मे दो वेदप्रचार वाहन अवश्य तैयार किये जायेगे, ऐसा प्रयास किया जायेगा, एक वर्ष मे एक जिले के प्रत्येक गाव मे आर्यसमाज स्थापित करने का भरसक प्रयास होगा। आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन मे चलनेवाली आर्यसस्थाओ मे धार्मिक परीक्षाओं को सुदृढ और नियमित चालू रखते हुये उनमे शारीरिक और शैक्षणिक प्रतियोगिताओ का आयोजन भी प्रतिवर्ष किया जायेगा। विशेष प्रतिभासम्पन्न विद्यार्थियों को पुरस्कृत भी सम्मेलन के अवसरो पर किया जाएगा। आज पूरा देश इस बात को जानता है कि देश को आजाद कराने मे आर्यसमाज की अहम् भूमिका रही है। महात्मा गाधी भी इस बात को कहा करते थे कि आजादी की लडाई में जेलो मे यातनाये सहनेवाले ८० प्रतिशत व्यक्ति आर्यसमाज की विचारधारा के थे, किन्तु जब देश आजाद हुआ तो शासन सत्ता से हम दूर होगये और धर्मरहित लोगों ने सत्ता पर कब्जा कर लिया। सभी जानते हैं कि बौद्ध, ईसाई, मुस्लिम आदि सम्प्रदायो का फैलाव शासन सत्ता के कारण हुआ। आज देश की राजनीति भ्रष्टाचार की सीमा पर है, हर वर्ग इन राजनेताओ और अफसरशाही से त्रस्त है। अग्रेज नहीं रहे किन्तु अग्रेजो के कानून पूरी तरह से चालू हैं। देश का इतिहास ही पूरी तरह से विकृत कर दिया है, हमारा रहन-सहन, शिक्षा-दीक्षा, बोलचाल, आचार, व्यवहार, पूरी तरह से पाश्चात्य सभ्यता मे ढल गया है। अग्रेजी भाषा का साम्राज्य चारो तरफ दिखाई दे रहा है। देशभक्ति की भावना आज के राजनैतिक दलो मे नहीं दिखाई देती, आज फिर इस बात की आवश्यकता है कि देश पर, आर्यसमाज की विचारधारा का शासन हो, महर्षि दयानन्द ने बहुत गहराई से चिन्तन करने के बाद धर्मार्य सभा, विद्यार्यसभा के साथ-साथ राजार्यसभा के गठन की बात कही थी। आर्याभिविनय मे ईश्वर से प्रार्थना करते हुए महर्षि दयानन्द लिखते हैं कि 'हमको सत्य विद्या से युक्त सुनीति देके साम्राज्याधिकारी सद्य कीजिये जिससे हमारा स्वराज्य अत्यन्त बढे। इसलिये आर्यसमाज का अपना राजनैतिक मच होना समय की आवश्यकता है। आज इस पर अपनी-अपनी स्वीकृति प्रदान करनी है। यह सक्षिप्त रूप मे मैने आपके सामने चर्चा की है, और भी ऐसे गम्भीर विषय हैं जिन पर आर्यसमाज को सघर्ष करना है। विद्वानो द्वारा प्रदत्त सुझावो का हम सभी सम्मान करते हैं, मेरे विषय प्रस्तुत करने मे कहीं कोई त्रुटि रह गई हो तो आपके सुझावो से सुधार कर लिया जाएगा।

अन्त मे पुन आप सभी का जो हरयाणा के कोने-कोने से पधारे हैं, स्वागत करता हू।

सगच्छध्व सवदध्व' वेदमन्त्र की भावना से ओतप्रोत होकर हम अपने मजबूत इरादो मे सफल हो यही ईश्वर से प्रार्थना है।

एक आर्य संन्यासी का कपड़ों से भरा बैग (थैला)
रिक्शावाला ले भागा

आर्य सन्यासी स्वामी केवलानन्द सरस्वती का कपडे आदि आवश्यक कागज पत्र ज्ञानसागर वैदिक साहित्य प्रचार केन्द्र नाम छपी रसीद बुक जिस पर मेरा चित्र भी छपा है, थैला काले रग का जिस पर ओ३म् लिखा है दिनाक २८-३-२००२ को प्रात करीबन ९ बजे आर्यसमाज दिवान हाल चादनी चौक से आते समय मैंने एक सामान वाहक साइकिल रिक्शा पर रख दिया मैंने सोचा सडक पर उठा लेगे रिक्शावाला पहले तो धीरे-धीरे चल रहा था। मै उसके पीछे-पीछे चल रहा था। सडक से रिक्शावाला लालकिले की तरफ मुडा तो रिक्शावाला तेजी से ले जाने लगा और लाल बत्ती की तरफ से किधर गायब हो गया। पता नही जानबूझकर भागा था या अनजाने मे उपरोक्त थैला ले गया। भगवान उसे सद्बुद्धि दे वह थैला को लौटा दे तो पुरस्कार के रूप मे ५० रुपये रिक्शा मे थैला रखने का दण्ड रूप से भुगतान कर सकता हू।

थैला का रग काला, चैन ऊपर व अन्दर दोनो तरफ खाने लगी है अन्दर १ भगवा रग की गरम शाल, १ कटिवस्त्र, एक कुर्ता, तौलिया, गरम मफलर स्टील का जलपात्र गिलास आदि आवश्यक कागज पत्र है।

कृपया निम्न पते पर पहुचाने वाले को धन्यवाद एव ५० रुपये मूल्य का वैदिक साहित्य भेट कर सकता हू। इसकी रिपोर्ट लालकिला भूगर्भमार्ग पुलिस थाने मे भी लिखा दिया है। आने की आशा तो नहीं रसीद का दुरुपयोग न हो।

मन को समाधान

ओ नादान क्यो फिक्र करता है, चोरी गये कपडो का।
क्या तूने यह कपडे बाजार से जाकर खरीदे थे क्या।।
यह भी किसी श्रद्धावान् उदारमन दाता ने ही तो भेट किये थे।
अब मन से समझ ले कि तूने ही भेट कर दिये रिक्शेवाले को।।

रसीद बुक ज्ञानसागर वैदिक साहित्य प्रचार केन्द्र नाम छपा है, उस पर पता कर्मवीर भाई बसीलाल स्मारक आर्य वसति गृह श्यामलाल अभियत्रकीमहाविद्यालय उदगीर जिला लातूर (महाराष्ट्र) छपा है।

दिल्ली का निम्न पता–**स्वामी केवलानन्द सरस्वती**
मार्फत श्री विमल बधावन एडवोकेट
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, महर्षि दयानन्द भवन ३/५, रामलीला मैदान, नई दिल्ली। फोन ३२७४७७१, ३२६०९८५

गुरुकुल कांगड़ी भूमि विवाद का यथार्थ

दूध का दूध पानी का पानी

पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा ने जिस जमीन का सौदा रुपये ३५ लाख मे करके, उसकी साई ३ लाख ५० हजार रुपये लेकर क्रेताओ को जमीन सौंप दी थी और दो बार जिसकी रजिस्ट्री के लिए मियाद बढाई थी, उस सौदे को रद्द करने के लिए विद्यासभा द्वारा बार-बार आग्रह करने पर भी जब पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा ने ध्यान नही दिया तो उनकी नीयत साफ सामने आगयी कि वे इस भूमि की रकम भी पजाब सभा मे ले जाना चाहते हैं। त्रिशाखन के बाद गठित तीनो सभाओ की प्रतिनिधि विद्यासभा को कभी स्वीकार के और कभी नकार के केवल पजाब की नकली विद्यासभा को मानना भी इसी कूट खेल का हिस्सा था। असली विद्यासभा के सामने अब दो ही विकल्प थे या तो भूमि को क्रेता के कब्जे से छुडाकर गुरुकुल को वापस [illegible] जाये या फिर इसकी बिक्री से मिलनेवाली राशि को गुरुकुल के ही उपयोग के [illegible] क्षेत रखा जाये।

हारकर विद्यासभा ने क्रेता पर दबाव डालकर पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा तय राशि को दुगना करवाया और पूरी ७० लाख की राशि हरिद्वार के ही बैंक मे जमा करा दी, जिसके ब्याज से कन्या गुरुकुल देहरादून को सुचारु रूप से चलाया जायेगा।

पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा ने और दिल्ली के श्री वेदव्रत शर्मा ने अफवाहे फैलाकर जो शोर मचा रखा है वह इस झल्लाहट के कारण कि इस बार वो रुपये ३५ लाख पजाब ले जाने मे सफल नहीं हो सके। कहा यह भी जारहा है कि वही वेदव्रत शर्मा जिन्होंने स्वर्गीय सूर्यदेव जी के काल मे भूमि बेचने का प्रस्ताव किया था, स्वय अधिकारी बनने के बाद बोले कि या तो २० लाख रुपये मुझे अलग से दो अन्यथा मैं अब विरोध करूगा। आर्य जनता के सामने अफवाहो का तूफान खडा किया जारहा है, इस मिथ्या प्रचार पर विवेकशील बन्धु स्वत निर्णय ले सके, एतदर्थ बिन्दुवार तथ्य प्रस्तुत हैं -

१ क्या यह सच नहीं कि १९७५ मे हुए त्रिशाखन के बाद गुरुकुल कागडी की सभी भूमियो एव परिसम्पत्तियो पर दिल्ली, हरयाणा एव पजाब की आर्य प्रतिनिधि सभाओ का साझा स्वामित्व है, क्योंकि भूतपूर्व पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा मे दिल्ली और हरयाणा सदा से शामिल थे।

२ कि इस साझे स्वामित्व के बावजूद गैरकानूनी तौर पर १९८० से १९९० तक अकेले पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा ने चुपचाप शहरी बस्ती के अन्दर की १० बेकीमती जमीने एक करोड ३१ लाख रुपये मे कौडियो के दाम बेच डाली और गुरुकुल कागडी के कोष मे यह रुपया आज तक जमा नहीं किया। इन सस्ते सौदो मे अलग से राशि लेने की सम्भावना से इकार नहीं किया जासकता।

३ कि स्थिर निधि जमा करके यह राशि जो अब तक लगभग ७ करोड रुपये हो जानी चाहिए उसे पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा अपने पास दबाए बैठी है और इसमे से एक भी पैसा आज तक गुरुकुल पर व्यय नहीं हुआ, न ही जमा हुआ।

४ कि पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरग सभा की १९ मार्च १९९१ की बैठक की प्रस्ताव सख्या १६ के अनुसार १४४ बीघे गुरुकुल की जमीन को बेचने का निर्णय लिया गया और उस बैठक मे तात्कालीन उपप्रधान श्री हरबसलाल शर्मा मौजूद थे।

५ कि रुपये ३५ लाख १४४ बीघे जमीन बेचने का अनुबन्ध पहिले दो वर्ष के लिए किया गया। लेकिन विश्वविद्यालय के आवेदन पर अदालत द्वारा रोक लगने के कारण १९९३ मे इस अनुबन्ध की अवधि पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा अनिश्चित काल के लिए बढा दी गई। यद्यपि भूमि का क्षेत्र १४४ बीघे बताया गया परन्तु चारो खसरा नम्बरो का १९८ बीघे का रकबा, क्रेताओ को सौंपा गया। इसी कारण गलत रजिस्ट्री होने पर विद्यासभा को ४० बीघे की उल्टी रजिस्ट्री करवानी पडी।

६ कि २० मई १९९७ की बैठक मे श्री वेदव्रत शर्मा व श्री महेश विद्यालकार के प्रस्ताव पर यह भूमि बेचकर प्राप्त राशि के ब्याज को कन्या गुरुकुल, देहरादून की जीर्ण-शीर्ण अवस्था मे सुधार एव विकास के निमित्त व्यय करने का निर्णय लिया गया।

७ कि ९ मई १९९८ की बैठक में जमीन के क्रेता राकेश को बुलाकर सर्वश्री वेदव्रत शर्मा, महेश विद्यालकार और प्रकाशवीर शास्त्री ने क्रेता से २५ लाख रुपये विद्यासभा के कोष के लिए लेकर जमीन का सौदा निबटाने की पेशकश की थी लेकिन प्रो० शेरसिह जी की आपत्ति पर यह प्रस्ताव टालना पडा।

८ कि प्रो० शेरसिह जी के आग्रह पर ही इस भूमि का स्वामित्व विद्यासभा के नाम करवाने के लिए तीनो सभाओ के प्रतिनिधियो ने न्यायालय से याचना की।

९ कि विद्यासभा के नाम जमीन चढ जाने पर विद्यासभा ने आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब पर अनुबन्ध रद्द करने के लिए दबाव बनाया और उन्हे गुरुकुल कांगडी की परिसम्पत्तियो की बिक्री से मिली धनराशि को जो बढकर ७ करोड रुपये के लगभग होगी–गुरुकुल कागडी को लौटाने का आग्रह किया।

१० कि विश्वविद्यालय के सचिव ने मई २००१ के अन्त में अपने वकील की राय के आधार पर पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा को पत्र लिखकर इकरारनामा रद्द करने की प्रार्थना की थी।

११ कि पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा से इस जमीन को विधिवत् विश्वविद्यालय के नाम चढाने का आग्रह भी किया गया। परन्तु पजाबवालो ने न तो इकरारनामा रद्द किया ना ही जमीन विश्वविद्यालय के नाम कराई।

१२ कि आज भी पजाबवाले कभी इस जमीन को अपना बताते हैं जैसा कि उनके अदालत के बयान से जाहिर है और कभी शिष्ट परिषद् के सदस्यो पर यह कहकर घातक हमला करते हैं कि जमीन विश्वविद्यालय की थी।

परिस्थिति के उपरोक्त बिन्दुओ का विश्लेषण करे तो यही स्पष्ट निष्कर्ष है कि पजाबवाले जमीन के मामले को उलझाए रखकर उस अनुकूल घडी की प्रतीक्षा मे थे कि भूमि बेचकर वे ३५ लाख रुपये को अपने कब्जे मे ले सके। जब उनकी यह साध पूरी नहीं हो पाई तो झल्लाकर वे अपना कलक औरों के माथे मढना चाहते हैं। महज साढे तीन लाख रुपये लेकर पूरी जमीन क्रेता को सौंपने का कार्य अपने आपमे पूरी कहानी कह रहा है। क्या कोई मान सकता है कि वो जमीन केवल ३५ लाख रुपये की थी। अपने लोभ के कारण पजाब ने विद्यासभा का सहयोग नहीं किया, नहीं तो यह जमीन या तो वापस आती या इसकी पूरी कीमत मिलती।

गुरुकुल कांगड़ी शताब्दी समारोह

अर्द्धशिक्षित होते हुए भी श्री हरबसलाल शर्मा को बडी सद्भावना के साथ इसलिए गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय का कुलाधिपति बनाया था कि तीनो सभाये मिलकर काम करे और बारी-बारी से जिम्मेदारी सम्भाले। विचार यह था कि शताब्दी-वर्ष के अवसर पर पूरी शक्ति लगाकर प्रयत्न करे कि गुरुकुल कागडी और कन्या गुरुकुल देहरादून को उच्चकोटि की आदर्श आर्य सस्थाओ के रूप मे अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति मिले। परन्तु हरबसलाल शर्मा के चिन्तन का दायरा सम्भवत स्कूली अल्पशिक्षा के कारण उस कल्पना स्तर तक पहुच ही नहीं पाया और उन्होने जैसे छोटे-छोटे स्कूलो को अपने परिवार की जायदाद बना डालते हैं, वही उन्होने भी किया–शिष्ट परिषद् और कार्य परिषद् को अपने परिवार और सम्बन्धियो से भर दिया। सस्कृति का दम घुट रहा है। जिन्होने पिछले कुछ वर्षो मे विश्वविद्यालय और कन्या गुरुकुल का विकास किया था, उन्हीं पर हल्ला बोल दिया। वातावरण इतना प्रदूषित कर दिया कि सुशिक्षित और सुसस्कृत लोगो को सास लेना तक दूभर होगया। श्री जगभूषण गर्ग जिन्हे बडी तमन्नाओ के साथ अक्तूबर २००१ मे उन्हीं के सुझाव पर सर्वसम्मति से परिद्रष्टा बनाया गया था, उनको इस घुटन से छुटकारा पाने के लिए ४ महीने मे ही त्याग पत्र देना पडा। कुलाधिपति और उनके बेटे, भाई, भतीजे उन पर दबाव डालकर निर्दोषी को दोषी बनाकर सजा दिलवाना चाहते थे। श्री जगभूषण गर्ग जो उच्च न्यायालय के प्रतिष्ठित न्यायाधीश रहे, वे ऐसी छुटभैयो जैसी बेहूदा हरकतों को बर्दाश्त नहीं कर सके और त्यागपत्र देकर बाहर आ गये। यह चित्र बना दिया है शताब्दी वर्ष में गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय का।

लगभग ७५ वर्ष पूर्व ऐसे ही लोगों ने जो गुरुकुल कागडी को एक क्षुद्रसी पाठशाला बनाना चाहते थे, गुरुकुल मे ऐसा घटिया वातावरण बनाया कि स्वामी श्रद्धानन्द जी गुरुकुल कागडी छोडकर दिल्ली आ गये। वे तो महापुरुष थे और उन्होंने अधिक विराट् स्तर पर स्वाधीनता आन्दोलन को सफल बनाने के लिए राष्ट्रीय एकता का महान् मिशन अगीकार किया। यह सन्तोष का विषय है कि उनके योग्य शिष्यों ने विश्वविद्यालय बनाने के उनके स्वप्न को बाद मे पूरा किया और संस्था का स्तर नहीं गिरने दिया।

गुरु के पद की गरिमा को तिलांजलि देकर चाटुकारिता से कुछ पाने के लिए शिक्षको मे होड लगी है, वे कर्मचारियों से, गुण्डागर्दी करवा रहे हैं। इस वातावरण में भला श्री गर्ग-जैसे सुसस्कृत व्यक्ति कैसे ठहर सकते थे। विश्वविद्यालय की इस दुर्दशा को देखकर गुरुकुल की हितैषी आर्य जनता अपना माथा ठोंक रही है।

गुरुकुल कागडी और आर्यसमाज की हितैषिणी–**प्रभातशोभा विद्यालंकृता**

रोहतक में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा आयोजित सभा के इतिहास में प्रभावशाली

हरयाणा प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन धूमधाम से सम्पन्न

गतांक से आगे–

सभामन्त्री आचार्य यशपाल शास्त्री ने सत्यार्थप्रकाश मे ऋषि दयानन्द द्वारा राजार्य सभा के गठन करने का उल्लेख करते हुए बताया कि सरकार को आर्यों (श्रेष्ठ व्यक्तियों) का राज लाना चाहिए। उन्होने कहा कि जब तक हरयाणा मे आर्यो का राज नहीं होगा तब तक भ्रष्टाचार, अन्याय, भेदभाव तथा बेईमानी समाप्त नहीं होगी। प्रमुख आर्य प्रवक्ता श्री राममेहर एडवोकेट ने अपने ओजस्वी भाषण मे कहा कि आज आर्यों के राज की आवश्यकता है। स्वर्गीय प० प्रकाशवीर शास्त्री एम०पी० ने आजादी मिलने के बाद मेरठ के आर्य महासम्मेलन मे प्रस्ताव रखा था, परन्तु उस पर ध्यान नहीं दिया गया।

अत. सभी को मिलकर इस पर पुनर्विचार करना चाहिए जिसे आर्यसमाज के प्रमुख भजनोपदेशक श्री पृथ्वीसिह बेधडक द्वारा ५० वर्ष पूर्व गाये गये गीत **'भूमण्डल में आर्यो का राज कर परमात्मा'** इससे ही स्वामी दयानन्द का स्वप्न साकार हो सकेगा। प्रो० शेरसिह पूर्व केन्द्रीय राज्यमन्त्री ने अपने सम्बोधन मे उपस्थित जनता को स्मरण करवाया कि आर्यसमाज के नेताओ स्वामी ओमानन्द जी, प० जगदेवसिह सिद्धान्ती, प० रघुवीर शास्त्री, म० भरतसिह, कपिलदेव शास्त्री तथा चौ० लहरीसिह आदि ने हरयाणा बनवाने के लिए लोकसभा तथा बाहर पूरी शक्ति के साथ सघर्ष किया था। हिन्दी रक्षा आन्दोलन मे सरकार ने आर्यसमाज के सगठन को लोहा मान लिया था। आज पुन इस पर विचार करना होगा।

स्वामी ओमानन्द जी सभाप्रधान ने चिन्ता प्रकट करते हुए कहा कि हिन्दीरक्षा आन्दोलन के पश्चात् हमारे सगठन मे कमजोरी आने लग गई। हमने कई आन्दोलन किये परन्तु हिन्दीरक्षा आन्दोलन की भाति पूरी शक्ति का प्रदर्शन नहीं हो सका। सभी मिलकर कार्य करे तो हरयाणा मे आर्यसमाज का राज हो सकता है।

चौ० साहिबसिह वर्मा ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का धन्यवाद करते हुए इस प्रकार के सम्मेलन रखने पर प्रसन्नता प्रकट की और स्वीकारा कि हरयाणा के आर्यसमाजियो ने स्वतन्त्रता आन्दोलन मे सबसे अधिक शक्ति से कार्य किया था। राज श्रेष्ठ (आर्यो) नेताओ का ही होना चाहिए। परन्तु ५० वर्ष व्यतीत होने पर भी आर्यो को राज करने का अवसर नहीं मिल सका। भ्रष्ट राजनेताओ के कारण ही भ्रष्टाचार पनप रहा है। यदि महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तो पर आचरण किया जावे तो सफलता मिल सकती है। आर्यो को राजनैतिक दल बनाने से पूर्व आर्यो को अपनी फूट समाप्त करनी चाहिए। आर्यो को अपने आपसी झगडे तुरन्त बन्द करके स्वार्थ से दूर होकर मिलकर राजनैतिक पग उठाना चाहिए। सभी आर्य भाई-बहिन ऋषि दयानन्द का स्वप्न मिलकर पूरा करने का निश्चय करेगे तो मैं भी पूरा सहयोग तथा समर्थन करूगा। कम से कम हरयाणा प्रदेश मे तो आर्यो का राज होना ही चाहिए। सतलुज-यमुना लिक नहर के पानी पर हरयाणा का अधिकार है। पाकिस्तान में पानी फालतू जारहा है, उधर हरयाणा में पानी की कमी है। बडे भाई पजाब को यह नहीं कहना चाहिए कि हम एक बूद भी पानी नहीं देंगे। हमें इस संघर्ष में पूरी शक्ति लगानी होगी। हरयांणा की पवित्र धरती पर शराब, मास आदि का सेवन बढता जारहा है। इस सामाजिक बुराई को आर्यसमाज ही दूर कर सकता है।

दोपहर बाद २ से ५ बजे तक रोहतक नगरी में ऐतिहासिक शोभायात्रा शान्तिपूर्वक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्त्वावधान में निकाली गई। इसका सयोजन आर्य वीर दल हरयाणा के सचालकों तथा स्वयसेवकों ने किया। श्री जगदीश मित्र आर्य, श्री देसराज आर्य, श्री वेदप्रकाश आर्य, श्री मुलखराज आर्य, मा० मेघराज आर्य आदि ने उत्साह के साथ इसे सफल बनाया। बाजारों तथा मुख्य चौको पर आर्य नेताओ, बलिदानियो के स्वागत द्वार बनाये गये थे। सभी मार्गो पर ओ३म् ध्वज लहरा रहे थे। शोभायात्रा आर्य नेताओ की अगुवाई मे दयानन्दमठ से प्रारम्भ होकर गोहाना अड्डा, किला रोड, भिवानी स्टैंड, रेलवे रोड, झज्जर रोड, व छोटूराम पार्क से होती हुई दयानन्दमठ पर समाप्त हुई। एक किलोमीटर लम्बी शोभायात्रा मे आर्यजनता स्वामी विरजानन्द स्वामी दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, स्वामी स्वतन्त्रानन्द, स्वामी आत्मानन्द, भक्त फूलसिह, प० जगदेवसिह सिद्धान्ती, शहीद लेखराम, भगतसिह, चन्द्रशेखर आजाद, रामप्रसाद बिस्मिल, वीर सावरकर आदि नेताओ की जयजयकार तथा आर्यसमाज अमर रहे के नारे आकाश मे गूज रहे थे। स्थान-स्थान पर नरनारी मार्ग मे खडे होकर फूल बरसाकर, ठण्डा पानी, शरबत, मिष्टान्न तथा फलादि वितरित करके स्वागत कर रहे थे। इस शोभायात्रा मे गुरुकुल महाविद्यालय झज्जर के ब्रह्मचारी, आर्यसमाज शिवाजी कालोनी, झज्जर रोड, बाबरा मोहल्ला, प्रधाना मोहल्ला, माडल टाउन, वैदिक भक्ति साधन आश्रम रोहतक, कन्या गुरुकुल नरेला, कन्या गुरुकुल खरखौदा, स्वामी दयामुनि विद्यापीठ सोनीपत, हनुमान कालोनी रोहतक, आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बडा बाजार रोहतक, गुरुकुल आर्यनगर हिसार, महर्षि दयानन्द विद्यालय जीन्द रोड रोहतक, आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय पानीपत, आर्यसमाज जूआ (सोनीपत), धन्वन्ती आर्य कन्या उच्च विद्यालय रोहतक, जाट स्कूल रोहतक, आर्य स्कूल सिरसा, आर्यसमाज रेवाडी, महेन्द्रगढ गुरुकुल कुरुक्षेत्र, वैदिक साधनाश्रम यमुनानगर, गुरुकुल आटा, डिकाडला (पानीपत), गुरुकुल मुरथल मार्ग सोनीपत, आर्यसमाज भटगाव (सोनीपत), आर्य केन्द्रीय सभा गुडगाव फरीदाबाद, करनाल, रोहतक, अम्बाला छावनी, पचकूला आदि से अपने-अपने नामपट्टो तथा ओ३म् ध्वजो के साथ लाल पगडिया आदि बाधकर प्रसन्नमुद्रा मे गीत आदि गाते हुए चल रहे थे। अनेक आर्य महिलाए, छात्राए ढोलक, चिमटे आदि बजाते गाते चल रही थी और श्रोताओ को आकर्षित कर रही थी।

शोभायात्रा मे बैण्ड, घोडी तथा ऊटो की सवारी आर्यसमाज तथा स्वामी दयानन्द की जय बोलते हुए अनुशासन मे रहते हुए आगे बढ रहे थे।

सभाप्रधान स्वामी ओमानन्द जी एक रथ पर विराजमान थे। शोभायात्रा देखने के लिए लम्बी कतारे दिखाई दी रही थी। सभामन्त्री शोभायात्रा मे अनुशासन बनाये रखने के लिये कह रहे थे। श्री जयपाल आर्य, डा० गेदाराम, सभा के अन्य अधिकारी श्री वेदव्रत शास्त्री, श्री यशपाल आचार्य, श्री महेन्द्रसिह शास्त्री, सभा उपमत्री, श्री हरिश्चन्द्र शास्त्री आचार्य विजयपाल सभा उपमत्री, श्री बलराज सभा कोषाध्यक्ष, स्वामी कर्मपाल, प० सुखदेव शास्त्री, श्री अजीतकुमार आर्य, श्री मुलखराज आर्य, श्री मेघराज आर्य, श्री देशराज आर्य, श्री वेदप्रकाश आर्य, प्रि० लाभसिह, चौ० महेन्द्रसिह, श्री सुखवीर आर्य, श्री रामचन्द्र आर्य, श्री बलराज आर्य, मा० खजानसिह आर्य, श्री जगदीश मित्र, श्री जगदीशप्रसाद शर्राफ, श्री रामपाल आर्य, श्री यज्ञदत्त आर्य आदि नेतृत्व कर रहे थे। दयानन्दमठ पहुचकर शोभायात्रा शान्तिपूर्वक समाप्त हुई।

६ अप्रैल की रात्रि को ७ से ८ बजे तक आर्य सगीत सम्मेलन मे सभा के नवयुवक भजनोपदेशक प० तेजवीर आर्य, प० रामरख आर्य, कु० कलावती आर्या, श्रीमती दयावती आर्या, स्वामी परमानन्द गुरुकुल लाढौत आदि के प्रभावशाली सगीत हुए जिन्हे सुनने के लिए भोजन का स्वाद बीच मे छोडकर सम्मेलन मे उपस्थित हो गये और मन्त्रमुग्ध होगये। मच की आवाज रोहतक शहर के प्रमुख स्थानो तक सुनाई जारही थी। इस प्रकार का सगीत रोहतक की जनता तथा हरयाणा भर से पहुचे आर्य नरनारियो को कभी-कभी सुनने का अवसर मिलता है। इसी कारण सगीत सम्मेलन रात्रि ९ बजे तक चलता रहा।

इसके बाद ९ से ११-३० बजे तक आर्य महिला सम्मेलन उत्तरी भारत की विख्यात आर्य महिला प्रचारक श्रीमती पुष्पा शास्त्री की अध्यक्षता मे चलता रहा। इसकी कार्यवाही सुनने के लिए नरनारियो की भीड उमड पडी। सारा पण्डाल खचाखच भरा हुआ था। श्रीमती सुनीता आर्या, बहिन नारायणी देवी, श्रीमती दर्शना आर्या मलिक, ब्रह्मचारी उषा शास्त्री, प्रो० रामविचार, आचार्य आनन्द मित्र गुरुकुल भादस (मेवात), स्वामी कर्मपाल आदि ने वैदिक नारी का स्वरूप नारी जाति के उत्थान मे आर्यसमाज का योगदान, महर्षि दयानन्द और नारी शिक्षा, यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, वैदिक कालीन ऋषिकाये, भारत की वीरागनाए, नारी के शोषण, उत्पीडन और दहेज आदि से मुक्ति तथा भ्रूणहत्या एक अभिशाप पर अपने-अपने विचार रखे।

इसी सम्मेलन मे महर्षि दयानन्द पब्लिक उच्च विद्यालय जीन्द मार्ग रोहतक की प्रधानाचार्या श्रीमती सुमित्रा वर्मा तथा उनकी दो शिष्याओ ने सामूहिक मनोहर भजन प्रस्तुत किये। आर्यसमाज के दिवगत प्रमुख भजनोपदेशक चौ० पृथ्वीसिह बेधडक के युवा पौत्र एव उन्हीं की भाति मधुर गायक श्री सहदेव बेधडक ने अपनी ओजस्वी वाणी मे भजनो द्वारा आर्य वीरागनाओ का इतिहास सुनाकर उपस्थित जनसमूह की वाह-वाह लूटी।

अन्त मे इस महिला सम्मेलन की अध्यक्षा श्रीमती पुष्पाशास्त्री ने अपनी मधुर एव ऊची आवाज मे आर्य महिलाओ की वीरगाथा सुनानी आरम्भ की, तो जो श्रोता पण्डाल से बाहर खडे होकर घूम रहे थे, वे भरे पण्डाल के दोनो ओर खडे होकर ध्यान से सुनने लगे। उनका साथ हारमोनियम पर श्री सहदेव बेधडक दे रहे थे। इस प्रकार सोने पर सुहाग होगया। पुष्पा जी धाराप्रवाह से उपदेश के साथ सगीत सुनाती रही। सगीत का ऐसा वातावरण आर्य सम्मेलनो मे जनता को प्रथम बार देखने का अवसर मिला। **(क्रमश)**

—केदारसिंह आर्य, उपमत्री आर्य प्रतिनिधि सभा

आर्यसमाजों के नाम विशेष सूचना

आर्यसमाज के कार्यकर्ताओ और अधिकारियो को इस विषय का विशेष चिन्तन करना चाहिये कि ज्यादा से ज्यादा लोगो को आर्यसमाज की विचारधारा से परिचित कराया जा सके और अपने सगठन को मजबूत बनाने के लिये प्रत्येक कार्यकर्ता एक-एक नये व्यक्ति को अपने सगठन मे शामिल करे तथा जो कार्यकर्ता आर्यसमाज के लिए अपना पूरा समय देना चाहते हैं, उनकी सूची पते सहित सभा कार्यालय मे भेजने की कृपा करे और प्रयास किया जाये कि पूरा समय देने वाले कम से कम दो-दो महानुभावो को प्रत्येक आर्यसमाज तैयार करेगी। सभा उन सभी को वेदप्रचार के कार्य मे शामिल करना चाहती है। इससे अलग आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा सभा कार्यालय परिसर में ही एक उपदेशक विद्यालय खोलने पर गम्भीरता से विचार कर रही है, जिसमें योग्य एव मेधावी छात्रो का प्रवेश जौलाई से आरम्भ होगा। अत प्रत्येक आर्यसमाज एव आर्य शिक्षण सस्थाओ के अधिकारी इसका पूरा प्रयत्न करे कि उपदेशक बनाने के लिए योग्य छात्रो का चयन करके प्रवेश दिलाये। उपदेशक विद्यालय की सम्पूर्ण प्रक्रिया अन्तरग सभा की स्वीकृति के बाद आरम्भ कर दी जायेगी। अत इस महान् कार्य मे आपके सहयोग की परम आवश्यकता रहेगी। इससे अलग प्रान्तीय स्तर पर, महिला सगठन, छात्र सगठन तथा अध्यापक सगठन भी बनाना आवश्यक है। ये सगठन भी अपने-अपने वर्ग मे आर्यसमाज के प्रचार को बढाये तथा इन सगठनो के माध्यम से काम करनेवाले कार्यकर्ताओं के पते भी सभा कार्यालय मे पहुचने आवश्यक हैं जिससे शीघ्र ही इन सगठनो का निर्माण किया जा सके। इस तरह प्रत्येक स्तर पर आर्यसमाज के प्रचार कार्य को विशेष गति प्राप्त हो। **—सभामंत्री**

प्रवेश सूचना

आर्षपाठविधि एव नि शुल्क शिक्षा के मुख्य केन्द्र आर्य गुरुकुल हिन्दी सस्कृत महाविद्यालय चरखी दादरी (रोहतक रोड) मे १ मई, २००२ से विद्यार्थियो का प्रवेश प्रारम्भ है।

मान्यता प्राप्त महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक।

निवेदक—**श्री ऋषिपाल आर्य, आचार्य**

आर्य हिन्दी सस्कृत महाविद्यालय चरखी दादरी-१२७३०६

हरयाणा प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन की झलकियां

यज्ञशाला मंच पर बैठे हुए स्वामी ओमानन्द जी, स्वामी इन्द्रवेश जी, स्वामी वेदरक्षानन्द जी, डॉ० सुदर्शनदेव आचार्य, श्री सुखदेव शास्त्री, स्वामी कर्मपाल जी आदि

यज्ञ का एक दृश्य

यज्ञ करते हुए आर्य नरनारी

सम्मेलन के प्रारम्भ में वेदमन्त्र बोलते हुए श्री वेदव्रत शास्त्री सभा उपप्रधान व डॉ० सुदर्शनदेव आचार्य पूर्व सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता

कन्या गुरुकुल नरेला व कन्या गुरुकुल खरखौदा की छात्राएं शोभायात्रा में भाग लेते हुए

स्वामी शिवमुनि बहादुरगढ अपनी मण्डली के साथ शोभायात्रा मे भाग लेते हुए

श्री यशपाल आचार्य सभामन्त्री, श्री देशराज आर्य व केसरदास आर्य, सुखदेव शास्त्री आदि शोभायात्रा में भाग लेते हुए

श्री रामधारी शास्त्री स्वामी इन्द्रवेश जी का स्वागत करते हुए

श्री साहिब सिंह वर्मा पूर्व मुख्यमन्त्री दिल्ली का स्वागत करते हुए श्री वेदव्रत शास्त्री सभा उपप्रधान

प्रि० लाभसिंह व महेन्द्रसिंह एडवोकेट पानीपत स्वामी ओमानन्द जी को दान राशि भेंट करते हुए

श्रीमती सुमित्रा देवी बहन पुष्पा शास्त्री का स्वागत करते हुए

आचार्य देवव्रत जी आर्यवीर सम्मेलन में सम्बोधित करते हुए

स्वामी इन्द्रवेश जी आर्य वीर सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए

आचार्य बलदेव जी गोरक्षा सम्मेलन पर अध्यक्षीय भाषण देते हुए

स्वामी कर्मपाल जी वैदिक धर्म सम्मेलन मे सम्बोधित करते हुए

श्री ईश्वरसिंह शास्त्री आर्यवीर सम्मेलन में सम्बोधित करते हुए

डॉ० राजेन्द्र विद्यालकार कुरुक्षेत्र आर्यवीर सम्मेलन मे सम्बोधित करते हुए

प्रो० शेरसिंह जी आर्यवीर सम्मेलन में सम्बोधित करते हुए

स्वामी ओमानन्द जी सम्मेलन मे अध्यक्षीय भाषण देते हुए

सम्मेलन के प्रमुख सहयोगी श्री सुरेन्द्र शास्त्री सभा उपमंत्री व श्री सुखवीर शास्त्री सभा अतरग सदस्य

मच पर बैठे हुए श्री शेरसिंह सभा कार्यालयाधीक्षक, श्री सुखवीर शास्त्री सभा अतरग सदस्य, श्री सत्यवान सभा लिपिक, श्री ओमप्रकाश शास्त्री सभा गणक, श्री वेदव्रत शास्त्री सभा उपप्रधान व श्री केदारसिंह आर्य सभा उपमन्त्री आदि।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ०१२६२–७६८७४, ७७८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ०१२६२–७७७२२) से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३ सृष्टिसंवत् १, ९६, ०८, ५३, १०३
पंजीकरणसंख्या टैक/85-2/2000 ☎ ०१२६२-७७७
ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र रोहतक

प्रधानसम्पादक : यशपाल आचार्य, सभामन्त्री सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री

वर्ष २९ अंक २२ २८ अप्रैल, २००२ वार्षिक शुल्क ८०) आजीवन शुल्क ८००) विदेश में २० डॉलर एक प्रति १.७०

छुआछूत और भेदभाव की दीवारें गिरा दो

❑ डॉ० सत्यवीर विद्यालंकार

यदि हम अपने देश मे भ्रष्टाचार रहित स्वच्छ प्रशासन के द्वारा राजनीतिक तथा आर्थिक तौर पर भारत को सुदृढ बनाकर सशक्त व सक्षम राजनीतिक मर्यादाये चालू करना चाहते हैं तो हमको अपने समाज मे काफी समय से चली आरही समाज की विभाजक गली-सडी मान्यताओ को अवश्यमेव बदलना पडेगा। ऐसा किये बिना सही लोकतन्त्र की कामना करना स्वप्न के समान है। अगर विचारपूर्वक देखा जाये तो देश मे केवल कथनमात्र के लिये ही लोकतन्त्र है। यहा लोकतन्त्रीय भावना की कमी है। यहा की जनता गलत रूढियों तथा कुप्रथाओ मे फसी होने के कारण अपनी मानसिकता को लोकतन्त्र के अनुरूप नहीं बना पाई है। भारतीय समाज मे पारस्परिक घृणा और भेदभाव की भावनायें आज भी अपने पाव जमाये हुए हैं। जनता में प्रचलित छुआछूत ने करोडों लोगों के दिल में गहरे घाव कर रखे हैं जो अब समाज के लिए नासूर बन गए हैं। ऐसे करोडो लोग मेहनतकश हैं जो जी तोड परिश्रम करके देश की उन्नति मे अपना योगदान कर रहे हैं। आश्चर्य की बात तो यह है कि भारत मे आज भी ऐसी मान्यताएं चल रही हैं कि एक व्यक्ति जन्म से ही नीचा है चाहे वह कितना ही योग्य क्यो न हो और दूसरा चाहे निरक्षर-भट्टाचार्य हो, वह जन्म से ही ऊंचा है। यह थोथी मान्यता, जो मनघडन्त है, पहले भी देश के लिए परतन्त्रता और पतन का कारण रही है। इसके कारण हजारों साल हमने गुलामी का जीवन झेला है, जो अब भी अपना प्रभाव दिखा रही है और हमारा पीछा नहीं छोडती है।

ऊच-नीच का यह घुण आज भी हमारे समाज को अन्दर ही अन्दर खोखला व कमजोर कर रहा है। यह गलत मान्यता ही प्रमुख कारण रही है जिसने समाज के बहुत बडे भाग को पैदायशी गुलाम बना दिया है। केवल इतना ही नहीं बल्कि उसके दिमाग मे यह विचार पक्का बैठा दिया है कि वे हैं ही नीच रहने लायक। इस घृणित एव अपमानजनक मान्यता ने दलितों को और भी अधिक पद-दलित कर दिया है। इनको ऊपर उठने का तथा समाज मे सम्मानजनक स्थान बनाने का अवसर ही नहीं दिया। दूसरी ओर इस ओछे हथकण्डे के सहारे से कुछ खास वर्गो के लोग अपने जन्म से ही स्वामी बन गये-मालिक बन गये। अर्थात् केवल पैदायश के आधार पर ही उन्हें जमीन आदि स्थायी सम्पत्ति का और स्वाभिमानपूर्वक जीवन बिताने का अधिकार मिल गया तथा उन्हे समाज मे ऊचा व आदर का स्थान मिल गया।

लोकतन्त्र मे ठीक ढग से चलनेवाले कानून के अनुसार सबको बराबर समझना चाहिये। सबको बराबर का अधिकार और सबको बराबर अवसर मिलने चाहिए। यह कोई खैरात नहीं बल्कि सब नागरिको का अधिकार है। क्या लोकतन्त्र मे भी यह चलेगा कि जन्म से कौन छोटा और कौन बडा है? यदि ऐसी ही बात है तो फिर सबके लिए एक समान सविधान कहा हुआ? यह लोकतत्र नहीं कुछ और है। क्या यही सबके लिए सामाजिक न्याय है? हमारे लोकतन्त्र मे किसी के जन्म और किसी मजहब के लिए भेदभाव और पक्षपातपूर्ण व्यवहार की कोई गुजाइश नहीं है। यहा यह भी स्पष्ट कर दू कि जो लोग इसे नहीं मानते और भेदभाव का व्यवहार करते हैं वे अपराधी हैं और दण्डनीय हैं। जब तक यह नहीं होगा तब तक सही आजादी कहा? वह तो सपने की बात है। हम बात तो लोकतन्त्र की करते हैं और काम व व्यवहार लोकतन्त्र की भावना के ठीक विपरीत करते हैं। आधी शताब्दी बीतने के बाद भी हमारा मन अलोकतान्त्रिक ढग से काम कर रहा है। ऐसा क्यो है? इसे कौन चला रहा है? क्या इसके लिए सत्ता के तख्त पर काबिज लोग जिम्मेदार नहीं हैं? न मालूम भारतीय लोगो के कलुषित दिमाग में बसा हुआ छुआछूत तथा भेदभाव का यह काला नाग कब बाहर निकलेगा और कब समाज से पक्षपातपूर्ण छुआछूत की भावना समाप्त होगी? अथवा यह अन्यायपूर्ण परम्पराये यो ही चलती रहेगी? इन्हीं गलत कुप्रथाओ के चलते रहने के कारण हम भारतीय प्रगति की दौड मे पिछड गए हैं। वरना हमारा स्थान आज बहुत ऊचा होता।

वेद का सन्देश इस सन्दर्भ मे हमारी आखे खोलनेवाला है। वैदिक लोकतन्त्र का स्पष्ट सन्देश है– **'अज्येष्ठासोऽकनिष्ठास. एते सम् भ्रातरो वावृधु सौभगाय।'** इसका भाव यह है कि मनुष्य समाज मे कोई छोटा या बडा नहीं है, सबके सब समान हैं। इसलिये सब भाई-बहन मिलकर अपने सौभाग्य एव श्रीवृद्धि के लिए आगे बढो। यहा किसी के साथ किसी भी तरह के पक्षपात की कोई गुजाइश नहीं है। वेद के अनुसार जन्म के कारण कोई ऊचा या नीचा नहीं है, अपितु अपने कर्म के अनुसार मानसिक विकास कम या ज्यादा हो सकता है। शुभ-अशुभ कर्म ही व्यक्ति की सही पहचान करानेवाला है, केवल जन्म किसी भी अवस्था मे नहीं। जो जन्म के आधारपर ऊच-नीच का भेदभाव करनेवाले हैं, उनको अपनी कुत्सित प्रवृत्ति बदलनी पडेगी। जन्म पर आधारित जाति-पाति छोडनी होगी। जन्म के आधार पर किया जानेवाला हर प्रकार का भेदभाव तथा अन्याय खत्म करना होगा। यह पापाचार है जिसे सदा चलते रहने की इजाजत किसी भी सूरत मे नहीं दी जा सकती। छुआछूत जितना जल्दी समाप्त हो उतना ही हमारे समाज के लिए श्रेयस्कर है।

अपनी मान्यता की पुष्टि के लिए हम कह सकते हैं कि साधारण कुल मे जन्म लेनेवाला व्यक्ति समाज का ऊचे-से-ऊचा 'महर्षि' का पद प्राप्त कर सकता है और सन्त के कुल मे जन्म लेकर भी कोई व्यक्ति चोर-डाकू या लम्पट वा चरित्रहीन होसकता है। रामायण के रचयिता महर्षि वाल्मीकि प्रथम पक्ष का उदाहरण हैं तो अगस्त्य कुल मे जन्मा राक्षसराज रावण दूसरे पक्ष का स्पष्ट उदाहरण है।

यदि सही कहा जाये तो अब आवश्यकता इस बात की है कि सारे समाज पर चलनेवाली कुछ खास वर्गो की ठेकेदारी खत्म कर दी जाये। अब

(शेष पृष्ठ दो पर)

वैदिक-स्वाध्याय

अमरता !

जुहुरे वि चितयन्तो अनिमिष नृम्णं पान्ति।
आ दृढा पुरं विविशुः।। ऋ० ५।१९।२।।

शब्दार्थ–जो (**वि चितयन्तो जुहुरे**) ज्ञानपूर्वक स्वार्थ त्याग करते हैं और (अनिमिष नृम्ण पान्ति) लगातार जागते हुए, अपने आत्मबल की रक्षा करते रहते हैं ते वे (दृढा पुर) दृढ अभेद्य नगरी मे (आविविशु) प्रविष्ट हो जाते हैं।

विनय–एक नगरी है जो कि बिल्कुल दृढ है, अभेद्य है, इसमे पहुच जाने पर किसी भी शत्रु का हम पर आक्रमण सफल नहीं हो सकता। क्या कोई उस स्थान पर पहुचना चाहता है। वहा पहुचने का मार्ग कुछ विकट है, कडा है, आसान नही है। वहा पहुचनेवालो को ज्ञानपूर्वक स्वार्थ-त्याग करते जाना होता है और सदा जागते हुए अपने 'नृम्ण' की आत्मबल की-रक्षा करते रहना होता है ये दो साधनाये साधनी होती हैं। कई लोग अपने कर्तव्य व उद्देश्य का बिना विचार किये यू ही जोश मे आकर 'आत्म-बलिदान' कर डालते हैं। ऐसा करना आसान है पर यह सच्चा बलिदान नही होता। इससे यथेष्ट फल नही मिलता। इस पवित्र उद्देश्य के सामने अमुक वस्तु वास्तव मे तुच्छ है इसलिये अब इस वस्तु को स्वाहा कर देना मेरा कर्तव्य है इस प्रकार के स्पष्ट-ज्ञान के साथ, बिना किसी जोश के जो आत्मबलिदान होता है वही सच्चा आत्मबलिदान होता है। नही तो हम तो बहुत बार आत्मबलिदान के नाम से आत्मघात कर रहे होते है। वहा पहुचने के लिए तो आत्मा का घात नहीं, किन्तु आत्मा की रक्षा करनी होती है। हम लोग प्राय क्रोध करके, असत्य बोलकर, इन्द्रियो को स्वच्छन्द भोगो मे दौडाकर अपना आत्मतेज, आत्मवीर्य, आत्मबल खोते रहते है। पर वे पुरुष अपने इस 'नृम्ण' आत्मबल की बडी सावधानी से, सदा जागरूक रहते हुए, बडी चिन्ता से, रक्षा करते हैं। वे पल-पल मे अपनी मनोगति पर भी ध्यान रखते हुए देखते रहते हैं कि कही अदर कोई आत्मबल का क्षय करनेवाला काम तो नही हो रहा है एव रक्षा किया हुआ आत्मबल ही उस दृढ पुरी मे पहुचनेवाला है। वास्तव मे ये दोनो साधनाये एक ही हैं, यदि हम इस सम्बन्ध पर विचार करे कि ऐसे लोग आत्मबल की रक्षा करने के लिए शेष हरेक वस्तु का बलिदान करने को उद्यत रहते हैं और ये सदा इतने सत्य के साथ आत्मबलिदान करते जाते हैं कि उनके प्रत्येक आत्मबलिदान का फल यह होता है कि उनका आत्मबल बढता है। आओ ! हम भी आत्म-हवन करते हुए और आत्मबल की रक्षा करते हुए चलने लगे और उस मार्ग के यात्री हो जाये जो कि अभयता, अजातशत्रुता, अमरता और अभेद्यता की दृढ पुरी मे पहुचनेवाला है।

(वैदिक विनय से)

छुआछूत और भेदभाव की.......

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

और ज्यादा देर तक इन्तजार करने की कोई जरूरत नहीं। ध्यान रहे कि जब तक कुछ स्वार्थ के पुतलो की यह ठेकेदारी नहीं तोडी जाएगी तब तक सबका विकास होना असम्भव है और सबको समान न्याय मिलना नामुमकिन है। यदि हमको दुनिया के प्रगतिशील राष्ट्रो का मुकाबला करना है और आगे बढना है, तो प्रत्येक व्यक्ति को यह भली प्रकार समझना होगा कि हम सबका सुख-दुःख साझा और समान है। यदि एक व्यक्ति अपनी गरीबी की हालत मे पडा तडफ रहा है, तो हम उसे दुःखी देखकर भी अनमने से बनकर कहते हैं कि हमे इससे क्या लेना-देना है ? इसने तो कर्म ही ऐसे किये हैं। यह अपने पूर्वजन्मो के किये कर्मो का फल भोग रहा है। पूर्व जन्म मे इसने अवश्य कोई पाप कर्म किया होगा, जिसका फल यह इस जन्म मे भोग रहा है। हमारी यह भावना बडी घातक है, क्योकि यह परेशान व्यक्ति को समाज से तोडनेवाली है। इस ओछे हथकण्डे ने भारतीय समाज का बडा नुकसान किया है। समाज के ठेकेदारो की इस मनमानी व्यवस्था के कारण हम दरिद्र व साधनहीन व्यक्ति को समाज का अग मानने से इन्कार कर रहे हैं। क्या यह न्याययुक्त है ? क्या यही मानवता है ? क्या तर्क समझ मे आनेवाला है ? विचार करने की बात यह है कि यह व्यक्तिगत या पारिवारिक दरिद्रता उसके पापो का फल नहीं है बल्कि यह तो सामाजिक दुर्दशा, आपाधापी, छीना-झपटी, स्वार्थी प्रवृत्ति और अव्यवस्था का प्रतिफल है। सामाजिक भेदभाव के कारण ही वह व्यक्ति गरीबी के चक्र मे उलझा हुआ है तथा बहुत यत्न करने और चाहने पर भी वह अपनी दुर्व्यवस्था से निकलने नहीं पा रहा है। यह कहना बिल्कुल न्यायसंगत है कि वह सामाजिक अन्याय का शिकार है और केवलमात्र इसीलिए अभावो का जीवन गुजारने पर मजबूर है। समाज के तथाकथित ऊचे वर्ग का थोथा अहम् भाव अपने मन मे पालनेवाले को उस मजलूम के दारुण दुःखो की क्या परवाह ? उस दलित व्यक्ति का तनिक हित सोचने की उनके पास फुर्सत कहा ? खेद है कि ऐसे व्यक्ति को गरीबी तथा दयनीय अवस्था से निकलने की बजाय उसकी दुर्दशा की खिल्ली उडाई जाती है।

अगर कहीं पर ऐसे दलित व्यक्ति को काम दिया जाये, तो वह भी परिश्रम करके अपनी रोजी-रोटी इज्जत के साथ कमा सकता है तथा आत्मनिर्भर बन सकता है। परन्तु मानसिक तौर पर पीढ़ियो से बीमार चले आनेवाले लोगो को यह सोचने के लिए समय ही नहीं मिलता।

आश्चर्य की बात तो यह है कि खुद को राष्ट्रीय सम्पदा का जन्मजात अधिकारी समझनेवाले लोग ऐसे दुःखिया लोगो को समाज पर भार कहकर उनका मखौल उडाते हैं। उन पीडित व दुःखिया लोगो के प्रति सहानुभूति या हमदर्दी दिखाना तो बहुत दूर की बात है।

यहा यह बात भी स्पष्ट कर दू कि ऐसे दलित तथा अभावग्रस्त लोगो के साथ थोथी सहानुभूति प्रदर्शित करने या उनकी हालत पर घडियाली आसू बहाने से काम नहीं चलेगा, अपितु उस साधनहीन व्यक्ति की मदद के लिए तद्वत् अनुभूति करनी पडेगी अर्थात् स्वय को उस जैसे हालत मे मानकर फिर विचार करना पडेगा। यदि ऐसा किया जायेगा तो यह निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है कि हम दलित व्यक्ति की स्थिति कुछ अश मे समझ पायेगे, सर्वांश मे तो फिर भी नहीं। उनकी तरह अनुभूति करने से उसकी हालत को सुधारने की सोचेगे। ध्यान रहे अभी उसकी हालत को बदलने मे या उसमे परिवर्तन लानेवाली बातो के उपस्थित होने पर पुन मानसिक दृढता की आवश्यकता पडेगी। इसके लिए लम्बे काल से चली आ रही आडम्बरपूर्ण हठधर्मिता त्यागनी पडेगी। रूढिवादियो तथा कट्टरपथियों के समाजघाती षड्यन्त्रो का मुकाबला करना पडेगा। केवल इतना ही नहीं बल्कि अपने सब प्रकार के स्वार्थो से ऊपर उठकर तथा अपने झूठे अहभाव को त्याग कर सामाजिक परिवर्तन की नयी धारा मे शामिल होकर अपना सक्रिय सहयोग देना पडेगा। इसके लिए छुआछूत और भेदभाव की खूनी दीवारे गिरानी पडेंगी। किसी गलत व्यवस्था को उखाड फेकने के लिए साहस के साथ विचारपूर्वक काम करना पडता है। यह काम कहने मे जितना आसान लगता है, क्रियात्मकरूप से करने में उतना ही कठिन है।

श्री मेघजी भाई आर्य साहित्य पुरस्कार—२००२

आर्यसमाज सान्ताक्रुज द्वारा सचालित श्री मेघजी भाई आर्य साहित्य पुरस्कार के लिए प्रविष्टिया आमन्त्रित की जाती हैं। यह पुरस्कार मस्कत निवासी श्री मेघजी भाई नैनसी की स्मृति में उनके सुपुत्र श्री कनकसिह मेघजी भाई के आर्थिक सहयोग से प्रारम्भ किया गया था। पुरस्कार समारोह प्रतिवर्ष जुलाई माह के प्रथम सप्ताह में मनाया जाता है।

उद्देश्य—आर्य साहित्य के लेखको को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से इस पुरस्कार का प्रारम्भ किया गया है। जिन लेखकों ने आर्यसमाज की सेवा अधिकतम साहित्य लिखकर की है, उन्हे इस पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा।

पुरस्कार—पुरस्कार प्राप्त लेखक को १५,००१/- की राशि, ट्राफी व शाल से सम्मानित किया जायेगा।

नियम—

१ जिस आर्य विद्वान् ने जीवन पर्यन्त वैदिक साहित्य के द्वारा आर्यसमाज की अधिकतम सेवा की हो।

२ जिनके प्रकाशित ग्रन्थों का सम्बन्ध आर्यसमाज के दर्शन, इतिहास, सिद्धान्त अथवा आर्य महापुरुषों के जीवन आदि से हैं, वे ही पुरस्कार की सीमा मे माने जायेंगे।

३ ग्रन्थ लेखक को अपनी समस्त रचनाओं की दो-दो प्रतियां आर्यसमाज सान्ताक्रुज (प०) मुम्बई को भेजनी होगी। एक बार ग्रन्थ प्राप्त होने के पश्चात् पुन. अगले वर्ष भेजने की आवश्यकता नहीं होगी।

४ लेखक का चयन एक समिति करेगी जिसका मनोनयन आर्यसमाज सान्ताक्रुज करेगा। आर्यसमाज सान्ताक्रुज की अन्तरग सभा का निर्णय अन्तिम निर्णय माना जाएगा।

५ इस पुरस्कार हेतु लेखक अपने ग्रन्थों की दो-दो प्रतिया सयोजक आर्य साहित्य पुरस्कार, आर्य समाज सान्ताक्रुज मुम्बई-५४ को दिनाक २५ मई २००२ तक भेजने की कृपा करे।

—**कैप्टन देवरत्न आर्य** (सयोजक—पुरस्कार समिति)

शोक समाचार

आर्यसमाज यमुनानगर के प्रधान श्री कृष्णचन्द आर्य की धर्मपत्नी श्रीमती सरलादेवी आर्या का आकस्मिक निधन १५-३-२००२ को अचानक हृदयगति रुक जाने से पी जी आई चण्डीगढ में होगया है, वे ७० वर्ष की थीं। उनका अंतिम सस्कार पूर्ण वैदिक रीति अनुसार श्री प० धर्मेन्द्र शास्त्री व प० अशोक शास्त्री द्वारा कराया गया। आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान् डा० सूर्यपाल शास्त्री ने २३-३-२००२ तक दैनिक यज्ञ एव प्रवचन किया।

श्रीमती सरला देवी आर्य पक्के आर्यसमाजी विचारों की थी व प्रतिदिन संध्या-हवन किया करती थी। वे बचपन से ही आर्यसमाजी तथा बहुत सात्विक विचारो की देवी थी और आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार मे बढ-चढकर भाग लेती थी। उनके निधन से आर्यसमाज यमुनानगर को अपूरणीय क्षति हुई है।

उनके निमित्त आयोजित शाति यज्ञ एव शोकसभा (रस्म पगडी) मे दिनाक २४-३-२००२ को आर्यसमाज मे हजारो लोग उपस्थित हुए जिसमे मुख्य रूप से यमुनानगर के वर्तमान विधायक (M L.A) डा० मालिकचद गम्भीर, पूर्वमत्री डा० कमला वर्मा, पूर्व विधायक श्री रोशनलाल आर्य, आर्यनेता श्री प्रमोदकुमार गर्ग, श्री केशवदास, श्री विजय कपूर (डी ए वी सस्थाए) एव आर्य विद्वान् श्री इन्द्रजितदेव सहित डा० हर्षवर्धन शर्मा ने भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित की।

श्रीमती सरला देवी आर्या के परिवार द्वारा इस अवसर पर उनकी स्मृति मे आर्यसमाज यमुनानगर मे एक कमरा निर्माण करवाने का वचन दिया गया। इस सदर्भ मे आर्यसमाज यमुनानगर को १००००/- की राशि के रूप में प्रदान किये गये। इसके अतिरिक्त आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा सहित डी ए वी सस्थाए यमुनानगर व इलाके के बहुत आर्यसमाजो एव विभिन्न धार्मिक सस्थाओ को भी दान दिया गया।

—**अशोक शास्त्री**, आर्यसमाज रेलवे रोड, यमुनानगर (हरयाणा)

आर्ष गुरुकुल कालवा में नैष्ठिक एवं दीक्षान्त समारोह सम्पन्न

दिनाक २१-४-२००२ रविवार को पूज्यपाद त्यागी तपस्वी आचार्य बलदेव जी महाराज के आचार्यत्व मे व्याकरण महाभाष्यविद् दो तपस्वी ब्रह्मचारी श्री सत्यपति एव ध्रुवदेव का नैष्ठिक एव दीक्षान्त समारोह बडे उल्लासपूर्वक मनाया गया। पूज्य आचार्य देवव्रत प्रधान सेनापति सार्वदेशिक आर्यवीर दल दिल्ली एव पूज्य स्वामी वेदरक्षानन्द गुरुकुल कालवा के ब्रह्मत्व मे यज्ञ सम्पन्न हुआ। स्वामी सम्पूर्णानन्द नली करनाल, स्वामी ध्रुवानन्द वैदिक साधनाश्रम गोरड, आचार्य विजयपाल गुरुकुल झज्जर, आचार्य हरिदत्त गुरुकुल लाढौत, आचार्य प्रदीप गुरुकुल रेवली सोनीपत, आचार्य परमदेव गुरुकुल खौल, आचार्य महेश गुरुकुल मटिण्डू, बाबू रामगोपाल एडवोकेट पानीपत आदि विद्वानो ने दोनो ब्रह्मचारियो को आशीर्वचन दिया और वैदिक सभ्यता सस्कृति तथा गुरुकुल शिक्षा के महत्त्व पर विस्तार से प्रकाश डाला।

प० चिरजीलाल भजनोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, मास्टर ओमप्रकाश पावटी ने अपने मधुर भजनो द्वारा श्रोतागण को भावविभोर किया। ब्र० हसराज वैद्य, महामुनि वैद्य नैष्ठिक एव दीक्षान्त समारोह के सयोजक ब्र० वेदपाल आर्य ने सभी विद्वानो तथा पधारे हुए धर्मप्रेमी आर्यबन्धुओ तथा दानी महानुभावो का हार्दिक धन्यवाद किया।

समारोह सयोजक—**वेदपाल आर्य**, गुरुकुल कालवा, जीन्द

श्री जगदीशचन्द्र से जगदीश मुनि बने

आर्यसमाज भडोली के सक्रिय एव जनप्रिय कार्यकर्ता श्री जगदीशचन्द्र आर्य ने वानप्रस्थ आश्रम की दीक्षा ग्रहण की। आर्य कन्या गुरुकुल हसनपुर के सचालक स्वामी विजयानन्द जी सरस्वती ने उन्हे दीक्षा देकर उनका नाम महात्मा जगदीश मुनि रखा। आर्य कन्या गुरुकुल की कन्याओ ने वैदिक मन्त्रो का सस्वर पाठ करके यज्ञ सम्पन्न कराया। श्री शिवराम विद्यावाचस्पति की अध्यक्षता मे आर्यसमाज भडोली का चुनाव सम्पन्न हुआ। श्री जगदीश मुनि जी को प्रधान, कवर वृजलाल को उपप्रधान, श्री नन्दीराम आर्य को मत्री, श्री गड्डरसिह को उपमत्री, मा० हीरासिह जी आर्य को कोषाध्यक्ष चुना गया।

—**नन्दीराम आर्य**, मन्त्री आर्यसमाज भडोली (फरीदाबाद)

आर्य महासम्मेलन हेतु प्राप्त दानराशि

गतांक से आगे–

क्रम	नाम	राशि
९८	आर्यसमाज अर्जुननगर, गुडगाव	३००-००
९९	श्री जितेन्द्रकुमार अर्जुननगर, गुडगाव	५१-००
१००	आर्यसमाज शिवाजी नगर, गुडगाव	२००-००
१०१	आर्यसमाज न्यू कालोनी गुडगाव	२५०-००
१०२	श्रीमती सपना जुनेजा सैक्टर-७ गुडगाव	१०१-००
१०३	आर्यसमाज सोहना, गुडगाव	२५१-००
१०४	श्री देशभक्त आर्य आदर्श विद्यालय न्यू कालोनी, गुडगाव	१५१-००
१०५	श्री लालचन्द सचदेवा श्रद्धानन्दनगर, पलवल	१०१-००
१०६	श्री रणवीरसिंह आर्य, वीर सिलाई मशीन, पलवल	१०१-००
१०७	आर्यसमाज होडल (फरीदाबाद)	१०१-००
१०८	शक्ति निगम पाच भाई साबुनवाले बल्लबगढ	१०१-००
१०९	श्री हरीराम आर्य कारोली, जिला रेवाडी	१००-००
११०	श्री रामगोपाल आर्य सु० श्री आशाराम टिटौली रोहतक	२५०-००
१११	श्री मा० प्रतापसिंह चाग, जिला भिवानी	२५०-००
११२	श्री मा० रामप्रकाश आर्य लाढौत जिला रोहतक	२२१-००
११३	श्री रामधारी शास्त्री, महर्षि दयानन्द योग चिकित्सा आश्रम जीन्द	१००-००
११४	श्री घनश्यामदास आर्य आर्यसमाज शिवाजी कालोनी रोहतक	११००-००
११५	श्री आर्यसमाज बहादुरगढ मण्डी	५१००-००
११६	प्रधान शिक्षा समिति रोहतक	११००-००
११७	श्री आर एन गुप्ता एडवोकेट ग्रेटर कैलाश नई दिल्ली	५०१-००
११८	प्राचार्या आर्य कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय जगाधरी	२५००-००
११९	मन्त्री दयानन्दमठ रोहतक	११००-००
१२०	श्री धर्मदेव आर्य सु० श्री बलवानसिंह आर्य टिटौली रोहतक	११००-००
१२१	आर्यसमाज स्वामी दयानन्द मार्ग, अम्बाला छावनी	२१०००-००
१२२	श्री रामपाल ऋषि रेडियोज रोहतक	४००-००
१२३	श्री वैद्य दयाकृष्ण आर्य अहीरका जीन्द	२५०-००
१२४	गुरुकुल झज्जर यज्ञ हेतु	५४००-००
१२५	श्री उमेदसिंह शास्त्री हनुमान कालोनी रोहतक	२००-००
१२६	श्रीमती सुरक्षादेवी आर्या कृष्णा कालोनी रोहतक	२५१-००
१२७	मनदीप फोटो स्टूडियो रोहतक	५०-००
१२८	मा० दीपचन्द आर्य सचालक मनदीप उच्च विद्यालय रोहतक	११००-००
१२९	श्री हरीचन्द गावडी रोहतक	१०१-००
१३०	श्री सरूपसिंह सैनी हरयाणा कोच बाडी बिल्डर्स रोहतक	१०१-००
१३१	श्री प्रीतमसिंह सैनी कोषाध्यक्ष सैनी एजूकेशन रोहतक	२५०-००
१३२	श्री विजयकुमार सुपुत्र लाला तोलाराम दयानन्दमठ रोहतक	५०१-००
१३३	श्री सरीन बैल्डिग दयानन्दमठ रोहतक	५१-००
१३४	म० धर्मपाल आर्य एम डी एच सचालक कीर्तिनगर नई दिल्ली	११००-००
१३५	मन्त्री आर्यसमाज अटायल रोहतक	१०१-००
१३६	मन्त्री आर्यसमाज अटेली मण्डी जिला महेन्द्रगढ	५०५-००
१३७	मा० कवलसिंह आर्यसमाज समसपुर भिवानी	१०१-००
१३८	मन्त्री आर्यसमाज रेवाडी	११००-००
१३९	श्री महेन्द्रसिंह शास्त्री मन्त्री आर्यसमाज न्यात सोनीपत	१२०-००
१४०	आर्यसमाज दाराशिकोहपुर फरमाणा रोहतक	२११-००
१४१	हैडमास्टर जिलेसिंह प्रधान आर्यसमाज खरक जाटान	१००-००
१४२	मन्त्री/प्रधान आर्यसमाज लालकुर्ती बाजार अम्बाला छावनी	२५०-००
१४३	राष्ट्रीय वेदप्रचार समिति सफीदों (जीन्द)	५१-००
१४४	एस के अग्रवाल कोषाध्यक्ष आर्यसमाज प्रेमनगर अम्बाला शहर	१००-००
१४५	श्री रामचन्द्र पुत्र कान्हाराम ग्राम लीलोढ जिला रेवाडी	२५-००
१४६	श्री सूबेसिंह खरकडा रोहतक	१००-००
१४७	श्री शिवलाल विद्यावती चैरीटेबल ट्रस्ट हरगोविन्द इन्कलेव दिल्ली	११००-००
१४८	श्री शिवदयाल आर्य ७० दयानन्द विहार दिल्ली	२००-००
१४९	श्री सुभाषचन्द्र तिलक नगर रोहतक	१००-००
१५०	श्री धर्मपाल शास्त्री छतैहरा वाले गोहाना	२५१-००
१५१	श्री लक्ष्मणसिंह आर्य भाई शहीद सुमेरसिंह नयाबांस रोहतक	२५१-००
१५२	श्री हरज्ञानसिह आर्य ग्राम महराना (झज्जर)	२०-००
१५३	बहन सरजो देवी ग्राम सुण्डाना (झज्जर)	१००-००
१५४	श्री राधाकृष्ण आर्य नरवाना (जीन्द)	१००-००
१५५	मा० हुक्मचन्द आर्य ग्राम भम्बेवा (झज्जर)	१००-००
१५६	श्रीमती गुरदेवी धर्मपत्नी ओमप्रकाश नेहरा कुरुक्षेत्र	५०-००
१५७	मन्त्री आर्यसमाज सरगथल सोनीपत	१००-००
१५८	सूबेराम आर्य ग्राम मदीना दांगी (रोहतक)	१००-००
१५९	श्री जसवीरसिंह शोराण ग्राम आहूलाना गोहाना (सोनीपत)	५१-००
१६०	आर्यसमाज मेन बाजार बल्लबगढ	११००-००
१६१	मन्त्री आर्यसमाज भटगाव (सोनीपत)	६००-००
१६२	श्री महेन्द्र तनेजा फरीदाबाद	२१-००
१६३	गुरुकुल लाढौत रोहतक	२००-००
१६४	कै० मातुराम शर्मा मन्त्री आर्यसमाज रेवाडी	१००-००

(क्रमशः) **–बलराज, सभा कोषाध्यक्ष**

कर्मफल विवेचन–एक निवेदन

स्वाध्यायशील प्रबुद्ध महानुभावो से निवेदन किया जाता है कि श्री ज्ञानेश्वरार्य द्वारा **'कर्मफल विवेचन'** नामक एक पुस्तक का लेखन किया गया है, जिसमे जनसामान्य के मनोमस्तिष्क मे उठनेवाली कर्मविषयक लगभग १०० शकाओ तथा उनके यथायोग्य समाधान का संकलन किया जारहा है। कोई महानुभाव कर्मविषयक किसी जिज्ञासा/प्रश्न का समाधान करवाना चाहते हों या इस सबंध मे कोई प्रमाण, कोई विशेष घटना, पाद-टिप्पणी (Foot note) सुझाव, उद्धरण (Quotation) देना उचित समझते हों तो हमें शीघ्र (लौटती डाक से) लिखकर भिजवाए। पुस्तक की पृष्ठभूमि को स्पर्श करता हुआ अब तक सकलित प्रश्नो से भिन्न कोई नया महत्त्वपूर्ण प्रश्न होगा तो हम उसे पुस्तक मे सम्मिलित करने का प्रयत्न करेगे व आपके आभारी होंगे।

जो महानुभाव पत्रव्यवहार करे वे साफ अक्षरो मे अपना पूरा पता पत्रालय-क्रमांक (Pin code) सहित अवश्य लिखे, जिससे प्रकाशन के उपरान्त हम उन्हे उपहार-प्रति प्रेषित कर सके।

पत्रव्यवहार का पता–

सम्पादक, **कर्मफल विवेचन**, दर्शन योग महाविद्यालय, आर्यवन, रोजड, जिला साबरकाठा (गुजरात) ३८३३०७, दूरभाष ०२७७४-७७२१७ फैक्स ०२७७०-८७४१७, e.mail · darshanyog@icenet.net

आर्यरत्न से सम्मानित स्वामी सर्वानन्द सरस्वती

रविवार दिनाक २४ मार्च, २००२ को दोपहर १-०० बजे डा० वसन्तराव देशपाण्डे सास्कृतिक सभागृह सिविल लाइन्स नागपुर मे राव हरिश्चन्द्र आर्य चैरिटेबल ट्रस्ट के तत्त्वावधान में प्रथम **"आर्य रत्न सम्मान"** समर्पण समारोह हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। यह सम्मान समारोह पूजनीय स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती (झज्जर) की अध्यक्षता मे प्रारम्भ हुआ। प्रमुख अतिथि समर्पण शोध सस्थान के सस्थापक पूजनीय स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती थे। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य भी इस अवसर पर विशेष रूप से आमन्त्रित थे।

वयोवृद्ध आर्यजगत् के मूर्धन्य वीतराग सन्यासी तथा पजाब राज्य के दीनानगर स्थित दयानन्दमठ के सचालक एक सौ दो वर्षीय पूज्य सर्वानन्द जी सरस्वती को प्रथम "आर्य रत्न सम्मान" राव हरिश्चन्द्र चैरिटेबल ट्रस्ट की ओर से प्रदान किया गया। स्वामी सर्वानन्द जी के उत्तराधिकारी स्वामी सदानन्द जी ने उनकी ओर से यह पुरस्कार ग्रहण किया। वृद्धावस्था के कारण स्वामी सर्वानन्द जी उक्त समारोह में उपस्थित नहीं हो सके।

आर्यसमाज सफीदों मण्डी (जीन्द) का चुनाव

संरक्षक-श्री फूलचन्द आर्य, प्रधान-श्री फूलचन्द आर्य, उपप्रधान-श्री राजवीर आर्य, श्री सज्जनसिह आर्य, मन्त्री-श्री कृष्णचन्द्र आर्य, उपमत्री-श्री निरञ्जनसिह, यादविन्द्रसिह, कोषाध्यक्ष-श्री महावीरप्रसाद, पुस्तकाध्यक्ष-श्री रामचन्द्र।

वेदभाषा उत्पादक : डा. सोम वेदालंकार

सफीदो : २० मार्च, आर्यसमाज सफीदों द्वारा आयोजित तीन दिवसीय विशाल आर्यान महोत्सव गत १७ मार्च को बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हुआ जिसमें प्रभुचिन्तन, वेद ही ईश्वरीय ज्ञान, वैदिक कर्मफल व्यवस्था, आत्मविवेचन तथा वैदिक संस्कृति पर विशेष तौर पर चर्चा हुई।

१५ मार्च को राष्ट्र समृद्धि यज्ञ द्वारा कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ जिसमें जीव, प्रकृति व परमात्मा की व्याख्या करते हुए आचार्य सोम वेदालकार ने कहा कि आत्मा कभी परमात्मा का अंश नहीं होती। वह अपने कर्मों का फल भोक्ता है परन्तु उसे कर्म करने की स्वतन्त्रता है। यह स्वतन्त्रता भी परमात्मा ने नहीं दी बल्कि यह आत्मा का स्वाभाविक गुण है। वेद ही ईश्वरीय ज्ञान पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि वेद भाषा उत्पादक है। संसार की सभी भाषाए वेद से निकली हुई हैं। वेद में किसी व्यक्ति विशेष का इतिहास नहीं दिया गया और वेद का ज्ञान सृष्टि के आदि में परमात्मा द्वारा दिया गया। इस विषय पर बोलते हुए सभामन्त्री आचार्य यशपाल ने कहा कि सृष्टि के प्रारम्भ में वेद का ज्ञान परमात्मा द्वारा चार ऋषियों की आत्मा में दिया गया जिन्होंने उस वैदिक ज्ञान को पूरे संसार में फैलाते हुए समाज का भला किया। उन्होंने विभिन्न मत, सम्प्रदाय पर कड़ा प्रहार करते हुए कहा कि ईसा, मोहम्मद, जैनमत इत्यादि मत का उदय तो केवल २००० वर्ष पहले हुआ जबकि सत्य सनातन वैदिक धर्म तो लगभग २ अरब वर्ष पहले से दुनिया का मार्गदर्शन कर रहा है।

इस अवसर पर सभा उपप्रधान श्री रामधारी शास्त्री ने कहा कि मनुष्य को कर्म करते हुए जीना चाहिए। मनुष्य चाहते हुए भी कर्म से विमुख नहीं हो सकता। उसके द्वारा किए गए हर प्रकार की दिनचर्या, आत्मा को भोक्ता बनाती है। वैदिक संस्कृति सम्मेलन मे बोलते हुए कहा कि सभ्यता और सस्कृति का बडा निकट का सम्बन्ध है। जैसे शरीर और आत्मा एक साथ कार्य करते हैं उसी प्रकार सभ्यता संस्कृति के साथ रहकर ही जीवनदायिनी बन सकती है।

कार्यक्रम के समापन पर वैदिक सस्कृति सम्मेलन में बोलते हुए स्वामी इन्द्रवेश ने कहा कि मनुष्य को देव भावना को ग्रहण करनी चाहिए। आसुरी प्रवृत्ति उसे किसी भी हद तक गिरा सकती है। उन्होंने कहा कि मनुष्य अपने दु:खों से ज्यादा दूसरों के सुखों से दु:खी है। एस वाई एल. (सतलुज-यमुना लिक नहर) पर बोलेते हुए स्वामी जी ने कहा कि इस पानी का हरयाणा की धरती के लिए जीवन-मरण का प्रश्न है। आर्यसमाज की कोशिशें के कारण ही उच्चतम न्यायालय ने अपना फैसला प्रदेश हित में दिया जिसके लिए वह आभारी है।

इस अवसर पर सभा के उपमन्त्री महेन्द्र शास्त्री, सुरेन्द्र जी तथा केदारसिह भी उपस्थित हुए। सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के महामन्त्री श्री विरजानन्द एडवोकेट ने समापन कार्यक्रम की अध्यक्षता की। कार्यक्रम के प्रसिद्ध भजनोपदेशक सहदेव बेधडक व पुष्पा शास्त्री ने अपने ओजस्वी भजनों द्वारा जनता का मार्गदर्शन किया। कार्यक्रम का सचालन आर्यसमाज सफीदों के मन्त्री कृष्णचन्द्र आर्य पत्रकार ने किया। बडी सख्या में लोगों ने इस कार्यक्रम से लाभ उठाया। **—कृष्णचन्द्र आर्य,** मन्त्री आर्यसमाज सफीदों

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज देसराज कालोनी पानीपत का वार्षिक महोत्सव दिनाक ३०-३१ मार्च, २००२ को नवीन विशाल सत्संग भवन में सानन्द सम्पन्न हुआ जिसमें विशाल पंचकुण्डीय विशेष यज्ञ, ध्वजारोहण, दीपप्रज्वलित, आर्य महिला एव आर्यकुमार सभा सम्मेलन, वेद संस्कृति रक्षा सम्मेलन, आर्य महासम्मेलन एवं सम्मान स्वागत समारोह बड़ी धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ। इसी अवसर पर सत्संग भवन, यज्ञशाला तथा मच का उद्घाटन भी किया गया।

अन्त में आर्यसमाज देसराज कालोनी के प्रधान एवं सस्थापक पं० जगदीश चन्द्र वसु वेदप्रचार अधिष्ठाता आर्य प्रादेशिक सभा हरयाणा ने सभी विद्वानों, नेताओं तथा उपस्थित जनसमूह का भरा धन्यवाद किया। शान्तिपाठ के पश्चात् सभी ने प्रीतिभोज का आनन्द लिया।

—पवनकुमार शर्मा, मन्त्री आर्यसमाजा देसराज कालोनी, पानीपत

आर्यसमाज का स्थापना समारोह

आर्यसमाज बहीन तह० हथीन जिला फरीदाबाद के तत्त्वावधान मे ऐतिहासिक स्थल बडे बगला पर आर्यसमाज का १२७वा स्थापना दिवस धूमधाम से मनाया गया। जनपद के सुप्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता **श्री शिवराम** विद्यावाचस्पति ने यज्ञ सम्पन्न कराया। उपस्थित लोगो को आर्यसमाज के मन्तव्यो की जानकारी भी श्री विद्यावाचस्पति ने दी। इस अवसर पर हथीन क्षेत्र के विधायक श्री भगवानसहाय रावत ने कहा कि धर्मप्रचार एव देशसुधार के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज की स्थापना की थी। आजादी की लडाई मे ९० प्रतिशत आर्यसमाज के सक्रिय कार्यकर्ता थे। इस अवसर पर आर्यसमाज की स्थापना भी की गई। सर्वसम्मति से श्री भगवानसहाय रावत विधायक को प्रधान, श्री मा० बिजेन्द्रसिह को मत्री, श्री हुकमसिह को उपमत्री, श्री रणधीरसिह रावत को कोषाध्यक्ष चुना गया।

—विवेकरत्न शास्त्री, प्रवक्ता, हरियाणा आर्य युवक परिषद् (रजि०)

शोक समाचार

(१) प० रामरख आर्य भजनोपदेशक के सुपुत्र श्री जितेन्द्रकुमार आर्य का १७ वर्ष की आयु मे दिनांक २४-३-२००२ को निधन होगया। परमात्मा दिवगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे एवं शोकसतप्त परिवार को इस दु ख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे। **—केदारसिंह आर्य, सभा उपमंत्री**

(२) बडे दु ख के साथ सूचित किया जाता है कि आर्यसमाज कुजपुरा जिला महेन्द्रगढ के प्रधान वैद्य रोहताश आर्य के सुपुत्र ब्र० सत्यप्रकाश आर्य की बाछौद बस दुर्घटना में १९-११-२००१ को मृत्यु हो गई जो कि सजय महाविद्यालय अटेली मण्डी में बीए प्रथम वर्ष का छात्र था, परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि उनके परिवारवालों को अपार दु ख सहने की शक्ति दे एव उनकी आत्मा को शान्ति दे। **—विश्वमित्र आर्य, भजनोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा**

(३) राव प्रभुसिह सेवानिवृत्त मुख्याध्यापक प्रधान आर्यसमाज मान्दी (महेन्द्रगढ) का ७२ वर्ष की आयु में दिनांक १३ मार्च २००२ को अचानक हृदयगति रुक जाने से निधन होगया। परमात्मा दिवगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे तथा उनके परिवार को इस दु ख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे। **—मा० प्रहलादमुनि आर्य, प्रधान आर्यसमाज नगली (महेन्द्रगढ)**

(४) हम बड़े दु.ख तथा अत्यधिक शोक के साथ यह सूचित कर रहे हैं कि के एल महता दयानन्द महाविद्यालय की प्राचार्या डा० सुषमा चावला का असामयिक निधन ८ अप्रैल २००२ को होगया है। दिवगत आत्मा को श्रद्धाजलि अर्पित करने के लिए बृहस्पतिवार ११ अप्रैल २००२ को सायं ४-०० बजे से ६-०० बजे तक के एल महता दयानन्द महिला महाविद्यालय सभागार, NH-३ फरीदाबाद मे शोक सभा का आयोजन किया गया।

—महर्षि दयानन्द शिक्षण संस्थान, आर्यसमाज रोड, नेहरू ग्राउण्ड, फरीदाबाद

(५) श्री रामचन्द्र शास्त्री मन्त्री आर्यसमाज रोहणा (सोनीपत) एव अन्तरग सदस्य आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के छोटे भाई श्री जयप्रकाश आर्य अध्यापक का हृदयगति रुकने से २३-३-२००२ को आकस्मिक निधन होगया। वे ५० वर्ष के थे। उनका जन्म रोहणा ग्राम सोनीपत मे किसान आर्य परिवार मे हुआ। श्री जयप्रकाश आर्य नागलोई आर्यसमाज के उपप्रधान थे। श्री जयप्रकाश ने नागलोई एव नागलोई के चारो तरफ के २०-२० किलोमीटर दूर तक के गावो मे वैदिक प्रचार एव वैदिक सस्कारों की धूम मचा रखी थी। दक्षिणा मे जो राशि मिलती थी सारी राशि को गुरुकुलो, गऊशालाओ एव आर्यसमाजो मे दान दे देते थे। श्री जयप्रकाश कर्मठ आर्य, धर्मात्मा, सदाचारी, त्यागी-तपस्वी, समाजसेवी, स्वाध्यायशील, सरल हृदय व्यक्ति थे।

३१-३-२००२ को नागलोई कविता कालोनी उनके मकान पर शास्त्री हेमचन्द्र यज्ञ ब्रह्मा की अध्यक्षता मे शान्तियज्ञ का आयोजन किया। श्री हेमचन्द्र शास्त्री भारद्वाज-महाशय श्री दरियावसिह आर्य रोहणा, श्री सत्यपाल अध्यापक बहादुरगढ, मा० हरिसिह जी बहादुरगढ, श्री नरदेव दहिया बहादुरगढ़ ने उनके जीवन पर प्रकाश डालकर भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित की। श्रद्धाजजि समारोह में सार्वदेशिक अध्यापक सघ-दिल्ली, नगर निगम दिल्ली के शोकप्रस्ताव पढ़कर सुनाये। भगवान् उनकी आत्मा को शान्ति और शोकसतप्त परिवार को वियोग के दु.ख को सहन करने की शक्ति दे और परिवार को सुखशान्ति दे।

—सम्पादक सर्वहितकारी

पंजाब का हिन्दी सत्याग्रह–

महाशय अतरसिंह आर्य का जीवन-परिचय

महाशय अतरसिंह आर्य

महाशय अतरसिह आर्य माजरा जहाजगढ (मोहम्मदपुर) जिला झज्जर का जन्म १९२० ई० के नवम्बर मास मे हुआ। आपके पिता जी का नाम चौ० मागेराम जी तथा माताजी का नाम मानकौर देवी था। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा जहाजगढ के मिडल स्कूल मे हुई। आपने इस स्कूल से आठवीं श्रेणी पास की। आप पढाई के साथ-साथ खेलो एव सास्कृतिक कार्यक्रमो मे भी बढचढकर भाग लेते थे। आपके सबसे प्रिय खेल कबड्डी, कुश्ती एव फुटबाल थे। आप इन खेलो मे ओपन प्रतियोगिता मे जगह-जगह पर जीतकर आते थे। आठवीं श्रेणी पास करने के बाद आपने नजदीक के कस्बे बेरी मे दोबारा से पाचवीं श्रेणी मे दाखिला लिया। वहा पर भी आप खेलो मे विशेष रूप से भाग लेते थे। आपकी खेलो मे विशेष रुचि होने के कारण हिसार सेना के मुख्यालय के कमाण्डर द्वारा स्कूल से ही सन् १९४१ मे सेना मे भर्ती हो गए।

उस समय पूरे देश मे महात्मा गाधी के नेतृत्व मे आजादी के लिए आन्दोलन चला हुआ था। आप सन् १९४२ मे फौज मे भी आजादी आन्दोलन के लिए अपने साथियो को प्रेरित करते थे। आप सच्चे देशभक्त होने के कारण अग्रेज अफसर के साथ नौकरी नहीं कर सके। आपने अग्रेजो के जूतो को ठोकर मारी। अफसर ने आपके खिलाफ मुकदमा बनाकर १४ दिन का कारावास करवा दिया। कारावास के बाद आप दोबारा सेना मे विधिवत् रूप से नौकरी करने लगे। लेकिन दोबारा एक पठान द्वारा भारत को अपशब्द बोलने पर आपने उसकी धुनाई कर दी। सेना ने आपको खतरनाक सैनिक समझते हुए आपको बरेली सैंटर मे भेज दिया। वहा पर आपको कठिन सजा दी गई, लेकिन आपने उस सजा की कोई परवाह नहीं की। वहा पर भी आप अग्रेजो के विरुद्ध आवाज उठाने लगे। वहा से आपको सेना से भेज दिया गया। यह सन् १९४३ की बाते हैं। फौज से आने के बाद आपने घर आ करके खेती करनी शुरू की। एक वर्ष खेती करने के बाद आप सन् १९४४ मे पूज्य स्वामी ओमानन्द जी के पास गुरुकुल झज्जर में आगये। यहा आ करके आप आर्षग्रन्थो को पढने लगे। उस समय आप अपने साथी भीमसेन दहकोरा, देवशर्मा टीकरी, यज्ञदेव लुलोढ, वेदव्रत राजस्थान, सुदर्शनदेव बालन्द आदि के साथ अष्टाध्यायी पढने लगे। यहा पर भी आप अपने साथियो के साथ कबड्डी एव कुश्ती खूब खेलने थे। उस समय पूरे पजाब मे गुरुकुल झज्जर की कबड्डी टीम की चर्चा पूरे जोरो पर होती थी तथा दूसरे स्कूलो की टीम भी गुरुकुल झज्जर मे आती थी और गुरुकुल के ब्रह्मचारियो की टीम के साथ अभ्यास करती थी।

पढाई के साथ-साथ आप सामाजिक कार्यो मे भी बढचढकर हिस्सा लेने लगे। उस समय आचार्य भगवान्देव जी (वर्तमान स्वामी ओमानन्द सरस्वती) गावो मे घूम-घूमकर ब्रह्मचर्य प्रशिक्षण शिविर तथा वेदो का प्रचार-प्रसार करते थे। आप आचार्य भगवान्देव जी के साथ रहने लगे तथा साइकिल पर आचार्य भगवान्देव जी को बैठाकर गांवों में प्रचार करने लगे। आप प्रात: ३ बजे उठकर नित्यकर्म से निवृत्त होकर आचार्य जी को लेकर गांवों में प्रचार के लिए निकल जाते थे। उस समय आप में सर्दी-गर्मी, भूख-प्यास आदि सहने की अथाह शक्ति थी। आप सर्दी में भी एक कम्बल में रहते थे। आपके सभी साथी आचार्य भगवान्देव जी के साथ आजादी आन्दोलन के लिए समय-समय पर मीटिंग करते थे। आजादी से पहले आचार्य भगवान्देव जी ने कहा कि हमें हथियारों को इकट्ठा करना चाहिए। आजादी के लिए हथियारों की अत्यन्त आवश्यकता पडेगी। आप तथा आपका एक क्रान्तिकारी साथी ब्रह्मचारी हरिशरण हथियार लेने के लिए रावलपिण्डी के पास पोठोहार (जो अब पाकिस्तान मे है) गये। वहा से आप रिवाल्वर, बंदूक एव लाइटर आदि लाये। रास्ते मे अनेक कठिनाइया होने पर भी आपने बडी होशियारी के साथ सारे हथियार गुरुकुल मे पहुचाये।

एक बार आप आचार्य जी के साथ पठानकोट के पास से गाड़ी में हथियार लेने गये। वहा से हथियार लेकर आप गाड़ी द्वारा वापिस आरहे थे। रास्ते मे तलाशी का पूरा डर था। रास्ते मे एक जगह गाड़ी खराब होगई। गाड़ी खराब होते ही वहां पर पुलिस आगई। पुलिस द्वारा गाडी की तलाशी ली गई। लेकिन हथियार नहीं मिले। पुलिस के पूछने पर आपने दूसरा बहाना बनाकर पुलिस को सतुष्ट किया। पुलिस के जाने के बाद आप लोग बडी कठिनाइयों का सामना करते हुए गुरुकुल झज्जर मे पहुचे। यहा पर सभी गुरुकुलवासियो ने चैन की सास ली।

कुछ दिन बाद १९४७ मे मुस्लिम एवं हिन्दुओ का आपस में मतभेद होगया और मारकाट शुरू होगई। इन्हीं दिनों आर्यसमाज के विचारों के आर्यों की एक गुप्त बैठक हुई जिसमे देश की आजादी के विषय मे चर्चा की गई तथा आगे की योजना पर विचार किया।

छुछकवास में नवाब मुशताक अली का शासन चलता था। आसपास के देहात के मुसलमान छुछकवास की कोठी मे इकट्ठे होगये। आचार्य भगवान्देव जी के आदेशानुसार कोठी पर हमला किया गया। ब्र० हरिशरण की छाती मे गोली लगी किन्तु कोठी पर हमला सफल रहा।

दश वर्ष पश्चात् सन् १९५७ मे पजाब मे हिन्दी सत्याग्रह प्रारम्भ होगया। इसके सूत्रधार थे स्वामी आत्मानन्द सरस्वती प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब। उस समय पजाब और हरयाणा पृथक्-पृथक् नहीं थे। हरयाणा मे आचार्य भगवान्देव जी के नेतृत्व मे यह सत्याग्रह आन्दोलन चलाया गया था। प० जगदेवसिह सिद्धान्ती, प्रो० शेरसिंह जी आदि इनके प्रमुख सहयोगी थे। श्री अतरसिह आर्य ने इस आन्दोलन मे बढचढ़कर भाग लिया।

मुख्यमत्री प्रतापसिह कैरो ने हरयाणा में गुरुमुखी लिपि मे पजाबी भाषा की पढाई अनिवार्य कर दी थी। इसी के विरोध मे यह सत्याग्रह आन्दोलन चला था। हमारे उपदेशक गाया करते थे–

सिख हमारे भाई हैं और गुरुमुखी हमें प्यारी है।
लेकिन जबरन पढने से साफ इनकारी है।।

रोहतक दयानन्दमठ से जत्थे चण्डीगढ जाकर सत्याग्रह करते थे। सरकार उन्हे गिरफ्तार करके इधर-उधर जगलो मे छोड आती थी। जेल मे नहीं भेजती थी।

कुछ दिन बाद रोहतक मे भी सत्याग्रह करने की अनुमति मिल गई। सत्याग्रह जोरो पर था। पजाब सरकार की सभी जेले ठसाठस भर गई। सरकार ने सत्याग्रहियो पर अत्याचार किये। उने घर जा-जाकर धमकिया दीं, तग किया, जुर्माना किया, बैल आदि नीलाम कर दिये किन्तु हरयाणे के वीरो का जोश घटने के बजाय बढता ही गया।

आचार्य भगवान्देव जी के आदेशानुसार अतरसिह जी ने दयानन्दमठ रोहतक मे रहकर यहा के भोजनादि की व्यवस्था सभाली।

एक दिन प्रात ४ बजे पजाब पुलिस ने दयानन्दमठ रोहतक को चारों ओर से घेरकर दरवाजे पर लारिया खडी कर दी। मठ में जितने भी सत्याग्रही मिले, सबको लारियो मे भरकर ले गई किन्तु अतरसिह को तो यहा रहकर आन्दोलन चालू रखने का आदेश था। इसने बिल्कुल निर्वस्त्र होकर पागल की भूमिका निभाई और जिद् करने लगा कि मैं भी जेल मे जाऊगा। पुलिस ने इसे पागल समझकर मठ मे ही छोड दिया।

इस वीर ने अन्त समय तक दयानन्दमठ की छावनी में रहकर सत्याग्रहियों के जत्थे भिजवाये और भोजन आदि की व्यवस्था की। **–वेदव्रत शास्त्री**

वेद में जो जागत है सो पावत है

❑ स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती, आर्ष गुरुकुल कालवा

जो इस जगत् मे सर्वदा सावधान रहता है, सदा सजग रहता है, उसको जगत् में सदा ऋचायें प्राप्त होती हैं, ज्ञान-विज्ञान प्राप्त होते हैं, कला-कौशल प्राप्त होते हैं, उनके आधार पर फिर जगत् मे उसे स्तुतिया प्राप्त होती हैं, प्रशसाए मिलती हैं, यश-कीर्तिया मिलती हैं। जो इस ससार मे सदा सजग रहता है, सदा अविद्या से हटकर विद्या-विज्ञान की ओर अग्रसर होता रहता है, उसे साम प्राप्त होते हैं, उसे साम-मन्त्रो का ज्ञान प्राप्त होता है, उसे उपासनायें प्राप्त होती हैं, उसे धैर्य और सात्वनाए प्राप्त होती हैं। सच बात तो यह है कि जो जागता है, सदा पुरुषार्थ कर अविद्या से गर्त से अपने आपको उभारने का प्रयत्न करता है, तो वह शान्तस्वरूप प्रभु उससे प्यार मे आकर मानो कहता है कि "तेरी मित्रता मे स्थिर हुआ-हुआ मैं तेरा निश्चित रूप से घर बन गया हू, तेरा निश्चित रूप से आधार अर्थात् आश्रय बन गया हू।" साधक को चाहिये कि वह सदा जागरूक रहकर वेदादि सत्य शास्त्रो का स्वाध्याय कर जहा जग मे स्नेह-सम्मान सेवा-सत्कार को प्राप्त करे वहा उस प्रभु मे आत्मविभोर होकर उसका गुणगान करे, उसका ध्यान करे जिससे कि वह सर्वाधार प्रभु उस उपासक का सच्चा आश्रय बनकर उसको आनन्द रस से आप्लावित करदे, हर प्रकार से तृप्त करदे। ऋग्वेद पचम मण्डल के चौवालीसवे सूक्त के १४-१५ मन्त्रो मे जागरूकता तथा पुरुषार्थ के विषय मे सुन्दर वर्णन आया है–

यो जागार तमृच कामयन्ते यो जागार तमु सामानि यन्ति।
यो जागार तमय सोम आह तवाहमस्मि सख्ये न्योका ।।

(ऋग्वेद ५।४४।१४)

अर्थ–(**य जागार तम् ऋच कामयन्ते**) जो सदा जागरूक रहता है उसको ऋचाए चाहती हैं, उसको स्तुतिया चाहती हैं। (**य जागार तम् उ सामानि यन्ति**) जो सदा जागता है, सावधान रहता है, उस ही को साम मन्त्र प्राप्त होते हैं, उपासनाये प्राप्त होती हैं। (**य जागार तम् अय सोम आह**) जो जागता है, अविद्यान्धकार से उठ खडा होता है, उसको ही यह सर्वोत्पादक सर्वप्रेरक सौम्य गुण-कर्म-स्वभावोवाला प्रभु मानो कहता है कि (**अह तव सख्ये नि-ओका अस्मि**) मैं तेरी मैत्री मे, मैं तेरे सखाभाव मे स्थिर हुआ-हुआ निश्चित रूप से तेरा निवास हू, निश्चित रूप से तेरा घर हू, निश्चित रूप से तेरा आश्रय हू। अत तू मुझे ही सर्वप्रकार से अपना आश्रय बना। अगले मन्त्र मे भी '**जो जागत है सो पावत है**' का सन्देश दिया है–

अग्निर्जागार तमृच कामयन्तेऽग्निर्जागार तमु सामानि यन्ति।
अग्निर्जागार तमय सोम आह तवाहमस्मि सख्ये न्योका ।।

(ऋग्वेद ५।४४।१५)

अर्थ–(**अग्नि जागार तम् ऋच: कामयन्ते**) अग्नि के समान ज्ञान प्रकाशवाला पुरुष ही जागता है, सदा जागरूक रहता है इसलिये उसको ऋचाए चाहती हैं, उसको स्तुतिया प्रशसाये चाहती हैं, प्राप्त होती हैं। (**अग्नि जागार तम् उ सामानि यन्ति**) अग्नि के सदृश देदीप्यमान मनुष्य जागता है सदा सावधान रहता है, इसलिए उसको ही साम-मन्त्र प्राप्त होते हैं, उपासनाये प्राप्त होती हैं, सान्त्वनाये प्राप्त होती है। (**अग्नि जागार तम् अय सोम आह**) ज्ञानी-विवेकी जागता है, सदा सजग रहता है, इसलिये उसको यह सोम-शान्तस्वरूप आनन्दस्वरूप प्रभु मानो कहता है कि (**अह तव सख्ये न्योका अस्मि**) मैं तेरे सखित्व मे स्थित हुआ-हुआ निश्चित रूप से तेरा निवास हू, निश्चित रूप से तेरा आश्रय हू। अत तू मुझे ही अपना सब प्रकार से आश्रय बना।

जो अग्नि, जो वेदादि के स्वाध्याय से सदा अपने ज्ञान प्रकाश से युक्त करता रहता है, जिसमे उत्साह है, तडप है, लगन है, आगे बढने और ऊपर उठने की भावना है, वही सदा जागरूक रहता है, वही अपने एक-एक पल और एक-एक क्षण का सदुपयोग करने के लिये सदा सावधान रहता है, सदा सजग रहता है। इसलिये ऋचाये ज्ञान-विज्ञान उसे प्राप्त होती हैं, उपासना की गुत्थिया उसी के आगे खुलती हैं, हृदय की गाठे उसकी खुलती हैं, धैर्य और सान्त्वनाये उसे ही मिलती हैं। इस प्रकार वह पूर्ण मनोयोग के साथ हृदय की तडप के साथ प्रभु का सच्चा सखा बनकर उसके गुण-कर्म-स्वभावो को अपने मे निरन्तर भरता रहता है तो एक न एक दिन उसके जीवन मे बहुत शीघ्र ही वह सौभाग्यशाली दिन आ जाता है जबकि वह सोम प्रभु, शान्तस्वरूप दिव्य पावन प्रभु उसे प्यार मे आकर मानो सहज ही कह बैठता है कि 'मैं तेरी निश्छल मैत्री मे स्थिर हुआ-हुआ तेरा आश्रय बन गया हू। अत तू मुझे अपना आधार बनाकर मुझसे वह दिव्य रस पा, वह दिव्य आनन्द पा जो कि अन्यत्र सर्वथा दुर्लभ है।

वैदिक मर्यादापुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र

पं० नन्दलाल निर्भय भजनोपदेशक

आर्यजगत् के सब नर-नारी, वैदिक धर्म निभाओ रे।
वैदिक मर्यादापुरुषोत्तम, श्रीरामचन्द्र बन जाओ रे।।
वैदिक मार्ग सुखो का दाता, जो इसको अपनाते हैं।
धर्म, अर्थ अरु काम मोक्ष वे, सकल पदार्थ पाते हैं।
देश-विदेश घूमने को वे, जहा कहीं भी जाते हैं।
पाते हैं सम्मान जगत् मे, कभी न कष्ट उठाते हैं।
कल्याणी वैदिक वाणी की, खुश हो महिमा गाओ रे।
वैदिक मर्यादापुरुषोत्तम, श्रीरामचन्द्र बन जाओ रे।।
श्रीराम थे महापुरुष, ईश्वर के भक्त निराले थे।
प्रजापालक धर्मवीर थे, देशभक्त मतवाले थे।
मानवता के अद्भुत पूजक, त्यागी अरु तपधारी थे।
माता-पिता गुरु के सेवक, राजा परोपकारी थे।
रघुनन्दन को ठीक तरह तुम, समझो अरु समझाओ रे।
वैदिक मर्यादापुरुषोत्तम, श्रीरामचन्द्र बन जाओ रे।।
श्रीराम ने दुखी जनो को, अपने गले लगाया था।
मानवता के हत्यारो को, नीचा सदा दिखाया था।
निषादराज, सुग्रीव, विभीषण को निज मित्र बनाया था।
बाली, रावण, कुम्भकर्ण को रण मे मार गिराया था।
रामायण इतिहास अनूठा, मित्रो ! पढो, पढाओ रे।
वैदिक मर्यादापुरुषोत्तम, श्रीरामचन्द्र बन जाओ रे।।
श्रीराम जैसे नेता अब, जग मे नजर न आते हैं।
घूम रहे लाखो पाखण्डी, भारी शोर मचाते हैं।
दुष्ट-शराबी, मासाहारी, पापी रात-दिन करते हैं।
धूर्त-स्वार्थी, दम्भी नेता, ईश्वर से ना डरते है।
सुख चाहो तो आर्यकुमारो ! इनका वश मिटाओ रे।
वैदिक मर्यादापुरुषोत्तम, श्रीरामचन्द्र बन जाओ रे।।
सकल जगत् है दुखी आर्यो ! पाप गया है बढ भारी।
हाथों मे रायफल ले करके, फिरते हैं अत्याचारी।
आज विश्व मे लाखो गऊए, जाती हैं निशदिन मारी।
भूखे-प्यासे आर्यावर्त मे, फिरते हैं अब नर-नारी।
श्रीराम के पुत्रो जागो ! कर मे धनुष उठाओ रे।
वैदिक मर्यादापुरुषोत्तम, श्रीरामचन्द्र बन जाओ रे।।
श्रीराम के जन्म दिवस पर, प्रण करो हे बलवानो।
वैदिक नाद बजाओ जग मे, ऋषियो की शुभ सन्तानो।
सत्य-असत्य अरु पुण्य-पाप को, हे वीरो ! अब तो जानो।
कौन है अपना, कौन पराया, ठीक तरह तुम पहचानो।
जगत् गुरु ऋषि दयानन्द बन, जग में धूम मचाओ रे।
वैदिक मर्यादापुरुषोत्तम, श्रीरामचन्द्र बन जाओ रे।।

ग्राम व डाकघर बहीन, जिला फरीदाबाद (हरयाणा)

बत्तीसवां वैदिक सत्संग समारोह

स्थान दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक

दिनांक ५ मई, सन् २००२ रविवार

इस अवसर पर आप सभी सादर आमन्त्रित हैं। यजुर्वेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति भी उसी दिन प्रात होगी।

सन्तराम आर्य, सयोजक–सत्सग समारोह

आदर्श परिवार के प्रति शुभकामना

फोटो परिचय

श्री चौ. मित्रसेन जी आर्य एवं उनके सुपुत्र

श्री चौ. मित्रसेन जी आर्य एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती परमेश्वरी देवी जी

कैप्टेन रुद्रसेन जी | श्री वीरसेन जी | श्री व्रतपाल जी

कै अभिमन्यु जी (I.A.S) | मेजर सत्यपाल जी | श्री देवसुमन जी

चौ० मित्रसेन जी का प्रतिष्ठित आर्य परिवार मे जन्म हुआ है, प्रारम्भ से ही इनके जीवन पर आर्यसमाज की छाप रही है। इनके पिताजी श्री चौ० शीशराम कट्टर आर्यसमाजी थे, आर्यसमाज के स्तम्भ लाला लाजपतराय, महात्मा हसराज, भाई परमानन्द आदि के साथ सदा सम्पर्क मे रहे, ये सगीतप्रेमी थे। अपनी मडली तैयार करके इन्होने गाव-गाव घूमकर आर्यसमाज का प्रचार करना आरम्भ कर दिया, इनके प्रचार कार्य की प्रशसा प्रादेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा लाहौर तक पहुची। सभा ने चौ० शीशराम जी को ४० रुपये मासिक पर भजनोपदेशक नियुक्त कर दिया। पिताजी ने वेतन लेने से मना कर दिया जिस पर वे अवैतनिक ही आर्यसमाज के प्रचार मे जुट गये। ये आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब मे भी आजीवन नि शुल्क प्रचार करते रहे। हैदराबाद सत्याग्रह के लिए भी चौ० शीशराम जी ने अपने गाव व आस पास से १०० आदमियो का जत्था भेजा, आप आजीवन अपने हाथो से यज्ञोपवीत बनाकर नि शुल्क बाटते रहे। पौराणिको से आपने अनेक बार शास्त्रार्थ भी किये। सन् १९३१ ईस्वी का वह दिन बहुत सौभाग्यशाली था जब चौ० शीशराम जी के घर मे पुत्ररत्न ने जन्म लिया, जिनको मित्रसेन के नाम से पुकारा जाने लगा। आपके सस्कारो की छाप चौ० मित्रसेन जी के जीवन पर पूरी तरह से अंकित है। चौ० मित्रसेन जी आज आर्यसमाज के स्तम्भ माने जाते हैं। अनेक शिक्षण सस्थाये आपके सहयोग से आगे बढ रही हैं। आर्यसमाज के हर कार्य मे आप बढचढकर सहयोग देते हैं। आपकी सादगी, आपकी विनम्रता, आपकी सहिष्णुता, आपकी सत्यवादिता सबको आकर्षित करती है।

परिवार की एक झलक

नाम	चौ० मित्रसेन जी आर्य
जन्म	सन् १९३१ ईस्वी
गाव –	खाण्डाखेडी, जिला हिसार (हरयाणा)
पिता का नाम–	चौ० शीशराम आर्य
माता का नाम–	श्रीमती जीवन देवी
धर्मपत्नी –	श्रीमती परमेश्वरी देवी
कार्य –	अनेक खानों, कारखानो का संचालन, कोयला, ट्रासपोर्ट, फाइनेस, सीमेट फैक्ट्री, चिकित्सालय, व्यावसायिक सस्थान, दैनिक समाचार पत्र 'हरिभूमि' का प्रकाशन, अनेक शिक्षण सस्थाओ का सचालन, आर्यसमाज के प्रति समर्पित, अनेक गुरुकुल सस्थाओं, समितियों और न्यासो के परम सहयोगी।
आर्यपुत्र –	कैप्टन रुद्रसेन, श्री वीरसेन, श्री व्रतपाल, कैप्टन अभिमन्यु, मेजर सत्यपाल, श्री देवसुमन।

क्या तराजू में तोलना सम्मान है?

किसी बडे नेता को तराजू मे तोलकर सम्मान करने की एक प्रथा प्रचलित हो गई है। मुझे पता नहीं यह किसी प्राचीन शास्त्र मे लिखा है या वर्तमान की उपज है। मैं समझता हू किसी को सिक्को के बराबर तोलकर सम्मान करना उसकी ऊचाई को कम करना है। तराजू मे उस चीज को तोला जाता है जिसका मूल्य जाचना हो। एक महान् व्यक्ति की महानता को तोलकर जाचना कोई बुद्धिमत्ता नहीं, अपितु मूर्ख बनाना है। आपने कुछ दान देना है या कुछ भेट करना है तो उसको सबके सामने हाथ जोडकर दिया जा सकता है। उसे तराजू मे बैठाना शोभा नहीं देता। आप सब महानुभावो से अनुरोध है कि इस विषय पर गम्भीरता से विचार करके अपना मत प्रकट करे।

–**देवराज आर्यमित्र**, आर्यसमाज कृष्णनगर, दिल्ली-५१

वर चाहिए

गौर वर्ण, पाच फुट ढाई इच, २२ वर्षीय बी एस सी (कम्प्यूटर साईस) एम सी ए, शिक्षा मे प्रतिभासम्पन्न आर्य परिवार की अग्रवाल (गोयल) कन्या हेतु इजीनियर/एम सी ए आदि शिक्षायुक्त, सेवारत स्वावलम्बी आर्य परिवार का वर चाहिए। पिता कालेज मे प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष, लेखक एव विचारक, आर्यसमाजी विचारो/सुधारो से सम्बद्ध। पत्र-पत्रिकाओ मे नियमित लेखक। माता सरकारी स्कूल मे अध्यापिका।

आर्यसमाजी प्रोफेसर/शिक्षक आर्य परिवार को प्राथमिकता। सम्पर्क हेतु कृपया लिखे–

श्री शमेश आर्य एम.ए.,

४३२/८ अर्बन एस्टेट, करनाल-१३२००१ (हरयाणा)

आर्यसमाज के उत्सवों की बहार

१ आर्यसमाज मन्दिर समालखा जिला पानीपत (चतुर्थ वेदो का महापारायण यज्ञ)	१७ अप्रैल से २१ मई
२ आर्यसमाज शिवाजी नगर गुडगाव	२९ अप्रैल से ५ मई
३ आर्यसमाज सेहलग जिला महेन्द्रगढ	४ से ५ मई
४ आर्यसमाज सैक्टर-७ फरीदाबाद	७ से १५ मई
५ आर्यसमाज गोहाना मण्डी जिला सोनीपत	२१ से २३ जून

–**सुखदेव शास्त्री, सहायक वेदप्रचाराधिष्ठाता**

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ०१२६२–७६८७४, ७७८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ०१२६२–७७७२२) से प्रकाशित।
पत्र में प्रकाशित लेख सामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री का सहमत होना आवश्यक नहीं। पत्र के प्रत्येक प्रकार के विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक होगा।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३ सृष्टिसंवत् १,९६,०८,५३,१०३
पंजीकरणसंख्या टैक/85-2/2000 ☎ ०१२६२-७७७२२

रोहतक
प्रधानसम्पादक : यशपाल आचार्य, सभामन्त्री सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री
वर्ष २९ अंक २३ ७ मई, २००२ वार्षिक शुल्क ८०) आजीवन शुल्क ८००) विदेश में २० डॉलर एक प्रति १.७०

परिवार कैसे संगठित और सुखी रहे ?

❑ प्रतापसिंह शास्त्री एम०ए०, पत्रकार, २५ गोल्डन विहार, गगवा रोड, हिसार

वेदो के आधार पर ऋषियों ने मानव जीवन को चार आश्रमो मे (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, सन्यास) बाटा है। वैदिक धर्म के अतिरिक्त अन्य किसी भी मतमतान्तर मे जीवन का यह वैज्ञानिक वर्गीकरण नहीं पाया जाता। यह वैदिक विचारधारा की महान् विशेषता है। यह जीवन मानो गणित का एक प्रश्न है जिसमे इन आश्रमो के माध्यम से जोड व घटा, गुणा और भाग, चारो का समन्वय पाया जाता है। यदि परिवार के सदस्य इस प्रश्न को समझ ले तो "परिवार कैसे सगठित और सुखी रहे" यह विषय सम्यक्तया समझ मे आ सकता है। ऋग्वेद मे एक मन्त्र है–

इहैव स्वत मा वि यौष्टं विश्वमायुर्व्यश्नुतम्।
क्रीळन्तौ पुत्रैर्नप्तृभिर्मोदमानौ स्वे गृहे।।

(ऋ०म० १० सूक्त ८५ मत्र ४२)

वेदमन्त्र पति और पत्नी को आदेश दे रहा है–"तुम दोनों इस घर मे रहो, तुम परस्पर द्वेष मत करो, तुम दोनो सम्पूर्ण आयु को प्राप्त करो, अपने घर में पुत्र पौत्र और नातियो के साथ खेलते हुए आनन्दपूर्ण (प्रसन्न) रहो।"

ब्रह्मचर्य आश्रम मे शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आत्मिक शक्तियो को इकट्ठा किया जाता है। गृहस्थ आश्रम मे प्रवेश करके इन जोडी हुई शक्तियो को गृहस्थ के विभिन्न कामों मे खर्च करना पडता है। वानप्रस्थ आश्रम मे खर्च की हुई शक्तियो को ब्रह्मचर्य (सयम से), स्वाध्याय जप एव तप द्वारा गुणीभूत करता है और सन्यास आश्रम मे अपने सगृहीत ज्ञान विज्ञान एवं अनुभव को समाज मे वितरित करने के लिए कृतसकल्प होना ही वैदिक वर्णाश्रम व्यवस्था का सक्षिप्त सार है।

गृहस्थ को अपनाकर ही मनुष्य जीवन मे सौन्दर्य एव निखार आता है। काम मनुष्य की एक प्रबल प्रवृत्ति है जिसे आज के वैज्ञानिक साधनो टेलिविजन, वी सी आर, इटरनेट, अश्लील समाचारपत्रो के विज्ञापन, फिल्म, चित्रहार, अश्लील साहित्य, बदलते नैतिक मूल्यों, बढते पश्चिमी सस्कृति के प्रभाव, टूटते सयुक्त परिवार सत्सग व वैदिक शिक्षा के अभाव, दूषित शिक्षा प्रणाली, स्कूल कालेज विश्वविद्यालयो की सहशिक्षा, स्वदेशी वस्तुओ से मोहभग होना, वैदिक दृष्टिवाले मनोरंजन के साधनों का अभाव आदि कारणो ने और अधिक प्रबलतर बना दिया है। किन्तु इस कामवासनारूपी प्रबल प्रवृत्ति का सुशोभित रूप गृहस्थ मे ही प्रकट होता है। यदि गृहस्थ आश्रम का विधान न होता तो काम अपना भयकर एव बीभत्स रूप धारण करके समाज के सुन्दर एव स्वस्थ रूप को कुरूप बना देता। महर्षि दयानन्द ने "सत्यार्थप्रकाश" मे चतुर्थ समुल्लास केवल मात्र इसीलिए लिखा है ताकि इसे पढकर इस पर आचरण करके आर्य परिवार अपने गृहस्थ जीवन को सुखी बना सके। उदाहरण के लिए महर्षि ने व्यावहारिक बाते लिखी हैं जिनके अपनाने से भी हमारे परिवार संगठित और सुखी रह सकते हैं वे लिखते हैं–"निकट विवाह में दोष और दूर विवाह करने में गुण हैं।" महर्षि मनु की 'मनुस्मृति' कहती है–"सातवीं पीढी मे सपिण्डता का सम्बन्ध छूट जाता है।" सन् १९५५ मे पारित हिन्दू विवाह अधिनियम के अनुसार सपिण्डता के निषेध की सीमा कम कर दी गई है। इस सीमा को पिता की ओर से पाच और माता की ओर से तीन पीढियो तक सीमित कर दिया गया। जहा तक व्यवहार का सम्बन्ध है हिन्दू समाज मे सपिण्ड विवाह होते रहे हैं और आज भी हो रहे हैं। उदाहरणार्थ–अर्जुन ने अपने मामा की लडकी सुभद्रा से विवाह किया जिससे उसका पुत्र अभिमन्यु उत्पन्न हुआ। यह ममेरे-फुफेरे भाई-बहन का विवाह था। श्रीकृष्ण जी के लडके प्रद्युम्न का विवाह भी अपने मामा की लडकी रुक्मावती के साथ हुआ था। श्रीकृष्ण के पोते अनिरुद्ध ने अपने मामा की लडकी रोचना से और परीक्षित ने अपने मामा की लडकी इन्द्रावती से विवाह किया था। सिद्धार्थ (गौतम बुद्ध) का विवाह अपने मामा की लडकी यशोधरा से हुआ था। पृथ्वीराज चौहान ने अपनी मौसी की लडकी सयुक्ता से विवाह किया था। दक्षिण भारत मे मामा की लडकी से विवाह होना आम बात है। वहा किसी जाति (वर्ग) में भाजी और साली की लडकी के साथ विवाह करने का रिवाज है। सम्भव है, दक्षिण मे सपिण्ड विवाह होने का कारण मातृसत्तात्मक परिवार की प्रथा हो। परन्तु यह सब महाभारतकाल मे हुआ जो आर्यावर्त (भारतवर्ष) के सास्कृतिक तथा नैतिक पतन का काल है। शास्त्रसम्मत न होने से उस काल के कृत्यो को आदर्श नही माना जा सकता। वस्तुत एक ही रक्त के सम्बन्धियो मे विवाह होना हितकर नहीं है न प्रजननिक आधार पर और न भावनात्मक आधार पर। इसीलिए महर्षि दयानन्द ने 'सस्कारविधि' मे लिखा है कि 'जब तक दूरस्थ कुल के साथ सम्बन्ध नहीं होता तब तक शरीर आदि की पुष्टि भी पूर्ण नहीं होती। मनुष्य का दूरस्थ वस्तु के प्रति अधिक आकर्षण होता है। फलत उसमे उसकी प्रीति अधिक होती है। इस प्रकार दूरस्थो मे परस्पर विवाह अधिक प्रीति का कारण होगा।" परिवार को सगठित और सुखी रखने के लिए हमे इसका पालन करना चाहिये।

'सत्यार्थप्रकाश' के चतुर्थ समुल्लास मे महर्षि दयानन्द 'स्त्री पुरुष परस्पर प्रसन्न रहे' इस विषय का वर्णन मनुस्मृति के **'सन्तुष्टो भार्यया भर्त्ता, भर्त्रा भार्या तथैव च'** आदि कई श्लोको द्वारा करते हुए कहते है–"जिस परिवार मे पत्नी से पति और पति से पत्नी अच्छे प्रकार प्रसन्न रहते है उसी परिवार मे सब सौभाग्य और ऐश्वर्य निवास करते है। जहा कलह होता है वहा दौर्भाग्य और दारिद्र्य स्थिर होता है।"

वैदिक विवाह मे व्यक्तियो के साथ-साथ सामाजिक पक्ष पर भी बल दिया जाता है। इस सन्दर्भ मे भारत के राष्ट्रपति डा० राधाकृष्णन ने लिखा था– "वैदिक विवाह मे व्यक्तियो के साथ सामाजिक पक्ष पर भी बल दिया जाता है। न पुरुष को अत्याचारी कहा जा सकता है न स्त्री को उसकी दासी माना जा सकता है। व्यावहारिक जीवन मे कोई भी दम्पती ऐसे नही मिलेगे जो प्रत्येक दृष्टि से एक-दूसरे से मेल खाते हो। भेद के होते हुए भी एक-दूसरे की भावनाओ का सम्मान करते हुए समन्वय और सामजस्य के द्वारा ही दाम्पत्य जीवन सुखी हो सकता है। एक सामान्य लक्ष्य ही दोनो को जोडे रह सकता

है। प्रेम बलिदान मागता है। सयम तथा सहिष्णुता के बिना काम नहीं चल सकता।"

वैदिक दृष्टिकोण के अनुसार विवाह एक धार्मिक संस्कार है। जीवन पर्यन्त यह सम्बन्ध बना रहेगा। प्रारम्भ मे जो वेदमन्त्र हमने प्रस्तुत किया है- **'इहैव स्तम्'** विवाह यज्ञ मे विनियुक्त यह वेदमन्त्र विवाह के सुखी परिवार के उच्च आदर्श को दर्शाता है। पति-पत्नी के सम्बन्ध विच्छेद का सर्वथा निषेध करता है। पाणिग्रहण सस्कार मे प्रथम मन्त्र-**'गृभ्णामि ते सौभगत्वाय हस्तं मया पत्या जरदष्टिर्यथासः०'** (ऋ० १०।८५।३६) का उच्चारण करते हुए वर वधू दोनो इस बात की घोषणा करते हैं कि हम दोनो का यह सम्बन्ध बनाने, हमे एक-दूसरे को सौंपने मे सकल ऐश्वर्य से युक्त, न्यायकारी सब जगत् के उत्पत्तिकर्ता और सब जगत् को धारण करनेवाले परमेश्वर का हाथ है। सभामण्डप मे उपस्थित विद्वान् लोग इस सम्बन्ध के साक्षी हैं। हम दोनों स्वेच्छा से वृद्धावस्था तक एक-दूसरे का साथ निभाने की प्रतिज्ञा करते हैं। 'इहैव स्तम्' का एक अभिप्राय यह भी है कि यह वैवाहिक सम्बन्ध जीवन पर्यन्त है, अस्थायी नही है। पाश्चात्य देशो मे पत्नी और पति के होते हुए भी पुरुष अन्य स्त्रियो के साथ और स्त्री अन्य पुरुषो के साथ अपने सम्बन्ध स्थापित कर सकती है। वैदिक मान्यता के अनुसार यह निषिद्ध है। पाश्चात्य जगत् के विचारक भी अब इन रीतियो से क्षुब्ध हैं। इन रीतियो ने वहा विवाह की पवित्रता को नष्ट कर दिया है। पुरुष और स्त्री के सम्बन्धो में स्थिरता नहीं रहने दी है। इस प्रकार का जीवन उनके लिए अभिशाप बन चुका है। मनु महाराज ने इस उच्छृखलता को रोकने के लिए यह प्रतिबन्ध रख दिया-

'स्वदारनिरत सदा' (मनु० ३/५०) मनुष्य को सदा "अपनी पत्नी मे ही प्रसन्न रहना चाहिए"-यह कहकर मनु ने कामवासना को मर्यादा के तटबन्धो मे बाध दिया। यही आदर्श है कि जिसने वैदिक गृहस्थ को वैदिक परिवार को आदर्शमय एव सुखमय बनाया है।

गृहस्थ आश्रम मनुष्य मे त्याग की भावना लाता है। स्त्री के त्याग का तो कहना ही क्या है वह तो त्याग की साक्षात् मूर्ति है।" पत्नी का अपूर्व त्याग परिवार को सगठित रखने का सुखी रखने का एव ऐश्वर्य का महान् आधार है। गृहस्थ मे प्रवेश करते समय वह अपने माता-पिता, भाइयो और बहिनो का त्याग करती है साथ उस वातावरण का भी त्याग करती है जिसमे उसका पालन-पोषण हुआ है। त्याग का दूसरा उदाहरण हमे उस समय मिलता है जबकि विवाह से पहले व्यक्ति केवल अपना ही ध्यान रखता है बाजार मे कोई वस्तु देखता है तो लेकर खा लेता परन्तु गृहस्थ प्रवेश के पश्चात् ऐसा नहीं करता। अब वह यह ध्यान करता है कि परिवार मे तेरे साथ तेरी पत्नी भी है बच्चे भी है और सन्तान के लिए दोनो त्याग करते हैं। बच्चो की आवश्यकताओ का पहले ध्यान रखते है और फिर अपनी आवश्यकताओ की पूर्ति करते है। पत्नी यहा भी अपूर्व त्याग का परिचय देती है वह पति और बच्चों को खिलाकर स्वय खाती है और प्राय खाद्यपदार्थो का अच्छा और बडा भाग उन्हे खिलाकर बचा खुचा भाग स्वय खाती है। जिन भारतीय परिवारो मे पाश्चात्य सभ्यता की हवाए जहा तहा प्रवेश कर रही हैं वहा भी "इकट्ठे मिल बैठकर अभी तक खा रहे हैं।" यह त्याग की भावना परिवार को सगठित और सुखी रखने का मूल मन्त्र है। वैदिक परिवार गृहस्थ आश्रम के माध्यम से सम्बन्धो की स्थापना करता है, दादा-दादी, ताऊ-ताई, चाचा-चाची, फूफा-फूफी, नाना-नानी, मौसा-मौसी, मामा-मामी, श्वसुर-जामाता, सास-बहू, बटा-बेटी, भाई-बहिन, पोते-पोती, धेवते-धेवती के रिश्ते गृहस्थ आश्रम के ही परिणाम है। ये रिश्ते व्यक्ति को जीवन मे किस प्रकार शक्ति प्रदान करते हैं यह प्रत्येक व्यक्ति स्वय अनुभव करता है। इनसे परिवार सगठित होता है सुखी रहता है। रिश्तेदारी का क्षेत्र भी मनुष्य के घनिष्ठतम सम्बन्धो का सूचक होता है। वैदिक परिवार को चाहिये स्वार्थ से ऊपर उठकर इन सम्बन्धो व रिश्तो मे दरार न आने दे। गृहस्थ आश्रम के माध्यम से वैदिक परिवार उत्तम व्यवहारों की सिद्धि करते है, यज्ञोपवीत सस्कार, मुण्डन सस्कार, विवाह संस्कार, मकान का भवन का निर्माण करके शुभ प्रवेश, किसी पर्व विशेष पर यज्ञ आदि के समय प्रसन्नता का वातावरण दर्शनीय होता है।

नैतिकता का भी अच्छा प्रशिक्षण परिवारो मे मिलता है। नमस्ते शब्द से अभिवादन, श्रद्धाभाव, सेवाभाव, आशीर्वाद आदि का पाठ बच्चे यहीं सीखते हैं। परिवार कैसे सगठित और सुखी रहे इस विषय मे विशेष बात यह है कि पति-पत्नी के सम्बन्धो मे बिगाड नहीं आना चाहिये। गृहस्थ की गाडी के ये पति और पत्नी दो पहिये हैं। जब दोनों पहिये सुचारु चलेंगे तो गृहस्थरूपी गाड़ी ठीक ढंग से चलेगी। दो शरीरों के मिलने का नाम गृहस्थ नहीं है, अपितु दो दिलों के मिलने का नाम गृहस्थ है। परिवार संगठित रखना है तो 'छल-कपट' का प्रवेश किसी भी बात में न होने दें। कामवासना पर नियंत्रण रखें। मद्यपान, जुआ आदि भी परिवार को तोड़ते हैं जोडते नहीं। इन दोषों से परिवार को बचाए। क्रोध भी पति-पत्नी के सम्बन्ध को बिगाडता है। परिवार को तोडने मे क्रोध विष के समान है। इसका त्याग करके मधुर बोलने का, धैर्य रखने का, स्वभाव बनायें। लोभ और अहंकार, ईर्ष्या और द्वेष छोडकर प्रसन्न रहने का स्वभाव बनाए। ऐसा देखने में आया है कई बार पत्नी को अहंकार होता है कि वह बडे और सम्पन्न परिवार से है। कई बार वह अपने सौन्दर्य पर बडा अभिमान करती है। कई बार पति को अपने परिवार के बडप्पन पर, सम्पन्नता पर अत्यधिक गर्व होता है। परिवार को सगठित और सुखी रखने के लिए मिथ्या अहकार त्याग कर विनम्रता धारण करनी चाहिए। एक-दूसरे के दृष्टिकोण को समझना भी परिवार को संगठित रखने का अटूट साधन है। पति पत्नी को गृहस्थ मे एक-दूसरे की इच्छाओ को समझना बहुत आवश्यक है। सास और बहू को चाहिए वे मा व बेटी की भूमिका से एक-दूसरे का आदर-सम्मान करे। कई बार सन्तान का अभाव भी परिवार मे कलह पैदा करता है। कई बार केवल लडकियों का पैदा होना भी कलह का कारण बनता है।

परिवार सुख का एक महत्त्वपूर्ण आधार है-अर्थोपार्जन के पवित्र साधन जुटाना। वैदिक धर्म की आश्रम मर्यादा के अनुसार केवल गृहस्थ ही धन कमाता है शेष तीन आश्रम नहीं। धन कमाने के चार प्रकार हैं-कृषिकर्म व्यापार, नौकरी और मजदूरी। अत धन **'स्याम पतयो रयीणाम्'** कमाए। परिवार को सगठित और सुखी रखने के लिए एक अति विशेष कारण व आधार है-योग्य एव सदाचारी सन्तान। सन्तानहीनता परिवार के लिए अभिशाप है। योग्य सन्तान का निर्माण ही सबसे बडा धन है। यह नहीं तो कुछ भी नहीं है। रुपये-पैसे बैंक बैलेस कोठी कार जमीन जायदाद फैक्ट्री दुकान आदि का होना सब व्यर्थ है। गृहस्थ आश्रम बहुत उत्तरदायित्वपूर्ण आश्रम है। इसमे बहुत समझ सूझबूझवाले व्यक्ति और व्यवहारकुशल व्यक्ति ही सफल होपाते हैं। व्यवहारकुशलता अधिक ऊची शिक्षा से या कम पढने से नहीं आती, यह तो अनुभवी व्यक्तियो के पास बैठने से आती है। विवाह मनुष्य जीवन की प्रमुख घटना होती है। विवाह के पश्चात् हमे माता-पिता, सास-श्वसुर और भाई-बहिन के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए, इसका ज्ञान अनुभवी व्यक्तियो से मिलता है। जिससे परिवार सगठित रहता है और सुख को प्राप्त करता है। विवाह का समय प्रसन्नता, हर्ष और उल्लास का समय होता है। लडके के विवाह की प्रतीक्षा तो माताए बच्चे के जन्मकाल से ही करती रहती हैं। प्रभु से प्रार्थनाए करके "वह दिन" मागती हैं परन्तु सयुक्त परिवारो की बडी विषम परिस्थिति यह है कि पुत्रवधू के आते ही घर मे नये झगडे आरम्भ होजाते हैं। परिवार के उल्लासमय वातावरण मे, विवाहित जीवन की मधुरता मे कुछ कडवाहट, कुछ कटुता, कुछ खट्टापन, कुछ तीखेपन का समावेश होने लगता है। माता-पिता का दृष्टिकोण और पुत्र तथा पुत्रवधू का दृष्टिकोण भी बदलने लगता है। माता-पिता का स्नेह जहा घटने लगता है वहा विवाहित पुत्रो की माता-पिता के प्रति श्रद्धा घटने लगती है वे प्राय एक-दूसरे के आलोचक बन जाते हैं। प्रसन्नता का कटुता मे और प्रशसा का आलोचना मे बदल जाने के कुछ कारण हैं। माता-पिता और पुत्र पुत्रवधू दोनों ही इसके लिए उत्तरदायी हैं। आदर्श बडो से आरम्भ होता है इसलिए मैं पहले सक्षिप्त मे माता-पिता की त्रुटियो का सकेत मात्र करता हू।

पहला कारण है सास और श्वसुर की लोभवृत्ति। उनके दिमाग मे पहला प्रश्न यह गूजता है कि पुत्रवधू लाई क्या है ? बस, यही प्रश्न घर मे कटुता का समावेश करने लगता है। कुछ परिवारो मे विवाह के समय पुत्रवधू को जेवर पहनाये जाते हैं। विवाह के पश्चात् उतार लिये जाते हैं इसका पुत्रवधू के दिमाग पर बुरा प्रभाव पडता है। वह समझती है तेरे साथ धोखा हुआ है। झूठी शान दिखाने में भावी कलह को निमन्त्रण दे दिया जाता है। पारिवारिक सुखशान्ति के लिए जरूरी है सास और श्वसुर व्यापारिक दृष्टिकोण छोड़ दें।

दूसरा कारण प्राय सासों का पुत्रवधुओं के प्रति प्रेम का अभाव होना है। स्त्रियों के मन और मस्तिष्क जहां संकुचित होते हैं वहां वे अपनी बेटियो के प्रति जो स्नेह भाव दिखाती हैं वैसा ही वे अपनी पुत्रवधुओं के प्रति नहीं दिखाती तब

(शेष पृष्ठ आठ पर)

गृहस्थी–जो तप और त्याग में संन्यासी से भी बढ़ गया

❑ डॉ० अशोक आर्य

यद्यपि गृहस्थ व संन्यास आश्रम के मध्य आश्रम व्यवस्था के अनुसार एक और आश्रम आता है जिसे वानप्रस्थ कहते हैं, यह वह समय होता है जिसमे शरीर को तपाकर कुन्दन बनाना होता है, किन्तु जब त्यागमूर्ति महात्मा हसराज के जीवन को देखते हैं, तो ऐसा लगता है कि मानो आश्रम व्यवस्था उलट गयी हो तथा गृहस्थाश्रम ही तप और त्याग के पश्चात् बननेवाला कुन्दन स्वरूप संन्यास आश्रम हो।

यद्यपि वह भी कमिश्नर या इसी प्रकार के किसी उच्च पद पर आसीन हो, सुखमय जीवन व्यतीत कर सकते थे, किन्तु ऐसी अवस्था में उन्हे याद करनेवाला आज कौन होता। वास्तव में उनका इतने योग्य होते हुए भी निर्धन अवस्था मे बिताया गया त्यागमय जीवन ही तो हमारे लिए न केवल प्रेरणास्रोत ही बना अपितु गृहस्थी होते हुए भी उन्हे सन्यासी का सम्मान प्राप्त हुआ। ऐसा दूसरा उदाहरण मिलना कठिन है।

क्या यह कोई कम त्याग है कि अपने जीवन का छब्बीस वर्ष का अमूल्य समय डीएवी महाविद्यालय के अवैतनिक प्राचार्य के रूप मे कार्य करना और अपने भोजन के लिए भाई पर आश्रित रहना ? वे अवैतनिक प्रिंसिपल थे। यदि इस पद का वेतन लिया होता तो आज के हिसाब से वह लाखो की राशि बनती। कालेज के पैन व कागज का व्यक्तिगत कार्य के लिए उपयोग न करना, उनके तप व त्याग का और भी अधिक ज्वलन्त उदाहरण है। किन्तु इसमे भी आत्मगौरव व अभिमान के स्थान पर अपनी सेवा को मैनेजिंग कमेटी की दया बताना, जैसे कि उन्होने अपने त्यागपत्र में स्पष्ट किया है तथा दूसरे के लिए पद रिक्त करना उनकी महानता का अन्यतम परिचायक है।

महात्मा जी ने अपने बच्चो को दो पैसे देकर बहलाने को फिजूल खर्ची समझकर कभी ऐसा न किया कि बच्चो को कुछ पैसे देवे। किन्तु तो भी बच्चो से अगाध प्रेम रखने का दृश्य है कि हार्डिंग बम केस में अभियुक्त बने अपने पुत्र बलराज से जब मिलने गए तो ईश्वर के प्रसादस्वरूप कुछ फल साथ ले गये।

महात्मा जी के शिष्यों ने पराधीन भारत की सरकार से ऊंचे-ऊंचे पद भी प्राप्त किये, किन्तु वह महात्मा जी के आदर्शों को नहीं भूले। यही कारण है कि पद की गरिमा को उन्होने चार चांद लगा दिये। कभी रिश्वत इत्यादि लेने को तैयार नहीं हुए। यह भी तो एक आश्चर्य है।

महात्मा जी सादगी मे भी अद्वितीय थे। अपना काम अपने हाथो से करना वह पसंद करते थे। इसी कारण कई बार उन्हे पहिचानने मे भूल होजाती थी। एक बार महात्मा जी अपनी बगीची ठीक कर रहे थे कि कोई सज्जन आकर महात्मा जी के बारे में पूछने लगे। महात्मा जी ने उनको बैठने को कहा। थोडी देर बाद उस सज्जन ने पुन महात्मा जी के बारे में जानकारी चाही तो महात्मा जी ने कहा, "कहिए ! मैं आपके सामने खडा हू।" यह सुनकर वह सज्जन अवाक् हो महात्मा जी की सादगी को देखने लगे।

शिक्षा के तीन गुण

महात्मा जी शिक्षार्थ तीन आवश्यक बातो "आदर्श अध्यापक के गुण, परिश्रम तथा प्रत्येक छोटी बात को समझने के महत्त्व" को जानते थे। इन्हीं के साक्षात्कार करते हुए उत्तमोत्तम शिक्षा का प्रचार व प्रसार वह कर पाए ऐसा अन्यत्र दुर्लभ है। वह जानते थे कि प्रत्येक शिक्षा संस्था की आत्मा विद्यार्थी होते हैं। अत विद्यार्थी का सम्मान करते हुए उनका सर्वांगीण विकास करना तथा उनको उचित सम्मान देना प्रत्येक अध्यापक का आवश्यक कर्तव्य होता है। महात्मा जी ने जीवनपर्यन्त इस कर्तव्य का पालन करते हुए समाज व राष्ट्र के लिए कर्तव्यनिष्ठ नागरिक तैयार करने के लिए विद्यार्थियो मे तप त्याग, कर्तव्यपरायणता, स्वावलम्बन, मितव्ययिता इत्यादि गुण पैदा किये।

महात्मा जी के इस त्यागमय तपस्वी जीवन को देखते हुए यह प्रश्न मन मे उठता है कि यदि महात्मा जी गृहस्थी थे तो फिर सन्यासी किसे कहा जाये ? अत: चाहे महात्मा जी ने व्यावहारिक रूप से सन्यास दीक्षा लेने की रूढि को पूर्ण नहीं किया था, किन्तु वास्तव मे वह सच्चे अर्थो मे सन्यासी थे।

आर्यकुटीर, ११६-मित्र विहार, मण्डी डबवाली (हरयाणा) १२५१०४

सन्तान आर्यों की हो तुम

पं० नन्दलाल निर्भय भजनोपदेशक

यह विकट समस्या भारत की, नेताओ ! मिलकर सुलझाओ।
सन्तान आर्यो की हो तुम, सारी दुनिया को बतलाओ।।
भारत है ऋषियो की धरती, इसका दुनिया मे राज रहा।
भारत है जग का गुरु सुनो ! सारे जग का सिरताज रहा।।
पावन है वैदिक धर्म इसे यदि सुख चाहो तो अपनाओ।
सन्तान आर्यो की हो तुम, सारी दुनिया को बतलाओ।।
ईसाई, मुसलमान सबसे, कहदो छोडे सब व्यर्थ बात।
भारत को अपना घर समझे, तज दे सब झूठा पक्षपात।।
यदि ना माने कहदो उनसे, भारत से अभी भाग जाओ।
सन्तान आर्यो की हो तुम, सारी दुनिया को बतलाओ।।
भारत के नेताओ ! जागो, इस तरह नही बच पाओगे।
यह तुष्टिकरण की नीति गलत, तुम भारी धोखा खा जाओगे।
भारत को आर्य राष्ट्र करो घोषित, मत मन मे घबराओ।
सन्तान आर्यो की हो तुम, सारी दुनिया को बतलाओ।।
कानून समान बने उसको, फिर माने सब नर अरु नारी।
तोडो मजहब की दीवारे, बन रामराज्य के अधिकारी।।
कहता है नन्दलाल 'निर्भय' अब ओ३म् का झडा लहराओ।
सन्तान आर्यो की हो तुम, सारी दुनिया को बतलाओ।।

ग्राम व डाकघर बहीन, जनपद फरीदाबाद (हरयाणा)

अनुकरणीय अन्त्येष्टि संस्कार और शान्तियज्ञ

आर्यसमाज रेवाडी खेडा जिला झज्जर के प्रधान श्री बलवीर आर्य की माता जी भरतो देवी का ६ अप्रैल २००२ को ८० वर्ष की आयु में रुग्ण अवस्था मे देहावसान होगया। ७ अप्रैल को श्री रामदेव शास्त्री और ब्रह्मचारी श्री सुरेशकुमार जी ने वेदमन्त्रो का उच्चारण करते हुये अन्त्येष्टि कराई जिसमे २५ किलोग्राम देशी घी, ५० किलोग्राम हवन सामग्री व अन्य २००० रुपये के विशेष सुगन्धित पदार्थ डालकर आहुतियां दी गई।

१८ अप्रैल २००२ को शान्तियज्ञ के अवसर पर श्री बलवीर जी ने विभिन्न सस्थाओ को सात्त्विक दान दिया जो इस प्रकार है–

१	कन्या गुरुकुल नरेला (दिल्ली)	२५१ रुपये
२	कन्या गुरुकुल लोवाकला (झज्जर)	२५१ रुपये
३	गोशाला गुरुकुल झज्जर	२५१ रुपये
४	गुरुकुल झज्जर	२५१ रुपये
५	आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ जिला झज्जर	२५१ रुपये
६	ओ३म् योग सस्थान पाली, जिला फरीदाबाद	२५१ रुपये
७	आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक	२५१ रुपये
८	आर्यसमाज खेडी आसरा जिला रोहतक	१११ रुपये
९	आर्यसमाज रिवाडी खेडा जिला झज्जर	१११ रुपये

इस प्रकार सस्कार करानेवाले व्यक्ति धन्यवाद के पात्र हैं। समाज मे इस तरह के सस्कारो को महत्त्व देनेवाले व्यक्ति कम दिखाई देते हैं। महगाई का बहाना बनाकर थोडी मात्रा मे घृत-हवन सामग्री डालकर अपना कर्तव्य पूरा मान लेते हैं। सम्बन्धित जन कुप्रथाओ को बढाने मे सहयोगी बनते हैं, जैसा कि मृतक के शव पर एक कफन का ही विधान है इसके विपरीत १०-१५ चद्दर आदि डाल दिये जाते हैं। जो शव के साथ जलकर प्रदूषण को ही बढाते हैं। यदि इन चद्दर आदि के मूल्य के बदले घृत-सामग्री देवे तो १० किलो घी का सहयोग मिल सकता है और पुण्य के भागी बन सकते हैं। आर्यजनो को चाहिए कि तेरहवीं, सतरहवीं और पुण्यतिथि के नाम से मृतक भोजों को बढावा न देकर अपने धन का सदुपयोग करे जिससे वैदिक सिद्धान्तों की रक्षा हो।

हम परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवगत आत्मा को सद्‌गति और आर्य परिवार मे शुखशान्ति हो।

—**सूबेसिंह,** खेडी आसरा, जिला झज्जर

वेदप्रचार महोत्सव धूमधाम से सम्पन्न

आर्यसमाज रेलवे रोड, जीन्द जकशन के तत्त्वावधान में त्रिदिवसीय वेदप्रचार महोत्सव गत २६-२७-२८ अप्रैल को धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध युवा ओजस्वी विद्वान् आचार्य देवव्रत जी (गुरुकुल कुरुक्षेत्र) के प्रभावकारी प्रवचन हुए तथा शान्तिधर्मी के सम्पादक प० चन्द्रभानु आर्य भजनोपदेशक के ओजस्वी भजन हुए। कार्यक्रम के अन्तिम दिन हजारो आर्य-परिवारो ने सामूहिक ऋषिलगर मे भोजन ग्रहण किया। जीन्द नगर के गणमान्य नागरिको सहित भारी सख्या मे नर-नारियों ने उत्साहपूर्वक समारोह मे भाग लिया। इस समारोह मे मुख्यरूप से चौ० अभयसिंह आर्य अध्यक्ष, नगर विकास ट्रस्ट, श्री धर्मपाल आर्य सदस्य नगर विकास ट्रस्ट, आर्यनेता श्री रामधारी शास्त्री, स्वामी धर्मानन्द जी, महात्मा चन्द्रमुनि आदि ने उपस्थित होकर उत्साह बढाया। दो छोटे बच्चो सुमेधा आर्य व प्रद्युम्न आर्य ने मधुर गीत गाकर श्रोताओ को भावविभोर कर दिया। कार्यक्रम का सफल सचालन आर्यसमाज के मन्त्री सहदेव शास्त्री ने किया।

—**प्रेमचन्द आर्य,** प्रचारमन्त्री आर्यसमाज रेलवे रोड, जीन्द

शोक समाचार

आर्यसमाज रेलवे रोड, जीन्द जक्शन के प्रधान रामनिवास आर्य की पूज्या माता श्रीमती लिछमीदेवी धर्मपत्नी स्व० श्री रामकिशन का देहान्त गत २५ अप्रैल २००२ को होगया। आप ८० वर्ष की थी। आप बहुत ही धार्मिक, अतिथि सेवी महिला थी। आर्यसमाज रेवले रोड जीन्द के सदस्यगण और अन्य गणमान्य नागरिक भारी सख्या में अन्तिम संस्कार में सम्मिलित हुए।

—**सहदेव शास्त्री, मन्त्री**

वैदिक प्रवक्ताओं से विनती

"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' या 'मनुर्भव' की प्रचार शृंखला में अविद्या-अज्ञानता के घोर अन्धकार को दूर करने के लिए खानपान को सुधारना अनिवार्य है। आज भौतिकवाद की चकाचौंध में मानवता का सत्यमार्ग अदृश्य (ढकता) होता जारहा है क्योंकि मनुष्य का खाना-पीना दूषित होगया है। आप देख रहे हो कि मीट, मछली, अण्डो का बाजार गर्म है। सरेआम मार्केट में चिकन, तन्दूरी मुर्गे और कटे हुये बकरों की दुकाने खुली हुई हैं। देशी और अंग्रेजी शराब के ठेके खुले हुये हैं। इस कारण सदाचार समाप्त होता जारहा है। आश्चर्य और दुःख की बात है कि इन गन्दी हानिकारक चीजो का प्रयोग आर्यसमाजी परिवारो में होरहा है।

आर्यजगत् के उपदेशको और वैदिक प्रवक्ताओं से विनती है कि जहा भी जाये निर्भय और निर्लोभ होकर मास और शराब के विरुद्ध जोरदार शब्दों मे निन्दा करे। इनके सेवन से उत्पन्न होनेवाले रोगों और दुष्परिणामों को बताते हुये तत्काल छोडने की प्रेरणा दे। शाकाहारी भोजन के लिए प्रेरित करें।

आज वातावरण दूषित होता जारहा है। मानसिक प्रदूषण को दूर करने के लिये खानपान को सुधारने की प्रथम आवश्यकता है। मैं तो कहता हू कि युद्धस्तर पर इस महामारी को रोकने का प्रचार होना चाहिये। मुझे क्या, तुझे क्या, यदि यह सोचकर चुप रहोगे तो याद रखो! इस विनाशकारी तूफान के सकट से आप भी नहीं बच सकते। यदि बचना चाहते हो तो इन बुराइयो को दूर करने के लिए सगठित होकर हरसभव प्रयास करना आरम्भ करदो। यज्ञ की तरह यह भी एक श्रेष्ठ कार्य है जिसे करने मे कोई शंका, भय और लज्जा नहीं होनी चाहिये। नेक काम को साहस और उत्साह से करते रहो। यदि जनता का खानपान सुधर गया तो विचार सुधर जायेगे और विचार सुधर गये तो व्यवहार सुधर जायेगा, फिर सदाचार बन जायेगा।

आपसे एक और निवेदन है कि वक्ता को समय सीमा की मर्यादा का पालन करना चाहिये। आपको बोलने के लिये पाच मिनट दिये हैं तो छठा मिनट लेकर अतिक्रमण मत करो, अन्यथा अनुशासन भग होगा और लोकप्रियता फीकी पड जाएगी। विद्वत्ता अधिक बोलने मे नहीं अपितु कम बोलने मे है। किसी आर्यसमाज मे कोई उत्सव होरहा था। विज्ञापन में लिखे अनुसार एक बजे ऋषिलगर था। मच सचालक ने एक बजे एक स्वामी जी को ५ मिनट बोलने के लिये कहा, उस सन्यासी ने यह कहकर कमाल कर दिया कि कार्यक्रम का समय समाप्त है। कृपया शान्तिपाठ करो। वैसा ही हुआ। प्राय देखते हैं कि मंच पर वक्ताओ की भीड जमा कर लेते हैं और कार्यक्रम को कभी निश्चित समय पर खत्म नहीं करते जो अनुशासनहीनता का प्रतीक है।

—**देवराज आर्यमित्र,** आर्यसमाज कृष्णनगर, दिल्ली-५१

बिखरे मोती

- ☆ याद रखिये आपका पैर फिसल जाये तो सम्भल सकते हैं, परन्तु जुबान फिसल जाये तो यह गहरा घाव कर देती है।
- ☆ समय से पहले और समय पर कार्य करनेवालों को समय का कभी अभाव नहीं रहता।
- ☆ जब समय होता है सोचते नहीं, जब सोचते हैं, समय निकल चुका होता है। उन्नति उसी की होती है, जो प्रयत्नशील है।
- ☆ जो बीत गई–उसे याद न कर। आनेवाली का ख्याल न कर। वर्तमान बर्बाद न कर।
- ☆ क्रोध एक अग्नि है जो दूसरों से पहले अपने को जला देती है।
- ☆ पाप हो, ऐसा कमाओ नहीं, क्लेश हो, ऐसा बोलो नहीं। रोग हो, ऐसा खाओ नहीं।
- ☆ गृहस्थाश्रम भक्ति में बाधक नहीं, साधक है।
- ☆ ईश्वर की चक्की मन्द गति से चलती है लेकिन बारीक पीसती है।
- ☆ दुर्लभ कुछ नहीं, केवल दृढसकल्प चाहिये।
- ☆ तीखे और कडवे शब्द कमजोर पक्ष का चिह्न है।
- ☆ हृदय मन्दिर है उसे जलाना नहीं।
- ☆ बाग के माली बनो, मालिक नहीं।
- ☆ बडों के अनुभव से लाभ उठाना ही उनका सम्मान करना है।
- ☆ व्यक्ति अभाव से नहीं, अपितु दूसरों के प्रभाव से दुःखी है।
- ☆ बदले की भावना है एक दिन की खुशी। क्षमा करने की भावना है सदा के लिए आनन्द, हर पल की प्रसन्नता।

—**आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री (वेदप्रवक्ता),** आर्यसमाज, बाहरी रिंग रोड, विकासपुरी नई दिल्ली, दूरभाष-५५१६९९६

आर्य महासम्मेलन हेतु प्राप्त दानराशि

गतांक से आगे—

१६५ श्री भीमसिंह आर्य कलाहवड (रोहतक) ५०-००
१६६ श्री बलवीरसिंह नम्बरदार खरावड (रोहतक) २५-००
१६७ श्री सत्यवीरसिंह खरावड (रोहतक) १०१-००
१६८ श्री मनोहरलाल कोषाध्यक्ष आर्यसमाज रेवाडी १००-००
१६९ श्री सुखराम आर्य उपप्रधान आर्यसमाज रेवाडी २५०-००
१७० मा० ज्ञानसिंह आर्य मोरखेडी (रोहतक) १०१-००
१७१ मा० करतारसिंह आर्य मोरखेडी (रोहतक) ५१-००
१७२ श्री प्रेमस्वरूप द्वारा प्रधान आर्यसमाज रेवाडी १००-००
१७३ डा० जुगलाल ग्राम धारणवास (भिवानी) १००-००
१७४ रिसलदार रामचन्द्र इशापुर दिल्ली १०१-००
१७५ श्री दयाचन्द आर्यसमाज लडरावन (झज्जर) १००-००
१७६ मा० चन्द्रसिंह ग्राम चरखी (भिवानी) १०१-००
१७७ मा० रघुवीरसिंह ग्राम रम्भा (झज्जर) ५०-००
१७८ श्री जगरूप आर्य ग्राम डाढीबाना (भिवानी) ५०-००
१७९ सरपच बलवीर आर्य दातौली (भिवानी) १०१-००
१८० श्री रामफल आर्य ग्राम भाण्डवा (भिवानी) ५०-००
१८१ श्री जगदीश आर्य ग्राम गोपी (भिवानी) ११-००
१८२ मा० पर्वतसिंह स्वतन्त्रता सेनानी गिवाना (रोहतक) १००-००
१८३ श्री धर्मपाल ग्राम बूबका (यमुनानगर) १००-००
१८४ श्री सत्यपाल ग्राम बूबका (यमुनानगर) १००-००
१८५ श्री रामेश्वर आर्य ग्राम बूबका (यमुनानगर) ५०-००
१८६ मन्त्री आर्यसमाज कोसली (रेवाडी) २५१-००
१८७ श्री भानुराम यमुनानगर १००-००
१८८ माता कैलाशवती यमुनानगर १००-००
१८९ श्री सत्यवीर जी राठी आर्य बहादुरगढ २००-००
१९० श्री सुकर्मपाल सागवान बहादुरगढ १००-००
१९१ श्री प्रदीपकुमार मैनेजर LIC बहादुरगढ १००-००
१९२ श्री विवेकरत्न बहादुरगढ १००-००
१९३ मा० हरलाल कटारिया बहादुरगढ १००-००
१९४ कैप्टन वजीरसिंह राठी गाव सांखोल (झज्जर) १००-००
१९५ श्री सुरेन्द्रसिंह बहादुरगढ १००-००
१९६ चौ० तारीफसिंह बहादुरगढ १००-००
१९७ श्री जगवीरसिंह मलिक बहादुरगढ १००-००
१९८ श्री एस एस चौहान बहादुरगढ १००-००
१९९ श्री टी एस राठी एस डी ओ बहादुरगढ १००-००
२०० श्री इंजीनियर कुलदीपसिंह बहादुरगढ १००-००
२०१ श्री महावीरसिंह मान बहादुरगढ १००-००
२०२ श्री सूबेदार शिवनारायण बहादुरगढ १००-००
२०३ श्री नरेन्द्रकुमार गुलाटी बहादुरगढ १००-००
२०४ श्री रणधीरसिंह कुण्डू बहादुरगढ १००-००
२०५ मा० स्वरूपसिंह आर्य ग्राम छावला दिल्ली १००-००
२०६ श्रीमती वेदकौर ग्राम छावला दिल्ली १००-००
२०७ श्री वेदप्रकाश आर्य बहादुरगढ १००-००
२०८ श्री रमेश जून बहादुरगढ १००-००
२०९ डब्ल्यू पी राठी बहादुरगढ १००-००
२१० श्री रामचन्द्र रहेल छोटूराम धर्मशाला बहादुरगढ १००-००
२११ मा० सत्यपाल दहिया बहादुरगढ १००-००
२१२ श्री हरीसिंह दहिया बहादुरगढ १००-००
२१३ श्री उमेदसिंह बहादुरगढ १००-००
२१४. श्री कपूरसिंह दलाल गुडगांव ५१-००
२१५ श्री प्रतापसिंह गुडगांव १००-००
२१६ श्रीमती प्रतिभा गुप्ता गुडगांव १००-००
२१७. श्री धर्मपाल डबास, रानी खेडा (दिल्ली) १००-००
२१८ श्री भूपसिंह राजीवनगर गुडगाव ५०-००
२१९ श्री मीरसिंह राजीवनगर गुडगाव १००-००
२२० श्री राजबीरसिंह राजीवनगर गुडगाव १००-००
२२१ श्री भीमसिंह राजीवनगर गुडगाव १००-००
२२२ श्री महावीरसिंह छिकारा राजीवनगर गुडगाव ५१-००
२२३ श्री रामवकील शर्मा राजीवनगर गुडगाव ५१-००
२२४ श्री सत्यवीरसिंह राजीवनगर गुडगाव ५०-००
२२५ श्री राजमलसिंह लाठर राजीवनगर गुडगाव १०१-००
२२६ श्री धर्मपाल राजीवनगर गुडगाव ५०-००
२२७ श्रीमती सन्तोष सहरावत दिल्ली रोड गुडगाव १००-००
२२८ श्री प्रेम दहिया जलवायु विहार गुडगाव ५१-००
२२९ श्री राजीव बिन्दल गुडगाव १००-००
२३० श्रीमती भगवती यादव गुडगाव ५१-००
२३१ श्री वेदप्रकाश तिवारी गुडगाव ५१-००
२३२ श्री आजादसिंह राजीव नगर गुडगाव ५०-००
२३३ श्री सुरेश ग्रोवर गुडगाव २१-००
२३४ श्रीमती सुषमा यादव डी एल एफ गुडगाव २१-००
२३५ श्री सोमनाथ लेखा सैक्टर-४ गुडगाव ५१-००
२३६ श्री एस पी यादव १५६७/२२, गुडगाव २१-००
२३७ श्री घनश्याम आहूजा मदनपुरी गुडगाव ५१-००
२३८ श्री बानवीरसिंह कुण्डू आ सा कोषाध्यक्ष हनुमान कालोनी रोहतक २००-००
२३९ श्री रघवीरसिंह कुण्डू हनुमान कालोनी रोहतक १००-००
२४० डा० रामफल रोहतक १००-००
२४१ श्री सत्यनारायण जी रोहतक ५०-००
२४२ श्री भद्रसेन शास्त्री सैक्टर-१ रोहतक ६००-००
२४३ श्री मामनसिंह मन्त्री दयानन्दमठ रोहतक ११००-००
२४४ श्री ईश्वरसिंह सुखपुरा रोहतक १०१-००
२४५ श्री महावीरसिंह शास्त्री प्रेमनगर रोहतक १०१-००
२४६ श्री कृष्णकुमार मुख्याध्यापक रोहतक १००-००
२४७ श्री यशवन्तसिंह पूर्व डी एस पी रोहतक १०१-००
२४८ श्री बलवीरसिंह हुडन रोहतक २१-००
२४९ श्री राजपाल प्रेमनगर रोहतक १००-००
२५० श्री राजसिंह दलाल रोहतक ५१-००
२५१ डा० राजेन्द्रसिंह रोहतक १००-००
२५२ श्री ईश्वरसिंह पूर्व प्रधानाचार्य रोहतक १०१-००
२५३ श्री रायसिंह चुन्नीपुरा रोहतक १०१-००
२५४ श्री बलवीरसिंह रोहतक १०१-००
२५५ मा० रामकिशन प्रेमनगर रोहतक ५०-००
२५६ श्री राजकुमार गुलिया प्रेमनगर रोहतक ५०-००
२५७ श्री सोमवीर देशवाल प्रेमनगर रोहतक १००-००
२५८ आर्यसमाज माडल टाउन गुडगाव ११००-००
२५९ श्रीमती शीला गर्ग गुडगाव १००-००
२६० श्रीमती चन्द्रकान्ता शिवाजी नगर गुडगाव १००-००
२६१ श्रीमती चन्द्रवती शिवाजीनगर गुडगाव १००-००
२६२ श्रीमती दयावन्ती रामनगर गुडगाव १००-००
२६३ श्रीमती ईश्वरदेवी शिवाजीनगर गुडगाव १००-००
२६४ श्रीमती कौशल्या देवी शिवाजीनगर गुडगाव १००-००
२६५ श्रीमती चन्द्रकान्ता शिवाजीनगर गुडगाव १००-००
२६६ आर्यसमाज नरवाना २१००-००
२६७ श्री शिवदत्त आर्य गुडगाव १०१-००
२६८ श्री विद्याभूषण गुडगाव ५०-००
२६९ श्री दौलतराम खेडा गुडगांव ५१-००
२७०. श्री रामचन्द्र आर्य भीमनगर गुडगाव ५०-००
२७१ गुप्तदान १०१-००
२७२ श्री ओमप्रकाश मदान गुडगाव १०१-००
२७३ श्री ओमप्रकाश मनचन्दा गुडगाव ५१-००

क्र०	नाम	राशि
२७४	श्रीमती इन्द्रा आर्या गुड़गाव	५०-००
२७५	श्रीमती विद्या मदान गुड़गाव	५०-००
२७६	श्रीमती सुशीला खुराना गुड़गाव	५०-००
२७७	श्रीमती शकुन्तला अरोडा गुड़गाव	५०-००
२७८	श्रीमती राजरानी अरोडा गुड़गाव	५०-००
२७९	श्रीमती यशवन्ती चौधरी गुड़गाव	५०-००
२८०	श्री सोहनलाल गोगिया गुड़गाव	१००-००
२८१	श्रीमती देवीबाई गुड़गाव	२१-००
२८२	श्रीमती कौशल्या महता गुड़गाव	५०-००
२८३	गुप्तदान	२१-००
२८४	श्री सोमनाथ मत्री आर्य केन्द्रीय सभा गुड़गाव	१००-००
२८५	आर्यसमाज रामनगर गुड़गाव	१०००-००
२८६	श्रीमती ईश्वरी देवी शिवाजी नगर गुड़गाव	२१-००
२८७	आर्य केन्द्रीय सभा गुड़गाव	७१००-००
२८८	डा० राममेहर खरखौदा	११००-००
२८९	आर्यसमाज नाहरी	५०१-००
२९०	श्री जसवन्तसिह	५०-००
२९१	श्री चन्दनसिह सूबेदार आर्यसमाज समसपुर माजरा	२५०-००
२९२	श्रीमती किताबकौर सदस्या आर्यसमाज नाहरी	१०१-००
२९३	आर्यसमाज कलावड श्री सुरेश जी आर्य	५०-००
२९४	मा० सुखलाल आर्य सुपुत्र श्री रणजीतसिह	२०१-००
२९५	श्री दयाचन्द आर्य मन्त्री आर्यसमाज कलावड	१००-००
२९६	आर्यसमाज गाधरा	१०२-००
२९७	महाशय अतरसिह आर्य गुरुकुल झज्जर	५०-००
२९८	आर्यसमाज झज्जर	५००-००
२९९	चौ० पूरणसिह देशवाल प्रधान आर्यसमाज झज्जर	५००-००
३००	डा० विजयकुमार आर्य	१००-००
३०१	महाशय फतेहसिह भण्डारी	१००-००
३०२	श्री चान्द आर्य	५०-००
३०३	आर्यसमाज नया बाजार भिवानी द्वारा श्री जगदीशप्रसाद	५००-००
३०४	डा० राजसिह आर्य आर्यसमाज कलावड	५०-००
३०५	श्री रामफल आर्य प्रेमनगर रोहतक	५०-००
३०६	श्री कृष्ण आर्य प्रेमनगर रोहतक	११-००
३०७	चौ० भगवानसिह आर्य प्रबन्धक वैदिक धाम मार्केट कुरुक्षेत्र	१००-००
३०८	आर्यसमाज कासण्डी द्वारा स्वामी महानन्द सोनीपत	५००-००
३०९	सूबेदार सूरतसिह समसपुर माजरा	१०००-००
३१०	वेदप्रचार सेवा केन्द्र मोई हुड्डा सोनीपत	२१-००
३११	श्री अभिनव आर्य नरेन्द्रनगर सोनीपत	५०१-००
३१२	श्री हरिश्चन्द्र मलिक सुपुत्र श्री रिसालसिह	१०१-००
३१३	श्री टेकराम अहलावत ब्रहाणा झज्जर	१००-००
३१४	म० रमेश जी मन्दिरवाले हैफेड चौक रोहतक	५१-००
३१५	हैडमास्टर जिलेसिह प्रधान आर्यसमाज सरगथल सोनीपत	५१-००
३१६	मा० अमीरसिह आर्य मदीना रोहतक	५१-००
३१७	श्री कैप्टन रामकुमार आर्य आर्यसमाज लोहारू	१०१-००
३१८	श्री रणजीतसिह स्मारक कन्या गुरुकुल लोवाकला	११००-००
३१९	श्री वेदपाल आर्य प्रधान केन्द्रीय सभा सोनीपत	११००-००
३२०	आर्यसमाज सैक्टर-१४ सोनीपत	११००-००
३२१	श्रीमती वेदवती आर्या प्रधाना आर्यसमाज मुरादनगर	१०१-००
३२२	चौ० राजसिह नादल प्रधान जाट शिक्षक सस्थान रोहतक	११००-००
३२३	श्री बलवानसिह सुपुत्र श्री धूपसिह बैंसी रोहतक	१००-००
३२४	आर्यसमाज साघी रोहतक	५०५-००
३२५	श्री धर्मवीर आर्य आर्यसमाज सैक्टर-१४ सोनीपत	२५१-००
३२६	श्री मनोहरलाल चुघ आर्यसमाज सैक्टर-१४ सोनीपत	१०१-००
३२७	श्री अशोक आर्य आर्यसमाज सैक्टर-१४ सोनीपत	२०१-००
३२८	श्री चरणदास आर्य कुरुक्षेत्र	५०-००
३२९	सुनाम गुप्तदान	१००-००
३३०	श्री राव रघुनाथसिह आर्य प्रधान आर्यसमाज नजफगढ	२००-००
३३१	सरोजिनी की माता बोहर रोहतक	१०१-००
३३२	बहन बिमला अध्यापिका रोहतक	१०१-००
३३३	गुप्तदान टोहाना से	२०-००
३३४	आर्यसमाज कनीना महेन्द्रगढ	१०१-००
३३५	आर्यसमाज लीलोढ रेवाडी	१५१-००
३३६	चौ० रणसिह आर्य बालन्द रोहतक	१०५-००
३३७	महाशय भरतसिंह जी बालन्द रोहतक	२०-००
३३८	आर्यसमाज सिवाना द्वारा मा० टेकराम आर्य झज्जर	१००-००
३३९	श्री देवीसिह दहिया प्रेमनगर रोहतक	२१-००
३४०	श्री उमेदसिह आर्य मन्त्री आर्यसमाज रिठाल रोहतक	५०५-००
३४१	श्री रामचन्द्र जी शास्त्री रोहणा जिला सोनीपत	१०१-००
३४२	मा० शेरसिह आर्य सीसवाला भिवानी	१०१-००
३४३	आर्यसमाज सुडाना जिला रोहतक	२५०-००
३४४	श्री जोरावरसिह आर्य समरगोपाल रोहतक	२१०-००
३४५	श्री हसराज भाटिया रोहतक	१०१-००
३४६	श्री सुदेशचन्द्र मल्होत्रा रोहतक	१००-००
३४७	श्रीमती ओमवती माता दरवाजा रोहतक	५१-००
३४८	श्रीमती मीनाकुमारी मायना रोहतक	५१-००
३४९	श्री उदयसिह खरैटी रोहतक	५१-००
३५०	श्री जयभगवान खरैटी रोहतक	२१-००
३५१	श्री रमेश आर्य खरैटी रोहतक	११-००
३५२	गुरुकुल आर्यनगर हिसार	११००-००
३५३	श्री जयचन्द मल्होत्रा गोहाना सोनीपत	११०-००
३५४	श्री दर्शनलाल आर्य फरीदाबाद	१०१-००
३५५	श्री बलवीरसिह शास्त्री भैंसवाल कला सोनीपत	१००-००
३५६	प्रिंसिपल सत्यवीर विद्यालकार चण्डीगढ	३००-००
३५७	श्री धर्मशास्त्री मन्त्री आर्यसमाज भाण्डवा भिवानी	१००-००
३५८	चौ० जिलेसिह छिकारा मैनेजर चौ० लखीराम आर्य अनाथालय रोहतक	१०१-००
३५९	श्रीमती पुष्पा सिन्धु स्वामी दयामुनि विद्यापीठ सोनीपत	१००-००
३६०	आर्यसमाज शेखपुरा करनाल	५०१-००
३६१	आचार्य यशपाल जी सभामन्त्री खरखौदा सोनीपत	२५०००-००
३६२	आर्यसमाज जसोरखेडी रोहतक	५००-००
३६३	श्री सोमवीर आर्य सुपुत्र श्री सुखदेव शास्त्री रोहतक	१००-००
३६४	श्रीमती सोमादेवी आर्या जीन्द	१००-००
३६५	श्री धर्मसिह आर्य अहीरका जीन्द	१००-००
३६६	आर्यसमाज खरकडी मौ० नारनौल	१०१-००
३६७	श्री वासुदेव नारनौल	११-००
३६८	श्री राजकुमार मेहरा लाडवा कुरुक्षेत्र	१००-००
३६९	श्री जोगेन्द्र आर्य रोहतक	५१-००
३७०	श्री ओमवीर आर्य बौंद खुर्द भिवानी	१०१-००
३७१	श्रीमती शीला देवी बचारी फरीदाबाद	२१-००
३७२	आर्यसमाज गोहाना मण्डी सोनीपत	५००-००
३७३	प्रो० रामविचार हिसार	१०१-००
३७४	श्री वेदप्रकाश आर्य सुन्दरपुर	१००-००
३७५	श्री अमरचन्द सागवान भैरा भिवानी	१००-००
३७६	आर्यसमाज होडल	५०१-००
३७७	श्री महेशचन्द्र अम्बाला	५०-००
३७८	श्री वेदप्रकाश आर्य गरोडा	५०-००
३७९	आर्यसमाज विकासनगर महेश्वरी रेवाडी	१०१-००
३८०	श्री महेन्द्रप्रकाश वर्मा शिवाजी कालोनी रोहतक	५१-००
३८१	श्री प्रेमप्रकाश आर्य श्रीनगर दिल्ली	१०१-००
३८२	मा० रामलाल आर्य मोरवाला भिवानी	१०१-००
३८३	आर्यसमाज बसई गुड़गाव	५००-००
३८४	श्री मोहरसिह आर्य मिरच भिवानी	१०१-००
३८५	श्री ओमप्रकाश महराना	१००-००

(क्रमशः)

—बलराज, सभा कोषाध्यक्ष

तीन मुक्तक

कभी किसी के जख्मों को तुम सीओ।
जाम मुहब्बत के पिलाओ और पीयो।।
जिस राह से गुजरो खुशिया बिखर जाएं।
जिन्दगी जिओ तो कुछ इस तरह जिओ।।

नेकी किसी को खले तो गम नहीं।
साथ फूलों के कांटे पलें तो गम नहीं।।
औरों की आग बुझाने मे दोस्तो!
हाथ तुम्हारे जले तो गम नहीं।।

मन की चादर को तुम धोये रखो।
प्रभु की भक्ति मे खुद को खोये रखो।।
पावन वेदो से जो मिला है तुम्हे।
उस वेदों के भडार को संजोये रखो।।

—**मोहनलाल शर्मा 'रश्मि'** ४/ए, एकतानगर, उकरडी रोड, दाहोद (गुजरात)

आर्यसमाज चरखी दादरी (भिवानी) का चुनाव

सरक्षक-श्री जसवन्तसिह गुप्ता, प्रधान-डॉ० रामनारायण चावला, उपप्रधान-सर्वश्री बलबीरसिंह आर्य, श्री देवदत्त आर्य, मत्री-आचार्य हरिश्चन्द्र लाम्बा, का मंत्री-डॉ० चन्द्रप्रकाश चावला, सहायक-श्री सुरेन्द्रकुमार आर्य, कोषाध्यक्ष- श्री श्यामसुन्दर चाबा, प्रचारमत्री-डॉ० धर्मबीर सागवान, पुस्तकाध्यक्ष-राजेन्द्रकुमार वर्मा, सहायक-श्री नारायणदास कथूरिया, सहायक-सूबेसिह यादव, ऑडिटर-श्री विनोदकुमार ऐरन, पुरोहित श्री नेभराज खन्ना, सहायक मन्त्री-श्री सूबेसिह यादव। —**हरिश्चन्द्र लाम्बा,** मन्त्री

आर्यसमाज के उत्सवों की सूची

१	आर्यसमाज सैक्टर-७ फरीदाबाद	७ से १५ मई २००२
२	आर्यसमाज पाढा जिला करनाल	२५ से २६ मई २००२
३	आर्यसमाज भुरथला जिला रेवाडी	८ से ९ जून २००२
४	आर्यसमाज गोहाना मण्डी जिला सोनीपत	२१ से २३ जून २००२

—**सुखदेव शास्त्री, सहायक वेदप्रचाराधिष्ठाता**

भूल सुधार

२८ अप्रैल २००२ के सर्वहितकारी साप्ताहिक के पृष्ठ संख्या-४ पर आर्यसमाज सफीदो मण्डी (जीन्द) के चुनाव समाचार मे भूलवश सरक्षक पद पर श्री फूलचन्द आर्य का नाम छप गया। इसे निम्न प्रकार पढा जाए-सरक्षक-श्री जसबीरसिंह एडवोकेट, प्रधान-श्री फूलचन्द आर्य। —**सम्पादक**

डॉ० अम्बेडकर ने कहा है—मनु ने जाति के विधान का निर्माण नहीं किया और न वह ऐसा कर सकता था।

मनुस्मृति मे जन्म से जाति व्यवस्था नहीं है अपितु गुण—कर्म—योग्यता पर आधारित वर्ण व्यवस्था है। मनु ने दलितो को शूद्र नहीं कहा, न उन्हे अस्पृश्य माना है। उन्होंने शूद्रो को सवर्ण माना है और धर्म-पालन का अधिकार दिया है। मनु द्वारा प्रदत्त शूद्र की परिभाषा दलितो पर लागू नहीं होती। मनु शूद्र विरोधी नहीं अपितु शूद्रो के हितैषी हैं। मनु की मान्यताओ के सही आकलन के लिए पढिए, प्रक्षिप्त श्लोकों के अनुसधान और क्रान्तिकारी समीक्षा सहित शोधपूर्ण प्रकाशन —

मनुस्मृति

(भाष्यकार एवं समीक्षक डॉ० सुरेन्द्रकुमार)
पृष्ठ ११६०, मूल्य २५०/-
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
४५५, खारी बावली, दिल्ली-६
दूरभाष : ३६५८३६०, फैक्स : ३६२६६७२

वेदप्रचार कार्यक्रम

हिसार, सिरसा, फतेहाबाद जिलों के आर्यसमाजो ने सयुक्त वेदप्रचार चलाया। इसके अन्तर्गत हिसार वेदप्रचार मण्डल के अध्यक्ष चौ० बदलूराम आर्य के नेतृत्व मे १०० गावो के विद्यालयो मे वेदप्रचार किया और सिरसा के १५० गावो मे श्रवणकुमार कर्मशाना के नेतृत्व मे किया गया। गत फरवरी माह में १५-१६ तारीखो जाडवाला बागड मे आर्य सम्मेलन ४-५ मार्च को मुकलाण (हिसार) विशाल आर्य महासम्मेलन ७-८-९ मार्च को बोदीवाली (फतेहाबाद) आर्य महासम्मेन ने किये गये। इन सम्मेलनो चौ० हरिसिह जी हिसार ने समाज की तरफ से आर्थिक सहयोग सिरसा चौ० हरलाल जी आर्य ने व्यक्तिगत कोष से ५०० जाडवाला आर्यसमाज २१००/- कागदाना गोशाला, ११०० रु० मुकलाण, ५१०० हिसार आर्यसमाज हाल निर्माण के लिये ५०० बोदीवाली आर्यसमाज ११००/- डींग की गोशाला ५००/- छानीबडी आर्यसमाज को आर्थिक सहयोग दिया। सभी सम्मेलनो मे चौ० बदलूराम जी की प्रेरणा उनका साहस, सहयोग भी सराहनीय था, सभी मंचो का सचालन श्रवणकुमार जी कर्मशाना ने सफलतापूर्वक किया।

प० रामनिवास, बहन पुष्पा शास्त्री, बहन सुदेश, जबरसिह खारी, स्वामी रुद्रवेश जी, स्वामी सर्वदानन्द जी, स्वामी अग्निवेश जी दिल्ली से पधारे। वहीं भजनलाल के पुत्र कुलदीप बिश्नोई, चौ हरिसिंह सैनी, प्रहलादसिह गिलाखेडा, रामजीलाल पूर्व सासद आदि राजनेता पधारे।

प्रवेश सूचना

आर्ष कन्या गुरुकुल दाधिया, अलवर (राजस्थान)

साबी नदी के किनारे पर पर्वतो की छटा से सुरम्य तडाग, उद्यानो से सुशोभित, सडक व रेलवे लाइन से जुडा हुआ, शहर गाव से दूर शान्त एकान्त, स्वस्थ जलवायुयुक्त आर्ष कन्या गुरुकुल दाधिया मे छठीं कक्षा से प्रवेश प्रारम्भ है तथा प्रथमा से आचार्य तक गुरुकुल पद्धति से महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से सबधित पाठ्यक्रम नि शुल्क पढाया जाता है। गुरुकुल मे योग्य प्राचार्य तथा अनुभवी प्राध्यापिकाये अध्यापन कार्य मे रत है। सुन्दर छात्रावास, गोशाला, यज्ञशाला, पुस्तकालय, व्यायामशाला के प्रबन्ध के साथ आर्ष पद्धति पर आधारित इस गुरुकुल मे आचार-व्यवहार, स्वास्थ्य, चरित्रनिर्माण, देशभक्ति तथा धार्मिक शिक्षा योगाभ्यास आदि द्वारा कन्याओ का स्वर्णिम विकास करवाया जाता है, प्रवेश प्रारम्भ है।

सम्पर्क करे–

प्राचार्य, आर्ष कन्या गुरुकुल, दाधिया, अलवर, राजस्थान ३०१४०१

परिवार कैसे संगठित और सुखी.... (पृष्ठ दो का शेष)

प्रेम के अभाव मे पुत्रवधुओ मे सास के लिए श्रद्धाभाव कैसे उत्पन्न होगा ? सेवाभाव के लिए श्रद्धाभाव आवश्यक होता है। बुद्धिमान् सास-श्वसुर वही हैं जो अपनी बेटियो से भी अधिक पुत्रवधुओ को सम्मान व प्रेमभाव प्रदान करते हैं। उनकी वृद्धावस्था सेवाभाव को पाती है वही परिवार सुखी व सगठित रहता है।

तीसरा कारण माता-पिता और सास-ससुर के टोकने की आदत है। छोटे त्रुटिया करते हैं और बडे व्यक्ति टोकते हैं। बस टोका-टोकी से ही परिवार मे झगडे होते है। बडो को चाहिये विवाहित बच्चो को कम से कम टोके किन्तु आवश्यक हो तो परिवार मे वैदिक सिद्धान्तो से प्रवचन व यज्ञ करवाकर उपदेश द्वारा समझाने का मार्ग आपनाए। अपने पुत्र व पुत्रवधू की कमिया दूसरो के सामने न कहे और पुत्रवधुओ से सेवा की कम आशाए रखे अधिक आशा करना निराशा को निमन्त्रण है क्योकि भारतीय सस्कृति पर पाश्चात्य सस्कृति ऐसे हावी होती जा रही है जैसे खाली पडी सरकारी जमीन पर कोई साहसी व्यक्ति कब्जा कर रहा हो। नई और पुरानी पीढी मे "जनरेशन गैप" भी कोई अर्थ रखता है। जो वे सेवा करदे, उसे उनका प्रसाद समझकर स्वीकार करना ही परिवार को सगठित रखने मे सहायक है। विवाह के पश्चात् पुत्रो और पुत्रवधुओ से जो त्रुटिया होती हैं उनका मुख्य कारण है–व्यवहारशून्यता और दूसरा कारण सद्गुणो का अभाव। विवाह के पश्चात् माता-पिता व सास-श्वसुर को पुत्र व पुत्रवधू क्रोधपूर्ण व अपमानजनक बात न कहकर अपनी समस्या पास मे बैठकर धैर्य से सम्मान करते हुए रखे। उनके अनुभव से कुछ सद्गुणो को प्राप्त करे। माता-पिता की सेवा अवश्य करे तथा वृद्ध माता-पिता (सेवानिवृत्त) माता-पिता को जेबखर्ची भी दे। मनुष्य दु खी क्यो होता है ? इसका एक कारण तो यह है कि उसे जो कुछ जीवन मे मिला है उसकी नजर उस पर कम जाती है और जो नही मिला है उस पर उसकी दृष्टि बार-बार जाती है। 'सन्ध्या' मे हम गायत्री मन्त्र के पश्चात् 'शन्नो देवी' मन्त्र से जब सन्ध्या आरम्भ करके आचमन करते है तब परमपिता परमात्मा के उपकारो का ध्यान करते हुए 'सन्तुष्ट' होते हुए, सुखो की वर्षा करनेवाले परमात्मा का धन्यवाद करते हैं। सन्तुष्ट होना सबसे बडा सुख है। परिवार को सगठित रख सके और सुखी बना सके इसके लिए परिवार मे पच महायज्ञो (ब्रह्मयज्ञ-सन्ध्या), देवयज्ञ (हवन), पितृयज्ञ, अतिथियज्ञ आदि की परम्परा डाले ताकि 'इदन्न मम' इस भावना से परिवार त्याग भाव से रहने की शिक्षाओ के पाठ की प्रतिदिन पुनरावृत्ति यज्ञ मे करता रहे। 'सगच्छध्व सवदध्वं स वो मनासि जानताम्' के वेदोपदेश को श्रवण करके परिवार का आदर्श प्रस्तुत करके समाजस्थ अन्यो को भी प्रेरणा दे सके।

वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज शिवनगर पानीपत का वार्षिक उत्सव श्री हवासिंह कादियान प्रधान आर्यसमाज की अध्यक्षता मे २४ अप्रैल व २५ अप्रैल को मनाया गया जिसमे प० चिरजीलाल भजनोपदेशक ने भजनो के माध्यम से वेदप्रचार किया। श्री हुक्मचन्द राठी ने अपने प्रवचनो मे दोनो दिन आर्यजनो को आर्यसमाज के दस (१०) नियमो को अपनाकर अपने जीवन को जनकल्याण मे लगाते हुए आर्यसमाज के सक्रिय कार्यकर्ता के रूप मे कार्य करने व शराब व दूसरे व्यसनो की बुराई के प्रमाण देते हुए, इनसे बचे रहने के लिए आह्वान किया। सूबेदार भीमसिह जी व जागेराम पटवारी जी ने आर्यसमाज के कार्य मे पूरा सहयोग देते हुए साप्ताहिक यज्ञो का घर-घर आयोजन करने का सुझाव दिया। अन्त मे सभी उपस्थित जनो का धन्यवाद किया गया। कुल ६०० रुपये की राशि आर्य प्रतिनिधि सभा को भेट की गई।

—**हवासिंह कादियान**, प्रधान आर्यसमाज शिवनगर, पानीपत

हांसी में नव-दिवसीय विराट् यज्ञ एवं दिव्य आध्यात्मिक सत्संग सम्पन्न

वैदिक यज्ञ सेवा समिति हासी द्वारा नवदिवसीय विराट् यज्ञ एव दिव्य आध्यात्मिक सत्सग दिवस १३-४-२००२ आर्यसमाज स्थापना दिवस सृष्टिसवत् विक्रमी सवत्, वैशाखी एव नवरात्रो के उपलक्ष्य मे २१ अप्रैल २००२ श्री रामनवमी तक समारोहपूर्वक मनाया गया।

इस विराट् यज्ञ के ब्रह्मा एव कथावाचक युवा सन्यासी श्रद्धेय स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती तथा भजनोपदेशक प० नरेशदत्त शर्मा बिजनौर उत्तरप्रदेश थे। नव-दिवसीय विराट् यज्ञ में ५१ श्रद्धालु दम्पती यजमानो ने भाग लिया। प्रतिदिन प्रात ७ से ९ बजे तक यज्ञ, भजन व प्रवचन तथा रात्रि ८ से १० बजे तक कथा, प्रवचन का आयोजन किया गया।

आर्यवीर दल हांसी की बैठक सम्पन्न

हांसी स्थानीय आर्यवीर दल की बैठक हल्का संचालक आचार्य रामसुफल शास्त्री की अध्यक्षता मे हुई जिसमे आगामी २६ मई से २ जून २००२ तक हल्का हासी क्षेत्रीय प्रशिक्षण शिविर लगाने पर विचार किया गया। जिसमे कुल १०० (सौ) बच्चो का प्रवेश होगा। शिविर मे प्रवेश लेनेवाले छात्र शिविर के दौरान गुरुकुलीय वातावरण मे रहेगे। जिन्हे लाठी, तलवार, भाला चलाने का अभ्यास एव आसन, व्यायाम कराटे आदि सिखाए जायेगे।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन · ०१२६२–७६८७४, ७७८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ०१२६२–७७७२२) से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३ सृष्टिसंवत् १,९६,०८,५३,१०२
पंजीकरणसंख्या टेक/85-2/2000 ☎ ०१२६२-७७७२२

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
सर्वहितकारी
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र रोहतक
प्रधानसम्पादक : यशपाल आचार्य, सभामन्त्री सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री
वर्ष २६ अंक २४ १४ मई, २००२ वार्षिक शुल्क ८०) आजीवन शुल्क ८००) विदेश में २० डॉलर एक प्रति १.७०

व्यक्तित्व का विकास

❑ डॉ० सत्यवीर विद्यालंकार

व्यक्तित्व क्या है ?

किसी व्यक्ति के आन्तरिक और बाह्य गुण-अवगुण, व्यवहार, आचार-विचार, रहन-सहन, क्रियाकलाप, मानसिक स्थिति, वेशभूषा, शारीरिक डील-डौल, आकृति तथा रूप-रग का समुच्चय उसका व्यक्तित्व कहा जाता है। इसमे अच्छे, बुरे और मध्यम लोगों के व्यक्तित्व की अलग पहचान न होकर सर्वसामान्य व्यक्तित्व की परिभाषा दी गई है। इस आधार पर हमको स्वय उत्कृष्ट या निकृष्ट व्यक्तित्व का निर्धारण करना पडेगा। विद्वानों के मतानुसार व्यक्तित्व का विकास करने के विभिन्न साधन हैं लेकिन शिक्षा का स्थान उनमे विशेष है।

१ किसी व्यक्ति की शारीरिक बनावट अथवा डीलडौल उसके व्यक्तित्व का सर्वप्रथम परिचायक होता है। हमे किसी व्यक्ति पर दृष्टिपात करते ही शारीरिक तौर पर जो कुछ दिखाई देता है अर्थात् जो किसी व्यक्ति की शारीरिक बनावट दिखाई देती है, उसमें वह स्वय कम कारण है, जबकि उसके माता-पिता मुख्य कारण हैं। किसी की शारीरिक बनावट का कारण पैतृक अधिक होता है, यह बात प्रयोगो से सिद्ध है। हां, इतना अवश्य है कि व्यक्ति अपने पुरुषार्थ तथा व्यायामादि से अपने स्वास्थ्य को अच्छा बना सकता है। व्यक्ति के इस डीलडौल का देखनेवाले पर सबसे पहले प्रभाव पडता है, अत शारीरिक बनावट किसी के व्यक्तित्व का प्रमुख आधार होता है। लेकिन व्यक्तित्व के सम्बन्ध मे केवल डीलडौल ही सब कुछ नहीं, अन्य तत्व भी महत्त्वपूर्ण हैं।

२ दूसरे क्रम पर सामान्य तौर पर व्यक्ति की वेशभूषा आती है। व्यक्ति का वस्त्र धारण करने का ढग, उसका बनाव श्रृंगार, उसकी चाल-ढाल, उसकी मुखाकृति, उसके हाव-भाव तथा संकेत आदि उसके व्यक्तित्व के परिचायक होते हैं। वेशभूषा आदि पर विशेष ध्यान देनेवाले व्यक्ति दूसरों को काफी अश मे प्रभावित करते हैं। अवसर के अनुकूल तथा दूसरो को रुचिकर लगनेवाली वेशभूषा सदा अच्छी मानी जाती है।

३ तीसरे स्थान पर व्यक्ति का पद आता है जो उसके व्यक्तित्व का परिचायक होता है। आजकल अधिकाश लोग तो किसी के खास पद पर आसीन होने के कारण ही उसका अकन करते हैं। जब वही व्यक्ति उस खास पद पर नहीं होता है, तो उसका व्यक्तित्व दूसरो को तनिक भी प्रभावित नहीं कर पाता है। वास्तव मे व्यक्तित्व को उभारने में व्यक्ति का पद भी महत्त्वपूर्ण होता है।

४ चौथा क्रम व्यक्ति के व्यवहार का आता है। किसी के साथ मिलने पर वार्तालाप करने पर उसके व्यक्तित्व का पता चल जाता है। किसी का व्यवहार कैसा है ? यह बात उसके साथ रहने से, वार्तालाप करने से, लेन-देन, खानपान तथा साथ काम करने से मालूम होती है। इसके लिए व्यक्ति के सम्बन्ध में कुछ अनुभव करने की जरूरत पडती है। व्यक्तित्व के अकन करने मे उसका व्यवहार बडा महत्त्वपूर्ण होता है।

५ इसके अतिरिक्त व्यक्ति की पैदायश का ढग भी व्यक्तित्व पर प्रभाव डालता है। जन्मदातृ माता की मानसिकता का बच्चे पर बडा प्रभाव पडता है। यदि गर्भ सामान्य ढग से हुआ है और उसके बाद वातावरण सामान्य रहा हो, तो इसका प्रभाव माता की मानसिकता पर पडेगा, जो जन्म लेनेवाले शिशु पर भी पडेगा। अगर गर्भ बलात्कार के कारण या ऐसी ही किसी अवस्था में हुआ हो या गर्भ के बाद वातावरण आतक का या ऐसी किसी विशिष्ट भयावह स्थिति का रहा हो, तो उसका प्रभाव गर्भस्थित शिशु पर अवश्यमेव पडेगा, जो आगे चलकर उसके व्यक्तित्व को प्रभावित करेगा। माता की रहन-सहन की स्थिति, उसका तत्कालीन वातावरण व्यक्तित्व पर अपना प्रभाव अवश्य छोडता है। गर्भ मे शिशु की कुछ बाते विकसित होती हैं, जिन पर माता का प्रभाव निश्चय रूप से होता है।

६ सामाजिक वातावरण का भी किसी के व्यक्तित्व पर प्रभाव पडता है। महिला की गर्भावस्था मे उसके पति का व्यवहार जन्म लेनेवाले शिशु पर पडे बिना नहीं रहता है। इसी प्रकार उसके परिवार के वातावरण तथा उसकी आर्थिक स्थिति और माता के खान-पान का गर्भस्थ शिशु पर तथा जन्म लेने के बाद भी असर पडता है। महिला के कार्य करने का स्थान कैसा है ? वहा पर उसके साथ कैसा व्यवहार होता है और समाज मे उसकी क्या स्थिति है, इत्यादि बातो का भी बच्चो के व्यक्तित्व पर प्रभाव पडता है। बच्चे की जाति, धर्म तथा सम्प्रदाय और काम धन्धे अथवा पेशे का भी बच्चे के व्यक्तित्व पर प्रभाव पडता है। इन बातो के अपवाद तो हो सकते हैं, पर इनके प्रभाव को कोई नकार नही सकता है।

७ माता-पिता और गुरु का बच्चे के व्यक्तित्व पर सीधा और गहन प्रभाव पडता है। बच्चा मिट्टी के कच्चे घडे के समान है, बनानेवाला इच्छानुसार उसका निर्माण कर सकता है। किसी के व्यक्तित्व को उभारने या दबाने मे सामाजिक व्यवस्थाओ की अहम् भूमिका होती है। इसी प्रकार शिक्षण सस्था के वातावरण का प्रभाव बडा दूरगामी होता है। पब्लिक स्कूल और सरकारी स्कूलों मे पढनेवाले बच्चो के व्यक्तित्व की तुलना करने पर व्यक्तित्व पर पडनेवाला यह प्रभाव और भी स्पष्टरूप मे झलकता है। पब्लिक स्कूल मे पढनेवाले बच्चो मे आत्मविश्वास अधिक होता है। यह व्यक्ति के वश मे है कि वह अपने घर के वातावरण को ठीक रखे, परन्तु सामाजिक वातावरण पर नियन्त्रण करना किसी एक के वश की बात नहीं है। बाहरी वातावरण के अवाछित प्रभाव से बच्चो को बचाने के लिए उनको बार-बार समझाना बडा आवश्यक है। इसके साथ ही बच्चो पर अधिक बन्धन रखना अथवा उनको बिल्कुल स्वच्छन्द छोड देना, दोनो ही घातक सिद्ध होते हैं। इस मामले मे बडा सोच-समझकर सन्तुलित व्यवहार करना चाहिये। बच्चो को अधिक ताडना तथा अधिक लाड-प्यार करना, दोनो ही ठीक नही होते।

७ किसी के पूर्व जन्म के सस्कार उसके व्यक्तित्व को प्रभावित करते है। इसलिए व्यक्ति का सत्सग मे जाना अथवा कुसग की तरफ अधिक आकर्षित होना, पूर्वजन्म के सस्कारो पर आधारित होता है। तत्कालीन वातावरण भी इस दिशा मे अपना प्रभाव दिखाता है। व्यक्ति के मित्र, सगी-साथी भी व्यक्तित्व के निर्माण मे अपना अच्छा या बुरा योगदान

(शेष पृष्ठ दो पर)

भक्ति महान् !

कदु प्रचेतसे महे वचो देवाय शस्यते।
तदिद्धि अस्य वर्धनम्।। साम० पू० ३१४२।।

शब्दार्थ–(महे) महान् **(प्रचेतसे)** बडे ज्ञानी **(दिवाय)** इष्टदेव परमेश्वर के लिये (कत् उ) कुछ भी, थोडासा भी (वच शस्यते) वचन-स्तुति रूप मे–कहा जाये (तत् इत् हि) वह ही निश्चय से (अस्य) इस वक्ता का (वर्धन) बढानेवाला है।

विनय–प्रभु की थोडी सी भी भक्ति महान् फल को देनेवाली होती है। हम लोग समझा करते हैं कि थोडे से सन्ध्या-भजन से, एक आध मत्र द्वारा उसका स्मरण कर लेने से हमारा क्या लाभ होगा या एक दिन यह भजन छोड देने से हमारी क्या हानि होगी। पर यह सत्य नहीं है। हमारी उपासना चाहे कितनी स्वल्प और तुच्छ होवे पर वह उपास्यदेव तो महान् है। ज्ञान और शक्ति मे वह हमसे इतना महान् है कि हम कभी भी उसके योग्य उसकी पूरी भक्ति नहीं कर सकते हैं। और उसके सामने हम इतने तुच्छ हैं कि वह यदि चाहे तो अपने जरा से दान से हमे क्षण मे भरपूर कर सकता है। हम यदि थोडी देर के लिए भी उससे अपना सम्बन्ध जोडते हैं तो वह महान् देव उस थोडे से समय मे ही हमे भर देता है। सत लोग अनुभव करते हैं कि प्रभु का क्षण भर ध्यान करते ही प्रभु की आशीर्वाद-धारा उनके लिये खुल जाती है और वे उस क्षण भर मे ही प्रभु के आशीर्वाद से नहा जाते हैं, एक बार प्रभु का नामोच्चारण करते ही उन्हे ऐसा आवेश आता है कि शरीर रोमांचित होजाता है, मन और आत्मा आनन्दरस से पवित्र और प्रफुल्ल होजाते हैं। पर यदि हम साधारण लोगो की प्रार्थना, उपासना अभी उस महाप्रभु से इतना ऐश्वर्य नहीं पा सकती है तब तो हमे उसके थोडे से भी भजन की बहुत कदर करनी चाहिए, एक भी दिन एक भी समय नागा नहीं करनी चाहिये। एक समय भी नागा होने से जो सम्बन्ध विच्छिन्न होजाता है, वह फिर जोडना पडता है। यही कारण है कि नागा होने पर प्रायश्चित्त का विधान है एव एक समय नागा होने से एक समय की देरी नहीं होती, वह दुबारा सम्बन्ध जोडने जितनी देरी होजाती है। अत हम चाहे किसी दिन भजन मे बिल्कुल दिल न लगा सकें, तथापि उस दिन भी कुछ न कुछ उपासना जरूर करनी चाहिये, यत्न जरूर करना चाहिए। पीछे पता लगता है कि एक दिन का भी यत्न व्यर्थ नहीं गया, एक-एक दिन की उपासना ने हमे बढाया है–हमारे शरीर, मन और आत्मा को उन्नत किया है।

कम से कम यह तो असन्दिग्ध है कि ससार की अन्य बातो मे हम जितना समय देते हैं, सासारिक बातो की जितनी स्तुति उपासना करते हैं और उससे जितना फल हमे मिलता है, उससे अनन्त गुना फल हमे प्रभु की (अपेक्षया बहुत ही थोडीसी) स्तुति-उपासना से मिल सकता है और मिल जाता है। कारण स्पष्ट है, क्योंकि वह महान् है, ज्ञान का भण्डार है, सर्वशक्तिमान् है और ये सासारिक बाते अल्प हैं, तुच्छ हैं, निस्सार हैं, ज्ञानशक्तिविहीन केवल विकार हैं।

(वैदिक विनय से)

व्यक्तित्व का विकास............ **(प्रथम पृष्ठ का शेष)**

करते है। सम्पर्क मे आनेवाले लोगो के व्यवहार की छोटी-छोटी बाते बच्चे के ऊपर अपना प्रभाव डालती हैं।

८ माता-पिता और अध्यापक बच्चो के लिए आदर्श के रूप मे होते हैं। वह उनकी सब बातो तथा व्यवहार की क्रियाओ को देखता है। उनके प्रति उसका लगाव और भावनाये अच्छी होती हैं तथा मन मे आदर होता है। उसके जीवन पर सबसे अधिक और स्थायी प्रभाव इन तीनो का होता है, जो उसके व्यक्तित्व का निर्माण करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उसके गुण अथवा अवगुण, नैतिकता, व्यवहार, रहन-सहन तथा विचारधारा का बच्चे पर गहरा प्रभाव पडता है। वे जैसा करेंगे वैसा ही बच्चा भी करने का यत्न करता है। यदि उनके जीवन मे मानवीय मूल्यों की कद्र होगी, तो बच्चे के जीवन मे भी उनकी झलक दिखाई देगी। बच्चे की अच्छी या बुरी आदते अधिकतर परिवार मे या विद्यालय में ही बनती हैं और वही आदते उसके जीवन भर चलती रहती हैं।

९ सत्य एवं सभ्य व्यवहार, नैतिकता, मर्यादापालन, सफाई, कर्मठता तथा स्वस्थ चिन्तन शैली, ये व्यक्तित्व को विकसित करनेवाले साधन हैं, इनका आधार भी उपर्युक्त माता-पिता और गुरु तीनों हैं। तात्पर्य यह है कि व्यक्तित्व को निखारने के लिए गुणो को धारण करना आवश्यक है, क्योंकि आन्तरिक गुण और बाह्य गुण व्यक्ति के परिचायक होते हैं, वेशभूषा तो सामान्य बात है। व्यक्तित्व को निखारने के लिये उत्तम पुस्तकें पढ़ना, वाणी का सदुपयोग करना, व्यर्थ की चिन्ता छोड़कर कर्मठ तथा सक्रिय जीवनयापन करना, नेतृत्व के लिए स्वयं को योग्य बनाना, आत्मसंयम करना, नियमित जीवन बिताना, जनसेवा के कार्यों में रुचि लेना, व्यर्थ का प्रदर्शन न करना और कदापि द्विधा चरित्रवाला न बनना आदि, जरूरी बातें हैं। इसके साथ ही अपने जीवन और कार्यव्यवहार में सन्तुलन बनाये रखना अत्यावश्यक है। ध्यान रहे–सन्तुलन से साधारण-सा व्यक्ति रस्सी पर भी चल सकता है।

१० व्यक्ति के मुखमण्डल की प्रसन्नता सदा झलकती रहनी चाहिये। अधिक दबाव या अधिक चिन्तन का भाव चेहरे पर नहीं रहना चाहिये। मन में किसी कारणवश आत्महीनता की भावना बनाये रखना कदापि ठीक नहीं होता। झूठे आत्मगौरव के कारण स्वय को दूसरों से ऊंचे स्तर का समझना अथवा अपने मुह मिया मिट्ठू बनकर गलत खुशफहमी मे रहना भी उपयुक्त नहीं होता है। अधिक बोलनेवाला, झूठा प्रदर्शन करनेवाला, घमण्डी, अहकारी, चिडचिडे स्वभाववाला, निन्दक तथा शिकायती टट्टू बनकर इधर-उधर व्यर्थ घूमनेवाला व्यक्ति कहीं पर भी आदर नहीं पाता है। सामान्य तौर पर व्यक्ति का दूसरे विश्वास करें, उसकी साख बनी हुई हो, वह विचारशील व गम्भीर स्वभाव का हो, सर्वहितचिन्तक, सदाचारी और व्यवहारकुशल हो, तो ऐसे व्यक्ति का सब आदर करते हैं। ये बाते व्यक्तित्व का विकास करने और जीवन को सफल बनाने के लिए अत्यावश्यक हैं।

११ अच्छे व्यक्ति के लिए शालीनता, सौम्यता और शिष्टता होने के साथ-साथ यह भी आवश्यक है कि किसी काम को करते हुए जरासी बाधा के उपस्थित होने पर जल्दी विचलित न हो। वह जल्दबाजी मे सोचे-विचारे बिना काम करके बाद मे पश्चात्ताप करनेवाली स्थिति में न जावे। किसी योजना अथवा कार्य को हाथ मे लेने से पहले उसके सब उतार-चढाव, हानि-लाभ देखना तो आवश्यक है ही साथ में किसी अनुभवी व्यक्ति से सलाह-मशविरा करना बडा लाभदायक रहता है। ऐसा करते समय यह नहीं सोचना चाहिये कि दूसरा व्यक्ति मुझे अनुभवहीन या कम शिक्षित समझेगा। मार्ग मे आनेवाली बाधाओं का धैर्य के साथ सामना करना चाहिये।

१२ व्यक्तित्व के विकास के लिये आत्मविश्वासी बनना सोने पर सुहागे के समान होता है। आत्मविश्वास से व्यक्ति स्थिर मतिवाला बनता है। उसको कोई व्यक्ति जल्दी ही, अपने लक्ष्य की पूर्ति करने के लिए, उसके इरादे से भटका नहीं सकता। कभी-कभी कोई सामान्य-सा व्यक्ति मूर्खतावश यदि किसी आत्मविश्वासी सुशिक्षित और सभ्य व्यक्ति की शान के खिलाफ कुछ अपशब्द कह देवे अथवा उसकी इज्जत व आन के प्रति अभद्रता करनेवाली कार्यवाही कर देवे, तो उसके कारण जोश मे आकर या उतावलेपन मे किसी दूसरे के द्वारा उकसाये जाने पर सामान्य व्यक्ति के साथ व्यर्थ का विवाद नहीं करना चाहिये और न ही जरासी बात कहने पर अपनी बेइज्जती समझनी चाहिये। ध्यान रहे–अपना स्तर सदा ऊंचा रखना चाहिये तथा भौंकनेवाले की तनिक भी परवाह नहीं करनी चाहिये। निम्न स्तर के लोगो के साथ विवाद मे पडना शिष्ट व्यक्ति को शोभा नहीं देता है।

विकसित व्यक्तित्व की यह पहचान है कि वह अन्धाधुन्ध जोश मे आकर कभी कोई काम नहीं करता है। उसकी बुद्धि निर्णय लेनेवाली होती है। वह साहसी, धैर्यशाली और आशावादी होता है। उसके मन में जीवन के प्रति कभी भी उदासीनता नहीं आती है। उसका विचारपूर्वक काम करने का ढंग दूसरो को प्रभावित करता है। वह खुशहाल होकर जीवन जीने की कला जानता है। यथावसर दूसरों के सुख-दुःख में शामिल होना तथा सामाजिक कार्यों में सहायता करना अच्छे व्यक्तियों का काम होता है। निष्कर्षस्वरूप कह सकते हैं कि उपर्युक्त सब तत्त्व व्यक्तित्व का विकास करने में सहायक होते हैं और यही विकसित व्यक्तित्व के परिचायक होते हैं।

हरयाणा के हिन्दी के निबन्धकारों में—प्रो० चन्द्रप्रकाश आर्य

दयालसिंह कालेज, करनाल के स्नातकोत्तर हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो० चन्द्रप्रकाश आर्य जहा अपने लेखों एवं व्याख्यानों द्वारा राष्ट्रभाषा हिन्दी तथा भारतीय भाषाओं के प्रचार-प्रसार में लगे हैं, वहां वे एक मौलिक साहित्यकार भी हैं। हाल ही में उनकी पुस्तक **'मानवता के नाम'** का दूसरा सस्करण प्रकाशित हुआ है। इस संस्करण में पुस्तक पर अब तक प्रकाशित विभिन्न विश्वविद्यालयों के प्रोफेसरों, विभागाध्यक्षों, आचार्यों एवं कालेजों तथा हिन्दी-संस्कृत के अन्य विद्वानों की पच्चीस समीक्षायें शामिल की गई हैं जिसमे सुधी आलोचकों द्वारा पुस्तक की महती सराहना की गई है। पुस्तक के समीक्षकों में सात-आठ डी०लिट्० प्रोफेसर हैं तथा छह-सात पी-एच०डी० हैं तथा तीन विश्वविद्यालयों में संस्कृत विभागाध्यक्ष रहे हैं।

पुस्तक पर समीक्षा लिखनेवालों में हरयाणा से डा० पुष्पा बंसल डी०लिट्०, डा० हरिश्चन्द्र वर्मा डी०लिट्०, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति स्व० डा० उदयभानु हंस का नाम उल्लेखनीय है। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार से डा० विष्णुदत्त राकेश डी०लिट्०, आचार्य वेदप्रकाश शास्त्री, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से डा० श्यामसुन्दर शुक्ल डी०लिट्०, डा० यशवन्त चौहान, डा० जमीला आली जाफरी का नाम उल्लेखनीय है। केरल विश्वविद्यालय तिरुवनन्तपुरम् से हिन्दी के प्रोफेसर डा० वी०पी० मुहम्मद कुजमेत्तर की समीक्षा भी इसमे शामिल है। देखें पुस्तक पृष्ठ ११५ से १५२ तक।

(ख) पुस्तक का उल्लेख डा० भवानीलाल भारतीय (जोधपुर) द्वारा प्रकाशित **'आर्य लेखक कोश'** पृष्ठ ६८ में भी हुआ है। प्रकाशक ८/४२३ नन्दनवन, चौपासनी आवासन बोर्ड, जोधपुर (राजस्थान)।

(ग) पुस्तक **'मानवता के नाम'** को हरयाणा के हिन्दी निबन्धकारों मे पी-एच०डी० के लिए शामिल किया गया है। विषय–**'हिन्दी निबन्ध, कथ्य और शिल्प-हरयाणा के विशेष सदर्भ में'** हिन्दी विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र, जून १९९६। इस शोधप्रबन्ध मे (पृ० ७७) कहा गया है कि हरयाणा के हिन्दी निबन्ध साहित्य में श्री आर्य का अपना निजी स्थान है। यद्यपि उनका एक ही सग्रह आया है किन्तु गुणवत्ता की दृष्टि से उसका महत्त्व अनेक निबन्ध सग्रहो से कहीं अधिक है।"

(घ) पुस्तक का सम्बन्ध समस्त मानव जाति से है। पुस्तक मे वेद, भारतीय संस्कृति, योग आयुर्वेद, पशु, पक्षी, विश्वशान्ति आदि सम्बन्धी २४ निबन्धों का सकलन है। पुस्तक की भूमिका मे कहा गया है, "व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के साथ मानवता एव विश्वशान्ति इसका विषय बने हैं। हम भगवान् को तो स्मरण करते हैं परन्तु भगवान् की प्रतिरूप इस सृष्टि से, प्रकृति से, मनुष्यों से, पशुओं से, पक्षियों से हमें कोई लगाव नहीं।"

(च) पुस्तक पर विद्वानो की कुछ समीक्षाओं के सारांश उद्धृत हैं–

(१) श्री वेदव्रत शास्त्री व्याकरणाचार्य–"पुस्तक से साधारण जन अपने सामान्य ज्ञान की वृद्धि कर सकते हैं और सुशिक्षित पाठक अपने वेद-दर्शन उपनिषद्-गीता-महाभारत-साहित्य तथा आयुर्वेद सम्बन्धी ज्ञान में वृद्धि कर सकते हैं।"

(२) डा० उषा बंसल डी०लिट्०–"इन निबन्धो मे श्रीमद् भागवद्गीता, मनुस्मृति, कालिदास काव्य, भर्तृहरिकाव्य, भागवत आदि ग्रन्थों से उदारतापूर्वक सम्बद्ध उक्तियों को उद्धृत किया गया है। धर्म, मानवता, शान्ति, साम्प्रदायिकता, शिक्षा, जीवन का उद्देश्य, सस्कृति, स्वास्थ्य, प्रकृति आदि तत्त्वो की भारतीय मनीषा ने युग-युगान्तरों में जो परिभाषायें दी हैं वे सब लेखक की अवधारणा के सहज अगों के रूप में इन निबन्धों में उपलब्ध होजाती हैं।"

(३) डा० हरिश्चन्द्र वर्मा डी०लिट्०–"लेखक ने शास्त्रीय सामग्री को आत्मसात् करके लोक जीवन से सम्पृक्त कर दिया है। शास्त्रीय धारणाओं की समाज सापेक्ष मगलमूलक जीवन्त व्याख्या की दृष्टि से ये लेख निश्चय ही मूल्यवान् एवं विचारोत्तेजक सामग्री से सम्पन्न हैं।"

(४) डा० उदयभानु हंस–"वस्तुत. गद्यलेखन मे उपन्यास, कहानी, जीवनी, नाटक आदि की अपेक्षा निबन्ध में कहीं अधिक प्रौढ लेखन शैली एवं भाषा स्तर को आवश्यक माना जाता है। श्री चन्द्रप्रकाश आर्य के निबन्धों में विषय विविधता दर्शनीय और प्रशंसनीय है। सभी निबन्ध उनके व्यक्तित्व के परिचायक हैं। मैं इसी को निबन्ध कला की सिद्धि मानता हूं कि निबन्ध मे निबन्धकार का व्यक्तित्व प्रतिफलित होजाए।"

(५) डा० यशवन्त चौहान–"प्रो० साहब की इस प्रस्तुति की सबसे महत्त्वपूर्ण उपलब्धि यह है कि उन्होंने भारत की सास्कृतिक मान्यताओ की गूढता वैदिक, आयुर्वेदीय, स्मृति ग्रन्थों के सन्दर्भसहित को इस प्रकार सरल और सुग्राह्य बना दिया है कि इन तथ्यो की जनमानस में अत्यन्त प्रभावशाली पैठ हो जाएगी।"

(६) डा० श्यामसुन्दर शुक्ल डी०लिट्०–"सकलन के ये निबन्ध जहा विषयवस्तु की दृष्टि से बहुआयामी और प्रासगिक हैं वहीं इनमे निबन्ध की विविध रचना शैलियो के भी दर्शन होते हैं।"

(७) प्रो० डा० बी०डी० विज–"मानवता के नाम प्रो० आर्य का सुन्दर निबन्ध सग्रह हाल ही मे प्रकाशित हुआ है जिसमे कुछ ललित निबन्धो को सम्मिलित किया गया है। मानवतावाद तथा लोकसग्रह भावना इनके निबन्धो का प्रधान स्वर है।"

(८) डा० प्रतिभा पुरन्धि–'वेद, उपनिषद्, ब्राह्मण, चरक, सुश्रुत आदि बडे-बडे ग्रन्थों के धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष जैसे गूढ विषयो को जिस सहजता एव विलक्षण अन्दाज मे लेखक ने प्रस्तुत किया है वह निश्चित ही लेखक की क्षमता एव प्रतिभा को द्योतित करता है।"

(९) आचार्या प्रियम्वदा वेदभारती–"वैदिक सिद्धान्तो का परिचय जनता जनार्दन को कराने के लिए आपने अपनी पुस्तक मे साहित्य की जिस विधा का आश्रयण किया है, वह बहुत ही रोचक, आकर्षक एव प्रभावोत्पादक है। यह हर्ष की बात है कि इस नवीन विधा में आपने पाठको के ज्ञान के क्षेत्र को भी पर्याप्त विस्तृत करने का प्रयास किया है। वेद से लेकर दर्शन, सस्कृत साहित्य हिन्दी साहित्य, चरक, सुश्रुत आदि अनेक ग्रन्थों का ज्ञान और कारुण्य, वात्सल्य, शृगारादि रस आपकी इस अल्पकाय पुस्तक मे समाहित हैं।"

(१०) श्री महावीरसिह शास्त्री फौगाट–"मानवता के नाम' निबन्ध सग्रह मे प्रो० आर्य ने मानव के अब तक अर्जित ज्ञानसागर का मन्थन कर कुछ निर्णय व साररूप रत्न प्रस्तुत किये हैं। सुधी पाठको के विवेचक व विश्लेषक स्वभाव को ये निबन्ध रोचकतापूर्वक नई दृष्टि देने मे समर्थ कहे जासकते हैं। निबन्ध सग्रह की मूल ध्वनि 'मानवता' ही है।"

माता की पहचान करो

माता की जय बोलनेवालो, माता की पहचान करो।
वास्तव मे जो माता है, उसका ही सम्मान करो।।
सच्ची माता को भूलकर यदि झूठी माता पूजोगे।
पापी और अपराधी बनकर सजा जुर्म की भुगतोगे।।
माता प्यार स्नेह रखती है, बच्चो की परम हितैषी है।
उसको कौन कहेगा माता जो रक्त की प्यासी है।।
माता भेट नही मागती, माता को मत बदनाम करो।
बकरे, मुर्गे, पशु-पक्षियो की हत्या करना बन्द करो।।
जगली शेर नही हैं इसके मा को ही खा जायेगे।
इसके शेर शिवाजी जैसे जो मा की लाज बचायेंगे।।
सारी रात शोर मचाकर, मा का मत बेहाल करो।
मा को सुख से रहने दो, माता का कुछ ख्याल करो।।

—**देवराज आर्यमित्र,** आर्यसमाज कृष्णनगर, दिल्ली-५१

।।ओ३म्।। दूरभाष-०१८१-७८२२५२

श्री गुरु विरजानन्द गुरुकुल करतारपुर

(जिला जालन्धर) पंजाब-१४४८०१

आवश्यकता

श्री गुरु विरजानन्द गुरुकुल करतारपुर जिला जालन्धर (पजाब) मे अनुभवी विद्वानो की आवश्यकता है। जो गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय हरिद्वार की अलकार (बी ए) कक्षाओ को वेद, दर्शन, व्याकरण पढाने मे समर्थ हो। अवकाश प्राप्त तथा गुरुकुल परम्परा के स्नातको को प्राथमिकता दी जाएगी। योग्यता विवरण के साथ अपना आवेदन-पत्र शीघ्र भेजे। आवास तथा भोजन की सुविधा के साथ समुचित मानदेय भी दिया जाएगा।

गुरुकुल हितैषी सज्जनो से भी निवेदन है कि यदि उनकी जानकारी मे कोई ऐसे विद्वान् हो तो उसके पते सहित हमे सूचित करे, जिससे हम स्वय उनसे सम्पर्क कर सके।

—**डॉ० नरेशकुमार शास्त्री,** मन्त्री
श्री गुरु विरजानन्द गुरुकुल करतारपुर
(जिला जालन्धर) पजाब-१४४८०१

आर्यसमाज के उत्सवों की सूची

१	आर्यसमाज लाहडपुर जिला यमुनानगर	१७ से १९ मई २००२
२	आर्यसमाज पाढा जिला करनाल	२५ से २६ मई २००२
३	आर्यसमाज भुरथला जिला रेवाडी	८ से ९ जून २००२
४	आर्यसमाज गोहाना मण्डी जिला सोनीपत	२१ से २३ जून २००२

—**सुखदेव शास्त्री, सहायक वेदप्रचाराधिष्ठाता**

मास अप्रैल २००२ ऋषि लंगर हेतु दान

द्वारा श्री जयपालसिंह आर्य सभा भजनोपदेशक व श्री सत्यपाल आर्य सभा भजनोपदेशक

संख्या	नाम व पूरा पता	दान
१	श्रीमती करतार देवी आर्या कृपालनगर रोहतक	१०१-००
२	श्री सुखवीर शास्त्री हनुमान कालोनी रोहतक	५०-००
३	श्री बानवीर आर्य हनुमान कालोनी रोहतक	५०-००
४	श्री शमशेरसिह गोहाना रोड रोहतक	२१-००
५	श्री वैद्य ताराचन्द आर्य खरखौदा (सोनीपत)	१०१-००
६	श्री जयवीर आर्य आसन (रोहतक)	१०१-००
७	श्रीमती सुमित्रादेवी आर्या महर्षि दयानन्द विद्यालय जीन्द रोड रोहतक	१०१-००
८	श्री जगदीश आर्य सुखपुरा चौक रोहतक	१०१-००
९	श्री मा० रिसालसिंह पाकस्मा (रोहतक)	१०१-००
१०	आर्यसमाज शिवनगर पानीपत	१००-००
११	श्री धर्मसिह आर्य (बिरोहड) भरत कालोनी रोहतक	१०१-००
१२	श्री दफेदार भीमसिह आर्य खरावड (रोहतक)	१०१-००
१३	श्री चन्दनसिह आर्य खरावड (रोहतक)	२१-००
१४	श्री समुन्द्रसिह आर्य खरावड (रोहतक)	१०१-००
१५	श्री रामकुमार आर्य खरावड़ (रोहतक)	१०१-००
१६	श्री डा० राजसिह आर्य खरावड (रोहतक)	१००-००
१७	श्री मा० जगदीशचन्द्र खरावड (रोहतक)	५१-००
१८	श्री मा० बरोचन आर्य आसन (रोहतक)	५१-००
१९	श्री मा० ईश्वरसिह आर्य मकडौली (रोहतक)	५०-००
२०	श्री चांदराम आर्य हनुमान कालोनी (रोहतक)	५१-००
२१	श्री श्रीमती बिमला आर्या कृष्णा कालोनी रोहतक	१०१-००
२२	आर्यसमाज छीलर डाढी (भिवानी)	१०१-००
२३	श्री सुखदेवसिह सुखपुरा रोहतक	५१-००
२४	श्री टेकराम मकडौली खुर्द रोहतक	१०-००
२५	भगत ताराचन्द सुखपुरा चौक रोहतक	१०-००
२६	श्री मेहरसिह रिटायर्ड हेडमास्टर बहुअकबरपुर रोहतक	५०-००
२७	श्री हरदयालसिह आर्य भजनोपदेशक सैक्टर-१४ रोहतक	१०१-००
२८	श्री रखेराम आर्य खरावड (रोहतक)	१०१-००
२९	श्री दयाचन्द आर्य मन्त्री आर्यसमाज खरावड (रोहतक)	१०१-००
३०	श्री प्रहलादसिह आर्य खरावड (रोहतक)	१०१-००
३१	श्री सज्जनसिह आर्य प्रधान आर्यसमाज खरावड (रोहतक)	१०१-००
३२	श्री नरेशकुमार आर्य खरावड (रोहतक)	१०१-००
३३	श्री अनूपसिह खरावड (रोहतक)	२५-००
३४	श्रीमती मुखरी देवी नबरदारनी खरावड (रोहतक)	२५-००
३५	श्री सत्यवीर मलिक खरावड (रोहतक)	५१-००
३६	श्री ईश्वरसिह शास्त्री खरावड (रोहतक)	१०१-००
३७	श्री हरिश्चन्द्र आर्य खरावड (रोहतक)	१०१-००
३८	श्रीमती ताराबाई पत्नी स्व० डा० सोमवीर भरत कालोनी (रोहतक)	१०१-००

आर्यसमाज साबौली जिला सोनीपत का वार्षिक चुनाव

मन्त्री-श्री करतारसिह, प्रधान-श्री वेदसिह, उपप्रधान-श्री सुलतानसिह, कोषाध्यक्ष-श्री सूरतसिह, प्रचारमन्त्री-नारायणसिंह।

—**स्वामी देवानन्द भजनोपदेशक**

अन्तरंग सभासदों एवं विशेष आमन्त्रित सदस्यों की सेवा में आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग सभा की आवश्यक बैठक सभाप्रधान स्वामी ओमानन्द जी की अध्यक्षता में सभा कार्यालय सिद्धान्ती भवन दयानन्दमठ रोहतक मे दिनाक १९ मई २००२ रविवार को प्रात· १० बजे होनी निश्चित हुई है। अत· अन्तरंग सदस्यों से अनुरोध है कि बैठक में समय पर पधारें। —**यशपाल आचार्य सभामन्त्री**

आर्य महासम्मेलन हेतु प्राप्त दानराशि

गतांक से आगे–

क्रम	नाम	राशि
३८६	श्री राममेहर प्रभारी खेड़ी खुम्मार झज्जर	११-००
३८७	श्री आर्यसमाज अर्जुननगर गुड़गांव	१०१-००
३८८	श्री बलजीतसिंह आर्य जूंआ सोनीपत	१००-००
३८९.	श्री प्रशान्तमुनि सिद्धिपुर झज्जर	११-००
३९०	श्री जगदीश मोखरा रोहतक	२१-००
३९१	श्री बलदेव आर्य बौंदकलां भिवानी	१०१-००
३९२	श्री बलवन्तसिंह आर्य मकडौली कला रोहतक	२००-००
३९३.	आर्यसमाज औरंगाबाद फरीदाबाद	१०१-००
३९४	श्री रतनलाल आर्य पाढा करनाल	२१-००
३९५	श्री सतीशचन्द्र भाटिया यमुनानगर	१०१-००
३९६	श्री सतवीरसिंह बीघल सोनीपत	५०-००
३९७	श्री राजसिंह बीघल सोनीपत	५०-००
३९८	श्री जयसिंह सुपुत्र चन्दगीराम पानीपत	२२-००
३९९	श्री रणवीरसिंह पणिहार हिसार	५०-००
४००	श्री यज्ञदत्त गौतम नरेला	१०१-००
४०१	श्री आजादसिंह मंत्री आर्यसमाज छिल्लर भिवानी	५१-००
४०२	श्री रविन्द्र मलिक वसन्त विहार रोहतक	१००-००
४०३	श्री धर्मदेव	५०-००
४०४	श्री रामफल भिवानी	१००-००
४०५	श्री मा० भीमसिंह झज्जर	२०२-००
४०६	आर्यसमाज पिरथला फरीदाबाद	१०२-००
४०७	श्री सुरेश आर्य मालवी जीन्द	२०-००
४०८	श्री सुरेन्द्र आर्य धारीवाल रोहतक	५०-००
४०९	श्री मांगेराम आर्य सतनाली भिवानी	१०-००
४१०	श्री नानकचन्द रादौर यमुनानगर	१०-००
४११	श्री सूलचन्द आर्य रादौर यमुनानगर	१०-००
४१२.	श्री तेजराम धमरौडी	१०-००
४१३	श्री जगदीश जी खेडीकला फरीदाबाद	१०-००
४१४	श्री विजय मुनि मछरौली यमुनानगर	५०-००
४१५	श्री स्वामी दिव्यानन्द रानीपुर यमुनानगर	१०-००
४१६	गुप्तदान	१०-००
४१७	श्री राजकरण बादली झज्जर	१०१-००
४१८	श्री धूपसिंह बादली झज्जर	१०१-००
४१९	श्री सूबेदार रामभगत उखल चना झज्जर	५०-००
४२०	श्री गोविन्दलाल गुडगाव	१०१-००
४२१	श्री आर्यसमाज गुंदियाना यमुनानगर	१००-००
४२२	श्री पृथ्वीसिंह आर्य यमुनानगर	२०-००
४२३	श्री प्रीति भदानी झज्जर	१०-००
४२४	श्री राममेहर आर्य भदानी झज्जर	५०-००
४२५	श्री चन्दनसिंह आर्य गुडगाव	२१-००
४२६	श्री बलवीरसिंह आर्य हिण्डौल भिवानी	११-००
४२७.	श्री सुरेन्द्रसिंह आर्य सुपुत्र श्री इन्द्रसिंह रोहणा	१००-००
४२८	श्रीमती पैरावती सैनी यमुनानगर	१००-००
४२९	श्री प्रवीन बजाज यमुनानगर	१००-००
४३०	श्री गुप्तदान	२०-००
४३१	श्रीमती शान्तिदेवी व श्रीमती करतारदेवी रोहतक	३००-००
४३२	श्री जगदीशचन्द्र भाडौदी रोहतक	१००-००
४३३	श्री मीरसिंह आर्य भिवानी	२१-००
४३४	श्री धर्मवीर जी चावला कालोनी बहादुरगढ	५१-००
४३५.	श्रीमती शान्तिदेवी बल्लबगढ	५१-००
४३६	हवासिंह मोर बरोदा सोनीपत	५१००-००
४३७	आर्यसमाज पाढा करनाल	१०१-००
४३८.	श्री श्रद्धानन्द आर्य बहादुरगढ़	१००-००
४३९	श्रीमती कैलाशवन्ती आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ	१००-००
४४०	श्रीमती राजरानी आर्या आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ	५०-००
४४१	श्री परसराम पटवारी सभा मुख्त्यारेआम	१०१-००
४४२	श्री मनोहरलाल प्रधान आर्यसमाज कलोई सूरा झज्जर	२००-००
४४३	श्री वीरेन्द्रसिंह आर्य कलोई झज्जर	१००-००
४४४	श्री सुकर्मपाल सागवान सैक्टर-६ बहादुरगढ	१०१-००
४४५	आर्यसमाज गोहाना शहर	५००-००
४४६	श्री भीमसिंह आर्य भभेवा रोहतक	५०-००
४४७	आर्यसमाज मन्दिर सघीवाडा नारनौल महेन्द्रगढ	५००-००
४४८	श्री शिवराम सुखपुरा चौक रोहतक	१२-००
४४९	श्री रामफलसिंह जीन्दारणा रोहतक	२१-००
४५०	श्री नरदेव शास्त्री टिटौली रोहतक	५०-००
४५१	श्री ब्रह्मानन्द आर्य बूबका यमुनानगर	१००-००
४५२	श्री जोगेन्द्र आर्य बूबका यमुनानगर	५०-००
४५३	श्री रूलिया जी बूबका यमुनानगर	५०-००
४५४	श्री धर्मसिंह बूबका यमुनानगर	५०-००
४५५	श्री साधुराम जी यमुनानगर	५०-००
४५६	डा अमरसिन्धु सिरसा	१०१-००
४५७	श्री वीरभान आर्य गुडगाव	२१-००
४५८	गुप्तदान	७०-००
४५९	श्री चन्द्र आर्य माजरा M P झज्जर	५०-००
४६०	स्वामी ओमानन्द सभाप्रधान यज्ञ पर मालाओ की राशि	८००-००
४६१	आर्यसमाज जलियावास रेवाडी	१०१-००
४६२	श्री महावीर सगीत केन्द्र रेवाडी	२१-००
४६३	श्री जोगेन्द्रसिंह आर्य भरतपुर राजस्थान	५१-००
४६४	श्री जसवन्तकुमार आर्य साहित्य केन्द्र रेवाडी	२१-००
४६५	श्री रणजीतसिंह सुपुत्र श्री किशनसिंह जाट	५०-००
४६६	श्री रामकिशन शास्त्री गुडगाव	१००-००
४६७	आर्यसमाज ढाकला झज्जर	५००-००
४६८	आर्यसमाज कुतुबपुर कैथल	५१-००
४६९	मा० रणधीरसिंह रैया झज्जर	२५-००
४७०	महाशय डालचन्द आर्य पटौदी गुडगाव	१००-००
४७१	श्री बलवीरसिंह आर्य हिण्डौल भिवानी	१००-००
४७२	श्री शिवनारायण हिण्डौल भिवानी	५०-००
४७३	चौ० लायकराम प्रधान आर्यसमाज नरेला	१००-००
४७४	मा० पूरणसिंह आर्य महामन्त्री आर्यसमाज नरेला	१००-००
४७५	आर्यसमाज नरेला	२००-००
४७६	मा० बलजीतसिंह आर्य चिमनी	५००-००
४७७	गुप्तदान	२०-००
४७८	श्री अजीतसिंह बलियाणा	१००-००
४७९	आर्यसमाज मोखरा	२००-००
४८०	आर्यसमाज माडल टाउन महिला पार्टी रोहतक	५००-००
४८१	आर्यसमाज झिरका गुडगाव	२५०-००
४८२	महामुनि जी गुरुकुल कालवा	५१-००
४८३	श्री नारायणदास सैनी	१०-००
४८४	श्री पी सी आर्य आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ	५१-००
४८५	श्री चादराम फौगाट हनुमान कालोनी रोहतक	५१-००
४८६.	श्री बानवीर कुण्डू हनुमान कालोनी रोहतक	५१-००
४८७	श्री कृष्ण जी शास्त्री भम्भेवा रोहतक	१००-००
४८८	चौ० सूबेसिंह पूर्व सभा उपप्रधान विकासनगर रोहतक	५०५-००
४८९	श्रीमती किताबकौर पाकस्मा रोहतक	१००-००
४९०	मा० निहालसिंह आर्य भिवानी	१००-००
४९१	आर्यसमाज दौंगडा महेन्द्रगढ	५००-००
४९२	आर्यसमाज महेन्द्रगढ	११००-००
४९३.	श्री रामवीर आर्य महेन्द्रगढ	१००-००

४९४	साहिल	२०-००
४९५	आर्यसमाज सिरसा	२१००-००
४९६	श्रीमती सुमित्रा देवी मुरादनगर रोहतक	१०१-००
४९७	श्री हेमन्त व लाजवन्ती रोहतक	२०-००
४९८	श्री रामदूत आर्य सदस्य आर्यसमाज प्रधाना मौहल्ला रोहतक	१०१-००
४९९	श्री जिलेसिह आर्य टिटौली रोहतक	५१-००
५००	श्री प्रतापसिह आर्य चाग भिवानी	१०१-००
५०१	मा० बलवीरसिह आर्य लाढौत रोहतक	१००-००
५०२	श्री सुलतानसिह बलियाणा रोहतक	५१-००
५०३	आर्यसमाज मीरपुर रेवाडी	३१-००
५०४	आर्यसमाज सेहलग महेन्द्रगढ	१०१-००
५०५	श्री मोहनलाल आर्य सैक्टर-७ फरीदाबाद	५०-००
५०६	गुप्तदान	५१-००
५०७	श्री रणसिह आर्य जेवली भिवानी	५०-००
५०८	श्रीमती सुदेश रानी आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ	५१-००
५०९	श्री विद्यावन्ती आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ	५१-००
५१०	आर्यसमाज भटगाव सोनीपत	५००-००
५११	स्त्री आर्यसमाज प्रधाना मौहल्ला रोहतक	१०१-००
५१२	वन्दना माडल स्कूल रोहतक	१०१-००
५१३	मा० महावीर बहादुरगढ	१००-००
५१४	श्री देवसीराम आर्य सिरसा	१०१-००
५१५	श्री छाजूराम आर्यसमाज नाहरी सोनीपत	१०१-००
५१६	आर्यसमाज सफीदो शहर	५१००-००
५१७	प० बक्खसीसचन्द्र भाखडी यमुनानगर	५०-००
५१८	जीन्द से आई हुई बहनो द्वारा	५१-००
५१९	श्री रणधीरसिह कुण्डू बहादुरगढ	५१-००
५२०	श्री महता रविन्द्र आर्य सरस्वती साहित्य सस्थान दिल्ली	१००-००
५२१	स्त्री आर्यसमाज आनन्द विहार दिल्ली	१००-००
५२२	स्वामी दयामुनि विद्यापीठ शिवनगर सोनीपत	१०१-००
५२३	आर्यसमाज हथीन फरीदाबाद	१०१-००
५२४	मन्त्री आर्यसमाज छीपरौली महेन्द्रगढ	१०१-००
५२५	श्री बेगराज आर्य हुमायूपुर रोहतक	५००-००
५२६	आर्यसमाज बहुअकबरपुर	२०१-००
५२७	वेदप्रचार मण्डल रेवाडी	२५१-००
५२८	आर्यसमाज जुड्डी रेवाडी	१०१-००
५२९	श्रीमती सत्यादेवी आर्या आर्यनगर रोहतक	२०-००
५३०	श्री रामसिह बामणौला झज्जर	२०-००
५३१	श्री तेजसिह जहागीरपुर झज्जर	१००-००
५३२	बहन दर्शना देवी भैसवाल कला सोनीपत	१००-००
५३३	आर्यसमाज आहुलाना	२००-००
५३४	आर्य केन्द्रीय सभा फरीदाबाद	२१०००-००
५३५	श्री जगदीपसिह हरयाणा विकलांग समिति करौंथा रोहतक	१००-००
५३६	आर्यसमाज दरियापुर दिल्ली	१००-००
५३७	श्री आर्यसमाज छत्तरगढ बीकानेर	१०१-००
५३८	श्री राममेहर आर्य आहूलाना सोनीपत	५१-००
५३९	श्री इन्द्रसिह वैद्य स्वतन्त्रता सेनानी रिढाना	१०१-००
५४०	श्री ब्रह्मदत्त जी ढासा दिल्ली	१००-००
५४१	श्री योगेन्द्रकुमार जी सोनू टैम्पू सर्विस रोहतक	१५५-००
५४२	श्री बलवीरसिह आर्य बल्ला रेवाडी	२५-००
५४३	श्री रामदिया आर्य बोहर रोहतक	२५-००
५४४	डा० रूपसिह टिटौली रोहतक	१००-००
५४५	श्री वेदप्रकाश आर्य सिसोर महेन्द्रगढ	२१-००
५४६	श्री सतपाल आर्य रोहतक	५०-००
५४७	श्री कृष्णा आर्य जसबीर कालोनी रोहतक	२१-००
५४८	श्रीमती मन्जूरानी जनता कालोनी रोहतक	५०-००
५४९	श्रीमती रमारानी शिवाजी कालोनी रोहतक	५०-००
५५०	डा० आर एस सांगवान प्रधान आर्यसमाज कोर्ट रोड सिरसा	५१००-००
५५१	आर्यसमाज जाजनपुर कैथल	१५१-००
५५२	श्री महेन्द्रसिह दलाल आर्य अध्यापक बहादुरगढ	५०-००
५५३	मा० बलदेवसिह आर्य सुनारियां चौक रोहतक	१००-००
५५४	वानप्रस्थी अनूप जी गुरुकुल लाढौत	५०-००
५५५	श्री फतेहसिह आर्य दूबलधन झज्जर	१००-००
५५६	आर्यसमाज भाडवा भिवानी	५०-००
५५७	श्री विनय व सौरभ नरवाना (जीन्द)	२२-००
५५८	गुप्तदान	२१-००
५५९	श्री रामचन्द्र हुड्डा आसन रोहतक	१००-००
५६०	श्री नरेन्द्र आर्य भापडौदा झज्जर	२००-००
५६१	श्री हरीराम आर्य प्रधान आर्यसमाज तानौत हिसार	१०१-००
५६२	श्री हवासिह व महेन्द्रसिह रोहतक	१००-००
५६३	गुप्तदान	२१-००
५६४	माता शान्तिदेवी आर्या आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ	५१-००
५६५	श्री प्रह्लादसिह आर्य बालक हिसार	५०-००
५६६	गुप्तदान	५००-००
५६७	श्री वीरसिह आर्य भाण्डवा भिवानी	१०-००
५६८	श्री वेदप्रकाश केथकला हिसार	१०-००
५६९	श्री राजेशकुमार आर्य रोहतक	२१-००
५७०	स्वामी ओमानन्द सरस्वती प्रधान गुरुकुल झज्जर (द्वारा सभामत्री)	२२००-००
५७१	दयानन्द महिला महाविद्यालय कुरुक्षेत्र	२५००-००
५७२	चौ० मित्रसैन सिन्धु सैक्टर-१४ रोहतक	१,११,०००-००
५७३	श्री राजपाल आर्य बरहाणा झज्जर	१००-००
५७४	श्री मदनलाल शास्त्री मातनहेल	५०-००
५७५	श्री जगदीश आर्य गोकुल भिवानी	१०१-००
५७६	श्री मास्टर मनीला निवासी	१००-००
५७७	श्री राजेन्द्रसिह माडल टाउन रोहतक	१००-००
५७८	मा० यशवन्तसिह देशवाल बलियाणा	१०१-००
५७९	आर्यसमाज कलानौर रोहतक	२५०-००
५८०	श्री दीपचन्द आर्य जूआ सोनीपत	१००-००
५८१	श्री नारायण रोहतक	३०-००
५८२	श्री वेदप्रकाश वानप्रस्थी साधक द्वारा यज्ञ पर दान प्राप्त की रसीदे	३१८६-००
५८३	आर्यसमाज उचाना जिला जीन्द	१०१-००
५८४	श्री बलवीरसिंह आर्य खैरडी मोड भिवानी रोड	१०१-००
५८५	आर्यसमाज नियाणा हिसार	१०१-००
५८६	आर्यसमाज मानकावास भिवानी	१०१-००
५८७	डा० सत्यवीरसिह सागवान पैतावास कला भिवानी	१०१-००
५८८	श्री जयसिह ठेकेदार पार्क रोड गोहाना सोनीपत	५१००-००
५८९	श्री एस एस ओहल्याण एडवोकेट गोहाना सोनीपत	११००-००
५९०	श्री रणवीरसिह मलिक एडवोकेट गोहाना सोनीपत	२५१-००
५९१	श्री रामकुमार मित्तल एडवोकेट गोहाना सोनीपत	११००-००
५९२	श्री सुरेन्द्र शास्त्री सभाउपमत्री गोहाना सोनीपत	११००-००
५९३	श्री महावीरसिंह आर्य आर्य वेदमन्दिर सेवा सदन झाडसा गुडगाव	२५०-००
५९४	डा० महावीरसिह आर्य भारतीय सेवासदन वेदमन्दिर झाडसा गुडगाव	२५०-००
५९५	श्री नरेन्द्रसिह शौकीन भारतीय सेवासदन वेदमन्दिर झाडसा गुडगांव	२५०-००
५९६	श्री जितेन्द्र आर्य भारतीय सेवासदन वेदमन्दिर झाडसा गुडगाव	२५०-००
५९७	श्री नत्थूसिह आर्य कन्हईवाले भारतीय सेवासदन वेदमन्दिर झाडसा गुडगांव	२५०-००
५९८	श्री दीवानसिह नम्बरदार भारतीय सेवासदन वेदमन्दिर झाडसा गुडगांव	२५०-००
५९९	श्री अतरसिंह दहिया पूर्व सरपच घनबादुर झाडसा गुडगाव	२५०-००
६००	डा० बिशम्भर दयाल आर्य विलासपुर चौक गुडगांव	२५०-००
६०१	मा० खजानसिह मन्त्री आर्यसमाज हेलीमण्डी गुडगांव	२५०-००
६०२	जोगेन्द्रसिह सहरावत प्रधान आर्यसमाज माकडौला गुडगाव	२५०-००

—बलराज, सभा कोषाध्यक्ष

आर्य-संसार

यशवीर शास्त्री को पी-एच.डी. उपाधि

२५ अप्रैल २००२ को दीक्षान्त समारोह में गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय हरिद्वार ने अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन में देश-विदेश के हजारों आर्य प्रतिनिधियों की उपस्थिति में हरयाणा में जिला करनाल के राजकीय उच्च विद्यालय भूसली मे कार्यरत संस्कृत अध्यापक गांव खरकाली निवासी यशवीरसिंह आजाद शास्त्री को उनके शोध विषय **"हरयाणा के लोकगीतों पर आर्यसमाज का प्रभाव"** पर पी-एच डी की उपाधि से विभूषित किया गया। हरयाणा लोकगीत और आर्यसमाज पर किए गए उनके इस शोध पर उनको हरयाणा की कई सस्थाओं ने "आर्यसमाज हिन्दी साहित्य सेवा सम्मान सहित" सम्मानित करने का फैसला भी किया है। श्री शास्त्री जी के कथनानुसार आर्यसमाज और लोकगीतो पर लिखा गया यह शोधप्रबन्ध सम्भवत हरयाणा में ही नहीं अपितु शायद भारत मे ही पहला हो।

—तेजवीर आर्य, मन्त्री आर्यसमाज खरकाली, पो० मधुबन, जिला करनाल

आर्यवीर दल रोहतक की बैठक सम्पन्न

रोहतक। दिनाक ५ मई २००२ को स्थानीय आर्यवीर दल की बैठक मंडलपति श्री देशराज आर्य की अध्यक्षता मे हुई जिसमे २ जून २००२ से ९ जून २००२ तक आर्यवीरों का प्रशिक्षण शिविर श्रीदयानन्दमठ में लगाने का निश्चय किया गया जिसमें १०० (सौ) बच्चो का प्रवेश होगा तथा १७ जून २००२ से २३ जून २००२ तक आर्य वीरागनाओ का शिविर धन्वन्ती आर्य कन्या उच्च विद्यालय में लगाने का निश्चय किया गया। शिविर में भाग लेनेवाले वीरो व वीरागनाओं को लाठी, तलवार, भाला चलाने का अभ्यास एव आसन, व्यायाम, कराटे आदि सिखाए जायेगे। इसके साथ बौद्धिक शिक्षा कार्यक्रम के अन्तर्गत चरित्र निर्माण एव नैतिक शिक्षा की शिक्षा दी जायेगी। शिविर मे भाग लेनेवाले आर्यवीर व आर्यवीरागनाए शिविर के दौरान गुरुकुलीय वातावरण मे रहेगे। **—ओमप्रकाश आर्य,** मन्त्री आर्यवीर दल रोहतक

वैदिक धर्मप्रचारिणी सभा का गठन

गाव-गाव मे वेदप्रचार करने के उद्देश्य से वैदिक धर्मप्रचारिणी सभा का गठन किया गया है। इस सभा के माध्यम से निष्क्रिय आर्यसमाजो को सक्रिय किया जाएगा। नई आर्यसमाजों की स्थापना की जायेगी। गांव व शहरो मे वैदिक धर्म का प्रचार किया जाएगा। सस्ते मूल्यों पर वैदिक साहित्य उपलब्ध कराने का प्रयास किया जाएगा।

बहरहाल सभा का कार्यालय आदित्य आश्रम एकतानगर पलवल मे होगा। इस सभा का सयोजक श्री शिवराम विद्यावाचस्पति को बनाया गया है।

—धनसिंह योगाचार्य

श्रीरामनवमी पर बृहद्यज्ञ सम्पन्न

हरयाणा आर्य युवक परिषद् द्वारा सचालित आदित्य आश्रम एकतानगर पलवल में श्रीराम जयन्ती के उपलक्ष्य मे बृहद्यज्ञ एव वैदिक सत्सग का आयोजन किया गया। श्री शिवराम जी विद्यावाचस्पति ने अपने भाषण मे कहा कि आर्यसमाज श्रीराम को भगवान् मानता है, ईश्वर नहीं। ईश्वर मे भगवान् के समस्त गुण होते हैं। लेकिन भगवान् मे ईश्वर के गुण नहीं होते। आर्यसमाज भगवान् रामजी को ईश्वर का अवतार भी नहीं मानता है। आर्यसमाज मीसा के प्रधान ओमप्रकाश जी शास्त्री ने कार्यक्रम का सयोजन किया। आर्य केन्द्रीय सभा पलवल के प्रधान धनपतराय जी आर्य ने अध्यक्षता की। जनपद की विभिन्न आर्यसमाजों के सैकडों आर्यसामाजिक कार्यकर्ता सम्मिलित हुए।

—विवेकरत्न शास्त्री, प्रवक्ता हरियाणा आर्य युवक परिषद

रामनवमी उत्सव सम्पन्न

रामनवमी का पर्व आर्यसमाज जगाधरी वर्कशाप मे केन्द्रीय आर्यसभा यमुनानगर के तत्त्वावधान में दिनाक २०-४-२००२ रात्रि ८-३० बजे से १०-१५ बजे तक और २१-४-२००२ रविवार प्रात: ८ बजे यज्ञ द्वारा प्रारम्भ हुआ। कार्यक्रम ११-३० बजे सम्पन्न हुआ। इस शुभ अवसर पर प० उपेन्द्रकुमार जी की भजन मण्डली द्वारा भजन हुये और डा० राजेन्द्र जी विद्यालकार कुरुक्षेत्र ने पधारकर मर्यादापुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए मार्गदर्शन किया कि श्रीराम जी का जीवन मनु महाराज द्वारा प्रतिपादित धर्म के लक्षणो से ओतप्रोत रहा और कभी भी जीवन मे विचलित नहीं हुये। हमे उनके जीवन का अनुकरण करना चाहिये। वाल्मीकि रामायण के प्रमाण द्वारा इस भ्रान्ति की कि धोबी के कहने पर माता सीता को महर्षि वाल्मीकि के आश्रम मे छोडा गया था। यह सिद्ध करते हुए उन्होने स्पष्टीकरण देते हुए कहा कि माता सीता गर्भवती थी। पति-पत्नी के आपसी परामर्श से माता सीता जी को श्री लक्ष्मण भ्राता के साथ आश्रम भेजा ताकि उत्तम सन्तान जन्म ले और उन पर वेदानुकूल सस्कार पडे। लगभग सभी यमुनानगर और जगाधरी के आर्यसमाजो से स्त्री-पुरुष शामिल हुए।

आर्यसमाज खैल बाजार पानीपत का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

दिनाक १ मई से ५ मई तक आर्यसमाज मन्दिर खैल बाजार पानीपत की भव्य यज्ञशाला मे यजुर्वेद पारायण महायज्ञ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कन्या गुरुकुल चोटीपुरा की छात्राओ द्वारा वेदपाठ किया गया। श्री भरतलाल जी शास्त्री हासी के प्रतिदिन उपदेश होते रहे। ५ मई को प्रात ९ बजे से १-३० बजे तक वैदिक सस्कृति सम्मेलन के प्रमुख वक्ता श्री भरतलाल शास्त्री थे। प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री सुमन व श्री सुभाष ने अपना कार्यक्रम रखा। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की तरफ से श्री केदारसिह आर्य उपमत्री, श्री लाभसिह आर्य प्रस्तोता व प० चिरजीलाल आर्य भजनोपदेशक भी उपस्थित थे।

आर्यसमाज खैल बाजार के अधिकारियो ने सभी आमत्रित महानुभावो का फूल-माला एव स्मृति-चिह्नो से भव्य स्वागत किया। आर्यसमाज खैल बाजार की तरफ से निर्धन एव असहाय लोगो के लिए धर्मार्थ टी०वी० हॉस्पीटल का भी सचालन किया गया।

शांतियज्ञ एवं श्रद्धाञ्जलि सभा सम्पन्न

आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्ता, हरयाणा के पूर्व मत्री, समाजसेवी, दानवीर चौ० हरिसिह जी सैनी के पिताजी चौ० चन्दूलाल सैनी जों एक परोपकारी तथा आर्यसमाज के प्रति अटूट श्रद्धा रही है, का गत मास देहावसान होने पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की तरफ से श्रद्धाञ्जलि अर्पित की जाती है तथा शोकसतप्त परिवार के प्रति ईश्वर से साहस एव धैर्य की कामना की जाती है, उनकी स्मृति मे २८ अप्रैल २००२ को उनके निवास स्थान हिसार मे विशाल शान्तियज्ञ एव श्रद्धाजलि सभा का आयोजन किया गया जिसमे मुख्य रूप से प्रो० छत्रपाल पूर्व मत्री हरयाणा सरकार, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के मत्री आचार्य यशपाल, कार्यकर्ता प्रधान श्री वेदव्रत शास्त्री, उपमत्री श्री केदारसिह आर्य, स्वामी सुमेधानन्द जी राजस्थान, आचार्य हरिदत्त, आचार्य दयानन्द, प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री रामनिवास, श्री रामरख, श्री मामचन्द जी एव बहन पुष्पा शास्त्री आदि ने भी श्रद्धाजलि सभा मे भाग लिया। २७ तारीख को रात्रि मे भी शाति सभा ईश्वर भक्ति के भजन एव प्रार्थनाए आयोजित की गई तथा २८ अप्रैल को हजारो व्यक्तियो ने दिवगत आत्मा को श्रद्धाजलि दी।

प्रवेश सूचना

श्री महर्षि दयानन्द अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक विद्यालय टंकारा
जिला राजकोट-३६३६५० (गुजरात)

प्रथम पाठ्यक्रम—महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक, हरियाणा से मान्यता प्राप्त मध्यमा, शास्त्री, आचार्य तक का अध्ययन सुलभ है। वेद, दर्शन, उपनिषद्, सस्कृत व्याकरण एव साहित्य तथा सभी सस्कार स्वामी दयानन्द जी द्वारा लिखित सभी ग्रन्थ उपदेश भजनोपदेश का प्रशिक्षण पाना अनिवार्य है। **योग्यता**—सातवीं कक्षा पास प्रवेश के लिए आवेदन करे।

द्वितीय पाठ्यक्रम—पुरोहित, उपदेशक एवं भजनोपदेशक का प्रशिक्षण पानेवाले छात्र आवेदन कर सकते हैं। **योग्यता**—न्यूनतम दसवीं कक्षा पास।

नोट—दोनो प्रकार के पाठ्यक्रमो के प्रशिक्षण के लिये नि शुल्क व्यवस्था है। आवेदन पत्र जमा करने की अन्तिम तिथि ३१ मई, २००२ है।

सम्पर्क करे—
आचार्य विद्यादेव, श्री महर्षि दयानन्द अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक विद्यालय, टकारा, जिला राजकोट-३६३६५० (गुजरात)

विद्वान् उपदेशकों का हार्दिक सम्मान

हम ऐसे विद्वानों का आर्थिक सहायता के साथ सम्मान करते हैं, जो त्यागी, तपस्वी हैं, जिनका जीवन "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" और "मनुर्भव" मे लगा हुआ है। जो विद्वान् धन उपार्जन की दृष्टि से उपदेश करते हैं जैसे हजार रुपये प्रतिदिन की दक्षिणा के इलावा प्रथम श्रेणी का आने जाने का मार्ग व्यय पहले मागते हैं उन्हें बिल्कुल पसन्द नहीं करते। शाही ठाठ से ऐश्वर्य का जीवन व्यतीत करनेवाले व्यक्ति के उपदेश कोई प्रभाव नहीं रखते।

हमे तो महर्षि दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, प० लेखराम, प० गुरुदत्त, महात्मा हसराज जैसे उपदेशको की आवश्यकता है जिन्होने वैदिक धर्म के लिये अपना तन-मन-धन सब कुछ लुटा दिया अर्थात् न्यौछावर कर दिया।

यदि ऐसा कोई शुभचिन्तक महात्मा है तो हमें बताओ। हम उनका हार्दिक अभिनन्दन करेगे और यथासम्भव भेट भी देगे।

—**देवराज आर्यमित्र**, आर्यसमाज कृष्णनगर, दिल्ली-५१

वार्षिक उत्सव सम्पन्न

दिनाक २८ अप्रैल २००२ को आर्यसमाज कृष्णनगर दिल्ली-५१ का वार्षिक उत्सव वेदप्रचार की धारा मे हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। प० चन्द्रदेव शास्त्री ने यजुर्वेद को पूर्ण करते हुये यज्ञ हवन कराया। श्री दिनेशदत्त के मधुर भजन हुये। डा० सत्यव्रत राजेश (ज्वालापुर) ने वेदमन्त्रो के आधार पर मानवता का सन्देश दिया। बालक शौर्य ने ऋषि दयानन्द की वेशभूषा मे आर्यसमाज के दस नियम सुनाये। श्री धर्मपाल आर्य प्रधान केन्द्रीय सभा ने सत्यार्थप्रकाश पढने की प्रेरणा दी। श्री देवराज आर्यमित्र, एस एन कालडा, श्रीमती विद्यावती, श्रीमती राजेश्वरी आर्या को शाल उढाकर सम्मानित किया गया। अन्त मे प्रधान बिशम्बरनाथ अरोडा ने सब महानुभावो का धन्यवाद किया और सभी आगन्तुको ने देशी घी से बना स्वादिष्ट भोजन ग्रहण किया।

—**डा० हरभगवान मलिक**, आर्यसमाज कृष्णनगर, दिल्ली-५१

पांचवीं कक्षा का परिणाम शतप्रतिशत रहा

आर्य कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय कालका जिला पचकूला का पाचवीं कक्षा के बोर्ड का परिणाम शतप्रतिशत रहा।

प्रथम श्रेणी	२६	प्रथम	रोहित	१६६/२००
द्वितीय श्रेणी	२६	द्वितीय	हीना शर्मा	१६३/२००
तृतीय श्रेणी	१६	तृतीय	दीक्षा नेगी वन्दना	१६०/२००

—प्रधानाचार्या, आर्य कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय कालका

गुरुकुल भैयापुर लाढ़ौत, रोहतक

फोन : 26642

प्रवेश प्रारम्भ

१ उत्तर मध्यमा, विशारद या विदसंस्कृत प्लस टू उत्तीर्ण छात्रो का केवल शास्त्री प्रथम वर्ष मे ही प्रवेश प्रारम्भ है। भोजन, शिक्षा तथा आवास मुफ्त, योग्य छात्रो का दूध भी मुफ्त, प्रवेश शुल्क ५०० रुपये।

२ कम्प्यूटर साईंस, साईंस लैबोरेट्री, लाइब्रेरी। मान्यता हरियाणा शिक्षा बोर्ड भिवानी। कक्षा तीसरी से बारहवीं तक। अध्ययन एव आवास हेतु सुविधा सम्पन्न भव्य भवन। खेल के मैदान, सर्वसुलभ शौचालय, बाग-बगीचे, सभी कुछ ऊंची चारदिवारी के अन्तर्गत। कुश्ती, कबड्डी, योगादि के लिए प्रशिक्षक। प्रति सप्ताह खीर, हलवादि ऐच्छिक पौष्टिक भोजन। छोटे बच्चों के लिए धोबी की व्यवस्था। पठन-पाठन के गत वर्षों के सैकड़ों कीर्तिमान। अतिथि रूप में आकर सुव्यवस्था का स्वयं अनुभव करें।

—आचार्य

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ०१२६२-७६८७४, ७७८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ०१२६२-७७७२२) से प्रकाशित।

रोहतक

प्रधानसम्पादक : यशपाल आचार्य, सभामन्त्री | सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री

वर्ष २६ अंक २५ २१ मई, २००२ वार्षिक शुल्क ८०) आजीवन शुल्क ८००) विदेश में २० डॉलर एक प्रति १.७०

क्या यही है महर्षि दयानन्द के सपनों का भारत ?

❑ सुखदेव शास्त्री, महोपदेशक, दयानन्दमठ, रोहतक (हरयाणा)

महान् देशभक्त, महान् देशोद्धारक, वेदोद्धारक, भारतभाग्यविधाता महर्षि दयानन्द सरस्वती महाभारत युद्ध के बाद एक ऐसे महर्षि थे, जिन्हें सर्वथा पतित भारत के भाग्य का विधाता कहा जाता है। मुसलमानों द्वारा अपने सात सौ वर्ष के राज्य मे तथा अंग्रेजों द्वारा अपने ढाई सौ वर्ष के राज्य में जिस पवित्र आर्यावर्त को हिन्दुस्तान तथा भारत को इण्डिया बनाकर छोड दिया था। उस दीन, हीन भारत की सभ्यता एवं वैदिक संस्कृति का पुनरुद्धार करके महर्षि ने संसार के सभी राष्ट्रों से सर्वोच्च गुरु की पदवी से भारत को सम्मानित किया था।

अपने देश की प्रशंसा में महर्षि ११वें समुल्लास में लिखते हैं–"यह आर्यावर्त देश ऐसा है जिसके सदृश भूगोल में दूसरा कोई देश नहीं है इसलिये इस भूमि का नाम सुवर्ण भूमि है, क्योंकि यही सुवर्णादि रत्नों को उत्पन्न करती है। ...जितने भूगोल में देश हैं वे सब इसी देश की प्रशंसा करते और आशा रखते हैं कि पारसमणि पत्थर सुना जाता है, वह तो बात झूठी है, परन्तु आर्यावर्त ही सच्चा पारसमणि है कि जिसको लोहे रूप दरिद्र विदेशी छूते के साथ ही सुवर्ण अर्थात् धनाढ्य हो जाते हैं।" इसके आगे महर्षि ने मनुस्मृति का श्लोक 'एतद्देशप्रसूतस्य०' लिखकर आर्यों के चक्रवर्ती राज्य की प्रशंसा की है। चक्रवर्ती राजाओं के नाम भी दिये हैं। मुसलमानों की बादशाही के सामने शिवाजी व गोविन्दसिंह जी की प्रशंसा करते हुए लिखा है कि इन दोनों ने मुसलमानों के राज्य को छिन्न-भिन्न कर दिया था। महर्षि यह भारत के अतीत ऐतिहासिक सुन्दर सपनों की बातें लिख रहे हैं। आगे जाकर उन्होने अपने जीवन में राष्ट्रहित के कार्यों को करते हुए अपने सुन्दर सपनों का भारत बनाने में अपना सर्वस्व बलिदान कर दिया था। उनके ही सुन्दर सपनों की चर्चा हम यहां कर रहे हैं।

सुन्दर सच्चरित्र भारत बनाने में अपना पहला सपना था–'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' इस वैदिक नाद के आधार पर उन्होंने आर्यराष्ट्र बनाने के लिए कहा था–वेदों की ओर लौटो।" अत एव उन्होंने गुरु से दीक्षा लेकर सर्वप्रथम वेदोद्धार का कार्य सर्वप्रथम हाथ में लिया। लुप्त प्राय वेदों का पुन प्रकाश किया। अपने से पूर्व के तथाकथित विद्वानों के वेदभाष्यों का खण्डन किया क्योंकि उन्होंने वेदों के अर्थों का अनर्थ करके रख दिया था। विदेशी भाष्यकारों मैक्समूलर तथा अन्य कई अंग्रेजों के लिए भाष्यों को सर्वथा त्याज्य बताया। महर्षि ने थोड़े ही काल में वेदों के विषय से सम्बन्धित 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' लिखकर वेदों के विषय को स्पष्ट किया। इसके पश्चात् यजुर्वेदभाष्य तथा ऋग्वेद के सातवें मण्डल तक के मन्त्रों का भाष्य किया था। लोगों को वेदो की ओर प्रेरित करते हुए महर्षि ने आर्यसमाज के तीसरे नियम में लिखा–**"वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना आर्यों का परमधर्म है।"**

आर्यसमाज के लोगों ने महर्षि के इस परमधर्म के आदेश का पालन करने के लिए उस समय अपना सर्वस्व लगा दिया। महर्षि के दीवाने आर्य नेताओं ने महर्षि के अधूरे वेदभाष्य एवं वेदप्रचार के अधूरे कार्य को पूरा करने के लिए गुरुकुलादि संस्था स्थापित करके वेदो के भाष्य कराए एव वेदप्रचार के कार्य को भी वैदिक विद्वानों ने बडी-बडी सभाओं में एव उत्सवों में तथा यज्ञ समारोहो में जाकर वैदिक प्रवचन किए, जो आज तक भी जारी है। स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा स्थापित गुरुकुल कांगडी के स्नातकों ने वेदभाष्य की दिशा मे महान् कार्य किये। चारों वेदों के भाष्य किये गये। हरयाणा में भी गुरुकुलों के स्नातको ने वेदप्रचार मे महान् योगदान दिया। विदेशों में भी वेदो का प्रचार किया।

किन्तु अतीव संवेदना एवं दुःख के साथ लिखना पड रहा है कि क्या आजादी के इन ५० वर्षों मे महर्षि दयानन्द के इस पवित्र कार्य को राष्ट्र के गांधीवादी नेताओं ने आगे बढने दिया? आज स्कूलों की पाठ्यपुस्तको मे वेदो में सोमरस–शराब पीने की बात लिखी चली आती है। आर्य ईरान से आए थे, वेद गडरियों के गीत हैं, इसके साथ ही आज भी भारत के विश्वविद्यालयो मे सायण या मैक्समूलर के ही वेदभाष्य पढ़ाए जा रहे हैं जा वेदों के यथार्थ ज्ञान को कलंकित कर रहे हैं। महर्षि के वेदोद्धार के सपनो का क्या यही भारत है? यही प्रश्न किया जाएगा।

गाधी जी गीता का पाठ करते थे, वे वेदों को नहीं मानते थे। इसके साथ ही वे योगिराज श्रीकृष्ण के बारे में लिखते हैं–"महाभारत के कृष्ण कभी भूमण्डल पर नहीं हुए"–तेज अखबार ५ अक्तूबर १९२५ मे प्रकाशित-प्रार्थना सभा में)।

इसके साथ ही वे वेद और महर्षि दयानन्द के बारे मे अपनी सम्मति देते हुए लिखते हैं–"ऋषि दयानन्द ने सूक्ष्ममूर्तिपूजा चलाई, क्योंकि उन्होने वेद, जो कि अक्षर के हैं और उन्होने वेदो मे सब सत्यविद्याओ का होना बताया है।" (यग इण्डिया २८ मई, १९२४ मे प्रकाशित) जब महात्मा गाधी जैसे उस समय के भारत विभाजन के मान्य नेता वेदो और महर्षि के बारे मे सार्वजनिक रूप से ऐसी टिप्पणी करते हैं तो महर्षि के भारत की उन्नति के उदार सपने कैसे पूरे हो सकते थे। गाधी जी की वेदो के बारे मे कही गई इन बातो को तो छोडिये। वे तो महर्षि दयानन्द के क्रान्तिकारी अमरग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के बारे में भी लिखते हैं–"मैंने सत्यार्थप्रकाश से अधिक निराशाजनक एव भद्दी और कोई पुस्तक नहीं पढ़ी, उन्होंने (दयानन्द ने) संसार भर के एक अत्यन्त विशाल और उदार धर्म को संकुचित बना दिया।" (यग इण्डिया २८ मई, १९२४ मे प्रकाशित)।

यहा गाधी जी द्वारा लिखित उनके प्रार्थना सभा मे दिए गए भाषणो का उल्लेख इसलिए किया गया है कि आजादी के बाद गाधी जी व नेहरू जी के हाथों मे ही राष्ट्र की बागडोर थी, उन्होने पश्चिमी सभ्यता का परिचय देते हुए वेदों को नकार दिया था।

(शेष पृष्ठ दो पर)

वैदिक-स्वाध्याय

हमारी पुकार

आ घा गमत् यदि श्रवत् सहस्रिणीभि: ऊतिभि:।
वाजेभि: उप नो हवम्।।

ऋ० १ ३० ८।। साम० उ० १ २.११ ।। अथर्व० २० २६.२।।

शब्दार्थ–(यदि) यदि (न: हवं) हमारी पुकार (श्रवत्) वह इन्द्र सुन लेवे तो वह (सहस्रिणीभि: ऊतिभि:) अपनी सहस्रो बलशालिनी रक्षाशक्तियों के साथ और (वाजेभि:) सहस्रो ज्ञानबलो के साथ (उपआगमत् घ) निश्चय से आ पहुचता है।

विनय–वह आ जाता है, निश्चय से आ जाता है, हमारे पास आ प्रकट हो जाता है यदि वह सुन लेवे। बस, उसके सुन लेने की देर है। उस तक अपनी सुनाई करना, अपनी रसाई करना बेशक कठिन है। उस तक हमारी पुकार पहुच जाये, इसके लिये हममें कुछ योग्यता चाहिये, हममें कुछ सामर्थ्य चाहिये। पर इसमे कुछ सन्देह नहीं है कि वह परमात्मदेव यदि पुकार सुन लेवे, यदि हमारी प्रार्थना को स्वीकार कर लेवे तो वह निश्चय से आजाता है–और तब तक वह आता है अपनी सहस्रो प्रकार की रक्षाशक्तियों के साथ। हमारी रक्षा के लिये मानो वह अनन्त महाशक्तिनी सेना के साथ आ पहुंचता है। हमारी रक्षा के लिये तो उसकी जरासी शक्ति ही बहुत होती है पर तब यह पता लग जाता है कि उसकी रक्षाशक्ति असीम है। वह हमारे 'हव' पर–पुकार पर–अपने 'वाज' के साथ (ज्ञान-बल के साथ) आ पहुचता है। हम पीडितों की रक्षा कर जाता है और हम अज्ञानान्धकार मे ठोकरे खाते हुओ के लिये ज्ञान-प्रकाश चमका जाता है, पर वह सुन लेवे। कौन कहता है कि वह सुनता नहीं। बेशक, उसके हमारी तरह कान नहीं, पर वह परमात्मदेव बिना कान के सुनता है। यदि हमारी प्रार्थना कल्याण की प्रार्थना होती है और वह सच्चे हृदय से–सर्वात्मभाव से–की गई होती है तो उस प्रार्थना मे यह शक्ति होती है कि वह प्रभु के दरबार मे पहुच सकती है। आह ! हमारी प्रार्थना भी प्रभु के दरबार मे पहुच सके, हममे इतनी स्वार्थशून्यता, आत्मत्याग और पवित्रता होए कि हमारी पुकार उसके यहा तक पहुच सके। यदि हमारी प्रार्थना मे इतनी शक्ति हो, हम अधकार मे पडे हुये, दु:ख-पीडितो, दुर्बलो के हार्दिक करुण-क्रन्दनों मे इतना बल हो कि इन्द्रदेव उसे सुन लेवे तो क्या है ? तब तो क्षण भर मे वे करुणासिन्धु हम डूबतो को बचाने के लिए आ पहुचते हैं। बस, हमारी प्रार्थना उन तक पहुचे, हमारी पुकार मे इतना बल हो, तो देखो, वे प्रभु अपने सब साज-सामान के साथ अपने ज्ञान, बल और ऐश्वर्य के भण्डार के साथ, अपनी दिव्य विभूतियों की फौज के साथ हम मरतो को बचाने के लिये, हम निर्बलों मे बल सचार करने के लिये, हम अधो को अपनी ज्योति से चकाचौंध करने के लिये आ पहुचते हैं। **(वैदिक विनय से)**

क्या यही है महर्षि दयानन्द...... (प्रथम पृष्ठ का शेष)

आज हमारा परम कर्तव्य है कि हम महर्षि के सपनों को भारत का निर्माण करने के लिए वेदो की शिक्षाओं तथा वैदिक धर्म के प्रचार एवं प्रसार के लिए सस्कार की सहायता की भी इच्छा न करते हुए वेदों के प्रचार कार्य को अधिक से अधिक प्रगति दे। यही महर्षि के सपना का सच्चा भारत होगा।

महर्षि ने अपने जीवन की आहुति देकर भी जो दूसरा सपना देखा था–वह था भारत की आजादी का। १८५७ से लेकर ३० अक्तूबर १८८३ तक, अपने बलिदान तक महर्षि भारत की स्वतन्त्रता के लिए जीजान से जनजागरण करते रहे। किन्तु क्या भारत की सम्पूर्ण अखण्ड एव अविभाजित आजादी भारत को मिली ? महर्षि दयानन्द से प्रेरणा पाकर हजारों क्रान्तिकारियो ने भारत की आजादी के लिए फासी के फन्दो को चूमा। महर्षि ने जो आजादी की ज्योति जलाई थी, क्या उसे बुझाकर नहीं रख दिया गया। महर्षि ने स्वय भी अपना बलिदान क्या इसलिए दिया था कि भारत खण्ड होकर टुकडो में बट जाय। क्या शहीदो ने अपने बलिदान इसलिए दिए थे कि मातृभूमि को काट-काटकर फैंक दिया जाय ?

महर्षि ने भारत के अखण्ड सार्वभौम चक्रवर्ती राज्य के सपने देखे थे। क्या वे पूरे हुए ? वीर सावरकर जैसे वीरो ने काले पानी की सजाए २८ वर्ष दो सौ दिन तक काटी (१०५४५ दिन)। स्वामी श्रद्धानन्द १९२६ मे, रामप्रसाद बिस्मिल १९२७ में, लाला लाजपतराय १९२८ में, राजगुरु, सुखदेव भगतसिंह १९३१ में बलिदान होगए। क्या उनके बलिदान खाली गये ? पंजाब केसरी लाला लाजपतराय, भगतसिंह तथा अनेकों पंजाब के शहीदों को अगर यह पता होता कि देश का विभाजन होकर पंजाब का एक भाग पाकिस्तान बन जाएगा तो वे क्या विभाजन होने देते ? कभी भी नहीं। आज एक भारत के दो टुकड़े पाकिस्तान व बंगला देश होगए। क्या और भी किसी देश का विभाजन इतने भयंकर रूप में हुआ है ? फिर आज करोडों बंगलादेशी व पाकिस्तानी घुसपैठिये देश में घुसकर आतंकवादी कार्यवाहियां कर रहे हैं। इन सबका कारण ४५ वर्षों से कांग्रेसी शासन की मुस्लिम नीति है।

महर्षि ने तत्कालीन अपने भाषणों तथा अपने ग्रन्थों में स्वतन्त्रता के लिए कितने प्रयत्न किए आज जो विभाजन आजादी की है क्या इससे महर्षि के सपने पूरे हुए। क्या यही है महर्षि के सपनों का भारत ?

महर्षि ने अपने जीवन में तीसरा जो महान् कार्य किया था, वह गोहत्याबंदी का। यह सपना भी उनका अधूरा ही रहा। महर्षि ने अलग से "गोकरुणानिधि" पुस्तक लिखकर गोहत्या से होनेवाली हानियों को जनता के सामने रक्खा। गोरक्षा से होनेवाले लाभों को भी समझाया। जिस महर्षि ने विदेशी शासकों द्वारा अपनी रक्षार्थ की जानेवाली व्यवस्था को ठुकरा दिया था वही दयानन्द गोमाता के प्राणो की भीख मांगने के लिए उनके द्वार खटखटाने में संकोच नहीं करता। कभी वह अजमेर के कमिश्नर डैविडसन के पास जाता है कभी वह कर्नल ब्रुक्स को हाथ जोड़ता है। इसी क्रम में वह १८७३ में उत्तरप्रदेश के गवर्नर म्योर से मिलने दौडकर फर्रुखाबाद पहुंचता है और उससे याचना के स्वर में कहता है–यदि इंग्लैंड लौटने पर आपको वहां इण्डिया कौंसिल का सदस्य बना दिया जाए तो क्या आप भारत मे गोहत्या बन्द करने का प्रयत्न करेंगे ? गोरक्षा के लिए दयानन्द दीवाना था। इसके लिए उसने जनता से गोहत्या के विरोध मे हस्ताक्षर करवाने आरम्भ किये थे। वे हस्ताक्षर दो करोड कराकर वायसराय लार्ड रिपन व महारानी विक्टोरिया को भेजे जाने थे। किन्तु उनका बलिदान होगया।

गोहत्या बन्द न होने का कारण भी गाधी जी व नेहरू जी ही थे। गाधी जी ने कहा था–भारत में गोहत्या बन्द नहीं हो सकती, क्योंकि यहां पर मुस्लिम तथा अन्य लोग भी रहते हैं, गोहत्या बन्द करना उनके साथ जबरदस्ती होगी।" नेहरू जी ने कहा था–गोहत्याबन्दी के सवाल पर मैं प्रधानमंत्री पद से भी त्यागपत्र दे सकता हू।"

पंचवर्षीय योजना बनाकर देश में मास का उत्पादन बढ़ाकर कांग्रेस सरकारें गोहत्या को बढावा देती रही हैं। वर्ष भर में एक लाख ९० हजार बछडो का डिब्बा बन्द मास अरब देशों को भेजा जाता है। वहा से पैट्रोल मगाया जारहा है। घी, दूध की कमी से राष्ट्र कमजोर होता जारहा है। मास का उत्पादन बढाया जारहा है। पिछले वर्षों में गाय के मास का ७,१२,५०,००० उत्पादन किया गया। यह है अहिंसावादी गांधीवादी सरकारों के कार्य। मास, शराब का प्रचलन बढ रहा है।

महर्षि का चौथा सपना राष्ट्रभाषा हिन्दी का था। क्या वह पूरा हुआ ? आज संसार के १७० देशो में सबकी अपनी-अपनी भाषा है केवलमात्र भारत ही ऐसा देश है जहा आज भी बड़ी बेशर्मी के साथ सारे ही कामकाज में अंग्रेजी का प्रयोग हो रहा है। जब राष्ट्रभाषा का प्रश्न राष्ट्र के संविधान निर्माण के समय सामने आया तो गाधी जी व नेहरू जी ने इसका भारी विरोध किया। गांधी जी ने कहा–भारत की भाषा हिन्दुस्तानी होनी चाहिए, जैसे कि उन्होंने इस भाषा का प्रयोग करके दिखाते हुये कहा था–बेगम सीता महारानी नूरजहां ऐसा कहना चाहिए। नेहरू जी ने तो इस प्रश्न को १९६५ तक पीछे धकेल दिया था। आज भी भारत की संसद् में सभी सदस्य अंग्रेजी का ही प्रयोग करते हैं। आज भारत की भाषा अंग्रेजी है। स्कूलों में भी माध्यम केवलमात्र अंग्रेजी है। अंग्रेजी रहन-सहन, अग्रेजी खान-पान, देश आज भी अग्रेजों का गुलाम है। अंग्रेजी से ईसाइयत फैल रही है। घोर अंग्रेजी राज्य में भी महर्षि ने अपने सभी ग्रन्थ आर्यभाषा हिन्दी में ही लिखे थे। आर्यसमाज ने हिन्दी आन्दोलन भी किया। उसका भी कोई लाभ नहीं हुआ। नेहरू जी झूठ बोलकर कि हिन्दीभाषा को हमने मान लिया है किन्तु बाद में इंकार कर गए। यह सपना भी महर्षि का आज अधूरा ही रह गया।

अन्त में हम सभी देशवासियों से पूछना चाहते हैं कि क्या यही है महर्षि दयानन्द के सपनों का भारत ? क्या यही है भारत के शहीदों का भारत ? यह तो शहीदो का अपमान है।

रक्तदान : जीवनदान

❑ डा० सत्यवीरसिंह मलिक कोआर्डिनेटर ट्रेनिंग टी०ओ०सी० चण्डीगढ़

रक्तदान : उत्तम कार्य–

यह बात ठीक है कि रक्तदान से किसी व्यक्ति को जीवनदान दिया जा सकता है। इसलिये रक्तदान करना उत्तम कार्य है। रक्तदान के कार्यक्रम में व्यक्ति के द्वारा स्वेच्छा से रक्तदान किया जाता है। राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवकों के द्वारा किये जानेवाले अच्छे कामों में रक्तदान करना भी शामिल है।

युवावर्ग में खून का प्रवाह–

इस कार्य में वे युवक-युवतियां भाग लेती हैं जिनमे खून का प्रवाह काफी मात्रा मे होता है। असल में नौजवानों में खून बडी तेजी से बनता है। यहा यह बतलाना भी आवश्यक है कि जवान लडकों मे सामान्य तौर से खून की कमी नहीं होती है, लेकिन कभी-कभी लडकियों में कुछ मात्रा में खून की कमी हो सकती है। यह सम्भावना उनके शरीर की प्राकृतिक बनावट के कारण हो सकती है, अन्यथा कोई कारण इसका नहीं है।

रक्तदान कौन करें–

जिनमें किसी कारण से खून की कमी हो, उनको रक्तदान नहीं करना चाहिये। यदि किसी व्यक्ति को कोई खतरनाक या छूत की बीमारी हो, तो भी रक्तदान नहीं करना चाहिये। साधारणतया थोडे समय पहले ही बीमारी से ग्रस्त रहे व्यक्ति के द्वारा रक्तदान करना भी ठीक नहीं रहता है। किसी का रक्त लेने से पहले डाक्टर भी सावधानी से देखते हैं तथा आवश्यक हिदायतें दे देते हैं। डाक्टर की सलाह तथा हिदायतो को मानना प्रत्येक रक्तदानी का कर्तव्य है। स्वस्थ व रोग रहित व्यक्ति को खुशी से रक्तदान करना चाहिये।

रक्तदान से कमजोरी नहीं–

इतनी बात स्पष्ट है कि रक्तदान करने से किसी व्यक्ति को कोई हानि नहीं होती है। किसी व्यक्ति के द्वारा दिये गये रक्त की पूर्ति थोडे समय मे हो जाती है। रक्तदान करने के बाद व्यक्ति अपना काम पूर्णवत् कर सकता है, इससे कार्य करने की क्षमता में बिल्कुल कमी नहीं आती। जो रक्तदान करते हैं, उनको ब्लड-बैंक की तरफ से प्रमाण-पत्र दिया जाता है। इसके साथ ही रक्तदाता का ब्लड-ग्रुप भी बतलाया जाता है, जो एक छोटी स्लिप पर लिखकर दिया जाता है।

रक्तदानी को सुविधा–

रक्तदान करने से और चाहे कुछ न मिले परन्तु इतनी बात निश्चित है कि अच्छा काम करनेवाले व्यक्ति को आत्म-सन्तोष मिलता है। रक्तदान करनेवाले व्यक्ति को यदि कभी अचानक किसी कारण से रक्त की आवश्यकता पड़ जाये तो रक्तदान का प्रमाणपत्र दिखाने पर वहा के ब्लड बैंक में वाछित ग्रुप का रक्त उपलब्ध होने की दशा मे, उस व्यक्ति को दे दिया जाता है। यदि ऐसा वांछित रक्त उपलब्ध न हो तो रक्तदानी को कभी निराश नहीं होना चाहिये और न डाक्टरों के साथ जिद्द करनी चाहिये। हा, शान्ति से रक्त उपलब्ध करवाने के लिये निवेदन करने में कोई हर्ज नहीं है। डाक्टरों को भी ऐसे लोगों की उदारता से सहायता करनी चाहिये ताकि रक्तदान को बढावा मिल सके।

खून बेचना गैर कानूनी है–

अब भारत सरकार ने नया कानून बनाकर पेशेवर खून बेचनेवालो पर पाबन्दी लगा दी है। सरकार का यह कदम निश्चय ही प्रशंसनीय है, क्योंकि पेशेवर खून बेचनेवाले लोग गरीबी से ग्रस्त होते थे, जो किसी न किसी खतरनाक बीमारी का भी शिकार होते थे। अब खून बेचना अपराध है। पेशेवर खून बेचनेवालों से भूलकर भी रक्त नहीं लेना चाहिये।

नागरिकों की जिम्मेवारी–

ऐसा कानून बनाने पर नागरिकों की जिम्मेदारी ज्यादा बढ़ गई है। अब देश के युवक-युवतियों का कर्तव्य है कि वे ब्लड-बैंक में खून की कमी न आने देवें। इसके साथ ही मानसेवा तथा खतरनाक बीमारियां फैलने की आशंका के कारण ब्लड-बैंकों की संख्या भी सरकार ने सीमित कर दी है। अब कानून के अनुसार सरकार से उपयुक्त लाइसेंस लेकर ही ब्लड-बैंक खोला जा सकता है, अन्यथा रक्त ग्रहण करके करना गैर-कानूनी है और अपराध है।

एच.आई.वी. रहित का प्रमाण-पत्र–

एक विशेष आदेश ब्लड-बैंको के लिए यह किया गया है कि वहा पर उपलब्ध रक्त की बोतलो पर एच.आई.वी. से रहित होने का प्रमाणपत्र उचित अधिकारी द्वारा रक्त की बोतल पर लगवाया जायेगा, जो आवश्यक जाच-पडताल के बाद ही लगाया जायेगा। ध्यान रखना चाहिये कि जिस बोतल पर एच.आई.वी. से मुक्त होने का प्रमाणपत्र न लगा हो, उस बोतल के रक्त का किसी भी अवस्था मे प्रयोग नहीं करना चाहिये, क्योंकि ऐसी असावधानी करने से रक्त संचारित किये गये रोगी के जीवन को खतरा हो सकता है।

परिवार के व्यक्ति का ही रक्त लेवें–

एक अन्य बात ध्यान रखने की यह है कि किसी कारणवश रक्त की जरूरत पडने पर अपने ही परिवार के किसी स्वस्थ व्यक्ति का लेना चाहिए। यदि ऐसा करना सम्भव न हो, तो किसी विश्वस्त मित्र से या किसी खास परिचित व्यक्ति से ही रक्त लेना चाहिये, वरना लाभ की बजाय हानि हो सकती है क्योंकि न मालूम किसी के रक्त मे किसी बीमारी के विषाणु हो।

रक्तदान दिवस–

हमारे कालेजो और युनिवर्सिटियो मे रक्तदान दिवस मनाये जाते है तथा इसके लिये एक दिन का शिविर लगाया जाता है। कभी-कभी कुछ दूसरे सगठन व संस्थाये भी रक्तदान शिविर लगाती हैं। ऐसा करते समय यह आवश्यक है कि इस कार्यक्रम की अच्छी प्रकार मुनादी की जाये, जिससे कि दूसरे लोगो को भी रक्तदान करने की प्रेरणा मिल सके। यदि किसी कालेज मे या सस्था मे रक्तदान करनेवालो की सख्या अधिक हो, तो एक ही बार मे सबको रक्तदान नहीं करना चाहिये। जहा तक सम्भव हो एक दल मे २५ या ३० से अधिक रक्तदानी नहीं होने चाहिए। इसी प्रकार अलग दल बनाकर अलग-अलग दिनो मे रक्तदान हेतु शिविर लगाने चाहिये। ऐसा करना इसलिये आवश्यक है कि हमको दूसरो को भी इस अच्छे काम के लिये प्रेरित करना है। यदि हम ऐसा करेंगे तो निश्चय ही रक्तदान करनेवालो की सख्या मे वृद्धि होगी तथा जरूरत के अनुसार सबको रक्त भी मिल सकेगा।

रक्तदाताओं की सूची बनायें–

यह बडा आवश्यक है कि सामूहिक रूप मे रक्तदान करनेवाले स्वयसेवको की पूरे पते सहित सूची उस सस्था मे किसी एक या दो जिम्मेदार व्यक्तियों के पास रहनी चाहिये, ताकि कभी अचानक जरूरत पडने पर किसी खास वाछित ब्लड-ग्रुप के व्यक्तियो से सम्पर्क किया जा सके। सूची मे अलग-अलग कालम बनाकर ब्लड-ग्रुप लिखना चाहिये। यदि ऐसे लोगो के निवास पर टेलीफोन की सुविधा हो या अन्य शीघ्र सम्पर्क का कोई सूत्र हो, तो वह भी उपर्युक्त सूची मे पते के साथ ही लिखा होना चाहिए।

कर्तव्यपालन–

ध्यान रखने की बात यह है कि यदि हम आज अपना रक्तदान करके किसी जरूरतमन्द की सहायता करेंगे, तो कल को जरूरत पडने पर हमारी मदद करनेवाला भी कोई न कोई मिल जायेगा। यदि हम बिल्कुल स्वार्थी बनकर अपने तक ही सीमित रह जायेंगे, तो फिर हम दूसरो से अपनी सहायता की उम्मीद कैसे कर सकेंगे?

असल मे रक्तदान करना तो एक इन्सानी फर्ज पूरा करना है। इस कर्तव्य का पालन करने मे कभी आलस्य नहीं करना चाहिये। रक्तदान करना हमारा सामाजिक कर्तव्य है।

कई बार किसी दुर्घटना मे घायल होने पर बहुत अधिक खून बह जाता है। मौत से लडाई लडते हुए इस प्रकार के घायल मरीजो के लिए उस समय मिलनेवाला खून का एक-एक कतरा बडा कीमती होता है। ऐसे समय मे जीवन से सघर्ष करते हुए घायल व्यक्ति को खून मिलना नितान्त अनिवार्य होता है। अन्यथा उसका जीवन बचने की सम्भावना क्षीण हो जाती है। रक्तदान करके इस प्रकार के लोगो को नया जीवन देनेवाले लोग बडा शुभकर्म करते हैं। खेद इस बात का है कि इस प्रकार के रक्तदाता अधिक नहीं हैं। हमे किसी से क्या लेना है? यह स्वार्थलिप्त विचार हमको अत्यधिक सकुचित दायरे मे डाल रहा है। विचार करने की बात यह है कि क्या किसी की कीमती जान बचाने के

लिये हम कुछ भी सहयोग नहीं कर सकते ? अवश्य ही बिना झिझक के ऐसा कर सकते हैं बात तो केवल भावना की है। अत आवश्यकता पडने पर रक्तदान अवश्य करना चाहिये।

चेतना अभियान—

युवावर्ग को रक्तदान का महत्त्व समझना चाहिये। रक्तदान के प्रति युवावर्ग मे चेतना अभियान चलाकर जागृति पैदा करनी चाहिये। रक्तदान भारत मे जन-आन्दोलन बन जावे, इसके लिए हमको मिलकर कोशिश करनी चाहिये। राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयसेवको को इस दिशा मे अधिक सक्रिय होना चाहिए। जब कभी भी उनकी सस्था मे रक्तदान के लिये शिविर का आयोजन किया जाये, तो उनको खुशी के साथ खुद आगे बढकर रक्तदान करना चाहिये तथा अपने दूसरे साथियो को भी ऐसा करने की प्रेरणा देनी चाहिए। क्या ही अच्छा हो, यदि कुछ युवक किसी के बुझते हुए जीवनरूपी चिरागो को अपना कीमती खून देकर उनको रोशन करना अपना मिशन बना लेवे और तदनुसार आचरण एव प्रयत्न करना आरम्भ कर देवे। निश्चय ही आपके द्वारा किया गया रक्तदान किसी के लिये जीवनदान हो सकता है।

रक्तदान की मात्रा—

रक्तदान करने का इच्छुक व्यक्ति एक बार मे अपना १० प्रतिशत रक्त सुविधापूर्वक दान कर सकता है। इससे अधिक रक्तदान एक बार मे नहीं करना चाहिये। डाक्टरो की टीम के द्वारा रक्तदान के समय एक व्यक्ति का २५० सी.सी. तक रक्त लिया जाता है, इससे अधिक नहीं। यह रक्त देते समय देनेवाले व्यक्ति को किसी प्रकार की पीडा नहीं होती है। किसी भी प्रकार का शक होने पर डाक्टर से तसल्ली करना अच्छा होता है।

रक्त की सम्भाल—

सग्रह किये गये रक्त को रक्त-बैंक मे २० दिन तक रखा जाता है। इस ब्लड को बोतल मे सुरक्षित करके किसी भी प्रकार के सक्रमण से बचाया जाता है। इस रक्त के एच.आई.वाई. से रहित होने की भी जाच की जाती है तथा ठीक पाने पर उस बोतल के ऊपर रक्त के सक्रमण रहित होने का प्रमाण-पत्र लगाया जाता है। बोतलो मे बन्द यह रक्त ४ सेटीग्रेट तापमान पर रखा जाता है। ब्लड सैल १२० दिन तक रहता है, फिर खुद ही खत्म हो जाता है।

आप्रेशन (शल्यक्रिया) के लिये—

जहा तक हो सके व्यक्ति को रक्त सचारण से बचना चाहिये। यदि बहुत ही जरूरी हो तभी खून चढवाना चाहिये। अगर किसी व्यक्ति को डाक्टर ने शल्यक्रिया या आप्रेशन की सलाह दी हो और व्यक्ति को पहले ही पता हो कि मुझे कुछ दिन के बाद रक्त की जरूरत पडेगी, तो उसको ऐसा करने से कई दिन पहले अपना रक्त निकलवा कर ब्लड-बैंक मे सुरक्षित करना देना चाहिये। यह ढग अपनाने से किसी प्रकार के सक्रमण का खतरा नहीं रहेगा और न किसी दूसरे के खून की जरूरत पडेगी। इस रक्त-सचारण के लिये भी सूई और सिरिंज अपना ही खरीद लेना चाहिये।

विशेष सावधानी—

१ रक्तदान करने से व्यक्ति को किसी बीमारी के लगने की सम्भावना नहीं होती।
२ किसी व्यक्ति के बहते हुए खून को खुले हाथ न लगाये। घायल व्यक्ति की मदद करने के लिये रबड या प्लास्टिक या पोलीथीन के दस्ताने पहन लेवे वरना आपको खतरा हो सकता है।
३ यदि हो सके तो स्वय इजेक्शन लगवाने से बचे। यदि इजेक्शन लगवाना अति आवश्यक हो तो अपना सिरिंज, सूई लेवे या फिर २० मिनट तक पानी मे उबाल कर विषाणु रहित किये गये सिरिंज का प्रयोग करे। इस सम्बन्ध मे असावधानी जानलेवा सिद्ध हो सकती है।
४ कुम्भ मेले सूर्य ग्रहण मेले या उर्स आदि अधिक भीड-भाड़वाले स्थानो पर जाने से पहले सक्रमित बीमारियो की रोकथाम के लिये टीका सावधानी से लगवा कर जावे।

नि सन्देह रक्तदान करना अच्छा काम है। रक्तदान से किसी का जीवन बचाया जा सकता है। प्रबुद्ध नागरिकों को इसका प्रचार करना चाहिये।

आर्यसमाज के चुनाव सम्पन्न

रेवाड़ी, मुख्य आर्यसमाज की एक बैठक स्थानीय आर्यसमाज में हुई जिसमें समाज के नये पदाधिकारियों एवं कार्यकारिणी का गठन किया गया।

समाज की इस बैठक में सर्वसम्मति से कैप्टन रघुवीरसिह को प्रधान मनोनीत किया गया। बैठक मे सुखदेव आर्य तथा डा हरिश्चन्द्र को उप-प्रधान, परमानन्द वसु को मत्री, लक्ष्मीनारायण को उपमंत्री, मनोहरलाल को कोषाध्यक्ष, कमला आर्य को पुस्तकालयाध्यक्ष, रामकुमार को लेखानिरीक्षक चुना गया।

आर्यसमाज मठपारा दुर्ग (म०प्र०) का चुनाव

प्रधान-श्री गुलाबचन्द जी वानप्रस्थी, उपप्रधान-श्री ओमप्रकाश गुप्ता, श्री शिवनाथसिह, मत्री-श्री विनोदबिहारी सक्सेना, उपमंत्री-श्री विनीत श्रीवास्तव, श्रीमती अनीता तलवार, कोषाध्यक्ष-श्रीमती अजना देवी शास्त्री, पुस्तकाध्यक्ष-श्री फागूराम पोटाई, प्रचारमंत्री-श्री खेमनलाल चौधरी, आर्यवीर दल अधिष्ठाता-श्री लोकनाथ शास्त्री।

हांसी ने एक और आर्यवीर खोया

कर्मठ आर्यवीर श्री कुलदीप आर्य का हृदयगति रुक जाने से आकस्मिक निधन होगया। वे ३० वर्ष के थे। प्रत्येक रविवार को आर्यसमाज के सत्संग मे अवश्य जाया करते थे। उनकी शोकसभा ६ मई को पजाबी धर्मशाला लाल सडक हासी मे हुई। पूर्व विधायक श्री अमीरचन्द मक्कड, नगर परिषद् प्रधान श्री अशोक वकीलां, नगरपार्षद श्री राधेश्याम गहलोत, काग्रेस नेता श्री विनोद भयाना, वैदिक विद्वान् आचार्य रामसुफल शास्त्री, प० विजयपाल आर्य (पुरोहित), श्री सोहनलाल भयाना उपप्रधान आर्यसमाज हासी सहित अनेक गणमान्य व्यक्तियो ने भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित की। परमपिता परमात्मा दिवगत आत्मा को सद्गति एव शान्ति प्रदान करे एवं परिवार जनो को दु ख सहने की शक्ति दे।

शोकाकुल—समस्त पदाधिकारी व सदस्यगण,
आर्यवीर दल हासी (हिसार) हरयाणा

आर्यवीर ग्रीष्मकालीन शिविर

आर्यवीर दल हरयाणा प्रान्त की ओर से इस वर्ष भी अनेक शिविरों का आयोजन किया जारहा है। स्कूलों एवं कालेजों में १८ मई से ३० जून तक अवकाश होगा। इन दिनों में युवकों को चरित्र निर्माण, नैतिकता, देशभक्ति, अनुशासन तथा ब्रह्मचर्य की शिक्षा देने के लिए शिविरों के माध्यम से प्रयास किया जायेगा। सदाचार संयम का पालन करते हुए इन्हे योगासन, प्राणायाम, जुडो, कराटे, तलवार, लाठी-भाला तथा आधुनिक व्यायाम का प्रशिक्षण दिया जाएगा। सभी आर्यजनों से निवेदन है कि वह अपने युवकों को महर्षि दयानन्द की सेना मे भर्ती करने के लिए शिविरों में भेजें।

कार्यक्रम अनुसार निम्नलिखित शिविर आयोजित किये जायेंगे-

क्र०	दिनांक से	दिनांक तक	स्थान
१	१८-५-०२	२६-५-०२	आर्य पब्लिक स्कूल गुडगाव
२	१८-५-०२	२६-५-०२	आर्यसमाज नारनौल
३	२६-५-०२	२-६-०२	गांव बाछौत (कनीना)
४	१८-५-०२	२६-५-०२	पलवल
५	२६-५-०२	२-६-०२	डीएवी स्कूल हासी
६	२६-५-०२	२-६-०२	ओम् योग सस्थान पाली
	(प्रान्तीय शिविर)		(बल्लबगढ)
७	२-६-०२	९-६-०२	दयानन्दमठ रोहतक
८	३-६-०२	१६-६-०२	श्रीमद्दयानन्द ज्योतिपीठ गुरुकुल
	(राष्ट्रीय शिविर)		पोंढा, दून वाटिका-२ देहरादून
९	१७-६-०२	२३-६-०२	धन्वन्ती आर्य कन्या विद्यालय
	(वीरांगना शिविर)		रोहतक
१०	१७-६-०२	२३-६-०२	गांव जुआ (सोनीपत)
११	२३-६-०२	३०-६-०२	गाव माहरा (सोनीपत)
१२	२३-६-०२	३०-६-०२	योग-स्थली महेन्द्रगढ

नोट—

१ राजस्थान का प्रान्तीय शिविर २८ मई से ४ जून तक ऋषि उद्यान अजमेर मे होगा।

२ पानीपत, जीन्द, दादरी, यमुनानगर, अम्बाला, गन्नौर, भिवानी, करनाल, कैथल के शिविरो के तिथियो की सूचना बाद में दी जायेगी।

३ शिविरार्थी अपने साथ खाकी नीकर (हाफ-पैण्ट) दो सफेद बनियान, लंगोट, काला कच्छा, पी०टी० शूज, सफेद जुराब, कान तक के माप की लाठी, कापी-पैन, भोजन के लिए बर्तन, ऋतु अनुकूल बिस्तर साथ लाए।

४ प्रवेश के लिए आर्यवीर दल के स्थानीय अधिकारियो से सम्पर्क करे और अपना नाम पंजीकरण करवा लेवें।

निवेदक—**वेदप्रकाश आर्य**, प्रान्तीय मन्त्री

ओ३म्

विशाल राष्ट्रीय पुरोहित प्रशिक्षण शिविर

२६ मई ०२ से ९ जून ०२ तक वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून

१० जून ०२ से २३ जून ०२ तक आर्यसमाज मसूरी, देहरादून

स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती

अध्यक्ष—पातञ्जल योगधाम, आर्यनगर, हरिद्वार

सरक्षक—तपोवन आश्रम, देहरादून

उद्घाटन—**आचार्य प्रेमपाल शास्त्री**, प्रधान पुरोहित सभा, दिल्ली

"अग्निमीळे पुरोहित यज्ञस्य देवमृत्विजम्"

ऋग्वेदीय प्रथम ऋचा मे ईश्वर को पुरोहित कहा गया है। प्रत्येक कार्य मे ईश्वररूपी पुरोहित का धारण किया जाता है। इसी प्रकार भारतीय सस्कृति मे धर्म के कार्यो मे तथा मानव जीवन के सभी सस्कारो मे पुरोहित की प्रमुखता है। योग्य पुरोहित सामान्य यजमानो मे भी श्रद्धा उत्पन्न कर सस्कार प्रेमी बना देता है। इसके बिपरीत अशिक्षित, अयोग्य पुरोहित के कारण श्रद्धालु यजमानो मे अश्रद्धा और नास्तिकता उत्पन्न हो जाती है। इस कारण सभ्यता सस्कृति का सच्चा वैदिक प्रकाश होने मे बाधा रहती है।

उक्त न्यूनता की पूर्ति के लिए तपोवन तथा योगधाम के सयुक्त प्रयास से एक पुरोहित प्रशिक्षण शिविर का विशाल आयोजन किया जारहा है। जिसमें निम्नलिखित सामर्थ्यवाले प्रशिक्षार्थी भाग लेकर योग्य पुरोहित बने। साथ ही प्रात-साय ध्यान योग का क्रियात्मक प्रशिक्षण भी दिया जायेगा।

योग्यता—हाईस्कूल तथा तत्समकक्ष संस्कृत परीक्षा उत्तीर्ण

प्रवेश शुल्क—भोजन, दुग्ध, बिजली आदि का १००० रु०

ऋतु अनुकूल आवश्यक वस्त्र साथ लायें, सस्कारविधि अपने साथ लाये, न होने पर मूल्य से उपलब्ध होगी। पूर्ण शिविर मे रहकर प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले योग्य प्रशिक्षणार्थियो को प्रमाण-पत्र दिये जायेगे। यात्रा व्यय प्रत्येक को स्वय वहन करना होगा।

मार्ग—देहरादून से रायपुर रोड पर तपोवन आश्रम के मुख्य द्वार से १ कि०मी० दूर नाला पानी ग्राम के पास आश्रम है। प्रशिक्षणार्थी २५ मई सायकाल तक आश्रम मे पहुचे।

निवेदक -

जगदीशलाल रहेजा-प्रधान	आचार्य कृष्णदेव मत्री
देवदत्त बाली-मन्त्री	आचार्य यज्ञदेव याज्ञिक
तपोवन, देहरादून	योगधाम आर्यनगर, हरिद्वार

आर्यसमाज के उत्सवों की सूची

१ आर्यसमाज लूखी जिला रेवाडी — २१-२२ मई २००२

२ आचार्य सत्यव्रत आर्य महात्मा प्रभुआश्रित आर्ष गुरुकुल सुन्दरपुर रोहतक द्वारा ग्रामो मे यज्ञ सत्सग तथा रात्रि प्रचार सभा भजनोपदेशक प० तेजवीर आर्य के सहयोग से — २४ मई से १५ जून २००२

३ आर्यसमाज पाढा जिला करनाल — २५ से २६ मई २००२

४ आर्यसमाज बहुअकबरपुर जिला रोहतक — २४ से २६ मई २००२

५ आर्यसमाज भुरथला जिला रेवाडी — ८ से ९ जून २००२

६ आर्यसमाज कनीना जिला महेन्द्रगढ — १५ से १६ जून २००२

७ आर्यसमाज गोहाना मण्डी जिला सोनीपत — २१ से २३ जून २००२

८ आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ जिला झज्जर — २३ से ३० जून २००२ (नि शुल्क ध्यानयोग-वैदिक दम्पती निर्माण सस्कार प्रशिक्षण शिविर, चतुर्वेद शतक-यज्ञ प्राकृतिक चिकित्सा शिविर)

—**सुखदेव शास्त्री, सहायक वेदप्रचाराधिष्ठाता**

आर्य महासम्मेलन हेतु प्राप्त दानराशि

गतांक से आगे—

६०३ आर्यसमाज श्रद्धानगर पलवल २०१-००
६०४ आर्यसमाज पलवल शहर २५०-००
६०५ आर्यसमाज जवाहरनगर पलवल २५०-००
६०६ आर्यसमाज फिरोजपुर झिरका २५१-००
६०७ आर्यसमाज बसई मेव १०१-००
६०८ श्री विजयकुमार आर्यसमाज गुडगाव १०१-००
६०९ आर्यसमाज मन्दिर सत्य सदन पुन्हाना १५१-००
६१० आर्यसमाज मन्दिर नगीना १०१-००
६११ श्री अभयकुमार सोहना ५१-००
६१२ श्री रामपाल शिव कालोनी गुडगाव ५१-००
६१३ श्री दीपककुमार सैनी सोहना ५१-००
६१४ आर्यसमाज एन एच-IV फरीदाबाद १०१-००
६१५ आर्यसमाज मालवीर नगर नई दिल्ली-१७ २५०-००
६१६ श्री भोपालसिह आर्य तिगाव ५१-००
६१७ आर्यसमाज सैक्टर-७ फरीदाबाद २५१-००
६१८ आर्यसमाज बल्लबगढ ११००-००
६१९ शक्ति निगम बल्लबगढ १०००-००
६२० श्री महेन्द्रसिह पटवारी पानीपत ५१-००
६२१ श्री महासिह आर्य सुपुत्र श्री प्यारासिह पानीपत ५०-००
६२२ श्री दलवीरसिह सुपुत्र श्री रघवीरसिह पानीपत ५१-००
६२३ श्री रामकुमार सुपुत्र श्री दुलीचन्द पानीपत ५०-००
६२४ श्री सेवासिह भूतपूर्व सरपच राजा खेडी पानीपत ५०-००
६२५ श्री खजानसिह मलिक सुपुत्र श्री रामजीलाल पानीपत १०१-००
६२६ श्री जिलेसिह मलिक सुपुत्र श्री भरतुराम पानीपत १०१-००
६२७ श्री रामचन्द्र नम्बरदार सुपुत्र श्री जागेराम पानीपत १०१-००
६२८ मिस्त्री लखीराम आर्य पानीपत १२०-००
६२९ श्री चन्दगीराम सुपुत्र श्री श्योसिह पानीपत १०१-००
६३० श्री रामचन्द्र आर्य पानीपत ५१-००
६३१ श्री रतनसिह आर्य सुपुत्र थाम्बुराम कवि पानीपत १२१-००
६३२ श्री सीताराम सुपुत्र श्री जियाराम मतलोडा ५१-००
६३३ श्री सीताराम सरपच रोहतक ५१-००
६३४ श्री सत्यवान नम्बरदार सुपुत्र श्री सूरजभान बहुअकबरपुर ११-००
६३५ श्री जगदीश जी शर्मा सुपुत्र श्री रामकुमार सरपच ब्राह्मणवास १००-००
६३६ श्री देवकराम सुपुत्र श्री शिवलाल ग्राम जसिया १००-००
६३७ श्री दरियावसिह सरपच सुपुत्र श्री छोटूराम सिकन्दरपुर सोनीपत १०१-००
६३८ श्री कर्णसिह सरपच सुपुत्र श्री कालीराम भैंसवाल कला १०२-००
६३९ श्री बस्तीराम जी सुपुत्र श्री भगवानदास फरमाणा ५१-००
६४० श्री शमशेरसिंह सरपंच सुपुत्र श्री पूर्णसिह रुडकी १०१-००
६४१ मा० वेदपाल सुपुत्र श्री मानसिह मिलकपुर ५१-००
६४२ भूतपूर्व सूबेदार रामफल गोधडी ५१-००
६४३ श्री सुरेन्द्रसिह सुपुत्र श्री नारायण निमली ५१-००
६४४ श्री कर्णसिह सरपच सुपुत्र श्री लज्जाराम समसपुर ५०-००
६४५ प्रधान जी आर्यसमाज बादशाहपुर गुडगाव २१००-००
६४६ श्रीमती राज आहूजा बादशाहपुर गुडगांव ५१-००
६४७ श्रीमती उषारानी गुडगाव ५०-००
६४८ श्रीमती विजय भल्ला गुडगाव ५१-००
६४९ श्रीमती स्वराज गुडगाव ५०-००
६५० श्रीमती कौशल्या मनचन्दा गुडगाव ५१-००
६५१ श्रीमती उषा मिगलानी गुडगाव ५१-००
६५२ श्रीमती सुदर्शन अरोडा गुडगांव ५१-००
६५३ श्रीमती प्रेम आहूजा गुडगाव ५०-००
६५४ श्रीमती पुष्पा गुडगाव ५१-००
६५५ श्रीमती सुशीला गुडगाव ५१-००
६५६ श्रीमती सुषमा गुडगाव ५१-००
६५७ श्रीमती मीना चुटानी गुडगाव ५०-००
६५८. श्रीमती स्नेहलता गुडगांव ५०-००
६५९ श्रीमती मिथलेश कौशिक गुडगांव ५०-००
६६० श्री सतीश जुनेजा गुडगांव ५१-००
६६१ जनक मिनोचा गुडगांव ५०-००
६६२ आर्यसमाज जुआ सोनीपत ५०१-००
६६३ आर्यसमाज भैंसवाल कलां सोनीपत ५०१-००
६६४ पांच भाई साबुनवाले फर्म पुनीत
उद्योग प्लाट न० ३७-C सैक्टर-६, फरीदाबाद ५१००-००

क्रमशः —बलराज, सभा कोषाध्यक्ष

महिला आर्यसमाज लाहड़पुर जिला यमुनानगर का चुनाव

प्रधान-श्रीमती बचनी देवी आर्या, मन्त्री-श्रीमती निर्मला देवी आर्या, कोषाध्यक्ष-श्रीमती जीतो देवी आर्या, सचिव-श्रीमती सुषमा देवी आर्या, उपप्रधान-श्रीमती गुरबचनी देवी आर्या, उपमत्री-श्रीमती लीला देवी आर्या, उपसचिव-श्रीमती कमलादेवी आर्या।

वेदप्रचार

गाव खलीला जिला करनाल में सभा के भजनोपदेशक पं० चिरंजीलाल आर्य द्वारा दिनाक २६-२७ अप्रैल २००२ को वेदप्रचार कार्यक्रम किया गया। गांव के काफी लोगो ने इसमे भाग लिया। इस अवसर पर सभा को ५८०/- रु० दान दिया गया। —दयासिंह सरपंच, चन्दनसिंह आर्य, मन्त्री

अब के मार के देख

□ स्वामी वेदमुनि परिव्राजक, अध्यक्ष वैदिक संस्थान नजीबाबाद (उ०प्र०)

एक सहस्राब्दी पुरानी बात है, जब भारत पर शहाबुद्दीन मौहम्मद गौरी ने आक्रमण किया था। उस समय भारत में पृथ्वीराज चौहान का शासन था। पृथ्वीराज चौहान वीर सम्राट् था, उसकी वीरता में संदेह को कोई स्थान नहीं है। शहाबुद्दीन मौहम्मद गौरी की सेना को वीरता तथा अदम्य साहस के साथ भारतीय सेनाओं ने खूब मारा-काटा। यहां तक कि कई सहस्र सेना में से केवल मुट्ठी भर सिपाहियों को लेकर सुलतान शहाबुद्दीन भागने लगा था कि पृथिवीराज के सैनिकों ने उसे गिरफ्तार कर लिया और हथकड़ी लगाकर सम्राट् के सामने ला खड़ा किया। मोहम्मद गौरी रोने लगा और युद्ध के लिये गयी अपनी चढ़ाई को अपनी मूर्खता बताने लगा। गिड़गिडाकर क्षमायाचना की। जब वह अत्यधिक गिड़गिड़ाया तो सम्राट् ने उसे छुड़वा दिया।

उस समय पिटा हुआ गौरी क्षमायाचना कर चला तो गया किन्तु थोडे ही समय के पश्चात् पहले से अधिक सेना लेकर पुनः भारत पर आक्रमण कर दिया और सीमान्त क्षेत्र से मारकाट मचाता दिल्ली आ पहुंचा। घमासान युद्ध हुआ। गौरी फिर पकड़ा गया किन्तु पिछली ही भांति गिड़गिडाकर पुनः छूटा और स्वदेश लौट गया। परन्तु वह निर्लज्ज तीसरी बार पुन एक बडी सेना लेकर भारत पर चढ़ आया, परन्तु भारत के परमवीर तथा नीतिशून्य सम्राट् ने उसे पुन. गजनी लौट जाने दिया। उस म्लेच्छ ने इस बार पुन भारत पर चढाई कर दी।

निरन्तर इसी प्रकार सम्राट् पृथिवीराज ने उसे सोलह बार क्षमा दान दे-देकर छोड़ा। सत्रहवीं बार उस दुष्ट ने पुन भारत पर आक्रमण कर दिया। निरन्तर सोलह बार के युद्धों में सम्राट् की सेना बहुत कुछ कट गई थी। थोडी ही सेना को लेकर सम्राट् ने युद्ध किया और इस बार हार पल्ले पडी तथा सम्राट् को बन्दी बना लिया गया और गजनी ले जाकर उसकी आंखें निकलवा उसे कारागार में डाल दिया गया। सोलह बार भयकर भूल का परिणाम यह हुआ कि अन्धा होकर सम्राट को बन्दीगृह की दीर्घकाल तक यातना भोगनी पडी और भारत को लगभग एक सहस्र वर्ष तक पराधीनता का जीवन जीना पडा।

कहते हैं कि एक बार एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति द्वारा पिटता रहा था किन्तु हर बार यही कहता रहा था कि 'अब के मार के देख'। प्रात से सायं तक पिटा था किन्तु उसकी अब के बार समाप्त नहीं हुई थी। यही बार सम्राट् पृथ्वीराज पर लागू होती है। निरन्तर सोलह बार युद्ध की यन्त्रणा भोगकर भी अब के बार समाप्त नहीं हुई तो सत्रहवीं बार उसका भयंकर दुष्परिणाम भोगना पड़ा। सम्राट् पृथिवीराज ने जो अब के मार प्रारम्भ की थी, वह अब तक भी समाप्त नहीं हो पाई है। हमारे वर्तमानकालिक नेता प्रत्येक बार अपनी वीरता, अपनी सेना की शौर्यगाथायें गाते हैं और फिर 'अब के मार के देख' के स्वर गुंजार कर तथा फिर से 'अब के मार के देख' कहने का अवसर शत्रु को देने के लिये शान्त होकर बैठ जाते हैं।

आधुनिक युग के महान् सुधारक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने सुप्रसिद्ध अमरग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में लिखा है कि "तुमने चौका लगाते-लगाते राजपाट धन-धाम सब पर तो चौका लगा दिया, अब कहीं जाकर बस भी करोगे" आज हमें भारत के नेताओं को यह कहना पड़ रहा है कि भारत के स्वतन्त्र होने के पश्चात् से लगातार भारत पर पाकिस्तान द्वारा आक्रमण हो रहे हैं किन्तु आप लोगों की 'अब के मारके देख' कभी समाप्त होगी या नहीं ? वीर सैनिक प्रत्येक बार पाकिस्तान की सेनाओं को पृथिवीराज सम्राट् की सेनाओं की भांति धूल चटा देती हैं, किन्तु सेना की वीरता के गीत गाकर आप शान्त होकर बैठ जाते हैं। सेना की वीरता व शौर्य के परिणाम स्वरूप भारत को क्या लाभ हो रहा है ? प्रत्येक बार हारते नेता हैं, सेना नहीं हारती। क्या इस बार-बार की नेताओं की गतिविधि सेनाओं का मनोबल नहीं गिराती ? यदि इसी प्रकार सैनिकों का मनोबल गिराया जाता रहा तो सैनिक विद्रोह भी तो होसकता है, जो देश के लिये शुभ नहीं होगा, परन्तु उसका दायित्व तो नेताओं पर ही होगा। क्या भारत के नेताओं के पास इतनी समझ भी नहीं है ? प्रश्न यह है कि अन्ततोगत्वा हमारे नेता कब तक इस प्रकार मूर्खतापूर्ण गतिविधियां अपनाये रहेंगे ?

देश की स्वतन्त्रता के तुरन्त पश्चात् कवायलियों को आगे करके पाकिस्तान ने भारत पर आक्रमण कर दिया। तब गांधी जी ने भी कहा था कि "मेरी अहिंसा तो साधु की अहिंसा है शासन का इस अहिंसा से काम नहीं चलेगा।" यदि कवायलियों की आड में पाकिस्तान की सेनाएं भारत की ओर आरही हैं तो भारत को अपनी सेनाओं का मुंह लाहौर और करांची की ओर कर देना चाहिए। तब कराची ही पाकिस्तान की राजधानी थी, इस्लामाबाद तो बाद मे बसाया गया है। परन्तु भारत के तात्कालिक प्रधानमन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू ने अपने बूढे बापू की लेशमात्र भी नहीं सुनी और कश्मीर मे गिलगित की पहाड़ी चोटी पर चढ़ रही भारत की सेनाओ को युद्धबन्दी का सन्देश भी दिया। यदि यह सन्देश तब सेना को न दिया जाता तो दो घण्टे मे भारत की सेनाएं गिलगित की चोटी पर और वहा से जो पाकिस्तानी तोपे भारत की ओर गोले फेंक रही थी, उन पर भारतीय सेना का अधिकार होकर उनका मुह पाकिस्तान की ओर मोड दिया जाता। कश्मीर जो भारत की घरेलू समस्या थी, उसे यू.एन.ओ मे ले जाकर सदा के लिए उलझा दिया।

सन् १९६२ मे चीन पर आक्रमण किया और भारत की चालीस सहस्र वर्गमील भूमि पर अधिकार कर लिया, जो आज तक उसके अधिकार मे है। प्रधानमन्त्री श्री नेहरू तो 'हिन्दी-चीनी भाई भाई' के नारे लगाते रहे और चीन के तात्कालिक प्रधानमंत्री नेहरू जी के परम मित्र 'हिन्दी-चीनी बाई-बाई' का घोष लगाते हुए अपनी सेनाओ को भारतीय भूमि कब्जाने का सन्देश देते रहे।

अंग्रेज जाते-जाते तिब्बत भारत को सौंप गये थे परन्तु हमारे बुद्धि के भण्डार नीतिविशारद श्री नेहरू जी तिब्बत को थाल मे सजाकर चीन को भेट कर दिया। यदि यह नादानी न की होती तो चीन और भारत के मध्य मे वह 'बफर स्टेट' का काम करता और हम तिब्बतियों को हथियार बाटकर अपने घर बैठे रहते। तब तिब्बत-चीन होता, भारत चीन नहीं। नेहरू जी की नीति ने तिब्बत को चीन गुलाम बनाया और वहा सहस्रो का रक्त बहा तथा तिब्बत के प्रधान दलाईलामा को अपने लगभग एक लाख साथियो के साथ भागकर भारत आना पडा, जो भारत स्थायी रूप से आर्थिक भार बने हुए हैं।

नश्तर को लेके हाथ में, फस्साद ने कहा।
रग-रग में जख्म है, मैं लगाऊ कहा-कहा ?

हमारी इन नीतियो के परिणामस्वरूप पाकिस्तान ने फिर साहस किया और कच्छ के रन पर आक्रमण कर दिया। वह तो भारतीय सेनानायको की जागरूकता के कारण पाकिस्तानी मुह की खाकर भाग गये किन्तु सन् १९६५ में पाकिस्तान ने फिर भारत पर आक्रमण कर दिया। उस समय लालबहादुर शास्त्री भारत के प्रधानमन्त्री थे। भारत के सैनिको ने वीरता के मानक स्थापित किये किन्तु शास्त्री जी ताशकन्द जाकर रूस के दबाव मे जीती बाजी हारे और उसी अवसर पर उन्हे प्राणो से भी हाथ धोने पडे। उस युद्ध मे भारत का लाहौर पर पूर्णतया अधिकार होगया था किन्तु यदि लालबहादुर शास्त्री लाहौर से अपनी सेनाओ को वापस न बुलाते तो लाहौर के बदले पाकिस्तान ने मुजफ्फराबाद का वह कश्मीरी क्षेत्र जिस पर सन् १९४८ से पाकिस्तान ने अधिकार जमा रक्खा है वापस लिया जा सकता था। परन्तु हमारी रगो में तो 'अब के मारके देख' का सूत्र प्रवाहित हो रहा है।

सन् १९७१ में बंगला देश का युद्ध हमे पाकिस्तान से लडना पडा। तब पूर्वीय बंगाल का वह क्षेत्र जो पूर्वीय पाकिस्तान के नाम से जाना जाता था, पाकिस्तान से पृथक् होकर बगला देश बन गया। एक लाख के लगभग पाकिस्तानी जिन्होने हमारी सेना के सामने हथियार डाल दिये थे, भारत द्वारा बन्दी बना लिये गये और पूरे एक वर्ष तक वह भारतीय बन्दी के रूप मे यहा रहे, परन्तु उस युद्ध के कारण भारत की आर्थिक स्थिति जो चरमरा गई थी उस पर इन एक लाख सैनिको का भारी बोझ लद गया। तत्पश्चात् शिमला समझौता हुआ। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री जुल्फिकार भुट्टो और भारत के प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के मध्य यह समझौता हुआ था किन्तु समझौते के तुरन्त बाद लाहौर लाहौर हवाई अड्डे पर पहुचते ही मिया भुट्टो ने इस समझौते को धत्ता बता दिया और एक धूर्ततापूर्ण बयान पाकिस्तान के पत्रकारो को दे दिया। कितनी बार 'अब के मार के देख' का सूत्र गिनाया जाय ?

हमारे वर्तमान प्रधानमन्त्री स्वनामधन्य श्री अटलबिहारी वाजपेयी जी ही क्यों पीछे रहने लगे थे ? कारगिल मे युद्ध लडते समय इतना साहस न जुटा पाये कि भारत की एक सैनिक टुकडी को मुजफ्फराबाद विलय करने का आदेश कर देते। कर भी क्यों देते, क्योंकि एक सहस्र वर्ष से अपनाया गया 'अब के

(शेष पृष्ठ आठ पर)

अब क्या सोच-विचार है ?

❑ राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति, मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ०प्र०)

पाकिस्तान से लगी हमारी सीमाओं पर, दुश्मन की सेनाएं अपनी बेहूदा हरकतों से हमें ललकार रही हैं। हमारी विजयवाहिनी बहादुर सेनाएं दुश्मन को मुहतोड उत्तर देने को तत्पर हैं। हमारी अजेय सेनाओं में दुश्मन से गिन-गिनकर बदला लेने के लिए ओज-तेज तथा क्रोध हिलोरें ले रहा है। वह क्रोध, जिसने कभी भगवान् राम के मन व हृदय को झकझोरा था, जब उन्होंने सारी धरती को असुरों से विहीन करने का व्रत धारण किया था ऋषियों के समक्ष–

निशिचरहीन करौं मही, भुज उठाइ प्रन कीन्ह।

तब क्रोध, जिसने परशुराम को शक्तिविहीन कर दिया था–

देव दनुज भूपति भट नाना, समबल अधिक होउ बलवाना।
जौं रन हमहिं पचारै कोऊ, लरहिं सनेह कालजिमि होऊ।

वह क्रोध जिसने लहराते हुए महासिन्धु को शान्त कर दिया। था–

विनय न मानत जलधि जड़, गए तीन दिन बीत।
लक्ष्मन बान सराधिए, भय बिनु होय न प्रीत।।

वह क्रोध जिसने धरती के असुरों का विनाश करनेवाले योगेश्वर कृष्ण के मन व मस्तिष्क को उद्वेलित कर निन्यानवे पापों अत्याचारों को क्षमा करने के पश्चात् शिशुपाल के सिर को धड से अलग तथा अनेकानेक शक्तिशाली राक्षसों का विनाश करवाया था।

असुरो का वध करने के लिए हमारे रक्त मे उबाल आना ही चाहिए। तभी तो ऋषियों ने परमात्मा से प्रार्थना किया–'**मन्युरसि मन्युं मयि धेहि**' हे परमात्मन्! आप क्रोध स्वरूप हैं, हमें भी क्रोध दीजिए।

विगत बीस वर्षों से भारत का जन्मजात शत्रु पाकिस्तान केसर की क्यारी कश्मीर में ही नहीं, बल्कि सम्पूर्ण राष्ट्र में आसुरी वृत्तियों का पोषण कर आतंक व उग्रवाद को बढावा दे रहा है। प्रतिदिन की आतंकी गतिविधियों से छुटकारा पाने के लिए, शान्ति के समस्त उपाय समाप्त हो चुके हैं। अब तो एक ही उपाय है–'**याचना नहीं अब रण होगा, संघर्ष महाभीषण होगा।**'

भारतीय लोकतंत्र तथा भारतीय संप्रभुता के प्रतीक 'ससद्' पर हमला कर आतंकियों तथा उनके आका पाकिस्तान ने हमारी सहनशक्ति को चुनौती दी है। यह चुनौती स्वीकार कर, शत्रु को रौंदने के अतिरिक्त अब कोई अन्य उपाय शेष नहीं बचा है। रावण-कंस तथा दुर्योधन के पर्याय बने पाकिस्तानी शासकों को धूल चटाना ही होगा। अपराधियों तथा राक्षसो को अपने अन्तिम समय तक सत्य स्वीकारने का भाव नहीं होता। अन्तिम सांस तक वे उल्टा ही सोचते व बोलते तथा करते हैं। आणविक युद्ध की धमकियों को भी अनसुनी करके हमें युद्ध का शखनाद करना ही होगा। हमारा लाखों वर्षों का इतिहास इस बात का ज्वलन्त साक्षी है–'**यतो धर्मस्ततो जय:**' हमारी सेनाओं ने सर्वदा आसुरी दलो का संहार किया है। आज भी हमारी सेनाओं में धर्मयुद्ध के लिए अदम्य उत्साह भरा पड़ा है। राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक परस्पर भेदभाव भुलाकर दुश्मन का सर्वनाश चाहता है। सीमाओं पर अडिग खड़े वीर सेनानियो के पीछे सौ करोड़ नागरिकों का विशाल समुदाय व राष्ट्र कटिबद्ध होकर खड़ा है। शत्रु १६ दिसम्बर १९७१ का वह दिन भूल गया है, जब हमारी अपराजेय सेनाओं ने उसके तिरानवें हजार सैनिको को ढाका के मैदान में बन्दी बनाकर उन्हें प्राणों की भीख प्रदान की थी। पोखरण का परमाणुविक परीक्षण सारी दुनिया की राक्षसी वृत्तियों को ललकारने के लिए ही तो किया गया था। हमारे राजनेताओं ने बार-बार शत्रु को समझौते की मेज पर क्षमादान दिया है तथा बहादुर सेनानियों के शोणित से मिली विजय पर भी पानी फेरा है, इसलिए कि दो भाइयों के मध्य शान्ति स्थापित कर तनाव समाप्त किया जा सके। लेकिन याद रखें–दुष्ट की दुष्टाता उसके जीवन के साथ ही जाती है। महाभारत का युद्ध हमारी दिशानिर्देशित कर रहा है, हमे उससे भी सबक सीखना होगा।

हमारे प्रधानमत्री जी ने संसद् भवन पर हुए हमले के बाद प्रण किया है कि अब आतंकवाद के विरुद्ध आर-पार की लडाई होगी। ईश्वर उन्हें आत्मबल दे, ताकि वे अपनी बात पर खरे उतर सके और प्रतिदिन भारतीय अस्मिता को चुनौती देने की दुस्साहसिक घटनाओं का पटाक्षेप हो सके। आज भारत का बच्चा-बच्चा मा की बलिवेदी पर बलिदान देने तथा शत्रु से गिन-गिनकर बदला लेने हेतु आतुर है–

नक्कारे पे डका बजा है, तू शस्त्रों को अपने सम्भाल।
बुलाती है वीरो को तुरही, तू अब कोई रस्ता निकाल।।

अब के मार के देख.......... (पृष्ठ सात का शेष)

मारके देख' का पुरातन पाठ जो दोहराना था। पाकिस्तान बराबर वार कर रहा है। कश्मीर मे तो मार ही रहा है, भारत के अन्य क्षेत्रों में भी अपनी गुप्तचर एजेंसी आई.एस.आई. के द्वारा बम विस्फोट करा-कराकर भारत को पीट रहा है। लालकिले और भारतीय संसद् तक पर आक्रमण किये जा रहे हैं किन्तु भारत का नेतृत्व कर रहा है–'**अब के मारके देख**'। अमरीका में किये गये एक काण्ड पर ही अमरीका द्वारा तालिबान को तबाह कर दिया गया किन्तु भारत की रगो मे तो वही सम्राट् पृथिवीराजवाला रक्त प्रवाहित हो रहा है अत एव हमारे राजनीति के अनाडी अपनी काल्पनिक विचारों की दुनिया में ही विचर रहे हैं।

अभी कुछ महीने पहले ही कशमीर में एक ग्राम के पैंतीस आदमियों को पंक्तिबद्ध खड़ा करके गोलियों से भून दिया गया। यदि हमारा नेतृत्व राष्ट्रीय गौरव से गौरवान्वित होता तो यह नहीं होसकता था। कारगिल युद्ध के समय मुजफ्फराबाद होकर यदि पाकिस्तान पर आक्रमण कर दिया गया होता तो टूटते हुए पाकिस्तान के लिए वही पर्याप्त था। लम्बे समय से बाट जोह रहे परलून और बिलोच और उनके साथ-साथ सिंधी भी विद्रोह कर पृथक्-पृथक् होजाते और पाकिस्तान पञ्जाबवाला भाग ही रह जाता, जो प्रत्येक समय भारत का चरण चुम्बन करता रहा करता अन्यथा पख्तून बिलोच और सिंधी पाकिस्तान को चैन की नींद नहीं सोने देते। परन्तु हमारा नेतृत्व बन्दर घुड़किया तो देता रहता है किन्तु कुछ कर गुजरने का साहस नहीं जुटा पाता। यह दुर्भाग्य है इस एक अरब से अधिक जनसंख्यावाले राष्ट्र का और उधर इस्राईल जैसा छोटासा कुछ लाख की जनसंख्यावाला राष्ट्र है, जो पूरे अरब राष्ट्रों की नाक में नकेल डाले हुए है। हां, हन्त! यदि हमने '**अब के मारके देख**' का सूत्र न पढा होता। इस्राईल ने यह सूत्र नहीं पढा है। यही कारण है कि वह विश्व में सर ऊंचा कर और सीना तानकर जी रहा है।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ०१२६२–७६८७४, ७७८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ०१२६२–७७७२२) से प्रकाशित।
पत्र मे प्रकाशित लेख सामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री का सहमत होना आवश्यक नहीं। पत्र के प्रत्येक प्रकार के विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक होगा।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३ सृष्टिसंवत् १, ९६, ०८, ५३, १०३
पंजीकरणसंख्या टैक/85-2/2000 ☎ ०१२६२-७७७२२

प्रधानसम्पादक : यशपाल आचार्य, सभामन्त्री सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री

वर्ष २६ अंक २७ ७ जून, २००२ वार्षिक शुल्क ८०) आजीवन शुल्क ८००) विदेश में २० डॉलर एक प्रति १.७०

भारत और आतंकवाद

यशपाल आचार्य, सभामन्त्री

भारत लगातार आतकवाद के सकट से गुजर रहा है। अनेक निरपराध नागरिकों, बच्चो, महिलाओ का खून हो रहा है। आतकवाद को फैलाने के लिए नए-नए तरीके अपनाए जा रहे हैं। इस कारवाई को बाहर और अन्दर बैठे दुश्मन मिलकर चला रहे हैं। देश में अराजकता फैलाकर खडित कर इसकी सप्रभुता को समाप्त करने की एक विस्तृत और गहरी साजिश की रचना की गई है। जहां एक तरफ देश के दुश्मन मानवता का खून कर रहे हैं, वहीं दूसरी तरफ देश को धर्म, सम्प्रदाय, पन्थ, जातिवाद, वर्गवाद में बांटकर कमजोर कर रहे हैं। चोरी, लूटपाट डकैती, अपहरण, बलात्कार की घटनाए प्रतिदिन बढ रही हैं। चोरबाजारी, रिश्वतखोरी मिलावट से आम आदमी त्रस्त है। योग्यता पर अयोग्यता हावी होती जा रही है। न्याय पर अन्याय भारी पड रहा है। धर्म पर अधर्म अपना शिंकजा कसता जा रहा है। धन के भूखे भेडिये, गरीब, असहाय अभाव से त्रस्त लोगो पर कहर बरसा रहे हैं। लोग समाज, सिद्धान्त मानवता से दूर होकर, अपने को मजबूत और समाज को कमजोर करने में जुटे हुए हैं। दूरदर्शन के पागलपन और अश्लील फिल्मों ने देश के युवाओं के दिलो मे वीरता समाप्त कर दी है। विदेशी व्यापारी उदारीकरण के नाम पर देश को लूटने में लगे हैं। पशुबलि, नरबलि, सतिप्रथा, बन्धुआप्रथा, प्राणी हत्या से जीव तडफडा रहे हैं। समाज के ऐसे वातावरण को देखकर लगता है किसी भयकर सुनसान गहरे अन्धकार में डूबे प्राणी कराह रहे हैं और आत्मरक्षा के लिए चीत्कार लगा रहे हों और देश के पहरेदार, समाज के ठेकेदार, शासक इस ताण्डव नृत्य को देखकर आख मूंदकर खर्राटे लगा रहे हैं, आज 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' की भावना पाठमात्र रह गई है। देश धर्म, जाति की रक्षा का भार जैसे दूसरों के कन्धों पर है। अंग्रेज और यवनों की पराधीनता में जकडे इस देश को आजाद कराने मे कितने देशभक्त वीरों ने अपने प्राण बलिदान कर दिए, फासी के तख्ते पर झूले, काले पानी की यातनाएं सहीं, जेलों की काल कोठरियों मे अपने जीवन को आहुत किया। जीवन में नाना प्रकार के कष्ट सहे, परिवार नष्ट हो गए पर देश को आजाद करके ही दम लिया, देश की आजादी की रोशनी हर नागरिक तक पहुंची भी नहीं है और हम फिर पराधीनता की तरफ बढने लगे हैं। देश की राजनीतिक पार्टिया देश को तोड़ने का काम कर रही हैं। वोटो की राजनीति ने देश को खोखला बनाकर रख दिया है। लोगो को धर्म और जाति मे बाटकर कही बहुसख्यको और कहीं अल्पसख्यको की वकालत करके मानवता मे दरार पैदा कर दी है। रात को दगे कराते हैं और सुबह उठकर आसू बहाने पहुच जाते हैं। देश के इतिहास को ही बिगाड दिया है। अग्रेज और यवनो के पीठू बने हुए हैं। इस देश की धरती का अन्न फल फूल खाकर भी जो देश के साथ गद्दारी करता हो, गीत दूसरो के गाता हो, उसे इस देश मे रहने का अधिकार नहीं होना चाहिए। इनकी वकालत करने वाले राजनैतिक भी गद्दारी में शामिल हैं। देशभक्ति की बात कहने वालो को कट्टरपथी कहकर पुकारते हैं। शर्म आनी चाहिए समाज के उन ठेकेदारो को जो अपने भाइयो को पीछे धकेल कर उनको अपमानित करके देश के दुश्मनो को गले लगा रहे हैं। कहीं सद्भावना यात्रा चल रही है और कहीं उनके साथ पदयात्राए निकाल रहे हैं, उनकी सभाओ मे अपने को प्रदर्शित कर रहे हैं यही कारण है आज फिर देश के दुश्मन अपना सिर उठा रहे हैं। जब आपके साथ अन्याय हो रहा हो आप कब तक चुप बैठेंगे "शठे शाठ्य समाचरेत्" की भूमिका आपको निभानी पडेगी। आपको दुश्मन का प्रतिकार करना होगा। गुजरात इसी का परिणाम है। विपक्ष और दूसरे भाइयो को इसमे सयम बरतना चाहिए। ऐसी कारवाई से देश कमजोर होता है। आज देश पर युद्ध के बादल मडरा रहे हैं। भारत के खिलाफ गहरा षड्यन्त्र रचा जा रहा है। मोहम्मद गौरी ने सत्रह बार आक्रमण किया। हर बार माफी मांगता रहा और फिर लडाई की तैयारी करता रहा। आज वही स्थिति पाकिस्तान की है। बार-बार मुह की खाने के बाद भी भारत के खिलाफ षड्यन्त्र रचता रहता है। अब समय आ गया है। भारत सरकार को सबक सिखाना चाहिए। आतकवाद की चपेट मे देश कमजोर होता जा रहा है। आर-पार का निर्णय करने मे अब चूक नहीं करनी चाहिए, समय पर लिया गया निर्णय देशहित में होगा। कहा है ना **"हाथ का चूका फिर मारे समय का चूका सिर मारे"**। पाकिस्तान भारत के हित मे कभी नहीं हो सकता। इसे तो फिर से भारत मे मिलाकर ठीक करना होगा। मुर्शरफ की धमकी का जवाब २७ मई को खेलमन्त्री उमा भारती ने एक कवि की कविता पढकर ठीक दिया है–

कश्मीर की कलियो को अपना लहु पिलाया है।
केसर की क्यारी-क्यारी पर कुर्बानी का साया है।
धोखे से भी आख न करना इसमे जोखिम जान का है।
भूले से भी पाव न रखना ये रास्ता श्मशान का है।
पर निकले तो चले न आना सरहद पारकर उडान पर।
जामा मस्जिद मे नमाज पढने का ख्वाब अगर देखा
तो हम भी फहरा देगे तिरगा पूरे पाकिस्तान पर
करो युद्ध इतिहास तुम्हारा इतने गहरा दफन करे
करो युद्ध हम तुम्हे तुम्हारे शोणित मे नहला दे
लौटा दे भारत को उसकी अपनी सीमाए।

भारत के वीर जवानो ने पाकिस्तान को सदा सबक सिखाया है, आज भी तैयार हैं, आज पूरे देश को युद्ध के प्रति सचेत रहना है, नौजवानो के उत्साह को सीमा पर तैयार बहादुरो के साहस को तथा देश की जनता के दिलो को वीरता से भर देना है। आज दूरदर्शन को भी परदे से फिल्मी सितारे हटाकर वीरो की गौरवगाथाए प्रस्तुत करनी चाहिए। विद्वानो, लेखको, कवियों की वाणी से भी वीरता प्रवाहित होनी चाहिए। देश का हर नागरिक युद्ध के लिए तैयार रहे ऐसा वातावरण बनाना आवश्यक है। मन्दिरो में बैठे पुजारियों कों, पुरोहितों को, नाना मतावम्बियो को, कान मे मत्र पढने वाले गुरुओ को वीरता के उपदेश देने चाहिए। देखो प्राचीन भारत के इतिहास से शिक्षा लो, अन्धविश्वासो के चक्कर मे आकर मन्दिर मे रखी मूर्तियो को भगवान मानकर पण्डे पुजारियो के बहकावे मे आकर पहले ही इस देश का बहुत नुकसान हो गया है। राजा दाहर की प्रजा को मोहम्मद बिन कासिम से मार खानी पडी, काशी विश्वनाथ मन्दिर के भगवान सदा के लिए चले गए। सोमनाथ का मन्दिर जहा अरबो की सम्पत्ति रखी थी महमूद गजनवी इस देश से ले गया। इसलिए आज मन्दिरो मे रखी पत्थरो की मूर्तियो के स्थान पर शिवाजी की तलवार, महाराणा प्रताप का भाला, राम के धनुष और श्री कृष्ण के सुदर्शन चक्र की पूजा होनी चाहिए। अब समय आ गया है खडे होने का, निशाचर को मार गिराने का, देशद्रोहियो को, देश के दुश्मनो को समाप्त करने का,

(लगातार पृष्ठ दो पर)

इस देश की धरती पर रहने वाला, देश की मिट्टी पर पलने वाला प्रत्येक हिन्दू-मुस्लिम-सिख- ईसाई इस देश की रक्षा के लिए तन-मन-धन से तैयार रहे। यह भारत भूमि सदा से ही वीरप्रसविनी रही है। **"वीरभोग्या वसुन्धरा" यह धरा वीरों के** भोगने योग्य है।

जय जवान - जय किसान - जय भारत का उद्घोष सदा गूंजता रहे। वेद भी आदेश देता है। "उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्यवरान् निबोधत" उठो जागो अपने लक्ष्य को बहादुरी से प्राप्त करो।

"हे मातृभूमि हे पितृधाम
प्यारे राष्ट्र तुमको प्रणाम"

वेद में कल्याण का मार्ग

—**स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती**, आर्ष गुरुकुल कालवा

मनुष्य को श्रेष्ठ कल्याण करनेवाले मार्ग पर सदा दृढ रहना चाहिये ससार मे चाहे कितनी ही बाधाए आवे उससे मुह नहीं मोडना चाहिये। उस पर सूर्य और चन्द्र की तरह सदा अटल रहना चाहिये।

चन्द्र टरै सूरज टरै, टरै जगत् व्यवहार।
पै दृढ व्रत हरिचन्द को टरै न सत्यविचार।।

प्रत्येक मनुष्य के तीन प्रकार के साथी होते हैं। मित्र, उदासीन और शत्रु। मनुष्य को सभी प्रकार के व्यक्तियो से कार्य पडता है। अत वेद कहता है जैसे तुम उपकार करने मे समर्थ मित्र के साथ मिलकर रहते हो उसी प्रकार अपकार करनेवाले शत्रु के साथ भी मिलकर रहो। उससे घृणा मत करो, शत्रु को भी शत्रुवत् व्यवहार करने का अवसर मत दो। उससे मिलकर तो रहो, पर असावधान होकर मत रहो। हो सकता है कभी शत्रु भी मित्र बन जाय। घृणा दुर्व्यवहार करने से शत्रुता अधिक बढती है और उसका दोनों के लिए बुरा परिणाम होता है। इसलिये शत्रु को भी प्रेम से अपने वश में करो। ऋग्वेद ५।५१।१५ मे कल्याण मार्ग का वर्णन किया है वह मन्त्र इस प्रकार है-

स्वस्ति पन्थामनु चरेम सूर्याचन्द्रमसाविव।
पुनर्ददताऽघ्नता जानता सगमेमहि।। (ऋग्० ५।५१।१५)

अर्थ —हे परमेश्वर ! (सूर्याचन्द्रमसौ इव) सूर्य और चन्द्रमा के समान (स्वस्ति पन्थाम् अनुचरेम) उत्तम मार्ग का हम अनुसरण करें। अर्थात् कल्याणकारी मार्ग पर हम चले। इसके लिए (पुन ददता अघ्नता जानत सगमेमहि) पुन पुन दानी अहिंसक और ज्ञानी पुरुषो की हम सगति करे।

हमे चाहिये के सूर्य और चन्द्र के समान हम कल्याणकारी पथ पर चलते रहे। जैसे वे अनथक परिश्रम कर सबको सुख देते हैं वैसे ही हम भी जनकल्याण के लिये अनथक परिश्रम करते हुये सबको सुखी करते रहे। जैसे वे बिना भेदभाव सबको प्रकाश प्रदान कर ठोकर खाने और गर्त मे गिरने से बचाते हैं। वैसे ही हम भी सबको ज्ञान प्रदान कर ठोकर खाने और गर्त मे गिरने से बचाये। सूर्य और चन्द्र के समान हम प्रभु के बनाये हुये नियमो मे सदा बधे रहे और नित्य जिसमें सबको सुख बढे, सबको शान्ति मिले और सबको आनन्द मिले ऐसे कल्याणकारी मार्ग पर चले। इसके लिये हम पुन पुन दानियों का, अहिंसकों का, घातपात न करनेवालो का तथा ज्ञानियो का, बुद्धिमानो का सग करे। उनके सम्पर्क से हम स्वाभाविक रूप से सूर्य-चन्द्रमा सम कल्याकारी पथ पर चल सकेंगे और सबका उपकार कर सकेंगे।

विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।
यद् भद्र तन्न आसुव।। (ऋग्० ५।८२।५)

अर्थ —(सवित देव ! विश्वानि दुरितानि परासुव) हे सर्वोत्पादक, सर्वप्रेरक, दिव्यगुणो के भण्डार प्रभुवर ! तू हमारे सब प्रकार के दुर्गुण-दुर्व्यसनो और उनके आधार पर होनेवाले कष्ट-क्लेशो को दूर कर और (यत् भद्र तत् न आसुव) जो भद्र है अर्थात् जो सुखकारी और कल्याणकारी गुण कर्म स्वभाव हैं जिनसे कि हमारा लोक सुखमय बन सकता है और परलोक मे हमारा कल्याण हो सकता है वह सब हमे प्राप्त करा।।

वह परमपिता परमेश्वर, दिव्य गुणों का धाम प्रभुवर हमारे दुरित दूर करे और हमे भद्र प्राप्त कराये। वह सविता है, हमारा जनक है, हमारा उत्पादक है। इसलिये जैसे माता-पिता को अपनी सन्तान के निर्माण मे रुचि होती है, उनके स्वास्थ्य, विद्या और सदाचार की उनको चिन्ता रहती है, ऐसे ही उस प्रभु को भी हमारे स्वास्थ्य की हमारी सुख-सुविधाओ की हमारी विद्या सुशिक्षा आदि की चिन्ता रहती है। यही कारण है कि वह हमे सब प्रकार के वे सब साधन प्रदान करता है जिनसे हमारा शरीर स्वस्थ और पुष्ट हो सकता है, जिनसे कि हमारा मस्तिष्क ज्ञान-विज्ञान से परिपूर्ण हो सकता है, हृदय पवित्र और आहार-व्यवहार शुद्ध हो सकता है। वह हम सबका उत्पादक होने के साथ-साथ हमे नित्य-प्रति सत्प्रेरणा भी देता है, भले ही वह वेद ज्ञान के माध्यम से दे, भीतर से दे वा ससार मे विद्यमान नानाविध कार्यों से दे। हमारा वह जनक परमपिता परमात्मा स्वय सब दुरितो से दूर है और सद्गुणों से युक्त है। इसलिये वह यह भी चाहता है कि मेरी तरह मेरी सन्तान भी दुरितो से पृथक् हो और सद्गुणों से युक्त हो ताकि यह सब प्रकार से लोक मे सुखी और परलोक मे आनन्दित हो सके।

वैदिक-स्वाध्याय

हमें वर दो

पवमानस्य ते वयं पवित्रं अभ्युन्दत:।
सखित्वं आ वृणीमहे।। ऋ० ९।६१।४।। साम० उ० २।१।५।।

शब्दार्थ—(**पवित्रं अभि उन्दत:**) हमारे पवित्र हुए अन्त करण को भक्तिरस से आर्द्र करते हुए (**पवमानस्य ते**) तुम परम पावन के (**सखित्वं**) सख्य को, मित्रभाव को (**वय**) हम (**आवृणीमहे**) वरण करते हैं।

विनय—हे त्रिभुवन पावन ! तुम अपने स्पर्श से इस सब जगत् को पवित्रता दे रहे हो। यह सच है कि तुम्हारे बिना यह ससार बिल्कुल मलिन है। यह ससार तो स्वभात सदा मलिन ही होता रहता है, विकृत होता रहता है, गन्दगिया पैदा करता रहता है। परन्तु तुम्हारी ही नाना प्रकार की पवित्र करने वाली धारायें नाना प्रकार से इस ससार के सब क्षेत्रो से इन मलिनताओ को निरन्तर दूर करती रहती हैं। हे पवमान ! हे सब जगत् को अपने अनवरत प्रवाह से पवित्र करने वाले ! जो मनुष्य तुम्हारे स्वरूप की इस पवित्रता को जानते हैं, वे अपने आपको भी (अपने हृदय को भी) पवित्र करने मे लग जाते हैं, अपने अन्त करण से काम, क्रोध आदि विकारो को निकालकर इसे बडे यत्न से निर्मल बनाते हैं। जब यह पवित्र हो जाता है तो इस पवित्र अन्त करण मे तुम्हारी सात्त्विक धाराये जो आनन्दरस पहुचाती हैं, हृदय को सदा सरस बनाये रहती हैं, उसका वर्णन वाणी से नहीं किया जा सकता। पवित्रान्त करण भक्त लोग ही उसका अनुभव करते हैं। जिनके हृदयों मे द्वेष, क्रोध, जडता आदि का कूडा भरा हुआ है उनके शुष्क हृदय, या जिन्होने प्रेमशक्ति का दुरुपयोग कर विषैले रसो से हृदय को गदा कर रखा है उनके भी मलिन हृदय, इस पवित्र आनन्दरस का आह्लाद क्या जानें ? जब मनोविकारों का यह सूखा या गीला मैल निकल जाता है तभी मनुष्य के हृदय मे तुम्हारे पवित्ररस का स्यन्दन होना प्रारम्भ होता है और उसमे फिर दिनो दिन सात्त्विकरस भरता जाता है। भक्तिभाव के बढाने से जब भक्तों के हृदस-मानस आनन्द के हिलोरे लेने लगते हैं, तो वे देखने योग्य होते हैं। हे सोम ! तब उनके पवित्र हृदय का तुम 'पवमान' के साथ सम्बन्ध जुड गया होता है। इस सम्बन्ध, इस सखित्व, इस एकता के कारण ही उनका हृदय सदा तुम्हारे भक्तिरस के चुआनेवाला झरना बन जाता है। हे प्रभो ! यही सम्बन्ध, अपना यही सखित्व हमे प्रदान करो। हे सोम ! हम तुझसे इसी सखित्व की भिक्षा मागते हैं। हे जगत् को पवित्र करने वाले ! जिस सख्य के हो जाने से तुम्हारी पवित्र कारक धारा मनुष्य के हृदय को सदा भक्तिरस से रसमय बनाये रखती है, उसी सखित्व की भिक्षा हमें प्रदान करो। हम अपने हृदय को पवित्र करते हुए तुमसे यही सखित्व, यही मैत्रीभाव, यही प्रेम-सम्बन्ध प्राप्त करना चाहते हैं, वरना चाहते हैं। यह वर हमें प्रदान करो। **(वैदिक विनय से)**

पत्र

[illegible] प्रेमिका थी ?

सुना है आजकल शहीद-ए-आजम सरदार भगतसिह पर अलग-अलग शीर्षकों से लगभग ६ फिल्में बन रही हैं जैसे २३ मार्च १९३१ शहीद, दी लीजेण्ड आफ भगतसिह, शहीद-ए-आजम भगतसिह, शहीद भगतसिह तथा शहीद। मुझे भगतसिंह के जीवन के बारे में बहुत ही कम जानकारी है, किन्तु है ठोस। उसी के आधार पर कुछ हिचकते व झिझकते हुए इतने बडे फिल्म निर्माताओं से कुछ कहने का साहस कर रहा हू। जिन्हेंने भगतसिंह के जीवन का पता नहीं कितनी बार बारीकियो से अध्ययन किया होगा। ठीक से तो याद नहीं किन्तु बात निश्चित रूप से १९५९, १९६० या १९६१ की होगी। उन दिनो मैं लॉ कॉलेज जालन्धर में पढ़ता था, तब भगतसिह की माता स्वर्गीय विद्यावती जी जालन्धर से कुछ दूरी पर खटकड कला गाव मे रहती थी। मैंने पत्र लिखकर माता जी से मिलने की स्वीकृति चाही जो मुझे अतिशीघ्र मिल गई और मैं उनसे मिलने के लिये उनके घर गया। मैंने उनसे भगतसिह व उसके परिवार के बारे मे जी खोलकर खुले समय मे जानकारिया प्राप्त कीं। माता जी के अनुसार ये उनके जीवन का सबसे कष्ट का समय था। कुछ बातों से वह बहुत दु खी थी। उन बातो को यहा लिखकर मैं नये विवादो को जन्म देना नहीं चाहता तथा अपने लिये भी नई समस्याओ को आमन्त्रित नहीं करना चाहता तथा कुछ जानकारियो की यादे भी धूमिल पड चुकी हैं, किन्तु एक बात जिसको लिखे बिना ठीक नहीं रहेगा जो अत्यन्त आवश्यक है और जिस कारण मैं लेख लिख रहा हू वो मैं अवश्य लिखना चाहूगा, मुझे नहीं पता इसकी प्रतिक्रिया मीठी होगी या कडवी। उन दिनों जालन्धर के एक सिनेमा हाल में शहीद भगतसिह के जीवन बारे एक फिल्म चली थी। नाम याद नहीं, जिसको माजा जी ने स्वय देखा था। उस फिल्म के कुछ दृश्यों के बारे में उनको कडी आपत्तिया थीं। बाकी तो याद नहीं, किन्तु एक बात जो उन्होने कही, निश्चित रूप से याद है। उन्होने बताया था कि उस फिल्म में किसी लडकी को भगतसिह की प्रेमिका दिखाया गया और भगतसिंह के साथ "कुछ बात ठीक से याद नहीं" सगाई सम्बन्ध भी दिखाई गई थी। माता जी ने बताया कि रिश्ते सम्बन्धी कोई बात भी कहीं से थोडी आगे नहीं चली थी। हा, जैसे गाव में बच्चों के लिए रिश्ते आते हैं वैसे ही भगतसिह के लिये भी आते थे। किन्तु जब भगतसिंह ने रिश्ते के बारे में परिवार के सामने कडे शब्दो में दो टूक इनकार कर रखा था तो आगे बात चलाने की कोई नौबत ही नहीं आयी। ये बात मैं माता जी की जानकारी के आधार पर लिख रहा हू। यदि उनकी जानकारी के बाहर कोई बात हो तो कुछ कह नहीं सकता हू। साडर्स वध के पश्चात् मौत की दाढ से कभी कोई निकल आये किन्तु भगतसिह का लाहौर से निकलना अति कठिन था। किन्तु एक नकली नाम से फर्स्ट क्लास का छोटा डिब्बा 'कूपे' लाहौर से कलकत्ता के लिये रिर्जव था। तारे आसमान में हल्के-हल्के झमझमा रहे थे। सुबह पाच बजे की बात है कि नौजवान भगतसिह सिर पर तिरछा फैल्ट हैट लगाये, ऊचे उठे कालर का ओवर कोट पहने, बायी तरफ श्री भगवतीचरण के बेटे 'शची' जो आजकल गाजियाबाद मे रह रहे हैं" को इस तरह गोद में सभाले कि उधर से चेहरा ढक जाये, दाया हाथ ओवर कोट की जेब मे डालकर पिस्तौल के घोडे पर उगली रखकर और अपनी बायीं तरफ श्री भगवतीचरण की धर्मपत्नी दुर्गा भाभी को लिये शान्त धीरे गति से प्लेटफार्म पार कर अपने रिजर्व डिब्बे मे आ बैठे। इन दिनो दुर्गा भाभी से मैं तीन बार आचार्य सुरेश जी, श्री सुखदेव जी शास्त्री के साथ गाजियाबाद मे मिला और भगतसिह के बारे मे बहुत जानकारिया प्राप्त कीं। उन्होने लाहौर से गाडी तक पहुचने, लाहौर से कलकत्ता पहुचने तथा वहा पर निवास सेठ छज्जुराम की कोठी के बारे मे जो जानकारिया दी वह किसी पुस्तक में नहीं मिलती किन्तु आज का ये विषय नहीं है। मैं तो इस प्रकरण मे जो बताना चाहता हू वह यह है कि दुर्गा भाभी से मैंने विशेष तौर पर पूछा था कि क्या भगतसिंह की कोई प्रमिका थी ? उन्होने जरा गर्म होकर कहा वकील साहब क्या पूछ रहे हो ? उन दिनो ये बाते तो दिमाग मे नहीं आ सकती थीं, देश को स्वतन्त्र कराना ही हमारा उद्देश्य था। भगतसिह के जीवन की जानकारी जितनी आर्यसमाज से मिल सकती है उतनी और कहीं से शायद नहीं मिल सकती है। इस देश मे और विदेश मे आर्यसमाज का कोई भी एक घर या कोई भी ऐसी सस्था नहीं होगी जिसमे भगतसिह का चित्र न हो। भगतसिह के दादा जी सरदार अर्जुनसिह ने ऋषि दयानन्द के दर्शन किये तो मुग्ध हो गये और उनका भाषण सुना तो नवजागरण की सामाजिक सेना मे भर्ती होकर आर्यसमाजी बन गये। वे उन थोडे से लोगों मे से थे जिन्हे स्वय ऋषि दयानन्द ने दीक्षा दी थी। यज्ञोपवीत अपने हाथ से पहनाया था, यह सरदार अर्जुनसिह का सास्कृतिक पुनर्जन्म था। मास खाना उन्होने छोड दिया, शराब की बोतलें नाली मे फेंक दी, हवनकुण्ड उनका साथी हो गया और सन्ध्या प्रार्थना सहचरी।

उनका जीवन पूरी तरह बदल गया था और यह एक क्रान्तिकारी छलाग थी। वे पहले जाट सिख थे जिन्होने ऋषि दयानन्द के हाथ से यज्ञोपवीत लिया था, बडे और मझले बेटे किशनसिह, अजीतसिह तथा अपने पोते भगतसिह को डी ए वी सस्थाओ मे शिक्षा दिलवाई। स्वय भी आर्यसमाज के उत्सवो मे भाषण देने जाते थे। वे अपने क्षेत्र के प्रमुख आर्यसमाजी नेताओ मे गिने जाते थे। भगतसिह व उनका परिवार आर्यसमाजी था।

भगतसिह बारे हरयाणा मे आर्यसमाज बाबरा मोहल्ला, खाण्डा खेडी मे उन्हीं के सिन्धु गोत्र के चौ० शीशराम जी आर्यसमाजी के पास, जाट स्कूल रोहतक, गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ तथा अन्य स्थानो पर आने की जानकारी मिलती है। फिल्म निर्माताओ को किसी ऐसे स्थान पर भी शूटिग करनी चाहिए। वे गुरुकुल कागडी मे आचार्य अभयदेव से योग सीखने भी गए थे।

शहीद भगतसिह ने कलकत्ता के कार्नवालिस स्ट्रीट आर्यसमाज मन्दिर मे कुछ समय तक निवास किया। वे वहा क्रान्ति का कार्य करते थे। जब भगतसिह वहा से आये तब तुलसीराम चपरासी को अपनी थाली लोटा देकर आये और कहा कि कोई आवे तो उसको इनमे भोजन करा देना और कहना कि भगतसिह के थाली और लोटे मे भोजन कर रहे हो देश का ध्यान रखना। शहीद भगतसिह का यज्ञोपवीत सस्कार आर्यसमाज के महोपदेशक शास्त्रार्थ महारथी प० लोकनाथ तर्कवाचस्पति द्वारा हुआ था।

फिल्म निर्माताओ से प्रार्थना है कि वे ऐसी फिल्म बनाये जिससे ये देश जाग उठे और आर्यसमाज का प्रभाव जो इस परिवार पर था वह भी दिखाई दे।

इसी योद्धावश की एक बेटी वीरेन्द्र सिन्धु ने "युगद्रष्टा भगतसिह और उनके मृत्युजय पुरखे" जो किताब लिखी उससे भी जानकारी ले और यदि सौभाग्य से वीरेन्द्र सिन्धु जीवित हो तो उनसे भी जानकारी प्राप्त करे तथा हरयाणा के भजनोपदेशकों ने विशेषकर पृथ्वीसिह बेधडक ने भगतसिह की कथा पर भजन बनाये उनमे से भी एक भजन अपनी फिल्म मे अवश्य रखे। आर्यसमाज के त्यागी तपस्वी नेता स्वामी ओमानन्द सरस्वती, डॉ० भवानीलाल भारतीय तथा राजेन्द्र जिज्ञासु जी से भगतसिह के जीवन के बारे मे जानकारिया प्राप्त करनी चाहिए। आर्यसमाज को भी चाहिए कि वे भी एक कमेटी बनाए और यदि इन फिल्मो मे कोई गलत तथ्य हो तो उसका विरोध करे।

—**राममेहर एडवोकेट**, रोहतक

आर्यसमाज सोहनगंज, दिल्ली-७ का चुनाव

सरक्षक—श्री प्रेम सागर जी गुप्त, श्री नरेन्द्र पति रे, प्रधान—श्री सुभाष चन्द्र सर्राफ, उपप्रधान—श्री हरिचन्द कालरा, श्री चाद किशोर अरोडा, मन्त्री—श्री ओम्प्रकाश जी गर्ग, उपमन्त्री—श्री आत्माराम जाजौरिया, श्री वेदरत्न जी, कोषाध्यक्ष—श्री विनय भाटिया जी, पुस्तकाध्यक्ष—श्री नारायणदास जी मित्तल, लेखा परीक्षक—श्री दुर्गा प्रसाद जी गौड।

—**सुभाषचन्द्र सर्राफ**, प्रधान—श्री आर्यसमाज सोहनगज, दिल्ली-७

आर्यसमाज सिरसा द्वारा पूरे जिले में पांच मास में अभूतपूर्व कार्यक्रम किये गये

सिरसा आर्यसमाज द्वारा किये गये कार्यों का विवरण १५ मार्च २००२ तक सर्वहितकारी के अप्रैल अक मे प्रकाशित हो चुका उसके बाद के कार्यक्रमो का विवरण इस प्रकार रहा–

१६ मार्च २००२– १ शातियज्ञ, १ नामकरण सस्कार।

१७ मार्च २००२– जाट धर्मशाला वृहद् यज्ञ।

१८ मार्च २००२– डॉ० सुरेन्द्र गुप्ता की अध्यक्षता मे ऐलनाबाद में यज्ञ व वेद प्रचार।

१९ मार्च २००२– कु० रतनसिह शाहपुरिया का विवाह पूर्ण वैदिक रीति से।

२० मार्च २००२– गाव रायपुर के आयुर्वेद शिविर।

२१-२२ मार्च २००२– भादरा के पास शोरा टाडा में दो दिवसीय वार्षिकोत्सव।

२३ मार्च २००२– श्री एच एस दहिया मुख्य न्यायिक जज के घर हवन-वेद उपदेश।

२४ मार्च २००२– सतोष पुत्री श्री रामकुमार जी शाहपुरिया की शादी।

२५ मार्च २००२– कम्बोज सभा द्वारा बुलाई गई बैठक मे वृहद् यज्ञ उपदेश। हाथी पार्क सिरसा मे

२६ मार्च २००२– महर्षि दयानन्द गोशाला जमाल मे वृहद् यज्ञ वेद उपदेश।

२७ मार्च २००२– सिरसा के पत्रकारो को बुलाकर आर्यसमाज के प्रचार को प्रेस के माध्यम से गति देना।

२८ मार्च २००२– मैनपाल आर्य का विवाह सस्कार पदमपुरा में सम्पन्न करवाया।

२९-३० मार्च २००२– कर्मशाना आर्यसमाज का वार्षिकोत्सव दो दिवसीय मनाया गया।

३१ मार्च २००२– जसदेवसिह गाव बेलरखो जिला जीन्द और शीला देवी पुत्र गुरुवक्स सिह जे जे कालोनी सिरसा का अन्तरजातीय विवाह सम्पन्न करवाया।

अप्रैल २००२

१ अप्रैल २००२– रेलवे कालोनी मे यज्ञ-वेद उपदेश।

२ अप्रैल २००२– दो नामकरण, १ अन्त्येष्टि सस्कार।

३ अप्रैल २००२– १ पुसवन सस्कार, दो चूडाकर्म सस्कार।

४ अप्रैल २००२– गाधी कालोनी, सिरसा मे यज्ञ-उपदेश, १० व्यक्तियो को यज्ञोपवीत सस्कार।

६-७ अप्रैल २००२– रोहतक मे आर्य महासम्मेलन मे २२ व्यक्ति समाज की तरफ व ३३ अन्य गावो से गये।

९-१० अप्रैल २००२– भादरा तहसील राजस्थान के गाव शोर टाडा दो दिन का वार्षिकोत्सव पूरे गाव मे सर्वसम्मति प्रस्ताव पास कर मृत्यु सामाजिक बुराई बद की। ६० व्यक्तियो को यज्ञोपवीत सस्कार दिये।

१८ अप्रैल २००२– गाव केहरवाला मे बृहद् यज्ञ वैदिक सत्सग।

२० अप्रैल २००२– रणजीत दादूका (कर्मशाना) की माता जी की अन्त्येष्टि सस्कार।

२१ अप्रैल २००२– गाव अहमदपुर मे कामरेड भगवान चन्द के घर पारिवारिक सत्सग यज्ञ-हवन, ५ व्यक्तियो को यज्ञोपवीत सस्कार दिए।

२२ अप्रैल २००२– श्री बीरबल जी भादू की अध्यक्षता मे वेदप्रचार, आर्य युवको का सगठन।

२३ अप्रैल २००२– फुसाराम जी आर्य बडी ममेरा की अध्यक्षता मे बृहद् यज्ञ, वेद उपदेश।

२४-२९ अप्रैल २००२– शताब्दी समारोह गुरुकुल कागडी मे भाग लेने हेतु ३५ व्यक्ति गये।

३० अप्रैल २००२– गाव रत्ताखेडा लालचन्द जी नम्बरदार के यज्ञ।

मई २००२

१ मई २००२– गाव नूईयावाली मे १ विवाह सस्कार, १ नामकरण सस्कार करवाया।

२ मई २००२– विनोद कुमार शर्मा पटवारी हल्का माधोसिधाना गाव कानौर जिला रोहतक मे ममता रानी पुत्री जगननाथ कुकड के सग अन्तरजातीय विवाह सस्कार सम्पन्न करवाया।

३ मई २००२– कुलदीप जी जे ई बिजली विभाग पिता की पुण्यतिथि पर यज्ञ-हवन-उपदेश। सभी यज्ञो, उत्सवो मे पुरोहित श्री श्रवणकुमार जी कर्मसाना ही थे।

४ मई २००२– श्री रामसिह जी बैनीवाल की अध्यक्षता में नाथूसरी चौपटा सामूहिक यज्ञ उपदेश।

५ मई २००२– शहर मे शातियज्ञ दो, दो नामकरण सस्कार करवाए।

६ मई २००२– गाव बनवाला जगदीश अग्रवाल के घर पारिवारिक यज्ञ वेद कथा करवाई।

७-८ मई २००२– गाव मेहरवाला रणवीर माचरा के घर यज्ञ-प्रवचन एव ध्यान शिविर।

९ मई २००२– सिरसा मे अनिल राठौड के घर यज्ञ-उपदेश, १४ व्यक्तियों को यज्ञोपवीत सस्कार दिए।

१२ मई २००२– गाव रिंशालिया खेडा के सरपच साहब राम जी कुलरिया ने अपने पारिवारिक सत्संग, बृहद् यज्ञ चारो भाइयों ने सपत्नी यज्ञमान बनकर यज्ञोपवीत लिये और श्रवण कुमार जी के उपदेश से प्रभावित हो कन्या गुरुकुल खोलने के लिये १५ एकड जमीन पचायत की तरफ से देने का वचन दिया।

१३ मई २००२– आईदान बरडवा और उसके तीनो पुत्रों ने सपत्नी यजमान बनकर अपने घर बृहद् यज्ञ करवाया। यज्ञोपवीत लिये एवं ३० अन्य व्यक्तियों ने यज्ञोपवीत लिये। यज्ञमानो ने रामस्नेही मत को त्यागकर वैदिक धर्मी बनना स्वीकार किया।

१४ मई २००२– बुद्धराम जी गाव आशाखेडा तहसील डबवाली ने अपने घर बृहद् यज्ञ करवाया जिसमे सैकडो स्त्री-पुरुषों ने भाग लिया। सपत्नी यज्ञमान बने, सच्चा मत को त्यागकर २० व्यक्तियों द्वारा प्रतिज्ञा की गई कि वैदिक सिद्धान्तो को सर्वोपरि मानेंगे।

१५ मई २००२– उपदेशक श्रवणकुमार जी कर्मशाना के निवास पर बृहद् यज्ञ-उपदेश किया। २५ व्यक्तियो ने यज्ञ-उपदेश सुनकर यज्ञोपवीत धारण किया।

१६ मई २००२– रणवीर और ओ३म् प्रकाश के पुत्र का विवाह संस्कार कराये गये।

१७ मई २००२– २ निष्क्रमण सस्कार, १ नामकरण, १ अन्नप्राशन सस्कार करवाये गये।

स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन पर वृत्तचित्र

श्री सुभाष जी अग्रवाल द्वारा निर्मित अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन पर (फिल्म) वृत्तचित्र मुझे देखने का अवसर मिला। इस फिल्म से प्रभावित होकर मैंने इसके प्रदर्शन की व्यवस्था गुरुकुल कागडी हरिद्वार के शताब्दी समारोह के अवसर पर की जिसे उपस्थित जनसमूह ने बहुत सराहा एव आर्यजनता का उत्साहवर्धन हुआ।

मैं चाहता हू कि हर घर मे इस फिल्म की CD या वीडियो कैसेट होनी चाहिए। भारत की प्रत्येक आर्यसमाज अपनी लाइब्रेरी के लिए इसकी एक प्रति अवश्य रखें एव अपने बिक्री विभाग में कम से कम 25 CD या वीडियो कैसेट क्रय कर इस अच्छे कार्य को सफल बनाने मे यथा शक्ति सहयोग प्रदान करे। जिससे आम जनता को आर्यसमाज के नेताओ और उनके कार्यों का ज्ञान हो सके।

इस फिल्म की VCD और वीडियो कैसेट्स मुम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा C/o आर्यसमाज सान्ताक्रुज (प) वी पी रोड, मुम्बई-54, श्री रामनाथ सहगल, महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट आर्यसमाज अनारकली, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-११०००१ या सीधे गायत्री कम्युनिकेशन्स, 22/7, यशवन्त, पुलिस आफिसर्स, सो सा वर्सोवा मुम्बई-61 से रु 250 की दर से मगाये जा सकते हैं।

–कैप्टन देवरत्न आर्य, प्रधान–सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

नगर आर्यसमाज शाहदरा का वार्षिक उत्सव सम्पन्न

नगर आर्यसमाज शाहदरा का वार्षिक उत्सव ३ मई, २००२ से ५ मई २००२ तक बडी धूमधाम से नगर आर्यसमाज मोहल्ला महाशय डूगर शाहदरा दिल्ली-३२ मे मनाया गया। श्री आचार्य अर्जुनदेव जी वर्णी द्वारा चतुर्वेद पारायण यज्ञ का ब्रह्मत्व करते हुए उच्चारित मन्त्रो की उत्तम व्याख्या से श्रोताओ को आनन्दित कर दिया। वेदकथा आचार्य श्री यशपाल जी "आर्य बन्धु" मुरादाबाद द्वारा ३ दिन ईश्वर की सत्ता के सम्बन्ध मे इस प्रकार उच्चारित की गयी कि सभी उपस्थित श्रोता ईश्वरमय हो गये। बच्चों ने उत्तम कविताये, वेदमन्त्र तथा वैदिक सिद्धान्तो पर सुन्दर लेख प्रस्तुत किये। इसके अतिरिक्त श्री पंडित सत्यस्वरूप जी शास्त्री, डॉ० वीरपाल सिह जी विद्यालकार, श्री राजपाल सिह जी शास्त्री ने जहा वेदोक्त विचार प्रस्तुत किये वहीं श्रे देवरत्न आर्य एवम् मण्डली ने सुन्दर गीतो के प्रस्तुतीकरण से सभी श्रोताओ को आनन्दित कर दिया। सुन्दर पारितोषिक वितरण के साथ-साथ सभी आगन्तुको को ऋषि लगर मे भोजन कराया गया।

–संजयकुमार आर्य, मन्त्री–नगर आर्यसमाज शाहदरा, दिल्ली-३२

आर्यसमाज पाढ़ा का वार्षिक उत्सव सम्पन्न

गाव पाढा जिला करनाल का २५,२६ मई २००२ को आर्यसमाज का उत्सव बडे धूमधाम से मनाया गया जिसमे महाशय रत्न आर्य व आर्यसमाज पाढा के प्रधान श्री मामचन्द जी आर्य सुबह यज्ञ के यज्ञमान बने। यज्ञ के ब्रह्मा श्री चतर सिंह आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रचारक रहे। श्री सतपाल आर्य जी ईश्वरभक्ति के भजन एव प्रवचन हुए। श्री चतरसिह जी ने ईश्वर भक्ति के भजन मधुर आवाज मे गाए। श्री वीरेन्द्र जी आर्य, आई डी एस स्वामी श्री राजेन्द्र को निमन्त्रण दिया। उत्सव में आए जिन्होंने आर्यसमाज के उत्सव से प्रभावित होकर एक लाख रुपये पुस्तकालय एव यज्ञशाला के लिए दिवाने की घोषणा की। राजेन्द्र जी के स्वागत मे फूलमालाओं से राजपाल सरपच, धर्मवीर जी आर्य एव गाव के सभी लोगो ने स्वागत किया।

श्री चतरसिह जी आर्य, पूर्व सभा प्रचारक ने पदमावती का इतिहास मधुर आवाज में सुनाया। सभी लोगो ने इतिहास की एव चतरसिह की बड़ी सराहना की।

–महाशय मामचन्द जी आर्य, ग्राम प्रधान, आर्यसमाज पाढा जिला करनाल

गुड़गांवा में सात दिवसीय आध्यात्मिक दिव्य सत्संग एवं राष्ट्र रक्षा यज्ञ सफलतापूर्वक सम्पन्न

आर्यसमाज शिवा जी नगर गुडगांवा के वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य मे सात दिवसीय आध्यात्मिक दिव्य सत्सग एव राष्ट्ररक्षा यज्ञ दिनाक २९ अप्रैल से ५ मई, २००२ तक सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। इस राष्ट्र रक्षा यज्ञ के ब्रह्मा एव प्रवचनकर्ता के रूप में युवा महात्मा आचार्य अखिलेश्वर जी महाराज सचालक गढी उधमपुर वैदिक वानप्रस्थ आश्रम तथा भजनोपदेशक के रूप मे प० सहदेव जी बेघडक थे।

५ मई को पूर्णाहुति के पश्चात् उल्लेखनीय ऋषि लगर की व्यवस्था की गई। सभी विद्वानो को स्मृति चिह्न, ओ३म् का मोटो तथा सभी यजमानो को सन्ध्या प्रभाकर की पुस्तक, प्रसाद आदि का वितरण किया गया। इस सप्ताह भर के कथा के कार्यक्रम से गुडगावा की जनता आनन्द विभोर हो रही है।

—**कन्हैयालाल आर्य**, मन्त्री–आर्यसमाज शिवाजी नगर, गुडगाव

पुस्तक समीक्षा

गुरु विरजानन्द दण्डी : जीवन एव दर्शन

लेखक : डॉ० रामप्रकाश, सत्यार्थ प्रकाशन, कुरुक्षेत्र

लेखकाधीन, प्रथम संस्करण मार्च २००२

मूल्य : अवर्णित ; पृष्ठ १५४

आलोच्य पुस्तक एक ऐसे महामानव की जीवन गाथा है जिसका अपना व्यक्तित्व और कृतित्व अपने ही शिष्य के व्यक्तित्व और कार्यों की चकाचौंध मे कहीं छिपा रह गया। जिसने भी देखा शिष्य की देन के विभिन्न पहलुओं से अभिभूत उसी का मूल्याकन करता रह गया। निर्माता की ओर किसी का ध्यान ही नहीं गया। गुरु की आत्मा भी अपने निर्माण की सफलता पर आनन्दातिरेक से फूली नहीं समा रही होगी। उसके अपने ९० वर्ष के जीवन को जीवनी लेखको ने मात्र कुछ लाइनो और अधिकतम १५-१६ पृष्ठो तक सिकोड दिया उसका उसे कतई मलाल नहीं होगा। प्रस्तुत जीवनी "गुरु विरजानन्द दण्डी जीवन एव दर्शन" लिखकर विद्वान् लेखक ने न केवल उस खला को भरा है अपितु दो-तीन पीढियों को ऋषि-ऋण से उऋण किया है।

एक १३ वर्ष का चक्षुविहीन बालक जिसे भाई-भाभी के दुर्व्यवहार ने घर छोडने को विवश कर दिया वह अठारहवीं शताब्दी के उस समय जब आवागमन के साधनो का नितात अभाव था दो-अढाई वर्ष मे ऋषिकेश पहुचता है। भीख मागना अपमान समझता है। ऐसे बालक ने क्या-क्या कठिनाइया झेली होगी कल्पना ही की जा सकती है। वही बालक जब एक प्रतिष्ठित आचार्य हो जाता है तो अपने किसी छात्र को भीख मागने नहीं देता। छात्रों से फीस भी नहीं लेता, मुहफट भी है। ९० वर्ष के भरे-पूरे जीवन मे किसी से भी एक बार भी आजीवन झेली कठिनाइयो का जिक्र तक नहीं करता। उसकी सारी दिनचर्या ज्ञान बाटने और आर्ष ग्रन्थो के प्रतिपादन के इर्द-गिर्द घूमती है। वह अनार्ष ग्रन्थो के प्रचार-प्रसार को ही तत्कालीन भारतीय समाज की गिरावट का एकमात्र कारण मानता है। प्रस्तुत पुस्तक स्पष्ट करती है कि जिन विचारो को दृढता से प्रचारित करने के कारण स्वामी विरजानन्द के पट्ट शिष्य दयानन्द को विश्वप्रसिद्धि मिली उनका जन्म तो विरजानन्द के मस्तिष्क मे हुआ था। चाहे अनार्ष ग्रन्थों व मूर्ति-पूजा का खण्डन हो, चाहे विधवा विवाह का वेदसम्मत होना हो और फिर चाहे वेदो की ओर पलटने का विचार हो। लेखक ने पुस्तक के पन्द्रहवे अध्याय 'प्रतीक्षारत' मे इनका विशद विवेचन किया है। दयानन्द विरजानन्द के लिए ऐसे ही थे जैसे उनके पश्चात् रामकृष्ण परमहस के लिए विवेकानन्द हुये। प्रसन्नता इस बात की है कि एक सतत सघर्षरत व्यक्ति ने ९० वर्ष की आयु मे अतत पूरे सतोष के साथ प्राण त्यागे।

यद्यपि लेखक ने प्रस्तावना मे ही लिखा है–**"न इतिहास मेरा विषय है, ना साहित्य।"** लेखक यह पुस्तक लिखकर एक ओर जहा लेखक ने इतिहास के एक अनछुए पहलु को उजागर किया है वहीं दूसरी ओर हिन्दी के जीवनी साहित्य मे भी श्रीवृद्धि की है। आने वाले समय मे स्वामी विरजानन्द दण्डी की इस जीवनी की गणना हिन्दी भाषा में लिखी गई श्रेष्ठ जीवनियो मे की जाएगी। वैज्ञानिक होना लेखक के लिए वरदान सिद्ध हुआ है। तथ्यो को एकत्र करना और फिर उनका विवेचन कर सार निकालना एक वैज्ञानिक के बूते की ही बात है। भाषा की प्राजलता और प्रवाह पुस्तक को पठनीय बनाते है। **"सार्वभौम सभा विवरण पत्र"** और **"दण्डी जी की जयपुर नरेश को पत्र"** ऐतिहासिक महत्त्व के दस्तावेज हैं। पुस्तक की भाषा मे स्वामी विरजानन्द के प्रति सम्मानभाव सतत झलकता है। पाद-टिप्पणिया लेखक के परिश्रम की परिचायक हैं। सदर्भ ग्रथों की सूची पुस्तक की उपादेयता को बढाती है।

पुस्तक से मेरे ज्ञान मे जो वृद्धि हुई उसके लिए लेखक का आभारी हू। पुस्तक न केवल आर्यसमाजियो के लिए अपितु साहित्य, इतिहास, धर्म-दर्शन और सामाजिक शास्त्र के अध्येताओ के लिए भी उपयोगी सिद्ध होगी। जनसाधारण के लिए बिना पाद-टिप्पणियो के पुस्तक का पेपर-बैक एडिशन निकालना उत्तम होगा।

—**डॉ. जे.एस. यादव**, एफ-१, विश्वविद्यालय परिसर, कुरुक्षेत्र-१३६११९

आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली (रजि०) का चुनाव

प्रधान–श्री हसराज चोपडा, उपप्रधान–श्री वेदव्रत शर्मा, डॉ० अमर जीवन जी, श्री वीरेश बुग्गा, श्री सुभाष चन्द्र गण्डोत्रा, मन्त्री–श्री अरुण प्रकाश वर्मा, उपमन्त्री–श्री राजीव भाटिया, श्री सुशील कुमार महाजन, कोषाध्यक्ष–श्री एन सत्यनारायण आर्य, आन्तरिक लेखा निरीक्षक–श्री नरेन्द्र सिह हुड्डा, पुस्तकाध्यक्ष–श्री विजय मनोचा।

—**अरुण प्रकाश, मन्त्री**

आर्यसमाज के उत्सवों की सूची

१	आर्यसमाज भुरयला जिला रेवाडी	८ से ९ जून २००२
२	आर्यसमाज कोथकलां जिला हिसार	८ से ९ जून २००२
३	आर्यसमाज गागटहेडी जिला करनाल	८ से १० जून, २००२
४	आर्यसमाज सैक्टर-९, पचकूला (अथर्ववेद पारायण यज्ञ एव आध्यात्मिक प्रवचन)	१० से १६ जून, २००२
५	आर्यसमाज कनीना जिला महेन्द्रगढ	१५ से १६ जून २००२
६	आर्यसमाज गोहाना मण्डी जिला सोनीपत	२१ से २३ जून २००२
७	आर्यसमाज न्यात जिला सोनीपत	२५ से २६ जून, २००२
८	आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ जिला झज्जर (नि शुल्क ध्यानयोग-वैदिक दम्पती निर्माण सस्कार प्रशिक्षण शिविर, चतुर्वेद शतक-यज्ञ प्राकृतिक चिकित्सा शिविर)	२३ से ३० जून २००२

—**सुखदेव शास्त्री, सहायक वेदप्रचाराधिष्ठाता**

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय चार सितारों से अलंकृत

हरिद्वार। गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय हरिद्वार को गत ११, १२ मार्च, २००२ मे निरीक्षण हेतु आई राष्ट्रीय पुनर्मूल्याकन एव प्रत्यायन परिषद् (NAAC) की सस्तुति पर भारत सरकार/विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने चार सितारो (Four Star) से अलकृत किया है। कमेटी के सदस्यो ने विश्वविद्यालय की सस्तुति यहा के परिवेश, शैक्षिक वातावरण, शुद्ध पर्यावरण, वृहत् पुस्तकालय, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के सग्रहालय आदि को देख कर की। कमेटी ने महात्मा गाधी, मैक्सिको के विद्वान् डॉ जुआन मिगल आदि विद्वानो द्वारा विश्वविद्यालय के सम्बन्ध मे की गई टिप्पणियो का उल्लेखन भी अपनी सस्तुति मे किया है।

मानव का सर्वागीण विकास, चरित्र निर्माण, सादा जीवन उच्च विचार, शिक्षा के सबको समान अवसर मूल्याधारित शिक्षा, प्राचीन भारतीय सस्कृति एव वैदिक ज्ञान के प्रति प्रेम तथा प्राचीन एव आधुनिक शिक्षा का समसमायोजन के साथ अध्ययन-अध्यापन ये कुछ मूल सिद्धान्त गुरुकुलीय शिक्षा के उद्धृत किए गए हैं। समिति मे आए चेयरमेन प्रो के मल्ला रेड्डी, प्रो सिद्धेश्वर भट्ट, प्रो के एस आर्य आदि ने सामूहिक रूप से एक मत होकर अपनी रिपोर्ट मे कहा कि गुरुकुल विश्वविद्यालय अपनी तरह की एक अकेली सस्था है। जहा विभिन्न क्षेत्रो मे चाहे वे साहित्य के हो अथवा विज्ञान के विश्वविद्यालय के प्राध्यापको ने उपयोगी शोध कराए हैं। समिति ने यहा दी जा रही शिक्षा के स्तर, खेलो के विकास तथा राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर किए गए शोध कार्यो को खुले मन से सराहा है।

विश्वविद्यालय के अध्यापको की योग्यता, विश्वविद्यालय मे हुई राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के सेमीनार/कान्फ्रेस अध्यापकों छात्रो द्वारा अर्जित राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कारो का भी रिपोर्ट मे जिक्र किया गया है। विश्वविद्यालय के मुख्य पुस्तकालय की पुस्तक सम्पन्नता, रख-रखाव तथा सग्रहालय का विशेष उल्लेख रिपोर्ट मे किया गया है।

विश्वविद्यालय मे 'गर्भस्थ छात्र' प्रणाली को भी उन्होने सराहा, जो हमारी प्राचीन सस्कृति का द्योतक है।

श्रद्धानन्द वैदिक शोध सस्थान द्वारा किये जा रहे शोध कार्य, प्रकाशन की सराहना भी रपट मे की गयी है। विश्वविद्यालय द्वारा चलाये जा रहे योग केन्द्र जिसमे कि दैनिक योगाभ्यास कराया जाता है, को समिति ने अत्यन्त उपयोगी बताया।

विश्वविद्यालय की प्रशासनिक, आर्थिक, शैक्षिक व्यवस्थाओ के अतिरिक्त जो महत्त्वपूर्ण बात समिति की रिपोर्ट मे है, वह है विश्वविद्यालय द्वारा किये गये देशहित मे कार्य। समिति ने विशेष उल्लेख करते हुए कहा कि विश्वविद्यालय ने भारत की स्वतन्त्रता मे अविस्मरणीय योगदान दिया है। पत्रकारिता, आध्यात्मिकता, समाजसेवा, ग्रामोत्थान तथा पर्यावरण के प्रति सचेतना के क्षेत्र मे यह विश्वविद्यालय अग्रणी रहा है।

उच्च शिक्षा के क्षेत्र मे प्राचीन भारतीय सस्कृति, साहित्य की स्थापना, विश्वविद्यालय मे चल रहे सभी विषयो मे वेद के सम्बन्धो के लेकर प्रश्नपत्र यथा वैदिक गणित, वैदिक फिजिक्स, वैदिक इजीनियरिग आदि, धर्म दर्शन सस्कृति, नित्य हवन परम्परा आदि का उल्लेख भी रिपोर्ट मे किया गया है। अन्त में समिति ने प्रमाणित किया है कि अनासक्ति भाव की सस्कृति का पाठ पढाने वाला यह अकेला सस्थान है जहा आध्यात्मिक वातावरण गगा की पवित्रता का लपेटे हुए है।

आर्यसमाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द के शिष्य स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा १९०२ मे स्थापित विश्वविद्यालय के स्नातक विभिन्न देशो मे आज भी यहा का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं।

विश्वविद्यालय से प्रकाशित हो रही आर्यभट्ट, वैदिक पथ, हिमालय जर्नल, गुरुकुल पत्रिका आदि को भी अपनी रिपोर्ट मे सराहा है। यह भी लिखा है कि विश्वविद्यालय पुस्तकालय की लगभग डेढ लाख पुस्तके इस हिन्दुस्तान की धरोहर हैं। विश्वविद्यालय मे चल रहे शोध, प्राचीन सस्कृति की रक्षा, वैदिक इण्डोलोजी के अध्ययन को श्रेष्ठ मानते हुए समिति ने सबल सस्तुति की कि इस विश्वविद्यालय को और अधिक अनुदान तो दिया ही जाये तथा कम से कम चार सितारों से अलकृत किया जाये।

विश्वविद्यालय के शिक्षक एव शिक्षकेत्तर कर्मचारी सघो के पदाधिकारियो ने इस उपलब्धि पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० वेदप्रकाश तथा कुलसचिव डॉ० महावीर अग्रवाल को बधाई दी। साथ ही कुलपति एव कुलसचिव ने इसे विश्वविद्यालय कर्मचारियो द्वारा एकजुट होकर किये गये प्रयास की परिणति बताया।

—डॉ० प्रदीपकुमार जोशी
जन सम्पर्क अधिकारी

सर्वहितकारी के पाठकों के लिए आवश्यक सूचना

डाक सामग्री महंगी हुई

रोहतक, २९ मई। डाक विभाग द्वारा एक जून से डाकदरो में परिवर्तन किया जा रहा है।

रोहतक के वरिष्ठ डाक अधीक्षक के अनुसार सशोधित दरो के बाद २० ग्राम तक का पत्र ४ रुपये की बजाए ५ रुपये का हो जाएगा। इसके बाद अतिरिक्त प्रत्येक २० ग्राम पर भी ५ रुपये अतिरिक्त वसूल किए जाएगे जबकि पहले ४ रुपये लिए जाते थे। लेटर कार्ड २ रुपये की बजाए २ रुपये ५० पैसे, प्रिंटेड पोस्टकार्ड ३ रुपये के स्थान पर ६ रुपये, प्रतियोगिता पोस्टकार्ड ५ रुपये के स्थान पर १० रुपये, बुक पैर्टन व सैम्पल पैकेट के ५० ग्राम वजन तक के लिए ३ रुपये की बजाए ४ रुपये तथा अतिरिक्त ५० ग्राम तक अब ३ रुपये होगे जबकि ये पहले ४ रुपये था।

५०० ग्राम तक के पार्सल के लिए १६ रुपये के बजाए १९ रुपये तथा १६ रुपये अतिरिक्त ५०० ग्राम के लिए होगे जबकि पहले अतिरिक्त ५०० ग्राम के लिए १५ रुपये था।

सभा कार्यालय मे प्रतिदिन बैरंग पत्र आ रहे हैं। सर्वहितकारी साप्ताहिक के सभी पाठको से निवेदन है कि एक जून २००२ से नई दरे लागू हो गई हैं अत अपने पत्रो पर पूरी डाक टिकटे लगाकर भेजे।

व्यवस्थापक—सर्वहितकारी साप्ताहिक, दयानन्दमठ, रोहतक

आर्यवीर दल की स्थापना

आर्यसमाज फेफाना मे २० से ३० मई ०२ तक गुरुकुल झज्जर के ब्रह्मचारियो ने श्री सावरमल व प्रतापसिह ने आर्यवीर दल का शिविर लगाया। ३० तारीख को शिविर समाप्ति पर विधिवत आर्यवीर दल की स्थापना की गई जिसमे छात्र अमित शर्मा अध्यक्ष व नवनीत को उपाध्यक्ष बनाया गया। श्री रमेश आर्य आर्य वीरदल के प्रधान चुने गए। मन्त्री श्री पृथ्वीराज चौहान बनाए गए।

मन्त्री—आर्यसमाज फेफाना, हनुमानगढ

यज्ञ कार्यक्रम सम्पन्न

दिनाक ९-५-२००२ को सुबह ९ बजे आर्यसमाज मन्दिर शोभापुर मे श्री प्रभुदयाल यादव के निर्वाण दिवस के उपलक्ष्य मे हवन किया गया। महाशय विश्वमित्र जी लूखी निवासी ने उपस्थित जनसमूह को भजनो द्वारा उपदेश दिए। महान् आत्मा श्री पी डी यादव के सामाजिक कार्यो को याद किया गया। श्री रोशनलाल आर्य प्रधान एव श्री राजेन्द्र आर्य मन्त्री श्री बनवारी लाल जी रिटायर्ड मुख्याध्यापक आदि महानुभावो ने प्रवचन दिए। अन्त मे आर्यसमाज के मन्त्री ने सभी उपस्थित जनसमूह का आभार व्यक्त किया। १०१ रुपये आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा रोहतक को दान दिए।

—मन्त्री आर्यसमाज, शोभापुर (महेन्द्रगढ)

वेदप्रचार उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज भऊअकबरपुर का वेदप्रचार दिनाक २४-२५-२६ मई २००२ को वेदप्रचार हुआ जिसमे २४-५-२००२ को आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री यशपाल शास्त्री ने शुभारम्भ किया तथा वेदप्रचारक श्री नरेश निर्मल प्रसिद्ध उत्तर प्रदेश भजनोपदेशक ने किया। इस आर्यसमाज मन्दिर के पूर्व दिशा जो भूमि खाली पडी हुई थी उसको आचार्य वेदमित्र के प्रभाव तथा उनके व्याख्यान से इसको बनाने के लिए २६००० रुपये का दान आया। जो इस प्रकार है। आचार्य वेदमित्र जी के आश्रम हेतु भी बढ-चढकर दान प्राप्त हो रहा है।

चौ० जिलेसिह प्रधान—५१०० रुपये, श्री हवासिह पूर्व प्रधान—५१०० रुपये, श्री जगदेव जी गिरदावर—५१०० रुपये, श्री रघबीरसिह जी ११०० रुपये, गुप्तदान ११०० रुपये, श्री विजयपाल मन्त्री—११०० रुपये, श्री जसबीरसिह उप खजाची—११०० रुपये, श्री राजबीरसिह—११०० रुपये, श्री राजू प्रचारमन्त्री—११०० रुपये, श्री डॉ० इन्द्रसिह—११०० रुपये, श्री राममेहर जी यज्ञप्रेमी—११०० रुपये।

शान्ति यज्ञ सम्पन्न

२६-५-२००२ को आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तरग सदस्य श्री यशवीर आर्य गाव बोहर की स्वर्गीया दादी श्रीमती चमेली देवी धर्मपत्नी स्व० श्री जगजीतसिह जी की स्मृति में शान्तियज्ञ का आयोजन किया गया। उपस्थित लोगो ने श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर सभामन्त्री आचार्य यशपाल एवं श्री केदारसिह आर्य सभाउपमन्त्री उपस्थित थे। शान्तियज्ञ के पश्चात् श्री यशवीर आर्य के पिता ने आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को ११०० रुपये दान दिया।

आर्य-संसार

स्वामी सर्वानन्द सरस्वती आर्यरत्न सम्मान से सम्मानित

नागपुर, २४ मार्च रविवार को वयोवृद्ध आर्य सन्यासी तथा पजाब राज्य के दीनानगर स्थित दयानन्दमठ के सचालक स्वामी सर्वानन्द सरस्वती को प्रथम आर्यरत्न सम्मान प्रदान किया गय । राव हरिश्चन्द्र आर्य चैरिटेबल ट्रस्ट की ओर से स्थानीय बसतराव देशपाछे सास्कृतिक सभागार मे आज समारोहपूर्वक उन्हे यह सम्मान प्रदान किया गया। वृद्धावस्था के कारण स्वामी सर्वानन्द समारोह मे उपस्थित नहीं हो सके।

स्वामी ओमानन्द सरस्वती की अध्यक्षता एव स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती के मुख्य आतिथ्य मे आयोजित इस समारोह मे स्वामी सर्वानन्द के विशेष प्रतिनिधि स्वामी सदानद ने उनकी ओर से यह पुरस्कार ग्रहण किया। इस असर पर आचार्य वागीश शर्मा, पुष्पा शास्त्री, राव हरिश्चन्द्र आर्य, शांतिदेवी आर्या, वैद्य शिवकरण शर्मा छागाणी, आचार्य प्रद्युम्न, स्वामी सम्पूर्णानन्द, कैप्टन देवरत्न आर्य, स्वामी धर्मानन्द आदि मच पर विराजमान थे।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य के द्वारा पारपरिक पद्धति से दीप जलाकर समारोह का उद्घाटन हुआ। अपने सम्बोधन मे कैप्टन देवरत्न ने सम्मान की पार्श्वभूमि प्रस्तुत की। एटा (उत्तर प्रदेश) से पधारे विद्वान् डॉ० वागीश शर्मा ने कहा कि जब समाज मे सत्य को प्रकट करने की परम्परा का लगभग ह्रास हो रहा है, ऐसे मे स्वामी सर्वानन्द सरस्वती जैसे दार्शनिको ने **"सत्य ब्रूयात् प्रिय ब्रूयात्"** के सूत्र पर चलकर दुनिया मे नई आशा का सचार किया है।

मुख्य अतिथि दीक्षानद सरस्वती ने कहा कि दुनिया के कठिनतम कार्य **"सन्यास"** को जितनी कुशलता और सरलता से स्वामी सर्वानन्द ने निभाया है, वह अतुलनीय और अनुकरणीय है। अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में स्वामी ओमानन्द ने स्वामी सर्वानन्द सरस्वती से जुडे सस्मरणो का उल्लेखकर उपस्थितो को भाव विभोर कर दिया।

राव हरिश्चन्द्र आर्य चैरिटेबल ट्रस्ट की ओर से राव हरिश्चन्द्र आर्य एव उनकी पत्नी शांतिदेवी आर्य ने एक लाख रुपये का ड्राफ्ट, शाल-श्रीफल, स्मृतिचिह्न तथा अभिनन्दन पत्र स्वामी सर्वानन्द के शिष्य एव प्रतिनिधि सदानन्द के सुपुर्द किया। १०२ वर्षीय स्वामी सर्वानन्द वृद्धायु की वजह से समारोह मे उपस्थित नहीं हो सके। तत्पश्चात् अपने गुरु स्वामी सर्वानन्द का सदेश प्रस्तुत करते हुए उन्होने कहा कि स्वामीजी की इच्छा है कि सम्मान स्वरूप प्राप्त धनराशि का उपयोग मठ के कार्य मे नहीं, बल्कि वेद प्रचार कार्य मे किया जाए।

उल्लेखनीय है कि आर्यसमाज के किसी सन्यासी को पहली बार एक लाख रुपयो की धनराशि से सम्मानित किया गया है।

समारोह का कुशल सचालन स्वामी सुमेधानन्द पिपराली राजस्थान ने किया। आभार ज्ञापन राव हरिश्चन्द्र आर्य ने किया। इस शुभाअवसर पर सभागार मे हजारो की सख्या मे श्रोता एव नगर के अनेक विद्वान् व प्रतिष्ठित गणमान्य सज्जन उपस्थित थे।

गुरुकुल आश्रम आमसेना में नये छात्रों का प्रवेश

गुरुकुल आश्रम में नये छात्रों का प्रवेश १६ जून से प्रारम्भ होगा। जो सज्जन अपने बालक को विद्वान्, बलवान् और राष्ट्रभक्त बनाना चाहते हैं, वे अपने सुपुत्रो को होनहार, योग्य और राष्ट्रभक्त बनाने के लिए गुरुकुल में प्रविष्ट करायें। गुरुकुल मे आर्ष पाठ्यक्रम से कक्षा छठी (प्रथमा) से आचार्य (एम ए) तक शिक्षा का उत्कृष्ट प्रबन्ध है, यहा प्राचीन व्याकरण, उपनिषद्, दर्शन, वेद, रामायण, महाभारत, निरुक्त आदि प्राचीन विषयों के साथ हिन्दी, सामाजिक, अग्रेजी आदि आधुनिक विषयों की भी शिक्षा दी जाती है, शिक्षा के साथ नियमित दिनचर्या, कृषि, बागवानी, गोशाला, चिकित्सा, औषध निर्माण, कम्प्यूटर आदि विषयों का भी क्रियात्मक ज्ञान कराया जाता है। भोजन सात्त्विक, सादा मिर्च मसाले से रहित होता है। भोजन खर्च नाममात्र का १५० रुपये मासिक है। गुरुकुल मे महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक के द्वारा परीक्षा ली जाती है, प्रमाण पत्र भी विश्व विद्यालय से मिलते हैं।

इसी प्रकार की व्यवस्था कन्याओ के लिए आदर्श कन्या गुरुकुल आमसेना मे है। वहा अध्यापक, सरक्षक आदि सब महिलाये हैं। विशेष जानकारी के लिए– **"आचार्य जी गुरुकुल आश्रम आमसेना (नवापारा) से सम्पर्क करे।"**

निवेदक व्रतानन्द सरस्वती, आचार्य–गुरुकुल आश्रम आमसेना

उत्कल प्रान्तीय वनवासी आर्य महासम्मेलन सोल्लास सम्पन्न

उडीसा के कश्मीर कहे जाने वाले परन्तु गोहत्या के लिये बदनाम ईसाइयो के षड्यन्त्र से आक्रान्त कोरापुट जिले मे आदिम गुरुकुल आश्रम, कुन्दुली (बाजार) के विशाल मैदान मे २५, २६, २७ मई को १०८ वनवासी युवतियो की कलशयात्रा के साथ पूज्य स्वामी इन्द्रवेश जी (पूर्व सासद) के करकमलो से ओ३म् ध्वज उत्तोलनपूर्वक वनवासी आर्य महासम्मेलन एव महायज्ञ पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी की अध्यक्षता मे प्रारम्भ हुआ। महायज्ञ के मुख्य यजमान स्थानीय विधायक श्रीयुत जयराम पागी बने। कार्यक्रम प्रारम्भ होते ही यज्ञ एव समारोह में भाग लेने वालो की भीड उमड पडी। सायकाल तक लगभग १० हजार वनवासी जनता सम्मेलन मे भाग लेने के लिए पहुच गयी थी, यद्यपि विशाल उपस्थिति को देखते हुए पहले ही पाच यज्ञकुण्ड बनाये गये थे परन्तु श्रद्धालु लोगो का यज्ञ मे भाग लेने का उत्साह अपूर्व था। जिन्हे अशिक्षित कहा जाता है, उनमे अधिक श्रद्धा, सात्त्विकता और उदारता के दर्शन इस आयोजन मे हुए। दूर-दूर से आये हुए आर्य और उपदेशक वनवासियो के इस उत्साह और श्रद्धा को देखकर आश्चर्य मे पड गये। तीनो दिन इसी प्रकार जनता की उपस्थिति बढती गयी, परन्तु कहीं कोई अव्यवस्था नहीं हुई। २६ को मध्यान्होत्तर गुरुकुल आश्रम आमसेना और आदिम गुरुकुल आश्रम कुन्दुली के ब्रह्मचारियो के व्यायाम प्रदर्शन देखने हेतु सारा मैदान भर गया था।

महोत्सव का उद्घाटन उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी व्रतानन्द जी ने किया। इसके पीछे श्री स्वामी इन्द्रवेश जी, उडीसा के प्रसिद्ध विद्वान् ई प्रियव्रत दास, उत्तर प्रदेश से पधारे प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री सहदेव बेधडक एव उडीसा के श्री वैरागीचरण साहू की भजन पार्टियो ने तो अपने कार्यक्रमो से जनता को मोहित कर लिया। यज्ञ का सचालन श्री प० विशिकेशन जी शास्त्री ने अत्यन्त कुशलता से किया। शास्त्री जी, श्री विश्वबन्धु शास्त्री एव गुरुकुल के स्नातक आचार्य आनन्द कुमार जी बीच-बीच मे वेदोपदेश द्वारा लोगो को मन्त्रमुग्ध करते रहे।

इस समारोह की सफलता मे विधायक श्री जयराम पागी के प्रशसनीय सहयोग के साथ श्री सुरेश साहू, श्री निरजन पात्र, आचार्य कुजदेव जी, श्री पीताम्बर जी, आचार्य विनय कुमार जी, श्री रोहित आर्य, श्री करुणाकर आर्य, श्री कैलाश स्वाई, श्री प्रह्लाद प्रसाद आर्य आदि का महत्त्वपूर्ण सहयोग रहा। इसी प्रकार यह सम्मेलन आशा से अधिक अपूर्व रूप से सफल रहा। जिसका स्थानीय जनता पर व्यापक प्रभाव पडा। हजारो लोगो ने यज्ञोपवीत ग्रहण कर मद्य, मास आदि छोडने की प्रतिज्ञा की।

यहा पुनर्मिलन का भी विशाल कार्यक्रम होना था, परन्तु कलेक्टर के ईसाई होने और एस पी के मुसलमान होने से उन्होने दुराग्रह करके इस पर प्रतिबध लगा दिया। अत इस क्षेत्र मे अशाति न फैले यही सोचकर आयोजको को यह कार्यक्रम स्थगित करना पडा।

–ब्र० सुदर्शनदेवार्य, उपमन्त्री–उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, युवा निर्माण प्रशिक्षण शिविर एवं सामवेद पारायण यज्ञ व वानप्रस्थ दीक्षा तथा वैदिक आश्रम के लिए एक एकड़ जमीन दान

भारतीय वैदिक सस्कृति एव युवको मे राष्ट्रभक्ति तथा आर्यसमाज के छठे नियम के अनुसार शारीरिक, आत्मिक एव सामाजिक उन्नति जागृत करने के लिए "सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् जिला फरीदाबाद के नेतृत्व मे तथा श्री जयवीर जी आर्य अतरग सदस्य सभा के सयोजकत्व मे इस ग्रीष्मकालीन मे विद्यालयो के अवकाश के समय मे एक शिविर का आयोजन २० मई से २६ मई तक ग्राम मिर्जापुर मे वैदिक योग आश्रम मे लगाया गया। इस शिविर मे ८० युवको ने श्री हरपाल शास्त्री व्यायामाचार्य के नेतृत्व मे दिन-रात एक करके तपती धूप मे जिस प्रकार आग मे सोना तपकर कुन्दन हो जाता है, उसी प्रकार इन युवको ने कडी मेहनत करके अपने जीवन के लिए प्रशिक्षण किया। युवको को समय-समय पर शारीरिक शिक्षा के साथ-साथ विद्वान् वक्ताओ ने बौद्धिक शिक्षा दी। शारीरिक बल तभी सुरक्षित रह सकता है जब मन शुद्ध हो और यह नैतिक शिक्षा से ही सभव है।

शिविर का उद्घाटन २० मई को दोपहर बाद स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज द्वारा किया गया जिसमे मुख्य अतिथि फरीदाबाद जिला के पुलिस कप्तान श्री रणवीर शर्मा पधारे। पुलिस कप्तान ने युवको को अपने सम्बोधन मे कहा कि मैंने अपने छात्रकाल मे ऐसे शिविरो मे भाग लिया है और आर्यसमाज का यह कार्य सराहनीय है।

शिविर के बीच-बीच मे बौद्धिक प्रशिक्षण के लिए महाशय फतेहसिह बौराली (स्वतन्त्रतासेनानी), हरिशमुनि, महाशय धर्मसिह आर्य, बहन पुष्पा आर्या, महाशय ईश्वरसिह आर्य, श्री ओमप्रकाश आर्य तिलपत, श्री नत्थूसिह आर्य मिर्जापुर, श्री ओम्प्रकाश योगाचार्य, श्री रामवीर आर्य, श्री महेन्द्र शास्त्री उपमन्त्री हरयाणा सभा, प० चिरञ्जीलाल आर्य भजनोपदेशक सभा, श्री महेन्द्रसिह पहल, श्री मनोहरलाल आनन्द प्रधान सै० ७, श्री बलवीरसिह मलिक, श्रीमती दर्शना मलिक, श्रीमती बिमला महता, श्री प० बुधराम आर्य, श्री सुशील शास्त्री, श्री गुप्ता जी न० ३ एव आर्य केन्द्रीय सभा फरीदाबाद के अधिकारीगण ने भाग लिया।

शिविर समापन २६ तारीख को मुख्य अतिथि श्री कृष्णपाल गुर्जर विधायक एव पूर्वमन्त्री हरयाणा तथा श्री राजेन्द्रसिह बीसला विधायक, श्री विरजानन्द आर्य महामन्त्री सार्वदेशिक युवक परिषद् मुख्य वक्ता पधारे। मुख्य अतिथि ने अपने उद्बोधन मे युवाओ को आह्वान किया कि देश के ऊपर चारो ओर से अधेरे बादल छाए हुए हैं। इसको केवल आर्य युवक ही बचा सकते हैं। आपने यहा सात दिन रहकर दिन-रात अनुशासन मे रहकर राष्ट्र के प्रति देशभक्ति की भावना का प्रशिक्षण लिया है। इस देश की सुरक्षा आपके हाथो मे है। आप अपने जीवन मे नेक ईमानदारी से कार्य करेगे। श्री विरजानन्द आर्य ने प० लेखराम, भगतसिह, रामप्रसाद बिस्मिल के जीवन से प्रेरणा लेकर युवको मे राष्ट्रभक्ति, देशप्रेम तथा स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन मे त्याग एव बलिदान की भावना लेकर कार्यक्षेत्र मे उतरने के लिए प० चिरञ्जीलाल आर्य भजनोपदेशक सभा ने अपने प्रेरणादायक भजन बिस्मिल के जेल का प्रकरण व अन्य भजनो के माध्यम से युवको मे जोश भर दिया। श्री हरपाल शास्त्री ने युवको को दिया गया प्रशिक्षण का प्रदर्शन किया गया जिसमे दण्ड-बैठक के प्रकार, लाठी, भाले, छुरी, जूडो-कराटे, आसन व स्तूप के करतब दिखाए गए। उपस्थित जन-समूह ने करतल ध्वनि से उत्साहवर्धन किया। श्री विरजानन्द आर्य ने शिविर मे भाग लेने वाले छात्रों को प्रमाण-पत्र दिए। उपस्थित अभिभावको ने अपने बच्चो को ऐसे शिविर मे भेजने की प्रेरणा ली।

शिविर के अवसर पर वानप्रस्थ दीक्षा मे भाग लेते हुए दाये से बाये श्री जयवीर आर्य, श्री हरिश मुनि, स्वामी शान्तानन्द, दीक्षित वानप्रस्थी शिवमुनि, श्री ओम्प्रकाश शास्त्री सभागणक। | वैदिक योगाश्रम मिर्जापुर (फरीदाबाद) में २० मई से २६ मई तक शिविर में भाग लेने वाले युवकों द्वारा व्यायाम प्रदर्शन।

शिविर के दौरान २० मई से २६ मई तक सामवेद पारायण यज्ञ श्री हरीशमुनि ब्रह्मा के नेतृत्व मे चलता रहा जिसमे वेदपाठी ब्रह्मा पुष्पा आर्या, श्रीमती सुखदा आर्या, श्री हरपाल शास्त्री, यजमान महाशय धर्मसिह आर्य रहे। यज्ञ का सयोजन श्री ओम्प्रकाश आर्य तिलपत ने किया। इस तपती धूप मे ७ दिन लगातार वेदमन्त्रो की आहुतिया देकर यज्ञ का कार्य अन्तिम दिन इन्द्र देवता ने वर्षा करके ग्रामवासियो व आम लोगो को आभास करा दिया कि यज्ञ सफल हो गया। बीच-बीच में ब्रह्मा ने वेदमन्त्रो की व्याख्या करके अर्थ को समझाया।

२६ मई को सामवेद के अन्तिम मन्त्र की आहुति के साथ यजमान श्री महाशय धर्मसिह आर्य ने वानप्रस्थ की दीक्षा स्वामी शान्तानन्द जी गुरुकुल मझावली से लेकर शिवमुनि वानप्रस्थी बन गए और अपनी जमीन मे से एक एकड जमीन वैदिक योग आश्रम के नाम से आर्यसमाज के कार्य के लिए दान कर दी। सभी उपस्थित महानुभावो ने इनके इस कार्य की प्रशसा की। सभी ने पुष्पों के द्वारा वानप्रस्थी को आशीर्वाद दिया। शान्तिपाठ के बाद सभी को प्रसाद एव ऋषि लकर मे भोजन कराया गया। इस तरफ क्षेत्र मे इस शिविर एव यज्ञ की प्रशसा की गई। इस अवसर पर सभा को १३०० रुपये दानराशि दी गई।

—ओम्प्रकाश शास्त्री, मन्त्री
आर्यसमाज ग्राम किरज (गुडगाव)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ०१२६२–७६८७४, ७७८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ०१२६२–७७७२२) से प्रकाशित।
पत्र में प्रकाशित लेख सामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री का सहमत होना आवश्यक नहीं। पत्र के प्रत्येक प्रकार के विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक होगा।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३ सृष्टिसंवत् १,९६,०
पंजीकरणसंख्या टैक/एच-2/2000 ☎ ०१२६२-४

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र रोहतक

प्रधानसम्पादक : यशपाल आचार्य, सभामन्त्री सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री

वर्ष २६ अंक २८ १४ जून, २००२ वार्षिक शुल्क ८०) आजीवन शुल्क ८००) विदेश में २० डॉलर एक प्रति १.७०

स्वयं सेवक की भूमिका

—डा० सत्यवीरसिंह मलिक, कोआर्डिनेटर ट्रेनिंग, टी ओ सी., चण्डीगढ

जब कोई व्यक्ति बिना प्रलोभन के या बदले में कुछ लिये बिना समाज के लोगों की सेवा करता है तो उसे स्वय सेवक कहा जाता है। स्वय सेवक के मन मे किसी प्रकार के प्रदर्शन की भावना नहीं होनी चाहिए, क्योंकि प्रदर्शन की भावना आने के बाद स्वय सेवा की बात निरर्थक होजाती है। मनुष्य समाज में कुछ लोग अज्ञानता के कारण बहुत दु खी हैं। दीन-दु खियों, निरक्षरो की सेवा करना उत्तम कार्य है।

कुछ लोग बीमारियों के कारण दु खी हैं तो कुछ दूसरे न्याय न मिलने के कारण दु खी हैं। कुछ लोग अत्यधिक ससाधन होने के कारण चिन्तित और दु खी हैं तो दूसरे कुछ ऐसे हैं जो साधनहीन होने के कारण चिन्तित और परेशान हैं। कुछ लोग रातोंरात लखपति न बनने के कारण दु.खी हैं तो कुछ निर्धनता के कष्टों के कारण दु खी हैं। कुछ लोग बहुत बड़ा पद न मिलने के कारण दु खी हैं तो कुछ लोग सामाजिक न्याय न मिल पाने के कारण दु खी हैं। केवल इतना ही नहीं कुछ लोग अनेक प्रकार की बीमारी, गरीबी, बेरोजगारी, भुखमारी तथा पिछड़ेपन के कारण दु खी हैं तो कुछ ऐसे भी हैं जो अपने पडोसी को सुखी देखकर दु खी हैं। इस संसार में जब तक मनुष्य का जीवन है तब तक दु खों का क्या ठिकाना ? वास्तविकता यह है कि आधिभौतिक, आधिदैविक और आध्यात्मिक - इन तीन प्रकार के दु.खों में से किसी न किसी एक दु.ख के कारण हमारे समाज के अधिकतर लोग बड़े दु खी हैं।

कहने को तो हमारा देश प्राचीनकाल में धन-धान्य से सम्पन्न होने के कारण सोने की चिड़िया कहा जाता था। मगर आज चारों ओर नजर दौड़ाकर देखते हैं तो मेरे महान् भारत के ४० करोड लोग सायंकाल पेटभर भोजन न मिलने के कारण भूखे सोने को मजबूर हैं। एक तरफ रस उडेले जा रहे हैं, खाद्यपदार्थों की बरबादी की जारहं है और दूसरी तरफ दाने-दाने को मोहताज छोटे-छोटे बच्चे हाथ पसारे हुए भीख मागते गलियों में फिर रहे हैं। एक तरफ कुत्ते और बिल्ली चमचमाती प्लेटों में रईसों जैसा भोजन खारहे हैं और दूसरी तरफ भूख से परेशान बच्चे कूड़े कचरे के ढेर में पड़े हुए कागजों में हाथ मारकर कुछ खाने की ढूंढ़ी हुई वस्तुएं खोज रहे हैं। वाह रे भाग्य विधाता ! तेरी लीला भी बड़ी निराली है ! समझ में नहीं आता कि इस विकृत व्यवस्था को क्या कहें ? और किसे कहें ? इसकी शिकायत किससे करें ? कोई सुननेवाला नजर नहीं आता। आखिर पीडित किसी से न्याय की उम्मीद तो करता ही है, लेकिन खेद के साथ कहना पडता है कि शोषित व्यक्ति को न्याय दिलाना तो दूर की बात है उसका दु खडा सुननेवाला भी कोई नहीं है। वह परेशानियों का मारा न्याय की प्राप्ति के लिए दर-दर भटकता फिरता है लेकिन उसे कोई पूछनेवाला नहीं है। क्या यह न्यायोचित है ? इसका इलाज कौन करेगा ?

अशिक्षा और गरीबी की बात क्या कहें। इस जमाने में भी लोग एक सौ तक गिनने में असमर्थ हैं, वे ५ बार बीस-बीस तक गिनकर पाच बीसी एक सौ गिनते हैं। देश को स्वाधीन हुए आधी शताब्दी हमारे देखते-देखते बीत गई है। इतने लम्बे समय मे सरकार को इन पिछडे हुए लोगों की तरफ एक नजर डालने का भी मौका नहीं मिला है। इसलिए स्वय सेवकों तथा स्वयं संगठनों की जिम्मेदारी अधिक बढ गयी है। क्या हमारे स्वय सेवक बन्धु इस कठिन उत्तरदायित्व को निभाने के लिए तैयार हैं ?

आजकल सेवा का क्षेत्र छूटता जारहा है और आर्थिक तन्त्र अधिक प्रभावी होता जारहा है। ऐसा लगता है कि इस पैसे की अन्धी दौड़ में बाकी सब कुछ गौण होगया है। मुझे यह कहने में तनिक भी झिझक नहीं कि आज लोकहित की योजनायें और विकास के कार्यक्रम तो काफी बन रहे हैं। लेकिन उनको गांवों तक या दूर-दराज के इलाके तक पहुचानेवाला कोई नहीं है।

बहुत से लोग कहते हैं कि भारत का कानून एव सविधान तो बहुत अच्छा है लेकिन वह उसी रूप में पूरी तरह लागू नहीं होता। इसलिए अब स्वयं सेवकों पर यह जिम्मेदारी आगई है कि वे कानूनी सुविधाओ को गावो तक पहुचाने के लिए प्रयत्नशील होवें तथा गरीबों को सस्ता न्याय मिलाने का प्रबन्ध करें। अब तक भारत में कोर्ट आफ ला है पर कोर्ट आफ जस्टिस नहीं है। अर्थात् कानून तो है पर न्याय नहीं है।

असली भारत तो गावो में बसता है मगर वहा पर स्वराज्य नहीं है, सुराज की बात तो जाने दीजिये। सामान्यतया सारे देश की यही हालत है, क्योंकि धन की शक्ति से और बाहुबल से न्याय खरीदा जारहा है और प्रभावित किया जारहा है। न जाने ऐसी कितनी ही बातें हैं कि जिनको देखकर या सुनकर चिन्ता होना स्वाभाविक है।

सेवा का क्षेत्र इन्सान की इच्छाशक्ति पर निर्भर है। यदि दूसरों को परेशान देखकर किसी का दिल दया से द्रवित नहीं होता तो वह क्या सेवा करेगा ? यदि अबोध बच्चियो तथा महिलाओं के साथ बलात्कार की घटनायें देख सुनकर भी किसी का खून नहीं खौलता तो वह क्या कर पायेगा ? यदि किशोरावस्था के लडके लडकियों के लगातार १६-१७ घण्टे बेगार करवाने पर नाममात्र की मजदूरी देने पर भी जिसका दिल नहीं पसीजता तो उससे क्या उम्मीद की जाये ? इसलिये सेवा का क्षेत्र चाहे कहीं पर हो तथा कैसा भी हो तथा कैसा भी हो। मैं स्वय सेवको के प्रेरणा देना चाहता हू कि वे वहीं पर पहुच जाये और उसी स्थान को अपना कार्यक्षेत्र बनायें। वे जनता में चेतना लायें, जो सोये हुए के समान अपनी आखो के सामने किसी बेसहारा तथा निर्धन महिला का निर्वस्त्र करके गुण्डें के द्वारा गलियों में घुमायी जाती हुई को देखकर भी केवल सी-सी करके रह जाते हैं उनको जगायें-समझायें कि यह अमानवीय कार्य है। ऐसा किसी भी कीमत पर सहन न करें। केवल मूकदर्शक बनकर खडे न रहें बल्कि साहस के साथ आगे बढकर बदमाशों को ललकारें। मुझे पूरा विश्वास है कि जिस दिन देश का युवावर्ग अपने मन में यह ठान लेगा कि बहुत हो चुका, अब आगे ऐसा घिनौना कृत्य हरगिज नहीं होने दिया जायेगा, उस दिन किसी भी बलात्कारी की ऐसा कुकर्म करने की हिम्मत नहीं होगी।

मुझे ऐसा लगता है कि समाज से भारतीय सस्कृति का मुख्य आधार भी खिसक गया है। क्योंकि पूर्वजों की दी हुई इस बहुमूल्य थाती की पुनर्स्थापना के लिए समर्पित कार्यकर्त्ताओं की आवश्यकत है। ऐसे युवक-युवतियों की फिलहाल जरूरत है जो खुद को सेवा के लिए समर्पण कर देवें। बच्चों के लिए, महिलाओं के लिए अथवा मूक पशु-पक्षियों के लिए परेशनी देखकर जिनके सीने मे अग्नि भडक उठे, ऐसे जोशीले तथा समर्पित स्वय सेवको की तत्काल आवश्यकता है। जो जनता की छोटी-छोटी समस्याओं को सुलझाने मे मदद कर सकें। उनको ऐसा नेतृत्व प्रदान कर सके कि जिससे उनको रास्ता मिल जाये-अशिक्षा से निकलने का और गरीबी से उबरने का।

अग्रेजी शासन के समय आम जनता बडी दु खी थी पर आजादी के बाद उससे बदतर हालत होगई है। गाधीजी ने सर्वसाधारण की आवश्यकता नमक का मामला हाथ में लिया। जिससे उनको अधिक जनता का सहयोग मिला। गाधीजी ने चर्खे से सूत कातने का मामला हाथ मे लिया यह भी गरीब आदमियों आय का साधन था, इसलिये उनको सब लोगो का सहयोग मिला। इन कामों का शानदार परिणाम यह हुआ कि गाधीजी आम जनता के नेता बन गये और आम जनता ही देश मे अधिक है। इस प्रकार गाधीजी सर्वसाधारण के लीडर बन गये। जब अधिकाश लोगों का समर्थन और सहयोग मिल गया, तब गाधीजी को जनसेवा का सुनहरी मौका मिल गया तथा वह जनता के स्वय सेवक बन गये। इसी प्रकार स्वामी दयानन्द ने अज्ञानान्धकार में ग्रसित और गुरुडम के प्रभाव के कारण अन्धविश्वासों के फसी हुई आम जनता की समस्या को हाथ मे लिया तो एकदम जनता का ध्यान उनकी ओर आकृष्ट होगया तथा उनको भरपूर जनसमर्थन मिला। यही कारण था कि लाखो शोषित

नर-नारी उनके अनुयायी बनते चले गये। जनसेवा का ढग यह है कि उनका विश्वास प्राप्त करो और उनकी आम समस्याओ को सुलझाओ। मेरा तात्पर्य यह नहीं है कि जनता का सारा काम स्वय सेवक ही कर देवें। जनता को लगडा नहीं बनाना है बल्कि उसको चलना सिखाना है। जनसमस्याओ का सुलझाने के लिये मार्गदर्शन करो, रास्ता सुझावो, जनता को अपने लिये कुछ करने के लिए प्रेरित करो। यदि स्वयं सेवक करेंगे तो जनता उनके पीछे-पीछे इस तरह फिरेगी जैसे वकील के पीछे मुकदमा करनेवाले भागते फिरते हैं।

आज लोगों की मानसिकता खराब होगई है। सामाजिक परिस्थितिया अति गम्भीर होती जारही हैं। ऐसी हालत मे जनसेवा के द्वारा स्वस्थ जागरूक समाज के निर्माण में स्वय सेवको की विशेष भूमिका होती है तथा उनका योगदान महत्त्वपूर्ण होता है। समाज के गरीब और कमजोर वर्ग के लोगो की भलाई के लिए स्वय सेवकों को आगे आना चाहिए। स्वय सेवक नि स्वार्थ भाव से काम करता है जो बडे पुण्य का कार्य है।

भारतीय समाज मे अत्यधिक गिरावट आगई है इसलिये कुरीतिया बढती जारही हैं। भले आदमी बडे परेशान और दु खी हैं तथा असामाजिक तत्त्व एक से बढकर एक नीच कर्म कर के दनदनाते फिर रहे हैं। सामाजिक बुराइयों को दूर करने के लिए स्वय सेवक बडा योगदान कर सकते हैं।

जनसेवा का काम बहुत अधिक है और करनेवाले थोडे हैं। आइये, हिम्मत करके कमर कसकर खडे हो जाइये। समर्पित स्वय सेवक बनकर काम कीजिये। ध्यान रहे युवक-युवतिया ही किसी सामाजिक अव्यवस्था को बदल सकते हैं। दुनिया में सामाजिक क्रान्तिया तभी सफल हुई हैं, जब उनमें युवावर्ग सम्मिलित होगया। वर्तमान काल में स्वय सेवको की भूमिका बड़ी महत्त्वपूर्ण है। इस स्वय सेवक की कसौटी पर खरा उतरने वालों की नितान्त आवश्यकता है।

पहले यह कहा जा चुका है कि स्वय सेवक बनकर समाज के हित का कार्य करना तथा उसके बदले मे किसी प्रकार का वेतन, भत्ता, मजदूरी या अनुदान आदि न लेना यह वर्तमान काल मे बडा कठिन लगता है। आजकल भौतिकवाद हम पर इतना हावी होगया है कि हम हर मामले मे हर काम के लिए पैसा लेने की इच्छा करते हैं। कई बार तो ऐसा लगता है कि आजकल नि स्वार्थ भाव से सेवा करने की बात सपना होगई है। योगेश्वर श्री कृष्णचन्द्र महाराज ने अर्जुन को निष्काम कर्म का जो सन्देश आज से साढे पांच हजार वर्ष पहले दिया था, वह आज भी उतना ही उपयोगी है जितना उन दिनो था। आजकल कुछ लोग यह तर्क देते हैं कि इस आर्थिक युग मे जब बिना पैसे के किसी का काम नहीं चलता और बाजार मे कोई भी वस्तु बिना पैसे के नहीं मिलती तो फिर कौन ऐसा मूर्ख है जो व्यर्थ में अपना सिर खपावे और उसके बदले मे पैसा भी न लेवे। इनकी दृष्टि से इस प्रकार के लोग शायद जमाने की वास्तविकता को नहीं समझते हैं। इस सन्दर्भ मे इनका बडा सीधा और सरल तर्क है कि जब कोई भी वस्तु मुफ्त नहीं मिलती तो हम क्यो किसी के लिए मुफ्त मे काम करे ? हम यह आशा क्यों रखे कि कोई बिना कुछ लिए हमारे लिए काम करे, हमारी सहायता करे ? अब तो दुनिया मे हर वस्तु का सौदा होता है। अगर किसी को किसी समय दूसरे किसी एक या कई व्यक्तियो की सहायता की आवश्यकता पडे तो वह इसके लिए पैसा देवे और अपनी सहायता करवा लेवे। इसके लिए वह एक ओर तर्क देते हैं कि किसी को सलाह देने मे क्या लगता है ? सिर्फ जबान ही तो हिलानी है, फिर भी सलाहकार लोग बदले मे पैसा लेते हैं। उनकी बात का साराश यह है कि आजकल बिना पैसे दिये किसी प्रकार की मदद की आशा करना व्यर्थ है, इसलिए 'टका देओ और गज फडाओ' वाली बात ही ठीक लगती है। जब हम बिना पैसा लिये काम नहीं करना चाहते तो फिर दूसरो से उम्मीद क्यो करे ? जब अपने ही जरूरी काम पूरे नहीं होते, तो फिर दूसरो की सेवा अथवा सहायता करने के लिए समय कहा से निकाले। ऐसा लगता है कि बिना पैसे लिए काम करनेवाले लोग अपना ठीक प्रकार से मूल्याकन नहीं कर पारहे हैं। बडी सीधी सी बात है-पैसा देओ और अपनी सहायता या सेवा का काम करवाओ।

उपर्युक्त विचारधारा रखनेवाले मित्रो से निवेदन यह है कि जनहित के सारे काम कभी भी पैसे से नहीं हुआ करते। यदि ऐसे काम पैसे से ही होते, तो फिर अब तक होगए होते, क्योकि सरकार ने सब प्रकार के विभाग खोल रखे हैं, और उनमे काम करनेवालों को वेतनमान भत्ते भी बहुत अच्छे मिल रहे हैं, फिर भी सब कुछ क्यो बिगडा पडा है ? इसका मतलब यह हुआ कि ऐसे काम स्वय सेवको के द्वारा ही पूरे किये जा सकते हैं। आगे बढने से पहले थोडी देर के लिए इन घटनाओ पर दृष्टिपात करना लाभदायक रहेगा। मान लीजिये कि अचानक भूल से या बिजली की शार्ट सर्किट से किसी के घर मे आग लग गयी और सामान जलने लगा तथा जानी नुकसान की भी सम्भावना नजर आने लगी। तो आर्थिक युग का मन्त्र जाप करनेवालो के हिसाब से ऐसे व्यक्ति को आग बुझाने और कीमती जान बचाने के लिए पैसे लगेंगे। पहले वह यह तय करे और फिर कोई उसकी सहायता करे। परन्तु यह असम्भव है क्योकि जब तक आग लगे हुए घर का मालिक आग बुझाने का सौदा तय करेगा तब तक सारा घर राख हो जाएगा तथा कीमती जानें भी जलती हुई अग्नि की लपटों की भेंट चढ जाएगी, क्योंकि कुछ समय तो पैसों का फैसला करने में लगेगा ही।

दूसरी बात, मान लीजिये कि कोई आदमी पानी की धारा में फंस गया। अचानक गहरा गड्ढा आगया और वह उसमें डूबने लगा। तो आर्थिक युग के हिसाब से उसे अपने बचाव के लिए पहले सौदा तय करना चाहिए था कि वह बचानेवाले को क्या देगा ? जब डूबते हुए व्यक्ति को होशहवाश ही नहीं है तो वह सौदा कैसे करेगा ? और जब तब सौदा करेगा तब तक तो वह डूब कर मर जाएगा। इसलिए यह सौदा करना सम्भव ही नहीं है। ऐसे अनेक अवसर व्यक्ति के जीवन में आते हैं जो सौदा करने के चक्र में सब कुछ बरबाद कर देंगे। इसका तात्पर्य यह हुआ कि समाज में आपस में सहयोग तथा सेवा करना ही एकमात्र रास्ता है, जो ऐसी हालत में उपयोगी सिद्ध हो सकता है। कहने का भाव स्पष्ट होगया कि बिना स्वार्थ दूसरों की सेवा किये बिना समाज का काम नहीं चलता। प्रश्न पैदा होता है कि इसके लिए कौन तैयार हो ? क्या कोई निठल्ले या खाली रहनेवाले व्यक्ति ऐसा कर पायेंगे ? शायद कदापि नहीं। अत सबको नि.स्वार्थ सेवा के लिए सदा तैयार रहना चाहिये। यदि हम आज किसी की सहायता करेंगे, तो कल को जरूरत पड़ने पर कोई हमारी भी सहायता के लिए आगे आ जाएगा। नि स्वार्थ भाव से सेवा तथा सहायता करनेवालों के बिना दुनिया के लोगों का काम चलना बडा मुश्किल है।

दूसरा प्रश्न पैदा होता है कि नि स्वार्थ सेवा करनेवाले को क्या मिलता है ? मेरा कहना यह है कि ऐसे लोग किसी बात की अपेक्षा ही नहीं करते कि सेवा के बदले में उन्हें कुछ मिले। अगर वे कुछ मिलने की ही उम्मीद करें तो वे स्वय सेवक क्या हुए ? दूसरी बात समाज के लोग उनकी निन्दा चुगली करेंगे, उनसे चिडेंगे। उन पर झूठा दोषारोपण भी करेंगे। उनके रास्ते में रोडा अटकायेंगे, कोई न कोई बाधा खडी करेंगे। यह बात केवल हमारे देश में ही नहीं है, सारी दुनिया में ऐसा होता है। कभी-कभी लोग उनका सम्मान करनेवाले भी मिलते हैं, जो उन स्वयं सेवकों का सार्वजनिक अभिनन्दन करते हैं। खैर, स्वय सेवकों को और कुछ मिले या न मिले परन्तु स्वय सेवक को आत्मसन्तोष अवश्यमेव मिलता है। उनकी आत्मा प्रसन्न होती है कि हमने अच्छा काम किया है, और किसी जरूरतमन्द की सेवा-सहायता की है। निष्कर्ष यह है कि समाज के कल्याण के लिये स्वयं सेवक की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। स्वय सेवकों को किसी प्रलोभन के बिना प्रसन्नता के साथ उत्साह से जनहित के कार्य करने चाहियें।

आर्यसमाज सेक्टर-१४ सोनीपत का चुनाव

प्रधान-श्री वेदपाल आर्य, उपप्रधान-श्री ईश्वरदयाल शर्मा, उपप्रधान-श्रीमती सन्तोष मदान, मन्त्री-श्री मनोहरलाल चुघ, प्रचारमन्त्री-श्री प्रवीण चावला, उपमन्त्री-श्रीमती रुकमणी कटारिया, कोषाध्यक्ष-श्री धर्मवीर आर्य, पुस्तकाध्यक्ष-श्री जगदीशचन्द्र बत्रा, लेखानिरीक्षक-श्री सुभाष गुप्ता।

आर्यवीर दल भिवानी द्वारा जिला स्तरीय व्यायाम प्रशिक्षण एवं चरित्र-निर्माण शिविर

दिनांक १६ जून से २८ जून, २००२
स्थान : गुरुकुल (विद्यालय), चरखी दादरी
(नजदीक सीमेन्ट फैक्ट्री, रोहतक रोड)

मान्यवर, आपको जानकर अति प्रसन्नता होगी कि आर्यसमाज का युवा सगठन आर्यवीर दल आज के इस दूषित वातावरण मे अपनी शाखाओ एव शिविरो के माध्यम से सस्कृति रक्षा, शक्ति सचय एवम् समाजसेवा की भावना को विकसित करने हेतु कृतसकल्प है। समाज के शत्रु अज्ञान, अन्याय, अभाव एव चरित्रहीनता को दूर करने तथा युवको को युग-प्रवर्तक महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित आर्यसमाज के सिद्धान्तो से परिचित करवाने व जीवन जीने की कला सिखाने हेतु इस शिविर का आयोजन किया गया है। अत नवयुवकों से प्रार्थना है कि इस शिविर मे भाग लेकर लाभ उठाये।

शिविर मे शारीरिक विकास एव देश धर्म की रक्षा हेतु योगासन, प्राणायाम, यौगिक क्रियाए, नियुद्धम (जुडो-कराटे) दण्ड-बैठक, सवार्ग-सुन्दर व्यायाम, लाठी, भाला, रस्सी मलखब, सैनिक शिक्षा, आधुनिक व्यायाम एव भारतीय खेलों का विधिवत् प्रशिक्षण भारत वर्ष के उच्चकोटि के व्यायाम-प्रशिक्षक आचार्य नन्दकिशोर जी, अध्यापक चान्द आर्य, प्रवीणार्य, धर्मदेव आर्य, सन्तराम आर्य, नरेशार्य, सुरेन्द्रार्य एव सुनीलार्य आदि द्वारा किया जाएगा।

शिविर के मुख्य उद्देश्य 'चरित्र-निर्माण' हेतु प्रतिदिन उच्चकोटि के विभिन्न वक्ताओ द्वारा जीवनोपयोगी प्रवचन सुनने को मिलेगे।

आवश्यक निर्देश :—

१ शिविरार्थी को पूर्ण अनुशासन मे रहना होगा।
२ शिविर मे १४ से २५ वर्ष की आयु के नवयुवक भाग ले सकते हैं।
३ शिविर हेतु खाकी नेकर (हाफ पेंट) दो सफेद सेण्डो बनियान, सफेद जूते (पी टी शूज) व सफेद जुराब लगोट, कच्छा, तोलिया, घी, तेल, साबुन, नोटबुक (अभ्यास पुस्तिका), लेखनी (पैन) करदीप (टार्च), कान तक की लाठी, ऋतु अनुकूल बिस्तर, थाली, गिलास, कटोरी व चम्मच आदि आवश्यक सामान साथ लेकर आये।
४ शिविर शुल्क १०० रुपये होगा।
५ शिविर के बीच मे अवकाश नहीं दिया जाएगा।
६ शिविरार्थी को १९ जून, दोपहर १२ बजे तक शिविर स्थल पर पहुचना होगा।

सयोजक	निवेदक	सरक्षक
आर्यसमाज व आर्यवीर दल	**चादवीर आर्य**	**स्वामी चरणदेव जी,**
चरखीदादरी (भिवानी)		**श्री देवीसिह (आदमपुर)**
		स्वामी योगानन्द जी 'योगी'

चेतना के स्वर

विश्वास की डोर—विश्वास की उस डोर से बधे हैं हम, जिसका एक सिरा प्रेम आकर्षण है दूसरा त्याग-समर्पण है। इस डोर को सन्देह के चाकू से दूर रखना जरूरी है। यह चाकू विश्वास की डोर पर जब जोर का प्रहार करता है डोर टूट जाती है फिर नहीं जुडती। वह हल्का हो तो भी गाठ पड जाती है-उसे सुलझाना तो दूर, पता भी नहीं चलता, कहा पडी है।

कैसा हो घर—घर जरूर चाहता हू, पर उसकी वह चमक नहीं जिससे आखे इतनी चुधिया जाये कि मैं घर और घरवालो को न देख सकू। कमी का वह अधेरा भी नहीं चाहता मैं सिमे अतिथि की आने की राह भी न देख सकू।

घर ऐसा हो जहा आने वाले को थोडा ही मिले, पर हमारे आदर का वह भाव और स्वागत और व्यवहार का वह रग उसे मिले कि जाते हुए वह यह न समझे कि उसका अपमान हुआ है।

हमारा घर, गृह इसलिए है कि उसमे ग्रहण किया जाता है। उसमे रहने वाले लोगो के बीच प्यार व चाद है जिसे अभाव का ग्रहण नहीं लगना चाहिए। ईंट पत्थर से मकान बनता है घर भावना से बनता है। प्यार और आदर के विचारो के बीच हमारे घर आकर कोई भी मेहमान यदि सुख, सुविधा अनुभव करे तो घर हमारा वह स्वर्ग होगा जिस पर हम स्वय मर मिटना चाहेगे, किसी और स्वर्ग की चाह नहीं होगी हमे।

नजर लगे, पर ऐसी जो लगे तो उतारी न जाये—नजर लगे, पर ऐसी जो लगे तो उतारी न जाये और जिससे हम न उतरें। हसी आती है मुझे जब देखता हू कि कई महिलाये नजर उतारने के लिए बच्चों के माथे पर काला टीका लगा देती हैं। यह कोरी मूर्खता है। नजर उतरने उतारने की चीज नहीं है। हम पर नजर पडे, परखने के लिए। जो शुभ हितकर नहीं उसे दूर करे। अन्धविश्वास की किस सीमा तक जा सकते हैं जिस कालिख से हम बचना चाहते हैं, उसे अपने ही हाथो से अपने ही बच्चो के माथे पर लगाते हैं जिन्हे बहुत स्नेह मे भरकर अपना चाद, तारा कहते हैं। भला क्या नहीं चाहेगे हम, हमारे इन चाद तारो पर कोई दृष्टि डाले। नजर चढती है और जिसे चढाती है, वह उतर नहीं सकती। भगवान् करे, कोई हमे उस नजर से देखे हम बढ सके, सही राह पर।

चुनौतियों का सामना उनसे भागकर नहीं, जागकर करना चाहिए—चुनौतियो का सामना उनसे भाग नहीं, जागकर करना चाहिए। जीवन की अवधि का पता नहीं होता पर हमे करने के लिए जो काम मिला है, उसका हमे पता होना चाहिए। उसे हमने पूरा करना है।

जीवनकाल मे यदि पूरा न भी हो, तो भी सतोष होना ही चाहिए कि हमने श्रम और लगन मे कोई कसर नहीं छोडी। काम से डरकर, आत्महत्या कर जो जीवन को समाप्त करने की बात करते हैं, मैं समझता हू वह उन बच्चो जैसे हैं जो होमवर्क पूरा न करने पर टीचर की डाट से डरकर स्कूल से भागना चाहते हैं। चुनौतिया हमारी उस योग्यता और शक्ति से हमारा परिचय कराती हैं जो हमारे भीतर हैं, जिनसे स्वय हमारा ही परिचय नहीं है।

—आर्य चन्द्रशेखर शास्त्री (वेदप्रवक्ता),
आर्यसमाज बाहरी रिग रोड, विकासपुरी, नई दिल्ली, दूरभाष ५५१६९९६

हांसी में आर्यवीर प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न
हांसी नगर के इतिहास में पहली बार

शिविर के समापन पर बोलते हुए आर्यवीर दल हरयाणा के महामन्त्री श्री वेदप्रकाश आर्य एव मच पर बैठे हुए चौ० हरिसिह सैनी आदि अन्य गणमान्य व्यक्ति।

स्थानीय आर्यवीर दल ने हरयाणा प्रदेश आर्यवीर दल के तत्त्वावधान मे डी ए वी स्कूल लाल सडक हासी मे ८ दिवसीय आर्यवीर चरित्र निर्माण प्रशिक्षण शिविर २६ मई से २ जून, २००२ तक वैदिक विद्वान् आचार्य रामसुफल शास्त्री, लाल सडक हासी के नेतृत्व मे लगाया गया।

शिविर का उद्घाटन श्री मामनराम सैनी पूर्व प्रधान नगर परिषद् हासी ने किया तथा अध्यक्षता मा० भगवानदास प्रधान आर्यवीर दल खाण्डाखेडी ने की जिसके विशिष्ट अतिथि प्रो० कवल नैन थे।

शिविर मे कुल ५२ छात्रो ने भाग लिया। जिनकी भोजन व आवास व्यवस्था गुरुकुलीय वातावरण मे एक समान की गई। शिविर के दौरान स्वामी कीर्तिदेव, प० भरतलाल शास्त्री, प्रिंसिपल भगवानदास कैप्टन, चौ० प्रतापसिह आर्य, प ओमकारनाथ शास्त्री भिवानी, मा जगदीश सैनी, श्री देसराज आर्य रोहतक व श्री सोहनलाल भयाणा उपप्रधान आर्यसमाज हासी आदि विद्वानो ने बौद्धिक कक्षाओ द्वारा बच्चो को वैदिक सिद्धान्त की जानकारी दी।

२ जून को शिविर का भव्य समापन समारोह आर्य कन्या विद्यालय हासी मे किया गया। जिसमे मुख्य अतिथि चौ० हरिसिह सैनी पूर्व मन्त्री, हरयाणा सरकार, अध्यक्षता श्री अमीरचन्द मक्कड पूर्व विधायक, हासी विशिष्ट अतिथि डॉ० रमेशकुमार लीखा-उपप्रधान आर्यसमाज हिसार तथा प्रमुख वक्ता श्री वेदप्रकाश आर्य महामन्त्री आर्यवीर दल हरयाणा व आचार्य विश्वमित्र शास्त्री हासी थे। बच्चों को शिविर मे सिखाये गये करामात का विशाल प्रदर्शन दिखाया जिसे दर्शक टकटकी बाधकर देखते रहे। शिविर बहुत ही सफल रहा। जो हासी शहर व आसपास के गावो मे सर्वत्र चर्चा का विषय बना हुआ है।

—मन्त्री—आर्यवीर दल हासी

आर्यसमाज के उत्सवों की सूची

१	आर्यसमाज कनीना जिला महेन्द्रगढ	१५ से १६ जून २००२
२	आर्यसमाज गोहाना मण्डी जिला सोनीपत	२१ से २३ जून २००२
३	आर्यसमाज न्यात जिला सोनीपत	२५ से २६ जून, २००२
४	आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ जिला झज्जर (नि शुल्क ध्यानयोग-वैदिक दम्पती निर्माण सस्कार प्रशिक्षण शिविर, चतुर्वेद शतक-यज्ञ प्राकृतिक चिकित्सा शिविर)	२३ से ३० जून २००२

—सुखदेव शास्त्री, सहायक वेदप्रचाराधिष्ठाता

आर्य युवक चरित्र निर्माण शिविर सम्पन्न

आपको यह जानकर हर्ष होगा कि केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् पठानकोट के तत्त्वावधान मे 'आर्य युवक चरित्र निर्माण शिविर' का आयोजन १९ मई से २६ मई २००२ तक दयानन्दमठ घण्डरा (हि०प्र०) मे किया गया। शिविर का शुभारम्भ स्वामी सतोषानन्द जी ने ध्वजारोहण द्वारा किया। इस शिविर का सचालन आचार्य भगवानदेव चैतन्य (कार्यकारी अध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा हि प्र) ने बडे ही सुन्दर एव व्यवस्थित ढग से किया। बच्चो मे आस्तिकता, राष्ट्रभक्ति के भावो का सचार करने हेतु पूरा सप्ताह सुबह शाम प्रवचन हुए तथा बच्चो ने विभिन्न विषयो पर परिचर्चा की। युवको की शारीरिक उन्नति हेतु दण्ड बैठक, जूडो-कराटे, लाठी एव योगासन इत्यादि का प्रशिक्षण दिया गया। इस शिविर मे विभिन्न स्कूलो के ६५ युवको ने भाग लिया।

दीक्षान्त समारोह मे आर्यजगत् की महान् विभूति १०३ वर्षीय स्वामी सर्वानन्द जी सरस्वती ने अध्यक्षता की। ध्वजारोहण स्वामी सदानन्द जी महाराज ने किया। आचार्य भगवानदेव जी चैतन्य ने युवको को आशीर्वाद दिया। श्री अनिल आर्य (राष्ट्रीय अध्यक्ष, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्) समारोह मे मुख्य अतिथि थे। उन्होने विभिन्न प्रतियोगिताओं मे श्रेष्ठ प्रदर्शन हेतु युवको को पुरस्कार वितरित किए। इस शिविर के प्रबन्धन मे डॉ० सुधीर गुप्ता, सन्दीप नेब, पकज तुली, सजीव महाजन एव सजीव तुली ने सराहनीय योगदान दिया।

भवदीय सन्दीप नेब, अध्यक्ष के आ यु परिषद, पठानकोट (पजाब)

आर्यसमाज मन्दिर अंधेरी पश्चिम मुम्बई का निर्वाचन

प्रधान-श्री हरीश आर्य, उपप्रधान-श्रीमती उर्मिल बहल, श्री ओमप्रकाश तिकिया, मत्री-श्रीमती शकुन्तला जोधन, सहायक मत्री-श्रीमती सुभाषिणी खोसल, श्री दीपक रेल्हन, कोषाध्यक्ष-श्रीमती यशी आर्य। **—शकुन्तला जोधन**

एक महान् प्रेरक व्यक्तित्व :

डॉ० राजकुमार आचार्य

तर्ज : दिल लूटने वाले जादूगर

श्री डॉ० राजकुमार आचार्य जी का जीवन अजब निराला है।
कठिन साधना करके इसने खुद को खूब सभाला है।। टेक।।

सन् पचपन मे जन्म लिया गाव सुनारिया कला हरियाणे मे।
श्री मामनसिह जी पिता थे जिनके अच्छे भले जमाने मे।
पिता निधन के बाद मामा श्री बलवन्त जी ने पाला है।।१।।

माता श्रीमती समाकौर जी देती आशीर्वाद सदा।
तेरी जिन्दगी मे कभी ना आये बेटा कोई भी विपदा।
माँ की थी शिक्षा कर मेहनत आगे भगवान रखवाला है।।२।।

प्रथम कक्षा से आठवीं तक पढा मकडौली कला गाव मे।
होनहार होने के कारण पढ गया शिक्षा चाव मे।
किया बडो का मान हृदय से मन का बडा खुशहाला है।।३।।

सुयोग्य छात्र रहा था महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर मे।
जो भी मिलता पाठ पठन को याद किया था पलभर मे।
प्रथम श्रेणी लेकर खुद को शिक्षक लाईन में ढाला है।।४।।

तत्पश्चात् गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय मे प्रवेश लिया।
वहा करके परिश्रम प्रथम श्रेणी मे एम ए सस्कृत पास किया।
सभी से पाई मान बडाई चरित्र का पूरा आला है।।५।।

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से इन्होने स्वर्णपदक को झटक लिया।
रिकार्ड तोडकर यूनिवर्सिटी का ज्ञान का अमृत खूब पिया।
कदम कभी रुकने न दिया यू उन्नति का मतवाला है।।६।।

पजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ से पी-एच डी की डिग्री ली।
राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिह जी ने सन सत्तासी मे इनको दी।
पा डिग्री सेवा करी जनता की करा कभी नहीं टाला है।।७।।

इक्कीस वर्ष तक सस्कृत प्रवक्ता के पद पर आसीन रहे।
जी जान से अपने शिष्यो को विद्या बाटने मे लीन रहे।
कभी नहीं विचलित होते कैसा भी सकट जाला है।।८।।

पत्नी श्रीमती सावित्री देवी भी आदर्श शिक्षिका है।
नेक गृहिणी भी है वह जिस पर पूरा परिवार टिका है।
लोकेश पुत्र अर्चना प्रेरणा पुत्रियो से बाग हरियाला है।।९।।

मार्च २००० से २००२ तक आचार्य के सग सेवा करी।
प्रत्येक दशा मे पूर्ण पाये बात कहू मैं खरी-खरी।
सच्चा सुन्दर स्पष्ट वक्ता है ना रखता दिल मे काला है।।१०।।

सभी सांस्कृतिक कार्यो आदि मे हिस्सा लेते रहते हैं।
सोच समझकर कार्य करते न भावावेश मे बहते हैं।
उपमन्त्री पद पर कार्य करते वह झज्जर गुरुकुलशाला है।।११।।

समय-समय पर पत्रिकाओ मे लेख इनके आते रहते।
वेदानुकूल आवरण की ये मानव जाति को कहते।
कुसग ज्वर से दूर रहा यह बुद्धि का उजियाला है।।१२।।

कोसली रोड पर झज्जर मे है इनका आज बसेरा।
वार्ड न० ८ निकट है इनके न्यूटन स्कूल सुनहेरा।
मकान का न० १७६ जनता का बोलबाला है।।१३।।

सन् २००२ जनवरी मे इन्हे प्रधानाचार्य सुना गया।
जब यू पी एस ई ने करी नियुक्ति सबके मुख से सुना गया।
आगे की प्रगति हेतु 'इन्द्र' ने फेरी ओ३म् की माला है।।१४।।

प्रेषक आर्य इन्द्रसिंह वर्मा, एम कॉम , एम ए इग्लिश, बी एड
झाडौदा कला, नई दिल्ली-११००७२

आर्यसमाजों का आर्थिक सहायता

हम ऐसी आर्यसमाज की आर्थिक सहायता करेंगे जिसके सब अधिकारी योग्य और चरित्रवान् हैं अर्थात् दैनिक सन्ध्या हवन करते हैं। यज्ञोपवीत धारण करते हैं। उनके परिवार (पत्नी, बच्चे) भी उसके अनुकूल हैं अर्थात् आर्यसमाज मे आते हैं। जहा पद प्राप्ति के लिए कभी झगडा नहीं होता। सदैव सर्वसम्मति से अधिकारी चुने जाते हैं और कोई अन्य विपक्षी दल नहीं है। ऐसी समाज को देखना पसन्द करेगे और यथासम्भव सहयोग भी देंगे।

सावधान—आर्यसमाज के उज्ज्वल भविष्य के लिये ऐसे व्यक्तियो को सदस्य बनाकर कूड़ा करकट जमा मत करो जो चरित्रहीन और दुर्व्यसनी है। भारी दान देकर कुछ ऐसे स्वार्थी तत्त्व आर्यसमाजों में घुस आये हैं उन्हें चेतावनी देकर सुधारने का अवसर दें।

—देवराज आर्य मित्र, आर्यसमाज कृष्ण नगर, दिल्ली-५१

राजभाषा/राष्ट्रभाषा हिन्दी पर मंडराता हुआ संकट

–प्रो० चन्द्रप्रकाश आर्य, अध्यक्ष, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग
दरयावसिंह कॉलेज, करनाल

हिन्दी देश की राष्ट्रभाषा है। संविधान में इसे राजभाषा का स्थान प्राप्त है किन्तु प्रशासनिक, राजकाज, सरकारी तथा गैर सरकारी कार्यालयों में, सार्वजनिक प्रतिष्ठानों में, इजीनियरिंग कॉलेजों में, व्यावसायिक परीक्षाओं में, अखिल भारतीय प्रतियोगी परीक्षाओं में अंग्रेजी का ही प्रभुत्व है। सर्वोच्च न्यायालय तथा उच्च न्यायालयों मे अग्रेजी का ही वर्चस्व है। स्थिति यहा तक आ पहुंची है कि जैसे हमारी अपनी कोई राजभाषा/राष्ट्रभाषा न हो।

राजभाषा विभाग (गृह मन्त्रालय, भारत सरकार) के १९९४-९५ से लेकर १९९७-९८ तक के चार साल के वार्षिक कार्यक्रमों की रिपोर्टों को देखने से पता चलता है और केन्द्र और राज्यो मे परस्पर पत्राचार का लक्ष्य अभी तक ४५ प्रतिशत से ५५ प्रतिशत ही पूरा हो पाया है। राजभाषा हिन्दी की इस प्रकार प्रगति जारी रही तो अगले २५-५० साल मे भी हिन्दी राजभाषा का स्थान नहीं ले सकती क्योंकि केन्द्र और राज्यो मे परस्पर पत्राचार तथा कामकाज अधिकाशतया अग्रेजी मे ही होता है।

इसलिए ससदीय राजभाषा समिति ने अपने प्रतिवेदन (रिपोर्ट) के तीसरे खण्ड मे कहा है कि 'क' और 'ख' क्षेत्रों मे वर्तमान कर्मचारियो को हिन्दी का प्रशिक्षण वर्ष १९९७ के अत तक तथा 'ग' क्षेत्र मे स्थिति कार्यालयों के कर्मचारियो को वर्ष २००० के अत तक पूरा कर लिया जाए। ससदीय राजभाषा समिति द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट/प्रतिवेदन के प्रथम चार खण्डो में की गई सिफारिशो/सस्तुतियों का सार पढा जाए तो स्पष्ट है कि केन्द्र सरकार के विभिन्न मंत्रालयों/कार्यालयों/विभागों/उपक्रमों मे अब भी अग्रेजी का प्रयोग/वर्चस्व जारी है। 'क' क्षेत्र मे उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार आदि हिन्दी भाषी राज्य एव दिल्ली आदि सघशासित राज्य हैं जबकि 'ख' क्षेत्र मे गुजरात, महाराष्ट्र, पजाब तथा सघशासित चण्डीगढ प्रदेश आते हैं। शेष सभी सघशासित क्षेत्र तथा प्रान्त 'ग' मे आते हैं।

पहले उत्तर प्रदेश, बिहार, दिल्ली आदि में किन्तु अब पजाब, बगाल मे तथा हरयाणा मे भी प्राथमिक कथाओं से अग्रेजी को अनिवार्य रूप से लागूकर दिया गया है। क्योंकि देश की अधिकाश नौकरियो मे अग्रेजी की प्रधानता है। व्यावसायिक कालेजो तथा तकनीकी सस्थानो मे अग्रेजी ही प्रधान है। इस प्रकार प्रारंभिक शिक्षा, उच्चशिक्षा, उच्च तकनीकी शिक्षा, मैडिकल शिक्षा मे अग्रेजी का वर्चस्व है। उस पर दस प्रतिशत अग्रजी जानने वालो का ही वर्चस्व है। देश की ९० प्रतिशत जनता की पहुच से वह बाहर है।

ससद विधानमडलो, न्यायालयों, प्रशासन एव राजकाज में अग्रेजी का वर्चस्व जारी है। जबकि देश की राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक एव सास्कृतिक गतिविधिया हिन्दी तथा भारतीय भाषाओं मे सचालित होती हैं। फिर भी देश पर अग्रेजी हावी है। अग्रजी के कारण हिन्दी तथा भारतीय भाषाये पिछड गई हैं। पिछले चार पाच साल के राष्ट्रीय समाचार पत्रो खासकर नवभारत टाइम्स, हिन्दुस्तान, राष्ट्रीय सहारा, दैनिक जागरण, पजाब केसरी, दैनिक ट्रिब्यून, अमर उजाला आदि में प्रकाशित लेखो एव हिन्दी विषयक सामग्री को देखा जाए, उसका विश्लेषण किया जाए तो यही बात सामने आती है कि आज देश मे अग्रेजी का वर्चस्व बढता जा रहा है।

हिन्दी नगरो एव गोष्ठियो तक सीमित हो गई है। हिन्दी को हमने पिछले ५०-५५ वर्षों मे सरकारी प्रचार तत्र, केन्द्रीय हिन्दी समितियो राजभाषा प्रकोष्ठो तथा हिन्दी अधिकारियो एवं हिन्दी अनुवादो की नियुक्ति तक सीमित कर दिया गया है। आर्यसमाज तथा आर्यसमाज की सस्थाओ/सभाओं जैसे सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा आदि द्वारा प्रकाशित पत्र-पत्रिकाओ का भी यही स्वर है कि आजादी के ५०-५५ वर्ष बाद भी देश पर अग्रेजी का वर्चस्व है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि अग्रेजी ही देश की राजभाषा बनी हुई है। इस कारण हिन्दी तथा भारतीय भाषाओ की घोर उपेक्षा हो रही है। अग्रेजी देश के किसी भी प्रदेश, जिले अथवा ग्राम की भाषा नहीं। इसके बोलनेवालों की सख्या पूरे देश में लगभग दो प्रतिशत मानी जाती है। किसी गांव में पीने का पानी हो न हो किन्तु अग्रेजी माध्यम स्कूल जरूर होगा। पूरे परिवार मे भले ही किसी को अंग्रेजी पढनी-लिखनी न आती हो किन्तु विवाह का कार्ड निमत्रण अग्रेजी मे होगा।

देश की जनता के साथ यह घोर अन्याय है। अग्रेजी के वर्चस्व के कारण देश मे भारी सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक एव राजनीतिक असमानता फैली है। अत अग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त किए बिना राष्ट्रभाषा हिन्दी तथा भरतीय भाषाओं को उचित स्थान नहीं मिल सकता, उनका उचित विकास नहीं हो सकता। इसके लिए भारत सरकार तथा प्रधानमत्री जी को पहल करनी होगी।

सर्वप्रथम केन्द्र की वर्तमान सरकार तथा प्रधानमत्री जी वाजपेयी को दक्षिणी राज्यो के मुख्यमंत्रियों से सलाह करनी चाहिए। फिर सरकार मे शामिल सभी घटको से परामर्श करके सर्वदलीय बैठक बुलानी चाहिये। इसके बाद राज्यो के मुख्यमत्रियों का सम्मेलन बुलाया जा सकता है। इसके साथ साथ विभिन्न हिन्दीसेवी सगठनों एव सभाओ जैसे अखिल भारतीय भाषा संरक्षण सगठन, भारतीय भाषा हिन्दी सम्मेलन, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, राष्ट्रीय हिन्दी परिषद, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा आदि से जुड़े हिन्दी से सम्बद्ध व्यक्तियों से परामर्श किया जा सकता है।

देश की भाषाई स्थिति विकट है किन्तु समस्या को सुलझाया जा सकता है। आखिर पिछले ५०-५५ वर्षों से कश्मीर समस्या को भी सुलझाने मे हम लगे हुए हैं। यद्यपि यहा विकट स्थिति का सामना है। पोखरण के परमाणु विस्फोट से उत्पन्न स्थिति को भी सरकार ने सभाला है। उसी प्रकार भाषाई सकट को भी सुलझाने मे भी सरकार को आगे आना होगा। इसका सम्बन्ध पूरे देश के साथ है।

नोट - इस सम्बन्ध मे लेखक का कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र के रिसर्च जर्नल ऑफ आर्टस एण्ड ह्यूमेनिटिज के नवीनतम अक मे पन्द्रह पृष्ठों का-पृ ७१ से ८५ तक-एक शोध लेख/रिसर्च पेपर प्रकाशित हुआ है। भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी बनाम अग्रेजी। उनमे ११५ शोध सदर्भ हैं।

गन्नौर मण्डी में आर्य वीरांगना ब्रह्मचर्य प्रशिक्षण शिविर का आयोजन

आर्यसमाज मन्दिर किशनपुरा (बी एस टी रोड) गन्नौर मण्डी (जिला सोनीपत) हरयाणा मे कन्याओ मे शारीरिक, आत्मिक, नैतिक बल, सामाजिक, वैचारिक क्रान्ति एवम् वैदिक सिद्धान्तो व सस्कारो का प्रशिक्षण देकर उन्हे समाज के निर्माण मे एक अहम् भूमिका निभाने हेतु आर्य वीरागना ब्रह्मचर्य प्रशिक्षण शिविर २३ जून से ३० जून तक लगाया जा रहा है। शोभायात्रा २९ जून को है।

इस शिविर मे कन्याओ में शारीरिक एवम् बौद्धिक विकास, राष्ट्रीय चेतना, आत्मरक्षण अनुशासित जीवन, शस्त्र प्रशिक्षण (लाठी, तलवार, भाला, छुरी चलाना) हस्तकला प्रशिक्षण, आर्य सस्कृति की भावनाए (यज्ञ, सत्सग, सन्ध्या) की जागृति लाना शिविर का मुख्य उद्देश्य है।

इस अवसर पर श्री विकास जी, माता सुलक्षणी जी, श्री धर्मचन्द बतरा, डॉ० रणवीर जी, श्रीमती करतार देवी जी, दानवीर सेठ ज्वालाप्रसाद, श्रीमती उज्ज्वला वर्मा, मा० मनोहरलाल चावला, श्री वेदपाल आर्य (प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा सोनीपत), हरिचन्द स्नेही (बौद्धिक अध्यक्ष प्रान्तीय आर्यवीर दल हरयाणा), नित्यप्रिय आर्य मण्डलपति सोनीपत, हरिचन्द बतरा का मार्गदर्शन प्राप्त होगा।

विनीत हरिचन्द स्नेही, *प्रान्तीय आर्यवीर दल हरयाणा*

गृह प्रवेश पर आर्य संस्थाओं को दान

आर्यसमाज के विद्वान् डॉ० राजपाल आर्य ग्राम बरहाणा जिला झज्जर ने अपने नवीन मकान सैक्टर-१ रोहतक मे दिनाक ५ जून २००२ को वैदिक रीति से यज्ञ करवाकर गृह प्रवेश किया। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य विजयपाल जी गुरुकुल झज्जर थे। इस अवसर पर अनेको विद्वानो के सारगर्भित व्याख्यान हुए। सभी आगन्तुओ को शुद्ध सात्त्विक भोजन करवाया गया तथा आर्य शिक्षण सस्थाओ को १०,००० रुपये दान दिया। इस अवसर पर सभा उपमन्त्री श्री केदारसिह आर्य एव सभागणक श्री ओम्प्रकाश आर्य भी सभा की तरफ से उपस्थित हुए। गुरुकुल झज्जर के स्नातक श्री राजेन्द्र शास्त्री ने आगन्तुको का स्वागत किया। दान निम्न प्रकार से किया गया–

५१०० रुपये आदर्श गोशाला गुरुकुल झज्जर, ११०० रुपये गुरुकुल नरेला दिल्ली, ११०० रुपये आर्यसमाज बरहाणा (झज्जर), ११०० रुपये आर्यसमाज मकडौली कला (रोहतक), ५०१ रुपये आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, ५०१ रुपये चौ० लखीराम आर्य अनाथालय दयानन्दमठ रोहतक तथा ११०० रुपये कन्या गुरुकुल चोटीपुरा को दान दिया।

सत्यवान आर्य, आर्यसमाज मकडौली कला

शोक समाचार

श्री प्रह्लादसिह गुप्त आर्य काठमण्डी रोहतक के सुपुत्र श्री आनन्द प्रकाश गुप्त का निधन २५ मई २००२ को हो गया। उनकी स्मृति में दिनाक ६ जून २००२ को धर्मशाला वाली मे वानप्रस्थी श्री वेदप्रकाश साधक दयानन्दमठ रोहतक ने शान्ति यज्ञ करवाया। परिवार की ओर से आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को ५०१ रुपये दान दिया।

–केदारसिह आर्य

आर्यसमाज गोहाना मण्डी का वार्षिक चुनाव सम्पन्न

प्रधान–प० बदलूराम प्रभाकर, मन्त्री–सूबेदार करतारसिह आर्य, कोषाध्यक्ष–श्री रामधारी आर्य पू० कार्यालय अध्यक्ष बिजली बोर्ड हरयाणा।

मन्त्री आर्यसमाज गोहाना मण्डी

वचन सुधा

१ जब तुम जीवन को प्रारम्भ करो तब अपने आगे अच्छा लक्ष्य रखो।

२ जो कुछ काम करना चाहो, पक्की इच्छा से करो, जिससे तुमको सफलता होगी। किसी काम को करने से पहले मन मे दृढसकल्प कर लो फिर उसमे हाथ डालो। अपने कार्य को सिद्ध करने के लिए सब शक्ति लगा दो।

–सोहनलाल, भिवानी

आप आर्यसमाजी हैं ?

–स्वामी वेदमुनि परिव्राजक, अध्यक्ष–वैदिक संस्थान, नजीबाबाद (उ०प्र०)

यह प्रश्न अनेक बार सामने आता है। कारण यह है कि आर्यसमाजी का आर्यसमाजीपन वार्तालाप मे प्रकट हो जाता है तो कुछ लोग तो आर्यसमाजी समझकर ही यह कहते हैं कि आप आर्यसमाजी हो किन्तु कुछ व्यक्ति ऐसे भी मिलते हैं जो सन्देहात्मक दृष्टि से यह कहते हैं 'आप आर्यसमाजी हैं ?'

वास्तविकता यह है कि आर्यसमाजी की विचारधारा, उसका दृष्टिकोण इतना स्पष्ट होता है कि उसमे कहीं भटकाव नहीं होता। उसका कारण यह है कि आर्यसमाज की विचारधारा सुविचारित, स्पष्ट तथा तर्कपूर्ण है। वह दो और दो चार की भाति सदैव सत्य है और सत्य मे भटकाव कहीं होता ही नहीं, उसमे भटकाव का अवकाश ही नहीं है।

यदि तथ्यात्मक दृष्टिकोण से सोचा जाये तो आर्यसमाज है ही वैचारिक सस्थान, तुलनात्मक वैचारिक सगठन। आर्यसमाज कोई मत, सम्प्रदाय, पन्थ अथवा मजहब नहीं है। आर्यसमाज मे आकर, आर्यसमाजी बनकर मनुष्य को सत्य-असत्य अच्छाई, बुराई को समझने का विवेक हो जाता है। सत्यासत्य का विवेक जिस व्यक्ति को हो जाता है, वह कहीं भी, कभी भी हो सदा-सर्वदा यथार्थ ही बोलेगा, इसके विपरीत नहीं। यही कारण है कि ऐसे व्यक्ति से वार्तालाप करनेवाले को या तो उसके आर्यसमाजी होने मे विश्वास हो जाता है और या कम से कम यह सन्देह तो हो ही जाता है कि यह आर्यसमाजी प्रतीत होता है। यही कारण है उक्त प्रकार के प्रश्न सामने आते रहते हैं और फिर मेरे जैसे व्यक्ति के सामने तो यह प्रश्न आना स्वाभाविक ही है। इसका कारण यह है कि मैंने आर्यसमाज को किसी वक्ता के भाषण को सुनकर नहीं स्वीकार कर लिया है अपितु वर्षो अपने मित्रो मे बैठकर विविध दृष्टिकोणो, विविध विचारधाओ पर तर्क-वितर्क करके और फिर निरन्तर आर्यसमाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन चरित्र तथा उनके अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश को पढकर न केवल पढकर अपितु उसका गम्भीर अध्ययन करके आर्यसमाज को अपनाया है और तब से अब तक भी निरन्तर आर्यसमाज के अध्ययन मे लगा हुआ हू तथा जितना-जितना आर्यसमाज का अध्ययन करता जाता हू उतना ही उतना उनके रग मे रगता जाता हू।

महर्षि दयानन्द के अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश को तो इस समय सैंतीसवीं बार पढ रहा हू। मतवादी दृष्टिकोण से यह समझकर नहीं कि इसे पढकर मैं धर्मात्मा हो जाऊगा अथवा मोक्ष का अधिकारी हो जाऊगा अपितु उस दृष्टिकोण से पढ रहा हू कि महर्षि दयानन्द के दृष्टिकोण को उनके विचारो की गहराइयो को समझ सकू। सत्यार्थप्रकाश ऋषिवर की ऐसी कृति है कि जिसमे सत्यासत्य, धर्माधर्म का तथ्यात्मक विवेचन है। ध्यानपूर्वक अध्ययन कर लेने के पश्चात् मनुष्य को धर्म के तत्त्वो को समझने के लिये अन्यत्र कहीं भी भटकने की आवश्यकता नहीं रहती। विविध विषयो की जानकारी के लिये तो महर्षि ने सहस्रो पृष्ठ अन्यान्य विषयो पर ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका, सस्कारविधि आदि अपने विविध ग्रन्थो मे लिखे ही हैं और विस्तारपूर्वक लिखे हैं किन्तु सत्यार्थप्रकाश तो उनका घोषणापत्र है, किस विषय का ? कि व्यक्ति को कैसा होना चाहिए, परिवार को कैसा होना चाहिए, राष्ट्र को कैसा होना चाहिए तथा सर्वागपूर्ण रूपेण विश्व को कहू या विश्व मानव समाज को कैसा होना चाहिए ? यह सब कुछ महर्षि के सत्यार्थप्रकाश मे है और न केवल है अपितु विस्तारपूर्वक वर्णन और विवेचन है।

यह मैं केवल भावनाओ मे बहकर नहीं कहता हू अपने जीवन भर के अध्ययन, मनन और विचारमन्थन के पश्चात् कह रहा हू। मुझसे अनेक बार पूछा गया है कि सत्यार्थप्रकाश को दर्जनों बार पढने पर भी क्या इसे पढ़ने से आपका मन नहीं उकताता ? किससे मन उकताये ? सत्यार्थप्रकाश से, जिसमे दो सौ अस्सी ग्रन्थो के उद्धरण हैं और जिसके प्रणेता महर्षि दयानन्द ने तीन सहस्र ग्रन्थो को वैदिक दृष्टिकोण से प्रमाण माना है। ऐसे विस्तृत और गहन अध्येता की कृति है सत्यार्थप्रकाश। मेरी तो यह दृढ मान्यता बन गयी है कि जिसने आर्यभाषा हिन्दी पढकर सत्यार्थप्रकाश जैसा महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ नहीं पढा, वह सर्वथा घाटे मे है। यह तो सत्यार्थप्रकाश पढकर ही जाना जा सकता है कि उस महामानव का अध्ययन कितना विशाल, कितना विस्तृत और कितना गहन होगा ? महर्षि के इस घोषणापत्र सत्यार्थप्रकाश को मैं विश्व धर्मकोष भी कहता हू। कारण यह है कि इसमे विश्व धर्म तत्त्वो, सब धर्म तत्त्वो का वर्णन और विवेचन है। धर्म तत्त्वो से मेरा अभिप्राय उन तत्त्वों से है, जो सचमुच धर्म के नाम पर धारण करने के योग्य हैं जिनका धारण, आचरण किया जाना चाहिए और वास्तविक अर्थो में जिनको स्वीकार कर तदनुसार आचरण किया जाना धार्मिक होने के लिये परमावश्यक है।

महर्षि दयानन्दकृत ऋग्वेदादिभाष्य-भूमिका तथा सस्कारविधि का भी अनेकोनेक बार पारायण करने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ है। घर छोड़ने से पहल उस समय चलने वाली भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद की धार्मिक परीक्षाओ, सिद्धान्त सरोज, सिद्धान्त रतन, सिद्धान्त भास्कर, सिद्धान्त शास्त्री और सिद्धान्त वाचस्पति के परीक्षार्थियों को वर्षों इन परीक्षाओं में लगाये गये अन्यान्य वैदिक सम्पत्ति जैसे महान् ग्रन्थों के अतिरिक्त महर्षि के सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य-भूमिका, सस्कारविधि, व्यवहारभानु, आर्योद्देश्यरत्नमाला तथा गोकरुणानिधि भी सम्मिलित थे। इन सबके वर्षो पढने और पढाने का ही यह परिणाम है कि आर्यसमाज के अनेक विद्वानो तथा सन्यासियो की भाति न तो ऋषिवर के मन्तव्यो के विरुद्ध कोई बात चाहे किसी भी विद्वान् द्वारा कही या लिखी गई हो-मानने को तैयार है और न जैसा कि आर्यसमाज में अनेक विद्वान् ऋषिवर के मन्तव्यों को तोड-मरोड को अपनी-अपनी इच्छानुसार उनकी व्याख्या करते हैं, उन्हे ही मैं स्वीकार करता हू और न इस प्रकार की कोई गतिविधि अपनाने को ही तैयार हू, हो सकता भी नहीं हू। इसी कारण से यह स्पष्ट घोषणा करता हू अनेक बार अपने लेखो और भाषणो मे भी व्यक्त कर चुका हू कि 'मैं आर्यसमाजी हू, आर्यसमाज का हूं, आर्यसमाज के लिये हू।'

मेरी अभिप्राय किसी स्थानीय आर्यसमाज का होने से नहीं है, न जनपदीय, न प्रान्तीय और न सार्वदेशिक सभा के सगठन का होने से है। मैं इन सगठनो का महत्त्व समझता हू और उसे पूर्ण निष्ठा के साथ स्वीकार करता हू। इनमे से किसी भी सगठन का विरोधी नहीं हू और यदि समय तथा आवश्यकतानुसार कोई भी अन्य सगठन आर्यसमाज के सिद्धान्तो के प्रचारार्थ तथा सिद्धान्त रक्षार्थ बनाया जाए तो मैं उसे भी सहर्ष पसन्द और स्वीकार ही करूगा अपितु उसका यथा शक्य पूर्णरूपेण समर्थन भी करूगा किन्तु इन सगठनों अथवा इन सगठनो के महत्त्वपूर्ण पदों पर आसीन किन्हीं भी व्यक्तियों द्वारा कोई अनर्गल सिद्धान्त विरुद्ध मिथ्या आचरण किया जाएगा, जिससे सगठन की साख गिरती हो, उसका महत्त्व घटता हो, उसे हानि पहुचती हो और आर्यसमाज के उद्देश्य, आर्यसमाज क मिशन को धक्का लगता हो तो उसका विरोध, उसका प्रतिवाद पहले भी करता रहा हू, भविष्य में भी यावज्जीवन करता रहूगा।

मुझे यह चिन्ता न कभी हुयी है, न अब है कि अमुक व्यक्ति विरोधी हो जाएगा। होजाएगा तो हो जाये, हो जाया करे, मुझे इस बात से कुछ लेना-देना नहीं। मैं तो आचार्यप्रवर देवदयानन्द के शब्दो मे इस सूत्र पर बद्धपरिकर हू कि "अन्यायकारी बलवान से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे।" इतना ही नहीं किन्तु अपने सर्वसामर्थ्य से धर्मात्माओ की चाहे वे अनाथ, निर्बल और गुणरहित क्यो न हों, उनकी सदा उन्नति, प्रियाचरण और अधर्मी चाहे चक्रवर्ती, सनाथ, महाबलवान् और गुणवान भी क्यो न हो तथापि उसका नाश, अवनति और अप्रियाचरण सदा किया करे।

प्रिय पाठकवृन्द ! मैं तो ऋषिवर की विचारसरणी, ऋषिवर की मान्यताओं और विचारो के साथ आबद्ध हू। कोरे नेतागिरी करनेवाले आर्यसमाज मे घुस आये, स्वार्थी, मिथ्यावादी तथा भ्रष्ट व्यक्तियो के साथ नहीं बधा हू। मेरी दृष्टि मे आर्यसमाज का मिशन ऋषि दयानन्द का आर्यसमाज है। उसी पूर्ति के लिये प्रत्येक ऋषिभक्त को पूर्ण मनोयोग से जुटा रहना चाहिये। आर्यजनो को ऋषिवर के मिशन को ध्यान में रखकर ही किसी सगठन तथा किसी व्यक्ति को समर्थन देना चाहिये। अलमति विस्तरेण।

आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

दिनाक २६ मई २००२ से ०१ जून २००२ तक आर्यवीर दल शिविर, ग्राम बाघौत मे लगाया गया। जिसका उद्घाटन श्रीमान् उपायुक्त महोदय महेन्द्रगढ द्वारा किया गया। जिसमे स्वामी ब्रह्मानन्द जी ने भी भाग लिया। शिविर मे ७० बच्चों ने भाग लिया। क्षेत्रीय भजनोपदेशक व विद्वान् ने समय-समय पर बच्चों को सम्बोधित किया। सभा की तरफ से भजनोपदेशक श्रीमान् विश्वामित्र जी एव प० रामरख जी आर्य द्वारा वैदिक धर्म का प्रचार किया गया। ग्राम मे अच्छा प्रभाव रहा।

मन्त्री–आर्यसमाज बाघोत (महेन्द्रगढ)

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३ सृष्टिसंवत् १,९६,०८,५३,१०३
पंजीकरणसंख्या टैक/85-2/2000 ☎ ०१२६२-७७७२२

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
सर्वहितकारी
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र रोहतक
प्रधानसम्पादक : यशपाल आचार्य, सभामन्त्री सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री
वर्ष २६ अंक २८ १४ जून, २००२ वार्षिक शुल्क ८०) आजीवन शुल्क ८००) विदेश में २० डॉलर एक प्रति १.७०

स्वयं सेवक की भूमिका

—डा० सत्यवीरसिंह मलिक, कोआर्डिनेटर ट्रेनिंग, टी.ओ.सी., चण्डीगढ़

जब कोई व्यक्ति बिना प्रलोभन के या बदले मे कुछ लिये बिना समाज के लोगो की सेवा करता है तो उसे स्वय सेवक कहा जाता है। स्वय सेवक के मन में किसी प्रकार के प्रदर्शन की भावना नहीं होनी चाहिए, क्योंकि प्रदर्शन की भावना आने के बाद स्वय सेवा की बात निरर्थक होजाती है। मनुष्य समाज में कुछ लोग अज्ञानता के कारण बहुत दु खी हैं। दीन-दु खियों, निरक्षरो की सेवा करना उत्तम कार्य है।

कुछ लोग बीमारियों के कारण दु खी हैं तो कुछ दूसरे न्याय न मिलने के कारण दु खी हैं। कुछ लोग अत्यधिक ससाधन होने के कारण चिन्तित और दु.खी हैं तो दूसरे कुछ ऐसे हैं जो साधनहीन होने के कारण चिन्तित और परेशान हैं। कुछ लोग रातोरात लखपति न बनने के कारण दु खी हैं तो कुछ निर्धनता के कष्टो के कारण दु खी हैं। कुछ लोग बहुत बडा पद न मिलने के कारण दु.खी हैं तो कुछ लोग सामाजिक न्याय न मिल पाने के कारण दु खी हैं। केवल इतना ही नहीं कुछ लोग अनेक प्रकार की बीमारी, गरीबी, बेरोजगारी, भुखमारी तथा पिछडेपन के कारण दु खी हैं तो कुछ ऐसे भी हैं जो अपने पडोसी को सुखी देखकर दु.खी हैं। इस ससार में जब तक मनुष्य का जीवन है तब तक दु.खों का क्या ठिकाना ? वास्तविकता यह है कि आधिभौतिक, आधिदैविक और आध्यात्मिक - इन तीन प्रकार के दु खो में से किसी न किसी एक दुःख के कारण हमारे समाज के अधिकतर लोग बडे दु खी हैं।

कहने को तो हमारा देश प्राचीनकाल में धन-धान्य से सम्पन्न होने के कारण सोने की चिडिया कहा जाता था। मगर आज चारों ओर नजर दौडाकर देखते हैं तो मेरे महान् भारत के ४० करोड लोग सायकाल पेटभर भोजन न मिलने के कारण भूखे सोने को मजबूर हैं। एक तरफ रस उडेले जा रहे हैं, खाद्यपदार्थों की बरबादी की जारहै है और दूसरी तरफ दाने-दाने को मोहताज छोटे-छोटे बच्चे हाथ पसारे हुए भीख मागते गलियो मे फिर रहे हैं। एक तरफ कुत्ते और बिल्ली चमचमाती प्लेटों में रईसों जैसा भोजन खारहे हैं और दूसरी तरफ भूख से परेशान बच्चे कूड़े कचरे के ढेर में पड़े हुए कागजो में हाथ मारकर कुछ खाने की बचीखुची लोगों द्वारा फैंकी हुई वस्तुए खोज रहे हैं। वाह रे भाग्य विधाता! तेरी लीला भी बडी निराली है। समझ में नहीं आता कि इस विकृत व्यवस्था को क्या कहें ? और किसे कहें ? इसकी शिकायत किससे करें ? कोई सुननेवाला नजर नहीं आता। आखिर पीडित किसी से न्याय की उम्मीद तो करता ही है, लेकिन खेद के साथ कहना पडता है कि शोषित व्यक्ति को न्याय दिलाना तो दूर की बात है उसका दु खडा सुननेवाला भी कोई नहीं है। वह परेशानियों का मारा न्याय की प्राप्ति के लिए दर-दर भटकता फिरता है लेकिन उसे कोई पूछनेवाला नहीं है। क्या यह न्यायोचित है ? इसका इलाज कौन करेगा ?

अशिक्षा और गरीबी की बात क्या कहें। इस जमाने में भी लोग एक सौ तक गिनने में असमर्थ हैं, वे ५ बार बीस-बीस तक गिनकर पाच बीसी एक सौ गिनते हैं। देश को स्वाधीन हुए आधी शताब्दी हमारे देखते-देखते बीत गई है। इतने लम्बे समय में सरकार को इन पिछडे हुए लोगों की तरफ एक नजर डालने का भी मौका नहीं मिला है। इसलिए स्वयं सेवकों तथा स्वयं संगठनों की जिम्मेदारी अधिक बढ गयी है। क्या हमारे स्वय सेवक बन्धु इस कठिन उत्तरदायित्व को निभाने के लिए तैयार हैं ?

आजकल सेवा का क्षेत्र छूटता जारहा है और आर्थिक तन्त्र अधिक प्रभावी होता जारहा है। ऐसा लगता है कि इस पैसे की अन्धी दौड़ में बाकी सब कुछ गौण होगया है। मुझे यह कहने में तनिक भी हिचक नहीं कि आज लोकहित की योजनायें और विकास के कार्यक्रम तो काफी बन रहे हैं। लेकिन उनको गांवों तक या दूर-दराज के इलाकें तक पहुचानेवाला कोई नहीं है।

बहुत से लोग कहते हैं कि भारत का कानून एव सविधान तो बहुत अच्छा है लेकिन वह उसी रूप मे पूरी तरह लागू नहीं होता। इसलिए अब स्वय सेवको पर यह जिम्मेदारी आगई है कि वे कानूनी सुविधाओ को गावो तक पहुचाने के लिए प्रयत्नशील होवे तथा गरीबो को सस्ता न्याय मिलाने का प्रबन्ध करे। अब तक भारत मे कोर्ट आफ ला है पर कोर्ट आफ जस्टिस नहीं है। अर्थात् कानून तो है पर न्याय नहीं है।

असली भारत तो गावो में बसता है मगर वहा पर स्वराज्य नहीं है, सुराज की बात तो जाने दीजिये। सामान्यतया सारे देश की यही हालत है, क्योंकि धन की शक्ति से और बाहुबल से न्याय खरीदा जारहा है और प्रभावित किया जारहा है। न जाने ऐसी कितनी ही बाते हैं कि जिनको देखकर या सुनकर चिन्ता होना स्वाभाविक है।

सेवा का क्षेत्र इन्सान की इच्छाशक्ति पर निर्भर है। यदि दूसरो को परेशान देखकर किसी का दिल दया से द्रवित नहीं होता तो वह क्या सेवा करेगा ? यदि अबोध बच्चियो तथा महिलाओ के साथ बलात्कार की घटनाये देख सुनकर भी किसी का खून नहीं खौलता तो वह क्या कर पायेगा ? यदि किशोरावस्था के लडके लडकियो से लगातार १६-१७ घण्टे बेगार करवाने पर नाममात्र की मजदूरी देने पर भी जिसका दिल नहीं पसीजता तो उससे क्या उम्मीद की जाये ? इसलिये सेवा का क्षेत्र चाहे कहीं पर हो तथा कैसा भी हो तथा कैसा भी हो। मैं स्वय सेवको के प्रेरणा देना चाहता हू कि वे वहीं पर पहुच जाये और उसी स्थान को अपना कार्यक्षेत्र बनाये। वे जनता मे चेतना लाये, जो सोये हुए के समान अपनी आंखो के सामने किसी बेसहारा तथा निर्धन महिला का निर्वस्त्र करके गुण्डे के द्वारा गलियो मे घुमायी जाती हुई को देखकर भी केवल सी-सी करके रह जाते हैं, उनको जगायें-समझाये कि यह अमानवीय कार्य है। ऐसा किसी भी कीमत पर सहन न करें। केवल मूकदर्शक बनकर खडे न रहें बल्कि साहस के साथ आगे बढकर बदमाशो को ललकारे। मुझे पूरा विश्वास है कि जिस दिन देश का युवावर्ग अपने मन मे यह ठान लेगा कि बहुत हो चुका, अब आगे ऐसा घिनौना कृत्य हरगिज नहीं होने दिया जायेगा, उस दिन किसी भी बलात्कारी की ऐसा कुकर्म करने की हिम्मत नहीं होगी।

मुझे ऐसा लगता है कि समाज से भारतीय सस्कृति का मुख्य आधार भी खिसक गया है। क्योंकि पूर्वजो की दी हुई इस बहुमूल्य थाती की पुनर्स्थापना के लिए समर्पित कार्यकर्त्ताओ की आवश्यकता है। ऐसे युवक-युवतियों की फिलहाल जरूरत है जो खुद को सेवा के लिए समर्पण कर देवे। बच्चों के लिए, महिलाओ के लिए अथवा मूक पशु-पक्षियों के लिए परेशनी देखकर जिनके सीने मे अग्नि भडक उठे, ऐसे जोशीले तथा समर्पित स्वय सेवकों की तत्काल आवश्यकता है। जो जनता की छोटी-छोटी समस्याओ को सुलझाने मे मदद कर सके। उनको ऐसा नेतृत्व प्रदान कर सके कि जिससे उनको रास्ता मिल जाये-अशिक्षा से निकलने का और गरीबी से उबरने का।

अंग्रेजी शासन के समय आम जनता बडी दु खी थी पर आजादी के बाद उससे बदतर हालत होगई है। गाधीजी ने सर्वसाधारण की आवश्यकता नमक का मामला हाथ में लिया। जिससे उनको अधिक जनता का सहयोग मिला। गाधीजी ने चर्खे से सूत कातने का मामला हाथ मे लिया यह भी गरीब आदमियो आय का साधन था, इसलिये उनको सब लोगो का सहयोग मिला। इन कामों का शानदार परिणाम यह हुआ कि गाधीजी आम जनता के नेता बन गये और आम जनता ही देश मे अधिक है। इस प्रकार गाधीजी सर्वसाधारण के लीडर बन गये। जब अधिकांश लोगों का समर्थन और सहयोग मिल गया, तब गाधीजी को जनसेवा का सुनहरी मौका मिल गया तथा वह जनता के स्वय सेवक बन गये। इसी प्रकार स्वामी दयानन्द ने अज्ञानान्धकार मे ग्रसित और गुरुडम के प्रभाव के कारण अन्धविश्वासों के फसी हुई आम जनता की समस्या को हाथ मे लिया तो एकदम जनता का ध्यान उनकी ओर आकृष्ट होगया तथा उनको भरपूर जनसमर्थन मिला। यही कारण था कि लाखो शोषित

नर-नारी उनके अनुयायी बनते चले गये। जनसेवा का ढग यह है कि उनका विश्वास प्राप्त करो और उनकी आम समस्याओ को सुलझाओ। मेरा तात्पर्य यह नहीं है कि जनता का सारा काम स्वय सेवक ही कर देवें। जनता को लगडा नहीं बनाना है बल्कि उसको चलना सिखाना है। जनसमस्याओं का सुलझाने के लिये मार्गदर्शन करो, रास्ता सुझावो, जनता को अपने लिये कुछ करने के लिए प्रेरित करो। यदि स्वयं सेवक करेंगे तो जनता उनके पीछे-पीछे इस तरह से चलेगी जैसे वकील के पीछे मुकदमा करनेवाले भागते फिरते हैं।

आज लोगो की मानसिकता खराब होगई है। सामाजिक परिस्थितियां अति गम्भीर होती जारही हैं। ऐसी हालत मे जनसेवा के द्वारा स्वस्थ जागरूक समाज के निर्माण में स्वय सेवको की विशेष भूमिका होती है तथा उनका योगदान महत्त्वपूर्ण होता है। समाज के गरीब और कमजोर वर्ग के लोगो की भलाई के लिए स्वय सेवको को आगे आना चाहिए। स्वय सेवक नि स्वार्थ भाव से काम करता है जो बडे पुण्य का कार्य है।

भारतीय समाज मे अत्यधिक गिरावट आगई है इसलिये कुरीतिया बढती जारही हैं। भले आदमी बडे परेशान और दु खी हैं तथा असामाजिक तत्त्व एक से बढकर एक नीच कर्म कर के दनदनाते फिर रहे हैं। सामाजिक बुराइयों को दूर करने के लिए स्वय सेवक बडा योगदान कर सकते हैं।

जनसेवा का काम बहुत अधिक है और करनेवाले थोडे हैं। आइये, हिम्मत करके कमर कसकर खडे हो जाइये। समर्पित स्वयं सेवक बनकर काम कीजिये। ध्यान रहे युवक-युवतिया ही किसी सामाजिक अव्यवस्था को बदल सकते हैं। दुनिया मे सामाजिक क्रान्तिया तभी सफल हुई हैं, जब उनमे युवावर्ग सम्मिलित होगया। वर्तमान काल में स्वय सेवको की भूमिका बडी महत्त्वपूर्ण है। इस स्वय सेवक की कसौटी पर खरा उतरने वालो की नितान्त आवश्यकता है।

पहले यह कहा जा चुका है कि स्वय सेवक बनकर समाज के हित का कार्य करना तथा उसके बदले में किसी प्रकार का वेतन, भत्ता, मजदूरी या अनुदान आदि न लेना यह वर्तमान काल मे बडा कठिन लगता है। आजकल भौतिकवाद हम पर इतना हावी होगया है कि हम हर मामले मे हर काम के लिए पैसा लेने की इच्छा करते हैं। कई बार तो ऐसा लगता है कि आजकल नि स्वार्थ भाव से सेवा करने की बात सपना होगई है। योगेश्वर श्री कृष्णचन्द्र महाराज ने अर्जुन को निष्काम कर्म का जो सन्देश आज से साढे पाच हजार वर्ष पहले दिया था, वह आज भी उतना ही उपयोगी है जितना उन दिनो था। आजकल कुछ लोग यह तर्क देते हैं कि इस आर्थिक युग मे जब बिना पैसे के किसी का काम नहीं चलता और बाजार मे कोई भी वस्तु बिना पैसे के नहीं मिलती तो फिर कौन ऐसा मूर्ख है जो व्यर्थ मे अपना सिर खपावे और उसके बदले मे पैसा भी न लेवे। इनकी दृष्टि से इस प्रकार के लोग शायद जमाने की वास्तविकता को नहीं समझते हैं। इस सन्दर्भ मे इनका बडा सीधा और सरल तर्क है कि जब कोई भी वस्तु मुफ्त नहीं मिलती तो हम क्यो किसी के लिए मुफ्त मे काम करे ? हम यह आशा क्यो रखें कि कोई बिना कुछ लिए हमारे लिए काम करे, हमारी सहायता करे ? अब तो दुनिया में हर वस्तु का सौदा होता है। अगर किसी को किसी समय दूसरे किसी एक या कई व्यक्तियो की सहायता की आवश्यकता पडे तो वह इसके लिए पैसा देवे और अपनी सहायता करवा लेवे। इसके लिए वह एक ओर तर्क देते हैं कि किसी को सलाह देने मे क्या लगता है ? सिर्फ जबान ही तो हिलानी है, फिर भी सलाहकार लोग बदले मे पैसा लेते हैं। उनकी बात का साराश यह है कि आजकल बिना पैसे दिये किसी प्रका. : की मदद की आशा करना व्यर्थ है इसलिए 'टका देओ और गज फडाओ' वाली बात ही ठीक लगती है। जब हम बिना पैसा लिये काम नहीं करना चाहते तो फिर दूसरो से उम्मीद क्यो करे ? जब अपने ही जरूरी काम पूरे नहीं होते, तो फिर दूसरो की सेवा अथवा सहायता करने के लिए समय कहां से निकाले। ऐसा लगता है कि बिना पैसे लिए काम करनेवाले लोग अपना ठीक प्रकार से मूल्याकन नहीं कर पारहे हैं। बडी सीधी सी बात है-पैसा देओ और अपनी सहायता या सेवा का काम करवाओ।

उपर्युक्त विचारधारा रखनेवाले मित्रों से निवेदन यह है कि जनहित के सारे काम कभी भी पैसे से नहीं हुआ करते। यदि ऐसे काम पैसे से ही होते, तो फिर अब तक होगए होते, क्योकि सरकार ने सब प्रकार के विभाग खोल रखे हैं, और उनमे काम करनेवालो को वेतनमान भत्ते भी बहुत अच्छे मिल रहे हैं फिर भी सब कुछ क्यो बिगडा पडा है ? इसका मतलब यह हुआ कि ऐसे काम स्वय सेवको के द्वारा ही पूरे किये जा सकते हैं। आगे बढने से पहले थोडी देर के लिए इन घटनाओ पर दृष्टिपात करना लाभदायक रहेगा। मान लीजिये कि अचानक भूल से या बिजली की शार्ट सर्किट से किसी के घर मे आग लग गयी और सामान जलने लगा तथा जानी नुकसान की भी सम्भावना नजर आने लगी। तो आर्थिक युग का मन्त्र जाप करनेवालो के हिसाब से ऐसे व्यक्ति को आग बुझाने और कीमती जान बचाने के लिए पैसे लगेगे। पहले वह यह तय करे और फिर कोई उसकी सहायता करे। परन्तु यह असम्भव है, क्योकि जब तक आग लगे हुए घर का मालिक आग बुझाने का सौदा तय करेगा तब तक सारा घर राख हो जाएगा तथा कीमती जानें भी जलती हुई अग्नि की लपटों की भेंट चढ जाएंगी, क्योंकि कुछ समय तो पैसों का फैसला करने में लगेगा ही।

दूसरी बात, मान लीजिये कि कोई आदमी पानी की धारा में फंस गया। अचानक गहरा गड्ढा आगया और वह उसमें डूबने लगा। तो आर्थिक युग के हिसाब से उसे अपने बचाव के लिए पहले सौदा तय करना चाहिए था कि वह बचानेवाले को क्या देगा ? जब डूबते हुए व्यक्ति को होशहवाश ही नहीं है तो वह सौदा कैसे करेगा ? और जब तब सौदा करेगा तब तक तो वह डूब कर मर जाएगा। इसलिए यह सौदा करना सम्भव ही नहीं है। ऐसे अनेक अवसर व्यक्ति के जीवन में आते हैं जो सौदा करने के चक्र में सब कुछ बरबाद कर देगे। इसका तात्पर्य यह हुआ कि समाज में आपस में सहयोग तथा सेवा करना ही एकमात्र रास्ता है, जो ऐसी हालत में उपयोगी सिद्ध हो सकता है। कहने का भाव स्पष्ट होगया कि बिना स्वार्थ दूसरों की सेवा किये बिना समाज का काम नहीं चलता। प्रश्न पैदा होता है कि इसके लिए कौन तैयार हो ? क्या कोई निठल्ले या खाली रहनेवाले व्यक्ति ऐसा कर पायेंगे ? शायद कदापि नहीं। अत सबको नि.स्वार्थ सेवा के लिए सदा तैयार रहना चाहिये। यदि हम आज किसी की सहायता करेंगे, तो कल को जरूरत पडने पर कोई हमारी भी सहायता के लिए आगे आ जाएगा। निःस्वार्थ भाव से सेवा तथा सहायता करनेवालों के बिना दुनिया के लोगों का काम चलना बडा मुश्किल है।

दूसरा प्रश्न पैदा होता है कि नि स्वार्थ सेवा करनेवाले को क्या मिलता है ? मेरा कहना यह है कि ऐसे लोग किसी बात की अपेक्षा ही नहीं करते कि सेवा के बदले मे उन्हें कुछ मिले। अगर वे कुछ मिलने की ही उम्मीद करें तो वे स्वयं सेवक क्या हुए ? दूसरी बात समाज के लोग उनकी निन्दा-चुगली करेंगे, उनसे चिढेंगे। उन पर झूठा दोषारोपण भी करेंगे। उनके रास्ते में रोडा अटकायेंगे, कोई न कोई बाधा खडी करेंगे। यह बात केवल हमारे देश में ही नहीं है, सारी दुनिया में ऐसा होता है। कभी-कभी लोग उनका सम्मान करनेवाले भी मिलते हैं, जो उन स्वय सेवकों का सार्वजनिक अभिनन्दन करते हैं। खैर, स्वय सेवको को और कुछ मिले या न मिले परन्तु स्वय सेवक को आत्मसन्तोष अवश्यमेव मिलता है। उनकी आत्मा प्रसन्न होती है कि हमने अच्छा काम किया है, और किसी जरूरतमन्द की सेवा-सहायता की है। निष्कर्ष यह है कि समाज के कल्याण के लिये स्वयं सेवक की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। स्वय सेवकों को किसी प्रलोभन के बिना प्रसन्नता के साथ उत्साह से जनहित के कार्य करने चाहियें।

आर्यसमाज सेक्टर-१४ सोनीपत का चुनाव

प्रधान-श्री वेदपाल आर्य, उपप्रधान-श्री ईश्वरदयाल शर्मा, उपप्रधान-श्रीमती सन्तोष मदान, मन्त्री-श्री मनोहरलाल चुघ, प्रचारमन्त्री-श्री प्रवीण चावला, उपमन्त्री-श्रीमती रुकमणी कटारिया, कोषाध्यक्ष-श्री धर्मवीर आर्य, पुस्तकाध्यक्ष-श्री जगदीशचन्द्र बत्रा, लेखानिरीक्षक-श्री सुभाष गुप्ता।

चरित्र निर्माण एवं आधुनिक व्यायाम प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

आर्यवीर दल हरयाणा के तत्त्वावधान में ग्रीष्म अवकाश में पूरे प्रान्त में लगभग २२ शिविरों का आयोजन किया गया है जिसमें आर्यवीरों को चरित्र निर्माण एवं नैतिकता, ब्रह्मचर्य, राष्ट्रभक्ति, सदाचार तथा आर्यसमाज तथा दयानन्द के सच्चे सैनिक बनने की प्रेरणा दी गई। शिविर में आर्य संस्कृति की रक्षा करने, अज्ञान, अभाव तथा अन्याय से लडने का संकल्प आर्यवीरों को कराया गया। सुयोग्य शिक्षकों के द्वारा, आसन प्राणायाम, जुडो-कराटे, सर्वांग सुन्दर व्यायाम, लाठी, भाला, मलखम तथा कमाण्डों प्रशिक्षण दिया गया। आध्यात्मिक उन्नति हेतु विद्वानों द्वारा समय-समय पर बौद्धिक भी दिया गया। आर्यवीरों ने यज्ञोपवीत धारण करते हुए नित्य संध्या एवं हवन करने का संकल्प किया। दीक्षान्त समारोह में आर्यवीरों ने व्यसनों को छोडने तथा संयमी जीवन बनाने का संकल्प किया। १८ मई से ९ जून तक निम्नलिखित शिविरो का समापन हुआ।

१. गुड़गांव—आर्य पब्लिक स्कूल सैक्टर-७ गुड़गांव में मण्डलपति श्री शिवदत्त आर्य की अध्यक्षता मे १८ मई से २५ मई तक १३० आर्य वीरों का शिविर लगाया गया। शिविर में श्री सत्येन्द्र शास्त्री 'सत्यम्' श्री कन्हैया लाल आर्य, श्याम जी, राजेश जी, दिनेश जी, राजेश प्रल्यानी, भारत भूषण जी, मा० सोमनाथ जी, श्रीधर आर्य, रामदास जी सेवक, जगदीश आर्य दादरी ने अपना पूरा समय देकर इस शिविर को सफल किया। आर्यवीरों ने साथ शोभा यात्रा भी निकाली तथा आर्य जनता को सुन्दर प्रदर्शन भी दिखाया।

२. नारनौल—राजकीय वरिष्ठ सीनियर सैकेण्डरी स्कूल में २५ मई से २ जून तक जिला स्तरीय आर्य महासम्मेलन के अवसर पर १०० आर्यवीरों का शिविर लगाया गया। उपायुक्त श्री रामभक्त लाग्यान जी ने विशेष रूप से रुचि लेते हुए आर्यवीरों की परिश्रम, सयमी एवं सदाचारपूर्वक जीवन बिताने का बल दिया। आर्यसमाज खडखडी मोहल्ला तथा आर्यसमाज सधीवाडा के सयुक्त प्रयास से यह शिविर सफल रहा। ३१ मई को शोभायात्रा भी निकाली गई। आर्यवीरो के शानदार प्रदर्शन को देखकर जनता मुग्ध हो गई। शिविर में प्रधान सेनापति डॉ० देवव्रत जी ने भी निरीक्षण किया। स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती, मा० वेदप्रकाश आर्य मण्डलपति ने भी शिविर में आर्यवीरों को आशीर्वाद प्रदान किया।

३. प्रशिक्षण शिविर बाघौत—आर्यवीर दल महेन्द्रगढ की ओर से २५ मई से १ जून तक ग्राम पंचायत तथा आर्यसमाज बाघौत के सतत प्रयास से राजकीय विद्यालय में शिविर लगाया गया। शिविर में स्वामी ब्रह्मानन्द ने विशेष रूप से पधारकर गांव में युवकों को शराब छोडने की दवाई का निःशुल्क वितरण किया। शिविर का प्रभाव पूरे गांव पर रहा।

४. प्रान्तीय शिविर पाली—आर्यवीर दल हरयाणा का शाखा नायक श्रेणी का शिविर ओ३म् योग संस्थान पाली (बल्लबगढ) में ब्र० ओमप्रकाश आर्य जी के नेतृत्व में २४ मई से २ जून तक लगाया गया। प्रधान सेनापति डॉ० देवव्रत आचार्य ने स्वयं शिविर में रहकर प्रशिक्षण दिया। पूरे प्रान्त में २०० आर्यवीरों ने भाग लिया। आंधी, तूफान और भारी वर्षा के बावजूद आर्यवीरों का उत्साह देखने को बनता था। माता बिमला महता, मनोहर लाल आनन्द, अजीत कुमार आर्य, होतीलाल आर्य, कुलभूषण आर्य आदि कार्यकर्ताओं ने आर्यवीरों का उत्साहवर्धन किया। श्री देशबन्धु आर्य तथा श्री राजेन्द्र बिसला जी ने पधारकर आर्यवीरों को आशीर्वाद प्रदान किया।

५. प्रशिक्षण शिविर हांसी—वैदिक प्रवक्ता प० रामसुफल शास्त्री जी के निरीक्षण व प्रिय राजेश कालडा जी के योगदान से २५ मई से २ जून तक आर्यवीर दल का शिविर डी ए वी स्कूल हासी के प्रागण मे लगाया गया जिसमें ५० आर्यवीरो ने भाग लिया। समापन समारोह पर पं० विश्वामित्र जी तथा हरिसिह सैनी प्रधान आर्यसमाज हिसार ने पधारकर आर्यवीरों को आशीर्वाद दिया।

६. प्रशिक्षण शिविर बिन्झोल—२५ मई से ३१ मई तक आर्यवीर दल पानीपत की ओर से आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविर लगाया गया। जिसमें गाव के बच्चो ने बढचढकर भाग लिया। शिविर मे सुधीर शास्त्री, प० राजकुमार, ओमप्रकाश आर्य तथा सुभाष गुगलानी ने आर्यवीरो को प्रोत्साहित किया।

७. प्रशिक्षण शिविर पानीपत—१ जून से ७ जून तक आर्यवीर दल का शिविर आर्य स्कूल के प्रागण में मण्डलपति ओमप्रकाश आर्य के नेतृत्व मे लगाया गया। शिविर मे आर्यवीरों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। वैदिक विद्वानो द्वारा आर्यवीरो को बौद्धिक दिया गया।

८. प्रशिक्षण शिविर कालवां—जिला जीन्द में आर्यवीर दल की ओर से २५ मई से २ जून तक शिविर का आयोजन श्री कृष्ण देव जी शास्त्री के निर्देशन मे लगाया गया। आसपास के गावो के आर्यवीरों ने इस शिविर में भाग लेकर अपने जीवन को सुधारने का सकल्प किया।

९. प्रशिक्षण शिविर खरल—मण्डलपति श्री जोगीराम जी के नेतृत्व में एक सप्ताह का शिविर गाव खरल में ब्र० सुरेन्द्र आर्य की देखरेख में २५ मई से २ जून तक अल्पकालीन शिविर लगाया गया।

१०. प्रशिक्षण शिविर रोहतक—आर्यवीर दल रोहतक की ओर से २ जून से ९ जून तक बलिदान भवन, दयानन्दमठ रोहतक में शिविर का आयोजन किया गया जिसमें ८० आर्यवीरों ने भाग लिया। शिविर का उद्घाटन चौ० अतरचन्द गुगनानी ने किया तथा ध्वजारोहण ब्र० कृष्णदेव जी ने किया। समय-समय पर मा० वेदप्रकाश साधक, स्वामी सुमेधानन्द, उमेदसिह शर्मा, प० सुखदेव शास्त्री, आचार्य यशपाल आर्य ने भी पधारकर आर्यवीरों को आशीर्वाद दिया।

आगामी ग्रीष्मकालीन शिविर

१ ९ जून से १६ जून, आर्यसमाज फिरोजपुर झिरका।

२ १७ जून से २३ जून तक आर के एस डी कॉलेज, कैथल।

३ १७ जून से २३ जून, आर्य वीरागना शिविर, धन्वन्तरी आर्य स्कूल, आर्यनगर रोहतक।

४ १७ जून से २३ जून, दादरी।

५ २३ जून से ३० जून, आर्य वीरागना शिविर, गन्नौर (सोनीपत)

६ २३ जून से ३० जून, यदुवशी स्कूल महेन्द्रगढ।

शेष शिविरों की सूची अगले अक मे देगे।

—वेदप्रकाश आर्य, महामन्त्री
आर्यवीर दल हरयाणा

उपासना का फल सुख नहीं, आनन्द है

हमारे शास्त्री निवास के सामने वाले मकान मे एक दिन प्रात काल एक कैसेट चल रही थी। उसी समय मैं अपने स्नान घर मे नहाने के लिए प्रवेश हुआ तो रोशनदान से आवाज सुनाई दी। कैसेट के बोल थे कि 'राम-राम जपियो ते सदा सुखी रहियो'। मेरे मन में एक विचार आया कि किसी नाम जपने मात्र से तो कोई भी सुखी नहीं हो सकता ? हा यदि थोडी देर के लिए राम को ईश्वर मानकर भी राम-नाम जपने की बात कही जाये तो ईश्वर की उपासना से सुख नहीं आनन्द की अनुभूति होती है।

प्रत्येक मनुष्य के जीवन में तीन अलभ्य अनुभूतिया हैं जो बहुत कठिनता से प्राप्त होती हैं। किन्तु जो व्यक्ति उक्त तीनों विषयो को भली प्रकार समझ लेता हैं उसे ये तीनो सुख-शान्ति एव आनन्द सहज व सरलता से ही प्राप्त हो सकते हैं।

बात राम-नाम जपियो ते सदा सुखी रहियो की चल रही थी। अस्तु शरीर का विषय सुख है जो भौतिक साधन सम्पन्नता के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। सु+ख=सु का अर्थ अच्छा-ख का अर्थ इन्द्रिय अर्थात् जो इन्द्रियों को अच्छा लगे उसे सुख कहते हैं। शान्ति मन का विषय है। जब तक मन मे सन्तुष्टि नहीं है, तब तक सब कुछ व्यर्थ है। किसी कवि ने ठीक ही कहा है कि—

गोधन गजधन वाज धन और रतन धन खान।
जब आवे सन्तोष धन सब धन धूलि समान।।

ससार का बहुत सारा धन वैभव प्राप्त करने के बाद भी जब तक मन मे शान्ति न हो तो धन वैभव का कोई लाभ नहीं है। एक बहुत सुन्दर कहावत है कि—**"मन चगा तो कठौती मे गगा"** अर्थात् मन मे शान्ति है तो सब ठीक है।

रही बात आनन्द की जो केवलमात्र आत्मा का विषय है। इस लेख का भी मुख्य बिन्दु है। जिसे परमात्मा की उपासना-भक्ति-चिन्तन-मनन व सन्ध्या आदि से ही प्राप्त किया जा सकता है। निष्कर्ष यह है कि उपासना का फल सुख-शान्ति से ऊपर परम-आनन्द की अनुभूति ही होता है। अत उपासना से सुख नहीं आनन्द मिलता है।

—**आचार्य रामसुफल शास्त्री 'वैदिक प्रवक्ता'**, शास्त्री निवास, लाल सडक, हासी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिग प्रेस, रोहतक (फोन . ०१२६२–७६८७४, ७७८७४) मे छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष · ०१२६२–७७७२२) से प्रकाशित।

सम्पादक के नाम पत्र

आदरणीय सम्पादक महोदय,

निवेदन है, कि एक जून से डाक विभाग ने डाक भेजने के कार्ड, अन्तर्देशीय पत्र तथा लिफाफो के मूल्य मे अप्रत्याशित वृद्धि करदी है। जिसके अनुसार अन्तर्देशीय पत्र दो रुपए के स्थान पर दो रुपये पचास पैसे का तथा लिफाफा पाच रुपए का कर दिया है, कार्ड के बारे मे बताया जारहा है कि वह एक रुपये मूल्य का होजायेगा। इसी प्रकार डाक द्वारा भेजी जानेवाली पत्रिकाओ, पुस्तको आदि पर टिकट की दर बढा दीगई है।

इस बढोतरी का अधिकाश सीधा प्रभाव ग्रामीण जनता पर पडेगा। शहरवाले अर्थवा सम्पन्न परिवारो के पास एस टी डी तथा अन्य दर्जनो सुविधाए सचार के लिए उपलब्ध हैं। वे सस्ते से सस्ते मे अपने कार्य सम्पन्न कर सकते हैं। देश की अस्सी प्रतिशत जनता अपनी निर्धनता तथा साधनो की अनुपलब्धता के कारण कार्ड, अन्तर्देशीय पत्रो तथा लिफाफों से काम चला लेती थी। अब उनके लिए इन्हे भी खरीदना अत्यन्त महगा होगया है।

नई दिल्ली की भव्य इमारतो मे वैभवशाली जीवन बितानेवाले केन्द्रीय सरकार के कर्णाधार व वित्तमन्त्री श्री यशवन्तसिह निर्धन और साधनहीन भारतीय को पीडा से परिचित नहीं है। देश की निर्धन जनता के लिए समाचार पत्रो तथा अन्य प्रचार माध्यमो को केन्द्रीय सरकार के बहरे, अन्धे, स्वार्थी नेताओ को चेताया जाना चाहिए कि वे एक जून से डाक साधनो पर बढाए जानेवाले मूल्यो को तुरन्त समाप्त कर देश की अस्सी प्रतिशत निर्धन तथा साधन हीन जनता को सुख की सास लेने दे।

-हरीराम आर्य, पो कारोली (नाहड) जिला रेवाडी

एक आदर्श महिला का निधन

दक्षिणी हरयाणा के अति पिछडे क्षेत्र ग्राम कारोली मे जन्मी, शतायु तक पहुचनेवाली स्वर्गीय छोटादेवी कभी किसी विद्यालय मे शिक्षा प्राप्त करने नहीं गईं। परमात्र दैविदेन से वह आध्यात्म ज्ञान व व्यवहार कुशलता की प्रतिमूर्ति थी। उन्होने न केवल अपने मायकेवालो को शिष्टाचार सिखाया अपितु विवाहोपरान्त जब वह ग्राम लुहाना तहसील रेवाडी मे राव सोहनलाल के घर गई तो वहा भी अनुकरणीय परिवार की रचना की।

दिल्ली राज्य के शिक्षा विभाग द्वारा १९९३ मे राजकीय पुरस्कार से सम्मानित उनके पुत्र प्रिंसिपल हजारीलाल यादव कृतज्ञ हृदय से स्वीकार करते हैं कि उनकी उन्नति व विकास मे उनकी स्वर्गीय माता छोटादिवी की सात्विक प्रेरणा तथा आशीर्वाद का प्रताप रहा है। स्वर्गीय छोटादेवी न केवल अपने परिवार के लिए आदर्श थी अपितु पडोस और गाव, विशेष महिलाओ, सभी के लिए समान अपनत्व रखती थीं।

१२ मई २००२ को उनके शान्तियज्ञ के अवसर पर श्रद्धाजंलि देने लुहाणा आए लोगों मे क्षेत्र व दिल्ली के अनेक शिक्षाविद्, धार्मिक विद्वान् व सामाजिक नेता भारी सख्या मे शामिल हुए व अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

आर्यसमाज सेक्टर-६ पंचकूला का निर्वाचन

सरक्षक-श्री रामप्यारा कश्यप, प्रधान श्री धर्मवीर बतरा, मत्री-श्री यशपाल आर्य, वरिष्ठ उपप्रधान-श्रीमती जगदम्बा गुप्ता, उपप्रधान-अविनाशचन्द्र, श्री के के अग्रवाल, श्री मनोहरलाल मनचन्दा, श्रीमती वेद वर्मा, उपमत्री-श्री सुनील बत्रा, श्री बलदेव विग, श्री ज्ञानप्रकाश रहेजा, श्रीमती पामीला काकाडेया, श्रीमती ऊषा गुप्ता, कोषाध्यक्ष-श्री महेन्द्रनाथ चौहान, सह-कोषाध्यक्ष-श्री ब्रह्मदत्त बाली, पुस्तकाध्यक्ष-श्रीमती कृष्णा चौधरी, सह-पुस्तकाध्यक्ष-श्रीमती सुदर्शन चौहान, निरीक्षक-श्री इकबालकृष्ण ग्रोवर।

शारीरिक एवं बौद्धिक प्रशिक्षण शिविर

रविवार १६ जून से २३ जून तक

स्थान-दयानन्द सीनियर सैकेण्डरी स्कूल, फिरोजपुर झिरका फोन : ७७७१०

बच्चो के शारीरिक सामाजिक एव आध्यात्मिक विकास हेतु आर्यवीर दल फिरोजपुर झिरका के नेतृत्व मे एक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जारहा है। ब्रह्मचारी सत्यप्रकाश जी का शिविर मे विशेष सान्निध्य प्राप्त होगा। इस शिविर में अनेक विद्वान् एव शारीरिक शिक्षक बच्चों को प्रशिक्षण प्रदान करेंगे। जिनमे से कुछ प्रमुख हैं-पूज्य स्वामी जीवनानन्द सरस्वती दिल्ली, श्री वेदप्रकाश आर्य मत्री आर्यवीर दल हरयाणा रोहतक, आचार्य सत्यप्रिय जी तिजारा, श्री रामदास सेवक गुडगाव, श्री कन्हैयालाल जी गुडगाव, श्री सुगनचन्द आर्य पुन्हाना, डा० महेन्द्र गर्ग एकता नर्सिंग होम, डा० सी पी वधवा, वधवा नर्सिंग होम, श्री मगलदेव आर्य, श्री चतरसिह, श्री मानकचन्द।

उद्घाट्न समारोह रविवार १६ जून २००२ प्रात ८ बजे तथा समापन समारोह रविवार २३ जून २००२ प्रात ९ बजे होगा।

शिविरार्थी ध्यान दे-(१) शिविर मे कक्षा आठवीं से बारहवीं तक के विद्यार्थी भाग ले सकते हैं। (२) प्रत्येक शिविरार्थी को आर्यवीर दल द्वारा निर्धारित आचार संहिता व दैनिकचर्या का पालन करना होगा। (३) प्रवेश शुल्क ५० रुपये है। कृपया भाग लेने के इच्छुक विद्यार्थी प्रधान/मत्री आर्यसमाज फिरोजपुर झिरका को अथवा अपने नजदीकी आर्यसमाज के प्रधान या मत्री को शुल्क सहित अपना नाम १५ जून तक लिखवा दें। (४) प्रत्येक विद्यार्थी को १५ जून २००२ सायं ६ बजे तक शिविर में भाग लेने हेतु शिविर स्थल पर पहुच जाना आवश्यक है। (५) शिविरार्थी अपने साथ कापी, पैन, थाली, कटोरी, गिलास, सैण्डो बनियान, खाकी नेकर, लाठी आदि लेकर आयें। (६) खाने पीने रहने का उचित प्रबन्ध आयोजको की ओर से किया जायेगा।

विशेष-(१) शिविरार्थियों के माता-पिता व आस-पास की सभी आर्यसमाजों के पदाधिकारी एव सदस्य उद्घाटन व समापन समारोह में सादर आमंत्रित हैं। (२) समापन समारोह के बाद २३ जून २००२ को आर्य वेदप्रचार मडल मेवात की आम सभा का आयोजन है समस्त पदाधिकारी एव सदस्य मडल की गतिविधियों को सुचारु रूप से चलाने के लिए इसमे अवश्य भाग लें।

गुरुकुल शुक्रताल में छात्रों का प्रवेश

समस्त शिक्षाविदों, सस्कृतप्रेमी एव अभिभावकों को सूचित किया जाता है कि गुरुकुल स० उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, शुक्रताल मुज्जफरनगर मे १ जुलाई २००२ से नवीन पाठ्यक्रम मे मेधावी छात्रो का कक्षा ६ से १२ तक प्रवेश प्रारम्भ हो रहा है।

शुक्रताल मु०नगर से ३० कि०मी० दूर पावन गगा के तट पर अरण्यावली मे स्थित है। यह तीर्थ श्री शुकदेव मन्दिर एव अनेक ऊची-ऊची मूर्तियो से सुज्जित है। यहीं पर महर्षि श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती ने निराहार रहकर तीन दिन की समाधि लगाई थी। यह दिव्य पर्यटक स्थल है, जहा पोस्ट आफिस, टेलीफोन एक्सचेंज, पुलिस चौकी, पर्यटक बगले एव आवागमन के सभी साधन उपलब्ध हैं।

ऐसे रमणीय स्थान पर स्थित गुरुकुल में भारतीय सस्कृति के रक्षक सज्जन लोग अपनी सतति को सस्कारी बनाने हेतु प्रवेश के लिए शीघ्र सम्पर्क करें। गुरुकुल में अनिवार्य सस्कृत विषय के साथ समस्त आधुनिक विषय जैसे-गणित, भूगोल, अंग्रेजी, विज्ञान, इतिहास, समाज शास्त्र आदि का योग्य अध्यापको द्वारा अध्यापन कराया जाता है। उत्तम सस्कारों के लिये छात्रो का प्रवेश कराये।

सस्थापक — प्रधानाचार्य

स्वामी आनन्दवेश — **आचार्य इन्द्रपाल**

टेलीफोन न० ०१३९६-२८३५७

रावल गोत्र की ऐतिहासिक पहल का उल्लंघन करने वाले जाति से बाहर होंगे

दहेज और दिखावे पर पंचायत की रोक

बापौली (पानीपत), २ जून। गुर्जर बिरादरी के रावल गोत्र ने समाज में व्याप्त दहेज और शादी-ब्याह में दिखावे की बुराई के खिलाफ अपने अभियान को आज श्रीगणेश कर दिया। रावल गोत्र की आज बैठी पचायत ने प्रस्ताव पास करके दहेज लेने व देने पर प्रतिबध लगा दिया है। इस फैसले को सताइसी (ब्लाक के सत्ताईस गाव) में लागू कर दिया गया है। अपने फैसले मे पचायत ने दहेज पर पाबंदी तो लगाई ही है, साथ मे विवाह समारोह मे एकदम सादगी रखने और महगे व्यजन परोसने व वीडियो फिल्म बनाने पर रोक लगाई है। यही नहीं लोगों की सुविधा के लिए परोसे जा सकने वाले व्यंजनों की सूची भी तैयार की गई है। इन शर्तो को न मानने वालों को पचायत एक टका या चटा का जुर्माना करेगी।

गुर्जर बिरादरी के रावल गोत्र ने समाज मे बढती दहेज की बुराई पर लगाम लगाने के लिए गत ३ अप्रैल को बापौली के सजय पार्क मे सत्ताईसी की बैठक बुलाकर समिति का गठन किया था। उस बैठक मे लिए गए निर्णयो को मूर्त रूप देने के लिए आज संजय पार्क मे सत्ताईसी के रावल गोत्र के लोगो ने पचायत की। इसमे पूर्व में लिए गए निर्णयो पर सख्ती से अमल करने पर विचार किया गया।

ईलम सिह बापौली ने बताया कि पंचायत ने निर्णय लिया है कि बारात मे केवल पांच आदमी ही जाएंगे। सभी विवाहों मे सादा बनाकर पत्तल पर नीचे बैठाकर परोसा जाएगा। खाने में बूरा-चावल जैसे साधारण व्यजन ही मान्य होंगे। विवाह के समय सजावट पर खर्च नहीं किया जाएगा और किसी प्रकार का बैंडबाजा नहीं बजाया जाएगा।

बेवजह खर्च फोटो व वीडियो फिल्म नहीं बनाई जाएगी। दहेज के सामान का दिखावा नहीं किया जाएगा और न ही उसकी सूची पढी जाएगी। लडकी के कन्यादान पर एक रुपये से ११०० रुपये तक ही दिया व लिया जाएगा। गाव में किसी बुजुर्ग की मृत्यु पर सत्रहवीं व जोड आदि पर खर्च नहीं किया जाएगा।

इन शर्तों के उल्लघन होने पर पंचायत ने जुर्माना लगाने का भी प्रावधान किया है। यानि पंचायत की नजर में यदि किसी ने विवाह के समय किसी शर्त का उल्लंघन किया है तो उस पर एक टका या चटा (सामाजिक बहिष्कार) का जुर्माना हो सकता है। पंचायत की नजर में यह जुर्माना बेहद असरदार व प्रभावी होगा। ग्रामीणों का मानना है कि इस दहेज विरोधी निर्णय से न केवल गरीब एव मध्य वर्ग को राहत मिलेगी, बल्कि दहेज की बलि का शिकार होने वाली मासूम लडकियों की जान भी बचेगी।

इसी पंचायत में शामिल हुए अधिवक्ता मगेराम रावल का कहना है कि यदि दहेज की समस्या खत्म हो जाए तो समाज में काफी सुधार हो सकता है। उनका मानना है कि अधिकतर मुकदमे दहेज सम्बन्धी होते हैं। इनमें कई बार बेकसूर लोग भी बलि का बकरा बन जाते हैं। दहेज प्रथा खत्म होने से न केवल दहेज मुकदमों से लोग बचेंगे, बल्कि जो लोग दहेज के भय से लड़की को गर्भ में ही मरवा देते हैं, उस पर भी अंकुश लगेगा।

साभार दैनिक अमर उजाला ३-६-०२

चरित्र निर्माण एवं आधुनिक व्यायाम प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

आर्यवीर दल हरयाणा के तत्त्वावधान में ग्रीष्म अवकाश में पूरे प्रान्त में लगभग २२ शिविरों का आयोजन किया गया है जिसमें आर्यवीरों को चरित्र निर्माण एवं नैतिकता, ब्रह्मचर्य, राष्ट्रभक्ति, सदाचार तथा आर्यसमाज तथा दयानन्द के सच्चे सैनिक बनने की प्रेरणा दी गई। शिविर में आर्य संस्कृति की रक्षा करने, अज्ञान, अभाव तथा अन्याय से लड़ने का संकल्प आर्यवीरों को कराया गया। सुयोग्य शिक्षकों के द्वारा, आसन प्राणायाम, जुडो-कराटे, सर्वांग सुन्दर व्यायाम, लाठी, भाला, मलखम तथा कमाण्डों प्रशिक्षण दिया गया। आध्यात्मिक उन्नति हेतु विद्वानों द्वारा समय-समय पर बौद्धिक भी दिया गया। आर्यवीरों ने यज्ञोपवीत धारण करते हुए नित्य संध्या एव हवन करने का संकल्प किया। दीक्षान्त समारोह में आर्यवीरों ने व्यसनों को छोडने तथा संयमी जीवन बनाने का संकल्प किया। १८ मई से ९ जून तक निम्नलिखित शिविरों का समापन हुआ।

१. गुड़गांव—आर्य पब्लिक स्कूल सैक्टर-७ गुड़गांव में मण्डलपति श्री शिवदत्त आर्य की अध्यक्षता में १८ मई से २५ मई तक १३० आर्य वीरों का शिविर लगाया गया। शिविर में श्री सत्येन्द्र शास्त्री 'सत्यम्' श्री कन्हैया लाल आर्य, श्याम जी, राजेश जी, दिनेश जी, राजेश प्रत्यानी, भारत भूषण जी, मा० सोमनाथ जी, श्रीधर आर्य, रामदास जी सेवक, जगदीश आर्य दादरी ने अपना पूरा समय देकर इस शिविर को सफल किया। आर्यवीरों ने साथ शोभा यात्रा भी निकाली तथा आर्य जनता को सुन्दर प्रदर्शन भी दिखाया।

२. नारनौल—राजकीय वरिष्ठ सीनियर सैकेण्डरी स्कूल मे २५ मई से २ जून तक जिला स्तरीय आर्य महासम्मेलन के अवसर पर १०० आर्यवीरों का शिविर लगाया गया। उपायुक्त श्री रामभक्त लाग्यान जी ने विशेष रूप से रुचि लेते हुए आर्यवीरो की परिश्रम, सयमी एव सदाचारपूर्वक जीवन बिताने का बल दिया। आर्यसमाज खडखडी मोहल्ला तथा आर्यसमाज सधीवाडा के सयुक्त प्रयास से यह शिविर सफल रहा। ३१ मई को शोभायात्रा भी निकाली गई। आर्यवीरो के शानदार प्रदर्शन को देखकर जनता मुग्ध हो गई। शिविर में प्रधान सेनापति डॉ० देवव्रत जी ने भी निरीक्षण किया। स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती, मा० वेदप्रकाश आर्य मण्डलपति ने भी शिविर मे आर्यवीरों को आशीर्वाद प्रदान किया।

३. प्रशिक्षण शिविर बाघौत—आर्यवीर दल महेन्द्रगढ की ओर से २५ मई से १ जून तक ग्राम पंचायत तथा आर्यसमाज बाघौत के सतत प्रयास से राजकीय विद्यालय में शिविर लगाया गया। शिविर में स्वामी ब्रह्मानन्द ने विशेष रूप से पधारकर गांव में युवकों को शराब छोड़ने की दवाई का नि:शुल्क वितरण किया। शिविर का प्रभाव पूरे गांव पर रहा।

४. प्रान्तीय शिविर पाली—आर्यवीर दल हरयाणा का शाखा नायक श्रेणी का शिविर ओ३म् योग संस्थान पाली (बल्लबगढ़) में ब्र० ओमप्रकाश आर्य जी के नेतृत्व में २४ मई से २ जून तक लगाया गया। प्रधान सेनापति डॉ० देवव्रत आचार्य ने स्वयं शिविर में रहकर प्रशिक्षण दिया। पूरे प्रान्त में २०० आर्यवीरों ने भाग लिया। आधी, तूफान और भारी वर्षा के बावजूद आर्यवीरों का उत्साह देखने को बनता था। माता बिमला महता, मनोहर लाल आनन्द, अजीत कुमार आर्य, हेतीलाल आर्य, कुलभूषण आर्य आदि कार्यकर्ताओं ने आर्यवीरों का उत्साहवर्धन किया। श्री देशबन्धु आर्य तथा श्री राजेन्द्र बिसला जी ने पधारकर आर्यवीरों को आशीर्वाद प्रदान किया।

५. प्रशिक्षण शिविर हांसी—वैदिक प्रवक्ता पं० रामसुफल शास्त्री जी के निरीक्षण व प्रिय राजेश कालडा जी के योगदान से २५ मई से २ जून तक आर्यवीर दल का शिविर डी ए वी स्कूल हासी के प्रागण मे लगाया गया जिसमें ५० आर्यवीरों ने भाग लिया। समापन समारोह पर प० विश्वामित्र जी तथा हरिसिंह सैनी प्रधान आर्यसमाज हिसार ने पधारकर आर्यवीरो को आशीर्वाद दिया।

६. प्रशिक्षण शिविर बिन्झोल—२५ मई से ३१ मई तक आर्यवीर दल पानीपत की ओर से आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविर लगाया गया। जिसमें गाव के बच्चों ने बढचढकर भाग लिया। शिविर में सुधीर शास्त्री, प० राजकुमार, ओमप्रकाश आर्य तथा सुभाष गुम्बानी ने आर्यवीरो को प्रोत्साहित किया।

७. प्रशिक्षण शिविर पानीपत—१ जून से ७ जून तक आर्यवीर दल का शिविर आर्य स्कूल के प्रागण मे मण्डलपति ओमप्रकाश आर्य के नेतृत्व मे लगाया गया। शिविर में आर्यवीरो ने बढ-चढकर भाग लिया। वैदिक विद्वानों द्वारा आर्यवीरो को बौद्धिक दिया गया।

८. प्रशिक्षण शिविर कालवां—जिला जीन्द में आर्यवीर दल की ओर से २५ मई से २ जून तक शिविर का आयोजन श्री कृष्ण देव जी शास्त्री के निर्देशन मे लगाया गया। आसपास के गावो के आर्यवीरों ने इस शिविर में भाग लेकर अपने जीवन को सुधारने का सकल्प किया।

९. प्रशिक्षण शिविर खरल—मण्डलपति श्री जोगीराम जी के नेतृत्व में एक सप्ताह का शिविर गाव खरल में ब्र० सुरेन्द्र आर्य की देखरेख में २५ मई से २ जून तक अल्पकालीन शिविर लगाया गया।

१०. प्रशिक्षण शिविर रोहतक—आर्यवीर दल रोहतक की ओर से २ जून से ९ जून तक बलिदान भवन, दयानन्दमठ रोहतक मे शिविर का आयोजन किया गया जिसमें ८० आर्यवीरों ने भाग लिया। शिविर का उद्घाटन चौ० अतरचन्द गुगनानी ने किया तथा ध्वजारोहण ब्र० कृष्णदेव जी ने किया। समय-समय पर मा० वेदप्रकाश साधक, स्वामी सुमेधानन्द, उमेदसिंह शर्मा, प० सुखदेव शास्त्री, आचार्य यशपाल आर्य ने भी पधारकर आर्यवीरों को आशीर्वाद दिया।

आगामी ग्रीष्मकालीन शिविर

१ ९ जून से १६ जून, आर्यसमाज फिरोजपुर झिरका।
२ १७ जून से २३ जून तक आर के एस डी कॉलेज, कैथल।
३ १७ जून से २३ जून, आर्य वीरांगना शिविर, धन्वन्तरी आर्य स्कूल, आर्यनगर रोहतक।
४ १७ जून से २३ जून, दादरी।
५ २३ जून से ३० जून, आर्य वीरागना शिविर, गन्नौर (सोनीपत)
६ २३ जून से ३० जून, यदुवशी स्कूल महेन्द्रगढ।

शेष शिविरों की सूची अगले अक में देगे।

—वेदप्रकाश आर्य, महामन्त्री
आर्यवीर दल हरयाणा

उपासना का फल सुख नहीं, आनन्द है

हमारे शास्त्री निवास के सामने वाले मकान मे एक दिन प्रात काल एक कैसेट चल रही थी। उसी समय मैं अपने स्नान घर में नहाने के लिए प्रवेश हुआ तो रोशनदान से आवाज सुनाई दी। कैसेट के बोल थे कि 'राम-राम जपियो ते सदा सुखी रहियो'। मेरे मन मे एक विचार आया कि किसी नाम जपने मात्र से तो कोई भी सुखी नहीं हो सकता ? हां यदि थोडी देर के लिए राम को ईश्वर मानकर भी राम-नाम जपने की बात कही जाये तो ईश्वर की उपासना से सुख नहीं आनन्द की अनुभूति होती है।

प्रत्येक मनुष्य के जीवन में तीन अलभ्य अनुभूतिया हैं जो बहुत कठिनता से प्राप्त होती हैं। किन्तु जो व्यक्ति उक्त तीनो विषयों को भली प्रकार समझ लेता हैं उसे ये तीनो सुख-शान्ति एव आनन्द सहज व सरलता से ही प्राप्त हो सकते हैं।

बात राम-नाम जपियो ते सदा सुखी रहियो की चल रही थी। अस्तु शरीर का विषय सुख है जो भौतिक साधन सम्पन्नता के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। सु+ख=सु का अर्थ अच्छा-ख का अर्थ इन्द्रिय अर्थात् जो इन्द्रियों को अच्छा लगे उसे सुख कहते हैं। शान्ति मन का विषय है। जब तक मन मे सन्तुष्टि नहीं है, तब तक सब कुछ व्यर्थ है। किसी कवि ने ठीक ही कहा है कि—

गोधन गजधन वाज धन और रतन धन खान।
जब आवे सन्तोष धन सब धन धूलि समान।।

ससार का बहुत सारा धन वैभव प्राप्त करने के बाद भी जब तक मन मे शान्ति न हो तो धन वैभव का कोई लाभ नहीं है। एक बहुत सुन्दर कहावत है कि—**"मन चगा तो कठौती मे गगा"** अर्थात् मन में शान्ति है तो सब ठीक है।

रही बात आनन्द की जो केवलमात्र आत्मा का विषय है। इस लेख का भी मुख्य बिन्दु है। जिसे परमात्मा की उपासना-भक्ति-चिन्तन-मनन व सन्ध्या आदि से ही प्राप्त किया जा सकता है। निष्कर्ष यह है कि उपासना का फल सुख-शान्ति से ऊपर परम-आनन्द की अनुभूति ही होता है। अत उपासना से सुख नहीं आनन्द मिलता है।

—आचार्य रामसुफल शास्त्री 'वैदिक प्रवक्ता', शास्त्री निवास, लाल सडक, हासी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ०१२६२–७६८७४, ७७८७४) मे छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष ' ०१२६२–७७७२२) से प्रकाशित।
पत्र में प्रकाशित लेख सामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री का सहमत होना आवश्यक नहीं। पत्र के प्रत्येक प्रकार के विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक होगा।

सम्पादक के नाम पत्र

आदरणीय सम्पादक महोदय,

निवेदन है, कि एक जून से डाक विभाग ने डाक भेजने के कार्ड, अन्तर्देशीय पत्र तथा लिफाफो के मूल्य मे अप्रत्याशित वृद्धि करदी है। जिसके अनुसार अन्तर्देशीय पत्र दो रुपए के स्थान पर दो रुपये पचास पैसे का तथा लिफाफा पाच रुपए का कर दिया है, कार्ड के बारे मे बताया जारहा है कि वह एक रुपये मूल्य का होजायेगा। इसी प्रकार डाक द्वारा भेजी जानेवाली पत्रिकाओ, पुस्तको आदि पर टिकट की दर बढा दीगई है।

इस बढोतरी का अधिकाश सीधा प्रभाव ग्रामीण जनता पर पडेगा। शहरवाले अथवा सम्पन्न परिवारो के पास एस टी डी तथा अन्य दर्जनो सुविधाए सचार के लिए उपलब्ध हैं। वे सस्ते से सस्ते मे अपने कार्य सम्पन्न कर सकते हैं। देश की अस्सी प्रतिशत जनता अपनी निर्धनता तथा साधनों की अनुपलब्धता के कारण कार्ड, अन्तर्देशीय पत्रों तथा लिफाफो से काम चला लेती थी। अब उनके लिए इन्हे भी खरीदना अत्यन्त महगा होगया है।

नई दिल्ली की भव्य इमारतो मे वैभवशाली जीवन बितानेवाले केन्द्रीय सरकार के कर्णाधार व वित्तमन्त्री श्री यशवन्तसिह निर्धन और साधनहीन भारतीय को पीडा से परिचित नहीं है। देश की निर्धन जनता के लिए समाचार पत्रो तथा अन्य प्रचार माध्यमो को केन्द्रीय सरकार के बहरे, अन्धे, स्वार्थी नेताओ को चेताया जाना चाहिए कि वे एक जून से डाक साधनो पर बढाए जानेवाले मूल्यो को तुरन्त समाप्त कर देश की अस्सी प्रतिशत निर्धन तथा साधन हीन जनता को सुख की सास लेने दे।

-हरीराम आर्य, पो कारोली (नाहड) जिला रेवाडी

एक आदर्श महिला का निधन

दक्षिणी हरयाणा के अति पिछडे क्षेत्र ग्राम कारोली मे जन्मी, शतायु तक पहुचनेवाली स्वर्गीय छोटादेवी कभी किसी विद्यालय मे शिक्षा प्राप्त करने नहीं गईं। परमात्र दैविदेन से वह आध्यात्म ज्ञान व व्यवहार कुशलता की प्रतिमूर्ति थी। उन्होंने न केवल अपने मायकेवालो को शिष्टाचार सिखाया अपितु विवाहोपरान्त जब वह ग्राम लुहाना तहसील रेवाडी मे राव सोहनलाल के घर गई तो वहा भी अनुकरणीय परिवार की रचना की।

दिल्ली राज्य के शिक्षा विभाग द्वारा १९९३ में राजकीय पुरस्कार से सम्मानित उनके पुत्र प्रिंसिपल हजारीलाल यादव कृतज्ञ हृदय से स्वीकार करते हैं कि उनकी उन्नति व विकास मे उनकी स्वर्गीय माता छोटादेवी की सात्विक प्रेरणा तथा आशीर्वाद का प्रताप रहा है। स्वर्गीय छोटादेवी न केवल अपने परिवार के लिए आदर्श थी अपितु पडोस और गाव, विशेष महिलाओ, सभी के लिए समान अपनत्व रखती थीं।

१२ मई २००२ को उनके शान्तियज्ञ के अवसर पर श्रद्धाजंलि देने लुहाणा आए लोगों मे क्षेत्र व दिल्ली के अनेक शिक्षाविद्, धार्मिक विद्वान् व सामाजिक नेता भारी सख्या मे शामिल हुए व अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

आर्यसमाज सेक्टर-६ पंचकूला का निर्वाचन

सरक्षक-श्री रामप्यारा कश्यप, प्रधान श्री धर्मवीर बतरा, मंत्री-श्री यशपाल आर्य, वरिष्ठ उपप्रधान-श्रीमती जगदम्बा गुप्ता, उपप्रधान-अविनाशचन्द्र, श्री के के अग्रवाल, श्री मनोहरलाल मनचन्दा, श्रीमती वेद वर्मा, उपमत्री-श्री सुनील बत्रा, श्री बलदेव विग, श्री ज्ञानप्रकाश रहेजा, श्रीमती पामीला काकाडेया, श्रीमती ऊषा गुप्ता, कोषाध्यक्ष-श्री महेन्द्रनाथ चौहान, सह-कोषाध्यक्ष-श्री ब्रह्मदत्त बाली, पुस्तकाध्यक्ष-श्रीमती कृष्णा चौधरी, सह-पुस्तकाध्यक्ष-श्रीमती सुदर्शन चौहान, निरीक्षक-श्री इकबालकृष्ण ग्रोवर।

शारीरिक एवं बौद्धिक प्रशिक्षण शिविर

रविवार १६ जून से २३ जून तक

स्थान-दयानन्द सीनियर सैकेण्डरी स्कूल, फिरोजपुर झिरका फोन · ७७७१०

बच्चों के शारीरिक सामाजिक एव आध्यात्मिक विकास हेतु आर्यवीर दल फिरोजपुर झिरका के नेतृत्व मे एक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जारहा है। ब्रह्मचारी सत्यप्रकाश जी का शिविर मे विशेष सान्निध्य प्राप्त होगा। इस शिविर में अनेक विद्वान् एव शारीरिक शिक्षक बच्चों को प्रशिक्षण प्रदान करेगे। जिनमें से कुछ प्रमुख हैं-पूज्य स्वामी जीवनानन्द सरस्वती दिल्ली, श्री वेदप्रकाश आर्य मंत्री आर्यवीर दल हरयाणा रोहतक, आचार्य सत्यप्रिय जी तिजारा, श्री रामदास सेवक गुडगाव, श्री कन्हैयालाल जी गुडगाव, श्री सुगनचन्द आर्य पुन्हाना, डा० महेन्द्र गर्ग एकता नर्सिंग होम, डा० सी पी वधवा, वधवा नर्सिंग होम, श्री मगलदेव आर्य, श्री चतरसिह, श्री मानकचन्द।

उद्घाटन समारोह रविवार १६ जून २००२ प्रात ८ बजे तथा समापन समारोह रविवार २३ जून २००२ प्रात ९ बजे होगा।

शिविरार्थी ध्यान दें-(१) शिविर में कक्षा आठवीं से बारहवीं तक के विद्यार्थी भाग ले सकते हैं। (२) प्रत्येक शिविरार्थी को आर्यवीर दल द्वारा निर्धारित आचार सहिता व दैनिकचर्या का पालन करना होगा। (३) प्रवेश शुल्क ५० रुपये है। कृपया भाग लेने के इच्छुक विद्यार्थी प्रधान/मत्री आर्यसमाज फिरोजपुर झिरका को अथवा अपने नजदीकी आर्यसमाज के प्रधान या मत्री को शुल्क सहित अपना नाम १५ जून तक लिखवा दें। (४) प्रत्येक विद्यार्थी को १५ जून २००२ सायं ६ बजे तक शिविर में भाग लेने हेतु शिविर स्थल पर पहुंच जाना आवश्यक है। (५) शिविरार्थी अपने साथ कापी, पैन, थाली, कटोरी, गिलास, सैण्डो बनियान, खाकी नेकर, लाठीं आदि लेकर आयें। (६) खाने पीने रहने को उचित प्रबन्ध आयोजको की ओर से किया जायेगा।

विशेष-(१) शिविरार्थियों के माता-पिता व आस-पास की सभी आर्यसमाजों के पदाधिकारी एव सदस्य उद्घाटन व समापन समारोह में सादर आमंत्रित हैं। (२) समापन समारोह के बाद २३ जून २००२ को आर्य वेदप्रचार मंडल मेवात की आम सभा का आयोजन है समस्त पदाधिकारी एव सदस्य मंडल की गतिविधियों को सुचारु रूप से चलाने के लिए इसमे अवश्य भाग ले।

गुरुकुल शुक्रताल में छात्रों का प्रवेश

समस्त शिक्षाविदो, सस्कृतप्रेमी एव अभिभावकों को सूचित किया जाता है कि गुरुकुल स० उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, शुक्रताल मुज्जफरनगर में १ जुलाई २००२ से नवीन पाठ्यक्रम मे मेधावी छात्रों का कक्षा ६ से १२ तक प्रवेश प्रारम्भ हो रहा है।

शुक्रताल मु०नगर से ३० कि०मी० दूर पावन गगा के तट पर अरण्यावली मे स्थित है। यह तीर्थ श्री शुकदेव मन्दिर एव अनेक ऊची-ऊंची मूर्तियों से सुज्जित है। यहीं पर महर्षि श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती ने निराहार रहकर तीन दिन की समाधि लगाई थी। यह दिव्य पर्यटक स्थल है, जहा पोस्ट आफिस, टेलीफोन एक्सचेंज, पुलिस चौकी, पर्यटक बगले एव आवागमन के सभी साधन उपलब्ध हैं।

ऐसे रमणीय स्थान पर स्थित गुरुकुल में भारतीय सस्कृति के रक्षक सज्जन लोग अपनी सतति को सस्कारी बनाने हेतु प्रवेश के लिए शीघ्र सम्पर्क करें। गुरुकुल में अनिवार्य सस्कृत विषय के साथ समस्त आधुनिक विषय जैसे-गणित, भूगोल, अंग्रेजी, विज्ञान, इतिहास, समाज शास्त्र आदि का योग्य अध्यापको द्वारा अध्यापन कराया जाता है। उत्तम सस्कारों के लिये छात्रो का प्रवेश कराये।

सस्थापक — प्रधानाचार्य

स्वामी आनन्दवेश — **आचार्य इन्द्रपाल**

टेलीफोन न० ०१३९६-२८३५७

रावल गोत्र की ऐतिहासिक पहल का उल्लंघन करने वाले जाति से बाहर होंगे

दहेज और दिखावे पर पंचायत की रोक

बापौली (पानीपत), २ जून। गुर्जर बिरादरी के रावल गोत्र ने समाज मे व्याप्त दहेज और शादी-ब्याह मे दिखावे की बुराई के खिलाफ अपने अभियान को आज श्रीगणेश कर दिया। रावल गोत्र की आज बैठी पचायत ने प्रस्ताव पास करके दहेज लेने व देने पर प्रतिबंध लगा दिया है। इस फैसले को सताइसी (ब्लाक के सत्ताईस गाव) में लागू कर दिया गया है। अपने फैसले मे पचायत ने दहेज पर पाबदी तो लगाई ही है, साथ में विवाह समारोह मे एकदम सादगी रखने और महगे व्यंजन परोसने व वीडियो फिल्म बनाने पर रोक लगाई है। यही नहीं लोगों की सुविधा के लिए परोसे जा सकने वाले व्यजनो की सूची भी तैयार की गई है। इन शर्तो को न मानने वालो को पचायत एक टका या चटा का जुर्माना करेगी।

गुर्जर बिरादरी के रावल गोत्र ने समाज मे बढती दहेज की बुराई पर लगाम लगाने के लिए गत ३ अप्रैल को बापौली के सजय पार्क में सत्ताईसी की बैठक बुलाकर समिति का गठन किया था। उस बैठक में लिए गए निर्णयो को मूर्त रूप देने के लिए आज सजय पार्क मे सत्ताईसी के रावल गोत्र के लोगो ने पचायत की। इसमें पूर्व में लिए गए निर्णयों पर सख्ती से अमल करने पर विचार किया गया।

ईलम सिह बापौली ने बताया कि पचायत ने निर्णय लिया है कि बारात में केवल पांच आदमी ही जाएंगे। सभी विवाहों में सादा बनाकर पत्तल पर नीचे बैठाकर परोसा जाएगा। खाने में बूरा-चावल जैसे साधारण व्यजन ही मान्य होंगे। विवाह के समय सजावट पर खर्च नहीं किया जाएगा और किसी प्रकार का बैंडबाजा नहीं बजाया जाएगा।

बेवजह खर्च फोटो व वीडियो फिल्म नहीं बनाई जाएगी। दहेज के सामान का दिखावा नहीं किया जाएगा और न ही उसकी सूची पढी जाएगी। लड़की के कन्यादान पर एक रुपये से ११०० रुपये तक ही दिया व लिया जाएगा। गांव में किसी बुजुर्ग की मृत्यु पर सत्रहवीं व जोड आदि पर खर्च नहीं किया जाएगा।

इन शर्तों के उल्लघन होने पर पंचायत ने जुर्माना लगाने का भी प्रावधान किया है। यानि पचायत की नजर में यदि किसी ने विवाह के समय किसी शर्त का उल्लंघन किया है तो उस पर एक टका या चटा (सामाजिक बहिष्कार) का जुर्माना हो सकता है। पंचायत की नजर मे यह जुर्माना बेहद असरदार व प्रभावी होगा। ग्रामीणों का मानना है कि इस दहेज विरोधी निर्णय से न केवल गरीब एव मध्य वर्ग को राहत मिलेगी, बल्कि दहेज की बलि का शिकार होने वाली मासूम लड़कियों की जान भी बचेगी।

इसी पंचायत में शामिल हुए अधिवक्ता मांगेराम रावल का कहना है कि यदि दहेज की समस्या खत्म हो जाए तो समाज में काफी सुधार हो सकता है। उनका मानना है कि अधिकतर मुकदमे दहेज सम्बन्धी होते हैं। इनमें कई बार बेकसूर लोग भी बलि का बकरा बन जाते हैं। दहेज प्रथा खत्म होने से न केवल दहेज मुकदमों से लोग बचेंगे, बल्कि जो लोग दहेज के भय से लड़की को गर्भ में ही मरवा देते हैं, उस पर भी अंकुश लगेगा।

साभार दैनिक अमर उजाला ३-६-०२

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३ सृष्टिसंवत् १, ९६, ०८, ५३, १०३
पंजीकरणसंख्या टैक/85-2/2000 ☎ ०१२६२-७७७२२

ओ३म् कृण्वन्तो वि...

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र रोहतक

प्रधानसम्पादक : यशपाल आचार्य, सभामन्त्री सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री

वर्ष २६ अंक २६ २१ जून, २००२ वार्षिक शुल्क ८०) आजीवन शुल्क ८००) विदेश में २० डॉलर एक प्रति १.७०

राष्ट्र की इस्लामिक आतंकवाद की समस्या के समाधान पर विशेष-

क्या इस्लामिक आतंकवाद की समस्या का समाधान सम्भव है ?

लेखक : सुखदेव शास्त्री 'महोपदेशक' दयानन्दमठ, रोहतक

महान् देशभक्त महर्षि दयानन्द सरस्वती ने ही अपनी दीर्घदृष्टि से सर्वप्रथम राष्ट्र मे सर्वतोमुखी उन्नति का सूत्रपात किया था। महर्षि ने तत्कालीन राष्ट्रीय समस्याओ पर अत्यन्त गहराई से चिन्तन किया था। इसमें राष्ट्र की स्वाधीनता, वैदिक धर्म की पुन स्थापना, मतमतान्तरो के फैलने से देश का विघटन आदि समस्याओं के समाधान के लिए महर्षि ने अपने जीवन का १७ बार विष पीकर आत्मबलिदान भी दे दिया था।

महर्षि दयानन्द अपने वैदिक धर्म के प्रचार क्षेत्र में दो मजहबों-इस्लाम व ईसाइयत के बढते प्रभाव से बहुत ही चिन्तित थे। इसी चिन्ता के कारण ही महर्षि दयानन्द ने इन दोनो ही मजहबो का प्रचण्ड खण्डन किया। ईसाइयों की मजहबी पुस्तक "बाईबिल" का खण्डन करते हुए अपने अमरग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के १३वें समुल्लास मे ईसाइयत के खण्डन में १३३ समीक्षाए लिखीं। इसी प्रकार मुसलमानों के इस्लाम के मजहब के विषय मे खण्डन करते हुए १४वें समुल्लास मे "कुरान" के खण्डन में १६१ समीक्षाएं लिखीं, जिनमें कुरान के मजहब का प्रचण्ड खण्डन किया गया था। इन दोनो ही मजहबो के बढते प्रभाव को देखते हुए महर्षि दयानन्द भारत के भविष्य के लिए बहुत ही चिन्तित रहते थे।

कितने स्वदेशाभिमानी थे, महर्षि दयानन्द, महर्षि दयानन्द के बारे मे बहुत ही गहराई से आकलन करते हुए सन् १९०१ मे तत्कालीन जनसख्या के (सेंसस् कमिश्नर) मि० बर्न एक अग्रेज अधिकारी थे। उन्होने अपनी रिपोर्ट मे लिखा था-

"Dayananda feared Islam and Christianity because he considered that the adoption of any foreign creed would endanger the national feelings he wished to foster."

अर्थात् "दयानन्द इस्लाम तथा ईसाइयत के प्रति इसलिये शंकित थे, क्योंकि वे समझते थे कि विदेशी मतों के अपनाने से देशवासियो की राष्ट्रीयता की भावना को क्षति पहुचेगी, जिन्हें महर्षि दयानन्द पुष्ट करना चाहते थे।"

मि० बर्न की ही रिपोर्ट का समर्थन करते हुए १९११ मे मि० ब्लण्टन ने भी एक बात और लिखी है-

"Dayananda was not merely a religious reformer, he was a great patriot It would be fair to say that with him religious reform was a mere means to national reform"

अर्थात् दयानन्द मात्र धार्मिक सुधारक ही न था, वह एक महान् देशभक्त था। यह कहना ठीक होगा कि उसके लिए धार्मिक सुधार, राष्ट्रीय सुधार का एक उपाय था।" मि० ब्लण्टन ने बडे पते ही बात लिखी है- "इसमें संदेह नहीं कि दयानन्द ने पाखण्डो और परस्पर विरोधी बातो का खण्डन इसलिए किया कि इनके रहते, दयानन्द के अपने शब्दों में परस्पर एकता, मेल-मिलाप या सद्भाव न रहकर ईर्ष्या, द्वेष, विरोध और लडाई झगडा ही होगा। महर्षि के विचार में-ऐसे इस्लामी कट्टरवादी मजहब न चलते तो, आर्यावर्त की आज यह दुर्दशा क्यो होती।"

महर्षि दयानन्द की मुख्य चिन्ता का कारण उनके जन्म से भी पहले यहा मुस्लिम साम्राज्य का महान् अत्याचारी शासन का होना था। उनके इस्लामी राज्य की एक सक्षिप्त सी झलक आप यहा देख ले, जिसे महर्षि भविष्य मे नहीं चाहते थे।

इस्लाम की आरम्भिक आतंकवाद की पृष्ठभूमि का इतिहास

१. सिन्ध—सबसे प्रथम ७१२ ई० मे भारत के सिन्ध प्रदेश पर "मुहम्मद-बिन-कासिम" ने हमला किया था। तत्कालीन सिन्ध के राजा दाहर के साथ कासिम का युद्ध हुआ था, दाहर की जीत निश्चित थी किन्तु उसके चार सेनापतियो के विश्वासघात के कारण राजा दाहर की विजय पराजय मे बदलती चली गई। इसके साथ ही एक मन्दिर के पुजारी ने कासिम से मिलकर कहा कि "यदि मन्दिर का झण्डा गिरा दिया तो सेना भाग जायेगी, कासिम ने झण्डा गिरा दिया, सेना भाग खडी हुई। दाहर लडाई मे मारे गए। दाहर की मृत्यु के साथ ही कासिम राजा दाहर की दो लडकियो को भी अपहरण करके ले गया। फिर सिन्ध अग्रेजी राज्य काल मे तो भारत का प्रदेश रहा किन्तु भारत विभाजन के कारण सिन्ध पाकिस्तान मे चला गया। १२ सौ ३५ साल के बाद सिन्ध भारत से फिर कट गया।

२. पंजाब—एक हजार आठ में पजाब मुहम्मद गजनवी की विजय के कारण सात सौ बावन साल तक मुसलमानो के पास रहा। लाहौर के राजा आनन्दपाल के लडके राजा जयपाल की इसमे पराजय हुई थी। मुस्लिम शासकों ने पजाब मे आतंकवादी कर्मों से अनेक पजाबियो को मौत के घाट उतारा था। नौ सौ उनतालीस साल के बाद भारत विजय के कारण आज भी पश्चिमी पजाब पाकिस्तान मे चला गया। भारत विभाजन के समय २ लाख पजाबी मौत के घाट उतार दिये गये। लाखो लडकियो का अपहरण हुआ। १९४७ मे मुसलमानो ने पजाब मे मौत का नगा नाच किया। इसका नम है "इस्लामिक आतकवाद"।

३. दिल्ली—ग्यारह सौ बानवे में भारत के अन्तिम सम्राट् पृथ्वीराज की पराजय हुई। जयचन्द की लडकी सयोगिता को पृथ्वीराज अपहरण करके ले गया था। उसका बदला लेने के लिए जयचन्द ने मुहम्मद गजनवी को बुलाकर उसका लडाई मे साथ देकर पृथ्वीराज को हरयाणा के तरावडी के मैदान में पराजित किया। गजनवी १७ बार पृथ्वीराज से लडाई मे हार गया था, किन्तु जयचन्द की सहायता से उसकी विजय हुई। मुहम्मद पृथ्वीराज को गिरफ्तार करके गजनी-अफगानिस्तान ले गया वहा उसकी आखे फोड दी गई, उसकी बेरहमी से हत्या करके उसकी एक समाधि अफगानिस्तान मे बनवा दी, आज भी जो कोई भी मुस्लिम अफगास्तिान जाता है तो मार्ग मे स्थित उसकी समाधि पर थूकते हैं, उस पर पेशाब भी करते हैं, पिछले दिनो बहादुरगढ मे पृथ्वीराज के चौहान वशियो ने एक समारोह मे पृथ्वीराज की अस्थियो की वापसी की माग भी की है। इस प्रकार ११ सौ बानवे से लेकर अठारह सौ तीन तक, छ सौ ग्यारह साल तक दिल्ली के तख्त पर मुसलमानो का राज्य रहा। मुस्लिम अत्याचारों से दिल्ली धधकती रही। औरगजेब के राज्य मे दिल्ली के चादनी चौक मे गुरु तेगबहादुर का बलिदान हुआ। उस समय आतकवाद सीमा को पार गया जब भाई मतीदस को इसी चौंक मे आरे मे चिरवा दिया गया। उसी दिन मतीदास के भाई सतीदास को भी पानी के उबलते कढाहे मे फैंक दिया गया। अनेक अत्याचार जनता पर किए गए।

दिल्ली को अनेक मुस्लिम बादशाह लूटते रहे। मारकाट करते रहे। इसी प्रकार फारस से आकर मुहम्मद शाह के राज्यकाल मे नादिरशाह ने भी दिल्ली को लूटा, लाखो लोग मारे गए। कत्लेआम हुआ। नादिरशाह दिल्ली मे लगभग दो मास तक रहा। उन दिनो वह हिन्दुस्तान का बादशाह था। वही तख्तेताऊस पर बैठता था, उसी के नाम से सिक्के प्रचलित होते थे। मस्जिदो मे उसी के नाम का खुतबा पढा जाता था। अन्त मे १ मई १७३९ मे वह वापस फारस लौटता हुआ दिल्ली की ईट से ईट बजाकर नादिरशाह लूट का माल ३० करोड का

(शेष पृष्ठ दो पर)

वैदिक-स्वाध्याय

तेरी इच्छा

अभ्रातृव्यो अना त्वं अनापिः इन्द्र जनुषा सनादसि।
युधेदापित्वमिच्छसे।। ऋ० ८।२१।१३।। अ० २०।११४।१।।

शब्दार्थ–(**इन्द्र**) हे परमेश्वर ! (**त्वं**) तुम (**जनुषा**) जन्म से ही, स्वभाव से ही (**अभ्रातृव्य**) शत्रुरहित (**अनापिः**) बन्धुरहित (**अना**) नियन्तृरहित (**असि**) हो, (**सनात्**) तुम सनातन हो, सनातन से ही ऐसे हो। पर तुम (**युधा**) युद्ध द्वारा (**इत्**) ही (**आपित्व**) बन्धुत्व को (**इच्छसे**) चाहते हो।

विनय–हे परमेश्वर ! तुम्हारे लिये न कोई शत्रु है और न कोई बन्धु है। तुम जिस उच्च स्वरूप मे रहते हो वहा शत्रुता और बन्धुता का कुछ अर्थ ही नही और तुम्हारे लिये कोई नायक व नियन्ता कैसे हो सकता है ? तुम ही एकमात्र सब जगत् के नियन्ता हो, नेता हो। तुम जन्म से, स्वभाव से ही ऐसे हो। 'जनुषा' का यह मतलब नहीं कि तुम्हारा कभी जन्म होता है। तुम तो सनातन हो, सनातन रूप से ऐसे शरीररहित और बन्धुरहित हो। पर सनातन होते हुए भी तुम हमारे बन्धुत्व (आपित्व) को चाहते हो। और इस बन्धुत्व को तुम युद्ध द्वारा चाहते हो, युद्ध द्वारा ही चाहते हो। अहा ! कैसा सुन्दर आयोजन है ? तुम चाहते हो कि ससार के सब प्राणी सासारिक युद्ध करके ही एक दिन तुम्हारे बन्धु बन जाये, तुम्हारे बन्धुत्व का साक्षात्कार कर ले। **सचमुच बिना लडाई के मिली सुलह, बिना सघर्ष के मिली प्रीति, मिला सग्राम के मिली मैत्री नीरस है, फीकी है, अवास्तविक है उसका कुछ मूल्य नहीं है।** बन्धुता तो अबन्धुता की, लडाई की, सापेक्षता मे ही अनुभूत की जा सकती है। इसीलिये हे मेरे जगदीश्वर ! मुझे अब समझ मे आता है कि तुमने कल्याण स्वरूप होते हुए भी इस अपने जगत् मे दुःख, दर्द, दारिद्र्य, रोग, क्लेश, आपत्ति, उलझन आदि को क्यो उत्पन्न होने दिया है और अब समझ मे आता है कि तुमने इन कठिनाइयो को खडा करके प्राणियो के जीवन को निरन्तर युद्धमय सघर्षमय क्यो बनाया है। सचमुच, यह सब कुछ तुमने इसीलिये किया है कि हम इन बाधाओ को जीतकर, इन कठिनाइयो, उलझनो को पार करके तेरे बन्धुत्व के रसास्वादन के योग्य बन जाये। तू तो अब भी हमारा बन्धु है, हम मे से जो तेरे द्रोही कहे जाते हैं–जो नास्तिक हैं–उनका भी तू अब भी एक समान बन्धु है (और असल मे किसी का भी बन्धु या शत्रु नहीं है) तो भी तेरी उस बन्धुता का अनुभव–तुझे बन्धु रूप से पा लेने का परमानन्द–हमे तभी मिल सकता है जब हम ससार के इस परम विकट युद्ध को विजय करके तेरे पास आ पहुचे। तू चाहता है कि आज जो तुझसे बहुत दूर है, तेरा कट्टर द्वेषी है, वह युद्ध करके एक दिन तेरा उतना ही नजदीकी और उतना ही कट्टर बन जाये। अत अब मैं तेरे बन्धुत्व पाने के समर मे ही कमर कसे खडा हुआ अपने को पाता हू, जितनी बार मरूगा इसी समर की युद्धभूमि मे मरूगा और अन्त मे तेरे बन्धुत्व को पाकर ही दम लूगा। यही तेरी इच्छा है, यही तेरी मुझसे प्रेममय इच्छा है।

(वैदिक विनय से)

क्या इस्लामिक आतंकवाद........ (प्रथम पृष्ठ का शेष)

नकद तथा सोना चादी, २५ करोड के हीरे जवाहारात, ९ करोड का तख्तेताऊस और अन्य कीमती पदार्थ, २ करोड की कारीगरी की बहुमूल्य चीजे, चार करोड का लडाई का सामान, इस प्रकार सब मिलाकर ७० करोड रुपयो की सम्पत्ति लूटकर ले गया। ३०० हाथी, २० हजार घोडे भी ले गया। दिल्ली आज भी ससद भवन पर हुए भयंकर आतकवादी हमले से दुःखी है। लालकिले पर हुए हमले को भी दिल्ली याद रखे हुए है। यह सब मुसलमानो का आतकवाद का ही मुख्य कारण है।

४ १५२६ मे महाराणा सग्रामसिह ने बाबर को बुलाया कि "इब्राहिम लोधी को हराया जाए" दोनों ने मिलकर लोधी को हराया। लोधी की हार के बाद बाबर वापिस मध्य एशिया नहीं गया, स्थायी रूप से भारत मे ही बादशाह बनकर बैठ गया। बाबर के ही आदेश से अयोध्या मे स्थित १५२६ मे रामजन्मभूमि के मन्दिर को उसके सेनापति 'मीरबकी' ने तुडवाकर उसके ऊपर बाबरी मस्जिद बनवादी। जिस राममन्दिर के पुनर्निर्माण के कारण आज देश मे भयकर साम्प्रदायिक झगडे हो रहे हैं। गोधरा मे ६० रेलवे यात्रियो को मुस्लिमो ने जलाकर मार दिया। रेल के डिब्बे जला दिए गए। इसी मुस्लिम आतकवादी हमले के कारण गुजरात मे हिन्दू-मुस्लिम दगे भडक उठे, जिसमे हजारो लोग मारे जा चुके हैं। दगे समाप्त ही नहीं हो पा रहे हैं। गुजरात मे यह सब इस्लामी आतकवाद ही थमने मे नहीं आ रहा, मुसलमान बादशाहो ने अपने शासनकाल मे देश मे ३ हजार के लगभग मन्दिरो को तोडा था। मथुरा का कृष्ण मन्दिर, काशी मे विश्वनाथ का मन्दिर, गुजरात मे सोमनाथ का मन्दिर विशेष थे। मदिरो की सोने चादी की मूर्तियो को भी मुस्लिम लूटकर ले गए।

५ १५२६ में जब हेमचन्द्र (हेमू बक्काल) व अकबर मे लडाई हुई तो हेमू की सेना के मुस्लिमो ने धोखा देकर हेमू की आख मे तीर मारा, हेमू मूर्च्छित होकर घोडे से गिर पडा, हेमू हार गया। मुस्लिम सैनिको ने कुरान की कसम खाकर अकबर का साथ दिया। हेमू से विश्वासघात किया।

कुछ इतिहासकार अकबर को 'महान्' कहते हैं। अकबर बडा चालाक था, उसने हिन्दुओ को मुसलमान बनाने के लिए 'दीने इलाही' मत की स्थापना की थी किन्तु उसे सफलता न मिली। अकबर एक 'नौरोजी' का मेला लगाता था जिसमे सिर्फ औरते ही आ सकती थी। वह औरत का वेश बनाकर एक तम्बू मे छिपकर बैठता था, कुट्टनिया औरते मेले मे आई सुन्दर औरतो को बहकाकर उसे पेश करती थीं। एक सुन्दर कन्या किरणवती को भी धोखे से एक कुट्टनी सौदा खरीदने के लिए अकबर के पास उसे तबू में ले गई। अकबर ने किरणवती का हाथ पकड लिया, किरणवती ने अपना हाथ अकबर से छुडाकर उसे धरती पर दे मारा, वह माफी मागने लगा। किरणवती के कहने पर ही उसने वह नौरोजी का मेला बन्द कर दिया, अकबर महान् चरित्रहीन था।

अकबर ने मानसिह की बुआ जोधाबाई से भी ब्याह कर लिया था। मानसिह अकबर को ४७ हजार रुपये सालाना नजराना देता था। मानसिह भी महान् गद्दार था। अकबर भी महान् बदमाश था। यह सब इस्लामी आतकवादियो का ही हिस्सा है।

६ १७६१ मे पानीपत में मराठा सरदार सदाशिवराव भाऊ के साथ अहमदशाह की लडाई हुई। पानीपत की इस तीसरी लडाई में भी रोहिल्ले मुसलमानों ने भाऊ को धोखा देकर अब्दाली की सहायता की थी। युद्ध मे पराजय के बाद भाऊ हरयाणा रोहतक के प्रसिद्ध गाव साघी मे एक मन्दिर मे साधु बनकर रहा। वह मन्दिर अब भी है।

७ **उत्तरप्रदेश**–ग्यारह सौ चौरानवे से लेकर १७६४ तक, पाच सौ चौंसठ साल तक मुस्लिमो के कब्जे मे रहा।

८ **बिहार**–ग्यारह सौ सत्तानवे मे बिहार भी जीत लिया गया। यह भी पाच सौ चौंसठ साल तक मुस्लिमो के कब्जे मे रहा।

९ बगाल–ग्यारह सौ अठानवें मे बगाल व उडीसा भी पाच सौ उनसठ वर्ष तक मुस्लिमो के कब्जे मे रहा।

इस प्रकार राजस्थान मे महाराणा प्रताप ने २५ वर्ष तक मेवाड प्रदेश के लिए 'हल्दीघाटी' मे अकबर के साथ लडाई की। प्रताप अपने प्रण से न हटे। यदि शक्तिसिह व मानसिह भी महाराणा का साथ देते तो अवश्य वे राजस्थान मे अपने राज्य स्थापित कर लेते। छत्रपति शिवाजी ने भी औरगजेब अत्याचारी के अत्याचारो का मुकाबला किया। पजाब मे गुरु गोविन्दसिह व पजाब केसरी रणजीतसिह ने स्वतन्त्रता प्राप्ति मे बडा काम किया।

इस प्रकार महर्षि दयानन्द सरस्वती की इस्लाम के प्रति विचारधारा को देखते हुए इस्लाम की आतकवादी पृष्ठभूमि की जानकारी आपके सामने इसलिए लिखनी पडी कि ७१२ से लेकर १९४७ तक भारत का विभाजन होने पर पाकिस्तान पृथक् देश बन जाने पर भी इस्लामी आतकवादी गतिविधिया भारत की धरती पर निरन्तर चालू किये हुए हैं। इसके लिए युद्ध अनिवार्य है।

अगले लेख में–इस्लामी आतकवादी समस्या के विषय में विस्तृत रूप से पढे।

बीड़ी, सिगरेट, शराब पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है, इनसे दूर रहें।

सभा अधिकारियों के कार्यक्रम

सभामन्त्री द्वारा आर्यसमाजों तथा आर्य संस्थाओं का भ्रमण

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के मन्त्री आचार्य यशपाल जी ने अपने अन्य सभा उपमन्त्रियों सर्व श्री महेन्द्रसिह शास्त्री, सुरेन्द्र शास्त्री, केदारसिह आर्य एव अन्तरग सदस्य वैद्य ताराचन्द आर्य, श्री जयपाल आर्य आदि के साथ हरयाणा के आर्यसमाजो तथा आर्य शिक्षण सस्थाओ का गत दिनो भ्रमण किया और स्थानीय समस्याओ का समाधान करने का यत्न किया।

सर्वप्रथम दिनाक २४ मई को रात्रि को सभामन्त्री जी सभा के पूर्व वेदप्रचाराधिष्ठाता बाबू रघुवीरसिह के निमन्त्रण पर आर्यसमाज मन्दिर बहुअकबरपुर (रोहतक) के उत्सव पर पहुचे तथा ग्रामीण नरनारियो को आर्यसमाज के कार्यो मे सहयोग देने की प्रेरणा की।

२५ मई को रोहतक सभा कार्यालय से सभा अन्तरग सदस्य श्री जयपाल आर्य के निमन्त्रण पर सभामन्त्री जी अपने अन्य अधिकारियो के साथ आर्यसमाज मॉडल कालोनी यमुनानगर गये। वहा आर्य केन्द्रीय सभा के अधिकारियों से सम्पर्क करके श्रीमद्दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय शादीपुर यमुनानगर से ५१०० रुपये, आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय जगाधरी से ७५०० रुपये, डॉ० सदीप सचदेव हस्पताल जगाधरी से ११०० रुपये, सभा के लिए दान प्राप्त किया। दोपहर बाद नारायणगढ गये। वहा आर्यसमाज तथा आर्य वरिष्ठ विद्यालय के अधिकारियो ने सभा अधिकारियों का हार्दिक स्वागत किया और आर्यसमाज की ओर से ११००० रुपये सभा को दान दिया। इस कार्यक्रम मे वैद्य गेन्दाराम आर्य, चौ० वीरसिह आर्य चबूतरो, डॉ० सतीश बसल, श्री सुभाष आर्य, डॉ० बलराज मोदगिल, मा० रामनिरजन आर्य आदि का विशेष योगदान रहा।

दिनाक २६ मई को प्रात ग्राम बोहर (रोहतक) मे सभा के अन्तरग सदस्य श्री यशवीर आर्य की दादी जी की शोकसभा मे सभामन्त्री तथा श्री केदारसिह आर्य सम्मिलित हुए। परिवार की ओर से सभा को ११०० रुपये दान प्राप्त हुआ।

सभा वरिष्ठ उपमन्त्री श्री महेन्द्र शास्त्री ने दिनाक ३० मई २००२ को आर्यसमाज बिलासपुर चौ० जिला गुडगाव के कर्मठ कार्यकर्ता डॉ० विशेषर दयाल छिल्लर से सम्पर्क करके सभा के लिए ५०१ रुपये दान लिया।

१ जून को आर्यवीर दल के निर्देशन मे आर्य बाल भारती विद्यालय मे युवको का चरित्र निर्माण शिविर आरम्भ हुआ जिसका उद्घाटन सभामन्त्री आचार्य यशपाल के द्वारा किया गया तथा युवको को बहादुरी, शारीरिक शिक्षा, देशभक्ति, उच्च चरित्र विनम्र आज्ञाकारी बनकर उज्ज्वल जीवन निर्माण के लिये प्रेरित किया। इस अवसर पर सभा के वरिष्ठ उपमन्त्री श्री महेद्रसिह शास्त्री उपमन्त्री श्री सुरेन्द्रसिह शास्त्री, श्री केदारसिह आर्य, प्रस्तोता श्री लाभसिह आर्य, सस्था के प्रधान श्री महेन्द्रसिह एडवोकेट, श्री रामोहन राय एडवोकेट, श्री बलराज एलाबादी कोषाध्यक्ष तथा खैल बाजार के प्रधान व केन्द्रीय सभा के प्रधान ने भी युवकों को प्रेरित करते हुए अपने विचार प्रकट किये।

दिनाक ५ जून २००२ को ग्राम बरहाणा (झज्जर) के विद्वान् नेता डॉ० राजपाल शास्त्री के रोहतक स्थित नये मकान के गृह प्रवेश यज्ञ मे सभा उपमन्त्री श्री केदारसिह आर्य के साथ सभागणक श्री ओमप्रकाश शास्त्री, श्री सत्यवान आर्य आदि यज्ञ मे सम्मिलित हुए। सभा के लिए ५०० रुपये दान प्राप्त हुआ।

दिनाक ६ जून को आर्य वीर दल रोहतक द्वारा सभा आर्य बलिदान भवन रोहतक के रात्रि कार्यक्रम मे सभामन्त्री आचार्य यशपाल ने आर्यवीरो को वैदिक धर्म की विशेषताओ का परिचय करवाया। दिन के शिविर के कार्यक्रम मे सभा के भजनोपदेशक प० चिरजीलाल आर्य, प० सत्यपाल आर्य तथा स्वामी देवानन्द के ऋषि दयानन्द तथा अन्य आर्यसमाज के बलिदानो की गाथा पर प्रभावशाली भजन हुए।

दिनाक ८ जून को सभामन्त्री जी अन्य अधिकारियो श्री महेन्द्र शास्त्री, सुरेन्द्र शास्त्री, केदारसिह आर्य, वैद्य ताराचन्द आर्य तथा प्रिं० लाभसिह आदि के साथ आर्यसमाज नीलोखेडी (करनाल) गये। वहा आर्यसमाज के कार्यकर्ताओ को सम्बोधित किया और सभा के साथ मिलकर कार्य करने का आह्वान किया। आर्यसमाज के अधिकारियो ने भविष्य मे सभा के कार्यो मे पूरा सहयोग देने का विश्वास दिलाया। सभा अधिकारियों ने भी वेदप्रचारार्थ सभा प्रचारको का कार्यक्रम बनाया जावेगा और विद्यालय मे वैदिक धर्म की शिक्षा तथा परीक्षाओ की व्यवस्था की जावेगी। इसके बाद दोपहर को सभा अधिकारी आर्यसमाज रादौर (यमुनानगर) आर्यसमाज के अधिकारियो तथा अन्य सदस्यों से वर्तमान समस्याओ पर विचार विमर्श किया। सभामन्त्री ने आर्यसमाज के पुराने मन्दिर का नवनिर्माण करने पर बधाई दी और आपसी मतभेद भुलाकर मिलकर कार्य करने तथा नया चुनाव शीघ्र करने का निर्देश दिया। श्री सत्यकाम आर्य, श्री विद्याभूषण, श्री हरिसिह, श्रीमती विमला बसल, श्रीमती नय्यर तथा आर्यसमाज के अधिकारियों ने सभा को सहयोग देने का वचन दिया। सभा अधिकारी दोपहर बाद आर्यसमाज मन्दिर शाहबाद मारकण्डा जिला कुरुक्षेत्र गये। यहा आर्यसमाज के नेता ला० सुभाष आर्य सभा अन्तरग सदस्य ने स्वागत किया तथा नगर मे आर्यसमाज की सम्पत्तियो का निरीक्षण करवाया और शीघ्र ही जिला कुरुक्षेत्र आर्य सम्मेलन करने का निमन्त्रण दिया।

९ जून को आर्यवीर दल रोहतक के शिविर के समापन समारोह के अवसर पर सभामन्त्री जी ने शिविर मे भाग लेने वाले आर्यवीरो तथा इस अवसर पर बाहर से पधारे नरनारियो को सम्बोधित करते हुए कहा कि आर्यसमाज के कार्यो मे तन, मन धन से सहयोग करने की अपील की। शिविर मे सम्मिलित वीरो को सलाह दी कि शिविर मे जो भी सीखा है, उसके अनुसार अपने जीवन का निर्माण करे। इन शिविरो मे दीक्षित होकर ही चन्द्रशेखर, रामप्रसाद बिस्मिल आदि बलिदानियो ने भारत को स्वतन्त्र कराने मे प्रमुख भूमिका निभाई थी।

११ जून को जिला कुरुक्षेत्र के गाव बचगाव गामडी मे कन्या गुरुकुल का उद्घाटन किया गया। इस समारोह के मुख्य अतिथि आचार्य यशपाल सभामन्त्री थे तथा आधारशिला चौ० बहादुरसिह जी शिक्षामन्त्री हरयाणा सरकार ने रखी। समारोह की अध्यक्षता श्री

कन्या गुरुकुल बचगावा गामडी (कुरुक्षेत्र) के उद्घाटन के अवसर पर श्री अशोक अरोडा परिवहन मत्री हरयाणा सरकार, श्री बहादुरसिह शिक्षामन्त्री हरयाणा, एव श्री यशपाल आचार्य, मत्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा।

कन्या गुरुकुल बचगावा गामडी (कुरुक्षेत्र) के यज्ञ मे भाग लेते हुए सभामन्त्री श्री यशपाल आचार्य, सभा अन्तरग सदस्य श्री जयपाल आर्य एव चौ वीरसिह, स्वामी सदानन्द जी, आचार्य राजकिशोर आदि।।

अशोक अरोडा परिवहन मन्त्री हरयाणा सरकार ने की। श्री बलवन्तसिह नेहरा ने गुरुकुल के लिये चार एकड भूमि व ५० हजार रुपये दान दिये। समारोह को सफल बनाने मे श्री जयपालसिह जी आर्य यमुनानगर की विशेष भूमिका रही। इनके सहयोगी आचार्य राजकिशोर जी, चौ० वीरसिह जी, श्री इन्द्रजीत देव जी, स्वामी सदानन्द जी, ओम्प्रकाश जी गाधी आदि का पूरा सहयोग रहा। चौ० अमरसिह जी एडवोकेट गुरुकुल के सचालन मे पूरा सहयोग दे रहे हैं। इस अवसर पर सभा मन्त्री जी ने आर्यसमाज के कार्य और गुरुकुल शिक्षा प्रणाली पर प्रकाश डाला। सभा के उपमन्त्री श्री सुरेन्द्रसिह जी शास्त्री श्री केदारसिह जी आर्य, श्री ओम्प्रकाश जी गणक, श्री जयपाल जी आर्य यमुनानगर भी साथ थे।

१६ जून को जिला सोनीपत के गाव अगवानपुर मे आचार्य महेश आर्य एव श्री राजसिह मैत्रेयी के निर्देशन मे गुरुकुल की स्थापना की गई, इसकी आधारशिला आचार्य बलदेव जी गुरुकुल कालवा ने रखी। सस्थापक महात्मा महासिह जी थे। मुख्य अतिथि श्री वेदसिह जी मलिक पूर्व मन्त्री हरयाणा सरकार थे, सभामन्त्री आचार्य यशपाल ने इस अवसर पर याज्ञिक कार्यक्रम, उद्बोधन, आशीर्वाद सम्पन्न कराया मच सचालन स्वामी धर्मानन्द जी ने किया। इस अवसर पर मुख्य रूप से श्री महेन्द्रसिह शास्त्री वरिष्ठ उपमन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, आचार्य विजयाल जी गुरुकुल झज्जर (सभा उपमन्त्री), श्री वेदपाल जी आर्य पानीपत, श्री यशवीर आर्य बोहर, महात्मा सत्यदेव चैतन्य महात्मा वेदमित्र बहुअकबरपुर, महात्मा ब्रह्मपुत्र, आचार्य सुधाशु जी खेडी खुर्द आदि ने भी गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के सम्बन्ध मे अपने विचार प्रस्तुत किये और पूरा कार्यक्रम उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुआ।

—सभामन्त्री

महर्षि द्वारा कुरान की समीक्षा सत्यासत्य निर्णयार्थ

—**प्रतापसिंह शास्त्री**, एम ए पत्रकार, २५ गोल्डन विहार, गगवा रोड, हिसार

महर्षि दयानन्द पहले व्यक्ति थे जिन्होंने सन् १८७४ मे मुस्लिम सम्प्रदाय के धर्म ग्रन्थ कुरान का उर्दू भाषा से हिन्दी भाषा में अनुवाद कराने में पहले की फिर सत्यासत्य निर्णयार्थ अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के द्वितीय सस्करण में प्रकाशित किया। प्रथम सस्करण मे किसी कारणवश इस्लाम और ईसाइयत की समीक्षा के समुल्लास राजा उपाधिधारी श्री जयकृष्णदास कलैक्टर ऋषिभक्त ने प्रकाशित नहीं किये।

महर्षि दयानन्द अरबी भाषा से अनभिज्ञ थे। इसलिए इस्लाम की समीक्षा करने से पूर्व कुरान का भाषान्तर (अनुवाद) कराना उनके लिए आवश्यक था। उर्दू तथा अग्रेजी मे कुरान के अनुवाद तथा भाष्य हो चुके थे, कुछ होने लगे थे। महर्षि के समय मे शाह रफीउद्दीन देहलवी का उर्दू अनुवाद मुसलमानो में प्रामाणिक माना जाता था। महर्षि ने उसी उर्दू अनुवाद का हिन्दी भाषा मे अनुवाद कराया। महर्षि ने समीक्षा लिखने से पूर्व उस जमाने मे भारत मे कुरान के जितने भी अरबी-फारसी अथवा अग्रेजी भाषाओ मे अनुवाद अथवा भाष्य मिलते थे उनको उसी भाषा को जानने वाले विद्वानों से सुना और सम्यक्तया समझा। महर्षि ने १४वे समुल्लास की अनुभूमिका मे लिखा है–

"जो कुरान अर्बी भाषा मे है, उस पर मौलवियो ने उर्दू मे अर्थ लिखा है। उस अर्थ का देवनागरी अक्षर और आर्यभाषान्तर कराके, पश्चात् अरबी के बडे-बडे विद्वानों से शुद्ध करवाके लिखा गया है। यदि कोई कहे कि यह अर्थ ठीक नहीं है, तो उसको उचित है कि मौलवी साहबो के तर्जमाओ का पहिले खण्डन करे। पश्चात् इस विषय पर लिखे क्योकि यह लेख केवल मनुष्यो की उन्नति और सत्यासत्य के निर्णय के लिए है।

वास्तव मे यह शब्द "कुरआन" है परन्तु भाषा मे लोगो के बोलने मे "कुरान" आता है। महर्षि ने जिस देवनागरी कुरान के आधार पर समीक्षए लिखी हैं वह परोपकारिणी सभा अजमेर के सग्रह मे सुरक्षित हैं। "ऋषि के पत्र और विज्ञापन' मे यह सब बाते पूर्णतया स्पष्ट हैं।

महर्षि दयानन्द के घोर विरोधी मौलवी सनाउल्ला को भी मानना पडा था कि स्वामी जी का कराया अनुवाद अशुद्ध नहीं है। इससे महर्षि के अध्ययन की व्यापकता एव गम्भीरता तथा निष्पक्षपातता प्रमाणित होती है। यही नहीं इस सत्यार्थप्रकाश के १४वे समुल्लास को पढकर सर सैयद अहमदखा जैसे मुसलमान विद्वानो को कुरान के अनुवाद और उसके आधार पर प्रचलित सिद्धान्तो मे अपेक्षित सशोधन करने की प्रेरणा मिली और तब से लेकर अब तक इस कुरान मे सैकडो शब्दो मे, बातो मे, सशोधन, अर्थ परिवर्तन हुए हैं और हो रहे हैं। सर सैयद अहमद खा ने जब "कुरान" मे सशोधन किया तो उनका बडा विरोध हुआ। मौलवी महदी अली को मजहरूल्मुल्क ने एक धमकी भरा खत भी लिखा। लेकिन सर सैयद अहमदखा तथा उनके साथी धमकियो से विचलित नहीं हुए। वेद तो ईश्वरीय ज्ञान है दुनिया के पुस्तकालयो मे इससे पुराना कोई ग्रन्थ नहीं है, इसके अतिरिक्त भी मुस्लिम विद्वानो की ही बाते माने तो उनका कहना है कि कुरान से पूर्व वेद, तौरत, जुबूर, जन्दावस्ता, इजील आदि अनेक ईश्वरप्रदत्त इलहाम थे। फिर एक और क्यो ? इसका विस्तृत तथा अस्पष्ट सा उत्तर देते हुए मौलवी मुहम्मद अली कहते हैं– "कुरान से पूर्ववर्ती इलहामी ग्रन्थो मे पर्याप्त हेरफेर हो गया था। अत परमात्मा को अपना ज्ञान शुद्ध रूप मे देने के लिए कुरान का इलहाम देने की आवश्यकता पडी।" इससे यह तो प्रमाणित हो गया कि मौलवी साहब को वैदिक धर्म के सम्बन्ध मे साधारण सा ज्ञान भी नहीं है। एक वैदिक विद्वान् ने किसी प्रमाण से लिखा है सच तो यह है हजरत मुहम्मद मिरगी के रोग से ग्रस्त होने के कारण जब अस्वस्थ होते थे तो उनका सिर चकराने लगता था, चेहरे की दशा अस्तव्यस्त होने लगती थी, दात कटकटाने लगते थे और पसीना आने लगता था। यह हालत २३ वर्ष तक रात्रि के समय होती थी। ऐसा कहा जाता है कि अरब के लोगो की अज्ञानता का लाभ उठाने के लिए उन्होंने अपनी इस हालत को "इलहाम" होने की दशा बताया। "कुरआन" मजीद के अनुवादक मुहम्मद फारूख खा के अनुसार–"कुरान २३ वर्ष की अवधि मे आवश्यकतानुसार थोडा थोडा करके विभिन्न अवसरों पर उतरा है। जब कोई "सूरा" उतरती तो अल्लाह का रसूल उसे उसी समय लिख देता और कहता कि उसे अमुक सूरा के बाद और अमुक सूरा से पहले रखा जाये। परन्तु जिस क्रम से कुरान की सूरतो का अवतरण हुआ, उन्हे उस क्रम से सकलित और सगृहीत नही किया गया। जब कुरान की आयतों को पुस्तकाकार देने का प्रबन्ध किया गया कि जिस किसी के पास भी कुरान का थोडा-सा भी हिस्सा लिखित रूप मे मौजूद हो, ले आये। नबी सल्ल० के लिखाये हुए हिस्से भी इकट्ठा कर लिये गये। लिपिबद्ध होने पर उसे हजरत अबूबक्र के पास रख दिया गया। उनके बाद उसे हजरत उमर और उनके बाद उनकी बेटी हजरत हफसा के पास रखवा दी गई।" कुरान में कुल ११४ सूरा या सूरतें हैं। इनमें ८६ मक्की हैं और शेष २८ मदनी। कुरान जो भाग हिजरत (देशत्याग) से पूर्व मक्का में उतरा, वह मक्की और जो हिजरत के बाद (देशत्याग के बाद) मदीना में उतरा वह मदनी कहलाया।

हजरत मुहम्मद को खुदा की ओर से नौ पत्नियां रखने की अनुमति थी। जब उन्हें अधिक की आवश्यकता हुई तो कुरान के लिये आयत उतरी कि पत्नियो से अतिरिक्त औरतें उन्हें लौंडी या बादी का नाम देकर रखी जा सकती हैं। जब युद्ध में जीती गई औरतो पर उनका दिल आ गया तो आयत उतरी कि पैगम्बर को लूट में मिली औरतें पत्नी की तरह प्रयोग करने का अधिकार है। मुहम्मद साहब के पास जैद नाम का एक गुलाम था। कुछ समय बाद उसको स्वतन्त्र करके अपना दत्तक पुत्र बना लिया और अपनी फूफी की बेटी जैनब से शादी करवा दी। जैनब बेहद सुन्दर व कुलीन घर की लडकी थी। लेकिन वह इस विवाह से इनकार कर गई। लेकिन हजरत मुहम्मद ने उसे काबू करने के लिये आयत उतारी कि यह खुदा का आदेश है यदि नहीं मानोगी तो मुसलमान नहीं रहोगी। तब वह सहमत हो गई। फिर आयत उतारी कि जैनब हजरत मुहम्मद की पत्नियो मे सम्मिलित होगी। जैद ने जैनब को तलाक दे दिया और हजरत मुहम्मद ने अपनी फूफी की बेटी जैनब को अपनी पत्नी बना लिया।

एक बार हजरत मुहम्मद की इन नौ दस से अधिक पत्नियो ने अधिक और अच्छे रोटी कपडे की माग को लेकर हडताल कर दी। हडताल एक महीने तक चली। २९ दिन के बाद एक आयत उतारी (जिब्रील आयत पारा २१-२२) "ऐ पैगम्बर ! अपनी पत्नियो से कह दो कि यदि तुम सासारिक जीवन की कामना करती हो और बनाव सिगार करना चाहती हो तो मैं तुमको तलाक दे दू और विदा कर दू।" यह सुनकर सबसे पहले हजरत की सबसे छोटी, पत्नी आयशा ने हथियार डाल दिये। नौकरी जाती देख सभी ने महगाई भत्ते की माग छोड दी और भविष्य मे ऐसी माग न करने की प्रतिज्ञा की। हजरत मुहम्मद ने अपनी पत्नियों से मिलने के लिए क्रमश रात्रिया निश्चित कर रखी थी। उस रात हजरत मुहम्मद को पत्नी हफसा से मिलना था वह किसी कारणवश अपने पिता के घर गई हुई थी उसके अभाव मे उस रात्रि को हजरत मुहम्मद दासी मारिया से मिले और झट कुरान के लिये आयत उतारी–"ऐ नबी मोहम्मद ! क्यो हराम करता है उस वस्तु को जिसे खुदा ने तेरे लिये हलाल (ग्राह्य) कर दिया है।"

उसकी पत्नी हाफसा को पता चल गया और उसने इसे सुनकर दु ख प्रकट किया। हाफसा ने यही भेद आयशा (सबसे छोटी पत्नी का नाम) से कह दिया। तब खुदा ने अपने रसूल को सूचित किया कि तेरा रहस्य प्रकट हो गया।" वस्तुत इस प्रकार की आयतो से बनी है "इलहामी किताब कुरान"

मुस्लिम समाज को ऋषि दयानन्द का उपकार मानना चाहिये कि ऋषि ने मुस्लिम नारी जाति का भी महान् हित किया है। यही कारण है मुस्लिम नारी बेनजीर भुट्टो पूर्व प्रधानमन्त्री पाकिस्तान तथा राष्ट्रपति बगलादेश आदि मुस्लिम महिलाए कुरान के दलदल

से निकलकर स्वतन्त्र वातावरण उच्च सम्मान प्राप्त कर सकी। आगे सुधार करना इन्हीं का कार्य है ये न कर सकें तो इसमें दोष मुस्लिम नारी जाति का है।

प्राचीनकाल में सर्वत्र वैदिक धर्म का प्रचार था बल्कि अरब देशों में वेद अर्थात् वैदिक शिक्षाओं का प्रचलन था क्योंकि कुरान की आयतों को ध्यान से पढकर मनन करने से पता चलता है कि कुछ आयतें ऐसी हैं जिनमें यत्र तत्र वैदिक वचनों की प्रतिछाया मिलती है। यथा सत्यार्थप्रकाश में प्रकाशित एक आयत देखिए–"सब स्तुति परमेश्वर के वास्ते हैं, जो परवरदिगार अर्थात् पालन करनेहारा है, सब संसार का। क्षमा करने वाला दयालु है।। (मं० १। सि० सूर तुल्फातिहा आ० १,२) यद्यपि कुरानी खुदा की क्षमा की विश्वसनीयता सन्दिग्ध है फिर भी उक्त आयत से ऋग्वेद के मन्त्र–"**एक सद्विप्रा बहुधा वदन्त्यग्नि यमं मातरिश्वानमाहुः।**" अर्थात् एक ही परमात्मा की अग्नि, यम, मातरिश्वा आदि अनेक नामों से स्तुति की जाती है। "**य एक इत्त तमु ष्टुहि**" ऋ० अर्थात् वह एक ही है उसी की स्तुति करो। इस प्रकार के वेदमन्त्रों की भावनाए ले तो ली किन्तु उनको चुराकर भी अपने ढग से तोड मरोड दिया, शायद ऐसा वेदज्ञान तथा सस्कृत विद्या से अनभिज्ञ होना ही कारण है।

सत्यार्थप्रकाश में–"मालिक दिन न्याय का। तुझ ही की हम भक्ति करते हैं और तुझ ही से सहाय चाहते हैं। दिखा हमको सीधा रास्ता।" (म० १ सि० १। सू० १ आ० ३-५) मुसलिम सम्प्रदाय मे न्याय का दिन तो "कयामत" शब्द को प्रकट करता है। यह कयामत कब होगी ? इसके लक्षण क्या होगे ? इसका उत्तर भी कुरान ने दिया है, जो उसकी भयानकता तो प्रकट करता है। वहा लिखा है–"जब आख चौंधिया जाये, चाद को ग्रहण लग जावे और चाद व सूरज इकट्ठे कर दिए जाए। जब न चाद रहेगा न सूरज रहेगा तो वह कयामत का दिन न होकर रात होगी। सूरते यासी के–"तब सुर (नरसिघा) मे फूक मारी जायेगी और वे कब्रो मे से निकल निकलकर अपने रब की ओर दौडेगे।" ऐसा ६,७,८,९ तथा ५१ न० आयतो मे वर्णन है। ऋषि दयानन्द कहते हैं–"क्या खुदा नित्य न्याय नहीं करता ? किसी एक दिन न्याय करता है ? इससे तो अन्धेर विदित होता है।" वस्तुत कयामत से सम्बन्धित यह समस्त विवरण मात्र कल्पनाप्रसूत है। इस कुरान मे वर्णित दूषित तथा कल्पनाप्रसूता न्यायव्यवस्था से काफी अच्छी व्यवस्था तो मुस्लिम बादशाह जहागीर और उनसे पूर्व अकबर के शासनकाल मे रही हैं जिसकी चर्चाए आम लोगो मे लोकगाथा अकबर बीरबल किस्सो के रूप मे विख्यात है। लोगो मे चर्चा रहती है कि जहागीर के शासनकाल मे न्यायालय के द्वार सबके लिए हर समय खुले थे। कहते हैं कि उसने अपने महल मे एक घण्टा टाग रखा था। उसमे बधा एक रस्सा महल के बाहर लटकता रहता था। किसी के द्वारा खींचे जाते ही शहशाह जहागीर के महल मे घण्टा बज उठता था और खींचने वाले को तत्काल न्याय मिलता था। इस व्यवस्था का लाभ पीडित पशु तक उठाते थे। अकबर के शासनकाल मे गोहत्या बंद थी अर्थात् गाय जैसे मूक पशु को भी न्याय मिला था। जो आज भी स्वतन्त्र भारत के ५३ वर्ष बाद तक भी प्रधानमन्त्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार "गौ माता" को न्याय नहीं दिलवा रही है और देश में गोहत्या जारी है। इसी प्रकार कुरान मे वर्णित कैसे दयालु और न्यायकारी खुदा हैं, जिसकी प्रजा कयामत के दिन से पहले तक अन्याय और अत्याचारो से पीडित हो सदा कराहती रहती है और "खुदा अदालत बन्द है", "कयामत के दिन खुलेगी', का नोटिस टाग कर टाग पर टाग धरे आलसी बना पडा रहता है और आशा करता है कि प्रजा हर समय उसकी इबादत करती रहे। वस्तुत आज से १४०० वर्ष पूर्व कुरान के रूप मे इलहाम देना पक्षपातपूर्ण है क्योकि हजरत मुहम्मद के कार्यकाल से पहले दुनिया मे आये लोग ईश्वरीय ज्ञान से अर्थात् कुरान से वचित रह गये। स्वय कट्टर ईसाई होते हुए और ईसाइयत के प्रचार प्रसार को अपना मिशन मानने वाले प्रो० मैक्समूलर ने भी इस बात को अपनी पुस्तक–"साईंस और धर्म" मे लिखा–"यदि धरती और आकाश का रचयिता ईश्वर है तो उसके लिए यह अन्यायपूर्ण होगा कि वह मूसा से पूर्व उत्पन्न अपने करोडो पुत्रो को अपने ज्ञान से वंचित रखे।" महर्षि दयानन्द कहते हैं परमात्मा ने अपना ज्ञान सृष्टि के आदि में प्रदान किया और वैदिक (सस्कृत भाषा) मे प्रदान किया जो किसी देश विदेश की विशेष भूमिका न होकर सभी भाषाओ की जननी है। अरबी भाषा एक देश विशेष की भाषा है इससे इनका खुदा पक्षपाती सिद्ध होता है और कुरान ईश्वरीय ज्ञान नहीं हो सकता। इस्लाम का संदेश देने वाला खुदा तो सातवे आसमान पर रहता है और सदेश लेने वाला पैगम्बर मुहम्मद साहब मक्का या मदीना मे रहते थे। इसलिए खुदा को अपनी बात मुहम्मद साहब तक पहुचाने के लिए फरिश्ते (जिबरील) की आवश्यकता पडती थी।

आज की वैज्ञानिक उन्नति ने कुरान में वर्णित सातवें आसमान की बात को तो चन्द्रमा तक मनुष्य भेजकर झुठला दिया है और पुराणों मे वर्णित बैतरणी नदी को भी असत्य सिद्ध कर दिया है ऋषि दयानन्द वेद के आधार पर पहले ही सत्यार्थप्रकाश में कह चुके हैं। भाषा के सम्बन्ध में वर्तमान समय में एक विषय है भाषा विज्ञान। उसके जनक बॉप ने लिखा था–"मैं नहीं मानता कि ग्रीक, लैटिन और दूसरी यूरोपीय भाषाए सस्कृत से निकली हैं इसकी अपेक्षा में यह मानना अधिक उचित समझता हू कि ये सभी भाषाए किसी एक ही भाषा के विविध रूप हैं जिसे संस्कृत ने अधिक अविकल रूप में सुरक्षित रखा है।" बात वही है ये "वैदिक भाषा" की ओर सकेत कर रहे हैं। जब आदि सृष्टि की उत्पत्ति त्रिविष्टप (तिब्बत क्षेत्र) में हुई तब वैदिक भाषा ही थी। लौकिक संस्कृत तो बाद की भाषा है जब यह सस्कृतभाषा बिगड जाती है तब इसका रूप अपभ्रश भी तो हो जाता है। वस्तुत सभी भाषा विज्ञान विशेषज्ञ अपने-अपने ढग से महर्षि की इस बात से सहमत नजर आते हैं कि–"परमेश्वर ने सृष्टिस्थ सब देशस्थ मनुष्यो पर न्याय दृष्टि से सब देश-भाषाओ से विलक्षण सस्कृत भाषा कि जो सब देशवालो के लिए एक से परिश्रम से विदित होती है उसी मे वेदो का प्रकाश किया है।" अत देश विदेश अरबी भाषा मे "कुरान" का ज्ञान देना खुदा का पक्षपात है। यही नहीं, कुरान में सात आसमान लिखने के अतिरिक्त फरिश्तो की शक्ल लिखी है जो वहा रहते हैं प्रथम आसमान वाले फरिश्ते गायो की शक्ल के हैं। दूसरे आसमान वाले बाज की शक्ल के हैं। तीसरे आसमान वाले गिद्ध की शक्ल के हैं। चौथे आसमान वाले घोडो की शक्ल के हैं। पाचवे आसमान पर रहने वाले फरिश्ते खूबसूरत लडके की शक्ल के हैं। छठे आसमान पर रहने वाले फरिश्ते गिलमान की शक्ल के और सातवा आसमानी फरिश्ता नूर का और मनुष्य की शक्ल का है। सत्यार्थप्रकाश को पढकर ही इस पर कुरान के भाष्यकार मुहम्मद फारूख खा ने टिप्पणी करते हुए लिखा है अर्थात् सशोधन किया है–"सात आकाश की वास्तविकता क्या है ? यह निश्चित करना कठिन है। बस इतना जान लेना चाहिए कि ये इसका तात्पर्य या तो यह है कि पृथिवी के परे जितनी सृष्टि है, अल्लाह ने उसे सात स्थायी वर्गों में बाट दिया है या फिर इसका तात्पर्य यह हो कि हमारी पृथिवी सृष्टि के जिस क्षेत्र में स्थित है वह सात वर्गो मे बटा है। हर युग मे आकाश या आसमान के बारे में मनुष्य के अपने अनुमान और अन्दाजे के मुताबिक भिन्न-भिन्न विचार पाये जाते रहे हैं उनमे से किसी के अनुसार इन शब्दो का अर्थ निकाला सही न होगा।"

उक्त टिप्पणी से यह सिद्ध होता है कि ऋषि दयानन्द के वैदिक चिन्तन के बाद मुस्लिम विद्वानों के विचारो मे बडा भाई परिवर्तन आ रहा है। एक समय आयेगा वे वेदो की बातो को ही स्वीकार करके इस तथाकथित धर्म ग्रन्थ "कुरान" को ईश्वरीय ज्ञान न मानकर केवल हजरत मुहम्मद के विचारो की ही पुस्तक मान लेगे। क्योकि उक्त टिप्पणी मे यह तो मान ही लिया कि आकाश सात नहीं हो सकते। आकाश तो एक ही है। जब आसमान सात नहीं रहे तो फरिश्ता जिब्रील खुदा की पुस्तक कुरान को कहा रखता था कहा पढता था कहा रहता था और फिर कैसे एक-एक आयत लाकर हजरत मुहम्मद को देता था क्या यह समस्त प्रपच आवश्यकतानुसार हजरत मुहम्मद की उपज नहीं है ? इस पर भी मुस्लिम विद्वानो को विचार करना पडेगा।

महर्षि द्वारा कुरान की समीक्षा सत्यासत्य निर्णयार्थ ही है। इसी के कारण मुस्लिम विद्वान् महर्षि के दिखाए सत्य मार्ग की ओर चिन्तन करने के लिए आगे बढ रहे हैं यह खुशी की बात है।

आर्यसमाज बडा बाजार 'शहर' सोनीपत का चुनाव

प्रधान–श्री सत्यप्रकाश सुखीजा, उपप्रधान–श्री नित्यप्रिय आर्य मन्त्री–श्री सुदर्शन आर्य, उपमन्त्री–श्री वेदप्रकाश आर्य, कोषाध्यक्ष–श्री कवरभान बतरा, पुस्तकालाध्यक्ष–श्री अमरसिंह वर्मा, लेखा परीक्षक–श्री धर्मपाल आर्य।

आर्यसमाज भानगढ़ हनुमानगढ़ (राज०) का चुनाव

प्रधान–सूबेदार रणधीर धान्दू, उपप्रधान–श्री धर्मसिंह, सयोजक–श्री रामसिंह, महामन्त्री–श्री कुरडाराम सचिव–श्री सुरेन्द्रसिंह, कोषाध्यक्ष–श्री रणधीरसिंह।

वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज भूरथला तह० कोसली जिला रेवाडी का वार्षिक उत्सव स्वामी जीवानन्द नैष्ठि अध्यक्ष वेदप्रचार मण्डल जिला रेवाडी की अध्यक्षता में दिनाक ८-६-०२ से ९-६-०२ तक बडी धूमधाम से मनाया गया जिसमें मास्टर श्री गणपतसिंह ने मच सचालन किया। दिनाक ८-६-०२ को ७-३० बजे हवन स्वामी शरणानन्द आश्रम दडौली द्वारा किया गया तथा उत्सव की कार्यवाही आरम्भ हुई। स्वामी जी ने अपने प्रवचनो मे गऊ की महत्ता बताई व प्रत्येक से एक गऊ रखने का आग्रह किया। इस उत्सव में श्री सत्यव्रत आर्य उपमन्त्री आर्यसमाज भूरथला ने बढचढकर भाग लिया। इस उत्सव में श्री वैद्य नन्दराम बलाहा, प० चिरजीलाल आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा रोहतक, श्री रामनिवास पानीपत, श्री हरिसिह तिनकी रूडी राजस्थान भजनोपदेशक तथा बहिन सुमित्रा वर्मा भजनोपदेशिका ने भाग लिया। इन्होंने महर्षि दयानन्द के बताये गए मार्गो पर चलने के लिए आह्वान किया। नारी शिक्षा, दहेज आदि के विषय मे बताया। मनुष्यो को सन्मार्ग पर चलने के लिए उत्साहित किया। अन्त मे दिनाक ९-६-०२ की रात को श्री दीनदयाल सुधाकर अध्यक्ष के द्वारा शातिपाठ करके उत्सव सम्पन्न हुआ।

वेदप्रचार मण्डल जिला रेवाड़ी का चुनाव सम्पन्न

अध्यक्ष–श्री जीवानन्द नैष्ठिक, उपप्रधान–सर्वश्री कैप्टन मातूराम, श्री **यज्ञदेव शास्त्री**, श्री दयाराम मास्टर, मन्त्री–श्री मा० गणपतसिह, कोषाध्यक्ष–श्री सूबेदार **श्री रामपाल**, प्रचारमन्त्री–पुष्पा शास्त्री, दीनदयाल सुधाकर, निरीक्षक–श्री यज्ञदेव शास्त्री, सरक्षक–स्वामी शरणाननद, प० ताराचन्द, श्री अमरसिह।

सदाचार एवं व्यायामप्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

आर्यसमाज मातनहेल (झज्जर) द्वारा आयोजित सात दिवसीय ८-६-२००२ से १४-६-२००२ सदाचार एव व्यायाम प्रशिक्षण शिविर का समापन समारोह दिनाक १४-६-०२ को प्रात ८-०० बजे प्रारम्भ कर दोपहर १ ३० बजे शाति पाठ के साथ सम्पन्न हुआ।

शिविर का सचालन श्री मदनलाल शास्त्री ने किया जिसमे उन्होने ९२ बच्चो को प्रतिदिन दैनिक यज्ञ-सत्सग, भजन, वेद-उपनिषद्, रामायण-महाभारत, गीता, सन्त-महात्माओं व समाज सुधारको के जीवनदर्शन से चरित्र निर्माण, आत्मिक व बौद्धिक विकास की शिक्षा दी। गुरुकुल झज्जर के ब्र० प्रतापसिह व दिनेशकुमार ने युवको को योगासन, दण्ड-बैठक, स्तूप निर्माण, लाठी सचालन, जूडो-कराटे व अन्य शारीरिक विकास की शिक्षाए दीं। सेवा निवृत्त कैप्टन हरिसिह दहिया ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे समाज की कुरीतिया दूर करने मे प्राणो की बलि देनेवाले महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित आर्यसमाज की भूरि-भूरि प्रशसा की तथा शिविर के उत्कृष्ट छात्रों को पुरस्कृत किया। प० चिरजीलाल व ईश्वरसिह तूफान की भजन मण्डलियो ने भजनो का रोचक कार्यक्रम पेश किया। वेदप्रचार मण्डल के प्रधान डॉ० विजयकुमार आर्य व आर्यसमाज मातनहेल के मन्त्री श्री बलदेवसिह ने तन-मन- धन से सहयोग दिया। डॉ० राजेन्द्र ने प्रबन्धक के रूप में मदद की। शिविर सचालक मदनलाल शास्त्री ने ग्रामवासियो के भरपूर सहयोग का धन्यवाद किया।

जीवन उपयोगी सूत्र

१ नशे और विषयो मे सलिप्त आत्मा कभी भी आध्यात्मिक उन्नति नहीं कर सकती।
२ जिस प्रकार बादल के हटते ही सूर्य दिखाई देता है उसी तरह अहकार से शून्य होते ही परमात्मा दिखाई देने लगता है।
३ स्वच्छ जगह मे शान्ति से रहने वाले देवता कहलाते है।
४ प्रेम तो मन से ही होता है बोलकर तो केवल उसका इजहार किया जाता है।
५ विद्या से मनुष्य विद्वान्, सदाचार व सयम से चरित्रवान् और त्याग से सदा महान् बनता है।
६ मनुष्य यदि खुद ही चरित्रहीन होगा तो वह दूसरों को चरित्रवान् बनने की क्या खाक शिक्षा देगा।
७ मनुष्य यदि धन का सदुपयोग नहीं करेगा तो वह काला साप बनकर उसे डस लेगा।
८ विद्यालय मे आकर भी यदि सुधार नहीं हुआ तो उसका सुधार फिर कहीं नहीं हो सकता।
९ हर मनुष्य अपने अनुभवो की एक चलती फिरती पुस्तक है।
१० अग्नि मे यदि दाहकता नहीं है तो वह अग्नि नहीं, चीनी में यदि मिठास नहीं है तो वह चीनी नहीं, इसी प्रकार मनुष्य मे यदि मानवता नहीं है तो वह मनुष्य नहीं है।

प्रेषक–**आर्य इन्द्रसिह वर्मा**, एम०कॉम०, एम०ए० इग्लिश, बी एड, झाडौदा कला, नई दिल्ली-११००७२

आर्यसमाज के उत्सवों की सूची

१	आर्यसमाज गोहाना मण्डी जिला सोनीपत	२१ से २३ जून २००२
२	आर्यसमाज न्यात जिला सोनीपत	२५ से २६ जून, २००२
३	आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ जिला झज्जर (नि शुल्क ध्यानयोग-वैदिक दम्पती निर्माण सस्कार प्रशिक्षण शिविर, चतुर्वेद शतक-यज्ञ प्राकृतिक चिकित्सा शिविर)	२३ से ३० जून २००२

–सुखदेव शास्त्री, सहायक वेदप्रचाराधिष्ठाता

येन-केन-प्रकारेण धनोपार्जन ही साध्य है आज

आज मानें या न मानें, पर यह अक्षरश: सत्य है कि समाजवाद या समतावाद भारत में कार्ल मार्क्स से लगभग तीन हजार वर्ष पूर्व ही अस्तित्व में था। जमाखोर तथा चोरबाजारिये तब भी थे, किन्तु वैदिक काल में उनके लिए कठोर सजा का प्रावधान था। उनकी सम्पत्ति को जब्त कर लिया जाता था। जब संपदा का असमान वितरण होता है तब उससे हमेशा असतोष तथा वैमनस्य पैदा होता है और यह उत्पन्न होता है पूजीपतियो व श्रमजीवियो के बीच। यह वर्ग-सघर्ष सदा रहा हे। इतना अवश्य है कि यह सघर्ष आज काफी आगे जा चुका है।

इस असमान वितरण से उपजे सघर्ष को समाप्त करने के लिए हमारे प्राचीन मनस्वी ऋषियों-अर्थविशेषज्ञो ने दो प्रमुख उपायों का उल्लेख किया है। पहला पूजीपतियो का आध्यात्मीकरण (आम अर्थ में धर्म नहीं) जिससे अपनी अतिरिक्त सपदा को जरूरतमदों के हेतु स्वत प्रेरणा से त्याग दे और दूसरा, जरूरतमदों मे न्यायोचित वितरण के लिए कृपण पूंजीपतियो की सम्पत्ति का राज्य द्वारा बलात् अधिग्रहण। यदि लोग पहले उपाय को इस्तेमाल करे तो सम्पत्ति के असमान वितरण की समस्या समाप्त नहीं, तो कम तो हो ही सकती है। यह उल्लेख श्रीमद्भागवत के सातवें स्कंध मे चौदहवे अध्याय के पाचवें श्लोक में मिलता है। इस अध्याय मे राजा युधिष्ठिर तथा देवर्षि नारद के बीच वार्तालाप का विवरण है। देवर्षि ने महाराजा युधिष्ठिर से कहा कि हे राजन, मैं तुम्हें जो अर्थ-सम्बन्धी सिद्धान्त बता रहा हू यह वह है जो प्राचीन ऋषि अजगर ने हिरण्यकश्यप के पुत्र प्रह्लाद को सिखाया था। इस श्लोक में यह सिद्धान्त प्रतिपादित है–

यावद् भ्रियते जठरं तावत्स्वत्वं हि देहिनाम्।
अधिक योभिमन्येत स स्तेनो दण्डमर्हति।।

अर्थात् मनुष्य केवल उतने का ही स्वामी है जितने से उसकी भूख मिट जाए। यदि वह इससे अधिक की इच्छा करता है तो वह चोर और वह दण्डनीय है। बहुत काफी पहले सुप्रसिद्ध संन्यासी-पत्रकार भिक्षु चमनलाल ने ऐसा ही एक श्लोक सुनाया था, जो सुभाषित भाण्डागार का है–

न बिना येन वर्तेत नरा: वाछ्तु नाम तत्।
ततोऽधिकार्थप्रणयी पृष्टो दद्यात् किमुत्तरम्।।

मनुष्य जिस वस्तु के बिना जीवित नहीं रह सकता, उसकी इच्छा कर सकता है, परन्तु यदि उससे यह पूछा जाए कि वह अधिक की प्राप्ति क्यो करना चाहता है तो वह क्या उत्तर देगा ? मगध-अधिपति नद को उनके ही आश्रय मे रहने वाले कवि-दार्शनिक ने अधिक स्पष्टता के साथ समझाया है। राजा रोज उससे पूछता था कि क्या तुमने भोजन कर लिया है। उसका जवाब 'नहीं' में होता था। राजा पूछता, 'क्यों नहीं ?' इस पर उसने एक दिन उत्तर दिया–

स्वच्छंदतो निजगृहे स्व कृषीयमन्नम् पत्नीकराग्रराचत द्विजमुक्तशेषम्।
भुञ्जति ये सुरपितृनपि तर्पयित्वा ते भुक्तवन्त इति नद मया न भुक्त।।

जो अपने ही घर में अपनी मेहनत से उगाए अन्न को जिसे पत्नी ने अपने हाथों से पकाया हो, ब्राह्मणों को खिलाकर, देवताओ की भेंट चढाकर और वृद्ध माता-पिता व दूसरे परिजनो को खिलाकर बाद मे भोजन ग्रहण करता है, उसी के बारे मे कह सकते हैं कि उसने भोजन किया है। हे नद, मैंने ऐसा नहीं किया, इसलिए मैं कहता हू कि मैंने भोजन नहीं किया। यहां पर यह लिखना भी जरूरी है कि गृहस्थ को धन या अन्न सग्रह करने का अधिकार है। लेकिन कितना अधिकार है इस बारे मे अलग-अलग मत हैं। मनुस्मृति कहती है, 'वह या तो अपने पास इतना खाद्यान्न रखे जितने से भडार या अनाज रखने का कोठार या बर्तन भर जाए, या वह तीन दिन के गुजारे लायक अनाज रखे या उतना अनाज रखे जो उसी दिन काम आ सके, कल के लिए नहीं।' इस खण्ड पर टीका करते हुए कुल्लूक भट्ट ने लिखा है–'भडार का अर्थ है इतना स्थान जितने मे तीन वर्ष के लिए अन्न रखा जा सके।' नारद के अनुसार 'जितना एक वर्ष, या छह मास या तीन मास के लिए पर्याप्त हो।' मनु ने कहा है कि जिस गृहस्थ के पास अपने परिवार की जरूरतो से ज्यादा हो, उसे इस अलावा सम्पत्ति का सुपात्रों मे वितरण कर देना चाहिए। इस नियम की अवहेलना करने वाला धर्मभ्रष्ट है और उसकी सम्पत्ति जब्त कर लेनी चाहिए। नियम यह है कि राजा को दुष्टों की सम्पत्ति छीनकर भले लोगों में वितरित कर देनी चाहिए। आज पिछले कुछ दर्शको से देश में धन-सम्पत्ति के सग्रह में लोग जी-जान से जुटे हैं और सच्चाई है कि धन-सचय की कोई सीमा नहीं रही है। पंडित व्याख्याता, संत, साधु-सन्यासी तक प्रवचन कर साधन सम्पन्न तथाकथित आश्रमों का निर्माण कर रहे हैं। इनके प्रवचनों मे दरिद्रनारायण का उल्लेख कथा में पैबंद के लिए भले ही किया जाए, सुदामा का नाम लिया जाए, परन्तु देश के करोड़ों लाचार लोगों की सुध लेने वाला कोई नहीं। धनवान को लक्ष्मी खूब मोटा बना रही है। गरीब की झोपडी में तो न लक्ष्मी झांकती है, और न ही लक्ष्मीवान को झांकने की फुर्सत है। लक्ष्मी धन का वितरण क्यों होने देगी। काश ! दीपक की रोशनी गरीबों के घरों में भी फैलती। मोदकों की सुगन्ध इनको भी महसूस होती। ये भी दीप-पूजा की घंटी की ध्वनि सुन पाते। समाजवाद या समतामूलक समाज कायम हो पाएगा। त्योहार, खासकर दीप-पूजा या पर्व तभी मनाना बेहतर व अवसर के अनुरूप होगा।

–केशवानन्द ममगाई
दैनिक हरिभूमि से साभार

आर्य-संस्कार

धैर्य की महिमा

धैर्य धृति "धृ" धारणे धातु से बना है। इसी धातु से धर्म बना है। धर्म का अर्थ है जो धारण करे। परमात्मा ससार को धारण कर रहा है। हमारी आत्मा हमारे शरीर को धारण कर रही है। अत धर्म का अर्थ आत्मा का परमात्मा को पाना है। धैर्य का अर्थ है किसी वस्तु को प्राप्त करने के लिए अपने में पात्रता पैदा करना और फल की प्रतीक्षा करना। पात्रता पैदा किए बगैर फल को चाहना जल्दबाजी है, अधैर्य है।

धैर्यपूर्वक कार्य करने से आत्मा से सम्बन्ध जुडता है। शक्ति अधिक व्यय नहीं होती, कार्य सही होता है और जीवन का हम अधिक लाभ उठा सकते हैं। (To get the most out of life pedal is slowly) खरगोश और कछुए की कहानी प्रसिद्ध है। खरगोश तेजी से दौडा परन्तु लक्ष्य तक पहुंच न सका। कछुआ धीरे-धीरे चलता रहा और लक्ष्य तक पहुच गया। जल्दबाजी करने से हमारा सम्बन्ध आत्मा से टूटकर मन के साथ हो जाता है। जल्दबाजी से शक्ति अधिक व्यय होती है और आयु घटती है।

केला और पपीता के वृक्षों में फल जल्द आते हैं पर इसकी आयु तीन या चार साल की होती है। आम के वृक्ष देर से फल देते हैं। पीपल और बरगद के वृक्ष की आयु दो हजार वर्ष तक की होती है। इन वृक्षों के नीचे बैठना आध्यात्मिक दृष्टि से बडा लाभप्रद है। संस्कृत के एक श्लोक में कहा गया कि-विपत्ति मे धैर्य रखना चाहिए। धैर्य केवल विपत्ति मे ही नहीं किन्तु जीवन की प्रत्येक साधारण घटना मे भी होना चाहिए।

आज का जीवन अधैर्य है। अपनी सन्तान का मनुष्य जल्दी विवाह करना चाहता है। एक बार विवाह सस्कार के अवसर पर पुरोहित को कहा गया कि विवाह जल्दी करा दो। पुरोहित ने कहा कि मनुस्मृति में आठ प्रकार के विवाह बताये हैं। उनमे राक्षस विवाह सबसे जल्दी होता है, वह करवा दू ? प्राचीनकाल में आठ वर्ष की आयु मे बालक को गुरुकुल मे शिक्षा के लिए भेजा जाता था। सात वर्ष की आयु तक बच्चे के शरीर का बीज रूप मे निर्माण होता है। आयु के पहले सात साल मे जो बालक स्वस्थ और प्रसन्न रहेगा वह जीवन भर स्वस्थ और प्रसन्न रहेगा। आज अधैर्य इतना बढ गया है कि तीन वर्ष की आयु मे ही हम बच्चो को स्कूल भेज देते हैं। इससे बच्चे का सारा जीवन रुग्ण हो जाता है। आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति में रोग को दूर करने मे कुछ समय लगता है। उसमे शरीर का मल बाहर निकाला जाता है। परन्तु एलोपैथी मे शरीर के मल को बाहर निकालकर नहीं अपितु वहीं सुखाकर रोगी को तुरन्त ठीक कर दिया जाता है। इससे शरीर मे मल एकत्र होता रहता है और वह दूसरे रोग के रूप में प्रकट होता है।

साहित्य मे जल्दबाजी के कारण महाकाव्य की अपेक्षा मुक्तक (कविता) का महत्त्व बढा। उपन्यास का स्थान कहानी ने ले लिया। हास्य-रस के नाटको की अपेक्षा चुटकुला लोकप्रिय होगया। यूरोप मे चलचित्र सवा या डेढ घण्टे से अधिक समय के नहीं होते। भारतीय चलचित्र कम से कम ढाई घण्टे के होते हैं। राजनीति और युद्ध मे भी धैर्यशाली व्यक्ति ही सफल होता है। धार्मिक स्थानो मे भी लोग जल्दबाजी मे आते हैं। जल्दबाजी या बैचेनी सत्य के बीच मे एक दीवार बन जाती है।

जल्दबाज आदमी कुछ ग्रहण नहीं कर सकता। बुरे काम जल्दबाजी मे ग्रहण किए जाते हैं ताकि किसी को पता न लग जाए। इसलिए कि वे अधर्म हैं। जैसे-कमरे को झाडो तो धूल उडती है। यदि पुराने सस्कार अधिक मात्रा मे सामने आ जाये तो मनुष्य पागल जैसा भी हो सकता है। इसलिए साधना मे धैर्य अत्यन्त आवश्यक है-

मूरख मन धीरज मत खोए, सहज पके सो मीठा होए।
व्याकुलता तज क्यों नहीं सोए, सहज पके सो मीठा होए।।

माली बीज तो पहले बोता, फल मौसम आने पर होता।
बिन मतलब का बोझा ढोए, सहज पके सो मीठा होए।।

बूँद-बूँद से घट भरता है, लेकिन वक्त लगा करता है।
यह सच है तो फिर क्यो रोए, सहज पके सो मीठा होए।।

नर मेहनत हरदम करता जा, आलस को तज, श्रम करता जा।
परिश्रम जल सबके मन धोए, सहज पके सो मीठा होए।।

निज पथ पर तुम न घबराना, पग-पग अविचल बढ़ते जाना।
पथिक असफल रहा नहीं कोए, सहज पके सो मीठा होए।।

-आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री, वेदप्रवक्ता

आर्यसमाज बाहरी रिंगरोड, विकासपुरी, नई दिल्ली। दूर० ५५१६९९७

हरयाणा राज्य गोशाला संघ द्वारा १ जुलाई से गोरक्षा यात्रा जीन्द से आरम्भ

जहा गोमाता के कारण दूध दही का खाणा नाम से पुकारे जाने वाले हरयाणा में आज ८५ हजार गाय गन्दगी में मुंह मारती हुई हत्ये का शिकार के रूप मे घूम रही हैं। हरयाणा के माथे पर यह बहुत बडा कलक है। प्रत्येक हरयाणावासी एक पाले गाय बचा ले। यही इस का समाधान है। इस उद्देश्य को क्रियान्वित करने हेतु हरयाणा राज्य गोशाला सघ ने १ जुलाई से जीन्द से रोहतक तथा रोहतक से पानीपत तक गोरक्षा यात्रा निकालने का निश्चय किया है। पी एफ ए, बजरग दल, शिव सेना, साधु मण्डल आदि सभी गोभक्त संगठन, हरयाणा सर्वखाप पचायत, सभी गोशालाए, गुरुकुल तथा आर्यसमाजों से भाग लेने के लिए प्रार्थना है। पहले दो वर्षों में पलवल जैसी विशाल पचायत, पुन्हाना गोरक्षा सम्मेलन, अनेक सभाओ, जलसो द्वारा हरयाणा मे विशेष जागृति आई है। यात्रा के कार्यक्रम को सफल बना प्रत्येक घर मे एक गाय पालो का उद्देश्य पूरा कर ८५ हजार गायो को आवारा नाम से घूमने के काले धब्बे को हरयाणा के नक्शे से समाप्त करे।

निवेदक हरयाणा राज्य गोशाला सघ

आर्यसमाज खन्ना कालोनी (लाजपत नगर) में वार्षिकोत्सव एवं ऋग्वेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति

आर्यसमाज खन्ना कालोनी (लाजपत नगर) सोनीपत का वार्षिकोत्सव एवम् ऋग्वेद पारायण यज्ञ पूज्यपाद प्रणव जी शास्त्री के ब्रह्मत्व मे २७-५-२००२ से ०२-६-२००२ तक सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। समापन समारोह की अध्यक्षता श्री वेदपाल आर्य आर्य केन्द्रीय सभा सोनीपत के प्रधान ने की। सप्ताह भर चलने वाले इस समारोह मे आर्य कन्या गुरुकुल नरेला की आर्य वीरागनाओ ने सस्वर वेदपाठ किया। समारोह मे प्रणव जी शास्त्री (ब्रह्मा), श्री महावीर जी मुमुक्षु दर्शनाचार्य मुरादाबाद, श्री दिनेशदत्त जी एवम् श्री भीष्म जी आदि विद्वानो के सारगर्भित व्याख्यान तथा भजन हुए। स्वामी दयानन्द सरस्वती के उपकारो की चर्चा की गई। यज्ञ सयोजक श्री सुखप्रिय जी शास्त्री एवम् मच सचालन आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा हरयाणा के उपमन्त्री ने किया। इस सारे कार्यक्रम में श्री दयालचन्द आर्य (प्रधान), श्री सुरेन्द्र खुराना (मत्री), श्री सेवाराम मन्चन्दा (कोषाध्यक्ष), श्रीमती विशन देवी कुकडेजा (प्रधान), श्रीमती सन्तोष वर्मा (मन्त्राणी), श्री रामफल मान (उपप्रधान) एव अन्य सदस्यो का विशेष सहयोग रहा है।

-हरिचन्द स्नेही, प्रान्तीय वैदिक बौद्धिक अध्यक्ष, आर्यवीर दल हरयाणा सोनीपत

वेद में त्र्यम्बकं यजामहे

—स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती, आर्ष गुरुकुल कालवा

सुगन्धिवाले पुष्टिवर्धक त्र्यम्बक परमेश्वर का हम यजन करते हैं। हे प्रभो ! मैं खरबूजे के समान मृत्यु के बन्धन से मुक्त होऊँ, अमृत से नहीं। सु विस्तृत पुण्यकीर्ति वाले सुविस्तृत उत्तम यशवाले- पुण्यकर्मो की सुगन्ध से युक्त पुष्टिवर्धक आत्मा शरीर एवं धन आदि विषयक पुष्टि को बढाने वाले, तीनो ज्ञान कर्म-उपासनामय वेदो के उपदेश, तीनों स्थूल-सूक्ष्म-कारण शरीरों के अम्बा-अम्बक मातृ-पितृ तुल्य पालक-पोषक, तीनो लोकों के रक्षक परमेश्वर का हम यजन करते हैं, उसकी हम पूजा करते हैं, उसकी हम आत्म समर्पणपूर्वक उपासना करते हैं। हे प्रभो ! मैं खरबूजे के फल के समान मृत्यु के बन्धन से मुक्त होऊ अमृत से नहीं, मोक्षानन्द से नहीं। ऋग्वेद मे मन्त्र आया है—

त्र्यम्बक यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वाकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

(ऋ० ७।५९।१२)

अर्थ—(त्र्यम्बकम्) तीनोकाल मे एक रस ज्ञानयुक्त परमेश्वर की (यजामहे) नित्य स्तुति करे। (सुगन्धिम्) शुद्धगन्ध कीर्तियुक्त (पुष्टिवर्धनम्) शरीर आत्मा और समाज के बल को बढाने वाला (उर्वारुकमिव) पके हुए खरबूजा की भाँति (बन्धनात्) जैसे लता के बन्धन से छूटकर अमृत तुल्य होता है वैसे हम लोग भी (मृत्यो) प्राण वा शरीर के वियोग से (मुक्षीय) छूट जावे परन्तु (मा अमृतात्) परन्तु मोक्षरूप आनन्द प्राप्त करे उससे कभी पृथक् तथा श्रद्धारहित न हो, मोक्ष के सुख और सत्यकर्म के फल से कभी पृथक् न हों।

ईश्वर को जान सदा उसकी आज्ञा का पालन करने मे ही कल्याण होगा इसी से जीवो का लोक तथा परलोक सुधार हो सकता है। पुण्यकर्मो की सुगन्ध से युक्त, पुष्टिकारक रुद्र परमेश्वर की हम पूजा करते हैं। हे प्रभो ! खरबूजा जैसे पकने पर लता के बन्धन से छूट जाता है, पृथक् हो जाता है, वसे ही मैं भी मृत्यु रूप बन्धन से मुक्त हो जाऊ, अमृत से नहीं-मोक्षानन्द से नहीं। वह प्रभु 'त्र्यम्बक' है ज्ञान-कर्म-उपासना रूप तीनो वेदो का उपदेष्टा है तीनों लोको की अम्बा और अम्बक अर्थात् माता-पिता के समान जनक है, उत्पादक है, पालक और पोषक है। वास्तव मे जैसे जननी जनक को, माता-पिता को अपने उत्पन्न किये हुए परिवार रूप ससार के लालन-पालन मे, पालन-पोषण मे, विद्या-सुशिक्षा से निर्माण करने में रुचि होती है, वही रुचि-वही नहीं वरन् उससे भी अधिक रुचि उस त्र्यम्बक प्रभु को इस अपने उत्पन्न किये हुए ससार मे होती है। ये माता-पिता तो कभी अपने उत्पन्न किये हुए परिवार रूप ससार से किन्हीं कारणो वश कभी निराश और हताश भी हो जाते हैं, परन्तु त्र्यम्बक प्रभु इतना विशाल, इतना गम्भीर, इतना उदार हृदय रखता है कि वह कभी इससे उदास नहीं होता, निराश और हताश नहीं होता। वह सुगन्धिवाला है, पुण्यकीर्ति वाला है, उत्तम पुण्यकर्मो की गन्ध-सुगन्ध, कीर्ति वाला है। उसके दिव्य उत्तम कर्मो के कारणो से सर्वत्र उसका यश फैला हुआ है। तभी तो कहा गया है **"विष्णो कर्माणि पश्यत"** हे मनुष्यो ! तुम उस प्रभु के कर्मो को देखो। यदि हम उसकी श्रद्धा-भक्ति से उपासना करते रहेगे तो हम उसके समान ज्ञान-कर्म-उपासना के उपदेष्टा बन जायेगे, उसकी तरह ससार के सब मनुष्यो को सन्तान जानकर प्यार और दुलार देते रहेगे। इस प्रकार करते हुए उस प्यारे और सब जग से न्यारे प्रभु के समान हम भी पुण्य कर्मो की सुगन्ध से चहुँ ओर के वातावरण को सुगन्धमय यशोमय कर सकेगे। वह प्रभु हमारी पुष्टि को शारीरिक मानसिक और आत्मिक पुष्टिसमृद्धि को सब प्रकार से बढानेवाला है। ऐसे त्र्यम्बक प्रभु की हम हृदय से पूजा करते हैं। खरबूजा जैसे धरती माता से स्नेह और सूर्य से तेजोमय प्रकाश पाकर पुष्ट मिष्ट और सुगन्धित होकर अर्थात् पूर्ण रूप से पककर जब अपनी महक से दिशाओ को सुगन्धित कर देता है तब वह सहज ही अर्थात् बिना किसी आयास और प्रयास के ही इस लता के बन्धन से मुक्त हो जाता है, पृथक् हो जाता है। ऐसे ही हम भी वेद माता के स्नेह और वरदान पाकर उस त्र्यम्बक प्रभु की शरण में श्रद्धापूर्वक बैठकर आत्मसमर्पणपूर्वक जब अनन्य भाव से उसका ध्यान करेगे तो उसके दिव्य तेजोमय प्रकाश से हम भी पककर अर्थात् मिष्ट-पुष्ट और सुगन्धित होकर सहज ही दिग्-दिगन्त को अपनी सुगन्ध से सुगन्धमय करेगे। फिर सहज ही हम जन्म-मरण के बन्धन से मुक्त होकर परमानन्द मोक्ष को पा जायेंगे।

दो मुक्तक

—नाज सोनीपती

१
आम लोगो का आम है जीना।
खास लोगो का काम है जीना।।
जीनेवाले तो मर नहीं सकते।
आरजुएं¹-आवाम² है, जीना।।

२
जिन्दगी का प्याम¹ है जीना।
मौत का भी मकाम² है जीना।।
जीने-मरने का ढब न हो, जिनको।
उनका जीना हराम है जीना।।

१ इच्छा २ साधारण लोग। — १ स्थान, २ सन्देश।

ईश्वरभक्ति में अनेक मत क्यों ?

प्रिय सज्जनो ! आज देश में ईश्वरभक्ति और पूजा पद्धति मे हजारों मत धर्म के नाम पर बने हुए हैं सबका मत व धर्म एक कैसे हो ये सभी मतों के विद्वानों को जानने का विषय है वेदादि सत्य शास्त्रो मे अनेक मत होने का कारण ईश्वर, जीव, प्रकृति के सत्यस्वरूप को ठीक प्रकार से जानना बताया है क्योंकि जब तक किसी वस्तु का प्रत्यक्ष निर्भ्रम ज्ञान नहीं होता अर्थात् जो वस्तु जैसी है उसको वैसी ही जब तक नहीं जाना जाता तब तक उस वस्तु के विषय में अनुमान अन्दाजे के अनेक मत होते हैं और जानने पर जाननेवालो के एक मत होते हैं जैसे ही ईश्वर को प्रत्यक्षनिर्भ्रम ज्ञान से जानने वालों का एक ही मत होता है ईश्वर को पाच प्रकार से जाने बिना निर्भ्रम ज्ञान नहीं होता।

१ ईश्वर की सत्ता का ज्ञान, २ ईश्वर के स्वरूप का ज्ञान ३ ईश्वर के नामों का ज्ञान, ४ ईश्वर के प्रत्यक्ष दर्शन का ज्ञान, ५ ईश्वर की उपाना का ज्ञान अत बिना ईश्वर के जाने ईश्वर स्तुति, प्रार्थना, उपासना भी ठीक नहीं होती इसी कारण से आज कितने ही विद्वान् सत्यासत्य को जानने की कसौटी तथा ईश्वर, जीव, प्रकृति के सत्यस्वरूप को न जानकर ईश्वर और ईश्वर की भक्ति का उल्टा (गलत) प्रचार कर रहे हैं। ईश्वर का शूकरावतार, मत्स्यावतार, कच्छावतार आदि बता रहे हैं। मनुष्य अज्ञान के अन्धेरे में इतने बडे झूठ को सत्य मान रहे हैं क्योकि असल के जाने बिना नकल की पहचान नहीं होती बहुत विद्वान् ऐसे हैं जो ईश्वर को मानते तो हैं पर जानते नहीं। इसी कारण से अनेक मत व धर्म बने हैं। अत मतो को ही धर्म बता रहे हैं। यहा यह भी जान लेना की मत जीवो की ओर से बनते हैं और धर्म ईश्वर की आज्ञा जो सब ससार के मनुष्यों के लिये एक है जो सत्य सनातन ईश्वर का ज्ञान वेद है वो ही सबका एक धर्म है जो मनुष्य ईश्वर को जानकर ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव को ग्रहण करता है जैसे ईश्वर जगत् के पदार्थो को रचके सब जीवो को सुख देता है, न्याय करता है, दयालु है, सबका हितैषी परोपकारी है वैसे ही जो मनुष्य न्यायकारी दुखियो के दुख दूर करने वाला दयावान्, सबका हितैषी परोपकारी होता है वो ही ईश्वर का सच्चाभक्त कहलाता है वह कभी निर्दोष जीवो को नहीं मारेगा, अण्डे-मास, शराब, सुल्फा, गाजा गुटिका आदि का कभी सेवन नहीं करेगा अंधविश्वासी होकर बच्चों की बलि नहीं चढाएगा, महापुरुषो की मूर्तियों पर रुपये पैसे नहीं चढाएगा और न चढवायेगा। वह कभी भूतप्रेतो के भ्रम में नहीं फसेगा वह कभी वर्णो को जाति नहीं बतायेगा। वह ईश्वर उपासना के लिये ब्रह्मविद्या और योगविद्या को जानकर हृदय मन्दिर मे ईश्वर को प्रत्यक्ष ज्ञान नेत्रों से देखता हुआ ईश्वर के गुणो का सेवन करता हुआ ईश्वर उपासना करेगा वह ईश्वर उपासना करने के लिये किसी जडमूर्ति को नहीं रखेगा क्योकि यह नियम है कि जिस पदार्थ का आनन्द लेना हो उसी का सेवन करना चाहिए उसकी जगह और का नहीं, उपरोक्त प्रकार से ईश्वर को जानने के लिए जड, चेतन, कार्य, कारण, अनित्य, उपादान कारण, निमित्त कारण, साधर्म्य, वैधर्म्य, सृष्टिक्रम और प्रत्यक्षादि प्रमाण व ईश्वर, जीव, प्रकृति के सत्य स्वरूप को अलग-अलग जानना जरूरी है क्योंकि इनके जाने बिना ईश्वर की जानकारी नहीं होती ईश्वर को जाने बिना हम सबका एक मत व धर्म भी नहीं होगा। ईश्वर धर्म एकता के बिना आपस मे प्यार भी नहीं होगा और एक दूसरे के हितैषी न होने से सुख शान्ति भी नहीं होगी अत उपरोक्त सब विषय और ईश्वर तथा पूजा पद्धति को जानने के लिये पक्षपात को छोडकर सत्य को जानने की इच्छा लेकर वेदादि सत्य शास्त्रो को पढ़ें और शीघ्र जानने व समझने के लिए सत्यार्थप्रकाश पढे।

लेखक रामचन्द्र आर्य, वैदिक सिद्धान्ती, सूरजपुर ग्रेटर नोएडा (गौतमबुद्धनगर)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ०१२६२–७६८७४, ७७८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ०१२६२–७७७२२) से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३ सृष्टिसंवत् १, ९६, ०८, ५३, १०३
पंजीकरणसंख्या टैक/65-3/2000 ☎ ०१२६२-७७७२२

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र रोहतक

प्रधानसम्पादक : यशपाल आचार्य, सभामन्त्री .सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री

वर्ष २६ अंक ३० २८ जून, २००२ वार्षिक शुल्क ८०) आजीवन शुल्क ८००) विदेश में २० डॉलर एक प्रति १.७०

नेत्रदान – जीवनदान – महादान

□ डॉ० सत्यवीर विद्यालंकार

मृत्यु के बाद मनुष्य का शरीर मिट्टी मे मिल जाता है। चाहे शव को जलाया जाये अथवा मिट्टी में दबा दिया जाये – परिणाम एक समान होता है। पहले मृतक का कोई अंग काम नहीं आता था, परन्तु अब वैज्ञानिक विकास के कारण मृतक मानव की देह के कुछ अंग काम आने लगे हैं और उनसे दूसरे लोगो का भला हो जाता है। उदाहरण के तौर पर आख ऐसा अग है जो मरने के बाद दूसरे जीवित व्यक्ति को लगाया जा सकता है। आख लग जाने के बाद नेत्रहीन व्यक्ति का जीवन बदल जाता है। ऐसा होने पर वह दुनिया के सब पदार्थों को देख सकता है। मरणोपरान्त शरीर बेकार चला जाये तो क्या लाभ ? हाँ ! अगर उससे मृत्यु के बाद भी किसी का भला हो जाये, तो इससे अच्छी बात और क्या होगी ? जो अपने नेत्रदान करेगा, वह नेत्र लगने वाले व्यक्ति, उसके परिवार तथा दूसरे समझदार व्यक्तियो के आशीष तथा प्रशसा का अधिकारी बनेगा। इस दान के करने में किसी व्यक्ति को कोई परेशानी भी नहीं हो सकती। यदि नेत्रदान करनेवाला चाहे तो उसके नेत्र उसके किसी रिश्तेदार, मित्र या साथी को भी लगाये जा सकते हैं। आँखें लगने पर व्यक्ति जब भी संसार को देखेगा तब उसका जीवन सफल हो जाएगा, क्योंकि उसकी सबसे बड़ी कमी अब पूरी हो गई है।

आखें दान करने के लिए जीवनकाल में ही फार्म भरकर नेत्र बैंक के अधिकारियो को देना पडता है। फार्म भरकर भेजने पर वे दानदाता को प्रमाणपत्र बनाकर देते हैं। नेत्रदानी का महादान किसी नेत्रहीन व्यक्ति के लिये जीवनदान के समान है। आंख लगने पर नेत्रहीन व्यक्ति अन्धेरे से निकलकर सुन्दर दुनिया में आ जाएगा और अब उसे सब कुछ दिखाई देने लगेगा। अच्छे आदमी मरकर भी दूसरों का भला करते हैं, उनके शुभ कार्यों के कारण कुछ लोगों को अपार खुशियां मिल जाती हैं तथा उनका जीवन धन्य हो जाता है। इस महादान के कारण नेत्रहीन व्यक्ति और उसके परिवार को जो हार्दिक खुशी होती है उसका अन्दाजा सहज ही लगाया जा सकता है। यह तो नये जीवनदान के समान है।

इसके लिए नेत्रदान के सम्बन्ध में जन चेतना लाने की जरूरत है। अब तक बहुत लोगो को नेत्रदान और उससे होने वाले लाभ की जानकारी नहीं है। सरकार अपने ढंग से नेत्रदान के सम्बन्ध में जानकारी देने का प्रयास कर रही है, परन्तु यह भला काम केवल सरकार का ही नहीं है। सब अच्छे व्यक्तियों और सगठनों को भी इस वास्तविक पुण्यकार्य मे भाग लेना चाहिए। जैन और बौद्ध समाज इस दिशा मे प्रयत्नशील हैं, इसके लिए जितनी प्रशसा की जाये, थोडी है। यह रचनात्मक काम है, जो सब धार्मिक तथा सामाजिक सगठनो को करना चाहिये। खेद है कि भारत मे कई अच्छे कामों के सम्बन्ध मे चेतना की बडी कमी है। रोजाना हजारो लोग मृत्यु के ग्रास बनते हैं। यदि उनमे जागृति हो तो कुछ समय में ही नेत्रदान कार्यक्रम के माध्यम से देश में एक भी नेत्रहीन स्त्री या पुरुष न रहेगा, सबको आखे लगायी जा सकेंगी। केवल डॉक्टरी आधार ही किसी की आखें लगाने मे बाधक हो तो अलग बात है।

बुद्धिजीवी लोगों को नेत्रदान कार्यक्रम को बढ़ावा देना चाहिये और इसके लिए जनता में जागृति लानी चाहिए तथा नेत्रदान को अभियान या आन्दोलन के रूप में चलाना चाहिए। जन चेतना सबसे बडा साधन है। नेत्रदान के सम्बन्ध में कुछ आवश्यक बाते व सावधानी नीचे लिखी जा रही हैं।

१. नेत्रदान कौन कर सकता है ?

नेत्रदान सब स्त्री, पुरुष तथा बच्चे कर सकते हैं, इस काम में आयु की कोई बाधा नहीं है। इस शुभ काम के लिए नेत्रदान का फार्म भरकर देना पडता है। इसके साथ नेत्रदानी को अपने परिवार के सब लोगों को यह जानकारी देनी चाहिये कि उसने अपने नेत्रदान करने का सकल्प कर रखा है, ताकि मृत्यु होने पर वे उचित कार्यवाही कर सके। साथ मे परिवार वालों को यह समझायें कि मृत्यु के बाद मृतक की आंखे निकाल देने पर उसकी कुछ भी हानि नहीं होती है। इस सम्बन्ध में कोई अन्धविश्वास हो, तो उसे भी समझाकर दूर करना चाहिये।

२ मृतक व्यक्ति के नेत्र निकालने मे डॉक्टर को केवल १० से १५ मिनट का समय लगता है। डॉक्टर मृतक के शव से आंखे निकाल कर उनको ठीक ढग से सम्भाल कर रखता है, इसके लिए डॉक्टर के पास सुरक्षित पात्र होता है। आखे निकाल लेने से शव पर कोई निशान नहीं लगता है और न मृतक के चेहरे पर कोई विकृति आती है। बल्कि ऐसे दानी व्यक्ति की सब लोग प्रशसा करते हैं।

३ यदि किसी ने दोनो आखें दान की हो, तो उससे दो व्यक्तियों का भला हो सकता है। एक नेत्रहीन को अगर एक भी आख मिल जाये तो उसका काम चल जावेगा। ऐसा करने से दो नेत्रहीनों को लाभ मिल जाएगा। जब अधिक जन चेतना आयेगी तो एक नेत्रहीन को दो आंखे भी लगायी जा सकेंगी। अब तक नेत्रहीन को एक ही आख लगायी जाती है।

४ यदि किसी व्यक्ति का बाहर का कार्निया ठीक हो, तो वह अपने नेत्रदान कर सकता है। अगर कोई चश्मा लगाता हो, तो वह भी नेत्रदान कर सकता है। यदि किसी व्यक्ति ने मोतियाबिन्द का आप्रेशन करवाया हो या किसी प्रकार का आख का सफल आप्रेशन करवाया हो, तो वह भी नेत्रदान कर सकता है।

५ यदि नेत्रदाता की मृत्यु अपने स्थान से दूर हो जावे, तो भी उसके नेत्रदान किये जा सकते हैं। ऐसी अवस्था मे मृत्यु के स्थान के पास वाले किसी भी नेत्र बैंक में सूचना देकर दान किया जा सकता है। नेत्रबैंक के डॉक्टर आदि का कुछ भी खर्च दानदाता को नहीं लगेगा, क्योंकि इसके लिए नेत्र बैंक स्वय प्रबन्ध करता है।

नेत्र लेने का समय :–

नेत्रदान दाता की मृत्यु के बाद गर्मियो में ६ से ९ घण्टे के समय के अन्दर नेत्र निकाल लेने चाहिए और सर्दियो के मौसम में १२ से १८ घण्टे तक मृतक की आंखें निकाली जा सकती हैं। मौसम के अनुसार समय सीमा का विशेष ध्यान रखना चाहिये तथा इस सम्बन्ध मे जितना हो सके शीघ्रता करनी चाहिए। जरा सी सावधानी से नेत्रदानी का दान बेकार न जाने पावे।

कौन नेत्रदान न करें ?

यदि कोई व्यक्ति किसी खतरनाक बीमारी से पीडित हो, तो उसे अपने नेत्र दान नहीं करने चाहिये। पीलिया, कैंसर और एच आई वी /एड्स जैसे घातक रोगों से ग्रस्त व्यक्ति भी नेत्रदान न करें।

कानूनी प्रावधान :–

यदि किसी व्यक्ति ने अपने नेत्रदान न किये हो और उसकी मृत्यु हो जावे, तो उसके समझदार रिश्तेदार या सगे सम्बन्धी उसकी आखें दान कर सकते हैं। ध्यान रहे कि ऐसे मृतक व्यक्ति ने कभी नेत्रदान का विरोध न किया हो।

विशेष सावधानी :–

मृत्यु के बाद नेत्रदानी के शव को पखे से नीचे नहीं रखना चाहिये, क्योंकि तेज हवा लगने से आखें सूख जाएगी। अगर हो सके तो बर्फ के ऊपर या शीतल स्थान पर शव को रखना चाहिये। यदि वातानुकूलित स्थान हो, तो सबसे अच्छा रहेगा। जहा पर ऐसा करना कठिन हो, तो शव के चेहरे के ऊपर गीता कपडा रखना चाहिये और गीला कपडा थोडी-थोडी देर बाद बदलते रहे। दानी के परिवार वालो का यह कर्त्तव्य है कि वे नेत्र बैंक के डॉक्टर को जितना जल्दी हो सके सूचना दे देवे।

वैदिक-स्वाध्याय

तेरी तरंगें

ये ते पवित्रमूर्मयो अभिक्षरन्ति धारया।
तेभिर्न. सोम. मृडय।। ऋ० ९.६१.५।। सा०उ० २.१.५।।

शब्दार्थ–(ति ये ऊर्मय.) तेरी जो तरगें **(धारया)** जगत् के धारण करनेवाली तेरी जगत् व्यापक ज्ञानधारा द्वारा **(पवित्रं अभिक्षरन्ति)** मनुष्य के पवित्र हुए अन्त करण में प्रकट होती हैं, उठती हैं **(सोम)** हे सोम ! **(तेभि:)** उन तरगों से **(न मृडय:)** हमें आनन्दित कर दो।

विनय–मानसरोवर में कुछ न कुछ तरगें सदा उठा ही करती हैं। चारों तरफ होने वाली घटनाओं से मनुष्य का मानससर नाना प्रकार से क्षुब्ध होता रहता है। परन्तु हे सोम ! मैं अपने मानस को पवित्र बना रहा हूं। इसलिये पवित्र बना रहा हूं जिससे कि इसमें तेरी जगत्-व्यापक धारा से आई हुई तरगें ही पैदा होए और किसी प्रकार की क्षुद्र तरगें न पैदा हो। हे सोम ! अपनी शीतल सुखदायिनी और ज्ञानामृतवर्षिणी धाराओ से तुमने इस जगत् को व्याप्त कर रखा है। इन्हीं द्वारा यह जगत् धारित हुआ है, नहीं तो इस जगत् का सब जीवन-रस न जाने कब तक सूख चुका होता। मैं देखता हू कि तुम्हारी इस जीवनरसदायिनी दिव्य धारा का मनुष्यों के पवित्र हुए अंत करणों के प्रति एक आकर्षण उत्पन्न हो जाया करता है। जैसे कि चन्द्रमा के (भौतिक सोम के) आकर्षण से समुद्र जल में ज्वारभाटा उत्पन्न होता रहता है, उसी तरह हे सच्चे सोम ! मनुष्य के पवित्र हुए मन सरोवर में भी तेरी सोमधारा के महान् आकर्षण से उच्च तरगें उठने लगती हैं, ऊचे-ऊचे व्यापक सनातन भावावेश (Emotions) उठने लगते हैं। विश्वप्रेम, वीरता, अदम्य उत्साह, सर्वार्पण कर डालने की उमग, दु.खित मात्र पर दया, इत्यादि ऐसे सनातन व्यापक भावावेश हैं जो कि तेरी जगत्-धारक महान् धारा के अनुकूल हैं। बस, पवित्र हुए अत करणों में तेरी महाशक्तिमती धारा के अनुसार ये ही तेरी ऊर्मिया, तेरी तरगे अभिक्षरित हुआ करती हैं। हे सोम ! मुझे अब इन्हीं सत्यमयी व्यापक तरगों के मन में उठने से सुख मिलता है। वे राग द्वेष की हवा से उठने वाली क्षुद्र भावावेशो (Emotions) की तरगे, वे मन को क्षुब्ध करने वाले एक पक्षीय ज्ञान से होनेवाले छोटे-छोटे अनुराग, मोह, शका, भय उत्कठा, कामना आदि की तरगे मुझे सुख नहीं देतीं, किन्तु क्लेश रूप दिखाई देती हैं। इसलिये, हे मेरे सोम ! मेरे मानस मे उन्हीं तरगो को उठाकर मुझे सुखी करो जो तरगे पवित्र हृदयो मे तुम्हारी धारा से उठती हैं। बस ये ही उच्च भावावेश, ये ही व्यापक सनातन महान् भावावेश, मेरे मानस मे उठा करे–ये ही तरगे बार-बार उठे, खूब उठे, खूब उठे–ऐसी ऊंची और महान् उठे, कि इन आनन्ददायक भावावेशो में उठता हुआ मैं तन्मग्न होकर तेरी ऊचाई के सस्पर्श का सुख अनुभव कर सकू।

(वैदिक विनय से)

जीवन को परोपकारी बनाओ

(१) जीवन मे जितना भी बन सके अधिक से अधिक शुभ (अच्छे) कर्म करते रहना चाहिये। नेक कर्मों की कमाई ऐसी दौलत है जो आपके साथ जाएगी, शेष भौतिक सम्पत्ति यहा ही रह जाएगी।

(२) अपने मन मे सकल्प करो कि मैं प्रात काल जागरण से रात को सोने तक अच्छे काम करूगा। जैसे झूठ नहीं बोलना, सदा सच कहना, गरीबों, कमजोरों की सहायता करना, किसी प्यासे को पानी पिलाना, भूखे को भोजन कराना इत्यादि अनेक काम हैं जिन्हे आप कर सकते हो।

(३) आप स्वय सोचो कि मैं दूसरो की सुख-सुविधा के लिये क्या कर सकता हूं। आपके पास पैसा नहीं है या शारीरिक बल भी नहीं है फिर भी परोपकार कर सकते हो यदि मन में प्रबल भावना है। आप रास्ते मे चले जा रहे हो, आपको कोई कील काटा दिखाई देता है, जो किसी के पांव मे चुभ सकता है, उसे रास्ते से हटा दो। सडक पर केले का छिलका किसी मूर्ख ने फैंक दिया है या कोई ईंट पत्थर पडा हुआ है तो उसे वहा से उठाने मे शर्म मत करो, फौरन हटाओ। अन्यथा कोई भी दुर्घटना हो सकती है और किसी के लिए खतरा बन सकती है। कोई वृद्ध या चक्षुहीन व्यक्ति सडक पार करना चाहता है तो उसका हाथ पकडकर उसकी सहायता करो।

(४) इन सब नेक कामो के फलस्वरूप आपके जीवन मे सुखशान्ति आयेगी। यह एक तथ्य है कि जैसा कर्म करोगे वैसा ही फल पाओगे। कुछ शंका है तो इसको अपनाकर देख लो। मेरा अनुभव है कि परोपकार करने वाले व्यक्ति को खुशी मिलती है।

(५) सृष्टि मे चारो ओर प्रकृति उपकार के कार्य कर रही है। सूर्य चन्द्रमा निरन्तर जो कार्य कर रहे हैं। वृक्षो मे लगे हुये फलो को कौन खाता है ? नदिया किसके लिए प्रवाहित हो रही हैं ? पशु-पक्षी भी कुछ न कुछ उपकार कर रहे हैं। अत हे मनुष्य ! तू कुछ नेकी के कर्म कर ताकि तेरा जीवन दुनिया में आके सफल और सार्थक हो। एक गीत की पक्तिया लिखकर लेखनी को विराम देता हू।

नेकी कर कुछ तू पास प्रभु के जाने के लिये।
आया नहीं तू दुनिया मे खाने और मर जाने के लिये।।

–देवराज आर्य मित्र, आर्यसमाज कृष्णनगर, दिल्ली-५१

सत्संग की मनुष्य जीवन में महत्ता

मनुष्य को सत्संग की आवश्यकता क्यों हैं ? सत्संग से क्या लाभ ? इन तथ्यों पर विचार करने से पता चलता है कि मानव जीवन के लिए सत्संगति का इतना महत्त्व क्यों दिया गया है। वास्तव में अगर देखा जाये तो चाहे वह राजनैतिक क्षेत्र हो या धार्मिक, जब तक मनुष्य सत्संगति, आप्त पुरुषों का संग नहीं करेगा, वेद शास्त्रादि धार्मिक पुस्तकों का अध्ययन नहीं करेगा तब तक न मानसिक उन्नति हो सकती है, न शारीरिक और न सामाजिक उन्नति हो सकती है। जिसका जैसा संग होता है उसकी वैसी बुद्धि हो जाती है।

दुर्जन मनुष्य के संग के कारण साधु जन भी विकार को प्राप्त हो जाते हैं। जैसे–दुर्योधन के संग के कारण भीष्म भी गोहरण में गये थे।

नीच लोगों के समागम से पुरुषों की बुद्धि भी नीच हो जाती है, मध्यमों के समागम से मध्यम तथा उत्तम के समागम से उत्तम होती है। आर्ष ग्रन्थों में बताया गया है–

महाजनस्य संसर्ग:, कस्य नोन्नतिकारक:।
पद्मपत्रस्थितं वारि, धत्ते मुक्ताफलश्रियम्।।

बडे मनुष्यों का ससर्ग किसकी उन्नति का कारण नहीं होता ? अर्थात् सबकी उन्नति करने वाला है। जैसे कि कमल के पत्र पर गिरी हुई बूद मुक्ताफल की सदृशता को धारण करती है। जैसे शीश सोने के ससर्ग से मरकटमणि की द्युति को धारण करता है, उसी प्रकार सत्संग से मूर्ख भी प्रवीणता को धारण करता है।

यदि सत्संगनिरतो, भविष्यति भविष्यति।
अथ दुर्जनसंसर्गे, पतिष्यति पतिष्यति।।

हे मनुष्य तू सत्संग में लगा रहेगा तो उन्नति को प्राप्त हो जायेगा, यदि दुर्जन के संग में पड जायेगा तो नीचे गिरकर हीन दशा को प्राप्त होगा। सत्संग मनुष्य को उन्नति की बुलन्दियों पर पहुचाकर जीवन में निखार लाता है और कुसंगति पतन की खाई में गिराकर चकनाचूर कर देता है। भर्तृहरि जी महाराज नीतिशतक में लिखते हैं–

जाड्यं धियो हरति सिञ्चति वाचि सत्यं, मानोन्नतिं दिशति पापमपाकरोति।
चेत: प्रसादयति दिक्षु तनोति कीर्ति, सत्संगति: कथय किन्न करोति पुंसाम्।।

सत्सगति मनुष्य की जडता को हर लेती है, वाणी में सत्य का संचार करती है, मान्नोनति का उपदेश करती है, चित्त को प्रसन्न करती है। कीर्ति को चारो ओर फैलाती है। सत्पुरुषों की सगति सब प्रकार का लाभ कराती है।

अब यहा एक प्रश्न उठता है कि जब सत्पुरुषों की सगति से मनुष्य महान् बनता है तो विद्वान् लोगो को सत्सगति की क्या आवश्यकता है ? वे तो पहले ही महान् होते हैं ? उत्तर मिलता है कि ज्ञानवान् व्यक्ति भी कभी-कभी ऐसे भटक जाता है, जैसे जलता हुआ दीपक हवा के झकोरो से बुझ जाता है ठीक उसी प्रकार तिमिर रूपी हवा के झकोरो से जलते हुए दीपक रूपी ज्ञान की ज्योति बुझ जाती है।

हमे ऐसा उपाय करना चाहिए ताकि जलता हुआ दीपक बुझने न पाये जैसे हम उस दीपक का प्रबन्ध शीशा लगाकर या किसी घर के अन्दर रखकर करते हैं, उसी प्रकार सत्सग रूपी घर के अन्दर बैठकर तिमिर (अज्ञान) रूपी हवा के झकोरों से ज्ञानरूपी ज्योति के न बुझने का प्रबन्ध किया जाता है या उसकी रक्षा की जाती है।

जैसे बुझे हुए दीपक को पुन दियासलाई की तीली से जलाया जाता है उसी प्रकार मनुष्य की बुझी हुई ज्ञान ज्योति को सत्सगति रूपी तीली से जलाया जा सकता है। सत्सगति से मनुष्य की अत्याधिक उन्नति होती है। अत प्रत्येक मनुष्य का परम कर्तव्य एव धर्म बनता है कि उसे हजारों, लाखों काम छोडकर सत्सग में अवश्य जाना चाहिए।

अस्तु जिस प्रकार शरीर के लिए भोजन की आवश्यकता होती है उसी प्रकार आत्मा के लिए सत्सगरूपी ज्ञान की खुराक की परम आवश्यकता है जिससे मनुष्य का कल्याण सभव है।

–आचार्य रामसुफल शास्त्री, वैदिक प्रवक्ता, लाल सडक हांसी-१२०५३३ हरियाणा

सभामन्त्री के कार्यक्रम विवरण

(निज संवाददाता द्वारा) गत सप्ताह १८ जून को गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति के रूप में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामन्त्री प्रिं० स्वतंत्रकुमार जी ने कार्यभार संभाला। इस अवसर पर वैदिक परम्परा का अनुसरण करते हुए सभी कुलवासियों ने मिलकर यज्ञ का आयोजन किया तथा नवनियुक्त कुलपति जी को आचार्य वेदप्रकाश जी ने आशीर्वाद दिया। तीनों सभाओं के अधिकारियों ने उनका स्वागत किया और सहयोग का पूरा आश्वासन दिया। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वेदव्रत जी शर्मा आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के मन्त्री आचार्य यशपाल जी व उपमन्त्री श्री केदारसिंह जी आर्य, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रस्तोता श्री देवेन्द्र जी शर्मा व श्री महाजन जी आदि उपस्थित थे। स्वागत समारोह के पश्चात् कार्यग्रहण कर हस्ताक्षर किये तथा सायंकाल ३ बजे कुलपति जी के आवास पर भी यज्ञ का आयोजन किया गया। अलग से सभा अधिकारियों ने आर्य विद्या सभा के विरुद्ध देहरादून न्यायालय में चल रहे विवाद को समाप्त करने पर भी विचार विमर्श किया।

२० जून को जिला सोनीपत के गांव गगाणा में आर्य युवक परिषद् के तत्त्वावधान में प्रिंसिपल आजादसिंह जी के निर्देशन में युवा निर्माण शिविर का समापन समारोह हुआ। शिविर का संचालन श्री बलराम जी व श्री कृष्ण जी के सहयोग से श्री जयवीर आर्य ने किया, इस अवसर पर छात्रों ने अनेक आकर्षक व्यायाम प्रदर्शन दिखाये गये। इस अवसर पर मंच का संचालन सभा के अन्तरंग सदस्य श्री आजादसिंह जी [illegible] सीनियर सैकेण्डरी स्कूल सोनीपत ने किया तथा समारोह की अध्यक्षता श्री किशनसिंह जी सांगवान सांसद ने की। समारोह के मुख्य अतिथि सभामन्त्री आचार्य यशपाल जी तथा विशिष्ट अतिथि श्री राजेन्द्र जी [illegible] थे। सभामन्त्री जी के साथ सभा उपमन्त्री श्री सुरेन्द्रसिंह जी शास्त्री व अन्तरंग सदस्य बलवीरसिंह जी शास्त्री भैंसवाल भी उपस्थित थे। इस कार्यक्रम का आयोजन आर्यसमाज मन्दिर स्थल पर किया गया। आर्यसमाज मन्दिर के भवन का निर्माण चालू है। श्री किशनसिंह जी सांगवान सांसद [illegible] ने अपनी उदारता का परिचय देते हुए प्रतिवर्ष ५० हजार रुपये आर्यसमाज गगाणा को देने का आश्वासन दिया। [illegible] अवसर पर श्री किशनसिंह जी सांगवान [illegible] सभामन्त्री आचार्य यशपाल जी ने एक-एक [illegible] रोपण भी किया और छात्रों को आर्यसमाज [illegible] महर्षि दयानन्द के बताये रास्ते पर चलने के लिए प्रेरणायें दीं। २१ जून को [illegible] श्री जी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के दिल्ली की कार्यकारिणी में भाग लेने [illegible] उपस्थित हुए।

२३ जून [illegible] दयानन्दमठ रोहतक से ५ बजे [illegible] लय पलवल में पधारे जहां पर [illegible] से हरयाणा आर्य युवक परिषद [illegible] युवकों का शिविर लगाया जा रहा था, श्री शिवराम आर्य जिन्होंने अभी तक २५ शिविर लगाये हैं, उन्हीं की देखरेख में यह शिविर चल रहा था, जिसमें १५० के करीब युवा भाग ले रहे थे। श्री संजीव मंगला एडवोकेट का इस शिविर के आयोजन में विशेष योगदान रहा था, शिविर में इलाके के प्रतिष्ठित आर्य महानुभाव आर्यसमाज के अधिकारी गण इस अवसर पर उपस्थित थे।

समापन समारोह की अध्यक्षता सभामन्त्री आचार्य यशपाल ने की। आर्यसमाज पलवल के अधिकारियों ने आचार्य यशपाल जी सभामन्त्री, सभा उपमंत्री श्री केदारसिंह जी आर्य, सभा अन्तरंग सदस्य श्री लक्ष्मीचन्द जी आर्य प्रधान सैक्टर-१९ फरीदाबाद, ब्रिगेडियर चन्दनसिंह जी, नरेन्द्र आहूजा तथा श्री शिवराम जी आर्य का भव्य स्वागत किया तथा सभी वक्ताओं ने शिविर में भाग लेनेवाले विद्यार्थियों को देशभक्ति, चरित्रनिर्माण, समाज सेवा, अनुशासन, माता-पिता का सेवक बनने के लिये प्रेरित किया तथा सभी दुर्व्यसनों से दूर रहकर ईश्वरभक्ति नियमित गायत्री जाप के लिये प्रतिज्ञाए कराईं तथा छात्रों का शारीरिक प्रदर्शन प्रभावशाली रहा। छात्रों के जीवन में उत्तम संस्कार उत्पन्न करने के लिए इन शिविरों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इस शिविर में सभामन्त्री के साथ उपमन्त्री श्री केदारसिंह आर्य, ओमप्रकाश जी सभागणक तथा श्री परसराम पटवारी सभा मुख्यतारेआम भी उपस्थित थे। उसके बाद केदारसिंह जी आर्य, ओम्प्रकाश जी, परसराम जी खटेला की जमीन देखने हेतु गये। तत्पश्चात् दोपहर बाद दिल्ली सरकार के विरुद्ध शराबबन्दी प्रदर्शन में भाग लेने के लिये सार्वदेशिक सभा कार्यालय नई दिल्ली में गये। महात्मा गांधी की अनुयायी दिल्ली कांग्रेस की सरकार ने शराब का उदारीकरण करते हुए जनकल्याण विरोधी नीति अपनाई है। एक तरफ तो सरकार का शराबबन्दी के लिए मन्त्रालय गठित है और शराब से हानियों का प्रचार कर रही है और इस तरह करोड़ों रुपया खर्च हो रहा है। दूसरी तरफ टेलीफोन पर ईमेल तथा फैक्स के द्वारा घर बैठे शराब भेजने का प्रबन्ध कर रही है तथा सभी डिपार्टमैंटल स्टोरों पर शराब उपलब्ध करायेगी। इस उदारीकरण नीति को वापिस लेने के लिये सभी प्रान्तों से आये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के सदस्य और दिल्ली की सभी प्रमुख आर्यसमाजों के अधिकारीगण गुरुकुल गौतमनगर के विद्यार्थियों के साथ सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य के नेतृत्व में विशाल विरोध प्रदर्शन किया। पुलिस द्वारा अनेक स्थानों पर प्रदर्शन को रोकने के लिये बाधाएं (चौकी) स्थापित की किन्तु आर्यों के उत्साह के आगे सभी बाधायें ध्वस्त हो गई।

अन्त में सभी प्रदर्शनकारी दिल्ली की मुख्यमन्त्री श्रीमती शीला दीक्षित आवास के आगे सड़क पर ही धरना देकर बैठ गये और सारा वातावरण सभा के रूप में परिवर्तित होगया। प्रतिनिधि मंडल ने मुख्यमंत्री को शराब की उदारीकरण नीति के विरोध में ज्ञापन प्रस्तुत किया। सायंकाल प्रदर्शन के बाद सभा कार्यालय में सभी गुरुकुलों के एकीकरण आर्ष पद्धति से समान पाठ्यक्रम को अपनाने के लिए आचार्य वेदप्रकाश जी गुरुकुल कांगड़ी के सान्निध्य में विशेष बैठक का आयोजन किया गया। २५ जून को सभामन्त्री जी अपने अन्य अधिकारियों के साथ यमुनानगर, कुरुक्षेत्र एवं पानीपत आदि समाजों एवं संस्थाओं का निरीक्षण करने तथा स्थानीय समस्याओं के समाधान हेतु गये जिसका विवरण आगामी अंक में उपलब्ध हो सकेगा।

वैदिक राष्ट्र

स्वामी वेदमुनि परिव्राजक, अध्यक्ष वैदिक संस्थान, नजीबाबाद (उत्तरप्रदेश)

यत्र ब्रह्म च क्षत्रञ्च सम्यञ्चौ चरत. सह।
त लोक पुण्य प्रज्ञेषं यत्र देवाः सहाग्निना।। (यजुर्वेद २०/२५)

परम पिता परमात्मा सर्वज्ञ अर्थात् सर्वज्ञानमय, सम्पूर्ण ज्ञान-विज्ञान से परिपूर्ण है, तभी तो सर्वांग सुन्दर अपनी शाश्वत प्रजाओ, जीवात्माओं की सम्पूर्ण आवश्यकताओ की पूर्ति और उनके समग्र विकास के साधनों से युक्त यह सृष्टि बनाई और न केवल यह ऐसी उत्तम सृष्टि ही बनाई अपितु इसमें रहने और यथोचित व्यवहार करने का उपदेश (ज्ञान) भी आदि सृष्टि में ही प्रदान कर दिया। वही ईश्वरप्रदत्त ज्ञान वेद के नाम से जाना जाता है। विश्व के सभी प्रबुद्ध जन यह मानते हैं कि वेद ससार का सबसे प्राचीन ग्रन्थ है।

वेद में पृथिवी से द्यौलोक पर्यन्त तथा परमाणु से लेकर सम्पूर्ण विश्व जगत् पर्यन्त समस्त ज्ञान-विज्ञान प्रदाता परमेश्वर ने राष्ट्रीय परिकल्पना तथा उसके व्यापक व्यवहारो का वर्णन-विवेचन तो प्रदान किया ही है, उत्तम राष्ट्र कौन हो सकता है ? यह सकेत भी कर दिया है। उस परमात्मा द्वारा निरूपित राष्ट्र को ही वैदिक राष्ट्र कहा जा सकता है।

लेख के प्रारम्भ में जो मन्त्र दिया गया है, वह इसी विषय की चर्चा को प्रदर्शित करता है। राष्ट्रवादियों और राष्ट्रभक्तों के लिये इस मन्त्र में स्पष्ट दिशा-निर्देश हैं। आगे की पंक्तियों में हम इसी विषय पर विचार करेंगे।

राष्ट्र-कार्य सम्पादनार्थ राष्ट्रनायकों में समुचित ज्ञान का होना परमावश्यक है। बिना जाने, बिना ज्ञान के साधारण से साधारण कार्य भी सम्पादन और सम्पन्न नहीं होता तो करोड़ों की जनसख्या वाले राष्ट्र का कार्य सम्पादन करना तथा उसे पूर्ण करना किस प्रकार सम्भव हो सकता है ? लाखों करोड़ों मानवों की विविध समस्याओ को फूक मारते कहो अथवा पलक झपकते सुलझाया नहीं जा सकता। इसके लिये तो बृहन्मस्तिष्क, महान् बुद्धि रखने वाले विचारकों की आवश्यकता होती है। ऐसे विचारक ही राष्ट्र सचालन तथा राष्ट्र के कार्य सम्पादन की विधि-व्यवस्था के निर्माता होते हैं। यह कार्य सामान्य मस्तिष्क के लोगों द्वारा सम्पादित नहीं हो सकता। विधि-व्यवस्था का निर्माण करने मे यह ध्यान रखना भी आवश्यक है कि किस परिस्थिति में किस प्रकार की उलझन-बाधा उपस्थित हो सकती है तो फिर उसका निराकरण किस प्रकार से करना होगा ? इस ब्रह्म, इस ज्ञान के बिना राष्ट्र के लिए विधि व्यवस्था अर्थात् संविधान का निर्माण नहीं किया जा सकता। यह महत् कार्य तो ऋषि कोटि के व्यक्तियों द्वारा ही सम्भव है। इसके लिए जिन ऋषियो की आवश्यकता है, वह नामधारी ऋषि नहीं अपितु वैदिक ज्ञानसम्पन्न ऋषि होने चाहिए।

ऋषित्वयुक्त, ऋषि मेधा सम्पन्न जनो द्वारा संविधान के निर्माण का सम्पादन कर प्रचारित और प्रसारित किया जाना आवश्यक तो है किन्तु परमात्मा की इस विविधताओ और विचित्रताओ से भरी हुई सृष्टि में मानव-स्वभाव और मानव-मस्तिष्क भी तो विविध प्रकार के होते हैं, फिर इस विविधताओ से भरी सृष्टि मे अनेकानेक आकर्षण भी तो हैं, जिनमे मानव बहककर, उचित-अनुचित का विचार भी नहीं कर पाता। कर पाये भी तो भी सृष्टि की विविधताओ के आकर्षणों में दृग्-भ्रमित होकर और प्रलोभनो में फसकर तथा कामनाओ और वासनाओं के वशीभूत अन्धा होकर अकर्तव्य न किये जाने योग्य दुष्कर्मो को भी कर बैठता है। ऐसे कर्म कर बैठता है, जिनसे दूसरों के अधिकारो का उल्लघन होता है। ऐसे व्यक्ति ऋषि बुद्धि और उपदेशों की चिन्ता नहीं करते अपितु अनेक अवसरो पर पूरी-पूरी उच्छृंखलता का प्रदर्शन करते और उद्दण्डता पर उतर आते हैं।

सीमा का उल्लघन करने तथा उद्दण्डता पर उतर आने वालों के लिये दण्डविधान होता है, परन्तु उस दण्डविधान को लागू करने के लिये शासन शक्ति की आवश्यकता पडती है। वही शासनशक्ति होती है दण्ड देने और दिलाने वाली, जिसे पुलिस, सेना तथा दण्डाधिकारियो के नाम से पुकारा जाता है, यही क्षत्रिय वर्ग है।

राष्ट्र की दो प्रबल और सर्वोच्च शक्ति कहो या तत्त्व-वह दो ही होते हैं-ब्राह्मण और क्षत्रिय, वेद के शब्दों में ब्रह्म और क्षत्र। इन दोनो का होना तो राष्ट्र मे अत्यावश्यक है ही, परन्तु साथ ही इन दोनों में सन्तुलन का होना भी परमावश्यक है।

इन्हीं दोनों के लिये उपर्युक्त मन्त्र मे कहा गया है- '**यत्र ब्रह्म च क्षत्र**' जहा ब्रह्म और क्षत्र, ब्रह्म-शक्ति और क्षत्र-शक्ति दोनों '**सम्यञ्च**' ठीक प्रकार से 'चरत सह' सहयोग पूर्वक गति करती, कार्य करती है-वही लोक, वही देश, '**तम् लोकम्**' पवित्र, उत्तम समझा जाता है- '**पुण्य-प्रज्ञेयम्**'।

किसी देश, किसी राष्ट्र को पुण्य (पवित्र) देश बनाना है तो यह आवश्यक है कि उस राष्ट्र मे ब्रह्मशक्ति, नेतृवर्ग तथा शासनशक्ति अर्थात् प्रशासन मे पूरा-पूरा सहयोग हो। यदि नेतृवर्ग, विधि-व्यवस्था का निर्माण करने, प्रणयन करने वाले तथा प्रसारक जनो और प्रशासनिक अधिकारियो मे ठीक-ठीक तालमेल नहीं होगा तो राष्ट्र उन्नति तो क्या करेगा। अपनी बनी बनाई व्यवस्था की पवित्रता भी स्थिर और सुरक्षित नहीं रख सकता। इन दोनो का पारस्परिक तालमेल न केवल आवश्यक है अपितु परम आवश्यक है।

विधान उत्तम हो, दण्ड-व्यवस्था की जो सहिता हो, वह न केवल ठीक ही हो अपितु देवोचित हो किन्तु उसे लागू करने वाला प्रशासन भ्रष्ट हो तो राष्ट्र का विनाश शीघ्र ही सुनिश्चित है, अवश्यम्भावी है, उसे उसके विनाश को ससार की कोई भी शक्ति पतन से बचा नहीं सकती।

विधायिका, नेतृवर्ग, ब्रह्मशक्ति और शासनतन्त्र में सन्तुलन के बिना राष्ट्र की स्थिति न तो सुदृढ ही हो सकती है और न सुरक्षित रह सकती है। यही कारण है कि वेद ने निर्देश कर दिया है कि दोनो **'सम्यञ्चौ'** भलीभाति **'सह'** साथ-साथ सहयोगपूर्वक सन्तुलितरूपेण अपने-अपने दायित्वो का पालन **'चरत.'** करती रहें।

विधायिका व्यवस्था बनाये और प्रशासन-तन्त्र को लागू करने के लिए प्रेषित कर दे किन्तु प्रशासन तन्त्र ढीला हो, समयानुसार विधायिका द्वारा निर्देशन व्यवस्था को लागू न करे अथवा प्रशासन तन्त्र में अयोग्य लोग बैठे हुए हों तो किसी भी उत्तम से उत्तम विधि व्यवस्था से तथा किसी उत्तमोत्तम योजना के भी उत्तम परिणाम सामने नहीं आ सकते। वेद का दोनो को ठीक कार्य करने ही नहीं अपितु सहकारितापूर्वक कार्य करने का स्पष्ट निर्देश है। सहकारिता सन्तुलन रखने का तत्त्व है।

मानव शरीर मे सकल्प उत्पन्न होते हैं। मन अतीव तर्क-वितर्क पूर्वक उन सकल्पो पर सुनिश्चित होकर उन्हें बुद्धि को सौंप देता है, प्रशासन तन्त्र को तदनुसार कार्य करने का निर्देश कर देता है किन्तु प्रशासन व्यवस्था ढीली, निर्बल अथवा जर्जर है तो वह कैसा भी उत्तम सकल्प क्यों न हो लागू नहीं हो पाता और वह लागू नहीं होता तो उसका फल प्राप्त नहीं हो पाता। लागू हो, ढीलेपन से हो, त्वरित गति से न हो, विलम्ब से हो, तब भी उसका वह लाभ जो होना चाहिये, नहीं हो पाता। उस लोकोक्ति वाली स्थिति हो जाती है– **'का वर्षा, जब कृषि सुखानी'** एतदर्थ दोनो तत्त्वो, ब्रह्म और क्षत्र में सन्तुलन और सहकारिता परमावश्यक है।

मन्त्र की दूसरी पक्ति है– **'तं लोक पुण्य प्रज्ञेयं यत्र देवा: सहाग्निना'** इस पक्ति मे पुण्य, पवित्र, उत्तम लोक-राष्ट्र उसी को बताया है, जहा के देव अर्थात् विद्वान् तेज, अग्नि, क्षत्र-शक्ति के साथ रहते हैं। जिस देश के विद्वानों को क्षत्रशक्ति द्वारा सरक्षण प्राप्त रहता है, जहा जिस देश मे क्षात्र-बल ब्राह्मणो, मनीषियो, विचारकों को सरक्षित और सुरक्षित रखता है, उसी देश में नित नये अनुसधान, आविष्कार तथा परीक्षण होते रहते हैं, वही देश वास्तविक अर्थो मे राष्ट्र बन पाता है अन्यथा वह मात्र भूमि का एक भाग, एक क्षेत्र मात्र है, जहा दो हाथ दो पैर का आदमी नामक प्राणी रहता है। मात्र इस प्रकार के प्राणी समूह को राष्ट्र नहीं कहा जा सकता। राष्ट्र की परिकल्पना के मन मे आते ही मस्तिष्क कह उठता है कि जहा ब्रह्म और क्षत्र ठीक प्रकार कार्य कर रहे हों, जहा के ब्रह्मणो और क्षत्रियो मे पारस्परिक सहकारिता पूर्वक सहयोग हो, जो स्वदेश के हित मे मिलजुलकर स्व-स्व कर्तव्यो को पूर्ण करने मे लगे रहते हो, वही देश, राष्ट्र कहलाने का अधिकारी होता है।

साथ-साथ तो भेडों का झुण्ड भी चरता रहता है किन्तु यदि भेडिया आ जाय तो प्रत्येक को अपने ही प्राण बचाने की सूझती है, उनमे सहकारिता, सहयोग का तत्त्व नहीं होता। जब भेडो को चराने के पश्चात् भेडो वाले सायकाल अपने घरो को लौटते हैं तो अपनी-अपनी भेडों को हाककर अपने-अपने बाडे मे बन्द कर देते हैं और भेडें उनके डण्डे के प्रभाव से उनके आगे-आगे चल देती है।

ससार के किसी भी क्षेत्र, किसी भी देश मे रहने वाले व्यक्तियों की भी जब तक उनमें सहभागिता, सहकारिता और सहयोग की भावना जागृत नहीं होती भेडो वाली ही स्थिति रहती है। कोई भी बाहुबली, कोई भी शक्ति और सामर्थ्य सम्पन्न व्यक्ति उन्हें भेड़ो की भाति हाकता रहता और उन पर शासन करता रहता है। इस स्थिति से उबारने का कार्य होता है ब्रह्मशक्ति के द्वारा। मानवता का वास्तविक हित सम्पादन तो ब्रह्मशक्ति से ही होता है जो जन्मजन्मान्तर के सस्कारो से सस्कारित होते हैं। ऐसे सस्कारित जन अपनी ब्रह्मशक्ति के द्वारा बृहद् जनसमूह मे से कुछ ऐसे व्यक्तियो का चयन कर लेते हैं, जो अन्यो की अपेक्षा कुछ सूझ-बूझ वाले होते हैं तथा ब्रह्मशक्ति सम्पन्न जन से ज्ञान प्राप्त कर उनके निर्देशानुसार उनको सहयोग करते हुए कार्य क्षेत्र मे उतरते हैं और इस प्रकार इन दोनो के सहकार से वास्तविक शासन सत्ता की स्थापना होती है। वही शासन-सत्ता अपने देश को सुनियोजित ढग से राष्ट्र मे परिवर्तित कर देती है अर्थात् सर्व साधारण जन मे भी राष्ट्रीय भावनाओ को भर देती है।

राष्ट्र बन जाने पर भी ब्रह्म और क्षत्र का सहयोग तो रहना ही चाहिये और इसी रूप मे बना रहना चाहिये, जिस रूप मे वेद के उपर्युक्त मन्त्र मे बताया गया है। इतना सब होने पर भी कोई देश (कोई राष्ट्र बना हुआ) राष्ट्र भी **'पुण्यं प्रज्ञेष'** पवित्र जाना जाने योग्य वास्तविक रूप मे नहीं बन जाता, जब तक इस मन्त्र के अन्तिम वाक्य **'यत्र देवा. सह-अग्निना'** के अनुरूप नहीं हो जाता।

(यत्र) जहा (देवा) विद्वान् (सह-अग्निना) अग्नि के, तेज के साथ नहीं रहते। क्षत्रशक्ति शासन तन्त्र उन्हे सुरक्षा प्रदान करता रहे, जिससे उनके द्वारा नवीन-नवीन अन्वेषण होते रहें। यह ब्रह्मशक्ति सम्पन्न लोग राष्ट्र की मेधा, राष्ट्रीय प्रज्ञा होते हैं, परन्तु इस वाक्य मे एक और महान् भाव, गम्भीर रहस्य भी भरा हुआ है कि वह देव, वह ब्रह्मशक्ति सम्पन्न लोग क्षात्रशक्ति से रक्षित तो रहें किन्तु उनमें स्वय में भी अग्नि, तेज होना चाहिये। **'सह-अग्निना'** वह स्वय भी अग्नि, तेज सहित हों, तेजस्वी हों। स्मरण रखिये कि **'परान्नभोजी'** ब्राह्मणो से राष्ट्रहित सम्पादन सभव नहीं। ऐसे लोगों का आत्मा मृत ही समझिये। ऐसे लोगो मे मनोबल नहीं रहता। परान्नभोजियों के विषय मे एक श्लोक यहा प्रस्तुत किया जाता है–

भोजन कुरु दुर्बुद्धे ! मा शरीरे दया कुरु।
परान्न दुर्लभ लोके शरीर तु पुन: पुन:।।

परान्न भोजी, दूसरे के अन्न पर जीने वाले लोगों में हीनता की भावना इस सीमा तक भर जाती है कि उन्हें खाते समय यह भी विश्वास नहीं रहता कि दूसरे दिन तो क्या ? जाने दूसरे समय भी मिलेगा या नहीं। ऐसे ही पेटार्थी पुजारियों का वर्णन उपर्युक्त श्लोक में किया गया है।

पण्डित जी अपने पुत्र सहित किसी यजमान के यहां निमन्त्रण पर गए हुए भोजन कर रहे थे, और बार-बार अपने पुत्र को अधिकाधिक खाने के लिये इंगित तथा आग्रह कर रहे थे। लडके का पेट भर चुका था, उसके पेट में सांस लेने को भी स्थान नहीं था, भोजन मुह में से बाहर लौट-लौटकर आ रहा था, तब पेटार्थी पण्डित जी ने संस्कृत श्लोक में बेटे को अपनी बात कही, जिससे यजमान न समझ सके। उसने कहा–

दुर्बुद्धि, मूर्ख ! भोजन कर, शरीर पर दया मत कर। पराया अन्न ससार में कठिनता से मिलता है, शरीर तो बार-बार मिलता ही रहता है। मर जाएगा तो फिर भी शरीर तो मिल ही जाएगा, क्योंकि पुनर्जन्म होना ही है, परन्तु यह पराया अन्न, दूसरे की परिश्रम की कमाई का अन्न ससार में कठिनता से प्राप्त होता है। ऐसे ब्राह्मणों की राष्ट्र की आवश्यकता नहीं। यह पेटार्थी तो देश की खाद्य समस्या पर भी तथा राष्ट्र को निर्बल और सत्वहीन बनाने का कार्य करते हैं। राष्ट्र को वास्तविक अर्थों में राष्ट्र, सबल तथा समर्थ वही ब्राह्मण बना सकते हैं, जो उपर्युक्त मन्त्र द्वारा **'देवा. सहाग्निना'** वाक्य वर्णित है अर्थात् कोई ब्रह्मशक्ति, ब्रह्म विवेचन, आध्यात्मिक और वह भी वाचिक, शाब्दिक आत्मज्ञान वाले नहीं अपितु अग्नि से, तेज से युक्त हों अर्थात् ब्रह्मतेज भी जिनमें भरा हो, जो स्वात्माभिमान भी रखते हो।

महाभारत काल के ऐसे एक ब्राह्मण की चर्चा कर देना भी इस प्रसंग में उपयोगी है अत एव उसे वर्णित कर रहा हू। द्रुपद और द्रोण दोनों गुरुभाई थे, सहपाठी रह चुके थे। तब दोनो में परस्पर मित्रता हो गई थी, प्रगाढ मैत्री-ऐसी मैत्री कि एक बार अपनी मैत्री की भावना से अभिभूत हुए युवक द्रुपद ने अपने मित्र द्रोण से कहा, मित्र ! अब कुछ दिन बाद हम लोग गुरुकुल से स्नातक होकर अपने-अपने घर चले जायेंगे। मैं राजपुत्र हू अत यदि कभी कोई ऐसा अवसर आये कि आपको मेरी सहायता की आवश्यकता अनुभव हो तो आप नि सकोच मेरे पास चले आना।

दैव दुर्विपाक से द्रोण की स्थिति निर्धन सुदामा वाली हो गई और तब वह द्रुपद से सहायता प्राप्ति की दृष्टि से उसके पास गया। द्रुपद अब राजपुत्र नहीं अपितु पाचाल नरेश बनकर शासन सत्ता के सुखोपभोग में डूबे हुए था। प्रसिद्ध लोकोक्ति है– **'प्रभुता पाय काहि मद नाहीं'** द्रुपद जी को भी राजमद चढा हुआ था। वह कृष्ण तो थे नहीं, जो सुदामा की दीन दशा देखकर रो पडते। यह तो थे द्रुपद और पाचाल नरेश महाराजा द्रुपद।

बेचारा द्रोण द्वार पर गया, महाराजा को सूचना दी तो उन्होंने अन्दर बुलवा लिया और परिचय तथा आने का कारण कृपा करके पूछ लिया। द्रोण ने जब पिछली स्मृति दिलाई तो द्रुपद ने कहा, मैं तो लेश भी तुम्हे नहीं पहचानता हो सकता है मेरे विद्यार्थी जीवन मे आप मेरे साथ पढे हों, तब न जाने कितने और कौन-कौन विद्यार्थी वहा पढते थे, किस-किस को पहचान सकता हू। द्रोण नामक भी कोई रहा होगा परन्तु मेरी किसी से कोई मित्रता नहीं हुई। यदि हुई भी हो तो तुम ही मेरे साथी द्रोण हो, इसका निर्णय करने का मेरे पास कोई आधार नहीं।

द्रुपद का यह उत्तर सुनकर द्रोण का ब्राह्मणत्व जाग उठा तो उसने कहा द्रुपद ! आज आप सम्राट् हो तो अपने अनन्यतम सखा से भी इस प्रकार का व्यवहार कर रहे हो जो किसी भी सभ्य पुरुष को शोभा नहीं देता। यदि उस समय के मैत्री से अभिभूत होकर कहे गये आपके वह शब्द मुझे स्मरण न हो आते और यह लेश भी ज्ञात होता कि आप सत्ता के मद में विगत सब कुछ भूल बैठे हो या जानबूझकर भूलने का इस प्रकार नाटक करोगे तो मैं कदापि आपके पास नहीं आता। सम्राट् द्रुपद तो राजसत्ता के मद में था अन्य भी कुछ अपमानजनक शब्द द्रोण को कह बैठा, तब द्रोण का ब्राह्मणत्व पूर्ण **'अग्नि सह'** पूरा अग्नि के साथ अर्थात् ब्रह्मतेज के साथ प्रकट हुआ और तब उन्होने कहा

अग्रतश्चतुरो वेदा: पृष्ठत. सशर धनु.।
इदं ब्राह्म इदं क्षत्र शास्त्रादपि शरादपि।।

द्रुपद आज राजमद में तुझे यह कहने का साहस हुआ है कि एक कंगाल भिखारी ब्राह्मण और सम्राट् की क्या मैत्री ? कहीं बैठकर वेदपाठ कर, परन्तु तुझे केवल मेरा वेदपाठ ही स्मरण रहा, यह ठीक है कि मेरे आगे चारों वेद हैं किन्तु मेरी पीठ पर देख जहा धनुष भी बाणों के साथ शोभायमान हो रहा है। जिस प्रकार की तेरी इच्छा हो, मैं उसी प्रकार से तैयार हूं। तुझे शास्त्र से भी पराजित करूगा और शस्त्र से भी किसी भी प्रकार कम नहीं हू द्रुपद। द्रुपद बेचारा क्या बोलता ? वह तो जानता ही था द्रोण का सांमुख्य शास्त्र से तो क्या मैं शस्त्र से भी नहीं कर सकता। इस प्रकार द्रुपद का मद चूर्ण करके द्रोणाचार्य वापस अपने स्थान को लौट गये।

यह है **'देवा: सहाग्निना'** देव-विद्वान्-ब्राह्मण न केवल क्षत्रियों द्वारा रक्षित रहें अपितु स्वय भी तेजयुक्त, ब्रह्मतेजयुक्त हों, परान्नभोजी नहीं। परान्नभोजी होना मानव को आत्महीन, स्वत्वहीन बना देता है और इस प्रकार के लोग तो न केवल स्वयं में ही अपितु पृथिवी पर भी भार रूप ही होते हैं। ब्रह्मतेजरहित तथा परान्नभोजियों के कारण ही संसार का शिरोमणि राष्ट्र आर्यावर्त पददलित होकर लगभग हजार वर्ष तक विदेशियों द्वारा पराधीनता भोगता रहा तथा सोने की चिडिया न रहकर दर-दर का भिखारी हो गया।

किसी देश को यदि अपने राष्ट्रीय स्वरूप को बनाये रखना है तो उसे अपने यहा ब्रह्मतेज युक्त ब्राह्मण तैयार करने होंगे। तब वह ब्रह्मबल और क्षात्रबल संयुक्तरूपेण राष्ट्र को समुन्नत और सुरक्षित रख सकेंगे और तभी राष्ट्र पुण्य राष्ट्र, आदर्श, वैदिक राष्ट्र बन सकेगा।

महिलाओं के लिए

❑ पं० फूलचन्द्र शर्मा 'निडर', सिद्धान्त शास्त्री धर्मालंकार, भिवानी

श्रद्धेया तथा प्यारी माताओ, बहिनो, बेटियो !

यह आप सब जानती हो कि हमें यह मानव देह बडे ही शुभ कर्मों से मिलती है। अत इसका एक क्षण भी व्यर्थ खोना बुद्धिमानी नहीं है। इस अमूल्य जीवन में आप बिना विचारे अनेक काम ऐसे कर रही हो जिन्हें नहीं करना चाहिए और उन कामों को नहीं कर रही जिन्हें करना चाहिए। आपको क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए इस बारे में हम आपको कुछ मोटी-मोटी बातें बताते हैं। केवल इन बातों को समझने, मानने और इन पर चलने से ही आपका बडा भारी कल्याण हो सकता है। यदि आप इस लोक में और परलोक में सच्चा सुख चाहती हो तो इन बातों को मानो और इन्हीं पर चलो –

१ ईश्वर एक है, वह निराकार है, उसका कोई रंगरूप नहीं होता। उसको कहीं भी ढूढने जाने की आवश्यकता नहीं। वह प्रत्येक काल में है और प्रत्येक स्थान पर है। वह सच्चिदानन्दस्वरूप, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम और सर्वाधार है। जगत् की रचना करने वाला, उसे पालने वाला, प्रलय करने वाला, सूरज चान्द को बनाने और चलाने वाला। धरती, आकाश, हवा, पानी तथा आग को बनाने वाला। धर्मात्माओं को सुख तथा पापियों को दुःख देने वाला है। सबको इस ईश्वर की ही उपासना करनी योग्य है।

२ ईश्वर और जीव ये दो भिन्न-भिन्न शक्तियां हैं और ये दोनों स्वरूप से सदा भिन्न ही रहते हैं। कभी एक नहीं हो सकते। हा ईश्वर एक है, वह सर्वव्यापक है और जीव असख्य हैं और एकदेशी हैं अत व्याप्य-व्यापक भाव से जीव ईश्वर मे ही है और रहेगा। वह कभी ईश्वर से पृथक् नहीं हो सकता। यही सिद्धान्त ठीक है। नवीन वेदान्तियो का 'अहम् ब्रह्मास्मि' कहना ठीक नहीं है।

३ ईश्वर कभी कच्छ-मच्छ-सूकर आदि का अवतार नहीं ले सकता। वह निराकार, निर्विकार और सर्वव्यापक है। नस नाडी के बन्धन से रहित है।

४ चार वेद जिनके नाम ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद हैं। ये चारों वेद परमात्मा ने सृष्टि के आदि में अग्नि, आदित्य, वायु, अंगिरा इन चार ऋषियों के आत्माओं में प्रकट किए हैं। यही चारों वेद ईश्वर की वाणी हैं। इनमें जो भी करना लिखा है वही हमको करना चाहिए और जो इनमें छोडना लिखा है उसे छोडना ही चाहिए। वेद पढने का सबको अधिकार है, चाहे स्त्री, शूद्र कोई भी हो।

५ सच्चा मत केवल एक वेद का है। उसे ही मानना और सदा उसी पर चलना चाहिए।

६ ऋषि-मुनि कृत उपनिषद् तथा शास्त्र आत्मा, परमात्मा तथा सृष्टि-विद्या को ठीक-ठीक बताने वाले हमारे धार्मिक ग्रन्थ हैं। प्रक्षिप्त को छोडकर इन ग्रन्थो में जो लिखा है उसे मानना चाहिए। ये सस्कृत के ग्रन्थ हैं, परन्तु महर्षि दयानन्द रचित एक हिन्दी ग्रन्थ है। यह ग्रन्थ बडा ही महान् है। इसमें सृष्टि से लेकर प्रलय तक का प्रत्येक मनुष्य के लिए बहुत ही सुन्दर सुगम रूप में वर्णन किया है। इस ग्रन्थ को हमें अवश्य ही पढना चाहिए। इस ग्रन्थ का नाम 'सत्यार्थप्रकाश' है और यह आर्यों के पास मिलता है।

७ धर्म और सच्चाई एक ही हो सकती है, पर अधर्म और झूठ अनेक होते हैं। हमे धर्म और सच्चाई पर ही चलना चाहिए। अधर्म और झूठ को सदा त्यागना चाहिये। तभी हमारा कल्याण हो सकता है, वरना नहीं।

८ ईश्वर का भजन करना, वेदशास्त्र को मानना, उनमें लिखी बातों पर आचरण करना, पचमहायज्ञादि का करना इत्यादि धर्म में आते हैं तथा प्याऊ आदि लगाना, भूखे को भोजन खिलाना, जानवरों को दाने डालना इत्यादि पुण्य में आते हैं। इन दोनो मे बहुत थोडा अन्तर है और उसे समझना बहुत ही कठिन है। और बेईमानी करना, चोरी करना, झूठ बोलना, किसी जीव को सताना या मारना आदि पाप में आते हैं।

देश, काल और परिस्थिति के अनुसार वही काम जो धर्म या पुण्य कहलाता है अधर्म या पाप हो जाता तथा जो पाप कहलाता है वह धर्म या पुण्य हो जाता है। यथा एक सयाने कुत्ते को रोटी डालना पुण्य है, पर उसके पागल हो जाने पर न केवल उसे रोटी डालना पुण्य नहीं उलटा उसे मार डालना पुण्य है। किसी मनुष्य की हत्या करना पाप है, पर फौज में शत्रु के आदमियों का मारना और डाकू चोर आदि दुष्ट मनुष्यों का मारना पुण्य है। काले साप, भिरड, ततैया आदि का जंगल में मारना पाप पर घर मे मारना पुण्य है। इसी प्रकार चूहे, मक्खी, मच्छर, खटमल आदि के कष्ट से बचने के लिए तथा खेती बाडी को हानि से बचाने के लिए टिड्डी, फंडका, कातरा आदि को भगाना या मारना भी पडे तो इसमें कोई पाप नहीं है।

९ यज्ञोपवीत पहनना स्त्री पुरुष दोनों का समान अधिकार और कर्त्तव्य है। जो भाई स्त्रियों का यज्ञोपवीत नहीं मानते वे बडी भारी भूल में हैं। (इस विषय में सारी बातें विद्वानों से पूछें)।

१० प्रत्येक प्राणी सुख की इच्छा करता है और सबसे लम्बा तथा सबसे बढिया सुख मोक्ष है। यह मोक्ष सुख मनुष्य योनि से ही सच्चे ज्ञान और जन्म-जन्मान्तर के अत्यन्त शुभ कर्मों से प्राप्त होता है। मोक्ष को मुक्ति तथा अपवर्ग आदि भी कहते हैं।

११ मोक्ष भी जीव का सदा के लिए नहीं हो सकता अपितु मोक्ष से भी जीव को पुन लौटकर आना पडता है। मोक्ष की अवधि ब्रह्म के १०० वर्ष अर्थात् ३६००० बार सृष्टि की रचना और प्रलय के बराबर समय तक की होती है। हमारे वर्षों में इसकी गणना ३१४०१०००००००००० वर्ष है। अर्थात् मोक्ष होने पर इतने वर्षों तक जीव मोक्ष में रहता है।

१२ राम-राम, कृष्ण-कृष्ण, गगा-गगा अथवा हरे राम-हरे कृष्ण आदि रटने से कोई लाभ नहीं है। यदि जाप करना हो तो ईश्वर के मुख्य नाम 'ओ३म्' तथा गायत्री मन्त्र का जाप इनके अर्थज्ञान पूर्वक करना चाहिए। जाप के उपरान्त यदि आचरण भी शुद्ध हो तो अवश्य कल्याण हो सकता है।

१२ स्वास्थ्यविनाशक, अधर्म, हिंसा, अन्याय से कमाए तथा ठीक से न बने हुए और कच्चे अन्न के खाने में दोष है। किसी शूद्र स्त्री पुरुष के (जबकि वे शुद्ध पवित्र होकर भोजन बनावें) हाथ का बनाया भोजन खाने मे कोई दोष नहीं है।

१४ ईश्वरोपासना, पुण्य-दान, स्वाध्याय-सत्संग, सदाचार, माता-पिता गुरुजनो की सेवा, अहिंसा आदि धर्म के दस लक्षणों का पालन करना ये सब मनुष्यो को देव-पद प्राप्त कराते हैं।

१५ अपने से बडे जीते पूर्वजों, सदाचारी विद्वानों, सच्चे त्यागी महात्माओ, दादा-दादी, माता-पिता, सास-श्वसुर आदि की सेवा शुश्रूषा करनी चाहिए। इसी में कल्याण समझना चाहिए। मरे हुओ को याद करो, उनके चित्रों को घरों में लगाओ। उनकी अच्छी बातों पर चलो, बुरी बातों को छोडो। उनके नाम पर श्राद्धादि करने तथा हाते आदि निकालने से कोई लाभ नहीं है। बिना विचारे कोई भी काम नहीं करना चाहिए।

१६ तीर्थ उसे कहते हैं जिससे तैरा जाए। अत माता-पिता, सास-श्वसुर, सच्चे विद्वान् महात्मा और सन्यासी तथा वेद शास्त्र आदि तीर्थ हैं। किसी जल स्थल आदि को तीर्थ मानना बडी भारी भूल है।

१७ ईश्वर की मूर्ति नहीं हो सकती क्योंकि वह निराकार है अत. किसी पत्थर अथवा धात आदि की मूर्ति बनाकर उसे पूजना व्यर्थ है। यदि मूर्तियों की पूजा करनी है तो माता-पिता, सास-श्वसुर, सच्चे त्यागी, सच्चे सन्यासियो, सच्चे ब्राह्मणों और विद्वानो की चेतन मूर्तियों की पूजा करनी चाहिए। ऐसी चेतन मूर्तियों की पूजा में पुण्य तथा जड मूर्तियो की पूजा मे पाप होता है। चाहे वह देवी, हनुमान, भैरव, श्यामजी, बालाजी, सन्तोषी माता आदि किसी की भी मूर्ति क्यों न हो।

१८ प्रत्येक गृहस्थी को पच महायज्ञ अवश्य करने चाहिए। पच महायज्ञ ये होते हैं – १ **ब्रह्मयज्ञ**–नित्य प्रात सायम् एकान्त मे एकाग्रचित्त से बैठकर वैदिक सन्ध्या पुस्तक के अनुसार भगवान् की स्तुति, प्रार्थना, उपासना करने को ब्रह्म-यज्ञ कहते हैं। २ **देवयज्ञ**–नित्य दो घडी दिन चढे तथा दो घडी दिन रहे तब घी सामग्री से वेदमन्त्रो द्वारा हवन करने को देवयज्ञ कहते हैं। ३. **पितृयज्ञ**– माता-पिता, सास श्वसुर आदि बडो की नित्य श्रद्धा से सेवा शुश्रूषा करके उन्हें तृप्त करना इसे पितृयज्ञ कहते हैं। ४ **बलिवैश्वदेव यज्ञ**–भोजन के समय अन्न के कुछ ग्रास अग्नि में डालना तथा कुछ अभ्यागत और कुत्ते कृमियो तथा पक्षियों के लिए निकालना और **"अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिण । प्र प्रदातार तारिष ऊर्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे"** (यजुर्वेद ११।८३) इस मन्त्र को बोलकर तीन घूट पानी को पीकर भोजन आरम्भ करना चाहिए। इसको बलिवैश्वदेवयज्ञ कहते हैं। ५ **अतिथियज्ञ**–गृहस्थी के घर पर कोई सच्चा सन्यासी, विद्वान् ब्राह्मण आदि आए तो उनको श्रद्धा से भोजनादि कराना और उनके उपदेश आदि से अपने सारे परिवार को लाभान्वित करना। इसे अतिथियज्ञ कहते हैं।

इन पाचो यज्ञो की पूरी विधिया किसी अच्छे जानकार सच्चे कर्मकाडी पण्डित से जाननी चाहिए।

१९ आजकल के समय में दूसरा यज्ञ, **देवयज्ञ** यदि नित्य दोनो समय पार न पडे तो एक ही समय, यदि यह भी न हो सके तो सप्ताह मे एक बार, इतना भी न हो सके तो मास मे दो बार **अमावस्या** तथा **पूर्णिमा** को तो अवश्य होना ही चाहिए।

२० प्रत्येक गृहस्थी को नित्य दो काम तो अवश्य करने ही चाहिए –

(१) अधिक शक्ति हो तो अधिक वरना न्यून से न्यून दो पैसे तो नित्य अवश्य निकालने चाहिए और एक वर्ष में जब उनके ७ रुपये कुछ पैसे बन जावें तब पुण्यार्थ उन्हे किसी सच्चे परोपकारी को दे देना चाहिए।

(२) अपनी शक्ति के अनुसार एक घृत का दीपक सायकाल घर मे नित्य अवश्य जलाना चाहिए।

२१ किसी भी जड मूर्ति की पूजा से अथवा किसी भी फकीर ओलिया, बूझागर, सयाना, पण्डित, पाधा आदि के ढोंग, पाखण्ड, बहकाव आदि से सन्तान का होना, बीमार का अच्छा होना, धन बढना, मुकदमा जीतना अथवा अन्य कोई भी मनोकामना पूरी नहीं हो सकती। अत ऐसे किसी भी व्यक्ति के जाल मे भूलकर भी मत फसो।

२२ गंगा आदि के स्नान, सत्यनारायण आदि की कथा तथा तोबा आदि ये कोई भी कर्म फल को छुडा नहीं सकते, अपने शुभ कर्मो से ही सुख तथा अशुभ कर्मो से दु ख अवश्य ही मिलेगा।

२३ आकाश में सूर्य, चन्द्र तथा पृथ्वी के घूमने से सूर्य चन्द्र ग्रहण होते हैं। ग्रहण के दिन कुरुक्षेत्र आदि में जाकर स्नानादि करने से कोई भी पुण्य नहीं होता। ग्रहण मे सूर्य चन्द्र का राहु केतु द्वारा ग्रसा जाना मानना यह मिथ्या और अन्धविश्वास है।

२४ यह बात कदापि मानने योग्य नहीं है कि किसी सम्प्रदाय के मानने से चाहे कोई कितना ही पापी हो स्वर्ग तथा किसी दूसरे सम्प्रदाय के मानने से चाहे वह कितना ही धर्मात्मा हो नरक मिल सकता है।

२५ पशु-पक्षियों अथवा मनुष्यों की बलि देने से कोई भी देवी-देवता सन्तुष्ट या प्रसन्न नहीं हो सकता। धर्म अथवा यज्ञादि के नाम पर मन्दिरों आदि में पशु आदि की हिंसा करना घोर पाप और अत्याचार है। इन्द्रियों का दमन, अग्निहोत्र का अनुष्ठान, किसी भी दीन दुखी की सेवा, भले कामों में दान तथा सदाचारी विद्वानों का सत्संग यज्ञ कहलाते हैं।

२६ स्वर्ग और नरक कहीं आकाश में नहीं है, वरन् इस धरती पर ही सुख विशेष का नाम स्वर्ग तथा दुःख विशेष का नाम नरक है। दरिद्रता, रोग, विषयविलासिता, परिवार आदि में कलह, मुकदमा, बेरोजगारी, सन्तानादि की मृत्यु ये नरक हैं। और स्वास्थ्य, सम्पत्ति, ऐश्वर्य, सम्मान, अच्छे पति-पत्नी, अच्छी सन्तान, दान-पुण्य, अच्छे विचार ये स्वर्ग हैं।

२७ भूत-प्रेत कोई योनिया नहीं हैं, वरन् भूत नाम बीते हुए का तथा प्रेत नाम शव (जीवरहित शरीर) का होता है। इन नामों से डरना या किसी को डराना व्यर्थ है। इसी प्रकार, डाकण, शहारी तथा कोको, हाऊ आदि के भी भ्रम हैं। ये सब मूर्खो तथा ठगो की बातें हैं। इनमें कोई भी सार नहीं है।

२८ झाडे-झपटो तथा गडे ताबीजों से कदापि कोई रोगादि दूर नहीं हो सकते। रोगनिवृत्ति के लिए पथ्य तथा औषध आदि का ही सेवन करना चाहिये।

२९ स्त्रिया पुत्र होने तथा उनकी खैर आदि मनाने के लिए चौराहों पर चावल आदि रखकर, पानी डालकर दीपक जलाती हैं। इससे पुत्र आदि तो क्या होंगे ये उल्टा पाप होता है। क्योंकि उन चावलों से आने-जाने वालों का मार्ग रुकता है, सडक खराब होती है और वे किसी मनुष्य के खाने मे काम आते नहीं, उसकी बजाय उन्हें सूअर गधे आदि खाते हैं और कुछ सडक पर ही व्यर्थ भी जाते हैं।

३० अपने कर्म-फलो तथा आगे-पीछे की जानने तथा किसी मनुष्य अथवा पशु या किसी वस्तु के खोई जाने पर किसी बूझागर तथा ज्योतिषी आदि से जाकर पूछना यह महा पागलपन है। वे महामूर्ख और ठग होते हैं। उन्हें अपना ही कुछ पता नहीं होता, दूसरों की वे क्या बताएगे ? इन बातों को ईश्वर ही जान सकता है, अन्य कोई नहीं। ऐसे अवसरों पर बुद्धिपूर्वक अपना पुरुषार्थ करना चाहिए। इस पर भी यदि कुछ न हो तो अपने कर्मफलो पर ही अटल विश्वास करके सन्तोष करना चाहिए।

३१ नवग्रह आदि जो आकाश में ईश्वर की शक्ति से घूम रहे हैं उनका कर्म-फल की दृष्टि से मनुष्यों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ सकता। सूर्य चन्द्रमा आदि द्वारा धूप-छाया आदि का प्राकृतिक प्रभाव ही हम पर पडता है, जो सब के लिए समान है। इसके अतिरिक्त कहीं यात्रा पर जाने आदि में दिशाशूल आदि बोलकर वारों, मासों तथा तिथियों आदि का अथवा बिल्ली का रास्ता काटना, कुत्ते का कान मारना, सोहनचिडी, हिरण आदि का बाएं आना, गधे का बाए रींकना तथा छींक आदि का आना, इनसे अच्छा-बुरा कुछ भी नहीं होता। ये सब भ्रम हैं। इन्हें निकाल देना चाहिए। और एकमात्र ईश्वर तथा अपने कर्मो पर भरोसा रखना चाहिए।

३२ विवाहादि के समय साहा आदि अथवा मुहूर्त्त आदि देखना नितान्त व्यर्थ है। जो होना है सो होता है। बढिया से बढिया (?) साहे देखकर विवाह करने पर भी नित्य जोड़े बिछुडते तथा लडकी विधवा और लडके विधुर होते देखे जाते हैं। फिर भी समझ नहीं आती, आचर्श्य है ?

३३ जैन आचार्य अन्न पकाने में पाप मानता है अत जब वह भिक्षा मांगता है तब गृहस्थी से पूछता है कि 'यह भोजन हमारे लिए तो नहीं पकाया ? इसमें यह भाव है कि यदि गृहस्थी ने उस आचार्य के लिए वह भोजन पकाया हो तो वह पाप जो उस अन्न के पकाने मे लगा सारा का सारा उस साधु (आचार्य) को लगेगा अत. उनकी (जैन आचार्यो की) यह भावना रहती है कि यह पाप गृहस्थी को लगे, हमें न लगे। अब विचार करना चाहिए कि साधु की यह भावना कि गृहस्थी चाहे पापी हो पर उसे (साधु को) पाप न लगे कितना छोटापन रखती है। कहा तो एक ईसाई पादरी जो अपने भक्तों के पापो की गठरी अपने सिर पर धरके चला गया और कहा ये जैन साधु जो इतने स्वार्थी हैं कि जिनका अन्न मागकर खाते हैं वे चाहे पाप करके नरक में पडें, पर साधु जी को आंच न आये। जैनी लोग अन्न पकाए साधु के लिए, पुण्य कमाने के लिए, पर बनें उल्टा पापी। विचित्र फिलोसफी है इन लोगो की।

इसी प्रकार मुसलमान, ईसाई तथा अन्य सभी मत वालों की लीला है। अत यदि कल्याण चाहती हो तो सब बहन बेटी मिलकर तुरन्त **आर्यसमाज** की शरण में आओ।

३४ हमें सत्य को ही मानना और उसी पर चलना चाहिए। चाहे वह किसी की भी हो। झूठ चाहे किसी की भी हो उसे नहीं मानना और त्यागना चाहिए।

३५ सभी काम धर्मानुसार (धर्म के अनुसार हो तो करना नहीं तो नहीं करना) सत्य और असत्य (सत्य हो तो करना असत्य हो तो नहीं करना) को विचारकर करने चाहिए। बिना विचारे कोई भी काम नहीं करना चाहिए।

३६ अपना ही भला चाहना दूसरों का चाहे बुरा हो, यह मनोवृत्ति अच्छी नहीं है, वरन् सबकी उन्नति मे अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

३७ ब्राह्मणादि वर्ण गुण कर्मों से होते हैं जन्म से नहीं। यदि कोई ब्राह्मण घर में जन्म लेकर बुरे काम करता है तो वह ब्राह्मण कहलाने योग्य नहीं है और कोई छोटे कुल में जन्म लेकर ऊंचे काम करता है तो वह ऊंचा है। ऐसे ही मानना है। इससे ऊंचा गिरेगा नहीं और छोटा चढेगा। जन्म के आधार पर वर्ण-व्यवस्था मे से ऊंचा गिरता है और छोटा उठ नहीं सकता।

३८ एक स्त्री जो बुरा सोचती है और बुरा करती है। अपने माता-पिता, सास-श्वसुर की सेवा नहीं करती उलटा उन्हें दुःख देती है, पर वह नित्य माला फेरती है, मन्दिर जाती है, सूरज को पानी देती है। धिक्कार है ऐसी स्त्री को। दूसरी स्त्री सब अच्छे काम करती है, अपने से बड़ों माता-पिता, सास-श्वसुर आदि को प्रसन्न रखती है और उनकी सेवा करती है, पर मन्दिर में कभी नहीं जाती, माला नहीं फेरती, सूरज को पानी नहीं देती। वह स्त्री दर्शनों के योग्य है और अच्छी है। पहली स्त्री नरक में और दूसरी स्वर्ग में जाएगी।

३९ इस समय हमारे देश में झूठ-फरेब, छल-कपट, हेरा-फेरी, धोखे-बाजी, बेईमानी, बदमाशी, अनेक प्रकार की चालाकी तथा ठगी का कोई ठिकाना नहीं रहा है, इस वास्ते तुम्हें बहुत ही सचेत और होशियारी से काम लेना चाहिए, वरना तुम्हारे धन और चरित्र दोनों के ही ठगे जाने में देर नहीं लगेगी।

४० तुम्हें जो भी मिलेगा, अपने कर्मों के अनुसार मिलेगा। परमात्मा के घर में किसी की भी रू रियायत नहीं है। वह किसी की भी सिफारिश नहीं मानता है।

४१ ईश्वर जीवों को कर्मों का फल अवश्य देता है। ऐसा नहीं हो सकता कि कोई कर्म तो कर देवे और फल न मिले। और जैसा जीव करता है वैसा तथा जितना करता है उतना ही मिलता है। इसमें भी न्यूनाधिकता नहीं होती।

४२ किसी भी पूजा पाठ आदि के कराने से कर्म का फल नष्ट नहीं हो सकता। कर्मफल अवश्य भोगना ही पडता है।

४३. बिना किए कोई फल नहीं मिल सकता और न ही कभी एक के किए का फल दूसरे को मिल सकता है। जब कभी ऐसा दीखता है कि कर कोई रहा है और भोग कोई रहा है, तब भोगने वाले का वह फल पिछले जन्म का समझना चाहिए और करने वाले को उसका फल अगले जन्म मे मिलेगा, ऐसा समझना चाहिए।

४४. मुसलमान, ईसाई, जैनी, राधास्वामी, ब्रह्मकुमारी, आनन्दमार्गी, निरकारी, साईंबाबा, बालयोगेश्वर, वाममार्गी, रजनीश आचार्य आदि सबकी ईश्वर तथा सृष्टि के विरुद्ध भिन्न-भिन्न मान्यताएं हैं, और ये सब पंथ अपने-अपने स्वार्थ तथा नामगिरी के लिए मनुष्यों के घढे हुए हैं। अत ये सब झूठे हैं, गड्ढों में ले जाने वाले हैं। कभी भूलकर भी इन्हें नहीं अपनाना चाहिए। और कभी इनके जाल में नहीं फंसना चाहिए।

४५ रामायण-गीता के पढने मात्र से हमारा कल्याण नहीं हो सकता। राम और कृष्ण के जीवन से हमें शिक्षा लेनी चाहिए और सीता सावित्री सी बनकर हमें दिखाना चाहिए।

४६ अपने घर के सब पदार्थों तथा वस्तुओं को सदैव ठीक ठिकाने रखना और अपने घर को बुहार झाड उसके जाले आदि उतारकर उसे साफ सुथरा रखना चाहिए।

४७ व्यवहार मे किसी के साथ छल कपट, बेईमानी मत करो और सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार बर्ताव किया करो तथा सबसे मीठा बोलो। गाली आदि कभी मुंह से मत निकालो।

४८. अपने पुत्र-पुत्रियों को सदा अच्छी शिक्षा दो, अच्छी बातें सिखाओ, गाली-गलौच, सिगरेट-बीड़ी, मांस, अण्डा-शराब, सिनेमा आदि से उन्हें बचाओ। उन्हें दादाजी, दादीजी, माताजी, पिताजी, बहिनजी, भाईजी आदि अपने हिन्दी सस्कृत के सम्बोधन सिखाओ। मम्मी, डैडी, फादर, मदर, सिस्टर, ब्रदर आदि इंग्लिश सम्बोधन कभी मत बोलने दो।

(क्रमशः)

आर्य-संसार

हरयाणा राज्य गोशाला संघ द्वारा गोरक्षा यात्रा १ जुलाई से आरम्भ होगी

हरयाणा राज्य गोशाला संघ के प्रधान आचार्य बलदेव जी कालवा (जीन्द) ने एक प्रेस विज्ञप्ति में कहा है कि हरयाणा प्राचीनकाल से दूध दही खाने के नाम से प्रसिद्ध रहा है, परन्तु आज हरयाणा में ८५ हजार गायें बेवारिस हो जाने के कारण गन्दगी में मुंह मारती हुई आवारा घूमती हुई दिखाई दे रही हैं और कसाई लोग अवसर मिलते हीं इन्हें हत्ये का शिकारा बना लेते हैं। आचार्य जी ने इसे हरयाणा की जनता पर बहुत बड़ा कलंक बताया है और हरयाणावासियों से अपील की है कि प्रत्येक घर में एक गाय पालें तथा इन गायों को बचा लें। गोरक्षा का यही एकमात्र उपाय है। आचार्य बलदेव जी ने सूचना देते हुए बताया कि इसी उद्देश्य को पूरा करने के लिए हरयाणा राज्य गोशाला संघ द्वारा १ जुलाई २००२ से गोरक्षा यात्रा का कार्यक्रम निम्न प्रकार बनाया गया है।

१ जुलाई से दोपहर बाद १ बजे जाट धर्मशाला जींद से यात्रा आरम्भ होगी। इसका उद्घाटन श्री माधवाश्रम के शंकराचार्य करेंगे। रात्रि को ग्राम किनाना (जीन्द) मे गोरक्षा सम्मेलन होगा। इसी प्रकार २ जुलाई को जुलाना (जीन्द), ३ जुलाई को लाखनमाजरा (रोहतक) में, ४ जुलाई को भगवतीपुर (रोहतक) तथा ५ जुलाई को ६ बजे यात्रा रोहतक पहुंच जावेगी और आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ रोहतक के बलिदान भवन में रात्रि ८ बजे सम्मेलन होगा। जिसमें गोभक्त नेता जनता को सम्बोधित करेंगे। ६ जुलाई को ग्रामों में गोरक्षा का सन्देश देती हुई यह यात्रा पानीनत में समाप्त होगी।

आचार्य बलदेव जी ने आर्यसमाज, बजरग दल, शिवसेना, साधु मण्डल, हरयाणा सर्वखाप पचायत, किसान यूनियन आदि सभी गोशालाओं तथा गुरुकुलों के कार्यकर्ताओं से अनुरोध करते हुए कहा है कि इस परोपकारी कार्य में पूरा सहयोग देकर ८५ हजार गायों को आवारा नाम से घूमने के काले धब्बे को हरयाणा की पवित्र धरती से समाप्त करें।

—केदारसिंह आर्य, उपमन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक

आर्यजनों की सेवा में,

स्पष्टीकरण, सुझाव व निवेदन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के विगत चुनाव के अवसर पर सभा के दो समानान्तर निर्वाचन हुए। श्री कैलाशनाथसिह जी के पक्ष ने मेरा नाम भी अधिकारियों की सूची मे प्रकाशित किया था। मेरे पास अनेक समाजों व व्यक्तियों के पत्र आए कि आपको गुटबाजी में नहीं पडना चाहिए। निर्वाचन से पहले ही मैं यह मन बना चुका था कि मुझे निष्पक्ष रहकर कार्य करना है। मैंने श्री प्रो० कैलाशनाथसिंह जी को पत्र द्वारा निवेदन कर दिया था कि आप भविष्य मे मेरा नाम प्रकाशित न करे। मैं किसी भी पक्ष में नहीं हूं।

मैं नहीं चाहता था कि मैं पत्र-पत्रिकाओ में कुछ लिखूं। परन्तु मेरे पास प्राय· पत्र आ रहे हैं कि आप किस पक्ष के साथ हैं ? कुछ सज्जन फोन पर पूछते हैं कि आप किसके साथ है। मेरा आर्यजनों की सेवा मे निवेदन है कि मैं वर्तमान मे किसी भी सार्वदेशिक या प्रान्तीय सभा में किसी भी पद पर नहीं हू तथा न ही किसी पक्ष-विपक्ष में हू। मेरा पक्ष मात्र वेद और दयानन्द है। मैंने इसी भावना से सन् १९९८ मे राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्वचन में भाग नहीं लिया था।

मैंने सन् १९९६ में राजस्थान के सीकर जिले, पिपराली ग्राम में वैदिक आश्रम की स्थापना कर दी थी। इसी सस्था के माध्यम से मैं कार्य कर रहा हू। अनेक कार्यक्रम इस संस्था के माध्यम से किए हैं। पिछले छह मास में ही राजस्थान में अनेक पारायण यज्ञ, युवकों के शिविर तथा प्रचार कार्यक्रम कर चुका हूं। लगभग २०० विद्यालय, महाविद्यालयों में व्याख्यान दिए हैं तथा १६७ विद्यार्थियों में नि शुल्क साहित्य भेंट किया है जिसमें सत्यार्थप्रकाश, महर्षि दयानन्द जीवन चरित्र व महर्षि दयानन्द के चित्र दिए गए हैं। प्रतिवर्ष एक माह की प्रचार यात्रा करता रहा हू। इस वर्ष एक अगस्त से प्रारम्भ कर रहा हू। दो माह की इस यात्रा में प्रतिदिन एक विद्यालय में कार्यक्रम होगा। रात्रि को किसी एक ग्राम में वेदप्रचार तथा प्रात काल यज्ञ होगा। इस यात्रा मे मेरे साथ अनेक संन्यासी, वानप्रस्थी तथा भजनमण्डलिया होंगी। अत मैंने अपना कार्य आश्रम के माध्यम से प्रारम्भ कर दिया है। ऋषिभक्त आर्यजनो का सहयोग मिल रहा है। देश के अन्य प्रान्तो में भी समय-समय पर जाता रहा हूं। मध्यप्रदेश, गुजरात, पजाब, हरयाणा, उत्तरप्रदेश तथा कलकत्ता मे गत दिनों कार्यक्रम दिए हैं। अत वैदिक धर्म के प्रचारार्थ जहां भी मुझे आमंत्रित किया जायेगा मैं वहां पर जाऊगा, परन्तु आर्यसमाज की गुटबाजी से मैंने अपने आप को सर्वथा पृथक कर लिया है।

नोट :- अनेक सज्जनों के पत्र आर्यसमाज, नयाबांस, दिल्ली या जयपुर में आर्यसमाज, कृष्णपोल बाजार में आ रहे हैं। जो मुझे समय पर नहीं मिल पाते हैं। अत· पत्र व्यवहार करने वाले आर्यजन, मुझसे निम्नलिखित पते पर ही पत्र व्यवहार करें— —**स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती**, अध्यक्ष वैदिक आश्रम, पिपराली, जिला सीकर (राजस्थान) पिन कोड ३३२०२७ दूरभाष · ०१५७२-२६३७४

चित्रकला प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

आर्यसमाज हाथीखाना, राजकोट, गुजरात द्वारा आयोजित चित्रकला प्रशिक्षण शिविर दिनांक १०-६-२००२ को सम्पन्न हुई। बीस दिन के लिए आयोजित इस शिविर मे ६० विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया, जिन्हें आर्यसमाज और स्वामी दयानन्द के अनन्य भक्त, गुजरात के प्रसिद्ध चित्र कलाकार श्री अशोक सघवी ने नियमबद्धता पूर्वक प्रशिक्षित किया और अन्त में परीक्षा ली। इसी दौरान उन्होंने विद्यार्थियों को वैदिक सिद्धान्तो से भी परिचित कराया।

इस नि शुल्क शिविर को सफल बनाने के लिए आर्यसमाज के प्रधान श्री पोपट भाई चौहान और मत्री श्री रणजीतसिह परमार जी ने अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

वार्षिक चुनाव

आर्यसमाज रेलवे रोड, अम्बाला शहर की साधारण वार्षिक चुनाव सभा दिनाक १६-६-२००२ में सर्वसम्मति से श्री सुरेन्द्र कुमार जी को ११वीं बार प्रधान व श्री धर्मवीर आर्य जी को १०वीं बार मन्त्री चुना गया। इसके साथ-साथ उन्हें अपनी कार्यकारिणी (अन्तरग सभा) के सदस्यो को मनोनीत करने का अधिकार भी सर्वसम्मति से दिया गया।

—धर्मवीर आर्य, मन्त्री, आर्यसमाज रेलवे रोड, अम्बाला शहर

वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज मिर्जापुर बाछौद (जिला महेन्द्रगढ) का वार्षिक आर्य सम्मेलन १०-११ जून सोमवार मंगलवार को बडी धूमधाम से मनाया गया जिसमें पं० रामरख आर्य, प० ताराचन्द वैदिक तोप नारनौल, आर्य भजनोपदेशक एव आचार्य प्रद्युम्न जी गुरुकुल खानपुर आचार्य परमेदव जी गुरुकुल खोल एव स्वामी धीरेश्वरानन्द सरस्वती एव अन्य विद्वानों ने अपने कार्यक्रम दिये तथा प्रात दोनो दिन स्वामी धीरेश्वरानन्द ने यज्ञ में ब्रह्मा का दायित्व समझाया।

मन्त्री—आर्यसमाज मिर्जापुर बाछौद

आर्यसमाज के उत्सवों की सूची

१	आर्य हिन्दी महाविद्यालय चरखदादरी (भिवानी)	२९ से ३० जून २००२
२	गोरक्षा सम्मेलन, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, बलिदान भवन, दयानन्दमठ, रोहतक (रात्रि ८ बजे)	५ जुलाई, २००२
३	आर्यसमाज शेखपुरा खालसा जिला करनाल	२५ से २७ अक्तूबर २००२

—सुखदेव शास्त्री, सहायक वेदप्रचाराधिष्ठाता

दण्डी जी की एक सम्पूर्ण तथा सर्वांगीण जीवनी–

प्रो० रामप्रकाश प्रणीत गुरु विरजानन्द दण्डी : जीवन एवं दर्शन

❑ डा भवानीलाल भारतीय, ८/४२३ नन्दनवन, जोधपुर

अपने विद्या गुरु, आर्षशास्त्रो के पुनरुद्धारक तथा पाणिनीय व्याकरण के अद्वितीय प्रचारक दण्डी विरजानन्द का प्रथम परिचय खुद स्वामी दयानन्द ने जब ४ अगस्त, १८७५ को पूना नगरी मे प्रदत्त अपने अन्तिम प्रवचन मे दिया तो वह अत्यत सक्षिप्त, मात्र कुछ पंक्तियों में समाप्त होने वाला था। कालान्तर मे जब प० लेखराम ने अपने द्वारा एकत्र आधारभूत सामग्री का सहारा लेकर ऋषि दयानन्द का उर्दू जीवन चरित लिखा (वस्तुत अपूर्ण) तो उसमे विरजानन्द के विषय मे एक विस्तृत परिचयात्मक अध्याय भी जोडा गया। तत्पश्चात् देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय ने स्वय के अनुसधान और गवेषणा के आधार पर दण्डी जी का एक सुन्दर जीवन चरित बगला भाषा में लिखा। इस बात का तो खेद रहा कि यह ग्रन्थ जिस बगला भाषा मे लिखा गया, उसमें तो प्रकाशित नहीं हो सका किन्तु मुखोपाध्याय महाशय के साथी एव मित्र प० घासीराम के सदुपयोग से यह हिन्दी में छप गया। लिखने को तो स्वामी वेदानन्द तीर्थ ने भी भावनाप्रवण शैली मे दण्डी जी का जीवन चरित लिखा किन्तु इसमें भाषा लालित्य तो था किन्तु कल्पना की उडान अपनी सारी सीमाओं का उल्लघन कर गई थी।

१९५९ में ऋषि दयानन्द की दीक्षा शताब्दी के अवसर पर कोटा निवासी प्रो० भीमसेन शास्त्री ने दण्डी जी का एक शोधपूर्ण जीवन चरित लिखा जो रामलाल कपूर ट्रस्ट से प्रकाशित हुआ। शास्त्री जी ने दण्डी की जीवन घटनाओ, तिथियों तथा अवान्तर प्रसगो की पर्याप्त छानबीन की। वे मथुरा निवासी उन लोगों से भी मिले तथा उनसे जानकारी ली जिन्हें दण्डी जी के बारे मे परम्परागत जानकारी प्राप्त थी। गुरु विरजानन्द के अन्य छोटे-बडे जीवन चरित उक्त ग्रन्थों के आधार पर ही लिखे गये हैं।

प्रो० रामप्रकाश (भूतपूर्व प्रोफेसर रसायन, पजाब विश्वविद्यालय) ने अपने बहुविध व्यस्त जीवन के कुछ महत्त्वपूर्ण क्षणो को दण्डी के जीवन लेखन मे जब लगाया तो यह विश्वास करना पडा कि निश्चय ही उनके परिश्रम का सुपरिणाम एक सुन्दर, सर्वांगीण तथा अद्यतन उपलब्ध सामग्री पर आधारित एक ऐसा जीवन चरित होगा जो प्रज्ञाचक्षु महाराज के सुदीर्घ जीवन तथा क्रियाकलाप को समग्रता से प्रस्तुत करेगा। अन्तत यह जीवनी प्रकाशित होकर पाठको के हाथो मे आ गई है। इससे पहले भी प्रो० रामप्रकाश ने मुनिवर प० गुरुदत्त के समग्र साहित्य का जैसा सुचारु सपादन किया था वह अपने में अद्वितीय था। सत्रह अध्यायो तथा पाच परिशिष्टों में समाप्त यह जीवन चरित दण्डी जी के जीवन एव कृतित्व के सभी पहलुओं का सागोपाग विवेचन सरल किन्तु परिमार्जित शैली मे प्रस्तुत करता है। लेखन कर्म को आरम्भ करने से पहले लेखक ने दण्डी जी के जीवन से सम्बद्ध अनेक स्थानो का भ्रमण किया तथा आवश्यक जानकारी प्राप्त की। दण्डी जी के जन्मस्थान और जन्म ग्राम की गवेषणा मे वे करतारपुर के निकटवर्ती स्थानो में गये तथा तत्कालीन समय एव स्थितियों की जानकारी ली। इसी प्रकार मथुरा, हरिद्वार, अलवर आदि स्थानो पर जाकर आवश्यकताओ का सकलन इस तथ्य को स्पष्ट करता है कि लेखक ने कितनी निष्ठा तथा तथ्यान्वेषण की भावना से अपने कार्य को किया है। मथुरा मे व्यवस्थित होकर पाठशाला का जीवन पर्यन्त सचालन करने से पहले दण्डी जी ने उत्तर भारत के विभिन्न स्थानों का विस्तृत भ्रमण किया था। किशोरावस्था में घर छोडने के पश्चात् वे हृषीकेश से कोलकाता तक गये थे। सोरो, अलवर तथा मुरसान मे उन्होंने पर्याप्त समय तक निवास किया था। विभिन्न स्थानों पर दण्डी जी के आवागमन के समय चक्र को निर्धारित करने मे लेखक ने पर्याप्त श्रम किया है और इस प्रकार दण्डी जी के सुदीर्घ जीवन की रूपरेखा स्पष्ट हो सकी है। पं० भीमसेन शास्त्री ने अनेकत्र अनुमानो का सहारा लेकर जो निष्कर्ष निकाले हैं, लेखक ने उनकी युक्ति सारिणी से उनका निराकरण किया है। निष्कर्षत कहा जा सकता है कि पूर्व लिखित जीवन चरितों का आधार लेकर भी डा० रामप्रकाश ने उनमें आई असावधानियो और त्रुटियों को दूर रखा है।

प्रत्येक अध्याय के अन्त में दी गई पाद टिप्पणिया इस तथ्य की परिचायक हैं कि लेखक ने अपनी उपपत्तियो को प्रामाणिकता के साथ सिद्ध किया है। मथुरा के गजेटियर तथा अन्य इसी कोटि की ऐतिहासिक सामग्री के उपयोग ने इस दण्डी आख्यान को प्रामाणिकता प्रदान की है। दण्डी जी ने जो दो-तीन सस्कृत व्याकरण विषयक ग्रन्थ लिखे थे, उनकी साधारण जानकारी ही अब तक हमे थी। किन्तु **शब्दबोध, वाक्य मीमांसा** तथा **पाणिनीय सूत्रार्थप्रकाश** पर एक पूरा अध्याय लिखकर प्रो० रामप्रकाश ने दण्डी जी के लेखन का तात्त्विक विश्लेषण उपस्थित कर दिया है। निश्चय ही पाणिनीय सूत्रार्थप्रकाश का बहुलांश दण्डी जी प्रणीत नहीं है और उस पर संस्कृत विद्यानन्दवर्धिनी टीका लिखने वाले प० अखिलानन्द शर्मा ने इस ग्रन्थ में बहुत कुछ मिलावट की है। इसमें स्वामी दयानन्द और आर्यसमाज विषयक संदर्भ निश्चय ही दण्डी जी रचित नहीं हो सकते। दण्डी जी का निधन तो १८६९ में, आर्यसमाज की स्थापना के छ वर्ष पूर्व हो गया था।

दण्डी जी के जीवन के विभिन्न पहलू इस ग्रन्थ में विस्तार से चर्चित हुए हैं। आर्ष व्याकरण के प्रचार मे उनकी अनन्य निष्ठा, वैष्णवादि सम्प्रदायों के कारण उत्पन्न धार्मिक अराजकता से उनकी खिन्नता, सस्कृत के अध्यापन में उनकी प्रगाढ रुचि, स्वामी दयानन्द को लेकर उनकी आशाए आदि प्रसग सावधानी पूर्वक विवेचित किये गये हैं। 'शतशत नमन' शीर्षक ग्रन्थ का अन्तिम अध्याय यो तो लेखक की अपने आराध्य दण्डी जी के प्रति श्रद्धा समन्वित भावाञ्जलि है, किन्तु इसके प्रत्येक अनुच्छेद मे लेखक ने प्रज्ञाचक्षु सन्यासी के मानसिक तथा बौद्धिक गुणों का सम्यक् आकलन कर दिया है। परिशिष्टों में वह सामग्री यथाक्रम प्रस्तुत कर दी गई है जो समय-समय पर प्रकाश में आई थी। नवनीत चतुर्वेदी के दण्डी जी विषयक ब्रजभाषा के कवित्त, सार्वभौम सभा का विवरण पत्र, दण्डी जी का जयपुर नरेश महाराजा रामसिह को प्रेषित पत्र, यह सब जीवन चरित पाठकों को चरित नायक के बारे मे अतिरिक्त जानकारी देते हैं। सदर्भ ग्रन्थो तथा दण्डी जी के जीवन चरितों की अद्यतन सूची पाठकों को अतिरिक्त जानकारी प्राप्त करने के स्रोत बताती है। पुस्तक को अन्तिम रूप देने के पहले प्रो० रामप्रकाश से विस्तृत पत्राचार करने तथा चण्डीगढ में कई बैठको मे उनसे प्रत्येक विषय पर व्यापक विचार विमर्श करने का मुझे जो अवसर मिला उसने ही इस समीक्षा के लेखक को निश्चय करा दिया था कि प्रज्ञाचक्षु जी का यह जीवन चरित अपने विषय की अपूर्व एव अद्वितीय कृति होगी।

स्वास्थ्य रक्षा के मूल सूत्र

१ प्रतिदिन प्रात काल सूर्य उदय होने से पूर्व उठ जाना चाहिये।
२ प्रतिदिन क्षमता के अनुसार व्यायाम करना चाहिए।
३ प्रतिदिन दात साफ करते समय जीभ और गला भी साफ करें।
४ स्नान करते समय साबुन का प्रयोग कम करे अपितु खद्दर के तौलिये से रगड-रगडकर शरीर साफ करे।
५. भोजन भूख लगने पर शान्तिपूर्वक चबा-चबाकर खाये। जल्दी-जल्दी खडे होकर फिक्र (चिन्ता) से भोजन न करे। ठूस-ठूसकर न खाये। भोजन करते समय शोक, क्रोध और बातें न करे। भोजन करने से पहले और बाद मे हाथ धोना आवश्यक है। हमेशा सात्त्विक और सुपाच्य पदार्थो का ही सेवन करें। भोजन करने के बाद स्नान करना हानिकारक है।
६ दिन मे बार-बार चाय पीने से दातो और आतो को नुकसान होता है।
७ पीने के पानी को छानकर ढक कर रखे।
८ मीट-मछली-अण्डे मनुष्य का भोजन नहीं है। इनके खाने से शरीर मे भयकर रोग लग जाते हैं। धूम्रपान और मद्यपान शरीर को निर्बल जर्जर बना देते हैं।
९ मल-मूत्र आदि वेगो को शीघ्र दूर करना चाहिए। इनके धारण करने से अनेक प्रकार के रोग हो जाते हैं।
१० घी और शहद समान मात्रा मे मिलाकर नहीं खाना चाहिये।
११ शौच जाने से पूर्व पानी पीना लाभदायक है। बाद में हानिकारक है।
१२ मल त्याग करने के बाद गर्म पानी से गुदा को नहीं धोना चाहिये।
१३ दीपक या मोमबत्ती को फूक मारकर नहीं बुझाना चाहिये।
१४ उत्तर दिशा की ओर सिर करके नहीं सोना चाहिये।
१५ सप्ताह मे एक बार तलवो मे तेल की मालिश करनी चाहिये।
१६ खरबूज, तरबूज, ककडी खाने के बाद पानी पीना हानिकारक है।
१७ जैसे ग्रीष्म ऋतु मे प्याज का सेवन लाभदायक है ऐसे ही हेमन्त ऋतु मे लहसन खाना उपयोगी है।
१८ धूल और धुआ से बचना आंखों और फेफडों के लिये हितकर है।

ऐसी बहुतसी बातें हैं जिनका ध्यान रखना चाहये। किसी को कोई शका हो तो निम्न पते पर सम्पर्क करके समाधान कर सकते हैं।

–देवराज आर्य मित्र, आर्यसमाज कृष्णनगर, दिल्ली-५१

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ०१२६२–७६८७४, ७७८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ०१२६२–७७७२२) से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३ सृष्टिसंवत् १, ९६, ०८, ५३, १०३
पंजीकरणसंख्या टैक/85-2/2000 ☎ ०१२६२-७७७२२

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र रोहतक
प्रधानसम्पादक : यशपाल आचार्य, सभामन्त्री सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री
वर्ष २६ अंक ३१ ७ जुलाई, २००२ वार्षिक शुल्क ८०) आजीवन शुल्क ८००) विदेश में २० डालर एक प्रति १.७०

राष्ट्र के इस्लामिक आतंकवाद की समस्या के समाधान पर विशेष–

क्या इस्लामिक आतंकवाद की समस्या का समाधान संभव है ?

❑ सुखदेव शास्त्री महोपदेशक, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

महर्षि दयानन्द भारत के ही नहीं, विश्वभर के एकमात्र ऐसे दूरदर्शी महर्षि थे, जिन्होने सर्वप्रथम इस्लामिक आतकवाद को जानते हुए ही सन् १८७४ में मुस्लिम सम्प्रदाय में मजहबी ग्रन्थ कुरान का अरबी एव उर्दू भाषा से आर्यभाषा हिन्दी मे अनुवाद करके ससार के सामने आतकवादी समस्याओके आगमन का पर्दाफास किया था। उन्होने अपने अमरग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश मे सत्य का निर्णय करने के लिये ही कुरान की आयतो की सद्भावनापूर्वक एव सत्य को जानने के लिए अनुवाद किया था, उस अनुवाद को अनेक मुस्लिम विद्वानो ने सम्मानित किया। उस अनुवाद से सर सय्यद अहमद खा जैसे विद्वानो ने भी अपनी पूरी सहमति व्यक्त की थी, सर सय्यद अहमद खा ने महर्षि के अनुवाद से सच्चाई की प्रेरणा पाकर ही 'कुरान शरीफ' का अनुवाद लिखा था। किन्तु तत्कालीन कुछेक मौलवियो ने उस अनुवाद का विरोध भी किया था। सबसे पहले महर्षि दयानन्द ने ही 'पवित्र कुरान शरीफ' मे लिखित सार्वजनिक कर्तव्यो के विषय मे सत्यार्थप्रकाश के चौदहवे समुल्लास मे १६१ समीक्षाए कुरान शरीफ के सम्बन्ध में लिखी थी। महर्षि से पूर्व किसी ने भी इस ओर ध्यान नहीं दिया था।

महर्षि के धर्मप्रचार की चर्चा सर्वत्र फैल गई थी। मुस्लिम जनता तथा उसके धार्मिक मौलवी भी महर्षि के व्याख्यानों को सुनकर आश्चर्य चकित होते थे। कई मौलवियों ने महर्षि से शास्त्रार्थ करने की भी सोची, किन्तु वे कभी भी महर्षि के सामने भी न आ सके थे। महर्षि दयानन्द इस इस्लामिक मत का जोरदार सत्यता के साथ खण्डन करते थे। अपने वैदिक धर्म के प्रचार कार्यकाल मे वे कभी भी पीछे नहीं हटे। उन्होंने सत्यधर्म वैदिक धर्म की पुन स्थापना के लिए केवल मात्र कुरान ही नहीं, ईसाइयों के मजहब ग्रथ 'बाइबिल' का भी खण्डन किया तथा १३वा समुल्लास भी लिखा था। १८ पुराणो का खण्डन भी उन्होंने ११वें समुल्लास में किया। वेदो के अनुसार ही वे अपने प्रवचन किया करते थे। उन्होने अपना जीवन वैदिक धर्म की पुन स्थापना में समर्पित किया था, जिसके उद्धार के लिए उन्होने विषपान तक किया। वेदो का भाष्य लिखा। सत्यार्थप्रकाश लिखा था।

महर्षि दयानन्द ने तत्कालीन आरम्भिक अवस्था में ही अभी भारत मे प्रचलित आतकवाद, जो कि उनके जन्म से पहले ही ७१२ ई० में प्रचलित हो चुका था। उसके बारे में भारतीयों को सचेत किया था।

महर्षि दयानन्द वैदिक धर्म के प्रचार के लिए २९ मई १८८३ को राव राजा तेजसिह तथा कर्नल प्रतापसिह जी के निमन्त्रण पर जोधपुर पहुचे थे। जोधपुर में भी अनेक मुस्लिम सज्जन महर्षि के व्याख्यानों में आते थे। जिनमें नवाब मुहम्मद खां, इलाही बख्श आदि महर्षि से शकाए मिटाते थे। किन्तु फैजुल्ला खा मुसाहिब आलाराज मेवाड स्वामी जी के व्याख्यान सुनकर नाराज होते थे। एक दिन फैजुल्ला खा ने महर्षि से बात-बात मे कह

(शेष पृष्ठ दो पर)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग सभा के महत्त्वपूर्ण निश्चय

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की एक आवश्यक बैठक [illegible] को सभा कार्यालय दयानन्दमठ रोहतक मे सम्पन्न हुई, जिसमें सभी अन्तरग सदस्यो की सहमति से निर्णय लिये गये। सभा में मुख्यरूप से सभाप्रधान स्वामी ओमानन्द जी तथा सभामन्त्री आचार्य [illegible] सिंह पूर्व केन्द्रीय मत्री, स्वामी इन्द्रवेश पूर्व सासद, श्री महेन्द्रसिह शास्त्री वरिष्ठ सभा उपमत्री आदि उपस्थित थे। हरयाणा के कोने-कोने से सैकडो कार्यकर्ताओ की उपस्थिति हुई। बैठक मे निम्न निर्णय लिये गये–

१ सतलुज-यमुना लिंक नहर का निर्माण कार्य समय सीमा मे पूरा कराने के लिए सरकार पर दबाव बनाये, इसके लिए प्रधानमत्री भारत सरकार को लिखे पत्र व उनके द्वारा दिए गए उत्तर को भी सभा मे पढकर सुनाया गया। इस कार्य मे ढिलाई बरतने पर आर्यसमाज ने आदोलन की चेतावनी दी क्योकि पानी की समस्या हरयाणा के जनहित की समस्या है, आर्यसमाज ने सदा ही हरयाणा के हितो की लडाइया लडी और सदा ही हरयाणा के हितो की रक्षा के लिये सघर्ष किया है।

२ प्रस्ताव न० २ पर निर्णय हुआ कि वेदप्रचार को गति देने के लिये जिला वेदप्रचार मण्डलो का पुनर्गठन किया जायेगा और सभी विधानसभा क्षेत्रो मे भी उपमडल स्थापित किये जायेगे जिससे प्रत्येक गाव स्तर तक वेदप्रचार किया जा सके और शराबबन्दी, दहेज जातिवाद को दूर करने के लिये जनजागृति अभियान चलाया जायेगा तथा शिक्षावाद विदेशी का प्रचार भी चालू किया जायेगा। इन्हीं हलको के कार्यकर्ताओ को ही राजनैतिक गतिविधियो पर भी नजर रखने के लिए प्रेरित किया जायेगा।

३ नेपाल नरेश ने भारत यात्रा के दौरान एक मन्दिर मे पूजा करने के दौरान बकरे की बलि देकर जघन्य कार्य किया है। जो वन्य जीव-जन्तु प्राणी सरक्षण नियम का उल्लघन है, सभा ने इसकी घोर निन्दा की है तथा भारत सरकार को भविष्य मे इस तरह की पुनरावृत्ति न होने देने के लिए सावधान किया है। ससार के एकमात्र हिन्दू देश के नरेश को यह घृणित कार्य नहीं करना चाहिए।

४ स्वामी स्वतंत्रानन्द जी महाराज जिन्होने लोहारू नवाब के अत्याचारो का डटकर विरोध किया। लोहारू के नवाब ने आर्यसमाज के प्रचार पर प्रतिबन्ध लगा दिया था। कोई भी व्यक्ति आर्यसमाज के उपदेशको के ठहरने की बात तो दूर पानी तक नहीं पिलायेगा ऐसे समय में स्वामी नित्यानन्द जी महाराज अपने गले मे ही बाजा बाधकर गली-गली प्रचार करते थे, आर्यसमाज के जलूस पर नवाब के सैनिको ने लाठिया बरसाई तथा स्वामी स्वतत्रानन्द जी पर फरसे से वार किये, गोहत्या बद कराने के लिए सघर्ष किया। उनकी याद मे अक्तूबर मास मे विशाल सम्मेलन करने का निश्चय हुआ। इस अवसर पर स्वामी जी की प्रतिमा का भी अनावरण किया जायेगा।

५ हरयाणा के प्रसिद्ध महात्मा भगत फूलसिह जी जिन्होने शुद्धि आन्दोलन चलाया, कन्या गुरुकुल भैंसवाल कला तथा गुरुकुल खानपुर कला की स्थापना की। वे आर्यसमाज का प्रचार करते हुए एक मुसलमान की गोली का शिकार होते हुए अपना बलिदान दिया। उनके जन्मदिन ११ अगस्त को उनके गाव माहरा जिला सोनीपत मे भगत फूलसिह बलिदान जयन्ती मनाने का निर्णय लिया गया है। इसके अतिरिक्त आर्यसमाज की सम्पत्तियो की सुरक्षा व सस्थाओ की देखभाल के लिए उपसमितियो का निर्माण भी किया गया है।

५ जुलाई को साय ५ बजे आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के आर्य बलिदान भवन दयानन्दमठ रोहतक के नवनिर्मित बलिदान भवन मे गोरक्षा अभियान यात्रा का स्वागत तथा समारोह का आयोजन किया जाएगा।

–केदारसिंह आर्य, सभा उपमंत्री

वैदिक-स्वाध्याय

ऐश्वर्य पाना चाहता हूं

यद् वीडाविन्द्र यत् स्थिरे यत्पर्शाने पराभृतम्।
वसु स्पार्हं तदाभर।।

ऋ० ८ ४५ ४१।। साम०उ० ४ १ ९।। अ० २० ४३ २।।

शब्दार्थ--(इन्द्र) हे परमेश्वर ! (यत्) जो धन तूने (वीडौ) दृढ, न दबने वाले पुरुष में (यत् स्थिरे) जो धन स्थिर रहने वाले में (यत् पर्शाने) और जो धन विचारशील पुरुष मे (पराभृत) रखा है (तत्) वह (स्पार्हं) स्पृहणीय, चाहने लायक (वसु) धन (आभर) मुझे प्राप्त करा।

विनय--हे परम परमैश्वर्यवाले इन्द्र ! तुम्हारा नानाप्रकार का ऐश्वर्य इस ससार मे भरा पडा है। पर तुम्हारे इन ऐश्वर्यों मे से जिस प्रकार के ऐश्वर्य की मुझे स्पृहा है, जिस प्रकार के ऐश्वर्य को मैं चाहता हूं वह तो है वह जो कि ससार के वीर, दृढ (वीडु) पुरुषो मे दिखाई देता है और जो कि स्थिर तथा विमर्शशील पुरुषो मे रहता है। आम लोग रुपये पैसे को ऐश्वर्य समझते हैं पर असल मे वह ऐश्वर्य नहीं है। रुपये, पैसे तथा अन्य सपत्ति के पदार्थो का ऐश्वर्य होना या न होना मनुष्य पर आश्रित है, मनुष्य की शक्ति पर आश्रित है, अत मनुष्य तथा मनुष्य का सामर्थ्य ही वास्तविक धन (ऐश्वर्य) है। गीता मे जो 'अभय', 'सत्त्वसशुद्धि' आदि सद्‌गुणो को दिव्यससपत्ति कहा है वह सत्य है, वही सच्ची सपत् है। शम, दम तितिक्षा आदि छ गुण इसलिये 'षट् सपत्ति' नाम से जगत् मे प्रसिद्ध हैं। हे इन्द्र ! मुझे तो यह ही सच्ची सपत् चाहिए। ससार के रुपये पैसे के धनियों को देखकर मुझे जरा भी उनकी सी अवस्था के प्रति आकर्षण नहीं होता। परन्तु वीरों की वीरता, अदम्य, उत्साह, तेज और दृढता पर मैं मोहित हू। जो चिरकाल तक स्थिरता से श्रद्धापूर्वक साधना करते हुए अन्त मे विजयशील होते हैं, उनका यह स्थिरता का गुण मुझे उनका भक्त बना लेता है। और जब मैं उन पुरुषो को देखता हू जो कि विचारपूर्वक अब कार्य करते हैं, पेचीदी अवस्था आने पर भी जिन्हे अपने कर्त्तव्य का निर्णय करने मे जरा देर नहीं लगती, तो मैं यही चाहता हू कि यह विमर्शक्षमता मुझ मे भी आजाय। जिनके पास ये तीन गुण नहीं होते उनके पास तो रुपया पैसा भी नहीं ठहरता, यदि ठहरता भी है तो या तो वह शक्तिरूप नहीं होता या बुरी शक्ति बन जाता है। क्या हम रोज नहीं देखाते कि बुजदिली के कारण, अस्थिरता के कारण, नासमझी के कारण सब कमाया हुआ बडा भारी धन एक दिन मे बरबाद हो जाता है या होता हुआ भी बेकार साबित होता है। इसलिए मेरे पास तो यदि भूमि, घर, आदि कुछ सामान न हो, कपडा लता भी न हो एक कौडी तक न हो, पर यदि मुझमे वीरता, अजेय दृढता हो और लगातार देर तक सतत काम करने की शक्ति एव लगन हो तथा मुझमे विचारशीलता हो, तो मैं हे प्रभो ! अपने को महाधनी समझूगा और ससार में आत्माभिमान के साथ सिर ऊचा करके फिरूगा। इसलिए हे नाथ ! मुझे तो तुम दृढता, स्थिरता और विमर्शशीलता प्रदान करना, मैं यही मागता हू, आपसे यही ऐश्वर्य पाना चाहता हू। **(वैदिक विनय से)**

क्या इस्लामिक आतंकवाद की...... (प्रथम पृष्ठ का शेष)

ही दिया कि अगर मुसलमानो का राज होता तो आप ऐसे व्याख्यान नहीं दे सकते थे। आप का सिर काट दिया जाता, महर्षि न उत्तर दिया था--यह कोई बात नहीं है, "मैं भी उस समय शिवाजी जैसे क्षत्रिय की कमर थपथपा देता, वे उन्हे ठीक तरह से समझा देते।"

महर्षि दयानन्द के व्याख्यानो मे महाराजा जसवन्तसिह भी आते थे। किन्तु जब महर्षि को पता लगा कि महाराजा जसवन्तसिह के जोधपुर की एक वेश्या नन्हीजान से अनुचित सम्बन्ध है तो महर्षि को बडा दु ख हुआ। एक दिन विशेष रूप से महर्षि को राजा ने अपने महल मे निमन्त्रित किया। सयोग से महर्षि भी यथासमय महल मे पहुचे ही थे कि उस समय नन्हीजान भी अन्दर थी। महर्षि के आने की खबर सुनकर राजा ने भी वेश्या की पालकी के उठाने मे कहारो की मदद की। महर्षि ने यह सब कुछ अपनी आखो से देखा और महाराजा से दु खपूर्वक कहा कि--"सिह होकर कुतियो से सम्बन्ध रखते हो।' महाराज बडे शर्मिन्दा हुए। नन्हींजान भी क्रोध मे जल गई। उसने तथा फैजुल्ला खा तथा महर्षि के विरोधियो के द्वारा महर्षि के प्रति भयकर षड्‌यन्त्र रचा गया। महर्षि के रसोइये धौड मिश्र, प० पुष्करनाथ, वकील कृष्णानन्द तथा चक्राकितो ने भी इसमे भाग लिया। महर्षि को २९ सितम्बर १८८३ को सायकाल दूध मे विष मिलाकर पिला दिया। महाराजा के डा० अलीमर्दान खा के इलाज से महर्षि इतने कमजोर हो गए कि वे बेहोश हो जाते। दिन मे दस्त बहुत होते। न्यूमन अग्रेज डाक्टर ने महर्षि को देखकर कहा कि इन्हे इतना विष दिया गया है कि यदि दस हाथियो को दिया जाता तो ५ मिनट मे मर जाते। ३० अक्तूबर १८८३ को महर्षि का बलिदान हो गया।

महर्षि का यह बलिदान क्या इस्लामिक आतकवाद का कारण नहीं है ? दीवान फैजुल्ला खा, डा० अलीमर्दान खा, मुस्लिम वेश्या नन्हींजान आदि उसी के अन्तर्गत आते हैं। सम्भव है अग्रेज डा० न्यूमन का भी इस षड्‌यत्र मे हाथ हो। अग्रेज कब चाहते थे कि महर्षि दयानन्द जो १८५७ से अग्रेजी राज के विरुद्ध जनता मे स्वातन्त्र्य-सग्राम के लिए जनजागरण में निरन्तर कार्य कर रहे थे। वे कब तक अंग्रेजी राज्य का विरोध करते रहें ? इस कारण सच तो यह है कि मुसलमान इस देश में ७१२ ई० में आक्रमणकारी एव आततायी के रूप मे आए थे। उन्होंने लगभग देश में कहीं-कहीं सात सौ वर्ष तक राज्य किया। भारत के मुसलमानो में प्राय करके सभी इस देश के रहने वाले हैं, किन्तु इन्होंने कभी भी इस देश पर शासन नहीं किया। शासन करनेवाले गुलाम, गौर, तुगलक, खिलजी, लोधी, मुगल, पठान आदि सभी विदेशी थे। इन विदेशियों का भारत के मुसलमानो ने कभी भी विरोध नहीं किया। सच तो यह है कि कट्टर देशभक्त भी कलमा पढते ही देशविद्रोही विदेशी मुसलमानो का समर्थक बन जाता है। बडे से बडे राष्ट्रवादी मुसलमान के हृदय मे जो आदर विदेशी आक्रमणकारी मुहम्मद गजनवी, गोरी व बाबर के लिए है वह इस देश की धरती मे उत्पन्न राम, कृष्ण, प्रताप, शिवाजी के लिए नहीं है। यह इस्लामिक आतकवाद की मानसिकता ही है।

अभी पीछे महर्षि दयानन्द के साथ सर सैयद अहमद खा की चर्चा की गई थी। वे महर्षि से बहुत प्रभावित थे। उन्होंने सत्यार्थप्रकाश मे कुरान की सत्यार्थ समीक्षा को पढकर कुरान का भाष्य लिखते हुए उसमें महर्षि के द्वारा प्रदर्शित समीक्षा के आधार पर सशोधन करने की प्रेरणा प्राप्त की थी। वही सर सैयद अहमद खा कितना साम्प्रदायिक बन जाएगा ? इसे जानने के लिए उसके लाहौर मे दिए गए एक भाषण के अश को पढिए--

"I object to every Congress, in every shape or farm, whatsoever, with regards India as one nation"

अर्थात् मैं किसी भी रूप में हिन्दुस्तान को एक राष्ट्र मानने के लिए तैयार नहीं हू। उसके कहे इन शब्दो से स्पष्ट है कि सन् १९४७ मे भारत विभाजन के लिए जिम्मेदार सैयद अहमद खा थे न कि मुहम्मद अली जिन्ना। अलीगढ मुस्लिम यूनिवर्सिटीरूपी विषवृक्ष का बीजारोपण मुहम्मदेन एग्लो ओरियण्टल कालिज के रूप मे १८७५ मे सैयद अहमद खा के द्वारा ही किया गया था। इसी अलीगढ कालेज में ही हजारों साम्प्रदायिक गतिविधिया चालू की गईं। अलीगढ मुस्लिम कालेज में कई अग्रेज प्रिंसिपल आए, उन्होंने साम्प्रदायिकता को भडकाया। इसी कालेज मे १ अक्तूबर १९०६ मे मुस्लिम लीग की स्थापना की गई। लीग द्वारा ही भारत विभाजन की सर्वप्रथम माग रखी गई थी। अग्रेजो की नीति तो यही थी कि "फूट डालो, राज्य करो।" यह थे आधुनिक भारत के निर्माताओ और समाज सुधारको मे अग्रणी माने जानेवाले साम्प्रदायिकता के जनक, भारत विभाजन की नींव रखनेवाले सैयद अहमद खा। १८९८ मे इनकी मृत्यु हुई।

महर्षि दयानन्द के बलिदान के बाद आर्यसमाज का प्रचार कार्य बहुत ही जोरो से किया जाने लगा। उन नेता कार्यकर्ताओ मे आर्यमुसाफिर प० लेखराम का नाम मुख्यरूप से लिया जाता है। प० लेखराम ने महर्षि दयानन्द के दर्शन किये थे, अत एव वे महर्षि के प्रति आर्यसमाज के समर्पित कार्यकर्ता थे। उन्होने आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के द्वारा प्रचार कार्य आरम्भ किया था। प० लेखराम जी के दूसरे साथी थे स्वामी श्रद्धानन्द। दोनो ही आर्यसमाज के महान् कार्यकर्ता नेता थे। अपने प्रचार कार्यकाल मे इन दोनों ही नेताओ ने सामाजिक प्रचार कार्यक्षेत्र मे धूम मचा रखी थी। इनके समय मे ही मुसलमानो के कई नेता भी इस्लामी प्रचार मे लगे हुए थे जिनमे प्रमुख थे--जिला गुरुदासपुरके कादिया नगर के मिर्जा गुलाम अहमद। मिर्जा ने एक पुस्तक लिखी थी--"बुराहीने अहमदिया" पेशावर मे प्रचार करते समय प० लेखराम को यह पुस्तक मिली, जिसमे मिर्जा ने अपनी पैगम्बरी का दावा किया था। इस अहमदिया सम्प्रदाय का मुख्य उद्‌गम स्थान "कादिया" नगर था। इन नगर मे ही मिर्जा ने घोषणा की कि मेरे पास खुदा की तरफ से कुरान की आयते उतरती हैं। मिर्जा ने एक विज्ञापन द्वारा भी यह ऐलान किया कि जो कोई भी मेरे चमत्कारो को मिथ्या सिद्ध करदे, मैं उस हिन्दू को २४०० रुपए जुमाने के रूप मे दूगा। इस समाचार को पाकर प० लेखराम कादिया मे सीधे मिर्जा के पास पहुच गए। किन्तु मिर्जा चमत्कार न दिखा सका। पडित जी ने कादिया मे आर्यसमाज की स्थापना कर दी। पडित जी ने मिर्जा के चमत्कार दिखाने के पाखण्ड मे कई पुस्तके लिखी। मिर्जा प० लेखराम जी की शक्ति से घबरा उठा, उसने प० लेखराम जी के मारने का षड्‌यत्र रचा। अन्त मे वही हुआ, फरवरी १८९७ मे एक काले रग का भयानक प्रकृति का मुसलमान पडित जी के पास आया और बोला कि "वह पहले हिन्दू था दो वर्ष से मुसलमान हो गया है, मैं पुन हिन्दू बनना चाहता हू।" प० लेखराम जी ने उसके ऊपर विश्वास करके उसे कई दिन तक अपने साथ रक्खा, उसे अपने घर पर ही भोजन कराते थे। अनेक लोगो ने उसके ऊपर सन्देह किया, वह कम्बल ओढे रहता था। पडित जी ने उसे दवाई भी दिलवाई। हत्यारे ने मौका पाकर पडित लेखराम जी के घर मे ही पडित जी पर छुरे से वार किया। पेट की आते बाहर निकल आई। हत्यारे ने पडित जी की माता जी व धर्मपत्नी पर भी छुरे से वार किया और वह छुडाकर भाग गया। ६ मार्च, १८९७ को लेखराम का बलिदान हो गया। यह है इस्लामिक साम्प्रदायिक आतकवाद का उदाहरण। मुसलमानो का यह मजहबी साम्प्रदायिक उन्माद कभी भी समाप्त नहीं हो सकता। आर्यसमाज ने ही भारत मे सर्वप्रथम इस आतकवाद का मुकाबला इस्लाम के खण्डन मण्डन के द्वारा किया गया था।

बीड़ी, सिगरेट, शराब पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है, इनसे दूर रहें।

२१वीं सदी में आर्यसमाज का प्रचार : एक चिन्तन

आर्यसमाज आक्रामक प्रचार-पंक्ति तैयार करे

लेखक डॉ० चन्द्रशेखर लोखंडे, सीताराम नगर, लातूर (महाराष्ट्र)

प्रचार दो प्रकार का होता है-

१ सुरक्षात्मक अथवा बचावात्मक और २ आक्रामक जैसे कि स्वातन्त्र्य पूर्वकाल में आर्यसमाज का प्रचार आक्रामक था जिसमें शास्त्रार्थ शकासमाधान खुले स्थानों पर प्रचार, शुद्धि अभियान, अस्पृश्यता, पिछडी बस्तियो में सामूहिक यज्ञादि, धार्मिक कार्यक्रम आदि बडे नीर्भीक ढग से आर्य कार्यकर्त्ता किया करते थे, पर स्वतत्रता के बाद उपरोक्त कार्यक्रम ठप्प पड गये हैं। इसके कारणो की जड मे जाकर सोचना पडेगा।

बचावात्मक प्रचार से कोई भी सस्था आगे बढ तो सकती नहीं प्रत्युत उसका शनै शनै ह्रास अवश्य होता जाता है। युद्ध मे बचावात्मक मोर्चा शत्रु की भूमि जीतने के लिए नहीं होता बल्कि परिस्थिति के अनुसार होता है। इसमे पीछे हटने की सभवनाए अधिक रहती हैं। अत युद्ध स्थल पर आक्रमण ही सुरक्षा है। यह घोष बॉक्स लेकर चलना पडता है। यही रणनीति आर्यसमाज के नेता २१वीं सदी मे अपना सकेगे तो आर्यसमाज के बचने की उम्मीदे दिखाई दे सकती हैं। अन्यथा यह भी अन्य छोटे-छोटे पथो की पंक्ति मे शामिल होकर एक दिन नाम शेष हो जायेगा। युवको मे प्रचार के प्रति जागरूकता पैदा करना समय की माग है। युवावर्ग आर्यसमाज के कार्यों में भाग नहीं लेता। यह सभी अधिकारियो की शिकायत है। हमने उनकी मानसिकता तथा रुचियो की तरफ ध्यान नहीं दिया। समयसूचकता कार्य करने की क्षमता तथा उनकी लगन पर कभी गौर नहीं किया है। वही पुराने ढर्रे से प्रचार के तरीके अपनाये जाते हैं। आधुनिक तरीके से उसमे बदलाव की बात हम सोचना भी नहीं चाहते। युवको के अनुरूप कार्यभार जिम्मेदारी उन्हें सौंपनी पडेगी। तब जाकर युवको का सहयोग प्राप्त होगा।

जिस प्रकार किसी बडे समारोह को सफल बनाते समय प्रत्येक व्यक्ति को उसके कार्य सौंपे जाते हैं और वह जिस प्रकार लगन से अपना कार्य पूरा करने मे जुट जाता है उसी प्रकार आर्यसमाज के प्रचार और प्रसार मे प्रत्येक को सम्मिलित कर चलना पडेगा। उसका सहयोग लेना पडेगा। आर्यसमाज के शीर्षस्थ नेताओं को इस सहस्राब्दि मे कालबद्ध कार्यक्रम की घोषणा करनी चाहिए और उसमें युवकों का सहभाग आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य करना चाहिए। आक्रामक प्रचार के लिए कार्यर्ताओ की फौज तैयार करनी होगी।

प्रजननात्मक सख्या वृद्धि- किसी भी सस्था की प्रजननात्मक तरीके से वृद्धि पर अवलम्बित रहना उस सस्था की समाप्ति के लक्षण हैं। प्रजननात्मक सस्था वृद्धि के भरोसे बैठना कायरता है। आर्यसमाज गुण सापेक्ष समाज होने की वजह से जन्मगत वृद्धि का यहा प्रश्न ही पैदा नहीं होता जिसमे श्रेष्ठत्व है, आर्यत्व के लक्षण हैं, वही आर्यसमाजी हो सकता है यह निर्विवाद है। अन्य पथो मे गुण होने पर परिवार भी उसी पथ के कहलाते हैं। आर्यसमाज या वैदिक धर्म में गुणहीन पुत्रादि तथा परिवार के लिए कोई स्थान नहीं है। जैसे वर्णव्यवस्था जन्मगत न होकर गुणकर्म स्वभावानुगत है उसी तरह आर्यसमाज और वैदिक धर्म गुणकर्म के ही अनुसार सामाजिक व्यवस्था को स्वीकार करता है। **आचारहीन न पुनन्ति वेदा।** आर्यत्व से विहीन व्यक्ति आर्यसमाज का अग नहीं हो सकता। जैसे मानवता से विहीन मानव मानव नहीं हो सकता उसी तरह से गुणहीन और आचरणशून्य व्यक्ति आर्यसमाज का सदस्य भी नहीं हो सकता।

यह अत्यन्त उपयुक्त भी है और आवश्यक भी है। इसमें समाज के शुद्धिकरण की प्रक्रिया सुचारू रूप से बनी रहती है। सामाजिक दोष आने की बहुत कम सभावना रहती है। जन्मगत सख्या वृद्धि व्यक्ति और समाज के लिए उतनी पोषक नहीं है। इसमे उस सस्था का कार्य ठप्प हो जाता है तथा कार्यकर्ता आलसी और प्रमादी होकर निष्क्रिय होजाते हैं और सस्था नाम शेष हो जाती है।

मैं यह बात इसलिए कह रहा हू कि भगवान् भरोसे रहने मे इस प्रचार मे पिछड रहे हैं। हमारे परिवार आर्यसमाज से दूर होते चले जा रहे हैं और नये परिवार, आर्यसमाज मे नहीं आ रहे हैं। नुकसान दोनों ओर हो रहा है। मरम्मत भी नहीं है और निर्माण भी नहीं है।

आर्यसमाज आचरण के आधार पर ही **कृण्वन्तो विश्वमार्यम्** का जय घोष करता है। गुण कर्मानुसार विश्व को आर्य बनाना एक चुनौती है। आर्यो के लिए पुरुषार्थभरा कार्य है। परिश्रम और लगन से हर कार्यकर्ता अपनी-अपनी योग्यता से प्रचार-प्रसार मे जुट जाए तो वेदो के सिद्धान्तों को दुनिया के कोने-कोने में फैलाना कोई असम्भव नहीं है। आवश्यकता है कठोर परिश्रम और लगन की।

प्रचारात्मक संख्या वृद्धि- अन्य सम्प्रदाय प्रारम्भ में प्रचार प्रसार के जरिये विकसित हुए तथा पश्चात् उनमे प्रचार और परिश्रम के अभाव से शिथिलता आ गयी जिसके कारण बाद मे जन्मगत सख्या के भरोसे रहकर वे नाम शेष को हो गये। अब सिर्फ इतिहास के पृष्ठो की शोभामात्र बनकर रह गये है। ब्रह्मसमाज, प्रार्थनासमाज, दादूपथ, कबीरपथ इत्यादि सैंकडों पंथ इस श्रेणी मे आते हैं। कार्यकर्ता आर्यसमाज के प्रचार और प्रसार के प्रति अपनी अनास्था इसी तरह प्रकट करते रहेंगे तो विश्व को आर्य बनाने का इच्छुक आर्यसमाज किसी एक जगह सिमटकर रह जाएगा।

इस्लाम और ईसाईयत का प्रचार प्रारभ से लेकर आज तक आक्रामक रहा है। २००० साल और १४०० साल पहले जो लगन और आक्रामकता उनके प्रचार प्रसार मे थी वह आज भी कायम है अपितु पहले की अपेक्षा आज अधिक है। उनका तरीका चाहे अलग हो उनसे कोई सहमत हो अथवा न हो। जो भी उनकी श्रद्धा हो उसे चाहे अज्ञान के कारण करते हो, पर मजहब के प्रचार मे आक्रामक हैं।

इस्लाम के प्रारंभिक काल मे अरब राष्ट्रो मे जब इस्लाम का प्रचार बहुतायत से हो गया तो वे आपस मे लडने लगे। एक दूसरे के साथ झगडने मे अपनी शक्ति खर्च करने लगे। तब मुहम्मद पैगम्बर ने बडी होशियारी से अपने अनुयायी देशों को पडौसी देशो मे इस्लाम के प्रचार-प्रसार का आदेश दिया सारी दुनिया मे अल्लाह का राज्य होना चाहिए और जब तक पूरी दुनिया मे अल्लाह का राज्य नहीं होगा तब तक एक भी मुसलिम सुख चैन से नहीं बैठेगा। यह सोच मुस्लिम समाज के जहन मे बिठा दी गयी है। उधर क्रिश्चिन ईसा का राज्य स्वर्ग से पृथ्वी तक लाना चाहते हैं। ये दो बडे मजहब धर्मप्रसार मे एक दूसरे की होड मे लगे हैं। वे आपस मे एक दूसरे की प्रतिस्पर्धा समझते हैं। हिन्दू और बोद्धों को वे इस बारे मे नगण्य समझते हैं। उनका मानना है कि हिन्दू शिकार है और हम शिकारी हैं। इन बचे हुए हिन्दुओ को कौन कितना हडप जाता है हिन्दू अपनी सुरक्षा मे ही छटपटा रहा है वह अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए सदियो से प्रयत्नशील है। बडे गर्व से कहा जाता है कि हिदुओं ने अब तक किसी देश पर आक्रमण नहीं किया और न किसी समाज के धर्म परिवर्तन की कोशिश की। अगर किसी पर आक्रमण नहीं किया और किसी का धर्म परिवर्तन नहीं किया। यह सत्य है पर अपनी खुद की रक्षा भी तो न कर सका? इस बात पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए। आक्रामकता का अभाव ही इसका मूल कारण है।

सुरक्षा यदि साध्य है तो आक्रामकता उसका साधन है। **सन्तुष्टो नृप नष्ट।** अपनी सीमाओ मे सतुष्ट राजा कभी भी नष्ट हो सकता है। उसे परिग्रही होना चाहिए। अल्पतोष उसके लिए गुण नहीं, दोष है।

दुनिया के दो बडे उपरोक्त मजहब इसी नीति से चल रहे हैं। दीपावली के शुभ पर्व पर भारत में आकर पोप जॉन पाल का भारत के ईसाइयों को हिंदुओं के धर्म परिवर्तन के प्रति आदेश देना यह आक्रामकता का द्योतक नहीं तो क्या है? दुनिया के उपरोक्त दो मजहबो मे अपनी आन्तरिक शत्रुता मिटाने के लिए बाह्य शत्रुओ का निर्माण किया जिससे कि वे आपस मे न लडे और दुनिया मे अपने मत का फैलाव कर सके। एक झूठ यदि एक सौ बार बोला जाए तो वह सच बन जाता है इसका अनुभव हमे दुनिया के अनेक असत्य पर आधारित मत पथो मजहबो के प्रचार से हो रहा है। विज्ञान और तर्क की कसौटी पर यत्किचित् भी खरे न उतरने वाले सम्प्रदाय प्रचार के जोर पर हमारे से आगे निकल चुके हैं।

हम हैं कि "अन्त मे सत्य की विजय होती है।" इस विश्वास पर निष्क्रिय होकर बैठ गये हैं। पौराणिक तो दो कदम आगे बढकर किसी भगवान् के अवतार के इतजार मे बैठे हुए आस लगाए हैं कि कोई न कोई भगवान् अवतार लेगा और हमारे धर्म का उद्धार कर देगा। यह जानते हुए कि १४०० साल तक मुस्लिम आक्रामको द्वारा हिन्दुस्तान ध्वस्त किये जाने के बाद भी कोई अवतारी पुरुष इन राक्षसो का नाश करने के लिए नहीं आया तब भी २१वीं सदी मे यह अनर्गल राग अलापा जा रहा है।

आर्यसमाज अन्तिम विजय की आस मे बैठा है। दोनो मे अधिक फर्क नहीं है। एक व्यावहारिक है और एक अव्यावहारिक है पर दोनो की सोच मे आलस्य और प्रमाद की गध है। हम अन्तिम विजय की आस मे परिश्रम से मुह फेरे बैठे हैं। सत्य की विजय भी तभी होती है जब उसको बडे ठोस तरीके से लोगो के सामने पेश किया जाए। सत्य स्वत प्रकट नहीं होता। उसको प्रकट किया जाता है। अन्तिम विजय सत्य की होती है। कहने वाले निष्क्रिय व्यक्ति यदि सत्य को छुपाकर किसी कोने मे रख दें किसी पर प्रकट न करें तो सत्य का मुख चमकेगा कैसे?

आर्यसमाज के सत्य सनातन वैदिक सिद्धान्त सत्य हैं पर लोगो के सामने रखने मे हम सफल नहीं हो पा रहे तो उन सत्य-सिद्धान्तो का फायदा क्या। यदि स्टेशन मास्टर जानते हुए भी कि यह गाडी कहा जानेवाली है यदि नहीं बताता तो उसे स्टेशन मास्टर की जानकारी से क्या लाभ है।

हमारे पास दुनिया के अटूट सिद्धान्त हैं पर दुनिया के पास वे पहुच नहीं रहे हैं। इसका दोषी कौन है। यह यह एक चिन्ता का विषय है। यह सत्य है कि अन्त जीत सत्य की होती है पर उस जीत के इन्तजार का दु ख बडा लम्बा होता है और उस जीत के उपभोक्ता के रूप मे हम रहे न रहे, और दूसरी बात जीत का सुख क्षणिक होता है और इतजार रूपी दु ख का समय बहुत लम्बा होता है।

सत्य की ही विजय होती है

वेदो, उपनिषदो, दर्शनों, ब्राह्मण ग्रथो, स्मृतियो मे तो सत्य की महिमा व प्रशसा गाई ही गई है। उससे कम महिमा रामायण, महाभारत, गीता व पुराणो मे भी नहीं गाई गई। मनु महाराज ने तो यहा तक कह दिया कि **"न हिं सत्यात् परो धर्म. नानृतात् पातक परम्"** यानि सत्य से बढकर कोई धर्म नहीं और असत्य से बढकर कोई पाप नहीं। इन्हीं भावो को अपने शब्दो में बाबा तुलसीदास ने इस भाति लिखा है **"सच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप, जाके हृदय साच है, ताके हृदय आप"**। उपनिषद् का मत्राश भी यही बात और बल देकर कहता है **"सत्यमेव जयते, नानृत"** सत्य की ही विजय होती है, झूठ की नहीं। वेद का द्वारा मन्त्र **"सत्येनोत्तभिता भूमि"** यानि पृथ्वी सत्य पर टीकी हुई है, इसका मतलब यह नहीं कि सत्य कोई देहधारी मनुष्य, पशु, पक्षी या कोई पदार्थ है जिस पर यह पृथ्वी टिकी हुई है। इसका अभिप्राय यही है कि सत्य व्यवहार से ससार का कार्य सुचारू रूप से चलता है। असत्य व्यवहार से चल ही नहीं सकता। सत्य से अभिप्राय सिर्फ सत्य बोलना ही नहीं होता। सद्व्यवहार, सदाचार, सद्विचार व सत्कार्य सभी सत्य में ही समाहित हैं। सत्य बोलना तो सिर्फ सत्य की पहली सीढी है। जिस पर चढकर व्यक्ति अपने जीवन को ऊपर की ओर यानि उत्थान की ओर ले जा सकता है। जीवन मे सभी सद्व्यवहार करना आचरण मे शुद्धता रखना, विचारों में पवित्रता रखना और सत्य को जीवन में धारण करके उत्तम कर्म करने वाला भी हो तो वह व्यक्ति मोक्ष प्राप्त करने का अधिकारी भी बन जाता है। मानवता के गुण जैसे हृदय की शुद्धता, पवित्रता, निश्छलता, ईमानदारी, निष्पक्षता, धैर्य व साहस आदि जिस व्यक्ति मे नहीं होगे वह सत्यवादी या सदाचारी हो ही नहीं सकता। सत्यवादी व्यक्ति छल, कपट, दुराचार, द्वेष, ईर्ष्या, घृणा व अहकार आदि दुर्गुणो व दोषों से कोसो दूर रहता है। वह हमेशा निर्मल पवित्र और उदार हृदय का ही होता है।

यदि हम अपने गौरवमय इतिहास का अवलोकन करें तो ज्ञात हो जायेगा कि जहा सत्य रहा है वहीं विजय निश्चित हुई है। त्रेता मे हम देखते हैं कि रावण दुष्ट और पापी राजा था लेकिन था बडा बलशाली। उसका आतक लका मे नहीं बल्कि दक्षिण भारत मे भी उसकी छावनिया रहती थीं। और वे दुष्ट राक्षस, साधु, तपस्वियों के यज्ञो मे बाधा डालते थे। उनके यज्ञो का विध्वस करते थे जिससे तपस्वी लोग बहुत भयभीत और दुखी रहते थे। उनके उद्धार के लिए भी राम ने हाथ में धनुष उठाकर कहा था **"निश्चिरहीन करौ महि, भुज उठाय प्रण कीन्ह"** में भुजा उठाकर यह प्रतिज्ञा करता हू कि इस धरती को निशाचरहीन कर दूगा। तभी अपने कर्त्तव्य की इतिश्री समझूगा। सयोगवश कारण भी बन गया। रावण ने श्री राम की धर्मपत्नी सीता का हरण कर लिया और तब श्री राम को रावण का वध करना पडा। श्री राम का पक्ष सत्य व न्याय पर आधारित था। इसीलिये श्री राम के पास सैन्य शक्ति कम होते हुए भी उसी की विजय हुई और राम ने रावण को सिर्फ पराजित ही नहीं किया बल्कि उसका साथ देने वाले पूरे कुटुम्ब का रावण समेत ही नाश कर दिया। इसके पीछे भी ईश्वर की न्याय व्यवस्था काम कर रही थी। जिससे राम को विजय दिलाने के सुअवसर स्वयमेव ही जुटते गए। जैसे बिना कोई विशेष प्रयास किये श्री राम को श्री हनुमान, सुग्रीव, नल व नील का सहयोग मिलना, विभीषण का अपने भाई रावण से विरोध करके श्री राम के पक्ष मे आना तथा मारिच और मदोदरी का रावण को बार बार समझाना आदि जो विजय के कारण बने। इसी प्रकार द्वापर मे कस जरासन्ध, शिशुपाल, जयद्रथ, दुर्योधन आदि अन्यायी राजाओ का बडा भयकर आतक था। उन पर भी श्री कृष्ण ने अपनी शारीरिक शक्ति व कुशल बुद्धि के बल से सब का विनाश किया। श्री कृष्ण सत्य व न्याय के पक्ष मे थे। इसीलिये उनके सफलता प्राप्ति के सब रास्ते अपने आप ही खुल गये। देवकी की कोख से जेल मे जन्म होकर भी उनका नन्द व यशोदा के घर पर पालन पोषण होना, गोकुल में सब ग्वालो का समर्थन मिलना, बलराम, भीम, अर्जुन जैसे वीर प्रतापी, धनुषधारी योद्धाओं का सहयोग मिलना, यह सब असत्य पर सत्य की विजय के ही लक्षण थे। जिससे श्री कृष्ण उन अन्यायी, पापियों व दुष्टो का सहार कर सके। जब हम कलयुग के इतिहास पर दृष्टिपात करते है तो हम देखते हैं कि महाबली, दुष्ट, अन्यायी मग्ध के राजा महानन्द के विरोध मे एक साधारण ब्राह्मण परिवार का पर बडा कूटनीतिज्ञ व दृढप्रतिज्ञ चाणक्य ने अपनी बुद्धि बल से एक मूहि नामक दाई के होनहार बालक चन्द्रगुप्त को सम्राट् बनाकर विजय प्राप्त करवाई। दुष्ट व धर्मान्ध ओरगजेब जो मुगल साम्राज्य का एक शक्तिशाली बादशाह था उसके अन्याय को मिटाने में शेर शिवाजी व गुरु गोविन्दसिह जो उसकी तुलना मे काफी कमजोर थे, सफलता प्राप्त की। समय का प्रवाह विपरीत होते हुए भी एक तपोनिष्ठ बालब्रह्मचारी वैदिक विद्वान् महर्षि दयानन्द ने सत्य सनातन वैदिक धर्म का असख्य पाखडियों की टक्कर में विजय दिलवाई और अन्यायी धूर्त पर शक्तिशाली अग्रेजो से सत्य व अहिंसा के पुजारी महात्मा गाधी ने सत्याग्रह के बल पर भारत को स्वतत्रता दिलवाई। यह सब असत्य अन्याय पर सत्य व न्याय की विजय ही थी।

अभी-अभी अफगानिस्तान में आतकवादी तालिबान सगठन जिसका सरगना ओसामा बिन लादेन व मुल्ला मोहम्मद उमर थे उन्होंने विश्व भर में ही आतक फैला रखा था। उनका कैसे पतन व सर्वनाश हुआ, हम सभी ने अपनी आखो से देखा ही है। अब पाकिस्तान भी असत्य और अन्याय पथ पर अग्रसर है। अपने आतकवादी संगठनो को सहयोग ही नहीं प्रशिक्षण देकर भारत के ऊपर भयकर विनाशकारी हमले करवा रहा है। अभी १३.१२.२००२ को ससद भवन नई दिल्ली पर विनाशकारी सबको चौंका देने वाला हमला किया ही है। इससे पहले जम्मू कश्मीर की विधान सभा परिसर पर हमला किया था। इसलिए अब इन सब आतकवादी सगठनो का विनाश होना भी सुनिश्चित है।

ईश्वर की अपनी न्याय व्यवस्था ही ऐसी है। जिसके अधीन सत्य की विजय और असत्य की पराजय होती है। उदाहरण के तौर पर उदार व सच्चे व्यक्ति की सब प्रशसा करते हैं और उसका सहयोग भी सभी देते हैं। इसके विपरीत अनुदार व झूठे व्यक्ति की सब निदा करते हैं और उसका सहयोग नहीं देना चाहता। ईश्वर की न्याय व्यवस्था के अनुसार परोपकारी, दयालु, त्यागी, तपस्वी, न्यायकारी व सत्यवादी व्यक्ति अपने हर काम में सफल होता है कारण सारा वातावरण उसके पक्ष मे बन जाता है और दुष्ट, अन्यायी, निर्दयी, पापी, अभिमानी, स्वार्थी व बेईमान व्यक्ति अपने हर काम मे असफल होता है कारण वातावरण उसके विरोध में बन जाता है। यही सत्य की विजय, और असत्य की पराजय का आधार है।

जो स्थिति बडे-बडे राज्यों व राष्ट्रों मे होती है, वही स्थिति कभी-कभी धार्मिक व सामाजिक सस्थाओ मे भी हो जाती है। उन पर भी कुछ समय के लिए गलत, स्वार्थी पदलोलुप व्यक्ति हावी हो जाते हैं और सच्चे, ईमानदार, त्यागी, तपस्वी, सेवाभावी व्यक्ति निष्प्रभावी बन जाते हैं। ऐसी परिस्थिति मे ईश्वर की न्याय प्रक्रिया को दोष नहीं देना चाहिए और नहीं चिन्ता व घबराकर धैर्य छोडना चाहिए बल्कि डटकर सही प्रक्रिया से मुकाबला करना चाहिये। गलत व्यक्ति निश्चय ही पराजित होंगे कारण अन्याय अस्थाई होता है। यह भी ध्यान रखें गलत लोगो का हावी होना उनके कर्मों का फल नहीं बल्कि उनके लगातार प्रयत्न, लगन व बुद्धि कौशल (तिगडम बाजी) का फल है कारण यह भी तो परिश्रम ही है। इसका फल भी उन्हें मिलना ही चाहिए। ऐसे व्यक्ति कुछ समय के लिए पद प्राप्त कर लेते हैं। परन्तु वे अपने ही स्वाभाविक दोषो जैसे ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, लोभ, लालच व अहंकार के कारण उस पद को ज्यादा दिन नहीं रख पाते। इसका कारण यह है कि गलत आदमी हर व्यक्ति से गलत व्यवहार करेगे, गलत व्यक्तियो को सहयोग देंगे और लेंगे इससे कुछ अच्छे व्यक्ति उस सस्था में होंगे वे भी दूर होते जायेंगे और कुछ समय बाद वह सस्था गलत, स्वार्थी, पदलोलुप व्यक्तियों का जमघट बनकर रह जायेगी। और उनको कहीं से भी कोई सहयोग व मदद नहीं मिलेगी तब वह सस्था ठप्प हो जायेगी और वे स्वार्थी लोग एक दूसरे का दोष निकालते हुए इधर उधर बिखर जायेंगे। यह उनके कर्मों का फल हुआ। फिर नये सिरे से अच्छे नि स्वार्थी, सेवाभावी लोग आवेंगे तब काम फिर चालू होगा और सस्था सुचारू रूप से चलने लगेगी। एक उदाहरण देकर इस बात को समझाने का प्रयास करूगा कि एक किसान जो चरित्रहीन, जुआरी, व शराबी है लेकिन है वह परिश्रमी, लगनशील व होशियार। वह अपनी वाक् कटुता से किसी से ऋण लेकर उन पैसो से अच्छा बीज खरीद कर खेत को समय पर बोयेगा, खूब मेहनत और लगन से खेत की देखभाल करेगा और समय पर खाद व पानी देगा तब फसल तो अच्छी होगी ही। यह अच्छी फसल होना उसकी लगन व मेहनत का फल है। फिर वह उस अच्छी फसल को बेचकर सारा धन जुआ शराब व गलत रास्ते से पानी की तरह बहा देता है। और ऋणदाता को नहीं देता है तब ऋणदाता उसके ऊपर मुकदमा करके उसको जेल भिजवा देता है और जेल मे उसको चक्की पीसनी पडती है और कोडे खाने पडते हैं। यह उसके कर्मों का फल हुआ इसलिए यह कभी न समझें कि किसी गलत व्यक्ति या व्यक्तियो ने कुछ समय के लिये सफलता प्राप्त कर ली तो ईश्वर के घर मे न्याय नहीं है। ईश्वर की न्याय व्यवस्था मे अच्छे कर्मों का फल अच्छा और बुरे कर्मों का फल बुरा अवश्य मिलता है। निम्नलिखित सूत्र भी यही दर्शाता है।

"अवश्यमेव भोक्तव्य कृत कर्म शुभाशुभम्"

–खुशहालचन्द्र आर्य,
१८० महात्मा गान्धी रोड़ (दो तल्ला), कोलकाता–७०००००७

जिला गुड़गांव तथा जीन्द में वेदप्रचार मण्डलों की बैठक

हरयाणा में वेद प्रचार के प्रसार करने के लिए आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से जिला वेद प्रचार मण्डलों का पुनर्गठन किया जा रहा है। इसी उद्देश्य से १३ जुलाई २००२ को दोपहर बाद २ बजे आर्यसमाज मन्दिर जैकमपुरा गुडगाव मे तथा १४ जुलाई को वैदिक आश्रम अर्बन इस्टेट जीन्द में प्रात १० बजे जिले के सभी आर्यसमाजों एव आर्यसंस्थाओं के अधिकारियों तथा कार्यकर्त्ता की बैठक रखी गई है। इनमें सभा के अधिकारी सम्मिलित होगे। अत वेदप्रचार कार्य में रुचि लेने वालों से निवेदन है उपरोक्त कार्यक्रम मे पहुचकर सहयोग देवे।

यशपाल आचार्य सभामन्त्री

दिव्यता के सूत्र

—आचार्य भगवानदेव 'चैतन्य'

महर्षि दयानन्द जी सरस्वती ने वेद को सब सत्य विद्याओ का पुस्तक कहा है और वेद को कल्पना लोक से उतारकर व्यावहारिकता के आगन में उतारने का न केवल साहस किया बल्कि इस तथ्य को प्रमाणित करके दिखा दिया कि वेद हमें तृण से लेकर परमात्मा तक का सत्य और निर्भ्रान्त दिशाबोध देता है। इसीलिए उन्होंने कहा कि हम यदि जीवन में श्रेष्ठता प्राप्त करना चाहते हैं तो हमे वेद का पठन पाठन तथा श्रवण और प्रवचन करना चाहिए। वेद का प्रत्येक मन्त्र अपने आप में अद्भुत और अनुपम परमात्मा द्वारा पदत्त है। यहा पर हम ऋग्वेद का प्रसग प्रस्तुत करके चार महत्वपूर्ण प्रश्नों और उनके उत्तरो का वर्णन करना चाहते हैं। महर्षि दयानन्द जी अपने भाष्य मे लिखते हैं कि जिज्ञासुओ को विद्वानो से ऐसे ही प्रश्न पूछकर अपने ज्ञान की वृद्धि करनी चाहिए।

पृच्छामि त्वा परमन्तं पृथिव्या· पृच्छामि यत्र भुवनस्य नाभि.।
पृच्छामि त्वा वृष्णो अश्वस्य रेत पृच्छामि वाच· परम व्योम।। (ऋ० ११६४ ३४)

यहा पर चार प्रश्न उठाए गए हैं - (१) मैं पूछता हू कि इस पृथ्वी का परला सिरा क्या है? अर्थात् अन्तिम उद्देश्य क्या है? (२) मैं पूछता हू कि ब्रह्माण्ड की नाभि, केन्द्र, बन्धन-स्थल क्या है? क्या द्युलोक ही वह नाभि है, सारा कार्यकारण भाव क्या द्युलोक मे ही विश्रान्त है? (३) मैं पूछता हूं कि तेजस्वी, निरन्तर मार्ग को व्याप्त करने वाली पुरुष शक्ति किसमें है? (४) मैं पूछता हू वाणी के परम आकाश को?

वेद मे ही इन लोक परलोक का ज्ञान देने वाले प्रश्नों का उत्तर देते हुए कहा गया है कि-

इय वेदि. परो अन्त पृथिव्या अयं यज्ञो भुवनस्य नाभि·। अय सोमो वृष्णो अश्वस्य रेतो ब्रह्माय वाच. परमं व्योम।।(ऋ० ११६४ ३५)

इस मत्र में क्रमश इन महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर दिए गए हैं कि (१) जिस वेदी पर हम बैठ कर विचार कर रहे हैं यह वेदी ही पृथ्वी पर अन्तिम सिरा है (२) यह यज्ञ ही सारे ब्रह्माण्ड की नाभि है (३) यह सोम अर्थात् वीर्य ही तेजस्वी, अनथक परुष की शक्ति है (४) यह ब्रह्म ही वाणी का परम आकाश है ।

अब इन उत्तरो पर थोडा सा विचार से चिन्तन करते हैं ताकि परमात्मा द्वारा प्रदत्त ज्ञान की पराकाष्ठा को प्राप्त करके हम अपने जीवन को सफल बना सकें। प्रथम बात कही गई है कि- **'इय वेदि: प्रथिव्या· पर: अन्त.'** अर्थात् जिस वेदी पर हम बैठकर विचार कर रहे हैं यह वेदी ही पृथिवी का अन्तिम सिरा है। यहा पर एक तो इस वैज्ञानिक तथ्य को बडे ही सुन्दर ढग से वर्णित किया गया है कि यदि हम आज जिस स्थान पर हैं यहा से किसी भी दिशा को चलना आरम्भ करें तो अन्तत हम उसी स्थान पर पहुच जायेंगे जहा से हमने चलना आरम्भ किया था क्योंकि पृथवी गोल है। इसके साथ-साथ यह बात बता दी गई है कि अपने जीवन को यज्ञमय बना देना ही पृथिवी पर आने का हमारा अन्तिम उद्देश्य है। यहीं पर हम अपने आप को देवत्व के साथ जोडकर देवता बन सकते हैं। देवता बनना ही जीवन का लक्ष्य होना चाहिए इसीलिए धरती को 'देवयज्ञनि' भी कहा गया है। यह देवों के यजन का स्थान है। हम स्वर्ग नरक के कल्पना लोक में न खो जाए बल्कि यहीं जहा पर हम हैं यहीं पर पवित्रता के साथ जुडकर अपने लिए स्वर्ग का निर्माण कर सकते हैं। स्वर्ग-नरक कोई विशेष स्थान न होकर स्थिति विशेष है और स्वर्ग मरने के बाद ही नहीं मिलता है बल्कि देवत्व के साथ जुडकर जीते जी ही स्वर्गीय बनने का प्रयास करना चाहिए। इसके लिए अपने जीवन को यज्ञमय बनाने की जरूरत है क्योंकि परोपकारी व्यक्ति को ही परमात्मा सब प्रकार के सुखों से पुरस्कृत करता है। इस यज्ञ रूपी नाव पर आरूढ होकर ही हम लोक-परलोक को सुखी बना सकते हैं और कोई उपाय नहीं है। वेद मे अन्यत्र कहा गया है -

पृथक् प्रायन्प्रथमा देवहूतयोऽकृण्वत श्रवस्यानि दुष्टरा। न ये शेकुर्यज्ञियां नावमारुहमीर्मैव ते न्यविशन्त केप्य:।।(ऋ० १०.४४.६)

अर्थात् प्रथम कोटि के विस्तृत ज्ञानी दिव्य गुणो का आह्वान करने वाले अलग मार्ग पर जाते हैं। वे बडे दुस्तर श्रवणीय यशों को प्राप्त कर लेते हैं। किन्तु जो इस यश रूपी नाव पर चढने मे समर्थ नहीं होते वे कुत्सित, शास्त्र-विरुद्ध कर्म करने वाले यहीं इसी लोक में (एषणाओ के दलदल में) नीचे-नीचे ही धसते जाते हैं। इस मन्त्र मे यज्ञमय जीवन यापन करने वाले व्यक्तियों के बारे में बताया गया है कि उनका परोपकार का अलग ही मार्ग होता है जिस पर चलते हुए वे अनेक प्रकार के कठोर कार्य भी सफलता पूर्वक करके यश के भागी बनते हैं। ऐसा वे तभी कर पाते हैं क्योंकि वे यज्ञरूपी नाव पर दृढता पूर्वक आरूढ हो जाते हैं। दूसरे वे व्यक्ति होते हैं जिनका जीवन यज्ञमय नहीं होता है। इस यज्ञरूपी नाव पर आरूढ न हो सकने वाले ऐसे व्यक्ति सासारिकता के ही दलदल मे अधिक से अधिक धसते चले जाते हैं। इसलिए हम देवयजन करके अपने जीवन को सफल बनाये क्योंकि इस पृथ्वी पर आने का यही लक्ष्य है कि अपने लिए देवत्व का सृजन करके लोक-परलोक को सवार सके।

दूसरे प्रश्न का उत्तर है **'अय यज्ञो भुवनस्य नाभि'** अर्थात् यह यज्ञ सारे ससार की नाभि है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी इस युग के महानतम क्रान्तद्रष्टा हुए हैं क्योंकि उन्होने धर्म और आध्यात्म की सही-सही व्याख्या करके उसे सकुचितता की कारा से बाहर निकालने का महान् कार्य किया है। यज्ञ के बारे मे उनके शब्द देखिये -'अग्निहोत्र से लेकर अश्वमेघ पर्यन्त जो जो शिल्प व्यवहार और पदार्थ विज्ञान है, जो कि जगत् के उपकार के लिए किया जाता है उसको यज्ञ कहते हैं। मैं समझता हू कि श्रीकृष्ण महाराज जी ने गीता मे जिस प्रकार से यज्ञ की विस्तृत व्याख्या करके सारे ससार को ही यज्ञमय बताया है ठीक उसी प्रकार महर्षि जी के इस छोटे से वाक्य के अन्दर यज्ञ का इतना अधिक विस्तृत वर्णन समा गया है कि इसकी जितनी चाहे व्याख्या करते चले जाए। अग्निहोत्र से प्रारभ करके राजनीति और औद्योगिक तथा वैज्ञानिक क्षेत्र मे होने वाले समस्त कार्यकलाप को उन्होने यज्ञ के अर्न्तगत ही समाहित कर दिया है मगर शर्त यह है कि वे सब कृत्य जगत् के उपकार की भावना से होने चाहिए।

अग्निहोत्र पर्यावरण को शुद्ध करने का एक बहुत ही उत्तम तथा वैज्ञानिक ढग है। हवन में डाले गए समस्त पदार्थ नष्ट नहीं होते हैं बल्कि अग्नि का स्पर्श पाकर वातावरण मे फैल जाते हैं। यही नहीं बल्कि अग्नि के स्पर्श से पदार्थ की गुणवत्ता भी बढ जाती है। इसलिए महर्षि जी ने प्रत्येक व्यक्ति को प्रतिदिन अग्निहोत्र करने का विधान किया है। अग्निहोत्र से मात्र इतना ही लाभ नहीं होता है बल्कि इससे व्यक्ति के हाथो परोपकार का अद्भुत कार्य होता है तथा उसका लोक-परलोक सवर जाता है। यज्ञ का बहुत ही विस्तृत क्षेत्र है। पाणिनि जी ने इसका विस्तार करते हुए इसे सगतिकरण, देवपूजा और दान के साथ जोडा है। मानव मात्र मे आपसी प्रेम होना चाहिए, बडो का आदर किया जाना चाहिए और पुण्य कार्य करने के लिए अपना सर्वस्व समर्पित कर देने की भावना होनी चाहिए। यह समर्पण की भावना प्रत्येक क्षेत्र मे लागू होती है। जहा व्यक्ति का अपना कोई स्वार्थ होता है वहा पर यह यज्ञ की भावना नहीं होती है और यही प्रत्येक प्रकार की अव्यवस्था का कारण बनता है। यह समर्पण और त्याग की भावना जहा पर नहीं होगी वहा न तो कोई नेता राष्ट्र की सेवा कर सकता है, न परिवार मे ही एक दूसरे का सहयोग और सेवा कर सकता है और न ही सामाजिक उत्थान हो सकता है इसलिए यज्ञ ही वास्तव मे किसी भी अच्छे व्यक्ति का, परिवार का, समाज का, राष्ट्र का या समूचे विश्व का हित करनेवाला बिन्दु है। इसीलिए यज्ञ को समूचे ब्रह्माण्ड की नाभि कहा गया है हमे यज्ञ की भावना को आत्मसात् करने की जरूरत है।

तीसरे प्रश्न का उत्तर दिया गया है -**'अय सोम वृष्ण. अश्वस्य रेत'** अर्थात् यह सोम-वीर्य ही तेजस्वी, अनथक पुरुष की शक्ति है। आज के इस आत्मघाती युग मे जहा सब ओर सैक्स का नगा नृत्य हो रहा है, वेद की यह शिक्षा न केवल अनिवार्य है बल्कि अपरिहार्य भी है। आज व्यक्ति के चरित्र का पतन इसलिए हो रहा है क्योंकि हम लोगों ने ऋषि मुनियो की अनमोल शिक्षाओ को दर किनार कर दिया है। कभी किसी ने एड्स जैसी बीमारी का नाम नहीं सुना था मगर आज इस भयकर बीमारी का आतक सारे ससार मे फैल गया है। यह सब मुक्त रूप से भोग भोगने का ही दुष्परिणाम है। इस उपचार रहित बीमारी से निजात पाने के लिए दीवारो पर नारे लिखे जा रहे हैं कि एक पत्नी या एक पतिव्रता बने। हमारे ऋषि मुनियो ने पहले ही इस प्रकार की व्यवस्था कर रखी है मगर उस शिक्षा को न मानने का यह कुफल भोगना पड रहा है। और इससे बचने का ढग वास्तव मे ही सयमित जीवन जीने की दिशा पर चलना ही है। एड्स की बिमारी मुख्य रूप से यही है कि इस रोगी के भीतर बिमारी से लडने की शक्ति क्षीण हो जाती है। इसलिए शक्ति स्रोत वेद ने वीर्य को बताया है। अत्यधिक वीर्य के क्षरण से व्यक्ति का ओज और तेज नष्ट हो जाता है। इसलिए इस जीवन स्थली को भोग स्थली नहीं बल्कि यज्ञ स्थली बनाने की जरूरत है। गृहस्थ जीवन में भी जो व्यक्ति शास्त्रानुमोदित नियमो पर चलता है महर्षि जी उसे भी ब्रह्मचारी जैसा ही कहते हैं। यहा हम केवल एक लौकिक उदाहरण देकर इस प्रसग को विराम देना चाहेगे। आयुर्वेदिक शास्त्रो मे बताया गया है कि भोजन पकने की प्रक्रिया मे से बहुत सार रूप मे जब पहुचता है तो वीर्य बनता है। इस कठिनता से बने वीर्य को जो व्यक्ति अज्ञानता के कारण यू ही नष्ट करता रहे उसे कोई बुद्धिमान् नहीं कह सकता है। जिस प्रकार एक माली कितने ही फूलो का रस लेकर उसे अनेक प्रकार की प्रक्रियाओ मे से गुजारता हुआ इत्र की कुछ बूदे बनाता है यदि वह बने हुए अनमोल इत्र को यू ही गन्दी नाली मे फेंक दे तो उसे कोई भी बुद्धिमान् नहीं कहेगा बल्कि उसकी नादानी पर सबको तरस ही आयेगा। ठीक ऐसे ही बडी कठिनता से बने इस अनमोल धातु को सभालकर रखने की आवश्यकता है क्योंकि इसी से व्यक्ति के भीतर अपार शक्ति का सचय हो पाता है। इसलिए वेद भी कह रहा है कि वीर्य ही व्यक्ति के तेज और कर्मठता का आधार है।

चौथे प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा गया है -**'ब्रह्माय वाच परम व्योम'** अर्थात् यह ब्रह्म ही वाणी का परम आकाश है। शब्द आकाश का गुण है मगर आकाशत्व का कारण भी परमात्मा ही है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी यजुर्वेद (५ १०) के मन्त्र का भाष्य करते हुए वाणी के बारे मे निर्देश देते हैं कि वाणी शिक्षा विद्या से सस्कृत होनी चाहिए तथा सत्यभाषणयुक्त और मधुर गुण सहित होनी चाहिए।

मनु महाराज जी ने (१२ ६) कठोर वचन, मिथ्याभाषण, चुगली करना और असम्बन्ध प्रलाप वाणी के चार पाप बताए हैं। इसलिए हमे वाणी के प्रयोग मे बहुत ही सावधानी बर्तने की जरूरत है। विवेचित मन्त्र मे वाणी का परम व्योम परमात्मा बताया गया है इसलिए वाणी का महत्व प्रभु भजन मे ही है। हमे परमात्मा की उपासना करने के मार्ग का कदापि त्याग नहीं करना चाहिए। क्योकि महर्षि जी के शब्दों मे जो परमात्मा की उपासना नहीं करता है वह मूर्ख ही नहीं बल्कि कृतघ्न भी है। परमात्मा की कृपा से हमे ससार की समस्त न्यायते मिली हुई हैं। और इससे बडी कृतघ्ना भला क्या होगी कि हम परमात्मा का धन्यवाद तक न करे। वेद का ज्ञान का अन्तिम लक्ष्य भी परमात्मा की प्राप्ति ही बताया गया है अन्यथा वेद ऋचाओ का अध्ययन करने से भी क्या लाभ ?

ऋचो अक्षरे परमे व्योमन्यस्मिन्देवा अधि विश्वे निषेदु।

यस्तन्न वेद किमृचा करिष्यति य इत्तद्विदुस्त इमे समासते।।

(ऋ०१ १६४ ३९)

अर्थात् वेद की समस्त ऋचाए प्रभु का वर्णन कर रही हैं, जो कि सर्वोत्कृष्ट है, सब ऋचाओ का ज्ञान देने वाला है, समस्त जड-चेतन देवता जिसके अधीन हैं ऐसे परमात्मा को जो नहीं जानता है वह भला ऋचाओ से क्या लाभ करेगा? जो लोग वास्तव मे उस महान् परमात्मा को जान लेते हैं वही धन्य हैं तथा वे ही ससार मे प्रेमपूर्वक निर्वहन कर पाते हैं

इसलिए परमात्मा पर श्रद्धा और भरोसा करके ही व्यक्ति अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है तथा फलता-फूलता है और जो परमात्मा के विमुख है या उसके प्रति शकाशील है उसका नष्ट हो जाना निश्चित है-

य स्मा पृच्छन्ति कुह सेति घोरमुतेमाहुर्नैषो अस्तीत्येनम्।

सो अर्य पुष्टीर्विज इवा मिनाति श्रदस्मै धत्त स जनास इन्द्र।।

(ऋ० २ १२ ५)

अर्थात् जिस अद्भुत परमात्मा के विषय में शकालु लोग पूछा करते हैं कि वह कहा है? और कुछ कहते हैं कि वह है ही नहीं। वह परमात्मा ऐसे प्रतिकूल विचारधारा रखने वाले के सब सासारिक वैभव भूकम्प के समान नष्ट कर देता है। इसलिए ससार के लोगो उस परमात्मा पर भरोसा और श्रद्धा रखो क्योकि वही परमैश्यवान् और समस्त एश्वर्यों का देने वाला है।

इस प्रकार उपरोक्त पक्तियो मे जो चार प्रश्न उठाए गए और उनके अत्यधिक महत्वपूर्ण उत्तर दिए गए इनके अनुसरण से ही हमारा जीनव सार्थक हो सकता है क्योकि ये ही दिव्यजीवन प्राप्त करने के सूत्र हैं। इनका अनुसरण करनेवाला व्यक्ति ही देवता बनककर जीवन की समस्त उपलब्धियो को प्राप्त कर सकता है। ऐसे व्यक्ति का तो समूचा जीवन ही वेद के निम्न मन्त्र के समान एक यज्ञ ही बन जायेगा-

यज्ञस्य चक्षु प्रभृतिर्मुख च वाचा श्रोत्रेण मनसा जुहोमि।

इम यज्ञ वितत विश्वकर्मणा देवा यन्तु सुमनस्यमाना।।

(अर्थव० २ ३५ ५)

ऐसा जीवन जीने वाला वयक्ति कह सकेगा कि मैं मुख से, वाणी से, कान से, मन से हवन ही करता हू। यह मेरा जीवनयज्ञ जगत् रचयिता परमात्मा ने विस्तृत किया है, इसमे सब देव, दिव्य भाव प्रसन्नतापूर्वक आवे समाविष्ट हो

उपरोक्त चारों उत्तरों में एक क्रमबद्धता है, जो व्यक्ति इस पृथ्वी को या मानव जीवन को देवयजनी समझकर दिव्यता प्राप्त करने की दिशा मे चलेगा वही यज्ञ और परोपकार के कार्यों को आत्मसात् करेगा और ऐसा करने से उसके भीतर अपार बल-वीर्य की वृद्धि होगी और वह परमात्मा की उपासना के मार्ग पर चलकर अपने अन्तिम लक्ष्य को प्राप्त कर लेगा।

आर्य वर की आवश्यकता

एक जाटकुलोत्पन्न सुशिक्षित-बी ए बी एड आर्य कन्या के लिए एक जाट कुलीन न्यूनतम बी.ए.बी.एड सुयोग्य आर्य वर की आवश्यकता है। कन्या का कद ५ ५" और वर्ण गेहुंआ है। बड़क, दहिया और सांगवान गोत्र हैं। राजकीय सेवा में कार्यरत वर को प्राथमिकता दी जायेगी। इच्छुक निम्न लिखित पते पर सम्पर्क करे।

प्रो० दयाचन्द आर्य

६१४-ए/३४ हरिसिंह कालोनी सरकुलर रोड़, रोहतक।

दूरभाष · ०१२६२-७०२१०

आवश्यकता है

आर्यसमाज नरवाना (जीन्द) की शिक्षण संस्थाओं के लिये निम्नलिखित आवश्यकता है। दिनाक १२ जुलाई २००२ तक आवेदन करें। वेतन योग्यता अनुसार दिया जायेगा। योग्यता शास्त्री/विद्यावाचस्पति गुरुकुल के स्नातक/स्नातिका को प्राथमिकता दी जायेगी।

(१) धर्मशिक्षिका दो पद

(२) धर्मशिक्षक एक पद

—विजयकुमार, मन्त्री, आर्यसमाज नरवाना जिला जीन्द (हरयाणा)

❑ किसी दूसरे का बुरा सोचकर अपना कोई टूना-टुनमन करके अपना या अपने बालकों का भला चाहना बहुत ही बुरा है। दूसरों का ही भला चाहने से अपना भला होता है। दूसरे का बुरा चाहने से अपना भला कभी नहीं हो सकता।

आर्य-संसार

सतलुज-यमुना सम्पर्क नहर का मामला

–डा० सत्यवीर विद्यालंकार

सतलुज-यमुना सम्पर्क नहर के मामले मे पजाब के मुख्यमत्री कै० अमरेन्द्रसिह द्वारा १९ जून, २००२ को विधानसभा मे दिये गये बयान को पढकर ऐसा लगता है कि अब भारत के सुप्रीम कोर्ट को भी लोगों ने अगूठा दिखाना शुरु कर दिया है। इस वर्ष के आरम्भ मे सुप्रीम कोर्ट ने हरयाणा के हिस्से का पानी देने का निर्णय दिया है और उसके अनुसार सम्पर्क नहर बनवाने के लिए एक वर्ष का समय दिया है। कई मास बीत जाने के बाद भी नहर के अधूरे निर्माण का काम तो शुरु क्या करना, उल्टा सुप्रीम कोर्ट के आदेश की खिल्लियां उडा रहे हैं। सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय के विरुद्ध मुख्यमत्री द्वारा विधानसभा मे, प्रेस कान्फ्रेस मे या आम सभा मे तनिक भी परवाह न करते हुए मनमाने बयान देकर सही फैसले को धूल मे मिलाने का प्रयास उचित नहीं है। क्या सर्वोच्च न्यायालय के फैसले के विरुद्ध इस प्रकार विष वमन ठीक है ? ऐसे जन-भावनाओं को भडकाने वाले बयान देने वालो के विरुद्ध कानूनी कार्यवाही होनी चाहिये। सम्पर्क नहर का थोडा-सा अधूरा पडा काम पूरा करवाने के लिए न्यायालय को समयबद्ध कार्यवाही करनी चाहिये अन्यथा एक वर्ष यो ही निकल जाएगा।

उपर्युक्त प्रश्नों का उत्तर देश के करोडो लोग चाहते हैं। गत ५ मास में सम्पर्क नहर बनवाने के लिए क्या कुछ कार्यवाही की गयी है, इसका हरयाणा की जनता को पता लगना चाहिये।

समस्त वेदप्रेमियों को खुशखबरी

समस्त वेदप्रेमी जनता को सूचित करते हुए हर्ष होरहा है कि आर्यसमाज जामनगर द्वारा एक वेबसाइट तैयार की जारही है, जिसके द्वारा चार वेद, सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, वेदाग तथा आर्ष उपनिषदो की सम्पूर्ण विश्व में प्रचार करने की योजना है। इस महान् कार्य के लिए "आर्यसमाज जामनगर" सभी धर्मप्रेमी सज्जनो से तन, मन और धन से सहयोग की आशा करता है क्योंकि इस कार्य हेतु पर्याप्त धन की आवश्यकता होगी।

वेबसाइट – www.aryasamajjamnagar org

ई-मेल – info@aryasamajjamnagar.org

–सतपाल आर्य, मत्री

शुभविवाह सम्पन्न

मा० ईश्वरसिह आर्य ग्राम मकडौली कला जिला रोहतक के सुपुत्र श्री सत्येन्द्र आर्य का शुभविवाह दिनाक २१-६-०२ को श्रीमती सन्तोषकुमारी ग्राम कलाहवड जिला रोहतक के साथ सम्पन्न हुआ। विवाह मे सभी रस्मे एक रुपये से सम्पन्न हुई।

सभा के उपमत्री श्री केदारसिह तथा अन्य सदस्य विवाह मे सम्मिलित हुए।

बहराणा में व्यायाम एवं सदाचार प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

आर्यसमाज बहराणा (झज्जर) द्वारा श्री सिद्धान्ती स्मारक भवन बहराणा मे दिनाक १६-६-०२ से २३-६-०२ तक आठ दिवसीय व्यायाम एव सदाचार प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया, जिसमे ७० युवको ने भाग लिया। ब्रह्मचारी साबरमल व प्रतापसिह शास्त्री ने, आसन, दण्ड-बैठक, स्तूप निर्माण, जूडो-कराटे आदि व्यायामो का क्रियात्मक प्रशिक्षण दिया। प्रतिदिन यज्ञ-सत्सग व बौद्धिक कार्यक्रम के माध्यम से युवको को वैदिक सस्कृति व सिद्धातो से परिचित कराया गया। प० चिरजीलाल जी आर्य भजनोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का प्रचार कार्यक्रम प्रभावशाली रहा। शिविर के समापन दिवस दिनाक २३-६-०२ को आचार्य विजयपाल जी गुरुकुल झज्जर ने शिविर के होनहार युवको को आर्यजीवन जीने की शपथ दिलवाकर यज्ञोपवीत प्रदान किये तथा शिविर के श्रेष्ठतम २० युवको को उत्तम साहित्य प्रदान कर पुरस्कृत किया एव उपस्थित श्रोताओ को यज्ञीय सस्कृति का उपदेश दिया। सभा को ८००/- प्रदान किये गये। शिविर का सयोजन डॉ० राजपाल बरहाणा ने किया। सभी ग्रामवासियो व आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओ का विशेष सहयोग रहा। –मत्री, आर्यसमाज बरहाणा (झज्जर)

वेदप्रचार

(१) दिनाक ५-६-२००२ को आर्यसमाज रिठाल जिला रोहतक मे आर्यसमाज के कोषाध्यक्ष श्री सत्यवीर आर्य ने अपने दो पोतो के नामकरण सस्कार पर यज्ञ व वेदप्रचार करवाया। इस अवसर पर बच्चो के नाम वेदप्रकाश व ओमप्रकाश रखे गए। सभा को ३०० रुपये और एक बोरी गेहू दान दिया।

(२) दिनाक ८, ९ जून २००२ को आर्यसमाज कोथकला जिला हिसार मे वेदप्रचार किया गया। प्रात ८-०० बजे गाव की चौपाल मे यज्ञ किया गया और सात नौजवानो को यज्ञोपवीत दिये गये और ईश्वरभक्ति के भजन सुनाये गये। वेदप्रचार प्रभावशाली रहा। १०८६ रुपये सभा मे दान दिया।

(३) दिनाक १८ से २० जून को आर्यसमाज दूबलधन जिला झज्जर मे वेदप्रचार किया। समाज मे बढती हुई कुरीतियो का पुरजोर खण्डन किया और आर्यसमाज के मन्त्री श्री धारासिह आर्य भूतपूर्व सरपच के द्वार पर यज्ञ किया और यज्ञोपवीत दिये गये। आर्यसमाज के अधिकारियो ने अपनी आर्यसमाज का वेदप्रचार दशाश सर्वहितकारी शुल्क ११८६ रुपये सभा को दिये। उपरोक्त कार्यक्रम म० जयपालसिह आर्य व सत्यपाल आर्य भजनोपदेशक द्वारा किए गए।

प्रो० शेरसिंह पूर्व रक्षाराज्यमंत्री एव अध्यक्ष हरयाणा रक्षावाहिनी का प्रधानमत्री के नाम पत्र

आदरणीय श्री वाजपेयी जी

उच्चतम न्यायालय के १५ जनवरी के निर्णय अनुसार सतलुज-यमुना लिक नहर के बचे हुए निर्माण कार्य को शीघ्र पूरा करने मे सम्बन्ध मे आपको लिखे मेरे पत्र दिनाक २ अप्रैल २००२ का उत्तर जल ससाधन मत्री, भारत सरकार ने अपने पत्र दिनाक २४ जून के द्वारा भेजा है। एतदर्थ आपका तथा जल ससाधन मत्री का धन्यवाद

ऐसा लगता है कि देर से उत्तर देने का कारण पजाब सरकार के मुख्यमत्री द्वारा उच्चतम न्यायालय मे दायर की गई उनकी पुनर्विचार याचिका होगी। सौ दिन से अधिक समय बाद उच्चतम न्यायालय द्वारा याचिका खारिज कर दिये जाने पर जल समाधन मत्री महोदय ने मेरे पत्र का उत्तर भेजा है।

उच्चतम न्यायालय के सुस्पष्ट निर्णय के अनुसार पजाब राज्य को सतलुज-यमुना लिक नहर का बचा हुआ कार्य एक साल के अन्दर पूरा करना है। पजाब सरकार द्वारा न्यायालय के इस निर्देश का अनुपालन न करने पर केन्द्र सरकार हस्तक्षेप करे और अपनी एजेन्सी द्वारा इस काम को पूरा करववाए, यह भी सुस्पष्ट निर्देश है।

जल ससाधन मन्त्री महोदय ने पजाब सरकार से अनुरोध किया है कि वह लिक नहर के बचे हुए काम को एक वर्ष के भीतर पूरा करें।

सरदार प्रकाशसिह बादल की तरह वर्तमान मुख्यमत्री सरदार अमरेन्द्रसिह ने भी हरयाणा को रावी व्यास के पानी मे उसका हिस्सा देने से इन्कार किया है। पूर्व मुख्यमत्री ने इसे चुनाव का मुद्दा बना रखा है, सरदार सिमरनजीतसिह मान ने इसी मुद्दे को लेकर, लिक नहर मे मिट्टी डलवाकर उसे पाटने का नारा देकर सरदार सुरजीतसिह बरनाला को लोकसभा के चुनाव मे हरा दिया। इसीलिए सरदार अमरेन्द्रसिह लिक नहर के बचे हुए काम को पूरा करने का साहस नहीं जुटा पारहे हैं।

अब इसमे कोई सन्देह नहीं रह गया है, कि पजाब सरकार उच्चतम न्यायालय के निर्देश का अनुपालन नहीं करेगी। अब यह केन्द्र सरकार का दायित्व बन गया है कि वह उस निर्देश का अनुपालन करते हुए अपनी एजेन्सी के द्वारा लिक नहर के बचे काम को पूरा करवाए।

१९९३ में श्री नरसिह राव यह काम बार्डर रोड सगठन के द्वारा करवाना चाहते थे, परन्तु साहस नहीं जुटा पाये। मेरा आपसे अनुरोध है कि केन्द्र सरकार अविलम्ब इस कार्य को अपने हाथो मे लेकर लिक नहर का काम पूरा करे और हरयाणा को उसके हिस्से का पानी सन् २००३ के आरम्भ मे दिलवाकर हरयाणा की सूखी धरती की प्यास बुझाए।

सद्भावनाओ सहित,

सादर
आपका
(शेरसिह)

अर्जुनचरण सेठी
जल संसाधन मंत्री, भारत सरकार का उत्तर

प्रिय प्रो० सिह जी,

माननीय उच्चतम न्यायालय के १५ जनवरी, २००२ के निर्णय के अनुसार सतलुज-यमुना सम्पर्क नहर के बचे हुए निर्माण कार्य को शीघ्र पूरा कराये जाने के सम्बन्ध मे माननीय प्रधानमत्री जी को सम्बोधित तथा मुझे पृष्ठाकित, दिनाक २ अप्रैल २००२ के अपने पत्र का कृपया सदर्भ ले।

जैसा कि आप भली-भाति अवगत ही हैं, माननीय उच्चतम न्यायालय के निर्णय मे निहित सुस्पष्ट निर्देशो के अनुसार पजाब राज्य को निर्णय से एक वर्ष की समयावधि के दौरान नहर को क्रियात्मक करना है तथा केन्द्र सरकार का निर्माण कार्य मे हस्तक्षेप पजाब राज्य द्वारा उपर्युक्त निर्देश का अनुपालन न करने की स्थिति मे ही अपेक्षित है।

तदनुसार मेरा मत्रालय पजाब सरकार के निरन्तर सम्पर्क मे है तथा मैंने भी पजाब के मुख्यमत्री को माननीय उच्चतम न्यायालय के निर्देशानुसार नहर का निर्माण कार्य विनिर्दिष्ट समय सीमा मे पूरा कराने हेतु समुचित कार्रवाई करने का अनुरोध किया है।

शुभकामनाओ सहित, आपका
(अर्जुनचरण सेठी)

चौ० रामजस जी गो रा की द्वितीय पुण्यतिथि पर—

एक प्रसिद्ध गो त् और अद्भुत साहस के धनी थे चौ० रामजस जी गोदारा

सन् १९८७ मे पूरे देश मे सूखा पडा हुआ था उस समय पडौसी राजस्थान के निवासी लोग अपने पालतू पशुओ को छोडकर (जिनमे अधिकतर गाय ही थी) अपनी रोजी-रोटी की तलाश मे अन्य राज्यो मे पलायन कर गये। उस परिस्थिति मे इन गायो पर बूचडखानो के दलालो की नजर लगी जो उस समय दिन-रात ट्रको, रेलो के द्वारा भारी मात्रा मे गोवश बूचडखानो मे जारहा था। उस समय गोगामेडी (जो हनुमानगढ जिला त० भादरा, राजस्थान मे स्थित है) भाद्रपद मास गोगाजी की स्मृति मे मेला भरता, जिसमे प्रतिवर्ष ३०-४० लाख लोगो का आवागमन होता है लेकिन धर्म नाम का वहा कोई कार्य नहीं होता, केवल कोरा पाखण्ड और ठगाई होती, इस स्थान पर आर्यसमाज के विद्वान् मेला अवसर पर पधारकर वेदप्रचार करते थे। कालान्तर मे आर्यजगत् के महान् तपस्वी स्वतन्त्रानन्द जी के शिष्य स्वामी ईशानन्द जी आर्य सन्यासी के द्वारा वैदिक साधु आश्रम की स्थापना की गई। इस आश्रम के सचालक आनन्दमुनि (वानप्रस्थी) ने १९८७ मे एक हजार अनाथ, असहाय गायो को एकत्र कर अकाल राहत शिविर चलाया। बाद मे गोशाला के रूप मे स्थायी सस्था बनाई गई उस समय वानप्रस्थी जी सिरसा जिले के गावो में गायों के लिये तूडी, अन्न, रुपये लेने के लिए आते थे। वानप्रस्थी जी को उस समय चौ० खेताराम जी गोदारा केहरवाला स्व० रामचन्द्र जी आर्य लेकर ऐलनाबाद चौ० रामजस जी गोदारा से मिले दान की अपील की। चौ० साहब ने प्रसन्नता २१०० रुपये का दान दिया लेकिन वानप्रस्थी जी ने जब प्रात काल यज्ञ किया उस समय वानप्रस्थी जी ने दक्षिणा के रूप शेष जीवन गौ सेवा के लिये देने को कहा। चौ० रामजस जी ने बिना सोचे एक क्षण मे अपना शेष जीवन गोसेवा के रूप कार्य करके बिताने का वचन दिया।

मनसा वाचा कर्मणा के अनुसार चौ० रामजस जी भविष्य मे वाणी के धनी निकले उस दिन से सारे गृहस्थ का कार्य छोडकर केवल मात्र गोसेवा को चुना। गोगामेडी गोशाला मे किसी चीज की कमी नहीं आने दी लेकिन वानप्रस्थी जी का स्वास्थ्य खराब होने से कमेटी मे परिवर्तन किया। कुछ षड्यन्त्रकारी लोग इस कमेटी के सदस्य बनकर नाथ समुदाय के साधु प्रेमनाथ को इस सस्था का अध्यक्ष बना दिया गया, अब प्रेमनाथ और उसकी मण्डली का इस सस्था पर आधिपत्य होगया, लेकिन बिना त्याग के सेवा कर नहीं सकते। प्रेमनाथ की मण्डली थोडे काल मे अपने ही सगठन के एक आदमी को कत्ल कर दिया, पुलिस ने अपराधियो को गिरफ्तार किया लेकिन निर्दोष सस्था को भी बन्द कर दिया गया। इस सस्था की सम्पत्ति को सरकारी कर्मचारी ने भी लूटी। यह गोशाला सन् १९९२ से १९९७ तक बन्द पडी रही।

जब चौ० साहब ने अपने द्वारा सचालित सस्था की दुर्दशा देखी दु खी मन मेरे पास नोहर तहसील भालडका गाव मे आये (जहा हमने महर्षि दयानन्द सरस्वती गोशाला जो इसी सस्था के समकालीन १९८७ मे शुरु की, जो अब बहुत अच्छी प्रकार से चल रही। मैं गोशाला कार्यालय मे बैठा था, उन्होने सस्था गतिरोध की सब बाते बताई। मैं चौ० साहब को लेकर जयपुर स्थित आर्यसमाज आदर्शनगर मे स्वामी सुमेधानन्द जी मिला। उनके माध्यम से अनेक राज्य अधिकारियो और मत्रियो मे इस विषय मे मिले, एक सप्ताह बाद एस डी एम नोहर ने फैसला गोगामेडी गोशाला के पक्ष मे कर दिया। चौ० रामजस जी की खुशी की सीमा न रही, मानो उनको दुनिया की अप्राप्त वस्तु मिल गई। तब से मैं और चौ० रामजस जी एक साथ कार्य करने लगे। चौ० साहब ७६ वर्ष की अवस्था मे दिन-रात दान सग्रह रात ११-०० बजे तक, दिन के ५ बजे से १ बजे तक करते रहते थे। उनमे निराशा और थकावट नाम की वस्तु न थी। १९९७ से २००० तक के अल्पकाल मे १० एकड जमीन को शेडो, गायो की बैरगो, पानी के होजो, पचासो कमरे, तूडी के स्टोर, ट्रैक्टर, जमीन, जनरेटर चक्की, हरा चारा बुनियादी वस्तुओ को सदा के लिये स्थायी बना १००० गायो की आश्रय स्थली बना ऋषियज्ञ मे अपने जीवन की एक समिधा जला गये।

एक दिन मैं ऋषिकृत सस्कारविधि मे अन्त्येष्टि सस्कार विषय पढ रहा था उसी के अनुसार मृत्युभोज, ओढवानी लेना, अवैदिक मैंने बताया तो उसी समय इस बुराई को हटाने का निर्णय चौ० साहब ने लिया कालान्तर मे जब उनकी धर्मपत्नी का निधन हुआ मृत्युभोज, ओढवनी दोनो कुप्रथाओ को बन्द कर दिया और अपने पैतृक गाव चाहूवाली जाकर दोनो बुराइयो को अपने परिवार के लगभग २५-३० घरो मे पूर्णरूप से बन्द कर दिया।

चौ० साहब शिक्षा प्राप्त नहीं कर सके लेकिन वो कार्य कर गये जो बडे-बडे शिक्षा अधिकारी नहीं कर सकते। एक बार की बात है चौ० साहब के पास उनके छोटे पुत्र के लिए अपनी लडकी का रिश्ता करने के लिए आये तो उन्होने स्पष्ट कह दिया मेरे पुत्र की अपेक्षा मेरे भाई के पुत्र मे योग्यता अधिक है।

चौ० साहब सब प्रकार से सम्पन्न होने पर भी किसी राजनैतिक दल मे शामिल होकर वाणी का प्रयोग अपने स्वार्थ के लिये नहीं किया।

चौ० किसानो के प्रति बडी निष्ठा रखते घर पर किसी समय शहर मे उनके घर, दुकान, किसान आते तो उनको भोजन अपने घर करवाते न कि होटल पर।

नागौर (राज०) बाढ के कारण १५० आदमी ऐलनाबाद आये। मेरे सामने देशी घी का हलवा बनवाकर भोजन करवाया। चौ० साहब जात-पात, छुआ-छूत, ऊच-नीच से दूर रहे। हमेशा गरीब हर वर्ग से प्यार करते सहायता के लिये तत्पर रहते थे।

उनका स्वप्न था ऐलनाबाद मे आर्यसमाज की स्थापना हो जो किसी कारण से नहीं हो सकी, उनके पुत्र ओ३मप्रकाश जी ने वचन दिया है। गृह-प्रवेश पर आर्यसमाज का उत्सव करायेगे।

चौ० रामजस जी गोदारा गत वर्ष २१ जून २००१ को प्रात काल ब्राह्ममुहूर्त ५ बजे इस नश्वर शरीर का त्याग पर परलोक गमन कर गये। भले चौ० साहब हमारे बीच मे नहीं लेकिन उनके द्वारा किये कार्य हमे उनकी याद दिलाकर उनके मार्ग का अनुसरण करने की प्रेरणा देते रहेगे। चौ० रामजस जी के तीन पुत्र, एक पुत्री क्रमश (१) स्व० इन्द्रसिह, (२) ओ३मप्रकाश, (३) धर्मवीर जी, (४) मूर्ति बहन, इनका पौत्र पवनकुमार भी दादाजी जीवन को जीवन शैली का सूत्र मानता है। चौ० साहब द्वारा पोषित सस्था-(१) वैदिक साधु आश्रम गोवश रक्षा केन्द्र, गोगामेडी त० नोहर जिला हनुमानगढ (रजि०), (२) स्वामी केशवानन्द जी विद्यापीठ सगरिया, (३) साधु आश्रम श्योदानपुरा, (४) गोशाला ऐलनाबाद, (५) महर्षि दयानन्द गोशाला थालडका, (६) जनता हस्पताल ऐलनाबाद, (७) जाट धर्मशाला सिरसा, उनके पुत्र ओ३मप्रकाश जी ने उनकी स्मृति मे ५० हजार रुपये जाट धर्मशाला ऐलनाबाद, एक लाख रुपये गोशाला गोगामेडी, एक लाख की लागत ऐलनाबाद गोशाला का प्रवेश द्वार निर्माण करवाया है।

—द्वारा आर्यसमाज सिरसा

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन ०१२६२-७६८७४, ७७८७४) मे छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष ०१२६२-७७७२२) से प्रकाशित।
पत्र में प्रकाशित लेख सामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री का सहमत होना आवश्यक नहीं। पत्र के प्रत्येक प्रकार के विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक होगा।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३ सृष्टिसंवत् १, ९६, ०८, ५३, १०३
पंजीकरणसंख्या टैक/85-2/2000 ☎ ०१२६२-७७७२२

रोहतक

प्रधानसम्पादक : यशपाल आचार्य, सभामन्त्री सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री

वर्ष २६ अंक ३२ १४ जुलाई, २००२ वार्षिक शुल्क ८०) आजीवन शुल्क ८००) विदेश में २० डॉलर एक प्रति १.७०

राष्ट्र की इस्लामिक आतंकवादी समस्या पर विशेष :-

क्या इस्लामिक आतंकवाद की समस्या का समाधान सम्भव है ?

सुखदेव शास्त्री 'महोपदेशक' दयानन्दमठ रोहतक

कट्टर इस्लामिक आतंकवादी गतिविधिया तो ७१२ ई० से ही देश में भयकर रूप से आरंभ हो चुकी थी। हजारों लाखो लोग आतकवाद के शिकार हो चुके थे। भारतीय जनता मुस्लिम बादशाहो के अत्याचारों को सहते-सहते अत्यत कष्टों का सामना करती रही।

इस मजहबी मुस्लिम कट्टरता के विषय मे सर्वप्रथम महर्षि दयानन्द ने ही अपने भाषणों तथा "कुरान शरीफ" की आयतों की व्याख्या सत्यार्थप्रकाश के चौदहवें समुल्लास में करके जनता को इनकी मजहबी असत्य बातों से अवगत कराया था। महर्षि दयानन्द कर्नल प्रतापसिह तथा राव तेजसिह के विशेष निमत्रण पर सितबर १८८३ को जोधपुर में वैदिक धर्म प्रचारार्थ पहुचे थे। राजा जसवन्तसिह के वेश्या से सम्बन्ध होने तथा फैजुल्ला खा, डा० अलीमर्दान खा वेश्या नन्हींजान व रसोइये धौड़मिश्र के षड्यन्त्र के कारण महर्षि को २९ सितबर १८८३ को विष दिया गया जिसके कारण ३० अक्तूबर को महर्षि का बलिदान हो गया।

इसी प्रकार पं० लेखराम जी आर्य-मुसाफिर का बलिदान भी इन्हीं मुस्लिम कट्टरपन्थियों के द्वारा ६ मार्च १८९७ को किया गया। प० लेखराम अकेले ही मुस्लिम कट्टरवाद का सामना करते रहे। पं० लेखराम जी तथा महात्मा मुन्शीराम जी दोनो ही आर्यसमाज के महान् नेता थे। आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब की सभी गतिविधियों के वे प्रमुख थे।

म० मुन्शीराम जी का जन्म १८५६ मे पजाब के जालन्धर जिले के ग्राम तलवन मे श्री नानकचन्द के घर हुआ था।

मुन्शीराम का भाग्योदय :- जिस प्रकार से पं० लेखराम को महर्षि के दर्शनों से जीवन मे महान् परिवर्तन हुआ था, वैसे ही मुन्शीराम को सर्वप्रथम बरेली में महर्षि के दर्शनो से महान् लाभ हुआ था। महर्षि दयानन्द के दर्शनों से पूर्व इस नवयुवक मुन्शीराम का जीवन अच्छा न था। बरेली मे महर्षि के व्याख्यानों का प्रबन्ध मुन्शीराम जी के पिता श्री नानकचन्द पुलिस अधिकारी के जिम्मे था। नानकचन्द जी ने व्याख्यानो के प्रबन्ध करने के साथ-साथ महर्षि के व्याख्यानो को भी बडे ध्यान से सुना, वे बडे प्रभावित हुए अपने नवयुवक पुत्र मुन्शीराम को भी महर्षि के व्याख्यान सुनने के लिए प्रेरित किया। मुन्शीराम महर्षि के सर्वप्रथम दर्शनो से ही बडे प्रभावित हुए।

उनके व्याख्यानों से पहले दिन ही वे मन्त्रमुग्ध हो गए। व्याख्यान के बाद महर्षि से ईश्वर की सत्ता के विषय मे अनेक प्रश्न पूछे, समुचित उत्तर पाकर मुन्शीराम बडे प्रसन्न हुए। इसके पश्चात् उन्होंने जालन्धर मे ही वकालत प्रारम्भ कर दी। सत्यार्थप्रकाश पढने से तो उनकी काया ही पलट हो गई। वे आर्यसमाज के सदस्य बन गए। मुन्शीराम तत्कालीन नेताओ के सम्पर्क मे आए। जिनमें प० गुरुदत्त विद्यार्थी से घनिष्ठ सम्बन्ध हो गए। लाला लाजपतराय, राय मूलराज, म० हसराज आदि कई अन्य आर्यसमाजी विद्वानों से सम्पर्क मे आए।

गुरुकुल की स्थापना का निश्चय :- सत्यार्थ प्रकाश के पढने से उन्हे यह प्रेरणा मिली कि बालको के निर्माण के लिए गुरुकुल खोला जाय। १९०२ मे हरद्वार मे गुरुकुल कागडी की स्थापना की गई।

महात्मा मुन्शीराम ने अपने दोनो पुत्रों को गुरुकुल को अर्पण करने के साथ-साथ अपना निजी पुस्तकालय, जालन्धर की अपनी विशाल कोठी, अपना **"सद्धर्म प्रचारक पत्र"** और अपना प्रेस, आदि सर्वस्व गुरुकुल को समर्पण कर दिया गया। वे १७ वर्ष तक गुरुकुल के आचार्य रहे। गुरुकुल में भारत भर से छात्र पढने के लिए प्रविष्ट हुए। हजारो वैदिक विद्वान् स्नातक होकर निकले। जिन्होने देश विदेश मे अपनी विद्वत्ता की धाक जमा दी। धूम मचा दी। गुरुकुल की यह ख्याति देखकर अग्रेजी सरकार घबरा गई। अग्रेज सरकार व ईसाइयो ने गुरुकुल को राजद्रोही सस्था बताया गया। इसीलिए वायसराय तथा उत्तर प्रदेश के गवर्नर तक भी गुरुकुल की की गतिविधियो की जाच करने आये थे। १९१४ मे ब्रिटेन के मजदूर दल के नेता रेमजे मैक्डानल्ड भी भारत यात्रा पर आने पर गुरुकुल भी आए थे। उन्होने आर्यसमाज तथा गुरुकुल की प्रशसा की थी। महर्षि दयानन्द की आर्ष शिक्षा पद्धति को सफलता प्रदान करने की मुन्शीराम की यह महान् उपलब्धि थी। गुरुकुल की स्थापना करके वैदिक आर्ष पद्धति को अपनाकर मुन्शीराम जी ने महर्षि दयानन्द के आदेश को पूरा किया था। गुरुकुल ने ही आर्यसमाज के कार्य को आगे बढाया था। गुरुकुल से शिक्षा प्राप्त स्नातको ने वेदो का भाष्य किया। सभी वैदिक ग्रन्थों का अनुवाद किया। देश विदेश मे वैदिक धर्म का प्रचार किया। राष्ट्र के स्वतत्रता सग्राम मे स्वय म० मुन्शीराम जी तथा गुरुकुल के स्नातको का महान् योगदान रहा। गुरुकुल कागडी की स्थापना के पश्चात् भारत मे अनेक गुरुकुलो की स्थापना म० मुन्शीराम ने ही की थी। हरयाणा के अनेको गुरुकुलो के सस्थापक थे। गुरुकुल के छात्रो ने ही सर्वप्रथम हैदराबाद में नवाब के अत्याचारो के विरुद्ध सत्याग्रह किया था। आर्यसमाज की विजय हुई थी। इस प्रकार गुरुकुल का १८ वर्ष तक सफल सचालन कर १८ अप्रैल १९१७ को वैदिक मर्यादा के अनुसार सन्यास ले लिया। अपना नाम 'श्रद्धानन्द' रखा। राजनीति मे रहते हुए गुरुकुल को विद्वान् स्नातको के हाथो मे सौंपकर राजनीति क्षेत्र मे नेतृत्व किया। १९१९ मे दमनकारी रौल्ट एक्ट के विरोध मे उन्होने म० गाधी के साथ सत्याग्रह मे ३० मार्च १९१९ मे इस काले एक्ट के विरुद्ध सारे देश मे हडताल की। स्वामी श्रद्धानन्द ने दिल्ली मे जनता के जलूस का नेतृत्व किया। लाखो

दिल्लीवासी सभी हिन्दू-मुस्लिम जलूस मे शामिल हुए थे। चादनी चौंक मे गौरखे सिपाहियो ने जलूस को रोकना चाहा और स्वामी जी को गोली मारने की बात कही, तब स्वामी जी ने गोरखे सिपाहियो को ललकार कर कहा था -**"लो, सामने खडा हू, हिम्मत हो तो गोली मारो"।** उसी समय मे ही स्वामी जी ने जामामस्जिद मे व्याख्यान दिया था। इस प्रकार इस निर्भीक सन्यासी ने अग्रेजी पुलिस को भी कुछ न समझा, पुलिस पीछे हट गई। आज भी चादनी चौक दिल्ली मे स्वामी जी की प्रतिमा उस वीर सन्यासी की याद दिला रही है। इतना सब कुछ होने पर भी स्वामी श्रद्धानन्द ने काग्रेस की मुस्लिम तुष्टीकरण का विरोध किया। उन्होने काग्रेस से अपना सम्बन्ध विच्छेद कर लिया। गाधी जी मुस्लिम तुष्टीकरण को बहुत अधिक महत्त्व देते थे। स्वामी जी ने दलितो के उद्धार के लिए "दलितोद्धार" की स्थापना की थी। इसके साथ ही "शुद्धिसभा" की स्थापना की थी। स्वामी जी ने शुद्धि सभा द्वारा लाखो मलकाने मुसलमानो को शुद्ध करके उन्हे फिर से वैदिक धर्मानुयायी बनाया। जिला गुडगाव स्थित प्रदेश के हजारो मुसलमानो को भी शुद्ध किया। इस शुद्धि से मुसलमानो मे हलचल मच गई। स्वामी जी के शुद्धि आन्दोलन ने मुसलमानो को भडकाया गया कहर मौलवियो तथा काग्रेस के म० गाधी के सहयोगी मौलाना मुहम्मद अली-शौकत अली आदि प्रमुख काग्रेसी तथा विदेशी सरकार के इशारे पर नाचने वाले मुसलमानो, कुछ प्रमुख सरकारी कर्मचारियो तथा मुस्लिम व्यापारियो की साजिश से स्वामी जी की हत्या का गुप्त षड्यन्त्र चलने लगा। दिल्ली की मस्जिदो मे रात-दिन गुप्त सभाए होती रहतीं।

हत्या का भयकर मुस्लिम षड्यन्त्र -

२३ दिसम्बर १९२६ को दोपहर २ बजे अब्दुल रशीद नामक व्यक्ति स्वामी जी के नया बाजार स्थित मकान की पहली मजिल के बाहर के कमरे मे आया और स्वामी जी से कुछ बाते करने का बहाना करने लगा। स्वामी जी के कमरे मे जाकर उसने पीने को पानी मागा। जिस समय स्वामी जी का सेवक पं० धर्मसिह पानी लेने कमरे मे गया तब उस हत्यारे ने तीन गोलिया मारी। स्वामी जी के सेवक धर्मसिंह व धर्मपाल विद्यालकार ने उसे पकड लिया। अब्दुल रशीद गिरफ्तार कर लिया गया। स्वामी जी का तो उसी समय देहान्त होगया था। हत्यारे को फांसी की सजा हुई।

इस प्रकार महात्मा के रूप में, अन्त में सन्यासी के रूप मे अपनी सारी आयु को धर्म, राष्ट्र और जनता की सेवा मे समर्पित कर अन्त समय मे मातृभूमि, भारतीय वैदिक सस्कृति की रक्षा मे ही अपना सम्पूर्ण बलिदान दिया। इस निर्भीक सन्यासी का अमर बलिदान भारत के इतिहास मे सदैव अमर रहेगा। २३ दिसम्बर १९२६ को स्वामी जी का बलिदान हुआ था।

अब आप सोचिये ! मुस्लिम आतंकवाद की भेट में चढे आर्यसमाज के नेता महर्षि दयानन्द सरस्वती, पं० लेखराम आर्यमुसाफिर तथा स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान मुस्लिम मानसिकता का ही परिणाम है। इसी का नाम इस्लामिक आतकवाद है।

इसे आप अच्छी प्रकार से अब्दुल रशीद हत्यारे के अदालत मे दिये गए बयान को पढकर देखिये -

मैं बडा उत्साही मुसलमान हू। मेरा हृदय शुद्धि और सगठन का आन्दोलन जड पकडते देखकर जल उठा। स्वामी श्री श्रद्धानन्द आदि हिन्दुओ के प्रति मेरी घृणा की कोई सीमा न रही और मैंने उन सभी नेताओ को मार डालने का निश्चय किया। मुझे दुख है कि मेरा काम अधूरा ही हुआ क्योकि दूसरे नेता सुरक्षित बच गए, जो इस्लाम को हानि पहुचा रहे थे। मैं सन् १९२३ मे इस काम के लिए अफगानिस्तान से पिस्तौल लाया था। कुछ दिन हुए मैंने अपनी पत्नी को तलाक तक दी है। स्वामी जी को दरयाफ्त करने के लिए २३ दिसम्बर को मैं तेज अखबार के दफ्तर मे गया था। मेरे जीवन का उद्देश्य पूरा हो गया। मैंने इस्लाम को नष्ट होने से बचाने का प्रयत्न किया है। मेरे घरवालो को मेरा अभिमान होना चाहिए। मैं मरकर बहिस्त (स्वर्ग) मे जाऊंगा।।

स्वामी इन्द्रवेश जी विदेश के दौरे पर

आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान् सन्यासी पूर्व सासद स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज ६ जुलाई से न्यूयार्क व इंग्लैंड (लन्दन) की यात्रा पर चले गये। श्री सन्तराम आर्य ने बताया कि स्वामी जी का कार्यक्रम हर वर्ष (जुलाई+अगस्त+सितम्बर) तीन मास का समय विदेशी आर्यसमाज एव वैदिक विचार धारा को जन-जन तक पहुचाने के लिए निश्चित हो गया है।

वैदिक-स्वाध्याय

मंगल मिलन

यदग्ने स्यामहं त्वं, त्व वा घा स्या अहम्।
स्युष्टे सत्या इहाशिषः।।

ऋ० ८।४४।२३।।

शब्दार्थ—(अग्ने) हे प्रकाशस्वरूप (यत् अहं त्व स्याम्) जब मैं तू हो जाऊ (वा घ) या (त्वं अहं स्याः) तू मैं हो जाय तो (ते इह आशिषः) तेरे इस ससार के वे सब आशीर्वाद (सत्याः स्यु) सत्य, सफल होजायें।

विनय—हे नारायण ! तुम्हारी मगलकामना प्राणिमात्र के लिए अनवरत हो रही है, तुम्हारे आशीर्वाद प्रत्येक जीव के लिए अपने प्रत्येक पुत्र के लिए एक समान बरस रहे हैं। फिर भी जो ये आशीर्वाद हमें लगते नहीं है, हम पर अपना असर नहीं करते हैं, इसका कारण यह है कि हम ही अपने आप को इनसे वचित रख रहे हैं। स्वार्थ, अहकार, अस्मिता से हमने अपने आप को ऐसा बाध लिया है, ऐसा लपेट लिया है कि हम तुम्हारे वास्तव मे परम निकट होते हुए भी तुमसे दूर हो गये हैं कि हम पर तुम्हारी आशीर्वाद वर्षा का कुछ भी असर नहीं होता। हे मेरे प्यारे ! प्रकाशमय देव ! हममे दूरी करनेवाला, हमे जुदा रखनेवाला, यह आवरण अब सहा नहीं जाता। अब तो यह पर्दा फट जाय, यह आवरण हट जाय और मैं तू हो जाऊं या तू मैं हो जाये, तथा जीवन भर में तुम्हारे प्रति की गई मेरी सब प्रार्थनाएं एक पल मे पूरी हो जाए। हे प्रभु ! वह दिन कब आयेगा, जबकि तेरे ध्यान मे मग्न होकर अपने आप को खो दूगा और दूसरी तरफ तुम अपने परम प्यारे पुत्र को अपनी गोद मे आश्रय दे दोगे। महात्मा अपने एक चिरवियुक्त अंग को फिर अगीकार कर लोगे, जबकि मेरी अग्नि तुम्हारी बृहत्-अग्नि मे जाकर 'मैं' को नष्ट कर देगी अथवा जबकि तुम्हारे द्वारा मेरे स्वीकृत हो जाने से "तुम" जाता रहेगा ? तब मेरी कोई प्रार्थना न रहेगी क्योकि तब मेरा कोई स्वार्थ व कामना न रहेगी और इसलिए तब तुम्हारा कोई आशीर्वाद भी बाकी न रहेगा। उस मगल मिलन मे तुम्हारे सब आशीर्वाद मूर्तिमन्त, सत्य, सफल हो जायेगे। जीवन भर मे जो जो मैंने तुमसे भक्तिमय प्रार्थनाये की हैं और उनके उत्तर मे, उनकी स्वीकृति मे तुमसे मैंने जो नाना आशीर्वाद पाये हैं, वे सबके सब आशीर्वाद आखिर इसी महान् मगलमिलन के लिये थे। मेरी सब प्रार्थनाओ की एक इच्छा, और तुम्हारे सब मेरे प्रति आशीर्वचनो की एक इच्छा, यह मिलन ही थी। तुम्हारी मेरे कल्याण की सब की सब कामनाये, सब आशीर्वाद, इस आत्मप्राप्ति मे एकदम पूरे हो जाते हैं, क्योकि यही मेरा सबसे बडा कल्याण है, कल्याणो का कल्याण है, जिसमे सब कल्याण समा जाते हैं। अहो ! वह मगल मिलन, वह महान् मिलन।

बोली ऐसी सुहाती बोल

मुख चाहे हिन्दी बोल, चाहे फिर पजाबी बोल।
मन सबका शीतल कर दे, बोली ऐसी सुहाती बोल।।
बोली ही एक ऐसी है, जो औरो को अपना कर दे।
क्षण मे हृदय शात करके, दुखियो की पीडा हर दे।।
छोड के झझटबाजी सारी, शका सशय मन के खोल।
मन सबका शीतल कर दे, बोली ऐसी सुहाती बोल।।
इस बोली के तासिर से ही, आसन तक मिल जाता है।
या फिर इसके कारण ही, पल अपमान का आता है।।
मुखौटा बातों का हट जाये, खुल जाय न पोलमपोल।
मन सबका शीतल कर दे, बोली ऐसी सुहाती बोल।।
धीर गंभीर बातों से ही, मन सबका तू जीत सके।
अट शट बकनेवालो को, हर कोई अपने से दूर रखे।।
गफलत में न रहना तू, ले पहचान बोली का मोल।
मन सबका शीतल कर दे, बोली ऐसी सुहाती बोल।।
इस बोली के कारण कितने, ताज तख्त बर्बाद हुए।
भाई भाई के शत्रु बने, धरा पे कितने उन्माद हुए।।
प्यार का रस दिल में ऐसा, देवें 'रश्मि' सबके घोल।
मन सबका शीतल कर दे, बोली ऐसी सुहाती बोल।।

—मोहनलाल शर्मा 'रश्मि' दाहोद, गुजरात

सभा अधिकारियों द्वारा आर्यसमाजों एवं संस्थाओं का भ्रमण

सभा मंत्री आचार्य यशपाल जी तथा मैं दिनांक २४ जून २००२ को सभा कार्यालय रोहतक से सभा के अंतरंग सदस्य श्री जयपाल आर्य के पास गये। उनको तथा वैद्य गैंदाराम जी आर्य को साथ लेकर आर्यसमाज रेलवे मार्ग यमुनानगर गये। वहां आर्यसमाज के अधिकारियों तथा आर्य समाज के अन्य कार्यकर्त्ताओं से आर्यसमाज के कार्य सुचारू रूप से संचालन करने के लिए विचार विमर्श किया। किसी कारण इस आर्यसमाज का वार्षिक चुनाव तीन वर्ष से नहीं हो सका। सभामन्त्री जी ने अधिकारियों को परामर्श दिया कि आर्यसमाज के नियम उपनियमों के अनुसार सदस्यों से वार्षिकशुल्क प्राप्त करके उनकी सूची सभा कार्यालय को शीघ्र भेज देवें, जिससे सभा की देख रेख में चुनाव करवाया जा सके। यमुनानगर से सभावाहन हेतु ३१०० रु का चैक सभामंत्री जी को भेंट किया गया।

आर्यसमाज मॉडल टाउन यमुनानगर के बाद कुरुक्षेत्र में महर्षि दयानन्द वैदिक धाम का निरीक्षण करके रात्रि को रोहतक आगये और ३० जून की अन्तरंग सभा की बैठक की तैयारी में व्यस्त रहे। प्रत्येक मास के प्रथम सप्ताह के रविवार को दयानन्द मठ में वैदिक सत्संग का आयोजन होता है, जिसमें रोहतक नगर तथा शहर के निकट ग्रामों से सैंकड़ों की संख्या में नर नारी सम्मिलित होते हैं। ७ जुलाई रविवार के सत्संग में सभा के उपप्रधान श्री रामधारी जी शास्त्री का आध्यात्मिक विषय पर प्रभावशाली प्रवचन हुआ। इस अवसर पर आर्यसमाज के प्रसिद्ध कार्यकर्त्ता मा० रामप्रकाश आर्य (लाढ़ौत) की सुयोग्य सुपुत्री श्रीमती दयाआर्या ने आर्यसमाज के पुराने प्रचारकों चौ० ईश्वरसिंह जी की हरयाणवी तर्ज पर मधुर गीत सुनाकर आनन्दित किया। श्रीमती दयाआर्या ने उक्त प्रचारकों के गीतों पर तीन कैसेट तैयार करके उनके श्रद्धालुओं की पुरानी मांग पूरी की है। एक कैसेट २५ रु० में नावल्टी न्यू वाच एण्ड म्यूजिक सेन्टर पुरानी झज्जर मार्ग चुंगी रोहतक के पते पर मिलती है। श्रीमती दया आर्या आर्यसमाज के उत्सवों पर भी जाती है। विशेष कर महिलाओं पर इनका बहुत प्रभाव पड़ता है। इनसे रोहतक में उनके निवास पर फोन नं० ५१०१२ पर संपर्क किया जा सकता है।

८ जुलाई को प्रातः सभामंत्री आचार्य यशपाल जी मैं केदारसिंह आर्य सभा उपमंत्री श्री सुरेन्द्र जी शास्त्री तथा आर्य विद्या परिषद् हरयाणा के प्रस्तोता प्रि० लाभसिंह जी सहित सभा द्वारा नवस्थापित गुरुकुल बराडा जिला अम्बाला गए। इस स्थान पर पूर्व आर्य वानप्रस्थ आश्रम का भवन जर्जर अवस्था में खाली पड़ा था। सभा ने दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय शादीपुर यमुनानगर की शाखा चालू की है। इसके संचालन के लिए स्थानीय आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं पर आधारित एक प्रबन्ध समिति कार्य कर रही है। प्रत्येक रविवार को यहां वैदिक सत्संग की व्यवस्था की जाती है। सभा के अंतरंग सदस्य श्री जयपाल आर्य एवं वैद्य गेन्दाराम जी आर्य आदि गुरुकुल के लिए धन तथा अन्न संग्रह में सहयोग दे रहे हैं। सभामन्त्री जी ने अंतरग सभा के प्रस्तावानुसार गुरुकुल के ऋषि लंगर के लिए १५ हजार रु० का अनुदान दिया। आर्य वानप्रस्थाश्रम की ओर से सभा वाहन के लिए ११०० रु सभामन्त्री जी को भेंट किये। बराड़ा के पश्चात् सभा अधिकारी सभा द्वारा संचालित डी. ए वी उच्च विद्यालय मुस्तफाबाद जिला यमुनानगर का निरीक्षण करने गये। वहां मुख्याध्यापक तथा उपस्थित स्टाफ ने स्वागत किया। विद्यालय की समस्याओं पर विचार विमर्श किया तथा विद्यालय में सभा द्वारा धार्मिक शिक्षा तथा परीक्षा की प्रत्येक वर्ष व्यवस्था करने का निर्देश दिया। स्थानीय प्रबन्ध समिति की ओर से सभामंत्री जी को सभावाहन के लिए ५१०० रु. की राशि भेंट की गई। मुस्तफाबाद के बाद सभा अधिकारी आर्यसमाज प्रेमनगर अम्बाला शहर गये। यहां गत कई वर्षों से चुनाव नहीं हो सका था। सभा को इस सम्बन्ध में शिकायतें आ रही थी। सभाधिकारियों ने सभी पक्षों से विचार विमर्श करके अन्तरंग सभा के प्रस्ताव के अनुसार सक्रिय कार्यकर्त्ताओं की तदर्थ समिति का गठन किया और यथाशीघ्र आर्यसमाज के नियम उपनियमों के अनुसार आर्यसभासदों की सूचि तैयार करके सभाकार्यालय को भेजने का आदेश दिया ताकि सभा की देख रेख में वार्षिक चुनाव करवाया जा सके। इसके बाद हम अम्बाला छावनी में आर्यनेता कर्नल धवन जी से उनके निवास पर मिले और आर्यसमाज स्वामी दयानन्द मार्ग (कबाड़ी बाजार) अम्बाला छावनी तथा सभा की स्थानीय आर्य शिक्षण संस्थाओं के बाद विवाद समाप्त करने में सहयोग करने की मांग की। वहीं श्री कृष्णलाल वर्मा जी भी इस विचार विमर्श में सम्मिलित हो गये। दोनों नेताओं ने सभा को अपना सहयोग देने का आश्वासन दिया। इस सम्बन्ध में आर्यसमाज स्वामी दयानन्द मार्ग के प्रधान श्री भूषणकुमार जी ओबराय से मिलने गये। उनसे विस्तृत चर्चा की गई। उन्होंने बड़ी उदारता पूर्वक सभाअधिकारियों को वचन दिया कि शीघ्र ही सभा के विरुद्ध जो अभियोग चल रहे हैं, उन्हें वापिस लेकर सभा के साथ रहकर आर्यसमाज तथा शिक्षण संस्थाओं का संचालन सभी आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं का सहयोग लेकर संचालन करें। अम्बाला छावनी के पश्चात् सभाधिकारी सभा द्वारा संचालित गुरुकुल कुरुक्षेत्र पहुंचे। वहां प्राचार्य देवव्रत जी तथा अध्यापकों ने स्वागत किया तथा वर्तमान समस्याओं पर विचार विमर्श किया। गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी गुरुकुल की परीक्षाओं का शानदार परिणाम आने पर सभा मन्त्री जी ने प्राचार्य जी तथा स्टाफ की सराहना की।

गुरुकुल के पश्चात् सभा अधिकरी महर्षि दयानन्द वैदिक धाम कुरुक्षेत्र के प्रबन्धक श्री भगवानसिंह जी मिले तथा विचार विमर्श करने के बाद रात्रि को वापिस सभा कार्यालय रोहतक आ गये।

—केदारसिंह आर्य, सभाउपमंत्री

वेदप्रचार सप्ताह उत्साहपूर्वक मनाने की अपील

हरयाणा प्रदेश के आर्यसमाज के अधिकारियों से अपील है कि अगस्त तथा सितम्बर मास के वर्षा ऋतु में वेदप्रचार सप्ताह गत वर्षों की भांति उत्साह पूर्वक मनायें। सभा कार्यालय में पत्र लिखकर उपदेशक तथा भजनोपदेशक को आमंत्रित करें। जिन की माग पहले आवेगी उनकी व्यवस्था पहले की जावेगी। आर्यसमाज का विशेष कार्य वेदप्रचार का प्रसार करना है। सभा कार्यालय में वैदिक साहित्य भी उपलब्ध है। अत मंगवाकर प्रचार में सहयोग करें।

—यशपाल आचार्य सभामन्त्री

पं० रामकुमार आर्य की भजन मण्डली द्वारा

आर्यसमाजों से जो योगदान मिला वह निम्न प्रकार है :-

		रसीद नं	कुल योग
१	आर्यसमाज हाट जिला जीन्द में वैदिक प्रचार से कुल धनराशि	२५७०२	१३८८
२	प्रधान ओमप्रकाश जी शर्मा आर्यसमाज गंगटहेड़ी जिला करनाल	२५०७३	किलोग्राम २८७
३	आर्यसमाज हाट जिला जीन्द में वैदिक प्रचार के लोगों ने बड़ी रुचि और शान्ति के साथ सुना तथा ऋषि लंगर के लिए पांच बोरी पचास किलो गेहूं	५७०५	किलोग्राम ५५०
४	प्रधान विजय सिंह जी एवं सरपंच रामपाल जी द्वारा डेढ बोरी	२५७०६	किग्रा १५०
५.	आर्यसमाज बागड़ूखुर्द जिला जीन्द रामकुमारआर्य भजनोपदेशक द्वारा पांच बोरी गेहूं	२५७०७	५००
६.	आर्यसमाज बागड़ू खुर्द जिला जीन्द मास्टर प्रतापसिंह एवम् मास्टर राजकुमार द्वारा	२५७०८	रु १५२
७.	अजमेरसिंह जी सरपंच द्वारा बागड़ू कलां जीन्द एक बोरी पच्चीस किलो	२५७०९	किग्रा १२५
८.	मास्टर मीरसिंह जी आर्य ग्राम पाथरी पो० सींक जिला पानीपत	२५७१०	रुपये १०१
९.	मास्टर ओमप्रकाश जी ग्राम पाथरी पो० सींक जिला पानीपत	२५७११	रु १०१
१०	प्रधान श्री टेकराम जी पुत्र कालुराम ग्राम पाथरी पो० सींक पानीपत भरपुर सहयोग से वैदिक प्रचार सम्पन्न हुआ किलोग्राम ऋषि लंगर के लिए पांच बोरी	२५७१२	किग्रा ५००
११	प्रधान टेकराम जी पुत्र कालूराम ग्राम पाथरी पो० सींक पानीपत	२५७१३	रुपये १०५
	जून २००२ प० रामकुमार जी आर्य की भजनमण्डली द्वारा नकद कुलधनराशि	३७००	

जून २००२ पं० रामकुमार जी आर्य की भजन मण्डली द्वारा अन्न सग्रह १८ क्विटल २५ किलोग्राम

ब्रह्मचर्य पालन करने के इच्छुक नवयुवकों की समस्या और समाधान

जब कोई नवयुवक श्रद्धा और संकल्प के साथ ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करना चाहता है तो उसके सामने कई समस्याएं आती हैं। जैसे समाज का प्रतिकूल वातावरण, भोगी व्यक्तियों की ब्रह्मचर्य के प्रति अश्रद्धा, अशुद्ध और राजसिक खानपान आदि जिससे स्वप्नदोष होता है, बार-बार उत्तेजना होती है और मन में चचलता आती है। अत जो नवयुवक या नवयुवती आजीवन ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहते हैं उन्हें योग्य गुरु या अनुभवी धार्मिक, श्रद्धालु वृद्ध के सम्पर्क में रहना चाहिए। मनुस्मृति तथा गृह्यसूत्र आदि में स्पष्ट उल्लेख है कि जो ब्रह्मचारी किसी अनुभवी की देखरेख में रहकर चलता है वह निश्चय ही सुख शान्ति और मोक्ष का अधिकारी बनता है। किसी की देखरेख में रहने से बिना कठिनाई के ब्रह्मचर्य का पालन हो जाता है।

ब्रह्मचर्य पालन का सबसे श्रेष्ठ उपाय है अटूट श्रद्धा से ईश्वर उपासना करना, ईश्वर को सर्वव्यापक मानकर अपने आपको सर्वदा ईश्वर के समीप और ईश्वर के अपने समीप अनुभव करना कि सर्वव्यापक अन्तर्यामी ईश्वर मेरी एक-एक क्रिया देख रहा है। उसके आश्रय से ही इस शरीर का पालन पोषण और वृद्धि हो रही है। तीसरा उपाय है कभी खाली न रहें, सर्वथा अपने आप को कार्य में व्यस्त रखें। कार्य न होने पर स्वाध्याय और लेखनादि में लग जायें क्योंकि खाली मन शैतान का घर है। अत सदा कार्य में लगनेवाला ब्रह्मचारी व्यसन में न फंसेगा। इसका चौथा उपाय है कि अपने आहार विहार मे सर्वथा सात्विकता का ध्यान रखे। राजसिक एवं उत्तेजक भोजन विशेषकर पान, गर्ममसाले, लहसुन, प्याज, लालमिर्च के प्रयोग से सर्वथा बचें। क्योंकि ये सब वस्तुयें अत्यन्त उत्तेजक हैं। युवावस्था में वीर्य बहुत बढता है। अत सात्विक खान पान से ही उस प्राकृतिक उत्तेजना से बचा जा सकता है। इसी प्रकार टी वी में सिनेमा के चित्र देखना, ससारिक कथा कहानी एव उपन्यास पढना भी ब्रह्मचर्य के पतन का कारण हो जाता है। अत ब्रह्मचारी को इनसे भी सर्वथा बचना चाहिए। इसी प्रकार भोग विलास की बाते करने वाले सासारिक लोगों से भी जितना दूर रहेगे ब्रह्मचर्य पालन करने में उतनी ही आसानी रहेगी। ब्रह्मचारी यह भी ध्यान रखें कि शरीर बनने और वीर्य वृद्धि का समय सीमित है। वीर्य जीवन का अमृत है। जैसे तेल के बिना दीपक बुझ जाता है, इसी प्रकार वीर्यहीन नवयुवक, अल्पबुद्धि एवं रोगों का घर हो जाता है। चरक में लिखा है कि "आयुष्याणां ब्रह्मचर्यम्" अर्थात् आयु वृद्धि करने वालों में ब्रह्मचर्य परम साधन है। यदि इस प्रकार का चिन्तन ब्रह्मचारी के मस्तिष्क मे रहेगा तो वह अत्यन्त सुख-शान्तिपूर्वक लम्बी आयु पाकर संसार का बहुत अधिक उपकार कर सकेगा।

फिर भी युवावस्था के कारण कुछ अधिक उत्तेजना अनुभव होती है तो प्रतिदिन मालकागनी के एक दो बीज निगल लें या एक दो ग्राम चूर्ण खा लें या पहले चार-पांच दिन प्रतिदिन या फिर एक महीने तक सप्ताह में दो बार फिर आगे सप्ताह में एक बार चने के बराबर देशी कपूर को गुड के साथ एक घूंट पानी से निगल लें। इस चूर्ण को दिन में दो-तीन बार एक-एक चम्मच खा के ऊपर से पानी पी लें। इनमें से कोई एक दो प्रयोग करने से उत्तेजना एव स्वप्नदोष कम हो जायेगा। पेशाब में जलन आदि हो तो वह भी ठीक हो जायेगी।

किसी गलत व्यवहार से गर्म खान पान से या शरीर की वात, पित्त प्रकृत्ति के कारण यदि वीर्य पतला होकर स्वप्नदोष अधिक होता है तो घबराये नहीं या चिन्ता न करे। थोडासा गम्भीरतापूर्वक यत्न करने से समस्याएं दूर हो जाती हैं। इसके लिए या तो प्रतिदिन प्रात काल गिलोय का रस, एक कप को लेकर उसमें थोडा सा शहद मिलाकर तीन-चार महीने तक ले लें। या बिना बीज वाली बबूल का फल, बबूल की कच्ची हरी पत्तिया छायें में सुखाकर सूखे और बबूल के गोंद को इन तीनों को बराबर-बराबर मात्रा में लेकर कूट छान लें। इन तीनो के मिश्री लेकर कूट छान लें। फिर सबको मिलाकर दो-तीन बार बारीक कपडे से छान लें। इस चूर्ण की एक-एक चम्मच प्रात खाली पेट शाम को सोते समय सादे पानी से तीन चार महीने में लें। इससे वीर्य गाढा और स्वच्छ हो जायेगा तथा स्वप्नदोष समस्या दूर हो जायेगी। कई आयुर्वेदिक कपनियां इसे बनाकर विविध नामो से महगा बेचती हैं। साधारण सा परन्तु बहुत उपयोगी और महत्त्वपूर्ण योग है।

—स्वामी धर्मानन्द सरस्वती

गुरुकुल करतारपुर में छात्रों का प्रवेश

२० जुलाई २००२ शनिवार को प्रातः

श्री विरजानन्द गुरुकुल करतारपुर (जि० जालन्धर) पंजाब में कक्षा नौवीं में प्रवेश के इच्छुक छात्रों की प्रवेश परीक्षा २० जुलाई २००२ शनिवार को प्रातः १० बजे ली जायेगी। इन प्रवेशार्थियों की केवल गणित, हिन्दी, अंग्रेजी विषयों में आठवीं के स्तर की परीक्षा ली जाएगी। अधिक अंक पाने वाले छात्र नियत संख्या में ही प्रवेश पा सकेंगे। विद्याविनोद अर्थात् १०+१ तथा अलंकार अर्थात् बीए में प्रवेश के इच्छुक नये छात्रों को २० जुलाई तक प्रमाणपत्रों सहित उपस्थित होना होगा। शारीरिक और बुद्धि से कमजोर छात्रों को प्रवेश नहीं मिलेगा।

कक्षा ८ तक सी बी एस सी. (एन सी आर.टी) से तथा कक्षा-९ से अलकार (बी ए) तक का पाठ्यक्रम गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय हरिद्वार से सम्बन्धित है। पुस्तक वस्त्रादि, फुटकर खर्च तथा विश्वविद्यालय का परीक्षा शुल्क अभिभावक को ही वहन करना होगा। कक्षा नौवीं के प्रवेशार्थियों को १९ जुलाई २००२ शुक्रवार शाम तक गुरुकुल में पहुंच जाना चाहिए। यह उचित होगा कि छात्रों के अभिभावक स्वेच्छा से कुछ न कुछ मासिक सहायता भेजते रहने का भी आश्वासन दें। —यशपाल वर्मा आचार्य

महान् देशभक्त वीर भक्तसिंह

—पं० नन्दलाल निर्भय "पत्रकार"

देशभक्त धर्मात्मा, भक्तसिंह बलवान।
भारत मां की कर गए, जग में ऊची शान।।
जग में ऊंची गान, भगतसिंह थे नर बंका।
वीर पुरुष थे अजब, मौत की ना की शंका।।

अर्जुनसिंह के पौत्र, किशनसिंह के सुत प्यारे।
विद्यावती महान मात के, पुत्र दुलारे।।
अजीतसिंह के प्रिय भतीजे, युवक साहसी।
करते हैं सब गर्व, भगत पर भारतवासी।।

डी.ए.वी में पढ़े, धर्म की शिक्षा पाई।
आजादी के लिए लड़े, योद्धा बलदायी।।
बिस्मिल, शेखर, राजगुरु के मित्र निराले।
वीर लाजपत के सेनानी, थे मतवाले।।

माता-पिता से सदाचार की, महिमा जानी।
ब्रह्मचारी थे वीर, गए कर अमर कहानी।।
भारत में अंग्रेज, जुल्म करते थे भारी।
भारत था परतंत्र, दुखी थी जनता सारी।।

अंग्रेजों से युद्ध किया, थे धन्य भगतसिंह।
वेदामृत पिया, थे धन्य भगतसिंह।।
दुष्ट सांडरस से, पापी गौरों को मारा।
भगतसिंह के गीत रहा है गा जग सारा।।

स्वतत्रता की भेट चढायी भरी जवानी।
अमर रहेंगे सदा, भगतसिह से बलिदानी।।
उनको कुछ मक्कार लोग, लगे हैं दोष लगाने।
गए धर्म को भूल कुचाली ना शर्माते।।

भारत की सरकार, भांग पीकर के सोई।
कुर्सी जिन्दाबाद, मरे बेशक से कोई।।
कान खोलकर सुनो ध्यान से बात हमारी।
पछताओगे एक रोज, तुम अटलबिहारी।।

खुदगर्जों को पाप कर्म करने से रोको।
देशद्रोह के काम करें, उनको जेलों में ठोको।।
वीर साहसी बनो, वेद पथ को अपनाओ।
श्री राम, श्रीकृष्ण बनो तुम धर्म को अपनाओ।।

नाम आपका अटल, अटल नेता बन जाओ।
वीरों के हो पुत्र, न दुष्टों से दहलाओ।।
करो देश का ध्यान, जाग जाओ हे नेता।
दुष्टों को दो मिटा, बनो तुम वीर विजेता।।

ईश्वर की कर्मफल की व्यवस्था

कर्मफल की पहेली बड़ी विचित्र, रहस्यमयी व पेचीदा है। इसके लिए विद्वानों के भिन्न-भिन्न मत हैं, परन्तु अधिकतर मिलते जुलते ही विचार हैं और संचित कर्मों पर तो सबके एक समान विचार हैं। कुछ विद्वानों के विचार हैं कि कर्म तीन प्रकार के होते हैं। हम जो कर्म कर रहे हैं उनको क्रियमाण कर्म कहते हैं। जो कर्म कर चुके उनको कृतकर्म कहते हैं और जो कर्म करेंगे उनको करिष्यमाण कर्म कहते हैं और इन तीनों कर्मों में जिनका फल हाथों हाथ मिल गया वह कर्म समाप्त हो गये और जिन कर्मों का फल नहीं मिला है उनको संचित कर्म कहते हैं। संचित कर्मों का फल ईश्वर की न्याय व्यवस्था के अनुसार कभी भी मिल सकता है। मनुष्य को इस जीवन में भी मिल सकता है और आगे मिलनेवाले अनेक जन्मों में भी मिल सकता है, यह ईश्वर की न्याय व्यस्था पर आधारित है। गीता में श्रीकृष्ण भगवान् ने भी तीन प्रकार के कर्म बताए हैं। मनुष्य अपने जीवन में व्यक्तिगत नित्य कर्म जैसे भोजन करना, पानी पीना, सोना, बैठना आदि जो सामान्य व साधारण कर्म हैं इनको सिर्फ कर्म की संज्ञा दी है। इन कर्मों का ईश्वर कोई फल नहीं देता। दो किस्म के कर्म और होते हैं जिनको गीता की भाषा में अकर्म और विकर्म कहा गया है। अकर्म कर्म वे होते हैं जो निःस्वार्थ व त्याग भाव से जन कल्याण की दृष्टि से किये जावें और जो अपने स्वार्थ की दृष्टि से किये जावें, वे विकर्म होते हैं। इन दोनों का फल अच्छा या बुरा जरूर मिलेगा। जिन कर्मों का फल हाथों हाथ मिल गया वे कर्म तो समाप्त होगये और जिन कर्मों का फल नहीं मिला वे सचय होगये, इनको संचित कर्म कहते हैं। इस युग के महान् मनीषी, वेदों के विद्वान् महर्षि दयानन्द ने भी यही बात वेदों के आधार पर कही है। वे कहते हैं कि कर्म तीन किस्म के होते हैं, शुभ, अशुभ और मिश्रित। जिन कर्मों का फल तत्काल मिल जाता है, वे कर्म तो समाप्त हो जाते हैं और जिन कर्मों का फल नहीं मिलता वे संचित कर्म कहलाते हैं और संचित कर्मों को ही हम भाग्य या प्रारब्ध कह देते हैं यानि जिसे हम भाग्य कहते हैं वे हमारे संचित अच्छे या बुरे कर्म ही होते हैं जिनका हमें फल मिलना बाकी रहता है। वे फल ईश्वर की न्याय व्यवस्था के आधार पर हमको इस जीवन में या अगले अनेक जन्मों में भिन्न-भिन्न योनियों में मिलते रहते हैं। उदाहरण के तौर पर किसी ने चोरी की और पुलिस ने पकड़ लिया मुकद्दमा चलने पर उसे छह महीने की सश्रम सजा सुना दी। सजा भुगतने के बाद चोरी कर्म समाप्त होगया। अब उसका आगे कोई फल नहीं मिलेगा। जिन कर्मों का फल तत्काल नहीं मिला है उन्हें अच्छे या बुरे कर्मों का फल जरूर मिलेगा। एक बात और ध्यान रखने योग्य है कि कर्मों का फल कभी भी माफ नहीं होता। कुछ स्वार्थी अविद्वान् लोग कह देते हैं कि आपके किये हुए बुरे कर्मों का फल किसी देवी, देवता का जप करने से, ब्राह्मणों को दान दक्षिणा देने से, गंगा स्नान करने से या गायत्री की माला फेरने से कट जाते हैं। और आपको बुरे कर्मों का फल भुगतना नहीं पडेगा। यह कहना सिर्फ पाखण्ड मिथ्या व अपना पेट भरने का साधन है, इस बात में कोई तथ्य नहीं। बुरे कर्मों का फल बुरा और अच्छे कर्मों का फल अच्छा मनुष्य को अवश्य मिलेगा ही। फल न तो कम ज्यादा होते है और न ही बदले जाते हैं यानि बुरे कर्मों के बदले कोई उतने ही अच्छे कर्म कर दे, तो बुरे कर्मों का फल उसको नहीं मिलेगा, ऐसा प्रावधान ईश्वर की न्याय व्यवस्था में नहीं है। जितने अच्छे कर्म मनुष्य करेगा उतना ही अच्छा फल और जितने बुरे कर्म करेगा उतना ही बुरा फल उसको अवश्य ही मिलेगा। अवधि लम्बी या कम हो सकती है। यह श्लोक भी यही भाव दर्शाता है।

"अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्"

एक बात यह भी समझने की है कि मनुष्य अपने जीवन में पचास प्रतिशत से ऊपर जितने ज्यादा अच्छे कर्म करेगा उसके किये कर्मों के अनुसार उसी अनुपात से घटिया या बढिया मनुष्य योनि पुन. मिल जायेगी यानि पचास प्रतिशत से जितने अधिक अच्छे कर्म करेगा उतना ही मनुष्य योनि का स्तर ऊंचा होता जायेगा और पचास प्रतिशत से जितना कम अच्छे कर्म करेगा यानि बुरे कर्म पचास प्रतिशत से जितना अधिक करेगा उतना ही नीची योनिया, क्रमश मिलती जायेगी। फिर जीव नीची योनि से ईश्वर की न्याय व्यवस्था के अनुसार क्रमश ऊपर चढते-चढते अनेक योनियों से होते हुए पुनः मनुष्य योनि में आ जायेगा। जीव को मोक्ष मनुष्य योनि से ही मिलता है कारण मनुष्य योनि ही भोग व कर्म दोनों योनि है अन्य पशु, पक्षी, कीट पतंग आदि योनियां सिर्फ भोग योनि ही हैं। मनुष्य योनि में भोग भोगने के साथ-साथ कर्म करने की भी स्वतंत्रता है। अन्य योनियां सिर्फ भोग भोगने के लिए ही हैं। उनमें जीव को कर्म करने की स्वतंत्रता नहीं है। इसी लिए उनको कर्मों का फल भी नहीं मिलता। कर्मों का फल सिर्फ मानव योनि में ही मिलता है। इसलिए वह मोक्ष प्राप्ति का अधिकारी होता है।

इस सम्बन्ध में यह बात और ध्यान रखने योग्य है कि ईश्वर मनुष्य के किये हुए अच्छे या बुरे संचित कर्मों का फल दूसरे जन्म में जाति, आयु व भोग के द्वारा देता है। जाति से तात्पर्य यह है कि ईश्वर ने इस जीवन को किस योनि में भेजा है यानि कुत्ता, बिल्ली, गाय, घोड़ा या पक्षी आदि में। आयु का अर्थ है कि उस जीव की अगली योनि में कितनी आयु निश्चित की। यहां यह समझने का बात है कि ईश्वर आयु वर्षों की गिनती से नहीं देता बल्कि श्वासों की गिनती पर देता है। इसीलिए यदि हम अपने संयम, ब्रह्मचर्य व प्राणायाम द्वारा श्वासों को कम करें तो आयु बढा भी सकते हैं। और विषय भोगों में फंसकर आयु घटा भी सकते हैं। यह हमारी स्वयं की प्रवृत्ति व आचरण पर निर्भर करता है। भोग का तात्पर्य यह हुआ कि जीव के संचित अच्छे या बुरे कर्मों के अनुसार ईश्वर जीव को अगले जन्म में दुःख व सुख किस रूप में देता है। यानि मनुष्य योनि दी, यह तो जाति हो गई। मनुष्य योनि में राजा के घर भेजा या दरिद्र के घर भेजा, स्वस्थ शरीर दिया या कमजोर व रुग्ण शरीर दिया, रूप सुन्दर दिया व कुरूप दिया। यह जीव का भोग कहलाता है। यहां विषय से सम्बन्धित एक बात और स्मरण रखने योग्य है कि मनुष्य के तीन प्रकार के शरीर होते हैं। जिनके नाम हैं स्थूल, सूक्ष्म और कारण। मृत्यु के बाद स्थूल शरीर जो पंचभूतों (मिट्टी, जल, वायु, अग्नि व आकाश) से बना होता है। और जो दिखाई देता है वह तो अग्नि में प्रवेश होने के बाद पांचों भूतों (तत्त्वों) में विलीन हो जाता है। सूक्ष्म व कारण शरीर जिसमें संचित अच्छे या बुरे कर्म (जिनको साधारण भाषा में यश व अपयश भी कहते हैं) स्वभाव व प्रवृत्तियां जो दिखाई नहीं देती ये सब पुनर्जन्म के लिए जीव के साथ ही जाते हैं। जिनके आधार पर ईश्वर जीव को दूसरे शरीर में भेजता है।

यह तो मैं पहले ही लिख चुका हूं कि ईश्वर की न्याय व्यवस्था का विषय बड़ा ही गम्भीर व जटिल है। इसको पूर्ण रूप से जानना बड़ा कठिन है। मैंने जैसा पढा और समझा वैसा ही मैंने लिखने का प्रयत्न किया है। भूल रह जाना स्वाभाविक है। मेरा सविनय विनम्र निवेदन है कि पाठकगण मेरी अनधिकार चेष्टा न समझकर कोई भूल रह गई हो तो उसे क्षमा कर देना।

—खुशहालचन्द्र आर्य, कोलकाता

शोक समाचार

गुडगांव आर्य केन्द्रीय सभा के पूर्व प्रधान माननीय श्री रामदास सेवक की जीवन संगिनी श्रीमती संतोष भगत अचानक बिमार होकर १४ जून २००२ को सदा सदा के लिए परिवार का साथ छोड़कर दिवंगत हो गई हैं। श्रीमती संतोषदेवी सच्ची ईश्वर भक्त, विनम्र तथा सादगी की प्रतिमूर्ति थी। वह अपने पति श्री रामदास सेवक के सेवाकार्यों में बढ चढ कर सहयोग करती थी तथा सामाजिक, धार्मिक एवं परोपकारिक कार्यों में भरपूर दान देने में उन्हें प्रेरित करती थी। वह स्वय शिक्षा विभाग हरयाणा में प्रधानाध्यापिका के पद से सेवा निवृत्त थी। अपने विशेष गुणों के कारण शिक्षा विभाग के क्षेत्र में सभी की प्रिय एव परिचित थी। वास्तव में वह अजात शत्रु थी। दानशीलता के लिए जहा वह अपने पति एवं बच्चों की प्रेरणास्रोत थी वहां स्वय भी सेवा कार्यों में भरपूर दान देती थी। अपने विद्यालय में बच्चों के लिए कमरे का निर्माण कराना इसका प्रमाण है उनके अंत्येष्टि यज्ञ एवं शातियज्ञ पर बडी सख्या में आर्यसमाजों के प्रतिनिधि सम्मिलित हुए। श्रेष्ठ गुणों के कारण उन्हे सदा याद किया जायेगा। सर्वाधार ईश्वर परिवार के सदस्यों को उनके वियोग का दुःख सहन करने की शक्ति दे।

—ओमप्रकाश चुटानी,
प्रैस सचिव

वृद्धावस्था के रोग और उपाय

मनुष्य को वृद्धावस्था किस आयु में आनी चाहिए और उसको दूर हटाने के क्या उपाय हो सकते हैं ? यह एक विचारणीय प्रश्न है जिसका उत्तर प्रत्येक सुखार्थी मनुष्य जानना चाहता है। यदि मनुष्य की सामान्य आयु सौ वर्ष की मानकर चलें, तो वह जीवन में चार दशाओं से गुजरता है। १ बाल्यावस्था २ युवावस्था ३ वृद्धावस्था ४ जरावस्था। इनमे वृद्धावस्था ७५ वर्ष से १०० वर्ष तक होती है और इससे ऊपर जरावस्था आ जाती है।

प्राय समझा जाता है कि ७५ वर्ष की आयु में अवश्य ही वृद्ध हो जाना चाहिए। परन्तु स्वास्थ्य विज्ञान के अनुसार चलने से इस समझ का खंडन हो जाता है क्योंकि वृद्धावस्था का आयु से कोई अटल सम्बन्ध नहीं है यह तो देश, काल, आहर-विहार, आचार-विचार आदि पर निर्भर है। इसके अनुसार प्राचीन काल मे सौ वर्ष अथवा उससे ऊपर वृद्धावस्था आती थी। मध्यकाल मे ७५ वर्ष और आजकल ५०-६० वर्ष की आयु वृद्धावस्था की मानी जाती है, सो ठीक नहीं है। यदि आयु ही वृद्धावस्था का कारण होती, तो आज हम बहुतों को ४० वर्ष मे ही वृद्ध होते न देखते। दुर्बलता का नाम वृद्ध व बुढापा है, वह किसी आयु में आसकता है। शक्तिमान बने रहना युवावस्था है। प्राकृतिक जीवन जीने से यह किसी भी आयु तक बनी रह सकती है।

वृद्धावस्था में दुर्दशा

गात्रं संकुचित गतिर्विगलिता भ्रष्टा च दन्तावलिः।
दृष्टिर्नश्यति वर्धते बधिरता वक्त्र च लालायते।।
वाक्य नाद्रियते च बान्धवजनो भार्या न शुश्रूषते।
हा ! कष्टं पुरुषस्य जीर्णवयसः पुत्रोऽप्यमित्रायते।।

शरीर जिसका सिकुड़ गया है, गाल पिचक गए हैं, चाल ढीली पड गयी है, दातों की पंक्तियां नष्ट हो चुकी हैं, नेत्रों की दृष्टि मन्द हो गयी है। मुख से लार टपकती है, बन्धु बान्धव आदर नहीं करते, भार्या भी सेवा नहीं करती ! बडे दु ख का विषय है कि मनुष्य की वृद्धावस्था में पुत्र भी शत्रु बन जाता है। बडी दुर्दशा होती है।

युवावस्था में जिसकी घर में बडी चाहना थी, वृद्धावस्था में उसकी घर में कोई चाह नहीं, अपितु चाहते हैं कि यह शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त हो। अतः सन्तान आदि के अधिक मोह में न फंसकर वह कार्य करना, जिससे बुढापे में सुख से रह सके। जवानी में शरीर और इन्द्रियों की रक्षा करता हुआ संकट काल के लिए कुछ द्रव्य अवश्य बचाए रखना चाहिए जिसके लोभ से सन्तान और पत्नी सेवा करते रहें। एक नीतिकार के विचारों पर ध्यान दें -

इह लोके हि धनिनां परोऽपि स्वजनायते।
स्वजनोऽपि दरिद्राणां सर्वदा दुर्जनायते।।

ससार में धनवाले के लिए पराये भी अपने हो जाते हैं और धनहीन व्यक्ति के अपने भी पराये होजाते हैं।

अस्ति यावत्तु सधनस्तावत् सर्वैस्तु सेव्यते।
निर्धनस्त्यज्यते भार्यापुत्राद्यैः सगुणोप्यतः।।

अर्थात् जब तक पुरुष के पास धन है, तभी तक स्त्री पुत्रादि उसकी सेवा करते हैं। धन के अभाव मे गुणवान् होने पर भी उसकी कोई बात तक नहीं पूछता।

वृद्धावस्था क्यों आती है ?

ऋतु, देश, काल, प्रकृति के विरुद्ध अनियमित आहार विहार, पौष्टिक भोजन का अभाव, अत्यधिक आराम का जीवन, परिश्रम न करना, भोग विलास, अधिक उपवास, मानसिक चिंताएं, क्रोध, शोक, भयग्रस्त जीवन, ब्रह्मचर्य नष्ट करना, शरीर में कोई न कोई रोग लगे रहना, विपत्तियों में फंसकर अनेक कष्ट सहना इत्यादि कारणों से शीघ्र ही बुढापा घर कर लेता है। मनुष्य की जीवनी शक्ति प्रतिदिन घटने लगती है। तब यह शारीरिक, मानसिक दोनों ही रूप से अशक्त हो जाता है। ज्ञानेन्द्रियां और कर्मेन्द्रिया निर्बल हो जाती हैं।

वृद्धावस्था के पूर्व लक्षण

स्मरण शक्ति में कमी, चलने फिरने, उठने बैठने में थकावट होना, शरीर मे झुर्रियां पडना, किसी कार्य में मन न लगना, निश्चय किए गए विचार को बार-बार बदलना, बालों का सफेद होना या गिरना, जोडो में दर्द, वायु व कफ के विभिन्न रोग होना, बिना सामर्थ्य के इन्द्रियों की अपने भोगों में रुचि होना इत्यादि लक्षण बुढापे के जानने चाहियें।

इससे बचने के उपाय

बुढापा अपने समय पर अवश्य आता है। लेकिन उचित उपायों से इसे २५ वर्षों तक आगे को धकेला जा सकता है। जैसे समय पर फल पकता है, वैसे ही शरीर भी पक जाता है। बुढापा पकी हुई आयु है। यह युवावस्था का अन्तिम समय है, जो आने के बाद फिर जाता नहीं। तभी तो कहा है कि:-

जो जाकर न आये वह जवानी देखी, जो आकर न जाये वह बुढापा देखा। जवानी में बुढापा आना जीवन में अभिशाप है। इसे ठीक से जीने के निम्न उपाय करने चाहिए :-

आयु की दृष्टि से सर्वप्रथम ऋतु अनुकूल उचित आहार विहार का प्रबंध करना चाहिये। बुढापे के उपर्युक्त कारणों से बचकर ब्रह्मचर्य का सेवन, निद्रा का उचित सेवन करना आवश्यक है।

उचित आहार क्या है ?

चोकरदार कुछ बिना छना मोटा आटा, छिलकेदार दालें, हरी सब्जियां, दूध, मक्खन, दही, घी, शहद, सूखे मेवे, देशी खाड, ऋतु के अनुसार फल, यथाशक्ति इनका सेवन वृद्धावस्था को शीघ्र आने से रोकता है। अंडे, मास व सब प्रकार के नशों का सेवन शीघ्र बुढापा लाता है। बुढापे के लक्षण देखते ही रसासन औषधों का सेवन करना जीवनीय तत्त्वों में वृद्धि कर के बुढापे को रोकता है। संयम, सदाचार, सरलता, प्रसन्नचित्त रहना, स्वल्प सात्विक भोजन, क्रियाशील जीवन, प्राकृतिक नियमों का पालन निःसंदेह मनुष्य को बुढापे से बचाकर दीर्घजीवी बनाता है। युवावस्था में संग्रह की हुई शक्ति वृद्धावस्था में काम देती है।

वृद्धावस्था में होनेवाले रोग और उनकी विश्वस्त औषधें

वृद्धावस्था में प्रायः जोड़ों के दर्द, मोटापा, मधुमेह, रक्तचाप, बहुमूत्र और हृदयरोग हो जाते हैं। इनका कारण गलत भोजन, परिश्रम न करना, मानसिक चिन्ताए व शोक आदि हैं। इनमें निम्नलिखित सफल औषधों का प्रयोग लाभदायक है.-

मधुमेह (डायबिटीज) : नीम निबौरी की गिरी, जामुन की गिरी, गुडमार बूटी, बेल के पत्ते, त्रिफला, गिलोय, वंशलोचन, शुद्ध शिलाजीत, चांदी भस्म, मंडूर भस्म, छोटी इलायची के बीज।

सूखी दवाओं को कूट छान कर चूर्ण बना लें। फिर उसमें भस्में मिला दें। इसमें करेला का रस डाल कर दिन में धूप में रखें, रात को ओस में रखें। यह एक भावना हुई। इस प्रकार करेला के रस की सात भावना देकर छाया में सुखालें। छह माशे प्रातः छह माशे सायं जल के साथ सेवन करें।

परहेज- तेल, खटाई, मीठा, आलू, चावल, आम, पकवान, लाल मिर्च, गरिष्ठ व बासी भोजन का सेवन न करें। सादा व हल्का भोजन लें। परिश्रम, ब्रह्मचर्य सेवन करें। एक मास के सेवन से मधुमेह चला जाता है। रोग पुराना हो तो तीन मास अवश्य सेवन करें। इससे बहुमूत्र रोग भी ठीक होता है।

जोड़ों का दर्द :- शुद्ध कुचला, सौ ग्राम, शुद्ध गूगल ५० ग्राम, मल्ल सिंदूर २० ग्राम, मीठी सुरंजान ५० ग्राम लें।

पहले मल्ल सिंदूर खरल में पीसें। फिर उसमें कुचला और सुरंजान का मिश्रण मिला दें। बाद में गूगल मिलाकर एक करलें। फिर इसमें अदरक का रस डालकर भिगो दें। दिन को धूप में और रात को ओस में रखें। यह एक भावना हुई। ऐसी सात भावना अदरक की, सात रास्नादि काढे की और सात भावना लहसुन के रस की देकर खरल में घुटाई करें। फिर खुश्क होने पर २-२ रत्ती की गोलियां बनाकर छाया में सुखा लें।

प्रातः सायं दो-दो गोलियां दूध से लें। यह दवा गृध्रसी (रींघन वायु) दर्द की अचूक दवा है। इसके अतिरिक्त गठिया, जोडों का दर्द, कमर का दर्द व सब प्रकार के वायु कफ के दर्द और पुराने जुकाम में लाभ करती है। साथ ही दर्द स्थान पर महानारायण तेल और विषगर्भ तेल की मालिश करके सेक दें। चावल, उड़द, चने, राजमा आदि वायुकारक वस्तुएं न खावें।

अन्य शास्त्रीय औषधे :- वात-चिन्तामणि रस, वातकुलान्तक रस, समीरपन्नगरस (स्वर्णयुक्त), योगराज गूगल, एकांगवीर रस आदि दी जासकती हैं।

आर्यसमाज खरल जिला जीन्द का चुनाव

प्रधान-श्री धूपसिंह आर्य, उपप्रधान-श्री देवीराम आर्य, श्री रामभक्त आर्य, मंत्री-श्री आत्माराम आर्य, उपमंत्री-श्री यशपाल आर्य, कोषाध्यक्ष-श्री ओमप्रकाश आर्य, प्रबन्धक-श्री रामचन्द्र आर्य, प्रचारमंत्री-श्री पालेराम आर्य, पुस्तकाध्यक्ष-श्री इन्द्रसिंह आर्य।

आर्य-संस्कार

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की तरफ से हार्दिक शुभकामनाएं

आदर और सम्मान के योग्य श्री वर्मा जी, भारत के प्रधानमत्री श्री अटलबिहारी वाजपेयी जी ने आपको केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल मे लेकर एक सूझबूझ का परिचय दिया है, आपकी योग्यता को देखते हुए प्रथम विस्तार मे ही आशा की जा रही थी, आपके मन्त्रिमण्डल में आने से कमेरा वर्ग, किसान और आर्यजगत् को बहुत खुशी हुई है। आपकी कार्यक्षमता से देश का मस्तक ऊचा होगा, आपने दिल्ली के मुख्यमत्री पद को भी सफलतापूर्वक सुशोभित कर जनता की सेवा की थी, केन्द्रीय श्रममन्त्री बनने पर हमारी आपको हार्दिक शुभ कामनाये हैं, ईश्वर से हम आपकी सफलता की कामना करते हैं।

—यशपाल आचार्य सभामत्री

हमे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि आपने भारत के सुयोग्य प्रधानमन्त्री श्री अटलबिहारी जी वाजपेयी ने अपने केन्द्रीय मन्त्रिमडल मे श्रममर्न्त्री के रूप मे केबिनेट मन्त्री का दायित्व सौंपा है जो आपकी योग्यता एव कार्यक्षमता के आधार पर चिरप्रतीक्षित था। हम सभी आर्यवीर दल रोहतक मडल के अधिकारी इस अवसर पर आपको हार्दिक बधाई देते है तथा सफलता की कामना करते हैं।

हमे स्मरण है कि जब आप दिल्ली प्रदेश के मुख्यमत्री थे सार्वदेशिक आर्य वीर दल का एक महासम्मेलन निरकारी कालोनी में स्वामी सत्यपति जी की अध्यक्षता मे आयोजित किया गया था तो तूफान से सारा पाडाल एव आवास व्यवस्था अस्त-व्यस्त हो गये थे। ऐसे समय मे आपने स्वय समारोह स्थल पर पधार कर राहत पहुचाई तथा समारोह को सफल बनाने मे सहयोग प्रदान किया। उस समारोह का आयोजन डा० देवव्रत आचार्य एव ब्र० राजसिह जी आदि ने किया था। हमे पूर्ण विश्वास है कि आपका सहयोग एव आशीर्वाद आर्यसमाज तथा आर्यवीर दल के सभी भावी आयोजनो मे भी मिलता रहेगा।

—देशराज आर्य, आर्यवीर दल, रोहतक

आर्यवीर दल महेन्द्रगढ की ओर से शिविर का सफल आयोजन

शिविर के सरक्षक स्वामी ब्रह्मानन्द जी, सरस्वती, योगस्थली आश्रम, महेन्द्रगढ की अध्यक्षता मे आर्यवीर दल महेन्द्रगढ के प्रधान महन्त आनन्दस्वरूपदास, सत कबीरमठ, सोहला की असीम कृपा से यदुवशी शिक्षा निकेतन मे आर्यवीर दल का शिविर सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। शहर के सभी प्रतिष्ठित व्यक्तियो ने तन, मन, धन से सहयोग दिया।

राव बहादुरसिह, चेयरमैन यदुवशी शिक्षा निकेतन की ओर से भवन-बिजली-पानी-फर्नीचर आदि का विशेष सहयोग मिला। साथ-साथ मे आर्थिक सहयोग भी दिया। इस शिविर मे ७५ युवको ने प्रशिक्षण लेकर प्रशसापत्र प्राप्त किये। यदुवशी शिक्षा निकेतन के डायरेक्टर श्री राजेन्द्रसिह जी का भी विशेष योगदान रहा है।

डा० श्री देवव्रत जी, प्रधान सेनापति सार्वदेशिक आर्यवीर दल ने पूरा समय देकर शिविर को सफल बनाया तथा डा० श्री ओमप्रकाश जी योगाचार्य, श्री देवीसिह जी योगिराज, श्री चादसिह जी उपप्रधान आर्यवीरदल हरयाणा, श्री सत्यवीर शास्त्री, श्री कर्णदेव शास्त्री, श्री सुरेन्द्रसिह, श्री देवेन्द्रसिह आदि शिक्षको ने अपने कठिन परिश्रम से शिविर को सफल बनाया। इस वर्ष आर्य वीर दल महेन्द्रगढ के तत्त्वाधान मे तीन शिविर नारनौल, बाधोत, महेन्द्रगढ मे लगवाकर पूर्ण सफलता प्राप्त की है।

वेदप्रकाश आर्य मण्डलपति, आर्यवीरदल, महेन्द्रगढ

सत्यार्थ सन्देश पर पत्राचार पाठ्यक्रम प्रारम्भ

जुलाई २००२ से सत्यार्थ सन्देश पर मेघजी भाई नैनसी प्रकाशन द्वारा पत्राचार पाठ्क्रम प्रारभ हो रहा है। प्रति माह १६ पृष्ठ की लघु पुस्तिका के अन्तिम पृष्ठ पर पाच प्रश्न होगे, जिनका उत्तर लिखकर सचालक के पास भेजना होगा। सबसे अधिक सही उत्तर देनेवाले प्रथम तीन पठनार्थियो को क्रमश २०१/, १५१/, १०१/-रुपये का पुरस्कार व प्रमाण पत्र तथा ४० प्रतिशत सही उत्तर देनेवालो को प्रमाण पत्र दिया जायेगा। परीक्षा परिणाम जून -२००३ में घोषित किया जायेगा। पुस्तक डाक व्यय और प्रमाण-पत्रादि के लिये केवल मात्र ५० रुपये वार्षिक सदस्यता शुल्क है, सदस्यता धनादेश (एम ओ) द्वारा भेजकर शीघ्र ही निम्न पते पर सदस्यता प्रदान करे।

डा० सोमदेव शास्त्री डी ३०९, मिल्टन अपार्टमेन्ट, आजाद रोड, जुहू कोलिवाड़ा मुम्बई-५४ दूरभाष ०२२-६६०६९०८

युवतियों के लिये चरित्र निर्माण एवं व्यायाम प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

धनवन्ती आर्यकन्या उच्चविद्यालय, आर्यनगर रोहतक मे १७ जून २००२ को साय ५ बजे माता दयावन्ती जी शिविराध्यक्ष द्वारा ध्वजारोहण तथा स्वामी जीवानन्द जी द्वारा उद्घाटन भाषण के साथ-साथ आर्य वीरागनाओ को प्रशिक्षिण हेतु प्रारभ हुआ जिसमे दिल्ली, जीन्द, फरीदाबाद, रोहतक तथा समीपस्थ गाव की बालिकाओ ने भाग लिया इस शिविर मे सुयोग्य प्रशिक्षिकाओ कु० प्रभा, पूनम, सगीता तथा पूजा ने फरीदाबाद से पधार कर युवतियो को शारीरिक व्यायाम, जूडो कराटे (नियुद्धम) लाठी, छुरी तथा योगासन प्राणायाम का प्रशिक्षण दिया। माता दयावन्ती जी तथा सावित्री शास्त्री ने यज्ञोपवीत सस्कार कराया। देशराज आर्य मण्डलपति ने यज्ञोपरान्त आर्य वीरागनाओ से दैनिक सध्या तथा सप्ताह मे एक बार यज्ञ करने तथा आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्सगो मे उपस्थित होने का व्रत लिया। युवतियो को बौद्धिक प्रशिक्षण माता प्रियवदा, माता सुदर्शन धवन, दयावन्ती जी, दयावती जी सावित्री शास्त्री, सुषमा आदि ने दिया। बहन रश्मी पाहवा ने युवतियो को विभिन्न पकवान (व्यजन) बनाने का प्रशिक्षण दिया। शिविर का समापन रविवार २३ जून २००२ को साय ५ से ७ ३० बजे तक चला जिसमे वीरागनाओ के शारीरिक व्यायाम, योगासन, लाठी, स्तूप निर्माण का प्रदर्शन अत्यन्त रोचक था समापन समारोह के मुख्य अतिथि सार्वदेशिक आर्य वीर दल नई दिल्ली के प्रधान सेनापति डा० देवव्रत आचार्य थे। विशिष्ट अतिथि श्रीमती परमेश्वरी देवी धर्मपत्नी चौ० मित्रसेन जी आर्य तथा मुख्यवक्ता माता प्रियवदा, स्वा० जीवानन्द, चौ० अत्तरचन्द गुगनानी आदि थे। उक्त दोनो शिविरो का प्रबध एव व्यवस्था आर्यवीर दल के मत्री ओमप्रकाश आर्य, कोषाध्यक्ष मुलखराज आर्य तथा मा० मेघराज जी श्री जगदीश मित्र जी, राजेश आर्य आदि ने की। इस समारोह मे हरयाणा आर्य वीरदल के सचालक प० उमेदसिह जी शर्मा तथा महामत्री वेदप्रकाश आर्य भी पधारे। पुरस्कार वितरण के साथ समापन समारोह सम्पन्न हुआ। दोनो शिविरो के प्रशिक्षण एवम् समापन समारोह स्थानीय राष्ट्रीय समाचार पत्रो तथा स्थानीय दूरदर्शन (सिटी केबल एव स्टारविजन नैटवर्क) के केन्द्र बने रहे।

देशराज आर्य, मण्डलपति आर्यवीर दल, रोहतक

गुरु विरजानन्द दिवस "गुरु पूर्णिमा"

श्री गुरु विरजानन्द स्मारक समिति ट्रस्ट करतारपुर, जिला जालन्धर २४ जुलाई २००२ बुधवार को गुरु विरजानन्द गुरुकुल करतारपुर मे गुरु विरजानन्द दिवस (गुरु पूर्णिमा) का आयोजन गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय हरद्वार के कुलपति श्री स्वतत्रकुमार जी की अध्यक्षता मे कर रहा है। मुख्यवक्ता श्री वेदप्रकाश श्रोत्रीय (दिल्ली) होगे तथा मुख्यअतिथि जालन्धर के प्रसिद्ध उद्योगपति श्री रमेशचन्द्र एव श्री बी एम टण्डन होगे। यज्ञ एव पूर्णाहुति प्रात ८ बजे, ध्वजारोहण ९ ३० बजे, प्रातराश ९ ३० से १० बजे तक एव गुरुदक्षिणा सम्मेलन प्रात १० बजे से १ बजे तक होगा। एक बजे ऋषिलगर की व्यवस्था की गई है। श्रद्धालु आर्यजन अधिक से अधिक सख्या मे पधारकर सत्सग का लाभ उठाए।

—महामन्त्री चतुर्भुज मित्तल

आर्यसमाज भानगढ़ तह. बहादरा जिला हनुमानगढ (राजस्थान)

दिनाक ३ ६ २००२ को आर्यसमाज भानगढ के सदस्यो की बैठक सूबेदार रणधीरसिह की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुई जिसमे निम्न प्रस्ताव पारित किए गए। सर्वसम्मति से निम्न चुनाव हुआ -

प्रधान सूबेदार रणधीरसिह, उपप्रधान धर्मसिह पूनिया, सचिव सुरेन्द्रसिह धिया। कोषाध्यक्ष रणधीरसिह पचार, सयोजक रणसिह भाम्भू।

प्रस्ताव न० १ अगस्त के प्रथम सप्ताह मे आर्यसमाज का उत्सव। उत्सव की सम्पूर्ण जिम्मेदारी गाववालो ने ली। वेदप्रचार मण्डल जिला हिसार द्वारा आर्थिक मदद की जिम्मेदारी ली। २ आर्यसमाज सिरसा व आर्यसमाज जाण्डवाला को सम्मिलित करना। वेदप्रचार मण्डल हिसार द्वारा इस सारी कार्यवाही को सचालित करने का निश्चय किया गया। —बदलूराम आर्य प्रधान

दयानन्द वैदिक समिति का ३४वां वैदिक सत्संग सम्पन्न

आर्यसमाज दयानन्दमठ रोहतक का ३४वा वैदिक सत्सग समारोह रविवार ७ जुलाई २००२ को धूमधाम से सम्पन्न हो गया। इस समीति के सयोजक एव व्यवस्थापक श्री सन्तराम आर्य ने बताया कि यह सत्सग पिछले ३४ महीनो से निरन्तर निर्बाध गति से अपने कार्य को आगे बढा रहा है। इसके उद्देश्य के बारे मे श्री आर्य ने बताया कि यह सत्सग सामाजिक कुप्रथाओ धार्मिक अन्धविश्वासो, छुआछूत, अशिक्षा, अन्याय एव शोषण के बारे मे वैदिक धर्म की मान्यताओ का प्रचार-प्रसार करने हेतु प्रारम्भ किया गया है। सत्सग किसे कहते हैं ? उसका एक नमूना पेश करने के लिए शुरु की गई योजना का एक हिस्सा है। वैदिक विचारधारा को फैलाने के लिए इस कार्यक्रम के साथ और क्या-क्या चीजे जुड सकती हैं उन्हे भी जोडा जा रहा है। वर्तमान ३४वा सत्सग ७ जुलाई रविवार को प्रात ९ बजे हवन व ईशस्तुति मन्त्रो की व्याख्या से प्रारभ हुआ। श्री वेदप्रकाश जी द्वारा यज्ञ सम्पन्न करवाया गया। ९ बजे से १० बजे तक हवन व प्रवचन तथा फिर यज्ञ प्रसाद बाटा गया। फिर भक्ति गीत व भजन प्रारभ हुए। दो-तीन कम आयु के छात्र-छात्राओ ने अपने-अपने गीत सुनाये। फिर बहिनो के गीतो को सुरीले ढग से बहिन दयावती आर्या ने प्रस्तुत किया। चौ० हरध्यान जी प्रसिद्ध गायक रहे हैं। उन्होने भी काफी रोचक ढग से गाना गया। फिर आज के मुख्य अतिथि एव मुख्य वक्ता श्री रामधारी शास्त्री (उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा) ने एक घटे तक उपासना एव साधना के क्या-क्या लाभ होते हैं विस्तार से चर्चा की। उन्होने बताया कि मन की ग्रन्थियो को सुलझाना एव समभाव बनाये रखना ही उपासना कहलाती है। काम, क्रोध, मोह, लोभ, ईर्ष्या, विद्वेषरूपी जो ग्रन्थिया हैं उनसे छुटकारा पाकर ही उपासना की जा सकती है।

अन्त मे सभी ने मिलकर ऋषिलगर मे भोजन किया तथा शान्तिपाठ के बाद सम्पन्न हो गया। ४ अगस्त, २००२ को अगले सत्सग का निमत्रण सयोजक द्वारा दिया गया।

—रवीन्द्र आर्य, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, हरयाणा

सावधान

आप सभी को सूचित किया जाता है कि १३ जनवरी १९८२ मे बिहार के ६ बालकों को असहाय अवस्था में आश्रम मे शरण दी गई थी, अब वे सभी शास्त्री आचार्य कर चुके हैं। उन ६ बालको में से एक आत्मदेव भी है। जिसका नाम विज्ञापनादि आश्रम से छपनेवाले प्रचार पत्रो में व्यवस्थापक आत्मदेव प्रकाशित होता रहा है। अब आत्मदेव को ट्रस्ट एव प्रबन्ध समिति द्वारा अर्थ की हेराफेरी एवं अनुशासन आदि हीनता के कारण दिनाक २७ जून बृहस्पतिवार, २००२ को आत्मशुद्धि आश्रम से निष्कासित कर दिया गया है।

अत आप सभी से निवेदन है कि आत्मदेव का आश्रम से अब कोई सम्बन्ध नहीं है। सावधान रहे आत्मशुद्धि आश्रम के नाम से उसको किसी प्रकार का सहयोग देने का कष्ट न करे। आश्रम की कोई जिम्मेदारी नहीं है।

—जनतासेवक स्वामी धर्ममुनि, आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ, जिला झज्जर

एक सुखद स्मृति की अनुभूति

आज जब हरियाणा आर्यवीर दल के महामत्री वेदप्रकाश आर्य को मच पर गर्जना करते हुए देखता हू तो मुझे खुशी होती है और एक सुखद स्मृति की अनुभूति होती है। सन् १९६२-६३ मे मैं शिवाजी कालोनी, रोहतक में रहता था। सायकाल ५ ३० बजे दफ्तर से आकर आर्यसमाज के निकट मैदान में आर्य परिवार के बच्चो को बुलाकर कोई खेल खेलने के बाद अर्धमण्डल में बिठाकर गायत्रीमन्त्र के साथ एक प्रेरणादायक गीत या कहानी सुनता और सुनाया करता था। कुछ नैतिकता की बाते भी बताता था।

उन बच्चो मे प्रिय वेदप्रकाश भी प्रतिदिन आया करता था। एक वर्ष बाद रोहतक से मेरा स्थानान्तरण हो गया। जाते समय आर्यसमाज के वयोवृद्ध प्रधान जी ने बच्चो के साथ पुष्प वर्षा करते हुए मुझे विदाई दी। क्या पता था कि बालक वेदप्रकाश बडा होकर प्रान्तीय आर्य वीर दल के मन्त्री पद को सुशोभित करेगा। मुझे हर्ष के साथ गर्व भी है कि जो सस्कार बचपन मे वेदप्रकाश को अपने माता-पिता से मिले उनको तन-मन-धन से आर्यवीरो मे प्रसारित कर रहे हैं। जो माता-पिता अपने बच्चो को कुछ बनाना चाहते हैं तो बचपन से बनाने का प्रयास करे। अपने बच्चो को आर्यवीर दल की शाखा मे भेजे। आर्यसमाज के सत्सग मे उनको अपने साथ लाओ।

आज अनेक माता-पिता शिकायत करते है कि बच्चे बिगड रहे हैं कहना नही मानते। मैं कहता हू कि बच्चो को आप स्वय बिगाड रहे हो। तुम्हारा अपना आचरण ठीक नहीं है। बच्चा घर परिवार मे बडो की नकल करता है। बच्चो को सुधारने के लिए पहले स्वय सुधरो। —देवराज आर्यमित्र, कृष्णनगर, दिल्ली

धूल चटा के रहना

तोड़ फोड़ छुरेबाजी आगजनी और फिर मनमानी।
फिर मरो और घायलो की बात हर एक की जुबानी।।
यू, कर्फ्यू, आसू गैस, धर पकड़ का ये सिलसिला।
ये है अहिंसा के पुजारियों के देश की कहानी।।
हर देशवासी से इस घडी पर यही है कहना।
झूठी अफवाहों और बहकावे में न रहना।।
अपनी एकता और साहस के बल पर "रश्मि"।
इस देश के दुश्मनो को धूल चटा के रहना।।

—मोहनलाल शर्मा 'रश्मि' दाहोद, गुजरात

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ०१२६२-७६८७४, ७७८७४) मे छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष . ०१२६२-७७७२२) से प्रकाशित।
पत्र में प्रकाशित लेख सामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री का सहमत होना आवश्यक नहीं। पत्र के प्रत्येक प्रकार के विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक होगा।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३ सृष्टिसंवत् १,९६,०८,५३,१०३
पंजीकरणसंख्या टैक/85-2/2000 ☎ ०१२६२-७७७२२

प्रधानसम्पादक : यशपाल आचार्य, सभामन्त्री सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री
वर्ष २६ अंक ३३ २१ जुलाई, २००२ वार्षिक शुल्क ८०) आजीवन शुल्क ८००) विदेश में २० डॉलर एक प्रति १.७०

महान् आर्य बलिदानी फूलसिंह का संक्षिप्त परिचय

सुखदेव शास्त्री 'महोपदेशक' दयानन्दमठ रोहतक

मुस्लिम आतंकवादियो द्वारा आर्यसमाज के बलिदानियो मे स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान के पश्चात् १४ अगस्त १९४२ को हरयाणा के महात्मा भक्त फूलसिह जी का महान् बलिदान माना जाता है। भक्त नाम से प्रसिद्ध महात्मा फूलसिह का जन्म २४ फरवरी सन् १८८५ मे जिला रोहतक (वर्तमान सोनीपत) के माहरा ग्राम में हुआ था। इनके पिता का नाम बाबरसिंह तथा माता का नाम तारादेवी था। इन्होंने माध्यमिक परीक्षा पास करके पटवार का प्रशिक्षण पानीपत मे १९०४ मे प्राप्त करके करनाल के गाव सींख पाथरी मे पटवारी नियुक्त हुए।

१९०७ में सींख पाथरी ग्रामों से बदलकर उरलाना ग्राम में नियुक्त हुए। यह ग्राम मुसलमानो का था। यहां पर मुसलमानों के कुसग के कारण इनकी मांस खाने की आदत पड़ गई। रिश्वत भी ले लेते थे। पटवारियों में किसानो से रिश्वत लेने की आदत अग्रेजीकाल से ही शुरु होगई थी। इन्हें भी यह आददत लग गई थी। इन्होंने ५००० रिश्वत किसानों से ली थी।

जीवन में मोड़-१९०८ में अपने साथी आर्यसमाजी पटवारी इसराना निवासी प्रीतसिंह के साथ आपका सम्पर्क हुआ। पटवारी प्रीतसिह आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्सगो में जाया करते थे। वहा से आपके लिए आर्यसमाज के भजनो की पुस्तके लाया करते थे। पटवारी भगत फूलसिह भी प्रीतसिह के साथ सत्सग मे जाने लगे। इनके जीवन मे भी वैदिकधर्म की ज्योति प्रज्वलित हो उठी। जीवन मे परिवर्तन आने लगा।

इन्हे पता लगा कि भारतभर में प्रसिद्ध गुरुकुल कागडी का उत्सव होनेवाला है। भगत जी भी अपने मित्र प्रीतसिह के साथ गुरुकुल का उत्सव देखने के लिए हरद्वार गए। यहा पर पहुचने पर सर्वप्रथम गुरुकुल के संस्थापक श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी के दर्शन हुए। प्रातःकालीन यज्ञवेदी पर स्वामी श्रद्धानन्द का प्रवचन मानव जीवन निर्माण की सार्थकता पर सुनकर रहे सहे सारे सशय मिट गए। मास-रिश्वत आदि का तुरन्त त्याग के प्रबल विचार लेकर लौटे। वहा से पानीपत आकर आर्यसमाज मन्दिर मे यज्ञ से पूर्व स्वामी ब्रह्मानन्द जी से यज्ञोपवीत लिया। आर्यसमाजी बने। सच्चे आर्य बनने के लिए मास व रिश्वत का त्याग सदा कि लिए कर दिया।

१९१४ में ही उन्होने पटवार से एक वर्ष का अवकाश लेकर इसके साथ ही यह निश्चय किया कि रिश्वत लेकर जो पाप किया है, उसका प्रायश्चित करने के लिए ली हुए रिश्वत को वापस लौटाने का दृढ निश्चय कर लिया। पटवारकाल में ली गई रिश्वत का हिसाब लगभग पांच हजार रुपये बैठता था, उस रुपये को उन्होने अपनी सारी पैतृक भूमि को बेचकर पूरा किया। जिस-जिस से रिश्वत ली थी, उसके घर जा-जाकर वापस करके आए।

जिस प्रकार ऋषि दयानन्द के दर्शनो से स्वामी श्रद्धानन्द की विचारधारा मे महान् परिवर्तन हुआ था, वही परिवर्तन भक्त फूलसिह जी के विचारो मे भी हुआ था। अब उन्होने महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित आर्यसमाज के कार्यो मे से प्राय प्रत्येक कार्य को अपने जीवन का लक्ष्य बनाया। भक्त जी ने महर्षि लिखित "गोकरुणानिधि" पुस्तक से गोसेवा की प्रेरणा प्राप्त हुई।

लगभग सन् १९१६ की बात है कि समालखा ग्राम निवासी टोडरमल नम्बरदार ने भक्तजी के पास आकर समाचार दिया कि हमारे गाव मे गोहत्था खुलने का निश्चय सरकार की ओर से होचुका है। आप उसे रोकने का कोई उपाय जल्दी करे-भक्तजी ने बुवाना ग्राम के लोगो को इकट्ठा किया।

भक्तजी ने हथियार खरीदरकर गोहत्था रोकने के लिये सलाह दी। लोगो ने उसी समय १२०० रुपये हथियार खरीदने के लिए भक्तजी को देदिए। इन रुपयों से गुप्तरूप से हथियार खरीदे और गोहत्या रोकने के लिए चढाई करने की खबर सारे ग्रामो मे भेजदी। ग्रामीण लोग अपने-अपने हथियार लाठी-जेली तथा बन्दूके भी लेकर समालखा के हत्थे पर चढाई करने के लिए आने लगे। हत्था खोलने वाले मुसलमानो ने जब चारो ओर से चढ आए आर्यो को देखा तो घबरा गए। करनाल के डिप्टी कमिश्नर को सूचना देदी कि भक्त फूलसिह के नेतृत्व मे विद्रोह होने की सभावना है। डिप्टी कमिश्नर ने स्थिति की गम्भीरता को देखते हुए कहना पडा कि यहा गोवध नहीं होगा। इसमे भक्तजी के नेतृत्व की विजय हुई। बाद मे सरकार ने भक्तजी को उनके मुख्य साथियो के साथ गिरफ्तार कर लिया। पांच-पाच हजार की जमानत पर सब छूट गए। मुकदमे की पैरवी चौ० छोटूराम ने की थी जिससे सभी छूट गए थे। इस घटना से मुसलमान बहुत ही नाराज हुए।

गुरुकुल स्थापना-भक्तजी ने वानप्रस्थ की दीक्षा स्वामी ब्रह्मानन्द जी से लेली थी। भक्तजी ने भी स्वामी श्रद्धानन्द जी वाला मार्ग पकडा। उन्हे महर्षि के द्वारा लिखे ग्रन्थो के पढने से यह इच्छा पैदा हुई कि एक "आर्य नवयुवक" विद्यालय खोलना चाहिए। स्वामी ब्रह्मानन्द के सुझाव पर हरयाणा मे गुरुकुल स्थापना होनी चाहिए। गुरुकुल के लिए उपयुक्त भूमि की खोज के लिए अनेक स्थानो पर गए। अन्त मे गठवाला गोत्र के गाव भैंसवाल मे यह भूमि प्राप्त होगई। ग्रामवालो ने १५० बीघा जमीन गुरुकुल खोलने के लिए देदी। गुरुकुल खोलने की योजना लेकर भक्तजी स्वामी श्रद्धानन्द जी के पास दिल्ली गए। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने मार्च १९२० मे गुरुकुल की आधारशिला रखी। स्वामीजी ने आधारशिला रखते हुए कहा था-मैं आशा करता हू कि यह कुलभूमि हरयाणा के आर्यो का नेतृत्व करेगी। गुरुकुल का प्रथम उत्सव हुआ, १५-२० हजार की हाजरी थी। लोगो ने रुपयो की वर्षा करदी। इसी प्रकार कन्याओ की शिक्षा को आवश्यक समझकर भक्तजी ने कन्या गुरुकुल खानपुर की स्थापना की। जो आजकल सारे भारतभर मे सर्वोच्च कन्या शिक्षण स्थान है। ग्रामीण विश्वविद्यालय के बराबर है। दोनो गुरुकुलो से अच्छे विद्वान् निकले। जिन्होने शिक्षा के क्षेत्र मे सस्कृत के प्रचार के कार्य किया।

शुद्धि आन्दोलन-भक्त फूलसिह जी से मुस्लिमवर्ग के लोग समालखा

के हत्थे का विरोध करने के कारण बहुत ही जलते थे। उस समय हरयाणा मे भक्त जी ही एकमात्र ऐसे कार्यकर्त्ता थे, जो सामाजिक क्षेत्र मे आर्यसमाज का नेतृत्व करते थे।

वैसे तो प० लेखराम के बलिदान के पूर्व भी आर्यसमाज मे मुसलमानो व ईसाइयो की शुद्धि होती रही है। कट्टरवादी मुसलमान बादशाहो के जमाने मे तो हजारो हिन्दुओ को तलवार के जोर से मुसलमान बनाया जाता रहा है। हरयाणा का सारा ही मेवात क्षेत्र हिन्दुओ का ही था, किन्तु औरगजेब के शासनकाल मे जोर-जबरदस्ती मुसलमान बनाया गया था। मुसलमानो के गोत-नात आज भी हिन्दुओ से मिलते हैं। विवाह भी हिन्दुओ के समान ही होते रहे हैं। आजकल दिल्ली से मुस्लिम जमायतो के आते रहने से सब कुछ कुरान शरीयत के आधार पर करने लगे हैं। मुसलमान होते हुए भी यहा के लोगो ने गोहत्या कभी भी नहीं की थी। आज तो मेवात मे प्रतिदिन हजारो गौ बछडे काटे जाते है। शुद्धि का आन्दोलन १९२२ मे स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा आरम्भ किया गया था। उन्होने हजारो मलकाने मुस्लिमो को शुद्ध किया था। इस शुद्धि आन्दोलन से मुल्ला मौलवी बहुत ही नाराज हुए, उन्होने षड्यन्त्र करके स्वामी श्रद्धानन्द को मरवा दिया। हरयाणा क्षेत्र मे भी जो मूले जाट मुसलमान होगए थे, वे भी दोबारा शुद्ध होकर वैदिकधर्म मे दीक्षित होना चाहते थे। सन् १९२८ की बात है जब भक्तजी को यह पता चला कि होडल-पलवल (गुडगाव) के कुछ भाई पुन शुद्ध होना चाहते हैं तो वे अपने सहयोगियो के साथ होडल पहुच गए। शुद्धि मे अडचन पडने पर भक्त जी ने वहा ११ दिन का अनशन रखा, अन्त मे चौ० छोटूराम के आश्वासन पर भक्त जी ने अनशन समाप्त किया। उसके बाद १९२९ मे रायपुर (सोनीपत) के केहरसिह नामक मूला जाट शुद्ध होकर वैदिकधर्मी बना। भक्त जी की प्रेरणा पर मटिण्डू के (खरखोदा) हरद्वारीसिह ने अपनी लडकी का विवाह केहरसिह के साथ करना निश्चित किया। भक्त फूलसिह ने इस विवाह मे भाती का काम किया। गठवाले दादा घासीराम ने १६०० रुपये का भात भरा। यह सब कुछ भक्तजी के द्वारा हुआ। इस प्रकार भक्तजी के इन शुद्धि कार्यों से मुसलमान सख्त नाराज होते चले गए। किन्तु भक्तजी उनकी कब परवाह करते थे। उन्होने इलाके के लोगो को मुसलमान होने से बचाया।

दलितोद्धार-मोठ ग्राम (जीन्द) मे हरिजनो के कुए की लिये भक्त जी ने २३ दिन अनशन किया। मोठ के मुसलमानो ने उनका यहा भी बहुत अपमान किया है। किन्तु चौ० छोटूराम जी मन्त्री पजाब सरकार के हस्तक्षेप के कारण हरिजनो का कुआ बना, २३ दिन मे भक्तजी ने उस नए कुए का पानी पीकर अनशन व्रत खोला। आर्यसमाज ने दलितोद्धार का कार्य सर्वप्रथम आरम्भ किया था। बाद मे गाधीजी ने इनका हरिजन नाम देकर एक अलग जाति के रूप मे खडा किया। दलितोद्धार का कार्य महर्षि दयानन्द के समय से ही आर्यसमाज ने शुरु किया था। गुरुकुलो से दलित भाइयो के हजारो लडके विद्वान् होकर निकले। दलितो को जनेऊ दिए गए। गायत्री मन्त्र का उपदेश दिया गया। हवन भी वे करने लगे। सहभोज भी तथा विवाह सम्बन्ध भी हुए। आर्यसमाज के कारण ही आज वे प्रत्येक क्षेत्र में आगे हैं। आज वे राज्यपाल, मुख्यमत्री, मन्त्री विधायक, आईजी पुलिस, प्रोफेसर, अध्यापक आदि सभी कुछ हैं। यह सब आर्यसमाज ने किया।

हैदराबाद सत्याग्रह-हैदराबाद के नवाब मीर उस्मान अली के हिन्दुओ के ऊपर अत्याचार करने के कारण हैदराबाद मे १९३९ मे सत्याग्रह करना पडा। भक्त फूलसिह जी ने रोहतक क्षेत्र की ओर रोहतक सत्याग्रह मे तन-मन-धन से सहयोग दिया। उन्हे "सत्याग्रह सघर्ष समिति" का प्रधान बनाया गया। रोहतक सत्याग्रह समिति ने सर्वप्रथम गुरुकुल भैंसवाल के आचार्य हरिश्चन्द्र को अधिनायक बनाकर भेजा, जिसमे गुरुकुल के छात्र कपिल व महेश्वर आदि भी थे। दूसरे जत्थे के नेता स्वामी ब्रह्मानन्द थे। उनके जत्थे पर रोहतक के मुसलमानो ने हमला किया। भक्तजी को भी चोटे आई, अनेको सत्याग्रहियो को भी चोटे आई, जब जमकर मुसलमानो के साथ मुकाबला हुआ तो मुसलमान भाग खडे हुए। रोहतक क्षेत्र की ओर से हजारो सत्याग्रही हैदराबाद पहुचे। हैदराबाद के नवाब ने हार मानली। इस प्रकार भक्त फूलसिह का मुकाबला पटवारकाल से ही मुस्लिमो से होता रहा। वे वीर अभिमन्यु की तरह युद्ध मे लडते रहे। सारा जीवन इस वीर का मुस्लिमो का ही मुकाबला करते बीता।

लोहारू काण्ड-हरयाणा प्रान्त की लोहारू रियासत का नवाब अमीनुद्दीन एव मुसलमान था। वह भी हैदराबाद के नवाब की तरह से ही हिन्दुओ से चिढता था और आर्यसमाज की प्रचार गतिविधियो से तो बहुत ही वैर विरोध करता था। वहा पर कोई भी वैदिकधर्म का प्रचार नहीं कर सकता था। वहा पर प्रतिवर्ष कई हिन्दुओ को मुसलमान बना लिया जाता था।

ऐसी विकट परिस्थितियों मे वहां के निर्भीक आर्यो ने आर्यसमाज की स्थापना की थी। आर्यसमाज के जलूस पर मुसलमानो ने हमला कर दिया। जलूस का नेतृत्व स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी व भक्त फूलसिह जी कर रहे थे। इस हमले में स्वामी स्वतत्रानन्द को सिर मे बडी चोटे लगी। खून बह गया। भक्त फूलसिह को भी गहरी चोटे आईं, वे बेहोश होगए। अक्तूबर २००२ मे लोहारू मे आर्यसम्मेलन होगा। इस प्रकार हम देखते हैं कि आर्यसमाज ने मुस्लिम आतकवाद का मुकाबला नि:शस्त्र होकर भी किया है। यह आतकवाद हम सदियो से झेल रहे हैं। भक्त फूलसिह की मृत्यु की कहानी भी एक बलिदान की कहानी है। इस प्रकार सारा जीवन मुस्लिम कट्टरवाद का मुकाबला करते हुए भक्तजी ने साहस न छोड़ा। मुसलमान उस समय एकमात्र आप से ही वैर-भाव रखते थे। भक्तजी उनके मार्ग में रोडा बनकर खडे रहे। विशेषकर आपके शुद्धिकार्य से तो सभी मुस्लिम बहुत नाराज रहते थे। उस समय अवसर पाकर १४ अगस्त १९४२ को कन्या गुरुकुल खानपुर मे पाच मुसलमानो ने आकर रात्रि के ९ बजे के समय भक्तजी पर पिस्तौल से वार किया। भक्त फूलसिह जी भी मुस्लिम आतकवादी मानसिकता के कारण ही बलिदान होगए।

सभी का निर्णय-आनेवाले ११ अगस्त २००२ को भक्त फूलसिह का बलिदान सम्मेलन उनके ग्राम "माहरा" जिला सोनीपत मे किया जारहा है। जिसमें भारी सख्या मे लोग पहुचेगे। उन्हें श्रद्धाजलि समर्पित करेगे।

वैदिक-स्वाध्याय

आराधना कर !

अभि प्र गोपतिं गिरा, इन्द्रमर्च यथाविदे।
सूनं सत्यस्य सत्पतिम्।।

ऋ० ८।६९।४।। साम० पू० २।२।८।४ ।। अ० २०।९२।१।।

शब्दार्थ—हे मनुष्य ! **(यथाविदे)** यथार्थ ज्ञान पाने के लिये तू **(गोपति)** इन्द्रियो के स्वामी **(इन्द्रं)** आत्मा का **(गिरा)** वाणी द्वारा **(अभि प्र अर्च)** अपरोक्ष और पूरी तरह पूजन कर, जो कि आत्मा **(सत्यस्य सूनुं)** सत्य का पुत्र है और **(सत्पति)** सदा सत् का पालक है।

विनय—हे मनुष्य ! यदि तू यथार्थ सत्यज्ञान प्राप्त करना चाहता है तो इन्द्र की शरण मे जा। ये इन्द्रिया—प्रत्यक्ष ज्ञान का साधन समझी जानेवाली ये इन्द्रिया—तुझे परिमित ज्ञान ही देगी तथा बहुत बार बडा भ्रामक ज्ञान उत्पन्न करेगी, मन इन्द्रिय भी तुझे दूर तक नहीं पहुचायेगी, और तेरे रागद्वेषपूर्ण मलिन मन की तर्कना शक्ति केवल कुतर्क मे लगेगी। बाहिर से मिलनेवाला ज्ञान अर्थात् विद्वानो के उपदेश और तत्त्वज्ञानियो के ग्रन्थ अपनी दृष्टि से कहे व लिखे जाने के कारण तुझे अभी कुछ शान्ति दे सकेंगे, बहुत सभव है कि ये तुझे और उलझन मे डाल देगे। अत तुझे शान्ति दे सकनेवाला सच्चा यथार्थ ज्ञान अपने अन्दर से, अपनी आत्मा से ही मिलेगा। इसे तू अपनी आत्मा मे खोज, उस अपनी आत्मा मे खोज जो कि इन सब इन्द्रियो का स्वामी है, जिसने अपनी शक्ति प्रदान करके मन आदि इन्द्रियो को अपना साधन बना रखा है जोकि सत्य ज्ञानस्वरूप है, जो कि परम सत्यस्वरूप परमात्मा का पुत्र है, और जो कि अतएव स्वभावत सदा सत्य का पालक है। हे मनुष्य ! तू इस सत्यदेव की पूजा कर, आराधना कर, पूरे यत्न से इसे प्रसन्न कर तो तुझे सत्य मिल जाएगा। वाणी शक्ति द्वारा तू इसकी अपरोक्ष पूजा कर। इस सत्यमय देव की आराधना करने के लिये तुझे सत्यमय वाणी की साधना करनी पडेगी। बोलने मे, व्यवहार मे, हर एक अभिव्यक्ति मे पूरी तरह सत्य का पालन करना होगा, अन्दर की मनोमय वाणी मे भी सर्वथा सत्य के ही चिन्तन, मनन की विकट तपस्या करनी होगी। अन्दर घुसने पर ही तुझे पता लगेगा कि परिपूर्ण वाणी द्वारा सत्य की आराधना करना कितना कठिन है। पर साथ ही यह भी सच है कि जब तू यह साधना पूरी कर लेगा तो तेरा 'सत्य सूनु' 'सत्पति' आत्मा प्रकट हो जायगा और अपना अमूल्य भण्डार, सब सत्य ज्ञान के रत्नो का भण्डार, तेरे लिये खोल देगा। तब तुझे कोई उलझन न रहेगी, तेरा निर्मल मन ठीक ही तर्क करेगा तेरी इन्द्रिया भी अधिक स्पष्ट देखेंगी, पर सबसे बडी बात तो यह है तब तुझे वह सत्यमयी, 'ऋतभरा' बुद्धि मिल जायगी जिस द्वारा कि तू जब जिस विषय का यथार्थ ज्ञान पाना चाहेगा वह सब तुझे प्रकाशित हो जाया करेगा। सत्य का पालन करनेवाला सत्पति आत्मा स्वयमेव तेरे लिये सत्य की रक्षा करता रहेगा। वाणी द्वारा सत्य की साधना करने का यह स्वाभाविक फल है। हे मनुष्य ! तू इस सत्य इन्द्र की आराधना कर, अपरोक्ष रूप से पूरी तरह आराधना कर।

जिला गुड़गांव वेदप्रचार मण्डल का पुनर्गठन

आर्यप्रतिनिधिसभा हरयाणा की अंतरंग सभा के प्रस्तावानुसार हरयाणा प्रदेश के सभी जिलों तथा विधानसभा के चुनाव क्षेत्रों में जिला वेदप्रचार मण्डल तथा उपमण्डलों का पुनर्गठन किया जावेगा, जिससे नये और कर्मठ कार्यकर्त्ताओं को आर्यसमाज का कार्य करने का अवसर मिल सके और अधिक से अधिक ग्रामो मे वेदप्रचार की व्यवस्था करके नवीन आर्यसमाजो की स्थापना की जावे।

इस उद्देश्य से जिला गुडगाव के सभी आर्यसमाजो के अधिकारियो तथा कार्यकर्त्ताओ की एक बैठक आर्यसमाज जैकमपुरा गुडगांव मे दिनाक १३ जुलाई २००२ को दोपहर बाद २ बजे सभा के उपप्रधान एव वेदप्रचाराधिष्ठाता श्री रामधारी जी शास्त्री की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुई। इसमें सभामन्त्री आचार्य यशपाल जी, उपमन्त्री महेन्द्रसिह शास्त्री, सभा उपप्रधान एव मण्डल के अध्यक्ष भक्त मगतूराम जी, श्री केदारसिह आर्य, अन्तरग सदस्य वैद्य ताराचन्द आर्य (खरखोदा), सभागणक श्री ओमप्रकाश शास्त्री तथा सभा कार्यालय लिपिक श्री सत्यवान आर्य भी सम्मिलित हुए। सभा अन्तरग सदस्य एव मण्डल के मन्त्री श्री कृष्णचन्द्र सैनी ने गत वर्षों का आय-व्यय तथा कार्य विवरण पढकर सुनाया।

आर्यसमाज तथा सभा के अधिकारियो ने वेदप्रचार की प्रगति किस प्रकार हो सकती है और सामाजिक बुराइयों को समाप्त करने मे आर्यसमाज क्या योगदान दे सकता है आदि विषयो पर विचार रखे। आर्य केन्द्रीय सभा गुडगांव के प्रधान श्री कन्हैयालाल जी तथा उनके अन्य अधिकारियों ने सभा को विश्वास दिलाया कि नगर की सभी आर्यसमाजें इस महत्त्वपूर्ण वेदप्रचार कार्य मे सभा का पूरा सहयोग दिया जावेगा।

सभी के सुझाव सुनने के बाद चौ० सूरजमल जी सदस्य आर्यसमाज वजीराबाद जिला गुडगाव को आगामी वर्षों के लिए जिला गुडगाव वेदप्रचार का अध्यक्ष मनोनीत किया गया। एक उपसमिति का निर्माण किया गया, उपसमिति के अध्यक्ष चौ० सूरजमल तथा सयोजक डा० सत्यम् बनाये गये। सदस्यो मे आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान श्री कन्हैयालाल जी श्री किशनचन्द्र सैनी के अतिरिक्त पाच अन्य सदस्य भी नियुक्त हुये। आर्यसमाज के कर्मठ नेता श्री सत्येन्द्र आर्य ने जिला गुडगाव विशेषकर मेवात क्षेत्र मे वेदप्रचार करके गोरक्षा हेतु पूर्ण सहयोग तथा समय देने का आश्वासन दिया। चौ० सूरजमल जी ने सभी कार्यकर्त्ताओ का धन्यवाद करते हुए वचन दिया कि ऋषि दयानन्द का सन्देश अधिक से अधिक नरनारियो तक पहुचाने के लिए अधिक से अधिक समय दूगा और वाहन आदि का भार मण्डल पर नहीं पडने दिया जायेगा। वेदप्रचारार्थ एक प्रभावशाली भजनमण्डली की सेवा भी प्राप्त की जावेगी।

सोनीपत में वेदप्रचार सत्संग सम्पन्न

सोनीपत के प्रगतिनगर में वानप्रस्थी देवमुनि जी पूर्व श्री बलदेवसिह जी आर्य के सुपुत्रो के निवास स्थान मकान न० १३३३/३१ पर एक पारिवारिक सत्सग का आयोजन दिनाक १४ जुलाई २००२ को भव्य आयोजन किया गया। इसका सयोजन सभा के अन्तरग सदस्य श्री रामचन्द शास्त्री ने किया। यज्ञ गुरुकुल देवडू (सोनीपत) के सुयोग्य आचार्य विश्वदेव जी ने आकर्षक ढग से करवाया। वानप्रस्थी देवमुनि जी की स्वर्गीया धर्मपत्नी श्रीमती कृपादेवी की दूसरी पुण्यतिथि भी थी। उन्हें श्रद्धाजलि दीगई। इनके परिवार को आचार्य जी ने आशीर्वाद देते हुए कहा कि वैदिक सत्सगों का प्रतिवर्ष आयोजन करते रहें और आर्यसमाज के प्रचार कार्यो मे भी सहयोग देकर अपने माता-पिता की भाति पुण्य के भागीदार बने। आर्यसमाज सोनीपत की लगभग सभी समाजो के प्रतिनिधि उपस्थित हुये। इस शुभावसर पर आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के मन्त्री आचार्य यशपाल जी ने समारोह की अध्यक्षता की।

आर्यसमाज के प्रभावशाली ओजस्वी वक्ता चौ० राममेहर एडवोकेट (रोहतक), श्री आर्य तपस्वी जी दिल्ली, श्री चन्द्रभान जी हरयाणवी, श्री सुरेशकुमार सैनी (रोहतक) तथा आचार्य विश्वदेव जी आदि ने वैदिक सत्सग के महत्त्व पर प्रकाश डाला। श्री राममेहर जी एडवोकेट ने विशेष उल्लेख करते हुए कहा कि आज हमारे देश मे पाश्चात्य प्रभाव बढ रहा है। परन्तु अमेरिका तथा इग्लैंड आदि देशे मे वैदिक सस्कृति की ओर आकर्षण बढता जारहा है। इग्लैंड की स्वर्गीया राजकुमारी की वसीयत के अनुसार उनकी अन्त्येष्टि वैदिकरीति के अनुसार की गई थी। उन्होने वैदिक धर्म को ही अपनी वसीयत मे वैज्ञानिक माना है।

सभामन्त्री आचार्य यशपाल जी ने उपस्थित नरनारियो को सूचना दी कि हरयाणा के प्रसिद्ध महात्मा भक्त फूलसिह जी की बलिदान जयन्ती इस बार उनके ग्राम माहरा जिला सोनीपत मे १०, ११ अगस्त को धूमधाम से मनाई जावेगी। इस सम्बन्ध मे सभा की ओर से ग्रामों मे प्रचार करवाया जावेगा और भक्त जी के द्वारा किये गये परोपकारी तथा समाजसुधारो की जानकारी दी जावेगी। इसकी तैयारी हेतु शीघ्र ही माहरा ग्राम मे एक बैठक रखी जारही है।

अन्त मे वानप्रस्थी देवमुनि जी के परिवार की ओर से आर्यप्रतिनिधिसभा हरयाणा रोहतक को ५०० रुपये, दयानन्दमठ रोहतक को ५०० रुपये तथा सोनीपत नगर के सभी आर्यसमाजो और गोशाला भटगाव को भी दान दिया गया। प्रीतिभोज का भी आयोजन किया गया।

आर्यसमाजें वेदप्रचार सप्ताह मनावें

आर्यप्रतिनिधिसभा हरयाणा के मन्त्री ने हरयाणा के आर्यसमाजो के अधिकारियो से निवेदन किया है कि वे अगस्त तथा सितम्बर मास वर्षा ऋतु मे वेदप्रचार सप्ताह मनावे और सभा से उपदेशक तथा भजनोपदेशको को आमन्त्रित करे। वेद का पढना-पढाना, सुनना और सुनाना सब आर्यो का परम धर्म है। यह ऋषि दयानन्द का आदेश है। वेद सम्बन्धी स्वाध्याय की पुस्तके सभा कार्यालय से प्राप्त करे।

–सभामन्त्री

सभा भजनोपदेशक पं० तेजवीर आर्य द्वारा ग्रामों में वेदप्रचार

१. ग्राम सुण्डाना में वेदप्रचार की धूम

आर्यप्रतिनिधिसभा हरयाणा के युवा भजनोपदेशक श्री तेजवीर आर्य द्वारा दिनाक ७, ८, ९ जुलाई २००२ को ग्राम सुण्डाना जिला रोहतक मे वेदप्रचार किया गया जिसमे वेद स्वत प्रमाण है। महर्षि दयानद सरस्वती विश्व के अनूठे महापुरुष, समाज मे दहेज कलक, नारी उत्थान मे ऋषि दयानन्द का योगदान भारत की आजादी मे आर्यसमाज का अविस्मरणीय कार्य आदि विषयो पर मधुर भजनो द्वारा प्रकाश डाला गया। इस कार्यक्रम मे प्रतिदिन १००० हजार स्त्री-पुरुषो एव युवाओ की उपस्थिति होती थी। गाववासियो ने इस कार्यक्रम की भूरि-भूरि प्रशसा की एव सभा को १६८० रुपये का सहयोग दिया। ग्रामवासियो के विशेष आग्रह पर महाराजा सूरजमल एव वीरागना हाडी रानी के इतिहास भी श्री तेजवीर आर्य द्वारा सुनाए गए।

२. ग्राम रिठाल में वेदप्रचार सम्पन्न

ग्राम रिठाल जिला रोहतक के अन्दर भी तेजवीर आर्य द्वारा दिनाक १४, १५ जुलाई को वेद-प्रचार किया गया जिसमे वेद ईश्वरीय ज्ञान है, समाज मे बढते अधविश्वास, वैदिक युग मे ऋषियो की मान्यताये, स्वामी दयानन्द सरस्वती के उपरान्त उनके सिपाहियो के सामाजिक आदि विषयो पर मधुर भजनो द्वारा प्रकाश डाला गया एव वीरशहीद ऊधमसिह का इतिहास भी सुनाया गया। ग्रामवासियो ने इस कार्यक्रम को बहुत सराहा एव ५५१ रुपये सभा को दान दिया।

३. हनुमान कालोनी रोहतक में बलिदानों की गाथा

आर्यसमाज हनुमान कालोनी रोहतक मे सभा के अन्तरग सदस्य श्री सुखवीर शास्त्री के प्रयत्नो से १६ से १८ जुलाई तक तीन गलियो मे प० तेजवीर आर्य का वेदप्रचार हुआ। श्री तेजवीर ने शहीद भक्तसिह, वीर हकीकत राय तथा अन्य बलिदानो की गाथाओ के साथ-साथ वर्तमान मे आई हुई सामाजिक बुराइयो का प्रभावशाली भजनों द्वारा खण्डन तथा वैदिक सिद्धान्तो का मण्डन किया। इस अवसर पर सभा को ५०१ रुपये दान प्राप्त हुआ।

–केदारसिह आर्य, सभा उपमत्री

आर्यवीर दल भिवानी के जिला स्तरीय व्यायाम प्रशिक्षण एवं चरित्र-निर्माण शिविर का समापन

सार्वदेशिक आर्यवीर दल मण्डल भिवानी के दस दिवसीय जिला स्तरीय शिविर का समापन समारोह २९ जून को पं० शिवकरण सस्कृत-हिन्दी महाविद्यालय चरखीदादरी मे बडी धूमधाम से सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम का आकर्षण दीक्षान्त समारोह रहा जिसमे १४० आर्यवीरो ने सार्वदेशिक आर्यवीर दल के प्रधान सचालक डॉ० देवव्रत जी से यज्ञोपवीत धारण करके अपने जीवन को यज्ञमय बनाने का सकल्प लिया। सभी आर्यवीरो ने आजीवन धूम्रपान, मास-अडे, शराब व अन्य दुर्व्यसनो से दूर रहने की प्रतिज्ञा की। २४ आर्यवीरो ने दीक्षित आर्यवीर की उपाधि प्राप्त कर दल के लिए कार्य करने की प्रतिज्ञा की। १८ आर्यवीरो ने अपने-अपने गावो मे दल की शाखा लगाने का वचन दिया। शिविर मे कुल १६० आर्यवीरो ने भाग लिया।

समापन समारोह के मुख्यअतिथि पूर्व मुख्यमत्री मा० हुकमसिह थे। अखिल भारतीय अग्रवाल सभा के महासचिव बालकिशन गुप्त ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की जिन्होने ११००० हजार रुपये नकद तथा गुजरात, राजस्थान व हरयाणा मे अगले वर्ष लगनेवाले शिविरो मे योगदान का आश्वासन दिया। सागवान खाप कन्नी २२ के प्रधान मागेराम ने भी ११००० रुपये दिये तथा हर वर्ष ११००० रुपये देने की घोषणा की। शिविर का उद्घाटन व समापन स्वामी ओमानन्द जी के उद्बोधन व आशीर्वचन से हुआ।

समारोह का तीसरा आकर्षण चाद आर्य को सार्वदेशिक आर्यवीर दल द्वारा वर्ष २००२ का सर्वश्रेष्ठ शिक्षक चुने जाने पर आर्यवीर दल भिवानी के मण्डलपति द्वारा मण्डल की ओर को रजत-पदक पहनाकर, चाद आर्य का स्वागत किया तथा अपनी खुशी का इजहार किया।

इस अवसर पर मण्डलपति ने ७१०० सौ रुपये दल की गतिविधियो को आगे बढाने हेतु भेट किए। इस प्रकार समारोह मे कुल मिलाकर ४३००० हजार रुपये दान दानी महानुभावो ने दिया।

समारोह का चौथा और अन्तिम आकर्षण ६० आर्यवीरो द्वारा एक-एक पीपल का पेड लगाने का सकल्प रहा, जो उसी समय प्राध्यापक रामनिवास यादव द्वारा अपनी पौधशाला से ६० पेड लाकर आर्यवीरो को भेट किये गये।

अन्त मे सार्वदेशिक आर्यवीर दल के प्रधान सचालक डॉ० देवव्रत आचार्य ने आर्यवीरो ने नया उत्साह व स्फूर्ति का सचार हुआ।

श्री दुलालचन्द्र विद्यावाचस्पति पी-एच.डी. की उपाधि से सम्मानित

केन्द्रीय सरकार से मान्यता प्राप्त महात्मा गाधी जी द्वारा सस्थापित 'दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास" विश्वविद्यालय विभाग ने ६६वे दीक्षान्त समारोह मे भारत के पूर्व मुख न्यायाधीश श्री रगनाथ मिश्र तथा श्री डॉ० हरिगौतम (अध्यक्ष, राष्ट्रीय चिकित्सा विज्ञान सस्थान) के अध्यक्ष तथा मुख्य आतिथ्य मे "राष्ट्र को महर्षि दयानन्द सरस्वती की प्रदेयता" विषय पर प्रो० डॉ० निर्मला एस मौर्य के निर्देशन मे विश्वविद्यालय विभाग की ओर से २६ ६ २००२ को श्री दुलालचन्द्र विद्यावाचस्पति को पी-एच डी की उपाधि से सम्मानित किया गया। कर्नाटक विश्वविद्यालय के प्रो० डॉ० टी आर भट्ट के अनुसार महर्षि दयानन्द सरस्वती विषय पर दक्षिण भारत मे विस्तृत रूप से यह पहला शोध प्रबन्ध है जिसमे महर्षि दयानन्द विषय पर विस्तृत जानकारी दीगई है। उन्होने वायवा के तुरन्त बाद ही विश्वविद्यालय विभाग के कुलसचिव श्री सेतुमाधव राव जी को इस शोध प्रबन्ध को प्रकाशित करने की अनुमति देदी। —प **निर्मलचन्द्र शास्त्री, पत्रकार, वेदप्रचारक "बगलौर" कर्नाटक**

आर्यसमाज के उत्सवों की सूची

१	आर्यसमाज मीसा जि० फरीदाबाद	२८ से ३१ जून २००२
२	भगत फूलसिह जयन्ती गाव माहरा जिला सोनीपत	११ अगस्त, २००२
३	आर्यसमाज ढाकला जिला झज्जर	१५ से १७ अगस्त २००२
४	आर्यसमाज जुड्डी जिला रेवाडी	१७ से १८ अगस्त २००२

—सुखदेव शास्त्री, सहायक वेदप्रचाराधिष्ठाता

आर्य युवक प्रशिक्षण शिविर

प्रसिद्ध आर्य उद्योगपति चौ० मित्रसेन सिन्धु के पुत्र श्री कै० रुद्रसेन के सहयोग एव स्वामी धर्मानन्द जी उडीसा की प्रेरणा से गुरुकुल झज्जर में शीघ्र ही एक मास का आर्य युवक प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया जारहा है।

इस शिविर का सम्पूर्ण व्यय भार कै० रुद्रसेन वहन करेंगे। प्रथम चरण मे ५० आर्य युवको को वैदिकधर्म, आर्यसमाज के सिद्धान्त, सस्कार, यज्ञपद्धति तथा सामान्य आयुर्वेद आदि के विषय मे प्रशिक्षण दिया जाएगा। प्रशिक्षण मे १०+२, विशारद, मध्यमा, शास्त्री, आचार्य बीए अथवा एमए उत्तीर्ण बेरोजगार आर्य विचारधारा मे आस्थावान् एव प्रचारशील आर्ययुवको को प्रवेश दिया जाएगा।

एक मास के शिविर प्रशिक्षण के पश्चात् सर्वश्रेष्ठ एव प्रतिभाशाली १० नवयुवको को हरयाणा के गावो मे आर्यसमाज के प्रचार एव प्रसार के लिए दो से तीन हजार रुपये मासिक पारिश्रमिक देकर प्रारम्भ मे एक वर्ष के लिए नियुक्त करने की योजना है।

प्रवेश के लिए इच्छुक आर्य युवक अधोहस्ताक्षरी से सम्पर्क करे।

—स्वामी ओमानन्द सरस्वी, आचार्य गुरुकुल झज्जर एव प्रधान आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा

वेदप्रचार मण्डल, जिला रेवाड़ी का त्रिवार्षिक चुनाव

प्रधान-जीवानन्द नैष्ठिक जी, उपप्रधान-कैप्टन मातुराम रेवाडी, यज्ञदेव शास्त्री लिलोड, मास्टर दयाराम आर्य बीकानेर, मन्त्री- गणपतसिह भुरथला उपमन्त्री-अशोक आर्य कोसली, रामकरण बालधन, प्रचारमन्त्री-पुष्पा शास्त्री रेवाडी, दीनदयाल आर्य जुड्डी, कोषाध्यक्ष-रामपाल आर्य भाकली, निरीक्षक-यज्ञदेव शास्त्री लिलोड, सरक्षक-स्वामी शरणानन्द दडौली।

—उपमत्री अशोककुमार आर्य, वेदप्रचार मण्डल, रेवाडी

आर्यसमाज शान्तिनगर (चार मरला) सोनीपत का चुनाव

सरक्षक-श्री राजेन्द्र चादना, प० भारत दीपक, आशानन्द वधवा, प्रधान-श्री थावरलाल पाहूजा, कार्यकर्त्ता प्रधान-श्री वीरसेन श्रीधर, उपप्रधान-श्री मोहनलाल आर्य, महासचिव-हरिचन्द स्नेही, सचिव-श्री किशनचन्द भुटानी, कोषाध्यक्ष-श्री ब्रह्मदत्त नारग, विद्यालय प्रबन्धक-श्री जीतकुमार डुडेजा, सम्पत्ति इचार्ज-श्री टाकनदास, लेखानिरीक्षक-श्री किशनचन्द डुडेजा, अतरग सदस्य-श्री कवलनयन हसीजा, श्री रामस्वरूप वर्मा, श्री अमरनाथ आर्य।

डी.ए.वी. माध्यमिक विद्यालय शान्तिनगर (चार मरला) शिक्षा समिति का चुनाव

प्रधान-श्री थावरलाल पाहूजा महामन्त्री-श्री हरिचन्द स्नेही, सचिव-श्री किशनचन्द भुटानी, कोषाध्यक्ष-श्री ब्रह्मदत्त नारग, विद्यालय प्रबन्धक-श्री जीतकुमार डुडेजा, सदस्य-पदेन मु अ शिक्षाविद्-श्री रामस्वरूप वर्मा।

—हरिचन्द स्नेही, महामत्री

आर्यसमाज प्रेमनगर अम्बाला शहर की तदर्थ समिति का गठन

सरक्षक-श्री चक्रवर्ती गोसाई, प्रधान-श्रीमती कान्ता, मत्री-श्री रामनाथ भाटिया, उपप्रधान-श्री सूरतसिह, कोषाध्यक्ष-श्री सुरेन्द्रकुमार अग्रवाल, सदस्य-श्री जगदीश कपूर, श्री विजय गुप्ता, श्री आईके बत्रा, श्री निरजन सूद।

—यशपाल आचार्य, सभामन्त्री

रोहणा में वेदप्रचार तथा कुश्ती प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

आर्यसमाज रोहणा (सोनीपत) के आर्यसमाज मन्दिर मे २-४-२००२ से ३०-६-२००२ तक कुश्ती का प्रशिक्षण युवको को दिया। यह प्रशिक्षण श्री बलवीरसिह एव श्री रामकुमार के सुपुत्र आर्यकुमार कुश्ती कोच के सरक्षण मे हुआ।

२५-६-२००२ से ३०-६-२००२ तक आर्य भजनोपदेशक श्री रामनिवास का वेदप्रचार भी हुआ। प्रचार मे हजारो आर्य महिलाओ एव आर्यपुरुषो ने श्रोता के रूप में भाग लिया।

—मन्त्री रामचन्द्र शास्त्री, अंतरंग सदस्य आ.प्र.स. हरयाणा

बेदाग दयानन्द

खुशहालचन्द्र आर्य, १८० महात्मागांधी मार्ग, कोलकाता-७

किसी भी महापुरुष के नाम से पहले लगा विशेषण उसके सम्पूर्ण जीवन का लेखा-जोखा होता है। जिस महापुरुष के जितने अधिक विशेषण लगाये जाते हो, उसका जीवन भी उतना ही महान् होता है, महर्षि दयानन्द के नाम से पहले कई विशेषणो का प्रयोग किया जाता है। जिनमे प्रमुख हैं -वेदोद्धारक, नारी-उद्धारक, योगिराज, त्यागी, तपस्वी, परोपकारी, दयालु, बालब्रह्मचारी आदि। ऋषि, महर्षि व देव विशेषण तो विशेषरूप से प्रचलित हैं ही।

महाभारत युद्ध के बाद सभी वैदिकविद्वानो के समाप्त होजाने से वेदज्ञान प्राय लुप्त-सा होगया था। अन्य वर्णों से तो वेद पढने-पढाने का अधिकार तथाकथित ब्राह्मणो ने प्राय छीन ही लिया था, स्वय भी वेदो का पढना-पढाना छोड दिया और अपना पेट भरने के लिए अठारह पुराण जो वेद-विरुद्ध है, रचकर उनको ही धर्मग्रन्थ बताकर वे जनसाधारण को भ्रमित करने मे लग गये थे। यहा तक भी कहना आरभ कर दिया था कि वेदो को तो शखासुर लेकर पाताल चला गया। वे हैं ही कहा ? ऐसे समय मे देवदयानन्द का प्रादुर्भाव हुआ। उन्होने गुरुवर विरजानन्द से आर्षग्रन्थ तथा व्याकरण पढकर यह जान लिया कि वेद ज्ञान का भण्डार है वेद ही सब सत्य विद्याओ के एकमात्र प्रकाशक हैं। उन्होने अपने परिश्रम से वेदो की कुछ प्रतिया दक्षिण भारत से खोजकर मगवाई और कुछ प्रतिया जर्मनी से मगवाई। इस प्रकार चारो वेदो को उपलब्ध कर लिया और इनको ईश्वरीय ज्ञान सिद्ध करके वेदो का पढना-पढाना सुनना-सुनाना हर व्यक्ति का परमधर्म बताकर वेदो की पुन स्थापना की और अपना सम्पूर्ण जीवन वेदो के प्रचार व प्रसार मे लगा दिया। इसीलिए इनको वेदोद्धारक कहना उपयुक्त है।

ऋषि के आगमन से पूर्व नारी जाति की बडी सोचनीय दशा थी। वह पैरो की जूती, घर मे सिर्फ काम करने की मशीन और भोग-विलास की सामग्री मात्र ही समझी जाती थी। स्त्रियो को शिक्षा देना पाप समझा जाता था। ऐसे समय मे महर्षि देव दयानन्द ने मनुस्मृति के प्रमाण **'नार्यस्तु यत्र पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता:'** आदि के आधार पर नारी को समाज व गृहस्थ मे ऊचा स्थान दिलवाया। नारी को लक्ष्मी, सम्राज्ञी व गृहिणी आदि नामों से सुशोभित किया। उनको पुरुषों के समान ही पढने का अधिकार तो दिया ही, साथ ही उसे अर्द्धांगिनी बताकर यज्ञादि धार्मिक कार्यों मे साथ रखने का विधान बताया। रानी कैकेयी राजा दशरथ के साथ युद्ध मे भी गई थी, उदाहरण देकर बताया स्त्रियो को वीरागना भी होना चाहिये। शतपथ ब्राह्मण का मत्र मातृमान्, पितृमान्, आचार्यवान् पुरुषो वेद" के आधार पर बालक का पहला गुरु माता को बतलाकर नारी जाति का मान-सम्मान बढाया और कहा कि अशिक्षित माता का पुत्र कभी भी होनहार व विद्वान् नहीं बन सकता। इसलिए यदि सन्तान को महान् बनाना है तो स्त्रियो का पढना-पढाना बहुत जरूरी है। उसी का फल है कि आज लडकिया हर क्षेत्र मे लडको से कहीं आगे है। इसीलिए नारीजाति को तो ऋषि का उपकार कभी भूलना ही नहीं चाहिए।

ऋषि के आने से पहले स्त्रीजाति की जैसी स्थिति थी, उससे भी निम्नतर हमारे शूद्र कहलानेवाले भाइयो की थी। उनमे प्रेम रखना तो दूर रहा, उनकी परछाईमात्र से भी घृणा थी। उनको पढना-पढाना धार्मिक स्थानो मे प्रवेश कराना यहा तक कि कुओ से पानी भरना भी वर्जित था। इसलिए अपने समाज मे मान न होने से हमारे शूद्र भाई विधर्मी बनते जारहे थे। ऐसी स्थिति मे स्वामी दयानन्द ने शूद्रो को हिंदुओ का अभिन्न अग बताया। जैसे शरीर को सुचारु रूप से चलाने के लिए शरीर के सभी अगो को स्वस्थ रखना जरूरी है, एक अग मे भी दोष आजाने पर शरीर स्वस्थ नहीं रह सकता, उसी प्रकार हिंदू समाजरूपी शरीर भी तभी उन्नति एव समृद्धि को प्राप्त कर सकता है। जब चारो वर्ण ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र सगठित होकर एक साथ प्रेम से रहे। तभी हम आनन्दित एव समृद्धि को प्राप्त कर सकता है। यह बतलाकर शूद्रो को मान-सम्मान दिलवाया और उनको विधर्मी होने से बचाया। महर्षि जी ने हिन्दू (वैदिक) धर्म को बचाने के लिए जो सबसे उत्तम व आवश्यक काम किया वह था शुद्धि आन्दोलन जो हमारे हिन्दू भाई भय, लालच अथवा विवशता के कारण विधर्मी मुसलमान वा ईसाई बन गये थे, उनको शुद्ध करके वापस वैदिक हिन्दूधर्म मे परावर्तित किया। इतनी ही नहीं जो विधर्मी भाई हिन्दूधर्म मे आना चाहते थे उनके लिये भी द्वार खोल दिये, इन शुद्धि-कार्यों के लिये आर्यसमाज को स्वामी श्रद्धानन्द, प० लेखराम एव चौ० फूलसिह सपूतो का बलिदान भी देना पडा जो भारत के गौरवमय इतिहास मे स्वर्ण अक्षरो मे लिखे जाने योग्य हैं।

महर्षि के हृदय मे गोमाता के प्रति बडी करुणा थी। गऊ को वे परिवार, समाज एव राष्ट्र की धरोहर व रीढ की हड्डी मानते थे और उनकी उन्नति के लिए गऊ को परम सहयोगी व आवश्यक मानते थे। साथ ही मानवमात्र के लिये बडा उपयोगी पशु समझते थे। आर्थिक दृष्टि से गाय कितनी उपयोगी है, इसके लिए महर्षि ने एक लघु पुस्तिका "गोकरुणानिधि" लिखी जिसमे गाय के प्रति उनके हृदय की करुणा फूट-फूट कर निकली है जो अनायास ही पाठको के हृदय को छू लेती है। गो-हत्या-बन्दी के लिए उन्होने अपने अन्तिमकाल मे लाखो भारतीयो के हस्ताक्षर करवाकर महारानी विक्टोरिया के पास लन्दन भेजे थे और उस समय के गवर्नर को भी गोहत्या-बन्दी के लिये निवेदन पत्र भी भेजा था। प्रसंगवश यहा यह बतलाना भी उचित है कि स्वामी जी की ही प्रेरणा से रिवाडी (हरयाणा) मे प्रथम गोशाला खुलवाई गई थी। उसके बाद अनेको गोशालाए भारत के अन्य भागो मे खुली, आज उनकी सख्या सैंकडो मे है। स्वामीजी की असमय ही मृत्यु होजाने से वे गोहत्या बन्दी की अपनी इच्छा को पूर्ण नहीं कर सके। हमे दुख इस बात का है कि हमारे देश को स्वतत्र हुए आज करीब ५४ वर्ष होगए, तुष्टिकरण की कमजोर सरकारी नीति के कारण यह जघन्य पाप अभी भी जारी है जबकि स्वतत्रता आन्दोलन के समय गोहत्या बन्दी एक अहम् विषय था, जिसके लिए हमारे अमर शहीदो ने अपने प्राणो की आहुति देकर भारत माता को परतन्त्रता की बेडियो से मुक्त करवाया था।

स्वामी जी अपने जीवन मे अनेको कुरीतियो व कुप्रथाओ जैसे सतीप्रथा, विधवाओ का विवाह न होने देना, जबकि विधुरो का विवाह होता था पुरुषो के बाल वा वृद्ध विवाह होना, विदेशो की यात्रा को पाप समझना, मृतक श्राद्ध, भूत-प्रेत, तावीज आदि मे अन्धविश्वास होना, स्त्री-पर्दा आदि का डटकर विरोध ही नही किया बल्कि उनको हिन्दू समाज से बहिष्कार ही करवा दिया। इसलिए स्वामीजी को उस समय के समाज सुधारक राजा राममोहन राय, ईश्वरचन्द विद्यासागर, केशवचन्द्र सेन आदि से बडा समाजसुधारक माना जाता है।

स्वामीजी जितने बडे समाज-सुधारक थे उससे कहीं अधिक राष्ट्र भक्त थे। वह जानते थे कि पराधीनता मे हम अपनी आर्य सस्कृति व सभ्यता को नहीं बढा सकेगे। अग्रेजी भाषा के होते हुए अपनी हिदी व सस्कृत भाषा को अपना गौरव एव सम्मान पूर्ण पद नहीं दिला सकेगे। इसीलिए आपने अपने अमरग्रन्थ "सत्यार्थप्रकाश" मे लिख दिया कि विदेशियो का राज्य चाहे कितना भी अच्छा क्यो न हो तब भी वह अपने राज्य से अच्छा नहीं हो सकता। सत्यार्थप्रकाश के इन्हीं विचारो को पढकर देश मे स्वाधीनता प्राप्त करने की एक लहर चली और गोपालकृष्ण गोखले, बालगगाधर तिलक एव महात्मा गाधी इसी लहर से प्रभावित हुए जिनको आज स्वाधीनता प्राप्ति का श्रेय दिया जाता है। स्वामीजी ने अपने ही प्रिय शिष्य श्याम जी कृष्ण वर्मा को लन्दन इसलिये भेजा कि वह वहा जाकर भारतीय नवयुवको मे राष्ट्र-प्रेम की भावना भरे और इसी भावना से श्याम जी कृष्ण वर्मा ने इग्लैड मे जाकर इडिया हाऊस की स्थापना की जिसमे रहकर वीर सावरकर, देवता स्वरूप भाई परमानन्द, मदनलाल ढींगरा जैसे वीर क्रातिकारियो ने देश के लिए प्राणो तक की बाजी लगाने की प्रेरणा पाई। महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित क्रातिकारी, देशभक्त, समाजसुधारक एव परोपकारक सस्था आर्यसमाज ने लाला लाजपतराय, भगतसिह, रामप्रसाद बिस्मिल, अश्फाक उल्ला, चन्द्रशेखर आजाद जैसे क्रातिकारियो मे देशप्रेम की भावना भरी। जिन्होने देश की आजादी के लिए हॅस-हॅस कर फॉसी के फन्दे को चूमा। काग्रेस का इतिहास इस बात का साक्षी है कि देश की स्वतत्रता की लडाई मे ८५ प्रतिशत आर्यसमाजी ही जेलो मे गये थे। यह इतिहास किसी आर्यसमाजी ने नही लिखा अपितु पट्टाभिसीतारमैया ने लिखा था जो आर्यसमाजी नही थे।

महर्षि के हृदय मे दुखित, असहाय अनाथजनो तथा विधवाओ के प्रति बडा प्यार व सवेदना थी। उनके दुखो को देखकर वे द्रवित होजाया करते थे। एक गरीब विधवा को अपने लाडले बच्चे के शव को, बिना कफन ही, गगा मे बहाते देखकर वे रातभर देश की गरीबी पर रोये थे। उनकी दया उस समय पराकाष्ठा को पहुच जाती है जब वे अपने ही हत्यारे पाचक को क्षमा दान करते हुए नेपाल भाग जाने के लिये पाच सौ रुपये अपने पास से देते हैं और कीचड मे फसी बैलगाडी को, बैलो पर दया करके, स्वय को कीचड मे डालकर, गाडी को बाहर निकाल देते है। ऐसा कोई गुण नहीं जो महर्षि दयानन्द मे नहीं था। वे परम त्यागी, तपस्वी परोपकारी, साहसी व सन्तोषी तो थे ही, साथ ही वेदो के प्रकाण्ड विद्वान् एव महान् योगी भी थे। वे घण्टा-दो घण्टे की नही १८ घण्टे की समाधि लगाने के अभ्यासी थे जो मोक्ष-पद

पाने के लिए पर्याप्त है। धन्य है ऋषिवर, जिन्होने अपने मोक्ष को त्यागकर, मानवमात्र को मोक्ष-मार्ग दिखाने के लिए कर्म-क्षेत्र को अपनाया। उन्होने अपने शरीर एव आत्मा को योग-साधना, कठिन परिश्रम, सयम, सदाचार आदि गुणो से तपाकर इतना बलिष्ठ व प्रतिभाशाली बना लिया था जिससे उनके महान् व्यक्तित्व का प्रभाव हर व्यक्ति पर पडे बिना नहीं रहता था।

इन सब गुणो के होते हुए भी उनमे एक गुण इतना विलक्षण और महान् था जिसका लोहा विरोधी भी मानते थे। वह था महर्षि जी का पूर्ण ब्रह्मचर्य। इससे डिगाने के लिये विरोधियो ने क्या नहीं किया ? उनके चरित्र पर झूठे दोष लगाये, उनको अनेक प्रकार से अपमानित करने की कोशिश की, यहा तक कि एक वेश्या को धन का लालच देकर ऋषि जी का चरित्र-हनन करने के लिये उनके पास भेजा। वाह रे बाल ब्रह्मचारी दयानन्द ! तेरे मुखमण्डल के तेज को देखकर और तेरी कोमल वाणी से 'मा' सम्बोधन सुनकर उस वेश्या का कलुषित हृदय पिघल गया। जिसको सारा ससार घृणा की दृष्टि से देखता हो उस पतिता का हृदय उससे कैसे नहीं बदलेगा ? अब तो वह गगा के समान पवित्र होगई थी। जो ऋषिजी को डुबोने आई थी, वह स्वय ही आत्म-ग्लानि मे डूब गई और ऋषिजी के चरणों मे गिरकर क्षमा याचना की। आह ! कैसा था योगिराज का ब्रह्मचर्य।

वैसे तो सभी विशेषण ऋषिजी के गुणो के अनुरूप ही हैं, परन्तु एक विशेषण जो मुझे सबसे अच्छा और सटीक लगा, जिस पर बहुत कम लोगों का ध्यान जाता है वह विशेषण है "बेदाग दयानन्द"। स्वामीजी के सम्पूर्ण जीवन पर कोई उगली उठाने की हिम्मत नहीं कर सकता। वे बेदाग थे, इसमे कोई सशय या सन्देह नहीं। सबसे बडी बात तो यह है कि जिसका सारा ससार विरोधी हो, उस पर अपने स्वार्थवश सभी कामी, दुष्ट दुराचारी लोग मिलकर "दाग" लगाने पर तुले हो, ऐसी स्थिति मे महर्षि दयानन्द जैसा पूर्ण ब्रह्मचारी, महान् चरित्रवान् व्यक्ति ही बेदाग रह सकता है, अन्यो के लिये मुश्किल ही नहीं असम्भव भी है। इस विलक्षण विशेषण को स्पष्ट करने के लिये एक घटना का उल्लेख करना यहा बहुत आवश्यक है जिससे इस विशेषण को समझने मे पाठको को बडी आसानी होगी।

जब महर्षि दयानन्द का देहावसान हुआ, उस पर सभी आर्यजन फूट-फूट कर रो रहे थे, तभी एक पौराणिक साधु, जो हमेशा दयानन्द की बुराई करता था, गाली देते नहीं थकता था, लोगों को यह कहकर कि दयानन्द नास्तिक है, राम, कृष्ण व हमारे देवी-देवताओ को नहीं मानता है, हमारे श्राद्ध, तर्पण और तीर्थ-स्थानो मे इसका विश्वास नहीं है, हिन्दूधर्म को नष्ट करने पर तुला है आदि दोष लगाकर बहकाया करता था, उसको भी दयानन्द की मृत्यु पर रोता देखकर लोगो के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। जिस साधु ने सारी उम्र दयानन्द को बदनाम किया हो, दयानन्द जिसको फूटी आख नहीं सुहाया हो, वह आज दयानन्द की मृत्यु पर क्यो आसू बहा रहा है ? इसको तो आज दिल खोलकर हसना चाहिये, घी के दिये जलाने चाहिये। किसी ने उससे पूछ ही लिया कि हे महात्मन् ! आप तो दयानन्द के कट्टर विरोधी थे, हमेशा उसको गोली देते थे, आज उसकी मृत्यु पर क्यो रो रहे हो ? तुमको तो आज खुशी मनानी चाहिये, लड्डू बाटने चाहिये। तब उस साधु ने कहा कि मैं इसलिये नहीं रो रहा हू कि दयानन्द आज इस ससार से चला गया बल्कि इसलिये रो रहा हू कि हमारे बहुत प्रयास करने पर भी वह "बेदाग" चला गया। हमारी सारी काली करतूते धरी की धरी रह गई।

यह घटना सुनकर मेरा मन मंत्र-मुग्ध होगया, आखो से श्रद्धा एव प्रेम के आसू बह निकले और मेरे मन ने कहा-वाह रे, दयानन्द ! इस "बेदाग" विशेषण का तू ही सच्चा अधिकारी है।

ऋषिजी ने अपने चरित्र पर किसी प्रकार का दाग नहीं लगने दिया, यह बात अपनी जगह बिल्कुल सही है। साथ ही दयानन्द ने अपने सत्य सनातन वैदिक सिद्धान्तो से किसी प्रकार का अनुचित समझौता न करके, अपने सिद्धान्तों पर अडिग रहकर वैदिक सिद्धान्तों को भी 'बेदाग' रखा। मूर्तिपूजा का खण्डन, वेद ईश्वरीय ज्ञान है, वेद सब सत्यविद्याओ की पुस्तक है, ईश्वर अवतार नहीं लेता आदि कई जटिल प्रश्नो का सप्रमाण और सतर्क समाधान प्रस्तुत किया। किसी ने मठाधीश बनाने का लालच दिया तो किसी ने सस्था का प्रधान बनाने का प्रलोभन दिया लेकिन उस लगोटधारी फकीर ने सब प्रलोभनो को ठुकरा दिया और अपने वैदिक सिद्धान्तो पर अटल रहे, उनसे कभी विचलित नहीं हुए और न ही कभी किसी प्रकार विचलित नहीं हुए और न ही कभी किसी प्रकार की आच आने दी। इसलिये भी दयानन्द इस "बेदाग" विश्लेषण के और भी अधिक अधिकारी बन जाते हैं। इस 'बेदाग' विश्लेषण को हम देव दयानन्द के सम्पूर्ण जीवन का दर्पण कह देवे तो उचित तो है ही, साथ ही यथार्थ भी है।

हरियाणा सरकार द्वारा हिन्दी संस्कृत पर प्रहार

हिन्दी प्रदेश हरयाणा मे जिसका निर्माण ही हिन्दी के मुद्दे पर हुआ था, आज उसी धरती पर उसी प्रदेश मे हिन्दी को धीरे-धीरे समाप्त करने की साजिश की जारही है।

हरयाणा मे स्थित महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक एव कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय ने अपनी वाणिज्य स्नातक व विज्ञान स्नातक की प्रथम वर्ष की कक्षाओ से हिन्दी विषय को समाप्त करने का निर्णय लिया है। जब छात्र हिन्दी पढेगे ही नहीं तो उसका प्रयोग भी नहीं कर सकेगे। प्रदेश मे अग्रेजी तो पूर्व प्रवेशिका कक्षाओ से स्नातक कक्षाओ तक अनिवार्य बना दीगई है लेकिन हिन्दी को धीरे-धीरे घटाया जारहा है। हरयाणा का प्रत्येक मुख्यमत्री शपथ ग्रहण के बाद यह घोषणा अवश्य करता है कि प्रदेश का समस्त कार्य हिन्दीभाषा मे होगा, लेकिन यह घोषणा केवल घोषणा ही रह जाती है। व्यवहार मे नहीं उतरती।

विद्यालय स्तर पर सस्कृत विषय के अक १०० से घटाकर ५० निर्धारित किए जारहे हैं। ये पचास अक भी कुल अकों मे नहीं जोडे जाएगे। भला इससे छात्र की सस्कृत विषय मे क्या योग्यता बन पाएगी तथा कोई छात्र सस्कृत विषय मे रुचि लेगा, उसके अक ही कहीं योग मे जुडेगे ही नहीं न इसमे उत्तीर्णता आवश्यक होगी।

माननीय मुख्यमत्री श्री ओमप्रकाश जी चौटाला ने विधानसभा मे शपथ सस्कृत मे ग्रहण की थी। अभी महीनाभर पहले शिक्षामत्री श्री बहादुरसिह ने कहा था-"हरयाणा मे सस्कृत को पहली कक्षा से अनिवार्य किया जाएगा। सस्कृत को पूरे तरीके से विकसित करने की योजना सरकार बना रही है।" क्या ऐसे बयान महज एक छलावा हैं ? यदि ऐसा तो यह देश व प्रदेश के लिए दुर्भाग्य होगा। प्रदेश के शिक्षाशास्त्रियो, बुद्धिजीवियो व राष्ट्रभक्त लोगो को भारतीय भाषाओ का होरही दुर्दशा के बारे में सगठित होकर प्रयास करने होंगे।

पहली से अनिवार्य रहने पर भी छात्र सबसे अधिक अग्रेजी मे ही अनुत्तीर्ण होरहे हैं अनिवार्य अग्रेजी का बोझ निहायत गलत है। अनिवार्य अग्रेजी के दबाब से छात्र हिन्दी जैसी सरल व जन्म से मरण तक बोली जानेवाली भाषा में भी पिछडने लगे हैं।

विद्यालयो, महाविद्यालयो मे अग्रेजी की साप्ताहिक घटिया ९ से १२ तक हैं लेकिन हिन्दी की घटिया सप्ताह मे ३ या ४ ही हैं। एक महाविद्यालय में अग्रेजी के प्राध्यापक १० होते हैं तो हिन्दी के केवल २ या ३ ही होते हैं। अग्रेजी पर देश-प्रदेश मे भारी व्यय किया जारहा है लेकिन परिणाम उतना नहीं है। प्रदेश का कार्य भी ६० से ७० प्रतिशत तक अग्रेजी मे ही होरहा है। विश्वविद्यालयो मे तो यह शत-प्रतिशत ही कहा जा सकता है।

—महावीर 'धीर' प्रोध्यापक

आर्य-संसार

आर्य महिला सिलाई केन्द्र का उद्घाटन

गुडगाव आर्यसमाज जैकमपुरा मे मानवता की सेवा ही ईश्वर की सच्ची सेवा है, को चरितार्थ करते हुए आर्य महिला सिलाई केन्द्र का उद्घाटन किया गया। कार्यक्रम प्रात: यज्ञ से प्रारम्भ हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रसिद्ध समाजसेवी श्री प्रभुदियाल स्वर्णकार ने की। अध्यक्षीय भाषण में उन्होने कहा कि आर्यसमाज द्वारा सेवाकार्य अति सराहनीय है। सिलाई केन्द्र का उद्घाटन आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के वरिष्ठ उपमत्री श्री महेन्द्र शास्त्री ने किया। अपने भाषण मे उन्होने देश के स्वतन्त्रता सेनानियो एव क्रान्तिकारियो के जीवन का दृष्टात देते हुए कहा कि सेवा से बढकर कोई कार्य नहीं। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि श्री शशि सचदेवा एव श्री चन्द्र सचदेवा थे। अपने विचार प्रकट करते हुए उन्होने कहा कि बच्चे ही समाज की पूजी है अत वे समाज से जुडते रहे तो आर्यसमाज उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होगा। समारोह मे आर्यसमाज सेक्टर ४ के प्रधान श्री रामदास सेवक ने भी सेवाकार्य प्रारम्भ करने हेतु आर्यसमाज जैकमपुरा को बधाई दी। आर्यसमाज के प्रधान श्री चन्द्रप्रकाश गुप्ता ने बताया कि पहले दिन ही सिलाई केन्द्र पर प्रशिक्षण लेने के लिए ४० छात्राओ ने प्रवेश लिया जो कि नि शुल्क प्रशिक्षण दिया जायेगा जिसका समय प्रतिदिन साय ४ बजे से ६ बजे तक रहेगा। सिलाई का प्रशिक्षण श्रीमती राजरानी मलिक एव मायादेवी आर्या देगी। कार्यक्रम मे स्त्री आर्यसमाज का विशेष योगदान रहा। अन्त मे आर्यसमाज के प्रधान श्री चन्द्रप्रकाश गुप्ता ने समस्त अतिथियो का धन्यवाद किया। विशेष रूप से महेन्द्र शास्त्री का जिन्होने इस सिलाई केन्द्र खोलने की प्रेरणा दी। इस अवसर पर आर्यसमाज के गणमान्य श्री किशनचन्द सैनी, श्री जगदीश गोभिया, श्री राजपाल दीवान, श्री शिवदत्त आर्य, श्री लच्छीराम मगला, श्री वजीरचन्द आर्य, प्रवीण आर्य एव आर्य केन्द्रीय सभा के प्रेस सचिव ओमप्रकाश चुटानी सम्मिलित हुए।

आर्य वीरांगना ब्रह्मचर्य प्रशिक्षण शिविर गन्नौर मण्डी में सम्पन्न

आर्यसमाज मन्दिर किशनपुरा गन्नौर मण्डी (सोनीपत) हरयाणा मे दिनाक २३ ६ २००२ से ३० ६ २००२ तक आर्य वीरागना ब्रह्मचर्य प्रशिक्षण शिविर ब्रह्मचारिणी प्रभा आर्या, फरीदाबाद मुख्यप्रशिक्षक एव ब्रह्मचारिणी सरोजनी (आर्य कन्या गुरुकुल नरेला) के कुशल, प्रेरक एव गतिशील नेतृत्व मे सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। इस शिविर मे गन्नौर, सोनीपत, पानीपत, समालखा, मतलोडा, करनाल तथा विभिन्न स्थानो से आर्य कन्याओ ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

इस शिविर का उद्घाटन डा० रणवीर जी (समालखा) ने किया। शिविर मे आर्य कन्याओ को सन्ध्या, हवन, शारीरिक शिक्षा, आत्मिक, नैतिक बल, बौद्धिक विकास, राष्ट्रीय चेतना, समाज परिवार का निर्माण, अनुशासित जीवन, आत्मरक्षण, शस्त्रप्रशिक्षण परिवार का निर्माण, अनुशासित जीवन एव आर्य सस्कृति की भावनाओ को जागृत करने का प्रशिक्षण दिया गया।

समापन समारोह ३०.६ २००२ रविवार को ध्वजारोहण के पश्चात् श्री विकास आर्य एव श्री पदमप्रकाश आर्य पानीपत ने परेड की सलामी ली। इसके अतिरिक्त आर्य कन्याओं ने स्वागत गीत, पी टी, कुगफू, कुंगफू फाइट, आसन, स्तूप, लाठी, तलवार, कटार, आग के गोले में से गुजरकर अद्भुत एव प्रशसनीय करतब-कौशल दिखाए।

शिविर के समापन समारोह मे आर्य वीरागनाओं को प्रशस्ति-पत्र, नकद पुरस्कार एव महर्षि दयानन्द सरस्वती की अमर कृति 'सत्यार्थप्रकाश' देकर सम्मानित किया गया। समारोह के अन्त मे ऋषि लगर (भण्डारा) का आयोजन हुआ। —हरिचन्द स्नेही, बौद्धिक अध्यक्ष

फुलवाणी जिले में पुनर्मिलन का बृहत् कार्यक्रम सम्पन्न

उडीसा के अन्य वनवासी जिलो की तरह पहाड जगलो से घिरा फुलवाणी जिला भी ईसाई पादरियो से आक्रान्त हैं इसलिए उस जिले मे भी सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधिसभा के निर्देश पर पू० स्वामी धर्मानन्द जी की देखरेख मे उत्कल आर्यप्रतिनिधिसभा एव उत्कल वैदिक यति मण्डल द्वारा पुनर्मिलन का कार्यक्रम चलाया जारहा है। इसी शृखला मे ग्राम गेडिगिआ मे १०, ११ एव ३० जून को पुनर्मिलन के दो बृहत् कार्यक्रम सम्पन्न हुए। इन दोनो कार्यक्रमो मे २८६ परिवारों के हजारो ईसाइयो ने वैदिकधर्म ग्रहण किया। ध्यान रहे दीक्षा मे दूसरे ग्रामो के केवल परिवार के मुखिया पति-पत्नी ही आते हैं। दोनो कार्यक्रमो मे ६०० से अधिक स्त्री, पुरुषो ने श्रद्धापूर्वक यज्ञ मे आहुति देकर क्रास को तिलाजलि देकर यज्ञोपवीत ग्रहण किया। दोनो दीक्षा कार्यक्रम को देखने के लिए दोनो दिन २ हजार से अधिक जनता की उपस्थिति रही।

पुनर्मिलन कार्यक्रम उत्कल आर्यप्रतिनिधिसभा के प्रधान श्री स्वा० व्रतानन्द जी की अध्यक्षता में श्री प० विशिकसेन जी शास्त्री और ब्र० सत्यप्रिय सामश्रवा ने करवाया। इस अवसर पर उस क्षेत्र के आर्यसमाज के प्रमुख कार्यकर्त्ता श्री दाशरथी प्रधान, श्री नारायण शास्त्री, शिवराम आर्य एव जालन्धर आर्य आदि उपस्थिति थे। सभा की ओर से सबके लिए ऋषि लगर की व्यवस्था थी।

—सुदर्शनदेवार्य, उपमंत्री, उत्कल आर्यप्रतिनिधिसभा

क्या विश्व को आर्य बनाना चाहते हो ?

अपने दिल पर हाथ रखकर ईमानदारी से बताओ? क्या आप वास्तव मे विश्व को आर्य बनाना चाहते हो? या केवल प्रदर्शन करके शर्मा वर्मा गुप्ता बनकर ही रहना चाहते हो ? यदि विश्व को आर्य बनाना है तो तैयार होओ। यह कार्य कुछ कठिन अवश्य है परन्तु असम्भव नहीं है। जब एक ऋषि दयानन्द ने अनेक दीपो को प्रज्वलित करके अज्ञानता के अन्धकार को नष्ट करके ज्ञान का प्रकाश कर दिया तो क्या हम सहस्रो की संख्या मे होकर भी उनके कार्य को नहीं कर सकते, कर सकते हैं। हमे सगठित होने की आवश्यकता है। हमारे मध्य मे कुछ भ्रष्ट आचरणहीन लोग बाधा बने हुए हैं। इनको हटाना या सुधारना होगा।

विश्व को आर्य बनाने से पहले स्वय को और अपने परिवार को आर्य बनाना होगा। बडे अफसोस की बात है कि आर्यसमाज के बहुत से अधिकारीगण ही नहीं बाकि अनेक उपदेशक प्रवक्ता भी वैदिक नियमो व सिद्धान्तो का पालन नहीं कर रहे हैं। इनके परिवारो मे जाकर देख ले तो मालूम हुआ कि उनकी धर्मपत्निया और बच्चे आर्य समाज मे आना पसन्द नही करते। उनकी भक्ति के मार्ग अलग-अलग हैं अर्थात् अन्धविश्वास मे फसे हुए हैं। कुछ घरो में तो मीट अण्डा शराब का सेवन किया जाता है। जब इन आर्यसमाज के ठेकेदारो (अधिकारियो) से पूछा कि आपके परिवार मे यह क्या होरहा है ? उनका एक ही उत्तर है "क्या करें, बच्चे कहना ही नहीं मानते"। बडे आश्चर्य की बात है कि आपके बच्चे सच्ची बात को भी नहीं मानते। इनसे पूछो कि ये पत्नी और ये बच्चे आपके हैं या किसी और के हैं। आपने कभी इनको समझाने का प्रयास किया। यदि आपके बच्चे आपका कहना नहीं मानते तो यह आपकी कमी या कमजोरी है। अपकी पत्नी आपके बच्चे आपकी त्रुटियो को जानते हैं जो आचरणहीनता को प्रकट करती है। जैसे आपका खानपान अशुद्ध होना, वाणी का दुरुपयोग करना, उचित व्यवहार न करना इत्यादि। जब तक ऐसे व्यक्ति आर्यसमाज में रहेंगे तब तक उद्धार नहीं हो सकता। और पद प्राप्ति के लिए लडाई झगडे होते रहेगे।

अब सबसे पहला काम भ्रष्ट चरित्रहीन अधिकारियो को बदलना होगा। समाज की प्रगति के लिए चरित्रवान् कर्मठ कार्यकर्त्ताओं को अधिकारी बनाना अनिवार्य है। उसका धनवान् होना कोई आवश्यक नहीं है।

इसके बाद प्रचारक, उपदेशक को भी समझना होगा समाज को ऐसे उपदेशको की आवश्यकता नहीं है। जिनका उद्देश्य केवल दक्षिणा कमाना है। जो तप त्याग पूर्वक प्रचार कार्य कर सके वे आगे आये। आर्यसमाज उनका सम्मान और सहयोग करेगा। प्रचार का कार्य एक गृहस्थी की अपेक्षा सन्यासी और वानप्रस्थी अधिक कर सकता है यदि योग्य विद्वान् है। गृहस्थी को अपने परिवार के पालन पोषण की चिन्ता लगी रहती है, इसलिए उसे मोटी दक्षिणा चाहिए। वैदिक प्रचार को व्यवसाय अथवा धनोपार्जन का विषय न बनायें।

माता पिता बच्चे के प्रथम गुरु होते हैं। उनको अपने बच्चों का जीवन बनाने के लिए बचपन से ही उत्तम शिक्षा देनी चाहिये। बच्चो को सत्संग में अपने साथ लाये और और आर्य वीर दल की शाखा मे भेजें ताकि उनमें आर्य बनने के सस्कार उत्पन्न हो। यदि बचपन मे बच्चो को सही दिशा नहीं मिलेगी तो बडे होकर सुधारना मुश्किल हो जायेगा।

अब तीसरा वर्ग पुरोहित का है। जो प्रचार की श्रृखला मे सम्माननीय और महत्वपूर्ण कडी है। आर्य समाज मे पुरोहित का कार्य करने वाले पण्डित को वैद्धिक पद्धति के अनुसार यज्ञादि भिन्न-भिन्न सस्कारों मे पूर्णतया विद्वान् होना चाहिये। समाज का उचित मार्ग दर्शन करना उसका मुख्य दायित्व है। यदि वह ईमानदारी से अपने कर्त्तव्य का पालन करेगा तो दक्षिणा की कोई कमी नहीं रहेगी। यदि लोभी लालची बनकर सिद्धान्तो के विरुद्ध गलत काम करेगा तो अपने पद की गरिमा खो देगा। अपमान भी होगा, सम्भवत समाज से भी निकाला जा सकता है। अत अपने स्तर को ध्यान में रखते हुए श्रेष्ठ कर्मों की शैली मे सम्मान को बनाये रखना उचित है।

अन्त मे निवेदन है कि आर्यसमाज मे ऐसे व्यक्तियो को सदस्य न बनाये जो कुमार्गी और दुर्व्यसनी है। आर्यसमाज के प्रत्येक सदस्य को जहा भी है वहीं सच्चा आर्य बनकर तन मन धन से सत्य का प्रचार करते रहना चाहिये। हितकारी और सच्ची बात को मानने के लिये सब तैयार हैं बशर्ते हम स्वय सत्याचरण करे।

—देवराज आर्यमित्र, आर्यसमाज कृष्णानगर, दिल्ली

वेदप्रचार

१ दिनाक २२ जून २००२ को आर्यसमाज बालन्द जिला रोहतक में जयपालसिह आर्य व श्री सत्यपाल आर्य सभा भजनोपदेशको ने श्री भगवान प्रधान जी के द्वारे पर ठहर कर वेद प्रचार किया प्रात. २२ जून को ही श्री सुदर्शनदेव जी ने सुमेधानन्द जी की अध्यक्षता में गाव की चौपाल मे यज्ञ किया। ईश्वर भक्ति के भजन सुनाये गए। आर्य समाज के अधिकारियो का निम्न प्रकार चुनाव कराया - प्रधान-श्री रणधीरसिह आर्य, उपप्रधान-श्री नन्दराम आर्य, मन्त्री-श्री सोमदेव शास्त्री, उपमन्त्री-श्री मन्जीत आर्य, कोषाध्यक्ष-श्री भगवानसिह आर्य। आर्य प्रतिनिधि सभा को वेद प्रचार में वेद प्रचार दशाश सर्वहितकारी शुल्क कुल मिला कर ४१५ रुपये की धनराशि दी गई।

२ दिनाक २५, २६ जून २००२ को आर्य समाज किसरेहटी जिला रोहतक जयपाल सिह आर्य व सत्यपाल आर्य सभा भजनोपदेशको ने दो दिन श्री धर्मसिह प्रधान द्वारे पर ठहर कर गाव में वेद प्रचार किया। गाव मे बढती बुराइयो शराब, दहेज, पाखण्ड अन्धविश्वास का पुरजोर खण्डन किया। आर्य प्रतिनिधि सभा रोहतक को अपनी आर्य समाज का वेद प्रचार दशाश सर्वहितकारी शुल्क कुल मिला कर ५०० रुपये की धन राशि दी।

सभा के ऋषिलंगर हेतु म० जयपालसिंह व सत्यपाल आर्य द्वारा दान की सूची

संख्या	नाम व पूरा पता	दान
१	आर्यसमाज बेरी जिला झज्जर	१०१
२	आर्यसमाज धौड़	१०१
३	श्री बलगीर सिंह खेड़ी आसरा	१०१
४	आनन्द देव शास्त्री खेड़ी जट	१०१
५	डा अनिल कुमार बराणी	१०१
६	सुरेन्द्रसिंह आर्य वराणी	१०१
७	महाबीर सिह आर्य वराणी	१०१
८	विजय कुमार आर्य वराणी	१०१
९	मा० सुल्तानसिह आर्य जहाजगढ	१०१
१०	मा० महेन्द्र सिह जहाजगढ	१०१
११	श्री रमेशकुमार जहाजगढ	१०१
१२	रच्छेराम आर्य खरावड जिला रोहतक	१०१
१३	नरेश कुमार आर्य सुखपुरा	५१
१४	नरेश आर्य खरावड	१०१
१५.	प० नन्दकिशोर आर्य खरावड	२००
१६	बलबीर आर्य रिठाल	५०
१७	राजबीर आर्य रिठाल	५०
१८	मा० लखीराम आर्य रिठाल	१०१
१९	रणधीर सिह रिठाल	१०१
२०	रोहताश आर्य झोझूकलां जिला भिवानी	२०
२१	सूबेदार दयानन्द आर्य हसनगढ रोहतक	१०
२२	वेदसिह आर्य गोच्छी झज्जर	५१
२३	बलवान सिह मायना रोहतक	१००
२४	भीमसिह आर्य मायना रोहतक	५०
२५	धर्मपाल आर्य गोच्छी झज्जर	१०१
२६	ओमप्रकाश आर्य गोच्छी	५१
२७	महेन्द्रसिह आर्य बेरी झज्जर	१०१
२८	मा० धर्मबीर आर्य भदानी झज्जर	१०१
२९	महाशय रामसिह खरावड रोहतक	१०१
३०	दलेल सिंह आर्य खरावड रोहतक	१०१
३१	प्रेमसिह आर्य रिठाल रोहतक	१००
३२	ओमप्रकाश आर्य रिठाल रोहतक	५०
३३	सूरजभान रिठाल रोहतक	२१
३४	श्री रामकुमार आर्य रिठाल रोहतक	५०
३५	जयदेव आर्य गिवाना सोनीपत	१००
३६	अमर सिह आर्य गिवाना सोनीपत	५०
३७	भानाराम आर्य गिवाना सोनीपत	२०
३८	मा० रामगोपाल गिवाना सोनीपत	१००
३९	विरेन्द्र आर्य गिवाना सोनीपत	२१
४०	नत्थूराम आर्य गिवाना सोनीपत	२५
४१	दयाकिशन आर्य गोहाना रोड रोहतक	१००
४२	चाद सिह आर्य लाढौत रोहतक	२१
४३	राजबीर आर्य लाढौत रोहतक	२१
४४	कबूल सिंह आर्य हुमायूपुर	२५०
४५	हरिन्द्र आर्य हुमायूपुर	३००
४६	वेगराज आर्य हुमायूपुर	५००
४७	धूपसिह प्रधान सिवाना झज्जर	३००
४८	राजसिह नौनद रोहतक	१००
४९	मीहासिह कोथ कला हिसार	५००
५०	सूबेदार सूरजमल	५१
५१	श्री लच्छमणसिंह आर्य नयाबास	३१०
५२	श्री कुलबीर आर्य रिठाल एक बोरी गेहू	१
५३	श्री उमेदसिह रिठाल एक बोरी गेहू	१
५४	श्री सत्यवीर रिठाल एक बोरी गेहूं	१
५५	आर्य समाज नयाबास २ बोरी गेहू	२
५६	आर्यसमाज गिवाना छ बोरी गेहूं	६
५७	श्री सुरेश कुमार बखेता १ बोरी गेहू	१
५८	श्री हरिन्द्र हिमायूपुर १ बोरी गेहूं	१

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ०१२६२–७६८७४, ७७८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ०१२६२–७७७२२) से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३ सृष्टिसंवत् १, ९६, ०८, ५३, १०३
पंजीकरणसंख्या टैक/85-2/2000 ☎ ०१२६२-७७७२२

प्रधानसम्पादक : यशपाल आचार्य, सभामन्त्री सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री
वर्ष २६ अंक ३४ २८ जुलाई, २००२ वार्षिक शुल्क ८०) आजीवन शुल्क ८००) विदेश में २० डॉलर एक प्रति १.७०

वेद और मानवतावाद

प्रो० चन्द्रप्रकाश आर्य, अध्यक्ष स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग, पूर्वाध्यक्ष हिन्दी संस्कृत विभाग, दयालसिंह कालेज, करनाल-१३५००१ (हरयाणा)

वेद विश्व के प्राचीनतम ग्रन्थ हैं। भारतीय परम्परा के अनुसार जब से यह सृष्टि बनी तभी से वेदों का प्रादुर्भाव चला आता है। वेदान्तदर्शन के पहले अध्याय के प्रथम चार सूत्रों में कहा गया है कि इस सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय उस ब्रह्म से है और उसी ब्रह्म से वेदरूपी शास्त्र की उत्पत्ति हुई है–(क) अथातो ब्रह्मजिज्ञासा (ख) जन्माद्यस्य यत· (ग) शास्त्रयोनित्वात् (घ) तत्तु समन्वयात्।

महर्षि दयानन्द ने भी अपनी पुस्तक 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' में वेदोत्पत्ति प्रकरण में इस बारे में विस्तार से विचार किया है। वेदों की उत्पत्ति कब और कैसे हुई ? इस पर प्रकाश डाला है। नागरी प्रचारिणी सभा, काशी द्वारा प्रकाशित 'हिन्दी शब्द सागर' (भाग नौ पृ० ४६०८) में लिखा है कि 'वेदों का स्थान संसार के प्राचीनतम साहित्य में बहुत ऊंचा है। भारतीय आर्य लोग इन्हें अपौरुषेय और ईश्वरकृत मानते हैं। वे ऋषि उन मंत्रों के द्रष्टा हैं। प्राय: सभी सम्प्रदायों के लोग वेदों का परम प्रामाण्य मानते हैं। स्मृतियों और पुराणों आदि में वेद नित्य, अपौरुषेय और अप्रमेय कहे गए हैं। ब्राह्मणों और उपनिषदों में यहां तक कहा है कि वेद सृष्टि से भी पहले के हैं।' नागरी प्रचारिणी सभा, काशी द्वारा ही प्रकाशित "हिन्दी विश्वकोश" (खंड बारह, पृ० ४४४३-४४) में लिखा है कि "ऋग्वेद संहिता आर्यजाति की सम्पूर्ण ग्रन्थराशि में प्राचीनतम ग्रन्थ है। समस्त विश्व वाङ्मय का यह सबसे पुरातन उपलब्ध ग्रन्थ है। ऋग्वेद संहिता सम्पूर्ण विश्व वाङ्मय की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण विरासत है।" पाश्चात्य विद्वानों में मैक्समूलर ने लिखा है कि वेद मानवजाति के पुस्तकालय में सदा सर्वदा के लिए प्राचीनतम पुस्तक रहेंगे–The Vedas I feel convinced will occupy the scholars for centuries to come and take and maintain for ever its position as the most ancient of books in the library of mankind."

सन् १९०१ में प्रकाशित "चैम्बर एनसाइक्लो- पीडिया (खंड ६, पृ० १०४) में लिखा है कि "ऋग्वेद धरती पर विद्यमान सबसे प्राचीन दस्तावेज है।"

वेदो का महत्त्व केवल विश्व का प्राचीनतम साहित्य होने के नाते नहीं है अपितु इसलिए भी है कि वेद समस्त विश्व के लिए है। मानवमात्र के लिए है। देश और काल की सीमाओं से परे है। संसार का कोई भी मानव वेद से लाभ उठा सकता है। मनु ने सदियों पहले अपनी मनुस्मृति में कहा था कि वेद पितृजनों, देवों तथा मनुष्यों सबके लिए स्थायी सनातन ज्ञान की आंखें हैं–

पितृदेवमनुष्याणां वेदश्चक्षु: सनातनम्।
यदशक्यं चाप्रमेयं च वेदशास्त्रमिति स्थिति:।। (मनु० १२।९४)

मनु फिर कहते हैं वेदरूपी शास्त्र सब प्राणियों के कल्याण के लिए है–

बिभर्ति सर्वभूतानि वेदशास्त्रं सनातनम्।
तस्मादेतत्परं मन्ये यज्जन्तोरस्य साधनम्।। (मनु० १२।९९)

स्वयं वेद कहते हैं कि वेदवाणी सबके लिए है। यजुर्वेद कहता है कि वेद की कल्याणी वाणी सब जनों के लिए है, चाहे वह ब्राह्मण, क्षत्रिय, शूद्र, आर्य, अर्य अथवा चारण कोई भी क्यों न हो ? किसी भी वर्ग का क्यों न हो–

यथेमां वाचं कल्याणीमवदानि जनेभ्य:।
ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय।। (मनु० २६।२)

वेद सबके लिए कल्याण की बात करते हैं। जिस अथर्ववेद के बारे में यह कहकर मिथ्या प्रचार किया गया कि यह जादू टोने का वेद है, इसमें मारण मोहन, उच्चाटन के मत्र है, वह अथर्ववेद सबकी कल्याण कामना करते हुए कहता है कि माता-पिता का कल्याण हो, गायो के लिए कल्याण हो। ससार भर के पुरुषों के लिए कल्याण हो। समस्त विश्व हमारे लिए सुभूत और विज्ञात है।

स्वस्ति मात्र उत पित्रे नो अस्तु स्वस्ति गोभ्यो जगते पुरुषेभ्य:।
विश्वं सुभूतं सुविदत्रं नो अस्तु ज्योगेव दृशेम सूर्यम्।।
(अथर्व० १।३१।४)

अथर्ववेद आगे कहता है कि यह पृथ्वी, द्युलोक हमारे लिए कल्याणकारक हों। हम दैवी/ईश्वरीय नाव पर सवार होकर कल्याण के लिए आगे बढे–

सुत्रामाणं पृथिवीं द्यामनेहस सुशर्माणमदितिं सुप्रणीतिम्।
दैवीं नावं स्वरित्रामनागसोऽस्रवन्तीमारुहेमा स्वस्तये।। (अथर्व० ७।६।३)

यही नहीं वेद कहता है कि धरती हमारी माता है और हम उसके पुत्र हैं–

माता भूमि: पुत्रोऽहं पृथिव्या:।
पर्जन्य. पिता स उ न: पिपर्तु।। (अथर्व० १२।१।१२)

इससे भी आगे बढ़कर वेद कहता है कि यह धरती सब मानवों के लिए है। अथर्ववेद कहता है कि यह पृथिवी भिन्न-भिन्न भाषाओं को बोलनेवाले लोगों को धारण करती है। यह भिन्न-भिन्न धर्मों/मतों को मानने वाले लोगों को शरण देती है। यह धरती धेनु/गाय की तरह हमारे लिए कल्याण की हजारों अजस्र/अबाध धारायें बहाये–

जनं बिभ्रति बहुधा विवाचसं नानाधर्माणं पृथिवी यथौकसम्।
सहस्रं धारा द्रविणस्य मे दुहां ध्रुवेव धेनुरनपस्फुरन्ती।।
(अथर्व० १२।१।४०)

वेदों के इसी विश्वव्यापी, समस्त मानव कल्याणवादी दृष्टिकोण को स्वीकार करते हुए बर्तानिया विश्वकोश (Encyclopaedia Britannica खड १५ पृ० ६१७) ने लिखा है कि वेदों के इसी दृष्टिकोण के कारण यूरोपीय एवं अमेरिकी विद्वानों ने इनके अध्ययन में गहरी रुचि ली–

"Interest in these ancient texts were intenst among Europeans & Americans in that earlier reports had suggested that Vedas represented a word outlook from the dawn of humanity."

वैसे तो समस्त वेद मानव समाज के कल्याण के लिए है फिर भी कुछ मत्र द्रष्टव्य हैं। इस बारे में ऋग्वेद के निम्न मंत्र जगत्प्रसिद्ध हो गए हैं। ऋग्वेद कहता है कि हे मनुष्य लोगो ! तुम परस्पर मिलकर चलो। परस्पर मिलकर सवाद करो। तुम्हारे मन एक ज्ञानवाले हों। वेद आगे कहता है कि (तुम) सब मनुष्यों के विचार समान हों। तुम्हारे हृदय एक समान हों। तुम्हारे मन एक समान हों। तुम्हारा चिन्तन एक हो। तीसरा मंत्र कहता है कि हे मनुष्यो ! (तुम) सबका संकल्प एक जैसा हो। तुम्हारे हृदय एक जैसे हों। सबका मन एक जैसा हो अर्थात् सबके हृदय और मन में उठनेवाले भाव एक समान हों जिससे मनुष्यों का संगठन अच्छा हो। मानवजाति अच्छी तरह रह सके–

संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथापूर्वे संजानाना उपासते।।
समानो मंत्र: समिति: समानी समान मन: सह चित्तमेषाम्।
समानं मन्त्रमभिमन्त्रये व: समानेन वो हविषा जुहोमि।।
समानी व आकूति: समाना हृदयानि व:।
समानमस्तु वो मनो यथा.व: सुसहासति।। (ऋग्वेद १०।१९१।२-४)

अर्थात् कहने का भाव यह है कि सब मनुष्यों के सकल्प, प्रयत्न एवं व्यवहार समान हों। सब मनुष्यों के हृदय समभावनावाले हर्षशोकरहित रहें। सब मानवो का मन भी एक प्रकार के सद्भाववाला रहे। सब मनुष्यों के हृदय और मन इस प्रकार हों कि सबमें सुभाव, सहभाव सम्पादित हो।

यही नहीं अथर्ववेद कहता है कि हे मनुष्यो ! तुम सबके लिए पेयजल/पीने के जल की व्यवस्था समान हो। तुम सब मानवो के लिए अन्न का विभाजन भी समान हो। तुम सब मानव एक ही जुए की भाति परस्पर जुडकर रहो जैसे रथ की नाभि में स्थित आरे परस्पर जुडकर रहते हैं। ऐसे ही तुम सब मानव परस्पर मिलकर एक दूसरे से जुडकर रहो–

समानी प्रपा सह वोऽन्नभाग. समाने योक्त्रे सह वो युनज्मि।
समञ्चोऽग्निं सपर्यतारा नाभिमिवाभित ।। (अथर्व० ३।३०।)

वेद के इन मन्त्रो मे विचारो की कितनी ऊंची उडान है। वेद समस्त मानव जाति के कल्याण की बात करते हैं। समस्त मानव समाज में परस्पर मेल, सहयोग, संवाद की बात करते हैं। सब मनुष्यों के मन की एकता, हृदय की समानता, विचारों की समानता की बात करते हैं। सब मनुष्यों के हृदय, मन, विचार और संकल्प एक हो जाये तो मानवजाति का कल्याण न हो जाए ? किन्तु आज मानव समाज में परस्पर एकता, हृदय और मन की समानता तथा विचारो की एकता कहां है ? और इसी कारण विश्व मे अशांति, घृणा, वैर विरोध, हिंसा एव युद्ध का वातावरण है। आज मानव समाज परस्पर वैर विरोध, घृणा एव हिंसा की अग्नि में जल रहा है। समूचा विश्व[१] इसी विद्वेष एव घृणाजन्य आतकवाद से पीडित है। एशिया, अफ्रीका, यूरोप और अमेरिका[२] सभी जगह आतकवाद का साया मडरा रहा है।

भारत एक लम्बे समय से आतकवाद की त्रासदी से पीडित है। कई हजार लोग इस कारण मारे जा चुके हैं। अफगानिस्तान पिछले दो दशकों से इस आतकवाद से ग्रस्त है। उधर श्रीलका और नेपाल अन्य[३] किस्म के आतकवाद से पीडित हैं। चीन और रूस भी इससे नहीं बच सके। चीन का सिक्याग प्रदेश और रूस का चेचन्या इस बीमारी से पीडित है। अफ्रीका मे अमरीकी दूतावासो पर आतंकवादी हमले हुए। सैंकडो बेकसूर लोग मारे गए। ११ सितम्बर २००१ को अमरीका के न्यूयार्क मे आतकवादी आक्रमण हुआ और कई हजार निरपराध लोग मारे गए। तेरह दिसम्बर २००१ को भरत की ससद्[४] पर हमला हुआ। इस प्रकार पूरा विश्व या अन्तर्राष्ट्रीय मानव समुदाय आतकवाद की लपेट में है। इसी कारण आज अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आतकवाद के खिलाफ[५] युद्ध की घोषणाए हो रही हैं। कारण इसके पीछे विचारो की असमानता है। विश्व के विभिन्न मानव समुदायों मे हृदय और मन की असमानता है। उनके सकल्प उनके भाव अलग-अलग हैं। इस्लामी कट्टरपंथी[६] विश्व के अन्य धार्मिक सगठनो को पसन्द नहीं करते, इसलिए उन्होने विश्वव्यापी जेहाद[७] छेडा हुआ है।

इसीलिए वेद ने कहा था सब मनुष्य परस्पर मिलकर चले। परस्पर मिलकर सवाद करे। सबके विचार समान हों। सब मनुष्यों के चिन्तन सोच में समानता हो। इसके साथ सबका हृदय एक समान हो, सबका मन एक समान हो। जब सबके हृदय और मन एक समान होगे तभी मनुष्यों, मानव समुदाय का विश्वस्तर पर संगठन अच्छा होगा। सयुक्त राष्ट्रसंघ[८] यह कार्य कर सकता है। जी-८ तथा यूरोपीय सघ यह काम कर सकते हैं।

यही नहीं वेद के मन्त्रो मे यह भी कहा गया है कि सब मनुष्यो के लिए अन्न जल की व्यवस्था समान हो–

समानी प्रपा सह वोऽन्नभाग (अथर्व० ३।३०।)

किन्तु इस दृष्टि से विश्व मे भारी असमानता है। संयुक्त राष्ट्र विकास[९] कार्यक्रम (UNDP-1999) की एक रिपोर्ट के अनुसार १९८० के दशक मे विश्व मे गरीबो की सख्या मे कोई कमी नहीं आई और १९९० के दशक मे भी अर्थात् सन् २००० तक भी विश्व में गरीबो की सख्या मे कोई कमी नहीं आई। आज विश्व मे दो अरब लोग सबसे गरीब हैं। एक ओर सूडान तथा सोमालिया जैसे देशो मे कई लाख लोग भूख एव गरीबी से मर चुके हैं तो दूसरी ओर ससार के कुछ लोग आर्थिक साधनों का दुरुपयोग कर रहे हैं। राष्ट्रसघ (UNDP) की रिपोर्ट[१०] के अनुसार विश्व के ८०% (अस्सी प्रतिशत) उत्पादन साधनो पर बीस प्रतिशत अमीरो का कब्जा है। यही नहीं सयुक्त राष्ट्र सघ की उक्त रिपोर्ट के अनुसार ससार के सबसे निर्धन ४८ देशों के मूल विकास उत्पादन (GDP) से भी अधिक पूजी ससार के तीन सर्वाधिक धनी व्यक्तियो के पास है। इतनी भयानक, सामाजिक/आर्थिक विषमता ! क्योंकि इन देशो एवं उन व्यक्तियों के पास दूसरो के लिए ससार के अन्य लोगो के लिए उनके हित एव कल्याण के लिए सहृदयता, सौमनस्य, सौहार्द, मन की, हृदय की समानता नहीं है। उनमे मानव समाज हेतु परस्पर मिलकर, जुडकर, एक होकर चलने की भावना नहीं है। उल्टा इसके विपरीत, सयुक्त राष्ट्रसघ मानव विकास रिपोर्ट[११] (UNHDR-1998) के अनुसार यूरोप के देश प्रतिवर्ष ११५ बिलियन (एक सौ पन्द्रह बिलियन) डालर शराब तथा सिगरेट पर ही खर्च कर डालते हैं किन्तु यही धन यदि मानव कल्याण कार्यो पर खर्च किया जाए तो विश्व के लाखो अनपढ बच्चो को पढाया जा सकता है तथा हजारो गर्भवती महिलाओ को स्वास्थ्य सेवाए प्रदान की जा सकती हैं। किन्तु सवाल तो मन की एकता, हृदय की समानता का है ? परस्पर सवाद एव सहयोग तथा एकता का है ?

स्वय भारत मे भी अन्न जल का विभाजन समान नहीं है। सबको पीने का स्वच्छ जल उपलब्ध नहीं है। सबको भरपेट भोजन उपलब्ध नहीं है। पंचवर्षीय योजनाओं का लाभ अब तक नहीं पहुच पाया। देश की एक तिहाई आबादी भूख और गरीबी का जीवन बिता रही है जबकि देश के खाद्यान्न भडार[१२] केन्द्रीय कृषिमंत्री के अनुसार अन्न से भरे पडे हैं। उन भंडारों से आवंटित अन्न (खाद्यान्न) के भाग को राज्यों द्वारा उठाने की उचित व्यवस्था नहीं की जा रही। देश के राजनेता, सरकारें तथा शासन तंत्र इसके लिए जिम्मेदार है। उन्होंने एक होकर, एक मन से, समान विचार से इस ओर ध्यान नहीं दिया। उनके मन में, हृदय मे भिन्नता थी, उनके चिन्तन में एकरूपता, समानता नहीं रही। सबके अपने-अपने स्वार्थ तथा हित प्रमुख रहे। जैसे आज आतकवाद के विरुद्ध पूरे देश में, देश की राजनीतिक पार्टियों में एकमत-समान विचार दिखाई देते हैं। इसी प्रकार की विचारो की समानरूपता, समान संकल्प राष्ट्र के १०० करोड़ मानवो के हितों के लिए आवश्यक है।

विश्व में आज जितना युद्ध[१३] और अस्त्र शस्त्रों के लिए तथा परमाणु हथियारों पर[१४] खर्च हो रहा है उसका आधा या एक तिहाई भाग भी मानव कल्याण पर खर्च किया जाए तो संसार से करोडो लोगो की गरीबी, भूखमरी और निरक्षरता दूर हो सकती है। किन्तु प्रश्न तो मन की एकता, हृदय की समानता और चिन्तन की समानता का है। जब तक मनुष्यों के हृदय और मन नहीं मिलेंगे, मानव समुदायों में विचारों, सकल्पों की एकरूपता, समानता नहीं आएगी तब तक मानव समाज की राजनीतिक, धार्मिक सामाजिक एव आर्थिक समस्यायें[१५] हल नहीं हो सकतीं। इसलिए वेद के उपर्युक्त मन्त्रों पर[१६] वेद की उस विचारधारा पर बार-बार विचार/चिन्तन करने की आवश्यकता है। मानवमात्र का कल्याण-मानव समाज में सब प्रकार की समानता, वैचारिक समानता, राजनीतिक एव आर्थिक स्तर पर समानता तथा सामाजिक स्तर पर समानता, समस्त मानव समाज का सब प्रकार से कल्याण, यही वेद का मानवतावाद है और यही वेदों का मानवतावादी संदेश है। आज स्थान और देश की दीवारों से रहित विश्व की बात की जा रही है[१७]। सबके लिए विश्व को एक घर के रूप में बनाने की बात की जा रही है। यह अच्छी बात है। २१वीं सदी में नए भविष्य की कामना है। स्वामी विवेकानन्द और महात्मा गाधी[१८] के सन्दर्भ मे भी मानवतावाद और मानवजाति के कल्याण की बात की जा रही है। आज विश्व के विभिन्न देशो में मानवाधिकारो की चर्चा जोरो पर है। उनको लागू करने की आवश्यकता है[१९]। यह शुभ सकेत है किन्तु वेद ने हजारो साल पहले इस मानवतावाद का, समस्त मानव समाज की एकता और समानता का सन्देश दिया था।

सन्दर्भ (References)

१ 'अमर उजाला' (चडीगढ, ४।१।२००२) पृ० १–आतकवाद मुख्य मुद्दा।
२ 'राष्ट्रीय सहारा' (नई दिल्ली, ४।१।२००२) पृ० ८–बदलता विश्वपरिदृश्य और भारत पाक सम्बन्ध।
३ 'हिन्दुस्तान' (नई दिल्ली ४।१।२००२) पृ०-६ काठमाडू देश की चुनौतिया (हरिकिशोर) दो विश्वयुद्धो और हिटलर-स्टालिन के आतकवाद से पीडित यूरोप का उल्लेख।
४. The Times of India (New Delhi, 2.1.2002) P. 10 Dec. 13 & After
५ क) 'राष्ट्रीय सहारा' (नई दिल्ली, ३।१।२००२) पृ०-८ 'ठीक है यह सैनिक उन्माद'
ख) दैनिक भास्कर' (चडीगढ, ४।१।२००२) पृ०-४ 'युद्ध किए बिना विजय की आकाक्षा'
६ The Tribune (Chandigarh, 4.1 2002) P. 8. 'Intervention, religion & terrorism by Hari Jai Singh
७ 'दैनिक जागरण' (नई दिल्ली, २८।१०।२००१) साप्ताहिक परिशिष्ट– 'समस्याओ का संघर्ष'।
८ The Hindu (5.1 02) P. 10 Editoril-'Highlighting India's case'
९ See–United Nations development Programm-Report-1999.
१० See–The Above Report (UNDP 1999)
११ सयुक्त राष्ट्र मानव विकास रिपोर्ट (UNHDR-1998)
१२ 'हिन्दुस्तान' (नई दिल्ली २३।१०।२००१) पृ०-६ 'अनाज की विपुलता और भूख से मरते लोग' (दिग्विजयसिंह)
१३ The Hindu (5 1.2002) P 10 The Cost of War (by C.R. Reddy)
१४ 'दैनिक भास्कर' (चडीगढ, ६।१।२००२) पृ०-५ 'ब्रह्मास्त्र की टंकार से थरथराती सभ्यता' (आलोक मेहता)
१५ 'दैनिक भास्कर' (चंडीगढ़, १५।१।२००२) पृ०-६ पर डॉ० विष्णुदत्त नागर द्वारा 'डंडे से पिटी गिल्ली की व्यथा-कथा'।
१६ 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' (महर्षि दयानन्द) सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२। सस्करण २००० ई०।
१७ The Times of India (New Delhi, 11.1.2002) P. 10 'World without walls' (Struggle for this century's soal) by William Jefferson Clinton.
१८ The Hindustan Times (New Delhi, 12.1.2002) P. 10 'Prophets of Modernity' by Jagmohan.
१९ 'दैनिक भास्कर' (पानीपत, १६।१।२००२) पृ०-६–द्र० लेख, 'मानवाधिकार लोकतांत्रिक देशों में ही सुरक्षित रहेंगे (जोगीन्द्रसिंह)।

... मृत्यु का रहस्य

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की मौत का रहस्य दिन-ब-दिन गहराता जारहा है। यह निर्विवाद तथ्य है कि नेताजी की लोकप्रियता तक आजादी के पहले का या बाद का कोई किसी पार्टी का नेता पहुंच नहीं पाया था और यदि वे जीवित होते तो भारत का आजादी के बाद का परिदृश्य कुछ और होता।

नेताजी सुभाष की लोकप्रियता का आलम यह है कि महात्मा गाधी पर असीम श्रद्धा रखनेवाले लोग भी सुभाष को अपना हीरो मानते हैं। ऐसा केवल भारतीयो मे ही नहीं, विश्वसमुदाय मे भी है। उदाहरण के लिए जर्मन नोबेल लारियट गुटर ग्रास जिन्होने ८० के दशक मे कहा था कि वे महात्मा गाधी से बहुत प्रभावित हैं। वे कहते हैं कि गाधी ने हमे बडी प्रेरणा के जरिये जिस तरह अहिसक विरोध और सिविल नाफरमानी ने हमे बहुत कुछ सिखाया है और इस कारण मैं जर्मन युवको को अनिवार्य सैन्य प्रशिक्षण न लेने की सलाह देता रहा हू। नेताजी सुभाष को हिटलर और मुसोलिनी के सपर्क करने को नापसद करते हुए उनके चरित्र के अभिभूत थे और बहुत दिनो तक नेताजी पर वह एक नाटक लिखने को और एक फिल्म बनाने को सोचते रहे।

अभी तीन वर्ष पहले नेताजी की जन्म शताब्दी मनाई गई थी, उस समय तो उनकी मौत के रहस्य पर से परदा उठना था पर ऐसा नहीं हुआ। नेताजी के प्रशसको और उनसे भावनात्मक रूप से जुडे लोगो को सतुष्ट करने के लिए सरकार की ओर से यह केवल रस्म अदायगी रही।

हमारी सरकारे तभी कुछ करती है जब नेताजी के प्रशसक उग्र रूप से कुछ आग्रह करते हैं। नेताजी की मौत के रहस्य के बारे मे सिर्फ कमीशन बिठाना और इन कमीशनो मे मीठा असहयोग करने का रवैया अपना लिया है सरकार ने। नेताजी की १८ अगस्त, १९४५ को वायुयान दुर्घटना मे मृत्यु नही हुई थी, इस पर अनेक शोधकर्ताओ ने कुछ अस्पष्ट सकेत पहले भी किये हैं। मध्यप्रदेश मे एक प्रतिष्ठित शोधकर्मी डा रमा पुरी ने नेताजी के जन्म शताब्दी अवसर पर अपनी पुस्तक 'कालजयी कर्मयोगी नेताजी सुभाष' मे स्पष्ट किया था कि वे उस दुर्घटना मे नहीं मरे। एम के मुखर्जी कमीशन इस रहस्य का पता लगाने के लिए अभी भी कार्यरत हैं परन्तु परदा कब उठ सकेगा यह कोई नहीं जानता।

एक शोधकर्ता पूरवी राय ने २३-१२-२००२ को मुखर्जी कमीशन के सामने रहस्योद्घाटन किया कि अपने शोधकार्य के दौरान अकस्मात् विदेश मत्रालय की एक फाइल उसके हाथ लग गई जिसमे स्पष्ट है कि नेताजी उस वायुयान दुर्घटना मे नहीं मरे, परतु उसे उक्त फाइल को और सबधित कागजातो को विस्तार से देखने नहीं दिया गया। इससे कुछ हडकम्प मचा, कुछ जिज्ञासा बढी, शायद कमीशन के काम मे कुछ तेजी भी आई। स्वभाविक प्रश्न उठते हैं कि यदि उस विमान दुर्घटना में नेताजी नहीं मरे, तो हमारी अब तक की सरकारों ने नेताजी का पता लगाने मे, उन्हे सम्मानपूर्वक भारत लाने मे और उनके पुनर्वास करने मे दिलचस्पी क्यो नहीं ली ? क्या यह उनका राष्ट्रीय कर्त्तव्य नहीं था ? क्या इस महान् देशभक्त के प्रति राजनेताओ और प्रशासन का दुराव और दुराग्रह क्षम्य है ? इसका जिम्मेदार कौन ?

हाल ही मे एक प्रमुख दैनिक ने–दी नेताजी, एनिग्मा १,२,३ के रूप मे २४,२५ और २६ अप्रैल को तीन अनुजधर द्वारा उपलब्ध जानकारिया छापी हैं, जिसके अनुसार सभावना व्यक्त की है कि अज्ञात कारणों से नेताजी को भारत फौजाबाद मे भगवान जी के नाम से किराये के छोटे से कमरे मे, अज्ञातवास मृत्युपर्यन्त करना पडा और उनकी मृत्यु ८८ वर्ष की उम्र मे १९८५ मे हुई। सरकार को इस सभावना की खबर थी–परन्तु उस समय भी सरकार ने कुछ नहीं किया, उल्टी यह कोशिश रही कि रहस्य से परदा न उठे। शायद यही कारण था कि इलाहाबाद हाईकोर्ट के आदेश से उनके लावारिस सामान को फैजाबाद सरकारी खजाने मे सील करके रख दिया गया। इस सामान मे उनके २ टूटे दात भी हैं।

२००१ मे मुखर्जी कमीशन के आग्रह पर ये सीले तोडी गयीं और अब भगवान् जी की लिखावट और दातो को डी एन ए टेस्ट के लिए उन्हे कोलकाता भेजा जारहा है। समाचार-पत्र के लिखावट विशेषज्ञ श्रीलाल के अनुसार भगवान् जी की लिखावट, नेताजी सुभाष की लिखावट से एकदम मिलती है और ये लिखवटे १९४५ के बाद की यानी उनकी तथाकथित मृत्यु के बाद की हैं। भगवान् जी की मृत्यु के बाद उनके निवास से मिली सामग्रियो व फोटो आदि से भी नेता जी के परिवार से सबधो की पुष्टि होती है। इसी श्रृखला की दूसरी रपट से ज्ञात होता है कि भगवान जी की १९८५ मे मृत्यु उपरान्त १८-९-८५ को फैजाबाद के गुप्तार घाह मे अत्येष्टि की गई थी, जिसमे केवल १३ लोग थे और किसी ने की टिप्पणी–यदि लोगो को मालूम हो जाता तो यह सख्या १३ लाख होती।

इन सभी बातो से लगता है नेताजी की मौत के रहस्य से परदा उठने ही वाला है। परन्तु इस सिलसिले मे अत्यन्त खेदजनक और गुस्सा दिलाने वाली बात यह है कि भारत के सचिव श्री कमल पाडे सरकार के पास सीलबद, गुप्त दस्तावेज एक्स-फाइलों मे झाकने से मुखर्जी कमीशन को मना कर रहे हैं।

उनका कहना है कि उन्होने स्वय उन दस्तावेजो की जाच-परख की और उन्हे उजागर करने से नेताजी के प्रति आम जनता के सम्मान की भावना को ठेस पहुचेगी और मित्र देशो से भारत के राजनयिक सबधो के बिगडने का खतरा पैदा हो जायेगा। यह तर्क बेमानी है और भारत की करोडो-करोड जनसाधारण के सूचना के अधिकार का अपहरण है। बुद्धिजीवी अपनी आवाज बुलद करते रहे हैं कि नेताजी की मृत्यु के रहस्य और उनके स्वातत्र्योत्तर जीवन की गुमनामी सारी जानकारी अविलब उजागर की जानी चाहिए तथा मुखर्जी कमीशन से पूरा सहयोग किया जाना चाहिए।

–मनुज फीचर्स, गोस्वामी गजाननपुरी
(साभार दैनिक ट्रिब्यून, १३-७-२००२)

शोक समाचार

आर्यसमाज सत्य सदन पुनहाना जिला गुडगाव के उपप्रधान श्री ओमप्रकाश जी सुपुत्र स्व० लाला रामजीलाल आर्य (पूर्व प्रधान) के अचानक दिल की गति रुक जाने के कारण मृत्यु हो गई है। हम सभी आर्यजन परमपिता परमात्मा से उनकी आत्मा के लिए शान्ति व शोकाकुल परिवार व मित्र जनो को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करने के लिए प्रार्थना करते हैं। अभी इनकी आयु केवल ५२ वर्ष की थी इस समय यह हमरी समाज को ऐसी क्षति हुई है जिसकी पूर्ति होना बहुत मुश्किल है।

–मा० सुगनचन्द आर्य, प्रधान आर्यसमाज सत्य सदन पुनहाना जिला गुडगाव

दयानन्दमठ वैदिक सत्संग समिति का पैंतीसवां सत्संग

दयानन्दमठ, रोहतक। आर्यसमाज की प्रमुख सस्था दयानन्दमठ मे पिछले तीन वर्षो से निरन्तर वैदिक सत्सग समारोह मनाया जा रहा है। इस सत्सग के सयोजक एव व्यवस्थापक श्री सन्तराम आर्य ने बताया कि इस बार दयानन्दमठ सत्सग समिति की ओर से ४ अगस्त सन् २००२ रविवार को पैंतीसवा सत्सग मनाया जायेगा। इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप मे महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय के सस्कृत विभाग के प्रमुख **डा० सुरेन्द्रकुमार** जी पहुच रहे हैं। वे अभी-अभी विदेशो मे प्रचार कार्य पूरा करके लौटे हैं। उनका विषय होगा–**"आत्मा का स्वरूप"**।

इस सत्सग मे ऋषिलगर की व्यवस्था सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरयाणा इकाई के पूर्व महामत्री श्री श्रीकृष्ण शास्त्री, जो आजकल प्राध्यापक हैं। भम्भेवा निवासी हैं तथा श्री कुलदीप शास्त्री व सन्तराम आर्य तीनो मिलकर कर रहे हैं। सभी ऋषिभक्त एव आर्य युवको व आर्य बहिनो एव भाइयो से निवेदन है कि ज्यादा से ज्यादा सख्या मे पहुचकर धर्मलाभ उठाये।

निवेदक–**रवीन्द्र आर्य,** सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरयाणा, दयानन्दमठ रोहतक

सूचना

दयानन्दमठ, रोहतक। आर्यसमाज का युवा सगठन सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के पदाधिकारियो प्रमुख कार्यकर्त्ताओ एव सभी व्यायाम शिक्षको की एक आवश्यक बैठक २८ जुलाई, सन् २००२ रविवार को प्रात १०-०० बजे परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगवीर सिह एडवोकेट की अध्यक्षता मे होगी। बैठक के सयोजन की जिम्मेवारी श्री सन्तराम आर्य को दी गई है। सभी युवक साथी इस बैठक मे उपस्थित हो। परिषद् की भावी योजना एव राष्ट्रीय शिविर लगाने सम्बन्धी विषयो पर चर्चा होगी।

आर्य युवती योग प्रशिक्षण एवं चरित्र निर्माण शिविर सम्पन्न

योगमुद्रा मे शिविरार्थी बालिकाए।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्त्वावधान मे जयरामदास आर्य गर्ल्ज हाईस्कूल अम्बाला शहर मे गत मास आर्य युवती योग प्रशिक्षण एव चरित्र निर्माण शिविर सम्पन्न हुआ। इसमे शहर के सुप्रसिद्ध नेत्र विशेषज्ञ डा० महेश मनोचा जी मुख्य अतिथि के रूप मे पधारे और केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अनिल आर्य जी (देहली) ने इसकी अध्यक्षता की इस शिविर मे लगभग पचास बालिकाओ ने भाग लिया सात दिन मे जो कुछ भी उन्होने सीखा था उन्होने उसका उत्कृष्ट प्रदर्शन करके सभी दर्शको का मन मोह लिया।

योगप्रशिक्षण व व्यायाम आदि के साथ-साथ बालिकाओ ने मन्त्रोच्चारण, निबन्ध, भजन तथा धर्मशिक्षा की प्रतियोगिताओ मे भी बढचढकर भाग लिया। शिविर की मुख्य वक्ता प्राची आर्य ने बालिकाओ को अपनी शक्ति पहचानने का आह्वान किया और देश, धर्म के लिए हर प्रकार का बलिदान देने के लिए प्रेरित किया। ब्रह्मचारी रामप्रकाश जी ने कहा कि वेद का अनुसरण करने से जीवन की सारी समस्याए आसानी से सुलझाई जा सकती हैं। क्योकि मानव जीवन की व्यक्तिगत एव सामाजिक समस्याओ का समाधान वेदमन्त्रो मे छिपा हुआ है।

शिविराध्यक्ष श्री सुरेन्द्रकुमार जी ने कहा कि आज के युग मे केवल किताबी ज्ञान से काम नहीं चलने वाला है। बच्चो को शारीरिक तथा आध्यात्मिक प्रशिक्षण की अत्यन्त आवश्यकता है तभी उनमे चरित्र व देशभक्ति की भावना पनप सकती है।

परिषद् के अध्यक्ष श्री अनिल आर्य जी ने देश मे तेज गति से फैल रही अनैतिकता पर चिन्ता जताते हुए कहा कि परिषद् इस प्रकार के शिविरो को जगह-जगह पर लगाकर युवाओ को देशभक्त ईश्वरभक्त व चरित्रवान् बनाने के लिए कृतसकल्प है।

—धर्मवीर आर्य, मन्त्री आर्यसमाज रेलवे रोड, अम्बाला शहर

समस्त वेदप्रेमियों को खुशखबरी

समस्त वेदप्रेमी जनता को सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि आर्यसमाज जामनगर द्वारा एक वेबसाईट तैयार की जा रही है, जिसके द्वारा चार वेद, सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका वेदाग तथा आर्ष उपनिषदो का सम्पूर्ण विश्व मे प्रचार करने की योजना है। इस महान् कार्य के लिए 'आर्यसमाज जामनगर' सभी धर्मप्रेमी सज्जनो से तन, मन और धन से सहयोग की आशा करता है। क्योकि इस कार्य हेतु पर्याप्त धन की आवश्यकता होगी।

वेबसाईट - www aryasamajjamnagar org

ई-मेल - info@ aryasamajjamnagar org

—सतपाल आर्य, मन्त्री आर्यसमाज मदिर, जामनगर (गुजरात)

आर्यसमाज के उत्सवों की सूची

१	भगत फूलसिह जयन्ती गाव माहरा जिला सोनीपत	१० अगस्त, २००२
२	आर्यसमाज ढाकला जिला झज्जर	१५ से १७ अगस्त २००२
३	आर्यसमाज जुड्डी जिला रेवाडी	१७ से १८ अगस्त २००२

—सुखदेव शास्त्री, सहायक वेदप्रचाराधिष्ठाता

महात्मा भगतफूलसिंह बलिदान दिवस १० अगस्त को मनाया जायेगा

आर्यसमाज के महान् समाज सुधारक महात्मा भगतफूलसिह जी का बलिदान दिवस उनके जन्मस्थान गाव माहरा जिला सोनीपत मे एक विशाल सम्मेलन के रूप मे आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के निर्देशन मे मनाया जा रहा है। आज उसकी तैयारी के लिये सभा के अधिकारी आचार्य यशपाल आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के उपमन्त्री श्री सुरेन्द्रसिह शास्त्री व श्री केदारसिह आर्य, अन्तरग सदस्य श्री बलवीरसिह शास्त्री, श्री धर्मपाल शास्त्री आदि गाव माहरा पहुचे और गाव के प्रमुख लोगो से विचार विमर्श किया। पूरे गाव मे बलिदान दिवस की सूचना से उत्साह मिला तथा लोगो ने सभा अधिकारियो को सूचित किया कि २८ जुलाई को १० बजे पूरे गाव को चौपाल मे एकत्रित करके बलिदान दिवस को सफल बनाने के लिये एक समिति का गठन कर देगे और गाव इस अवसर पर पूरा सहयोग करेगा। सम्मेलन के पूरे प्रबन्ध की व्यवस्था गाव की तरफ से होगी, उसके बाद सभा के अधिकारी कन्या गुरुकुल खानपुर कला तथा गुरुकुल भैंसवाल कला की सस्थाओ की तदर्थ समिति के अध्यक्ष श्री प्रि० दलीपसिह जी दहिया से मिले और उन्होने बहुत प्रसन्नता प्रकट की और आश्वासन दिया कि गाव माहरा मे महात्मा भगत फूलसिह जी के जन्मस्थान पर पहली बार बलिदान दिवस मनाया जा रहा है, इसके लिये प्रबन्धक समिति का पूरा सहयोग प्राप्त होगा।

—यशपाल आचार्य, मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

स्वर्गीय स्वामी नित्यानन्द, कुंवर जौहरीसिंह की तर्जो की गायिका

श्रीमती सुदेशार्या शास्त्री चौ० जौहरीसिह आर्य प्रचारक की दोहती आजकल उनके भजनो की तर्जो पर गीत गाती हैं। इनकी शिक्षा कन्या गुरुकुल खानपुर एव कन्या गुरुकुल नरेला मे हुई। एम ए व बी एड महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से उत्तीर्ण की। इनकी एक कैसेट बन चुकी है और शीघ्र ही 'हरियाणे का हीरा भक्त फूलसिह' पर कैसेट बनाने का विचार है। सभी आर्यजन उनकी सेवाओ का लाभ उठा सकते है। इसके लिए निम्न पते पर सम्पर्क करे—

श्रीमती सुदेशार्या शास्त्री, आर्य भजनोपदेशिका
ग्राम व पोस्ट चिडौद, जिला हिसार
फोन न० ०१६६२-६०६७१

वेदप्रचार

महाशय जयपालसिह आर्य व सत्यपाल आर्य भजनोपदेशक द्वारा जुलाई मास मे निम्नलिखित स्थानो पर वेदप्रचार कार्यक्रम किया गया—

१ आर्यसमाज जुलाना शादीपुर जिला जीन्द दिनाक ११ से १२ जुलाई २००२ तक वेदप्रचार किया। सभा को ५५०/- रु० दान दिया गया। इस कार्यक्रम मे श्री वीरेन्द्र आर्य प्रधान खेल युवा सगठन ने काफी सहयोग दिया।

२ दिनाक १३ जुलाई २००२ को आर्यसमाज बालन्द जिला रोहतक मे श्री अजयकुमार आर्य द्वारा वेदप्रचार कराया गया। इस अवसर पर सभा को ५५०/- रु० दान दिया गया।

३ दिनाक १८ जुलाई २००२ को आर्यसमाज कानोन्दा जिला झज्जर मे वेदप्रचार किया गया। सभा को ४७५/- रु० दान दिया गया।

४ दिनाक १९ जुलाई २००२ को श्री बलवीरसिह आर्य झज्जर द्वारा श्री इन्द्राज आर्य व पूर्णसिह प्रधान ने अपने मकान के गृहप्रवेश के उपलक्ष्य मे वेदप्रचार करवाया।सभा को ५६०/- रु० दान दिया गया।

आर्यसमाज नई कालोनी गुड़गांव का चुनाव

प्रधान-श्री कुन्दनलाल अदलखा, उपप्रधान-श्री एस०सी० आर्य, श्री ज्योतिप्रकाश आर्य, मत्री-श्री मदनमोहन मगला, कोषाध्यक्ष-श्री अजयकुमार अदलखा, प्रचारमत्री-श्री राजकुमार आनन्द।

आर्यसमाज सान्ताक्रुज (प०) मुम्बई का निर्वाचन

प्रधान-डा० सोमदेव शास्त्री, प्रथम उपप्रधान-श्री विश्वभूषण आर्य, द्वितीय उपप्रधान-श्री चन्द्रगुप्त आर्य, महामन्त्री-श्री सगीत आर्य, प्रथम मत्री-श्री मदन रहेजा, द्वितीय मत्री-श्री दीपक पटेल, कोषाध्यक्ष-श्री पुरुषोत्तम अग्रवाल।

विश्व मत भूलो महिला का सर्वांगीण विकास चाहने वाले 'प्रथमपुरुष' को

❑ आचार्य आर्यनरेश वैदिकगवेषक, उद्‌गीथ साधना स्थली, (हिमाचल) डोहर (राजगढ) पिन—१२३१०१

विश्व के निर्माणकर्त्ता ईश्वर ने पक्षपातरहित होकर पुरुषो के समान महिलाओ को भी सब अधिकार दिए हैं। उसने पुरुषो के समान नारियो को भी पूर्ण अग-प्रत्यग दिए हैं। बौद्धिक या शारीरिक दृष्टि से नारी कहीं भी पुरुष से कम नहीं रहती, यदि बाल्यकाल से ही उसे भी पुरुषो के समान पूर्ण साधन मिले, तो वह भी ससार के प्रत्येक क्षेत्र मे पुरुषो के समान ही रहे।

क्या कोई बुद्धिमान् एव विज्ञानवान् पिता ऐसा चाहेगा कि उसका पुत्र तो विद्या, स्वस्थ व सामाजिक कार्यो मे दक्ष हो, पर पुत्री वैसी न हो ? कदापि नही, तो फिर सृष्टि का निर्माता परमपिता परमात्मा यह कैसे चाह सकता है ? जो कि आम मनुष्य की अपेक्षा करोडो गुणा अधिक बुद्धि, विज्ञान व विचारशक्ति रखता है। वस्तुत सत्य तो यह है कि ससार के प्रत्येक धार्मिक व सामाजिक क्षेत्र मे महिलाओ को पुरुषो से अधिक योग्य बनने के अधिक अवसर मिलने चाहिए, क्योकि उन्हे ही पुरुषो को जन्म देने तथा सतानो को सस्कारी बनाने के उस महत्त्वपूर्ण कार्य को करना है, जिसे केवल महिलाए ही कर सकती हैं। अत विश्वभर के मानव को जन्म देने वाली 'माँ' जब पुरुष अपेक्षा अधिक योग्य होगी तो तब ही एक श्रेष्ठ समाज या ससार का निर्माण सभव हो सकेगा। इस विचार विशेष को विश्व के समक्ष उपस्थित करनेवाले प्रथम महापुरुष का नाम था-**'महर्षि दयानन्द सरस्वती'**। उन्होने विश्व के इतिहास को हमारे समक्ष रखते हुए यह सिद्ध किया कि यह आर्यावर्त्त विश्वसम्राट्, विश्वगुरु व सोने की चिडिया इसीलिए बन पाया क्योकि तब पृथ्वीभर के लोग परमात्मा की वेदवाणी के अनुसार नारियो के पढने, बलवान बनने व धर्म-कर्म तथा राज करने के पुरुषो के समान ही पूर्ण अधिकार देते थे। जबसे हमने विश्व जन्मदात्री मातृशक्ति के अधिकार छीने तथा उसे पढने, धर्म कार्य करने व सामाजिक कार्यों से वंचित किया, तभी से विश्व के मानवो का ह्रास होकर धरती पर मजहब, पाखण्ड, शत्रुता व आतंकवाद की वृद्धि से विश्व का विनाश हुआ। यह कितने शर्म की बात है कि समुद्र के तल व आकाश के तारो मे उथल-पुथल करनेवाला यह तथाकथित बुद्धिजीवी मानव अपने अज्ञान, अभिमान अहकार एवं मनमानी (जिद्द) की पूर्ति हेतु युद्धो व अत्याचारो के द्वारा अपने को जन्म देनेवाली इस धरती व नारी के सर्वनाश मे लगा हुआ है। क्या यही इस मानव के सर्वश्रेष्ठ होने का सही लक्षण है ?

भगवान ने जब इन्सानों को धरती पर जन्म दिया तो किसी के माथे पर मुसलमान-सुन्नी, मुसलमान-शिया, ईसाई, पारसी या हिन्दू नहीं लिखा। किसी के माथे पर सर्वश्रेष्ठ या सर्वनिकृष्ट नहीं लिखा था। किसी को जन्म से पूज्य अथवा किसी को त्याज्य नहीं बताया था। किसी को धर्म या मजहब का ठेकेदार नहीं बताया, नहीं किसी महिला को मानवधर्म वेद से वञ्चित ही ठहराया। किसी अमीर के माथे पर राज करने और किसी गरीब के माथे पर अछूत कहलाने अथवा किसी नारी के माथे पर गुलाम होने की मोहर नही लगाई। पर ठीक इससे विपरीत परमपिता परमात्मा अथवा उस जगदम्बा माता ने प्रत्येक व्यक्ति को अपने आत्मा के समान दूसरो के साथ अच्छा व्यवहार करने और बुरा न करने की शिक्षा दी। प्रत्येक को सर्व अधिकार प्राप्त करने का उपदेश दिया। जिस तरह से किसी पुरुष को उसकी पत्नी के द्वारा किसी अन्य की इच्छा करना बुरा लगता है, ठीक वैसे ही किसी भी नारी को अपने पति द्वारा किसी अन्य नारी या नारियो को पत्नी बनाना। अत विश्व धर्म वेद मे बहुपति या बहुपत्नी विवाह का निषेध किया गया है। ससार मे किसी भी व्यक्ति की भावनाओ, कामनाओ व इच्छाओ की हत्या न हो इसीलिए महर्षि देवदयानन्द ने वेद के उपदेश के अनुसार पुरुषो के समान प्रत्येक नारी को भी जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे यथायोग्य आगे बढने के सभी अधिकार दिये। उन्होने अपने अमरग्रन्थ सत्यार्थ-प्रकाश मे लिखा कि योग्य नारियो को केवल घर का कार्य या बर्तन साफ करने की ही वस्तु न समझे। अत उन्होने इसी ग्रन्थ के तीसरे समुल्लास मे लडको के समान लडकियो को भी एक समान सब विद्याओ को पढने का अधिकार दिया है।

नारी भी नर के समान राजा, न्यायाधिकारी, दण्डाधिकारी, अध्यापिका, अभियन्ता (इजीनियर) तथा पुरोहित, पादरी या मौलवी का कार्य कर सकती हैं। पर जब कुछ धर्म के नाम पर कलक कहलाने वाले 'मजहब' इसको बुरके की गुलामी मे रखकर पढने-पढाने, सामाजिक कार्य करने तथा मौलवी या पादरी बनने का भी अधिकार नहीं देते तो इससे उनके अमानवीय व्यवहार का पता चलता है। इसलाम के मजहबी पुस्तक 'कुरान' के कारण ससारभर की नारियो पर अत्याचार प्रारभ हुए। आज भी सऊदी-अरब आदि देशो मे एक-एक मुसलमान रईस के घर मे सैकडो औरते गुलामो-सा जीवन जीती है। यह कहनेमात्र को तो उनकी पत्निया हैं पर उनका जीवन बन्धुआ मजदूरो से भी ज्यादा निकृष्ट है। ठीक इसी तरह से ईसाई लोगो के मजहबी पुस्तक बाईबल के कारण भी विश्वभर की नारियो पर बहुत अत्याचार हुए हैं। क्योकि बाईबल मे स्त्रियो को स्वतन्त्र रूप से जन्मा हुआ न मानकर पुरुष की ही एक पसली से बना हुआ माना जाता है। बाईबल का यह स्पष्ट आदेश है कि नारी कभी भी स्वतन्त्र न होकर सदा पुरुष की प्रभुता मे रहनेवाली चीज है। हमने यहा चीज शब्द न चाहते हुए भी इसलिए लिखा है क्योकि ईसाई पादरी तो नारियो मे आत्मा (जीव) का होना भी नही मानते रहे हैं। इन दोनो (आर्यधर्म वेद से विरुद्ध) ग्रन्थो की मान्यताओ के कारण ही नारियो को मात्र भोग की वस्तु जानने से आज अमेरिका जैसे अत्यन्त सम्पन्न व बुद्धिमानो के देश मे भी हर छ मिनट के पश्चात् किसी नारी के साथ बलात्कार की घटना घटती है। पाखण्डो से भरपूर बोपदेव आदि द्वारा रचित पुराणो मे भी (विद-ज्ञान से विरुद्ध) नारियो को पैर की जूती समझा जाता रहा है। कुछ तथाकथित पण्डितो ने तो यहा तक लिख डाला कि नारी को वेद पढने, यज्ञ करने, यज्ञोपवीत पहनने का अधिकार नहीं देते। बाल-विवाह, बहुविवाह व सतीप्रथा इन्ही पाखण्डी हिन्दुओ की देन है। शकराचार्य जैसे प्राचीन सन्त भी न जाने कैसे नारी को नरक का द्वार लिख गए और तुलसीदास ने भी न जाने कैसे अपनी जन्मदात्री मातृशक्ति को ताडना की अधिकारी कह दिया।

"नारी' (भ्रूण, नववधू अथवा गृहिणी) की हत्या का मुख्य कारण नारियो के विषय मे ईश्वरीयवाणी वेद के विरुद्ध मतवादियो के झूठे व दूषित विचार ही हैं। जब तक ससार मे वेद धर्म प्रचार व प्रसार रहा तब तक नारियो का यथायोग्य सत्कार व प्रतिष्ठा रही। क्योकि वेद मे नारियो को अबला नही सबला, अपूर्णा नही अन्नपूर्णा पैर की जूती नहीं मूरध्वजा तथा गुलाम या बन्धवा नहीं अपितु साम्राज्ञी माना गया है। वैदिककाल मे अनेको महिलाए ऋषिकाए तथा रानी थीं। पर वर्तमान के मतवादियो के विपरीत प्रचार के कारण नारियो के साथ दुष्ट व्यवहार होरहा है। यह भी कहना असत्य नही कि नारियो को बार-बार ऐसा कहने से कि ये कमजोर होती हैं जबकि पुरुषो से अधिक खाती हैं बलहीन होती है। इनमे कामवासना अधिक होती है। इनको जितना पीटो या दबा के रखो उतना ही ठीक रहती है।" झूठा प्रचार करने का ऐसा प्रभाव पडा कि नारिया स्वय को बलहीन व तुच्छ तथा हीन मानने लगीं। तथा जातिगत विवाह की कुपरम्परा के कारण एक जाति मे योग्य वर न मिलने से भी दहेज का ताण्डव होने लगा और अनेको बहिनो को दहेज के लोभियो ने मौत के घाट उतार दिया। यदि आज कन्याए अपने आत्मविश्वास को जगाकर स्वय को शक्तिहीन व दीन-हीन न समझे तो नारियो पर अत्याचार होने रुक सकते हैं। यदि नारिया स्वय को पुरुषो से अधिक श्रेष्ठ व उच्चस्तर का समझे तो मातायें ही गर्भ मे अपनी पुत्रियो की हत्यारिने न बने। यदि जन्मजात के विवाह को हटाकर दहेज का कलक मिटा दिया जाए तो गर्भस्थ कन्याओ की हत्याए भी समाप्त हो जाए। अपने पर अपनो के होरहे अत्याचारो से ही हानिया अधिक होती हैं। सास भी कभी बहू थी और बहू भी कभी सास बनेगी। आज की ननद भी कल को किसी की बहू बनेगी और उसकी भी कोई वहा ननद होगी। हर नारी किसी की बेटी किसी और की बहू होगी। अत यदि बहू अपनी सास को मा समझे और यदि प्रत्येक विचारवान् सास-ससुर अपनी बेटी के ही समान बहू को भी समझे तो फिर हजारो बहुए दहेज या प्रताडना की बलि नहीं चढती। यदि नारिया अपने स्वाभिमान को जगाकर स्वय को पुरुषो हेतु भोग विलास की सामग्री के स्थान पर उनकी जन्म दात्री व सस्कारदात्री होने का सामूहिक आदोलन चलाए तो उनके साथ होने वाली बलात्कार की घटनाए पर्याप्त कम हो जाए। इसके साथ-साथ यदि वे कुछ लोगो द्वारा अधिक कामुक होने की इस वेदशास्त्र से विरुद्ध

मान्यता का रणचण्डी बनकर विरोध करे तो तब कोई दुष्टपुरुष उन्हे बुरी निगाह से देखने की हिम्मत न करे। इन उपरोक्त कारणो के साथ-साथ नारी पर होनेवाले अत्याचारो का एक कारण वेश्यावृत्ति के बाजार व कालगर्ल्स का काला धन्धा भी है। नारियो के खुलेआम अगप्रदर्शन तथा वेश्या बाजारो मे खुलेआम (फुटपाथो पर चौबारो पर पुरुषो को इशारे करते उन्हे बुलाने और लुभाने के कारण भी आम पुरुष फिर सभी नारियो के प्रति हीन भावना रखने लगते हैं। इससे एक साधारण गिरे से गिरा हुआ पुरुष भी आज समाज मे मौका मिलते ही कन्याओ, युवतियो, महिलाओ व यहा तक की साठ-सत्तर वर्ष की बुढिया को भी अपनी वासना का शिकार बनाने की प्रेरणा प्राप्त करता है। अत नारियो को चाहिए स्वसम्मान की पूर्ण सुरक्षा हेतु वेश्यावृत्ति कालगर्ल्स अश्लील विज्ञापन अर्धनग्न लिबास व विश्वसुन्दरी बनने के तथा ब्लू फिल्मो मे काम करने को छोडदे। क्योकि जब कोई व्यक्ति अपने सामान को खुले मे किसी फुटपाथ या बाजार मे रखेगा तो फिर हर व्यक्ति क्यो न उसे देखना या छेडना चाहेगा ? इस विषय मे हमारा यही अनुरोध है कि नारिया गर्भहत्या से बचने, बलात्कार व छेडछाड से मुक्ति पाने व लडकियो की तरह दहेज लाभियो द्वारा जलने से बचने हेतु प्राचीन देवियो के समान बाजार की वस्तु न बनकर पूजा की वस्तु बने।

विचारधारा ही व्यक्ति के निर्माण का मूल कारण है। यदि विचार अच्छे हैं, तो व्यक्ति अच्छा कहलाता है। और यदि उसका विचार व व्यवहार अपनी आत्मा से विरुद्ध यथा अपने लिए सुख मान व लाभ पर दुसरो के लिए दुख अपमान व हानि का है, तो वह बुरा कहलाता है। ससार के सारे अत्याचार इस कसौटी पर कसे जा सकते हैं।। कम से कम बुद्धि रखने वाला व्यक्ति भी यदि अपने व दूसरे के बीच व्यवहार करते समय किसी मजहबी अधविश्वासो पर खडी किताब को न लाए तो वह पाप से अथवा अन्याय से बच सकता है। पर ऐसा होता नही है यदि ऐसा ही होता तो यह धरती हजारो वर्षो से मजहबी एव पाखण्डी लोगो की मानवता-विरुद्ध 'कुशिक्षाओ' के कारण बार-बार लाखो लाशो का भार न ढोती। कश्मीर, पजाब, जापान, अमेरिका, वियतमान, अफगानिस्तान और इजराइल की हजारो विधवा नारिया इसके प्रत्यक्ष उदाहरण है। अत अन्याय तथा पक्षतापूर्ण व्यवहार को जिससे कि मानवता की हत्या होती हो कभी धर्म या मजहब न समझे। यही अन्याय युक्त व्यवहार आतकवाद को जन्म देता है। ईश की वाणी व अपनी आत्मा के विरुद्ध कार्य करने वाले क्रूर शासक अथवा अधविश्वासी व मजहबी-प्रचारक ही आतकवाद मे मूल कारण हैं। ये लोग अपने घरो से गदे मानवता के विरुद्ध विचार धारा के सस्कार आतकवादी सतानो को जन्म देते हैं। तालीबानी इसके जीते जागते उदाहरण हैं।

प्रभु की ओर से कोई भी 'बच्चा दुष्ट' आचारहीन जिद्दी या आतकवादी उत्पन्न नहीं होता। अपितु जन्म के समय वह एक कोरी स्लेट की भाति होता है। हम जैसा भी चाहे उसे वैसा ही बना सकते हैं। अथवा उस अबोध व पवित्र बालक को जैसे माता-पिता व समाज का वातावरण मिलता है वह वैसा ही बन जाता है। यदि उस बालक को सुभद्रा जैसी माता व अर्जुन जैसा पिता मिलता है, तो वह 'अभिमन्यु' बन जाता है। जीजा जैसी पावन देशभक्त माता पाकर शिवा बन जाता है। अन्यथा एक निकृष्ट चोर, हत्यारा व आतकवादी बन जाता है। जिन बच्चो को बाल्यकाल मे अपने माता-पिता व गुरुजनो तथा परिवार के लोगो के द्वारा सबसे प्यार करने, सबका सत्कार करने, सबको बाटकर खाने, सबकी सेवा करने तथा किसी कीर वस्तु न लेने, किसी से झगडा या मारपीट न करने की शिक्षा मिलती है, वे 'बच्चे' सच्चे मानव बनकर मानवतावाद को जन्म देते हैं। जबकि इसके विरुद्ध गदी शिक्षा व वातावरण मे पले आतकवाद को जन्म देते हैं। परन्तु आज बहुत दुख के साथ यह कहना पडता है कि कुछ सुपठित (पर प्राचीन शाश्वत सस्कृति से अनभिज्ञ) गृहणिया बच्चो के पालन पोषण के कार्य को एक निम्न स्तर का (घटिया) कार्य समझती हैं। इस कारण वे आज के बच्चे जो कि कल के राष्ट्र के भावी नागरिक हैं। अथवा धरा की भावी धरोहर हैं। उनका उचित सस्कारो से पालन व उत्थान न करके लापरवाही से पतन कर रही हैं। जिसके कारण वे स्वय उन बच्चो से कल के सस्कारहीन पुरुष बनने जा रहे लोगो से पीडित होती हैं। क्या योग्य जीवन साथी के बिना अच्छे बच्चो, अच्छे सहयोगियो व मानवतायुक्त श्रेष्ठ सस्कारी पुरुषो के अभाव मे कोई नारी मात्र बहुत से धन को जोडकर समाज मे सुखी, शान्त तथा सुरक्षित रह सकती हैं? जब आज ही नहीं तो आगे और अधिक पतनोन्मुख समाज मे कैसे रह सकती है? अत सन्तानो को अपनी सबसे बडी सुख व ऐश्वर्य से युक्त सम्पत्ति समझकर उनके जीवन को बनाना, मानो अपने ही भविष्य को बनाना है।

अनेक औरते एक-एक मुस्लिम रईस या शेख के हरम मे भेड-बकरियो की तरह न सडती। किसी निर्जीव वस्तु को दे देने के बाद उसको वापस लेने से मना किया जा सकता है, पर आश्चर्य है कि एक मुस्लिम लडकी का बाप उसके पति द्वारा तीन बार 'तलाक-तलाक-तलाक' कहने पर उसे वापिस लेने से मना नहीं कर सकता है। एक पालतू बिल्ली या कुत्ता तो किसी शकराचार्य, पादरी या मौलवी के आसन पर अचानक कूदते हुए बैठ सकते हैं पर विश्वजननी एक योग्यतापूर्ण व विचारशील महिला नहीं बैठ सकती। ससार के महजबी लोगो द्वारा ठुकराए गए एव भुलाए गए यदि उस सृष्टिकर्त्ता द्वारा उपदिष्ट धर्मोपदेश 'वेद' को देखे तो वहा यह साफ-साफ मिलता है कि नारी का ससार मे ईश्वर के पश्चात् दूसरा सबसे बडा दर्जा है। **स्त्री हि 'ब्रह्मा बभूविथ'** वाले मन्त्र का यही अर्थ है। उसे घर व समाज की मूर्धजा कहा गया है। उसे **'यथेमां वाच कल्याणीं,** मन्त्र द्वारा वेद आदि सब विद्याओ को पढने का अधिकार दिया गया है। **'मम पुत्र· शत्रुहनो'** मन्त्र में उस घर की मुखिया माना गया है। वेद मे अनेक मन्त्रो द्वारा गुण-कर्म-स्वभाव तथा आयु की अनुकूलता से स्वतत्रतापूर्वक अपने अनुकूल 'योग्यवर' वरने का पूर्ण अधिकार है। आर्यो का सम्पूर्ण इतिहास इस बात का साक्षी है कि कोई भी माता-पिता अपनी कन्या की योग्यता से विरुद्ध उसका विवाह नहीं कर सकते थे। वह अपनी इच्छा के अनुसार अनेको मे से किसी एक वर को चुनती थी।इसे ही स्वयवर कहा जाता था। जब कन्या वर के गुण कर्म स्वभाव व आयु उचित होते थे, तो इससे परिवारो मे शान्ति रहती थी। पति-पत्नी मे झगडे व तलाक की घटनाये भी प्राय न होती थी। बच्चे भी सुन्दर, सुशील, स्वस्थ, बलवान, धार्मिक, मानवतावादी तथा देशभक्त पैदा होते थे। आज स्वयवर के स्थान पर चमडी तथा दमडी के व्यापार से यह 'धरती' रोगी, अधर्मी व असयमी बच्चो की भरमार से भरी जारही है।

(क्रमश)

आर्य-संसार

पौराणिकों के गढ़ में आर्यसमाज की सेंध

पौराणिको का प्राचीनगढ़ कहे जाने वाले बाघोत ग्राम मे दिनाक ७-७-२००२ को श्री रामस्वरूप प्रधान आर्यसमाज के घर के सामने सामूहिक जगह पर शान्ति-यज्ञ स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती प्रधान यतिमण्डल दक्षिणी हरयाणा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

यजमानों का स्थान श्री रामस्वरूप ने अपनी पत्नी श्रीमती ग्यारसी देवी के साथ ग्रहण किया। यज्ञ का कार्य प० इन्द्रमुनि आर्य पुरोहित धर्म प्रचार मन्त्री यतिमण्डल दक्षिणी हरयाणा तथा महन्त आनन्दस्वरूपदास सन्त कबीरमठ सोहला ने करवाया।

यज्ञ के पश्चात् स्वामी जी ने लगभग ५० पुरुष व महिलाओ को नि शुल्क दवाइयां वितरित की, इसके अनन्तर ४० पुरुषो को शराब छोडने की दवाई भी दी गई, आज से पहले भी कई व्यक्तियों को दवाई देकर शराब छुडवा दी गई है।

अन्त मे स्वामी जी ने अपने प्रवचनो मे बताया कि यज्ञ करने से बढकर अन्य कोई भी शुभ कर्म नहीं है। ग्राम मे आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविर लगवाकर १०० नवयुवको मे व्यायाम एवं चरित्र निर्माण का बिगुल बजा दिया है। इस कार्यक्रम से पौराणिकों मे खलबली मच गई है।

–धर्मपाल आर्य, पूर्व सरपच, बाघोत

बलि चढ़ाने की निन्दा

यह समाज सर्वसम्मति से कामाख्या देवी के मन्दिर मे वहा के पुजारियो की दीक्षा मे नेपाल परिवार की ओर से पाच निरीह प्राणियो की बलि चढाकर आर्य (हिन्दू) सभ्यता एव सस्कृति को जो कलंकित करने का जघन्य अपराध किया गया है इस पर हार्दिक वेदना व्यक्त करते हुए, बलि प्रथा के समर्थक सभी विद्वानो, पुजारियो, तांत्रिको तथा जादू टोना करने वालो को कभी भी कहीं भी शास्त्रार्थ करने की चुनोती देता है।

आत्मवत् सर्वभूतेषु के उद्घोषक, अहिसा पर आधारित, कण कण मे भगवत् सत्ता अर्थात् शक्ति की व्याप्ति मे विश्वास रखने वाले वैदिक धर्म (मानव धर्म) हिन्दू धर्म जो सार्वभौमिक शाश्वत सत्य सिद्धान्तो के आधार पर मानवमात्र ही नहीं प्राणीमात्र के कल्याण का कारण रहा है, की छवि को धूमिल करने के कुकृत्य की भर्त्सना होनी ही चाहिए। यदि बलि चढाकर ही देवी देवता प्रसन्न होते हैं तो क्यो न इन तथाकथित पवित्रात्माओ की बलि चढाकर उन्हे परमतृप्त कर दिया जाए।

इस प्रस्ताव द्वारा ससार के सभी (आर्यो) श्रेष्ठ पुरुषो, चिन्तनशील मनीषियो तथा धर्म, समाज और राजनीति के मर्मज्ञों से सानुरोध प्रार्थना करते हैं कि इस प्रकार की धर्म को हेय बनाने वाली सभी प्रकार की कुप्रथाओ पर तत्काल लगाम लगाने में अपनी-अपनी सकारात्मक भूमिका निभाकर धर्म की रक्षार्थ कुछ कर दिखाए।

मत्री–सुरेश गुलाटी, आर्यसमाज न० ३, एन आई टी, फरीदाबाद

अखिल भारतीय राजभाषा चेतना शिविर

स्थान : आर्यसमाज मन्दिर, १५ हनुमान रोड (हनुमान मन्दिर, कनॉट प्लेस के पीछे वाली सड़क) नई दिल्ली

दिनांक : १६-१७ अगस्त, २००२

१ शिविर के उद्घाटन के लिए केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मन्त्री माननीय श्री मुरली जोशी जी से अनुरोध किया गया है। २ शिविर मे केन्द्र और राज्य सरकारों की राजभाषा और शिक्षा की भाषानीति के बारे मे राजभाषा अधिकारियो, अनुभवी विद्वानो, शिक्षाविदो तथा पत्रकारो का मार्गदर्शन और सहयोग प्राप्त रहेगा। ३ प्रत्येक सत्र मे वक्ताओ से प्रश्नोत्तर, शका-समाधान और परिचर्चा की व्यवस्था रहेगी।

कृपया ध्यान दें

● बाहर से पधारने वाले प्रतिभागियों के लिए आवास की सुविधाजनक व्यवस्था आर्यसमाज मन्दिर, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली की अतिथिशाला मे की गई है। ● आवास एवं भोजन व्यवस्था नि:शुल्क होगी। ● प्रतिभागी यात्राव्यय स्वय वहन करेंगे। समिति की शाखाए चाहे तो उन्हे सहयोग कर सकती हैं। ● बाहर से आने वाले केवल २५ प्रतिभागियों के आवास की व्यवस्था सम्भव होगी। जिनके नाम हमें पहले प्राप्त होंगे उनमे से पहले २५ को वरीयता दी जाएगी। शेष को अपनी आवास व्यवस्था स्वय करनी पड सकती है। ● शिविर में भाग लेने के इच्छुक महानुभाव तुरन्त अपने नाम समिति के दिल्ली कार्यालय को भेजने की कृपा करे। ● प्रतिभागी नोटबुल, पैन-पैन्सिल तथा प्रसाधन सामग्री साथ लाये तथा १६ अगस्त को प्रात:काल ९ बजे तक शिविर स्थान पर अवश्य पहुच जाए। शिविर का समापन १७ अगस्त को सायंकाल ६ बजे होगा। ● शिविर मे अनुशासन का पालन करना आवश्यक होगा। ● अभक्ष्य और नशीले पदार्थो का सेवन वर्जित रहेगा। ● शिविर का विस्तृत कार्यक्रम शीघ्र ही प्रेषित किया जाएगा। ● समिति की गतिविधियो की विस्तृत जानकारी सलग्न पत्रक मे दी गई है। ● शिविर के बारे मे आपके सुझाव सादर आमन्त्रित हैं।

निवेदक . डॉ० धर्मवीर, शिविर सयोजक। फोन ०११-३२१०५६१

शान्तियज्ञ पर आर्यसंस्थाओं को दान

दिनाक १४-७-०२ को श्री सुकर्मपाल सागवान एव धर्मपत्नी रुकमेश देवी ने अपने निवास स्थान सेक्टर ६, बहादुरगढ जिला झज्जर मे स्वर्गीय पिताजी श्री बलदेवसिह आर्य की दूसरी पुण्य स्मृति के अवसर पर शान्ति यज्ञ का आयोजन किया। श्री शिवराज शास्त्री पुरोहित ने वैदिक पद्धति से यज्ञ सम्पन्न किया। यज्ञ मे पुत्र सुनीत, पुत्री सुजाता व श्रुति सहित सेक्टर मे उपस्थित सभी स्त्री-पुरुषो, बच्चो ने आहुतिया डाली और याज्ञिक परिवार के सुख-शान्ति एव समृद्धि की मगलकामना की।

श्री सुकर्मपाल आर्यप्रतिनिधि सभी हरयाणा के सदस्य व सेक्टर-६, बहादुरगढ आर्यसमाज के मन्त्री भी हैं, अपने स्व० पिताजी की प्रेरणा तथा शिक्षाओ के फलस्वरूप आर्यसमाज के कार्यक्रमो मे सपरिवार हिस्सा लेना, समय-समय पर यज्ञो का आयोजन करवाना अपनी श्रद्धा के अनुरूप दान-दक्षिणा आदि देते रहते हैं। गत वर्ष की भान्ति इस वर्ष भी निम्नलिखित सस्थाओ को इस परिवार ने श्रद्धापूर्वक दान प्राप्त करवाया–

आर्यसमाज मन्दिर झज्जर रोड, बहादुरगढ को १२८२ रुपये, आर्यसयमाज मन्दिर सेक्टर ६, बहादुरगढ को ४३१ रुपये, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक को २०२ रुपये, लखीराम आर्य अनाथालय रोहतक को १०१ रुपये, गुरुकुल झज्जर को १०१ रुपये, आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ को १५० रुपये, म० दयानन्द वैदिक विद्यालय डोलसाने महाराष्ट्र १०१ रुपये, पुरोहित आदि दान-दक्षिणा २०३ रुपये, कैपिटल ब्लाईड सोसाइटी, दिल्ली को ७२ रुपये, बाला जी आश्रम हरिद्वार को १०१ रुपये, पावन धाम आश्रम हरिद्वार को १५० रुपये, राम आश्रम झूला मन्दिर ऋषिकेश को ११ रुपये, आर्यसमाज, भेरा, भिवानी (सदस्य) १०० रुपये दान दिया।

–सुकर्मपाल सागवान

हरयाणा में वर्षेष्टि यज्ञों का आयोजन

इस वर्ष जुलाई मास मे भी वर्षा न हो सकने के कारण हरयाणा मे सूखे की स्थिति हो गई। अत पूर्व की परम्परा के अनुसार अनेक आर्यसमाजो द्वारा अथर्ववेद के वर्षा सम्बन्धी वेदमन्त्रो से वैज्ञानिक विधि से तैयार की गई हवन सामग्री, विशेष समिधा तथा शुद्ध देसी घी द्वारा विशेष यज्ञो का आयोजन किया गया है। आचार्य विजयपाल उपमन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की देखरेख मे गुरुकुल झज्जर तथा आर्यसमाज माडल टाउन रोहतक मे एक सप्ताह से वर्षेष्टि यज्ञ हो रहे हैं और जब तक वर्षा न होगी, यज्ञ होते रहेगे। इसके अतिरिक्त आर्यसमाज हनुमान कालोनी रोहतक मे भी रविवार १४ जुलाई को सभा के अन्तरग सदस्य श्री सुखवीर शास्त्री ने भी विशेष वर्षेष्टि यज्ञ करवाया। इसी प्रकार जिला सोनीपत, गुडगाव, फरीदाबाद, पानीपत, कुरुक्षेत्र, जीन्द, महेन्द्रगढ तथा रेवाडी आदि के आर्यसमाजो द्वारा वर्षेष्टि यज्ञ करवाने के समाचार प्राप्त हुए हैं। **–केदारसिह आर्य, सभा उपमन्त्री**

आर्यसमाज सैक्टर ६-६ए, अर्बन एस्टेट, गुड़गांव का चुनाव सम्पन्न

प्रधान–श्री अमीरचन्द श्रीधर, उपप्रधान–श्री गणेशदास, मन्त्री–श्री बलदेव राज गुगनानी, उपमन्त्री–श्री रविन्द्रकुमार, कोषाध्यक्ष–श्री एच बी तनेजा, प्रचारमन्त्री–श्री सुभाष कामरा, भण्डार अध्यक्ष–श्री किशनचन्द राजपाल।

–अमीरचन्द श्रीधर, प्रधान आर्यसमाज ९,९ए, गुडगाव

हरयाणा की आर्यसंस्थाओं से अपील

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की तरफ से हरयाणा की सभी आर्यसमाजो के अधिकारियो से निवेदन है कि वर्ष २००२-०३ मे आर्यसमाज की वेदी पर वेदप्रचार कार्य करते हुए तथा देश के अस्तित्व की रक्षा के लिये जिन आर्य बलिदानियो ने अपने बलिदान दिये हैं, उनके बलिदान दिवस को एक आर्य महासम्मेलन के रूप मे मनाया जाये। इन अवसरो पर आप तन, मन तथा धन से सभा को सहयोग प्रदान करे। साथ ही सभा कार्यालय परिसर रोहतक मे बलिदान भवन का निर्माण किया गया है, जिसमे सभी आर्य बलिदानियो के चित्र स्थापित किये जायेगे, इसमे एक आर्यसमाज एक आर्य बलिदानी का चित्र सुन्दर आकर्षक तैयार करे तथा अपनी आर्यसमाज के नाम से बलिदान भवन मे स्थापित करने का कष्ट करे तथा इसकी सूचना सभा कार्यालय को तुरन्त देवे।

—यशपाल आचार्य, मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

हिन्दुओं के नाम खुला पत्र

'**आत्मवत् सर्वभूतेषु एव सर्वभूतहिते रत.** के आलबरदार, जड पदार्थो तक की पूजा-अर्चना के लिए विख्यात, अहिसा और विश्व शान्ति का उद्घोषक, सात्विक आहार, विचार का धारक एव पालक, प्राचीनतम ज्ञान-विज्ञान का प्रेरक कहलाने वाले तथाकथित धर्म के ठेकेदारो की देखरेख ही नहीं उनकी दीक्षा मे इस इक्कीसवीं शताब्दी मे जब प्राणिमात्र के प्रति सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार विश्व आचार सहिता बनती जा रही है। हिन्दू राष्ट्र कहलाने पर गर्व करने वाले वहां के सर्वप्रथम नागरिक एव अपनी प्रजा के महती श्रद्धा के पात्र राज परिवार की ओर से उस कामाख्या देवी पर जिसकी शक्ति से प्राणिमात्र ही नहीं ब्रह्माण्ड का कण-कण आप्लवित हो रहा है। जो प्राणिमात्र की ममतामयी, कृपालु एव दया की भण्डार मां है। जिस शक्ति से प्राणिमात्र का लालन-पालन होता है, बडे आश्चर्य का विषय है कि निरीह प्राणियो की बलि देकर ही बलिदाता को अपने वरदानो से निहाल करेगी। क्या ऐसी मा, 'मा' कहलाने की अधिकारिणी है ? ऐसी अनर्गल शास्त्र और ज्ञान विरुद्ध बातो से ही पहले भी मानवधर्म (वैदिक धर्म) का ह्रास हुआ और इस प्रकार की दुरवस्थाओ के प्रतिक्रियास्वरूप ही अनेक मत मतान्तर एव मजहबों का प्रादुर्भाव हुआ।

यदि कामाख्या देवी निरीह प्राणियो की बलि से ही तृप्त होती है तो मानव बलि उससे भी अधिक श्रेयस्कर रहेगी। इसी अवधारणा के दुष्परिणामस्वरूप यदा कदा मात्र हिन्दू कहलाने वाले समाज मे ही तांत्रिको, ढोंगियो, जादू टोनों एव अपनी स्वार्थपूर्ति करनेवाले तथाकथित गुरुओ, पुजारियो, महंन्तो की प्रेरणाओं और आदेशो के जाल मे फसकर अपने ही मासूम बच्चो तक को बलि चढाने की शर्मनाक दुर्घटनाए घटती रहती हैं। जब साधारण पशु-पक्षियो की तथा मानवो की कुर्बानी ही धार्मिक अनुष्ठान कहलाएगी तो इन तथाकथित पुजारियों, तान्त्रिको, प्रेरको और बाबाओ जैसी पवित्रात्माओ की बलि से तो सर्वाधिक तृप्ति इन देवी-देवताओ की होगी ही। यदि इस प्रकार की मुहिम आरम्भ कर दी जाए तो इस प्रकार धर्म को कलंकित करने वाले और ऐसी कुधारणाएं स्वत समाप्त हो जाएंगी।

बडे खेद का विषय है कि हिन्दू धर्म के ठेकेदार जो अपने आपको हिन्दू राष्ट्र के राजा कहलाने में न केवल गर्व का अनुभव करते हैं हिन्दू राष्ट्र का राग अलापते जिनकी जुबान नहीं थकती, किस मुंह से हिन्दू धर्म को सर्वश्रेष्ठ और प्राणिमात्र का कल्याण कारक कह पाएगे। आज विश्व का प्रत्येक जागरूक मानव न तो ऐसे धर्म को धर्म मानने को तैयार है और न ही ऐसी कुप्रथाओ पर आधारित राष्ट्र की कामना करता है।

सभी चिन्तनशील, मानवीय मूल्यों के पोषक, धर्म के मर्मज्ञ तथा धार्मिक, सामाजिक एव राजनैतिक व्यवस्थाओ में नेतृत्व करने वाले महाजनो से प्रार्थना है कि इस प्रकार की प्रवृत्ति पर न केवल प्रतिबंध लगाए अपितु इस प्रकार के धर्मविरोधी, हिन्दू धर्म की विश्व मे छवि को हेय बनाने वालों के विरुद्ध विशेष अभियान चलाकर वैदिक सत्य सनातन धर्म (हिन्दू धर्म, मानव धर्म) की रक्षार्थ ठोस रचनात्मक पग तत्काल उठाएं अन्यथा हिन्दू धर्म से सभी दूर-दूर चले जाएंगे। कहीं ऐसा न हो कि हिन्दू शब्द ही दानवता का पर्याय बन जाए अत. समय रहते चेतिए।

उचित प्रतिक्रियाभिलाषी—डॉ० सत्यदेव, प्रधान
आर्यसमाज नं० ३, एनआईटी फरीदाबाद। फोन : ५४१५४९४

वेद में पृथिवी-धारक गुण

—स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती, आर्ष गुरुकुल कालवा

अथर्ववेद के बारहवे काण्ड का प्रथम सूक्त पृथिवी सूक्त कहाता है। इस सूक्त मे पृथिवी का वर्णन अत्यन्त ही मनोरम है। प्रथम मन्त्र इस प्रकार है—

सत्य बृहदृतमुग्र दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञ: पृथिवीं धारयन्ति।
सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्न्युरु लोक पृथिवी न. कृणोतु।। (अथ० १२।१।१)

अर्थ—(बृहत्) बढा हुआ (सत्यम्) सत्कर्म (उग्रम्) उग्र (ऋतम्) सत्यज्ञान (दीक्षा) दीक्षा=आत्मनिग्रह (ब्रह्म) ब्रह्मचर्य=वेदाध्ययन, वीर्यनिग्रहरूप (तप·) व्रत धारण और (यज्ञ) यज्ञ=देवपूजा, सत्सग और दान (पृथिवीम्) पृथिवी को (धारयन्ति) धारण करते हैं। (न) हमारे (भूतस्य) बीते हुये और (भव्यस्य) होनेवाले पदार्थ की (पत्नी) पालन करने वाली (सा पृथिवी) वह पृथिवी (उरुम्) विस्तृत (लोकम्) स्थान (न) हमारे लिये (कृणोतु) करे।

आशय यह है कि सत्कर्मी, सत्यज्ञानी, जितेन्द्रिय, ईश्वर और विद्वानों से प्रीति करने वाले चतुर पुरुष पृथिवी पर उन्नति करते हैं। यह नियम भूत और भविष्यत् के लिये समान है। अथर्ववेद के प्रथम सूक्त मे आगे बारहवे मन्त्र में आया है—

माता भूमि: पुत्रो अहं पृथिव्या:। (अथर्व० १२।१।१२)

यह (भूमि) जन्मभूमि मेरी (माता) मां है और (अहम्) मैं उस (पृथिवी) मातृभूमि का (पुत्र·) पुत्र हू।

अपनी जन्मभूमि के प्रति मनुष्य का जो हार्दिक प्रेम होता है उसका वर्णन उत्यन्त हृदयग्राही शब्दो मे किया गया है। मातृभूमि के प्रति वेद के इस सूक्त मे जिन उदात्त भावनाओ का वर्णन है, वह अन्यत्र दुर्लभ है। जन्मभूमि को माता कहकर पुकारा है। अत प्रत्येक मनुष्य का अपनी मातृभूमि के प्रति क्या कर्त्तव्य होना चाहिए, उसका इसी में समावेश हो जाता है। इसी भाव को लक्ष्य में रखकर किसी कवि ने कहा है—

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।

अतएव मातृभूमि की रक्षा करना प्रत्येक व्यक्ति का जन्मसिद्ध अधिकार है क्योंकि वह मातृभूमि का पुत्र है। यदि पुत्र अपनी माता की ही रक्षा करने में असमर्थ हो तो उसका होना अपने और मातृभूमि दोनों के लिये वस्तुत· कलक है। इसलिये इसी सूक्त के अन्य मन्त्र में कहा है—

अजितोऽहतो अक्षतोऽध्यष्ठां पृथिवीमहम्। (अथर्व० १२।१।११)

मैं किसी भी जाति या व्यक्ति से पराजित होकर मातृभूमि में वास न करूं। कितनी उदात्त भावना है।

सा नो भूमि: त्विषिं बलं राष्ट्रे दधातूत्तमे।। (अथर्व० १२।१।८)

हमारी मातृभूमि हमारे राष्ट्र में तेज और बल को उत्पन्न करे। अपने देश के लिये मातृभूमि शब्द का प्रयोग ही उसके निवासियों की नस-नस में अदम्य उत्साह और प्रेम को उत्पन्न कर देता है। मनुष्य उसकी रक्षा के लिये सर्वस्व अर्पण करके प्राण तक बलिदान करने में नहीं हिचकता। इसका प्रमाण प्रत्येक देश के इतिहास में उपलब्ध होता है। बस आवश्यकता इस बात की होती है कि मनुष्य जन्मभूमि और अपने में वस्तुत माता और पुत्र का सम्बन्ध समझने लग जाये। अत. इस भाव के जागृत होने पर कोई भी देश पराधीन नहीं रह सकता।

वेद का धर्म यही सिखाता है कि जीवन को परिश्रमी और उत्तम गुणो से युक्त बनाना चाहिये, अत्यन्त परिश्रम से सब प्रकार की सिद्धि प्राप्त हो सकती है अत· मानव का अमूल्य शरीर पाकर भूरि परिश्रम से अपना और विश्व का कल्याण करने का प्रयास करना चाहिये।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ०१२६२–७६८७४, ७७८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ०१२६२–७७७२२) से प्रकाशित।
पत्र में प्रकाशित लेख सामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री का सहमत होना आवश्यक नहीं। पत्र के प्रत्येक प्रकार के विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक होगा।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३ सृष्टिसंवत् १,९६,०८,५३,१०३
पंजीकरणसंख्या टैक/85-2/2000 ☎ ०१२६२-७७७२२

प्रधानसम्पादक : यशपाल आचार्य, सभामन्त्री सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री
वर्ष २६ अंक ३५ ७ अगस्त, २००२ वार्षिक शुल्क ८०) आजीवन शुल्क ८००) विदेश मे २० डॉलर एक प्रति १ ७०

शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर वर्ष मेले,
वतन पर मरने वालों का यही बाकी निशां होगा।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्त्वावधान में अमर शहीद भगत फूलसिंह का 61वां बलिदान दिवस

10 अगस्त शनिवार (2002) गांव माहरा (जूआं) में
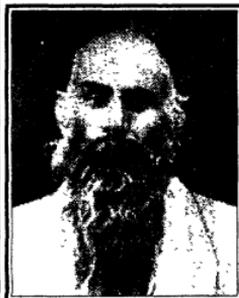
सभी धर्मप्रेमी सज्जनों को सूचित किया जाता है कि हरयाणा के महान् सन्त अमर शहीद गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के प्रसारक महात्मा भगत फूलसिंह का **61**वां बलिदान दिवस, भगत जी की जन्मस्थली गांव माहरा (जूआं) जिला सोनीपत में **10** अगस्त शनिवार को आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के निर्देशन में धूमधाम से मनाया जा रहा है, इस अवसर पर केन्द्रीय श्रममंत्री **श्री साहिबसिंह वर्मा** (पूर्व मुख्यमंत्री) मुख्य अतिथि होंगे। समारोह की अध्यक्षता **बहिन सुभाषिणी जी** करेंगी।

उद्घाटन भाषण : **स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती** करेंगे।

अन्य वक्ताओं में प्रो० शेरसिंह पूर्व केन्द्रीय मंत्री, श्री राममेहर एडवोकेट रोहतक, आचार्य बलदेव गुरुकुल कालवा, चौ० मित्रसेन सिन्धु रोहतक, चौ० सुलतानसिंह पूर्व गवर्नर, श्री रामधारी शास्त्री जींद, श्री वेदव्रत शास्त्री रोहतक, श्री राजेन्द्रसिंह दहिया डी.ई.ओ. सोनीपत, श्री होशियारसिंह मलिक, चौ० किशनसिंह सांगवान सांसद, श्री महेन्द्रसिंह शास्त्री, श्री भगत मंगतूराम तावडू, श्री भद्रसेन शास्त्री, श्री सुखदेव शास्त्री, श्री सत्यवीर शास्त्री गढ़ी, बहन ज्ञानवती, शकुन्तला, साहबकौर होंगे तथा आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की भजन मण्डलियों के भजन भी होंगे।

निवेदक

स्वामी ओमानन्द सरस्वती	आचार्य यशपाल	चौ० दलीपसिंह दहिया	श्रीकृष्ण मलिक
प्रधान	मंत्री	प्रधान	महामंत्री
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा		तदर्थ समिति, गुरुकुल खानपुर कलां तथा भैंसवाल कलां	

केदारसिंह आर्य जूआं, सुरेन्द्रसिंह शास्त्री, बलवीरसिंह शास्त्री, प्रो० रामकुमार, पृथीसिंह शास्त्री, ठेकेदार जयसिंह, धर्मपाल शास्त्री, मा० खजानसिंह आर्य, मा० आजादसिंह बांगड़, बलदेव शास्त्री, रामचन्द्र शास्त्री।

स्वागत समिति

गोपीराम, जयपाल सरपंच, रघुनाथ पूर्व सरपंच, बलवानसिंह सचिव, सत्यप्रकाश, बलजीत, महावीर, धर्मसिंह पटवारी, जगदीश, प० लक्ष्मीचन्द, चेतराम हरिजन, रणसिंह बाल्मीकी, रामदिया नम्बरदार, भीमसिंह, ओमप्रकाश, दरियावसिंह, महावीर, साहबसिंह, नरेन्द्रसिंह, रणधीरसिंह, ओमप्रकाश मलिक एस.डी.ओ., मा० ओमप्रकाश, रणधीर, धर्मवीर, रणसिंह, राजकरण, बलवन्त।

वैदिक-स्वाध्याय

उद्धार का मार्ग

अग्निमिन्धानो मनसा धियं सचेत मर्त्यः।
अग्निमीधे विवस्वभिः।। ऋ० ८।१०२।२२।। साम० पू० ११२९।।

शब्दार्थ–(**मनसा**) मन द्वारा (**अग्नि**) अग्नि को, आत्मा को (**इन्धानः**) प्रज्वलित करता हुआ (**मर्त्यः**) मनुष्य (**धियं**) सद्बुद्धि को और सत्कर्म को (**सचेत**) प्राप्त करे। मैं (**विवस्वभिः**) तम को हटाने वाली ज्ञान किरणो द्वारा (**अग्नि**) इस अग्नि को (**ईधे**) प्रदीप्त करता हूँ।

विनय–मैं जो प्रतिदिन आग जलाकर अग्निहोत्र करता हूँ उससे क्या हुआ, यदि इस अग्नि-दीपन से मेरे अन्दर की आत्म-ज्योति न जग सकी। यदि मेरे प्रतिदिन अग्निहोत्र करते रहने पर भी मेरे जीवन मे कुछ भेद न आया, मेरा व्यवहार आचरण वैसा का वैसा रहा, न मुझमे सद्बुद्धि ही जागृत हुई और न मैं सत्कर्मो मे प्रेरित हुआ, तो मेरा यह सब अग्निचर्या करना व्यर्थ है। सचमुच हरेक बाह्य-यज्ञ अन्दर के यज्ञ के लिये है। बाहिर की अग्नि इसीलिये प्रदीप्त की जाती है कि उस द्वारा एक दिन अन्दर की आत्माग्नि प्रदीप्त हो जाय। यह आत्माग्नि मन द्वारा प्रदीप्त की जाती है। इसीलिए कहा गया है कि बाहिर के द्रव्यमय-यज्ञ की अपेक्षा अन्दर का मानसिक यज्ञ हजार गुणा श्रेष्ठ होता है। अत मनुष्य को चाहिये कि वह मन द्वारा अपनी आन्तर-अग्नि को जलाये, आत्माग्नि को प्रदीप्त करे,और इस प्रकार 'धी' को, सद्बुद्धि को, प्राप्त करले तथा सत्कर्म मे प्रेरित होता हुआ आत्मकल्याण को पा जावे। जो मनुष्य मनन करते हैं अर्थात् आत्मनिरीक्षण, आत्मचिन्तन विचार और भावना करते हैं, जाप करते हैं तथा धारणा, ध्यान, समाधि करते हैं, वे इन सब मानसिक प्रक्रियाओ द्वारा आत्मज्योति को जगा लेते हैं और उन्हे सत्यबुद्धि, ज्ञानप्रकाश, सदा ठीक कर्म मे ही प्रवृत्त कराने वाली समझ मिल जाती है। अत आज से मैं भी इस अग्नि को प्रदीप्त करूगा, विवस्वतो द्वारा–तमोनिवारक ज्ञानकिरणो द्वारा–इस अग्नि को प्रज्वलित करना प्रारम्भ करूगा। जैसे सूर्यकिरणो द्वारा ही ससार की सब प्रकार की ज्योतिया प्रदीप्त और प्रकाशित होती हैं, वैसे उस ज्ञान-सूर्य सविता परम आत्मा की किरणो द्वारा ही मैं अपनी आत्माग्नि को प्रदीप्त करूगा। सत्यज्ञान देनेवाले सब वेदादि ग्रन्थ, सत्य का उपदेश देनेवाले सब गुरु, आचार्य, मेरे अन्दर मन की सब सात्त्विक वृत्तिया ये सब उसी ज्ञान-सूर्य की भिन्न-भिन्न क्षेत्रो मे फैली हुई किरणे हैं, विवस्वत् हैं। मैं इन द्वारा आज से अपनी आत्माग्नि को प्रतिदिन प्रदीप्त करता जाऊगा। यही मेरे उद्धार का सीधा, साफ और चौडा मार्ग है।

प्रादेशिक सभा वा डी.ए.वी. वालों को शास्त्रार्थ की चुनौती

१९०८ मे देश की आर्यसमाजो ने मिलकर सार्वदेशिक का गठन इसलिये किया था कि सभी समाजो, सभाओ का मजबूत सगठन बनकर महर्षि दयानन्द वा वैदिक सिद्धान्तो की शिक्षा होगी। आज आर्यजगत् के सम्पादक ने महर्षि दयानन्द वा आर्यसमाज को मासाहारी मूर्तिपूजक साबित करने का बीडा उठाया हुआ है। इस मूल सिद्धान्त के हनन से आर्यसमाज की तो नींव ही हिल गई है। जिसके लिये २ **जून वा ७ जुलाई का आर्यजगत्** देखा जा सकता है। हमारी सार्वदेशिक को इस कुकृत्य पर कठोर कार्यवाही करनी चाहिये थी। किन्तु सार्वदेशिक सभा इनका मौन समर्थन कर रही है। क्योकि डी ए वी वालो ने सार्वदेशिक के अधिकारियो की अपने असीम साधनो से जबान बन्द कर रखी है। अब इन्हे मालाये डलवाने से ही फुर्सत नहीं है।

मैं सडक दुर्घटना के बाद शिथिलसा हो गया था। काम करने की शक्ति कम हो गई थी। किन्तु महर्षि दयानन्द आर्यसमाज के ऊपर हुये इस भयकर आक्रमण के कारण आर्यजगत् के विद्वानो, निष्ठावान् आर्यो और कार्यकर्ताओ के एक मास से लगातार पत्र और फोन आरहे हैं। कई विद्वान् तो दबाव देने के लिए मेरे घर ही पहुच गये। आर्यजगत् के सारे विद्वानो का समर्थन लेकर महर्षि दयानन्द सिद्धान्त रक्षिणी सभा, प्रादेशिक सभा वा डी ए वी से निवेदन करती है कि या तो वह महर्षि दयानन्द व आर्यसमाज के विरुद्ध अपनी बकवास बन्द करे या अपनी बात को साबित करने के लिये हमारा शास्त्रार्थ स्वीकार करे। शास्त्रार्थ **आर्यसमाज, आर्यनगर पहाड़गज, नई दिल्ली-५५** मे २७ अक्तूबर २००२ प्रात ९ बजे शुरू होकर निर्णय तक चलेगा।

उत्तर की प्रतीक्षा मे–**आर्यमुनि,** महर्षि दयानन्द सिद्धान्त रक्षिणी सभा, आर्यसमाज, आर्यनगर पहाडगज नई दिल्ली-५५

गृहप्रवेश के उपलक्ष्य में यज्ञायोजन सम्पन्न

ग्राम दूबलधन (झज्जर) मे दिनांक २२-७-०२ को नरेन्द्र सुपुत्र रिसलदार रतिराम के नवगृह-निर्माण के पश्चात् गृहप्रवेश के रूप मे यज्ञ-सत्सग का आयोजन किया, जिसमे स्थानीय आर्यसमाज के पदाधिकारी तथा अनेक गणमान्य स्त्री-पुरुष सम्मिलित हुये। डा० राजपाल बरहाणा प्राध्यापक राजकीय महाविद्यालय दूबलधन ने यज्ञ का सम्पादन कराया तथा उपस्थित श्रोताओ को वैयक्तिक एव सामाजिक दोषो से बचकर आर्यजीवन जीने की प्रेरणा दी। श्री भरतसिह, श्री फतेहसिह सैक्ट्री तथा बेरी वेदप्रचार मण्डल के अध्यक्ष श्री धारासिह का विशेष सहयोग व प्रेरणा रही। श्री रिसलदार रतिराम व श्री अजीतसिह को आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की साप्ताहिक पत्रिका का ग्राहक बनाया गया। श्री सिद्धान्ती धर्मार्थ औषधालय बरहाणा (झज्जर) के लिए १०१/- रु० दान दिये।

–मन्त्री आर्यसमाज दूबलधन, झज्जर

मा० शिवराम आर्य का निधन

अपने क्षेत्र मे गुरु जी के नाम से प्रसिद्ध ८३ वर्षीय मा० शिवराम आर्य का निधन १७ जुलाई २००२ को दिन के एक बजकर १५ मिनट पर होगया।

२८ जुलाई को उनके गाव सतनाली का बास (जिला महेन्द्रगढ) मे शोक सभा हुई जिसमे गुरुजी को श्रद्धासुमन अर्पित किए गये।

मा० शिवराम जी कर्मठ देशभक्त समाजसेवी थे। उनके बारे मे अधिक जानकारी के लिए उनकी पुस्तक **"शिव विचार तरगिणी"** पढे।

–वेदव्रत शास्त्री

वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज सिहमा जिला महेन्द्रगढ का वार्षिक उत्सव दिनाक ३-४ जुलाई, २००२ को मनाया गया। इस उत्सव मे श्री प० ताराचन्द वैदिक तोप, श्री खेमचन्द जगमाल, श्री जबरसिह खारी व सभा के भजनोपदेशक प० चिरजीलाल आर्य के भजन हुए। इस अवसर पर सभा को १८००/- रु० दान दिया गया।

मत्री आर्यसमाज सिहमा, जिला महेन्द्रगढ

आर्यसमाज मन्दिर गांधीनगर दिल्ली का निर्वाचन

प्रधान–श्री पूर्णचन्द विद्यार्थी, मत्री-श्री शिवशकर गुप्त, कोषाध्यक्ष-श्री रूपकिशोर अग्रवाल।

आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय जी.टी. रोड, पानीपत का वार्षिक परीक्षा परिणाम मार्च, २००२

(कक्षा १० जमा २ (बारहवीं)

	कला संकाय	**वाणिज्य संकाय**	**विज्ञान संकाय**
कुल छात्र	२८५	१००	७६
प्रवि०	०५	०१	०२
शेष	२८०	९९	७४
उत्तीर्ण	११४	७०	४७
पूरक	११३	१८	१०
उत्तीर्ण प्रतिशत	८१ ७८	८८ ८८	७७ प्रतिशत
बोर्ड पास प्रतिशत	४१ ६० प्रतिशत		

अनुक्रमाक ६५५२१८ अशोक कुमार पन्नु ४०४/५०० अक लेकर जनपद मे प्रथम रहा।

उत्तीर्ण प्रतिशत	८१ ७८	८८ ८८	७७ प्रतिशत

	मैट्रिकुलेशन परीक्षा	**मिडल परीक्षा**
कुल प्रविष्ट	१५९	९५
उत्तीर्ण	९८	६८
पूरक	२१	०७
अनुत्तीर्ण	४०	२०
उत्तीर्ण प्रतिशत	७४ ८४	७८ ७४
बोर्ड पास प्रतिशत	५८ ३३	६२ ७८

मैरिट=२, विजयकुमार ४७८/६००, महेश ४५७/६००, प्रथम श्रेणी १७। मैरिट २, अनुक्रमाक ५८४६२२, रविकुमार ५६३/७००, अनुक्रमाक ५८४६३७, अमित सागवान ५५१/७००, प्रथम श्रेणी=१७

–**दलीपसिंह,** आर्य वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, पानीपत

हरयाणा के वीर सपूत, महान् सुधारक, त्यागी, तपस्वी, महान् बलिदानी महात्मा भक्त फूलसिंह के ऐतिहासिक कार्य

हरयाणा की वीर भूमि मे २४ फरवरी १८८५ को महात्मा भक्त फूलसिह जी का सुगन्धित फूल गाव माहरा (जूआं) जिला सोनीपत मे खिला था। जिन्होने १९०८ में आर्यसमाज के सत्सग मे शामिल होते ही अपनी सुगन्धि चारो ओर बिखेर दी।

(१) लीगई रिश्वत वापिस की—आपने पटवारी की नौकरी करते समय जो रिश्वत ली थी, उसे सभी को अपनी पैतृक भूमि बेचकर वापिस कर दी। ऐसी मिशाल ससार के इतिहास मे नहीं मिलती और पटवारी से त्यागपत्र देकर शेष सारा जीवन समाजसेवा मे लगा दिया।

(२) गुरुकुलों की स्थापना—स्वामी श्रद्धानन्द जी से प्रभावित होकर आपने ग्राम माहरा मे ६ एकड के लगभग भूमि लेकर उसकी रजिस्ट्री आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम करवा दी। किसी कारण माहरा मे गुरुकुल न खुलने के कारण ग्राम भैंसवाल कला में गुरुकुल स्थापित किया। बाद मे कन्याओ के लिए भी ग्राम खानपुर मे कन्या गुरुकुल की स्थापना की। आजकल यह उत्तरी भारत में कन्याओ का सबसे बडा महाविद्यालय है।

(३) समालखा में बूचडखाना बन्द करवाया—गोहत्या करने के लिए मुसलमानो की माग पर सरकार ने समालखा मे बूचडखाना खोल दिया। भक्त जी अपने सहयोगियो के साथ हथियार लेकर वहा पहुच गये। जिला उपायुक्त ने झगडा बन्द करने के लिए बूचडखाना बन्द कर दिया परन्तु भक्त जी तथा उनके सहयोगियो को जेल मे डाल दिया। चौ० छोटूराम जी ने इस मुकदमे की पैरवी करके इन्हें रिहा करवाया।

(४) दलितों के लिए कुआं खुदवाया—ग्राम मोठ जिला हिसार मे दलित वर्ग के नरनारियो को उच्च वर्ग वालो ने उनको कुए से पानी लेने पर प्रतिबन्ध लगा दिया। भक्त जी वहा पहुचे और ग्रामवालो को समझाने का पूरा प्रयत्न किया परन्तु प्रतिबन्ध न हटाये जाने पर भक्त जी ने वहा २३ दिन का व्रत किया। चौ० छोटूराम जी मत्री पजाब ने आकर प्रतिबन्ध हटवाकर भक्त जी का व्रत खुलवाया। इस प्रकार दलितोद्धार कार्य सबसे पहले आर्यसमाज ने आरम्भ किया। उसके बाद महात्मा गाधी ने दलितो की हरिजन जाति पृथक् बनवाकर कार्य किया।

(५) हैदराबाद आर्य सत्याग्रह के महान् योद्धा—१९३९ मे हैदराबाद के नवाब ने आर्यसमाज के प्रचार पर प्रतिबन्ध लगा दिया। आर्यसमाज की ओर से इस प्रतिबन्ध को हटवने के लिए नवाब के विरुद्ध सत्याग्रह आरम्भ किया। जिला रोहतक, इसमे वर्तमान जिला सोनीपत तथा झज्जर सम्मिलित थे, की ओर से सत्याग्रह की सघर्ष समिति का अध्यक्ष भक्त जी को बनाया गया। रोहतक शहर मे जुलूस निकाले जाने पर मुसलमानो ने इन पर हम्ला कर दिया और घायल कर दिया। भक्त जी ने अपने क्षेत्र से हजारो सत्याग्रही भेजकर सत्याग्रह को सफल करने मे महत्त्वपूर्ण योगदान किया।

(६) लोहारू के नवाब के साथ संघर्ष—हैदराबाद के नवाब की भाति लोहारू के नवाब ने भी आर्यसमाज के प्रचार पर पाबन्दी लगा दी। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के नेतृत्व मे भक्त फूलसिह जी, चौ० नोनन्दसिह जी (स्वामी नित्यानन्द) आदि के साथ नवाब के विरुद्ध लोहारू मे जलूस निकाला। वहा भी नवाब के सिपाहियो ने आर्यनेताओ पर हमला करके गम्भीर चोटे पहुचाई। परन्तु अन्त मे लोहारू के नवाब को हार माननी पडी। वहा आर्यसमाज मन्दिर बनाकर आर्यसमाज का प्रचार किया।

(७) शुद्धि का प्रचार करने पर शहीद होगये—भक्त जी ने अपने पिछडे हुए मूले जाटो को वैदिक धर्म मे पुन लाने के लिए शुद्धि क प्रचार किया और अनेक स्थानो का भ्रमण करके मुसलमानो को समझाकर उन्हे वैदिकधर्मी (हिन्दू) बनाया। परन्तु कट्टर मुसलमान (राघड) इस शुद्धि के प्रचार को सहन नहीं कर सके और १९४२ मे तीज पर्व से एक दिन पूर्व कन्या गुरुकुल खानपुर मे गोलिया चलाकर शहीद कर दिया।

(८) भक्त जी के परोपकारी कार्य—भक्त जी ने ग्रामो मे आपसी झगडे सुलझाने के लिए पचायते कीं। ग्राम जुआ मे नहर पर कालान पाने के पास पुल न होने के कारण महिलाओ को घाघरा ऊचा करके नहर पार करनी पडती थी। भक्त जी ने जब यह महिलाओ का अपमान होते देखा तो चौपाल मे एक सप्ताह तक भूख हडताल करके वहा पुल बनवाया।

इस प्रकार के भक्त जी ने अनेक परोपकार तथा समाजसुधार के कार्य किये थे। **—केदारसिंह आर्य,** (जुआ), उपमत्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

भजन

टेक—छुप गया हरयाणे का भान होगया घोर अन्धेरा है।

सावन सुदी दोज शुक्रवार, तारीख चौदह अगस्त है यार।
खानपुर जगल के दरम्यान, भक्त का जोहड पै डेरा है।।१।।
आठ बजे रात बड के पास, आराम करे भक्त जी खास।
आये तीन चले बेईमान बैटरी का करा उजियारा है।।२।।
आते ही भक्त लिया पहचान, मारी छाती मे गोली तान।
लगते ही उडे पखेरु प्राण, मुख से कुछ नहीं टेरा है।।३।।
भक्त का हुआ स्वर्ग जाना, सूना होगया हरयाणा।
बन गया बिल्कुल ही श्मशान होगया भूत बसेरा है।।४।।
सूनी हुई पचायत आज, होगये पच बिना सरताज।
रिश्वतखोर लगे माल उडाने, तके ना मेरा तेरा है।।५।।
कन्या विधवा बहुत दु:खी, बनावे इनको कौन सुखी।
लगी औरो के संग जाने या तके कुआ झेरा है।।६।।
है गय्यो पर दु:ख भारी, बिना मौत जावे मारी।
रो रहा बैलों बिना किसान, किसी को नहीं बेरा है।।७।।
पहुचे स्वर्ग बीच में आप, हम रह गये बिन बाप।
'**नित्यानन्द**' कहे हो हैरान, कहा ठिकाना तेरा है।।८।।

अब्दुल्ला बने रविन्द्र ने फिर हिन्दू धर्म अपनाया

राई (सोनीपत) जेठली मंदिर प्रकरण में तोडे गए मन्दिर को न बनाने पर इस्लाम धर्म स्वीकार कर रविन्द्र से मोहम्मद अब्दुल्ला बने व्यक्ति ने रविवार को एक बडी पचायत मे फिर से हिन्दूधर्म को अपना लिया। आर्यसमाज के प्रबुद्ध लोगो की उपस्थिति मे धर्म परिवर्तन की रस्म पूरी कराई गई। पचायत मे आर्यसमाज के प्रेमसिह दहिया (गढी बाला), मास्टर ओमप्रकाश (माहरा), महाशय टेकचन्द (गुरुकुल कालवा, जीन्द), रामचन्द्र शास्त्री (रोहणा), चन्द्रभान हरियाणवीं (गढी ब्राह्मणा), ओमप्रकाश दहिया (तिहाड खुर्द), सीसराम (महलाना), लोजपा महासचिव वजीरसिह दहिया, हल्का अध्यक्ष धर्मेन्द्र दहिया व बारह गाव के पूर्व प्रधान दलेलसिह ने गाव की चौपाल मे सारे गाव की उपस्थिति मे मोहम्मद अब्दुल्ला को फिर से हिन्दू धर्म अपनाने का आग्रह किया। महाशय टेकचन्द ने कहा कि कोई भी समस्या बातचीत से हल हो सकती है। धर्म परिवर्तन जैसा बडा कदम नहीं उठाया जाना चाहिए। गाव वालो के आग्रह पर मोहम्मद अब्दुल्ला ने हिन्दू धर्म अपनाने की घोषणा कर दी। महाशय टेकचन्द व रामचन्द्र शास्त्री ने जनेऊ व मत्रोच्चारण के साथ मोहम्मद अब्दुल्ला को फिर से रविन्द्रकुमार बना दिया। रविन्द्रकुमार ने कहा कि उसने हिन्दूधर्म की उपेक्षा होने पर ही धर्म बदला था। गाव मे तनाव समाप्त करने के लिए वह फिर से हिन्दूधर्म अपना रहा है। उसने कहा कि दान की गई भूमि पर वह एक सप्ताह मे मंदिर बनवाना आरभ कर देगा। पचायत मे गाव के अधिकाश युवक व बुजुर्ग उपस्थित थे।

साभार—दैनिक भास्कर, २९-७-२००२

वेद-विशेषाङ्क

आपके प्रिय साप्ताहिक पत्र सर्वहितकारी का श्रावणी पर्व के उपलक्ष्य मे वेद-विशेषाक का प्रकाशन किया जा रहा है। सर्वहितकारी के विद्वान् लेखक महानुभावो की सेवा मे निवेदन है कि वे इस विशेषाक के लिए अधोलिखित शीर्षक से अपने सक्षिप्त सारगर्भित लेख दिनाक १५ अगस्त, २००२ तक सभा-कार्यालय मे भेजने का अनुग्रह करे

(१) वेदो की उत्पत्ति।
(२) वेद और यज्ञ विधान।
(३) वेदो मे सृष्टिविद्या।
(४) वेदो मे ब्रह्मविद्या।
(५) वैदिक उपासना का स्वरूप।
(६) वैदिक वर्ण आश्रम व्यवस्था (समाज व्यवस्था)।
(७) पाच महायज्ञो की आवश्यकता।
(८) गोतम-अहल्या आदि आख्यानो का स्वरूप।
(९) वेद और मूर्तिपूजा।
(१०) वैदिक शिक्षा पद्धति।

—यशपाल आचार्य, सभामन्त्री

सत्यार्थप्रकाश का प्रचार करें

❑ दयाराम पोद्दार झारखण्ड राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा, रांची

इस्लाम और ईसाइयत की तरह आर्यसमाज भी एक धर्मप्रसारक आन्दोलन है लेकिन ईसाई धर्मप्रचारक अपने धर्म के प्रचार के लिए अपने धर्मग्रन्थ बाइबिल का जितना प्रचार एव प्रसार के लिए प्रयासरत रहते हैं उसका एक स्वल्प अश भी सम्प्रति आर्यसमाज के लोगो मे दृष्टिगोचर नहीं होता है। दुनिया का शायद ही कोई देश होगा जिसकी भाषा मे बाइबिल का अनुवाद न हुआ हो। सम्पूर्ण विश्व मे बाइबिल सोसाइटी बाइबिल का अनुवाद कराकर लोगो को सस्ते मूल्य पर बाइबिल उपलब्ध कराती है। भारत मे २१ फरवरी, १८११ को फोर्ट विलियम कालेज मे कलकत्ता आग्जीलियरी बाइबिल सोसाइटी की स्थापना की गई। इस सोसाइटी के अधीन १८३२ ई० तक भारत की ४० भाषाओ मे बाइबिल का अनुवाद हो चुका था। बाइबिल सोसाइटी के लिये यह गर्व का विषय है कि भारत सरकार के प्रकाशन के पश्चात् सर्वाधिक प्रकाशन का श्रेय बाइबिल सोसाइटी को ही है। इस सोसाइटी के द्वारा अभी तक विश्व की बारह हजार भाषाओ (बोलिया सहित) मे बाइबिल अनुवादित हो चुका है।

झारखण्ड राज्य मे बाइबिल सोसाइटी का गठन १९९६ ई० मे हुआ। यहा ईसाइयत का प्रवेश १८४५ ई० मे हुआ था। झारखण्ड मे २७ बोलिया प्रचलित हैं। यहा आदिवासियो की ३० प्रमुख जातिया हैं जिसमे सथाल, मुण्डा और उराव की आबादी सर्वाधिक है। इन तीन प्रमुख आदिवासी भाषाओ मे बाइबिल उपलब्ध है। झारखण्ड मे सर्वत्र प्रचलित नागपुरिया मे भी बाइबिल छप चुकी है। झारखण्ड मे ईसाई धर्म को माननेवालो की प्रभावशाली सख्या है। इसकी तुलना मे आर्यसमाज कहा है? आर्यसमाज की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण पुस्तक सत्यार्थप्रकाश है। देश-विदेश की केवल २३ भाषाओ मे सत्यार्थप्रकाश का अनुवाद हुआ है। अर्थात् बाइबिल की तुलना मे केवल एक हजारवा प्रतिशत। आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध विद्वान् और लेखक उमाकात उपाध्याय (कोलकाता) ने अपनी पुस्तक "युगनिर्माता सत्यार्थप्रकाश" (प्रकाशन वर्ष १९९० ई०) मे १८८४ ई० से १९९० ई० तक १०६ वर्षो मे विभिन्न आर्यप्रकाशको द्वारा सत्यार्थप्रकाश के प्रकाशन की सख्या साढे बीस लाख बताई है। यदि हम गत १२ वर्षो की सत्यार्थप्रकाश की प्रकाशन सख्या का अनुमान करले तो सत्यार्थप्रकाश की कुल सख्या २५ लाख होगी जो बाइबिल की तुलना मे काफी कम है। पौराणिक हिन्दुओ के एक प्रमुख प्रकाशन गीताप्रेस गोरखपुर ने गीता और रामचरितमानस और तुलसी साहित्य की क्रमश ५ करोड और ५ करोड ५३ लाख प्रतिया प्रकाशित की हैं। आर्यसमाज के लोग विचार करे कि हम कहा खडे हैं?

बाइबिल सोसाइटी पिछले कई वर्षो से सस्ते मूल्य पर बाइबिल प्रकाशित करके बेचती है। पर पहले बाइबिल बहुत महगी थी। बाइबिल खरीदना लोगो के लिए स्वप्न के सदृश था। वेल्स देश (यूरोप) की एक १० वर्षीय बच्ची मेरी जॉन्स का अपने धर्मग्रन्थ बाइबिल की प्राप्ति के लिये तीव्र लालसा और त्याग ने विश्व के ईसाई समाज को झकझोर दिया था। मेरी जॉन्स ने ६ वर्षो तक बाइबिल की एक प्रति खरीदने के लिए आजीविका उपार्जन के क्रम मे अल्प राशि जमा करते-करते पर्याप्त राशि एकत्र की और बाइबिल खरीदी। मेरी द्वारा बाइबिल की प्राप्ति के लिये किये गये लगन और निष्ठा का परिणाम बाइबिल सोसाइटी के रूप मे विश्व को प्राप्त हुआ। ७ मार्च १८०४ को लदन मे ब्रिटिश एण्ड फोरेन बाइबिल सोसाइटी का गठन किया गया जो आज सर्वत्र बाइबिल सोसाइटी के नाम से किसी परिचय का मोहताज नहीं है।

सत्यार्थप्रकाश के लेखन स्थल (उदयपुर) मे सम्प्रति एक न्यास कार्यरत है जो एक स्थानविशेष को स्थूल स्मारक का रूप देने मे स्वशक्ति एव सामर्थ्यानुसार लगा हुआ है। पर किसी महापुरुष का सच्चा स्मारक तो उसकी शिक्षाओ को अधिकाधिक प्रसारित करने में निहित है। इस दृष्टि से सत्यार्थप्रकाश को हर एक पठित लोगो तक पहुचाना हमारा ध्येय होना चाहिये। इसके लिये समर्पित भाव से सामूहिक कार्ययोजना की आवश्यकता है। यह आवश्यक नहीं है कि बडी-बडी सस्थाये एव बडे-बडे कहे जानेवाले लोग ही यह कार्य करेगे। प्रत्येक व्यक्ति स्थान और परिस्थिति के अनुकूल कार्य करने मे स्वतत्र है। महात्मा नारायण स्वामी ने अपनी आत्मकथा मे बिजनौर (उत्तर प्रदेश) के एक अनपढ आर्यसमाजी चौकीदार की कथा लिखी है जिसमे चौकीदार रात्रि मे पहरा देते समय प्रचलित नारे के स्थान पर पाच हजार वर्ष के सोनेवालो को जागते रहने का नारा लगाता था। प्रात काल मे लोगो के द्वारा उक्त नारे का अर्थ पूछने पर वह लोगो से सत्यार्थप्रकाश का मूल्य लेकर उन्हें वह पुस्तक मगाकर दे देता था। काश! ऐसी प्रचार भावना हम मे भी होती?

आज धार्मिकता के नाम पर पाखण्ड, गुरुडम और अन्धविश्वास बढ रहा है। प्रश्न यह है कि जो कार्य अकेले दयानन्द ने बिना किसी साधन के किया था, उस कार्य की पूर्ति के लिये दयानन्द के नामलेवा लोग क्या कर रहे हैं? आर्यसमाज को रोजगार का साधन मानकर स्वार्थी और अवसरवादी तत्त्व आर्यसमाज के सगठन को नष्ट-भ्रष्ट करने मे लगे हुए हैं। अत आर्यसमाज के मिशनरी कार्य को बढाने में हम अपने आपको अशक्त और निरुपाय समझ रहे हैं। वस्तुस्थिति ऐसी नहीं है। आज आर्यसमाज के सन्देश को फैलाने के लिये जितनी अनुकूल परिस्थितिया हैं उसका लाभ उठाकर प्रत्येक आर्य सदस्य को हनुमान की तरह अपनी शक्ति को पहचानने की आवश्यकता है। क्या हम अवसर का लाभ उठा सकेगे? यह हमारे कार्य और दूरदृष्टि पर निर्भर करता है। सत्यार्थप्रकाश के प्रचार और प्रसार के लिये हम कटिबद्ध हो, जो लोग चाहते हैं वहा तक आर्यसमाज के सन्देश को पहुचाये तभी हम ऋषि के ऋण से मुक्त हो सकेगे।

एक छोटी घटना—झारखण्ड राज्य के प्रथम राज्यपाल श्री प्रभातकुमार आर्यसमाज राची के परिसर मे मानसिक विकलाग और मन्दबुद्धि छात्रो के लिये किये जारहे कार्यो के अवलोकनार्थ आये हुए थे। उनके प्रस्थान करने के पूर्व मैंने उन्हे आर्यसमाज की ओर से कुछ पुस्तके भेटस्वरूप दीं। उन्होने मुझसे पूछा कि क्या भेट की पुस्तको मे सत्यार्थप्रकाश भी है? मेरे द्वारा हा कहने पर उन्होने तत्काल कहा कि मैं सत्यार्थप्रकाश को अवश्य पढ़ूगा। उनका उत्तर सुनकर मेरा मन खुश हो गया। पर क्या हम सत्यार्थप्रकाश को विश्व के प्रत्येक पठित लोगो तक उनकी ही भाषा मे नि शुल्क या नाम मात्र के मूल्य मे नही पहुचा सकते हैं? यह हमे सोचना और विचारना होगा कि यह कार्य कैसे होगा? इस प्रश्न का उत्तर तलाश करने मे ही समस्या का समाधान छिपा हुआ है। आवश्यकता है कि हम इस पर चिन्तन करें।

विश्व मंगल मूल महिला का सर्वागीण विकास चाहने वाले 'प्रथमपुरुष' को

❑ आचार्य आर्यनरेश वैदिक गवेषक, उद्‌गीथ साधना स्थली, (हिमाचल) डोहर (राजगढ) पिन—१२३१०१

गतांक से आगे...

दु खो से पूर्ण मुक्ति व विश्वशान्ति हेतु आदि संविधान निर्माता महाराज 'मनु' ने नारी को कुछ विशेष सुविधाए दी हैं। जिससे वह सुरक्षित, सम्मानित व प्रसन्नचित्त रहकर विश्वमानवो का ठीक निर्माण कर सके। महर्षि मनु स्वरचित शास्त्र मनुस्मृति २ ११३ में लिखते हैं कि **'स्त्रिया पन्था देय.'** अर्थात् सामान्य पुरुष तो क्या अपितु राजा भी महिलाओ को प्रथम जाने का मार्ग दे। मनु ने ९ ९६ मे कहा है कि नारी के अधिकार पुरुष से कम नहीं हैं। ४ १८० व ८ १७५ मे कहा है कि पति 'पत्नी' से झगडा न करे, अपशब्द न कहे और उस पर झूठे इल्जाम न लगाए। यदि वह ऐसा करता है तो मनु १८ १७५ के अनुसार उसे १०० पण दण्ड देता है। मनुस्मृति ९ १० के अनुसार कोई भी व्यक्ति नारी को मनमानी से दमनपूर्वक रखने का कुप्रयास न करे। नारी धरती की शान है। यदि सब पुरुषो की अकस्मात् मृत्यु भी हो जाये तो भी मात्र नारी से ससार चल सकता है, क्योकि कोई न कोई नारी गर्भवती होगी। जिन तथाकथित धार्मिक पाखण्डी लोगो ने नारी को विधवा होने पर सती करने की बात कही है, नरक का द्वार या दण्ड के योग्य कहा है, उन्हे शर्म व बुद्धि आनी चाहिए। नर को जन्म देनेवाली नारी नर से बडी है और विचारो से ही उसका सुधार सभव है। इसलिए महर्षि देवदयानन्द ने विश्व मे सर्वप्रथम प्रत्येक साधारण से साधारण नारी को विधवा होने पर पुन विवाह करने का अधिकार दिया है। क्या पत्नी के मरने पर कोई पति जलना चाहेगा ? यदि नहीं, तो फिर नारी क्यो ? वेद मे भी कहीं नारी को सती बनने का विधान नहीं है। वहा तो पुन विवाह का ही विधान है।

'अर्थस्य संग्रह चैनाम्' मनु० ९ ११ मे कहा है कि सुपठित पत्नी ही घर के कोष की अधिकारिणी है। पुरुष उसे इससे वचित न करे। जिसके घर मे ज्ञानवान् धर्मशीला गणिताज्ञा व आयुर्वेदयुक्ता योग्य नारियो को सम्मान मिलता है, वहा देवताओ का वास होता है, जिससे वह घर स्वर्ग बन जाता है। महाराजा मनु अपनी स्मृति के २ १०४ मे कहते हैं कि कोई भी पुरुष अपनी पत्नी, बहिन या बेटी को छोडकर किसी अन्य नारी को उसका नाम लेकर न पुकारे। पुरुष का कर्त्तव्य है कि वह परनारी को सदा 'भवती, आप, सुभगे, सौभागयशालिनी या भगिनी (बहिन) कहकर ही पुकारे। मनु० ३ ५५ श्लोक में लिखते हैं कि **'पितृभि. भ्रातृभिश्चैता. पूज्या:'** अर्थात् पिता, भाई या पति आदि सब पुरुष लोग नारी का सदा सत्कार करने वाले हो। आजकल के कलियुगी पिता, शराबी पति तथा मनमानी करने वाले जिद्दी भाई इस पर गम्भीरता से विचार करे। बेटी बहू या पत्नी आदि नारियो से वेश्यावृत्ति का पाप करवाने वाले मजहबी लोग भी विचारे। जो लोग धन या अभिमान के कारण यू ही पत्नियो को तलाक देकर छोड देते हैं, उनके लिए महाराजा मनु ८ ३८९ मे **'दण्डय शतानि षट्'** अर्थात् छह सौ पण के दण्ड का विधान करते हैं। कोई भी नादान व्यक्ति कन्या को दान करने की जबान रहित जड वस्तु न समझे। वस्तुत कन्यादान शब्द का अर्थ भी कन्या के लिए दिया गया दान है न कि कन्या कोई जड वस्तु के समान दान की चीज है। वस्तुत प्राचीन काल मे 'कन्या' को वही वर सकता था जो ब्राह्मण होने पर शास्त्रार्थ मे जीत जाए व क्षत्रिय होने पर शस्त्र प्रतिस्पर्धा मे जीत जाए। वह दान की वस्तु नहीं अपितु वह दान करनेवाली दोनो घरो की मालकिन है। इसलिए मनुस्मृति ९ १९२ मे कन्या को अपनी माता के धन पर भी बराबर का अधिकार दिया है। प्रत्येक नारी को मास मे चार या पाच दिन पूर्ण छुट्टी देने का शास्त्र विधान करते हैं। इन दिनो मे वह कुछ भी कार्य नही करती। केवल ब्रह्म व धर्म का विचार करती है। आजकल के नेता उसे क्या छुट्टी देंगे ? उसे तो सृष्टि के आदि से ही वैदिक ऋषियो ने छुट्टी दे रखी है।

दहेज की समस्या पर वैदिक मनु लिखते है—**'विक्रेयस्तावदेव स'** ३ ५३ वरपक्ष का जो व्यक्ति कन्या के विवाह के समय दहेज आदि को मागता है, वह समझो कि अपने पुत्र को (पशु के समान) उस कन्या के लिए बेच रहा है। ऐसा हीन कर्म कभी भी किसी को न करना चाहिए। वैदिक धर्मानुसार सत्य तो यह है कि 'नारी' पुरुष के समान नहीं अपितु उससे भी बडी है, क्योकि वह नर की जन्मदात्री है इतना ही नहीं अपितु नर के निर्माण करने वाली प्रथम गुरु है। जो लोग लडकी होने के डर से गर्भपात करवाते हैं, वे महापापी व अपराधी हैं। इस सामाजिक पाप से बचने का यही उपाय है कि हम दहेज, जातिवाद व प्रान्तवाद से बचे और नारिया अपने को शक्तिहीन अबला व हीन न समझे। जातिवाद व प्रान्तवाद के हट जाने से विशाल क्षेत्र में योग्यवर मिलेंगे। असकुचित जाति से लडको का भाव नहीं बढेगा। जब नारिया अपने आपको अधिक महान् व बलवान् समझेगी तथा इस बात का समाज मे प्रचार होगा तो उनके प्रति अत्याचार स्वत ही कम हो जायेंगे। (शेष जानकारी हेतु हमारी पुस्तक नारी 'राख या चिगारी' पढें।) अन्त मे हम आर्यसमाज के सस्थापक व भारत की स्वतत्रता के सूत्रधार महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती को भावभीनी श्रद्धाजलि देते हैं। जिनके महान् प्रयास के फलस्वरूप पैर की जूती पीटने की वस्तु व नरक का द्वार कहलाने वाली नारी को फिर सम्मान मिला तथा सदा से एक लम्बे घूघट मे, डर-डरकर कमर झुकाकर चलने वाली विश्वमहिला को सर का ताज, उच्च राजकाज व समाज मे सब पुरुषो के समान अधिकार मिले। महर्षि देवदयानन्द व उसके आर्यसमाज के पुरुषार्थ से ही विश्व का प्रथम कन्या विद्यालय पजाब के हरयाणा ग्राम मे खुलकर ऋषि की कृपा से ही नारियो को बालहत्या बालविवाह व सतीप्रथा से छुटकारा तथा पुनर्विवाह का अधिकार मिला। इस महिला सशक्तिकरण वर्ष पर उस महान् नायक दयानन्द सरस्वती को हम बार-बार प्रणाम करते हैं। इस पावन अवसर पर उस महान् ऋषि के ऋण को चुकाने हेतु आप यह सकल्प करे कि पुराण, कुरान या बाइबिल आदि किसी भी ग्रथ मे या मजहब मे नारियो का अपमान या अवहेलना करनेवाला कोई शब्द न रहे। इन ग्रन्थो अथवा उनकी पक्तियो पर प्रतिबन्ध लगे। विशेष जानकारी हेतु महर्षि दयानन्द का जीवन चरित्र व अमरग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश पढे। भारत सरकार से हमारा अनुरोध है कि गर्भस्थ शिशु के स्वास्थ्य की जाच हेतु बारह सप्ताह की अवधि रखे। क्योकि तब तक यह नहीं पता चलता कि गर्भस्थ बालक नर है या मादा। इससे कन्याओ की हत्या बद हो सकेगी। बच्चा ५ वर्ष से नहीं अपितु ४ मास से ही गर्भाशय मे शिक्षित होना आरम्भ हो जाता है-'अभिमन्यु को गर्भ मे ही चक्रव्यूह शिक्षा देना' आज का वैज्ञानिक सिद्ध कर रहा है।

—लण्डे टाईमज लण्डन

क्वींज यूनिवर्सिटी वैलफास्ट के एक मनोविज्ञान के आचार्य की एक टीम २० गर्भवती महिलाओ के गर्भ के बच्चो को उनके पेट के साथ आवाज सुनाने वाले यन्त्रो से उन्हे शिक्षा सुनाते हैं। टेप कैसेट द्वारा पेट मे पडे उस मास लुथडे को जो १५ सप्ताह पश्चात् सूक्ष्मरूप से आकार ले लेता है। उसे शिक्षित किया जाता है। वैज्ञानिक इस बात को अब सिद्ध कर चुके हैं कि बच्चे वही कुछ जीवन मे धारण करते हैं जो वह सुनते हैं। गर्भ के काल मे वह जो कुछ सुनते हैं उसका उनके जीवन पर प्रभाव पडता है। स्कूल के बच्चो पर एकदम किसी बहुत तेज आवाज का बहुत प्रभाव पडता है। प्रो० पीटर जो इस टीम के मुख्य हैं, का कहना है—अभी प्रयोग कर रहे हैं कि गर्भ की शिक्षा का बच्चे के जीवन पर क्या प्रभाव पडता है। इससे पूर्व टोकियो मे भी इस सम्बन्ध मे खोज हो रही है। जहा पर दो गर्भवती महिलाओ को सवाद रूप मे आपस मे बाते करने को कहा जाता है। जापानी अध्यापक मोटू फूटामुरा का कहना है हम गर्भवती महिलाओ को कहते हैं, वह एकान्त मे बैठकर अपने गर्भ मे पल रहे बच्चे से बात करे। उसे अपनी शिक्षा दो—जो तुम उसे पढाना चाहती हो।' पिता भी जब काम से वापस घर आए तो गर्भ मे पल रहे अपने बच्चे को शिक्षित करे। गर्भ मे बच्चा आपकी बाते सुनने की प्रतीक्षा मे होता है। अनुभवी विद्वानो का ख्याल है। पूर्व की शिक्षा नर्सरी मे शिक्षा ग्रहण करने मे सहायक होती है। दो-तीन वर्ष की आयु तक ही बच्चे को आप अपने विचारानुसार बना सकते हैं। पाच वर्ष तक तो बहुत देरी है। बच्चे के मन पर वातावरण का प्रभाव पडता है। जन्म से पूर्व बच्चा आपकी बातो को शीघ्रता से धारण करता है। जिस बच्चे को कोई आवाज नही सुनती वह बुत्त समान ही पैदा होता है। जापानी फिल्मी अभिनेत्री (३५) एक ऐसी माता है जिसने अपने बच्चे को गर्भ से शिक्षा आरम्भ की। उसके हैंनरी नाम का बेटा हुआ। उसका कहना है जो म्यूजिक वह गर्भ मे सुनता था जन्म के पश्चात् वह उस म्यूजिक को सुनकर आराम से सो जाता था। काटी वणो ४० वर्षीय एक माता का कहना है उसने अपने गर्भ के साथ एक टेप के द्वारा बाते की। डाक्टरो का कहना है—उसके दोनो जुडवे बच्चे (पाच मास) बहुत चचल उद्योगी प्रसन्नवदन है। मेरा पति टेपरिकार्डर मेरे पेट पर रख देता था वह टेपरिकार्ड इटली भाषा मे होते थे। अब मेरे बच्चे जब मैं उनसे इटली की भाषा मे बोलती हू वह दोनो बहुत प्रसन्न होते हैं। मेरा पति घण्टो उनसे इटली भाषा मे बाते करता रहता है। शैफील्ड यूनिवर्सिटी के डॉक्टर अगोला फोर्सट का कहना है। कुछ बच्चे शीघ्र पढना सीख जाते हैं, साइकिल पर चढना शीघ्र सीख जाते है परन्तु जो गर्भ अवस्था मे बुत्त समान रहते हैं वह ऐसा नहीं करते। एक अध्यापक का कहना है; मेरे पास जब किसी छात्र के माता-पिता बच्चे की पढाई सम्बन्ध मे शिकायत लेकर आते है। मैं उन्हे पूछता हू तुमने बच्चो के लिए कितना समय दिया। एक पिता ने बताया जब तक मैं अपने बच्चे को दैनिक पढाता था वह अपनी कक्षाओ मे अच्छे नम्बर लेकर पास होता था। परन्तु किसी कारणवश मैं उसे समय न दे सका। वह अपनी परीक्षाओ मे फेल होने लग गया।

विश्वशान्ति का मार्ग—गुरुकुल शिक्षाप्रणाली

❑ डा० विजेन्द्रपालसिंह चौहान, चन्द्रलोक, खुरजा (उ०प्र०)

विश्व मे भारत का स्थान आध्यात्मिक क्षेत्र मे सर्वोच्च रहा है। ज्ञान हेतु भारत विश्व का गुरु था और विश्व के छात्र यहा ज्ञानप्राप्ति हेतु आते थे। यहा से ही छात्र धर्म व सस्कृति का ज्ञान प्राप्त कर अपने-अपने देशो मे जाते थे और ज्ञान का प्रकाश करते थे। भारतीय सस्कृति का प्रभाव प्राचीनकाल से ही अन्य देशो मे भी रहा। जब तक वैदिक ज्ञान का प्रवाह सर्वत्र होता रहा चारो ओर सुख-समृद्धि व शान्तिव्यवस्था बनी रही, परन्तु जबसे वेद व सत्यज्ञान के शास्त्रो का विश्व मे प्रचार-प्रसार अवरुद्ध हो गया, अज्ञान बढता गया। राजा व प्रजा वेदमार्ग छोड लोभ, मोह आदि के वशीभूत होकर छोटे बडे झगडे करने लगे। वेदमार्ग को भूलकर अपने अनुसार नए-नए मतो को बनाया तथा प्रजा को डरा धमकाकर व हिसा आदि से उस अवैदिक मत-मतान्तरो पर चलने चलाने को कहने लगे। आज विश्वभर मे अशान्ति अन्याय, लडाई व आतकवाद का कारण ही वेदविरुद्ध मत-मतान्तरो का मानना है। वेद मे जैसा शुद्ध, पवित्र, वैज्ञानिक व **सर्वे भवन्तु सुखिन** जैसे भावाभिव्यक्ति वाला श्रेष्ठ ज्ञान है वैसा अन्यत्र कहीं नहीं। वेदज्ञान से ही सर्वत्र सुख व शान्ति हो सकती है और वेद की शिक्षा का स्थान है—गुरुकुल व आश्रम, जहा आज के प्रदूषित भौगोलिक व मानसिक वातावरण से अलग नगरो से दूर शान्त सुरम्य वातावरण मे ब्रह्मचर्य को धारण रखते हुए वैदिक विद्वान् व आचार्यो सन्यासियो द्वारा शिक्षा दी जाती है। गुरुकुलो मे सम्पूर्ण सृष्टि के उपकारार्थ ज्ञान का प्रकाश किया जाता है। आज की शिक्षा व्यवस्था मे अनेक दोष है। आई ए एस व पी सी एस करने वाले, पी-एच डी व अन्य बडी-बडी डिग्रिया लेनेवाले अधिकाश लोगो के जीवन भ्रष्टाचार व अपराधो से भरे पडे हैं जबकि गुरुकुलो मे सत्याचरण की शिक्षा लेनेवाले वेदादि की शिक्षा को धारण करनेवाले छात्रो ने सदैव यश व प्रतिष्ठा ही अर्जित की है, राष्ट्र का मस्तक ऊचा किया और अनुकरणीय कार्य कर प्रसिद्धि प्राप्त की है। यदि राष्ट्र व विश्व को श्रेष्ठ बनाना है तो गुरुकुलो पर विशेष ध्यान देना होगा।

प्राचीनकाल से भारत मे गुरुकुल शिक्षाप्रणाली ही चली आरही है। महाराजा दिलीप, रघु, मर्यादापुरुषोत्तम राम, कृष्ण, अर्जुन, भीम जैसे राजा और विश्वामित्र, वशिष्ठ, पतजलि, याज्ञवल्क्य, कणाद, जैमिनि जैसे ऋषि तथा मैत्रेयी, सुमित्रा, कौशल्या, सीता, उर्मिला, कुन्ती, माद्री, उलोपी, विद्योत्तमा जैसी सन्नारिया वैदिक शिक्षा प्राप्त किए हुए थी। गुरुकुलो मे बालक व बालिकाए अलग-अलग रहकर शिक्षा प्राप्त करते थे और उनमे से ही अधिकाशत अपनी महत्ता हेतु आज भी प्रसिद्ध हैं।

आज देश के कर्णधार जिन विद्यालयो मे पढे हैं, अधिकतर ऐसे विद्यालय पाश्चात्य शिक्षापद्धति मैकाले की शिक्षा के स्रोत हैं, जहा भारतीय शिक्षा, वैदिक ज्ञान सदाचार की शिक्षा, भारतीय गौरवमय इतिहास की शिक्षा, सस्कृत व सस्कृति का ज्ञान ही नहीं मिलता। ऊचे भवनो मे, वातानुकूलित कक्षो मे, आमोद व प्रमाद के साधनो से पूर्ण ऐसे विद्यलयो में दूषित वातावरण में शिक्षा दी जाती है माता को मम्मी, पिता को डैडी, भाई के स्थान पर लडके-लडकिया एक-दूसरे को दोस्त बताते हैं। भाई-बहन के स्थान पर उनकी फ्रैंडशिप चलती है। घरो पर टी-पार्टी अटैंड करते हैं। होटलो मे जाते, घरो मे बैठकर ऑडियो, वीडियो पर पाश्चात्य धुन व अश्लील चलचित्रो को देखते व उसकी ताल पर थिरकते हैं जहा कामुकता व व्यभिचार उत्पन्न होता है। आज विदेशी चैनल व भारतीय सिनेमा अश्लील तथा गन्दे दृश्यो को दिखाकर शिक्षा व समाज के वातावरण को प्रदूषित कर रहे हैं। समाचारपत्रों मे ऐसे समाचार ही अधिक होते हैं जिनमे नादान व विवाहित स्त्री-पुरुषो के घर से भागने व भगाने की होती है। हिसा का वातावरण चारों ओर बन गया है। धन व सम्पत्ति को लेकर झगडो की बाढसी आ गई है। आज राज्यव्यवस्था भी दूषित होगई है। चुनावो में जातीय समीकरण लगाना, असमान कानून तथा राज्याधिकारियो द्वारा भ्रष्टाचार रिश्वतखोरी आदि बढ रही है यहा तक कि बहुत से मंत्रियो के मध्य हिसा का वातावरण बना हुआ है। परिवारो से लेकर राज्य व अन्तर्राज्यीय व्यवस्थाओ मे असन्तोष व्याप्त है। इन सबका कारण है कि विद्यालयो से श्रेष्ठ ज्ञान का प्रकाश नहीं हो पा रहा। शिक्षापद्धति दोषपूर्ण है। विद्यालयो मे सत्याचरण, राष्ट्रभक्ति पर बल नहीं दिया जाता।

विद्यालय नगरो के मध्य स्थित हैं। छात्र शिक्षा हेतु आते हैं। दीवारो पर लगे अश्लील दृश्यो के पोस्टर देखते व पढते हैं। वहीं पर विद्यालय स्थित हैं तथा उससे लगा हुआ सिनेमा हाल है, जहा बच्चे घर व विद्यालय से निकलकर अश्लील चित्रो को देखते हैं। विद्यालय के बाहर ध्वनि विस्तारक यत्रो की आवाज, विवाह समारोहो मे तीव्र आवाज के वाद्यो की कान फोडनेवाली ध्वनि व वाहनो की तेज आवाज मे क्या छात्रो की शिक्षा चल सकती है ? घरो मे भी आधुनिक प्रमोद के साधन ऑडियो, वीडियो, टीवी आदि से भी शिक्षा पर कुप्रभाव पडता है। इधर अध्यापको व छात्रो मे अधिकाशत पानमसाला, गुटखा व मादक द्रव्य सेवन का बढता प्रभाव, ट्यूशन का धन्धा और अनैतिकता का पाठ राष्ट्र को श्रेष्ठ नायक व अधिकारी नही दे सकता।

गुरुकुल शिक्षापद्धति इन दोषो से रहित श्रेष्ठ व उच्च कोटि की है। विद्यार्थी केवल विद्याध्ययन हेतु ही गुरुकुल मे रहते हैं। छात्रो का शरीर व मन पवित्रता से भरा होता है। ब्रह्मचर्याश्रम मे रहते हुए पाप व बुराइया उन्हे नही छू पाती। लोभ, ईर्ष्या आदि से दूर रहते हैं। अन्त करण शुद्ध व निर्मल होता है। जितेन्द्रियता होती है। शुद्ध व सात्त्विक भोजन से, व्यायाम से शरीर बलयुक्त व ओजस्वी होते हैं। सभी वैदिक विद्याओ का अध्ययन करते हैं। ईश्वर मे प्रीति बनी रहती है। गुरुकुल के छात्र कान्तिवान्, ज्ञानवान् व बलवान् होते हैं। उन्हे ज्योतिर्विज्ञान, अर्थशास्त्र, भूगर्भविज्ञान, वनस्पति, आयुर्वेद, धनुर्वेद, राज्यव्यवस्था आदि सभी विषयो का ज्ञान होता है और ऐसे छात्र सत्याचरण पर चलकर समाज व राष्ट हेतु समर्पित होते हैं।

गुरुकुल कोलाहल से दूर एकान्त वन आदि के क्षेत्रो मे होते हैं। वहा बालक के मन मे व्यर्थ की विचाराधारा व विषय नहीं आ सकते। विद्याध्ययन हेतु गुरुकुल जितना श्रेष्ठ व उपयुक्त हैं अन्य सस्थाए नहीं और फिर आज तो गुरुकुलो मे कम्प्यूटर, इलैक्ट्रानिकी, आधुनिक प्रौद्योगिकी जैसी शिक्षा का समावेश भी हो रहा है। जहा बालक-बालिकाओ का आध्यात्मिक व आधिभौतिक ज्ञान से श्रेष्ठ जीवन का निर्माण होता हो उससे महत्त्वपूर्ण अन्य कौनसी सस्था हो सकती है।

सत्याचरण व वेद की शिक्षा प्राप्त गुरुकुलो के छात्र ही समाज को नई दिशा दे सकते हैं। जहा जाति, वर्ग व भूगोल का भेद होड समान रूप से शिक्षा दी जाती है। ऐसे पवित्र मन्दिर गुरुकुल ही है। यहा मानव का निर्माण होता है। किसी से ईर्ष्या-द्वेष व घृणा की बात नहीं दिखाई जाती। विश्व को शान्ति व सन्मार्ग पर चलने की शिक्षा दी जाती है। ऐसे शान्ति व समृद्धि के केन्द्र व सत्यविद्याओ के ज्ञान के स्रोत केवल गुरुकुल ही हैं।

आज यदि अपने देश का निर्माण करना है तो गुरुकुल शिक्षापद्धति को स्थापित करना चाहिए। सस्कृत भाषा को महत्त्व देना चाहिए और गुरुकुल के छात्रो को महत्त्वपूर्ण पदो पर राजकीय तथा गैर राजकीय सस्थाओ पर आसीन करना चाहिए। यह निश्चित है कि गुरुकुल के सदाचारी तथा ज्ञानवान् छात्र उच्च पदासीन होकर समाज को तथा राष्ट्र को बुराइयो व भ्रष्टाचार से हटाकर समृद्धियुक्त, स्वच्छ व निर्मल दिशा दे सकते हैं क्योकि उन्हे इस योग्य आदर्श ज्ञान की शिक्षा दी जाती है।

देश का दुर्भाग्य रहा है कि विदेशियो के द्वारा आक्रमणो से यहा की सस्कृति व धर्म तथा गुरुकुल व्यवस्था को विकृत किया गया। वेदादि ज्ञान को भुलाकर पाश्चात्य ज्ञान आरोपित किया गया। नालन्दा तक्षशिला जैसे वैदिक ज्ञान के केन्द्र तोड डाले गए। गली-गली में कान्वेट स्कूलों की भरमार से आज रही सही पुरातन शिक्षा की राख उडाई जा रही है यही कारण है कि चारो ओर घोर अन्याय आदि बढकर अत्याचार व अपराध बढ रहे हैं। आज भी समय है कि हमे इस ओर ध्यान देना चाहिए।

बीड़ी, सिगरेट, शराब पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है, इनसे दूर रहें।

आर्य-संसार

सामवेद पारायण महायज्ञ एवं वर्षायज्ञ

अनावृष्टि निवारणार्थ भगीरथ प्रयास किया गया। **"निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्ता योगक्षेमो नः कल्पताम्।।"** (यजुर्वेद २२।२२) अर्थात् हमारी इच्छानुसार मेघ हमको जल बरषावे, जिससे ओषधि वनस्पतियां समय पर पके हमारा योगक्षेम सफल हो। **"पर्जन्योऽभिवर्षतु"** (वेद) **"यज्ञात् भवति पर्जन्यः"** (गीता) **"स्वर्गकामो यजेत्"** (शतपथ) इत्यादि वैदिक दार्शनिक ऐतिहासिक तथा लौकिक सूक्तियो से विदित होता है कि समय-समय पर यज्ञो द्वारा वर्षा कराके प्राकृतिक अनावृष्टि अतिवृष्टि भूकम्प चक्रवात आदि आपदाओं से राष्ट्र को बचाया जा सकता है। इसी बात को दृष्टिगत करके बाबा हरिदास लोक सेवा मण्डल झाडौदा कला नई दिल्ली के तत्त्वावधान में मल्लाह तीर्थ पर २१ जुलाई से २८ जुलाई २००२ रविवार तक सामवेद पारायण महायज्ञ एव वर्षेष्टि का पवित्र युद्धस्तर पर भगीरथ प्रयास किया गया। जिसमें अनुमानत ८ मन घी, पुष्कल हवन सामग्री, विभिन्न प्रकार की समिधाओ का प्रयोग किया गया। वर्षा यज्ञ पूज्य स्वामी वेदरक्षानन्द जी सरस्वती आर्ष गुरुकुल कालवा जीन्द के ब्रह्मत्व मे सम्पन्न हुआ। यज्ञ मे आचार्य चेतनदेव वैश्वानर भैया अलीगढ ने विचार व्यक्त करते हुये कहा कि वेदविज्ञान द्वारा ही प्राकृतिक आपदाओ का समाधान है।

इस सुअवसर पर लोक सेवा मण्डल एव सभी प्रतिष्ठित व्यक्तियो ने विशेष श्रद्धाभक्ति से भाग लिया तथा तन मन धन से सहयोग प्रदान किया। ग्रामीण माताओं ने विशेष श्रद्धा प्रदर्शित की। २८ जुलाई रविवार को पूर्णाहुति, शान्तिपाठ, प्रसाद वितरण करके यज्ञ सम्पन्न किया। इस अवसर पर ग्राम की ओर से गार्गी कन्या गुरुकुल महाविद्यालय भैया इगलास अलीगढ के लिये ५१०००/- इक्यावन हजार रुपये आचार्य चेतनदेव वैश्वानर को दानस्वरूप भेट किये। **—पं० अनिलकुमार आर्य,** झाडौदा कला, नई दिल्ली-७२

आर्यवीर दल द्वारा मानसून वृष्टियज्ञ का आयोजन

हासी स्थानीय आर्यवीर दल द्वारा डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल मे मानसून वृष्टियज्ञ का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता आर्यवीर दल, हासी के क्षेत्रीय संचालक आचार्य रामसुफल शास्त्री ने की तथा मुख्य यजमान डी.डी. एस. कम्प्यूटर प्राइवेट लिमिटेड के निदेशक श्री सजय जैन व क्राइम न्यूज एव तहकीकात डाट काम के जिला सवाददाता श्री मनन धमीजा थे। आर्यसमाज जी.टी. रोड (वकील कालोनी) के पुरोहित प० विजयपाल प्रभाकर ने ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद के मन्त्रो से वर्षेष्टि यज्ञ की आहुतियां प्रदान करवायीं। **—पंकज गोयल,** मन्त्री, आर्यवीर दल, हासी

हांसी में नामकरण पर वेदप्रचार किया गया

दिनाक २२-२३ व २४ जुलाई को आचार्य रामसुफल शास्त्री वैदिक प्रवक्ता लाल सडक हासी के सुपुत्र के नामकरण सस्कार के उपलक्ष्य मे तीन दिवसीय वेदप्रचार का आयोजन किया गया जिसमे यज्ञ के ब्रह्मा डा० उमेश जी प्राचार्य दयानन्द ब्राह्ममहाविद्यालय हिसार ने पूर्ण वैदिक रीति से नवजात शिशु का नामकरण सस्कार करवाया, बच्चे का नाम शशिकान्त रखा गया।

वेदप्रचार कार्यक्रम मे प० रणधीरसिह शास्त्री भजनोपदेशक आर्यसमाज सिरसा ने बडे ही प्रभावशाली ढग से अपना भजनोपदेश प्रस्तुत किया। इस कार्यक्रम मे गणमान्य व्यक्ति तथा समस्त आर्यवीर दल के सदस्य उपस्थित थे। परिवार की ओर से ऋषिलगर की व्यवस्था की गई।

—राजेश शर्मा, पत्रकार

शोक समाचार

(१) २७ जुलाई २००२ को उपराष्ट्रपति ७५ वर्षीय श्री कृष्णकान्त का दिल का दौरा पडने से निधन होगया। भारत छोडो आदोलन मे सक्रिय भागीदारी निभाने के कारण जेल मे रहे। उनका अतिम सस्कार २८ जुलाई को निगम बोध घाट दिल्ली मे वैदिक रीति से किया गया।

(२) हरयाणा के पूर्व स्वास्थ्यमंत्री श्रीमती प्रसन्नी देवी के इकलौते बेटे कैप्टन रविन्द्रसिह ढिल्लो का २५ जुलाई, २००२ की रात पचकूला स्थित आवास पर लाइसेसी कार्बाइन की गोली लगने से सदिग्ध परिस्थितियो मे मौत हो गई। ४ अगस्त को ढिल्लो फार्म कुरुक्षेत्र मे शान्तियज्ञ तथा शोकसभा की गई।

(३) स्वामी सेवकानन्द जी पूर्वसभा ढोलक वादक आर्यसमाज रादौर, जिला यमुनानगर का ३१ जुलाई २००२ को आकस्मिक निधन ९८ वर्ष की आयु में होगया। इन्होने ६० वर्ष तक निरन्तर सभा के भजनोपदेशको के साथ कार्य किया था।

(४) चौ० रामचन्द्र बैन्दा सासद फरीदाबाद के बडे भाई श्री प्रतापसिह बैन्दा का दिनाक २५-७-०२ को निधन होगया। उनका अन्तिम सस्कार वैदिक रीति से किया गया। आर्य नेताओ ने इनकी मृत्यु पर गहरी शोकसवेदना प्रकट की है।

परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवगत आत्माओ को सद्गति प्रदान करे तथा उनके परिवार को इस वियोग को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

—यशपाल आचार्य, सभामंत्री

वर्षेष्टि यज्ञ

चरखी दादरी। समस्त उत्तरी भारत मे अनावृष्टि के कारण भयकर सूखे की स्थिति होगई है। इससे प्राणिमात्र त्राहि-त्राहि कर उठा है। स्थानीय अनाजमण्डी चरखी दादरी मे आर्यसमाज के सहयोग से दिनाक २९-७-०२ से वर्षेष्टि यज्ञ आरम्भ किया है जो वर्षा होने तक जारी रखने की योजना है। यज्ञ मे आज रामनिवास बसल सपत्नीक यजमान रहे। सर्वश्री सत्यनारायण आर्य, मनुदेव शास्त्री, नेमचन्द आर्य, श्री बालकिशन मातनहेलिया, रामनिवास हरोदिया तथा अन्य व्यापारीगण सहयोग दे रहे हैं। यज्ञ सुबह साय वेद मन्त्रोच्चारण से होता है तथा भजनोपदेश से प्राणिमात्र की भलाई हेतु कार्य करने की शिक्षा दी जाती है। **—रामनिवास बंसल,** चरखी दादरी

स्वामी ओमानन्द जी महान्

स्वामी ओमानन्द सरस्वती

चैत्र कृष्णा अष्टमी संवत् १९६७ विक्रमी (३ अप्रैल, १९१०) को नरेला (दिल्ली) के प्रतिष्ठित किसान **चौ० कनकसिंह** नम्बरदार के इकलौते लाडले पुत्र **भगवान्सिंह**, बाद में **ब्रह्मचारी भगवान्देव** तथा आचार्य भगवान्देव गुरुकुल झज्जर के नाम से सुविख्यात, वर्तमान में **स्वामी ओमानन्द सरस्वती** के नाम से प्रसिद्ध, परोपकारिणी सभा अजमेर और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के पूर्व प्रधान एवं आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान के बारे में यतिमण्डल के प्रधान वीतराग संन्यासी श्रद्धेय स्वामी सर्वानन्द जी महाराज दयानन्दमठ दीनानगर (पंजाब) के उद्गार पढ़ें और विचार करें। —सम्पादक

आज (२७ जुलाई, २००२) शाम को भोजन के बाद पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के मुख से पहला वचन निकला **"स्वामी ओमानन्द जी महान्।"** मैंने पूछा महाराज वह कैसे? महाराज ने कहा—आज पानीपत से एक सज्जन का पत्र आया। स्वामी ओमानन्द जी महाराज के बारे में बहुत ही अटपटे शब्द लिखे हुए थे। पानीपत के वे सज्जन कितने अभाग्यशाली हैं। पानी में रहकर मछली को प्यास है। स्वामी ओमानन्द के पास रहकर स्वामी जी महाराज को नहीं समझा।

हम एक हजार साल गुलाम रहकर हिन्दू बन गये, आर्य नहीं रहे। इन हिन्दुओ ने ऋषि दयानन्द को नहीं समझा। स्वामी ओमानन्द को कैसे समझेंगे? आर्यसमाज मे सबसे ज्यादा त्यागी यदि कोई हुआ है या है तो स्वामी ओमानन्द जी है।

दिल्ली में जिनकी एक सौ एकड जमीन हो। गाव का नम्बरदार हो। अपनी माता-पिता की एक ही सन्तान हो। अच्छे परिवार में जिसका विवाह भी हो गया हो। करोडों की सम्पत्ति का मालिक हो। इस आर्यसमाज के लिए सब कुछ न्यौछावर कर दिया हो। सम्पत्ति ही नहीं अपने आपको भी समाज के प्रति समर्पित कर दिया हो।

आज आर्यसमाज का कार्य कर रहे हैं हरयाणा, पंजाब, हिमाचल, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, उड़ीसा, नेपाल, बिहार आदि प्रान्तों मे किसके शिष्य हैं? स्वामी जी महान् हैं। यह चलती-फिरती आर्यसमाज हैं। करोडों रुपए की मुफ्त दवा एवं साहित्य बांट रहे हैं।

बालब्रह्मचारी स्वामी ओमानन्द जी पर जो सज्जन झूठमूठ की बातें कर रहे हैं, वे पहले स्वामी ओमानन्द बनें, समाज के लिये कुछ करके दिखायें। आज आर्यसमाज का अधःपतन क्यों हो रहा है? इसलिए हो रहा है कि लांछन लगाने वालों का अपना जीवन शून्य है। समाज के लिए कुछ किया नहीं। त्यागी तपस्वियों को करने देना नहीं।

जिस बाल ब्रह्मचारी ने हैदराबाद के नवाब के घुटने टिका दिये। जिस तपस्वी ने अंग्रेजों के छक्के छुडाये। जिस आचार्य ने सम्पूर्ण हरयाणा को हिन्दी सत्याग्रह एवं गोरक्षा सत्याग्रह में झोंक दिया। जिसके नाम से भारत सरकार कांपती थी, कांपती है। उस महान् स्वामी ने हरयाणा में बूचडखाना नहीं बनने दिया। उस महान् योगेश्वर स्वामी ओमानन्द के बारे में कुछ कहने से पहले अपने हृदय को टटोलो। सारी जिन्दगी आप लोगों के लिए लगा दी और लगा रहे हैं। ऐसे महान् योगी तपस्वी के बारे में कुछ अपशब्द कहना अपने आपको नरक में ले जाना है।

प्रेषक—सदानन्द, दयानन्दमठ, दीनानगर (पंजाब)

साहित्य-समीक्षा

पुस्तक	गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय हरद्वार का सौ वर्ष का इतिहास।
लेखक	डॉ० जयदेव वेदालङ्कार, डीन प्राच्य विद्यासंकाय गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय, हरद्वार।
प्रकाशक	भारतीय विद्या प्रकाशन, यू०बी० जवाहर नगर, बंग्लो रोड, दिल्ली।
मूल्य	६००-०० पृष्ठ ५२०
प्राप्ति स्थान	देवलोक ४६२ आर्यनगर, ज्वालापुर (हरद्वार)।

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के सुप्रसिद्ध दार्शनिक विद्वान् डॉ० जयदेव वेदालङ्कार ने यह ग्रन्थ गुरुकुल कागडी के शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य मे लिखकर प्रकाशित कराया है। इस गुरुकुल की स्थापना महर्षि दयानन्द सरस्वती के प्रथम शिष्य स्वामी श्रद्धानन्द (महात्मा मुशीराम) जी ने सवत् २०५७ वि० मे की थी। विद्वान् लेखक ने इस ग्रन्थ के दश अध्यायो मे गुरुकुल की स्थापना, पुनर्निर्माण, गुरुकुल का विश्वविद्यालय के रूप मे परिवर्तन, गुरुकुल के आयुर्वेद महाविद्यालय आदि विभाग, प० जवाहरलाल आदि नेताओ का गुरुकुल मे आगमन, कन्या गुरुकुल देहरादून का निर्माण, स्वतन्त्रता आन्दोलन, हैदराबाद-हिन्दी-गोरक्षा आन्दोलन, वैदिक साहित्य की रचना, गुरुकुल कागडी के समस्त प्रशासको का परिचय तथा विशिष्ट अतिथिगण आदि का सुन्दर एव प्रेरक परिचय प्रस्तुत किया है। यह ग्रन्थ आर्यसमाज के इतिहास का प्रमुख अङ्ग कहा जा सकता है। अत प्रत्येक आर्य बहन-भाई तथा विशेषत इतिहास मे अभिरुचि रखने वाले विद्वानो के लिये यह ग्रन्थ परम उपयोगी है। गुरुकुल के स्तम्भ तथा सम्माननीय अभ्यागत महानुभावो का यदि सचित्र परिचय लिखा जाता तो यह ग्रन्थ और भी स्पृहणीय बन जाता। विद्वान् लेखक तथा प्रकाशक दोनो ही आर्यजगत् के लिये धन्यवाद के पात्र हैं।

—**सुदर्शनदेव आचार्य**, अध्यक्ष सस्कृत सेवा सस्थान, रोहतक।

आर्यवीर दल बाढ़ड़ा में यज्ञ सम्पन्न

मातृवत् परदारेषु परद्रव्येषु लोष्टवत्।
आत्मवत् सर्वभूतेषु य पश्यति स पण्डित ।।

दूसरे की पत्नी को माता और बहन के समान समझना, दूसरे के धन को धूल समझना और सब प्राणियो को अपने समान समझना, यही असली पडित (विद्वान्) की पहचान है।

उक्त विचार २८-७-०२ को आर्यवीर दल शाखा-बाढडा मे भारत के सर्वश्रेष्ठ व्यायाम शिक्षक एव आर्यवीर दल हरयाणा के उपमन्त्री श्री चादसिह आर्य ने व्यक्त किये।

रविवार को प्रात श्री चादसिह आर्य आर्यवीर दल शाखा-बाढडा मे हवनोपरान्त उपदेश कर रहे थे। उन्होने ब्रह्मचर्य पर विशेष बल देते हुए कहा कि आज हमे सबसे बडा दु ख यही है कि आज का युवा ब्रह्मचारी नहीं है। वह विषयवासनाओ मे फसकर अपने जीवन को बर्बाद कर रहा है। विशेषकर माता-पिता बचपन मे शादी करके उन्हे विनाश के गर्त (गड्ढे) मे डाल देते हैं। उनके जीवन का विकास रुक जाता है। उन्होने नौजवानो का आह्वान किया कि इस सत्सग से वे एक बात तो अवश्य ग्रहण करके जाए कि जब तक अपने पैरो पर नही खडे हो जाए तब तक शादी न करवाए।

इस अवसर पर श्री धर्मपाल आर्य 'धीर' शास्त्री भाण्डवा ने धर्मोपदेश करते हुए सत्सग व स्वाध्याय पर विशेष जोर दिया। उन्होने कहा कि—"आर्यवीरो! तुमने सत्सग व स्वाध्याय छोड दिया तो कभी भी आर्य नहीं रह सकते। इसलिए सत्सग व स्वाध्याय चलते रहना चाहिए। सत्सग से ही महात्मा मुशीराम स्वामी श्रद्धानन्द बना। इसलिए आप सत्सग व स्वाध्याय से ही अनेक बुराइयो से बच सकते हो।" इस कार्यक्रम मे ब्र० सजय आर्य, ब्र० अनूप आर्य आदि सात आर्यवीरो ने यज्ञोपवीत लेकर आजीवन बुराइयो से बचने का प्रण किया।

—धर्मशिष्य कुलदीप आर्य

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ०१२६२-७६८७४, ७७८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ०१२६२-७७७२२) से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० न० २३२०७/७३ सृष्टिसंवत् १,९६,०८,५३,१०३
पंजीकरणसंख्या टैक/85-2/2000 ☎ ०१२६२-७७७२२

प्रधानसम्पादक : यशपाल आचार्य, सभामन्त्री सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री
वर्ष २६ अंक ३६ १४ अगस्त, २००२ वार्षिक शुल्क ८०) आजीवन शुल्क ८००) विदेश में २० डॉलर एक प्रति १.७०

आर्यसमाजी ही नहीं सच्चे 'आर्य' भी बने

आर्यसमाज 'आर्य' शब्द को जन्मना जातिवाचक न मानकर गुणवाचक मानता है। आर्य शब्द का अर्थ श्रेष्ठ होता है। आर्यसमाज चूकि जन्मना जाति को नही मानता है। प्राय आर्यसमाज के सगठन से जुडे हुए लोग अपने नाम के साथ उपाधि के रूप मे आर्य शब्द को जोड लेते है। आर्य उपाधि वाले लोगो को अन्य लोग समझते हैं कि अमुक व्यक्ति आर्यसमाजी है। मेरे विचार से आर्यसमाजी और आर्य शब्द एक दूसरे का पर्यायवाची या समानार्थक शब्द नही है। चूकि दोनो शब्दो का अर्थ भिन्न-भिन्न हैं। अत प्रत्येक आर्य नामधारी आर्यसमाजी हो यह आवश्यक नहीं है। मेरे विचार से किसी का आर्य होना आर्यसमाजी से ऊची स्थिति का परिचायक है। प्रत्येक आर्य स्वत आर्यसमाजी हो सकता है पर एक आर्यसमाजी को स्वत आर्य समझना गलत और भ्रामक हो सकता है।

आर्यसमाज एक संस्था है। इसके सचालन के लिए नियम-उपनियम बने हुए हैं। उन नियमों का पालन करने वाला या उसे स्वीकार करने वाला आर्यसमाजी हो सकता है पर आर्यसमाजी होने से उसमें आर्य होने के सभी गुण स्वत समावेश हो जायेंगे, यह कहना अपने आप को धोखा देना है।

आर्यसमाज की स्थापना के काफी वर्षो तक एक आर्यसमाजी होना अपने आपमे बहुत बड़ी बात थी। एक आर्यसमाजी मनसा वाचा कर्मण आर्यसमाज के सिद्धांतों को मानता था और उस पर चलना अपना परम

❑ दयाराम पोद्दार, झारखण्ड राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा, राची

कर्तव्य समझता था। वह आर्यसमाज के लिए समर्पित होता था। अपने आजीविका उपार्जन के कार्यो को करते हुए आर्यसमाज के लिए अवैतनिक कार्य करना उसके लिए स्वान्त सुखाय वाली स्थिति थी। आर्यसमाज का वैतनिक प्रचारक तो नाममात्र की राशि मे अपने परिवार का भरण पोषण करता था और उस नाममात्र राशि में से भी कुछ राशि आर्यसमाज के लिए खर्च कर देता था। ऐसे आर्यसमाजी लोग आर्यसमाज के सगठन में नीव के पत्थर थे जिनके तप और त्याग पर आर्यसमाज की आलीशान इमारत वर्तमान मे बनी हुई है। फलत आर्यसमाज ने एक आर्यसमाजी के जीवन मे जो परिवर्तन किये वह आर्यसमाज के बढने के लिए खाद क काम करता था क्योकि एक आर्यसमाजी के सम्पर्क में आकर उसके सम्पर्क में आनेवालो का भी जीवन सुवासित हो जाता था। एक व्यक्ति अपने व्यक्तिगत अवगुण और बुराइयो को एक ही झटके मे बडी बहादुरी से तोड देता था और वह व्यक्ति अन्य लोगो से पृथक् ही पहचाना जाता था।

वर्तमान में आर्यसमाजी की पहचान किस रूप में होती है, इसके सबध में जानबूझकर मैं बहुत कुछ नहीं लिखना चाहता हूं। यह हम सभी के लिए अत्यन्त चितन का विषय होना चाहिए कि हम क्या थे और क्या होगये, आओ आज मिलकर विचारे सभी। आर्यसमाज रूपी स्वर्ग मे यदि नारकीय स्थिति उत्पन्न हो गई है तो इसके दोषी कोई अन्य लोग नही हैं बल्कि अपने ही लोग हैं। इस घर को आग लग गई है घर के चिराग से। हमारा रोग बढता ही जारहा है जैसे-जैसे हम दवा बढा रहे हैं।

पहले आर्यसमाज के लोग अपने कार्यो के लिए सामान्य जनता से सम्पर्क कर उनसे तन, मन और धन का सहयोग प्राप्त करता था पर कल का गरीब आर्यसमाज आज सहसा धनी हो गया है। आज का आर्यसमाजी न तो जनता के पास सहयोग के लिए जाता है और न ही अन्य लोग आर्यसमाज को पूर्ववत् सहयोग देने के लिए उद्यत हैं। आज आर्यसमाज के साधनो ने प्रचारात्मक कार्यो के स्थान पर व्यापार का रूप ले लिया है। कर्मकाड और प्रचार का कार्य शुद्ध रूप से व्यापार होगया है। साहित्य प्रचार जैसा प्रभावशाली कार्य निष्प्राण होगया है। आर्यसमाज की कतिपय पत्र-पत्रिकाओ मे वैदिक सिद्धातो के विपरीत स्थूल मूर्तिपूजा और मासाहार का खुला समर्थन किया जारहा है। राज्य स्तर और केन्द्रीय स्तर की आर्य प्रतिनिधि सभाए एक-दूसरे की पूरक होने के स्थान पर पिछलगू सस्थाए बन रही है। स्थानीय आर्यसमाजो के साथ वे बधुआ मजदूर जैसा व्यवहार कर रहे हैं। लोकतत्र की विकृतियो का लाभ उठाकर फर्जी और बोगस प्रतिनिधियो के बल पर सपूर्ण सगठन पर कब्जा कर दुधारू शिक्षण सस्थाओ या सम्पन्न आर्यसमाजो का दोहन कर आर्थिक प्राप्ति करना स्वार्थी और अवसरवादी आर्यसमाजियो का कार्य होगया है। सत्य को ग्रहण करने और असत्य को त्यागने मे सर्वथा उद्यत रहना चाहिए यह आर्यसमाज का एक स्वर्णिम नियम है। यदि तनिक ईमानदारी का भी पालन किया जाये तो हमारे सामने कोई समस्या ही नही होनी चाहिए पर प्रत्येक आर्यसमाज और आर्य प्रतिनिधि सभाओ मे कभी भी खत्म न होनेवाले प्रबध सबधी झगडे हो रहे है। न्यायालयो का हस्तक्षेप बढता जारहा है। दोनो ही गुट असामाजिक तत्त्वो से सहयोग लेने मे भी नही हिचक रहे है। ऐसी स्थिति मे क्या आर्यसमाजी होना गर्व का विषय रह गया है? हम अपने आपको आर्य कहते हैं पर क्या हम आर्य उपाधि ग्रहण करने के लायक क्या उचित पात्रता भी रखते हैं? एक आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रधान अपने साथ सुरक्षा प्रहरी रखता है उस आर्य नामधारी को किन अनार्यो से डर है। परमात्मा हमे सुबुद्धि प्रदान करे कि प्रत्येक आर्यसमाजी सही अर्थो मे सच्चा आर्य बने। एक सच्चा आर्य होना हमारा आदर्श होना चाहिए। उपनिषदो का उत्तिष्ठत, जाग्रत, प्राप्य वरान्निबोधत उठो, जागो और अपने कर्तव्य को पहचानो का वाक्य हमे कृण्वन्तो स्वआर्यम् बनाने मे सक्षम हो अन्यथा आर्यसमाज भले ही और कुछ बन जाये पर वह आर्यसमाज न होकर अनार्यसमाज बन जायेगा। क्या हम इन समस्याओ पर सोच, विचार कर अपना कर्तव्य निर्धारित करेंगे। आवश्यकता है कि हम आत्मचिंतन कर बोध प्राप्त करे।

वैदिक-स्वाध्याय

मैं तुझे चाहता हूँ

आ ते वत्सो मनो यमत्, परमात् चित्सधस्थात्।
अग्ने त्वा कामया गिरा।। ऋ० ८।११।७।। साम० पू० १११८।।

शब्दार्थ–(वत्स·) मैं वत्स (ति मन.) तेरे मन को (परमात् चित्) अति उत्कृष्ट भी (सधस्थात्) सहस्थान से (आ यमत्) वश करता हूं, प्राप्त करता हू (अग्ने) हे परमेश्वर ! मैं (त्वा) तुझे (गिरा) वाणी द्वारा (कामये) चाहता हू–मिलना चाहता हू।

विनय–हे परमात्मन् ! तुम्हारा स्थान बहुत ऊचा है। तुम्हारे उत्कृष्ट पद को मै कैसे पाऊ ? तुम जिस दिव्य धाम मे रहते हो, जिस सर्वशक्तिमय, सर्वज्ञानमय, परमानन्दमय लोक मे तुम्हारा निवास है, उस परम स्थान तक मैं अल्पज्ञ, अल्पशक्ति, तुच्छ जीव कैसे पहुच सकता हू ? परन्तु नहीं, मैं भी आखिरकार तुम्हारा पुत्र हू, वत्स हू, प्यारा अमृत आत्मज हू। मै। चाहे कैसा हीन व पतित होऊ पर स्वरूपत अमर चिन्मय आत्मा हू। अत तुम्हारा धाम मेरा भी धाम है, तुम्हारा ऊचे से ऊचा स्थान मेरा सहस्थान है, 'सधस्थ' है। तुम्हारे दिव्य से दिव्य स्थान से तुम्हारे पुत्र का अधिकार कैसे हट सकता है। मै तुम्हे अपने प्रेम द्वारा तुम्हारे दूर से दूर, ऊचे से ऊंचे पद से खींच लाऊंगा। हे पित ! मुझे सर्वशक्तिमान् और सर्वज्ञ बनने की क्या जरूरत है ? मैं तो अपने अगाध प्रेम से, अपनी अनन्य भक्ति से तेरे मन को काबू कर लूगा, तेरे मन को पा लूगा। फिर मुझे और क्या चाहिये ? हे मेरे अग्ने ! हे मेरे जीवन ! मैं तुम्हे अपनी सर्वशक्ति से चाह रहा हू, कामना कर रहा हू। आत्मा मे तुमने जो वाणी नाम्नी आत्मशक्ति रखी है, मैं उसकी सम्पूर्ण शक्ति तुम्हे ही खीच रहा हू। मै अपनी आन्तर और बाह्यवाणी की समस्त शक्ति को तुम्हारे मिलन के लिए ही खर्च कर रहा हू। मन मे तेरी ही चाह है, मन मे तेरा ही जाप है, तेरी ही रटन है, 'वैखरी' वाणी मे भी तेरा ही नाम है, तेरा स्तोत्रपाठ है, शरीर की चेष्टाओ से भी जो कुछ अभिव्यक्त होता है वह तेरी लगन है, तेरे पाने की तडप है। क्या तू अब भी न मिलेगा ? मै तेरा वत्स इस तरह से, हे पित ! तेरे मन को हर ही लूगा। तू चाहे कितने ऊचे स्थान का वासी हो, पर तेरे मन को जीत के ही छोड़ूगा। मेरा प्रेम, मेरी भक्ति तेरे मन खींच लेगी और फिर तेरे मन को, तेरे प्रेम व वात्सल्य को, मुझे अपनाना होगा।

(वैदिक विनय से)

प्राणों से भी प्यारा है

❑ राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति, मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ०प्र०)

स्वतन्त्रता का यह पावन दिन, प्राणो से भी प्यारा है।
इसकी रक्षा सदा करेगे, शुभ सकल्प हमारा है।।

इसकी खातिर अमर सपूतो ने बलिदान चढाये है।
भगत सुभाष शिवा राणा ने अपने रक्त बहाये है।
अगणित युवको ने इसके हित अपने शीश कटाये है।
दयानन्द ने, गाधी ने भी कितने कष्ट उठाये है।

अमर रहेगा यह पावन दिन, गूज रहा जयकारा है।
इसकी रक्षा सदा करेगे, शुभ सकल्प हमारा है।।

स्वतत्रता की ओर अगर बैरी फिर आख उठायेगा।
इसकी गरिमा पर यदि कोई अरिदल हाथ लगायेगा।
निश्चित ही इसका प्रतिफल वह मृत्युरूप मे पायेगा।

दुश्मन के हित काल बनेगे, गूज रहा यह नारा है।
इसकी रक्षा सदा करेगे, शुभ सकल्प हमारा है।।

आओ भारत वीरो आओ ! प्रगति पथ पर कदम बढाओ।
अनाचार-भ्रष्टाचारो से, आगे बढकर तुम टकराओ।
भारतमाता की सेवा मे, अपना तुम सर्वस्व लुटाओ।
धधक रही है शिखा यज्ञ की, तुम अपनी भी हव्य चढाओ।

हिमगिरि के उत्तुग शिखर से हमने फिर ललकारा है।
इसकी रक्षा सदा करेगे, शुभ सकल्प हमारा है।।

सिद्‌धू ने सिद्ध किया ?

प्रतिभाओं का कोई मूल्य नहीं

पजाब मे चयन आयोग के अध्यक्ष की खुलती जा रही कलियों से निकलनेवाली बदबू ने प्रतिभावान्, छल-छद्‌म से दूर कर्तव्यनिष्ठ ईमानदार नागरिको को विशेषरूप से योग्यता के धनी, बुद्धिमान् नवयुवकों की कुंठाओं को असहनीय बना दिया है। पहले भाई-भतीजावाद, जातिवाद, साम्प्रदायिकता तथा आरक्षण के नाम पर वास्तविक प्रतिभाओ को निरतर हतोत्साहित किया जाता रहा है, किन्तु अब उच्चतम चयनकर्ताओं की इन काली करतूतो ने यह साबित कर दिया है कि वर्तमान भ्रष्टाचारी वातावरण मे मात्र पैसे वाला धूर्त समाज ही देश की सेवा करने का, उच्च पदो पर रहकर देश को चलाने का अवसर प्राप्त कर सकता है। जो रिश्वत दे सकता हो, जो भ्रष्ट हथकंडे अपना सकता हो, जो नियुक्ताओ की स्वार्थपूर्ति करने की कला जानता हो, जो दूसरो को जितना अधिक धोखा दे सकता हो, जिसकी बुद्धि दूसरों की आखो में धूल झोकने में जितना अधिक निष्णात हो वह मूर्ख से मूर्ख अक्षम व्यक्ति इस तत्र को चलाने के न केवल योग्य हैं अपितु उसे ही सर्वोपरि प्रतिभावान् होने का श्रेय प्राप्त होता है।

वास्तविकता तो यह है कि हर राज्य, हर प्रान्त मे ऐसे अधिकारी, चयनकर्ता, राजनेताओ तथा तथाकथित समाजसेवियो की ऐसी शृखला है जिनकी मात्र धधा ही परीक्षाओ में पास कराना है। बिना पढे अधिकाधिक नबर सहित डिग्री दिलवाना, पेपर आउट कराना, परीक्षार्थी को बदलवाना, घर बैठे कम्पटीशन के पेपरों के हल करने की सुविधा दिलाना, गलत से गलत कार्यो को, चाहे वह किसी स्तर के हो, स्तरानुसार हजारो से लेकर अरबो तक काले धन का लेन-देन कराना, यहा तक कि न्यायपालिका तक से मनमाना काम करवाना इनके बाए हाथ का खेल है। इनकी कृपा से आप चाहे तो मृत व्यक्तियो के सभी तरह के लाइसेस तक बनवा सकते है।

विडबना तो देखिए कि चपडासी से लेकर उच्चतम पदो तक यहा तक कि जजो की नियुक्ति व स्थानान्तरण के लिए खुला लेन-देन चल रहा है। पार्टी के चदे के नाम पर अधिकाश राजनीतिक लॉबी भोली-भाली जनता का खून चूसने व अधिकाधिक धन-वैभव बटोरने मे लगी है। आए दिन सुनने मे आता है कि एक सरकारी नौकरी के लिए कम से कम एक लाख रुपये का रेट है। यहा तक कि अध्यापक लगने के लिए ३ लाख, इन्स्पेक्टर की पोस्ट के लिए दस से पचास लाख, रिवेन्यू विभाग मे कमीशन के आधार पर। जज, जिलाधीश, प्रशासक व पदाधिकारी के लिए तो करोडो का जुगाड करना पडता है। हर काम के लिए खुल्लमखुल्ला भोली-भाली जनता को ठगा जारहा है। कितने ही सीधे सच्चे अधिकारी दबे मुह कहते है कि "भाई इतने लाख देकर इस पद पर आया हू, मुझे हर माह इतने लाख रुपए ऊपर तक पहुचाने पडते है यदि काम करना है तो यह सब तो करना ही पडेगा।" किसी भी न्यायालय मे चले जाइए। दरबान हो या क्लर्क, रीडर हो या रिकार्ड कीपर शपथ-पत्र भरना हो, कोई नकल निकालनी हो या तारीख लगवानी हो यहा तक कि बयान दर्ज कराने हो तो भी न्यायाधीश की नाक के नीचे खुल्लमखुल्ला सुविधा शुल्क लेने व देने का रिवाज है।

अब तो देश की रक्षा के लिए तत्पर फौज मे सेवा करनेवाले नवयुवको की भी सारी काबलियत उसके द्वारा चढाई गई भेटो मे निहित है। तभी तो कारगिल मे घुसपैठ होती है, पुरुलिया मे असलाह आता है। आतकवादी पनपते हैं। स्थिति इतनी अधिक विकृत हो चुकी है कि हर समझदार को लगने लगा है कि सच्चाई, ईमानदारी, योग्यता बढाना, शरीफ होना सब निरर्थक है। शायद यह रास्ता असफल रास्ता है। यदि सफल होना है तो खाओ और खिलाओ। यही है जीवन जीने की कला।

अपूज्या यत्र पूज्यन्ते, पूज्यपूजाव्यतिक्रम ।
त्रीणि तत्र प्रवर्तन्ते दुर्भिक्ष मरण भयम्।।

चिन्तनशील दूरदर्शी मनीषियो, वास्तविक प्रतिभाओ को बचा लीजिए। उन्हे उनका वास्तविक हक दिलाने की परिस्थितियां बनाइए। ऐसा न हो कि प्रतिभा विघटनात्मक रूप धारण करले। अब किस तरीके से सिद्‌धू की छानबीन हो रही है। उसमें यदि आप भी लगे अधिकारियो को अभयदान नही देंगे तो कोई भी वास्तविकता आप तक नहीं पहुच पाएगी। सावधान देश अक्षम, अयोग्य, अनुत्तरदायी, चालाक, धूर्त तथाकथित प्रतिभाओ के हाथ मे जा चुका है। कम से कम भविष्य मे सावधानी बरतिये।

उत्तिष्ठ, जागृत, प्राप्यवरान् निबोधत, **व्यथित नागरिक**

–डॉ० सत्यदेव, ३-ए/१२४, एन आई टी फरीदाबाद, फोन न० ५४१५४९४

अमर बलिदानी महात्मा भक्त फूलसिंह का बलिदान दिवस सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ३० जून २००२ की अन्तरंग सभा के प्रस्तावानुसार हरयाणा के सुप्रसिद्ध त्यागी, तपस्वी, सुधारक तथा अमर शहीद, गुरुकुल भैंसवाल एव कन्या गुरुकुल खानपुर जिला सोनीपत के सस्थापक महात्मा भक्त फूलसिंह का उनके जन्मस्थान ग्राम माहरा (जूआं) मे ६१वा बलिदान दिवस मनाने का निश्चय हुआ था। १ अगस्त से इसकी तैयारी आरम्भ की गई। विज्ञापन आदि प्रकाशनार्थ तैयार किये और हम २ अगस्त को सभामन्त्री आचार्य यशपाल जी के साथ सोनीपत गये। वहां आर्यसमाज अशोक विहार के दैनिक सत्सग मे भाग लिया तथा उपस्थित कार्यकर्ताओं को बलिदान दिवस में सहयोग करने की अपील की तथा मा० ओम्प्रकाश मलिक को साथ लेकर माहरा गाव के सोनीपत वासियो से उनके घर-घर जाकर रात्रि १० बजे तक सम्पर्क किया। सभी ने तन, मन तथा धन से पूरा सहयोग देने का आश्वासन दिया। ३ अगस्त को सोनीपत के आर्यसमाज के अधिकारियो तथा दैनिक समाचार पत्रो के सवाददाताओ से मिलकर भक्त जी के बलिदान दिवस को सफल करने के लिए सहयोग करने का निवेदन किया। ४ अगस्त को दयानन्दमठ रोहतक के मासिक सत्संग मे उपस्थित नरनारियो को हमने बलिदान दिवस मे सम्मिलित होने का निमन्त्रण देकर १० अगस्त को माहरा पहुचने की अपील की।

५ अगस्त को हमने ग्राम माहरा मे ग्रामवासियो से मिलकर सभा उपमत्री श्री सुरेन्द्र शास्त्री, अन्तरग सदस्य ठेकेदार जयसिह तथा श्री धर्मपाल शास्त्री के साथ गोहाना मे सम्मेलन की तैयारी के लिए विचार विमर्श किया तथा टेलीफोन से भक्त फूलसिह की सुपुत्री बहन सुभाषिणी से माहरा मे बलिदान दिवस की अध्यक्षता करने की प्रार्थना की जिन्होने अस्वस्थ होने पर भी माहरा मे पहुचने की स्वीकृति प्रदान की। उन्होने ९ अगस्त को प्रात कन्या गुरुकुल खानपुर में भी यज्ञ के अवसर पर बलिदान दिवस मनाने की सूचना दी। उसी दिन सभामन्त्री जी अपने अन्य सहयोगियो के साथ ग्राम गामडी, खानपुर, सरगथल, बोहला, जूआ, चिटाना, भटाणा होते हुए माहरा गये और आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं से सम्पर्क करके रात्रि को रोहतक कार्यालय मे आगये।

६ अगस्त को प्रात सभामंत्री तथा अन्य सहयोगी अधिकारी सभा के वेदप्रचार वाहन मे सभा के नवनियुक्त सभा उपदेशक पं० अविनाश शास्त्री, सभा भजनोपदेशकों प० तेजवीर, प० जयपाल आदि को लेकर ग्राम माहरा (जुआं) गये। वहा बडी चौपाल मे इनका प्रभावशाली प्रचार करवाया। सभा के वरिष्ठ सभा उपमत्री श्री महेन्द्र शास्त्री का उपदेश भी हुआ। इसी प्रकार ७ अगस्त को ग्राम भटाणा में प० जयपाल की मण्डली का तथा ग्राम जुआ में रात्रि को प० चिरजीलाल की मण्डली का प्रचार हुआ। आर्यसमाज की ओर से भक्त जी के बलिदान दिवस की तैयारी के लिए ५०१ रुपये दान दिया। ७ अगस्त को ग्राम चिटाना में प० जयपाल आर्य, श्रीमती दयाकौर आर्या के भजन तथा प० अविनाश शास्त्री का उपदेश हुआ। इसी रात्रि को प० चिरजीलाल की मण्डली का ग्राम सिटावली मे प्रचार हुआ। आर्यसमाज जूआं के मन्त्री मा० खजानसिह आर्य ने प्रचार व्यवस्था मे सहयोग दिया। सभामत्री आचार्य यशपाल, मा० खजानसिह आर्य आदि के साथ हमने सोनीपत भटाना, माहरा आदि ग्रामो मे आर्यसमाज के कार्यकर्ताओ से सम्पर्क किया। सभा उपमत्री श्री महेन्द्र शास्त्री ने भी माहरा तथा निकट के ग्रामो मे युवको को तैयार किया। ८ अगस्त को सभा अधिकारियो ने आर्य केन्द्रीय सभा तथा आर्यसमाज सेक्टर १४ सोनीपत के प्रधान सेवानिवृत श्री वेदपाल आर्य से मिले और बलिदान दिवस को सफल करने मे सहयोग देने तथा माहरा पहुचने का निमत्रण दिया। प० चिरजीलाल की मण्डली ने दिन मे ग्राम डबरपुर मे रात्रि को ग्राम पुरखास मे प्रचार किया। प० रामकुमार की मण्डली ने भी ग्राम गामडी मे ७ को तथा ८ अगस्त को ग्राम खानपुर मे प्रचार किया तथा माहरा पहुचने के लिए अधिक से अधिक सख्या में पहुचने का अनुरोध किया।

९ अगस्त को ग्राम माहरा मे सभा की तीनो भजन मण्डलियो प० तेजवीर, प० जयपाल, प० रामकुमार तथा श्रीमती सुदेश आर्या शास्त्री एव श्रीमती दयाकौर आर्या का सामूहिक प्रचार कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर स्वर्गीय प० बस्तीराम, प० ईश्वरसिह, चौ० पृथ्वीसिह बेधडक, स्वामी नित्यानन्द तथा कुवर जोहरीसिह आर्य की प्रसिद्ध भजनमण्डलियो की तर्जों पर गीत सुनाकर उनकी याद ताजा की गई। इस बलिदान दिवस से पूर्व सभा के वेदप्रचार वाहन मे सभा के अधिकारियो, उपदेशक तथा तीन भजन मण्डलियो ने ग्राम माहरा के चारो ओर के १० ग्रामो मे प्रचार करके आर्यसमाज के प्रचार तथा अमरशहीद महात्मा भक्त फूलसिह के ऐतिहासिक परोपकारी कार्यो पर प्रकाश डालकर ग्रामवासियो को जानकारी दी। प्रचार के अभाव में इन ग्रामो की नई पीढी उन्हे भूलने लग गई थी। कई ग्रामो मे तो कम से कम २०, २५ वर्षो के बाद आर्यसमाज का प्रचार करवाया गया है। इन ग्रामो मे सभा द्वारा विधिवत् आर्यसमाज की स्थापना की जावेगी, जिससे प्रतिवर्ष प्रचार होसके।

महात्मा भक्त फूलसिंह का कुछ यवन उग्रवादियो ने तीज पर्व से एक दिन पूर्व कन्या गुरुकुल खानपुर मे रात्रि को गोली मारकर बलिदान कर दिया था क्योकि भक्त जी द्वारा चलाये गये शुद्धि आन्दोलन से वे बेचैन होगये थे। बहन सुभाषिणी तथा स्व० चौ० माडूसिह आदि के प्रयत्नो से कन्या गुरुकुल खानपुर मे प्रतिवर्ष बलिदान दिवस मनाया जारहा है। परन्तु किसी कारण से भक्त जी की जन्मभूमि ग्राम माहरा (जूआं) मे बलिदान दिवस गत ६० वर्ष से नहीं मनाया जा सका था। इस बार सभा की ओर से माहरा बलिदान दिवस मनाया गया।

स्थानीय राजकीय विद्यालय मे प्रात ७-३० बजे कार्यक्रम बहन सुभाषिणी जी की अध्यक्षता मे प्रारम्भ हुआ। सबसे पहले सभा स्थल पर ही आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के उपदेशक श्री प० अविनाश जी शास्त्री के निर्देशन मे ब्रह्मयज्ञ व देवयज्ञ का आयोजन हुआ। यज्ञ पर गाव के प्रतिष्ठित लोगो को यज्ञोपवीत धारण कराये तथा शराब एव धूम्रपान आदि दुर्व्यसनो को छोडने की प्रतिज्ञाये कराई। इसके पश्चात् बहुत ही शान्त वातावरण के साथ सम्मेलन की कार्यवाही मच पर आरम्भ हुई।

आपको याद रहे महात्मा भक्त फूलसिह बलिदान दिवस समारोह आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्त्वावधान मे मनाया गया। सबसे पहले सभामत्री आचार्य यशपाल, उपमत्री श्री सुरेन्द्रसिह शास्त्री, श्री केदारसिह आर्य, बलवीर शास्त्री, श्री धर्मपाल शास्त्री, मा० खजानसिह आर्य ने गाव माहरा की चौपाल मे ग्राम सभा की एक मीटिंग बुलाई जिसमे गाव के प्रमुख व्यक्ति श्री धर्मसिह पटवारी, श्री रघुवीरसिह, श्री गोपीराम, श्री दयानन्द पहलवान, श्री जगदीश, श्री महावीर माल्हे, श्री डा० सत्यप्रकाश, श्री हुकमसिह, श्री बलवान, श्री बलजीत, श्री रणवीर, श्री महावीर आदि लोगो ने भाग लिया। ग्राम सभा को सम्बोधित करते हुए सभामत्री आचार्य यशपाल ने महात्मा भगत फूलसिह जी की जन्मस्थली पर उनका बलिदान दिवस मनाने के महत्त्व पर प्रकाश डाला तथा आर्यसमाज के प्रचार से युवा पीढी को सस्कारित बनाने पर बल दिया तथा गाव वालो से भगत जी का बलिदान दिवस मनाने के लिये सहयोग मागा, गाववालो ने सभा अधिकारियो को आश्वस्त किया। आपके आने पर गाव मे एक चेतना उत्पन्न हुई। अभी तक किसी ने भी इस पर विचार नहीं किया था। सभा के कार्यक्रम से सभी गाव के लोग खुश हैं और कहा गाव की तरफ से पूरा सहयोग मिलेगा। बाहर से आनेवाले लोगो के भोजन आदि का प्रबन्ध गाववाले स्वय करेगे साथ ही गाववालो ने २१ सदस्यीय कमेटी का गठन कर दिया और गाव की सभी बिरादरी के भाइयो से सहयोग की अपील की।

१० अगस्त को बलिदान दिवस पर आर्यसमाज के कार्यकर्ताओ के प्रयत्नो से माहरा मे मेलासा भर गया। बलिदान दिवस के अवसर पर विशाल समारोह मे हरयाणा के प्रमुख आर्यनेता तथा कार्यकर्ता उपस्थित थे। मच का प्रभावशाली ढग से सचालन सभामत्री आचार्य यशपाल ने किया। इस अवसर पर निम्नलिखित वक्ताओ ने भक्त जी को अपनी श्रद्धाजलि अर्पित की।

सर्वश्री वेदव्रत शास्त्री सभा वरिष्ठ उपप्रधान, महेन्द्रसिह शास्त्री सभा वरिष्ठ उपमत्री, सुखदेव शास्त्री महोपदेशक, होशियारसिह मलिक बीधल, प्रिं० दलीपसिह दहिया अध्यक्ष तदर्थ समिति गुरुकुल भैंसवाल, खानपुर, बहन सुभाषिणी देवी सुपुत्री भक्त जी, प० सत्यवीर विद्यालकार प्रधान गुरुकुल कुरुक्षेत्र, मा० खजानसिह आर्य मन्त्री आर्यसमाज

जूआ, जोगेन्द्रसिह मलिक वकील रेवाडा, चन्द्रपाल शास्त्री बुआना लाखु, पृथ्वीसिह शास्त्री, मा० दलीपसिह गुरुकुल भैंसवाल, राजवीर मण्डली माहरा, कपिलदेव दहिया पत्रकार हरिभूमि डा० अग्रवाल पत्रकार सोनीपत, प० कृष्णदयाल वकील माहरा, वेदप्रकाश खत्री प्रधानाचार्य माहरा, विजयेन्द्रसिह भटगाव, मा० रामपाल दहिया, चौ० मित्रसेन सिन्धु (खाण्डाखेडी), रामधारी शास्त्री सभा उपप्रधान (जीन्द), राममेहर वकील (मकडोली), भक्त मगतूराम सभा उपप्रधान (तावडू), आचार्य बलदेव (कालवा), श्रीमती मोनिका दत्ता (दिल्ली विश्वविद्यालय), सुदेश आर्या शास्त्री दोहिती कुवर जोहरीसिह, दयाकौर आर्या सुपुत्री मा० रामप्रकाश आर्य लाढौत; प्रो० शेरसिह पूर्व केन्द्रीय राज्यमन्त्री, श्री स्वामी ओमानन्द सरस्वती सभाप्रधान, ब्र० सुशील, ब्र० विक्रम (माहरा), डा० बलदेव (खानपुर), सुरेन्द्र शास्त्री सभा उपमत्री, महेन्द्र शास्त्री न्यात, राजकीय विद्यालय माहरा तथा कन्या गुरुकुल खानपुर की छात्राए आदि सभी ने महात्मा भक्त फूलसिह जी को एक महान् त्यागी, तपस्वी, गुरुकुल शिक्षाप्रेमी, शुद्धि आन्दोलन के सचालक, समाज सुधारक, दलितोद्धारक, स्वतत्रता सेनानी, सत्य के उपासक, वैदिक धर्म के प्रसारक, परोपकार करने हेतु लम्बा व्रत धारक तथा अमर बलिदानी बताया। हरयाणा सरकार से एक प्रस्ताव मे माग की गई कि उनके जन्मस्थान पुराने घर को ऐतिहासिक स्थान घोषित करके स्मारक बनाया जावे और जनता से ग्राम मे उनकी स्थायी स्मृति बनाने के लिए आर्यसमाज मन्दिर तथा पुस्तकालय का निर्माण करने के लिए माग की गई, जिससे भावी पीढी को उनके महान् कार्यो से परिचित तथा वैदिक धर्म मे सस्कारित किया जावे।

इस बलिदान समारोह को सफल करने के लिए माहरा गाव के सर्वश्री दयानन्द पहलवान, जोगीराम, रणवीर दलीपसिह, कटारसिह, महावीर, बलजीत, चन्द्रसिह, जिलेसिह, शेरसिह मल्हू, डा० सत्यप्रकाश, राजवीर, बलवान, हुकमसिह, रघुवीर, सुलतान, रघुनाथ, दरियावसिह, जगदीश, मा० ओम्प्रकाश, सरपच जयलाल, ओम्प्रकाश एस डी ओ, आजादसिह एस डी ओ आदि एव जितेन्द्र आर्य प्रधानाचार्य हुल्हेडी, आर्यसमाज जूआ, तिहाड, भटगाव, सरगथल, कासण्डी, गामडी, खानपुर, सोनीपत, गोहाना, लाखु बुवाना एव सभा के कोषाध्यक्ष बलराज आर्य, प्रि० लाभसिह (पानीपत) सुखवीर शास्त्री रोहतक तथा अन्य ग्रामो के आर्यसमाज के कार्यकर्ताओ के एव श्री कपिलदेव दहिया पत्रकार के नाम विशेष उल्लेखनीय है। बहन सुभाषिणी जी तथा कन्या गुरुकुल खानपुर एव गुरुकुल भैंसवाल उच्च विद्यालय के स्टाफ ने भी पूरा योग दिया।

छपते-छपते—दिनाक ११ अगस्त को आकाशवाणी रोहतक से प० सुखदेव शास्त्री द्वारा भक्त फूलसिह पर वार्ता प्रसारित की गई।

—केदारसिंह आर्य, सभा उपमत्री

बलिदान दिवस पर चतुर्वेद शतक यज्ञ सम्पन्न

कन्या गुरुकुल खानपुर कला (गोहाना) जिला सोनीपत मे स्वर्गीय महात्मा भक्त फूलसिह जी के ६१वे बलिदान दिवस पर चतुर्वेद शतक यज्ञ वैदिक विधि-विधान अनुसार आचार्य भद्रसेन शास्त्री स्नातक गुरुकुल विद्यापीठ हरयाणा भैंसवाल कला की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य भद्रसेन शास्त्री यज्ञ के अध्वर्यु का कार्यभार बहिन ब्रह्मवती शास्त्री ने सम्भाला हुआ था। वेदपाठ पूर्व प्राचार्या श्रीमती प्रियम्वदा व कुसुमलता अध्यापिका सस्कृत विभाग दोनो ने मिलकर सस्वर पाठ किया। यजमान का कार्य बहिन साहबो प्राचार्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, बहिन ब्रह्मावती मुख्य सस्कृत विभाग, बहिन ज्ञानवती प्राचार्या डिग्री कालेज तथा बहिन कमला सुपुत्री बहन सुभाषिणी जी एव आठ कन्याओ और दो सेवानिवृत्त सैनिक अधिकारियो ने अपनी पत्नियो के साथ यजमान बनकर आहुति क्रम जारी रखा। श्रद्धा एव विश्वास के साथ यज्ञ मे वेदमन्त्रो के पश्चात् उच्चारित स्वाहा शब्द के साथ आहुतिया प्रदान की। यज्ञ के ब्रह्मा प्रतिदिन प्रात सायम् वेदमन्त्र के माध्यम से प्रवचन के द्वारा स्वाध्याय करते करवाते थे। यज्ञ मे दोनो समय हजारो कन्याओ की उपस्थिति रहती थी। बडे ध्यान से ब्रह्मा जी के प्रवचन को सुनती थी। कन्याओ के वेदमन्त्रो के उच्चारण को शुद्ध रूप देने के लिये प्रयत्न किया जाता था। पूर्णाहुति के दिन तो प्राय कई हजार छात्राओ, सैकडो प्राचार्यो, अध्यापिकाओ एव सैकडो बाहर से आए हुए सत्सगी जनो की उपस्थिति देखते बनती थी। विशाल यज्ञशाला खचाखच भरी हुई थी। हजारों कन्याएं बाहर आसन लगाए बैठी थी। महासभा के प्रधान चौ० दिलीपसिंह जी भी कन्याओं को आशीर्वाद देने के लिये तथा ब्रह्माजी तथा वेदपाठियो का स्वागत करने के लिये ९ अगस्त को प्रात यज्ञशाला मे उपस्थित थे। पूर्णाहुति कार्यक्रम देखने लायक तथा ग्रहणीय था। ब्रह्मा जी के धन्यवाद देने के पश्चात् दानी महानुभावो ने खुले मन से दान दिया। अन्त मे शान्तिपाठ तथा जयघोषो के साथ यज्ञ का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। प्रियम्वदा जी ने **'यज्ञ सफल हो जाए मेरा यज्ञ सफल हो जाए। पवन शुद्ध हो जाए मेरा यज्ञ सफल हो जाए।'** यह गीत सभी से बुलवाकर प्रसाद के साथ कार्य सम्पन्न करवाया। दिन मे दोपहर के समय सभी सस्थाओ ने उत्सव के रूप में बलिदान दिवस मनाया।

—सभामंत्री

शोक समाचार

श्री मोजीराम आर्य स्वतन्त्रता सेनानी बलियाना वाले गाव पटवापुर जिला रोहतक का ८५ वर्ष की आयु मे दिनाक २२ जुलाई २००२ को आकस्मिक निधन हो गया। हैदराबाद सत्याग्रह आन्दोलन व हिन्दी सत्याग्रह मे वे जेल भी गए। वे आर्यसमाज के कार्यो मे काफी सहयोग देते थे। परमात्मा दिवगत आत्मा की सद्गति प्रदान करे तथा उनके परिवार को इस दु ख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

—सभामंत्री

आर्यसमाज के उत्सवों की सूची

१	आर्यसमाज जुड्डी जिला रेवाडी	१७-१८ अगस्त ०२
२	आर्य कन्या पाठशाला टिटोली (रोहतक)	२९-३१ अगस्त ०२
३	आर्यसमाज बालन्द जिला रोहतक	७-८ सितम्बर ०२
४	आर्यसमाज आर्यसमाज सोनीपत शहर	१६-२२ सितम्बर ०२
५	आर्यसमाज गोहाना मण्डी जिला सोनीपत	१८-२२ सितम्बर ०२
६	आर्यसमाज न्यू कालोनी, पलवल (फरीदाबाद)	१८-२२ सितम्बर ०२
७	आर्यसमाज झज्जर रोड बहादुगढ (झज्जर)	१९-२० सितम्बर ०२
८	आर्यसमाज गगसीना जिला करनाल	१६-१८ सितम्बर ०२
९	आर्यसमाज शेखुपुरा खालसा जिला करनाल	२५-२७ सितम्बर ०२

—रामधारी शास्त्री, सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता

महात्मा भक्त फूलसिंह बलिदान दिवस सम्पन्न (माहरा) की सचित्र झांकी

सभाप्रधान स्वामी ओमानन्द को चादी का रथ भेंट करते हुए जयपाल सरपच। साथ में सभा उपमंत्री केदारसिंह।

श्री तेजवीर की भजनमण्डली गीत प्रस्तुत करते हुए।

सभामत्री आचार्य यशपाल मच को सचालित करते हुए।
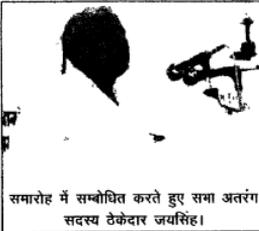
समारोह में सम्बोधित करते हुए सभा अतरंग सदस्य ठेकेदार जयसिंह।

केन्द्रीय राज्यमत्री प्रो० शेरसिंह

सभा उपप्रधान श्री रामधारी शास्त्री
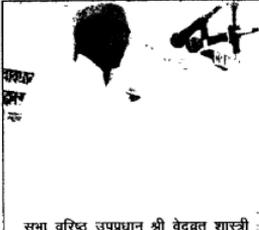
सभा वरिष्ठ उपप्रधान श्री वेदव्रत शास्त्री

गुरुकुल भैसवाल, खानपुर की तदर्थ समिति के अध्यक्ष प्रिंसिपल दलीपसिह दहिया

गुरुकुल भैसवाल के स्नातक प्रिंसिपल सत्यवीर विद्यालकार

सभा वरिष्ठ उपमत्री श्री महेन्द्रसिह शास्त्री
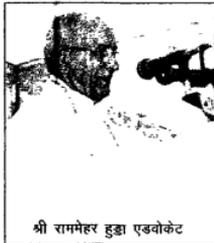
श्री राममेहर हुड्डा एडवोकेट

प्रि० लाभसिह सिवाह (पानीपत)

प० अविनाश शास्त्री नवनियुक्त सभा उपदेशक

भक्त जी की सुपुत्री बहन सुभाषिणी जी।

आर्य गायिका सुदेश शास्त्री दोहिती कुंवर जोहरीसिह

आर्य गायिका श्रीमती दयाकौर आर्या

आचार्य बलदेव जी कालवा (जीन्द)

आर्य दानवीर चौ० मित्रसेन सिन्धु

मनुष्य के उत्थान और पतन का श्रेय बुद्धि को कैसे ?

आम बोलचाल की भाषा मे कहा जाता है कि अकल बडी या भैंस। दूसरी बात कही जाती है कि बिना अकल के ऊट उभाने यानि नगे पांव फिरते हैं, सो बुद्धि तो पूर्वजन्मो के शुभ कर्मों यानि प्रारब्ध से एव इस जन्म मे अच्छे कर्मों, परहित की भावना और गायत्री मन्त्र के अर्थसहित जप से प्राप्त होती है। प्रकृति की विचित्रता को देखिए करोडो, अरबों मनुष्य हैं पर जिस प्रकार उनकी शक्ल-सूरत आपस मे नहीं मिलती उसी प्रकार उनकी अकल यानि बुद्धि का स्तर भी भिन्न-भिन्न है। जहा भी बुद्धि से कार्य नहीं किया जाता वहा घोर अन्धकार और अभाव बना रहता है।

जैसे मुसलमान मुल्ला मौलवी कहते हैं कि इस्लाम मे अकल का दखल बरदास्त नहीं। तो देखिए विश्व मे जितना खून इस्लाम के नाम पर बहाया उतना किसी धर्म ने नहीं। अब हम विचार करेगे कि बुद्धि के स्तर कितने हैं और बुद्धि उत्थान व पतन का कारण कैसे बनती है ?

बुद्धि के मुख्यत पाच अनुभाग कर सकते हैं। पहली बुद्धि साधारण बुद्धि-सभी सामान्य मनुष्यो एव पशु-पक्षियो में भी पाई जाती है। ऐसी बुद्धि सामान्य ज्ञान करा सकती है और सामान्य जीवन जी ने के स्तर तक सीमित होती है जैसे सभी सामान्य मनुष्यो एव पशु-पक्षियो के आहार, निद्रा, भय और मैथुन की इच्छा पूरी करने की प्रवृत्ति पाई जाती है।

(२) दूसरी श्रेणी मे धी बुद्धि आती है, जो मनुष्य समाज को पशु-पक्षियो की श्रेणी से थोडा ऊपर उठाती है, क्योंकि ऐसी बुद्धिवाले व्यक्ति सत्य-असत्य, भले-बुरे, हित-अहित, पाप-पुण्य और धर्म-अधर्म की पहचान कर सकते हैं और चाहे तो तदनुसार आचरण भी कर सकते हैं इसी बुद्धि की प्राप्ति हेतु हम गायत्री मन्त्र के जप से ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।

(३) तीसरे स्तर की बुद्धि मेधा बुद्धि-मेधा बुद्धि वाला मानव अपना मन बाह्य विषयों से हटाकर अन्तर्दृष्टि प्राप्त करने के लिए सकल्प के साथ प्रयत्नशील रहता है, हर गूढ विषय पर मनन करता है, सभी ऐषणाओ को त्यागने की सामर्थ्य उसमे पैदा होनी शुरू हो जाती है। इस प्रकार का व्यक्ति बाहर की यात्रा की बजाय अन्तर्मुखी हो जाता है। यह मनुष्य धीरे-धीरे भौतिकता से ऊपर उठकर आध्यात्मिक रंग मे रग जाता है।

(४) इसके आगे बुद्धि के विकास का चौथा सोपान है, इसको प्रज्ञा बुद्धि कहते हैं, यह जीवन का आध्यात्मिक मोड यानि truning point है। ऐसी बुद्धिवाला व्यक्ति सासारिक कामनाओ एव ऐषणाओ पर पूरा नियन्त्रण प्राप्त करके अन्तर्मुखी हो जाता है। योगिराज श्रीकृष्ण जी ने गीता का उपदेश देते हुए ऐसी बुद्धिवाले मनुष्य के विषय मे कहा कि जिसको किसी वस्तु से प्रेम नहीं जो शुभ को प्राप्त करके प्रसन्न नहीं होता और अशुभ को प्राप्त करके अप्रसन्न नहीं होता उसकी बुद्धि समझो दृढता से स्थिर हो गई है जैसे कछुआ अपने सब अगों को सिकोड कर अपने खोल के अन्दर खींच लेता है, उसी तरह मनुष्य अपनी इन्द्रियों को बाह्य विषयो से हटाकर अन्तर्मुखी कर लेता है, ऐसे व्यक्ति को प्रज्ञा बुद्धि जानो। इसलिए प्रज्ञा बुद्धि प्राप्त व्यक्ति पूर्णतया आत्मचेतन बनकर अपने स्वरूप को पहचान कर कायाकल्प कर लेता है। इस श्रेणी में सन्त रविदास, रवीन्द्रनाथ टैगोर, सन्त तुलसीदास, सन्त कबीर आदि महान् पुरुष आते हैं।

(५) पाचवा सोपान है ऋतंभरा बुद्धि। इस अवस्था मे पहुचकर मनुष्य समाधिस्थ होकर ब्रह्म का साक्षात्कार करके अपने जीवन के परमलक्ष्य को प्राप्त कर लेता है। जैसे योगिराज श्रीकृष्ण जी, भगवान् बुद्ध, भगवान् महावीर, गुरु नानकदेव, गुरु जम्भेश्वर जी, महर्षि दयानन्द, महर्षि अरविन्द, महर्षि महेश योगी, महर्षि शकराचार्य आदि। इस प्रकार बुद्धि साधारण स्तर से उठकर मनुष्य बुद्धि के इस चरम विकास तक पहुचकर ब्रह्म का साक्षात्कार करके सतुष्ट होकर मोक्ष की गति के लिए प्रेरित होता है। गायत्री महामन्त्र भी बुद्धि के विकास का मन्त्र है। इसके निरन्तर अर्थसहित जप द्वारा मनुष्य साधारण बुद्धि से ऋतभरा बुद्धि तक पहुच सकता है।

महाकवि तुलसीदास की निम्नलिखित पक्तियों से स्पष्ट होता है कि मनुष्य की बुद्धि उसके उत्थान एव पतन यानि सुख-दुख का कारण है, **"जहा सुमति तहाँ सम्पति नाना। जहा कुमति वहा विपति निधाना।।"** अर्थात् जिनके पास सद्बुद्धि है उनके पास ही धन-दौलत तथा सुख है और जो व्यक्ति कुबुद्धि को प्राप्त है वह तो मानो संसार के सभी दुखो, कष्टो तथा मुसीबतो से घिरा हुआ है। बुद्धिमान् मनुष्य दुख एव सकट को ज्ञान से काट देता है जैसे संत शिरोमणि कबीर जी की पक्तियों से स्पष्ट है, **"देहधरे का दण्ड है, सब काहू को होय। ज्ञानी भुक्ते ज्ञान से मूर्ख भुक्ते रोय।।"**

महाभारत ग्रथ मे पतन और उत्थान की कसौटी बुद्धि को ही माना गया है, **"न देवा: दण्डमादाय रक्षन्ति पशुपालवत्। यं तु रक्षितु-मिच्छन्ति बुद्ध्या तु विभमन्ति तम्।। यस्मै देवा: प्रयच्छन्ति पुरुषाय पराभवम्। बुद्धि तस्यापकर्षन्ति सोऽवाचीनानि पश्यति।।** अर्थात् इन्द्रियो के विषयो का ध्यान करते-करते पुरुष का उन विषयो के साथ 'सग' पैदा होजाता है, विषयों के लगातार सग से उनके प्रति कामना-राग पैदा हो जाता है, कामना की पूर्ति ना होने पर मनुष्य को क्रोध आता है और क्रोध मनुष्य का शत्रु है और विनाश का कारण है।

इसलिए महर्षि दयानन्द सरस्वती प्रात-साय, सन्ध्या-उपासना करते समय ईश्वर से प्रार्थना करते थे कि "हे प्रभु जब तक मेरे प्राण रहे, मेरा शरीर स्वस्थ्य एवम् रोगरहित रहे और बुद्धि सद्बुद्धि रहे ताकि मेरा जीवन शुभ कार्यो मे लगा रहे और प्राणिमात्र के कल्याण मे व्यतीत हो।

अत हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि मनुष्य का उत्थान व पतन उसकी बुद्धि का सोपान ही होता है, इसीलिए मनुष्य ने ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध, लोभ एव अहंकार को त्यागकर साधारण बुद्धि को गायत्री मन्त्र के जप, साधना व ध्यान से प्रज्ञा-ऋतभरा बुद्धि प्राप्त करने का सतत अभ्यास करना चाहिए। जैसे कवि ने लिखा है कि **"करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान। रसरी आवत-जात ते सिल (पत्थर) पर परत निशान।"**

जब बुद्धि उलटा कार्य करने लग जाए, तो मनुष्य का सर्वनाश होने में देर नहीं लगती। महाभारत का युद्ध टालने का भरसक प्रयास करते हुए जब योगिराज श्रीकृष्ण जी ने कौरवों के सेनापति दुर्योधन को केवल पाच गाव पांडवो को देने के लिए कहा तो कुबुद्धि दुर्योधन ने उत्तर दिया कि पाडवो को बिना युद्ध किये सुई की नोक टिके इतनी भूमि भी नहीं दूगा तो इस पर श्रीकृष्ण ने कहा कि **"विनाशकाले विपरीतबुद्धि:"**। सो इतिहास साक्षी है कि कुबुद्धि या उलटी बुद्धि ने कौरवों का सर्वनाश किया। इस भयकर विनाश के कारण आर्यावर्त यानि भारतवर्ष आज तक भी पूर्णतया उभर नहीं पाया।

अत हम ईश्वर से प्रार्थी हैं कि प्रभु जीवन भर हमारी बुद्धियो को सद्बुद्धि रखना। इति शम्।

—**आर्य अतरसिंह ढांडा**, उपप्रधान आर्यसमाज म न ११, साकेत कालोनी, हिसार

हैदराबाद सत्याग्रह के अमर शहीद सुनहरासिंह आर्य का जन्म दिवस सम्पन्न

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह के शहीद श्री सुनहरासिंह आर्य की पवित्र जन्मस्थली बुटाना (सोनीपत) मे ११ अगस्त २००२ को उनका जन्म दिवस बडे ही हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। १० अगस्त को रात्रि मे प० कुलदीप जी आर्य भजनापदेशक बिजनौर (उत्तरप्रदेश) की भजन पार्टी ने बलिदानी वीरों की गाथा सुनाई। ११ अगस्त रविवार को तीज के पावन पर्व और शहीद सुनहरासिह जी के जन्मदिवस के उपलक्ष्य पर स्वामी वेदरक्षानन्द जी सरस्वती गुरुकुल कालवा के ब्रह्मत्व मे प्रात ९ बजे से ११ बजे तक बृहद्यज्ञ सम्पन्न हुआ। यज्ञोपरान्त निजाम हैदराबाद के अन्याय के विरुद्ध किसलिये आर्यनेताओ ने सत्याग्रह किया इसका वर्णन किया गया। कार्यक्रम बहुत ओजस्वी तथा वीरतापूर्ण था। श्री प० कुलदीप जी आर्य भजनोपदेशक ने अमर शहीद प० रामप्रसाद बिस्मिल की विस्तृत कथा सुनाई। भजनोपदेशिका श्रीमती सुमित्रादेवी (रोहतक) ने आजादी के बलिदानी वीरो की गाथा सुनाई और महर्षि दयानन्द के गुणो तथा कार्यो का वर्णन किया। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के उपप्रधान श्री रामधारी जी शास्त्री ने जवानो का आह्वान करते हुए कहा कि शराब आदि व्यसनों से दूर रहकर व्यायाम और चरित्र निर्माण पर बल दिया। स्वतत्रता प्राप्ति खून की होली खेलकर प्राप्त हुई है। इसकी रक्षा का कार्य जवानो पर है। स्वामी वेदरक्षानन्द जी ने वेदमन्त्र की व्याख्या करते हुए कहा कि माता-पिता और गुरुजन बच्चों का निर्माण आरम्भ से करेंगे तभी आगे सब बुराइयो से दूर रह सकते हैं। अध्यापक प्रतापसिह जी ने कहा शहीद सुनहरासिह का जन्म दिवस प्रतिवर्ष मनाया जाये और विशाल कार्यक्रम हो। इस अवसर पर श्री प्रधान बदलूराम जी आर्य, श्री करतारसिह जी आर्य ने भी प्रेरणाप्रद बातें बताई। श्री रामकुमार जी ने शराब खण्डन का बहुत सुन्दर भजन प्रस्तुत किया। इस प्रकार यह कार्यक्रम ४ बजे तक चलता रहा। माताओं, बहनों, बुजुर्गों, जवानो तथा बच्चो ने शान्तिपूर्वक कार्यक्रम को सुना। —**केदारसिंह आर्य, सभा उपमंत्री**

आर्य-संसार

गांव सीसर में सात दिवसीय वृष्टियज्ञ सम्पन्न

हांसी, निकटवर्ती गांव सीसर में सात दिवसीय वृष्टियज्ञ २० जुलाई से २६ जुलाई तक बाबा गरुडदास डेरे के प्रागण में चौ० बलवन्तसिह आर्य प्रधान आर्यसमाज सीसर खरबला जिला हिसार की अध्यक्षता मे किया गया जिसके संयोजक श्री सूरजमल थे।

यज्ञ के ब्रह्मा श्री रामसुफल शास्त्री वैदिक प्रवक्ता ने पूर्ण वैदिक रीति से ऋग्वेद, यजुर्वेद एवं अथर्ववेद के मन्त्रों से वर्षेष्टि यज्ञ करवाया। श्री जबरसिह खारी एवं श्री वेदपाल आर्य द्वारा रात्रि में वेदप्रचार भी किया गया। पूर्णाहुति २६ जुलाई को हुई जिसमे समूचे ग्रामवासी युवा, बाल, वृद्ध नर-नारियो ने मिलकर आहुतिया प्रदान कीं।

उल्लेखनीय है कि गाव की महिलाओं मे यज्ञ के प्रति अपार श्रद्धा देखने को मिली। महिलाये घर से घी-सामग्री साथ लेकर आयी और आहुतिया प्रदान कीं।

आर्यसमाज अनाजमण्डी उकलाना द्वारा वेदप्रचार समारोह सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के उपप्रधान श्री रामधारी शास्त्री का १ से ४ अगस्त तक वेदो पर आधारित आध्यात्मिक विषय पर सारगर्भित प्रवचन हुआ। इस अवसर पर प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशक श्री आशाराम जी व श्री कुलदीप आर्य बिजनौर ने अपने भजनो द्वारा अमृत वर्षा की। सभी नरनारी आर्यसमाज के इस कार्यक्रम को सुनकर आत्मविभोर होगए। ब्र० जगवीर शास्त्री ने योग आसनों का प्रदर्शन किया तथा कमर से लोहे की जजीर तोडकर दिखाई। चारो दिन यज्ञ का भी आयोजन किया गया।

—**सुगणचन्द्र** मत्री आर्यसमाज उकलाना मण्डी, जिला हिसार

आर्यसमाज मंदिर सेक्टर-६ बहादुरगढ़ (झज्जर) का चुनाव

प्रधान-मा० ब्रह्मजीत आर्य, उपप्रधान-श्री गणेश चोपडा, श्रीमती आचार्या सुनीति, श्री सुरेन्द्रसिह जून, श्री अर्जुनदेव सहदेव, मत्री-श्री सुकर्मपाल सागवान, उपमत्री-श्रीमती कृष्णा प्रदीप, श्री राजेन्द्रप्रसाद, कोषाध्यक्ष-श्री सतवीरसिह राठी, पुस्तकालयाध्यक्ष-श्रीमती रुकमेशदेवी सागवान।

महिला आर्यसमाज सोहना (गुड़गांव) का निर्वाचन

सरक्षिका-श्रीमती शान्तिदेवी व श्रीमती कस्तूरीदेवी, प्रधाना-श्रीमती सन्तोषमुखी, उपप्रधाना-श्रीमती भगवानदेवी, मत्राणी-वेद मोगिया, उपमत्राणी-श्रीमती प्रेमदेवी, कोषाध्यक्ष-श्रीमती उर्मिलादेवी, पुरोहित-श्री योगेन्द्र शास्त्री।

पुस्तक का विमोचन

दिनाक २४-७-२००२ को गुरुपूर्णिमा के पावन पर्व पर श्री आचार्य सत्यप्रिय जी अध्यक्ष वैदिक आश्रम तिजारा जिला अलवर (राजस्थान) द्वारा लिखित एकादशोपनिषद्, लगभग छह दर्शन और वेदो पर चार ग्रन्थो का विमोचन किया गया। जो सरल सुबोध और तर्कपूर्वक प्रमाण सहित आर्षशैली से हिन्दी भाष्य है उनको एक बार अध्ययन करने से अनेक समस्याओ का समाधान मिलता है।

—**पदमचन्द आर्य,** पूर्वप्रधान आर्यसमाज पटेलनगर, गुडगाव

सूचना

समस्त आर्य बन्धुओ को सूचित किया जाता है कि आयुर्वेद/सस्कृत के यशस्वी विद्वान्, प्रसिद्ध नाडी विशेषज्ञ, कर्मठ आर्यसेवक स्व० वैद्य श्री मुनिदेव उपाध्याय की स्मृति मे नि शुल्क आयुर्वेद परामर्श सुविधा वैद्य अखिलेश उपाध्याय प्रात ७ से ९ बजे ३, गणेश विहार, मुकुन्दपुरा रोड-भाकरोटा जयपुर पिन-३०३०११ पर प्रतिदिन देते हैं। कष्टसाध्य रोगी प्रत्यक्ष भेट करे अथवा जवाबी पत्रव्यवहार कर नि.शुल्क आयुर्वेद परामर्श का लाभ ले।

धर्मरक्षा महाभियान के बढ़ते कदम १६० ईसाइयों ने वैदिक धर्म ग्रहण किया

जैसा कि आप जानते हैं धर्मरक्षा महाभियान के अन्तर्गत पुनर्मिलन कार्यक्रम स्वामी धर्मानन्द जी के निर्देशन से निरन्तर चल रहा है। उडीसा के सुवर्णपुर जिले के डुमेरखोल ग्राम मे २० जुलाई प्रात काल ४० ईसाइयो ने उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी व्रतानन्द जी की अध्यक्षता मे यज्ञ में आहुति देकर यज्ञोपवीत धारण किया।

इसी प्रकार मध्याह्नोत्तर २ बजे बलांगीर जिले के भुंजीभाठा ग्राम मे भी एक महत्वपूर्ण १२० ईसाइयो का पुनर्मिलन कार्यक्रम स्वामी व्रतानन्द जी की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। सस्कार कार्यक्रम श्री प० विशिकेशन जी शास्त्री साहित्याचार्य सभा उपप्रधान एव ब्र० सत्यप्रिय सामश्रवा के पौरोहित्य मे अनेक श्रद्धालु आर्यों की उपस्थिति मे सानन्द सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्री कुलमणि आर्य, श्री हेमसागर मिश्र आदि अनेक सज्जन आशीर्वाद देने के लिए उपस्थित थे। दोनो स्थानो मे प्रीतिभोज की व्यवस्था गुरुकुल आममेना की ओर से की गई। —**सुदर्शनदेवार्य,** उपमत्री उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा

आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई का चुनाव

प्रधान-श्री ओकारनाथ आर्य, वरिष्ठ उपप्रधान-कैप्टन देवरत्न आर्य, उपप्रधान-श्री करषणदास राणा, श्री तुलसीराम बागिया, कोषाध्यक्ष-श्री अरुणकुमार अबरोल, पुस्तकाध्यक्ष-श्री चन्द्रगुप्त आर्य, महामन्त्री-श्री मिठाईलालसिह, प्रथम मत्री-श्री यशप्रिय आर्य, द्वितीय मत्री-श्री राजकुमार गुप्ता, तृतीय मत्री-श्री महेश वेलाणी।

वैदिक सत्संग समिति दयानन्दमठ रोहतक का
३५वां सत्संग सम्पन्न

दयानन्दमठ, रोहतक। वैदिक सत्सग समिति द्वारा सचालित वैदिक सत्सग समारोह का पैतीसवा समारोह ४ अगस्त २००२ रविवार को दयानन्दमठ रोहतक मे सम्पन्न हुआ। इस समारोह के सयोजक एव व्यवस्थापक श्री सन्तराम आर्य ने बताया कि सत्सग का कार्यक्रम ९ बजे से ब्रह्मयज्ञ से प्रारम्भ हुआ फिर देवयज्ञ तथा १० बजे यज्ञप्रसाद बाटा गया। फिर १०-२० से ११ बजे तक भक्तिगीत एव भजनो का कार्यक्रम हुआ जिसमे प्रमुख रूप मे बहन दयावती आर्या, श्रीमती सावित्री देवी, श्री सुरेश आर्य मालवी जगवीरसिह हुड्डा सांघी तथा चौ० हरध्यानसिह जी ने अपने गीतो से श्रोताओ को भावविभोर कर दिया। फिर यज्ञ की व्याख्या श्री दयानन्द शास्त्री ने की। अन्त मे इस समारोह के मुख्य वक्ता डा० सुरेन्द्रकुमार जी ने 'आत्मा के स्वरूप' के बारे मे विशेष प्रभावशाली व्याख्यान प्रस्तुत किया। कठोपनिषद् का उदाहरण आचार्य यमराज के पास नचिकेता जाता है और रातभर घर के बाहर भूखा रहने पर यमराज ने तीन वचन दिये। तीसरे वचन मे नचिकेता ने प्रश्न पूछा कि मनुष्य के चले जाने पर क्या बचता है ? अर्थात् आत्मा का स्वरूप क्या है ? अनधिकारी को यदि शास्त्र का ज्ञान दे दिया जाये तो वह उपहास ही करेगा। परोपकार नही कर सकता। अत इस विषय की चर्चा करते रहना चाहिये। इस विषय के वक्ता भी विरले होते है तथा इस विषय को समझनेवाले भी विरले होते है। अत पहले आत्मा का साक्षात्कार करो फिर परमात्मा का साक्षात्कार हो सकता है। परमात्मा आत्मा से सूक्ष्म है। चारवाक नास्तिक है आत्मतत्त्व को नही मानते। वे शरीर मे मद्य उत्पन्न होना मानते है उसे चेतनता कहते है। आर्यसमाज एव महर्षि दयानन्द के जीवन के अन्तिम क्षणो मे महात्मा मुंशीराम तथा प० गुरुदत्त विद्यार्थी भी नास्तिक से आस्तिक बने तथा आत्मतत्त्व को पहचाना था। सब कुछ आत्मा है यह भी गलत है। शरीर व आत्मा, प्रत्येक का जन्म अलग है मृत्यु अलग है, अत जीवात्मा भी अलग-अलग है। यदि सबकी आत्मा एक होती तो सभी एक साथ मरते। सूक्ष्म शरीर १७ तत्त्वो मे बना है, जो मन, वचन व कर्म मे सस्कार रूप मे सचित होजाते है। जीवात्मा के दो ही स्वरूप हैं-मुक्त आत्मा व बन्ध आत्मा। हमारे भोग और भाग्य हमारे कर्म पर टिके है। जब तक कर्म नही करते स्वतन्त्र है। लेकिन कर्म करने के बाद पराधीन होजाते है। अत सत्यार्थप्रकाश एव ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका मे लिखा है कि जीवात्मा के विषय को निरन्तर सुनते-सुनाते रहना चाहिये।

अन्त मे सयोजक श्री सन्तराम आर्य ने घोषणा की कि अगले सत्सग प्रथम सितम्बर २००२ को हिन्दी आन्दोलन के शहीद सुमेरसिह आर्य का शहीदी दिवस भी मनाया जायेगा। शन्तिपाठ के साथ सम्पन्न हुआ। सभी ने मिलकर सामूहिक भोजन किया जिसकी व्यवस्था श्री कृष्ण शास्त्री भम्भेवा व कुलदीप शास्त्री खरावड तथा स्वय सयोजक सन्तराम आर्य ने मिलकर की थी।

—**रविन्द्र आर्य,** सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्
कार्यालय दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक

वैदिक प्रचार अभियान

बच्चों को आर्य बनाओ

अपने आयसमाज मन्दिर मे साय चार बजे से पाच बजे तक एक घण्टा दस या बारह दिन का बाल शिक्षा शिविर लगाओ। आपकी समाज का कोई बुद्धिमान् सज्जन बच्चो को गायत्री मन्त्र, सन्ध्या मन्त्र, अन्त मे शान्तिपाठ याद करायेगा। उनको नमस्ते आदि करने की नैतिक शिक्षा के साथ एक ईश्वरभक्ति या देशभक्ति का गीत भी सुने, सुनायेगा। आर्य परिवार के बच्चो के साथ अन्य बच्चे भी आयेगे। बच्चो को आर्यसमाज की ओर से एक छोटी कापी और पेसिल मुफ्त दी जाये। सम्भव हो तो सन्ध्या-हवन की पुस्तक भी दी जाये। शान्तिपाठ के बाद कुछ स्वास्थ्यवर्धक प्रसाद भी दिया जाये। जैसे बिस्कुट इत्यादि।

इस दस बारह दिन के शिविर मे बच्चो पर अच्छा प्रभाव होगा और बहुत कुछ सीख जायेगे। इनमे मानवता के सस्कार भर जायेगे। यह हमने अपनी समाज मे करके देखा है। हमने १५-१६ दिन तक बच्चो को एक घण्टा मे सस्कृत भाषा भी सिखाई है। बच्चो को सत्सग मे आने का शौक हुआ है। आप भी जरा आयोजन करके देखो। यदि आपके पास कोई शिक्षक नहीं है तो हमारी सेवा प्राप्त कर सकते हो परन्तु आपको हमारा मार्गव्यय दक्षिणा का खर्चा वहन करना पडेगा। अत आप ही किसी स्थानीय सुशिक्षित व्यक्ति को नियुक्त करे। बच्चो को बचपन मे सस्कारित करने का अच्छा (सस्ता) उपाय है। बडे होकर भी ये सस्कार बने रहते है। जो माता-पिता अपने बच्चो को सुधारना यानी कुछ इंसान बनाना चाहते हैं तो अपने बच्चों को एक घण्टा शिविर में अवश्य भेजे। स्वय भी आकर बैठना चाहे तो और भी अच्छी बात है।

पन्द्रह अगस्त व तिरंगा

पन्द्रह अगस्त के दिन यह तिरगा, जब-जब भी लहराता है।
अमर शहीदो की कुर्बानी, हमको याद दिलाता है।।
कितने ही तूफान उठे और कितने ही थे चिराग बुझे।
सदियो भरी गुलामी से फिर हिन्दुस्तानी जाग उठे।
सोना न्ही है फिर से हमको नीद से हमे जगाता है।
अमर शहीदो की कुर्बानी, हमको याद दिलाता है।
पन्द्रह अगस्त के दिन यह तिरगा, जब-जब भी लहराता है।।
वीरो की सन्तान है हम और वीर ही हम कहलायेगे।
पडे जरूरत देश को नाम शहीदो मे लिखवायेगे।
राजगुरु, सुखदेव, भगतसिह से ही अपना नाता है।
अमर शहीदो की कुर्बानी, हमको याद दिलाता है।
पन्द्रह अगस्त के दिन यह तिरगा, जब-जब भी लहराता है।।
देशवासियो भूल न जाना झासीवाली रानी तुम।
खो बैठो आजादी को फिर करना नहीं नादानी तुम।
कफन बाधकर निकल पडो जब दुश्मन कभी भी आता है।
अमर शहीदो की कुर्बानी, हमको याद दिलाता है।
पन्द्रह अगस्त के दिन यह तिरगा, जब-जब भी लहराता है।।
युद्ध हो बासठ-पैंसठ का या इकहत्तर की लडाई हो।
उग्रवाद चुनौती हो या कारगिल की चढाई हो।
दुश्मन अपनी सेना से बस मुह की खा के जाता है।
अमर शहीदो की कुर्बानी, हमको याद दिलाता है।
पन्द्रह अगस्त के दिन यह तिरगा, जब-जब भी लहराता है।।
भेदभाव को भूल जाओ और भारतवासी कहलाओ।
मिलजुलकर अब रहना सीखो झगडो को तुम निपटाओ।
छोटे-मोटे झगडो मे ही देश का सब लुट जाता है।
अमर शहीदो की कुर्बानी, हमको याद दिलाता है।
पन्द्रह अगस्त के दिन यह तिरगा, जब-जब भी लहराता है।।

—**प्रेमसिंह,** पत्र सूचना कार्यालय, चण्डीगढ

गुरुकुलों का स्तर सुधारना होगा

मैं सेवानिवृत्त पेशनभोगी हू। वानप्रस्थ का जीवन घर पर ही पत्नी के साथ व्यतीत कर रहा हू। मैं सोचता हू कि अपना शेष जीवन किसी आश्रम या गुरुकुल मे जाकर व्यतीत करू जहा पढता-पढाता रहूं। जहा रहने और खाने की उचित व्यवस्था हो। अपना खर्चा स्वय वहन करूगा। मैने अनेक गुरुकुलो मे जाकर देखा है कि वहा रहने के अतिरिक्त भोजन का स्तर बहुत निम्न कोटि का है। इसलिये उच्च परिवार के बच्चे गुरुकुल मे आना पसन्द नहीं करते। सब गरीब निर्धन परिवार के बच्चे आते हैं।

मैंने गुरुकुल के कुछ छोटे ब्रह्मचारियो से बाते की, उनसे पूछा, तुम्हारा यहा पढाई मे मन लग रहा है। यहा का भोजन आपको अच्छा लगता है ? एक बच्चे ने कहा, मेरे पिताजी मुझे यहा छोडकर चले गये, मैं यहा रहना नही चाहता, एक छोटा बच्चा तो रोने लगा। इसका मतलब बच्चो को माता-पिता जैसा प्यार नहीं मिलता। भोजन के समय देखा, बच्चो को पतली पानी जैसी दाल या सब्जी और रूखी सूखी रोटियां दी जा रही थी। वहा के आचार्य जी से पूछा, क्या आप भी ऐसा ही भोजन करते हो ? उत्तर–और क्या हमारे लिये स्पेशल बनता है।

मै सोचने लगा, ये बच्चे सारे दिन परिश्रम करते है, पढते है। कम से कम भोजन तो अच्छा मिलना चाहिये। यह बात कहनी लिखनी तो सरल है परन्तु आर्थिक अभाव को कौन दूर करेगा ? गुरुकुल मे गाय पालने पर ही बहुत खर्चा होता है। गुरुकुलो के स्तर को सुधारने के लिए आय का साधन होना आवश्यक है। दानी महानुभावो का दान या छात्रो का प्रवेश शुल्क ही इनकी आय है।

आचार्य जी ने बताया कि अनाज (गेहू) और गाय के लिए भूसा तो गाव के लोगो से मिल जाता है परन्तु इसके अतिरिक्त वेतन, घी, दाल, सब्जी, मसाले, बिजली, पानी के अनेक खर्चे हैं। आर्थिक अभाव के कारण गुरुकुल को चलाना कठिन हो जाता है। हमे अपनी शक्ति के अनुसार सहायता करनी चाहिये।

—**देवराज आर्यमित्र,** आर्यसमाज कृष्णनगर, दिल्ली

चार जिलों के कार्यकर्ताओं की बैठक सम्पन्न

दिनाक ४-८-२००२ रविवार को लाला रामशरणदास वेदप्रचार मण्डल हासी द्वारा आर्यसमाज हासी मे एक महत्त्वपूर्ण कार्यकर्ताओ की एक विशेष मीटिग हुई जिसमे जिला हिसार, भिवानी, सिरसा, फतेहाबाद आर्य कार्यकर्ताओ ने भाग लिया जिसकी अध्यक्षता डा० जयसिह जी आर्य प्रोफेसर ने की। सभा के मुख्य अतिथि श्री हीरानन्द जी आर्य (पूर्व शिक्षामत्री हरयाणा) रहे। जिसका सचालन आर्यजगत् के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री जबरसिह जी खारी ने किया। मीटिग से पूर्व विशाल यज्ञ पुरोहित रामकिशोर शास्त्री द्वारा सम्पन्न किया गया तत्पश्चात् मीटिग मे मुख्य वक्ताओ मे बहन सुमित्रा आर्या, श्री डा० गौड साहब प्रधान आर्यसमाज बहल, श्री जगदीश जी शिविर प्रधान आर्यसमाज सिरसा, चौ० बदलूराम जी आर्य प्रधान वेदप्रचार मण्डल हिसार, श्री शेरसिह आर्य निमडी वाली भिवानी, श्री सुरेन्द्र आर्य आर्यसमाज बोदीवाली, बहन सुदेश जी आर्या चिडौद हिसार, श्री बलवन्तसिंह आर्य शीशर, श्री जवाहरसिह आर्य ढाणीपाल, श्री दलवीरसिह आर्यसमाज डिफेस कालोनी हिसार विभिन्न विद्वानो ने भाग लिया। आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार को किस तरह बढाया जाये इस विषय पर निम्नलिखित विचारो द्वारा सुझाव प्रस्तुत किये।

आर्यसज्जनो के भवन पर ओ३म् ध्वज एवं विद्यालयों मे वैदिक संस्कृति का प्रचार-प्रसार तथा उपदेशको के पास वेदप्रचार-प्रसार हेतु वाहन, साथ ही सुमधुर कैसटे तथा महर्षि दयानन्द स्वरचित साहित्य भी गाडी मे मौजूद हो। गन्दे, अश्लील चुटकले बोलनेवाले प्रचारको पर पाबन्दी लगाई जाये तथा मन से वचन से कर्म से एक ही रास्ते पर चला जाये आदि। सभी सुझावो को सर्वसम्मति से पारित किया गया।

—**सतीशकुमार आर्य,** मन्त्री लालारामशरणदास वेदप्रचार स्मारक, हासी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिग प्रेस, रोहतक (फोन . ०१२६२–७६८७४, ७७८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ०१२६२–७७७२२) से प्रकाशित।

वेद-विशेषांक

आर्यसमाज और वेदप्रचार

❑ डॉ० महेश विद्यालंकार

सृष्टि के आरम्भ मे परमपिता ने प्राणिमात्र के कल्याण व उत्थान के लिए वेदो का ज्ञान प्रदान किया। वेद ईश्वरीय ज्ञान है। वेदज्ञान परमेश्वर का जगत् को आदेश, उपदेश और सन्देश है। इसलिए वेद सबके, सबके लिए तथा सबको पढने एव सुनने का अधिकार है। वेदो का चिन्तन मानवता का चिन्तन है। वेद सृष्टि की आचार सहिता हैं। वेद पुकार-पु[illegible] रहे हैं—शृण्वन्तु सर्वे अमृतस्य पुत्राः। वेदों [illegible]धारा मे क्षेत्र, जाति, वर्ग, देश आदि का भेदभाव नहीं है। वेदज्ञान सार्वकालिक, सार्वदेशिक सार्वजनिक [illegible]। वेदो का जीवन दर्शन ही आज के जीवन तथा जगत् को सत्य, धर्म, न्याय, सुख-शान्ति और सच्चा आनन्द दे सकता है।

"वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है" ऐसी धारणा और मान्यता केवल आर्यसमाज ही रखता है। आर्यसमाज तथा उसकी विचारधारा की अनुयायी सस्थाओ मे ही प्रात काल पवित्र वेदमन्त्रो से यज्ञ होता है। वेद सम्मेलन व वेदकथाए, यही सगठन आयोजित कराता है। वेदमन्दिर तथा **'वेद की ज्योति जलती रहे'** आर्यसमाज नारा देता है। **वेदो की रक्षा, परम्परा, स्वरूप, पठन-पाठन को जीवित रखने और प्रचारित एवं प्रसारित करने की वसीयत** एव विरासत आर्यसमाज को मिली है। दूसरे पथ, सम्प्रदाय और विचारधारा वाले नाम तो वेदो का लेते हैं, मगर वेदो को महत्त्व नहीं देते हैं। वेदो के पुनरुद्धार तथा प्रचार-प्रसार मे ऋषिवर देवदयानन्द का योगदान स्मरणीय एव वन्दनीय है। उन्होने **वेदों का यथार्थ रूप जनमानस को बताया। उन्होने नारा दिया वेदो की ओर लौटो। वेदो की मानो। वेदज्ञान ही विश्वशान्ति और विश्वबन्धुत्व का सच्चा मार्ग दिखा सकता है। दुनिया मे वेदज्ञान से बढकर और कोई श्रेष्ठज्ञान नहीं है।**

आर्यसमाज की स्थापना का मुख्य उद्देश्य रहा **है-वैदिकधर्म का पुनरुद्धार, वेदप्रचार, मूर्तिपूजा,** अवतारवाद, ढोग, पाखण्ड, गुरुडम आदि से जनता को बचाना। अतीत का इतिहास साक्षी है कि आर्यसमाज वैचारिक क्रान्ति की जीवन्त चेतना थी। इसकी भूमिका रही है—जागते रहो। वेद परम्परा को जीवित रखने और आगे बढाने मे आर्यसमाज का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। इसी का परिणाम है कि आज तक वेदो के मन्त्रो मे एक अक्षर की भी मिलावट नहीं हो सकी है। वेदमन्त्रो के अर्थो मे मिलावट के कारण ही अर्थ का अनर्थ हुआ है। इसलिए लोग वेद के भाष्यो को पढकर उल्टे सीधे अर्थ लगाकर, वेदो के बारे मे अनर्गल निराधार तथा घृणित आरोप लगा रहे हैं। जो कि निन्दनीय हैं। आर्यसमाज ने वेदो के बारे मे अनर्गल आरोपो के लिए सदा चैलेज किया और आज भी चैलेज करने की शक्ति व क्षमता रखता है।

आर्यसमाज का मुख्य कार्य वेदप्रचार है। वेदो की शिक्षा और विचारधारा से व्यक्ति और चरित्र निर्माण होता है। वेदज्ञान जीवन तथा जगत् को सच्चा मार्ग बताता है। आज वेदप्रचार की बहुत **जरूरत है। वेदप्रचार** की कमी के कारण ही रोज **नये-नये पथ, सम्प्रदाय, गुरु, महन्त, महाराज आदि** बन और फैल रहे हैं। इसीलिए ढोग, पाखण्ड, गुरुडम, अन्धविश्वास, अन्ध श्रद्धा, जडपूजा आदि पहले से ज्यादा बढ रही है। यदि वेदप्रचार होता तो धर्म, भक्ति और परमात्मा के नाम पर गुरुओ व महाराजो के इतने लम्बे-चौडे पाखण्डभरे व्यापार न फैलते ? लोग मुर्दों से मुरादे न मागते ? पढे-लिखे, जिम्मेदार लोग निर्दोष जीवो की बलिया न चढाते ? धर्म के नाम पर इतने झगडे विवाद न होते ? वेदज्ञान का प्रचार एव प्रसार होता तो इतना पाप, अधर्म, भ्रष्टाचार, पतन, अनैतिकता आदि न होती ?

दु:खद पीडा है कि आज का आर्यसमाज अपने मूल उद्देश्यो, आदर्शों, सिद्धान्तो आदि से हट रहा है जो मुख्य कार्य वेदप्रचार था जिससे व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र और विश्व को आर्य बनाना था। जिसके लिए ऋषिवर ने सपूर्ण जीवन आहुत कर दिया। जिस वेदप्रचार के लिए अनेक तपस्वी, त्यागी, महापुरुषो ने अपना तन-मन और धन लगा दिया। जो वेदज्ञान आर्यसमाज की पहिचान शरीर जान थी, वह वेदप्रचार घट रहा है। वेदप्रचार की जगह स्कूल, औषधालय, बारातघर, दुकाने, मैरिज ब्यूरो आदि ले रहे हैं। इन चीजो से आर्यसमाज की साख, सात्त्विकता, धार्मिकता व पवित्रता नष्ट हो रही है। स्वार्थ, विवाद, पदलोलुपता व अहकार बढ रहा है। मूल छूट रहा है। जहा समाज मन्दिरो मे वेदाध्ययन शालाए होनी चाहिए थीं वहा स्कूल और दुकाने हैं। इससे स्वार्थी और अधार्मिक लोगो ने अपनी आमदनी का साधन बना लिया। अब दान, चन्दा, धर्मप्रचार आदि के पैसे को खाते हुए पापबोध, अपराधबोध तथा आत्मग्लानि नहीं हो रही है। यह हमारे नैतिक मूल्यो के पतन का प्रत्यक्ष प्रमाण है। इन बातो से सगठन व सस्थाओ मे गिरावट आती है। विवाद बढते हैं। प्रभाव घटता है। जनता दूर हटती जाती है। नये जुडते नहीं, पुराने चले जाते हैं। जितना आर्यसमाज का प्रभाव अनुयायी तथा प्रचार-प्रसार होना चाहिए था उतना हो नही रहा है। रचनात्मक और सुधारात्मक क्रियात्मक, योजनाबद्ध कार्यक्रम हम जनता को नही दे पा रहे हैं। हम जनता से जुड नहीं पा रहे हैं। केवल जलसा, जलूस, लगर, फोटो और माला वेदप्रचार नहीं है। आज हम इन्हीं बातो को उपलब्धि मान रहे हैं।

यदि हम सच्चाई और ईमानदारी से वेदप्रचार चाहते हैं, तो इसके लिए मिल-बैठकर गभीरता और ईमानदारी से सोचना होगा। पहले वेदप्रचार अपने से आरम्भ करना होगा। अपने कार्यकर्ताओ, सन्यासियो, विद्वानो, उपदेशको, धर्माचार्यो आदि को सभालना होगा। उन्हे प्रोत्साहन, सहयोग, महत्त्व तथा वरीयता देनी होगी। अपनी पत्र-पत्रिकाओ को वेदप्रचार के रास्ते पर लाना होगा। जो आज मूल

(शेष पृष्ठ दो पर)

वैदिक-स्वाध्याय

हे वरुण !

इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय।
त्वामवस्युराचके।। यजु० २१।१।।

शब्दार्थ–(वरुण) हे वरुण ! (मे) मेरी (इम) इस (हव) पुकार को (श्रुधी) सुन लो। (अद्य च) आज तो मुझे (मृडय) सुखी कर दो (त्वा अवस्यु) मैं तुम्हारी शरण मे आया हुआ, तुमसे रक्षा चाहता हुआ (आचके) प्रार्थना कर रहा हू।

विनय–हे वरुण देव ! मैं कितने दिनो से तुम्हे पुकार रहा हू। पुकारते-पुकारते अब तो बहुत काल बीत गया है। मेरी पुकार की सुनवाई और कब होगी ? लोग मुझ पर हसते हैं। मेरी तुम्हारे प्रति व्याकुलता को देखकर मेरा ठट्ठा करते है और मुझे पागल समझते हैं। परन्तु मैं तो तुम्हारी शरण मे आ चुका हू, एकमात्र तुमसे ही रक्षा पाने की आशा रखता हुआ निरन्तर प्रार्थना कर रहा हू और करता चला जाऊगा। तुम ही को मेरी लाज बचानी होगी। क्या मैं ऐसे ही पुकार मचाता रहूगा और तुम अनसुनी करते जाओगे ? नहीं, तुम्हे मेरी पुकार सुननी होगी। हे सर्वश्रेष्ठ ! हे पापनिवारक ! हे मेरी परम आत्मन् ! तुम्हे मेरी यह पुकार जरूर सुननी होगी। तो, अब तो बहुत काल बीत चुका है, मेरा मन अपनी इस कामना को तुम्हारे आगे कब से धरे बैठा है, क्या इसकी स्वीकृति का समय अब तक नहीं आया है ? अब तो हे नाथ ! इसे पूरा करदो, आज का दिन खाली न जाय। बहुत बार आशा बधते-बधते टूट चुकी है पर आज तो निराश न होना पडे, आज तो इस चिरकाक्षित अभिलाषा को पूरा कर दो, चिरकाल से व्यथित व्याकुल हृदय को सुखी कर दो। यह हृदय तुमसे अटल श्रद्धा रखे, बडे दिनो से तपस्या कर रहा है। बहुतसी निराशाओ के घावो से घायल हो चुका है, पर श्रद्धा नहीं छोड सकता। तो आज तो इसके दुर्दिनो का अत कर दो, इसकी शुभाकाक्षा को मूर्त्तिमती कर दो जिससे इसकी घावो की सब व्यथा अब एक क्षण मे मिट जाय। बस, आज जरूर, आज जरूर ! पुकार मचाते-मचाते अब पर्याप्त दिन हो चुके, तुम्हारी शरण मे पडा मैं बहुत चिल्ला चुका, अपने इस पागल का आज तो सुदिन कर ही दो और इसे अपनी गोद मे उठा लो। **(वैदिक विनय से)**

वृष्टियज्ञ सम्पन्न

आर्यसमाज जाडरा के तत्त्वावधान मे वृष्टियज्ञ का कार्यक्रम दिनाक १७ से २४-७-०२ को सम्पन्न हुआ जिसमे गाव जाडरा के निवासियो ने भरपूर सहयोग व श्रद्धा दिखाई। यज्ञ प० रामकुमार शर्मा पूर्वमन्त्री आर्यसमाज रेवाडी के ब्रह्मत्व मे सम्पन्न हुआ जिसमे गाव जाडरा मे ५० किलो घी का यज्ञ दो चरणो मे पूरा हुआ। पूर्णाहुति के बाद ३ मन चावल का मीठा प्रसाद दिया गया। प० रामकुमार जी शर्मा ने रोजाना यज्ञ के बारे मे उपदेश दिए। युवा शक्ति का मार्ग निर्देशन किया। उन्होने वेद के मन्त्रो से जो उपदेश दिया उससे प्रेरित होकर कई युवाओ ने यज्ञोपवीत ग्रहण किया व दुर्व्यसन छोडने का सकल्प लिया। —**पंच रोशनलाल आर्य,** मन्त्री आर्यसमाज जाडरा

आर्यसमाज और वेदप्रचार..... (प्रथम पृष्ठ का शेष)

उद्देश्य से दूर हो रही हैं। स्थानीय आर्यसमाज मन्दिरो व सस्थाओ को वेदप्रचार पर बल देने की जरूरत है। समाजो मे उपस्थिति क्यो नहीं हो रही है ? लोग हमसे क्यो नहीं जुड रहे हैं ? क्यो का जवाब ईमानदारी से खोजना होगा। दुनिया की सर्वोत्तम विचारधारा का धनी आर्यसमाज है। उसके सबसे बडे हाल मे सात आदमी बैठे हो ? कहा है वेदप्रचार ? जबकि वेदज्ञान से बढकर और कोई चिन्तन नहीं है। अखबार, दूरदर्शन, मीडिया आदि मे हम कहा हैं ? राजनीति मे हम पिछलगू बने घूम रहे हैं।

वेदप्रचार सप्ताह आता है। परम्परा निर्वाह हो जाती है। अपनी पीडा छोड जाता है। वेदप्रचार की दिशा और दशा पर सपूर्ण आर्यजगत् को तत्काल गभीरता तथा पीडा से सोचने और करने की जरूरत है। वेदप्रचार आर्यसमाज की आत्मा है। आत्मा के बिना शरीर का कोई महत्त्व नहीं होता है। समय की माग है–वेदप्रचार की सोचो। इसे आगे बढाओ। इसे जनता तक ले जाओ। जनता को जीवन की सही दिशा नहीं मिल पारही है। भटक रही है। आपकी ओर देख रही है।

श्रावणी उपाकर्म और रक्षाबन्धन

❑ **वेदप्रकाश साधक, दयानन्दमठ, रोहतक**

त्यौहार का हमारे जीवन मे बहुत बडा महत्त्व है। ससार के प्रत्येक देश मे त्यौहार मनाये जाते हैं जो देश की संस्कृति, एकता आत्मविश्वास तथा परम्परा के प्रतीक हैं।

हमारे राष्ट्रीय जीवन के निर्माण मे इस पर्व का बहुत महत्त्व है। इससे पारिवारिक और सामाजिक जीवन मे चेतना और जागृति आती है। इसका सीधा सम्बन्ध वेद के स्वाध्याय से है। **'वेदोऽखिलो धर्ममूलम्'** अर्थात् वेद धर्म का मूल है। **'सुखस्य मूल धर्म'** अर्थात् धर्म सुख का मूल है। इस कारण सृष्टि के आरम्भ से ही ऋषि मुनि लोग वेद के अनुसार आचरण करते आए हैं।

वेद के स्वाध्याय का उपक्रम अर्थात् आरम्भ जिस दिन से किया जाता है उसे उपाकर्म कहते हैं। यह श्रावण मास की पूर्णिमा को होता है। इसी कारण इसको श्रावणी पर्व कहते हैं।

इस दिन प्राचीनकाल से ही सब नरनारी नवीन यज्ञोपवीत धारण किया करते थे, विद्वान् पुरोहित प्रत्येक से सकल्प कराया करते थे कि स्वाध्याय–**'प्रवचनाभ्याम् न प्रमदितव्यम्'** अर्थात् स्वाध्याय प्रवचन मे प्रसाद नहीं करेगे।

वर्षा ऋतु की तीव्रता के कारण ऋषि-मुनि, महात्मा, साधक, सन्यासी, गृहस्थियो के पास आजाते थे और उनको धर्मोपदेश, ज्ञानचर्चा, परिवार निर्माण, ईश्वरभक्ति का उपदेश देकर मार्गदर्शन करते थे। वेद का स्वाध्याय मन, बुद्धि आत्मा का उत्तम भोजन है। इसलिए स्वाध्याय परम्परा को जीवित सार्थक और व्यावहारिक बनाए रखने के लिए इस पर्व का वैदिक सस्कृति मे विशेष महत्त्व है। **'तमसो मा ज्योतिर्गमय'** अर्थात् अज्ञान अन्धकार से दूर होकर ज्ञान के प्रकाश को प्राप्त करो। धीरे-धीरे इस परम्परा का लोप होने लगा। आश्रम व्यवस्था भग होने लगी। राजपूती काल मे अबलाओ ने अपनी रक्षार्थ वीरो को राखी बाधनी शुरू की तब से वीर पुरुष अपनी बहिन समझकर जीवन पर्यन्त उनकी रक्षा का सकल्प करते थे। तब से बहिने और पुत्रिया अपने भाइयो को और पिता को राखी बाधती हैं और वे उन्हे वस्त्र और धन भेट करते हैं।

वास्तविक भावना और इस पर्व का मुख्य उद्देश्य यह यह है कि हम भारतीयो मे वेद की परम्परा जीवित रहे। क्योकि वेदवाणी का मनन-चिन्तन और उपदेश व्यक्ति और समाज निर्माण मे कायाकल्प करता है। दुर्भाग्य से हम अब वेदप्रचार करने मे उदासीन होते जारहे है।

महर्षि ने कहा था, "वेदो की ओर लौटो" वेद का चिन्तन ही मानव को मानव बनाने मे उपयोगी है। मानव बिना आत्मचिन्तन के अधूरा है।

मानसिक और आत्मिक उन्नति के बिना केवल शारीरिक उन्नति मनुष्य को मनुष्यता से गिराकर पशुत्व, पिशाचत्व और राक्षसत्व की ओर ले जाती है। इसलिए वेद का स्वाध्याय अन्नाहार के समान आवश्यक है।

इस दृष्टि से इसी दिन से लगभग चार मास के लिए वेदपारायण का आरम्भ करके श्रावणी पर्व मनाया जाता है। हमारा कर्तव्य है कि वेदों की रक्षा का सकल्प और व्रत ले, ताकि दक्षता प्राप्त कर वैदिक धर्म मे दीक्षित हो जाये तभी हम कहने योग्य होगे–

आर्य हमारा नाम है, वेद हमारा धर्म।
ओ३म् हमारा देव हैं, सत्य हमारा कर्म।।

राखी एक अनोखा बन्धन

हर वर्षो की भाति अब भी रक्षाबन्धन आया है।
भाई-बहन के अमर प्रेम की याद दिलाने आया है।।
हर बहन-भइया को राखी बाधे पुलकित हो करके।
सजी कलाई देख के बहना हसती है खुशिया भरके।
हर धागे के तार-तार मे ऐसा रंग समाया है।।१।।
इसी तरह भैया खुश होकर फूला नहीं समाता है।
बहन की रक्षा वास्ते भइया वचनबद्ध हो जाता है।
करू हमेशा बहन की रक्षा भइया ने फरमाया है।।२।।
राखी एक अनोखा बन्धन कैसा सुन्दर नाता है।
हर बहन और भइया के मन को ये हर्षाता है।
'रामसुफल' के मन को भी ये आज बहुत भाया है।।३।।

—**आचार्य रामसुफल शास्त्री,** वैदिक प्रवक्ता आर्यसमाज हासी (हिसार)

सम्पादकीय....

वेद और मानव

वेद ईश्वरीय ज्ञान है परमात्मा ने अपनी प्रजा के सुख की कामना के लिए मानव मात्र के कल्याण के लिए दिया है। जिस प्रकार ईश्वर ने अग्नि जल वायु आकाश पृथ्वी सूर्य चन्द्रमा आदि का निर्माण प्राणिमात्र के लिये किया गया है और उसको उपयोग करने का अधिकार भी सब को है इसी प्रकार ईश्वरीय ज्ञान वेद भी सबके लिये है। मनुष्य एक ऐसा प्राणी है जो बिना सिखाये नहीं सीखता। इसलिए सृष्टि के आरभ में इसे सिखाने की जरूरत थी। जिसे केवल ईश्वर ही पूरा कर सकता है और उसने पूरा किया। इन चारों वेदों का ज्ञान सृष्टि के आरभ में पूर्ण ज्ञानवान् परमेश्वर ने क्रमश चार ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य, आर्गरा को दिया। चारों ऋषियों ने यह ज्ञान ब्रह्मा को दिया। फिर आगे अन्य ऋषि मुनियो और मनुष्यों तक पहुचा। जो आज तक चला आ रहा है वह सत्य ज्ञान जिसकी मनुष्य को आवश्यकता होती है वह सब वेदों मे विद्यमान है तिनके से लेकर मनुष्य पशु, पक्षी, पृथ्वी, सूर्य चन्द्रमा तारे नक्षत्र आत्मा परमात्मा सबका यथार्थ ज्ञान वेदो मे है। यजुर्वेद के इक्कीसवे अध्याय का सातवा मन्त्र स्पष्ट कह रहा है -

तस्माद् यज्ञात्सर्वहुत ऋच. सामानि जज्ञिरे।
छदासि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत।।

अर्थात् हे मानव जिस पूर्ण ज्ञानवान् ईश्वर से ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद उत्पन्न हुए हैं उसे जानो, उसकी उपासना करो। वेदो को पढो औरा उनकी आज्ञानुकूल वर्ताव करते हुए सुखी होओ। चारो वेद मूल रूप मे अभी तक सुरक्षित हैं। वेदों मे मिलावट करने का अभी तक किसी ने दु साहस नहीं किया है और ना ही मनुष्य में ऐसी योग्यता हो सकती है। सृष्टि के आरभ मे ही वेद ज्ञान का प्रकाश होने से इसमे किसी प्रकार का इतिहास भी नहीं है। हा कुछ स्वार्थी द्वेषवश अज्ञानतावश लोगो ने अर्थ के नाम पर अनर्थ कर दिया। जिसमे मैक्समूलर विदेशी तथा सायण महीघर स्वदेशी लोग हैं। जो वेद के रहस्य को नहीं जान पाये। यही कारण है कि पिछले कुछ समय से वेदो के प्रति अश्रद्धा तथा भ्रान्तिया बढ गई हैं। मानवसमाज का सौभाग्य जानिए उन्हे दयानन्द सरस्वती के रूप मे एक महान् ऋषि मिले। जिन्होने वेदो का विशुद्ध रूप हमारे सामने रखा। महर्षि दयानन्द की भारत को यह महान् देन है। ब्राह्मणो ने यहा तक कि शकराचार्य तथ रामानुज आदि आचार्यों ने स्त्री और शूद्रो को वेद पढने का अधिकार नहीं दिया। परन्तु महर्षि दयानन्द ने यह घोषणा की कि वेद पढने का अधिकार मनुष्य मात्र को है जैसे ईश्वर के द्वारा बनाए गए पदार्थों के उपभोग का अधिकार सबको है वैसे ही वेद ज्ञान प्राप्त करने का अधिकार सभी को है। आर्यसमाज के नियमो मे यह नियम भी प्रमुख रूप से बनाया कि वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है। वेद का पढना और पढाना सब आर्यों का परम-धर्म है। वेद शब्द **'विद् सत्तायाम्'** 'विद्चरणे इन धतुओ से सिद्ध होता है। जिनका अर्थ हुआ कि जो सच्चा ज्ञान विचार और लाभ के सहित हो अर्थात् वेद के द्वारा हमे प्रत्येक वस्तु की सत्ता की जानकारी मिलती है। तत्पश्चात् उसके गुण सस्कार व्यवहार आदि का ज्ञान होता है। उसके बाद सूक्ष्म से सूक्ष्म विषयों पर विचार करने मे समर्थ हो पाते हैं। उसी क्रम मे हमे लाभ की प्राप्ति होती है। वेद के मार्ग पर चलना ही धर्म का अनुसरण माना गया है। सृष्टि के आरम्भ में ब्रह्मा ऋषि हुए, ब्रह्मा के पुत्र विराट् और विराट् के पुत्र मनु हुए जिन्होंने मनुस्मृति लिखी। मनुस्मृति में उन्होने वेद को धर्म का मूल बताया। **"धर्मं जिज्ञासमानाना प्रमाणं परम श्रुति ।"** धर्म के जिज्ञासुओ के लिए वेद ही परम प्रमाण हैं। मनु जी आगे कहते हैं कि **"वेदोऽखिलो धर्ममूलम्"** सम्पूर्ण धर्म का मूल ही वेद है। एक पिता जो अपने पुत्रों को सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है जिससे उसका जीवन सुखी हो। उसी प्रकार सभी प्रजाओ के पिता परमेश्वर ने भी अपनी प्रजा के कल्याण के लिए वेद ज्ञान का प्रकाश किया। आज हम वेद के रास्ते से भटक रहे हैं जिस कारण दु खद वातावरण पनप रहा है। वेद कहता है, हे मनुष्यो तुम सब एक हृदयवाले तथा एक मनवाले होवो और कोई भी किसी से द्वेष नहीं करे तथा सभी एक-दूसरे को इतना चाहे इतना प्रेम करे जितना गाय अपने नए उत्पन्न हुए बछडे से प्रेम करती है। आगे वेद कहता है। हे मनुष्यो ! तुम सूर्य-चन्द्र की तरह कल्याणकारी मार्ग पर चलते रहो और परोपकारी, दानशील, वैरभाव रहित विद्वान् मनुष्यों की संगति करते रहो। यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय के पहले मन्त्र को ही अपने जीवन में धारण करलें तो बहुत से दु.खो से छुटकारा मिल सकता है।

ईशा वास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृध. कस्यस्विद् धनम्।।

अर्थात् गतिशील ससार में जो कुछ भी है वह सब ईश्वर से अच्छादित है, ईश्वर इसके अणु-अणु और कण-कण में विद्यमान है। इसलिए वह हमें सब ओर से देखता है। यह जानकर तथा उस ईश्वर से डरकर दूसरे के पदार्थो को अन्याय से लेने की कभी भी इच्छा मत कर, उस परमात्मा द्वारा दिए गए पदार्थों का उपभोग करो।

अन्याय का त्याग और न्यायाचरण रूप धर्म से आनन्द को भोगे। इसी तरह वेद सब मनुष्यों को प्रेरित करता हुआ निर्देश देता हुआ कहता है कि ससार में मनुष्य शुभ कर्म करता हुआ सौ वर्ष तक जीने की इच्छा करे।

ऐसा करने से वह बुरे कामो में नहीं फसता। ससार में सुखपूर्वक जीने का यही एक तरीका है और कोई भी रास्ता ठीक नहीं। इसी तरह मानव समाज मे कोई जाति पाति नहीं, मनुष्य ही एक जाति है। इसी तरह कुत्ता, बिल्ली, घोडा, गाय कौआ, मोर, कोयल आदि की अपनी-अपनी जातिया हैं। वेद कहता है-**"अजेष्ठासो अकनिष्ठास एते स भ्रातरो वावृधु. सौभगाय।"**

अर्थात् हममे से कोई छोटा या बडा नहीं है। हम सब आपस मे भाई-भाई हैं। हम सबको मिलकरके समृद्धि के लिए काम करना चाहिए। इस तरह देखिए हम सब मानव एक ही परमपिता की सतान हैं। हम सब भाई-भाई हैं तो हमारी अलग-अलग जातिया कहा से हो गई। आगे चलकर वेद मानव को उपदेश देते हुए कहते हैं हे ऐश्वर्य के अभिलाषी पुरुषो तुम सब आपस मे मिलकर चलो, प्रेम से बातचीत करो। तुम सब एक दूसरे से मन मिलाकर ज्ञान प्राप्त करो। जिस प्रकार पहले हुए विद्वान् मिलकर एक दूसरे के सहयोग से अनेक प्रकार का ज्ञान प्राप्त करते हुए ऐश्वर्य और उन्नति को प्राप्त करते रहे हैं, वैसे ही तुम भी करो। हमारे विचार समान हो, हमारे लक्ष्य समान हो, हमारे सकल्प समान हो, हमारी आकाक्षाये समान हो और हम एकजुट होकर आगे बढे। इतना सुन्दर उपदेश ईश्वर ने वेद के माध्यम से अपने पुत्रो को दिया है हम उसका अनुसरण नहीं कर रहे इसलिए पूरे समाज मे अशात वातावरण छाया हुआ है। इतना ही नहीं वेद समाज की व्यवस्था को ठीक रखने के लिए अच्छा राजा चुनने का भी उपदेश देता है।

"रक्षा माकिर्नो अघशस ईशत मा नो दु शस ईशत।
मा नो अद्य गवा स्तेनो मावीना वृक ईशत।।" (अथर्व० १९।३७।६)

अर्थात् हे ईश्वर आप हमारी रक्षा करे, कोई भी दुष्ट दुराचारी अन्यायकारी हम पर शासन न करे। हमारी वाणी पर पाबदी लगानेवाला, हम किसानो से हमारी भूमि छीनने वाला तथा हम पशुपालको से हमारे गौ आदि पशु छीननेवाला व्यक्ति हमारा शासक राजा न बने अर्थात् भेडिया बकरियो का राजा न हो क्योकि तानाशाह राजा प्रजा का नाशक होता है।

यदि राजवर्ग पर प्रजा का नियन्त्रण न रहे तो राजवर्ग प्रजा का ऐसे नाश कर देता है, जैसे जगल मे शेर हृष्ट-पुष्ट पशुओ को मारकर खा जाता है, इसलिए किसी एक को स्वतन्त्र शासन का अधिकार नहीं दिया जाना चाहिए। क्योकि देखने मे आता है, यदि राजा और उसका मन्त्रिमण्डल सदाचारी और न्यायकारी होगा तो प्रजा भी सदाचारी और न्यायकारी बन जाती है, यदि शासकवर्ग दुराचारी होगा तो प्रजा भी दुराचारी बन जाती है, प्रजा तो अपने शासको के पीछे चलती है, आम लोग राजा के कृपापात्र बनने की, उसे खुश रखने की इच्छा से वैसा ही आचरण करते हैं जैसा राजा करता है, इसलिए शासकवर्ग के लिये आवश्यक है कि वे सदा सत्य और न्याय पर चलते हुए प्रजा के आगे उत्तम दृष्टान्त बने। इस तरह हम देख रहे हैं कि मानव समाज की व्यवस्था को सुन्दर और व्यवस्थित बनाये रखने के लिये वेद ने अनेक बार मानव को सावधान किया है, उत्तम मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी है, सुखी जीवन के लिये मर्यादाये बनाई हैं और मानव जीवन का परम उद्देश्य मोक्षप्राप्ति करने का मार्ग प्रशस्त किया है। अपने पुत्रो पर अपार कृपा करते हुए ईश्वर ने उनके कल्याण का मार्ग वेद के द्वारा हमे दिया है। उस पर हमारा चलना ही कल्याण मार्ग पर चलना है, उसी सर्वशक्तिमान् सर्वज्ञ सर्वनियन्ता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि-

हे सबसे महान् प्रभु आपसे प्रार्थना है कि हमारे देश मे सब सत्य विद्याओ के ज्ञाता विद्वान् हो जिनके पुरुषार्थ से अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि होती रहे। राष्ट्र के शत्रुओ को मारने मे समर्थ शूरवीर उत्पन्न हो। दूध, घी, अन्न, सब्जिया और फलो की देश मे भरमार हो। बैल, घोडा, गाडी आदि की सुविधाये सदा बनी रहे। राष्ट्र की महिलाये सतान के धारण तथा पालन पोषण मे समर्थ रहे। जब-जब आवश्यकता हो वर्षा हुआ करे, अतिवृष्टि, अनावृष्टि कभी न हो। कोई भूखा, प्यासा, नगा और दरिद्र न रहे। देश से अज्ञान-अन्याय अभाव का समूल नाश हो। हे ईश्वर आपकी प्रजा आपकी नियम व्यवस्था मे रहकर सुख को प्राप्त हो। हे पिता यही हमारी प्रार्थना है।

इतिहास इस बात का साक्षी है कि जब-जब भी ससार वेद के विमुख रहा तब-तब ही दु ख रोग बढे हैं। चीत्कार भय का वातावरण छाया रहता है। महाभारत जैसे युद्धो मे मानवता का ह्रास और समाज पतित हो जाता है, जीवन मे सुख की कामना के लिए ससार में शान्ति एव न्याय व्यवस्था के लिये वेद का अनुसरण करना ही मानव जीवन के लिये एकमात्र रास्ता है। इससे अलग कोई दूसरा रास्ता नहीं।

नान्य: पन्था विद्यतेऽयनाय।

-यशपाल आचार्य, सभामन्त्री

प्राचीन वैदिककालीन शिक्षा व्यवस्था

एक कवि इकबाल लिखते हैं–

यूनान मिश्र रोमा सब मिट गये जहां से,
बाकी रहा है केवल हिन्दोस्ता हमारा।
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी,
सदियों रहा है, दुश्मन दौरे-जहा हमारा।।

उक्त छद से स्पष्ट है कि भारत की सभ्यता और सस्कृति महान् थी। यही कारण है कि प्राचीन भारत "सोने की चिडिया" कहलाता था। प्राचीन वैदिक शिक्षा प्रणाली अत्यन्त सम्पन्न थी। भारत 'विश्वगुरु' कहलाता था। यहा के तक्षशिला, काशी, उज्जैन, पाटलीपुत्र शिक्षा के विश्वप्रसिद्ध केन्द्र थे जहा अनेक देशो के छात्र विद्याध्ययन करने आते थे।

श्री राधा कुमुद मुखर्जी ने 'प्राचीन भारतीय शिक्षा' मे लिखा है–"अनादिकाल से भारत मे शिक्षा मुक्ति और आत्मबोध का साधन थी और जीवन का महान् लक्ष्य मुक्ति था।" डा० अल्टेकर के अनुसार 'वैदिक युग से शिक्षा का अभिप्राय यही है कि यह प्रकाश का स्रोत है तथा जीवन के विभिन्न क्षेत्रों मे हमारा मार्गदर्शन करती है।' उपनिषदो मे कहा है–**'तमसो मा ज्योतिर्गमय'** अधकार से प्रकाश की ओर ले जाये वही शिक्षा है। मैक्समूलर प्लेटो, अरस्तु, काट, ग्रीक, रोमन, यहूदी विचारको ने प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति की सराहना की और प्रेरणा लेने हेतु इसका अध्ययन किया है।

भारतीय वैदिक शिक्षा का मूल आधार **'सर्वे भवन्तु सुखिन·'**, **'वसुधैव कुटुम्बकम्'**, **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** के विचार पर निर्भर था।

वैदिक शिक्षा का आधार सत्य, सदाचार और अहिसा था। हम सबको मित्रवत् देखे, परोपकार से पुण्य होता है। जब तक जीये प्राणियो पर दयाभाव रखे। दूसरो की पीडा का अनुभव करे। वैदिक शिक्षा वेद, उपनिषदो व दर्शन पर आधारित थी। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, वैदिक साहित्य शिक्षा के मूल अग थे। वैदिक सहिता, ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद् मुख्य साहित्यिक ग्रन्थ थे। उपनिषदो मे ईश, कठ, केन, प्रश्न, तैत्तिरीय, ऐतरेय आदि तथा दर्शन साख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमासा और वेदान्त आदि हैं।

गुरुकुल व्यवस्था–विद्यार्थी परिवार, गाव, शहर से दूर वनो मे निर्मित गुरुकुलो मे पढते थे। ये गुरुकुल प्राकृतिक वातावरण मे जीवन की आपदाओ से निवृत्त स्वच्छ गुरु की देखरेख मे सस्कारों की शिक्षा उपलब्ध कराती थी। जीवन के सभी आवश्यक कार्य छात्र-छात्राओ को स्वय करने होते थे। छात्र-छात्राओ के गुरुकुल शिक्षा का माध्यम थी। कण्ठस्थ शिक्षा की व्यवस्था थी। परीक्षाप्रणाली गुरुकेन्द्रित थी जो सात्त्विकता पर आधारित थी।

आश्रम व्यवस्था–गुरुकुल आश्रमो मे थे जहा सन्त विद्वान् सन्यासी जीवन व्यतीत करते हुए शिक्षा प्रदान करते थे। श्रीराम, कृष्ण, कौरव, पाण्डवो की शिक्षा आश्रमो मे गुरुकुलो मे हुई। ये जीवन के सर्वगुणो से सम्पन्न थे। श्रीराम, श्रीकृष्ण के आदर्श आज भी भारतीय समाज हेतु प्रेरणास्रोत हैं।

ब्रह्मचर्य व्यवस्था–आधुनिक नागरीय वातावरण से दूर भौगोलिक व मानसिक शान्त सुरम्य वातावरण मे ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए वैदिक विद्वान् आचार्यों व सन्यासियो द्वारा शिक्षा ग्रहण करते थे। गुरुकुलो मे सदाचार वेदादि की शिक्षा ग्रहण करनेवाले छात्रो ने सदैव यश व प्रतिष्ठा अर्जित की है तथा अपने देश का नाम विश्व मे सम्मानित किया है।

स्त्री-शिक्षा–स्त्रियो की शिक्षा पृथक् स्त्री गुरुकुलो मे ब्रह्मचारिणियो द्वारा दी जाती थी। उन्हे सुशिक्षित कर समाज को उच्च स्तर पर विकसित करने का प्रयास किया जाता था। मैत्रेयी, अनुसूया, सीता, सावित्री, उर्मिला, कौशल्या, सुमित्रा, कुन्ती, माद्री आदि सन्नारिया वैदिक शिक्षा की देन हैं।

सहिष्णुता–वैदिक शिक्षा **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** के आधार पर दी जाती थी। लोगो की भावनाए प्राणिमात्र के सुख पर आधारित थी। सभी सुखी हो, कोई दुःखी न हो। युद्ध, द्वेष को लेशमात्र भी स्थान नहीं था। अन्यायी को समाप्त करने का प्रयत्न किया जाता था।

अध्यात्मवाद–अपने मे सबको देखने की भावना अध्यात्मवाद का मूल आधार था। जो सबको अपने मे और अपने को सब मे देखता है वही देवता है। इस स्थूल ससार से परे भी कोई सत्ता है जिससे जीवन व शक्ति प्राप्त करके यह प्रवृत्ति विकसित होरही है।

धार्मिक विशालता–हमारे हृदय विशाल हो, सकुचित न हो, इसमे 'सर्वधर्मसमभाव' का विचार मुख्य है। **'हिन्दू-मुस्लिम-सिख-ईसाई, आपस में सब भाई-भाई।** जाति-पाति का यहा कोई स्थान नहीं। सभी एक ईश्वर की सन्तान हैं।

समन्वय की भावना–भारत मे अनेक सम्प्रदाय हैं। वैदिक शिक्षा द्वारा अनेकता मे एकता की भावना समन्वय की भावना पैदा कर राम और रहीम, कृष्ण और करीम मे सामजस्य कायम करता है। इसी भावना को अशोक और अकबर ने अपनाया था।

अभय की भावना–अभय की भावना वैदिक शिक्षा की महान् देन है। वैदिक ऋषि का कथन है–"मित्र से मैं अभय होऊ, शत्रु से मैं अभय होऊं, ज्ञात से अज्ञात से, प्रत्यक्ष से परोक्ष से, रात से दिन से, सब समय, सब दिशाओं मे मैं अभय होऊ।"

विचार-स्वतन्त्रता–गीता में कहा है–"जिस किसी ढग से जो मेरी उपासना करे वह उसी प्रकार मुझे प्राप्त होता है।" यहा विचार स्वतत्रता की शिक्षा दी गई है। यहा दान व बलि देनेवाले विचारक साथ-साथ समन्वय स्थापित कर लेते हैं।

वैदिक शिक्षापद्धति ईश्वरभक्ति एव धार्मिक भावना के साथ-साथ मानवीय चरित्र निर्माण, व्यक्तित्व विकास कर्तव्यपालन, जीविकोपार्जन, सभ्यता एव सास्कृतिक सरक्षण के सस्कार· उत्पन्न कर सच्चा भारतीय नागरिक निर्माण करती थी। खेद है पाश्चात्य प्रभाव से मम्मी, डैडी, "हाय-हाय, बाय-बाय" की शिक्षा देश के युवको को कहा ले जारही है। आतकवाद, तोड-फोड, अराजकता इसी का परिणाम है–

हम कौन थे, क्या होगये और क्या होंगे अभी ?
आओ विचारे बैठकर, ये समस्याएं सभी।।

–**रामनिवास बंसल**, चरखी दादरी (भिवानी)

वैदिक सत्संग समिति का छत्तीसवां वैदिक सत्संग एवं सुमेरसिंह आर्य का शहीदी दिवस

आर्यसमाज की प्रमुख सस्था दयानन्द मठ रोहतक मे वैदिक सत्सग समिति द्वारा संचालित ३६वा सत्सग पहली सितम्बर २००२ रविवार को बडी धूम-धाम से मनाया जायेगा। इस सम्मेलन के सयोजक सन्तराम आर्य ने बताया कि दयानन्द मठ मे ठीक तीन वर्ष पहले स्वामी इन्द्रवेश जी को पीठासीन किया गया था। तभी से निरन्तर वैदिक सत्सग चला आ रहा है। यह सत्सग सामाजिक कुप्रथाओ, धार्मिक अन्धविश्वासों छूआछत अशिक्षा, अन्याय एव शोषण के बारे मे वैदिक धर्म की मान्यताओ का प्रचार, प्रसार करने हेतु प्रारभ किया गया है।

इस बार १ सितम्बर २००२ को सत्सग के साथ-साथ हिन्दी आन्दोलन १९५७ के दौरान फिरोजपुर की जेल मे सहादत देनेवाले श्री सुमेरसिह आर्य का ४५वा शहीदी दिवस भी मनाया जायेगा। इस सम्मेलन की अध्यक्षता आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान स्वामी ओमानन्द जी महाराज करेगे। श्री सन्तराम आर्य ने प्रदेशभर की सभी आर्यसमाजो एव आर्य शिक्षणसस्थाओं तथा सभी आर्य बहिनो एव भाइयो से अपील की कि अधिक से अधिक सख्या मे पहुचकर शहीद को अपनी श्रद्धाजलि दे तथा आर्यसमाज के तपोपिनष्ठ एव वयोवृद्ध सन्यासी से प्रेरणा ले।

–**रवीन्द्र आर्य** कार्यालय मन्त्री, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरयाणा

वेदप्रचार पखवाड़ा

आर्यसमाज मो० सघीवाडा, नारनौल के तत्त्वावधान मे श्रावणी उपाकर्म रक्षाबन्धन के उपलक्ष मे २५-८-२००२ तक वेदप्रचार पखवाडा मनाया जा रहा है। इनमे सम्मिलित होकर धर्मलाभ उठावे।

२१-८-२००२	प्रात ७ बजे से ९ बजे तक, मोती नगर, नारनौल रात्रि ८ बजे से ११ बजे तक ग्राम कुलताजपुर मे
२२-८-२००२	श्रावणी पर्व प्रात ८ बजे से दोपहर २ बजे तक आर्यसमाज मन्दिर, सघीवाडा नारनौल मे
२३-८-२००२	प्रात ७ बजे से ९ बजे तक यज्ञ प्रवचन बाबु बलवीरसिह एडवोकेट, पुरानी सराय, नारनौल
२४-८-२००२	प्रात ८ बजे से ९ बजे तक यज्ञ प्रवचन वेदप्रकाश आर्य निजामपुर रोड (सैनी धर्मकाटा) नारनौल
२५-८-२००२	प्रात ७ बजे से ९ बजे तक यज्ञ प्रवचन श्री अजुध्याप्रसाद लोहिया, पुरानी मण्डी, नारनौल

निवेदक **जगराम आर्य कप्तान**, संयोजक

महात्मा भक्त फूलसिंह बलिदान दिवस सम्पन्न (माहरा) की सचित्र झांकी

स्वामी ओमानन्द जी प्रवचन करते हुए। श्री कपिलदेव पत्रकार, श्री ज्ञानसिह, श्री रामस्वरूप नाहरी, श्री वेदव्रत शास्त्री, श्री कुलवीर छिक्कारा साथ बैठे हैं।

दानप्राप्ति की रसीदे काटते हुए श्री केदारसिंह आर्य, श्री बलराज सभा कोषाध्यक्ष, आचार्य यशपाल, श्री तेजवीर, श्री जयपाल, श्री सुखवीर शास्त्री

कन्या गुरुकुल खानपुर की छात्राओं का विशाल समूह

ग्राम माहरा तथा अन्य ग्रामो के आर्य कार्यकर्ताओ का विशाल जनसमूह

गुरुकुल झज्जर के ब्रह्मचारियो द्वारा शक्ति प्रदर्शन,
एक ब्रह्मचारी गले से सरिया मोडते हुए।

सभा उपमन्त्री श्री सुरेन्द्र शास्त्री, श्री सुखवीर शास्त्री तथा
मा० खजानसिह आर्य श्री मित्रसेन का स्वागत करते हुए।

कन्या गुरुकुल खानपुर की छात्राएं श्रद्धांजलि गीत सुनाते हुए।

गुरुकुल भैंसवाल उच्च विद्यालय के छात्रों का विशाल समूह।

मनुस्मृति और स्त्री-सत्कार

—वेदव्रत शास्त्री, आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक

पानीपत से प्रकाशित १८ अगस्त के दैनिक भास्कर के पृष्ठ ४ पर अनिल जैन का एक लेख छपा है **"बहुत कुछ धधक रहा है इस चिता मे"।**

आपने लिखा है कि सतीप्रथा न तो शास्त्रसम्मत है और न ही भारत से इसका कोई नाता रहा है। इसको राजा राममोहन राय ने १८३९ ई में वैदिक साहित्य के हवाले से सिद्ध कर दिया था और ब्रितानी हुकूमत ने पूरे देश मे सतीप्रथा पर प्रतिबन्ध लगा दिया था। ऋग्वेद और अथर्ववेद के आधार पर वैदिक युग मे आप विधवा विवाह की व्यवस्था को भी स्वीकार करते हैं। गुप्तकाल में भी "सती" जैसी कोई प्रथा प्रचलन मे नहीं थी। यहा तक तो लेखक के विचारो से हमारी कोई असहमति नहीं है। आगे आप लिखते हैं -

"सारी गडबड़ी शुरू हुई स्मृतियो से। हिन्दू समाज में औरत के सम्बन्ध में जो मानसिकता स्मृतियों (मनुस्मृति से चाणक्य स्मृति तक) ने बनाई वह अब भी जस की तस है।"

"हिन्दू समाज की औरत सम्बन्धी धारणाओ को बनाने वाली सब से चर्चित पुस्तक है 'मनुस्मृति'। इस पुस्तक मे विधवा तो ठीक, समूची स्त्री जाति का ही उल्लेख कहीं भी आदर के साथ नहीं हुआ है।"

लेखक मानता है कि गुप्त काल तक सती प्रथा का प्रचलन नहीं था किन्तु सारी गडबडी स्मृतियो से हुई है। जिनमे मनु से लेकर चाणक्य तक के सभी स्मृतिकार लेखक की दृष्टि में अपराधी हैं अर्थात् यह गुप्त काल के बाद में हुए हैं।

अनिल जैन **मनुस्मृति** से तो अनभिज्ञ हैं ही, साथ ही इतिहास से भी कोरे प्रतीत होते हैं। उपलब्ध सस्कृत वाङ्मय मे वेदो के पश्चात् मनुस्मृति सब से प्राचीन ग्रन्थ है। मनु मानवसमाज का सर्वप्रथम शासक हुआ है और मनुस्मृति उसका सविधान है।

मनुस्मृति मे १२ अध्याय हैं और २६८४ श्लोक हैं जिन पर कुल्लूकभट्ट ने सस्कृत में टीका लिखी है। महात्मा मुशीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) ने सन् १९०९ ई० में वेदानुकूला सक्षिप्त मनुस्मृति गुरुकुल कागडी से प्रकाशित करवाई थी। उसमे १९०८ श्लोक हैं। आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट ५४४ खारी बावली दिल्ली से प्रकाशित मनुस्मृति में अनुसन्धानकर्ता और समीक्षक डॉ० सुरेन्द्रकुमार मनुस्मृति मे कुल १२१४ श्लोक ही मौलिक मानते हैं शेष श्लोक प्रक्षिप्त (समय-समय पर मिलाये हुए) हैं, ऐसी उनकी धारणा है। यह तो सभी गवेषक मानते है कि मनुस्मृति में मिलावट हुई है उनमे स्त्रियो से सम्बन्धित श्लोक भी हैं। किन्तु यह लिखना कि **मनुस्मृति में समूची स्त्री जाति का ही उल्लेख कहीं भी आदर के साथ नहीं हुआ है।** लेखक का यह अज्ञानपूर्ण मिथ्या कथन है। मैं यहा मनुस्मृति के १५ श्लोक उद्धृत कर रहा हू जिनसे ज्ञात होता है कि मनु ने स्त्रियो को अत्यधिक सम्मान, श्रद्धा और उच्चता प्रदान की है। वे स्त्रियो को **गृहस्वामिनी, गृहलक्ष्मी, गृहशोभा** और देवी जैसे विशेषणो से सम्बोधित करते हैं और उन्हे घर के सुख का आधार मानते हैं। उनका **सम्मान करने** और उन्हे **प्रसन्न** रखने की प्रेरणा भी देते हैं।

१ **पितृभिर्भ्रातृभिश्चैता पतिभिर्देवरैस्तथा।**
पूज्या भूषयितव्याश्च बहुकल्याणमीप्सुभि.।। (३-५५)

पिता,भ्राता,पति और देवर को योग्य है कि अपनी कन्या, बहन स्त्री और भौजाई आदि स्त्रियो का सदा पूजन करे। अर्थात् यथायोग्य मधुर भाषण, भोजन, वस्त्र, आभूषण आदि से प्रसन्न रखे। जिन को कल्याण की इच्छा हो वे स्त्रियो को क्लेश कभी न देवे। **(सस्कारविधि)**

स्त्रियों का सत्कार करने से लाभ :—

२ यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफला क्रिया।। (३-५६)

जिस कुल मे नारियो की पूजा अर्थात् सत्कार होता है उस कुल मे दिव्यगुण दिव्य भोग और उत्तम सन्तान होते हैं और जिस कुल में स्त्रियो की पूजा नहीं होती वहा जानो उनकी सब क्रिया निष्फल हैं। **(सस्कारविधि)**

"जिस घर में स्त्रियों का सत्कार होता है उसमें विद्यायुक्त पुरुष होके, सब देव सज्ञा धरा के आनन्द की क्रीडा करते हैं और जिस घर में स्त्रियों का सत्कार नहीं होता वहां सब क्रिया निष्फल हैं।" **(सत्यार्थप्रकाश)**

स्त्रियों के शोकाकुल रहने से कुल का विनाश :—

३ **शोचन्ति जामयो यत्र विनश्यत्याशु तत्कुलम्।**
न शोचन्ति तु यत्रैता वर्धते तद्धि सर्वदा।। (३-५७)

४ **जामयो यानि गेहानि शपन्त्यप्रतिपूजिता:।**
तानि कृत्याहतानीव विनश्यन्ति समन्तत:।। (३-५८)

स्त्रियों के सम्मान की प्रेरणा :—

५. **तस्मादेता: सदा पूज्या भूषणाच्छादनाशनै:।**
भूतिकामैर्नरैर्नित्य सत्कारेषूत्सवेषु च।। (३-५९)

पति पत्नी की सन्तुष्टि से ही परिवार का कल्याण :—

६ **सन्तुष्टो भार्यया भर्ता भर्त्रा भार्या तथैव च।**
यस्मिन्नेव कुले नित्य कल्याण तत्र वै ध्रुवम्।। (३-६०)

पति पत्नी की अप्रसन्नता से सन्तान का न होना :—

७. **यदि हि स्त्री न रोचेत पुमांसं न प्रमोदयेत्।**
अप्रमोदात्पुन: पुंस: प्रजननं न प्रवर्तते।। (३-६१)

८. **स्त्रियां तु रोचमानायां सर्वं तद्रोचते कुलम्।**
तस्या त्वरोचमानायां सर्वमेव न रोचते।। (३-६२)

स्त्रियां घर की लक्ष्मी शोभा और पूजा के योग्य हैं :—

९ **प्रजननार्थं महाभागा: पूजार्हा गृहदीप्तय:।**
स्त्रिय: श्रियश्च गेहेषु न विशेषोऽस्ति कश्चन।। (९-२५)

घर का स्वर्ग (सुख) स्त्रियों के अधीन होता है—

१०. **अपत्य धर्मकार्याणि शुश्रूषा रतिरुत्तमा।**
दाराधीनस्तथा स्वर्ग: पितृणामात्मनश्च ह।। (९-२८)

स्त्री घर की स्वामिनी है—

११. **अर्थस्य सग्रहे चैना व्यये चैव नियोजयेत्।**
शौचे धर्मेऽन्नपक्त्या च परिणाह्यस्य वेक्षणे।। (९-११)

स्त्री को कोई दमनपूर्वक घर में नहीं रख सकता :—

१२ न कश्चिद् योषित. शक्त. प्रसह्य परिरक्षितुम्। (९-१०)

स्त्री के लिए पहले मार्ग देना चाहिए—

१३ चक्रिणो दशमीस्थस्य रोगिणो भारिण: स्त्रिया.।
स्नातकस्य च राज्ञश्च पन्था देयो वरस्य च।।

माता, पिता, बहन,स्त्री और पुत्री आदि से विवाद न करे :—

१४. मातापितृभ्या जामिभिर्भ्रात्रा पुत्रेण भार्यया।
दुहित्रा दासवर्गेण विवाद न समाचरेत्।। (४-१८०)

पति-पत्नी सदाचारपूर्वक अन्त समय तक साथ रहें :—

१५ अन्योऽन्यस्याव्यभिचारो भवेदामरणान्तिक:।
एष धर्म. समासेन ज्ञेय: स्त्रीपुंसयो. पर।। (९-१०१)

पाठक स्वयं विचार करें कि अनिल जैन का यह लेख कितना मिथ्या और भ्रामक है। आप स्वय मनुस्मृति का अध्ययन करेगे तो सच्चाई सामने आजायेगी। मनु ने जितना सम्मान नारी को दिया है उतना किसी अन्य व्यक्ति ने आजतक नहीं दिया। मनुस्मृति मे कुछ प्रक्षिप्त श्लोक जरूर हैं जो मनु की ऊपर लिखी भावना के विपरीत होने से त्याज्य हैं। विस्तारभय से श्लोकों का हिन्दी अर्थ यहा नहीं लिखा है।

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के बढ़ते कदम

आर्यसमाज का युवा सगठन सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् अनेक जिलो मे युवा निर्माण शिविरो के माध्यम से युवको मे नैतिकता एव राष्ट्रभक्ति का सचार कर रहा है। इस सगठन के प्रदेश अध्यक्ष श्री सन्तराम आर्य ने बताया कि ३ अगस्त से ९ अगस्त तक गाव बूढर खेडा जिला कैथल मे युवा निर्माण शिविर सम्पन्न हुआ। इसी प्रकार १० अगस्त से १६ अगस्त तक बाबा लदाना जिला कैथल मे युवा निर्माण प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न हुआ। इन शिविरो की सम्पूर्ण व्यवस्था सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् कैथल के प्रधान मालखेडी गाव के सरपच श्री दर्शनसिह आर्य ने सभाली। श्री सत्यवीर आर्य व श्री जयकिशन शर्मा ने शिविरों मे समय-समय पर युवकों को सम्बोधित किया। शिविरो मे प्रशिक्षण का कार्य परिषद् के व्यायाम शिक्षक मनोजकुमार कर रहे हैं।

इसी प्रकार सार्व० आ० यु० परिषद् जिला रोहतक मे भी युवा निर्माण शिविरो का आयोजन कर रही है। ८ अगस्त से १५ अगस्त २००२ तक ग्राम खरकडा जिला रोहतक में शिविर ब्र० वीरदेव आर्य के प्रशिक्षण से सम्पन्न हुआ। ५६ वे स्वाधीनता दिवस के अवसर पर ग्राम खरकडा मे परिषद् के राष्ट्रीय महामन्त्री श्री विरजानन्द एडवोकेट ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया। शिविरार्थियों द्वारा राष्ट्रीय गान गाया गया। परिषद् के प्रदेश अध्यक्ष श्री सन्तराम आर्य ने सयोजन किया तथा परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगवीरसिह एडवोकेट ने अध्यक्षीय भाषण द्वारा ग्रामीणो एव युवको को आर्यसमाज की सामूहिक गतिविधियों मे बढचढकर भाग लेने के लिए प्रेरित किया। इन शिविरो की समाप्ति पर परिषद् की तीन ग्रामीण इकाइयो का गठन भी किया गया।

१ सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् ग्राम खरकडा (महम)
२ सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् ग्राम शामलो कला (जीन्द)
३ सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् ग्राम बूढा खेडा (कैथल)

निवेदक :- रवीन्द्र आर्य कार्यालय मन्त्री

वेदप्रचार सप्ताह पर सभा उपदेशक एवं भजनोपदेशकों को आमन्त्रित करें

हरयाणा के आर्यसमाजो से निवेदन है कि अपने वेदप्रचार सप्ताह/वार्षिक उत्सव/सत्सगो पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के निम्नलिखित उपदेशक एवं भजनोपदेशकों को आमन्त्रित करके लाभ उठावें।

१ प० सुखदेव शास्त्री, २ प० अविनाश शास्त्री उपदेशक, ३ पं० चिरजीलाल, ४ पं० तेजवीर, ५ पं० रामकुमार, ६. पं० जयपाल, सत्यपाल (मडली), ७ पं० मुरारीलाल, ८ स्वामी देवानन्द, ९ प० शेरसिंह, १० पं० विश्वामित्र।

—यशपाल आचार्य, सभामन्त्री

स्वाध्याय-पर्व–श्रावणी-पर्व

भारतीय संस्कृति में अन्य पर्वों के समान श्रावणी पर्व भी उत्साह एव हर्षातिरेक से पूरित करने वाला है। विशेषरूप से यह स्वाध्याय का व्रत लेने का पर्व है। वैदिकधर्म में स्वाध्याय का विशेष महत्त्व है। वेद, उपनिषद्, स्मृति, दर्शन-शास्त्र, ब्राह्मण-ग्रन्थ आदि शास्त्र स्वाध्याय की महिमा से भरे हुए हैं।

स्वाध्याय की महिमा बताते हुए शास्त्रों मे कहा है–

यः पावमानीरध्येत्यृषिभिः सम्भृत रसम्।

सर्वं स पूतमश्नाति स्वदितं मातरिश्वना।। (ऋग्वेद ९/६७/३१)

अर्थात् जो सबको पवित्र करनेवाली ईश्वरप्रदत्त और ऋषियो द्वारा सचित ऋचाओ का अध्ययन करता है, वह पवित्र आनन्दरस का पान करता है।

स्वाध्याय-योगसम्पत्या परमात्मा प्रकाशते। (योग० व्यास० १/२८)

अर्थात् स्वाध्याय और योगसिद्धि (समाधि) से अन्तरात्मा का प्रकाश हो जाता है।

स्वाध्याय-प्रवचनाभ्या न प्रमदितव्यम्। (तैत्ति० उप० ११/१)

अर्थात् स्वाध्याय और वेदोपदेश मे कभी प्रमाद मत करना।

यावन्तं ह वा इमां पृथिवीं वित्तेन पूर्णां ददल्लोक जयति। त्रिस्तावन्त जयति भूयासं चाक्षय्यं, य एवं विद्वानहरहः स्वाध्यायमधीते। तस्मात् स्वाध्यायोऽध्येतव्य ।। (शतपथब्राह्मण ११/५/६/३)

अर्थात् इस पृथिवी को चाहे जितने धन से भरकर दक्षिणा मे देकर इस लोक को जीते, उतने से तिगुना या उससे भी अधिक अक्षय्य लोक को वह विद्वान् प्राप्त करता है, जो स्वाध्याय करता है। इसलिए स्वाध्याय अवश्य करना चाहिए।

अथात स्वाध्याय प्रशसा। प्रिये स्वाध्यायप्रवचने भवत । युक्तमना भवत्यपराधीनोऽहरहरर्थान्त्साधयते, सुख स्वपिति, परमचिकित्सक आत्मनो भवति। इन्द्रियसयमश्चैकारामता च प्रज्ञावृद्धिर्यशो लोकपक्ति.। प्रज्ञा वर्धमाना चतुरो धर्मान् ब्राह्मणमभिनिष्पादयति, ब्राह्मण्य, प्रति-रूपचर्या, यशो, लोकपक्तिम्। लोक. पच्यमानश्चतुर्भिर्धर्मैर्ब्राह्मण भुनक्त्यर्चया च दानेन चाज्येयतया चावध्यतया च। (शत० ११/५/७/१)

अर्थात् स्वाध्याय की प्रशसा–स्वाध्याय और प्रवचन (=पढाना, सुनाना) प्रिय होते हैं। वह मननशील और स्वाधीन हो जाता है। प्रतिदिन धन कमाता है, सुख से सोता है, अपना परम चिकित्सक होता है। उसकी इन्द्रिया सयम मे रहती हैं, एकरस रहता है। उसकी प्रज्ञा/बुद्धि बढती है, यश बढता है और उसके लोग उन्नति करते हैं। प्रज्ञा के बढने से ब्राह्मण-सम्बन्धी चार धर्मो को निष्पन्न करता है–अर्थात् ब्रह्मकुल की नीति, अनुकूल आचरण, यश और स्वजन-वृद्धि। स्वजन उन्नत होकर ब्राह्मण को चार धर्मो से युक्त करते हैं–सत्कार, दान, कोई उसको सताता नहीं, कोई उसको मारता नहीं।

यदि ह वाऽप्यभ्यक्तः, अलङ्कृत., सुहितः, सुखे शयने शयान स्वाध्यायमधीते आ हैव स नखाग्रेभ्य. तप्यते, य एव विद्वान् स्वाध्यायमधीते। तस्मात् स्वाध्यायोऽध्येतव्य । (शत० ११/५/७/४)

अर्थात् चाहे तेल लगाकर, अलकृत होकर, अच्छा खाकर मुलायम शय्या पर सोनेवाला भी स्वाध्याय करता है। वह नखो के अग्र भाग तक तप करता है, जो इस रहस्य को जानकर स्वाध्याय करता है। इसलिए स्वाध्याय अवश्य करना चाहिए।

यथा यथा हि पुरुषः शास्त्रं समधिगच्छति।

तथा तथा विजानाति विज्ञान चास्य रोचते।। (मनु० ४/२०)

अर्थात् मनुष्य जैसे-जैसे अपने शास्त्राध्ययन को बढाता जाता है, वैसे-वैसे उसका ज्ञान बढता जाता है और उसकी प्रीति विज्ञान मे होती है, उसका विविध शास्त्रों से सम्बद्ध ज्ञान भी निर्मल होने लगता है।

वस्तुतः जिस प्रकार शारीरिक उन्नति के लिए भोजन आवश्यक है, उसी प्रकार आत्मिक उन्नति के लिए स्वाध्याय भी आवश्यक एवं अनिवार्य है। स्वाध्याय से विचारों में पवित्रता आती है, ज्ञान की वृद्धि होती है। यदि किसी तालाब में पानी आना बन्द हो जाए तो उसमें कीड़े पड़ने लग जाते हैं। पानी सडने लगता है और दुर्गन्ध आने लगती है। ठीक इसी प्रकार स्वाध्याय के अभाव में व्यक्ति की मानसिक वृत्तियां कलुषित एवं दूषित हो जाती हैं। उसका ज्ञान सीमित हो जाता है और कूप-मण्डूक बन जाता है।

स्वाध्याय शब्द का अर्थ–

स्वाध्याय. प्रणवादिपवित्राणां जपो मोक्षशास्त्राध्ययनं वा।।

(योग० २/१ व्यासभाष्य)

अर्थात् मोक्षविद्या का उपदेश करनेवाले/आत्मा का कल्याण करनेवाले शास्त्रों का अध्ययन स्वाध्याय है, जिससे साधक को अभिलषित मार्ग पर चलने का प्रोत्साहन प्राप्त होता रहे। जैसे–महापुरुषो की जीवनगाथाए, सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, व्यवहारभानु, उपनिषद्, मनुस्मृति, रामायण, महाभारत, षड्दर्शन इत्यादि ग्रन्थो का अध्ययन करना।

अनार्ष, गन्दे और भद्दे उपन्यास एव नाटक आदि पढने का नाम स्वाध्याय नहीं है। इनसे मनुष्य की उन्नति नहीं होती, अपितु पतन ही होता है। अत जहा तक बन सके आर्ष/ऋषियो के/शिष्ट-विशेषज्ञो के ग्रन्थो का ही स्वाध्याय कीजिये। महर्षि दयानन्द के शब्दो मे–"**आर्षग्रन्थो का पढना ऐसा है कि जैसा एक गोता लगाना, बहुमूल्य मोतियो का पाना**" (स०प्र०, तृतीय समु०)।

इसके अतिरिक्त ओम् तथा गायत्री आदि पवित्रता कारक मन्त्रो का जप करना भी स्वाध्याय है। स्वय/आत्मा के विषय मे चिन्तन करना कि आत्मा का क्या स्वरूप है ? कहा से आता है ? कहा जाता है ? क्या करना चाहिए ? मानव जीवन की सफलता के लिए क्या साधक है ? क्या बाधक है ? इत्यादि।

यदि हम श्रावणी के इस पावन अवसर पर स्वाध्याय का व्रत ले, तो हमारा श्रावणी-पर्व मनाना सार्थक होगा, मानव-जीवन सफल होगा।

निवेदक–**आचार्य आनन्दप्रकाश,** आर्ष शोधसस्थान, अलियाबाद, म शामीरपेट, जिला रगारेड्डी, आन्ध्रप्रदेश-५०००७८

वेदों की ज्योति जलाएं

❑ **राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति,** मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ०प्र०)

स्वय बने हम आर्य तभी जगती को आर्य बनाए।
महिमण्डल पर पूर्व सदृश वेदो की ज्योति जलाए।।
आज धरा पर वृत्ति आसुरी, पलती है बिहमती।
मानवता है आहे भरकर, व्यथा कथा निज कहती।
धरती मा है अनाचार व अनय अतुल अब सहती।
गगा की पावन धारा प्रतिकूल दिशा मे बहती।
बिखरा किरणे वेद ज्ञान की, स्वर्ण सवेरा लाए।
महिमण्डल पर पूर्व सदृश वेदो की ज्योति जलाए।।
फैल रहा अज्ञान अधेरा, शिक्षापद्धति है दूषित।
पर्यावरण तथा जल-थल-नभ होता आज प्रदूषित।
विस्तृत है इस पुण्य भूमि पर अनय तथा अन्याय असित।
भ्रष्ट बनी है आज व्यवस्था, जन-जन को है कष्ट अमित।
निरत सभी हो श्रुति के पथ पर, अपना धर्म निभाए।
महिमण्डल पर पूर्व सदृश वेदो की ज्योति जलाए।।
आलोकित हो वेदज्ञान से, मानव का अन्तर्मन।
ऋषियो-मुनियो-मनीषियो की इच्छा का हो प्रणयन।
वेदाधारित हो शिक्षा सब, खुले ज्ञान के दिव्य नयन।
बने प्रफुल्लित इस धरती के सभी मानवो का अभिमन।
वेदमार्ग पर जगती तल के, सब जन कदम बढाए।
महिमण्डल पर पूर्व सदृश वेदो की ज्योति जलाए।।
स्वय बने हम आर्य तभी जगती को आर्य बनाए।।

मास्टर श्री तोखराम आर्य का निधन

बडे खेद से सूचित किया जाता है कि आर्यसमाज धामड, जिला रोहतक के आर्य सदस्य श्री मास्टर तोखराम आर्य का दिनाक १० अगस्त २००२ को निधन होगया। वे ९० वर्ष के थे। वे बडे लगनशील आर्यसमाजी थे। उनके शान्ति यज्ञ मे ग्राम धामड एव रोहतक के आर्यसमाजो के अनेक व्यक्तियो ने उपस्थित होकर उन्हे सादर श्रद्धाजलि समर्पित की। शान्तियज्ञ डा० धर्मपाल शास्त्री एव श्री सुखदेव शास्त्री ने सम्पन्न कराया। उनकी आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना की गई।

—**मास्टर रामप्रकाश,** लाढौत, रोहतक

वेदमाता की महिमा

❑ स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती, आर्ष गुरुकुल कालवा

वेदमाता जो ज्ञान देनेवाली परमात्मा की पवित्र वाणी वेदवाणी सारे इष्ट फलो को देनेवाली है–इसकी जितनी प्रशसा की जाय थोडी है। सब विद्वानो को योग्य है कि इस ईश्वरीय पवित्र वेदवाणी को ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्यादि मनुष्यमात्र मे प्रचार करते हुये सारे ससार में फैला देवें। उस वाणी की कृपा से पुरुष को दीर्घजीवन, आत्मबल, पुत्रादि सन्तान, गौ, घोडे आदि पशु, यश और धन प्राप्त होते हैं। यही वेदवाणी पुरुष को ब्रह्मवर्चस देकर वेदज्ञानियो के मध्य मे सत्कार और प्रतिष्ठा प्राप्त कराती हुई ब्रह्मलोक को अर्थात् **'ब्रह्मलोक: ब्रह्मलोक'** सर्वज्ञ सर्वशक्तिमान् जो परमात्मा उसका ज्ञान देकर मोक्षधाम को प्राप्त कराती है। अथर्ववेद उन्नीसवे काण्ड के इकहत्तरवे सूक्त के प्रथम मन्त्र मे भगवान् उपदेश करते हैं–

स्तुता मया वरदा वेदमाता प्रचोदयन्ता पावमानी द्विजानाम्। आयु: प्राण प्रजा पशुं कीर्तिं द्रविण ब्रह्मवर्चसम्। मह्यं दत्वा व्रजत ब्रह्मलोकम्।।

(अथर्व० १९।७१।१)

अर्थ–परमात्मा उपदेश देते हैं–हे मनुष्यो! (वरदा) वरदान देनेवाली (वेदमाता) वेदमाता (मया स्तुता) मेरे द्वारा उपदेश कर दी गई। यह वेदवाणी (प्रचोदयन्ताम्, द्विजानाम्) चेष्टाशील द्विजो को, मनुष्यो को (पावमानी) पवित्र करनेवाली है। यह वेदमाता (आयु) दीर्घायु (प्राणम्) जीवनशक्ति (प्रजाम्) सुसन्तान (पशुम्) पशुधन (कीर्तिम्) यश (द्रविणम्) धन-धान्य और (ब्रह्मवर्चम्) ब्रह्मतेज प्रदान करनेवाली है। वेद के स्वाध्याय से प्राप्त इन पदार्थो को (मह्य दत्त्वा) मेरे अर्पण करके (ब्रह्मलोकम्) मोक्ष को (व्रजत) प्राप्त करो।

प्रभु उपदेश देते हैं–हे मनुष्यो! मैंने तुम्हारे कल्याण के लिये वेदमाता का उपदेश कर दिया है। यह वेदवाणी कर्मशील मनुष्यो को पवित्र करनेवाली है। जो वेद का अध्ययन कर तदनुसार आचरण करेगा उसका जीवन पवित्र, निर्दोष और निष्पाप तो बनेगा ही साथ ही उसे–(१) दीर्घायु की प्राप्ति होगी। (२) जीवनशक्ति मिलेगी। (३) सुसन्तान की प्राप्ति होगी। (४) पशुओ की कमी नहीं रहेगी। (५) चहु दिशाओ में उसकी कीर्ति-चन्द्रिका छिटकेगी। (६) धन-धान्य, ऐश्वर्य और वैभव की उसे न्यूनता नहीं रहेगी। (७) ब्रह्मतेज, ज्ञानबल निरन्तर बढता रहेगा। वेदाध्ययन द्वारा प्राप्त इन सभी वस्तुओ को प्रभु-अर्पण करदो, प्रजा-हित मे लगादो, मानव-कल्याण मे लगा दो। तुम्हे जीवन के चरम लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति होजायेगी। यहा कुछ वेदज्ञान महिमा विषयक मन्त्र, अर्थ, भावार्थ प्रस्तुत किये जा रहे हैं। आशा है पाठकगण लाभान्वित होगे।

वेद मानव हितकारी–

सो चिन्नु भद्रा क्षुमती यशस्वत्युषा उवास मनवे स्वर्वती।
यदीमुशन्तमुशतामनुक्रतुमग्नि होतार विदथाय जीजनन्।।

(अथर्व० १८।१।२०)

अर्थ–(सो) वही (चित्) निश्चय करके (नु) अब (भद्रा) कल्याणी (क्षुमती) अन्नवाली (यशस्वती) यशवाली (स्वर्वती) बडे सुखवाली 'वेदवाणी' (उषा) उषा 'प्रभातवेला के समान' (मनवे) मनुष्य के लिये (उवास) प्रकाशमान हुई है। (यत्) क्योकि (ईम्) इस 'वेदवाणी' को (उशन्तम्) चाहनेवाले (होतारम्) दानी (अग्निम्) विद्वान् पुरुष को (उशता) अभिलाषी पुरुषो की (क्रतुम् अनु) बुद्धि के साथ (विदथाय) ज्ञान समाज के लिये (जीजनान्) उन्होने 'विद्वानो ने' उत्पन्न किया है।

भावार्थ–परमात्मा ने मनुष्य के कल्याण के लिये वेदवाणी को सूर्य के प्रकाश के समान ससार मे प्रकट किया है। जो मनुष्य वेद-ज्ञाता महाविद्वान् होवे विद्वान् लोग उसको मुखिया बनाकर समाज का सुख बढावे।

वेदमार्ग पर चलो–

यमो नो गातु प्रथमो विवेद नैषा गव्यूतिरपभर्तवा उ।
यत्रा न पूर्वे पितर परेता एना जज्ञाना पथ्या अनु स्वा।।

(अथर्व० १८।१।५०)

अर्थ–(प्रथम) सबसे पहले वर्तमान (यम) यम 'न्यायकारी परमात्मा' ने (न:) हमारे लिये (गातुम्) मार्ग (विवेद) जाना (एषा) यह (गव्यूति:) मार्ग (उ) कभी (अपभर्तवै) हटा धरने योग्य (न) नहीं है। (यत्र) जिस 'मार्ग' में (न) हमारे (पूर्वे) पहले (पितर) पितर 'पालन करनेवाले बडे लोग' (परेता) पराक्रम से चलते हैं (एना) उसी से (जज्ञाना) उत्पन्न हुये 'प्राणी' (स्वा) अपनी-अपनी (पथ्या. अनु) सड़को पर चलें।

भावार्थ–परमात्मा ने पहले से पहले सबसे लिये वेदमार्ग खोल दिया है। जिस प्रकार हमारे पूर्वजों ने उस मार्ग पर चलकर सुख पाया है, उसी वेदमार्ग पर चलकर सब मनुष्य उन्नति करें।

वेद-विद्या से मोक्ष–

सरस्वतीं देवयन्तो हवन्ते सरस्वतीमध्वरे तायमाने।
सरस्वतीं सुकृतो हवन्ते सरस्वती दाशुषे वार्यमदात्।।

(अथर्व० १८।१।४१)

अर्थ–(सरस्वतीम्) सरस्वती 'विज्ञानवती वेद-विद्या' को (सरस्वतीम्) उसी सरस्वती को (दिवयन्त) दिव्य गुणों को चाहनेवाले पुरुष (तायमाने) विस्तृत होते हुये (अध्वरे) हिंसारहित व्यवहार में (हवन्ते) बुलाते हैं। (सरस्वती) सरस्वती (दाशुषे) अपने भक्त को (वार्यम्) श्रेष्ठ पदार्थ (दात्) देती हैं।

भावार्थ–विज्ञानी लोग परिश्रम के साथ आदरपूर्वक वेदविद्या का अभ्यास करके पुण्य कर्म करते और मोक्ष आदि इष्ट पदार्थ पाते हैं।

महर्षि दयानन्द जी महाराज वेदवाणी के विषय मे 'सत्यार्थप्रकाश' मे लिखते हैं–**"जैसे माता-पिता अपने सन्तानों पर कृपादृष्टि कर उन्नति चाहते हैं, वैसे ही परमात्मा ने सब मनुष्यों पर कृपा करके वेदों को प्रकाशित किया है जिससे अविद्यान्धकार भ्रमजाल से छूटकर विद्या विज्ञानरूप सूर्य को प्राप्त होकर अत्यानन्द मे रहें और विद्या तथा सुखों की वृद्धि करते जायें।"**

(सत्यार्थप्रकाश, सप्तम समुल्लास)

"वेद परमेश्वरोक्त इन्हीं के अनुसार सब लोगो को चलना चाहिये और जो कोई किसी से पूछे कि तुम्हारा मत क्या है तो यही उत्तर देना कि हमारा मत वेद अर्थात् जो कुछ वेदो मे कहा है हम उसको मानते हैं।"

(सत्यार्थप्रकाश, सप्तम समुल्लास)

हम परमेश्वर को जानकर उसे प्राप्त करे। पवित्र ईश्वरीय ज्ञान जो वेद हैं, उनको पढकर सबका आचरण वेदानुकूल हो तो ही विश्व का कल्याण होगा। आशा है पाठक इस पवित्र वेद-सन्देश पर अवश्य ही ध्यान देगे।

श्रावणी पर्व का समाज से सम्बन्ध

श्रावणी पर्व की चर्चा, पर्व शब्द से प्रारम्भ करते हैं। पर्व शब्द की चर्चा करना आवश्यक है कि पर्व क्या है ? इसका मानव जीवन से क्या सम्बन्ध है ? पर्व शब्द का अर्थ है–मेल। अभिप्राय संगठन, प्रसन्नता, हर्ष, उल्लासादि।

मानव जीवन में प्रत्येक पर्व खुशियां लाता है। जैसे कि व्यक्ति अपने रोजगार के लिए घर से दूरदराज के क्षेत्रों में जाता है। वहा पर रहकर जीविकोपार्जन कार्य करता है, दूसरे अकेला नहीं मनाता। अपने मित्र सगे सम्बन्धियों को भी पर्व पर निमन्त्रण देता है जिससे सभी एक साथ मिलकर पर्व को प्रसन्नतापूर्वक मनाते हैं। अत पर्व संगठन का भी प्रतीक है।

मानव समाज में व्यक्ति के लिए चार पर्वो का विधान किया गया है। ये विधान भी पूर्णरूप से वैदिक वर्ण व्यवस्था पर आधारित होते हैं। ये चार पर्व है–(१) श्रावणी पर्व, (२) दशहरा, (३) दीपावली, (४) होली।

समाज की वर्णव्यवस्था में श्रावणी ब्राह्मणों का पर्व है। दशहरा क्षत्रियों का पर्व है। दीपावली वैश्यों का पर्व है तथा होली शूद्रों का पर्व है। स्पष्ट कर दे कि ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र कर्मानुसार हैं न कि रूढ़ितास्वरूप शर्मा, राजपूत, अग्रवाल आदि से, वेद भगवान् ने यजुर्वेद ३१/११ में स्पष्ट किया है–

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्य: कृत:।
ऊरू तदस्य यद्वैश्य: पद्भ्यां शूद्रोऽजायत।।

शब्दार्थ–(अस्य) इस पूर्ण पुरुष प्रभु की व्यवस्थानुसार, (मुखम्) मुख के समान मुख्य गुण कर्म से सम्पन्न होने से, (ब्राह्मण) ब्राह्मण वर्ण, (आसीत्) उत्पन्न हुआ। (बाहु) भुजाओ के समान बल पराक्रम युक्त, (राजन्य) क्षत्रिय वर्ण, (कृत) उत्पन्न किया। (ऊरू) शरीर के मध्य भाग जङ्घाओं के समान कृषि वाणिज्यादि गुणो से युक्त, वैश्य वर्ण उत्पन्न किया। (पद्भ्याम्) शरीर के सबसे नीचे भाग पग के समान शारीरिक श्रम करनेवाले, (शूद्र) शूद्र, (अजायत) उत्पन्न किये।

अत पर्व-सूची व वर्णव्यवस्था से ज्ञात होता है कि श्रावणी पर्व मुख्यत ब्राह्मण पर्व है। ब्राह्मण के लिए भी मनुदेव ने मनुस्मृति मे विधान किया है–

अध्यापनमध्ययनं यजनं याजनं तथा दानं प्रतिग्रहश्चैव
ब्राह्मणानामकल्पयत्।।

अर्थ–पढना-पढाना, यज्ञ करना-कराना, दान देना–दान लेना ब्राह्मण का कर्तव्य है।

श्रावणी पर्व कब से चला आरहा है, यह तो कोई निश्चित समय नहीं, किन्तु इतना अवश्य है कि यह पर्व बहुत पहिले से मनाया जारहा है। इसका मनाना श्रावण मास मे प्रारम्भ होजाता है।

आर्यावर्त अर्थात् भारतवर्ष मुख्यरूप से कृषिप्रधान देश है। यहा के लोग आषाढ और श्रावण मास मे कृषिकार्य मे व्यस्त रहते हैं। श्रावणी (सावणी) की जुताई-बुवाई आदि आषाढ से लेकर श्रावण मास के अन्त तक समाप्त होजाती है। इनके पश्चात् कार्य शेष न होने पर धर्म कार्य प्रारम्भ होजाते हैं।

प्राचीन समय मे लोग श्रावण मास के अन्त तक वेद स्वाध्याय मे लग जाते थे। दूसरी तरफ तपस्वी ऋषि-मुनि भी वर्षा के दिनो मे जगल व पर्वतीय क्षेत्र को छोडकर ग्रामो के समीप आजाते थे। लोग उनके पास जाकर धर्मोपदेश ग्रहण करते थे। इस समय लोगो को ऋषियों की सेवा का भी अवसर प्राप्त होता था। जिस कारण से लोग श्रावणी पर्व को ऋषि तर्पण भी कहते हैं। वेदो का उपदेश भी प्रत्येक क्षेत्र मे एक निश्चित दिन प्रारम्भ होता था, जिसे उपाकर्म कहते थे जो कि श्रावण सुदी पूर्णिमा को प्रारम्भ होता था जिससे इस पर्व का नाम श्रावणी उपाकर्म पडा। श्रावणी पर्व का विधान पारस्कर गृह्यसूत्र मे भी मिलता है कि–'**अथातोऽध्यायोपाकर्म। ओषधीना प्रादुर्भावे श्रावण्या पौर्णमास्याम्**' (२।१०।१-२)।

मनुस्मृति मे आया है कि–

श्रावण्यां प्रौष्ठपद्यां वाप्युपाकृत्य यथाविधि।
युक्तश्छन्दांस्यधीयीत मासान् विप्रोऽर्धपञ्चमान्।।
पुष्ये तु छन्दसा कुर्याद् बहिरुत्सर्जन द्विज।
माघशुक्लस्य वा प्राप्ते पूर्वार्द्धे प्रथमेऽहनि।। (४।९५-९६)

अर्थ–श्रावणी और प्रौष्ठपदी (भाद्रपद) पौर्णमासी तिथि से प्रारम्भ करके ब्राह्मण लगनपूर्वक साढे चार मास तक छन्द=वेदो का अध्ययन करे और पौष मास में अथवा माघ शुक्ला प्रतिपदा को इस उपाकर्म का समापन कर देवे।

इस पर्व पर आर्यजनो के लिए कार्य सकेत किये कि सभी आर्यजन मिलकर नवीन यज्ञोपवीत धारण करे। वर्षा ऋतु के विकृत जलवायु को शुद्ध करने के लिए बृहद्यज्ञ करे। विद्वज्जन को बुलाकर अपने घरों व आर्यसमाजो मे प्रचार सप्ताह द्वारा धर्मप्रचार करे। विद्वानो का नित्य मार्गदर्शन लेते रहे।

धर्मप्रचार का यह मौसम अति मनोहारी होता है। हर तरफ हरियाली छाई होती है। नदी तालाब जलमग्न होते हैं। पक्षीगण चहक-चहक कर वातावरण को सगीतमय बना देते हैं। वेदपाठियो का सस्वर पाठ कानो मे अमृतसा घोलता है, जिससे आत्मा भावविभोर होजाती है।

ऐसे मनोहारी दृश्य को स्वामी स्वरूपानन्द जी ने निम्न शब्दो मे चित्रित किया है–

नभ छाई काली घटा, चारों ओर हरियाली।
सावन मास की निराली, आई अजब बहार है।।
मिले बहन और भाई, सजी राखी से कलाई।
क्या अनोखी छवि छाई, खुशी मन मे अपार है।।
यज्ञ प्रवचन जारी, वेदपाठी ब्रह्मचारी।
भीड मन्दिरो में भारी, आया श्रावणी त्यौहार है।।

श्रावणी के साथ रक्षाबन्धन का सम्बन्ध भी कुछेक लोगो का मानना है। इसका विधान रक्षाबन्धन पुराण को छोडकर किसी अन्य प्राचीन ग्रन्थ मे वर्णन नहीं मिलता है। मानना है कि जैसे यज्ञोपवीत के तीन धागो मे तीन ऋणो का सकेत है– (१) मातृ-पितृ व आचार्य ऋण, (२) राष्ट्र ऋण, (३) ईश्वर ऋण वैसे ही रक्षाबन्धन के सूत्र को भी भाई का बहन के प्रति उत्तरदायित्व को दर्शाता हो।

जो भी हो रक्षाबन्धन के भी काल का निर्धारण नहीं कि इसका प्रारम्भ किस समय से हुआ। किन्तु यह राजपूती काल मे प्रकाश मे आई। जब चित्तौड की रानी कर्णवती ने बहादुरशाह से अपनी रक्षा के लिए मुगल बादशाह हुमायू को राखी भेजी जिसे पाकर हुमायू तुरन्त अपनी सेना सहित रानी कर्णवती के रक्षार्थ चित्तौड की तरफ चल दिया। अन्त समय मे पहुचकर गुजरात के बादशाह बहादुरशाह जफर से चित्तौड की रक्षा की। तब से नारियो के द्वारा राखी बांधने की परिपाटी प्रारम्भ हुई। भाई भी बहन की आजीवन रक्षा करना अपना कर्तव्य समझता था। यदि यह प्रथा भाई-बहन के सम्बन्धो को और सुदृढ करनेवाली मानी जाए तो इसके प्रचलन मे कोई दोष नहीं है।

इस प्रकार श्रावणी पर्व हमे धर्मोपदेश के साथ भाई-बहन के प्रेम को भी पूरा करने का उत्तरदायी बनाता है। सभी सज्जनो को उचित है कि वे इस अवसर पर यज्ञ रचाते हुए धर्मोपदेश को जीवन मे ढाले जिससे सदा सर्वदा सुख को प्राप्त किया जा सके।

ब्रह्मा सभी जग को रचके, कहता जग से सब यज्ञ रचाओ।
वेद पढो सुन वेदकथा, लिख सत्य कथा उर शाति बसाओ।
धर्म सुकर्म सदा करके, धन-सम्पत्ति को पर्याप्त कमाओ।
'अवि' करो पर के हित त्याग, तभी भवसागर को तर पाओ।

–**अविनाश शास्त्री**, सभा उपदेशक, दयानन्दमठ, रोहतक

सम्पादक के नाम पत्र–

भारतवर्ष में हिन्दू-आर्य–संकट में

भारत मे इस समय अनेक मतमतान्तर फैल चुके है जैसे ब्रह्मकुमारी-धन धन सतगुरु सच्चा सौदा।

पौराणिको को समझाते-समझाते तो आर्यसमाज ही थक चुकी और वह बहुत ही शिथिल होगई। धर्म का प्रचार करना छोड दिया। ये भी पौराणिको की भाति मठधारी हो बैठे। किसी का किसी गुरुकुल पर अधिकार होगया किसी का आर्यसमाज मन्दिर पर। सिक्ख तो इनसे अलग ही मानने लगे है। उधर मुसलमान सारे विश्व पर छाते जारहे है उनका एक कुरान ही सबको मान्य है। हमारी विचित्र दशा है, उपहास के योग्य है। मुसलमान अपनी जनसख्या पर अपना बटवारा करा गये परन्तु फिर भी भारत मे वही शेर है। पूर्व राष्ट्रपति जी भी चलते हुए कह गये कि बहुसख्यक हिन्दुओ मे सहिष्णुता होनी चाहिए। हिन्दुओ पर भारत मे भी अत्याचार और पाकिस्तान मे इनका अस्तित्व ही कुछ नही। अमरनाथ यात्रियो को मारा जारहा है। कारसेवको को जीवित रेलवे मे ही पेट्रोल डालकर जलाया जारहा है। क्या ये हिन्दू-आर्य इसी प्रकार समाप्त होजायेगे ?

–**नन्दकिशोर वर्मा, झज्जर**

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् (अभियान)

मैं घोषणा और प्रतिज्ञा करता हू कि अपना जीवन समाज और देश के प्रति निष्ठावान् होकर, मिथ्याचरण को त्याग कर सत्य आचरण करते हुये व्यतीत करूगा। मैं समझता हू कि अन्य सज्जन भी ऐसा घोषित करे। हम सब मिलकर मानवता के नाते जीवनोपयोगी सद्ज्ञान का प्रचार करेगे। अपने दुर्व्यसनो को छोडकर सन्मार्ग के पथिक बने। जब हम सच्चे आर्य बनेगे तो हमारे बच्चे और अन्य साथी भी हमारा अनुकरण करेंगे।

इस अभियान मे सर्वप्रथम हम अपना और अपने परिवार का खानपान सात्विक बनायेगे। यदि किसी का खानपान दूषित है तो समझाकर अभक्ष्य पदार्थ खाने के लिए मना करेगे। जब तक भोजन जलपान शुद्ध पवित्र नहीं होगा तब तक बुद्धि निर्मल नहीं हो सकती और मन-मस्तिष्क मे विकार उत्पन्न होते रहेगे।

जो व्यक्ति आर्यसमाज का प्रधान/मन्त्री बनने का दम भरता है वह पहले दुर्व्यसनो को छोडकर मनुष्य बनने का प्रयास करे। उसकी पत्नी बच्चे भी उसके अनुगामी होने चाहिये। यदि उसका परिवार उसके अनुकूल नहीं है अर्थात् उसका कहना नहीं मानते तो वह आर्यसमाज मे पद प्राप्त करने की चेष्टा न करे। जिसका आहार-विहार और दिनचर्या अच्छा नहीं है उसे आर्यसमाज का सदस्य मत बनाओ।

हमने आर्यसमाज के अनेक अधिकारियो को देखा है जो यज्ञोपवीत पहनना एक आफत समझते हैं। सन्ध्या-हवन करने मे लापरवाही करते हैं। इसके अतिरिक्त हिन्दी भाषा लिखना-पढना जानते हुए प्रतिदिन अग्रेजी का अखबार खरीदते हैं। राष्ट्रभाषा की उपेक्षा करते हैं। ऐसे चतुर अधिकारियो को पद से हटाना ही उचित है। आर्यसमाज का अधिकारी यदि अन्य किसी सस्था मे भी अधिकारी है तो वह आर्यसमाज का काम समय पर ठीक ढग से नही करेगा।

'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' के प्रचार मे बच्चों की उपेक्षा न करे। उनको अपने साथ सत्सग मे लाना आवश्यक है उनको घर पर नमस्ते आदि करने की शिक्षा माता-पिता देते रहे। उनको गायत्री मन्त्र याद कराये। उन्हे बुरी सगत से बचाये। आज के बच्चे ही बडे होकर समाज का कार्यभार संभालेगे।

आर्यसमाज के छठे नियम के अनुसार आर्यसमाज को परोपकार के कार्य करने की योजना बनानी चाहिये। लेकिन उल्टा होरहा है, धन उपार्जन के साधन बनाये जारहे हैं। दान सग्रह करने के बाद भी बिना शुल्क के कोई काम नहीं होता। इससे गरीब जनता वहा जाती है, जहा उसे नि शुल्क सहायता मिलती है। अत असहाय निर्धन लोगो को अपना प्रेम प्यार देकर कुछ काम करने की प्रेरणा देनी चाहिये।

बाते बहुत हैं परन्तु मैं लेख को लम्बा नहीं करना चाहता। प्राथमिकता के आधार पर यह एक कार्यक्रम प्रस्तुत किया है। आशा है आप जहा भी हैं पूरा सहयोग करेगे। —**देवराज आर्यमित्र,** आर्यसमाज कृष्णनगर, दिल्ली-५१

सूचना

डॉ० प्रह्लादकुमार स्मारक समिति द्वारा आयोजित वैदिक व्याख्यान दिनाक ११ सितम्बर, २००२ को ३-०० बजे अपराह्ण, कक्ष सख्या २२, कला सकाय (आर्ट्स फेकल्टी), मौरिसनगर, दिल्ली-११०००७ मे होगा।

—**कृष्णलाल,** ई-९३७ए सरस्वती विहार, दिल्ली-३४

आर्यसमाज के उत्सवों की सूची

१	आर्य कन्या पाठशाला टिटोली (रोहतक)	२९-३१ अगस्त ०२
२	आर्यसमाज बालन्द जिला रोहतक	७-८ सितम्बर ०२
३	आर्यसमाज बडा बाजार सोनीपत शहर	१६-२२ सितम्बर ०२
४	आर्यसमाज गोहाना मण्डी जिला सोनीपत	१८-२२ सितम्बर ०२
५	आर्यसमाज महेन्द्रगढ	२१-२२ सितम्बर ०२
६	आर्यसमाज श्रद्धानन्द नगर (न्यू कालोनी) पलवल जिला फरीदाबाद (वेदकथा)	१८-२२ सितम्बर ०२
७	आर्यसमाज झज्जर रोड बहादुगढ (झज्जर)	१९-२० अक्तूबर ०२
८	आर्यसमाज गगसीना जिला करनाल	१६-१८ अक्तूबर ०२
९	आर्यसमाज शेखुपुरा खालसा जिला करनाल	२५-२७ अक्तूबर ०२
१०	कन्या गुरुकुल पचगाव जिला भिवानी	२६-२७ अक्तूबर ०२

—**रामधारी शास्त्री, सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता**

वेद सप्ताह सम्पन्न

आर्यसमाज औरंगाबाद मितरौल जिला फरीदाबाद ने गत वर्षो की भांति वेद सप्ताह का कार्यक्रम प्रारम्भ किया। ग्राम भड़ौली मे आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्ता श्री हीरालाल जी प० जगदीश मुनि के परामर्श से वेदप्रचार कराया गया। इस कार्यक्रम मे महाशय खेमसिंह क्रातिकारी तथा महाशय दुलीचन्द जी एवं महाशय अमीचन्द जी तथा श्री भजनलाल आर्य महोपदेशक ने अपने-अपने भजनो एव प्रचार से देशभक्ति एव अन्धविश्वासो पर प्रकाश डाला।

ग्राम डराना मे वेदप्रचार हुआ। ग्राम दीघोट मे यज्ञ बडी श्रद्धापूर्वक कराया। चार नवयुवको ने यज्ञोपवीत धारण करके वेदमार्ग पर चलने का व्रत लिया। वेदप्रचार को लोगो ने सुनकर सराहा।

ग्राम बवानीखेडा मे यज्ञ श्रद्धापूर्वक कराया तथा यज्ञ पर यजमानो को वेद एव आर्यसमाज के बारे मे जानकारी दी गई। मच का सचालन डालचन्द आर्य मत्री आर्यसमाज औरगाबाद मितरोल ने किया।

आर्यसमाज लीखी मे तीन दिन तक वेदप्रचार कराया गया। आर्यसमाज के लोगो मे शिथिलता आगई थी। चेतना जाग्रत की। लोगो ने बडी श्रद्धा से वेदप्रचार एव भजनो को सुनकर धर्मलाभ उठाया। वेदप्रचार मे वर्षा होने पर सफलता की खुशी मनाई गई।

आर्यसमाज लीखी जिला फरीदाबाद का चुनाव

प्रधान-श्री स्वामी सिहमुनि जी, उपप्रधान-स्वामी आशानन्द जी, मन्त्री-श्री रमेश बाबू, उपमत्री-रघुनाथ वैद्य, कोषाध्यक्ष-शिवचरण आर्य, प्रचारमत्री-मा० अर्जुन, पुस्तकालयाध्यक्ष-अतरसिह आर्य।

वेद की ज्योति जलती रहे

❑ **सुखदेव शास्त्री,** महोपदेशक, दयानन्दमठ गोहाना रोड, रोहतक

वेद के विषय मे आदिसृष्टि से लेकर आज तक आर्यो का यह परम्परागत विश्वास चला आरहा है कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है। परम कारुणिक सर्वज्ञ ईश्वर ने मनुष्यमात्र के कल्याण के लिए सृष्टि के आरम्भ मे यह पवित्र ज्ञान अग्नि, वायु, आदित्य और अगिरा नामक चार ऋषियो के पवित्र अन्त करण मे प्रकाशित किया जिससे सब मनुष्यो को व्यक्तिगत, परिवार सम्बन्धी, सामाजिक, राष्ट्रसम्बन्धी तथा विश्व से सम्बन्धित सब कर्त्तव्यो का यथार्थ ज्ञान प्राप्त होसके और उसके द्वारा सर्वत्र सुखशान्ति तथा सबको आनन्द की प्राप्ति होसके। प्राचीनकाल से ही समस्त ऋषिमुनियो एव वैदिक विद्वानो के द्वारा रचित समस्त वैदिक साहित्य मे इस विश्वास का समर्थन स्पष्ट शब्दो मे किया गया है। समस्त स्मृतिकार, दर्शनशास्त्रकार, उपनिषत्कार तथा भारतीय इतिहास रामायण तथा महाभारत इन सभी मे तथा श्रौतसूत्रो एव सभी गृह्यसूत्रो के लेखक, यहा तक कि पुराणकार भी स्पष्टतया चारो वेदो को ईश्वरीय ज्ञान तथा स्वत प्रमाण मानते हैं। इनके अतिरिक्त अन्य ऋषि-मुनियो द्वारा लिखित सभी ग्रन्थो को परत प्रमाण मानते हैं।

ये स्वत प्रमाणित चारो वेद ही आदि वैदिक सस्कृति के प्राणस्वरूप हैं और वह प्राचीन वैदिक सस्कृति ही विश्ववारा वैदिक सस्कृति है। वह अग्नि, मित्र, वरुण नाम से ही कही जाती है। वह अग्नि के समान सर्वत्र अग्रणी है। वह सस्कृति सब की मित्र है–**"मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे"** की आदि जननी है। वह वरुण है, सबसे स्वीकरणीय है। वैदिक सस्कृति एव वैदिक सभ्यता ही सारे विश्व की आदिम है। वह स्वय सृष्टि के आदि मे दिव्यज्ञान के रूप मे प्रभुप्रदत्त है। प्रत्येक सर्ग-सृष्टि के आदि मे परमात्मा स्वय ही पवित्रात्मा चारो ऋषियो के पवित्र अन्तकरणो मे उसी का ही प्रकाश करते हैं। वेदो के स्वत प्रमाण के विषय मे वेदो के ही प्रमाण दिये जासकते हैं। अत पढिये इस विषय मे वेदो के प्रमाण–ऋग्वेद मण्डल १, सूक्त १४२, मन्त्र ९ मे–

शुचिर्देवेष्वर्पिता होत्रा मरुत्सु भारती।
इळा सरस्वती मही बर्हि सीदन्तु यज्ञिया।।

अर्थ–(१) **शुचि**=शुद्ध, **देवेषु अर्पिता**=सृष्टि के आरम्भ मे अग्नि, वायु, आदित्य व अगिरा नामक देवताओ मे स्थापित की गई, **होत्रा**=यह वेदवाणी, **मरुत्सु**=प्राणसाधक पुरुषो मे, **भारती**=भरण करनेवाली होती है। वेदवाणी मे किसी प्रकार की गलती न होने से वह शुद्ध है। प्रभु इसे अग्नि आदि को प्राप्त कराते हैं। प्राणसाधना करनेवाले पुरुष इसके द्वारा पोषित होते हैं। (२) ऋग्वेद मे इस वाणी का नाम (क)–भारती है, क्योकि यह प्रकृति का ज्ञान देती हुई उचित प्रकार से हमारा भरण करती है। (ख) यही वाणी यजुर्वेद मे 'इळा' कहलाती है, इळा-इडा–यजुर्वेद मे प्रतिपादित यज्ञो के द्वारा यह पृथिवी मे अन्नोत्पत्ति का कारण बनती है। (ग) सामवेद मे यह 'सरस्वती' है। यह हमे ब्रह्म का ज्ञान देनेवाली होकर ब्रह्म की ओर ले चलती है। (घ) अथर्ववेद मे यह वाणी 'मही' होजाती है–रोगो व युद्धो से बचाकर यह हमारी उन्नति का कारण बनती है। (३) 'भारती' इडा, 'सरस्वती' मही, ये सब वाणिया, **यज्ञिया**=सगतिकरण योग्य हैं। ये, **बर्हि सीदन्तु**=हमारे हृदयान्तरिक्ष मे निवास करे। इस वेदवाणी के लिए हमारे हृदय मे आदर का भाव हो। इसका हम प्रतिदिन स्वाध्याय करे। मन्त्र का सरल सार यही है कि वेदवाणी को अपनाते हुए अपने जीवन को शुद्ध-पवित्र बनाए।

वेदोत्पत्तिकर्ता परमात्मा है, इस विषय मे अधिक प्रमाण लिखने की आवश्यकता नहीं है, चारो वेदो मे परमात्मा द्वारा वेदोत्पत्ति के मन्त्र हजारो हैं। ऋग्वेद के मण्डल दशम, सूक्त ४९, मन्त्र १ मे पढिये–मन्त्र आधा ही प्रस्तुत है–**अहं दां गृणते पूर्व्यं वस्वह ब्रह्म कृणव मह्य वर्धनम्।।**

इस आधे मन्त्र का अर्थ है–ईश्वर कहता है, **अह**=मैं, **गृणते**=स्तुति करनेहारे को, **पूर्व्यं वसु दाम्**=सनातन ऐश्वर्य, निवास के योग्य, लोक, मोक्ष व ज्ञान प्रदान करता हू। **अह ब्रह्म कृणवम्**=मैं वेद को उत्पन्न करता हू। **मह्यं वर्धनम्**=यह वेद मेरी ही महिमा की वृद्धि करनेवाला है।

इसी प्रकार ऐतरेयब्राह्मण मे भी वेदों को ईश्वरीय ज्ञान बताते हुए स्पष्ट कहा है कि **'प्रजापतिर्वा इमान् वेदानसृजत्'** अर्थात् समस्त प्रजा के स्वामी परमेश्वर ने प्रजा के कल्याण के लिए वेदो का निर्माण किया।

प्राचीनकाल मे वेदो का बड़ी श्रद्धा एव बड़ी प्रतिष्ठा के साथ जीवनभर पठन-पाठन करते थे। गुरुकुलों में जाकर उनकी शिक्षा तभी पूरी होती थी, जबकि एक वेद, दो वेद अथवा चारो वेदो को सम्पूर्णरूप से पढ लेते थे, तभी गृहस्थाश्रम मे प्रवेश के अधिकारी होते थे। मनु ने अपनी मनुस्मृति मे इन आदेश का स्पष्टतया पालन करने के लिए निर्देश दिए थे। जिनका प्रजाओ की ओर से पूरा पालन किया जाता था। तभी भारत स्वर्ग समान था, जगद्गुरु था। हरयाणा प्रदेश के धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र मे ही ८८ हजार ऋषि-मुनि आश्रमो मे निवास करते थे। वे ही सारे विश्व को वेदो का सदेश देते थे। कुछ ऐसे भी ऋषि थे, जो आयुभर वेद ही पढते रहते थे।

इस सम्बन्ध मे तैत्तिरीय ब्राह्मण ३,१०,११,३ मे एक आख्यायिका आती है जिसमे वेदों को समस्त ज्ञान का भण्डार और विद्या की दृष्टि से अनन्त कहा गया है–**भरद्वाजो ह त्रिभिरायुर्भिर्ब्रह्मचर्यमुवास। त ह जीर्णं स्थविर शयानम् इन्द्र उपवृज्योवाच भरद्वाज! यत्ते चतुर्थमायुर्दद्या किमनेन कुर्या इति, ब्रह्मचर्यमेवैतेन चरेयमिति होवाच।**

अर्थात् भरद्वाज ने ३०० वर्षपर्यन्त ब्रह्मचर्य अर्थात् वेदो का अध्ययन किया। इस प्रकार करते-करते वह जब अत्यन्त वृद्धावस्था को प्राप्त होगया तो इन्द्र ने उसके पास आकर कहा–यदि तुझे और भी आयु मिले तो तू उससे क्या करेगा? भरद्वाज ने उत्तर दिया कि उससे भी मैं वेदो का अध्ययन आदि रूप ब्रह्मचर्य ही करूगा। तब इन्द्र ने उसे पर्वत के समान तीन ज्ञान राशि रूप वेदो को दिखाया और उनमे से प्रत्येक राशि से मुट्ठीसी भरली और भरद्वाज को कहा ये वेद इस प्रकार ज्ञान की राशि वा पर्वत के समान हैं जिनके ज्ञान का कहीं अन्त नहीं। वैसे तो आपने ३०० वर्षपर्यन्त वेदो का अध्ययन किया है तथापि तुझे सम्पूर्ण वेदज्ञान का अन्त नहीं प्राप्त हुआ।

इस आख्यायिका से वेदो का महत्त्व ब्राह्मणकार की दृष्टि मे स्पष्टतया सूचित होता है। वर्तमान युग मे महान् वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द ने इसी आख्यायिका के ही भाव को अपने शब्दो मे निम्न रूप मे यो लिखा है–**"वेद सब सत्यविद्याओ का पुस्तक है। वेद का पढना-पढना और सुनना-सुनाना सब आर्यो का परमधर्म है।"**

इसके साथ ही महर्षि ने आर्यसमाज के छठे नियम मे ससार के उपकार की घोषणा करते हुए शारीरिक, आत्मिक, सामाजिक उन्नति के द्वारा **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** का उद्घोष किया था। महर्षि के बलिदान के पश्चात् आर्यसमाज ने भी इन दोनो नियमो का पालन करते हुए वेद की ज्योति जलाई थी, जो आज भी देश-विदेश मे शास्वत रूप से जल रही है।

इसी वेदो की ज्योति से प्रभावित होकर ही आर्यसमाज के द्वारा किये गए वेदप्रचार तथा महर्षि दयानन्द के द्वारा की गई वेदो की ख्याति को सुनकर ही कभी एक अमेरिकन विदुषी श्रीमती व्हीलर विल्लौक्स ने इस विषय मे लिखा था–"It (India) is the land of the great Vedas—the most remarkable works, containing not only religious ideas for a perfect life but also facts which science has since proved true Electricity, Rdium, Electrons, Airships—all seem to have been known to the seers who found the Vedas"

अर्थात् यह (भारत) उन महान् वेदो की भूमि है, जो अद्भुत ग्रन्थ हैं जिनमे न केवल पूर्ण जीवन के लिए उपयोगी धार्मिक सिद्धान्त बताये गये है, अपितु उन तथ्यो का भी प्रतिपादन किया गया है जिन्हे विज्ञान ने सत्य प्रमाणित किया है। बिजली, रेडियम, इलेक्ट्रॉन, विमान आदि सभी कुछ वेदो के द्रष्टा ऋषियो को ज्ञात प्रतीत होता है।

वेद वह दिव्यज्ञान है जिसे पढकर विदेशी विद्वान् भी वेदो की महिमा के सामने नतमस्तक होजाते हैं। किन्तु भारत मे अग्रेजी राज्य ईस्ट इण्डिया कम्पनी द्वारा स्थापित होने पर अग्रेज विचार करने लगे कि इस भारत जैसे विशाल देश मे ईसाइयत का प्रचार करके इसे ईसाई बनाना चाहिए। जब तक इसकी वैदिक सस्कृति नष्ट नहीं होजाती तब तक भारत मे हमारा राज्य स्थायी नहीं होसकता। इसके लिये उपाय सोचे जाने लगे।

ईस्ट इण्डिया कम्पनी का एक फौजी अफसर 'बोडन' नाम का सन् १८०७ में बहुतसा धन कमाकर सेना से सेवामुक्त हुआ और उसने सन् १८११ मे अपने देहान्त से पहले १५ अगस्त १८११ को २५००० पौण्ड की राशि आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय को वसीयत द्वारा प्रदान की, जिसे 'बोडन' ट्रस्ट कहा जाता है। इस बडी आर्थिक राशि से एक सस्कृत विभाग खोला जाये, जिसका उद्देश्य भारतीयो को ईसाई मत मे लाना हो। इस ट्रस्ट मे अनेक अग्रेज लेखक के रूप मे आए, जिनमे मोनियर विलियम, विलसन, मैक्समूलर, मैकाले, मैक्डानल्ड ग्रिफिथ आदि अनेक विद्वान् बोडन के सदस्य बनकर वेदो के विषय मे लिखने लगे। उन्होने सायण व महीधर के लिखे वेदो के भाष्य से लेकर वेदो के बारे मे गलत, झूठे, भाष्य तैयार किये, जिनमे सोमरस को शराब, वेदो मे भूतप्रेत

आदि तथा वेद गडरियो के गीत हैं। झूठी बाते लिखी गई। मैक्समूलर ने तो बहुत ही विश्वास के साथ उन दिनो भारतमंत्री ड्यूक ऑफ आर्गायल को १६ दिसम्बर १८६० को एक पत्र मे लिखा था–"The ancient religion of India is doomed Now if Christianity does not step in whose fault will it be ?" अर्थात् भारत के प्राचीन धर्म का नाश तो अब निश्चित है और यदि ईसाइयत आकर उसका स्थान न ले तो वह किसका दोष होगा ?

इस प्रकार ये सारे बोडन ट्रस्टी अग्रेज लेखक भारत को ईसाई बनाने के सपने ले रहे थे। इसके साथ ही १८३५ मे लार्ड मैकाले द्वारा एक नई अंग्रेजी शिक्षानीति भारत के लिये तैयार की गई, उनकी मान्यता के अनुसार उस शिक्षानीति का उद्देश्य था कि–"We must do our best to form a class who may be interpreters between us and the millions whom we govern—a class of persons Indian in blood and colour, but English in taste, in opinions, words and intellect" अर्थात् अग्रेजी शिक्षा एक ऐसे वर्ग को शिक्षित करेगी, जिसका रुधिर और रग तो भारतीयो का होगा किन्तु जो अपनी रुचि, सम्मति, आचार-व्यवहार और बुद्धि मे अग्रेज होगे। इस शिक्षा पद्धति का ऐसा होना ही इसका भयकर परिणाम आज भी राष्ट्र को भुगतना पड रहा है।

ऐसी कठिन परिस्थितियो मे ३० मई १८६३ को महर्षि दयानन्द गुरुवर विरजानन्द जी की कुटिया से शिक्षित और वेदप्रचार के लिए दीक्षित होकर कार्यक्षेत्र मे आए। महर्षि ने इन विदेशी लेखको के लेखो व भाष्यो का जबर्दस्त खण्डन किया। मैक्समूलर ने शुरू-शुरू मे महर्षि दयानन्दकृत वेदभाष्य का खण्डन किया था। उसने लिखा था–"He (Dayanand) actually published a commentary in Sanskrit on Rigveda But in all his writings there is nothing which can be quoted as original, beyond his some what strange interpretations of words and whole passage"

अर्थात् दयानन्द ने ऋग्वेद पर सस्कृत मे एक भाष्य प्रकाशित किया है, पर उसके समस्त लेखन मे मौलिकरूप से उल्लेखनीय कुछ भी अश नहीं है, सिवाय शब्दो और पूरे-पूरे अशो के उसके अजीब-से अर्थो के।

उसी मैक्समूलर ने 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' पढने के बाद लिखा–

"We may divide the whole of Sanskrit literature beginning with the Rigveda and ending with Dayananda's 'Rigvedadibhashyabhumika' (Introduction to his commentary on the Rigveda')

अर्थात् ऋग्वेद से आरम्भ होनेवाले और दयानन्द की 'ऋग्वेदादिभाष्य-भूमिका' तक वितत समूचे सस्कृत वाङ्मय को हम बाट सकते हैं।

इस प्रकार मैक्समूलर ने सस्कृत साहित्य के एक ध्रुव पर ऋग्वेद को रक्खा और दूसरे पर 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' को। ऋग्वेद का सम्बन्ध ब्रह्मा से है। दूसरे शब्दो मे कहा जा सकता है कि जिस प्रकार दयानन्द ने अनेकत्र 'ब्रह्मा से जैमिनिपर्यन्त' शब्दो का प्रयोग किया है वैसे ही यहा 'ब्रह्मा से दयानन्दपर्यन्त' कहा गया है।

इस प्रकार महर्षि दयानन्द के वेदभाष्य को भी लक्ष्य करके श्री अरविन्द ने लिखा था–"There is nothing fantastic in Dayananda's idea that the Veda contains truths of science as well as truths of religion I will even add my own conviction that the Veda contains the other truths of science which the modern world does not at all possess and in that case Dayananda has rather understated than overstared the depth of the range of Vedic wisdom" (Dayananda and the Veda) दयानन्द की इस धारणा मे कि वेद मे धर्म और विज्ञान, दोनो सच्चाइया पाई जाती हैं, कोई उपहासास्पद या कल्पनामूलक बात नहीं है। मैं इसके साथ अपनी यह धारणा भी जोडना चाहता हू कि वेदो मे विज्ञान की वे सच्चाइया भी हैं जिन्हे आधुनिक विज्ञान अभी तक नहीं जान पाया है। ऐसी अवस्था मे दयानन्द ने वैदिक ज्ञान की गहराई के सम्बन्ध मे अतिशयोक्ति से नहीं अपितु न्यूनोक्ति से ही काम लिया है। (विद और दयानन्द)

इसी प्रकार देश-विदेश के अनेक विद्वानो ने महर्षि दयानन्द के वेदभाष्य एव उनके द्वारा किये गये वेदोद्धार के कार्यो की बडी प्रशसा की है। महर्षि दयानन्द के प्रति कहे गए ये वाक्य बिल्कुल सही है–

आनन्द सुधार सार दयाकर पिला गया।
भारत को दयानन्द दुबारा जिला गया।।

श्रावणी-उपाकर्म : एक परिचय

(ऋषि-तर्पण)

प्राचीनकाल मे वेद और वैदिक साहित्य के ही पठन-पाठन का प्रचार था। वैसे तो लोग प्रतिदिन वेद का स्वाध्याय करते थे किन्तु वर्षा ऋतु मे वेद के स्वाध्याय का विशेष आयोजन किया जाता था। इसका कारण यह है कि भारतवर्ष एक कृषिप्रधान देश है। यहा की जनता आषाढ और श्रावण मास मे कृषिकार्य मे व्यस्त रहती थी। श्रावणी (सावणी) की जुताई और बुवाई आषाढ से लेकर श्रावण मास के अन्त तक समाप्त हो जाती है। लोग श्रावणी पूर्णिमा पर कृषिकार्यो से निवृत्त होकर वेद के स्वाध्याय मे प्रवृत्त हो जाते थे। ऋषि-मुनि लोग भी वर्षा के कारण अरण्य को छोडकर ग्रामो के निकट आकर रहने लगते थे और वहीं वेदाध्ययन, धर्म-उपदेश और ज्ञान-चर्चा मे अपना चातुर्मास्य (चौमासा) बिताते थे। श्रद्धालु लोग उनके पास जाकर वेद अध्ययन और उपदेश-श्रवण मे अपना समय लगाते थे और ऋषिजनो की सेवा करते थे। इसलिए यह समय ऋषि-तर्पण भी कहलाता है। जिस दिन से वेदपारायण का उपक्रम=आरम्भ किया जाता था उसे 'उपाकर्म' कहते हैं। यह वेदाध्ययन श्रावण सुदी पूर्णिमा को आरम्भ किया जाता था अत इसे श्रावणी उपाकर्म कहा जाता है। जैसा कि पारस्कर गृह्यसूत्र मे लिखा है–'**अथातोऽध्यायोपाकर्म। ओषधीनां प्रादुर्भावे श्रावण्या पौर्णमास्याम्**' (२।१०।१-२)।

यह वेदाध्ययन का उपाकर्म श्रावणी पूर्णिमा से आरम्भ होकर पौष मास की अमावस्या तक साढे चार मास चलता था। पौष मास मे इस उपाकर्म का उत्सर्जन (समाप्ति) किया जाता था। जैसा कि मनुस्मृति मे लिखा है–

श्रावण्यां प्रौष्ठपद्या वाप्युपाकृत्य यथाविधि।
युक्तश्छन्दास्यधीयीत मासान् विप्रोऽर्धपञ्चमान्।।
पुष्ये तु छन्दसा कुर्याद् बहिरुत्सर्जनं द्विज।
माघशुक्लस्य वा प्राप्ते पूर्वार्द्धे प्रथमेऽहनि।। (४।९५-९६)

अर्थ–श्रावणी और प्रौष्ठपदी (भाद्रपद) पौर्णमासी तिथि से प्रारम्भ करके ब्राह्मण लगनपूर्वक साढे चार मास तक छन्द=वेदो का अध्ययन करे और पौष मास मे अथवा माघ शुक्ला प्रतिपदा को इस उपाकर्म का उत्सर्जन करे।

आर्यसमाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज के दश नियमो मे तृतीय नियम यह दिया है कि **"वेद सब सत्यविद्याओ का पुस्तक है वेद का पढना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यो का परमधर्म है।"** आर्यो को चाहिए कि वे इस श्रावणी उपाकर्म से प्रतिदिन वेद के स्वाध्याय का व्रत ले। प्रतिदिन सन्ध्या और अग्निहोत्र किया करे। अपने घर पर 'ओ३म्' की पताका लगावे। नवीन यज्ञोपवीत धारण करके अपने स्वाध्याय आदि व्रतो मे आई शिथिलता को दूर करे। वेद का स्वाध्याय न करने से ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य लोग शूद्र कोटि मे चले जाते हैं। निषाद और राक्षस बन जाते हैं। वेद के स्वाध्याय से शूद्र भी ब्राह्मण कोटि मे चला जाता है।

रक्षाबन्धन–राजपूत काल मे नारियो के द्वारा वीरो के अपनी रक्षा के लिए राखी बाधने की परिपाटी प्रारम्भ हुई। कोई नारी राखी भेजकर जिस वीर को अपना राखी-बन्द भाई बना लेती थी वह उसकी आजीवन रक्षा करना अपना कर्तव्य समझता था। चित्तौड की महारानी कर्णवती ने मुगल बादशाह हुमायू को गुजरात के बादशाह से अपनी रक्षा के लिए राखी भेजी थी और बादशाह हुमायू ने तत्काल चित्तौड पहुचकर उसकी रक्षा की थी तब से यह रक्षाबन्धन की परिपाटी चली आ रही है। श्रावणी उपाकर्म के शुभ पर्व पर रक्षाबन्धन के माध्यम से युवक और युवतिया परस्पर भाई-बहन के रिश्ते मे बधकर राष्ट्र की अनेक अपहरण, बलात्कार, आतकवाद आदि समस्याओ का समाधान कर सकते हैं और राष्ट्रीय चरित्र को आदर्श बना सकते हैं।

–**सुदर्शनदेव आचार्य**, अध्यक्ष सस्कृत सेवा सस्थान, रोहतक

आर्यसमाज सरस्वती विहार, दिल्ली का चुनाव

सरक्षक-श्री चन्द्रभान गुप्ता, प्रधान-श्री भजनप्रकाश आर्य, मन्त्री-श्री कृष्णदेव, कोषाध्यक्ष-श्री विनयकुमार गुप्ता, पुस्तकालयाध्यक्ष-श्री गोपीचन्द गौहर। –**भजनप्रकाश आर्य**, प्रधान आर्यसमाज सरस्वती विहार, दिल्ली

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ०१२६२–७६८७४, ७७८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ०१२६२–७७७२२) से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० न० २३२०७/७३ सृष्टिसवत् १, ९६, ०८, ५३, १०३
पजीकरणसख्या टैक/85-2/2000 ☎ ०१२६२-७७७२२

प्रधानसम्पादक : यशपाल आचार्य, सभामन्त्री सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री

वर्ष २६ अंक ३८ २८ अगस्त, २००२ वार्षिक शुल्क ८०) आजीवन शुल्क ८००) विदेश में २० डॉलर एक प्रति १.७०

लोकनायक योगिराज श्रीकृष्ण का बहुआयामी व्यक्तित्व

❑ डॉ० भवानीलाल भारतीय, ८/४२३, नन्दनवन, जोधपुर

पाच हजार वर्ष पूर्व आज की तरह विश्व के क्षितिज पर भाद्रपद की अधेरी रात्रि अपनी निगूढ कालिमा के साथ छाई हुई थी। तब भी भारत मे जन था, धन था, शक्ति थी, साहस था, पर एक अकर्मण्यता भी थी, जिससे सब कुछ अभिभूत, मोहाच्छन्न तथा तमसावृत होरहा था। इस धरती पर महापुरुष तो अनेक हुए हैं, किन्तु लोक-नीति, समाज तथा अध्यात्म को समन्वय के सूत्र मे गूथकर समग्र राष्ट्र मे क्राति का शखनाद करनेवाले लोकनायक कृष्ण ही थे।

परवर्ती काल के लोगो ने चाहे कृष्ण के उदात्त चरित्र तथा बहुआयामी कृतित्व को समझने मे कितनी ही भूले क्यो न की हो, उनके समकालीन तथा अत्यन्त आत्मीयजनो ने उस महाप्राण व्यक्तित्व का सही मूल्याकन किया था। उनसे आयु तथा अनुभव मे बडे युधिष्ठिर उनका सम्मान करते थे तथा उनकी सलाह को सर्वाधिक महत्त्व देते थे। पितामह भीष्म, आचार्य द्रोण, कृपाचार्य तथा विदुर जैसे नीतिज्ञ प्रतिपक्ष के लोग भी उनको भरपूर आदर देते थे। महाभारत के प्रणेता कृष्णद्वैपायन व्यास ने तो उन्हे धर्म का पर्याय बताते हुए यहा तक कह दिया था–

यतो कृष्णस्ततो धर्म यतो धर्मस्ततो जय ।

भगवद्गीता के वक्ता महाबुद्धिमान् सजय ने तो मानो भविष्यवाणी ही कर दी थी–

यत्र योगश्वर कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धर ।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ।। (गीता १८।७८)

आर्य जीवनचर्या का सम्पूर्ण विकास हमे कृष्ण के चरित्र में सर्वत्र दिखाई देता है। जीवन का कोई ऐसा क्षेत्र नहीं है जिसे उन्होने अपनी प्रतिभा तथा श्रम के द्वारा प्रभावित नहीं किया। सर्वत्र उनकी अद्भुत मेधा तथा सर्वग्रासिनी प्रतिभा के दर्शन होते हैं। एक ओर वे महान् राजनीतिज्ञ, क्रान्तिविधाता, धर्म पर आधारित नवीन साम्राज्य के स्रष्टा, राष्ट्रनायक के रूप मे दिखाई पडते हैं तो दूसरी ओर धर्म, अध्यात्म, दर्शन तथा नीति के सूक्ष्म चिन्तक, विवेचक तथा प्रचारक के रूप मे भी उनकी भूमिका कम महत्त्व की नहीं है। उनके समय मे भारतवर्ष सुदूर उत्तर मे गान्धार (आज का अफगानिस्तान) से लेकर दक्षिण की सह्याद्रि पर्वतमाला तक क्षत्रियो के छोटे-छोटे स्वतत्र, किन्तु निरकुश राज्यो मे विभक्त होचुका था। उन्हे एक सूत्र मे पिरोकर समग्र भारतवर्ष को एक सुदृढ राजनीतिक इकाई के रूप मे पिरोनेवाला कोई नहीं था। एक चक्रवर्ती प्रजापालक सम्राट् के न होने से माण्डलिक राजा नितान्त स्वेच्छाचारी, प्रजापीडक तथा अन्यायी होगये थे। मथुरा का कस, मगध का जरासन्ध, चेदि-देश का शिशुपाल तथा हस्तिनापुर के कौरव सभी दुष्ट, विलासी, दुराचारी तथा ऐश्वर्य मदिरा मे प्रमत्त होरहे थे। कृष्ण नें अपनी नीतिमत्ता, कूटनीतिक चातुरी तथा सूझबूझ से इन सभी अनाचारियो का मूलोच्छेद किया तथा धर्मराज की उपाधि धारण करनेवाले अजातशत्रु युधिष्ठिर को आर्यावर्त के सिहासन पर प्रतिष्ठित कर इस देश मे चक्रवर्ती धर्मराज्य स्थापित किया।

जिस प्रकार वे नवीन साम्राज्य निर्माता तथा स्वराज्यस्रष्टा युगपुरुष के रूप मे प्रतिष्ठित हुए, उसी प्रकार अध्यात्म तथा तत्त्व-चिन्तन के रूप मे उनकी प्रवृत्तिया चरमोत्कर्ष पर पहुच चुकी थीं। सुख और दुख को समान समझनेवाले, लाभ तथा हानि, जय और पराजय जैसे द्वन्द्वो को एकसा माननेवाले अनुद्विग्न वीतराग तथा जल मे रहनेवाले कमल-पत्र के समान वे सर्वथा निर्लेप तथा स्थितप्रज्ञ रहे। प्रवृत्ति और निवृत्ति, श्रेय व प्रेय, ज्ञान और कर्म ऐहिक और पारलौकिक जैसी प्रत्यक्ष मे विरोधी दिखनेवाली प्रवृत्तियो मे अपूर्व सामञ्जस्य स्थापित कर उन्हे स्वजीवन मे क्रियान्वित करना कृष्ण-जैसे महामानव के लिए ही सम्भव था। उन्होने धर्म के दोनो लक्ष्यो अभ्युदय और नि श्रेयस को सार्थक किया, अत यह निरपवाद रूप मे कहा जा सकता है कि कृष्ण का जीवन आर्य आदर्शो की चरम परिणति है।

समकालीन सामाजिक दुरवस्था, विषमता तथा नष्ट हुए नैतिक मूल्यो के प्रति वे पूर्ण जागरूक थे। उन्होने पतनोन्मुख समाज को ऊपर उठाया। स्त्रियो, शूद्र कही जानेवाली जातियो, वनवासियो, पीडितो तथा शोषितो के प्रति उनमे अशेष सवेदना तथा सहानुभूति थी। गान्धारी, कुन्ती, द्रौपदी, सुभद्रा, उत्तरा आदि आर्यकुल ललनाओ को समुचित सम्मान देकर उन्होने नारी वर्ग की प्रतिष्ठा बढाई। महाभारत के युग मे सामाजिक पतन के लक्षण दिखाई पडने लगे थे। गुण कर्म और स्वभाव पर आधारित वर्ण-व्यवस्था जन्मना जातियो के रूप मे बदल चुकी थी। ब्राह्मणवर्ग अपनी स्वभावगत शुचिता, लोकोपकार भावना त्याग, सहिष्णुता तथा सम्मान के प्रति तटस्थता जैसे सद्गुणो को भुलाकर सग्रहशील, अहकारी तथा असहिष्णु बन चुके थे। आचार्य द्रोण जैसे शस्त्र तथा शास्त्र मे निष्णात ब्राह्मण अपनी अस्मिता को भूलकर और अपने अपमान को सहकर भी कुरुवशी राजकुमारो को उनके महलो मे ही शिक्षा देकर उदरपूर्ति करते थे। कहा तो गुरुकुलो का वह युग, जिसमे महामहिम सम्राटो के पुत्र भी शिक्षा ग्रहण करने के लिए राजप्रासादो को छोडकर आचार्यकुलो मे रहते थे तथा त्याग, अनुशासन एव सयम का जीवन व्यतीत करते थे, इसके विपरीत महाभारत युग मे तो कुरुवृद्ध भीष्म के आदेश से द्रोणाचार्य ने राजमहल को ही विद्यालय का रूप दे दिया। आज के विश्वविद्यालय का शायद यही पुराना

(शेष पृष्ठ दो पर)

वैदिक-स्वाध्याय

हे शक्ति के स्वामी !

शिक्षेयमस्मै दित्सेयं शचीपते मनीषिणे।
यदहं गोपतिः स्याम्।।

ऋ० ८।१४।२।। साम० उ० ९।२९।। अ० २०।२७।२।।

शब्दार्थ–(**शचीपते**) हे शक्ति के स्वामी ! (**यत् अह**) यदि मैं (**गोपतिः स्याम्**) धन भूमि आदि का स्वामी होऊ तो {मेरी मति ऐसी होए कि} मैं (**अस्मै मनीषिणे**) इस मन के ईश, पूरे जितेन्द्रिय पुरुष के लिए ही (**दित्सेयं**) इस धन शक्ति को देना चाहू और (**शिक्षेय**) इसे ही दू।

विनय–हे शचीपते ! हे शक्ति के स्वामी ! तुम सर्वोत्कृष्ट ज्ञानमयी शक्ति के स्वामी हो, और परिपूर्ण होने के कारण अपनी इस शक्ति का जगत् के पालन-पोषण मे परिपूर्णतया ही सदुपयोग कर रहे हो। परन्तु मैं यद्यपि अपूर्ण जीव हू, तो भी मुझे अपनी शक्ति का सदा पूरा सदुपयोग ही करने मे यथाशक्ति तुम्हारा अनुकरण करना चाहिये। इसलिए मैं चाहता हू और सकल्प करता हू कि यदि मैं 'गोपति' होऊ, सच्चा वैश्य बनकर भूमि, गौ, धन का (वैश्यशक्ति का) स्वामी होऊ तो मैं इसका सदुपयोग ही करूगा। हे सर्वान्तर्यामी परमेश्वर ! तुम मुझे ऐसी बुद्धि देना, ऐसी समझ और योग्यता देना कि मैं यह धन केवल ससार के 'इस मनीषी पुरुष' के लिये ही देना चाहू और इसे ही दू, किसी को देने की मुझे कभी और इच्छा तक न हो, कभी प्रलोभन तक न होए। यह 'मनीषी' वह पुरुष होता है जो कि अपने मन का ईश है, जो कभी क्षणभर के लिए भी मन का गुलाम नहीं होता है, जो जितेन्द्रिय है, जिसे अपने पर पूरा काबू है। ऐसे ही पुरुष को दिया हुआ धन सदुपयुक्त होता है, हजारो गुणा फल लाता है, सर्वलोक का हित करता है। हमारे धन के एकमात्र अधिकारी ये आत्मवशी पुरुष ही हैं। वास्तव मे हमारा सब धन, इन सयमी महानुभावो का ही है। परन्तु हे प्रभो ! बहुत बार हम किन्हीं अपने तुच्छ स्वार्थो के कारण या केवल रिवाज के वशीभूत होकर या अपनी कमजोरी के कारण, अजितेन्द्रिय 'लोगो'–भोगी विलासी 'सन्तो'–को दान दे देते हैं। ओह ! यह तो तुम्हारी दी हुई धनशक्ति का घोर दुरुपयोग है, यह पाप है। यह दान नहीं है, यह या तो रिश्वत है या आत्मघात करना है। जो मनीषी नहीं हैं उन्हे धन देने का विचार भी हमारे मन मे नहीं आना चाहिये, देने की इच्छा (दित्सा) ही नहीं होनी चाहिये। जिसे अपने पर काबू नहीं उसके पास गया हुआ धन उस द्वारा सर्वनाश का कारण होता है। इसलिये, हे शचीपते ! मुझे इतनी शक्ति प्रदान करो कि मैं अनुचित दान के लिए स्पष्ट 'न' कर सकू। भोगियो को दिये जानेवाले दान मे सम्मिलित न होने की हिम्मत कर सकू, हे प्रभो ! मैं तो उसी को दान दू जो कि अपने मन का ईश होने के कारण जनता के हृदयो का भी ईश हो और अत एव जिसके पास गया हुआ धन सर्वजनता के लिये हो–सर्वजनता के कल्याण मे ही स्वभावत ठीक-ठीक उपयुक्त हो जाता हो।

लोकनायक योगिराज श्रीकृष्ण....... (प्रथम पृष्ठ का शेष)

रूप था, जहा शिक्षक को शिष्य द्वारा प्रदत्त शुल्क लेकर उसको पढाना था। इस कुरुवशीय विश्वविद्यालय का प्रथम ग्रेजुएट तो दुर्योधन ही था जिसके अनिष्ट कार्यों ने देश के भविष्य को सुदीर्घ काल के लिए अन्धकारपूर्ण बना दिया था।

सामाजिक समता के अभाव मे क्षत्रिय राजकुमारो मे अपने उच्च कुलोत्पन्न होने का मिथ्या गर्व पनपता रहा। उधर तथाकथित हीन कुल मे उत्पन्न होने का भ्रम पालनेवाले कर्ण को अपने पौरुष की श्रेष्ठता सिद्ध करने के लिए जन्मना जाति को धिक्कारना पडा। गुरुकुल के राजकुमारो की अस्त्र-सञ्चालन प्रतियोगिता मे उसे केवल इसीलिए भाग नहीं लेने दिया था कि कुन्ती का कानीन पुत्र होने पर भी अधिरथ सूत (सारथी) ने उसका पालन किया था। तब उसने कहा–

सूतो वा सूतपुत्रो वा यो वा को वा भवाम्यहम्।
दैवायत्त कुले जन्म मदायत्त तु पौरुषम्।।

मैं सूत हू या सूतपुत्र हू या अन्य कोई, किन्तु यह ध्यान रहे कि किसी कुल मे जन्म लेना दैव के अधीन है जबकि मेरा पौरुष और पराक्रम तो मेरा अपना ही है।

क्षत्रिय कुलाभिमानी राजकुमारो के मिथ्या गर्व को सन्तुष्ट करने के लिए आचार्य द्रोण ने वनवासी बालक एकलव्य को अपना शिष्य बनाने से इन्कार कर दिया था। उस युग मे धर्माधर्म, कर्त्तव्याकर्त्तव्य, नीति-अनीति का अन्तर लुप्त होचुका था। समाज मे अर्थ की प्रधानता थी और लोग पेट भरने के लिए किसी भी अनीतिपूर्ण कार्य करने मे सकोच नहीं करते थे। यह जानते हुए भी कि कौरवों का पक्ष अधर्म, अन्याय तथा असत्य पर आश्रित है, भीष्म जैसे प्रज्ञापुरुष को यह कहने में सकोच नहीं हुआ था–

अर्थस्य पुरुषो दासो दासस्त्वर्थो न कस्यचित्।
इति मत्वा महाराज बद्धोऽस्म्यर्थेन कौरवैः।।

हे महाराज ! पुरुष तो अर्थ का दास होता है, अर्थ किसी का दास नहीं होता। यही जानकर मैं कौरवो के साथ बधा हू।

इन्हीं विषम तथा पीडाजनक परिस्थितियो को कृष्ण ने निकट से देखा था। इन दुखद स्थितियो से जनता को उबारने के लिए ही उनके सभी प्रयास थे। शोषित, पीडित तथा दलित वर्ग के अभ्युत्थान के लिए उन्होने सर्वतोमुखी प्रयास किये। ताप-शाप प्रपीडित, त्रस्तजनो के प्रति उनकी सवेदना नाना रूपो मे प्रकट हुई थी। तभी तो कौरवसभा मे तिरस्कृत तथा अपमानित द्रोपदी को उन्होने सखी बनाया तथा उसके मुक्त केशो को बाधने से पहले कौरवो के सर्वनाश की घोषणा की। उन्हे राजसी ठाठ-बाट तथा वैभव के झूठे प्रदर्शन से घृणा थी। अपनी शान्तियात्रा के दौरान दुर्योधन के राजकीय आतिथ्य को ठुकराकर उन्होने महामति विदुर का सादा भोजन स्वीकार किया। उस समय लोकनीति के ज्ञाता कृष्ण ने अपने इस आचरण के औचित्य का प्रतिपादन करते हुए कहा था–

सम्प्रीतिभोज्यान्यन्नानि, आपद् भोज्यानि वा पुन.।
न त्व सम्प्रीयसे राजन् न चैवापद्गता वयम्।।

(उद्योगपर्व ९१।२५)

हे राजन् ! भोजन करने मे दो हेतु होते हैं। जिससे प्रीति हो उसके यहा भोजन करना उचित है अथवा जो विपत्तिग्रस्त होता है उसे मजबूरी में दूसरो का दिया अन्न स्वीकारना पडता है, किन्तु यहा तो स्थिति कुछ दूसरी ही है। आपको मुझसे प्रेम का रिश्ता तो है ही नहीं और न मैं आपदा का मारा हू, जो आपका अन्न ग्रहण करू।

कृष्ण के इस उदात्त आदर्शरूप को शताब्दियों से हमने भुला दिया था। युधिष्ठिर के राजसूययज्ञ के समय उस विश्ववंद्य महापुरुष ने गुरुजनो के चरण-प्रक्षालन करने का विनम्र कार्य अपने जिम्मे लिया तो उस यज्ञ की प्रथमपूजा के अधिकरी भी वे ही बने। उस समय श्री कृष्ण की अग्रपूजा का प्रस्ताव करते समय भीष्म ने उन्हे अपने युग का वेद-वेदागो का उत्कृष्ट ज्ञाता, अतीव बलशाली तथा मनुष्यलोक मे अतिविशिष्ट, बताया था। भीष्म के शब्दो मे वे दानशीलता, शिष्टता, शास्त्रज्ञान, वीरता, कीर्तिमत्ता तथा बुद्धिशालिता मे श्रेष्ठ हैं। वे ऋत्विक् आचार्य, स्नातक तथा प्रिय राजा के सदृश प्रिय हैं। इन्हीं कारणो से हृषीकेश केशव हमारे सम्मान के पात्र हैं।

कृष्ण के इस निष्पाप, निष्कलुष तथा आदर्श चरित्र की ओर पुन देशवासियो का ध्यान आकृष्ट करने का श्रेय महर्षि दयानन्द सरस्वती को है जो भारतीय नवजागरण के पुरोधा महापुरुष थे। उन्होने स्वचरित **'सत्यार्थप्रकाश'** के एकादश समुल्लास मे लिखा **"देखो श्रीकृष्णजी का इतिहास महाभारत मे अत्युत्तम है। इनका गुण-कर्म-स्वभाव और चरित्र आप्तपुरुषो के सदृश है। जिसमें कोई अधर्म का आचरण श्रीकृष्ण जी ने जन्म से मरणपर्यन्त बुरा काम कुछ भी किया हो, ऐसा नहीं लिखा।"** स्वामी दयानन्द के समकालीन बगला मे कृष्णचरित के मार्मिक समालोचक बकिमचन्द्र चटर्जी ने १८८६ मे श्रीकृष्णचरित शीर्षक ग्रन्थ लिखकर महाभारत आधारित उनके चरित्र की समीक्षा की। कृष्णचरित के समग्र अनुशीलन तथा उनके जीवन मे घटित घटनाओ के पौर्वापर्य का समुचित अध्ययन करने के पश्चात् बकिम ने लिखा–

"कृष्ण सर्वगुण सम्पन्न हैं। इनकी सब वृत्तियो का सर्वांगपूर्ण विकास हुआ है। वे सिंहासनासीन होकर भी उदासीन हैं, धनुर्धारी होकर भी धर्मवेत्ता हैं, राजा होकर भी पडित हैं। शक्तिमान् होकर भी प्रेममय हैं।" यही वह आदर्श है जिससे युधिष्ठिर ने धर्म सीखा और स्वय अर्जुन जिसका शिष्य हुआ, जिसके चरित्र के समान महामहिमा मण्डित चरित्र मनुष्यभाषा मे कभी वर्णित नहीं हुआ। भागवत, विष्णु तथा ब्रह्मवैवर्तपुराणो मे वर्णित कृष्ण के चरित्र की तुलना में बकिम ने महाभारतोक्त कृष्ण के मानवीय और सहज चरित्र को ही प्रामाणिक माना। उन्होंने इस बात पर खेद प्रकट किया कि मुरलीधर श्रीकृष्ण को तो हिन्दुओ ने अपना उपास्य बनाया, किन्तु सुदर्शन चक्रधारी वासुदेव को उन्होने विस्मृत कर दिया। बकिम ने इस बात पर भी आश्चर्य प्रकट किया कि कालान्तर मे कल्पित राधा को तो कृष्ण के वाम भाग में आसीन किया गया, किन्तु वेदमन्त्रों की साक्षी से अग्नि की परिक्रमापूर्वक जिस विदर्भ राजकन्या रुक्मिणी को उन्होने अपनी अर्द्धांगिनी बनाया उसके साथ प्रतिष्ठित पूजास्थलो की सख्या तो भारत में नगण्य ही है।

यदि आज सुदर्शन चक्रधारी श्रीकृष्ण होते ?

❑ सुखदेव शास्त्री, महोपदेशक दयानन्दमठ, रोहतक

जिस समय राष्ट्र भयकर आपत्तियों मे फस जाता है, उन राष्ट्रीय आपत्तियो के निवारण के लिए किसी महापुरुष का जन्म होता है, जो राष्ट्र को उन आपत्तियो से छुटकारा दिलाता है, वह समय की आवश्यकता होती है। वह राष्ट्र का उद्धारकर्ता स्वय में अपने को दिव्य शक्तियो से सुसज्जित करके कठिन से कठिन कार्यों को करने मे समर्थ होकर राष्ट्र का उद्धार कर जाते हैं। वे अपने जीवन मे अद्भुत कार्य करने के कारण ऐतिहासिक पुरुष कहलाते है।

ऐसे महान् पुरुषो मे योगिराज श्रीकृष्ण का नाम प्रथम पक्ति मे आता है। योगश्वर श्रीकृष्ण कैसे थे ? उनके जीवन के सम्बन्ध मे सबसे बडा सच्चरित्र का प्रमाणपत्र महर्षि दयानन्द ने अपने अमरग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के ११वे समुल्लास मे दिया है, श्रीकृष्ण के विषय मे महर्षि लिखते हैं–"श्रीकृष्ण जी का इतिहास महाभारत मे अत्युत्तम है। उनका गुण कर्म स्वभाव और चरित्र आप्तपुरुषो के सदृश है जिसमे कोई अधर्म का आचरण श्रीकृष्ण जी ने जन्म से मरणपर्यन्त, बुरा काम कुछ भी किया हो ऐसा नही लिखा।"

इसी प्रकार माघकवि ने "शिशुपाल वध" नामक काव्य मे श्रीकृष्ण के विषय मे युधिष्ठिर से कहलवाया है कि श्रीकृष्ण की ही कृपा से आज सारा भारत मेरे अधिकार मे है। कवि के अनुसार पाण्डव साम्राज्य का निर्माता, महाभारत का श्रेष्ठ पुरुष श्रीकृष्ण ही था। इसी प्रकार महाभारत काल में श्रीकृष्ण के एकमात्र विरोधी दुर्योधन ने भी श्रीकृष्ण के बारे मे कहा था–**त्वञ्च श्रेष्ठतमो लोके सतामद्य जनार्दन।**' (म० उद्योगपर्व ६,१४)। हे जनार्दन् कृष्ण ! आप इस समय लोक मे सर्वश्रेष्ठ हैं। ऐसे जन्मजन्मान्तर पवित्रात्मा योगिराज श्रीकृष्ण का जन्म ५१५ वर्ष पूर्व भाद्रपद कृष्ण अष्टमी, बुधवार रोहिणी नक्षत्र में उत्तर भारत के शूरसेन देश की राजधानी मथुरा में हुआ था। श्रीकृष्ण की माता देवकी तथा पिता वसुदेव थे। कंस के पिता उग्रसेन के छोटे भाई देवल की कन्या देवकी वसुदेव के साथ ब्याही थी। कस ने अपने पिता उग्रसेन को गद्दी से उतारकर अपने आप राजा बन बैठा था। कस ने देवकी और वसुदेव को भी उनके घर मे नजरबन्द कर रक्खा था। कंस को किसी ने बहका रक्खा था कि देवकी के पुत्र के द्वारा तेरा वध होगा। इसलिए उसने देवकी के छह पुत्रो को तो मार डाला था। सातवा पुत्र गर्भपात के कारण मर गया था। श्रीकृष्ण के पिता ने कृष्ण के पैदा होते ही उसे अपने मित्र नन्द के पास गोकुल में भेज दिया था। श्रीकृष्ण बच गया था।

जब कुछ समझदार हुए तो इनकी शिक्षा का प्रबन्ध किया गया गोकुल के पास ही। कृष्ण और बलदेव की शिक्षा भी एक साथ ही होने लगी। यहा तक कि अच्छी शिक्षा पाकर दोनो ही स्नातक होगए। दोनों ही भाई शारीरिक बल में अतुलनीय थे। कृष्ण वेद-वेदांग के भी अद्वितीय पण्डित थे। शस्त्रास्त्र चलाने में भी दोनों भाई निपुण थे। सुदर्शनचक्र प्राप्त कर लिया था। गुरु सांदीपन से शस्त्रविद्या सीखी थी। युद्धविद्या की महत्त्वपूर्ण शिक्षा भी इन्होने प्राप्त कर ली थी। गुरुकुल मे छात्रावस्था मे कृष्ण व बलराम ने अनेक शक्तिशाली काम किए थे। गुरुकुल के जगल मे होने पर अनेक जंगली जानवरो को मार गिराया था। जो बहुत भयंकर थे। ऐसे जगली पशुओं को इन्होने जगल से दूर भगा दिया।

अब श्रीकृष्ण स्नातक होकर मथुरा मे आए। उस समय मथुरा के सिहासन पर कस अपने पिता उग्रसेन का राज्य छीनकर खुद राजा बन बैठा था। कस का विवाह जरासध की लडकियों के साथ हुआ था, जरासध ने ही कस को मथुरा का राजा बनाया था। यादव कस को राजा नहीं चाहते थे। किन्तु आपसी फूट के कारण यादवो मे दो दल बन गये थे। वे कस का विरोध न कर सकते थे।

ऐसे मे श्रीकृष्ण का मथुरा के राजनैतिक जगत् मे प्रवेश हुआ। कस का राजा होना उन्हे अखरता था। वैसे भी कृष्ण कस के पिछले इतिहास से भी परिचित हो चुके थे। उसके अत्याचारो का भी कृष्ण को पता था। कस को भी कृष्ण व बलराम की सब गतिविधियो का पता लगता रहता था। कृष्ण ने भी यह विचार पक्का कर लिया था कि कस को मार ही देना चाहिए। कृष्ण ने यादव सघो को इकट्ठा करना शुरू कर दिया। यादवो मे बडे आदमी आहुक व अक्रूर मे आपसी समझौता करा दिया था। कस ने कृष्ण व बलराम को मरवाने के लिए अपने यहा कुश्ती दगल रखा, हजारो मथुरावासी दगल मे कुश्ती देखने आए। कृष्ण ने कस के नामी पहलवान चाणूर के साथ कुश्ती करना मान लिया। मुष्टिक पहलवान के साथ बलराम की कुश्ती हुई। श्रीकृष्ण व बलराम ने दोनो ही पहलवानो को पछाड दिया। कस ने इन दोनो को कह रखा था कि कृष्ण व बलराम को जान से मारना है, किन्तु कस का इरादा पूरा न हुआ। चाणूर व मुष्टिक दोनो ही मारे गए। श्रीकृष्ण ने तुरन्त ही मौका पाकर कस को भी वही मार दिया। बलराम ने कस के सिर से राजमुकुट उतारकर उसके पिता उग्रसेन के सिर पर रख दिया। श्रीकृष्ण की शिक्षाकाल की समाप्ति अथवा भरी जवानी की यह पहली विजय थी। श्रीकृष्ण ने यादव संघ को पुनर्जीवित कर दिया।

कस को यादवो के राजा जरासध ने ही बलपूर्वक बना रखा था, अपनी दो लडकिया भी उसके साथ ब्याही गई थी। जरासध को श्रीकृष्ण के इन कार्यो से बडा दुःख हुआ था। जरासध उस समय सारे भारत के अनेक राज्यो को वश मे करके सम्राट् बन गया था। वैसे तो वह मगध (बिहार) का राजा था। उसने अनेक राजाओ को कैद कर रखा था। जरासध ने बदला लेने के लिए मथुरा पर आक्रमण कर दिया। यादव वीर जोर-शोर से लडे। जरासंध का सेनाबल बहुत अधिक था। यादव कब तक लडते ? यादवो ने इकट्ठे होकर मथुरा को छोडने का इरादा करके वे द्वारिका नगरी बसाकर समुद्र के किनारे रहने लगे। वृष्णि, अन्धक भोज सब भाई-बन्धु यहा आकर रहने लगे।

रुक्मिणी स्वयंवर–जरासध के अधीन राजा भीष्मक, जो विदर्भ के राजा थे। उनकी कन्या रुक्मिणी थी। वह श्रीकृष्ण के गुणो पर मुग्ध थी। उन्हीं से विवाह कराना चाहती थी। श्रीकृष्ण भी उसे चाहते थे। जरासध के साथी राजाओ का श्रीकृष्ण के साथ रुक्मिणी का पाणिग्रहण स्वीकार न था। इनमे जरासध का सेनापति शिशुपाल भी रुक्मिणी से विवाह करना चाहता था। किन्तु श्रीकृष्ण रुक्मिणी के भाई रुक्मी को भी समझाकर रुक्मिणी को ले आए। घर पर विवाह हुआ। विवाह होने के बाद भी श्रीकृष्ण ने १२ वर्ष तक ब्रह्मचर्यपूर्वक रहकर केवलमात्र एक प्रद्युम्न नामक पुत्र पैदा किया, जो गुणो मे श्रीकृष्ण के ही समान था।

श्रीकृष्ण ने सभी द्वारिकावासी यादवो के लिए शराब बन्द कर दी। जो पीता था उसे मृत्युदण्ड दिया जासकता था। किन्तु अफसोस ! अन्त मे स्वय ही यादव शराब पीकर लड मरे।

इन्द्रप्रस्थ मे राजसूय यज्ञ करने का विचार श्रीकृष्ण ने युधिष्ठिर को दिया। यज्ञ की तैयारी होने लगी। राज्य की व्यवस्था सुदृढ होने पर युधिष्ठिर को सम्राट् घोषित किया जाना था। इसमे सबसे बडी रुकावट जरासध की थी। उस समय सम्राट् बनने का वही अधिकारी था जो जरासध को जीत ले। युधिष्ठिर लडाई से डरता था किन्तु श्रीकृष्ण ने अपनी नीतिमत्ता से जरासध को मारने का उपाय बताया। उन्होने कहा हम भीम के साथ चुपचाप जरासध के महल मे जाकर उसे कुश्ती के लिए ललकारे तो वह अवश्य मल्लयुद्ध करेगा। इससे भीम उसे कुश्ती के बहाने मार डाले। जरासध को मार दिया गया। शान्तिपूर्वक यज्ञ पूरा हुआ, किन्तु उस यज्ञ मे श्रीकृष्ण का मुख्यरूप से सत्कार करने के कारण शिशुपाल श्रीकृष्ण का अपमान करने लगा। उसे भी श्रीकृष्ण ने मार गिराया। युधिष्ठिर राज्य करने लगे किन्तु इस बात को हस्तिनापुर राज्य के स्वामी दुर्योधन कैसे सहन कर सकते थे। दुर्योधन ने अपने मामा शकुनि द्वारा युधिष्ठिर को जुए मे प्रवृत्त करा दिया। जुए मे पाण्डव हार गए। द्रोपदी का भरी सभा मे अपमान किया गया। पाण्डवो को जुए मे हार के कारण १२ वर्ष का वनवास मिला। एक वर्ष का अज्ञातवास व १२ वर्ष का वनवास पूरा हुआ।

पाडवो ने अपने राज्य की फिर माग की। दुर्योधन नही मानता था। श्रीकृष्ण जी कौरवो को समझाने व पाण्डवो को राज्य देने के लिए दूत बनकर हस्तिनापुर गए। रास्ते मे साय होने के कारण श्रीकृष्ण ने रथ से उतरकर सध्या की। रात को मार्ग मे ही ठहरे। दूसरे दिन हस्तिनापुर पहुचे। श्रीकृष्ण का बडा स्वागत हुआ किन्तु उसका भोजन करने से इकार कर दिया। प्रातःकाल सध्या-हवन से निवृत्त होकर श्रीकृष्ण धृतराष्ट्र की सभा मे जा विराजे। देश-विदेश के सभी राजा वहा उपस्थित थे। अनेक विद्वान् तथा ऋषि-महर्षि भी निमन्त्रित थे। श्रीकृष्ण के दूत बनकर आने का शाति समझौता सुनने को सभी उत्सुक थे। श्रीकृष्ण की वक्तृता से सभा मे सन्नाटा छाया रहा। श्रीकृष्ण ने धृतराष्ट्र को सम्बोधित करके सब कुछ कहा। कौरव-पाडवो को आपस मे मिलजुलकर राज्य का भाग लेकर काम करना चाहिए। कौरव-पाडवो मे शाति सन्धि होनी चाहिए। श्रीकृष्ण

ने कहा–अधिक नहीं तो पाडवो को चार ग्राम ही दे दो। पांचवा अपनी इच्छानुसार ही दे दो। दुर्योधन ने श्रीकृष्ण को कठोर उत्तर देते हुए कहा कि 'सूच्यग्र नैव दास्यामि विना युद्धेन केशव' हे श्रीकृष्ण! सूई की नोक टिकने की भी भूमि मै विना युद्ध के नहीं दूगा। महाभारत का भयकर विश्वयुद्ध हुआ। कौरवो की हार हुई पाण्डवो की विजय। श्रीकृष्ण ने अर्जुन का सारथी बनकर युद्ध मे पाडवो की सहायता की। भीष्म, द्रोण, कर्ण, दुर्योधन आदि बडे-बडे योद्धा मारे गए। कौरवो का सर्वनाश होगया।

यदि आज सुदर्शन चक्रधारी श्रीकृष्ण होते तो भारत राष्ट्र की यह दुर्दशा न होती। भारतीय राष्ट्र की जो सीमाए चक्रवर्ती भरत के समय १५ करोड कोस लम्बी थी, वही सीमाए आज श्रीकृष्ण उतनी राष्ट्र की कर देते। भारतीय राष्ट्र की पूर्वकाल मे जो सीमाए पूर्व मे समुद्र तथा पश्चिम समुद्र तक, उत्तर मे हिमालय तथा दक्षिण मे विन्ध्याचल पर्वत तक होती।

महाभारत के युद्ध के पश्चात् पाडवो की विजय होगई थी, किन्तु अनेक राज्य व राजा पाडवो के विरोधी थे। इस विरोध को शान्त करने के लिए श्रीकृष्ण ने युधिष्ठिर को 'अश्वमेध' यज्ञ करके सब राजाओ को इसमे निमन्त्रित करके उन्हे समझाकर एक नये राष्ट्र महाभारत की स्थापना करनी थी, वह उसमे सफल हुए। सब राजा उपस्थित हुए। युधिष्ठिर को एकमात्र चक्रवर्ती राजा घोषित किया गया। सारा भारत राष्ट्र पूर्व से पश्चिम तक तथा उत्तर से दक्षिण तक एक राष्ट्र का रूप लेगया। युधिष्ठिर ने ३६ वर्ष तक राज्य किया। यदि आज श्रीकृष्ण होते तो न पाकिस्तान होता, न बगलादेश, श्रीकृष्ण के सामने देश का विभाजन नही हो सकता था। आर्यावर्त एक राष्ट्र होता। अमेरिका व चीन तथा अग्रेज भारत पर दबाव न डाले रहते। देश का नाम आर्यावर्त होता या भारत, इण्डिया या हिन्दुस्तान नहीं।

राष्ट्र मे आज लाखो गाय मारी जाती हैं, यदि श्रीकृष्ण होते तो एक भी गोहत्यारा बाकी न रहता, उन्हे मृत्युदण्ड दिया जाता। ईसाई व मुस्लिम भारतीय राष्ट्र के नागरिक बनकर भारतीय राष्ट्र के भक्त होते। आतकवाद का तो कोई नाम भी नहीं ले सकता था। राष्ट्रद्रोहियो को मृत्युदण्ड होता। राष्ट्र मे वेद-वेदाग की शिक्षा दी जाती। अग्रेजी भाषा न होती। राष्ट्रभाषा हिन्दी होती। राष्ट्र मे कोई भी चोर न होता। कोई भ्रष्टाचारी न होता।

आज यदि सुदर्शन चक्रधारी श्रीकृष्ण होते तो गीता के अन्तिम श्लोक मे जो सजय ने श्रीकृष्ण व अर्जुन के विषय मे कहा है वही होता सजय ने कहा था–

यत्र योगेश्वर कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धर ।
तत्र श्रीर्विजयो भूर्तिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम।।

जहा योगेश्वर श्रीकृष्ण है और धनुर्धारी अर्जुन है वही श्री लक्ष्मी है, वही विजय है, वहीं ऐश्वर्य और वही निश्चल नीति है, ऐसा मेरा मत है। ओ३म् शम्।

यज्ञ की महिमा

नारनौल क्षेत्र मे मानसून की बरसात न होने से निराश और परेशान लोगो ने इन्द्र देवता को खुश करने के लिए यज्ञ का सहारा लेना शुरू कर दिया है। क्षेत्र के कई गावो मे किसानों द्वारा यज्ञ कराने के समाचार मिल रहे हैं। इसलिए गत १५ दिनो से गुरुकुल के विद्वान् आचार्य हरिपाल जी हासीवाले गाव-गाव घूमकर यज्ञ की महिमा का प्रचार कर रहे है तथा लोगो को यज्ञ के लिए प्रेरित कर रहे है।

इसी कडी मे नारनौल के उपमण्डल गाव हाजीपुर के आर्यसमाज के तत्त्वावधान मे ७ से १० जुलाई तक यज्ञ का आयोजन किया गया। इसमे ६५ किलो देसी घी की आहुति दीगई। दिनाक ११ जुलाई को गाव के बलवन्तसिह सुपुत्र श्री महाशय मुरलीधर के घर हवन किया तथा दिनाक १२ जुलाई शुक्रवार २००२ को शास्त्रीनगर मे रहनेवाल कैप्टन रतीराम के निवासस्थान पर ५ किलो देशी घी की आहुति से यज्ञ कराया गया। इन सभी यज्ञो मे क्षेत्र के लोगो ने भारी सख्या मे भाग लिया तथा भविष्य मे बुराइया छोडकर अच्छाई ग्रहण करने का सकल्प लिया। इस अवसर पर शास्त्री श्री हरिपाल जी ने उपस्थित लोगो को महीने मे कम से कम एक बार अपने घर मे हवन करवाने के लिए कहा। उन्होने कहा कि हवन से पर्यावरण की शुद्धि होती है तथा साथ-साथ घर मे सुखशान्ति बनी रहती है।

–**रतीराम लुहानीवाल**, शास्त्रीनगर, महेन्द्रगढ रोड, नारनौल

नयाबास में शहीद सुमेरसिंह बलिदान दिवस सम्पन्न

वीर सुमेरसिंह हिन्दी सत्याग्रह १९५७ के मुख्य योद्धा थे। अत. उनके बलिदान दिवस २४ अगस्त २००२ पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के उपदेशक व प० तेजवीर की भजनमण्डली ने ग्राम में वेदप्रचार किया। २४ अगस्त से कुछ दिन पूर्व आसपास के कई गावों में श्री महेन्द्रसिंह शास्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के उपमत्री तथा पं० तेजवीर जी ने ग्रामीणो को वीर शहीद के योगदान का सत्याग्रह आन्दोलन का स्मरण कराया तथा देशभक्ति प्रचार किया। २३ अगस्त की रात्रि को वीर शहीद के पैतृक गांव नयाबास जिला रोहतक में तथा २४ अगस्त को प्रात श्री सुमेरसिंह के स्मारक आर्यसमाज मन्दिर में सभा उपदेशक अविनाश शास्त्री द्वारा प्रचार किया गया जिसमे सभा के उपमत्री महेन्द्रसिंह शास्त्री, हिन्दी सत्याग्रही बाबू रघुवीरसिंह, श्री सत्यवीर शास्त्री गढी बोहर एवं गांव के बडे बुजुर्ग नौजवान बच्चों ने यज्ञ मे आहुतिया प्रदान कीं। यज्ञ उपरात मच का संचालन महेन्द्रसिह शास्त्री ने किया तथा बाबू रघुवीरसिह की अध्यक्षता मे कार्यवाही चलाई, जिसमें सर्वप्रथम पं० तेजवीर भजनोपदेशक के भजन हुए। इसके उपरान्त शहीद वीर सुमेरसिह के छोटे भाई लक्ष्मणसिंह के पौत्र पंकज आर्य ने देशभक्ति का गीत सुनाया। प० अविनाश शास्त्री, श्री दीपेन्द्र शास्त्री शहीद के छोटे भाई श्री लक्ष्मणसिंह व श्री ईश्वरसिह आदि ने शहीद सुमेरसिह को अमर शहीद कहते हुए शत नमन किया। श्री सत्यवीरसिह शास्त्री ने अपने भाषण मे कहा कि आजादी तप-त्याग से प्राप्त हुई और शहीद सुमेरसिह को इसका सच्चा रक्षक बताया जिसने हिन्दी सत्याग्रह में अपने जीवन की आहुति दी। अध्यक्षीय भाषण मे बाबू रघुवीरसिह जी ने श्री सुमेरसिह व हैदराबाद आन्दोलन के शहीद सुनहरासिह को नींव का पत्थर बताया जिसने सत्याग्रह आन्दोलन को रक्त से सींचा। श्री सुमेरसिंह ने चण्डीगढ मे धरना दिया जहा स्वामी नित्यानन्द जी आदि के साथ गिरफ्तार कर फिरोजपुर जेल में भेजे और वहा लाठी चार्ज कर वीर सुमेरसिह को शहीद कर दिया गया। अन्त में महेन्द्रसिह शास्त्री ने राष्ट्रभाषा हिन्दी को बचाने के लिए सभी को प्रेरित करते हुए कहा कि शहीदी दिवस मनाना तब सफल होगा जब हम हिन्दी की रक्षा करेंगे। श्रीभगवान जी ने सभी के पधारने का धन्यवाद किया।

–**केदारसिंह आर्य**, सभा उपमत्री

आर्यसमाज माडल कालोनी यमुनानगर का वार्षिक चुनाव

प्रधान-श्री ओमप्रकाश नरुला, उपप्रधान-सरदारीलाल भसीन, मन्त्री-डा० गेन्दाराम आर्य, उपमत्री-पुरुषोत्तमप्रकाश, उपमन्त्री-खानचन्द, वित्तमत्री-निर्मलचन्द बाली, पुस्तकालयाध्यक्ष-श्यामसुन्दरलाल शर्मा, लेखानिरीक्षक-नेमप्रकाश साहनी, सह लेखानिरीक्षक-सजीव नरुला, सयोजक-सजय चौधरी, परामर्शदाता-नसीबसिह। –डा० गेन्दाराम आर्य मन्त्री

बिरालसी में योग शिविर सम्पन्न

गुरुकुल (मुजफ्फरपुर)गुरुकुल यशवीराश्रम के तत्त्वावधान में ग्राम बिरालसी मे दिनांक १ अगस्त से लेकर ७ अगस्त २००२ तक चलनेवाले "योग एवं ब्रह्मचर्य व्यायाम प्रशिक्षण शिविर" का समापन बडे हर्षोल्लास के वातावरण मे सम्पन्न हुआ। शिविर के सचालक ब्रह्मचारी यशवीर के ब्रह्मत्व मे सात दिन तक यज्ञ का कार्यक्रम हुआ। ब्रह्मचारी यशवीर ने कहा कि "होता है सारे विश्व का कल्याण यज्ञ से, जल्दी प्रसन्न होते हैं भगवान् यज्ञ से।" ब्रह्मचारी जी ने आगे कहा कि आज नारी जाति को समाज मे जितना सम्मान मिलना चाहिए उतना सम्मान नहीं मिल पारहा है। जबकि नारी सन्तान की प्रथम गुरु अर्थात् पहली प्रेरणास्रोत होती है। लेकिन फिर भी उनके दहेज के लोभी बिना अपराध के ही दहेज न मिलने पर बेचारी औरतो को मार देते हैं। जबकि दहेज लेना और देना दोनों ही अपराध हैं और पाप भी है। इसी प्रकार से गोमाताओ को भी मारा जारहा है और जिस देश की धरती पर गौओ और बहुओ के आसू पडते हैं उस देश मे अनेक प्राकृतिक आपदाये आया करती हैं और ये सभी कुछ हमारे देश मे होरहा है। इसलिए आज अगर राष्ट्र को प्राकृतिक आपदाओं से बचाना है तो महिलाओं को सम्मान की दृष्टि से देखना होगा और गौ माताओं का श्रद्धामयी भावना से पालन करना होगा। कत्लखाने बद करने होगे। राष्ट्र की रक्षा के लिए और भारतीय संस्कृति की रक्षा के लिए देशवासियो को जीवन लगाना होगा।

प० रामकुमार आर्य की भजनमण्डली द्वारा जिन-जिन ग्रामो से सभा के ऋषिलगर हेतु जिन-जिन सज्जनों के सहयोग से सात्त्विक अन्न का दान मिला है। उनकी सूची निम्न प्रकार है—

(१) ग्राम डूराना जिला सोनीपत में वैदिक प्रचार हुआ। श्री सतवीरसिह सुपुत्र श्री चन्दगीराम के सहयोग से अन्न २ बोरी।

(२) ग्राम शामडी मे श्री महाराज के आश्रम मे वैदिक सत्सग श्री रामफल आर्य तथा सतवीर सुपुत्र श्रीचन्द के सहयोग से १११ रुपये।

(३) ग्राम लाखू बुआना व गढी मे वैदिकप्रचार हुआ लोगो ने बडी शान्ति तथा रुचि के साथ सुना श्री बलदेव आर्य ने पारिवारिक सत्सग करवाया, प्रेमसिह सुपुत्र श्री हजारी व डॉ० देवीसिह आर्य, पूर्णसिह आर्य, भीमसिह चौकीदार गढी मे श्री होशियारसिह जी पटवारी, मास्टर भलेराम जी आर्य के भरपूर सहयोग से सात्त्विक अन्न व धन मिला—२६१० रु० व १२ बोरी अन्न।

(४) ग्राम मुडलाना मिलगान पाने मे वैदिक प्रचार को लोगो ने बडे हर्ष के साथ सुना तथा श्रद्धा से योगदान भी दिया श्री सतबीर, साहबसिह, जयभगवान आर्य, श्री पालेराम सुपुत्र श्री उमेदसिह के भरपूर सहयोग से सभा के ऋषिलगर वास्ते अन्न व धन प्राप्त ८१९ रुपये व ६ बोरी अन्न।

(५) ग्राम चिदाना मे वैदिक प्रचार चल रहा है श्री सूबेसिह सुपुत्र श्री लहरीसिह का विशेष योगदान रहा तथा श्री सुनहरासिह आर्य व प्रधान जिलेसिह आर्य के सहयोग से सात्त्विक लगभग सग्रह ८०० रुपये व ४ बोरी अन्न।

आर्यसमाज के उत्सवों की सूची

१	आर्यसमाज नरवाना जिला जीन्द	२२-३१ अगस्त ०२
२	आर्यसमाज अशोक विहार फेज-१ दिल्ली	३० अगस्त से १ सित० ०२
३	आर्यसमाज बालन्द जिला रोहतक	७-८ सितम्बर ०२
४	आर्यसमाज बडा बाजार सोनीपत शहर	१६-२२ सितम्बर ०२
५	आर्यसमाज गोहाना मण्डी जिला सोनीपत	१८-२२ सितम्बर ०२
६	आर्यसमाज गगायचा अहीर बीकानेर जिला रेवाडी	२१-२२ सितम्बर ०२
७	आर्यसमाज महेन्द्रगढ	२१-२२ सितम्बर ०२
८	आर्यसमाज श्रद्धानन्द नगर (न्यू कालोनी) पलवल जिला फरीदाबाद (वेदकथा)	१८-२२ सितम्बर ०२
९	आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ (झज्जर)	२६ सित० से २ अक्तू० ०२
१०	आर्यसमाज सालवन जिला करनाल	१८-२० अक्तूबर ०२
११	आर्यसमाज झज्जर रोड बहादुगढ (झज्जर)	१९-२० अक्तूबर ०२
१२	आर्यसमाज गगसीना जिला करनाल	१६-१८ अक्तूबर ०२
१३	आर्यसमाज शेखुपुरा खालसा जिला करनाल	२५-२७ अक्तूबर ०२
१४	कन्या गुरुकुल पचगांव जिला भिवानी	२६-२७ अक्तूबर ०२
१५	आर्यसमाज खरड जि० रोपड (पजाब)	१६-१७ नवम्बर ०२

—रामधारी शास्त्री, सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता

व्यापक यज्ञों का आयोजन व प्रचार

आर्यसमाज व यज्ञ के प्रचारक आचार्य वेदमित्र ने इस माह अनेक स्थानो पर बृहद् यज्ञों का आयोजन करवाया। आर्यसमाज जसराणा मे एक मन का यज्ञ गाव के तालाब पर किया गया। पूरे गाव के बाल, युवा व वृद्ध स्त्री-पुरुष यज्ञ मे सम्मिलित हुए। अन्त मे चावलो का भोजन कराया गया। इसी प्रकार गाव जौन्ती टटेसर मे बृहद्यज्ञ का आयोजन व प्रीतिभोज किया गया। आचार्य जी के वैज्ञानिक उद्बोधन से नर-नारियो ने कुर्सी त्यागकर यज्ञ मण्डप मे बैठकर आहुतिया प्रदान की। इस समारोह मे हरयाणा के मुख्यमत्री श्री चौटाला भी आये थे।

इसी प्रकार भाली गाव मे भी बृहद् यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ मे मन्त्रोच्चारण कर रहे 'ऋषि सस्कार स्थली' के ब्रह्मचारियो से जनता बहुत प्रभावित हुई तथा आचार्य वेदमित्र के व्याख्यान से धर्म मे लोगो की आस्था बढी। शहीद कैप्टन की स्मृति मे पुन आमन्त्रण मिला जिसमे श्री अजय चौटाला भी आये। यज्ञ के उपरान्त कुण्डु परिवार की तरफ से भोजन परोसा गया। इसी प्रकार गाव के कन्या उच्चतर विद्यालय मे बृहद् यज्ञ का आयोजन किया गया। कल गाव मुगाण मे सामूहिक बृहद् यज्ञ व आचार्य जी का प्रेरक प्रवचन हुआ। अनेक बच्चो ने देशभक्ति का कार्यक्रम रखा। आचार्य जी ने राष्ट्रध्वज भी फहराया।

पिछले दो वर्षो से आचार्य जी वेदप्रचार व यज्ञो का आयोजन कर रहे हैं। उनके पातञ्जल योगाश्रम भऊ अकबरपुर मे चार बडे कमरे बन चुके हैं। यहा पर भी दैनिक सत्सग व्यायाम व यज्ञ से अनेक लोग आर्यसमाज मे आरहे हैं। आचार्य जी की कर्मठता से आश्रम मे अनेक साधन दिनप्रतिदिन बढ रहे है। पिछले दिनो आचार्य जी द्वारा राजकीय उच्च विद्यालय भऊ अकबरपुर, महर्षि दयानन्द विद्यालय मोखरा, मदीना व महाविद्यालय महम मे ऐसे आयोजन हो चुके हैं।

जीवन उपयोगी सूत्र

- ✰ मनुष्य यदि अपनी आत्मा की आवाज सुनकर आचरण करने लग जाये तो वह अति शीघ्र ज्ञानी हो सकता है।
- ✰ हितकारी कर्म वह है जिसके करने मे सन्तुष्टि सुकीर्ति और चरित्र का विकास हो।
- ✰ केवल धार्मिक पुस्तको का अध्ययन करने से मनुष्य धार्मिक नहा बन जाता अपितु शुद्ध आचरण करने से धार्मिक बनता है।
- ✰ जिस मनुष्य के जिन्दा रहने से देश, धर्म समाज और सस्कृति को कोई लाभ नही उसका जीना मरना एक समान है।
- ✰ शुद्ध आचरण रहित भक्ति एक दिखावा अर्थात् ढोग मात्र है जिसका कोई लाभ नही होता।
- ✰ आत्मा कभी देह नही होसकता और देह कभी आत्मा नही होसकता। इन दोनो के योग को जीवन और वियोग को मृत्यु कहते है।
- ✰ बाहर की यात्रा को छोडकर मनुष्य यदि भीतर की यात्रा (आत्म अवलोकन) शुरू कर दे तो उसके कल्याण का मार्ग खुलकर धैर्य, शान्ति आनन्द आदि प्राप्त होने लगते हैं।
- ✰ श्रेष्ठ व सज्जन व्यक्तियो का सग ही सत्सग कहलाता है तथा सत्सग ही तीर्थ (दु खो से तारनेवाला) होता है।
- ✰ एक अच्छी पुस्तक वही होती है जिसके पठन पर पाठक मे दुर्गुणो का क्षय होकर सद्गुणो की सवृद्धि हो।
- ✰ भक्त वही है जिसकी भावनाए शुद्ध हो तथा कर्म वेदानुकूल।

—आर्य इन्द्रसिंह वर्मा, झाडौदा कला, नई दिल्ली-११००७२

वेदप्रचार का १० दिवसीय कार्यक्रम

बिहार स्थित नवादा जिले के नवादा टाउन मे स्थानीय आर्यसमाज के तत्त्वावधान मे वेदप्रचार कार्यक्रम २२ अगस्त २००२ से ३१ अगस्त २००२ तक बडे समारोह के साथ मनाया जारहा है।

वार्षिकोत्सव की तैयारी

आर्यसमाज बान्दा, उत्तरप्रदेश का आगामी वार्षिकोत्सव दिनाक ९ नवम्बर से १२ नवम्बर २००२ तक चतुर्दिवसीय कार्यक्रम के रूप मे मनाया जाएगा अभी से विद्वानो से सम्पर्क किया जारहा है।

—वेदप्रकाश गुप्ता, कोषाध्यक्ष आर्यसमाज बादा (उत्तर-प्रदेश)

दयानन्दमठ में गुरुपूर्णिमा महोत्सव सम्पन्न

दयानन्दमठ दीनानगर के सस्थापक फील्ड मार्शल लोहपुरुष पूज्य स्वामी स्वतत्रानन्द महाराज जी ने अपनी प्राचीन सस्कृति को अपनाते हुए मठ मे जुलाई एव अगस्त के महीनो मे प्रात वेदकथा के लिए निर्धारित किये थे, जिसको सन्तशिरोमणि स्वामी सर्वानन्द जी महाराज अब भी निभाते हुए आरहे है। प्रतिवर्ष समस्त भारत से उच्चकोटि के विद्वान् मठ मे आकर कथा करते हैं।

२४-७-२००२ को सुबह यज्ञादि के उपरान्त दयानन्दमठ दीनानगर के आचार्य स्वामी सदानन्द सरस्वती जी ने नये ब्रह्मचारियो को यज्ञोपवीत पहनाकर उनका वेदारम्भ-सस्कार किया। गुरुवर त्याग की साक्षात् मूर्ति १०३ वर्षीय स्वामी सर्वानन्द सरस्वती जी ने सब आगन्तुक महानुभावो को आशीर्वाद दिया। गुरु विरजानन्द एव महर्षि दयानन्द गुरु-शिष्य परम्पराओ पर प्रकाश डाला। अन्त मे दिल्ली से पधारे डॉ० देव शर्मा जी ने लोगो को बताया कि यह हमारी सस्कृति का एक अग है। प्रचीनकाल मे गुरु अपने शिष्यों से गुरुदक्षिणा लेता था और शिष्य देता था। अन्त मे बाहर से आये शहर निवासियो एव इलाका निवासियो का स्वामी सदानन्द जी ने धन्यवाद किया। प्रसाद वितरण के बाद शान्तिपाठ से कार्य सम्पूर्ण हुआ।

—**शास्त्री योगेन्द्रपाल,** मन्त्री आर्यसमाज धारीवाल जिला गुरदासपुर (पजाब)

वेदप्रचार

दिनाक २१-२२ जुलाई २००२ को आर्यसमाज सोहटी जिला सोनीपत मे श्री जयपालसिह आर्य व सत्यपाल आर्य भजनोपदेशको का दो दिन वेदप्रचार हुआ। आर्यसमाज के प्रधान श्री बलवीरसिह आर्य व अन्य सदस्यों ने महिलाओं ने वेदप्रचार को सुना। गाव मे बढती कुरीतियो के बारे मे खण्डन किया। इस अवसर पर सभा को ७३४/- रु० दान दिया गया।

शोक समाचार

(१) आर्यसमाज के कर्मठ व नि स्वार्थी सेवक हरचन्दी भगत का निधन होगया। इनकी आयु ८० वर्ष थी। बचपन से स्वामी धर्मानन्द जी के साथ आर्यसमाज का कार्य किया। आर्यसम्ज मन्दिर के निर्माण व सुरक्षित रखने मे शारीरिक श्रम बढचढकर किया है। गाव की प्रसिद्ध सडक रघवरदास मार्ग पर मिट्टी डालकर पक्की बनाने मे पूर्ण सहयोग व सेवा की। आर्यसमाज मन्दिर परिसर मे कई बार मिट्टी डालकर स्वय सुरक्षित रखा। आर्यसमाज मन्दिर का थोडासा नुकसान होने पर बडा कष्ट होता था। आर्यसमाज के वार्षिक उत्सव मे घी, अन्नसग्रह करके विशेष सहयोग दिया। दान भी आर्यसमाज को बढचढकर देते थे। परमात्मा से प्रार्थना है कि इनकी आत्मा को शान्ति व सद्गति प्रदान कीजिए।

(२) श्री बहालसिह भारद्वाज पूर्व प्रधान आर्यसमाज औरंगाबाद मितरौल की धर्मपत्नी बहोती का निधन होगया। इनकी आयु ८१ वर्ष थी। वे बड़ी विनम्र और सहनशील स्वभाव की थी। अतिथि सत्कार को सर्वोपरि स्थान देती थी। परमात्मा से प्रार्थना करते है कि इनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

(३) आर्यसमाज के निष्ठावान् व लगनशील मनुष्य नवला पहलवान के पिता श्री डालचन्द आर्य मत्री का निधन होगया। इनकी आयु ७९ वर्ष थी। आर्यसमाज के आन्दोलन व सत्याग्रह के लिए विशेष रुचि थी। आर्यसमाज के कार्यक्रमो मे भाग लेते थे। परमात्मा से प्रार्थना है कि इनकी आत्मा को शान्ति व सद्गति प्रदान कीजिए।

(४) आर्यसमाज जाडानपुर जिला कैथल के खजाची लाला रामधारी का स्वर्गवास १९ जुलाई २००२ को होगया। वह ८५ वर्ष के थे। वह तमाम आयु आर्यसमाज के खजाची के पद पर रहे। वह बडे ईमानदार, सच्चे और धार्मिक विचारो से ओतप्रोत थे। उनकी रुचि धार्मिक कार्यों में इतनी अधिक थी कि वह अपना कार्य छोडकर धार्मिक कार्यों मे लग जाते थे। आर्यसमाज के प्रचार हेतु जब भी भजनोपदेशक आते थे, उनकी सेवा मे वह और उनकी धर्मपत्नी अपने को समर्पित कर देते थे। वह मरते समय तक समाज के एव महर्षि दयानन्द के गुणो का व्याख्यान करते रहते थे। उसके पुत्र सरसा वाले के अनुयायी बन गये लेकिन वह अपने मार्ग से पीछे नहीं हटे और उनको यही सलाह देते कि अर्यसमाज से बढकर देश व विदेश मे कोई सस्था नहीं जो मानव जीवन के हरेक पहलू पर संदेश दे।

सूचना

ब्रिगेडियर चितरजन सावंत, वी.एस.एस मध्य अगस्त ०२ से मध्य अक्तूबर ०२ तक इग्लैंड मे वैदिक धर्म प्रचार करेगे। आर्यसमाज बरमिंघम के तत्त्वावधान मे रेडियो माध्यम से नित्य वैदिक वार्ता प्रसारित की जाएगी। अनेक नगरो, उपनगरो मे स्थानीय सम्भ्रान्त एव सामान्य नागरिकों ब्रिटिश गोरे व काले नर-नारी के बीच हिन्दी व अंग्रेजी में गोष्ठिया आयोजित की जारही हैं। भारत की आर्य-सस्थाओ पर दूरदर्शन द्वारा निर्मित वृत्तचित्र दिखाकर, युवावर्ग के विचार आमत्रित किये जायेगे। इंग्लैंड स्थित अन्य हिन्दू संगठन सहयोग दे रहे हैं। युवावर्ग के लिए विशेष सत्र होगे। परमात्मा, आर्य अभियान सफल करे।

आचार्य ज्ञानेश्वर जी विदेश यात्रा पर

इंग्लैंड देश के विभिन्न क्षेत्रों मे स्थित आर्यसज्जनो के आग्रह पर दर्शनयोग महाविद्यालय के आचार्य श्री ज्ञानेश्वर जी आर्य चार सप्ताह के लिए अगस्त माह मे प्रचार यात्रा पर यूरोपीय देशो मे गए हुए हैं।

वीरो ! श्रीकृष्ण बन जाओ

पं० नन्दलाल निर्भय भजनोपदेशक

सोने का यह समय नहीं है, जागो भारत के नर-नारी।
योगिराज श्रीकृष्ण जैसे, बन जाओ वीरो ! बलधारी।।

द्वापर युग मे यदुनन्दन ने, मिटता कुल ससार बचाया।
मानवता की रक्षा मे, युगनायक ने था कष्ट उठाया।
लडा पापियों से वह निर्भय, कभी नहीं योद्धा घबराया।
कस और शिशुपाल पछाडे, पावन वैदिक धर्म निभाया।
वसुदेव का पुत्र निराला था, सद्गृहस्थी वीर ब्रह्मचारी।
योगिराज श्रीकृष्ण जैसे, बन जाओ वीरो ! बलधारी।।

था लक्ष्य कृष्ण के जीवन का, दुनिया को स्वर्ग बना देना।
दुर्योधन जैसे दुष्टो से, गिन-गिन करके बदला लेना।
त्यागी था बडा देवकी सुत, जिसने न कभी भी राज्य लिया।
ऋषियों-मुनियों की सेवा की, सारे जग का उद्धार किया।
ईश्वर के भक्त निराले के, गुण गाती है दुनिया सारी।
योगिराज श्रीकृष्ण जैसे, बन जाओ वीरो ! बलधारी।।

देवो की धरती भारत मे, फिर पापाचार गया है बढ।
डाकू, गुण्डे, चोर, शराबी, बोल रहे सबके सिर चढ।
देशद्रोही, देश तोडने की हैं रहे योजना गढ।
चूहों की चमडी से जालिम, देखो रहे नगाडे मढ।
धर्म कर्म भूले नेतागण, बन मद्यप मासाहारी।
योगिराज श्रीकृष्ण जैसे, बन जाओ वीरो ! बलधारी।।

धोखेबाज है चीन जवानो ! हमको आंख दिखाता है।
राम, कृष्ण के भारत पर, अमरीका धौंस जमाता है।
पापी पाकिस्तान कुचाली, बढ-बढकर बात बनाता है।
कई बार पीटा भारत ने, फिर भी ना शर्माता है।
काश्मीर मे अत्याचारी, करता निश-दिन मक्कारी।
योगिराज श्रीकृष्ण जैसे, बन जाओ वीरो ! बलधारी।।

याद रखो तुम ! धर्मद्रोही, धर्म का मर्म जानते ना।
लातो के जो यार, कभी बातों से दुष्ट मानते ना।
वेदो का सदेश यही है, दुष्टो का संहार करो।
हाथों मे चक्र सुदर्शन लो, बन श्रीकृष्ण हुंकार करो।
मानवता के हत्यारों से, छोडो तुम करनी यारी।
योगिराज श्रीकृष्ण जैसे, बन जाओ वीरो ! बलधारी।।

बात मानलो देवपुरुष की, जीवन में सुख पाओगे।
राज्य करोगे सकल विश्व पर, ज्ञानी माने जाओगे।
वैदिक पथ के पथिक बनो, वैदिक वाणी कल्याणी है।
जगद्गुरु ऋषि दयानन्द ने, धर्म डगर पहचानी है।
"नन्दलाल निर्भय" बन जाओ, सब वेदों के प्रचारी।
योगिराज श्रीकृष्ण जैसे, बन जाओ वीरो ! बलधारी।।

ग्राम व डाकघर बहीन, जनपद फरीदाबाद (हरयाणा)

आर्य-संसार

धर्म परिवर्तन करनेवाले दलितों की घर वापसी कराने का निर्णय

मेवात में दलित समाज के ४० लोगों द्वारा धर्म परिवर्तन करने का मामला तूल पकडता जारहा है। इस सबध में आज स्थानीय नई बस्ती वाल्मीकि मन्दिर में हरयाणा वाल्मीकि महासभा के नेतृत्व में शहर की विभिन्न सस्थाओं ने एक बैठक कर धर्म परिवर्तन करनेवाले ४० लोगों की घर वापसी कराने का निर्णय लिया है। बैठक में २५ सदस्यीय वाल्मीकि धर्मरक्षक समिति का गठन किया गया। बैठक की अध्यक्षता स्वामी सरूपानन्द ने की।

ज्ञात हो कि पिछले सप्ताह मेवात के ४० दलितों ने शाही इमाम की देखरेख मे इस्लाम धर्म ग्रहण किया था जिसको लेकर मेवात क्षेत्र का हिन्दूसमाज उद्वेलित है। इस बारे में धर्म परिवर्तन करनेवाले लोगो की घर वापसी को लेकर कई बैठके भी हो चुकी हैं।

बजरंग दल व विश्व हिंदू परिषद् भी इस मामले को लेकर आन्दोलनरत हैं। इस संबंध में अब स्थानीय हरयाणा वाल्मीकि महासभा ने बैठक कर धर्म परिवर्तन पर कडा एतराज जताया है।

बैठक को संबोधित करते हुए महासभा के जिला महासचिव राजकुमार चावरिया ने कहा कि धर्म परिवर्तन एक घिनौना कार्य है। इसमे अहम् भूमिका निभाकर शाही इमाम ने वाल्मीकि समाज पर कुठाराघात किया है। उन्होने कहा कि मुस्लिमो द्वारा वाल्मीकि समाज के भोले-भाले लोगो को बरगलाकर उनका धर्म परिवर्तन कराया जारहा है। यह दलित समाज को हिन्दूसमाज से अलग करने का घिनौना प्रयास है लेकिन धर्म परिवर्तन मामले को लेकर अब वाल्मीकि समाज चुप नहीं बैठेगा। भविष्य में ऐसे कुकृत्य पर विशेष ध्यान रखा जायेगा।

महासभा के प्रधान चद्रभान ने बताया कि अभी हाल ही मे मेवात मे जिन ४० लोगो ने इस्लाम धर्म कबूल किया है उन्हे हर कीमत में हिंदू धर्म में वापस लाया जायेगा। यदि आवश्यकता पडी तो उन परिवारो को गुडगांव लाकर भी बसाया जासकता है। उनके अनुसार धर्म परिवर्तन पर रोक लगाने के लिए गठित वाल्मीकि धर्म रक्षक समिति में २५ सदस्य शामिल किए हैं। उन्होने कहा कि धर्म परिवर्तन व किसी भी अनुचित कार्य के खिलाफ सपूर्ण हिंदू समाज सघर्ष करेगा।

बैठक मे आर्यसमाज, सनातन धर्म सभा, कबीर सभा व रविदास सभा के अलावा अशोक आजाद, प्रतापसिह कदम, भावादास के प्रधान सुरेश बोहोत, शकरलाल खेरलिया, चरणदास चावरिया, जयभगवान, दरयावसिह झाडसा, सुरेन्द्रकुमार उजीनवाल, महेन्द्र, नन्दलाल, अशोककुमार, रामसिह कादीपुर, मुन्नीलाल, दौलताबाद से सूरजभान, गुडगांव गाव से गुरुवरणसिह, कैप्टन जगदीश ने भी बैठक को सबोधित किया। (दैनिक जागरण १८-८-०२)

बहादुरगढ़ में वर्षेष्टियज्ञ सम्पन्न

११ अगस्त को बहादुरगढ सेक्टर-६ में स्थित सामुदायिक केन्द्र (कम्युनिटी सेंटर) में सेक्टर-६ निवासियो के सहयोग से इन्द्रदेवता को प्रसन्न करने हेतु आर्यसमाज सेक्टर-६ के सचालक युवा विद्वान् आचार्य शिवराज डी शास्त्री के ब्रह्मत्व मे वर्षेष्टि महायज्ञ व सत्सग सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। इस यज्ञ मे डेढ मन देसी घी व २६ किलो हवनसामग्री की लगभग तीन हजार स्त्री-पुरुषो एव बच्चों ने श्रद्धा व लगन से आहुतिया दीं। यज्ञप्रसाद के रूप में शुद्ध देसी घी से निर्मित विशाल भण्डारे की सुव्यवस्था की गई थी। दस घण्टे तक ऋषिलगर चलता रहा। इसमें लगभग सात-आठ हजार श्रद्धालुओं ने प्रसाद ग्रहण किया। इस यज्ञ के पूर्णाहुति के २४ घण्टे में बारिश हुई। १२ घण्टे तक वर्षा होती रही।

शिवराज शास्त्री ने उपस्थित जनसमूह को सम्बोधित करते हुए कहा कि वेद और आधुनिक विज्ञान के अनुशीलन से मेरा यह निश्चित मत बना है कि वृष्टियज्ञ के द्वारा समुद्रों में यथाकाम बादल बनाए जासकते हैं। सागरों में से उठे बादलों को उड़ाकर अभीष्ट स्थान में ले जाया जासकता है, स्वत. घुमक्कड बादलों को यथासमय और यथास्थान बरसाया जासकता है। आकाश में व्याप्त जल को बादलों में परिणत करके, जब चाहे तब चाहे जिस स्थल में बरसात कराई जासकती है। परन्तु यह तब होगी, जब हम शास्त्रविधि के अनुसार प्रात सायं तीन-तीन घण्टे लगातार सात दिन तक वृष्टियज्ञ करने से निश्चित तौर पर सातवें दिन मूसलाधार वर्षा होजाती है।

इस वृष्टि महायज्ञ मे बहादुरगढ के विधायक श्री नफेसिंह राठी, सेक्टर-६ के प्रधान नफेसिह राठी, एस डी एम डॉ० सुलतानसिह यादव, आर्यसमाज के प्रधान मा० ब्रह्मजीत आर्य, मत्री सुकर्मपाल सागवान, राजसिह सोलकी, तेजा पहलवान, प्रो० रामविचार, रवीन्द्र शास्त्री, ईश्वरसिह आर्य, धर्मवीर हुड्डा, कन्या गुरुकुल लोवा कला की ब्रह्मचारिणिया, सुनीत सागवान, शिवस्वामी, लक्ष्मण शास्त्री, दानवीर सतवीरसिह राठी, सुरेन्द्र जून, सेक्टर-६ के अनेक कार्यकर्त्ता एव सभी मत व सम्प्रदाय के लगभग तीन हजार श्रद्धालुओ ने श्रद्धासहित नमन करते हुए वैदिक मन्त्रोच्चारण के साथ स्वाहा बोलते हुए आहुतिया डालीं। —उपमंत्राणी श्रीमती कृष्णा प्रदीपकुमार

आर्यसमाज सेक्टर-६ बहादुरगढ, झज्जर (हरयाणा)

वैदिक सत्संग सम्पन्न

महर्षि दयानन्द योग चिकित्सालय ३७०५ अर्बन स्टेट जीन्द का मासिक सत्सग जो कि महीने के दूसरे रविवार को मनाया जाता है उसमे विगत ११-८-२००२ रविवार को भी सम्पन्न किया गया। सत्सग ठीक आठ बजे यज्ञ के माध्यम से शुरू हुआ जिसकी प्रार्थना आश्रम सचालक श्री रामधारी शास्त्री जी ने की। यज्ञोपरान्त ९-१० बजे तक ईश्वरभक्ति, राष्ट्रभक्ति गीत आए श्रद्धालुओं ने मिलकर गाए। १० से १०-३० तक श्री रामधारी ने शुगर के रोग का इलाज मुख्यत ५-६ कि०मी० प्रात भ्रमणादि बताया। इसके साथ ध्यानादि योग का माध्यम बताया। १०-३० से ११-३० बजे तक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक से आए उपदेशक श्री अविनाश शास्त्री जी का आध्यात्मवाद पर प्रवचन हुआ। शास्त्री जी ने बताया कि व्यक्ति दुनिया के कार्यों मे ईश्वर को भूल जाता है जिससे मनुष्य दु खी व अशान्त रहता है। आध्यात्म के अर्थ मे आत्मनि अधि अर्थात् आत्मा मे सुख का आधार परमात्मा ही आध्यात्म है। उसे व्यक्ति को सदैव ध्यान रखना चाहिए कि परमात्मा लक्ष्य है, आत्मा तीर है, मानव शरीर धनुष है जिस पर आत्मारूपी तीर को चढाकर परमात्मारूपी लक्ष्य पर छोडना है। आध्यात्मवादी मनुष्य कभी भी परमेश्वर को नहीं भूलता व सासारिक दैविक सुख प्राप्त करता है। इस उपलक्ष्य मे भारी सख्या मे लोगो ने भाग लिया। शान्तिपाठ के बाद लगभग २५०-३०० लोगो ने ऋषिलगर मे ऋषिप्रसाद लिया। मन्त्री रामलाल जी आर्य ने सभी का धन्यवाद कर पाण्डाल को गुञ्जायमान किया।

—रामलाल आर्य, मत्री दयानन्द योग चिकित्सा आश्रम, जीन्द

स्वामी दयानन्द ने दी थी चंद्रमा पर पानी होने की जानकारी

अमरावती। अमेरिका के वैज्ञानिको ने तो चन्द्रमा पर पानी होने की खोज भले ही आज लगाई हो, लेकिन स्वामी दयानन्द ने १२३ साल पूर्व चद्रमा पर ही नहीं, बल्कि सभी ग्रहो पर पानी होने का स्पष्ट किया था, यह जानकारी यहा के खगोलशास्त्र और स्थानीय विदर्भ महाविद्यालय मे १२वीं कक्षा के छात्र बी वेदप्रकाश ने दी है।

बचपन से बी वेदप्रकाश को खगोलशास्त्र मे रुचि होने के कारण उसने कोपनिर्कस स्कायवॉच रिसर्च एण्ड गाईडस सेटर की अमरावती मे स्थापना की है। यह छात्र ब्रिटिश अॅस्ट्रानॉमिकल एसोसिएशन और इडिया एम्युचर एस्ट्रोनॉमर सगठन (पुणे) का सदस्य भी है। भारत के अनेक खगोलशास्त्रियो ने इस छात्र के कार्य को सराहा है।

शिलाग मे अप्रैल १८ में होनेवाले ऑल इडिया एम्युचर एस्ट्रानॉमर्स मीट-९८ मे 'वेद व ज्योतिर्विज्ञान' विषय पर पेपर पढने के लिये उसे आमत्रित किया गया है।

बी वेदप्रकाश ने बताया कि स्वामी दयानद ने सन् १८७५ मे यानि १२३ साल पूर्व सत्यार्थप्रकाश नामक अनमोल ग्रन्थ लिखा था। इस ग्रन्थ मे पृथ्वी की तरह सभी ग्रहो पर जीवसृष्टि होने का उल्लेख किया गया है। स्वामी दयानन्द ने वेद के आधार पर कहा है कि सभी ज्ञान विज्ञान के बीज भी देश मे ही हैं। उन्होंने सत्यार्थप्रकाश मे यह स्पष्ट कर दिया है। बी वेदप्रकाश ने बताया कि सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ का पठन करने के बाद अनेक ग्रहो पर बस्ती होने की बात भी स्पष्ट होती है। (लोकमत समाचार, नागपुर १७ मार्च, १९९८)

अनुकरणीय सहयोग

प० रामकुमार आर्य की भजनमण्डली द्वारा पवित्र अन्नसग्रह ऋषिलगर दयानन्दमठ रोहतक वास्ते ग्राम बुआना लाखू, डूराना, चिडाना, मुडलाना इन चारो गावों से लगभग २६ बोरी गेहू इकट्ठा किया गया। सबसे अधिक योगदान श्री देवेन्द्र जी टेलर सुपुत्र श्री रणधीरसिह जी मलिक का रहा। इन्होने एक बोरी गेहू तथा सौ रुपए दिये और अपनी गाडी न० ४६३७ मे भरकर बडी श्रद्धा के साथ फ्री सेवा करते हुए इन चारो ग्रामो का अन्न दयानन्दमठ रोहतक पहुचाया। भगवान् से प्रार्थना है इनकी उमर लम्बी हो, जीवन मे अपना धर्मकार्यो के लिये विशेष योगदान देते रहे। इनकी श्रद्धा बनी रहे। परिवार मे अन्न-धन की वर्षा होती रहे। ग्राम बुआना लाखु तो आर्यो का नगर है। श्री बलदेव जी आर्य सुपुत्र श्री फतेहसिह जी नम्बरदार ने भजन मण्डली को ठहराने तथा भोजन आदि की विशेष व्यवस्था की। खुद प्रचार की भी व्यवस्था करते। इनके अलावा श्री प्रेमसिह, धर्मपाल, कृष्ण जी, डा० देवीसिह आर्य, मास्टर रामस्वरूप आर्य, गढी मे श्री होशियारसिह जी पटवारी, मास्टर भलेराम आर्य, श्री पूर्णसिह जी आर्य इन सबके सहयोग से वैदिक प्रचार सफल हुये। लोगो ने प्रचार को बडी शान्ति एव रुचि के साथ सुना ग्राम चिडाना में श्री सतवीरसिह जी नाई ने शराब मास मीट बीडी आदि त्याग दी। प्रचार मे इस शब्द से प्रभावित हुआ–'**अन्धेरे मे लकड़ी समझ हाड उठा लिया जाये तो चादना होते ही फैंक देना चाहिए।**' न्यू बोल्या जी आज से ही फैंक दिया। **–सभामंत्री**

आचार्य कुल कन्या गुरुकुल का स्थापना दिवस मनाया

बहादुरगढ। आचार्य कुल कन्या गुरुकुल का स्थापना दिवस गुरुवार को गुरुकुल परिसर मे हवन यज्ञ एव वैदिक मत्रोच्चारण के साथ सम्पन्न हुआ। गुरुकुल की स्थापना १९६२ मे सीदीपुर लोवा गाव के निवासी मीनाचार्य ने रक्षाबधन को अपनी स्वय की भूमि मे की थी। बाद मे १९६५ मे उन्होने गुरुकुल को कन्याा गुरुकुल का स्वरूप प्रदान कर दिया। गुरुकुल का सचालन मानाचार्य की पुत्री शाति बहन करती रही थीं। स्थापना दिवस के अवसर पर गुरुकुल परिसर मे यज्ञ का आयोजन बहन कृष्णा व राजन की अगुवाई मे किया गया। यज्ञ मे पुरुष सूक्त का पाठ, शातिकरण मत्र व स्वस्तिवाचन का पाठ किया गया।

इस अवसर पर पूर्व एमएलसी उदयसिह मान, प्रधान श्रीचद अमरसिह चेयरमैन गुरुकुल के रिसीवर आरएस भादू भी उपस्थित थे। बहन राजन ने यज्ञ के बाद सभा मे उपस्थित जनो को जानकारी दी कि कन्या गुरुकुल से १८ छात्रा ने शास्त्री की परीक्षा मे प्रविष्ठ हुई थी। इनमे से १० छात्राए प्रथम श्रेणी मे व आठ छात्राए द्वितीय श्रेणी मे उत्तीर्ण हुई हैं। ग्रामीणो ने गुरुकुल को २५ हजार रुपये की राशि भेट की। इस राशि मे ५१०० रुपए प्रधान श्रीचद ने तथा ५१०० रुपए की राशि रणधीर ने भेट की है। **(साभार–दैनिक भास्कर)**

अन्त्येष्टि वेदी का निर्माण

श्री कर्नल सुरेन्द्रसिह राठी सुपुत्र श्री मा० रणधीरसिह राठी माडल टाऊन रोहतक ने शीला बाईपास के निकटवर्ती शमशान घाट मे अपनी पूज्य माता जी की स्मृति में एक अन्त्येष्टि वेदी का निर्माण कराया है।

यह वेदी महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा सस्कारविधि के अन्त्येष्टि प्रकरण मे लिखित विधान के अनुसार वैदिक विद्वानो के परामर्श से बनवाई गई है। वहा जो वेदिया बनी हैं वे किसी शास्त्रीय विधान पर आधारित नहीं हैं।

मा० रणधीरसिह राठी के निर्देशानुसार यह वेदी सार्वजनिक है। जो चाहे वह इस वेदी का उपयोग कर सकता है और इसके सहाय से पृथक वेदी का निर्माण भी करा सकता है।

सुदर्शनदेव आचार्य, अध्यक्ष सस्कृत सेवा सस्थान रोहतक।

गुरुकुल जैसी संस्थाओं को संरक्षण जरूरी : स्वामी

कुरुक्षेत्र। शिक्षा सस्थानो विशेष तौर पर गुरुकुल जैसी शिक्षा सस्थानों को सरकारी सहायता प्रदान की जानी चाहिए ताकि देश का भविष्य योग्य हाथो मे सुरक्षित किया जा सके। यह विचार केन्द्रीय गृह राज्यमत्री आई डी स्वामी ने स्थानीय गुरुकुल मे आयोजित एक समारोह मे व्यक्त किये। गुरुकुल द्वारा रक्षाबधन पर्व पर आयोजित यज्ञोपवीत सस्कार एव ज्योति आरोग्य धाम उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता सासद श्रीमती कैलाश सैनी ने की। श्री स्वामी ने कहा कि इस प्रकार की सस्थाओ को आज सरकार एव समाज के सरक्षण की आवश्यकता है। क्योकि हमारी पारम्परिक एव सास्कृतिक धरोहर के लिए विश्व लालायित है। गुरुकुल, आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति, प्राकृतिक इलाज तथा योगा के लिए आज विश्व हमारी ओर देख रहा है। जबकि हम अपनी धरोहर को त्यागकर पश्चिमी सभ्यता की ओर भाग रहे हैं। उन्होने कहा कि यदि हमने अपनी सास्कृतिक धरोहर सभालकर रखी होती तो आज हमारा देश समृद्ध देशो की श्रेणी मे होता, क्योकि विदेशी करोडो डॉलर खर्च कर हमारी सांस्कृतिक परम्परा को अपना रहे हैं। उन्होने कहा कि आज निजी विद्यालयो मे भी सस्कृत एव योग की शिक्षा को अनिवार्य बनाने की आवश्यकता है।

(साभार–दैनिक हरिभूमि)

आर्यसमाज अटेली मण्डी द्वारा वृष्टियज्ञ का आयोजन

आर्यसमाज अटेली मण्डी द्वारा स्थानीय राधाकृष्ण मन्दिर के प्रागण मे दिनाक ६ अगस्त से ८ अगस्त तक प्रात -साय त्रिदिवसीय मानसून वृष्टियज्ञ का आयोजन किया गया जिसमे आर्यसमाज के सभी सदस्यो एव अन्य नरनारियो ने सहर्ष भाग लिया। मुख्य यजमान बलवन्तसिह आर्य सेवानिवृत स्टेशन अधीक्षक (पुस्तकाध्यक्ष) सपत्नीक रहे। आचार्य गुरुकुल खोल (रेवाडी) ने ऋग्वेद, यजुर्वेद एव अथर्ववेद के मन्त्रो से वर्षेष्टि यज्ञ की आहुतिया प्रदान करवाई। अन्त मे महाशय रामपत आर्य प्रधान ने सभी का आभार व्यक्त किया। **–सूरजभान आर्य,** मन्त्री आर्यसमाज अटेली मण्डी

सभा भजनापदेशक पं० तेजवीर आर्य द्वारा वेदप्रचार कार्यक्रम

तीज के पावन पर्व पर ग्राम बालन्द जिला रोहतक मे दो दिवसीय प्रचार किया गया जिसमे प० तेजवीर आर्य एव उनके सहयोगियो द्वारा १० अगस्त की रात्रि मे वेद ईश्वरीय ज्ञान है, महर्षि दयानन्द ससार के दिव्य महापुरुष एव शहीद ऊधमसिह के इतिहास के माध्यम से प्रचार किया।

११ तारीख को प्रात आचार्य सुदर्शनदेव जी ने यज्ञ कराया एव वेदोपदेश किया। इसके उपरान्त तेजवीर आर्य द्वारा आध्यात्मिक विषय ईश्वर जीवात्मा एव प्रकृति अनादि है एव कर्मफल व्यवस्था पर गीतो के माध्यम से प्रकाश डाला गया। सभा को १०० रु० दान दिये।

(२) ग्राम ढाकला जिला झज्जर मे तीन दिवसीय १२ से १४ अगस्त प्रचार किया गया। इसमे श्री तेजवीर आर्य एव इनके सहयोगी सजय, सुभाष एव बहन सुदेश आर्या द्वारा वैदिक सिद्धान्तो की विस्तृत व्याख्या की गई। प० तेजवीर आर्य ने शहीद भगतसिह, महाराजा सूरजमल, ऊधमसिह आदि के इतिहास एव पाखण्ड खण्डन, शराब, दहेज, भ्रूणहत्या आदि का विरोध किया। इस कार्यक्रम मे लगभग एक हजार स्त्री-पुरुषो की भीड होती थी। सभा को १३५२ रु० दान दिया।

आर्यसमाज (गुरु विरजानन्द भवन) खैल बाजार, पानीपत का चुनाव

सरक्षक-प्रोफेसर उत्तमचन्द शरर, श्री कस्तूरीलाल आर्य, डा० बिहारीलाल। प्रधान-सेठ रामकिशन, उपप्रधान श्री देसराज आर्य, श्री धर्मवीर भाटिया, मुनीष अरोडा, श्री कृष्णलाल चुघ, कार्यकर्ता प्रधान-श्री हरचरनदास अरोडा, मत्री-राजेन्द्रकुमार पाल, उपमत्री-श्री जयकिशन आर्य, कोषाध्यक्ष-श्री कृष्णलाल एलावादी, पुस्तकाध्यक्ष-श्री राकेश आर्य, नि.शुल्क टी०बी० औषणालय अधिकारीगण-प्रबन्धक-श्री बलराज एलावादी, सह प्रबन्धक-श्री राकेश भाटिया, श्री महेन्द्रकुमार, कोषाध्यक्ष-श्री राजीव आर्य।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिग प्रेस, रोहतक (फोन : ०१२६२–७६८७४, ७७८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ०१२६२–७७७२२) से प्रकाशित।
पत्र में प्रकाशित लेख सामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री का सहमत होना आवश्यक नहीं। पत्र के प्रत्येक प्रकार के विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक होगा।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३
पंजीकरणसंख्या टैक/85-2/2000
☎ ०१२६२-७७७२२
सृष्टिसंवत् १, ९६, ०८, ५३, १०३
विक्रमसंवत् २०५९
दयानन्दजन्माब्द १७९

प्रधानसम्पादक : यशपाल आचार्य, सभामन्त्री
सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री

वर्ष २६ अंक ३६ ७ सितम्बर, २००२ वार्षिक शुल्क ८०) आजीवन शुल्क ८००) विदेश में २० डॉलर एक प्रति १.७०

आधुनिक नारी एवं भारतीय समाज

❑ **डॉ० रवि शर्मा**, डब्ल्यू.जैड-१९८७, रानीबाग, दिल्ली-३४

नारी की पूजा करने वाले देश भारत मे आज यह नौबत आ गई है कि औसतन हर छह मिनट मे कोई-न-कोई महिला किसी-न-किसी तरह के अपराध की चपेट में आ जाती है। यानी कि आपके द्वारा इस लेख को पढते-पढते एक और महिला पर अत्याचार हो चुका होगा। जी हा, यह कडवा सच गृहमन्त्रालय के अन्तर्गत काम कर रहे अपराध पजीकरण ब्यूरो द्वारा उद्घाटित किया गया है कि हर ४७ मिनट मे एक महिला बलात्कार की शिकार होती है, जबकि हर ४४ मिनट मे औसतन एक महिला का अपहरण किया जाता है। हर तीसरी महिला अपने पति या किसी सम्बन्धी के अत्याचार का सामना कर रही है और हर रोज दहेज सम्बन्धी मामलो मे १७ महिलाए मौत के मुंह में धकेल दी जाती हैं। पिछले दो दशको मे केवल बलात्कार के मामले मे ही ४०० प्रतिशत वृद्धि हुई है और विडम्बना यह है कि बलात्कार के लिए आज नारी का युवा या सुन्दर होना आवश्यक नहीं है, दुधमुही बच्ची से लेकर वृद्धा तक, नौकरानी से लेकर पागल या अपाहिज तक, कोई भी 'आधुनिक पशु' की हवस का शिकार हो सकती है, इसके लिए उसका नारी रूप मे जन्म लेना ही पर्याप्त है। इतना ही नहीं, आज बलात्कार भी केवल अंजान पुरुष या गुण्डे-बदमाश ही नहीं करते, सम्भ्रान्त दिखने वाले सफेदपोश के सम्मुख भी नारी की अस्मिता सुरक्षित नहीं है। सब रिश्ते-नाते टूटते जा रहे हैं, मानवीय मूल्य, मर्यादाए सब पुस्तको की शोभा, अत्याचार सहने वाली मूर्ति बन जाती है, जिसके बारे मे राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने लिखा था–

अबला जीवन हाय, तुम्हारी यही कहानी।
आंचल में है दूध और आंखों में पानी।।

नारी पर अत्याचार करने मे पुरुष की तो प्रमुख भूमिका होती ही है, स्वयं नारी भी पीछे नहीं रहती। दहेज के लोभ मे नारी जलाने वाला प्राय पुरुष अकेला नहीं होता, उसके साथ नारी भी होती है। नारी को घर की दहलीज से कोठे की चौखट तक पहुंचने तथा उसका सौदा करने मे केवल पुरुष नहीं होता, नारी भी उसकी सहायता करती है। परन्तु यह निर्विवाद है कि पुरुष अपने अहम् की सतुष्टि के लिए, अपने पौरुष-प्रदर्शन के लिए, अपने निहित स्वार्थो की पूर्ति के लिए, अपने मनोरजन के लिए, कदम-कदम पर नारी पर अत्याचार करता है, उसका शोषण करता है। इस प्रकार, नारी का शोषण दो तरफ से होता है, पुरुष की तरफ से तथा नारी की तरफ से।

नारी पर होने वाले अत्याचार गाव-शहर अनपढ, पढी-लिखी, गरीब-अमीर आदि भेदभाव से रहित होते हैं। गाव की अनपढ गरीब नारी भी उसी प्रकार अत्याचार से पीडित है, जैसे शहर की पढी-लिखी अमीर नारी। हां शोषण का स्वरूप आवश्य बदल जाता है। जहा ग्रामीण नारी का शोषण मूलत उसके परिवार जन उस पर विभिन्न बधन लगाकर, शारीरिक रूप से पीडित करते हैं, वहां शहर की नारी घर के अतिरिक्त बाहर भी शोषित होती है। वह बस मे दफ्तर मे सडक पर, बाजार मे, हर जगह शोषण के साये मे जीती है। कहीं कम वेतन देकर, तो कहीं अधिक काम करवाकर या दफ्तर मे बॉस की जायज-नाजायज मागो के द्वारा नारी का शोषण होता है। नौकरी करने के बावजूद घर का सारा काम करना, बच्चो तथा परिवार की समस्त जिममेदारिया निभाना क्या शोषण नही ? आज का भारतीय पुरुष दोहरे मापदण्ड अपना रहा है। एक ओर तो वह आधुनिकता के नाम पर पढी-लिखी लडकी से शादी करने की जिद करता है उससे दफ्तर मे नौकरी करवाता है, परन्तु जब घर के काम तथा जिम्मेदारिया बाटने की बात आती है तो परम्परा का दास बनकर पिण्ड छुड़ा लेता है।

भारतीय पुरुष की नारी को कमजोर, पर-निर्भर तथा हीन समझने की यह मनोवृत्ति पिछले लगभग दो हजार वर्षो मे पनपी है। यह इतनी शीघ्रता से नहीं बदल सकती। यह मनोवृत्ति बदलनी शुरू तो हुई है, मगर अभी इसमे समय लगेगा। पुरुष द्वारा नारी को हीन समझने की इसी मानसिकता पर आज की पढी-लिखी, आगे बढती नारी-निरन्तर चोट करती है। पुरुष इसे अपने अहम् तथा पौरुष का प्रश्न बना लेता है। अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करने तथा नारी को उसकी हीनता का अहसास कराने के लिए वह उस पर शारीरिक तथा मानसिक अत्याचार करता है। आज अनेक दम्पती इसी अहम् के कारण तनावग्रस्त हैं और अनेक परिवार टूटने के कगार पर हैं।

आज भारतीय नारी एक ऐसे दोराहे पर खडी है, जहा एक ओर पश्चिम जीवन-शैली, उन्मुक्त यौन सम्बन्ध एव स्वच्छन्दता की चकाचौंध है, तो दूसरी ओर भारतीय नारी का सती, पतिव्रता, पूज्या वाला आदर्श रूप है, जो सादगी, समर्पण और सीमाओ का पक्षधर है। पश्चिम के सास्कृतिक प्रदूषण से सबसे करारा झटका नारी की परम्परागत छवि को ही लगा है। इस बीच भारतीय युवतियो को एक के बाद एक मिस-वर्ल्ड, मिस यूनिवर्स जैसे खिताब देकर पश्चिम के चतुर शिकारियो ने एक ओर जाल फैलाया है। रूप-सौन्दर्य को निखारने, आकर्षक उत्तेजक दिखने का जाल, ताकि भारतीय नारी सौन्दर्य-प्रसाधनो को खरीदकर, लाज-शरम छोडकर उनके इशारो पर नाचने लगे। इसी लाज का अगला कदम है-स्कूलो कॉलेजो मे मिस-हाई-स्कूल मिस-कॉलेज, मिस-यूनिवर्सिटी जैसी तमाम प्रतियोगिताए, जो भारतीय नारी को बार-बार प्रेरित करती है कि वह अपनी सामाजिक, पारिवारिक मर्यादाओ को त्याग दे और बाजार मे पैसे कमाने के लिए कूद जाए। हमारी आज की पढी-लिखी आधुनिक भारतीय नारी इस षड्यन्त्र को या तो समझ नही पा रही है या समझना नही चाहती है। भारतीय पुरुष को इसी मे लाभ दिखाई देता है, इसीलिए वह भी इस आग को भडका रहा है। यदि किसी कॉलेज मे जीस पहनने पर इसलिए पाबदी लगाई जाती है कि इस पोशाक मे लडकिया अधिक उत्तेजक दिखाई पडती है, तो ऐसे निहित स्वार्थी पुरुष तथा ऐसी 'आधुनिक' नारिया इसका जोर-शोर से विरोध करती है तथा इसे नारी की स्वतन्त्रता पर एक

(शेष पृष्ठ दो पर)

बधन घोषित कर देती हैं। ध्यान देने की बात यह है कि लडकियो के जींस पहनने पर आपत्ति किसी पुरुष ने नहीं, बल्कि एक पढी-लिखी समझदार नारी ने ही की है।

नारी के प्रति सर्वाधिक घिनौना अपराध है बलात्कार। बलात्कार का अर्थ है-किसी स्त्री से बलपूर्वक यौन-सम्बन्ध स्थापित करना। पिछले दो दशको मे इस अपराध मे ४०० प्रतिशत वृद्धि होना सचमुच अभूतपूर्व तथा चौकाने वाला तथ्य है। बलात्कार की मारी महिला पारिवारिक तथा सामाजिक प्रताडना तो सहती ही है, वह स्वय अपनी नजरो से गिर जाती है और कई बार तो घुट-घुटकर मरने से अच्छा वह आत्महत्या करना समझती है। वह ऐसे अपराध की सजा भुगतती है जो उसने किया ही नहीं। 'करे कोई, भरे कोई' का इससे अच्छा उदाहरण शायद कोई दूसरा नहीं होगा। बलात्कार की इस बढती प्रवृत्ति के पीछे अनेक कारण हैं, जिनमे से कुछ हैं-समाज मे बढती अश्लीलता, नारी द्वारा फैशन तथा आधुनिकता के नाम पर देह-प्रदर्शन, पुरुष का नैतिक पतन तथा दोषपूर्ण न्यायव्यवस्था।

आज भारतीय समाज मे, पाश्चात्य प्रभाव के परिणामस्वरूप, चारो ओर अश्लीलता एव नग्नता का वातावरण व्याप्त है। कोई फिल्म देखे या दूरदर्शन का कार्यक्रम, विज्ञापन देखे या पत्र पत्रिका के पन्ने, हर तरफ नारी की देह है, आकर्षक तथा उत्तेजक मुद्रा मे। सडक पर लगे बोर्ड देखे या होर्डिंग सब ओर नारी का यही रूप चित्रित है, जो मा, बहन, बेटी, बहू का कतई नहीं है, केवल नारी देह का है, उसके भोग्य रूप का है। इसी कारण, आज नारी पवित्र, श्रद्धा, बिन्दु न रहकर, एक वस्तु बन गई है। सोते जागते हर समय यही अश्लीलता हमारी आखो के सामने रहती है, जिसके फलस्वरूप किशोर, युवा, अधेड सब नैतिक पतन के गर्त मे गिर रहे हैं। दुःख तो इस बात का है कि आज की नारी पढी-लिखी होकर भी इस स्थिति को समझ नहीं पा रही है, उसका विरोध नहीं कर पा रही है, बल्कि नए-नए तरीके अपनाकर अधिक से अधिक उत्तेजक मुद्रा बनाती है, फिल्मो मे तथा विज्ञापनो मे स्वेच्छा से अधिकाधिक देह प्रदर्शन को उत्सुक रहती है। आज तो नारी ने फिल्मो, विज्ञापनो आदि मे सफलता और पैसा कमाने का यही 'शार्टकट' ढूढ निकाला है।

इस दूषित वातावरण मे पुरुष का नैतिक पतन तीव्र गति से हो रहा है। आज पुरुष के लिए नारी का मा, बहन, बेटी, भाभी, चाची का रूप गौण होता जा रहा है। विघटित होते सयुक्त परिवार के ढाचे मे केवल स्त्री-पुरुष का ही अस्तित्व बचता है। इसलिए आज सामान्य बातचीत मे 'बहनजी' शब्द न तो पुरुष कहना चाहता है और न ही नारी 'बहनजी' जैसा दकियानूसी शब्द सुनना चाहती है। बहनजी शब्द आज सामान्य, मर्यादा का प्रतीक न रहकर गाली के समान माना जाता है। इस शब्द का स्थान लिया है 'मैडम' शब्द ने। मैडम जो बहन, बेटी, भाभी, चाची नहीं होती, केवल नारी होती है, जिसे पुरुष जब चाहे, जैसा चाहे, अपनी स्वार्थ पूर्ति का साधन बना सकता है। पुरुष के इस नैतिक पतन का ही परिणाम है कि वह अपने निजी हित की पूर्ति के लिए, अपने भौतिक विकास के लिए, अपनी पत्नी को भी 'वस्तु' के रूप मे प्रयोग करने से नहीं चूकता। ऐसा विकास, ऐसा उत्थान, ऐसी उन्नति धिक्कार योग्य है, जो मनुष्य से उसकी मनुष्यता छीन ले और उसे 'पशु' बना दे, जहा केवल नर-मादा होते हैं कोई रिश्ते, नाते, मर्यादाए मूल्य नहीं होते।

बलात्कार के बढने का एक अन्य महत्त्वपूर्ण कारण है हमारी दोषपूर्ण न्याय-व्यवस्था, जो अपराधी को सन्देह का लाभ देकर छोड देती है और बलात्कार की मारी नारी को अपराध-बोध तथा सामाजिक प्रताडना सहने के लिए छोड देती है। इस अपराध का भी प्राय कोई गवाह नहीं होता और हमारी न्याय-प्रणाली गवाह की बैसाखी पर ही खडी है। पुलिस तथा पेशेवर अपराधी को बचाने के लिए पीडित नारी को चरित्रहीन तक सिद्ध करने मे कोई कसर नहीं छोडते। न्यायालय मे बलात्कार से पीडित नारी से ऐसे-ऐसे प्रश्न पूछे जाते हैं कि स्वय शर्म को भी शर्म आ जाए। अनेक हिन्दी फिल्मो मे इस वास्तविकता को अत्यन्त मुखरता से दिखाया गया है। ऐसे में अनेक महिलाए बलात्कार के खिलाफ रिपोर्ट तक दर्ज कराने का साहस नही जुटा पाती, तो इसमे हैरानी कैसी ? होना तो यह चाहिए कि बलात्कारी को सार्वजनिक रूप से कठोरतम सजा दी जाए क्योकि यह अपराध हत्या से भी अधिक भीषण है। साथ ही न्यायप्रक्रिया को सरल तथा तीव्र किया जाना भी जरूरी है।

अब तक के इस विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि नारी-शोषण के इन विविध रूपो पर यह कहावत चरितार्थ होती है कि ताली एक हाथ से नहीं बजती। नारी पर अत्याचार के लिए पुरुष के दोषी होने में कोई संदेह नहीं है परन्तु क्या नारी इस विषय में पूर्णत. दोषमुक्त मानी जा सकती है ? शायद नहीं। आज की भारतीय नारी ने आधुनिकता के नाम पर जो वेशभूषा, व्यवहार, हाव-भाव तथा जीवनशैली अपनाई है, क्या वह उसकी समस्याओं को और नहीं बढा रही ? फैशन के नाम पर शरीर को छिपाते कम, दिखाते ज्यादा, उत्तेजक वस्त्र पहनना, देर रात तक क्लबो, पार्टियो मे घूमना-थिरकना, अपना काम निकालने के लिए पुरुष से घुल मिलकर बात करना आदि क्या पुरुष को उकसाने के लिए पर्याप्त नहीं है ? लडकियो की बढती शिक्षा तथा आसमान छूती महगाई के कारण नौकरी आज मध्यम वर्ग की अनिवार्यता हो गई है, वहीं उच्च वर्ग की महिलाओ के लिए फैशन तथा समय बिताने का साधन। नौकरी मे अपनी वेशभूषा तथा व्यवहार को सयमित तथा मर्यादित रखना नारी की भी जिम्मेदारी है।

शहर में नारी पर अत्याचार के लिए जहा उसका उन्मुक्त जीवन तथा व्यवहार एक प्रमुख कारण है, वहीं ग्रामीण नारी के ऊपर होने वाले अत्याचारो का प्रमुख कारण साक्षरता की कमी, अधिकारो के प्रति उदासीनता, बदनामी का डर, जातिगत तथा खानदानी दुश्मनिया आदि हैं। मध्य प्रदेश के बेलारी गाव मे एक युवा विधवा को पीटना तथा निर्वस्त्र घुमाना, महाराष्ट्र के तेबुली गांव में एक आदिवासी महिला और उसके प्रेमी की पिटाई तथा सरेआम नग्न करना, बिहार में एक दलित लडकी को उसके घर से उठाकर विधायक द्वारा बलात्कार, जयपुर मे एक छात्रा के साथ दो-दो बार बलात्कार, ऐसे कुछ मामले ही अखबारो तक पहुच पाते हैं, अधिसंख्य तो बदनामी के डर से घर में ही दबा दिये जाते हैं।

इस बढते नारी-शोषण से प्रत्येक प्रबुद्ध व्यक्ति का उद्वेलित होना स्वाभाविक ही है, परन्तु इस समस्या का समाधान कहीं बाहर नहीं, अपितु हमारे भीतर ही है। जहा आज प्रत्येक पुरुष को आत्म-मथन की आवश्यकता है, वहीं प्रत्येक नारी को भी अपने आचरण तथा जीवनशैली पर दृष्टिपात करना चाहिए। यदि ताली बजाने वाले दोनो हाथ सजग हो जाए, तो नारी पर अत्याचार रूपी यह ताली बजने से रुक सकती है। हमे पश्चिमी सभ्यता मे से अच्छाइयो को अपनाना चाहिए जैसे सूप सार-सार को रखकर थोथे को उडा देता है। तो आइये सकल्प करे कि हम अपना व्यवहार ऐसा आदर्श बनाएगे कि नारी की पूजा मे देवताओ का वास मानने वाले इस भारतवर्ष का प्रत्येक व्यक्ति गर्व से प्रसाद जी की यह पक्ति दुहरा सके–

'नारी, तुम केवल श्रद्धा हो।'

साभार-आर्यसेवक

सावधान ! संन्यास के नाम पर कलंक

सार्वदेशिक साप्ताहिक ११ अगस्त, २००२ के अन्तिम पृष्ठ पर स्वामी श्रेयोनन्द का प्रचार विवरण आर्यसमाज बिरला लाइस दिल्ली-७ मे छपा है। यह बाल-बच्चो वाला गृहस्थी है, शायद बहुत लोगो को पता नहीं है। वाणी के जोर से आख के अधे और गांठ के पूरे लोगो को ठगानन्द बनकर ठग रहा है। आर्यजगत् इस व्यक्ति से सावधान रहे।

निवेदक . पं० **गोविन्दप्रसाद विद्यावारिधि**, आर्यसमाज राची

आर्ष गुरुकुल कालवा में श्रावणी पर्व सम्पन्न

महाविद्यालय आर्ष गुरुकुल कालवा मे २२ अगस्त २००२ को बड़े हर्षोल्लास के साथ श्रावणी पर्व श्रद्धेय आचार्य बलदेव जी की अध्यक्षता में मनाया गया। प्रात ८ बजे से आचार्य जी महाराज के उद्बोधन के बाद यज्ञानुष्ठान की विधि स्वामी वेदरक्षानन्द जी सरस्वती ने प्रारम्भ की। यज्ञ कार्य में आचार्य राजेन्द्र जी व आचार्य आत्मप्रकाश जी का सहयोग रहा। ब्रह्मयज्ञ एव श्रावणी पर्व की आहुतियां प्रदान की गई। इस शुभावसर पर यज्ञोपवीत परिवर्तन तथा वेदस्वाध्याय का सकल्प लिया गया। यज्ञोपरान्त आचार्य बलदेव जी ने उपदेश के कार्यक्रम का सचालन किया। जिसमे सार्वदेशिक आर्यवीर दल के प्रधान आचार्य देवव्रत जी, मन्त्री डॉ० राजेन्द्र जी, प्रो० ओमकुमार जी ब्रह्मचारी ब्रह्मपुत्र जी, श्री ओम्प्रकाश जी हेडमास्टर, श्री वेदपाल जी आर्य, महाशय टेकराम जी आर्य, श्री तेलूराम जी आर्य, श्री हवासिह जी आर्य आदि महानुभावो ने वेद शिक्षा महत्ता और गौ की रक्षा से राष्ट्ररक्षा सम्भव है। यह वर्णन किया गया। गुरुकुल लाढौत के आचार्य हरिदत्त जी भी गुरुकुल के ब्रह्मचारियो के साथ दलबल से पहुचे। इस शुभावसर पर श्री मौजीराम जी ने सन्यास दीक्षा लेकर स्वामी मुक्तानन्द नाम रखा गया।

–स्वामी वेदरक्षानन्द, आर्ष गुरुकुल कालवा

सम्पादकीय....

सृष्टिसंवत्

आर्यसमाज रनसीका, तह० हथीन, जिला फरीदाबाद (हरयाणा) के प्रधान वानप्रस्थी सुन्दरमुनि जी ने ८ जुलाई ०२ को एक पत्र द्वारा बड़ा ही आश्चर्य प्रकट किया है कि टंकारा समाचार आदि पर सृष्टिसंवत् १,९७,२९,४९,१०२ लिखते हैं और सर्वहितकारी साप्ताहिक पत्र पर सृष्टिसंवत् १,९६,०८,४३,१०३ लिखते हैं। दोनों में १,२१,०६,००० वर्ष का अन्तर है।

इस विषय मे मेरा नम्र निवेदन है कि एतद्विषयक जिज्ञासु सज्जन **सत्यार्थप्रकाश का आठवां समुल्लास और ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका का वेदोत्पत्ति विषय** (अन्तिम भाग) पढ़ें। यदि संभव हो तो स्वामी विद्यानन्द सरस्वती द्वारा लिखित '**भूमिका भास्कर**' भी पढ़ें। सृष्टि संवत् सम्बन्धी आपकी सभी शंकाओं का समाधान हो जायेगा।

लगभग २० वर्ष पूर्व मैंने परोपकारिणी सभा अजमेर और सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधिसभा नई दिल्ली को इस विषय पर पत्र लिखे थे कि आप ऋषि दयानन्दकृत सत्यार्थप्रकाश और ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका ग्रन्थ प्रकाशित करते हैं उनके ऊपर सृष्टिसवत् १,९७,२९,४९ हजारवाला लिखते हैं और देनो ही ग्रन्थों के अन्दर ग्रन्थलेखक ने सृष्टिसवत् १,९६,०८,४३ हजार आदि लिखा है। महर्षि के दोनो ही प्रमुख ग्रन्थ हैं। इन ग्रन्थो का पाठक ऊपर लिखे सवत् को ठीक माने अथवा अन्दर लिखे हुए को ? दोनो तो सही हो नहीं सकते।

इस पर परोपकारिणी सभा अजमेर ने तो तत्पश्चात् अजमेर से छपनेवाले महर्षि के सभी ग्रन्थो और परोपकारी मासिक पत्र पर भी १,९६,०८,४३ हजारवाला ही सृष्टिसवत् छापना प्रारम्भ कर दिया किन्तु सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधिसभा नई दिल्ली ने मेरे इस सुझाव पर कोई ध्यान नहीं दिया और आज तक सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रकाशित **सत्यार्थप्रकाश और ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका** के ऊपर १,९७ करोडवाला और अन्दर १,९६ करोडवाला ही सृष्टिसवत् छप रहा है। मेरा आज पुन सार्वदेशिक सभा के महान् अधिकारियो से नम्र निवेदन है कि इस विसगति को दूर करने का कष्ट करे जिससे जनता मे भ्राति न फैले। ठीक तो यही होगा कि जैसा दोनो ग्रन्थो के अन्दर प्रमाणपूर्वक महर्षि ने सृष्टिसवत् एक अरब छानवें करोड आदि लिखा है वैसा ही उनके द्वारा लिखित ग्रन्थो के ऊपर भी छापे। यदि ये महान् अधिकारी सृष्टिसवत् के बारे मे महर्षि दयानन्द सरस्वती से भी अधिक विद्वान् अपने अपको मानते हैं तो फिर दोनो ग्रन्थो के अन्दर उक्त स्थान पर टिप्पणी देकर महर्षि की मान्यता का खण्डन करना चाहिये।

महर्षि दयानन्द सरस्वती सृष्ट्युत्पत्ति और वेदोत्पत्ति का एक ही काल मानते हैं और सृष्टि-उत्पत्ति से उनका अभिप्राय मानव-उत्पत्ति से है। वे लिखते हैं-

"जैसे विक्रम संवत् १९३३ फाल्गुन मास, कृष्ण पक्ष, षष्ठी, शनिवार के दिन चतुर्थ प्रहर के आरम्भ मे यह बात हमने लिखी है। इसी प्रकार से सब व्यवहार आर्य लोग बालक से वृद्ध पर्यन्त करते और जानते चले आये हैं। जैसे बहीखाते मे मिती डालते हैं, वैसे ही महीना और वर्ष बढाते-घटाते चले जाते हैं। इसी प्रकार आर्य लोग तिथिपत्र मे भी वर्ष, मास और दिन आदि लिखते चले आते हैं और यही इतिहास आज पर्यन्त सब आर्यावर्त देश मे एकसा वर्तमान होरहा है और सब पुस्तको मे भी इस विषय में एक ही प्रकार का लेख पाया जाता है, किसी प्रकार का इस विषय मे विरोध नहीं है। इसलिये इसको अन्यथा करने मे किसी का सामर्थ्य नहीं हो सकता। क्योंकि जो सृष्टि की उत्पत्ति से लेके बराबर मिती बार लिखते न आते तो इस गिनती का हिसाब ठीक-ठीक आर्य लोगों को भी जानना कठिन होता, अन्य मनुष्यो का तो क्या ही कहना है।"

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने स्पष्ट लिखा है कि एक वृन्द, छानवे करोड, आठ लाख, बावन हजार, नवसौ, छहत्तर (१,९६,०८,५२,९७६) वर्ष वेदो की और जगत् की उत्पत्ति मे बीत गये हैं और दो अरब, तेतीस करोड, बत्तीस लाख, सताईस हजार चौबीस (२,३३,३२,२७,०२४) वर्ष इस सृष्टि को भोग करने के बाकी रहे हैं।

इससे स्पष्ट है कि इतने वर्ष व्यतीत होने पर वर्तमान सृष्टि का अन्त होजायेगा और जब तक हजार चतुर्युगी व्यतीत न हो चुकेगी तब तक ईश्वरोक्त वेद का पुस्तक, यह जगत् और हम सब मनुष्य लोग भी ईश्वर के अनुग्रह से सदा वर्तमान रहेंगे।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेदोत्पत्तिकाल सम्बन्धी प्रश्न का उत्तर विस्तारपूर्वक सारा हिसाब फैलाकर एक अरब, छानवे करोड आदि ही निश्चित किया है। ऐसे महत्त्वपूर्ण विषय का विवेचन करते हुए गणित की प्रक्रिया मे भी किसी प्रकार की भूल वा विसंगति महर्षि से हुई है ऐसा भी नहीं माना जा सकता।

सृष्टिसंवत् अभी तक विवाद का विषय बना हुआ है। पूर्वाग्रह को छोडकर सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने की भावना से मिल बैठकर विचार करके निर्णय करना विद्वानों का कार्य है। ऋग्वेद का भी यहीं आदेश है-

"सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।" (१०-१९१-२)

—वेदव्रत शास्त्री

कुलपति महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक के नाम सभाप्रधान का पत्र

सेवा मे,

कुलपति जी, म द वि रोहतक।

प्रिय महोदय, नमस्ते।

आशा है आप सर्वथा स्वस्थ एव प्रसन्नचित्त हैं। समाचारपत्रो मे पढकर ज्ञात हुआ है कि आपने विश्वविद्यालय परिसर को अधिकाधिक नीम, पीपल तथा वट आदि वृक्षों द्वारा हरा-भरा बनाने का सकल्प व्यक्त किया है। यह बहुत उत्तम कार्य है, ऐसा करने से एक ओर जहा विश्वविद्यालय के सौन्दर्य मे वृद्धि होगी वहीं दूसरी ओर इस क्षेत्र की वानस्पतिक सम्पदा का सरक्षण भी होगा।

आयुर्वेदीय चिकित्सा इस देश का प्राण है और इस चिकित्सा प्रणाली के प्राण हैं यहा के पेड और पौधे। आपके इस सत्सकल्प का सामान्यजनो पर भी प्रभाव निश्चित पडेगा ऐसा मेरा विश्वास है क्योंकि **"यद्यदाचरति श्रेष्ठ लोकस्तदनुवर्तते"** श्रेष्ठ जनो के आचरण का सामान्य जन अनुकरण करते हैं। इस प्रकार एक दिन यह सारा प्रदेश ही हराभरा होकर वास्तविक हरयाणा (हरियाला) बन जायेगा। इसके लिए मैं आपको भूरिश साधुवाद देता हू।

आपने महर्षि दयानन्द के जन्मदिन पर विश्वविद्यालय के यज्ञशाला परिसर को सुन्दर और हराभरा बनाने का विचार व्यक्त किया था। मैने अपना सम्पूर्ण जीवन इस प्रदेश और देश की जनता के कल्याण मे लगा दिया। जीवन के इस अन्तिम पडाव मे मेरी इच्छा है कि विश्वविद्यालय की यज्ञशाला ऐसा सुन्दर, शान्त और दर्शनीय स्थान बने जिसमे बैठकर विद्यार्थी, अध्यापक और परिसर के निवासी सन्ध्या, प्राणायाम, चिन्तन और मनन करके ज्ञानप्राप्ति के अपने उत्तम लक्ष्यो को प्राप्त कर सके। ईश्वर आपको दीर्घायुष्य और सब प्रकार का सामर्थ्य प्रदान करे।

आशीर्वाद सहित।

भवदीय

स्वामी ओमानन्द सरस्वती, गुरुकुल झज्जर

प्रधान आर्यप्रतिनिधिसभा हरयाणा

दयानन्दमठ, रोहतक

आर्यसमाज के उत्सवों की सूची

क्र०	स्थान	तिथि
१	आर्यसमाज खटोटी सुलतानपुर जिला महेद्रगढ	१४-१५ सितम्बर ०२
२	आर्यसमाज जलियावास जिला रेवाडी	१४-१५ सितम्बर ०२
३	आर्यसमाज बडा बाजार सोनीपत शहर	१६-२२ सितम्बर ०२
४	आर्यसमाज गोहाना मण्डी जिला सोनीपत	१८-२२ सितम्बर ०२
५	आर्यसमाज गगायचा अहीर बीकानेर (रेवाडी)	२१-२२ सितम्बर ०२
६	आर्यसमाज महेन्द्रगढ	२१-२२ सितम्बर ०२
७	आर्यसमाज श्रद्धानन्द नगर (न्यू कालोनी) पलवल जिला फरीदाबाद (वेदकथा)	१८-२२ सितम्बर ०२
८	आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ (झज्जर)	२६ सित० से २ अक्तू० ०२
९	आर्यसमाज कौण्डल जिला फरीदाबाद	२-३ अक्तू० ०२
१०	आर्यसमाज सालवन जिला करनाल	१८-२० अक्तूबर ०२
११	आर्यसमाज झज्जर रोड बहादुगढ (झज्जर)	१९-२० अक्तूबर ०२
१२	आर्यसमाज बीगोपुर डा० धोलेडा (महेद्रगढ)	१९-२० अक्तूबर ०२
१३.	आर्यसमाज गगसीना जिला करनाल	१६-१८ अक्तूबर ०२
१४	आर्यसमाज कालका जिला पचकूला	२३-२७ अक्तूबर ०२
१५	आर्यसमाज शेखुपुरा खालसा जिला करनाल	२५-२७ अक्तूबर ०२
१६	कन्या गुरुकुल पचगाव जिला भिवानी	२६-२७ अक्तूबर ०२
१७	आर्यसमाज मोखरा जिला रोहतक	३० अक्तू० से १ नव० ०२
१८	आर्यसमाज खरड जि० रोपड (पजाब)	१६-१७ नवम्बर ०२

—रामधारी शास्त्री, सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता

बीडी, सिगरेट, शराब पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है, इनसे दूर रहें।

मेवात में बाल्मीकियों को बलात् मुसलमान बनाना राष्ट्रविरोधी

मुसलमान शासकों के समय मे मेवात क्षेत्र (जिला गुड़गांव, फरीदाबाद) में हिन्दुओ को तलवार आदि के भय से मुसलमान बनाया गया था। उन्हें मेव के नाम से जाना जाता है। भारत के स्वतन्त्र होने से पूर्व आर्यसमाज के नेताओं स्वामी श्रद्धानन्द जी तथा महात्मा फूलसिह जी आदि ने अपने पिछडे भाइयों को पुन वैदिकधर्म मे प्रविष्ट करने का प्रयत्न किया। इस कार्य को मुसलमान उग्रवादी सहन नहीं कर सके और इन दोनों आर्यनेताओं को धोखे से कत्ल करके शहीद कर दिया। भारत विभाजन के समय अधिकतर मेव (मुसलमान) पाकिस्तान जाना चाहते थे और कुछ वैदिकधर्म में पुन सम्मिलित होना चाहते थे परन्तु स्वार्थी राजनैतिक नेताओ (दलों) ने उन्हें पाकिस्तान जाने से रोक दिया और उन्हे प्रलोभन देकर अपना बनाकर राष्ट्र की महान् हानि की। वे आजकल भारतभूमि का खाकर राग पाकिस्तान का अलाप रहे हैं।

मेवात क्षेत्र मे कट्टरवादी मेव गायो को सरेआम काट रहे हैं। वैदिकधर्मी जनता गाय को माता मानते हैं। गत वर्षों से मेवात में गोरक्षा के लिए यत्न किया जारहा है। हरयाणा सरकार ने कानून बनाकर गोहत्या पर पाबन्दी लगा रखी है। परन्तु वहा इस कानून की धज्जिया उड़ाई जारही हैं। क्योंकि वहां के अधिक प्राय विधायक मेव ही बनते आरहे हैं और वे मेवों को खुश रखने के लिए गोहत्यारो का सरक्षण करते हैं। पुलिस चाहती हुई भी उनके विरुद्ध कार्यवाही नहीं कर पारही है। महान् गोरक्षक सभाप्रधान स्वामी ओमानन्द जी एव गुरुकुल कालवा (जीन्द) के आचार्य बलदेव जी आदि गत वर्षों से गोहत्या बन्द करवाने के लिए सघर्ष कर रहे हैं। पचायते भी की गईं परन्तु राजनैतिक स्वार्थी नेता सहयोग नहीं देरहे।

इसी प्रकार गत मास मेवात के नूह क्षेत्र को दो ग्रामो मे बाल्मीकि परिवारो को बलात् जामा मस्जिद ले जाकर उन्हे मुसलमान बनाया गया। यह कार्य राष्ट्रविरोध है। यह समाचार दैनिक पत्रो मे प्रकाशित होचुका है। आर्यसमाज, विश्व हिन्दू परिषद्, सनातन धर्म आदि के नेताओ ने इसकी शिकायते पुलिस को की। जिला अधिकारियो से मिलकर गुहार की। परन्तु उनके विरुद्ध अभी तक कोई कार्यवाही नहीं की गई। आर्यप्रतिनिधिसभा हरयाणा के मन्त्री आचार्य यशपाल जी तथा मैं सार्वदेशिक सभा के कार्यकर्त्ता प्रधान श्री विमल वधावन एडवोकेट को साथ लेकर २७ अगस्त २००२ को गुडगाव गये तथा वहा की आर्य केन्द्रीय सभा के अधिकारियो के साथ बैठक मे विचार विमर्श किया। बैठक के बाद सनातन धर्म तथा विश्व हिन्दू परिषद् के नेताओ से भी सहयोग देने की माग की। बाल्मीकि नेताओ से भी सम्पर्क किया। ८ सितम्बर को दोपहर बाद पुन· इसी प्रकार की एक बैठक का नूह में आयोजन किया जारहा है। आर्य केन्द्रीय सभा तथा जिला वेदप्रचार मण्डल के नेता भी मेवात मे गोमाता तथा हिन्दुओ की सुरक्षा करने के लिए दिन-रात परिश्रम कर रहे हैं। यह पुनीत कार्य सभी के सहयोग से ही सफल हो सकेगा। सभा के उपमन्त्री श्री महेन्द्रसिह शास्त्री, श्री हरिश्चन्द्र शास्त्री सभा उपमत्री, भक्त मगतूराम सभा उपप्रधान तथा सभा के अन्तरग सदस्य श्री कृष्णचन्द सैनी आदि आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता इस कार्य मे प्रयत्नशील हैं। आशा है कि इस सम्बन्ध मे अन्य आर्यसमाज के अधिकारी तथा कार्यकर्त्ता तन, मन तथा धन से अपना सहयोग प्रदान करेंगे।

—केदारसिंह आर्य, सभाउपमन्त्री

श्रीकृष्ण को बदनाम मत करो

श्रीकृष्ण के भक्तो ! श्रीकृष्ण को बदनाम मत करो।
उनके नाम पर कोई धब्बा आये, ऐसे काम मत करो।।
वो दूध मलाई मक्खन खाने के लिये कहते थे,
उसे माखनचोर बताकर, बदनाम न करो, बदनाम न करो
श्रीकृष्ण के भक्तो
गौओ को चराया उसने बसी बजा बजाकर,
तुम गन्दे रास रचाकर, उसे सरनाम मत करो, बदनाम न करो
ऐ कृष्ण के भक्तो
वह चरित्रवान् पुरुष था, रुकमणी थी पत्नी उसकी,
राधा से मेल मिलाकर, गलत काम मत करो, बदनाम न करो
ऐ कृष्ण के भक्तो ....
वह योगिराज योगेश्वर, गीता का ज्ञान दिया था,
तुम वस्त्रहरण दिखलाकर, अपमान मत करो
श्रीकृष्ण के भक्तो

प्रवेशकुमार आर्य नहीं रहे

बडे दु ख के साथ समाचार लिखा जारहा है कि आर्यप्रतिनिधिसभा हरयाणा के उपमन्त्री श्री सुरेन्द्रसिंह जी शास्त्री गोहाना (सोनीपत) के सुपुत्र श्री प्रवेशकुमार की आकस्मिक दुर्घटना में मौत होगई। श्री प्रवेशकुमार मोहाना जिला सोनीपत सीनियर सैकेण्डरी स्कूल मे डी.पी. के अध्यापक थे। स्कूल मे छात्रों के खेल सम्पन्न हुये थे, आगे तीन दिन का अवकाश था। कुछ अध्यापको ने मिलकर अवकाश के दिनों हरद्वार जाने का प्रोग्राम बनाया। ३० अगस्त को ६ अध्यापक हरद्वार के लिए गोहाना से चले। सभी रात्रि के ११ बजे के करीब उनकी गाडी ट्रक से टकराई, जिसमे मौके पर ड्राइवर और प्रवेश की घटना स्थल पर मौत होगई। शेष अध्यापकों को उपचार के लिए देहरादून हस्पताल में भर्ती कराया गया। ३१ अगस्त की रात्रि मे ही प्रवेशकुमार का अन्तिम संस्कार गोहाना मे कर दिया गया जिसमें इलाके के व गोहाना के प्रतिष्ठित नागरिक उपस्थित थे, श्री धर्मसिंह मलिक, श्री जगवीरसिह मलिक, श्री किशनसिंह सागवान तथा अनेक विद्यालयों के प्रिंसिपल, वकील, अध्यापक, गांव के प्रमुख व्यक्तियो की उपस्थिति मे अन्तिम सस्कार हुआ।

सभा के अधिकारी, अन्तरग सदस्य, सभा प्रचारक तथा अन्य कार्यालय स्टाफ शोक सवेदना प्रकट करने उनके निवास गोहाना गये। जिनको भी इस दुर्घटना की सूचना मिलती है वे श्री शास्त्री जी के घर पर शोक सवेदना प्रकट करने पहुच रहे हैं।

श्री प्रवेशकुमार की स्मृति में शान्तियज्ञ ८ सितम्बर को सम्पन्न होगा।

आर्यप्रतिनिधिसभा हरयाणा की तरफ से ईश्वर से प्रार्थना है कि इस विपत्ति के समय मे शास्त्री जो व परिवार को धैर्य प्रदान करे तथा कष्ट सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

—यशपाल आचार्य, सभामन्त्री

भारतीय नारी किधर ?

कल्याणी (एम.ए., बी.एड.), प्राचार्य,
कन्या गुरुकुल बचगांव गामड़ी (कुरुक्षेत्र)

प्राचार्या कल्याणी जी एक आर्य परिवार की सुपुत्री आर्य सस्था की स्नातिका हैं। पिछले दिनो कुरुक्षेत्र के ग्राम बचगांव मे कन्या गुरुकुल का उद्घाटन किया गया था। प्राचार्या पद पर कल्याणी जी ने कार्यभार संभाला है। आशा है गुरुकुल कुरुक्षेत्र की भांति यह कन्या गुरुकुल की उन्नति की ओर अग्रसर रहेगा। —यशपाल आचार्य, सभामंत्री

'नारी' शब्द उच्चारित होते ही मन में एक पवित्र, त्याग, तप, प्रेम, श्रद्धा, करुणा और सेवा की तस्वीर सहज उभर आती है। नारी के आगे 'भारतीय' शब्द लगने से ही इसमें दैवीय गुण समाहित होते हैं और इसकी सार्थकता सिद्ध होती है।

नारी जननी है अत· शिशु पर उसके व्यवहार का ही प्राथमिक प्रभाव पडता है। महाभारत से पूर्व तक विश्व मे आर्यो का यदि चक्रवर्ती राज रहा या यह देश अन्य देशो का आदर्श रहा तो इसका कारण यह भी था कि तत्कालीन भारीय नारी ज्ञान, शालीनता, पवित्रता, सभ्यता और पतिव्रत-धर्म की प्रतिमूर्ति थी। उस समय 'लज्जा' नारी का आभूषण रहा, 'सादगी' उसका आदर्श रहा तथा तप और स्वाध्याय उसका 'कर्म' रहा। आज बेशक पाश्चात्य सस्कृति के गुलाम निर्लज्जता से कहते हैं कि भारतीय नारी 'लज्जा' को छोडे 'सादगी' को छोडे आदि-आदि। इसके दुष्प्रभाव सामने हैं। जब नारी ही लज्जा को छोड देगी तो नर तो तमाम बुरे कार्य निर्लज्ज होकर करेगा ही, और इसी कारण आज चरित्र का ह्रास हुआ है जो हमारे सर्वांगीण पतन का कारण है।

'नारी' प्रदर्शन की वस्तु बना देना आदि जिन आदर्शों का अनुसरण हमारी बहने कर रही हैं, वह हमारी परम्परा नहीं रही है। हमारी परम्परा तो सीता जैसी सती स्त्रियो से प्रेरणा लेने की रही है, जो एक वर्ष तक रावण कैद मे रही पर उसके सतीत्व और पतिव्रत-धर्म से प्राप्त ओज के कारण रावण उसके बदन को छू तक न सका। हमारी परम्परा गार्गी जैसी विदुषियो से प्रेरणा पाने की रही जिन्होने ब्रह्मचर्य व्रत का पालन कर ज्ञान-वर्धन मे नारी को भी भागीदार बनाने का अतुलनीय उदाहरण पेश किया। ज्ञातव्य है कि वचक्नु ऋषि का पुत्र गार्गी ने सृष्टि-विषयक अपने गूढ प्रश्नो से महर्षि याज्ञवल्क्य जैसे ब्रह्मवेत्ता को भी झकझोर दिया था। यशोदा के वात्सल्य को नमन है जिसने अपने अनुकरणीय स्नेहसिक्त मातृत्व से पराये जाये श्रीकृष्ण जैसे बाल-गोपाल को भी योगिराज बना दिया।

इन्हीं आदर्शों का अनुपालन कर जीजाबाई जैसी शेरनी ने सिह-पुत्र शिवाजी को जन्म दिय जिसने औरगजेब व शाइस्ताखां जैसे आतताइयो को धूल-धूसरित किया। इसी परम्परा का निर्वहन करते हुए लक्ष्मीबाई जैसी वीरागना ने समरागण मे अग्रेजी को मौत के घाट उतारकर इतिहास मे अपना नाम स्वर्णाक्षरो मे लिखवा लिया और यह सर्वथा सिद्ध कर दिय कि भारतीय नारी के तेज व साहस के आगे विदेशियो का पौरुषत्व भी पानी भरता है।

राजस्थानी वीरागनाओ ने जौहर का खेल दिखाकर विश्व-समुदाय के रौंगटे खडे कर दिये, उन्होने अपने सतीत्व को अक्षुण्ण बनाये रखा। इस बात से प्रेरणा पाकर राजपूतो का खून खौला और राणाप्रताप जैसे वीरों ने अकबर जैसे दरिन्दो को खून के आसू रुला दिये।

इन सब देवियो के बलिदानों और आदर्शों का मजाक उडाते हुए भारतीय नारी आज पाश्चात्य सभ्यता व सस्कृति में आकण्ठ डूबती जारही है जहा अज्ञानता, अविद्या व निर्लज्जता के सिवाय कुछ नहीं है। उसने अपनी इस कलुषित मानसिकता व भावना को छुपाने के लिये इसे "आधुनिकता" के नाम से नवाजा है।

विद्या प्राप्त करना, वीर बनना, रचनात्मक कार्यो मे अपना सहयोग दे एक सभ्य-समाज का सृजन करना आदि केवल अपनी संस्कृति अपनाने से ही सम्भव है। यदि विदेशी संस्कृति अपनाने से नारी महान् बन सकती तो आज हमारे व उनके इतिहास में अनेक सीताओं का उल्लेख मिलता।

यह लेख अधूरा रहेगा यदि अमृतबा की कोख का जिकर न किया जिन्होंने महाभारत के बाद कलियुग में भी एकमात्र महर्षि देव दयानन्द को जन्म देने का यश पाया।

अत· यदि राम, लक्ष्मण, भरत, कृष्ण, अर्जुन, राणाप्रताप, शिवाजी, आल्हा, ऊदल, मलखान, भगतसिह, चन्द्रशेखर आजाद, ऊधमसिह, मदनलाल धींगडा, वीर सावरकर, राजगुरु, सुखेदव, राजेन्द्र लाहिडी, बिस्मिल, अशफाक, मन्मथदास, हरीसिह नलवा, हरफूल, मगल पाडे, भक्त फूलसिह, स्वामी श्रद्धानन्द, महर्षि दयानन्द जैसे वीरो को जन्म देकर अपनी कोख धन्य करनी है, देश और आर्यों का मान बढाना है तो हमे सच्चे अर्थो मे भारतीय नारी बनना ही होगा, अन्यथा आप 'शो पीस' बनकर रह जायेगी, 'नारी' शब्द से पूर्व 'भारतीय' विशेषण लगने के गौरव से सर्वथा वचित रह जायेगी। एतदर्थ पूरे देश मे कन्या गुरुकुलो का जाल बिछाना चाहिये। गुरुकुल शिक्षा पद्धति के अभाव मे आध्यात्मिक उन्नति हो नहीं हो सकती।

सोलह कलाएं

कहते हैं योगिराज श्रीकृष्ण जी सोलह कलाए जानते थे। वो सोलह कलाए कौनसी हैं ? इस बात को जानने के लिए प्रश्नोपनिषद् मे छठा ब्रह्मजिज्ञासु शिष्य महर्षि पिप्पलाद से पूछता है, भगवन् ! पुरुष मे सोलह कलाए कौनसी होती हैं ? मैं यह जानना चाहता हू।

ऋषि ने उत्तर दिया, हे पुत्र ! पुरुष मे उत्पन्न होनेवाली सोलह कलाए उसके जीवन के आवश्यक और महत्त्वपूर्ण अग हैं। पूर्णिमा के चन्द्रमा को भी षोडश कलाओ से युक्त कहा जाता है।

ऋषि ने बताया कि जीवन का आवश्यक अग प्राण है। प्राण के बिना प्राणी एक क्षण भी जीवित नहीं रह सकता। अत प्रथम कला प्राण है। दूसरी कला श्रद्धा है जिसके बिना जीवन शुष्क है। इसके बाद पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश पचभूतो से शरीर बना है। ये भी शरीर के आवश्यक अग हैं अर्थात् पाच कलाये हैं। इन पचभूतो से शरीर की ज्ञान इन्द्रियो का सम्बन्ध है। ये इन्द्रिया मन से बधी हुई हैं अर्थात् मन के आधीन हैं। अत इन्द्रियो के साथ मन भी कला है।

शरीर अन्न पर निर्भर है। अन्न के बिना शरीर दुर्बल होजाता है। शरीर के लिये अन्न आवश्यक है। अत यह भी कला है। अन्न के पचने पर रस रक्त मास आदि के बाद सातवीं धातु वीर्य बनता है। वीर्य से शरीर मे शक्ति आती है। यह भी आवश्यक अग होने के कारण कला है। जीवन की गाडी को सुचारु ढग से चलाने के ज्ञान की आवश्यकता है। ज्ञान प्राप्त करने के लिये तपस्या करनी पडती है। तप के द्वारा ज्ञान प्राप्त कर्म करना आवश्यक है। बिना कर्म के कुछ प्राप्त नहीं होता। कर्म को सफल बनाने के लिये सोच-विचार कर (मन्त्रपूर्वक) करना चाहिये। इसलिये तप, कर्म और मन्त्र भी कला है।

मनुष्य की प्रमुख आवश्यकताओ मे आवास (रहने का स्थान) भी मुख्य है जिसे लोक कहते हैं। अच्छा लोक प्राप्त करने के लिये शुभकर्म करने चाहिये। लोक भी कला है। ससार मे प्रत्येक व्यक्ति की जान-पहचान के लिये उसका नाम होना भी आवश्यक है जो एक कला है।

इस प्रकार प्राण, श्रद्धा, पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, इन्द्रिया, मन, अन्न, वीर्य, तप (ज्ञान), कर्म, मन्त्र लोक और नाम ये सोलह कलाये है जो पुरुष मे रहती हैं। —देवराज आर्य, कृष्णनगर, दिल्ली

यज्ञोपवीत का सन्देश

यज्ञोपवीत के तीन तार, देते हैं सन्देश अपार।
देव, पितृ और ऋषि ऋण, तीन ऋणो का हम पर है भार।
कैसे ये ऋण चुका सकोगे, इस पर करो जरा विचार।
माता-पिता और गुरुजनो का, करते रहो आदर सत्कार।
ईश्वर, जीव और प्रकृति, आधारित है इन पर ससार।
सत रज तम तीन गुणों का, सृष्टि मे चलता है व्यवहार।
देवपूजा, सगतिकरण दान, इनमे है यज्ञ का सार।
ज्ञान, कर्म और उपासना, भवसागर से कर देगे पार।
वात-पित्त और कफ शरीर मे, सम रहे ऐसा करो आहार।
छल-कपट और झूठ को त्यागो, करो सच्चाई का व्यापार।
भूर्भुव स्व के अर्थों का, जन जन मे होवे सचार।
जीवन को शुद्ध सरल बनाओ, "मनुर्भव" का करो प्रचार।
प्रतिज्ञा और पवित्रता का, ध्यान रहे करो उपकार।
द्यौ: अन्तरिक्ष और पृथ्वी पर, वैदिक धर्म की हो जयकार।

—देवराज आर्यमित्र, आर्यसमाज कृष्णनगर, दिल्ली-५१

आर्ष शिक्षा-प्रणाली के सेवक सम्माननीय विद्वान् आचार्य पं० युधिष्ठिर जी

❑ मनमोहनकुमार आर्य

आर्यसमाज के सगठन मे सम्प्रति जो शिथिलताये हैं, उससे समाज अपनी ममानधर्मी पुरानी व नवीन सभी सस्थाओ एव इनके प्रवर्तको से कई मायनो मे पिछड गया है। ऐसे समय मे यदि कोई व्यक्ति किसी गुरुकुल मे आर्ष प्रणाली से पढ़कर स्वामी दयानन्द के मिशन की पूर्ति मे सम्मिलित किसी गुरुकुल से जुडकर ब्रह्मचारियो को आर्ष शिक्षाप्रणाली से व्याकरण एव वैदिक साहित्य के अध्यापन मे प्रवृत्त होता है तो यह आर्यसमाज, उस गुरुकुल व उसके सचालको तथा उस आचार्य के स्वय के लिए भी आत्मगौरव की बात है। ऐसे व्यक्ति को आर्यसमाज से यदि यथोचित आदर-सम्मान व परिवार के पालन-पोषण के लिए उचित साधन सुलभ न हो तो यह उस समाज के लिए ही अपमानजनक होने के साथ समाज के असुरक्षित भविष्य का कारण होगा।

श्रीमद्दयानन्द आर्ष ज्योतिर्मठ गुरुकुल, पौन्धा (देहरादून) के आचार्य प० युधिष्ठिर जी एक ऐस विद्वान् पुरुष हैं जो आर्ष शिक्षापद्धति से व्याकरण एव सस्कृत साहित्य का अध्यापन करा रहे हैं। आचार्य युधिष्ठिर का जन्म भाद्रपद सवत् २०१६ विक्रमी (सन् १९६० ईस्वी) मे नेपाल के विराट्नगर के समीप एक जनपद मोरग के ग्राम गोविन्दपुर मे हुआ था। आपका जन्मस्थान बिहार राज्य के पूर्णिया जिले के पास पडता है। आपके पिता का नाम पशुपतिनाथ उप्रेती तथा माता का नाम हरिमाया उप्रेती है। वर्षो पूर्व आपके पूर्वज उत्तराचल राज्य के कुमाऊ क्षेत्र से नेपाल जाकर बस गए थे। पाच भाई तथा तीन बहनो मे आप सबसे ज्येष्ठ हैं। कक्षा ७ तक की आपकी शिक्षा अपने जन्मस्थान के गाव मे हुई। गुरुकुल एटा के आचार्य वागीश सन् १९७४ मे नेपाल मे आर्यसमाज मेची अचल जिला झापा मे प्रचारार्थ गये और वहा आपने नेपाल के विद्यार्थियो को सस्कृत व्याकरण एव वेदाध्ययन के लिए गुरुकुल एटा आने का निमत्रण दिया। यह उल्लेखनीय है कि उस समय गुरुकुल एटा देश-विदेश मे वेदपाठ एव आर्षशिक्षा के अध्यापन के लिए विख्यात गुरुकुल था। उनके इस निमत्रण पर नेपाल से सात-आठ ब्रह्मचारी अध्ययन हेतु एटा आये और एक वर्ष अध्ययन करने के पश्चात् जब अवकाश के दिनो मे नेपाल लौटे तो वहा उन्होने वेदपाठ, योगासन, भजन आदि का प्रदर्शन किया जिससे नेपाल के लोग बहुत प्रभावित हुए। युधिष्ठिर जी के पिता ने भी ब्रह्मचारियो के प्रदर्शन को देखा अपने पुत्र को एटा जाकर अध्ययन करने की प्रेरणा की। अपने पिता की प्रेरणा से आप अपने अन्य ५-६ साथियो के साथ गुरुकुल एटा पधारे। उस समय आपकी अवस्था १४-१५ वर्ष के बीच थी।

गुरुकुल एटा की स्थापना यज्ञप्रक्रिया, कर्मकाण्ड तथा दर्शनो के विद्वान् श्री ब्रह्मानन्द दण्डी जी ने की थी जो कट्टर ऋषिभक्त, सस्कृत-हिन्दी प्रेमी तथा अंग्रेजी के कट्टर विरोधी थे। स्वामी श्रद्धानन्द की बलिदान अर्धशताब्दी समारोह के अवसर पर आयोजित बृहद् यज्ञ के ब्रह्मा आप ही बनाये गये थे। गुरुकुल के निर्माण मे आपने एक भी ऐसी ईंट नहीं लगने दी जिस पर निर्माता के नाम के अग्रेजी अक्षर अकित हो। आपका मानना था कि यदि अग्रेजी अक्षरो से अकित ईटे हमारे भवन मे लगेगी तो अग्रेजी का विरोध करने का नैतिक अधिकार हमें नहीं होगा। अत ईटो के निर्माता को बाध्य कर उन्होंने हिन्दी अक्षरों मे कम्पनी का नाम अंकित करने के लिए बाध्य किया। गुरुकुल एटा मे ८४ खम्भो की एक विशाल एव भव्य यज्ञशाला है तथा युधिष्ठिर जी के अध्ययन काल मे यहा लगभग १०० ब्रह्मचारी अध्ययन करते थे। गुरुकुलो की गतिविधियो के सचालन के लिए दान मुख्यरूप से मुम्बई के लोगो से प्राप्त होता था। प० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु के शिष्य श्री आचार्य ज्योतिस्वरूप गुरुकुल के प्रथम आचार्य थे तथा उन्हीं के पुत्र आचार्य वागीश जी हैं। गुरुकुल एटा की एक विशेषता यह है कि यहा ब्रह्मचारियो को अन्य विश्वविद्यालयो से परीक्षाये आदि न दिलाकर "व्याकरणाचार्य" की अपनी ही उपाधि दी जाती है। किसी विद्यार्थी को अन्य किसी विद्यालय से कोई परीक्षा देने की अनुमति यहा नहीं दी जाती।

सन् १९७६ से १९८३ तक युधिष्ठिर जी ने गुरुकुल एटा मे अध्ययन कर "व्याकरणाचार्य" की उपाधि प्राप्त की। आप गुरुकुल के मेधावी छात्रो मे प्रमुख थे। गुरुकुल एटा के सचालक आपको गुरुकुल एटा मे ही आचार्य नियुक्त करना चाहते थे परन्तु आप सम्पूर्णानन्द सस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी की परीक्षा देना चाहते थे जिसकी आपको अनुमति नहीं दी गई। अत आपको गुरुकुल छोडना पडा। गुरुकुल मे आपने अष्टाध्यायी, प्रथमावृत्ति, काशिका, महाभाष्य, निरुक्त, निघण्टु, योगदर्शन, वैशेषिक दर्शन एव न्यायदर्शन आदि ग्रन्थों का अध्ययन किया और स्वामी मनीषानन्द जी को सस्कृत के अध्ययन मे सहायता की जो बाद मे आपके अध्ययन मे वरदान सिद्ध हुए।

गुरुकुल एटा के पश्चात् आपने गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में तीन वर्ष तक अध्ययन किया और सन् १९८६ में यहा की बी ए समकक्ष विद्याभास्कर उपाधि प्राप्त की। यहा अध्ययन के दिनो में आपने गुरुकुल महाविद्यालय मे सरक्षक के रूप मे सेवा भी की। अपने कर्तव्य के प्रति समर्पित एव निष्ठावान् रहने के कारण आपका भोजन आदि अस्त-व्यस्त रहता था जिससे स्वास्थ्य बिगडने लगा और अन्तत आपको यह कार्य छोडना पडा। अध्ययन के मध्य आर्थिक समस्याओं ने भी आपके अध्ययन मे बाधा उत्पन्न की जिसका समाधान एटा के स्वामी मनीषानन्द ने अपने एक गुजराती भक्त श्री धीरुभाई तेजपाल आर्य के द्वारा किया। श्री धीरुभाई आपको प्रत्येक माह २०० रुपये की आर्थिक सहायता देने लगे जिससे आपके अध्ययन में सहायता मिली। एक वर्ष पश्चात् यह सहायता मिलना बन्द होगया जिसका कारण ज्ञात न हो सका। विद्याविलासिता का आपका स्वभाव विपरीत परिस्थितियो मे भी मन्द न हुआ। सन् १९८८ मे आपने गुरुकुल कागडी से सस्कृत साहित्य मे एम ए की उपाधि प्राप्त की साथ ही आर्य साहित्य, इतर सस्कृत साहित्य के अतिरिक्त दर्शनो आदि नाना सस्कृत ग्रन्थो का अध्ययन भी आपने पूरा किया।

अध्ययन समाप्त कर आप आजीविका की तलाश में अनेक गुरुकुलो मे गये जहा आपको अध्यापन के साथ अनेक उत्तरदायित्वपूर्ण कार्यो को करने के लिए कहा गया परन्तु वेतन की राशि नहीं बताई गई। बनारस सहित विभिन्न स्थानो मे अध्यापन का कार्य ढूढकर जब आप ज्वालापुर लौटे तो सन् १९८९ मे गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर के आचार्य हरिगोपाल जी ने गुरुकुल मे आपको अध्यापन हेतु नियुक्त किया। आपको बी ए के समकक्ष तक की कक्षाये अध्यापनार्थ दी गई। अध्यापन के साथ आप गुरुकुल की देखभाल भी करते रहे। यहा लगभग तीन वर्षो तक सेवा करने के पश्चात् वर्ष १९९०-९१ मे त्यागपत्र देकर अपने पैतृक गांव नेपाल आगये जिसका कारण यहा स्वास्थ्य ठीक न रहना था। विराट्नगर, नेपाल के गुरुकुल मे बुलाकर आपको अध्यापनार्थ नियुक्त किया गया जहा आपने लगभग आठ वर्ष तक कार्य किया और शिक्षण के साथ अन्य दायित्वों का भी वहन किया परन्तु उचित वेतन राशि न मिलने के कारण आपके लिए कार्य करना सभव नहीं रहा। यहा लगभग १५० विद्यार्थी अध्ययन करते थे जिनमें गुरुकुल में ही निवास करनेवाले तथा प्रतिदिन अपने घरों से आनेवाले दोनों तरह के विद्यार्थी थे। अब यह गुरुकुल एक विद्यालय का रूप ग्रहण कर चल रहा है। आचार्य युधिष्ठिर को बागवानी का शौक है और गुरुकुल विराट्नगर में आपने बागवानी का अच्छा कार्य किया है।

सन् १९९३ में आपका विवाह हुआ। आपके एक पुत्र व एक पुत्री है। आपकी पत्नी, बच्चे तथा परिवार के अन्य लोग नेपाल में रहते हैं। दो वर्ष पूर्व देहरादून में "श्रीमद्दयानन्द आर्ष ज्योतिर्मठ गुरुकुल, गौतमनगर, दिल्ली" की एक शाखा के रूप मे आरम्भ किये गए गुरुकुल मे आचार्य हरिदेव जी ने आपको अध्यापनार्थ आचार्य नियुक्त किया। ११ जुलाई २००० को इस गुरुकुल में पहुचकर कार्य आरम्भ करने के बाद से आप यहा निरन्तर अध्यापन करा रहे हैं। आप यहा सम्पूर्ण सस्कृत व्याकरण एव सस्कृत साहित्य पढाते हैं। आचार्य हरिदेव जी एव गुरुकुल पौंधा के सचालक धनजय शास्त्री आचार्य युधिष्ठिर जी की विद्या, ज्ञान एव कार्य के प्रशसक हैं और उन्हे पूर्ण आदर देते हैं। अपनी स्थापना के दो वर्षो मे ही यह गुरुकुल निरन्तर प्रगति की ओर है। गुरुकुल मे ४ से १६ जून २००२ तक आयोजित वार्षिकोत्सव, सामवेद पारायण यज्ञ एव आर्यवीर दल के राष्ट्रीय शिविर के अवसर पर अनेक गुरुकुलो के आचार्य, गुरुकुलो के पुराने विद्यार्थी, आर्यजगत् के प्रतिष्ठित विद्वान् एव साधु-सन्यासी भारी सख्या मे गुरुकुल पौंधा पधारे। आचार्य युधिष्ठिर के गुणो व नाम आदि से गुरुकुलो से जुडे लोग प्राय. परिचित हैं। आपका जीवन एव चरित्र स्वच्छ एव प्रशसनीय है। महत्त्वाकांक्षियों से दूर रहकर आप ब्रह्मचारियो को सस्कारित एव शिक्षित करने मे अपने पूरे मन से लगे हैं। यह परम्परा चलती रहे, अच्छे परिवारों के बच्चे गुरुकुलो मे अध्ययन के पश्चात् आर्यसमाज का कार्य करे, इन विषयों पर आर्यजगत् के नेताओ व कर्णधारो को विचार कर व्यावहारिक योजना बनानी चाहिये जिससे आर्यसमाज का भविष्य उत्कर्ष को प्राप्त हो सके।

आचार्य युधिष्ठिर जैसे विद्वान् व्यक्ति का आर्यसमाज में होना और ब्रह्मचारियों को गुरुकुलीय आर्षप्रणाली से अध्ययन कराना आर्यजगत् के लिए गौरव की बात है। आचार्य हरिदेव जी ने इस विद्वान् का आर्यसमाज के लिए उपयोग किया है अत वह भी आर्यजगत् की श्रद्धा के पात्र हैं। यह कथन निर्विवाद है कि जब विद्वानों का समुचित आदर एव जीविकोपार्जनार्थ उन्हें पर्याप्त साधन उपलब्ध होंगे तभी गुरुकुलीय शिक्षा सफल हो सकती है और आर्यसमाज का कार्य आगे बढ़ सकता है इसका प्रत्येक ऋषिभक्त अनुयायी को ध्यान रखना है।

आर्य-संसार

सत्यार्थप्रकाश प्रश्नमंच प्रतियोगिता

आपको सूचित किया जाता है कि आर्यसमाज आदर्शनगर नजीबाबाद द्वारा 'सत्यार्थप्रकाश प्रश्न मंच प्रतियोगिता' का आयोजन किया जा रहा है। यह प्रतियोगिता २४ नवम्बर २००२ रविवार को अपराह्ण १ बजे आरम्भ होगी जिसमे सत्यार्थप्रकाश के द्वितीय से दशम समुल्लास पर्यन्त भाग से ही मौखिक प्रश्न पूछे जायेगे। प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त विजेताओं को क्रमश १५०० रुपये, १००० रुपये व ७०० रुपये की राशि व प्रमाणपत्र तथा अन्य विशिष्ट प्रतियोगियो को भी प्रोत्साहन पुरस्कार दिये जायेंगे। प्रतियोगियों के लिये किसी आयु व शैक्षिक योग्यता का प्रतिबंध नहीं है। सभी वर्ग के स्त्री, पुरुष व छात्र छात्राये इसमे भाग ले सकते हैं। प्रतियोगिता प्रवेश शुल्क १० रुपये होगा। विस्तृत जानकारी हेतु व प्रवेशपत्र प्राप्त करने के लिये 'प्रतियोगिता सयोजक' से निम्नाकित पते पर सम्पर्क करे–

–आचार्य विष्णुमित्र वेदार्थी, आदर्शनगर, नजीबाबाद (उ०प्र०)

वार्षिक उत्सव सम्पन्न

दिनाक २२-८-२००२ को (रात १२ बजे तक) जिला करनाल मे आर्यसमाज खरकाली का ५७वा वार्षिकोत्सव बडी धूमधाम से मनाया गया जिसमे आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा हरयाणा के वयोवृद्ध आर्य भजनोपदेशक श्री जगतराम व श्री बस्तीराम की भजनमण्डली के भजन उपदेश हुए।

इस उत्सव मे सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् आर्यसमाज एव ग्राम पचायत खरकाली के सक्रिय सदस्यो के साथ-साथ गाव के सभी स्त्री पुरुषो का भी विशिष्ट योगदान रहा। –तेजवीरसिंह, मन्त्री

आचार्य चैतन्य जी को, रामवृक्ष बेनीपुरी शताब्दी सम्मान

अनेक पुरस्कारों से सम्मानित आर्यजगत् के अत्यधिक लोकप्रिय तथा सैद्धान्तिक वैदिक प्रवक्ता एव वरिष्ठ साहित्यकार आचार्य भगवानदेव 'चैतन्य' जी को उनके द्वारा की गई साहित्यिक एव सामाजिक सेवाओ के लिए 'रामवृक्ष बेनीपुरी शताब्दी साहित्यिक सम्मान' के लिए चुना गया है। उल्लेखनीय है कि आचार्य चैतय जी की एक दर्जन से अधिक पुस्तके प्रकाशित हो चुकी हैं तथा पत्र-पत्रिकाओ में इनके हजारो लेख प्रकाशित व पुरस्कृत हो चुके हैं। इन्हे परमात्मा ने आध्यात्मिक ग्रन्थ लिखने के साथ-साथ साहित्य की लगभग प्रत्येक विधा पर भी लिखने का सामर्थ्य व प्रतिभा प्रदान की है। इन्हे यह सम्मान जैमिनि अकादमी द्वारा आयोजित विशाल सम्मेलन में हिन्दी दिवस वाले दिन प्रदान किया जायेगा। –रोशनसिह चम्बयाल, सचिव, उत्कर्ष कला केन्द्र, सुन्दरनगर

श्रावणी पर्व सम्पन्न

प्रत्येक वर्ष की तरह इस वर्ष भी गांव भंऊअकबरपुर मे श्रावणी पर्व पर अनेक छात्रो का उपनयन सस्कार किया गया है। एक दिन के उपवास के बाद प्रात मिष्ठान्न खिलाकर ५५ नवयुवको को आचार्य वेदमित्र 'वेदानन्द' द्वारा जनेऊ दिया गया। गुरुकुल के नन्हे ब्रह्मचारियों द्वारा बोले गये मधुरमन्त्रो से वातावरण अति सुन्दर लग रहा था। अनेक दैनिक यज्ञ करने वाले गृहस्थ भी इस समारोह मे सम्मलित थे। आचार्य जी के आकर्षक यज्ञ प्रचार से सम्पूर्ण गाव मे यज्ञ-श्रद्धा बढ रही हैं। इस पर्व पर खीर आदि का भण्डारा भी किया गया। –जगदेवसिंह आर्य, संयोजक

सरकारी विद्यालयों के खेलों में गुरुकुल कुरुक्षेत्र का दबदबा

थानेसर जोनल खेलो का आयोजन दिनाक २३ अगस्त से २५ अगस्त तक स्थानीय श्रीमद्भगवद् गीता विद्यालय के अन्दर किया गया। जिसके अन्दर थानेसर जोन के लगभग ३० विद्यालयो ने भाग लिया। जिसके अन्दर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा रोहतक द्वारा संचालित गुरुकुल कुरुक्षेत्र ने अपना शानदार प्रदर्शन करते हुए इन सभी विद्यालयों पर दबादबा कायम रखा। जिसमे विभिन्न खेलों का आयोजन किया गया था। जिसमें गुरुकुल कुरुक्षेत्र मे अडर १५ फुटबाल, कबड्डी, ऐथिलैटिक्स, जूडो तथा अडर-१७ कबड्डी, जूडो अडर-१९ फुटबाल में प्रथम स्थान प्राप्त करके इन सभी खेलों पर कब्जा किया। ब्र० जोगेन्द्र ने १०० मीटर फर्राटा दौड़ जीतकर रिकार्ड कायम किया। इन सभी खेल उपलब्धियों पर गुरुकुल कुरुक्षेत्र के प्रधानाचार्य श्री देवव्रत ने सभी खेल सुविधाए देते हुए भविष्य में सस्था का नाम राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पहुंचाने के लिए प्रोत्साहित किया।

राज्यस्तरीय एन.सी.सी. कैम्प में गुरुकुल कुरुक्षेत्र के कैडेट छाए

११ अगस्त से २० अगस्त २००२ तक हरयाणा राज्य स्तर कक एन सी सी कैम्प पौलिटैकनिक्स नीलोखडी (करनाल) में आयोजित किया गया। जिसमे सभी जिलो के ७०० कैडेटो ने विभिन्न प्रतिस्पर्धाओ मे भाग लिया। जिसमे गुरुकुल कुरुक्षेत्र के कैडेट सुनील, सुमित, विनय ने क्रमश प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त करके निशानेबाजी मे हरयाणा स्तर पर अपनी धाक जमाई। इन्हीं शृखलाओ में खेल प्रतियोगिताओ का आयोजन किया गया जिसमे क्रासकटरी दौड मे कैडेट सदीप, पवन ने क्रमश प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्त किया। टीम स्पर्धाओ मे फुटबाल तथा कबड्डी की टीमो ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। कैडेट विनय कुश्ती में प्रथम स्थान पाने में कामयाब रहे। इन सभी उपलब्धियो के लिए गुरुकुल कुरुक्षेत्र के प्रधानाचार्य श्री देवव्रत ने कैडेटो को बधाई देते हुए भविष्य मे हर क्षेत्र मे सफल होने के लिए प्रोत्साहित किया।

प्रधानाचार्य, गुरुकुल कुरुक्षेत्र, हरयाणा

श्री ओंकारनाथ का आकस्मिक निधन

आर्यप्रतिनिधिसभा मुम्बई के प्रधान स्व० ओंकारनाथ जी आर्य को अन्तिम विदाई देते हुए आर्यसमाज सान्ताक्रुज के सदस्य बाए से श्री अश्विन आर्य, श्री आर.के. सहगल, डा० सोमदेव शास्त्री (प्रधान आर्यसमाज सान्ताक्रुज, मुम्बई), श्री अरुणकुमार अब्रोल (कोषाध्यक्ष आर्यप्रतिनिधिसभा, मुम्बई), स्व० श्री ओंकारनाथ जी के सुपुत्र श्री सुनील मानकटाला, श्री मिठाईलाल सिह (महामत्री आर्यप्रतिनिधिसभा, मुम्बई) एव आर्यजन।

दि० ७ अगस्त, २००२ को साय आर्यप्रतिनिधि सभा, मुम्बई के प्रधान श्री ओंकारनाथ जी आर्य का हृदयगति रुक जाने के कारण मुम्बई मे आकस्मिक देहावसान होगया। वे ८२ वर्ष तक थे। जिनका अन्त्येष्टि सस्कार पूर्ण वैदिक रीति से दि० ८ अगस्त, २००२ को प्रात १२ बजे सम्पन्न हुआ। इस दुखद अवसर पर मुम्बई की समस्त आर्यसमाजो के पदाधिकारी व सदस्यगण तथा पारिवारिक इष्ट मित्र, बन्धु-बान्धव सैंकडो की सख्या मे उपस्थित थे। सभी ने अपने श्रद्धासुमन अर्पित किये और भावभीनी श्रद्धाजलि दी।

स्व० श्री ओंकारनाथ जी आर्य मुम्बई स्थित समस्त आर्यसमाजो की प्रतिनिधि सभा के वर्षो से प्रधान पद पर सुशोभित थे। वे आर्यसमाज सान्ताक्रुज ट्रस्ट के प्रधान तथा आर्य विद्या मन्दिर के आजीवन ट्रस्टी के पद पर रहते हुए अपने अनेक श्रेष्ठतम कार्यो एव नीतियो के कारण सर्वप्रिय बने रहे। आप कई वर्षो तक आर्यसमाज सान्ताक्रुज के भी प्रधान रहे। आपने वर्ष-२००१ मे मुम्बई के अन्दर बान्द्रा क्षेत्र मे आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के माध्यम से ऐतिहासिक अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन का भव्य आयोजन करके समस्त आर्य नर-नारियो को अपनी कार्यक्षमता से विशेषत प्रभावित किया, जो सदैव स्मरणीय रहेगा। आपका मृदु सभाषण, आपकी कार्यशैली, आपके कथनी-करनी मे एकरूपता तथा आर्यसमाज एव वेदो के प्रचार-प्रसार के प्रति उज्ज्वल भाव अभेद्य स्तभ की तरह आदर्श बने रहेगे। आप शिक्षा के प्रति जागरूक थे। यज्ञप्रिय एव दानवीर थे।

आपका हृदय विशाल था। आप महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टकारा के मैनेजिग ट्रस्टी के रूप मे अपनी महत्त्वपूर्ण सेवाये देते रहे। जिसे समूचा आर्यजगत् कभी भुला नहीं पाएगा। आपके अचानक चले जाने से जो समाज की अपूर्णनीय क्षति हुई है, वह निकट भविष्य मे पूर्ण होना असभव है। हम सब सामाजिक सदस्य परमपिता परमात्मा से उनकी दिवगत आत्मा की शान्ति एव सद्गति की प्रार्थना करते हैं एव शोक संतप्त परिवार को प्रभु सान्त्वना एव धैर्य धारण करने की शक्ति देवे।

आर्यसमाज जुड्डी का ३५वां वार्षिकोत्सव समापन

जिला रेवाडी के ग्राम जुड्डी आर्यसमाज का ३५वा वार्षिक उत्सव दि० १७-१८ अगस्त, २००२ को बडे धूमधाम से मनाया गया। स्वामी शरणानन्द जी महाराज आश्रम दडौली द्वारा यज्ञ से उद्घाटन और यज्ञ के ब्रह्मा श्री जीवानन्द जी नैष्ठिक अध्यक्ष वेदप्रचार मण्डल रेवाडी तथा पुरोहित श्री हरिपाल जी आचार्य एव श्री गोपबन्धु जी आचार्य, श्री कृष्ण ज्ञान ज्योति गुरुकुल व प० उमराव जी आश्रम दडौली।

ओ३म् ध्वजारोहण श्री सेठ छैलूराम जी गोभक्त स्टेशन कोसली ने किया। स्वामी शरणानन्द जी महाराज के सुन्दर व सारगर्भित प्रवचनों द्वारा श्रोतागण का मार्ग प्रशस्त हुआ।

भजनोपदेशक पं० श्री चिरंजीलाल आर्यप्रतिनिधिसभा हरयाणा, व पं० ईश्वरसिह जी तूफान भजनोपदेशक एव बहिन श्रीमती सुमित्रा वर्मा जी व इनकी पुत्री रोहतक तथा युवा गायक प० श्री रामनिवास जी इन सभी ने दो दिन तक सुन्दर भजन उपदेशो द्वारा समाज की बुराइयों पर कुठाराघात करते हुए मार्गदर्शन किया। सभी ने भजनो द्वारा ऐसा समा बाधा कि श्रोतागण मन्त्रमुग्ध रहे। आर्यप्रतिनिधि सभा को १७०० रुपये दान दिया।

—दीनदयाल सुधाकर, प्रचारमंत्री, वेद प्रचार मंडल, रेवाडी

वेद प्रचार कार्यक्रम सम्पन्न

वैदिक आश्रम पिपराली, सीकर (राज०) सचालक स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती की प्रेरणा व उनके निर्देशन मे अप्रैल, मई व जून मे अनेक कार्यक्रम हुए इन कार्यक्रमो मे स्वामीजी के साथ अनेक विद्वानो ने भाग लिया। जिनमे प० भरतलाल शास्त्री, स्वामी सम्पूर्णानन्द जी चरखी दादरी, डॉ० ज्वलन्तकुमार जी अमेठी, डॉ० धर्मवीर अजमेर, बहन पुष्पा शास्त्री रेवाडी, बहन विशोकायति बरवाला, प० अशोक शास्त्री ग्वालियर, प० रामनिवास भजनोपदेकश पानीपत इत्यादि के नाम उल्लेखनीय हैं।

कार्यक्रम इस प्रकार रहे- आर्यसमाज चिडावा (झुझनू) का वार्षिकोत्सव दिनाक २९, ३० अप्रैल। ग्राम जाफरपुर दिल्ली मे विशेष यज्ञ एव वेदप्रचार सयोजक मा० ईश्वरसिंह यादव दि० ३, ४ व ५ मई। १९ व २० मई किशनगढ, रैनवाल, जिला जयपुर। २३ से ३० मई श्री गगानगर आर्यसमाज द्वारा आर्यवीर दल शिविर। ३० व ३१ मई ग्राम मोटासर तहसील विजयनगर, जिला श्री गंगानगर मे वेदप्रचार। १ से ४ जून तक ग्राम कसुम्बी, तहसील लाडनू, जिला नागौर मे प० गणपतराम शर्मा के यहा यज्ञ एव वेद कथा। ८, ९ व १० जून भरतपुर मे जिला सभा द्वारा यज्ञ एव सम्मेलन। १३ से १६ जून सूरतगढ जिला हनुमानगढ मे चौ० भगवानसिह के यहा यज्ञ एव वेद कथा। २६ व २७ जून ग्राम मली वाली, जिला हनुमानगढ में वेदप्रचार द्वारा श्री सुभाष जी आर्य। —पूर्णानन्द वानप्रस्थी, पिपराली

वैदिक दैनन्दिनी (डायरी) २००३

सन् २००२ की भाति २००३ ईस्वी के लिए डायरी की तैयारी प्रारम्भ है। इस वैदिक डायरी में स्मरणीय पृष्ठ, दैनन्दिनी की उपयोगिता, आर्यसन्यासी वर्ग, आर्यनेता तथा आर्य कर्मठ कार्यकर्त्ता नामावली, आर्य वैदिक विद्वान् तथा विदुषी महिलाओ की नाम सूची, आर्य भजनोपदेशक तालिका, आर्य पर्वो की सूची, अवकाश सूची, मुख्य-मुख्य पत्र-पत्रिकाओं के नाम-पते, भारतवर्षीय आर्य प्रतिनिधि सभा तालिका, विदेशों में स्थापित आर्य प्रतिनिधि सभा सूची, सभी टेलीफोन कोड नम्बर, आर्यसमाज़ के स्तम्भ, आर्ष गुरुकुल (बाल-बालिकाएं) आदि-आदि शीर्षक होगे, **कृपया अपना नाम, जिला, फोन नम्बर आदि नि:शुल्क प्रकाशनार्थ यथाशीघ्र भेजें।**

मधुर-प्रकाशन — २८०४, गली आर्यसमाज, बाजार सीताराम, दिल्ली-११०००६ (फोन : ३२३८३६१)

कुनबा बारह बाट है रहो

अलग-थलग है रहे कुनबती - पटका पछारी की रट रहती।
किसी की लुटिया डूब रही है - किसी का बढ़िया ठाठ है रहो।
कुनबा बारह बाट है रहो।।१।।
अपनी-अपनी खैंचातानी - करने लगे अपनी मनमानी।
मचा रहे हैं छीढम-छीटा धोबी को सो घाट है रहो।
कुनबा बारह बाट है रहो।।२।।
चमचों का शिर हो रहा ऊंचा - लहराता रहा उजड बगीचा।
शेर अचेत मौनी बन बैठा - गीदड ही सम्राट है रहो।
कुनबा बारह बाट है रहो।।३।।
अपने हैं वह हुए पराये - बिगड़ी दशा कौन बनाये।
शोर सरावा धै धै पै पै सण्डे की सी हाट है रहो।
कुनबा बारह बाट है रहो।।४।।

रचयिता—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

सुपौत्र जन्मोत्सव

दिनांक ४-८-२००२ श्री डा० सत्यवीर जी कनेहटी ने अपने निवास चरखीदादरी पर अपने सुपौत्र चि० अनुराग का जन्मदिवस बडे अद्भुत प्रकार से मनाया। सर्वप्रथम इस शुभ अवसर पर श्री स्वामी ओमानन्द सरस्वती का घर पहुचने पर मालाओं से स्वागत किया और उनके ब्रह्मत्व मे यज्ञ का आयोजन हुआ। यज्ञ के पश्चात् सुपौत्र अनुराग को उपस्थितजनो ने आशीर्वाद दिया। भजन प्रवचन हुये। प्रभु से परिवार की मगलकामना की गई। श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती के ओजस्वी भाषण के पश्चात् कैंसर हस्पताल के लिये डॉ० साहब के पुत्र श्री युद्धवीरसिह ने ११००० रुपये की थैली भेट करके अभिनन्दन किया तथा १०१ रुपये गुरुकुल झज्जर को ओर १०१ रुपये आर्यप्रतिनिधिसभा हरयाणा को दान दिया। तदनन्तर प्रीतिभोज के साथ यह कार्यक्रम समाप्त हुआ। उपस्थित बन्धुजनों ने परिवार के लिये मगल कामना की। —मनुदेव शास्त्री, चरखी दादरी

समाजसेवी चौ० लालचन्द का निधन

स्वतन्त्रता सेनानी चौ० शीशराम के पुत्र हरयाणा हिन्दी सत्याग्रह के जेलयात्री, गोरक्षा आन्दोलन, शराबबन्दी तथा आर्यसमाज के अनेक आन्दोलनो से जुडे समाजसेवी चौ० लालचन्द का २८ अगस्त को प्रात ३ बजे ब्राह्ममुहूर्त के समय ८४ वर्ष की लम्बी आयु मे स्वर्गवास होगया। आर्यप्रतिनिधिसभा हरयाणा के भूतपूर्व वेदप्रचार अधिष्ठाता सत्यवीर शास्त्री गढी बोहर ने बताया कि प्रात ३ बजे हृदयगति रुकने से उनका स्वर्गवास होगया। वे अपने पीछे अपनी पत्नी, दो पुत्र जयपालसिह कॉलेज प्राध्यापक, डॉ० धर्मवीरसिह डिप्टी सी एम ओ झज्जर, दो पुत्री यशवन्ती एव राजबाला को छोडकर गये हैं। ८ सितम्बर को उनके निवास मॉडल टाउन रोहतक पर शान्ति यज्ञ का कार्यक्रम प्रात ८ बेजे किया जायेगा।

आर्यसमाज जुड्डी जिला रेवाड़ी का चुनाव

अध्यक्ष-श्री रामकुमार आर्य, मंत्री-सूबेदार श्री हरिसिह आर्य, कोषाध्यक्ष-श्री रामओतार आर्य, संरक्षक-श्री विद्यानन्द आर्य। -दीनदयाल सुधाकर

आवश्यकता है

आर्यसमाज मन्दिर रादौर जिला यमुनानगर के लिए एक पुरोहित (गृहस्थी), वानप्रस्थी या सन्यासी महानुभाव की आवश्यकता है जो यज्ञ संस्कार एवं प्रचार एवं मन्दिर व्यवस्था करने मे समर्थ हो। आवासादि की सुविधा। जीवनयापन हेतु दक्षिणा भी दी जाएगी। कृपया पत्र द्वारा अथवा मिलकर सम्पर्क करें।

सत्यकाम आर्य, आर्यसमाज रादौर, जिला यमुनानगर
फोन . ०१७१-३७८४३७७, निवास-३७८३०८४

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ०१२६२-७६८७४, ७७८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ०१२६२-७७७२२) से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३
पंजीकरणसंख्या टैक/85-2/2000
☎ ०१२६२-७७७२२

सृष्टिसंवत् १, ९६, ०८, ५३, १०३
विक्रमसंवत् २०५९
दयानन्दजन्माब्द १७९

प्रधानसम्पादक : यशपाल आचार्य, सभामन्त्री

सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री

वर्ष २६ अंक ४० १४ सितम्बर, २००२ वार्षिक शुल्क ८०) आजीवन शुल्क ८००) विदेश में २० डॉलर एक प्रति १.७०

आर्यो आओ, हम इकट्ठे हों, मिल बैठकर विचार करें

हरिराम आर्य, प्रधान आर्यसमाज कोसली (रिवाड़ी)

माली के बिना बगिया उजड रही है। प्रहरी के बिना खजाना लुट रहा है। [illegible]रो के अभाव मे मर्यादाओ का [illegible]रण होरहा है। हजारो वर्षो तक आलस्य में डूबकर त्राण के लिए दूसरो का मुह ताकते रहे। राज, वैभव, वरिष्ठता सब कोई खोकर निर्लज्ज बनकर जीते रहे। प्रभु कृपा से युग पलटा, बालक मूलशकर के रूप मे जन्मे बालक ने विद्यावारधि बनकर, तर्क एव सत्य की कसौटी पर दुनिया के मत-मतान्तरो को घिसा। पुराणी, किराणी, कुरानी गुरुओ ने देव दयानन्द के क्रान्ति आलोक मे अपने ग्रन्थो को टटोला सबमे अप्राकृतिक, अनहोनी, कामाचारी, पक्षपातपूर्ण मनघडन्त किस्से कहानियो को पढकर वे अवाक् रह गए। सबने महर्षि दयानन्द सरस्वती की तर्कशील बुद्धि के आगे शिर झुका दिया। उन्हे यह स्पष्ट दिखने लगा था अविद्या जनित उनके तथाकथित धर्मग्रन्थ दयानन्द के तर्क के आगे टिक नहीं सकेंगे, या सत्यलोक मे टिमटिमाकर बुझ जायेंगे।

दूसरा दौर आया। जिन विद्वान् तथा धर्मधीर आर्यो को महर्षि ने अपनी धरोहर सौंपी थी, महर्षि के निर्वाण के पश्चात् उन कर्मवीरो ने अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दयानन्द की ललकार को विश्व में गुंजाया। सर्वमान्य प्रात स्मरणीय गुरुदत्त विद्यार्थी, प० लेखराम आर्यपथिक, राजपाल, स्वामी श्रद्धानन्द से लेकर आज तक भी जोहर की वह ज्वाला बुझी नहीं है। धार्मिक क्षेत्र में विधर्मियों के अनैतिक उन्माद, हैदराबाद के निरंकुश निजाम, हठधर्मी मुल्ला-मौलवियो, पाखंडी पाषाणपूजको अनाप-शनाप भगवान् के अवतारों के दुर्दांत चगुल से छुडाने के लिए असख्य आर्यो ने बलिदान देकर सत्य का मार्ग प्रशस्त किया। फिर भी उल्कों की सन्तान सूर्य के प्रकाश के देखने से कतराते रहे। भारतमाता के बन्धन की बेडिया काटनेवालो मे महर्षि दयानन्द के भगतो की सख्या अस्सी प्रतिशत थी।

भारत स्वतन्त्र हुआ। अपना देश, अपना संविधान व्यवस्था, न्यायालय सब अपने। भाषायी आधार पर प्रदेशों की स्थापना विधानसभाओ तथा लोकसभा के लिए लोकतान्त्रितक विधि से चुने हुए सभासद। चुनाव जीतने के लिए भारी सख्या मे मतदाता, धन तथा साधन चाहिए, विधान या लोकसभा के चुनावों में आर्यसमाजी प्रत्याशियो ने आदर्शहीन धन और साधन तो जुटाये ही, जातपात के कटे शिर के भूत को भी अपना विजयवाहक आराध्य देव मान लिया। ऋषि के आदर्श आसू बहाते रह गए।

आर्यसमाज मन्दिरों मे अग्रेजी स्कूल लगाने शुरु कर दिये। दिवगत अनाथ आर्यो की सम्पत्ति पर कुदृष्टि पडने लगीं। गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ से गुरुकुल कांगडी तक की धर्मभूमियो पर तथाकथित आर्यो (पापियो) की ललचाई आखे गडी रहीं। उस लूट-खसोट में कितने नेता अथवा तत्कालीन प्रबन्धकों ने अपने मन मस्तिष्को पर कालख लगाई, यह पर्तें खुलनी अभी शेष हैं। आर्यसमाज सगठन पर घात-प्रतिघात होते रहे, कोई सुननेवाला न रहा।

लोकतान्त्रिक भारत के तीसरे चुनाव के आते तक स्वातन्त्र्य सग्राम के आदर्शी नेताओं में से अनेक वृद्धावस्था के कारण विश्राम करने लगे थे या राजनीति मे अनाचार उन्हे वाछित नहीं था अथवा दिवगत होचुके थे। हर राजनीतिक दल, छल, बल, साम, दाम, दड, भेद के आधार पर सत्ता की कुर्सी पकडना चाहता था। उसके लिए सभी ढग प्रयोग मे लाये जाने लगे। परिणामत. प्रत्येक राजनीतिक दल पाप की भारी से भारी गठडी उठाये फिरने लगा। आज भारत की सामाजिक व्यवस्था शासन और प्रशासन, वाणिज्य, व्यापार, लोकाचार साहित्य कला, रास-रग भ्रष्टाचार, अश्लीलता तथा कलह का शिकार है। अनुशासन या राष्ट्रीय मर्यादाओं नाम की कोई वस्तु नहीं रह गई है। आर्यो विचार करो।

आर्यसमाज जैसे वेदनिष्ठ, मानवमात्र की सेवा के लिए तत्पर जुझारू सस्थान तथा देश के उन्नयन के भागीदार कौन हैं ? अपनी अधोगति का अहसास कर हमे महर्षि दयानन्द तथा उनकी अनुकरणीय विभूतियो के पथ पर चलना होगा।

(१) आर्यमर्यादाओ के विपरीत, दलगत सगठन की सफलता के लिए काम करनेवाले स्वार्थी आर्यनेताओ को नामित करना होगा। (२) परिवार नियोजन, दहेजप्रथा, नारी शिक्षा (सहशिक्षा), वर्णाश्रमधर्म के विपरीत जात-पात और आरक्षण के पक्षपाती अन्याय की समीक्षा करनी होगी। (३) छलिया, कपटी, ढोगियो ने आर्यसमाज पर अपना वर्चस्व बना लिया है उनके स्थान पर विद्वान् पण्डितों, उपदेशकों, त्यागी सन्यासियो का आदर बढाना होगा। (४) पैसा पथी, उपदेशकों, सिद्धान्त विपरीत कर्मकाण्डी पुरोहितो से समाज मन्दिर खाली कराने तथा स्कूल की कक्षाए लगाने की बजाय सत्सग सभाए लगाना। (५) आर्यसमाज के विभिन्न विद्वानो द्वारा लगायी गई याज्ञिक कर्मकाड की द्विधा को दूर करना। (६) आर्यो का एक भी दैनिक समाचार पत्र नहीं है ना ही महिलाओ या बालको के बौद्धिक एव सास्कृतिक विकास के लिए मासिक, पाक्षिक अथवा साप्ताहिक पत्र हैं। अनार्य भाषा के अश्लील किस्से कहानियो, अधविश्वास प्रेरक, कामुक चित्रोवाले पत्र-पत्रिकाए आर्यो के घरो मे निर्द्वंद पहुचकर आर्य-परिवारो के आचरण को पलीता लगा रहे हैं। रही-सही कसर दूरदर्शन के दुष्कार्यक्रम पूरी कर रहे हैं। इन्हे युग की प्रगति कहा जाता है।

क्रिकेट के आपाधापी धन्नासेठो के खेल, रूप की कामुक प्रतियोगिताए सिनेमा मे दिखाई जानेवाली भौण्डी, राष्ट्रविरोधी, अश्लील फिल्मे जो हमारे युवको की प्रतिभा को मिट्टी मे मिला रही हैं, उन्हे पागल बना रही हैं। (७) शराब, सिग्रेट, मास, गुटखा, पुडिया, कोकाकोला की निर्माणक फैक्ट्रिया भारतीयो के स्वास्थ्य तथा धन और मन का शोषण कर रही हैं। (८) अयोध्या, कश्मीर, गुजरात के साम्प्रदायिक झगडे तथा मन्दिर मस्जिद की आड मे भडकाया साम्प्रदायिक अनाचार। (९) देशद्रोही आतकियो का मुस्लिमबाहुल्य क्षेत्रो मे विस्तार और उनकी खोज करना आदि उनका जडमूल से उन्मूलन कर्त्तव्य है।

आर्यो आओ, हम इकट्ठे हो, मिल-बैठकर विचार करे।

वैदिक-स्वाध्याय

हे समर्थ परमेश्वर !

दृते दृंह मा, ज्योक्ते संदृशि जीव्यासम्
ज्योक्ते संदृशि जीव्यासम् । यजु० ३६ १९ ।।

शब्दार्थ–(**दृते**) हे समर्थ परमदृढ परमेश्वर ! (**मा**) मुझे (**दृंह**) दृढ बनादे, जिससे कि मैं (**ति सदृशि**) तेरे संदर्शन में, तेरी ठीक दृष्टि में (**ज्योक्**) चिरकाल तक (**जीव्यासं**) जीता रहूं (**ति संदृशि ज्योक् जीव्यासं**) तेरे सम्यक् दर्शन मे दीर्घ आयु तक जीवित रहूं।

विनय–हे जगदीश्वर ! मैं चाहता हू कि अब मैं तुम्हारी अध्यक्षता में ही जीऊ-तुम्हारी देख मे तुम्हारी आखो के नीचे ही अपना जीवन व्यतीत करूं। मुझे यह सदा स्मरण बना रहे कि तुम मुझे देख रहे हो। मेरा एक-एक कार्य, मेरी एक-एक चेष्टा, एक-एक हरकत, तुम्हे साक्षी रखकर की गई हो। और इस तरह तुम्हारे सम्यक् दर्शन मे-तुम्हे देखता हुआ-मैं चिरकाल तक जीऊ। सच तो यह है कि जब मैं तुम्हारी ठीक-ठीक अध्यक्षता मे अपना जीवन व्यतीत करूगा तो मेरा जीवन ऐसा स्वाभाविकतया चलेगा कि यह स्वयमेव दीर्घजीवी हो जाएगा। अत मैं तो इतना ही चाहता हू कि मैं कभी तुम्हारे संदर्शन से जुदा न हो जाऊ। परन्तु तुम्हारे संदर्शन में जीना इतना आसान काम नहीं है। मैं यह जानता हू कि तुम ही मेरे जीवन हो, मेरी शक्ति हो, मेरी आत्मा हो तो भी मैं निर्बलतावश तुम्हे सदा भूला रहता हू। सासारिक वायु के झोको के थपेडों से मेरी सुधबुध ऐसी भूली रहती है कि मुझमे तुम्हारी स्मृति जागृत नहीं रह सकती। इसलिये हे जगदीश्वर ! मेरी तो तुमसे यह प्रार्थना है कि तुम मुझे पहिले दृढ बनादो, मजबूत बनादो, चट्टान बनादो। हे दृते ! हे सर्वशक्तिमान् ! तुम मुझे ऐसा दृढ बनादो कि ससार की घटनाए मुझे चलायमान न कर सकें। मैं सदा तुम्हे देखते रहने का यत्न करता हू-तुम्हे देखते रहते हुए ही अपने सब कर्म करने का यत्न करता हू, पर यह बहुत थोडी देर चलता है। कोई भी सासारिक खुशी या कोई दुख, कोई चिन्ता आने पर वह मेरा सात्त्विक ध्यान जाता रहता है। कोई भी नई सी बात होने पर मेरा ध्यान उधर खिच जाता है और मैं उस तेरे सदर्शन की सुखमय अवस्था से गिर जाता हू। इसलिये, हे दृते ! मैं दृढता का भिखारी हुआ हू। मैं जानता हू कि जब मैं दृढ हो जाऊगा तथा उस दृढता द्वारा सुख में दुख में, संपत् मे विपत् में सदा तुम्हारा यह सदर्शन करते रहने का अभ्यासी हो जाऊगा तो धीरे-धीरे तुम्हारा सम्यक् दर्शन मुझमे ऐसा समा जायेगा कि यह फिर मुझसे जुदा न हो सकेगा। और तब मुझे तुम्हारा ध्यान करने की भी जरूरत न रहेगी। जैसे कि हम दिन भर सूर्य प्रकाश द्वारा ही सब काम करते हैं पर हमे यह याद रखने की आवश्यकता नहीं होती कि हम सूर्य प्रकाश मे हैं, वैसे ही तब मैं बिना यत्न किये तुम्हारे सदर्शन के प्रकाश मे चौबीसौ घटे रहने सहने और जीवन व्यतीत करनेवाला हो जाऊगा। अत हे दृते ! मुझे ऐसा दृढ बनादो कि मैं कभी तुम्हारे सदर्शन से न हट सकू।

आर्यसमाज के उत्सवों की सूची

१	आर्यसमाज सेक्टर-१९ फरीदाबाद	१५-२२ सितम्बर ०२
२	आर्यसमाज बडा बाजार सोनीपत शहर	१६-२२ सितम्बर ०२
३	आर्यसमाज मन्दिर गाधीनगर दिल्ली-३१	१६-२२ सितम्बर ०२
४	आर्यसमाज गोहाना मण्डी जिला सोनीपत	१८-२२ सितम्बर ०२
५	आर्यसमाज गगायचा अहीर बीकानेर (रेवाडी)	२१-२२ सितम्बर ०२
६	आर्यसमाज महेन्द्रगढ	२१-२२ सितम्बर ०२
७	आर्यसमाज श्रद्धानन्द नगर (न्यू कालोनी) पलवल जिला फरीदाबाद (विदकथा)	१८-२२ सितम्बर ०२
८	आर्यसमाज कोसली जिला रेवाडी	२७ से २९ सितम्बर ०२
९	आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ (झज्जर)	२६ सित० से २ अक्तू० ०२
१०	आर्यसमाज कौण्डल जिला फरीदाबाद	२-३ अक्तू० ०२
११	आर्यसमाज सालवन जिला करनाल	१८-२० अक्तूबर ०२
१२	आर्यसमाज झज्जर रोड बहादुगढ (झज्जर)	१९-२० अक्तूबर ०२
१३	आर्यसमाज बीगोपुर डा० धोलेडा (महेद्रगढ)	१९-२० अक्तूबर ०२
१४	आर्यसमाज गगसीना जिला करनाल	१६-१८ अक्तूबर ०२
१५	आर्यसमाज कालका जिला पचकूला	२३-२७ अक्तूबर ०२
१६	आर्यसमाज शेखुपुरा खालसा जिला करनाल	२५-२७ अक्तूबर ०२
१७	कन्या गुरुकुल पचगाव जिला भिवानी	२६-२७ अक्तूबर ०२
१८	आर्यसमाज मोखरा जिला रोहतक	३० अक्तू० से १ नव० ०२
१९	आर्यसमाज खरड जि० रोपड (पजाब)	१६-१७ नवम्बर ०२

–रामधारी शास्त्री, सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता

बृहद सौराष्ट्र आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा राजकोट द्वारा प्रतिभाशाली आर्य संतानों तथा वयोवृद्ध सम्मान का आयोजन

बृहद सौराष्ट्र आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा राजकोट द्वारा आर्य परिवारों के प्रतिभाशाली सतानो के सम्मान का भव्य आयोजन दिनाक १८ ०८ २००२ रविवार को किया गया। जिसमे पूरे सौराष्ट्र क्षेत्र के आर्यो तथा आर्य सभासदों की सतानें जिन्होने दसवीं, बारहवीं, स्नातक, परास्नातक, अभियन्ता आदि क्षेत्रो मे उच्च श्रेणी प्राप्त किया था, उन्हे शील्ड प्रमाण-पत्र और वैदिक पुस्तको द्वारा सम्मानित किया गया। कुल २१ प्रतिभाशाली विद्यार्थी थे जिन्हे आर्यसमाज राजकोट के प्रमुख श्री पोपटभाई चौहाण तथा आर्यसमाज जामनगर के प्रमुख श्री धरमवीर खन्ना जी ने १००-१०० रुपये का पुरस्कार दिया। इस प्रसग मे सभी प्रतिभाओ के माता-पिता तथा पारिवारिकजन भी उपस्थित थे।

सम्मान समारोह के दूसरे भाग मे सौराष्ट्र क्षेत्र के कुल ४९ वयोवृद्ध आर्यसज्जन जिनकी उम्र ७० साल से अधिक थी, जिन्होंने अपने जीवन मे वैदिकधर्म का प्रचार-प्रसार करने मे कष्ट सहन करते हुए महत्त्वपूर्ण योगदान किया था, उनका सर्वप्रथम टकारा उपदेशक विद्यालय के आचार्य श्रीमान् विद्यादेव जी ने तिलक करके स्वागत किया। पश्चात् आचार्य श्री विद्यादेवी जी, पंडित श्री भुपेनश्री जी तथा सभा के प्रमुख श्री रणजीतसिह परमार जी ने आर्य वयोवृद्ध महानुभावों को सम्मानित करते हुए शाल ओढाकर नारियल भेट किया। इस शुभ अवसर पर **"तमसो मा ज्योतिर्गमय"** नामक एक स्मारिका उद्घाटित की गई जिसमे उक्त वृद्ध महानुभावो के जीवन की झलकिया उल्लखित थीं।

उक्त अवसर पर युवा आर्य लेखिका आर्यसमाज सदस्य पोरबदर जिनके लिखे सामाजिक उपन्यास **"जीवन पथ"** जिसमे आर्यसमाज के क्रियाकलापो का सर्वोच्चता से उल्लेख है। जिसे गुजरात साहित्य अकादमी ने मान्यत प्रदान की है, ऐसी बहन श्री मजुलाजी को आचार्यश्री विद्यादेव जी ने विशेष रूप से सम्मानित किया।

पडित भूपेन्द्रसिह जी आर्य भजनोपदेशक जिन्हे बृहद सौराष्ट्र द्वारा वैदिक धर्म प्रचार-प्रसार हेतु एक मास के लिए निमंत्रित किया गया था, ने पूरे सौराष्ट्र मे आर्य सिद्धातो, विचारो तथा देशभक्ति प्रेरक गीतो द्वारा लोगो के हृदय में आर्यसमाज का स्थान रख दिया।

–मन्त्री, आर्यसमाज, दयानन्दमार्ग, राजकोट

साठ गांवों का दौरा भी करेंगे बलदेव

हरयाणा गोसेवा सगठन के अध्यक्ष आचार्य बलदेव १५ सितम्बर से २५ सितम्बर के बीच सोनीपत जिले की तमाम गोशालाओ के साथ ही करीब ६० गावों का दौरा भी करेंगे। इस दौरान वे लोगो को आवारा गायों को रखने या गोशालाओं मे भिजवाने को भी प्रेरित करेगे।

सिसाना धर्मार्थ गोशाला की प्रबन्धक समिति के अध्यक्ष टीकाराम ने बताया कि आचार्य बलदेव १५ को जटवाडा, १६ को गन्नौर, १७ को जखौली, १८ को नांगल कलां तथा १९ को को जठेडी, छत्तेहरा, खेडी मनाजात होते हुए हलालपुर पहुचेंगे। १९ सितम्बर को वह सैदपुर, पिपली, रोहणा, मटिंडू, सिसाना, २० को भदाना, २१ को भटगाव, २२ को बली, २३ को भैंसवाल, २४ व २५ सितम्बर को गोहाना गोशाला का मुआयना करेंगे।

(साभार : अमर उजाला)

वेद में "तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः"

—स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती, आर्ष गुरुकुल, कालवा

अथर्ववेद दशम काण्ड, सप्तम सूक्त के ३२, ३३, ३४, ३६वे मन्त्रो मे और अष्टम सूक्त के प्रथम मन्त्र में **"तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः"** पद आया है अर्थात् इन मन्त्रों मे उस सबसे श्रेष्ठ वा बडे परमात्मा को बारम्बार नमस्कार किया है। पाठकगण इन मन्त्रो पर चिन्तन करेंगे और लाभान्वित होगे।

यस्य भूमिः प्रमाऽन्तरिक्षमुतोदरम्।

दिवं यश्चक्रे मूर्धानं तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः।। (अथर्व० १०।७।३२)

अर्थ-(यस्य) जिस परमेश्वर के (भूमि) पृथिवी आदि पदार्थ (प्रमा) यथार्थ ज्ञान की सिद्धि होने में साधन हैं तथा जिसके भूमि पाद=पैर के समान हैं। (उत) और (अन्तरिक्षम्) जो सूर्य और पृथिवी के बीच का मध्य आकाश है (उदरम्) उदरस्थानीय है। (दिवम्) द्युलोक को (यः चक्रे मूर्धानम्) जिस परमात्माने मस्तक स्थानीय बनाया है। (तस्मै) उस (ज्येष्ठाय) बडे (ब्रह्मणे नमः) परमात्मा को हमारा नमस्कार हो।

भावार्थ-हमारे पूज्य गोतमादि ऋषियो ने अनुमान लिखा है **'क्षित्यङ्कुरादिकं कर्तृजन्यं कार्यत्वात्, घटवत्।'** पृथिवी और पृथिवी के बीच वृक्षादिक जितने उत्पत्तिमान् पदार्थ हैं, ये सब किसी कर्त्ता से उत्पन्न हुये हैं, कार्य होने से, घट की तरह। जैसे घट को कुम्हार बनाता है वैसे सारे ससार का निमित्त कारण परमात्मा है। उसी भगवान् का बनाया हुआ अन्तरिक्ष लोक उदर स्थानीय है। उसी परमात्मा ने मस्तकरूप द्युलोक को बनाया है। ऐसे महान् ईश्वर को हमारा नमस्कार है।

यस्य सूर्यश्चक्षुश्चन्द्रमाश्च पुनर्णवः।

अग्निं यश्चक्र आस्यं तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः।। (अथर्व० १०।७।३३)

अर्थ-(पुनर्णवः) सृष्टि के आदि मे बारम्बार नवीन होनेवाला सूर्य और चन्द्रमा (यस्य) परमात्मा के (चक्षुः) नेत्र समान हैं (यः) जिस भगवान् ने (अग्निम्) अग्नि को (आस्यम्) मुख समान (चक्रे) रचा है। (तस्मै ज्येष्ठाय) उस सबसे बडे वा श्रेष्ठ (ब्रह्मणे नमः) परमात्मा को हमारा नमस्कार है।

भावार्थ-यहा सूर्य और चाद को जो वेद भगवान् ने परमात्मा की आख बताया है, इसका यह अर्थ कभी नहीं कि वह जीव के तुल्य चर्ममय आखोवाला है, किन्तु जीव की आख जैसे जीव के अधीन हैं ऐसे ही उस परमात्मा के सूर्य, चन्द्रमा, वायु, अग्नि, दिशा-उपदिशा आदि अधीन है इस कहने से यह तात्पर्य है। यदि कोई आग्रह से परमेश्वर को साकार मानता हुआ सूर्य चाद उसकी आखे बनाये तो अमावस की रात्रि में न सूर्य है न चाद है इसलिये उपयुक्त कथन ही सच्चा है।

यस्य वातः प्राणापानौ चक्षुरङ्गिरसोऽभवन्।

दिशो यश्चक्रे प्रज्ञानीस्तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः।। (अथर्व० १०।७।३४)

अर्थ-(यस्य) जिस भगवान् ने (वात) ब्रह्माण्ड की वायु को (प्राणापानौ) प्राणापान के तुल्य बनाया। (अगिरस) प्रकाश करनेवाली जो किरणे हैं वह (चक्षुः अभवन्) आख की न्याई बनाई। (यः) जो परमेश्वर (दिशः) दिशाओ को (प्रज्ञानीः) व्यवहार के साधन सिद्ध करनेवाली बनाता है, (तस्मै ज्येष्ठाय) ऐसे बड़े अनन्त (ब्रह्मणे) परमात्मा को (नमः) हमारा बारम्बार नमस्कार है।

भावार्थ-जिस जगदीश्वर प्रभु ने समष्टि वायु को प्राणापान के समान बनाया, प्रकाश करनेवाली किरणे जिसकी चक्षु की न्याई हैं अर्थात् उनसे ही रूप का ग्रहण होता है। उस परमात्मा ने ही सब व्यवहार को सिद्ध करनेवाली दश दिशाओ को बनाया है। ऐसे अनन्त परमात्मा को हमारा बारम्बार प्रणाम है।

यः श्रमात् तपसो लोकान्त्सर्वान्त्समानशे।

सोमं यश्चक्रे केवलं तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः।। (अथर्व० १०।७।३६)

अर्थ-(यः) जो परमेश्वर (श्रमात्) अपने श्रम अर्थात् प्रयत्न से और (तपसः) अपने ज्ञान वा सामर्थ्य से (जात) प्रसिद्ध होकर (सर्वान् लोकान्) सब लोको मे (समानशे) सम्यक् व्याप रहा है। (यः) जिसने (सोमम्) ऐश्वर्य को (केवलम्) अपना ही (चक्रे) बनाया (तस्मै ज्येष्ठाय) उस सबसे श्रेष्ठ वा बडे (ब्रह्मणे नमः) परमात्मा को हमारा नमस्कार है।

भावार्थ-परमात्मा परम पुरुषार्थी, पराक्रमी और परमैश्वर्यवान् हुआ सब जगत् का अधिष्ठाता है। कई लोग जो परमात्मा को निष्क्रिय अर्थात् कुछ कर्ताधर्ता नहीं है, ऐसा मानते हैं, उनको इन मन्त्रो की तरफ ध्यान देना चाहिये, जो स्पष्ट कह रहे हैं कि परमात्मा बड़ा पुरुषार्थी, पराक्रमी, बड़ा बलवान् और परमैश्वर्यवान् होकर सब जगत् को बनाता है। परमात्मा अपने बल से ही अनन्त ब्रह्माण्डो को बनाता, पालता-पोषता और प्रलयकाल में प्रलय भी कर देता है, ऐसे समर्थ प्रभु को बारम्बार हमारा प्रणाम हो।

यो भूतं च भव्यं च सर्वं यश्चाधितिष्ठति।

स्वर्यस्य च केवलं तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः।। (अथर्व० १०।८।१)

अर्थ-(यः) जो परमेश्वर (भूतं च भव्यं च) अतीतकाल, भविष्यकाल और वर्तमानकाल इन तीनो कालो और इनमे होनेवाले सब पदार्थो को यथावत् जानता है (सर्वं यः च अधितिष्ठति) सब जगत् का जो अपने विज्ञान से उत्पन्न पालन और प्रलयकर्त्ता सबका अधिष्ठाता अर्थात् स्वामी है। (स्वः यस्य च केवलम्) जिसका सुख ही स्वरूप है। (तस्मै ज्येष्ठाय) उस सबसे उत्कृष्ट सबसे बडे (ब्रह्मणे नमः) परमात्मा को हमारा नमस्कार हो।

भावार्थ-हे विज्ञानानन्दस्वरूप परमात्मन्! आप तीनो कालो और इनमे होनेवाले सब पदार्थो के ज्ञाता, अधिष्ठाता, उत्पादक, पालक, प्रलयकर्त्ता, सुखस्वरूप और सुखदायक हो, ऐसे जगद्वन्द्य जगत् पिता आप परमेश्वर को प्रेम से हमारा बारम्बार प्रणाम हो।

स्वाध्याय साधना शिविर

परोपकारिणी सभा द्वारा सभा के धार्मिक एव सामाजिक आयोजनो के मुख्य कार्यस्थल ऋषि उद्यान आनासागर घाटी, पुष्कर रोड, अजमेर मे साधना स्वाध्याय एव सेवा शिविर का आयोजन दिनाक २० से २९ अक्टूबर तक किया जारहा है।

यदि आपके मन के किसी कोने मे साधना करने की इच्छा बीज रूप मे अकुरित होरही हो, अपने सर्वश्रेष्ठ जीवन को वेद एव ऋषियो के आदर्शानुकूल ढालना चाहते हो, अपने मन को पवित्र बनाने की इच्छा रखते हो वैदिक साधना पद्धति को जानना चाहते हो तो कृपया इस आयोजित शिविर मे भाग लेने हेतु आप सादर आमत्रित हैं।

शिविर मे पजीयन एव अन्य आवश्यक जानकारी हेतु कृपया सपर्क करे।
सपर्क स्थल १ परोपकारिणी सभा, केसरगज, अजमेर, २ आचार्य सत्यजित्, ऋषि उद्यान, पुष्कर रोड, अजमेर। दूरभाष ६२१८९१

वेदप्रचार सम्पन्न

दिनाक २८ से ३१ अगस्त २००२ को आर्यसमाज गढी राजलू जिला सोनीपत मे श्री जयपालसिह आर्य व सत्यपाल आर्य सभा भजनोपदेशक का चार दिन वेदप्रचार हुआ। गाव मे बढती कुरीतियो शराब, दहेज व पाखण्ड व अन्धविश्वास के बारे मे खण्डन किया। दिनाक ३१-८-२००२ को प्रात ८ बजे श्री दिलबाग के द्वारे पर यज्ञ हुआ जिसमे पुरुषो व महिलाओ ने यज्ञ पर बैकर घी, सामग्री की आहुतिया डाली। दो जवानो श्री दिलबाग व कृष्ण ने शराब छोडने का सकल्प लिया कि आज के बाद शराब का प्रयोग नही करेगे और यज्ञोपवीत धारण किये। यज्ञ पर सत्यपाल आर्य के भक्ति गीत एव भजन हुये। सभा के वेदप्रचार, दशाश, सर्वहितकारी शुल्क को मिलाकर ९७५ रुपये की धनराशि दीगई।

आर्यसमाज गढी राजलू जिला सोनीपत का वार्षिक चुनाव

आर्यसमाज गढी राजलू जिला सोनीपत का वार्षिक चुनाव निम्न प्रकार हुआ। प्रधान-राजवीर आर्य, उपप्रधान-साहबसिह आर्य मन्त्री-रामसिह आर्य उपमन्त्री- धर्मपाल आर्य, कोषाध्यक्ष-भूपसिह आर्य, प्रचारमन्त्री-गोपीराम आर्य लेखाकार-बस्तीराम आर्य।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को दान

आर्यप्रतिनिधिसभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक को वेदप्रचार सप्ताह के अवसर पर निम्नलिखित आर्य महानुभाव ने वेदप्रचारार्थ दान भेजा है -

श्री महेन्द्रसिह आर्य दयानन्दमठ रोहतक (ऋषि नगर)	२५० रुपये
श्री धर्मवीर मलिक एस डी ओ ६४४/२९ तिलकनगर रोहतक	११०० रुपये
श्री नरेन्द्रसिह दहिया एस डी ओ थाना खुर्द जिला सोनीपत	११०० रुपये
श्री सतीश जी लाज होटल सापला जिला रोहतक	६०० रुपये
स्वामी धर्मानन्द परिव्राजक आर्यसमाज बडा बाजार पानीपत	१०१ रुपये

आशा है अन्य आर्य महानुभाव भी शुभ अवसरो पर सभा को वेदप्रचारार्थ दान भेजकर सहयोग देकर पुण्य के भागी बनेगे। सभा को आयकर मे छूट प्राप्त है।

—यशपाल आचार्य, सभामन्त्री

वेदप्रचार समारोह सम्पन्न

आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली मे २२ अगस्त से ३१ अगस्त २००२ तक वेदप्रचार समारोह के उपलक्ष मे श्रावणी पर्व (उपाकर्म) एव श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व हर्षोल्लासपूर्व मनाया गया। इस अवसर पर प्रात ७ ३० से ९ ०० बजे अथर्ववेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया गया, जिसके ब्रह्मा प्रसिद्ध युवा विद्वान् आचार्य राजू वैज्ञानिक जी थे तथा सहयोगी के रूप मे डॉ० कर्णदेव जी शास्त्री थे।

२२ अगस्त को श्रावणी पर्व (रक्षाबन्धन) पर सामूहिक रूप से यज्ञोपवीत का परिवर्तन किया जिसमे आर्यसमाज के अधिकारी तथा सदस्यों के अतिरिक्त रघुमल आर्य कन्या उच्च मा० विद्यालय की अध्यापिकाए तथा छात्राए उपस्थित थी।

रविवार, २५ अगस्त को सत्याग्रह बलिदान दिवस के अवसर पर युवा विद्वान् श्री राजू वैज्ञानिक जी ने सत्याग्रह के अमरहुतात्मा पर प्रकाश डाला।

३१ अगस्त को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के शुभ अवसर पर स्कूलो एव गुरुकुलो के छात्र/छात्राओ की भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता प्रि० मोहनलाल जी ने की। भाषण प्रतियोगिता मे प्रथम पुरस्कार कु० सुमन, गुरुकुल नरेला, द्वितीय पुरस्कार कु० स्नेहा सीकरी, सूरजभान डी ए वी स्कूल वसन्त विहार एव तृतीय दो पुरस्कारो मे कु० वैशाली शर्मा, भागीरथीदेवी आर्य कन्या सी से स्कूल तथा कु० शिवानी, रघुमल आर्य कन्या सी से स्कूल राजाबाजार को नकद एव वैदिक साहित्य से पुरस्कृत किया गया। इसके अतिरिक्त सभी प्रतिभागियों को प्रोत्साहन पुरस्कार मे नकद तथा वैदिक साहित्य प्रदान किया गया। —अरुणप्रकाश वर्मा, मत्री

अथर्ववेद पारायण यज्ञ एवं वृष्टि यज्ञ सम्पन्न

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय हसनपुर मे दिनाक २५-७-२००२ से २८-७-२००२ तक अथर्ववेद पारायण यज्ञ हुआ (जो कि इन तिथियो से पहले ही आरम्भ करना पडा था) तभी २८-७-२००२ को पूर्णाहुति हो सकी।

वर्षा के मन्त्रो की विशेष सामग्री व समिधायें (रोजका गूजर) के पहाड से लाई गयीं जिनमे करीर, गूगल, ढाक, पीपल एव शमी (छोकर) की समिधाये थीं। वर्षा यज्ञ के समाप्त होने पर होगई।

दूसरा यज्ञ आर्यसमाज व कन्या गुरुकुल हसनपुर के माध्यम से ७-८-२००२ से ११-८-२००२ तक किया गया, इस यज्ञ को भी सम्पन्न होते ही अच्छी वर्षा ने भूमि जो प्यासी थी, तृप्त कर दिया।

तीसरा यज्ञ-गुरुकुल महाविद्यालय रोजका गूजर मे वृष्टि यज्ञ किया गया जिस यज्ञ के फल से वहा का तालाब (जोहड) भी पानी से लबालब भर गया। जनता को भी विश्वास हुआ की वेदमन्त्रो मे कितनी शक्ति है।

वृष्टि महायज्ञ सम्पन्न

देश मे मानसून की कमजोर स्थिति से उत्पन्न सूखे की परिस्थिति को ध्यान मे रखते हुए आर्यसमाज बिडला लाइन्स ने भी राष्ट्र सेवा मे अपना सहयोग प्रस्तुत करते हुए सोमवार दिनाक ५ अगस्त से ११ अगस्त रविवार तक श्री स्वामी श्रेयोनन्द जी के ब्रह्मत्व मे वृष्टि महायज्ञ का आयोजन किया। जिसमें कन्या गुरुकुल चोटीपुरा की ब्रह्मचारिणियो के द्वारा विशेष रूप से वेदपाठ किया गया।

यज्ञ मे विशेष रूप से कीमती जडी-बूटियो द्वारा तैयार की गई हवन सामग्री एव शुद्ध गाय के घृत से आहुतिया दीगई।

इसी अवसर पर श्रावणी के उपलक्ष्य मे रात्रि में स्वामी श्रेयोनन्द जी द्वारा वेदकथा एव प० दिनेशदत्त जी द्वारा भजनो का कार्यक्रम भी सम्पन्न हुआ।

रविवार दिनाक ११ अगस्त को इस महायज्ञ की पूर्णाहुति हुई। यज्ञ उपरान्त प्रवचन भजन उद्बोधन का कार्यक्रम हुआ जिसमे मुख्य रूप से स्वामी जगदीश्वरानन्द जी, श्री धर्मपाल जी आर्य प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली, श्री प्रेमपाल जी शास्त्री अध्यक्ष पुरोहित सभा, श्रीमती सुषमा यति द्वारा भाग लिया गया। तत्पश्चात् ऋषि लगर की व्यवस्था भी की गई।

वर्षा ऋतु में स्वास्थ्य रक्षा

१) वर्षा ऋतु मे जलवायु में संक्रमण (Infection) होजाता है क्योंकि मच्छर, मक्खियां जागृत होकर सक्रिय होजाती हैं। आप जानते हो कि मच्छरों से मलेरिया और मक्खियों से हैजे की बीमारी फैलती है। अत. इनसे बचने के उपाय करने चाहिये। हम देखते हैं कि मच्छर, मक्खी वहा जमा होते हैं जहा गन्दगी रहती है। साफ जगह पर बहुत कम आते हैं। इनको दूर रखने के लिये घर के प्रत्येक स्थान को झाड़-पोंछकर साफ-सुथरा रखना चाहिये। जूते-चप्पल कमरे में प्रवेश न करके बाहर ही रखे। साग-सब्जी, फलों के छिलके किसी ढकनेदार ड्रम में जमा करें। कहीं पर कूड़ा न फैलायें। ओढने पहनने के वस्त्रों को झाडते और धूप लगाते रहें। खाने-पीने की चीजो को ढककर रखे। वातावरण की शुद्धि के लिये यदि हवन नहीं कर सकते तो अगरबत्ती धूपबत्ती जलाते रहें।

२) इस ऋतु मे वायु के साथ जल भी प्रदूषित होजाता है। इसलिये पीने के पानी पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है। पीने के पानी को छानकर ढककर रखे। ४८ घटे बाद पानी को बदलते रहें। यदि जुकाम ज्वर है तो उबालकर प्रयोग करें। इस मौसम में होनेवाले रोग हैजा, मलेरिया, पेचिश, जुकाम, रक्तविकार, आखें दुखना आदि अनेक बीमारिया हैं जो लगभग पेट की खराबी से होती हैं। अत खान-पान में कुपथ्य न करें।

३) इस ऋतु मे प्राय जठराग्नि मन्द होजाती है, गरिष्ठ भोजन न करें। पाचन क्रिया को ठीक रखने के लिए देखभाल कर सोच-समझकर खायें। जैसे वर्षाऋतु मे कढी चॉवल खाने से शरीर के अगो मे दर्द होजाता है। भोजन हल्का सुपाच्य होना चाहिये, सौंठ, काली मिर्च, नींबू का रस प्रयोग करना लाभदायक है। इस ऋतु मे विशेषकर बाजार की बनी मिठाइया और कटे हुये रखे फलो को नहीं खाना चाहिये। ऐसे ही नगी रखी हुई खाने की चीजे नहीं खानी चाहिये। उन पर मक्खिया गन्दगी छोड जाती हैं और धूल गई गर्दा जमा रहता है।

४) वर्षा ऋतु में दिन मे अधिक सोने से सिर में भारीपन जुकाम आलस्य होजाता है। दोपहर के भोजन के बाद दस-पन्द्रह मिनट से अधिक नहीं सोना चाहिये। कुछ काम करो। स्वाध्याय अध्ययन करो। रात्रि को सोते समय भोजन न करे। पेट को हल्का रखे। रात मे ओस पडने की सम्भावना है तो कहीं खुले मैदान या छत पर सोने की बजाय किसी छप्पर या बरामदे के साये मे शयन करे। नगी चार पाई पर न सोयें कुछ हल्की दरी आदि बिछाये। इस ऋतु मे मन मयूर कुछ चचल होकर कामवासना की ओर भागता है। स्वस्थ रहने के लिए सयम से काम ले।

—ले० देवराज आर्यमित्र, दिल्ली-५१

प्रथम सर्वगोत्र महासम्मेलन

शादी में दादी के गोत्र को छोड़ेंगे लड़के वाले

सम्मेलन में गोत्रों के प्रतिनिधियों ने किया प्रस्ताव पारित

अब शादी के समय सर्वगोत्र के लडकों को अपनी मां का तथा अपना ही गोत्र बचाना होगा। यदि लड़के की दादी का स्वर्गवास हो चुका है और लडका-लड़की के गोत्रों मे दादी के गोत्र का टकराव है तो दादी के गोत्र को विवाद नहीं माना जायेगा। यह प्रस्ताव छोटूराम पार्क में आयोजित प्रथम सर्वगोत्र महासम्मेलन में पास किया गया।

सम्मेलन मे लगभग ४० गोत्रो के मुखिया तथा प्रतिनिधियो ने भाग लिया। सम्मेलन में पारित प्रस्ताव के अनुसार यदि किसी गाव मे एक से ज्यादा गोत्र हैं और दादी के गोत्र का टकराव है तो ऐसी स्थिति मे उस गाव की पचायत और नम्बरदारी वाले गोत्र को ही छोडा जायेगा। सम्मेलन मे प्रस्ताव पारित किया गया कि समय के साथ यदि कोई व्यक्ति तेरहवीं की रस्म सातवे दिन में कराना चाहे तो करा सकता है। उसे रोका नहीं जाएगा। सम्मेलन मे लडका-लडकी की शादी के बाद सबध विच्छेद के मामले मे रखा गया प्रस्ताव पारित नहीं हो सका। इस प्रस्ताव मे यदि लडकी बिना किसी ठोस वजह के सबध विच्छेद करती है तो लडके वाला स्त्री-धन नहीं ले सकेगा। यदि लडका बिना वजह सबध विच्छेद करेगा तो उसकी दूसरी शादी पर रोक लगाई जाए। ये दोनो ही प्रस्ताव सम्मेलन मे पास नहीं हो सके। सम्मेलन में अहलावत, कादयान, जाखड, हुड्डा, दहिया, दागी, नान्दल, श्योराण, ओहल्याण, मलिक, तोमर, बुधवार, देशवाल, फोगाट, बलहारा, पघाल, गुलिया, लाठर, सहरावत, ढुल, राणा, बूरा, दलाल, नारा, छिल्लर, धनखड, राठी, सुहाग, मान, बजाड, बागड, झाज, सिन्धु, छिक्कारा, ढाका सहित लगभग ४० गोत्रो के प्रतिनिधियो ने अपने विचार रखे। हरयाणा नवयुवक कला संगम के कार्यकारी निदेशक डा जसफूल ने सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए कहा बढते गोत्र विवाद को सुलझाने के लिए ऐसे सम्मेलनो की आवश्यकता है। सम्मेलन सयोजक लेफ्टिनेंट कर्नल चन्द्रसिह दलाल ने कहा कि गाव मे कई-कई गोत्र होगए हैं। लड़के, लडकियों की शादियों में काफी दिक्कतें आरही हैं। गाव की रीति रिवाजो और नैतिक मूल्यों को ताक पर रखा जा रहा है। हरयाणा में भ्रूणहत्या सबसे ज्यादा है इसके लिए ठोस कदम उठाने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि प्रतिदिन कहीं ना कहीं विवाद हो रहे हैं इसलिए समय के साथ हमे चलना होगा। तथा इन गोत्र विवादों को सुलझाने के लिए इकट्ठा होकर समस्या को जड से समाप्त करना होगा तभी गोत्र सबधी विवादों पर काबू पाया जा सकता है। आकाशवाणी के निदेशक डी पी मलिक ने सम्मेलन को सबोधित करते हुए कहा दहेज शराब बेरोजगारी जैसी समस्याए लगातार बढती जा रही हैं। युवाओं मे सस्कारों की कमी आ रही है। शहरी व्यक्ति अपने बच्चों को अपनी सस्कृति, संस्कार, आदर्शो को नहीं बता रहे हैं। ग्रामीण समाज मे महिलाओ की स्थिति बेहद खराब है। केवल कानून कुछ नहीं कर सकता। अशोक बूरा ने अपने सबध मे कहा कि कुछ पचायते पक्षपातपूर्ण फैंसले करती हैं उन पर रोक लगानी होगी। रणसिह नान्दल ने बढते गोत्र विवाद तथा सबध विच्छेद पर विचार रखे। डॉ संतराम देशवाल ने आधुनिक युवा मे बढते व्यसनो तथा सामाजिक कुरीतियों पर रोक लगाने की अपील की। रामफल दहिया ने कहा कि शादी के समय गोत्र छिपाने से बाद मे विवाद बढते हैं। सतबीर ओहल्याण ने कहा कि मामले को आराम से सुलझायें मुद्दो का सवाल न बनाए। भीमसिह ने कहा कि सकीर्णता तथा स्वार्थ लगातार समाज को खोखला कर रहा है। प्रीतम बलहारा ने बालविवाह रोकने का प्रस्ताव रखा। राममेहर हुड्डा ने पचायतो से सहयोगात्मक रवैया अपनाने की अपील की व युद्धवीरसिह ने कहा कि समय के साथ हमे गोत्रो मे कुछ ढील देनी होगी। शेरसिह कादयान ने कहा लडका लडकी राजी होने पर पचायत शादी कराए। सतवीर कादयान ने कहा कि यदि कोई लडकी गाव में रहे तो पति की मृत्यु के बाद अपने बच्चो को अपना गोत्र दे। जगमती सागवान ने हरयाणा के बढते लिगानुपात, दहेज तथा बढती असुरक्षा का मामला उठाया। उन्होने गोत्र विवाद मे लचीला रुख अपनाने की अपील की।

नोट :-सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। विद्वानों के इस सम्बन्ध में लेख सर्वहितकारी में आमंत्रित हैं।

यमुनानगर में श्रावणी पर्व सम्पन्न

दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय वैदिक साधन आश्रम शादीपुर यमुनानगर का श्रावणी पर्व दिनांक २५-८-२००२ को धूमधाम से मनाया गया। २५-२-२००२ को वेदों के प्रकाण्ड विद्वान् आचार्य वागीश्वर तथा डॉ० आचार्य राजकिशोर एवं यज्ञप्रिय शास्त्री द्वारा ब्रह्मचारियों का उपनयन सस्कार सम्पन्न कराया गया। तत्पश्चात् आर्यप्रतिनिधिसभा हरयाणा के भजनोपदेशक श्री शेरसिह तथा इस इलाके के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री ज्योतिस्वरूप जी, प० अमरनाथ जी विशिष्ट और ज्ञानेश्वरप्रसाद जी एव गुरुकुल के ब्रह्मचारियो के मधुर भजन हुए। बाद में स्वामी आनन्दवेश जी तथा डा० कमला वर्मा जी भूतपूर्व मन्त्री के विचार सुनने को मिले। अन्त मे गुरुकुल के आचार्य डा० राजकिशोर जी ने आगन्तुक महानुभावों का गुरुकुल मे पधारने पर धन्यवाद किया। –डॉ० गेदाराम आर्य, मन्त्री

प्रवेश सूचना

आर्य कन्या गुरुकुल महाविद्यालय हसनपुर जिला फरीदाबाद (हरयाणा) मे एम ए (आचार्य) तक की शिक्षा दिलाई जाती है, कक्षा सप्तम (7th) का प्रवेश सितम्बर तक चलता रहता है, गुरुकुल मे शिक्षा शुल्क नहीं लिया जाता।

दानदाताओ को आयकर छूट की सुविधा उपलब्ध है। आप सभी महानुभावो से निवेदन है कि कन्याओ को उक्त गुरुकुल मे भेजकर शिक्षा दिलाये ताकि ये कन्याए विदुषी बनकर नागरिकता प्राप्त करके राष्ट्र की हितकारी बन सके। –विजयानन्द सरस्वती, मुख्याधिष्ठाता

आर्य कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, हसनपुर, जिला फरीदाबाद

विश्व वेद सत्रम्

–एम जी वैद्य

केरल राज्य मे त्रिशूर नाम का एक जिला है जिसमे पजल नाम का एक गाव है। वह भूरतपूजा नाम की पवित्र नदी के तट पर बसा हुआ है वह एकाएक जागतिक कीर्ति के परिवेश मे आगया। कारण दिनाक ३ अप्रैल २००२ से ७ अप्रैल तक वहा विश्व वैदिक सम्मेलन सम्पन्न हुआ। विश्व वेद सत्रम् यह उस सम्मेलन का नाम है।

सम्मेलन मे लगभग १००० प्रतिनिधियो ने भाग लिया। जिसमे १०० प्रतिनिधि केरल के बाहर के थे। कुछ विदेशो से भी आए थे। मजे की बात यह है कि कुजू महमद नाम का एक मुसलमान भी प्रतिनिधि के रूप मे आया था। वह पूर्ण पाच दिन सम्मेलन मे उपस्थित रहा। नमाज का समय होने पर नमाज पढता था। उसके नमाज के समय, सम्मेलन शान्त रहता था।

जब उनसे पूछा गया कि मुसलमान होते हुए भी आप वैदिक सम्मेलन मे कैसे आए, तो उन्होने उत्तर दिया, "मैं जानता था कि यहा ईश्वर की चेतना है।"

सम्मेलन के दौरान कुजू महमद जब कभी नमाज पढने की इच्छा व्यक्त करता था, तब आयोजक तुरत उसको नमाज पढने के लिए चटाई उपलब्ध करा देते थे। कुजू महमद ने प्रसन्नता से बताया कि सम्मेलन मे उपस्थित विशाल जन समुदाय के किसी भी व्यक्ति ने नमाज के दौरान उन्हे बाधा नहीं पहुचाई।

पजल एक छोटासा गाव है। नम्बुद्री ब्राह्मणो के केवल दस मकान हैं। उनमे से तीन ऋग्वेदी हैं, दो यजुर्वेदी हैं और पाच सामवेदी हैं। सामवेद का गायन करने वाले वैदिक पडित बहुत ही कम मिलते हैं। पजल का अभिनन्दन करना चाहिए कि वहा के नम्बुद्रियो ने सामवेद की परम्परा अक्षुण्ण कर रखी है।

इस सम्मेलन का उद्घाटन केन्द्रीय रेलमन्त्री ओ राजगोपाल, जो केरल के हैं, ने किया और सम्मेलन की अध्यक्षता आचार्य नरेंद्र भूषण ने की।

सम्मेलन मे जिन विषयो पर लेख पढे गये और चर्चा हुई, उनमे से प्रमुख विषय थे-**'वैदिककाल में प्रजातन्त्र,' 'वैदिककाल में महिलाओं की स्थिति,' वेदों के प्रस्तुतीकरण की कला,' 'वैदिक रीति रिवाजों के वैज्ञानिक पहलू'** आदि। 'वैदिककाल में महिलाओ की स्थिति' इस विषय पर की गई चर्चा मे सस्कृत विदुषी डॉ फातिमा बीबी ने भी हिस्सा लिया था।

फ्रान्स से आए विद्वान् मायकेल डानिनो ने 'सिन्धु सरस्वती सभ्यता तथा वैदिककाल से इसके सम्बन्ध' इस पर एक 'स्लाइड शो' भी आयोजित किया था। कार्यक्रम प्रस्तुत करते हुए डानिनो ने कहा कि "सिन्धु सरस्वती क्षेत्र मे हुए पुरातात्विक उत्खननो से इस बात के यथेष्ट प्रमाण मिले हैं कि सिन्धु तथा सरस्वती के किनारे वैदिक सस्कृति ही अस्तित्व मे थी।" इस 'स्लाइड शो' ने मार्क्सवादी और मैकाले भक्त इतिहासकारो के 'आर्य आक्रमण सिद्धान्त' को पूरी तरह आधारहीन सिद्ध कर दिया।

सम्मेलन में एक २५ वर्षीय तरुणी ने प्रतिनिधियो की ओर से भूरि-भूरि प्रशसा अर्जित की। उस युवती का नाम पार्वती है और वह कन्नामुकलण की निवासी है। श्रीमती पार्वती ने ऋग्वेद के चार अध्यायो का सस्वर पाठ कर उपस्थित प्रतिनिधियो को अचम्भे मे डाल दिया। शैशव अवस्था मे ही उसने अपने पितामह के पास वेद का अध्ययन किया था। पार्वती ने बताया, "मुझे आज तक किसी से भी वेदाध्ययन पर आपत्ति नहीं झेलनी पडी। वास्तव मे सभी हिन्दू सगठन और संस्थानो ने मुझे प्रोत्साहित किया है।"

वेद ज्ञान के भण्डार हैं और ज्ञान पर किसी एक वर्ग का एकाधिकार नहीं होसकता। यह अपनी पुरानी परम्परा ही है। क्षत्रिय राजाओ की शिक्षा के लिए जिन विद्याओं को निश्चित किया गया था, उनमे 'त्रयी' यानि तीन वेदो का अध्ययन भी था। बाद मे वेदाध्ययन से आर्थिक या अन्य भौतिक लाभ न मिलने के कारण अन्य वर्गों ने वेदाध्ययन करना बद किया। केवल ब्राह्मण वर्ग तक ही वह सीमित होगया।

ब्राह्मणों को तो वेदाध्ययन करना ही पडता था, कारण निर्देश था कि "ब्राह्मणेन निष्कारिणो वेदोऽध्येयः" यानि ब्राह्मण को बिना हेतु के वेद का अध्ययन करना चाहिए। आज परिस्थिति बदल गई है। महिलाएं और ब्राह्मण भी वेद का अध्ययन कर रहे हैं। नई वेदशालाओ मे इसकी व्यवस्था है। केरल के ही पिछडे वर्ग के नेता और डा अम्बेडकर पुरस्कार के विजेता एम के कुजल ने मार्क्सवादियो के विचार का खण्डन करते हुए कहा, "मार्क्सवादी, दुष्प्रचार के लिए विवेकानन्द अन्य नारायण गुरु के नामों का उपयोग करते हैं। वे स्वय क्यो नहीं वैदिक सम्मेलनो का व्याख्यानो का आयोजन करते?

सम्मेलन मे डा जोसेफ कोलायन नाम के ईसाई विद्वान्, जो अनेक भारतीय और पश्चिमी विद्यालयों मे अग्रेजी के प्राध्यापक रहे, ने भाग लिया था। अब तो पश्चिम के शास्त्रवेत्ता वेदों का महत्त्व जानने लगे हैं। ऐसे वेद हमारी बहुमूल्य धरोहर हैं।

हमें कर्मकाण्डी ब्राह्मणो का धन्यवाद करना चाहिए कि हजारो वर्षों से उन्होने वेद पठन की प्रक्रिया अप्रतिहत रखी, जिसके कारण शुद्ध स्वरूप मे आज भी वेद-संहिता उपलब्ध है। अब आवश्यकता है सभी द्वारा इस ज्ञाननिधि का अध्ययन कर, उसके तत्त्वो से सम्पूर्ण विश्व का प्रबोधन करने की।

(साभार . पजाब केसरी, ८ मई, २००२)

यज्ञ की सूचना

श्रीमद्दयानन्द वेदार्ष महाविद्यालय (गुरुकुल) गौतमनगर, नई दिल्ली का ६९वा वार्षिक महोत्सव एव २३वा चतुर्वेद पारायण महायज्ञ दिनाक २९ सितम्बर २००२ रविवार से २० अक्टूबर रविवार तक भव्य सम्मेलनो के साथ सम्पन्न होने जारहा है। यज्ञ के ब्रह्मा श्री स्वामी दीक्षानन्द जी महाराज होगे। धर्म और यज्ञप्रेमी महानुभाव पधारकर धर्मलाभ उठाए।

निवेदक आचार्य हरिदेव, फोन . ६५२५६६३, ६६११२५४

गैस का रोग क्या है ?

गैस की बीमारी बहुत दु खी करती है। मेरी लापरवाही से प्राय मुझे भी होजाती है और अनेक भाई-बहनो की शिकायत रहती है।

प्रश्न-पेट मे गैस कब और क्यो बनती है ?

उत्तर-जब पेट साफ नहीं होता है और मल आतो मे सडने लगता है तो गन्दी वायु (गैस) बनने लगती है। यदि यह गैस नीचे की ओर से अपान वायु के रूप मे निकल जाये तो ठीक है। यदि नीचे की ओर बन्द लग जाये तो फिर ऊपर की ओर गति करती है। ऊपर को पहुचकर सीने (छाती) मे और सिर में दर्द पैदा करती है। कई बार सिर चकराने लगता है और चलना मुश्किल होजाता है।

चिकित्सा-इस गन्दी गैस को दूर करने के लिये आतो मे रुके हुये मल को निकालना पडेगा। मल को बाहर निकालने के लिये खूब पानी पीओ। गर्म पानी के साथ कोई दस्तावर चूर्ण लो या गर्म-गर्म दूध मे शक्कर डालकर पीओ। नींबू का नमकीन/मीठा पानी पीओ। एक रात मुझे गैस ने परेशान करना शुरु किया। मैंने तत्काल तीन-चार माशा अजवायन को छेतकर थोडा नमक मिलाकर हल्के गर्म पानी के साथ खा लिया। थोडी देर बाद नीचे से हवा खारिज होने लगी और चैनसा मिल गया। जब तक मलाशय मे मल जमा रहेगा, गन्दे पाद आते रहेंगे। मल को बाहर निकालने का प्रयत्न कीजिये। कई लोग अनीमा करते हैं। यह भी ठीक है। जो गैस को दूर करने के लिये धूम्रपान करते हैं, यह नासमझी है। धूम्रपान करने से थोडी देर के लिये राहत मिल जाती है परन्तु फिर दु खी होना पडता है। इस प्रकार बार-बार बीडी, सिगरेट एव हुक्का पीने से खासी दमा होने का भय रहता है। धूम्रपान आतों मे खुश्की करके मल को सख्त बना देता है जिसे निकलने मे और देर लगती है। अत धूम्रपान गैस का कोई इलाज नहीं है।

उपचार-इस बीमारी से बचने के लिये हल्का सुपाच्य भोजन ग्रहण करे। अरबी, भिडी, कढी, पूरी, कचौडी आदि तले हुए पदार्थों से बचो। जब कभी खाओगे तब ही पछताओगे। दही की लस्सी, पतली दाल सब्जी से हल्का फुलका (रोटी) चबा-चबाकर खाओ। खुश्की करनेवाले पदार्थ मत खाओ तो मल आराम से बाहर निकल जायेगा और गैस नहीं बनेगी। यदि चबानेवाले दात कमजोर हैं तो दाल दलिया खाया करो। जब हम अपने खान-पान में कुपथ्य करते हैं तो बीमार होजाते हैं। किसी को कोई शंका हो हमसे समाधान कर सकता है

–देवराज आर्यमित्र, आर्यसमाज कृष्णनगर, दिल्ली-५

३६वां वैदिक सत्संग एवं ४५वां शहीदी दिवस सम्पन्न

दयानन्दमठ रोहतक। आर्यसमाज की प्रमुख कार्यस्थली दयानन्दमठ रोहतक में वैदिक सत्संग समिति द्वारा सचालित ३६वां वैदिक सत्संग समारोह १-९-२००२ को बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इसी अवसर पर हिन्दी रक्षा आन्दोलन १९५७ के दौरान शहीद हुए श्री सुमेरसिंह आर्य का ४५वा शहीद दिवस भी मनाया गया। इस सम्मेलन की अध्यक्षता आर्यप्रतिनिधिसभा हरयाणा के प्रधान एव तपोनिष्ठ वयोवृद्ध संन्यासी स्वामी ओमानन्द जी महाराज ने की। इस समारोह के सयोजक श्री सन्तराम आर्य ने बताया कि कार्यक्रम प्रातः ९ ०० बजे यज्ञ से प्रारम्भ हुआ तथा यज्ञ के बाद प्रसाद वितरण किया गया तथा स्वामी नित्यानन्द के द्वारा रचित भजनो को जिला राजस्व अधिकारी एव स्वामी नित्यानन्द के सुपौत्र चौ० महेन्द्रसिंह धनखड ने अपनी मण्डली के साथ गाकर सुनाया। कुछ भाव इस प्रकार थे **"होगये सुमेरसिह बलिदान, जग मे नाम अमर कर गये।"** बहिन दयावती आर्या तथा चौ० हरध्यानसिंह जी ने अपने-अपने गीतो व भजनो के द्वारा वातावरण को सगीतमय बना दिया।

इसके बाद श्री सुमेरसिह के शहीदी दिवस पर श्रद्धाजलि कार्यक्रम शुरु हुआ। श्री सुखदेव शास्त्री व स्वामी धर्ममुनि बहादुरगढ शुद्धि आश्रम तथा शहीद सुमेरसिह के भाई मेहरसिह आर्य ने अपने-अपने विचार रखे। इसी कडी को आगे बढाते हुए श्री राममेहर एडवोकेट ने पूरे आन्दोलन की गतिविधियो पर प्रकाश डालते हुए बताया कि महाशय बेगराज व पृथ्वीसिह बेधडक जी गाना गाते थे कि, **"दोबारा लड़ाई आई, कैरों और घनश्याम की।"** फिरोजपुर की जेल में शहीद हुये सुमेरसिह 'सत्यार्थप्रकाश' पढ रहे थे जब उनकी चिता की अग्नि जल रही थी तब पं० प्रकाशवीर शास्त्री ने कहा था कि यह चिता की अग्नि यह शिक्षा देरही है कि हिन्दी पर आच न आने पाये।

अध्यक्षीय भाषण के रूप मे आर्यप्रतिनिधिसभा हरयाणा के प्रधान, त्यागी, तपस्वी वयोवृद्ध सन्यासी स्वामी ओमानन्द जी ने कहा कि बलिदान भवन मे सभी शहीदो के चित्र लगने चाहिये। आर्यसमाजी अपने बच्चो को आर्यसमाजी नहीं बना रहे। यज्ञशाला को उन्होने दादा बस्तीराम स्मारक बताया तथा दयानन्दमठ को आर्यसमाज की छावनी करार दिया। कम से कम कीमत पर सत्यार्थप्रकाश व महर्षि की जीवनी छपवाकर घर-घर बटनी चाहिए। नये युवक आर्यसमाज मे आने चाहिए।

अन्त मे भोजन के लिए संयोजक सन्तराम आर्य ने ब्र० कृष्णदेव नैष्ठिक व आर्यसमाज साघी का प्रबन्ध सम्भालने के लिए धन्यवाद किया। सभी आगन्तुक महानुभावो का भी धन्यवाद किया। तीन वर्षों का आय-व्यय ब्यौरा सुनाया तथा ३ नवम्बर २००२ को 'विराट् युवा सम्मेलन' रोहतक मे मनाये जाने की घोषणा की। अगले ३७वे वैदिक सत्सग ६ अक्टूबर २००२ के लिए सभी को आमन्त्रित किया तथा शान्तिपाठ बोलकर सभी को ऋषिलगर मे भोजन के लिए आमन्त्रित किया। सभी ने मिलकर भोजन किया।

—रविन्द्र आर्य, कार्यालय मन्त्री, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक

योगस्थली आश्रम महेन्द्रगढ़ में ५७वां वैदिक सत्संग

दिनाक २५-८-२००२ रविवार को योगस्थली आश्रम महेन्द्रगढ़ मे हर माह की भाति वैदिक सत्सग एव बृहद्-यज्ञ महन्त आनन्दस्वरूपदास सन्त कबीरमठ सोहला की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ।

यज्ञ का कार्य प० इन्द्रमुनि आर्य पुरोहित धर्मप्रचारमन्त्री यति मण्डल दक्षिणी हरयाणा ने करवाया। यजमानो का स्थान श्री राजेश आर्य तथा श्री सरवन आर्य ने ग्रहण किया, इसके पश्चात् दूसरी सभा का आयोजन श्री ब्रह्मदत्त आर्य जे ई पब्लिक हेल्थ की अध्यक्षता मे किया गया, जिसमे बहन बिमला आर्या ने ओ३म् नाम पर सुरुचिपूर्ण भजन सुनाया। मा० वेदप्रकाश आर्य, पं० ताराचन्द आर्य, महन्त आनन्दस्वरूपदास, मा० रूपराम आर्य, महाशय गूगनराम आर्य, महाशय हरफूल आर्य तथा रामनिवास आर्य आदि ने वेदो का स्वाध्याय करने, गुरुम-पाखण्डो का खण्डन करते हुवे और महर्षि जी के आदर्शो पर चलने के लिए अपने भजन तथा उपदेशो से सभासदो को प्रसन्न-चित्त किया।

अन्त मे स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती, प्रधान यति मण्डल दक्षिणी हरयाणा ने अपने प्रवचन मे कहा कि प्रत्येक प्राणी जब तक अपने आपको पूरी तरह जान नहीं पायेगा, तब तक परमात्मा को प्राप्त नहीं कर सकता। इसलिए स्वय को जानना अति आवश्यक है।

एक बार किसी मौलवी ने महर्षि जी ने प्रश्न किया कि आप प्रत्येक व्यक्ति को गायत्री जाप करने का उपदेश देते हैं, तो क्या यह जरूरी है, तब महर्षि जी ने उत्तर दिया, कि जाप करना जरूरी नहीं है, बल्कि परमात्मा को जान लेना, जरूरी है, और कहा, स ओतश्च प्रोतश्च विभू प्रजासु। ससार मे आत्मा सबसे सूक्ष्म वस्तु है, और परमात्मा उस आत्मा मे भी विद्यमान है, इसलिए उसको विभू कहते हैं। इसलिए आत्मा के ज्ञान बिना परमात्मा का प्रकाश नहीं होता। इसके पश्चात् लगभग ५० रोगियो का उचित निदान करके नि शुल्क दवाइया दीगई।

—घीसाराम गुर्जर आर्य, ग्राम खैरोली

भक्त शीशराम आर्य की स्मृति में अथर्ववेद पारायण यज्ञ

"यज्ञो दाने तपश्चैव पावनानि मनीषिणाम्" (गीता) यज्ञ, दान और तपस्या द्वारा जीवन पवित्र होता है यह विचारशील मनुष्यो का कथन है। इस आर्ष वचनानुसार मास्टर श्री तारीफसिह आर्य ने अपने ताऊ स्वर्गीय भक्त शीशराम आर्य झडौदा कला नई दिल्ली-७२ की तृतीय पुण्य स्मृति के उपलक्ष्य पर श्री स्वामी वेदरक्षानन्द जी सरस्वती आर्ष गुरुकुल कालवा की अध्यक्षता मे अथर्ववेद पारायण महायज्ञ १ सितम्बर से ६ सितम्बर २००२ को सम्पन्न हुआ। जिसमे श्री भक्त रामधन जी आर्य, श्री राजेन्द्र जी आर्य, श्री रमेश जी आर्य आदि महानुभावो ने पुण्यात्मा के पुण्यकर्मो को स्मरण करते हुये भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित की। आचार्य चेतनदेव "वैश्वानर" भैया चामड अलीगढ ने विचार व्यक्त करते हुये कहा कि स्वर्गीय भक्त शीशराम आर्य ईश्वर, वेद, यज्ञ, महर्षि दयानन्द सरस्वती तथा मा आर्यसमाज के अनन्य भक्त थे साथ ही सदाचार और प्रेम के पुजारी थे। ग्राम तथा क्षेत्र के प्रतिष्ठित व्यक्तियो ने अथर्ववेद पारायण यज्ञ मे आहुति प्रदान की। शान्तिपाठ एव भोजन प्रसाद के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। —अनिलकुमार आर्य, झाडोदा कला, नई दिल्ली-७२

आर्यसमाज धौड़ जिला झज्जर में वेदप्रचार

दिनाक ६-७-८ सितम्बर २००२ को आर्यसमाज धौड जिला झज्जर मे आर्यसमाज के प्रधान श्री जगराम आर्य के निवास पर ठहरकर गाव मे अजयपालसिह आर्य व श्री सत्यपाल आर्य सभा भजनोपदेशको का तीन दिन वेदप्रचार हुआ। इस गाव मे सदा से आर्यसमाज का प्रचार-प्रसार होता रहा है और इस गाव का सरपच भी आर्यसमाजी है जिसका नाम धर्मवीर आर्य है। आर्यसमाज के कार्यो मे बडा लगनशील है तीनो दिन प्रचार मे महिलाओ व पुरुषो की दिन पर दिन बढोतरी होती रही। प्रचार सुनकर हर एक श्रोता प्रसन्न रहा। दिल खोलकर दान दिया, बुराइयो का खण्डन किया। दिनाक ८-९-२००२ प्रात श्री जगराम प्रधान के मकान मे यज्ञ हुआ। यज्ञ पर पाच नौजवानों ने यज्ञोपवीत धारण किये और अपनी बुराई छोडने का संकल्प लिया। गायत्री मन्त्रो से यज्ञ में आहुतियां डाली। आर्यसमाज के अधिकारियो ने अपने आर्यसमाज का वेदप्रचार दशाश सर्वहितकारी शुल्क कुल मिलाकर सभा को १०८२ रुपये की धन राशि दी।

शोक समाचार

हांसी के एक और आर्यनेता चल बसे

दिनाक २८-८-०२ को आर्यवीर दल हासी की एक आवश्यक बैठक बुलाई गयी। जिसमे ७३ वर्षीय आर्यसमाजी नेता भाई श्री सोहनलाल भयाना (उपप्रधान आर्यसमाज हासी शहर) के आकस्मिक निधन पर शोक प्रस्ताव पारित किया गया। उनका जीवन बहुत ही सरल एवं पवित्र था। वे प्रतिदिन आर्यसमाज मन्दिर मे यज्ञ करने जाया करते थे। आर्यवीरदल हासी के साथ भी उनका घनिष्ठ सम्बन्ध था। उनका अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिकरीति से वैदिक विद्वान् आचार्य रामसुफल शास्त्री जी के नेतृत्व में किया गया। वेदपाठी आर्यसमाज हासी शहर के पुरोहित प० रामकिशोर जी व आर्यसमाज जी टी रोड हासी के पुरोहित प० विजयपाल जी थे। उनकी अन्त्येष्टि मे नगर के सभी आर्यजनो के साथ पूर्व विधायक अमीरचन्द मक्कड सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति मौजूद थे। सस्कार के पश्चात् एक शोक सभा आयोजित की गयी जिसमे दिवगत आत्मा को श्रद्धाजलि अर्पित की गयी।

—आर्यवीरदल, हासी

हिन्दी दिवस पर आओ विचारं करें

१४ सितम्बर के दिन को हम हिन्दी दिवस के रूप मे मनाते हैं। किसी भी दिन की याद उस विषय की उन्नति के लिए अर्थात् बोधरात्रि-ज्ञान के लिए, श्रावणी उपाकर्म आदि स्वाध्याय के लिए किन्तु कितना एक हम विचार करते हैं ? दिन बीता कि सब भूले, ठीक वैसे ही हिन्दी दिवस के दिन भी विद्यालय महाविद्यालय अस्पताल कार्यालयादि मे भी हिन्दी कार्य किये जाने जैसे मिलने पर नमस्ते कहना, धोती कुर्ता पायजामा पहनना, चुन-चुन हिन्दी वाक्य बोलना किन्तु अगले दिन हाय ! हैलो अर्थात् हिन्दी सभ्यता सस्कृति ताक पर, सब भूले, न हिन्दी न उसका अस्तित्व। परिणाम क्या हुआ ? ये तो ठीक हुआ जैसे किसी व्यक्ति की मृत्यु पर उसके गुण अवगुण की चर्चा कर शोक दिवस मनाया गया, फिर अगले दिन उसे भुलाकर अपने-अपने कार्य मे लग जाते हैं। न फिर कोई विचारधारा न कोई भावना न कोई प्रतिक्रिया, आखिर ये कौआ स्नान हम अपनी आर्यभाषा अर्थात् राष्ट्रभाषा हिन्दी के साथ क्यो करते हैं ? अपना प्रत्येक कार्य हिन्दी मे करते हुए आइए इस समाज मे पुन हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए प्रयास करे। कारण हिन्दी ही एक ऐसी भाषा है जो हमे अपने देश धरती व सस्कृति से जोडती है। अत हम हिन्दी के विस्तार पर अपना प्रकाश डालते हैं।

हिन्दी एक ऐसी भाषा है जो कि भारत के बडे भूभाग पर बोली जाती है। दूसरे भारत ही क्या पूरे विश्व मे हिन्दीभाषा को दूसरा स्थान प्राप्त है। उर्दू भी हिन्दीभाषा की एक शैली है जोकि हिन्दी का भ्रम पैदा करती है। अत दोनों भाषा हिन्दी व उर्दू को एक ही श्रेणी मे आका जाता है। "डॉ० जयन्तीप्रसाद नौटियाल" ने सिद्ध किया कि हिन्दी जाननेवालो की सख्या अधिक है। जानने की दृष्टि से इसे ससार मे पहला स्थान प्राप्त है। (देखिए पत्रिका "राजभाषा भारती" अक्तूबर नवम्बर १९९९ अक पृष्ठ ४० पर)।

हिन्दी भारतवर्ष के अलावा बोलने व समझनेवाले अन्य कुछ देश निम्न हैं-त्रिनिडाड, ब्रितानिया, दक्षिण अफ्रीका, अमेरिका, कनाडा, पाकिस्तान, फिजी मारीशस, बंगलादेश, नेपाल आदि। इसके साथ विश्व के १३३ विश्वविद्यालयो में हिन्दी पढाई की व्यवस्था है। कइयो ने तो इसे विषय रूप मे लेकर पी-एच डी तक कर डाली हैं। हिन्दी मे कई पत्रिका विदेशो में छपती हैं उदाहरणतया फिजी मे "शान्तिदूत" नाम की पत्रिका ७० वर्षो से प्रकाशित होरही है।

ये तो सब बाह्य देश की चर्चा है अब अपने भारतवर्ष पर दृष्टि डालते हैं। यहा अधिकतर क्षेत्रो मे हिन्दीभाषा का प्रभाव है। इसके साथ हिन्दी पत्र-पत्रिकाओ को पढनेवालो की सख्या भी अधिक है। जिसकी तुलना में अन्य पत्रिकाओ का प्रभाव कम है। जिसका कारण साधारण से साधारण परिवारो मे भी इसे पढा, बोला व सुना जाता है।

हिन्दी ही एकमात्र ऐसी भाषा है जो कि सभी भाषाओ की ध्वनिया अंकित करती है। प्रत्येक भाषा के लिए सकेत सुनिश्चित है। नागरी टकण यन्त्र, मुद्रण और कम्प्यूटर आदि मे अपनी सार्थकता सिद्ध कर चुका है। मराठी, नेपाली, सस्कृत, सिंधी और कोकणी भाषाओ की लिपि पूर्व नागरी है। पजाबी, गुजराती, बगाली भी इससे मिलती है। कुल मिलाकर सभी का मूल ही हिन्दी है।

हिन्दी को प्रत्येक का आशीर्वाद प्राप्त हुआ। चाहे वह किसी भी मत-मतान्तर के लोग हो क्या हिन्दू मुस्लिम वा ईसाई इनके धर्माचार्यों ने इसकी उन्नति क लिए प्रयत्न किये। इस हिन्दी चर्चा मे हम स्वामी दयानन्द सरस्वती को नहीं भूल सकते। जिन्होने मानव समाज का उद्धार करते हुए हिन्दी को भी अमर कर दिया। अत स्वामी दयानन्द हिन्दी उद्धारक के रूप में भी जाने जाते हैं। एक समय था जब मैकाले आदि विदेशी नीतियो का शिकार हिन्दी को होना पडा। तब धर्माचार्यो ने उनका डटकर विरोध करते हुए हिन्दी शिक्षा पर बल दिया। बुद्ध ने पाली भाषा का विस्तार करते हुए पाली भाषा मे अपना ग्रन्थ लिखा, जैन धर्माचार्यो ने मागधी भाषा को अपनाया। किन्तु स्वामी दयानन्द जैसे क्रान्तिकारियों ने हिन्दीभाषा पर बल दिया। आज जो हमे हिन्दी का फैला रूप प्राप्त है वह उन्हीं धर्माचार्यों का प्रभाव है जिनमे अग्रणी नाम महर्षि दयानन्द सरस्वती का है। इसको जर्जर हालत मे स्वामी जी ने पकडी हिन्दी, जो सर्वत्र बोली व समझी जानेवाली भाषा थी। स्वामी जी ने हिन्दी को आर्यभाषा तथा अपने ग्रन्थों की रचना भी हिन्दी वा आर्यभाषा मे की, प्रत्येक ग्रन्थ के मन्त्रो के श्लोकों के अर्थ आर्यभाषा मे लिखते हैं। वे सस्कृत के महान् विद्वान् थे तथा मातृभाषा गुजराती थी फिर भी उनके उपदेश हिन्दी मे होते थे। इस प्रकार हिन्दी को ग्रहण करते हुए मानव मात्र के उपयोगी के लिए अमरग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश की रचना कर डाली। हम गर्व से कह सकते कि हिन्दी का विकास भी महर्षि दयानन्द व आर्यसमाज की देन है।

आज थोडे से दिखावे के लिए अंग्रेजी का सहारा ले लेते हैं मानो काले अंग्रेजों ने इस हिन्द की कोख से कपूतो ने जन्म लेलिया है। मेरा भाषा विरोध नहीं, किन्तु प्रथम अपनी भाषा हिन्दी को तो अपनाओ। यदि आज प्रत्येक अस्पताल, कार्यालय, विद्यालयादि मे हिन्दी में कार्य तथा प्रवेश हिन्दी मे होने लगे तो फिर से हिन्दी का प्रचलन अधिक हो जायेगा। फिर कहीं भी मातृभाषा का अपमान नहीं होगा। अत हिन्दी अपनाओ। सर्वप्रथम अपने घरो, दुकानों और कार्यालयों आदि स्थानो पर नामपट्टिका (साइन बोर्ड) हिन्दी मे करे। अत वास्तव में हिन्दीप्रेमी हैं तो लम्बे प्रवचनों को छोडकर अपने आप से इसकी शुरुआत करे। तभी हमारा हिन्दी दिवस मनाना सफल रहेगा।

—अविनाश शास्त्री, सभा भजनोपदेशक, आ.प्र.स. हरयाणा, रोहतक

ग्रामीणों के कड़े विरोध के बाद शराब का ठेका हटाया

शाहपुर कलां-सुनपेड़ मार्ग पर सोमवार को खुला था ठेका

बल्लभगढ। ग्रामीणो के कडे विरोध के चलते शाम बल्लभगढ उपमण्डल के गाव सहापुर कला-सुनपेड मार्ग पर खोले गए देसी शराब के ठेके को हटा लिया गया। यह ठेका सोमवार को खोला गया था। ठेका खुलने के बाद से शाहपुर कला, सुनपेड व अन्य समीपवर्ती गावो के लोगो मे भारी रोष था।

शाहपुर कला गाव के लोग मगलवार की सुबह बल्लभगढ के डीएसपी राजसिह मोर से मिलकर इसे हटाने की माग कर चुके थे। डीएसपी ने इस मामले मे गाव के लोगो को मदद का आश्वासन दिया था। गाव के लोग इस मुद्दे पर जिला उपायुक्त से मिलने की योजना बना ही रहे थे कि शाम गांव के गुस्साए लोग पूर्व सरपच सुरेशचन्द के साथ ठेके पर पहुच गए। गाव के लोगों का विरोध देखते हुए सचालक ने ठेका बद करने का फैसला लिया।

पूर्व सरपच सुरेशचन्द ने बताया कि ठेके मालिक ने गाव के लोगो के विरोध को देखते हुए शाम को अपना सामान हटा लिया। उन्होने कहा कि अगर यहा फिर से ठेका खोलने का प्रयास किया गया, तो पूरा गाव एकजुट होकर जिला उपायुक्त से मिलेगा।

गांव के लोगो ने बताया कि शाहपुर कला-सुनपेड मार्ग पर आगरा नहर के समीप सोमवार को यह ठेका शुरु किया गया था। इस मार्ग पर से शाहपुर कला गाव के ज्यादातर बच्चे पढने के लिए सुनपेड गाव मे स्थित स्कूल मे जाते हैं।

गांव मे पाचवीं कक्षा तक का ही स्कूल है। इस कारण छात्र-छात्राओ को सुनपेड ही जाना पडता है। ठेका खुलते ही गाव के लोगों ने इसका विरोध कर दिया था।

(साभार : अमर उजाला)

आर्यसमाज मोहनपुर डा० जाट दूलोठ जिला महेन्द्रगढ़ का चुनाव

प्रधान-श्री रामनाथ मन्त्री, श्री भगवानसिह, कोषाध्यक्ष-श्री बलवीर, उपमन्त्री-श्री लीलाराम, पुस्तकालयाध्यक्ष-श्री कैलाशचन्द्र।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ०१२६२-७६८७४, ७७८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ०१२६२-७७७२२) से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३ सृष्टिसंवत् १,९६,०८,५३,१०३
पंजीकरणसंख्या टैक/85-2/2000 विक्रमसंवत् २०५९
☎ ०१२६२-७७७२२ दयानन्दजन्माब्द १७९

प्रधानसम्पादक : यशपाल आचार्य, सभामन्त्री सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री
वर्ष २६ अंक ४१ २१ सितम्बर, २००२ वार्षिक शुल्क ८०) आजीवन शुल्क ८००) विदेश में २० डॉलर एक प्रति १.७०

भारत के प्रमुख क्रान्तिकारियों पर महर्षि दयानन्द का प्रभाव

भारत के स्वाधीनता संघर्ष मे क्रातिकारियो की भूमिका उल्लेखनीय रही है। आर्यसमाज तथा महर्षि दयानन्द की विचारधारा का प्रभाव प्रत्यक्ष रूप से इन क्रातिकारियो पर पड़ा। ऐसे क्रांतिकारियों की एक लम्बी शृंखला है, जिन्होंने स्वराज्य की उत्कृष्टता तथा स्वदेशाभिमान का पाठ महर्षि दयानन्द की पाठशाला मे ही पढ़ा था। महर्षि दयानन्द की विचारधारा से प्रभावित प्रमुख क्रांतिकारियों में श्याम जी कृष्ण वर्मा, लोकमान्य तिलक, विपिन चन्द्रपाल, लालालाजपत राय, पडित रामप्रसाद बिस्मिल, सरदार भगतसिंह, राजगुरू, सुखदेव, यशपाल, चन्द्रशेखर आजाद, ठाकुर रोशनसिंह, विष्णुशरण दुबलिश, भाई परमानन्द, पंडित जयचन्द्र, भूपेन्द्रदत्त, धन्वन्तरी, लाला काशीराम, लेखराम, विनायक दामोदर सावरकर, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, सरदार अजीतसिंह, पृथ्वीसिह, भाई बालमुकुन्द, लाला हरदयाल, शहीद यतीनदास, राजेन्द्र लाहिड़ी, गणेश दामोदर सावरकर कन्हयीलाल तथा वारीन्द्रकुमार घोष आदि उल्लेखनीय है।

महर्षि दयानन्द ने ब्रिटिश शासन को उखाड फेंककर स्वराज्य की स्थापना की सुस्पष्ट उद्घोषणा की। उन्होने भारतीय नवजागरण काल अर्थात् धार्मिक अथवा सामाजिक सुधारवादी आन्दोलन के युग में भी स्वराजय को प्रथम आदर्श घोषित किया। स्वराज्य का यह आदर्श न केवल नवजागरण काल मे क्रांतिकारी रूप मे प्रकट हुआ, वरन इस आदर्श ने उदारवादियों के लिये दूरगामी, उग्रवादी तथा क्रांतिकारियो के लिए तात्कालिक तथा गाधीवादी युग के लिए आन्दोलन के आधार रूप मे स्पष्ट संदेश दिया।

महर्षि दयानन्द की विचारधारा से प्रभावित प्रमुख क्रांतिकारियो में श्याम जी कृष्ण वर्मा, लोकमान्य तिलक, विपिनचन्द्र पाल, लाला लाजपतराय, पंडित रामप्रसाद बिस्मिल, सरदार भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव, यशपाल, चन्द्रशेखर आजाद, ठाकुर रोशनसिंह, विष्णुशरण दुबलिश, भाई परमानन्द, पंडित जयचन्द, भूपेन्द्रदत्त, धन्वन्तरी, लाला काशीराम, लेखराम, विनायक दामोदर सावरकर, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, सरदार अजीतसिंह, पृथ्वीसिह, भाई बालमुकुन्द, लाला हरदयाल, शहीद यतिनदास, राजेन्द्र लाहिडी, गणेशदामोदर, सावरकर, कन्हायीलाल तथा वारीन्द्रकुमार घोष आदि उल्लेखनीय हैं।

महर्षि दयानन्द तथा आर्यसमाज ने जनता में स्वशासन की आकाक्षा तथा राष्ट्रीय चेतना उत्पन्न की। स्वाधीनता सघर्ष मे गाधीयुगीन आन्दोलन ने अछूतोद्धार मद्य निषेध, स्त्री शिक्षा, सामाजिक समरसता, कुरीति निवारण, स्वदेशी एव राष्ट्रीय शिक्षा आदि के आग्रह के रूप में जिस मार्ग का अवलम्बन किया, उसकी आधार भूमि लगभग अर्द्धशतक पूर्व महर्षि दयानन्द ने ही तैयार की थी।

स्वामी दयानन्द सरस्वती के विचारों तथा मन्तव्य का भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन पर व्यापक प्रभाव पडा है। स्वराज्य के सर्व प्रथम उद्घोष, स्वदेशी तथा स्वाभिमान के सन्देश, समाज सुधार, दलितोद्धार, सामाजिक एकता के स्थापत्य तथा अस्पृश्यता के निवारण आदि सम्बन्धी उनके विचारो को देश के प्राय सभी वर्गों तथा राष्ट्रवादियो द्वारा स्वीकार किया गया। इस प्रकार ये सुस्पष्ट होता है कि केवल आन्दोलन की क्रातिकारी धारा पर ही नहीं, अपितु राष्ट्रीय आन्दोलन के पल प्रतिपल संघर्ष पर महर्षि दयानन्द के व्यक्तित्व तथा कृतित्व का सुस्पष्ट प्रभाव पडा।

क्रांतिकारी आन्दोलन के समकालीन उग्रवादी आन्दोलन के प्रमुख सूत्रधार, 'लाल, बाल, पाल', के नाम से सुविख्यात लाला लाजपत राय, बाल गगाधर तिलक तथा विपिन चन्द्रपाल के स्वराज्य सम्बन्धी आग्रह पर महर्षि दयानन्द का ही प्रभाव था। इसी कारण उन्होने कलकत्ता काग्रेस के अधिवेशन (१९०६) मे राष्ट्रीय शिक्षा स्वदेशी तथा स्वराज्य का समर्थन किया।

कांग्रेस के इतिहास लेखक डॉ पट्टाभि सीतारमैया के शब्दो मे -"स्वराज्य के जो स्वर १९०६ मे कांग्रेस के मच पर मुखरित हुये, उसकी सम्पूर्ण योजना और कार्यक्रम आर्यसमजा के प्रवर्त्तक स्वामी दयानन्द सरस्वती ने १८७४ मे ही देशवासियो को दे दी थी।"

भारतीय राष्ट्रवाद के सबध में क्रांतिकारियो की जो स्पष्ट सोच और दिशा थी उसके मूल मे महर्षि दयानन्द के स्वरांज्य तथा स्वाधीनता सम्बन्धी उग्र विचार थे।

इन्द्र विद्यावाचस्पति के अनुसार 'सन् १८५७ की क्राति के पश्चात् उन महापुरूषो की सूची मे, जिन्हे हम उस क्रान्ति के मानसिक, सामाजिक **और सांस्कृतिक उत्तराधिकारी कह सकते हैं, पहला नाम महर्षि दयानन्द** सरस्वती का है।'

महर्षि दयानन्द क्रातिकारी आन्दोलन के अग्रदूत थे। उनके योगदान की समीक्षा करते हुए इन्द्र विद्यावाचस्पति ने लिखा है कि "राजनीति मे स्वामी दयानन्द को नवीन राष्ट्रीयता का अग्रदूत कहे तो अत्युक्ति न होगी, उन्होंने अपने मुख्य ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश मे स्वराज्य, स्वदेशी स्वभाषा और स्वदेश के पक्ष मे जो स्पष्ट विचार प्रकट किये थे, वह भारत की राजनीति मे १९०१ से पहले व्यक्त रूप में नहीं आये थे, व्यावहारिक रूप मे उनका प्रयोग तो बग विच्छेद के पश्चात् ही हुआ है।"

महर्षि दयानन्द स्वष्ट रूप से स्वराज्य के प्रबल समर्थक थे। वे पुनर्जागरणकालीन सुधाराकों तथा उदारवादियों के समान केवल सुधारवाद अथवा औपनिवेशक शासन के पक्षधर

(शेष पृष्ठ दो पर)

वैदिक-स्वाध्याय

हे व्रजवाले !

न घेम् अन्यत् आपपन वज्रिन् अपसो नविष्टौ।
तवेदु स्तोमं चिकेत।

ऋ० ८।२।१७।। साम०उ० १।२।३।। अ० २०।१८।२।।

शब्दार्थ—(**वज्रिन्**) हे वज्रवाले! मैं (**अपसः**) कर्म के (**नविष्टौ**) प्रारम्भ में (**अन्यत् घ ईं**) अन्य किसी को भी (**न आपपन**) नहीं स्तुति करता (**तव इत् उ**) तेरी ही (**स्तोम**) स्तुति करना (**चिकेत**) जानता हू।

विनय—हे जगत् के ईश्वर! परममगलकार! मैं जो भी कोई नया कार्य शुरु करता हू, नया यज्ञकर्म नया शुभकर्म प्रारम्भ करता हू तो वह सब तेरा ही नाम लेकर, तेरे ही भरोसे तेरे ही बल पर शुरु करता हू। अपने हरेक कार्य का मंगलाचरण मैं तेरे ही भरोसे तेरे ही बल पर शुरु करता हू। अपने हरेक कार्य का मगलाचरण मैं तेरे ही आगे झुककर, तेरी ही मानसिक वदना करके, करता हू। हे वज्रवाले! मैं तेरे सिवाय किसी भी अन्य के आगे झुककर मगल नहीं मना सकता। क्योंकि वह पाप से निवृत्त करनेवाला वज्र तो तेरे ही हाथ मे है—अनिष्टों, अमगलों और विघ्नों का वास्तव मे वर्जन करानेवाला वज्र तेरे हाथ मे है। तो हे वज्रधारिन्! मैं किसी अन्य की स्तुति करके क्या पाऊगा? जो कार्य सचमुच एकमात्र तुम्हारे ही आश्रय से किये जाते हैं और जो मनुष्य सचमुच अपना कर्म सर्वथा तुझे अर्पण करके करते हैं तो वहां पराजय, असफलता या असिद्धि नाम की कोई वस्तु ही नहीं रह जाती। यह बात कइयो को जरा विचित्र सी लगेगी, किन्तु सर्वथा सत्य है। सचमुच तब सब मगल ही मंगल होजाता है। यह सब तेरे वज्र का प्रताप है। जो लोग केवल तेरा ही आश्रय लेकर कार्य शुरु करते हैं, सर्वथा त्वदर्पित होते हैं उनके पास निरन्तर जागता हुआ तेरा वज्र उनकी रक्षा करता है। अत हे परम मगलकारी वज्रिन! इस ससार मे तू ही एकमात्र स्तुति करने योग्य है। मैं तो तेरी ही स्तुति करना जानता हू। यदि मैं किसी धनाढ्य पुरुष की स्तुति करू तो शायद वह मुझे मेरे कार्य के लिए धन दे देगा, किसी प्रभावशाली पुरुष की विनती करू तो शायद मेरे लिये उसका प्रभाव बडा सहायक हो जाएगा, परन्तु हे जगत् के ईश्वर! मैं जानता हूं कि यह सब तभी होगा जबकि तेरी ऐसी इच्छा होगी। ससार के सब प्राणी, सब अमीर-गरीब, छोटे-बडे सब तेरे ही बनाये हुए पुतले हैं। ससार के बडे से बडे पुरुष भी तेरे ही आश्रय पर, तेरी ही इच्छा पर, जीवित हैं, तो मैं उन पुरुषो का आश्रय लेकर क्या करूगा? जब तुझे अभीष्ट होता है कि किसी कार्य मे धन, जन, बुद्धि आदि की सहायता मिले तो वह कहीं न कहीं से मिलती ही है। बल्कि हम देखते हैं कि धन, जन, मान आदि पाने के लिये जिन पुरुषों का हम भरोसा करते हैं, निरर्थक खुशामद करते हैं, वहा से कुछ भी नहीं मिलता, किन्तु किसी दूसरी ही आशातीत जगह वैसी सब सहायता मिल जाती है। अत मैं तो अपने कार्यों के प्रारम्भ मे किसी भी अन्य का भरोसा नहीं करता, मैं तो केवल तेरा ही पल्ला पकडना जानता हूं, मैं तो तेरी ही स्तुति करना जानता हू।

आर्यसमाज के उत्सवों की सूची

१	आर्यसमाज दौंगडा अहीर जिला महेन्द्रगढ	२३ से २४ सितम्बर ०२
२	वेदप्रचार मण्डल कालावाली (सिरसा)	२३ से २६ सितम्बर ०२
३	आर्यसमाज बालन्द जिला रोहतक	२८ से २९ सितम्बर ०२
४	श्रीमद्दयानन्द वेदार्ष महाविद्यालय गौतमनगर नई दिल्ली (वार्षिक समारोह एव चतुर्वेद ब्रह्मपारायण महायज्ञ एव सत्यार्थ भूत्यज्ञ)	२९ सित० से २० अक्तू० ०२
५	आर्यसमाज कोसली जिला रेवाडी	२७ से २९ सितम्बर ०२
६	आर्यसमाज कोसली जिला रेवाडी	२७ से २९ सितम्बर ०२
७	आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ (झज्जर)	२६ सित० से २ अक्तू० ०२
४	आर्यसमाज कौण्डल जिला फरीदाबाद	२-३ अक्तू० ०२
५	आर्यसमाज माडल कालोनी यमुनानगर	१८-२० अक्तूबर ०२
५	आर्यसमाज बेगा जिला सोनीपत	१८-२० अक्तूबर ०२
५	आर्यसमाज सालवन जिला करनाल	१८-२० अक्तूबर ०२
५	आर्यसमाज बहल जिला भिवानी	१८-२१ अक्तूबर ०२
६	आर्यसमाज झज्जर रोड बहादुगढ (झज्जर)	१९-२० अक्तूबर ०२
७	आर्यसमाज बीगोपुर डा० धोलेडा (महेद्रगढ)	१९-२० अक्तूबर ०२
८	आर्यसमाज गगसीना जिला करनाल	१६-१८ अक्तूबर ०२
९	आर्यसमाज कालका जिला पचकूला	२३-२७ अक्तूबर ०२
१०	आर्यसमाज शेखुपुरा खालसा जिला करनाल	२५-२७ अक्तूबर ०२
११	कन्या गुरुकुल पचगाव जिला भिवानी	२६-२७ अक्तूबर ०२
१२	आर्यसमाज मोखरा जिला रोहतक	३० अक्तू० से १ नव० ०२
१३	आर्यसमाज कासण्डा जिला सोनीपत	२ से ४ नवम्बर ०२
१३	आर्यसमाज खरड जि० रोपड़ (पजाब)	१६-१७ नवम्बर ०२

—रामधारी शास्त्री, सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता

क्षेत्रीय आर्य महासम्मेलन २० अक्तूबर, २००२ को डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, थर्मल कालोनी पानीपत में

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा हरयाणा की ओर से क्षेत्रीय आर्य महासम्मेलन २० अक्टूबर, २००२ को डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, थर्मल कालोनी, पानीपत में प्रात ९ बजे से १ बजे तक बडी धूमधाम से मनाया जारहा है, जिसको सभा प्रधान पदमश्री ज्ञानप्रकाश जी चोपड़ा सम्बोधित करेंगे। सम्मेलन मे आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान् तथा भजनोपदेशक भी अपना सारगर्भित उपदेश देंगे। डी ए वी पब्लिक स्कूल, थर्मल कालोनी की नवनिर्मित यज्ञशाला का सभाप्रधान उद्घाटन करेगे। ध्वजारोहण भी विधिपूर्वक होगा। डी ए वी स्कूल के बच्चे आर्यसमाज तथा महर्षि स्वामी दयानन्द पर भजन प्रस्तुत करेगे। भिन्न-भिन्न विषयो मे प्रथम आए छात्राओ को पुरस्कृत किया जाएगा। आर्यसमाज के अधिकारियों तथा सुयोग्य सदस्यों को सभा सम्मानित करेगी। श्री जगदीशचन्द्र जी 'वसु' वेदप्रचार अधिष्ठाता यज्ञ के ब्रह्मा होगे। समारोह की अध्यक्षता उपसभा प्रधान डॉ० राजकुमार चौहान करेगे तथा इसके सयोजक श्री एम एल गर्ग, प्राचार्य डी ए वी पब्लिक स्कूल, थर्मल कालोनी होंगे। मंच का सचालन सभामन्त्री श्री चमनलाल आर्य करेंगे। डा० सत्यवीरसिह, श्री के पी सिह, श्री गुलशन पाहवा तथा श्रीमती एस. रुदरी समारोह का सारा प्रबन्ध करेगे।

सभी भाई-बहनो से नम्र-निवेदन है कि वे २० अक्टूबर २००२ को प्रात ९ बजे डी ए वी पब्लिक स्कूल, थर्मल कालोनी, पानीपत मे अवश्यमेव पहुचे तथा विद्वानों के विचार सुने और समारोह को सफल बनाए।

—चमनलाल आर्य, महामन्त्री

भारत के प्रमुख क्रांतिकारियों पर........ (प्रथम पृष्ठ का शेष)

नहीं थे।

भारत की दुदर्शा, गुलामी तथा हीनता पर आसू बहाते हुए दु खी हृदय से ऋषिवर लिखते रहे कि "विदेशियो के आर्यवर्त्त मे राजा होने के कारण आपस की फूट, मतभेद, ब्रह्मचर्य का सेवन न करना, विद्या न पढना-पढाना, बासल्यावस्था मे अस्वयवर विवाह, विषयासक्ति, मिथ्या भाषणादि कुलक्षण वेद विद्या का अप्रचारादि कर्म हैं, तभी तीसरा विदेशी आकर पच बन बैठता है।"

इसीलिए स्वामी दयानन्द ने स्पष्ट रूप से भारत मे अग्रेजी शासन के अन्त का आह्वान किया। उन्होंने सम्राट के प्रति निष्ठा, भक्ति तथा ब्रिटिश साम्राज्य के प्रति श्रद्धा रखने वालो को सदैव तिरस्कृत किया। यहा तक कि वेदभाष्यो मे भी उनके दर्शन का क्रातिकारी स्वरूप स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है।

वास्तव में विदेशी राज्य की समालोचना करना परम आस्तिक, प्रखर, देशभक्त, निज गौरव तथा स्वदेशाभिमान के पुतले, परम साहस के प्रतीक, भारत माता के सच्चे सपूत दयानन्द के अतिरिक्त और किसका काम हो सकता था? उस ऋषि ने ही सर्वप्रथम उस काल में 'सार्वभौमिक चक्रवर्ती साम्राज्य' के रूप मे आर्यों के प्राचीन गौरव, महिमा एव समृद्धि का वर्णन कर भारतीयों के हृदय, मन तथा मस्तिष्क को स्वतत्रता, स्वाभिमान एव गौरव प्राप्ति की दिशा में प्रखर चिन्तन के लिए प्रेरित किया। सत्यार्थप्रकाश के ११वें समुल्लास के अन्त मे महर्षि ने आर्य राजाओ की नामावली देकर आर्यों को उनके प्राचीन गौरव की झलक दिखाते हुए उसकी पुन प्राप्ति के लिये मर मिटने की तमन्ना व तीव्र अभिलाषा परोक्ष रूप मे उत्पन्न की थी।

महर्षि दयानन्द सरस्वती अपने वेदभाष्य में लिखते हैं-'क्षत्राय पिन्वस्व' अर्थात् हे महाराजाधिराज ब्रह्मन्! अखण्ड चक्रवर्ती राज्य के लिये शौर्य, धैर्य, नीति, विनय, पराक्रम और बलादि उत्तम गुणयुक्त कृपा से हम लोगों को यथावत् पुष्ट कर। अन्य देशवासी राजा हमारे देश मे कभी न हों तथा हम लोग कभी पराधीन न हो।

महर्षि की इन्हीं विचारधाराओं के कारण ही भारत के क्रातिकारी आन्दोलन व प्रमुख क्रातिकारियों पर महर्षि दयानन्द सरस्वती की शिक्षाओं और आर्यसमाज का अत्यधिक प्रभाव पडा।

रीडर हिन्दी विभाग जे.एस. हिन्दू (पी.जी.) कालिज अमरोहा
(साभार-आर्यावर्त केसरी १ से १५ जुलाई २००२)

आचार्य यशपाल मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

११ अक्टूबर को हरयाणा राजभवन में सम्मानित होंगे

भारत स्काउट संघ गाइड एसोसियेशन का हरयाणा की तरफ से आचार्य यशपाल को आजीवन सदस्य मनोनीत किया गया है। १४ सितम्बर को चण्डीगढ मे शिक्षा विभाग हरयाणा के अधिकारियो की मीटिग हुई, बैठक में शिक्षा के क्षेत्र में आचार्य यशपाल द्वारा किये गये कार्यो की सराहना करते हुये तथा छात्र-छात्राओ को कैम्प (शिविरो) मे भाग लेने के लिए प्रेरणा का काम करने निमित्त चौ० राजेन्द्रसिंह जी दहिया जिला शिक्षा अधिकारी सोनीपत ने आचार्य यशपाल के नाम की प्रस्तावना की जिसे हरयाणा स्काउट गाइड संघ का आचार्य यशपाल को आजीवन सदस्य मनोनीत कर दिया, ११ अक्टूबर को हरयाणा राजभवन में राज्यपाल महोदय के द्वारा सम्मानित कर सम्मान प्रमाण-पत्र भी प्रदान किया जायेगा।

—शशि महता, सयोजक, स्काउट गाइड, सोनीपत

"वैदिक सत्संग समिति दयानन्दमठ रोहतक का सैंतीसवां वैदिक सत्संग समारोह"

दयानन्दमठ रोहतक। आर्यसमाज की प्रमुख कार्यस्थली दयानन्दमठ, गोहानारोड, रोहतक मे पिछले तीन वर्ष से वैदिक सत्सग मनाया जारहा है। इस बार ०६ अक्टूबर, २००२ रविवार को सैंतीसवा सत्सग मनाया जारहा है। सत्संग समारोह के सयोजक श्री सन्तराम आर्य ने बताया कि यह सत्सग सामाजिक कुप्रथाओं, धार्मिक अन्धविश्वासो, छुआछूत, अशिक्षा, अन्याय एव शोषण के बारे मे वैदिकधर्म की मान्यताओ का प्रचार-प्रचार करने हेतु प्रारम्भ किया गया है। उन्होने बताया कि इस सत्सग मे आध्यात्मिक विषय बहुत महत्त्वपूर्ण रखा गया है। विषय का नाम है - सस्कार क्या होते हैं ? आध्यात्मिक विषय की व्याख्या के लिए इस बार वैदिक प्रवक्ता, व्याकरणाचार्य व आर्ष गुरुकुल एव दयानन्द सन्यास आश्रम गाजियाबाद (उ०प्र०) के आचार्य स्वामी चन्द्रवेश जी को आमन्त्रित किया गया है। सभी पाठकों की जानकारी के लिए निवेदन करते हुए सयोजक श्री आर्य जी ने बताया कि जितना गम्भीर एवं महत्त्वपूर्ण विषय है, उतने ही उच्च स्तर के वैदिकविद्वान् को बुलाया गया है। उन्होने बताया कि प्रात ९-०० बजे यज्ञ से कार्यक्रम शुरु होगा तथा यज्ञ के बाद यज्ञ-प्रसाद व भक्तिगीतो का कार्यक्रम चलेगा तथा ११-०० बजे से १२-०० बजे तक मुख्य विषय पर चर्चा होगी। १२-०० बजे दोपहार को सभी मिलबैठकर (ऋषिलगर) भोजनालय मे खाना खायेगे जिसकी व्यवस्था वैदिक सत्सग समिति द्वारा की जायेगी। भोजन व्यवस्था को ब्र० कृष्णदेव नैष्ठिक एव आर्यसमाज साघी के पदाधिकारी सभालेगे। सभी आर्यसज्जनो, बहनो एव भाइयो से निवेदन है कि दल-बल सहित अपने परिवार के सभी सदस्यो के साथ पधारे। बहिने केसरिया रग का परिधान तथा आर्यबन्धु एव आर्य युवक केसरिया पगडी बाधकर समारोह मे भाग लेकर धर्मलाभ उठावे।

—रविन्द्र आर्य, कार्यालय मत्री, सार्वदेशिक आर्ययुवक परिषद, दयानन्दमठ, रोहतक

यज्ञ का आयोजन

पूर्व वर्षों की भांति इस वर्ष भी वैद्य धर्मपाल यज्ञ समिति खानपुर कला राष्ट्र कल्याण व इष्टमित्रो की मगलकामना हेतु २ अक्टूबर २००२ से १३ अक्टूबर २००२ तक अथर्ववेद ब्रह्मपारायण यज्ञ करवा रही है। पूर्णाहुति १३-१०-२००२ को प्रात ८ बजे होगी। इस यज्ञ के ब्रह्मा वैदिकविद्वान् स्वामी वेदरक्षानन्द जी सरस्वती आर्ष महाविद्यालय गुरुकुल कालवा (जीन्द) होगे। इस शुभ अवसर पर प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशको को भी वेदप्रचार हेतु आमन्त्रित किया गया है। इसके अतिरिक्त अनेक राजनैतिक एव प्रतिष्ठित, सामाजिक व्यक्तियों को भी आमत्रित किया गया है। यज्ञ मे अनेक सम्मेलनो का भी आयोजन होगा। आपसे सादर प्रार्थना है कि सपरिवार यज्ञ मे सम्मिलितत होकर विद्वानो के उपदेश से लाभ उठावे।

निवेदक : वैद्य धर्मपाल यज्ञ समिति (रजि०), खानपुर कला (सोनीपत)

आचार्य यशपाल १८ सितम्बर को मॉरीशस की यात्रा पर रवाना

आर्यसमाज के वयोवृद्ध नेता श्री मोहनलाल जी मोहित, जिन्होंने मॉरीशस मे महर्षि दयानन्द की विचारधारा का आजीवन प्रचार किया है, अनेक आर्यसमाजो की स्थापना की है, आर्यसमाज का प्रचार करते हुये मोहित जी अपने जीवन के सौ वर्ष २२ सितम्बर को पूर्ण कर रहे हैं, मॉरीशस के सभी आर्यसमाज श्री मोहनलाल जी मोहित की जन्मशताब्दी मना रहे है। इस कार्यक्रम मे भाग लेने के लिए सभामन्त्री जी १८ सितम्बर से २४ सितम्बर तक मॉरीशस की यात्रा पर रहेगे। **—सुरेन्द्र शास्त्री, उपमन्त्री, आ.प्र स हरयाणा**

हरयाणा राष्ट्रभाषा समिति की २६ सितम्बर को आवश्यक बैठक

हरयाणा राष्ट्रभाषा समिति की एक महत्त्वपूर्ण बैठक २९ सितम्बर २००२ को दयानन्दमठ गोहानारोड रोहतक मे प्रात ११ बजे होगी। बैठक मे हरयाणा राज्य में अग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त कराने तथा हिन्दी विकास के कार्यक्रम की पूरी रूपरेखा तैयार की जाएगी।

अन्य विचार-(१) जिलेवार समितियो का गठन, (२) राज्य स्तरीय सम्मेलन की तिथि निश्चित करना, (३) जिलेवार बैठको की तिथि निश्चित करना, (४) राज्य कार्यकारिणी का विस्तार करना।

प्रत्येक नगर व गाव के आर्यसमाज के अधिकारियो से विनम्र निवेदन है कि अपने आर्यसमाज से एक या दो सदस्यो को जो राष्ट्रभाषा समिति मे कार्य करना चाहते हैं, *अवश्य* भेजे।

राष्ट्रभाषा करे पुकार - मुझको दो मेरा अधिकार।
आओ भाषा की शान बढाए - आओ मां को सम्मान दिलाए।।

निवेदक

संरक्षक	अध्यक्ष	सयोजक
स्वा० ओमानन्द सरस्वती	**आचार्य यशपाल**	**श्यामलाल**

राष्ट्र सैनिक सम्मान एवं श्रीकृष्ण जन्माष्टमी समारोह सम्पन्न

आर्यसमाज सान्ताक्रुज (प०) मुम्बई द्वारा २५ अगस्त से १ सितम्बर २००२ तक वेदप्रचार सप्ताह मनाया गया। इस उपलक्ष्य मे रविवार १ सितम्बर, २००२ को आर्यसमाज सान्ताक्रुज के विशाल सभागृह मे श्रीकृष्ण जन्माष्टमी समारोह के अन्तर्गत सम्मान राष्ट्रहित मे शहीद सैनिको के बच्चो के शिक्षण व सपोषण हेतु एकत्रित सहायता धनराशि रुपये १ लाख २१ हजार सेना के अधिकारियो के एक प्रतिनिधि मडल मे कर्नल नीरज मेहरा, कमाण्डर अवतारकृष्ण बब्बर व मेजर पाटिल को सादर समर्पित किया गया। आर्यसमाज द्वारा उनका स्वागत किया गया। शहीदो को श्रद्धाजलि अर्पण करते हुए श्रीमती अदिति सेठ ने देशभक्ति पर गीत गाकर सबके मन को छू लिया।

इसी सदर्भ मे २६ अगस्त से ३१ अगस्त, २००२ तक रात्रिकालीन सत्र मे प० आशाराम आर्य (भजनोपदेशक, गाजियाबाद) के सुमधुर भजनोपदेशक तथा बालक योगेश आर्य के भजन हुए। आचार्य श्री चन्द्रदेव जी के अध्यात्म से सम्बन्धित वेदमन्त्रो के आधार पर अमृतमय सारगर्भित प्रवचन हुए। आरा (बिहार) से पधारे हुए प० सियाराम जी निर्भय ने समसामयिक परिस्थिति का वर्णन करते हुये अपने काव्यगान से दर्शको का मन मोह लिया।

आचार्य चन्द्रदेव जी ने अपने वक्तव्य मे कहा कि "जो अपने लिए नहीं केवल परिवार समाज के लिए नहीं अपितु पूरी मानवता के लिए जीते हैं, वास्तव मे वही महापुरुष होते हैं। योगिराज श्रीकृष्ण जी महाराज ने धर्म की स्थापना के लिए राष्ट्र यज्ञ मे अपने को समर्पित किया।" डॉ० सोमदेव शास्त्री (प्रधान आर्यसमाज सान्ताक्रुज, मुम्बई) ने अपने वक्तव्य मे कहा कि-योगेश्वर श्रीकृष्ण का चरित्र आप्त पुरुषो जैसा था। उन्होंने प्रभावी शब्दो मे अनेक ग्रन्थो के प्रमाण प्रस्तुत करते हुए भगवान् श्रीकृष्ण को आदर्श महापुरुष बतलाया।

डॉ० सत्यपाल सिह (आई जी मुम्बई) ने अपने ओजस्वी भाषण मे कहा कि-डॉ० सोमदेव जी शास्त्री के नेतृत्व मे आर्यसमाज सान्ताक्रुज के उत्सव अत्यधिक रोचक होरहे हैं। पिछले पाच हजार वर्ष मे कोई ऐसा व्यक्ति नहीं जिसकी भगवान् श्रीकृष्ण के साथ तुलना की जा सके। यतो धर्मस्ततो कृष्ण श्रीकृष्ण ने दुष्ट राक्षसो का विनाश करके लोगो को अभय प्रदान किया। आज आवश्यकता इस बात की है कि लोगो का भय दूर करके अभय बनाये तथा अन्याय से जूझने का सामर्थ्य प्रदान करे। श्रीकृष्ण को आदर्श पुरुष मानते हुए अपने घरो मे श्रीकृष्ण के आदर्श को स्थापित करे।

सुख-शान्ति कैसे मिले ?

ससार के प्रत्येक प्राणी के मन मे सुख-शान्ति की उत्कट इच्छा रहती है। अपनी इस इच्छा के अनुरूप वह साधन-सामग्री जुटाता है किन्तु क्या उसे सुख-शान्ति नसीब होती है। भोग-सामग्री के अम्बार लगा देने पर भी कही न कही से उसे अशान्त रखनेवाला कोई न कोई कारण उपस्थित रहता है। वह बेचैनी मे दिन बिताता है और बचैनी मे ही सोता-जागता है।

यहा चर्चा मनुष्य की है क्योकि किसी उलझे हुए प्रश्न का समाधान केवल मनुष्य ही खोज सकता है। अस्तु सुख-शान्ति कैसे प्राप्त हो इस विषय मे विचार करना चाहिये।

इस विषय मे दो दृष्टिकोण है-एक दार्शनिक दूसरा व्यावहारिक। पहले दार्शनिक पक्ष पर विचार करते है। योगदर्शन का सूत्र है-"**परिणामताप-सस्कारदु खैर्गुणवृत्तिविरोधाच्च दु खमेव सर्व विवेकिन ।।**" अर्थात् परिणाम दु ख ताप दु ख सस्कार-दु ख और गुणवृत्तियो के विरोध के कारण विवेकी पुरुष के लिये सपूर्ण ससार दु खरूप है। क्रम से इन पर विचार करे। सबसे पहला है परिणाम दु ख। मनुष्य [illegible] मे अनुराग के कारण या विषय-लोलुपता के कारण उस ओर दौडता [illegible] दौडता ही जाता है तब तक [illegible] की इन्द्रियो मे थोडी भी [illegible] है। व्याग्रा जैसी [illegible]तेजक दवा का उत्पादन और [illegible] इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। [illegible] करने वाली इस दवा के [illegible] म अतिवृद्ध भी थे कितने ही उनमे मृत्यु का ग्रास बन गये। शराब के आदि मैंने ऐसे लोग भी देखे हैं जो अपने मुह से मक्खिया उडाने मे अशक्त थे। कहा है कवि ने-**भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्ता** अर्थात् भोग तो ज्यो के त्यो हैं, हमी खत्म होगये। इसे परिणाम दु ख कहते हैं-धन-सम्पदा, स्वास्थ्य और आयुष्य सब चौपट। दूसरा है ताप दु ख। इसका अर्थ है कि भोग-काल मे भी निश्चिन्तता का न होना। भोक्ता को डर लगा रहता है कि भोग सामग्री खत्म न होजाए या साथी बिछुड जाय। ऐसी स्थिति मे सुख दुख नहीं रहता सुखाभास बन जाता है। तीसरा है सस्कार-दु ख। [illegible] का अर्थ है भोग-काल मे भी [illegible] का न होना। भोक्ता को [illegible] लगा रहता है कि भोग-सामग्री [illegible] न हो जाय अथवा साथी बिछुड न जाय। ऐसी स्थिति मे सुख दुख नहीं रहता, सुखाभास बन जाता है। तीसरा है सस्कार-दु ख। इसका अर्थ है पूर्वानुभूत विषय सुख का स्मृति मे बने रहना और उसकी सन्तुष्टि के लिए साधन सामग्री जुटाने के लिये मन को व्यग्र किये रखना। यह ऐसा चक्रव्यूह है जिससे मनुष्य निकल ही नहीं पाता। चौथा है गुणवृत्तिविरोध से उत्पन्न दु ख। सत्त्व रज और तम ये तीन गुण होते हैं। ये तीनो परस्पर भिन्न हैं, तो भी आपस मे झगडते नही। एक गुण प्रमुख रहता है तो शेष दोनो अवसर मिलते ही प्रकट होजाते हैं। तम मे निष्क्रियता, रज मे चञ्चलता एव सत्त्व मे स्थिरता व शान्ति रहती है। कठिनाई यह है कि सत्त्वगुण की शान्ति को रज प्रबल होकर दु ख की आशका से बाधित करता है। इन सब कारणो से विवेकी पुरुष को लगता है कि ससार दु ख रूप है, अत वह इससे बचकर मोक्ष का उपाय करे।

यह दार्शनिक दृष्टि है। यद्यपि ये निष्कर्ष सत्य है किन्तु योगी हो या भोगी शरीर रहते ससार को सर्वथा कोई नहीं छोड सकता। इसीलिये बेहतर है कि बीच का रास्ता निकाला जाय। इसे ही व्यावहारिक दृष्टि कहते हैं। मनु ने भी इसका समर्थन किया है-"**कामात्मता न प्रशस्ता न चैवेहाऽस्त्यकामता**" अर्थात् न तो इच्छाओ के पीछे अधी दौड अच्छी है और न इच्छाओ का सर्वथा त्याग सम्भव है। अस्तु, ससार को सुखमय बनाने के लिये या दु खो की तीव्रता या चुभन को सह्य बनाने के लिये कुछ तरीके खोजने चाहिये।

सोचे कि हमे दु ख क्यो होता है। कदाचित् इसका कारण हमारी भेद-दृष्टि है। भेद-दृष्टि अर्थात् तेरा-मेरा का भाव। इससे हमारा मानसिक सन्तुलन गडबड होजाता है। हम एक की उन्नति से अवसन्न होते हैं और व्यर्थ का बोझ हमारा मन ढोता रहता है, क्योकि वश मे तो हमारे कुछ भी नहीं है, सब कुछ अव्यक्त सत्ता के इशारे पर होता है। वस्तुत द्वैत या भेद मे ससार के बीज छिपे होते हैं, अत अभेद और अद्वैत की भावना विकसित करे। फिर देखे कि सुख-शान्ति मे कितनी वृद्धि होती है। वेद का यह कथन कि सब दिशाए मेरी मित्र हो इसी बीज मन्त्र का सकेत देता है कि समदर्शी बनो।

आस्था के क्षेत्र मे हम बुरी तरह से विभाजित हैं। अनेक मत-सम्प्रदाय हमने खडे कर लिये हैं। हम चाहते हैं कि हमे जो अच्छा लगता है वही सब को लगे तो ठीक है। ध्यान रखना चाहिए कि सत्य किसी की मुट्ठी का कैदी नहीं है। हम अपनी आंखो में कितना आकाश भर सकते हैं ? बहुत थोडा। केनोपनिषद् का ऋषि जिज्ञासु से कहता है कि यदि तुम मानते हो कि तुम ब्रह्म को जानते हो तो निश्चय ही तुम बहुत थोडा जानते हो-"**यदि मन्यसे सुवेदेति दभ्रमेवापि नून त्व वेत्थ, ब्रह्मणो रूपम् ।**"

शास्त्रो की उक्तियो मे तथा सन्तो के वचनो मे समन्वय खोजे तो देखेगे कि सभी मे पाने के लिए कितना कुछ छिपा रहता है। नामो के फेर मे न पडे इससे गुण ग्रहण की हमारी क्षमता घटती है। भले-बुरे का विवेक अलग बात है किन्तु सारी भलाई का दावेदार कोई एक नहीं हो सकता। कवि का कथन इस विषय मे बहुत स्टीक है-

साधु ऐसा चाहिये, जैसा सूप सुभाय।
सार सार को गहि रहै, थोथा देइ उडाय।।

सारग्राहिता मे हस हमारा आदर्श हो सकता है सूप के अतिरिक्त।

ससार मे हमे हमारी पहचान देने वाला अहकार है। जो पहचान कायम करेगे वह भेदक तो होगा ही। इसलिये दु खदायी भी है। यह इतना भेदक है कि ईश्वर से भी हमे दूर रखता है। यह किसी के सद्गुणो की प्रशसा भी खुले दिल से नहीं करने देता। मनुष्य को रात दिन सघर्ष मे प्रतिद्वन्द्विता मे झोके रखता है। किन्तु अहकार न हो तो हमारा व्यक्तित्व ही न हो और हम कार्य मे प्रवृत्त ही न हो। बुरा है वास्तव मे इसका प्रदर्शन। अहकारी को तो वास्तव मे परिवार मे भी पसन्द नहीं किया जाता। फिर क्या करे इसका ? करे यह कि इसके विधायक रूप को रहने दे और विघातक रूप से किनारा करलें। सुख-शान्ति का इच्छुक कर्म निरन्तर करे, कर्त्ता का अहकार सर्वथा छोडदे। इस स्तर तक पहुचने के लिए फल के प्रति लगाव त्यागना पडेगा। फल कीर्ति कमाने जैसा भी क्यो न हो। गीता मे तो ऐसे कर्त्ता को परमतत्त्व की प्राप्ति का भी भरोसा दिलाया है-"**असक्तो-ह्याचरन् कर्म परमाप्नोति पूरुष.।।**"

हमारी दृष्टि केवल कर्त्तव्य पर रहे, अधिकार तो उसका आनुषगिक फल है। दण्डापूपिका न्याय से वह तो स्वय खिचा चला आयेगा। इसके अलावा यदि हम निरपेक्ष नि स्वार्थ और स्वलम्बी हैं तो हमे अधिकार पर दावा करने की आवश्यकता ही क्या रहेगी। हम स्वाधीन होंगे और आत्म निर्भर होंगे तो सुख शान्ति की कुजी तो हमारे ही हाथ मे होगी। मनु ने कहा है- "**सर्व परवशं दु.खं सर्वमात्मवशं सुखम् ।**"

सुख-शान्ति के स्रोत की खोज मे थोडा आगे बढे। मनुष्य को दानी बनना चाहिये। दाता की प्रतिष्ठा तो होती ही है, उससे आत्मिक शाति भी मिलती है। सामाजिक कार्य दान से ही चलते हैं। अदानशील की वेद मे निदा है तथा दानी का साथ पाने की कामना की गई है-"**ददता सड्गमेमहि ।**" याचक और कृपण दोनो की उपेक्षा और अप्रशसा समाज मे सर्वथा होती है। नदी, वृक्ष, मेघ और आलोकदात्री उषा की स्तुतियो से ग्रन्थ भरे पडे हैं। दानी देव कहता है-**देवो दानाद् दीपनाद् द्योतनाद् वा।**

किन्तु दान सात्विक होना चाहीये कीर्ति या दिखावे के लिए किया गया दान अहकार को जन्म देता है। ऐसा दाम्भिक दान शान्तिप्रद नहीं होता। साथ ही दान पैसा का ही नही होता। हमारे पास जो कुछ भी है उससे हम दूसरो का हित करे, समाज के सम्यक् सचालन मे सहायक बने। वस्तुत सात्त्विक दान महायज्ञ है।

और आगे बढे। हमने एक ही हैसियत मे जन्म लिया है, जायेगे भी अपने कर्मो का लेखा साथ मे लिये हुए अकेले ही। पर यह जरूरी नही है कि हम एक रहकर ही जीवन बिताये। हमारी स्वाभाविक इच्छा है कि हम एक से अनेक बने-"एकोऽह बहु स्याम्"। अभिप्राय यह है कि हम अपने व्यक्तित्व का विस्तार करे और उसे विश्व के लिये उपयोगी बनाये। हम एकात्मा से विश्वात्मा बने अपूर्ण से पूर्ण बने। परिछिन्न से विभु बने। हमारी ऊर्जा सबके काम आये। एक कच्ची हौज होती है, दूसरी पक्की। कच्ची हौज का पानी नीचे-नीचे (प्रदर्शन के बिना) दूर-दूर के वृक्षो को बिना मागे जीवन देता है। वैसे ही हम भी बने तो असीम सन्तोष व शान्ति हमे मिलेगी। हमारे सुख और शान्ति के मार्ग मे सबसे बडा रोडा है ईर्ष्या व द्वेष। इनके कारण हम हमेशा असमाहित-चित्त रहते हैं और प्रसन्नता हमसे कोसो दूर रहती है। योगदर्शन मे प्रसन्न रहने का उपाय बताया है कि सुखी से ईर्ष्या मत करो, उससे मित्र भाव रखो, दुखी पर करुणा करो, उसकी सहायता करो, पुण्यकर्म से मुदित रहो, उसको होसला दो, और जो पापी है और सुधरने का नाम नहीं लेता, उसकी उपेक्षा करो तो चित्त

(शेष पृष्ठ पाच पर)

धर्मांतरण मुद्दे पर धार्मिक संगठनों का जोरदार प्रदर्शन

मेवात क्षेत्र के चालीस वाल्मकीकियो के जबरन धर्मांतरण का मामला थमने का नाम ही नहीं ले रहा है। आज विभिन्न हिंदू सगठनो ने प्रशासन पर इस प्रकरण में सकारात्मक कार्रवाई नहीं किए जाने का आरोप लगाते हुए जोरदार प्रदर्शन किया और केन्द्रीय गृहमत्री के नाम उपायुक्त को ज्ञापन सौंपकर इस मुद्दे पर राष्ट्रीय स्तर पर आदोलन छेडे जाने की चेतावनी भी दी।

विभिन्न हिदू सगठनो के प्रतिनिधि स्वामी भक्ति स्वरूपानन्द के नेतृत्व मे स्थानीय रामलीला ग्राऊड मे इकट्ठे हुए और सुबह से हो रही तेज वर्षा के बावजूद पूर्व नियोजित कार्यक्रम के अनुसार शहर के मुख्य बाजारो मे रोष प्रदर्शन किया। बाद मे जिला सचिवालय पहुचकर उपायुक्त अनुराग रस्तोगी को ज्ञापन सौंपा गया।

इन सगठनो मे गोवश रक्षा एव सस्कृति रक्षा मच, बजरग दल विश्वहिदू परिषद, केन्द्रीय सनातन धर्म सभा, केन्द्रीय आर्य सभा, बाल्मीकि महासभा, सयुक्त कल्याण परिषद देवी शक्ति मच, भावदस महा सभा व शिवसेना शामिल थे। केन्द्रीय गृहमत्री के नाम दिये गए ज्ञापन मे आरोप लगाया है कि ८ अगस्त को मेवात क्षेत्र के वीरसिका व टेरकपुर गाव के चालीस बाल्मीकियो का जबरन धर्मांतरण कराया गया। उन्होने इस काड के जिम्मेदार दोषियो को दण्डित किए जाने की माग की है।

हिन्दू सगठनो का आरोप है कि एक माह से अधिक समय बीत जाने के बावजूद प्रशासन इस प्रकरण पर कोई भी सकारात्मक कार्रवाई नहीं कर पाया है, उनका आरोप है कि धर्मातरण जबरन प्रलोभन देकर कराया गया है। धर्म परिवर्तन करने वाले परिवार के एक युवा, जो कि भागकर अब गुडगाव मे रह रहा है ने स्वय इस बात को स्वीकार किया है। लेकिन प्रशासन मुस्लिम नेताओ के दबाव के चलते इस प्रकरण पर कोई कार्रवाई करने मे मुस्लिम बाहुल्य क्षेत्र मेवात मे पिछले काफी समय से देश द्रोही गतिविधिया, गोवध व हिदुओ की धार्मिक भावनाओ से खिलवाड किया जारहा है। लेकिन प्रशासन पूर्ण रूप से उदासीन रवैया अपनाए हुए है। मेवात क्षेत्र से भी भारी सख्या मे रोष प्रदर्शन मे भाग लेने आए वाल्मीकि समुदाय एव विभिन्न हिन्दू सगठनों के प्रतिनिधियों ने आज स्पष्ट चेतावनी दे दी कि मेवात की निरतर खराब होती स्थिति और हिन्दूत्व पर हो रहे आक्रमण को अब और बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। उनका आरोप है कि प्रशासन इस मामले को दबाने का प्रयास कर रहा है। वह जबरन धर्मांतरण के मामले को स्वय धर्म परिवर्तन किए जाने का मामला बता रहा है। प्रशासन द्वारा बार-बार यह कहा जा रहा है। कि उनके अधिकारी लगातार स्थिति पर नजर रखे हुए है और रिपोर्ट आ चुकी है, जबकि प्रशासनिक अधिकारियो ने अपने आप को बचाए रखने के लिए गलत रिपोर्ट पेश की है। क्षेत्र से आए वाल्मीकियो ने भी आज स्पष्ट किया कि प्रभु सिह एव उसके परिवार पर पिछले काफी समय से गाव के सरपच एव क्षेत्र के अन्य मुस्लिम आकाओ द्वारा प्रलोभन देकर धर्म परिवर्तन करने के लिए दबाव डाला जा रहा था। अपनी व परिजनो की जान बचाए जाने के लालच मे उसे मजबूरन स्वीकार करना पडा है। उनका आरोप है कि प्रशासन एव पचायत के पास यह पर्याप्त जानकारी है कि वे लोग इस समय कहा पर हैं। इस सबध मे मेवात क्षेत्र के पुलिस एव प्रशासनिक अधिकारियो द्वारा अन्य वाल्मीकियो पर इस प्रकरण के सबध मे चुप्पी साधे जाने के लिए लगातार दबाव बनाया जा रहा है।

बहरहाल अभी तक जहा इस प्रकरण मे विभिन्न हिदू सगठनो के अग्रणी नेता ही सक्रिय थे, वही अाज भारी बारिश के बावजूद युवाओ द्वारा दिखाई गई सक्रियता ने यह स्पष्ट कर दिया कि अब सभी सगठन मेवात क्षेत्र मे हुए इस धर्मांतरण पर आर पार की लडाई लडने की तैयारी कर चुके है। (साभार दैनिक जागरण)

हिन्दी का मत अपमान करो

बच्चा पैदा होते ही, अग्रेजी भाषा सीख रहा है।
हिन्दी की गिनती नहीं आती, वन-टू-थ्री बोल रहा है।
ताऊ चाचा या हो दादा, सबको अकल बना रहा है।
नमस्ते करना नहीं जानता, बाय टाटा हिला रहा है।
विदेशी भाषा से पहले, मातृभाषा का ज्ञान करो।
हिन्दी राष्ट्र की भाषा है, हिन्दी का मत अपमान करो।

—देवराज आर्यमित्र, आर्यसमाज कृष्णनगर, दिल्ली-५१

यजुर्वेद यज्ञ एवं योग-साधना-शिविर

वैदिक साधन आश्रम तपोवन ग्राम नालापानी डा० तपोवन देहरादून का शरदुत्सव (यजुर्वेद यज्ञ एव योग-साधना-शिविर) बुधवार २ अक्टूबर से रविवार ६ अक्टूबर २००२ तक का आयोजन किया जारहा है।

—देवदत्त बाली, मंत्री

(पृष्ठ चार का शेष) सुख-शान्ति कैसे मिले ?

प्रसन्न रहेगा-**मैत्री करुणामुदितोपेक्षाणा सुखदु खपुण्यापुण्यविषयाणा भावना-तश्चित्तप्रसादनम्।** (योग सूत्र) वस्तुत पापी और कोयला एक जैसे हैं। कोयले पर टनो साबुन खर्च करो तो भी वह कालिमा नहीं छोडेगा। शान्त और प्रसन्न रहने के लिए चित्त के इन मलो को दूर करे।

आज एक बिमारी चली है कि जिसकी जितनी अधिक इच्छाए हैं उतना ही वह सभ्य व उन्नत है, किन्तु भारतीय विचारधारा इसके विपरीत है। हमारा मानना है कि जिसकी जितनी कम जरूरते होती हैं वह उतना ही स्वाधीन और सबल एव अन्तर्मुख होता है। सार यह है कि इच्छाए घटानी चाहिये। गीता मे कहा है कि वह व्यक्ति शान्ति प्राप्त कर सकता है जो नि स्पृह. मोह-ममता से रहित तथा अहकारशून्य होता है-

विहाय कामान् य· सर्वान्
पुमाश्चरति नि·स्पृह ।
निर्ममो निरहकार स
शान्तिमधिगच्छति ।।

एक अन्तिम निवेदन और है। वह यह है कि सुख शान्ति का स्रोत भीतर ही है। वास्तव मे हम अपनी अशान्ति के कारण स्वय ही होते हैं। कोई किसी को दुख देकर चाहे कि वह स्वय प्रसन्न रहे तो यह असम्भव है। ऐसा सुख Negative pleasure है जिससे अशान्ति ही मिलती है। सुख चैन का लोक प्रसिद्ध गुर यह है-

चार वेद छ शास्त्र मे,
बात लिखी हैं, दोय।
सुख दीने सुख होत है,
दुख दीने दुख होय।।

—धर्मवीर शास्त्री
बी १/५१, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली-६३

राष्ट्रभाषा हिन्दी तथा भारतीय भाषायें विज्ञान और तकनीकी शिक्षा का माध्यम कब बनेगी ?

प्रो० चन्द्रप्रकाश आर्य

हिन्दी को सविधान मे राजभाषा का दर्जा दिया गया है। इसलिए नहीं कि इसका अन्य भारतीय भाषाओ से कोई विरोध या टकराव था अपितु हिन्दी देश की राजभाषा इसलिए बनी कि यह देश की सर्वाधिक बोली एव समझी जानेवाली भाषा है। अन्य भारतीय भाषाये अपने-अपने क्षेत्र तक सीमित हैं जैसे तमिल, तेलगू, कन्नड, मलयालम, बगला, असमिया, उडिया आदि अपने-अपने क्षेत्रो तक सीमित है जबकि हिन्दी पूरे देश मे फैली हुई है। उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, बिहार, राजस्थान, हरयाणा, हिमाचल तथा दिल्ली की यह सरकारी भाषा है। पजाब मे पहले से ही हिन्दी का प्रचार है। वहा हिन्दी मे बहुत साहित्य लिखा गया। गुरमुखी लिपि मे भी वहा हिन्दी का साहित्य मिलता है। गुरु गोविन्दसिह की रचनाये हिन्दी ब्रज मे हैं। जालन्धर से अब हिन्दी के कई अखबार छपते हैं। चण्डीगढ से भी हिन्दी के चार-पाच अखबार छप रहे हैं- दैनिक ट्रिब्यून', 'अमर उजाला', 'भास्कर' आदि।

हिन्दी आज से बहुत पहले ही भक्ति आन्दोलन के कारण पूरे देश मे फैल गई थी। भक्ति आन्दोलन की लहर के कारण समूचे देश मे १४वीं शताब्दी मे हिन्दी मे भक्ति रचनाये लिखने का प्रचलन होगया था। महाराष्ट्र, गुजरात मे सत नामदेव, तुकाराम, एकनाथ, दादूदयाल, नरसी मेहता, प्राणनाथ आदि ने हिन्दी मे अपनी रचनाए लिखीं। विस्तार के लिए हिन्दी साहित्य का विवेचनात्मक इतिहास (डा० राजूनाथ शर्मा) पृ० १५४-१५५, पृ० १९८-२०१ द्रष्टव्य हैं। इसी प्रकार बगाल मे चैतन्य महाप्रभु, ज्ञानदास, चण्डीदास, असम मे शकरदेव, माधवदेव ने, उडीसा मे रामानन्द भट्टनायक, जगन्नाथदास आदि तथा कश्मीर मे केशुवभट्ट तथा श्रीलाल आदि ने हिन्दी मे अपनी भक्ति रचनाए लिखीं। यहा तक कि सुदूर केरल मे महाराजा स्वाति तिरुनाल ने हिन्दी मे चौंतीस भक्तिपद लिखे। आन्ध्र, कर्नाटक, तमिलनाडु, मे गुरु गोरखनाथ के शिष्यो द्वारा स्थापित अनेक मठो से हिन्दी का साहित्य प्राप्त हुआ है। डॉ० मलिक मुहम्मद द्वारा लिखित पुस्तक "हिन्दी साहित्य के हिन्दीतर प्रदेशो की देन" (राजपाल एण्ड सन्ज, नई दिल्ली-६, १९७७) मे विस्तार से इन प्रान्तो के योगदान पर प्रकाश डाला गया है।

राजनीतिक कारणो से भी दक्षिण भारत मे १४वीं सदी मे ही हिन्दी का प्रचलन होगया था। जब मुहम्मद तुगलक ने अपनी राजधानी दिल्ली के देवगिरि या दौलताबाद बसाई तब वहा दिल्ली की भाषा हिन्दी या हिन्दवी का भी प्रचलन होगया। वहा इस 'दक्खिनी' या दक्षिणी हिन्दी कहा जाता था। १८वीं शताब्दी तक वहा इसे बहमनी वश के राजाओ का भी आश्रय मिला और इसमे पर्याप्त साहित्य रचा गया। देखे, "भाषा विज्ञान के सिद्धान्त और हिन्दी भाषा" (डा० द्वारिकाप्रसाद सक्सेना) चतुर्थ सस्करण पृ० ३५३। इस प्रकार हिन्दी का प्रसार पूरे देश मे होगया था। सदियो से यह देश की राष्ट्रभाषा और सम्पर्कभाषा रही है। हिन्दी सिनेमा ने भी आज इसे देश के कोने-कोने मे पहुचा दिया है। आज दक्षिण भारत के अनेक कलाकार इसके प्रसार मे योगदान देरहे हैं। आज मद्रास (चेन्नई) हिन्दी फिल्मो का सशक्त केन्द्र बना हुआ है।

हिन्दी के बाद भारतीय भाषाओ मे गुजराती, मराठी, पजाबी, बगला, असमिया, उडिया आदि का नाम लिखा जा सकता है। भाषाविज्ञान के अनुसार ये एक ही अपभ्रश के विभिन्न रूपो से विकसित हुई है। देखे "भाषाविज्ञान और मानक हिन्दी" (डा० नरेश मिश्र) संस्करण २००१ पृ० ८२। गुजराती की लिपि ही देवनागरी है। भाषावैज्ञानिको के अनुसार बगला प्राचीन देवनागरी से ही विकसित एक लिपि मे लिखी जाती है। असमिया की लिपि कुछ परिवर्तित बगला लिपि ही है। उडिया की लिपि भी प्राचीन देवनागरी से ही विकसित हुई है। भाषावैज्ञानिक यहा तक मानते हैं कि उत्तर भारत की प्राय सभी लिपिया देवनागरी के ही रूपभेद हैं और उनमें अत्यधिक समानता है। देखें राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली-२ द्वारा प्रकाशित, "भाषाविज्ञान की भूमिका" (देवेन्द्रनाथ शर्मा) सस्करण १९८९ पृष्ठ १३८-१३९, पृ० ३५७।

इस प्रकार हिन्दी तथा भारतीय भाषाये परस्पर जुडी हुई हैं। वे एक ही भारतीय आर्य परिवार की भाषाये हैं। इनका परस्पर कोई विरोध नहीं है। इनका विरोध अग्रेजी के साथ है। अग्रेजी के कारण हिन्दी को राजभाषा का पूरा सम्मान एव स्थान नहीं मिल पाया है। राजकाज, प्रशासन, विज्ञान, चिकित्सा, प्रबन्धक, प्रौद्योगिकी इजीनियरी एव तकनीकी आदि क्षेत्रों मे अग्रेजी का प्रभुत्व जारी है। अग्रेजी के कारण अन्य भारतीय भाषाये भी पिछड गई है। इनका भी विकास रुक गया है। विज्ञान, प्रायोगिकी एव तकनीकी शिक्षा मे इनका प्रयोग नहीं होता। जबकि भाषावैज्ञानिको के अनुसार दक्षिण की ये भाषाये-तमिल, तेलगू, कन्नड, मलयालम अत्यन्त समृद्ध भाषाये हैं। उनमे उच्चकोटि का श्रेष्ठ साहित्य मिलता है। देखे "भाषाविज्ञान एव भाषाशास्त्र" (डा० कपिलदेव द्विवेदी) चतुर्थ सस्करण १९९४ पृ० ४२४-४२५। किन्तु आधुनिक विज्ञान, चिकित्सा, प्रौद्योगिकी, प्रबन्धन एव तकनीकी शिक्षा की दृष्टि से उनका विकास ही नहीं किया गया क्योकि अग्रेजी के साथ है हिन्दी के साथ नहीं ? इसी कारण पहले कर्नाटक मे सरकारी कामकाज मे अग्रेजी के प्रयोग पर प्रतिबन्ध लगाया गया और बाद मे तमिलनाडु मे भी डी एम के सरकार द्वारा स्कूलो मे तमिल को पढाना अनिवार्य किया गया।

अग्रेजी के कारण ही हिन्दी तथा अन्य भाषाये आज इस स्थिति मे पहुच गई हैं। स्वतन्त्रता के ५४ वर्ष बाद भी देश के सभी क्षेत्रो मे अग्रेजी का प्रभुत्व है। देश की सौ करोड जनता की भाषाओ को हिन्दी तथा भारतीय भाषाओ को न्यायालयो, प्रशासन, विज्ञान, चिकित्सा, प्रौद्योगिकी, तकनीकी प्रबन्धन आदि मे कोई स्थान नही ? हमने अपनी भाषाओ का विकास ही नहीं किया ? हिन्दी तथा भारतीय भाषाओ को इस योग्य बनने ही नहीं दिया ? पाश्चात्य विद्वान। विदेशी विद्वान् आज से १००-१५० वर्ष पूर्व हिन्दी तथा भारतीय भाषाओ पर शोध कर सकते हैं तथा उच्चकोटि की पुस्तके लिख सकते हैं किन्तु हमने अपनी भाषाओं को, यहा तक कि राष्ट्रभाषा को इस योग्य ही नही समझा ? बिशप कॉड्वेल ने १८५६ मे द्राविड भाषा का तुलनात्मक अध्ययन (Comperative Grammar of Dravidian Language) नामक प्रामाणिक ग्रन्थ लिखा। जॉन बीम्स ने "कम्पेरेटिव ग्रामर ऑफ आर्यन लैंग्वेजिज" नामक ग्रन्थ लिखा जो तीन भागो मे १८७२, १८७५ व १८७९ मे प्रकाशित हुआ। जार्ज ग्रियर्सन ने १८९४-१९२७ तक तैतीस वर्षो मे "लिगुइस्टिक सर्वे ऑफ इडिया" नामक विशाल ग्रन्थ लिखा जो ग्यारह खण्डो मे प्रकाशित है। इसमे भारतीय बोलियो एव भाषाओ के व्याकरण का सोदाहरण परिचय दिया गया है। भूमिका मे भारतीय, भाषाओ का इतिहास भी दिया गया है। देखे "सरल भाषाविज्ञान" अमन प्रकाशन हिसार-१२५००५) प्रथम सस्करण १९९९ पृ० ४८। सर विलियम जोन्स ने १७८९ मे सस्कृत की महत्ता प्रतिपादित करते हुए इसे ग्रीक, लेटिन से अधिक परिष्कृत बताया। उन्होने 'शाकुन्तलम्', 'गीतगोविन्द' और 'मनुस्मृति' का अग्रेजी मे अनुवाद भी किया था। इसी प्रकार अनेक पाश्चात्य विद्वानो ने सस्कृत तथा भारतीय भाषाओ का उल्लेखनीय अध्ययन किया है तथा उन पर महत्त्वपूर्ण ग्रन्थो की रचना की है किन्तु एक ओर हम हैं कि हमने पिछले ५० वर्षो से अधिक समय मे किसी भी भारतीयभाषा को यहा तक कि राष्ट्रभाषा हिन्दी को भी आधुनिक ज्ञानविज्ञान के सक्षम नही बनाया ? उसे उसके योग्य ही नहीं समझा ?

(क्रमश)

श्री धर्मपाल नैय्यर का स्वर्गवास

आर्यसमाज रादौर की पूर्व प्रधान श्रीमती आशा जी नैय्यर के पति श्री धर्मपाल जी नैय्यर का स्वर्गवास ८-९-२००२ को होगया। शान्तियज्ञ एव श्रद्धाजलि सभा दिनाक १०-९-२००२ का सम्पन्न हुई। जिसमे आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री आचार्य यशपाल जी, श्री केदारसिह जी उपमन्त्री, श्री वेदव्रत जी शास्त्री एव श्री जयपाल आर्य आदि आर्यनेताओ ने शोकाकुल परिवार से अपनी सवेदना व्यक्त की। श्री नैय्यर जी शान्त, कर्त्तव्यनिष्ठ, समर्पित एव अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त इन्जीनियर थे। समाज सेवा मे अग्रणी श्री नैय्यर जी सादगी की मूर्ति थे। वह हरयाणा ह्यूमन राइट्स के प्रधान भी रहे। दिवगत को हार्दिक श्रद्धाजलि। **–सत्यकाम आर्य, रादौर**

आर्य-संसार

योगिराज श्रीकृष्ण जन्मोत्सव धूमधाम से सम्पन्न

आर्यसमाज, यमुनानगर में दिनाक १ सितम्बर २००२ को योगिराज श्रीकृष्ण जन्मोत्सव बडे धूमधाम से सम्पन्न हुआ। उत्सव का शुभारम्भ यज्ञ द्वारा हुआ।

समारोह में मुख्यवक्ता स्वामी माधवानन्द सरस्वती जी (हिसार वाले) डा० सूर्यपाल जी एव श्री ज्ञानेश्वर भारती जी ने योगिराज श्रीकृष्ण जी के जीवन पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला। प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री सुखपाल जी (सहारनपुर वाले) ने ईश्वरभक्ति और श्रीकृष्ण सम्बन्धित भजनो से उपस्थित जनसमूह को मन्त्र-मुग्ध कर दिया। डा० सूर्यपाल शास्त्री जी ने अपने सम्बोधन मे आर्यसमाज यमुनानगर के प्रधान-श्री कृष्णचन्द्र आर्य जी की महर्षि दयानन्द सरस्वती एव आर्यसमाज के प्रति लगन तथा उनके वेद-प्रचार कार्यो को सराहते हुए लोगो से आह्वान किया कि हमे योगिराज श्रीकृष्ण जी एव महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जीवन से शिक्षा लेनी चाहिए तथा उनके बताये वैदिक रास्तो पर चलना चाहिये। उन्होने कहा महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने योगिराज श्रीकृष्ण को आप्तपुरुष की उपाधि से सम्मानित किया है।

–पं० अशोककुमार शास्त्री, पुरोहित, आर्यसमाज, यमुनानगर

वेदप्रचार कार्यक्रम सम्पन्न

आर्यसमाज दोगडा अहीर के मन्दिर परिसर मे श्री हरिपाल शास्त्री पुरोहित के अन्तर्गत २२ अगस्त (पूर्णमासी) से ३१ अगस्त (जन्माष्टमी) तक प्रतिदिन यज्ञ व वेद पर आधारित प्रवचन के द्वारा मनाया गया। सत्यार्थप्रकाश की लगभग दो समुल्लासो पर चर्चा होती थी। शास्त्री जी दर्शको के शकाओ का समाधान भी साथ ही साथ करते थे। इस प्रकार इन १० दिनो मे सत्यार्थप्रकाश मे निहित वेदज्ञान की चर्चा श्रोताओ मे बहुत अधिक हुई और वेद सप्ताह पिछले वेद सप्ताहो से अधिक सफल व ज्ञानवर्धक सिद्ध हुआ।

आर्यसमाज दोंगड़ा अहीर तह० जिला महेन्द्रगढ का चुनाव

प्रधान-बलवन्तसिह आर्य, उपप्रधान-हरिसिह आर्य, उजागरसिह, मन्त्री-मास्टर निहालसिह, उपमन्त्री-डा० बाबूलाल, राजेश, धर्मवीर, लेखानिरीक्षक-मास्टर मौजीराम, पुरोहित-मास्टर नित्यानन्द, प्रचारमन्त्री-मास्टर बाबूराम, कोषाध्यक्ष-रामपत महाशय, पुस्कालय अध्यक्ष-श्रीराम डिप्टी कमाण्डेट।

योगिराज श्रीकृष्ण जन्मदिवस सम्पन्न

आर्यसमाज जुरहरा ने योगिराज श्रीकृष्ण जी का जन्मदिन बडे ही हर्षोल्लासपूर्वक मनाया। प्रात काल प्रभातफेरी कस्बे मे निकाली गई, प्रात बेला मे ही विशेष यज्ञ व विद्वानो के प्रवचन मन्दिर मे हुए। मन्दिर मे श्रद्धालुओ की अच्छी उपस्थिति हुई। रात्रि को ९ बजे से मन्दिर मे श्रीकृष्ण के जीवन-चरित्र पर विशेष प्रोग्राम भजन उपदेश हुए।

आर्यसमाज फतेहपुर जिला यमुनानगर मे युवको को ब्रह्मचर्य सन्देश

दिनाक २ ९ २००२ को दो विद्यालयो के दसवीं तथा गाव फतेहपुर के दसवीं से स्नातकोत्तर तक के विद्यार्थियों मे ब्रह्मचर्य सन्देश नामक पुस्तक में से लिखित प्रतियोगिता करवाई गई। उसका समापन ४ ९ २००२ को हुआ। समारोह मे आचार्य देवव्रत जी (गुरुकुल कुरुक्षेत्र) ने ब्रह्मचर्य का अर्थ बताते हुये कहा कि (ब्रह्म+चर्य) ब्रह्म का अर्थ है महान् चर्य का अर्थ विचरण करना अर्थात् ब्रह्म का अर्थ महान, ज्ञान भगवान आदि इस शब्द के बहुत अर्थ बताते हुए कहा कि नौजवानों की सोच महान-विशाल होनी चाहिये उपस्थित वृद्ध श्रोताओ को सम्बोधित करते हुए कहा कि हर व्यक्ति की जिम्मेदारी बनती है कि वो अपने ही नहीं अपितु अपने आस-पास के नवयुवको को ब्रह्मचर्य का पालन करने के लिये प्रेरित करता रहे।

आचार्य जी ने "जैसा खाओ अन्न वैसा होगा मन" उद्बोधन मे नवयुवको से कहा कि ब्रह्मचर्य पालने की शुरुआत सात्विक आहार से होती है हमे हर परिस्थिति में सात्विक आहार ही करना चाहिये। आचार्य जी ने श्रोताओ को मन्त्रमुग्ध करते हुये कहा कि ईश्वरीय रचना के आधार पर हम मासाहारी हैं ही नहीं क्योंकि मासाहारी जीव के दात नुकीले होते हैं। शाकाहारी के दांत चपटे होते हैं। इस पहचान को बढाते हुए कहा कि मासाहारी के जीभ से पसीना निकलता है, शाकाहारी के सारे शरीर से पसीना निकलता है। शाकाहारी दयालु होता है। प्रशसा करते हुए कहा कि गाय को कई दिन भूखा रहने पर पास बंधे बच्चे को चाटती रहती है परन्तु मांसाहारी कोई भी जीव भूखा रहने पर अपने बच्चे को ही खा जाता है।

तत्पश्चात् गांव के श्री नरेश कम्बोज ने प्रथम प्रतियोगिता कुलदीप आर्य बी०एस-सी० को ५०० रुपये, द्वितीय रोहित (बहरामपुर) ३०० रुपये, तृतीय नवीनकुमार (दडवा) को १२०० रुपये तथा हर प्रतियोगी को सान्त्वना पुरस्कार (व्यवहारभानु, भारत की अवनति के सात कारण) पुस्तके प्रदान कीं। अन्त मे स्वामी सदानन्द जी सरस्वती ने सभी को आशीर्वाद दिया।

–प्रीतमलाल आर्य, मत्री, आर्यसमाज फतेहपुर (यमुनानगर)

डॉ० देवव्रत आचार्य सम्मानित

हिण्डौन सिटी। स्थानीय आर्यसमाज के ग्यारह दिवसीय यजुर्वेद पारायण का समापन बडे ही उत्साहपूर्ण वातावरण मे सम्पन्न हुआ। समापन पर डॉ० जिनेश जैन को उनकी नि शुल्क सेवा जो वह श्री धूडमल आर्य धर्मार्थ होम्योपैथिक चिकित्सालय के लिये करते थे, के लिये सम्मानित किया। पर्यावरण व यज्ञ विषय पर आयोजित निबन्ध प्रतियोगिता के विजेता छात्रो को पुरस्कृत किया गया। दिल्ली के प्रकाशक विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द को उनकी साहित्य प्रकाशन सेवा के लिये सम्मानित किया गया।

श्री धूडमल प्रहलादकुमार आर्य साहित्य पुरस्कार से आर्यवीरदल के सचालक डॉ० देवव्रत आचार्य को उनके द्वारा लिखित, सम्पादित, समीक्षित सकलित ग्रन्थ "धनुर्वेद" पर नागरिक सम्मान सहित सम्मानित किया गया। लगभग साठ प्रतिनिधियो ने आपको फूलमालाओ से लाद लिया। सम्मान के अन्तर्गत आपको पन्द्रह हजार रुपये, अभिनन्दन-पत्र, शाल, साहित्य व मोतियो की माला भेट कीगई।

इस अवसर पर डॉ० देवव्रत ने कहा कि यजुर्वेद के उपवेद धनुर्वेद पर लिखते समय उन्हे कितना श्रम करना पडा लेकिन इस बात का सन्तोष है कि वेद की शाखा के लिये वह कुछ कर सके। **–प्रभाकरदेव आर्य**

पं० रामकुमार आर्य भजनोपदेशक द्वारा अगस्त मास में जिला कैथल, पानीपत में वैदिकधर्म प्रचार का विवरण

१ ग्राम बीरबागडा जिला कैथल मे श्री दलवीरसिह जी सुपुत्र श्री रामदिया जी ने प्रचार का विशेष प्रबन्ध किया। श्री सुभाष जी सरपच एव श्री शमशेरसिह जी जैलदार का भी विशेष योगदान रहा। प्रचार मे रुचि बढी लोगो तथा महिलाओ की भी रोजाना हाजरी बढती रही पाखड अन्धविश्वास, नारीशिक्षा, चरित्र निर्माण, आपसी मेलजोल, फिजूल खर्चा एव भ्राति मे फसे हुए लोगो का सावधान करते हुये भजनो द्वारा विशेष प्रकाश डाला गया।

२ ग्राम सिठाना जिला पानीपत मे श्री रामकुमार जी भू पू सरपच के आगन मे परिवारिक सत्सग हुआ माताओ-बहिनो ने भी प्रचार मे भाग लिया प्रचार की सुन्दर व्यवस्था की गई।

३ ग्राम काबडी जिला पानीपत मे दोनो रमेशो ने विशेष रुचि ली प्रधान ईश्वरसिह जी, रघुवीरसिह जी आर्य का भी भरपूर सहयोग मिला। जन्माष्टमी पर्व के उपलक्ष्य मे आर्यसमाज मन्दिर मे यज्ञ किया आर्यसमाज के विद्यालय के छात्रो ने भी बडी श्रद्धा से वेदमन्त्रो द्वारा आहुतिया डाली। आर्यसमाज के सभी अधिकारियो ने भी श्रद्धा से आहुतिया डाली। रघवीरसिह जी आर्य ने यजमान का स्थान ग्रहण किया पुरोहित ने सुन्दर ढग से वेदमन्त्रो की व्याख्या की यज्ञ के उपरान्त श्री बलवीरसिह जी आर्य, श्री सरदारसिह सहायक एव पण्डित रामकुमार जी आर्योपदेशक के ईश्वरभक्ति के मधुर भजन हुये श्री रमेश जी आर्य ने बहुत ही सुन्दर प्रभुभक्ति का भजन सुनाया शास्त्री का भी उपदेश हुआ प्रचार का अच्छा असर रहा।

४ ग्राम आसन खुद जिला पानीपत मे श्री मागेराम जी आर्य सुपुत्र श्री सरदारासिह जी ने अपने चौक मे वैदिक प्रचार का बडी श्रद्धा से सुन्दर प्रबन्ध किया। श्री मुख्त्यारसिह जी आर्य के सुझाव से भ्राति मे फसी महिलाओ के लिये भी विशेष भजनो द्वारा प्रकाश डाला गया। श्री मागेराम जी आर्य एव श्री मुख्त्यारसिह जी आर्य ने खुश होकर कहा जी हमारे ग्राम आसन खुर्द मे सत्सगियो की कुछ बास सी थी वह निकल गई। प्रचार का प्रभाव अच्छा रहा।

५ ग्राम भैंसवाल जिला पानीपत मे श्री जसवीरसिह सुपुत्र श्री खिलाराम जी ने भजनमण्डली के ठहरने तथा भोजन का विशेष प्रबन्ध किया। गावो की चौपाल मे प्रचार हुआ। आर्यकुमारो की यूनिट बनाई गई, गलियो मे विद्यार्थियो ने नारे लगाये।

विकास विद्यार्थी कक्षा पाचवीं, सचिन, अमित, सुमित, मनीषी, निर्देश, अनुज, आदेश, विपन, पकज और मोगली इन सबने बडे उत्साह के साथ नारे लगाये और प्रचार भी सुना श्री रघवीरसिह जी नम्बरदार का विशेष योगदान रहा।

भारतीय भाषाओं की प्रतिष्ठा के लिए संगठित संघर्ष का आह्वान

राजभाषा संघर्ष समिति (पंजी.)

पजीकृत कार्यालय · ए-४/१५३, सैक्टर-४, रोहिणी, दिल्ली-११००८५, दूरभाष ०११-७०५८४२३

केन्द्र और राज्य सरकारो के शासन-प्रशासन तथा शिक्षा के क्षेत्रो मे प्रत्येक स्तर पर हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओ की राजकीय कार्यों, भर्ती तथा शिक्षण-प्रशिक्षण की भाषा के रूप मे स्थापना, प्रतिष्ठा तथा प्रसार वृद्धि करना-समग्र राष्ट्र के व्यापक हित मे इस भाषायी उद्देश्य से प्रेरित राजभाषा सघर्ष समिति द्वारा हिन्दी अकादमी, दिल्ली सरकार के सहयोग से आर्यसमाज मन्दिर, हनुमान रोड नई दिल्ली मे १६,१७ अगस्त २००२ को दो दिवसीय अखिल राजभाषा चेतना शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर मे देश के विभिन्न भागो से आमन्त्रित विद्वानो और छात्रो ने बडी सख्या मे भाग लिया। परस्पर विचार-परामर्श के माध्यम से राजभाषा हिन्दी को उसका वास्तविक दर्जा दिलाने हेतु विभिन्न सुझावो पर चिन्तन किया तथा स्वभाषा मे कार्य करने हेतु अपने भीतर इच्छा और साहस दोनो को जाग्रत करने का आह्वान किया गया।

"हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओ के मुद्दे पर चर्चा करते हुए आधी सदी बीत गई है। हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओ का महत्त्व एव उपयोगिता स्वयसिद्ध है। अब तो इन्हे उचित स्थान दिलाने के लिए सामूहिक सघर्ष की आवश्यकता है। भारतीय सभ्यता एव सस्कृति के प्रेमी प्रत्येक व्यक्ति एव सस्था को साथ लेकर भाषायी सघर्ष का बिगुल बजाना है। इसके लिए अब शिष्टमण्डल से काम नहीं चलनेवाला अशिष्टमण्डल की आवश्यकता है।" शिविर के उद्घाटन अवसर पर ये उदगार प्रकट किए- प्रतिष्ठित सामाजिक कार्यकर्त्ता एव चिन्तक स्वामी अग्निवेश जी ने।

प्रमुख पत्रकार और चिन्तक डा० वेदप्रताप वैदिक ने इस अवसर पर एक ओर खेद प्रकट किया की हिन्दी के पक्ष मे भले ही पर्याप्त कार्य हो रहा है, मगर कोई लहर नहीं उठ रही, कोई तूफान नहीं आरहा। आज इस सम्बन्ध मे सौ सुनार की पड रही है, मगर एक लुहार की पडनी चाहिए। दूसरी ओर एक आशावादी दृष्किोण अपनाते हुए सुझाव दिया कि सभी हिन्दी प्रेमियो का एक शिविर लगाकर सघर्ष की योजना बनाई जाए। इस दिशा मे केवल दो सस्थाए- आर्यसमाज तथा राष्ट्रीय स्वये सेवक सघ मिलकर संघर्ष का बीडा उठा ले तो कोई कारण नही कि भारतीय भाषाए लागू न हो। ये दोनो मिलकर भारतीय भाषाओ का बेडा पार कर सकते हैं।

कार्यक्रम के आरम्भ मे राज-भाषासघर्ष समिति के महासचिव श्री श्यामलाल ने सस्था के गठन के उद्देश्यो, प्रगति एव भविष्य की योजना का विवरण देते हुए एक आठ सूत्री कार्यक्रम प्रस्तुत किया। शिविर मे इसे कार्य रूप देने के तौर-तरीको पर विचारविमर्श हुआ। प० प्रेमलाल शास्त्री एव आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते इस कार्यक्रम पर अपने विचार व्यक्त किए। शिविर में प्रस्तुत आठ सूत्री कार्यक्रम निम्नलिखित है -

राजभाषा संघर्ष समिति का आठसूत्री कार्यक्रम

- राष्ट्रीय रक्षा अकादमी (एन डी ए) एव सम्मिलित रक्षा सेवा (सी डी एस) की प्रवेश परीक्षाओ मे अग्रेजी की अनिवार्यता के विरुद्ध उच्च/सर्वोच्च न्यायालय मे जनहित याचिका।
- केन्द्र, राज्य सरकारो, विश्व-विद्यालयो और अन्य सरकारी प्रतिष्ठानो द्वारा राजभाषा नियमों की नियोजित अवहेलना के प्रति सघन जन चेतना, जनता को भेजे जा रहे अग्रेजी पत्रो के सार्वजनिक बहिष्कार की अपील तथा राजभाषा नियमो के अनुपालन की सरकारी तन्त्र पर दबाव।
- आकाशवाणी और दूरदर्शन के हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओ के कार्यक्रमो मे, अग्रेजीथोपू नीति के प्रति जन जागरण एव स्थिति मे सुधार के लिए अधिकारियो पर व्यापक दबाव।
- वोट मागते समय हिन्दी, परन्तु कुर्सी पाते ही अग्रेजी-राजनेताओ के इस नियोजित पाखण्ड का पर्दाफाश।
- लोकसभा, राज्यसभा, विधान-सभाओं और विधान परिषदो के माध्यम से न्यायालयो, प्रशासन और शिक्षा-तन्त्र मे अग्रेजी के अवैधानिक वर्चस्व के प्रति जनप्रतिनिधियो का ध्यानाकर्षण।
- दिल्ली हरयाणा एव पजाब आदि ऐसे राज्यो मे जहा के उच्च न्यायालयो मे अभी भी केवल अग्रेजी मे काम हो रहा है, वहा की भाषा अथवा हिन्दी मे भी काम करने की अनुमति के लिए सविधान के अनुच्छेद ३४८(२) के अन्तर्गत राष्ट्रपति से आग्रह।
- भारतीय भाषाओं के प्रयोग पक्ष को सबल बनाने के लिए मीडिया तथा अन्य प्रचार माध्यमो से व्यापक जन चेतना अभियान।
- समिति की शाखाओ का विस्तार एव सशक्तिकरण।

कार्यक्रम के दूसरे दिन १७ अगस्त को हिन्दी भाषा से जुडे अन्य मुद्दो पर चर्चा हुई। राजभाषा सघर्ष समिति के मीडिया सयोजक और श्रीराम कॉलेज ऑफ कामर्स, दिल्ली मे हिन्दी विभाग के प्रभारी डॉ रवि शर्मा ने मत व्यक्त किया कि हिन्दी की स्थिति उतनी बुरी नहीं है, जितना कि प्रचार किया जाता है। डॉ शर्मा ने हिन्दी मे कम्प्यूटर की प्रगति की समीक्षा करते हुए कहा कि न केवल हिन्दी का साफ्टवेयर काफी विकसित है, अपितु अन्य सभी भारतीय भाषाओं ने भी इस दिशा मे पर्याप्त प्रगति की है। विदेशी भाषाओ से हिन्दी एव अन्य भारतीय भाषाओ ने भी इस दिशा मे पर्याप्त प्रगति की है। विदेशी भाषाओ से हिन्दी एव अन्य भारतीय भाषाओ में अनुवाद के लिए सॉफ्टवेयर तैयार हो चुके हैं। बस जरूरत है तो इन उपकरणो की उत्साहवर्धक ढंग से इस्तेमाल करने की तथा जागरूक इच्छा शक्ति की। अपने तथ्यो की पुष्टि मे डॉ शर्मा ने विश्वस्तरीय प्रामाणिक आकडे पेश किए।

भारत दूरसचार निगम लि० अहमद नगर (महाराष्ट्र) के राजभाषा अधिकारी श्री विजय कामले ने इस बात पर जोर दिया कि जब फ्रास, जर्मनी, जापान आदि देश अपने यहा प्रचारित सभी पदार्थों के लिए अपनी भाषाओ के प्रयोग पर जोर देते हैं तो भारत की बहुराष्ट्रीय कम्पनियो के लिए यह अनिवार्य क्यो नहीं किया जाता कि वे भारत मे अपने पदार्थों का प्रचार हिन्दी माध्यम से करे।

राजभाषा सघर्ष समिति, करनाल के अध्यक्ष, प्रो चन्द्रप्रकाश आर्य एव राजभाषा सघर्ष समिति अहमदनगर (महाराष्ट्र) के अध्यक्ष डॉ शहाबुद्दीन मो शेख ने सुझाव दिया कि हिन्दी भाषा को यदि रोजगार के विभिन्न क्षेत्रो मे अनिवार्य भाषा बना दिया जाए, इसे रोजी रोटी की भाषा बना ले तो हिन्दी भाषा का समुचित विकास हो सकेगा।

विशाल यज्ञ का आयोजन सम्पन्न

खटकड (जीन्द)। ग्राम खटकड जिला जीन्द मे १६ सितम्बर से १८ सितम्बर २००२ तक आर्यसमाज के सौजन्य से तथा सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद के नेतृत्व मे विशाल यज्ञ का आयोजन किया गया। इस यज्ञ के आयोजक आर्यसमाज खटकड के मन्त्री श्री रामधारी आर्य ने बताया कि इसके ब्रह्मा आर्यप्रतिनिधिसभा हरयाणा के उपप्रधान एव वेदप्रचार अधिष्ठाता श्री रामधारी शास्त्री थे। परिषद के उपप्रधान श्री कर्मपाल ने विशेष रूप से गुरुकुल मटिण्डू से अवकाश लेकर इस कार्यक्रम का सयोजन किया था। आर्यसमाज के प्रधान श्री सूरजमल की देखरेख मे यज्ञ का कार्यक्रम हुआ। इस यज्ञ में पांच टीन घी तथा एक क्विंटल सामग्री से किया गया।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ०१२६२-७६८७४, ७७८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ०१२६२-७७७२२) से प्रकाशित।
पत्र में प्रकाशित लेख सामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा।

भारत सरकार द्वारा रजि० न० २३२०७/७३
पंजीकरणसंख्या टैक/85-2/2000
☎ ०१२६२-७७७२२

सृष्टिसंवत् १,९६,०८,५३,१०३
विक्रमसंवत् २०५९
दयानन्दजन्माब्द

प्रधानसम्पादक : यशपाल आचार्य, सभामन्त्री

सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री

वर्ष २९ अंक ४२ २८ सितम्बर, २००२ वार्षिक शुल्क ८०) आजीवन शुल्क ८००) विदेश में २० डॉलर एक प्रति १.७०

आसोज महीने में किये जानेवाले श्राद्धतर्पण पर विशेष :

"मृतक श्राद्ध समाज के लिये हानिकारक क्यों है ?

सुखदेव शास्त्री, महोपदेशक, दयानन्दमठ, रोहतक

महाभारत युद्ध के बाद भारतीय ऋषि-महर्षियो के देश मे न रहने के कारण एव वेदो के ज्ञान के लुप्त होने के कारण सारे देश मे अन्धपरम्परा फैली, इसी अज्ञानता के कारण ही अनेक मतपन्थो का प्रचलन हुआ, जिनके द्वारा सारी राष्ट्रीय जनता को महान् झूठे आडम्बरो एव अन्धविश्वासो मे फसकर रहना पडा।

इन झूठे मत-मतान्तरो के कारण देश की अधोगति हुई।

इन सबके फैलानेवाले झूठे पाखण्डी महामूर्ख, अनाचारी, स्वार्थी, छली, कपटी ब्राह्मणो ने ज्योतिष के नाम पर यह सब पापकर्म किया। इन्होने भूत-प्रेत आदि मिथ्या बातो का प्रचार किया।

महर्षि दयानन्द ने इसके निराकरण की शिक्षा सत्यार्थप्रकाश के दूसरे समुल्लास मे बडे विस्तार से दी है। किसी के रोग होने पर ये ज्योतिषी कहते हैं-"इस पर सूर्यादि ग्रह चढे हैं" जो तुम शान्तिपाठ, पूजादान, ब्राह्मणो को खीर का भोजना कराओ तो हम मन्त्र पढ देगे, ये ग्रह ताप से छूट जायेगे। ये गारन्टी देते हैं। बालक की जन्मपत्री बनाते हैं, इसमे लाल पीली रेखाए लगाकर बहकाते हैं। डोरा धागा बाधते हैं। शीतलादेवी मन्त्र तन्त्र यन्त्र आदि का ढोग करते हैं। मारण मोहन उच्चाटन का तथा शाकिवी डाकिनी का भय दिखलाते हैं। कहते हैं-ब्राह्मणो को भोजन कराने से नवग्रहो के विघ्न से छूट जाओगे।

अनेक देवो के मन्दिरों की स्थापना करके देश को विभाजित कर दिया। मूर्त्तिपूजा से ही सर्वप्रथम ७१२ ई० मे मुहम्मद बिन कासिम से सिन्ध के राजा दाहर की हार हुई थी। राजा दाहर लडाई मे जीत गया था, किन्तु मन्दिर के पुजारी ने कासिम से कहा कि-यदि तुम मन्दिर का झण्डा गिरा दोगे तो राजा की सेना भाग जाएगी, कासिम ने ऐसा ही किया दाहर की सेना भाग गई। दाहर लडाई मे मारा गया। ज्योतिषियो द्वारा कराई गई मन्दिर के झण्डे के कारण देश की हार हुई। यदि राष्ट्र महर्षि दयानन्द की बात मान लेता तो, यह सब न होता।

आज भी ये झूठे पाखण्डी ब्राह्मण आसौज के महीने मे मरे हुए पितरो को भोजन पहुचाने के बहाने से उनके नाम से श्राद्ध कराते है। इन १५ दिनो का पितृपक्ष के नाम से मनाते हैं। जिन्हें श्राद्ध कहते हैं। लोगो से मरे हुओ के नाम पर पिडदान कराते हैं। दान लेते हैं। खीर का भोजन उनके नाम से बनवाकर खाते हैं। इस झूठे छल-कपट से लोगो को सदियो से बहकाकर देश का सर्वनाश करने मे लगे हुए हैं। मरे हुओ को भोजन कराने की कितनी बडी झूठ है। आगे पढिये-

श्राद्ध तर्पण के विषय में साफ सुनिये

पौराणिकों के ब्रह्मपुराण के अनुसार आसौज मास का कृष्णपक्ष "पितृपक्ष" कहलाता है। इसे ही **"श्राद्धपक्ष"** भी कहते हैं। भाद्रपद की पूर्णमासी से आरम्भ होकर आसौज मास की अमावस्या तक कुल पन्द्रह दिन की अवधि मे पितरों के श्राद्ध किये जाते है।। उनका मत है कि सभी मृतपितर अपनी सन्तान से "पिण्डदान" लेने के लिये पृथ्वी पर आते है। इस अवधि मे बीच मे पितर अपने पूर्वगृह मे यह जानने के लिये आते हैं कि उनके वश-परिवार के लोग उन्हे याद करते हैं कि नही ? यदि इन दिनो मे श्राद्ध के अवसर पर उन्हे याद नहीं किया जाता तो उन्हे बडी निराशा होती है और वे अपने पूर्व परिवार के लोगो को शाप देकर अपने लोक मे लौट जाते हैं और जो उनका श्राद्ध करके ब्राह्मणो को भोजन-वस्त्र दान-दक्षिणा देकर, ब्राह्मणो के द्वारा पिण्डदान करवाकर प्रसन्न करते है उन्हे वे मृतपितर दीर्घायु, धन, सासारिक सुखो का आशीर्वाद देकर बडी खुशी से अपने लोक मे चले जाते हैं। आदि-आदि।

यदि ब्रह्मपुराण और सनातनियो के इन विचारो पर बहुत से तर्कशक्ति एव वेदो के प्रमाणो से विचार किया जाय तो विचार पूर्णरूप से पाखण्ड एव छलकपट से युक्त है। तत्कालीन ब्राह्मणो के द्वारा जनता को भ्रम मे डालकर उन्हे ठगने के अलावा कुछ भी बात सच्चाई की नही है। पहली तो बात यही है कि ये परलोक मे मरकर गये हुए पितर भाद्रपद और आसौज के कृष्णपक्ष मे इन १५ दिनो मे ही अपने परिवारजनो के पास ब्राह्मणो को भोजन, वस्त्र, दान-दक्षिणा दिलाने के लिये ही क्यो आते हैं ? और किसी महीने मे क्यो नही ? ये मरकर पता नही किस योनि मे जन्म ले चुके है ? इसलिये यदि वे अगले जन्म मे मनुष्य जीवन मे जन्म न ले सके हो तो कैसे अपने घर देखने के लिए आ सकेगे ? यहा आने-जाने मे उन्हे किस सवारी मे आना पडता है ? वे अपने घर पर आकर अपने घरवालो से सुखदुःख की बाते क्यो नही करते ? जिस समय ये ससार से विदा हुए थे, उस समय को हजारो वर्ष होगये हो तो वे अपने घर व परिवार को कैसे पहचान सकेगे ? यदि वे आकर गलती से किसी के घर मे आ घुसे तो उनकी मारपिटाई भी सम्भव है ? पुलिसकेस भी बन जावेगा।

वेद के आधार पर तो जब उनकी मृत्यु होगई थी तब उनके शरीर का दाह-सस्कार कर दिया गया था, वे "भस्मान्त शरीरम्" होगये थे। वह मृतक सत्रह तत्त्वो के सूक्ष्म शरीर के साथ यहा से गया था वह जाकर, अगला जन्म भी पागया, अब तो वह, स्थूल शरीर मे आगया है। यदि अब स्थूल शरीर के साथ अपने घर आगया है। यदि अब स्थूल शरीर के साथ अपने घर आगया तो उसे अगर घरवाले बहुत वर्षो के बाद पहचान न सकेगे तो क्या होगा ? मरेहुओ को कोई भी वस्तु नही पहुचाई जा सकती है। वे यहा हैं ही नही, तो किसे पहुचाओगे ? किसे दोगे ? यह सब १५ दिनो का श्राद्धो का कार्यक्रम पोपो के द्वारा जनता को ठगने का ही कार्यक्रम है। इनसे जनता को सावधान रहना चाहिए।

अब असली श्राद्ध व तर्पण क्या है ? इसके विषय मे सुनिये-

पाच प्रकार के यज्ञ माने गये

(शेष पृष्ठ दो पर)

वैदिक-स्वाध्याय

मेरे आत्मन् !

मा त्वा मूरा अविष्यवो मोपहस्वान आ दभन्।
मार्की ब्रह्मद्विषो वन.।।

ऋ० ८ ४५ २३।। साम०उ० १ २ ७।। अ० २० २२ २।।

शब्दार्थ–(हे मेरे आत्मन्! हे मेरे मन!) **(त्वा)** तुझको **(मूरा)** मूढ **(अविष्यव.)** अपनी पालना चाहनेवाले स्वार्थ-पीडित लोग **(मा दभन्)** मत नष्ट करे, मत दबा दे और **(उपहस्वान)** उपहास करनेवाले, ठट्ठा उडानेवाले लोग भी **(मा)** मत दबा दें। तू **(ब्रह्मद्विष)** ज्ञान व परमेश्वर से प्रीति न रखनेवाले मनुष्यो का **(मार्की वन.)** मत सेवन कर, मत सगति कर।

विनय–हे मेरे आत्मन्! जब तू आत्मसुधार के लिये अग्रसर होता है, तो ससार की कई विरोधिनी शक्तिया तेरा मुकाबिला करती हैं, तुझे आगे बढने से रोकना चाहती हैं। जब तू अपनी उन्नति के लिए सुधार के मार्ग का अवलम्बन करेगा तो कई अज्ञानी मूढ भाई उसे न समझने के कारण तेरा विरोध करेगे, तेरी निन्दा करेगे। जिन भाइयो के स्वार्थ मे उस सुधार द्वारा धक्का लगेगा या धक्का लगने का काल्पनिक भय होगा वे 'अविष्यु' (अपनी पालना चाहनेवाले) स्वार्थ-पीडित पुरुष तेरे मार्ग मे बेशक रोडे अटकायेगे, चुगली करेगे, भ्रम फैलायेगे और तुझे नाना प्रकार से कष्ट देगे। पर हे मेरे आत्मन्! तू इनसे न घबराना, मत दबना, मत नष्ट होना। तू अन्त मे इन सबको अवश्य जीत लेगा। तेरा तेज अदम्य है। इसी तरह तेरे निराले कार्यो को देखकर–जिन्हे आम जनता ने अभी तक नहीं अपनाया है ऐसे नये सुधार के कार्यो को तुझे आचरण मे लाते देखकर–कुछ लोग तेरी खिल्ली उडायेगे तेरा उपहास करेगे, हसी-हसी मे बडे तीक्ष्ण व्यग्य करेगे। पर हे मेरे मन! तू इनसे भी कभी हतोत्साह मत होना, इनसे प्रभावित मत होना, अनुद्विग्न और प्रसन्न चित्त से इन सबको सह लेना। एक समय आयेगा जबकि ये अज्ञानी मूढ पुरुष भी सचाई समझ जायेगे और ये ठट्ठा करनेवाले लोग तेरे अनुयायी हो जायेगे। यह ठट्ठा उडाना तथा मूर्खो द्वारा पीडा पहुचाया जाना इस ससार मे सुधार के साथ, उन्नतिशीलता के साथ, सदा से होता आया है और होता रहेगा। कुतर्क, ठट्ठा, पीडा आदि क्रमो मे हरेक सुधार को और हरेक सुधारशील आत्मा को गुजरना ही पडता है। अत तू इनसे न दबता हुआ निर्भय होकर आगे बढता जा, अपना काम करता जा। यदि तेरे मार्ग से विपरीत मार्ग को पकडे हुए हैं–उनका सेवन मत कर उनकी सगति मे मत रह, उनकी उपेक्षा कर, उनसे यू ही बात मत कर, बिना प्रयोजन उनके सपर्क मे मत आ। ऐसा करने मे तू अनावश्यक सघर्ष से बचेगा और तुझे अपने को दृढ करने का निर्बाध अवसर मिलेगा। दृढ होजाने पर तो तू इन सबके मध्य मे रहनेवाला गुरु हो जायेगा।

आर्यसमाज के उत्सवों की सूची

१	आर्यसमाज बालन्द जिला रोहतक	२७ से २९ सितम्बर ०२
२	श्रीमद्दयानन्द वेदार्ष महाविद्यालय गौतमनगर नई दिल्ली (वार्षिक समारोह एव चतुर्थवेद ब्रह्मपारायण महायज्ञ एव सत्यार्थ भृत्यज्ञ)	२९ सित० से २० अक्तू० ०२
३	आर्यसमाज कोसली जिला रेवाडी	२७ से २९ सितम्बर ०२
४	आर्यसमाज कोसली जिला रेवाडी	२७ से २९ सितम्बर ०२
५	आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ (झज्जर)	२६ सित० से २ अक्तू० ०२
६	आर्यसमाज कौण्डल जिला फरीदाबाद	२-३ अक्तू० ०२
७	आर्यसमाज माडल कालोनी यमुनानगर	१८-२० अक्तूबर ०२
८	आर्यसमाज बेगा जिला सोनीपत	१८-२० अक्तूबर ०२
९	आर्यसमाज सालवन जिला करनाल	१८-२० अक्तूबर ०२
१०	आर्यसमाज बहल जिला भिवानी	१८-२१ अक्तूबर ०२
११	आर्यसमाज झज्जर रोड बहादुगढ (झज्जर)	१९-२० अक्तूबर ०२
१२	आर्यसमाज बीगोपुर डा० धोलेडा (महेद्रगढ)	१९-२० अक्तूबर ०२
१३	आर्यसमाज गगसीना जिला करनाल	१६-१८ अक्तूबर ०२
१४	आर्यसमाज कालका जिला पचकूला	२३-२७ अक्तूबर ०२
१५	आर्यसमाज शेखुपुरा खालसा जिला करनाल	२५-२७ अक्तूबर ०२
१६	गुरुकुल कुरुक्षेत्र	२५-२७ अक्तूबर ०२
१७	कन्या गुरुकुल पचगाव जिला भिवानी	२६-२७ अक्तूबर ०२
१८	आर्यसमाज मोखरा जिला रोहतक	३० अक्तू० से १ नव० ०२
१९	आर्यसमाज कासण्डा जिला सोनीपत	२ से ४ नवम्बर ०२

–रामधारी शास्त्री, सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता

मृतक श्राद्ध समाज के लिये....... (प्रथम पृष्ठ का शेष)

हैं–ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, बलिवैश्वदेव यज्ञ, अतिथियज्ञ। इनमें तीसरा पितृयज्ञ है। पितृयज्ञ के सम्बन्ध मे महर्षि दयानन्द सरस्वती सत्यार्थप्रकाश के चौथे समुल्लास मे लिखते हैं–

तीसरा "पितृयज्ञ" अर्थात् जिसमे देव जो विद्वान्, ऋषि जो पढनेपढाने, "पितर" जो माता-पिता आदि वृद्ध ज्ञानी और परमयोगियो की सेवा करनी। पितृयज्ञ के दो भेद हैं, एक श्राद्ध और दूसरा तर्पण। श्राद्ध अर्थात् "श्रत्" सत्य का नाम है। श्रत्सत्य दधाति यया क्रियया सा श्रद्धा, श्रद्धया यत् क्रियते "तच्छ्राद्धम्" जिस क्रिया से सत्य का ग्रहण किया जाय उसका नाम श्रद्धा और जो श्रद्धा से कर्म किया जाए उसका नाम श्राद्ध है और तृप्यन्ति तर्पयन्ति येन पितृन् तत्तर्पणम्" जिस कर्म से तृप्त अर्थात् विद्यमान माता पिता आदि पितर प्रसन्न हो और प्रसन्न किये जाये उसका नाम तर्पण है, परन्तु यह जीवितो के लिये है मृतको के लिए नहीं। महर्षि ने यहा स्पष्टरूप से आदेश दिया है कि श्राद्ध और तर्पण जीवितो का किया जाय, मरेहुओ का नहीं। तर्पण के विषय मे महर्षि दयानन्द सरस्वती ने तीन भाग किये हैं–जैसे–देवतर्पण। ऋषितर्पण। पितृतर्पण।

१ देवतर्पण मे महर्षि शतपथ ब्राह्मण ३।७।३।१० का प्रमाण देते हुए लिखते हैं–"विद्वासो हि देवा" जो विद्वान् हैं – उन्हीं को देव कहते हैं। जो सागोपाग चारो वेदो को जाननेवाले हो उनका नाम ब्रह्मा और जो उनसे न्यून पढे हो उनका भी नाम देव अर्थात् विद्वान् है। उनके सदृश उनकी विदुषी स्त्री ब्रह्माणीदेवी और उनके तुल्य पुत्र और शिष्य तथा उनके सदृश उनके गण अर्थात् सेवक हो, उनकी सेवा करना है, उसका नाम श्राद्ध और तर्पण है।

२ अथ ऋषितर्पणम् – "जो ब्रह्मा के प्रपौत्र मरीचिवत् विद्वान् होकर पढावे और जो उनके सदृश विद्यायुक्त उनकी स्त्रिया कन्याओ को विद्यादान देवे उनके तुल्य पुत्र और शिष्य तथा उनके सेवक हो उनका सेवन और सत्कार करना ऋषितर्पण है।

३ पितृतर्पण – मे सोमसद, अग्निष्वात्त बर्हिषद, सोमपा हविर्भुज आज्यपा सुकालिन, यम आदि विद्वानो तथा अपने परिवार के पिता, पितामह, प्रपितामह, माता, पितामही, प्रपितामही। अपनी स्त्री तथा भगिनी सम्बन्धी और एक गोत्र के तथा अन्य कोई भद्रपुरुष वा वृद्ध हो उन सबको अत्यन्त श्रद्धा से उत्तम अन्न, वस्त्र, सुन्दरयान आदि देकर अच्छे प्रकार जो तृप्त करना अर्थात् जिस-जिस कर्म से उनका आत्मा तृप्त करना और शरीर स्वस्थ रहे उस उस कर्म से प्रीतिपूर्वक उनकी सेवा करनी वह श्राद्ध और तर्पण कहाता है।

यह श्राद्ध का कार्य और पूज्यो को तृप्त करने का कार्य सदैव नित्यप्रति करना चाहिए। उनके लिये आसौज का कोई भी श्राद्धपक्ष का विधान नही है। वह तो श्राद्ध और तर्पण १२ महीनो ही होना परमआवश्यक है। महर्षि मनु इसके लिए प्रतिदिन का आदेश देते हुए कहते है–

"कुर्यादहरह श्राद्धमन्नाद्येनोदकेन वा।
पयोमूलफलैर्वापि पितृभ्य प्रीतिमावहन्। ३-८२।

अर्थात् मनुष्य प्रतिदिन प्रीति-श्रद्धा प्रेमभाव रखकर पितरो के लिये अन्न, भोजन, जल, दूध, कन्दमूल, फलादि पदार्थ देकर श्राद्ध ये किये जानेवाले पितृयज्ञ को करे। मनु फिर ३-८१ मे लिखते हैं।

"अर्चयेत्-पितृन् श्राद्धै – अर्थात् पितरो को श्रद्धाभाव से किये जानेवाले सेवा-शुश्रूषा, अन्न-जल, वस्त्रदान आदि से सत्कृत करे, क्योकि – मनु फिर लिखता है– **"ऋषय. पितरो देवा भूतान्यतिथयस्तथा।**
आशासते कुटुम्बिभ्यस्तेभ्य: कार्य विजानता। मनु० ३-८०।।

अर्थात्-ऋषि, पितर, देव आदि जीवितव्यक्ति, पशु-पक्षी प्राणी और अतिथिजन ये सभी गृहस्थ से ही अपनी सहायता सेवा की आशा रखते हैं अत उनकी सहायता करना अपना कर्त्तव्य समझते हुए गृहस्थ व्यक्ति को उनकी सहायता करनी चाहिए, यही पितृयज्ञ, यही सच्चा श्राद्ध एव तर्पण है।

इसके साथ ही हम देशवासियो का यह पर कर्त्तव्य है कि हम भी राष्ट्र के लाखो लोगो को जो गरीबी की रेखा मे जीवनयापन कर रहे हैं। जिनके पास एक समय के भोजन का भी प्रबन्ध नहीं है, जिनके बालको के पास पहनने के लिए कपडे भी नहीं है–उनको श्रद्धा के साथ भोजन वस्त्र का दान करे। उन्हे भोजन देकर तृप्त करे, यह काम सिर्फ आसौज के ही महीने मे ही नहीं वर्षभर करते रहना चाहिए। यही सच्चा श्राद्ध तर्पण है। यही भोजन के रूप मे उनको लिए पिण्डदान है। ऐसा शुद्ध रूप से जीवितो का श्राद्ध तर्पण करने से समाज की कोई हानि नहीं होगी। राष्ट्र की उन्नति होगी। आज का झूठा श्राद्ध तर्पण तो देश के लिए हानिकारक ही होरहा है। इसमे परिवर्तन करना चाहिए।

तभी यह होगा – **सर्वे भवन्तु सुखिन।**

महर्षि दयानन्द का मन्तव्य

वेदों की उत्पत्ति

डा. सुदर्शनदेव आचार्य, अध्यक्ष संस्कृत सेवा संस्थान, रोहतक

वेद का लक्षण–

महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रन्थों मे वेद का यह लक्षण किया है–

(१) मैं चारो वेदो अर्थात् विद्या-धर्मयुक्त ईश्वरप्रणीत सहिता मन्त्र भाग को निर्भ्रान्त स्वत प्रमाण मानता हू। वे स्वय प्रमाणरूप हैं क्योकि इनके प्रमाण होने मे किसी अन्य ग्रन्थ के प्रमाण की अपेक्षा नहीं है। जैसे सूर्य वा प्रदीप अपने स्वरूप के स्वत प्रकाशक और पृथिवी आदि पदार्थो के भी प्रकाशक होते हैं, वैसे चारों वेद हैं।

और चारो वेदो के ब्राह्मणग्रन्थ, छ अग, छ. उपाग, चार उपवेद और ११२७ ग्यारह सौ सत्ताईस वेदो की शाखाये हैं वे वेदो के व्याख्यानरूप ब्रह्मा आदि महर्षियो के बनाये ग्रन्थ हैं उनको परत प्रमाण अर्थात् वेदो के अनुकूल होने से प्रमाण और जो इनमे वेदविरुद्ध वचन हैं, उनको अप्रमाण करता हू। (स०प्र० स्वमन्तव्य ०२)

(२) विद ज्ञाने विद सत्तायाम्, विदलृ लाभे, विद विचारणे एतेभ्यो धातुभ्यो 'हलश्च' (४।३।१२१) इति सूत्रेण करणाधिकरणकारकयोर्घञ्प्रत्यये कृते वेदशब्द साध्यते। विदन्ति= जानन्ति, विद्यन्ते-भवन्ति, विन्दन्ति= लभन्ते, विन्दते=विचारयन्ति सर्वे मनुष्या सर्वा सत्यविद्या यैर्येषु वा तथा विद्वासश्च भवन्ति ते वेदा'

अर्थ-एक विद धातु ज्ञानार्थक है, दूसरा विद सत्तार्थक है, तीसरे विदलृ का लाभ अर्थ है, चौथे विद का विचार अर्थ है। इन चार धातुओं से करण और अधिकरण कारक मे घञ् प्रत्यय करने से वेदशब्द सिद्ध होता है। जिनके पढने से यथार्थ विद्या का विज्ञान होता है, जिनको पढकर विद्वान् होते हैं, जिनसे सब सुखो का लाभ होता है, और जिनसे ठीक-ठीक सत्य-असत्य का विचार मनुष्यो को होता है, उससे ऋक् संहिता आदि ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद का 'वेद' नाम है। (ऋ०भा०भू० वेदोत्पत्ति विषय)।

(३) जो ईश्वरोक्त, सत्यविद्याओ से युक्त, ऋक् संहिता आदि चार पुस्तक है कि जिनसे मनुष्यो को सत्य-असत्य का ज्ञान होता है, उनको वेद कहते हैं। (आर्योद्देश्यरत्नमाला)।

वेदों के इन उपरिलिखित लक्षणों से स्पष्ट है कि महर्षि दयानन्द के मत में ऋग्वेद आदि चार वेद ईश्वरप्रणीत, विद्या और धर्म से युक्त निर्भ्रान्त स्वत प्रमाण ग्रन्थ हैं। ऋग्वेद आदि के ऐतरेय आदि ब्राह्मणग्रन्थ, शिक्षा-कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द ज्योतिष ये छ वेदाग, साख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमासा और वेदान्त ये छ उपाग, ऋग्वेद आदि के क्रमश आयुर्वेद, धनुर्वेद, गान्धर्ववेद और अर्थवेद ये चार उपवेद, वेद नहीं हैं और वेदो की ११२७ शाखाए वेद नहीं है।

शब्द प्रमाण (वेद)–

ऋग्वेद आदि चार वेदो का उत्पत्तिकर्ता ईश्वर है इस विषय मे निम्नलिखित शब्द प्रमाण उपलब्ध होते हैं –

(१) **यस्मादृचोऽअपातक्षन्**
यजुर्यस्मादपाकषन्।
सामानि यस्य लोमान्य-
थर्वांगिरसो मुख स्कम्भ त
ब्रूहि कतम. स्विदेव स।।
(अथर्व० १०।२३।४।२०)

अर्थ-जिस परमात्मा से ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद प्रकाशित हुये हैं वह कौनसा देव है ? अर्थात् जो सबको उत्पन्न करके धारण कर रहा है वह ईश्वर देव है जिस से ऋग्वेद आदि चार वेद उत्पन्न हुये हैं।

(स०प्र० समु० ७)

(२) जो सर्वशक्तिमान् परमेश्वर है उसी से (ऋच) ऋग्वेद (यजु०) यजुर्वेद (सामानि) सामवेद (आगिरस) अथर्ववेद ये चारो वेद उत्पन्न हुये हैं। इस प्रकार रूपक अलकार से वेदो की उत्पत्ति का प्रकाश ईश्वर करता है कि अथर्ववेद मेरे मुख के तुल्य, सामवेद लोमो के समान, यजुर्वेद हृदय के समान और ऋग्वेद प्राण की न्याई है।

(ब्रूहि कतम स्विदेव स) कि चारो वेद जिससे उत्पन्न हुये हैं सो कौनसा देव है ? उसको तुम मुझसे कहो। इस प्रश्न का उत्तर यह है कि (स्कम्भम्) जो सब जगत् का धारणकर्ता परमेश्वर है उसका नाम 'स्वकम्भ' है। उसी को तुम वेदों का कर्ता जानो और यह जानो कि उसको छोडकर मनुष्यों को उपासना करने योग्य दूसरा कोई इष्टदेव नहीं है। क्योकि ऐसा अभागा कौन मनुष्य है जो वेदो के कर्ता सर्वशक्तिमान् परमेश्वर को छोडकर और दूसरे को परमेश्वर मानकर उसकी उपासना करे (ऋ०भा०भू० वेदोत्पत्तिविषय)

(२) **स्वयम्भूर्याथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधाच्छाश्वतीभ्य समाभ्य:** (यजु० ४०।८)

अर्थ-जो स्वयम्भू, सर्वव्यापक, शुद्ध, सनातन, निराकार परमेश्वर है, वह सनातन जीवरूप प्रजा के कल्याणार्थ यथावत् रीतिपूर्वक वेद द्वारा सबविद्याओ का उपदेश करता है। (स०प्र० समु० ७)।

(३) **तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत**
ऋच· सामानि जज्ञिरे।
छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद्
यजुस्तस्मादजायत।।
(यजु० ३१।७)

अर्थ-(१) (तस्माद् यज्ञात् सर्वहुत) सत् जिसका कभी नाश नहीं होता, चित् जो सदा ज्ञानस्वरूप है, जिसको अज्ञान का लेश भी कभी नहीं होता 'आनन्द' जो सदा सुखस्वरूप और सबको सुख देनेवाला है, इत्यादि लक्षणो से युक्त 'पुरुष' जो सब जगह मे परिपूर्ण होरहा है, जो सब मनुष्यो को उपासना के योग्य, इष्टदेव और सब सामर्थ्य से युक्त है, उसी परब्रह्म से (ऋचा) ऋग्वेद (यजु) यजुर्वेद (सामानि) सामवेद और (छन्दासि) इस शब्द से अथर्ववेद भी-ये चारो वेद उत्पन्न हुये है। इसलिये सब मनुष्यो को उचित है कि वे वेदो को ग्रहण करे और वेदोक्तरीति से ही चले।

(२) यहा जज्ञिरे और अजायत दोनो क्रियाओ के अधिक होने से वेद अनेक विद्याओ से युक्त हैं ऐसा जाना जाता है।

(३) वैसे ही 'तस्मात्' इन दोनो पदो के अधिक होने से यह निश्चय जानना चाहिये कि ईश्वर से ही वेद उत्पन्न हुये हैं, किसी मनुष्य से नही।

(४) सब मन्त्र गायत्री आदि छन्दो से युक्त हैं, फिर छन्दासि इस पद के कहने से चौथा जो अथर्ववेद है, उसकी उत्पत्ति का प्रकाश होता है।

(५) शतपथ आदि ब्राह्मण और वेदमन्त्रो के प्रकरण से यह सिद्ध होता है कि 'यज्ञ' शब्द से विष्णु का और विष्णु शब्द से सर्वव्यापक जो परमेश्वर है, उसी का ग्रहण होता है। क्योकि सब जगत् की उत्पत्ति करनी परमेश्वर मे ही घटती है, अन्यत्र नहीं। इसलिये यहा 'यज्ञ' शब्द से परमेश्वर का ही ग्रहण है (ऋ०भा० भू० वेदोत्पत्ति विषय)

महर्षि याज्ञवल्क्य–

(१) एव वाऽअरे महतो भूतस्य नि·श्वसित्तमेतद्ऋग्वेदो यजुर्वेद सामवेदोऽथर्वांगिरस (शत० १४।५)।

अर्थ-(१) याज्ञवल्क्य महाविद्वान् जो महर्षि हुये हैं, वह अपनी पण्डिता मैत्रेयी स्त्री को उपदेश करते हैं कि-हे मैत्रेयि! जो आकाश आदि से बडा सर्वव्यापक परमेश्वर है, उससे ही ऋक्, यजु, साम और अथर्व ये चारो वेद उत्पन्न हुये हैं।

(२) जैसे मनुष्य शरीर से श्वास बाहर को आकर फिर भीतर को जाता है, इसी प्रकार सृष्टि के आदि मे ईश्वर वेदो को उत्पन्न करके ससार मे प्रकाश करता है।

(३) और जैसे बीज मे अकुर प्रथम से ही रहता है वही वृक्षरूप होकर फिर भी बीज के भीतर रहता है इसी प्रकार से वेद भी ईश्वर के ज्ञान मे सदा बने रहते हैं। उनका नाश कभी नहीं होता। क्योकि वह ईश्वर की विद्या है। इससे उसको नित्य ही जानना (ऋ०भा०भू० वेदोत्पत्ति प्रकरण)।

वेद प्रकाशन की विधि

जिज्ञासु–ईश्वर ने किनके आत्मा मे वेदो का प्रकाश किया ?

सिद्धान्ती-(१) 'अग्नेर्ऋग्वेदो जायते वायोर्यजुर्वेद सूर्यात्सामवेद (शत० ११।४।२।३) अर्थात् सृष्टि के आदि मे ईश्वर ने अग्नि, वायु आदित्य तथा अगिरा इन चार ऋषियो के आत्मा मे एक-एक वेद का प्रकाश किया (स०प्र० समु० ६)

(२) अग्नि, वायु आदित्य और अगिरा इन चार मनुष्यो को जैसे वादित्र (बाजा) को बजावे वा काठ की पुतली के चेष्टा करावे इसी प्रकार ईश्वर ने उनको निमित्त मात्र किया था। क्योकि उनके ज्ञान से वेदो की उत्पत्ति नही हुई किन्तु इससे यह जानना कि वेदो के जितने शब्द अर्थ और सम्बन्ध है, वे सब ईश्वर ने अपने ही ज्ञान से उनके द्वारा प्रकट किये हैं। (ऋ०भा०भू० वेदोत्पत्ति०)

(क्रमश)

आर्यसमाज बुबका (यमुनानगर) का चुनाव

सरक्षक-चौ० सतपाल जी आर्य, प्रधान-चौ० मामराज ठेकेदार उपप्रधान-चौ० सेवाराम ठेकेदार, मन्त्री-बनारसीलाल आर्य भजनोपदेशक, उपमन्त्री-बलवीरसिह आर्य, कोषाध्यक्ष-श्री सतपाल जी आर्य पुस्तकाध्यक्ष-हुकमचन्द जी आर्य प्रचारमन्त्री-रमेशचन्द जी आर्य।

–मन्त्री

आदर्श गांव

करनाल से लगभग बीस कि.मी. करनाल कैथल मार्ग पर आबाद गाव दादुपुर अपने गर्भ मे अनेक रहस्यात्मक तथ्य समेटे हुए है। जनश्रुति के अनुसार महाभारत काल मे यह क्षेत्र भी युद्ध-क्षेत्र मे आता था। इस स्थान पर भारी जगल हुआ करता था जिसमे महर्षि दादु तपस्या किया करते थे। बाद मे उनके अनुयायियो ने यज्ञ जारी रखे, जिसके चलते यह गाव कालान्तर में दादुपुर कहलाया।

गाव के सरपच ईश्वरसिह आर्य बताते हैं कि हरयाणा मे दादुपुर ही मात्र एक ऐसा गाव है, जहा पर सभी आर्यसमाज की परम्परा के अनुसार गायत्री मत्र के उच्चारण के साथ प्रतिदिन सुबह चार बजे यज्ञ किया जाता है जिसमे गाव के लोग बढचढ कर भाग लेते हैं।

आध्यात्मिक सस्कृति के इस देश मे शायद ही कोई ऐसा गाव हो जहा पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मूर्ति पूजा न होती हो। लेकिन यह गाव ऐसा गाव है जिसमे कोई मदिर, मस्जिद या गुरुद्वारा नहीं है। मात्र आर्यसमाज के प्रवर्तक स्वामी दयानद सरस्वती के नाम से यज्ञशाला है जिसमे गाव के लोग सयुक्त रूप से यज्ञ करते हैं। सैंकडो वर्षो से यज्ञशाला मे देसी घी से यज्ञ किया जाता है। शादी-विवाह कार्यो तथा अतिम सोलहवे सस्कार के कार्य भी आर्यसमाज की परपरा के दृष्टिगत निपटाए जाते हैं।

लगभग चार हजार आबादी वाले इस गाव मे इक्कीस सौ मतदाता हैं। गाव मे दो आगनवाडी केन्द्र, एक पशु अस्पताल तथा डिस्पैंसरी है। गलिया व नालिया पक्की हैं। गाव पक्की सडको से जुडा हुआ है। अभी हाल ही मे राज्य सरकार ने नई सडक, पुरानी सडक की मरम्मत, नये ट्यूबवैल तथा स्कूल के कमरो के लिए लाखो रुपये की ग्रान्ट मजूर की है। गाव की पचायत के पास चालीस एकड का चराद है। जिसे कृषि योग्य बनाया जा रहा है। यह गाव जुडला वि०स० क्षेत्र मे आता है। इस गाव मे कई ऐसी सास्कृतिक धरोहर हैं, जो दानवीर कर्ण के शासन काल की यादे ताजा कर देती हैं। लेकिन कुभकर्णी नींद से सोए पुरातत्त्व विभाग ने कभी इस गाव की खबर नहीं ली है।

(हरिभूमि से साभार)

आर्यसमाज के प्रधान/मन्त्री ध्यान दो

धन उपार्जन (आय) की दृष्टि से अनेक आर्यसमाजो मे निम्नलिखित गलत काम होरहे हैं जो तत्काल बन्द होने चाहिये-

क) घर से भागे हुये मनचले चरित्रहीन लडके-लडकियो की शादिया कराई जाती हैं जबकि उन के सरक्षक (माता-पिता) उनसे सख्त नाराज हैं। आर्यसमाज के अधिकारी उनसे कोर्ट का शपथ-पत्र लेकर अपने पण्डित पुरोहित से विवाह सस्कार करा देते हैं और उनसे हजारो रुपये प्राप्त कर लेते हैं। यह कोई अच्छा काम नहीं है। जब तक लडके-लडकी दोनो पक्षवाले राजी न हो तब तक आर्यसमाज मे विवाह सस्कार मत कराओ।

ख) आर्यसमाज के भवन को बारातघर मत बनाओ। आर्यसमाज मे बाराती आकर धूम्रपान, मद्यपान करते हैं। शराब की खाली बोतले, बीडी-सिग्रेट के टुकडे बताते है कि यहा क्या हुआ है। जब समाज के प्रधान से पूछा तो वह बेशर्म कहता है कि ये हमारी आय का साधन है। ऐसे लोग आर्यसमाज को डुबा रहे हैं। ये आर्यसमाज को बदनाम कर रहे हैं। इनको खून मुह लगा है।

-देवराज आर्यमित्र, दिल्ली

महर्षि दयानन्द निर्वाण विशेषांक

सर्वहितकारी के विद्वान् लेखको को सूचित किया जाता है कि आपके प्रिय साप्ताहिक पत्र का दीपावली के अवसर पर दिनाक २८ अक्टूबर ०२ को महर्षि दयानन्द निर्वाण विशेषाक प्रकाशित किया जारहा है अत महर्षि दयानन्द के निम्नलिखित सन्दर्भो मे लेख/कविता सादर आदि आमन्त्रित किये जाते हैं। लेख १५ अक्टूबर तक कार्यालय में पहुंच जावें।

(१) ईश्वरवाद, (२) बालशिक्षा, (३) ब्रह्मचर्य आश्रम, (४) आर्षपाठविधि, (५) गृहाश्रम, (६) वानप्रस्थ एव सन्यास आश्रम, (७) वेदोत्पत्ति, (८) सृष्टि-उत्पत्ति, (९) जीव का बन्ध-मोक्ष, (१०) वेदविरुद्ध किसी एक मत की समीक्षा, (११) वैदिकधर्म प्रचार के अभ्युपाय, (१२) आर्यों का चक्रवर्ती राज्य, (१३) महर्षि दयानन्द के उपकार।

एक सामयिक विनय

ऐ आर्य युवको सुनो, आर्य वीराङ्गनाओ की यह पुकार।
सुन सकते हो तो सुनो, हमारे हृदय की यह चीत्कार॥
साए मे जिनके बेखौफ पलती थी हम, क्या हुआ उन वीरो को?
पूजती थी जो औरत को, वक्त ने, मिटा डाला उन तस्वीरो को॥
खुद भी हुए हो बेबस वा लाचार, आत्मविश्वास हमारा डिगाया है।
अपनी सभ्यता व सस्कृति का, क्या क्रूर मजाक उडाया है॥
अपने पूर्व मे झाको तनिक, किनकी हो तुम सन्तान।
चरित्र को ही समझा था, जिन्होने अपनी आन-बान॥
त्रेता मे हुए वीर लक्ष्मण, जिन्हें जति पुरुष कहते हैं।
चरित्र की दृढता के कारण, आज भी उन्हे स्मरते हैं॥
निज भार्या से दूर रहकर, भाई का साथ निभाया था।
सीता के चरणो को देखना ही, अपना धर्म बनाया था॥
इसी ब्रह्मचर्य के बल से, इतनी शक्ति पाई थी।
लाघने पर भस्म हो, ऐसी, लक्ष्मण-रेखा बनाई थी॥
स्मरण करो द्वापर के उस, विलक्षण अर्जुन वीर को।
चरित्र ने ही श्रेष्ठ योद्धा, बनाया था उस धीर को॥
उत्तरा के रूप मे निज शिष्या के, जब ब्याहने की बात आई थी।
बात वह उस दूरदर्शी योद्धा ने, तुरत सविनय ठुकराई थी॥
याद करो अब देव दयानन्दको, ज्ञान की गगा बहाई थी।
ब्रह्मचर्य-व्रत से कलु मे भी, महर्षि की पदवी पाई थी॥
एक दिन बहने बोली उपदेश सुनने, क्या पास तुम्हारे आया करे?
ऋषि बोले पतियो को भेजो, वे उपदेश सुन, तुम्हे सुनाया करे॥
इसी ब्रह्मचर्य के तप से ऋषि ने, अतुल बल पाया था।
एक ही हुकार से उन्होने, जंगली रीछ भगाया था॥
उन वीरो के सतपथ को क्यो, तुमने है आज भुला दिया।
याद करो उस दिव्य चेतना को, जिसे है तुमने सुला दिया॥
इतने पतित हुए हो आज, बहन सग, चल नहीं सकता भाई।
जब अपशब्द कहते हो, उनकी, हो जाती है रुसवाई॥
घिन आने लगती है हमे, तुम्हारे इस आचार से।
प्रभाव डालोगे क्या, खुद ही, लगते हो लाचार से॥
फिर भी आर्य समझ हृदय से, निकलती है यही दुआ।
शीघ्र उतरे कधो से तुम्हारे, अज्ञानरूपी यह जूआ॥

-अभयसिह कुण्डू, एम ए द्वय (हिन्दी, अंग्रेजी), प्राध्यापक, विद्योत्तमा व०मा० विद्यालय, करनाल

आर्य बनायें

वैदिक धर्म के कार्य करायें,
विश्व जगत् को आर्य बनाये।
ब्राह्म मुहूर्त मे नित्य उठ करके,
शौचादि से निवृत्त होकर,
सन्ध्या-हवन अनिवार्य करायें,
विश्व जगत् को आर्य बनायें।
युवा युवती सब मिल करके,
वैदिक शिक्षा को अपनायें,
छात्रो को ब्रह्मचारी बनाये,
विश्व जगत् को आर्य बनाये।
मात-पिता गुरु आदर करके,
संस्कार जीवन में लायें,
सदाचार सत्कार्य करायें,
विश्व जगत् को आर्य बनायें।
वेद गायत्री अपनाकर
सत्यार्थप्रकाश की ज्योति जलायें,
वेदपाठी आचार्य बनायें,
विश्व जगत् को आर्य बनायें।

लेखक : रामनिवास बंसल
चरखी दादरी (भिवानी)

झुकेगा सारा ज़माना

१) ऐ वैदिक धर्म के दीवानो,
ये आर्यसमाज के परवानो।
गहराई से सोचो अब तक,
क्या खोया है क्या पाया?

२) चलाया रातभर चप्पू,
प्रात देखा तो किश्ती वहीं है।
धर्म प्रचार का प्रसार है जितना,
उसका प्रभाव उतना नहीं है।

३) कहीं कोई कभी है हमारे अन्दर,
गिर गये जो बनकर सिकन्दर।
तोड दो जहर के प्याले सारे,
जिन्दगी के नहीं हैं ये सहारे।

४) उठो! हाथ मे शर्मसार ले लो,
धीरे सही पर कदम आगे ही बढाना,
आयगा वह दिन तुम्हारे सम्मुख,
देख लेना, झुकेगा सारा जमाना।।

लेखक : देवराज आर्यमित्र,
कृष्णनगर, दिल्ली-५१

मॉरिशस यात्रा

मॉरिशस मे आर्यसमाज की प्रमुख सस्था आर्यसभा है, जिसके साथ छोटी-बडी लगभग ४२५ आर्यसमाजे सम्बद्ध है। आर्यसभा के तत्वावधान मे मोहनलाल मोहित के शतायु होने पर आर्य महासम्मेलन आयोजित किया था। १८ तारीख से २५ तारीख तक यजुर्वेद पारायण महायज्ञ का आयोजन किया गया था। २३-२४-२५-२६ तक अनेक कार्यक्रम आयोजित किए गए थे। भारतवर्ष से अनेक आर्य सज्जन उस अवसर पर मॉरिशस पहुचे थे, जिनमें एक ग्रुप सार्वदेशिक सभा के प्रधान कैप्टन देवरत्न जी के साथ गया जिसमे ३७ प्रतिनिधि थे। दूसरा ग्रुप श्री सचदेवा जी के साथ था जिसमे ४४ के करीब प्रतिनिधि थे, बाकी व्यक्तिगत रूप से सीधे मॉरिशस पहुंचे, इससे अलग कनाडा, फ्रास व अमेरिका के प्रतिनिधि भी इस अवसर पर पधारे आर्यसमाज लावेनिया में मुख्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया था, यजुर्वेद पारायण महायज्ञ आचार्या उषा शर्मा ने कराया तथा स्वामी सत्यम् जी दो महीने से आर्यसमाज के प्रचार का कार्य कर रहे हैं। आर्यसमाज लावेनिया मे एक गुरुकुल भी चलता है, जिसका सचालन बहिन उषा शर्मा करती है, वेदपाठ मे इसी गुरुकुल की छात्राओ ने भाग लिया था। १८ सितम्बर को मैं दिल्ली से मॉरिशस के लिये रवाना हुआ था। १९ से २३ सितम्बर तक विभिन्न कार्यक्रमो मे श्री कैप्टन देवरत्न जी के सहयोग से ५ व्याख्यान गोष्ठियों मे विचार विनिमय होता रहा, ठहरने, भोजन आदि की उत्तम व्यवस्था कीगई थी, इस दौरान मोरिशस के दर्शनीय स्थानों पर भी सभी को जाने का अवसर मिला।

मॉरिशस का अपना एक इतिहास है, समुद्र के बीच में यह एक टापू है। १५२८ मे एक पोर्तगीजवासी डाम पैट्रो ने खोज की ७० वर्ष तक पोर्तगीजवासियों का राज रहा है। उसे आबाद बनाने में सफल न होने के कारण वे वहां से चले गये। उसके बाद एक जलयान अधिकारी व्हानवारिक नामक डच आया और उसे खाली पाकर अपना कब्जा कर लिया। उसका एक बेटा था जिसका नाम 'मोरिस दे नासो' था, इस पर उसने इस देश का नाम मोरिशस् रखा, सन् १७१५ में फ्रांस ने इस पर अपना एकाधिकार कर लिया और उसने इसका नाम "इल दे फ्रांस" रख दिया। फिर १८१० में अंग्रेजो ने इस पर अपना शासन कर लिया, और इन्होंने फिर से इसका नाम मॉरिशस रखा। अंग्रेजों ने गन्ने की खेती को बढाने के लिये अनेक कार्यक्रम बनाये, उनको साकार करने के लिए उन्हें मजदूरों की बहुत आवश्यकता थी, उसके लिये उन्होंने गरीब देशों में जाकर वहां के लोगों को लालच् देने का काम शुरु किया। भारतवर्ष से भी भारी संख्या मे लोग मजदूरी के लिये अग्रेजों के चंगुल में फस गये, और वहा पर अंग्रेजों ने भारत के मजदूरों पर भारी अत्याचार किये, अत्याचारों से त्रस्त लोगो में विरोध के स्वर उभरने लगे, उन्हें दबाने के लिये १८९७ में अंग्रेजो ने भारत से बंगाली रेजीमेंट को भेजा, जिनमें अनेक आर्यसमाजी भी थे, भारतीयों पर होरहे अत्याचारो को देखते हुये सेना के जवानो मे विरोध के स्वर उभरने लगे। इस पर अग्रेजी ने १९०२ मे बगाल रेजीमेंट को वापिस भेजने का निर्णय लिया, सेना के जवानों मे एक आर्यसैनिक के पास दो सत्यार्थप्रकाश और दो सस्कारविधि थी जिसे एक हालैंड निवासी श्री भिखारीमलसिह को दी। उन्होने वह प्रति श्री खेमलाल आर्य को दी, लोगो को सत्यार्थप्रकाश से एक रोशनी मिली और उन्होंने १९०३ में आर्यसमाज की स्थापना कर दी, और ईसाइयो के अत्याचारों का डटकर विरोध किया। फिर क्या था, दूसरी आर्यसमाज की स्थापना १९१० मे "केरपिप" नामक स्थापन पर करदी तथा तीसरी आर्यसमाज की स्थापना मोरिशस् की राजधानी "पोर्टलुईस" में ८ मई १९११ मे की और भारतवर्ष से अनेक आर्यसमाजी नेताओं ने सन्यासियो ने वहा जाकर लोगो को सगठित किया। १९१४ से १९१६ तक स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी ने गाव-गाव मे घूम-घूमकर आर्यसमाज का प्रचार किया। स्वामी जी जिस गाव से प्रचार करके जाते लोग चर्चा किया करते कि भारतवर्ष से एक ऐसे साधु आये हैं, जिनका विशाल शरीर एक हाथी के समान है, बहुत सज्जन, सहनशील, उदार, त्यागी, तपस्वी, महान् देवता दिखाई देते हैं। महात्मा आनन्दभिक्षु जी, महात्मा आनन्द स्वामी जी आदि तत्कालीन आर्यनेताओं ने लोगों मे जागृति पैदा की जिस कारण १९६८ मे अंग्रेजों ने मॉरिशस को आबाद करना पडा। इस समय मॉरिशस में हिन्दी प्रचारिणी सभा, आर्यसभा, आर्यप्रतिनिधिसभा डी ए वी कालेज, महात्मा गाधी विश्वविद्यालय आदि अनेक संस्थायें काम कर रही हैं। आर्योदय पत्रिका आदि अनेक पत्र-पत्रिकायें भारतीय चला रहे हैं, मुख्य रूप से फ्रेंच और अंग्रेजी भाषा का प्रचलन है, और ३० प्रतिशत लोगों मे हिन्दी का भी प्रयोग होता है, सस्कृत का पठन-पाठन भी अनेक आर्यसमाज कर रही हैं, श्री मोहनलाल मोहित का जन्म १९०२ मे हुआ था। आरम्भ में वे सनातनी विचारधारा के थे। १४ वर्ष की अवस्था में उनका आर्यविद्वानों से सम्पर्क हुआ और उनकी अटूट श्रद्धा आर्यसमाज के साथ जुड़ गई। उन्होने पूरा जीवन आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार में लगाया, अनेक आर्यसमाजों की स्थापना की, अनेक आर्य पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन किया, गुरुकुल का सचालन तथा यज्ञ की परम्परा का विस्तार किया, भूखे रहकर, कष्ट उठाकर भी महर्षि दयानन्द के विचारों का प्रचार करते रहे। इन्होंने बहुत परिश्रम करके अपने पुत्रो को योग्य बनाया। बडे जमींदार बने। मॉरिशस की राजनीति मे अपनी पकड बनाई, हर राजनैतिक पार्टी श्री मोहनलाल मोहित का सम्मान करती है, आज मॉरिशस का इतिहास ही प० मोहनलाल मोहित के साथ जुड गया, उसके सौ वर्ष पूरे होने पर जहा एक सप्ताह तक आर्यसमाज लावेनिया गुरुकुल मे यजुर्वेद पारायण महायज्ञ किया गया, वहीं उनके शतायु होने पर उनके सम्मान मे अनेक समारोह हुये जिनमें २१ सितम्बर को डी ए वी कालेज के हाल मे विशेष समारोह हुआ, जिसमे मॉरिशस के प्रधानमन्त्री अनेक मन्त्री, भारतीय राजदूत, सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधिसभा के प्रधान कैप्टन देवरत्न व स्वामी सत्यम् आदि ने उनका स्वागत किया, दूसरा समारोह २२ सितम्बर को "लावेनिया" मे हुआ जिसमे अनेक प्रशासनिक अधिकारी, मन्त्री अनेक सस्थाओं के प्रतिनिधियों ने सम्मान समारोह में भाग लिया। तीसरा मुख्य समारोह महात्मा गाधी विश्वविद्यालय मे हुआ जहा भारतीय राजदूत श्री विजयकुमार जी व अनेक शिक्षण सस्थाओ के अधिकारियो ने भाग लिया। २४ सितम्बर को भारत से आये प्रतिनिधियो का आर्यसभा परिसर मे स्वागत किया गया, १८ सितम्बर से २६ सितम्बर तक अनेक आर्यसमाजो व सस्थाओ मे प्रोग्राम होते रहे। लोगो मे सभी कार्यक्रमो के प्रति भारी उत्साह व श्रद्धा का वातावरण दिखाई दिया, भारत की तरफ से अनेक महानुभावों ने विभिन्न कार्यक्रमो में अपने विचार रखे जिनमे मुख्यरूप से श्री कैप्टन देवरत्न आर्य प्रधान सार्वदेशिक सभा, आचार्य यशपाल मन्त्री आर्यप्रतिनिधिसभा हरयाणा, श्री धर्मपाल आर्य प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली, स्वामी सत्यम् जी, आचार्य उषा शर्मा, श्री बांगिया बम्बई, स्वामी धर्ममुनि बहादुरगढ, प० रामलाल जी, श्री स्वतन्त्रकुमार जी कुलपति गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय श्री रामकृपा जी शास्त्री गुरुकुल लखनऊ थे।

२३ सितम्बर को श्री कैप्टन देवरत्न जी का रेडियो प्रसारण हुआ, श्री स्वतन्त्रकुमार जी ने भी अनेक गोष्ठियो मे भाग लिया। मौसम, वातावरण हरियाली की दृष्टि से मॉरिशस एक उत्तम द्वीप है। इस देश मे भारतीयता नजर आती है, मुख्य तीन ऋतुओं की इस देश के निवासियों पर प्रतिदिन कृपा होती है प्रात काल बारिश होती है तो दिन मे गर्मी का अहसास होता है, रात्रि मे शरद ऋतु का वातावरण छाया रहता है। वर्षा तो दिन मे कई बार भी फोव्वारे की तरह मधुर-मधुर कण बिखेरती रहती है, किसी भी ऋतु मे अधिकता नहीं है, बहुत ही सुहावना मौसम मॉरिशस का है, गन्ने की ही पैदावार है। सभी सामान भारत आस्ट्रेलिया, फ्रास, अमेरिका, इग्लैंड आदि देशो से आता है जिस कारण वहा महगाई है। जहा फ्रास, अमेरिका, इग्लैंड आदि देशो से उन्हे आर्थिक सहायता प्राप्त होती है वहा भारतवर्ष की तरफ से भी अनेक योजनाओ मे निवेश किया जारहा है। इस समय यह देश प्रगति और विकास की तरफ बढ रहा है।

—यशपाल आचार्य, सभामन्त्री

सामूहिक यज्ञोपवीत संस्कार

ग्राम कन्होरी जिला रेवाडी मे सभाप्रधान पूज्य स्वामी ओमानन्द सरस्वती की अध्यक्षता मे २५ सितम्बर को प्रात काल १० बजे से २ बजे तक सामूहिक यज्ञ का अनुष्ठान गुरुकुल झज्जर के आचार्य विजयपाल जी, श्री फतहसिह सिंह जी भण्डारी तथा अन्य अध्यापक एव ब्रह्मचारियों ने किया। इस अवसर पर ग्राम कन्होरी तथा निकटवर्ती ग्रामों से एक हजार के लगभग छात्र-छात्रा, स्त्री और पुरुष उपस्थित थे।

वहा पर उपस्थित लगभव ५०० पढनेवाले छात्र और छात्राओ ने यज्ञोपवीत ग्रहण करके अपने जीवन को पवित्र बनाने के लिए यज्ञकुण्ड मे आहुति प्रदान की।

इस अवसर पर उपस्थित ग्रामीण जनता को स्वामी ओमानन्द सरस्वती, भगत मगतुराम तावडू, आचार्य विजयपाल गुरुकुल झज्जर, वेदव्रत शास्त्री रोहतक, अविनाश शास्त्री सभा उपदेशक ने सम्बोधित किया। श्री जयपाल जी बेघडक तथा श्री सत्यपाल जी के सुमधुर भजनोपदेश हुए।

इस कार्यक्रम के आयोजन मे नवयुवक श्री रमेश पूनिया और उसके साथियो का विशेष योगदान रहा। कार्यक्रम को देखकर अनेक सज्जन बहुत प्रभावित हुए और ऐसे सामूहिक कार्यक्रम अपने-अपने ग्रामो मे करवाने के भी विचार रखे।

—सुरेन्द्र शास्त्री, सभा-उपमन्त्री

आर्यसमाज जवाहरनगर पलवल कैम्प (फरीदाबाद) का चुनाव

संरक्षक-चौधरी थावरदास, प्रधान-श्री शामलाल जी भुक्की, श्री वीरभान जी आर्य, महामन्त्री-श्री सतीश जी आर्य, उपमन्त्री-श्री रविकुमार जी, प्रबन्धक-श्री ओमप्रकाश जी अरोडा, कोषाध्यक्ष-श्री आनन्दप्रकाश जी, लेखानिरीक्षक-श्री अशोककुमार जी। -मन्त्री

आर्यसमाज हनुमान कालोनी रोहतक का वार्षिक चुनाव सम्पन्न

प्रधान-श्री सुखवीर शास्त्री, उपप्रधान-श्री चादराम, मन्त्री-श्रीमती रेणुबाला, उपमन्त्री-श्री उमेदसिंह शास्त्री, कोषाध्यक्ष-श्री बानवीरसिह, प्रचारमन्त्री-श्री बलराजसिह शास्त्री, लेखाकार-श्रीमती कान्तादेवी। -मन्त्री

राष्ट्रभाषा हिन्दी तथा भारतीय भाषायें विज्ञान और तकनीकी शिक्षा का माध्यम कब बनेगी ?

प्रो० चन्द्रप्रकाश आर्य, करनाल

(गताक से आगे)

अबतक कहा जा रहा था कि कम्प्यूटर तथा इटरनेट की भाषा केवल अग्रेजी है किन्तु अब यह मिथक, भ्रम भी टूट रहा है। इटरनेशन डेटा कॉर्पोरेशन आई डी सी के अनुसार २००३ तक इटरनेट के माध्यम से होनेवाला खर्च एकखरब चौंसठ हजार डालर होगा। इसमे ४७ प्रतिशत भाग जापान और पश्चिमी यूरोप से आएगा। इटरनेट पर एशियाई देशों की भागीदारी भी अग्रेजी वर्चस्व को तोड रही है। एक रिपोर्ट के अनुसार २००३ तक इटरनेट पर एशियाई उपभोक्ताओ की सख्या ९५०८३००० (नौ करोड पचास लाख तिरासी हजार) हो जायेगी। इसलिए इटरनेट पर भाषायी समीकरण बदल रहे हैं। आई डी सी के अनुसार जो कम्पनी अपनी वेबसाइट केवल अग्रेजी मे बना रही हैं वे प्रतिवर्ष एक करोड डालर की हानि कर रही हैं। अत विश्व की बडी-बडी कम्पनिया अपने वेबसाइटो को बहुभाषी बना रही हैं। इटरनेशनल कम्यूनिकेशन्ज ऐसी ही कम्पनी है। यह बहुभाषी कम्प्यूटरो तथा तकनीकी सेवा देने वाली कम्पनी है। इसके कार्यालय फ्रास, जर्मनी, चीन, जापान, रूस आदि देशो मे हैं। इसी वर्ष इस अमेरिकी कम्पनी ने इटरनेट बिजनेस सर्विस चाइनाकनेक्ट का आरभ किया है। इसकी अनुवाद सेवा से अग्रेजी भाषाओ मे अनुवाद करने और बहुभाषी सेवाए देने मे लगी हुई है। एक अनुमान के अनुसार वर्ष के अन्त तक नेट उपभोक्ताओ मे ७० प्रतिशत लोग गैर अग्रेजी भाषी होगे। क्या भारत भी ऐसा करेगा? भारत को भी हिन्दी तथा भारतीय भाषाओ के लिए चाइनानेट की तरह भारत नेट या हिन्दी नेट की स्थापना करनी चाहिए। आज कम्पनिया इस ओर अधिक ध्यान दे रही कि किस भाषा या भाषाओ मे वेबसाइट बनाने से उनको अधिक आय हो सकती है। चीनी भाषा की तरह हिन्दी और भारतीय भाषाओ का भी बहुत बडा बाजार है। अत भारत सरकार मानव ससाधन विकास मत्रालय को शीघ्र इस ओर ध्यान देना चाहिए। भारतीय विज्ञान संस्थान, बगलौर के द्वारा यह कार्य करवाया जा सकता है।

भारत सरकार प्रारभिक शिक्षा को सर्व सुलभ बनाने के लिए मानव ससाधन विकास मंत्रालय के अधीन प्रारभिक शिक्षा तथा साक्षरता विभाग के माध्यम से १५ अगस्त २००१ को अखबारो मे जो आकडे जारी किए हैं, वे उत्साहवर्धक हैं। जैसे कि वर्ष २००३ तक ६ से १४ आयु वर्ग के सभी बच्चो का स्कूल मे प्रवेश हो जायेगा। इसी प्रकार मानव ससाधन विकास मत्रालय ने माध्यमिक और उच्चतर शिक्षा विभाग के अधीन जो सूचनाये १५ अगस्त २००१ को अखबारो मे प्रकाशित की हैं, वे भी ध्यान देने योग्य है। इनमे राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसधान तथा प्रशिक्षण परिषद् मे राष्ट्रीय कम्प्यूटर शिक्षा केन्द्र की स्थापना भारत के प्रथम शैक्षिक चैनल ज्ञान दर्शन का चौबीस घटे प्रसारण उल्लेखनीय है किन्तु उच्चतर शिक्षा विभाग के इन कार्यक्रमो मे राष्ट्रभाषा हिन्दी तथा भारतीय भाषाओ का कोई उल्लेख नहीं है। उन्हें उच्चतर शिक्षा तथा आधुनिक विज्ञान एव प्रोयोगिकी तथा तकनीकी शिक्षा का माध्यम बनाने के बारे मे कोई उल्लेख नही है ? आखिर कब राष्ट्रभाषा हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाए इस नव्य ज्ञान विज्ञान का माध्य बनेगी? यह ठीक है कि मानव ससाधन विकास मंत्रालय ने कुछ मास पूर्व भारतीय भाषा प्रोन्नयन परिषद् की स्थापना की है। किन्तु इससे यह समस्या हल होने वाली नहीं है? इसके लिए मत्रालय को अलग से कोई योजना तैयार करनी होगी ताकि राष्टभाषा हिन्दी तथा भारतीय भाषाओ में विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान, प्रौद्योगिकी तथा तकनीकी विषयो से सम्बन्धित साहित्य तैयार करवाया जा सके।

ज्ञान के क्षेत्र मे भारत महाशक्ति तभी बन सकता है जब यह ज्ञान विज्ञान उसकी अपनी भाषाओं मे दिया जाए। अंग्रेजी की वैशाखी के सहारे हम कब तक देश के ज्ञानविज्ञान को आगे बढायेगे ? पहले सस्कृत देश के ज्ञानविज्ञान की भाषा थी और इसी कारण भारत विश्व का गुरु माना जाता था किन्तु आज हमारे पास नव्य आधुनिक विज्ञान, एव तकनीकी ज्ञान की अपनी कोई भाषा नहीं है। सस्कृत को तो हमने पहले ही भुला दिया है किन्तु अब हम राष्ट्रभाषा हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओ की निरतर उपेक्षा किए जा रहे हैं। देश के सौ करोड लोगों की भाषाओं की हमे कोई परवाह नहीं ? कम से कम राष्ट्रभाषा, राजभाषा, हिन्दी को तो वैज्ञानिक एव तकनीकी ज्ञान का माध्यम बनाये, उसको तो सक्षम बनाने के उपाय करे अन्यथा अग्रेजी ही इसका एक मात्र माध्यम रह जायेगी। तथा यह ज्ञान अग्रेजी जानने वाले कुछ लोगो तक ही सीमित रह जायेगी। देश की जनता की इसमे कोई भागीदारी नहीं है। क्या मानव ससाधन विकास मत्रालय शीघ्र इस ओर ध्यान देगा ?

जब चीन अपनी भाषा मे वैज्ञानिक एव तकनीकी ज्ञान उपलब्ध करवा सकता है तो भारत ऐसा क्यो नहीं कर सकता ? इसी प्रकार कम्प्यूटर एव इटरनेट के क्षेत्र मे हम चीन की तरह इंटरनेशनल कम्यूनिकेशन्ज तथा डब्ल्यू डब्ल्यू बल्र्ड किगो डॉट काम जैसी कम्पनियों का सहयोग लेकर हिन्दी तथा भारतीय भाषाओं के लिए भारत इटरनेट या हिन्दी इन्टरनेट सेवा का आरंभ कर सकते हैं। फिर सॉफ्टवेयर के निर्माण और समस्त सूचना प्रोद्यौगिकी मे हमारी विश्वव्यापी प्रतिष्ठा एव साख है। फिर भी हम हिन्दी तथा भारतीय भाषाओ के सॉफ्टवेयर तैयार नहीं करवा पा रहे हैं। हिन्दी तथा भारतीय भाषाओ का बहुत बडा बाजार है। भारत सरकार तथा मानव ससाधन विकास मत्रालय को शीघ्र इस ओर ध्यान देना चाहिये। मानव ससाधन विकास मत्रालय विभिन्न स्तरो पर शिक्षा के प्रसार के लिए प्रयत्न कर रहा है, उसे इस ओर भी ध्यान देना चाहिए।

आर्य-संसार

नैतिक शिक्षा से ही भ्रष्टाचार का प्रतिकार सम्भव : डॉ० जोशी

चन्द्र आर्य विद्या मन्दिर का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

नई दिल्ली। मानव ससाधन विकास मन्त्री डॉ० मुरलीमनोहर जोशी ने भ्रष्टाचार को आर्थिक और सामाजिक विकास में सबसे बडी बाधा बताते हुए कहा कि नैतिक मूल्यो से अनुप्राणित शिक्षा से ही इस समस्या का कारगर इलाज सम्भव है। उन्होने कहा कि नैतिक शिक्षा की आवश्यकता स्व० राजीव गांधी के प्रधानमन्त्रित्वकाल मे स्वीकार की गई थी। "सरकार केवल उस सकल्प को क्रियान्वित कर रही है।"

डॉ० जोशी यहा चन्द्र आर्य विद्या मन्दिर और उससे सम्बद्ध सस्थाओ के वार्षिकोत्सव मे गणमान्य नागरिको को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होने कहा, आज देश की अधिकाश समस्याए इसलिए हैं कि हमने नैतिक मूल्यो को तिलाजलि दे दी, राष्ट्रहित को तिलाजलि दी और महापुरुषो के जीवन से कोई पाठ नहीं पढा। डॉ० जोशी ने कहा, दयानन्द सरस्वती ऐसे पहले महापुरुष थे, जिन्होने हिन्दी को राजभाषा बनाने का आग्रह किया। उनसे पहले इतने जोर से यह बात किसी ने नहीं कही थी। उन्होने अस्पृश्यता के विरुद्ध पहल की, सतीप्रथा का शास्त्रीय प्रतिकार किया, महिलाओ को वेद पढने का अधिकार दिलाया और पराधीनता के विरुद्ध सारे देश को जगाया। परन्तु इतिहास पुस्तको मे उनके इस योगदान का कोई जिक्र नहीं।

केन्द्रीय मन्त्री ने कहा कि स्वतन्त्रता के बाद यदि देश को दयानन्द के रास्ते पर चलाने की कोशिश की जाती तो भारत अबतक विश्व महाशक्ति का दर्जा हासिल कर लेता। उपस्थित वृन्द से हर्षनाद से उनके इस कथन से सहमति व्यक्त की।

चिन्तक - पत्रकार डा० वेदप्रताप वैदिक ने कहा कि सार्वजनिक जीवन मे दयानन्द और लोहिया जैसे दृढ लोगो की जरूरत है, जो बुराई से समझौता करने से इकार करदे। डॉ० वैदिक ने कहा, मौजूदा स्थिति को देखकर लगता है कि राजनीति मे विचारधारा का अवसान होगया है। सारे राजनीतिक दल एक ढर्रे पर चल रहे हैं और एक ही प्रवाह मे बह गये हैं। सदाचरण के लिए खडा होने की कोई जुर्रत कोई जुटा नहीं पारहा। स्थिति मे सुधार लाने के लिए सामाजिक सगठनो को आगे आना होगा।

विद्या मन्दिर में प्रधान पद्मश्री वीरेशप्रताप चौधरी ने बताया कि आर्य अनाथालय और देसराज परिसर में ग्यारह सौ बेसहारा बालक-बालिकाओ को मध्यमवर्गीय स्तर मुहैया करने के अलावा पब्लिक स्कूल से बेहतर शिक्षा दीजाती है। इस सस्थान मे पूर्ण मनुष्य तैयार करने को प्रयास किया जारहा है, जो देश के सुयोग्य नागरिक बनेगे।

—सुरेन्द्रमोहन, प्रचार प्रमुख, चन्द्रवती चौधरी स्मारक ट्रस्ट, नई दिल्ली-६५

वार्षिक उत्सव

स्वामी विद्यानन्द वैदिक प्रचार ट्रस्ट के सौजन्य से आर्यसमाज कौराली तह० बल्लभगढ जिला फरीदाबाद मे दिनाक ५-६ अक्टूबर को वार्षिक उत्सव होने जारहा है। इसमे आप सपरिवार आमन्त्रित हैं।

—डॉ० धर्मदेव शास्त्री, मन्त्री

आर्य महासम्मेलन सम्पन्न

पथ्रोट क्षेत्र मे महाराष्ट्र (विदर्भ) प्रान्त मे विदर्भस्तरीय आर्य महासम्मेलन का भव्य आयोजन किया गया। मुख्यअतिथि के रूप में "वीरागना" पुष्पाजी शास्त्री रेवाडी हरयाणा थीं। २८-८-०२ से ३१-८-०२ तक दोनो प्रहर कार्यक्रम होता रहा। बहनजी के कार्यक्रम मे हजारो की सख्या मे महिला-पुरुषो की काफी भीड रहती थी। इस क्षेत्र मे वैदिकधर्म का बहनजी के ओजस्वी वाणी से प्रसार व प्रचार हुआ।

पुरस्कार वितरण समारोह

जिला झज्जर के गांव खेडी आसरा मे स्थानीय आर्यसमाज के पूर्व प्रधान स्व० अभयराम जी की स्मृति मे उनके छोटे भाई चौ० सत्यवीर जी ने गत वर्ष की भाति ८ सितम्बर २००२ को अनेक छात्रो और गणमान्य व्यक्तियो को सम्मानित किया। कार्यक्रम का सचालन श्री राजबीर आर्य ने बडी कुशलता से किया।

सर्वप्रथम कन्या प्राथमिक पाठशाला की तीन छात्राओं को ८० प्रतिशत से ऊपर अक प्राप्त करने पर प्रत्येक को दो सौ रुपए का पुरस्कार दिया। इसी प्रकार प्राथमिक पाठशाला के तीन छात्रो को पुरस्कृत किया। तत्पश्चात् शहीद ले० रवीन्द्र छिक्कारा राजकीय उच्च विद्यालय के आठवीं कक्षा मे Ist Division प्राप्त करनेवाले चार छात्रो और छात्राओ को चार बढिया Dictionary और १०० रुपये नकद दिए गए। मैरिट प्राप्त करनेवाले तीन छात्र कविप्रकाश (४८६), सुप्रभा (४८५) और प्रदीपकुमार (४७५) प्रत्येक को एक Momento एक Dictionary और तीन सौ रुपए नगद दिए। इसके अतिरिक्त गीत गानेवाले और भाषण देनेवाले छात्रो को भी पुरस्कृत किया। कबड्डी खेलनेवाले छात्रो को कच्छा-बनियान और एक हजार रुपए नकद दिए। अन्त मे बढिया Result का श्रेय मुख्याध्यापक श्री रामकुमार जी को एक Momento और एक सत्यार्थप्रकाश भेट किया। अन्य अध्यापको व उपस्थित सज्जनो को सत्यार्थप्रकाश भेट किए गए। **—मन्त्री आर्यसमाज, खेडी आसरा**

आदर्श विवाह

आर्यवीरदल जीन्द के प्रेस प्रवक्ता श्री हरिलाल जी आर्य "विजय" का विवाह गत १२ जुलाई को पूर्णिया (बिहार) निवासी कुमारी मीरा के साथ बडे ही हर्षोल्लास के माहौल मे धूमधाम से सम्पन्न हुआ। बारात मे मात्र चार व्यक्ति सम्मिलित हुए तथा एक रुपया भी दहेज मे नहीं लिया गया। हरिलाल जी को आर्यवीरदल की तरफ से बहुत-बहुत बधाई तथा वैवाहिक जीवन के लिए शुभकामनाए। **—यज्ञवीर आर्य, नगरनायक, आर्यवीरदल जीन्द**

राष्ट्रभाषा से जुड़ी हैं राष्ट्रीय अस्मिता

नई दिल्ली। हिन्दी सप्ताह के अन्तर्गत आर्यसमाज बी ब्लाक, जनकपुरी द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम मे व्याख्यान करते हुए श्री कैलाशचन्द्र ने कहा कि राष्ट्र-भाषा से राष्ट्रीय अस्मिता का प्रश्न भी जुडा हुआ है। भाषा और सस्कृति का परस्पर गहरा सम्बन्ध है। भारतीय सस्कृति का मूलस्रोत सस्कृत एव वैदिक साहित्य है, किन्तु आज इस दायित्व का निर्वाह राष्ट्र-भाषा हिन्दी को करना है क्योकि वह सस्कृत की पुत्री है। अनेक देशो के उदाहरण देते हुए उन्होने कहा कि राष्ट्रभाषा के समुचित प्रयोग के बिना न तो राष्ट्र की पहचान बनती है, न उसके गौरव को रक्षा ही होती है।

प्रधानपद से बोलते हुए डा० सुन्दरलाल कथूरिया ने हिन्दी की सवैधानिक स्थिति को स्पष्ट किया और इस बात पर चिन्ता व्यक्त की कि यद्यपि रस्मी तौर पर प्रतिवर्ष हिन्दी दिवस मनाया जाता है, तथापि स्वाधीनता प्राप्ति के इतने वर्षो के बाद भी हिन्दी राजकाज की भाषा नहीं बन सकी है। हालाकि सविधान के अनुच्छेद १४३ मे इसका स्पष्ट निर्देश है। हिन्दी को जब तक सरकारी दफ्तरो और न्यायालयो की भाषा नहीं बनाया जाएगा और उसे समुचित रूप से रोजी-रोटी से नहीं जोडा जाएगा तब तक इस देश के राष्ट्रीय स्वाभिमान की रक्षा सम्भव नहीं। **—योगेश्वरचन्द्रार्य, प्रचारमन्त्री**

वार्षिक महोत्सव

सभी सज्जनो को सूचित किया जाता है कि आपके अपने प्रिय गुरुकुल **भैयापुर लाढौत जि० रोहतक** का ११वा वार्षिक महोत्सव १३-१०-२००२ को हर्षोल्लास के साथ मनाया जारहा है। यह उत्सव प्रतिवर्ष अक्टूबर के दूसरे रविवार को मनाया जाना निश्चित हुआ है। कृपया इस दिन को सभी ध्यान मे रखे।

इस अवसर पर आर्यजगत् के त्यागी, तपस्वी, धुरन्धर विद्वान् एव प्रसिद्ध भजनोपदेशक तथा प्रख्यात समाजसेवी व्यक्ति पधार रहे है। कृपया अधिकाधिक सख्या मे पहुचे।

कार्यक्रम

सन्ध्या, हवन, उपदेश	प्रात ८-०० से १० बजे तक
भोजन	१०-०० से १२ बजे तक
व्याख्यान, भजन, उपदेश	१०-३० से ३ बजे तक

निवेदक प्रबन्धक समिति

श्री खुशहालचन्द आर्य की सेवा में नम्र निवेदन

–सत्यवान् आर्य, जेवली (भिवानी)

सर्वहितकारी के १४ जुलाई ०२ ई० के अक मे 'ईश्वर की कर्मफल व्यवस्था' शीर्षक से आपका एक लेख प्रकाशित हुआ है। कृपया इस सम्बन्ध मे मेरी निम्नलिखित शकाओ का समाधान करने की कृपा करे।

१. शका–कालम एक मे लिखा है कि 'मनुष्य अपने जीवन मे व्यक्तिगत नित्यकर्म जैसे भोजन करना, पानी पीना, सोना, बैठना आदि जो सामान्य व साधारण कर्म है। इनको सिर्फ कर्म की सज्ञा दी है। इन कर्मो का ईश्वर फल नहीं देता।' इसमे मेरी यह है कि एक मनुष्य भोजन मे मास खाता है क्या इस कर्म का फल ईश्वर नहीं देता ?

२ शका–कालम दो मे लिखा है 'किसी ने चोरी की और पुलिस ने पकड लिया मुकदमा चलने पर उसे छह महीने की सश्रम सजा सुना दी। सजा भुगतने के बाद चोरी कर्म समाप्त होगया। अब उसका आगे कोई फल नहीं मिलेगा।' मेरी समझ मे यह तथ्य ठीक प्रतीत नहीं होता क्योकि न्यायाधीश अल्पज्ञ जीव होने के कारण या स्वार्थ के कारण चोर को उचित दण्ड नहीं देता। यदि न्यायाधीश कानून के हिसाब से उचित दण्ड दे भी दे तब भी ईश्वर तो इस पापकर्म का फल अलग अवश्य देगा क्योकि न्यायाधीश ने अपराध का दण्ड दिया है और ईश्वर पाप का दण्ड देता है। अपराध और पाप मे अन्तर होता है। शारीरिक क्रिया द्वारा देश, धर्म, जाति के अहित मे जो कर्म होता है वह अपराध है। मन, वचन, कर्म से ईश्वर व्यवस्था का उल्लघन करना पाप है। जैसे-चोर ने बैंक लूटने की मन मे सोचली तो यह मानसिक पाप है और यदि चोर ने बैंक लूट ही लिया तो यह अपराध है। अपराध का दण्ड कम या ज्यादा हो सकता है लेकिन पाप का दण्ड उचित व अवश्य मिलता है।

३ शंका–कालम तीन मे लिखा है-'आयु का अर्थ है कि उस जीव की अगली योनि मे कितनी आयु निश्चित की। यहा यह समझने की बात है कि ईश्वर आयु वर्षो की गिनती से नहीं देता बल्कि श्वासो की गिनती पर देता है। इसलिए यदि हम अपने सयम, ब्रह्मचर्य व प्राणायाम द्वारा श्वासो को कम करे तो आयु बढा भी सकते हैं।' यहा पर लेखक का अभिप्राय है कि जितना हम श्वासो की बचत करेगे उतनी ही हमारी आयु बढेगी। यहा पर शका यह है कि-जब पहलवान व्यायाम, कुश्ती, दौड आदि करता है तब उसके श्वासो की गति बढ जाती है और श्वास अधिक खर्च होते हैं, तब क्या उसकी आयु घट जाती है ? लेखक का श्वासो की गिनती से भी जीव की आयु निश्चित मानना गलत है। यह बात तो ठीक है कि ईश्वर जीव के पिछले जन्म के सचित कर्मो के अनुसार आयु, जाति, भोग देता है, परन्त मनुष्य इस जीवन के कर्मो के द्वारा आयु व भोग को घटा-बढा सकता है, जाति को नहीं बदल सकता है। यदि ईश्वर आयु व भोग को पिछली योनि के कर्मानुसार निश्चित कर देता है तो मानव योनि को कर्म करने की क्या आवश्यकता है ? सुरक्षा, गऊहत्या, भ्रूण हत्या, चोरी, भ्रष्टाचार आदि बुराइयो का विरोध करने की क्या आवश्यकता है जब आयु व भोग निश्चित ही है ? वेद, शास्त्रो व ऋषि-मुनियो ने जीव की आयु को अनिश्चित मानने के निम्न प्रमाण हैं-

१ वेद का प्रमाण- त्र्यायुष जमदग्ने कश्यपस्य त्र्यायुषम्।
यद्देवेषु त्र्यायुषऽतन्नो अस्तु त्र्यायुषम्।
(यजुर्वेद ३।६२)

२ मनुस्मृति-अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविन।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्यायशोबलम्। (२।१२१)

३ ऋषि-जिन पदार्थो से स्वास्थ्य, रोगनाशक, बुद्धि, बल पराक्रम वृद्धि और आयु वृद्धि होवे उन ताण्डुलादि गोधूम फल मूल का भोजन भक्ष्य कहाता है। –महर्षि दयानन्द जी सरस्वती

यदि जीव की आयु निश्चित होती है तो हस्पताल स्वास्थ्य विभाग आदि की क्या आवश्यकता है ? सडक के किनारे लिखा होता है-'बचाव मे ही बचाव है' यदि आयु निश्चित है तो इस लेख का क्या औचित्य है ? ऐसे-ऐसे सैंकडो प्रमाण आयु वृद्धि व कम के दिए जा सकते हैं। यदि जीव की आयु वर्षों से या श्वासो से निश्चित होती तो स्वामी दयानन्द जी की मृत्यु जहर से नहीं होती। क्योकि उन्होने प्राणायाम द्वारा अठारह-अठारह घण्टे की समाधि लगाकर श्वासो की बचत करली थी। हा योनि (जाति) के अनुसार श्वासो का आयु को कम ज्यादा का सम्बन्ध अवश्य होता है। जिस जाति की श्वासो की गति तेज होगी उतनी ही दूसरी जाति से आयु कम होगी जैसे कुत्ते की श्वासो की गति मनुष्य की अपेक्षा तेज होती है तो मनुष्य की अपेक्षा कुत्ते की आयु कम होती है। श्वास के इस जातीय गति को न समझने के कारण जीव की आयु की गिनती वर्षो से मानकर श्वासो से निश्चित मानते हैं।

आर्यजगत के विद्वान् नेता पं० जगदेवसिंह जयन्ती समारोह

स्थान : दयानन्दमठ, रोहतक

आपको सूचित किया जाता है कि १५ अक्टूबर २००२ मगलवार दशहरा को आर्यजगत् के विख्यात विद्वान नेता प० जगदेवसिह सिद्धान्ती का १०३वीं जयन्ती के अवसर पर एक समारोह का आयोजन किया जारहा है। अत अधिक से अधिक सख्या मे पधारकर समारोह की शोभा बढावे।

कार्यक्रम

१	बृहदयज्ञ	–	प्रात ८ से ९ बजे
२.	आर्यसंगीत	–	प्रात ९ से ९-३० बजे तक
३	भजन/कविता प्रतियोगिता	–	९-३० से ११-०० बजे तक

प्रतियोगी अपना नाम १० अक्टूबर तक सभा-कार्यालय मे भेज देवे।

–आचार्य यशपाल, सभामन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ०१२६२–७६८७४, ७७८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष . ०१२६२–७७७२२) से प्रकाशित।
पत्र में प्रकाशित लेख सामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३
पंजीकरणसंख्या टैक/85-2/2000
☎ ०१२६२-७७७२२
सृष्टिसंवत् १, ९६, ०८, ५३, १०३
विक्रमसंवत् २०५९
दयानन्दजन्माब्द १७९

प्रधानसम्पादक : यशपाल आचार्य, सभामन्त्री
सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री

वर्ष २९ अंक ४३ ७ अक्तूबर, २००२ वार्षिक शुल्क ८०) आजीवन शुल्क ८००) विदेश में २० डॉलर एक प्रति १.५०

आर्यसमाज और हिन्दी

आर्यसमाज हमारे देश की ऐसी क्रान्तिकारी सस्था है, जिसने बहुत थोडे समय मे इतना बडा कार्य कर दिखाया, जो सदियो तक लगे रहने पर भी पूरा न हो पाता। यदि हम यह कहे तो कदाचित् अतिशयोक्ति न होगी कि भारत के स्वातन्त्र्य-सघर्ष का मार्ग-निर्देश करके उस दिशा में आगे बढने का साहस भी उसी ने किया था। इसके स्वनामधन्य सस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने हाथ मे उन्हीं कार्यो को लिया था जिन्हे बाद मे भारतीय राष्ट्रीय महासभा (काग्रेस) और उसके अनन्य सूत्रधार महात्मा गान्धी ने अपनाया था। महर्षि दयानन्द और महात्मा गान्धी सौभाग्यवश दोनो ही अहिन्दी-भाषी थे। दोनो की मातृभाषा गुजराती थी। महर्षि दयानन्द ने अपनी घनघोर तपस्या तथा अनन्य कर्त्तव्य-निष्ठा से जहा देश को सास्कृतिक दृष्टि से सुपुष्ट और समृद्ध किया वहा महात्मा गान्धी ने राजनीतिक दृष्टि से उसे आगे बढाया। हमारी ऐसी मान्यता है कि महर्षि दयानन्द ने अपने अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' में "कोई कितना ही करे, परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है", लिखकर जहां देश मे 'स्वराज्य' का पावन मन्त्र प्रचलित किया था, वहा शिक्षा, धर्म, सस्कृति तथा सदाचार आदि की दृष्टि से उसे समृद्ध करने की दिशा मे भी अथक परिश्रम किया था। अपनी इस पावन भावना की सम्पूर्ति के निमित्त ही उन्होने सन् १८७५ में आर्यसमाज की स्थापना की थी।

जिन दिनों हमारे देश मे आर्यसमाज के सस्थापक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती का अवतरण हुआ था उन दिनो यहा सन् १८५७ की क्रान्ति के उपरान्त मुगल साम्राज्य सर्वथा ध्वस्त होचुका था और अग्रेजी शासन की जडे मजबूती से जम गई थीं, साथ ही महारानी विक्टोरिया की घोषणा होगई थी। देश के कोने-कोने से ईसाइयो ने अपने धर्म के प्रचार के लिए केन्द्र स्थापित कर लिये थे। उधर बगाल मे राजा राममोहन राय और केशवचन्द्र सेन निरन्तर "हिन्दी, हिन्दू, हिन्दुस्तान" की आवाज ऊची कर रहे थे। दुर्भाग्यवश वे दोनो महानुभाव, क्योंकि सस्कृत के पडित न थे, अत उन्होने अपने-अपने धार्मिक आन्दोलन की नींव पाश्चात्य जीवन-प्रणाली के आधार पर डाली थी। इसके विपरीत महर्षि दयानन्द ने आर्य भावनामूलक सस्कृति का प्रचार करने की दिशा मे देश का उल्लेखनीय नेतृत्व किया था। उन दोनो महानुभावो का झुकाव जहा ईसाइयत और पाश्चात्य जीवन-पद्धति की ओर था वहा महर्षि दयानन्द भारतीय सस्कृति की प्रतिष्ठापना की ओर अग्रसर थे। यदि हम यह कहे तो कदाचित् अप्रासगिक न होगा कि केशवचन्द्र सेन की पश्चिमोन्मुखी विचारधारा को पूर्वाभिमुख करने का श्रेय भी महर्षि दयानन्द को ही है। महर्षि से उनकी भेट सन् १८७३ मे उस समय हुई थी जब वे कलकत्ता गए हुए थे। श्री सेन से सम्पर्क होने से पूर्व महर्षि दयानन्द सरस्वती सस्कृत मे ही भाषण दिया करते थे और शरीर पर कोई वस्त्र धारण न करके **'कौपीनवन्तः खलु भाग्यवन्त.'** के अनुसार केवल कौपीन ही पहनते थे। वे स्वामीजी की विचारधारा को जानना तथा समझना चाहते थे, किन्तु सस्कृत से अपरिचित होने के कारण वे उससे वचित थे इसके प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। उन्होने कहा था-"शोक है कि ब्रह्मसमाज का नेता सस्कृत नहीं जानता और लोगो को उस भाषा मे उपदेश देता है जिसे वे नहीं समझते।"

हमे यहा यह मानने मे तनिक भी सकोच नहीं है कि केशवचन्द्र सेन से कलकत्ता मे हुआ यह सम्पर्क जहा स्वामी दयानन्द के लिए एक अभूतपूर्व प्रेरणादायक सिद्ध हुआ वहा उससे देश की भावी उन्नति का द्वार भी उद्घाटित होगया। श्री केशवचन्द्र सेन की प्रेरणा पर स्वामी जी ने जहा हिन्दी मे व्याख्यान देना स्वीकार किया वहा उनके आग्रह पर उन्होने वस्त्र धारण करना भी प्रारम्भ कर दिया था। इन दोनो महापुरुषो का यह स्नेह-सम्पर्क देश के लिए यहा तक लाभकारी सिद्ध हुआ कि उसके कारण स्वामीजी ने प्रख्यात ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' की रचना सस्कृत मे न करके हिन्दी मे की। यहा यह उल्लेखनीय तथ्य है कि अपनी कलकत्ता-यात्रा के पूर्व स्वामीजी ने इस ग्रन्थ का लेखन सस्कृत मे प्रारम्भ कर दिया था। इस प्रकार हम यह नि.सकोच कह सकते हैं कि श्री केशवचन्द्र सेन के ऐसे पहले राष्ट्रीय नेता थे जिन्होने 'राष्ट्रभाषा हिन्दी' के महत्त्व को हार्दिकता से समझकर स्वामीजी को हिन्दी-लेखन और भाषण के प्रति उन्मुख किया था। श्री सेन की राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रति कितनी निष्ठा थी उसका परिचय हमारे पाठक उनके 'सुलभ समाचार' नामक बगला पत्र मे प्रकाशित इन शब्दो मे भली-भाति प्राप्त कर सकते हैं - "यदि भारतवर्ष एकता हइले भारतवर्ष एकता ना हय, तबे ताहार की ? समस्त भारतवर्षे एक भाषा व्यवहार कराई, उपाय एखन। जो मुलि भाषा भारतवर्षे प्रचलित आछे ताहार मध्ये हिन्दी भाषा प्राय सर्वत्र प्रचलित एह। हिन्दी भाषा के यदि भारतवषेर एक मात्र भाषा करा जाय, तबे अनायासे शीघ्र सम्पन्न हइते पारे।" अर्थात् उनकी यह दृढ मान्यता थी कि इस समय भारतवर्ष मे जितनी भाषाए प्रचलित हैं उनमे हिन्दी भाषा प्राय सर्वत्र प्रचलित है। इस हिन्दी भाषा को यदि भारतवर्ष की एकमात्र भाषा बनाया जाय तो यह कार्य अनायास ही शीघ्र सम्पन्न हो सकता है। एक भाषा के बिना एकता नहीं हो सकती।

श्री सेन के इस सम्पर्क से प्रेरित होकर स्वामीजी ने जहा अपने भाषणो द्वारा हिन्दी का प्रशसनीय प्रचार किया वहा उन्होने ग्रथ भी हिन्दी मे लिखने प्रारम्भ कर दिए। जिन दिनो स्वामीजी ने आर्यसमाज की स्थापना की थी उन दिनो देश मे प्राय उर्दू का ही बोलबाला था। स्वामीजी ने पुरानी सधुक्कडी हिन्दी को न अपनाकर उसे सर्वथा नई विचार-भूमि प्रदान की थी। वे भाषा को साहित्यिक दृष्टि से अलकृत नहीं करते थे, बल्कि एक समाज-सुधारक का दृष्टिकोण ही उनकी भाषा में परिलक्षित होता है। स्वामीजी के प्रयास से जहा हिन्दी को एक सर्वथा नया रूप मिला वहा आर्यसमाज की पत्र-पत्रिकाओ के माध्यम से भी उसका देश मे अधिकाधिक प्रचार हुआ। इसका सुपुष्ट प्रमाण डा० रामरत्न भटनागर के उन शब्दो से मिल जाता है जो उन्होने पत्रकारिता-सम्बन्धी अपने शोध-प्रबन्ध मे लिखे थे। उन्होने लिखा था- 'उर्दू के मध्य मे हिन्दी की नींव दृढ करनेवाली और भी एक महत्त्वपूर्ण शक्ति थी और वह थी आर्यसमाज। अपने अनेक मासिक एव साप्ताहिक पत्रो के प्रकाशन के द्वारा उसने हिन्दी के प्रभावशाली प्रचार का कार्य किया था। सर्वप्रथम सन् १८७० मे शाहजहापुर से मुन्शी बख्तावरसिह ने "आर्यदर्पण" नामक साप्ताहिक पत्र आरम्भ किया था और उसके बाद से अनेक पत्र-पत्रिकाओ का प्रकाशन आर्यसमाज की ओर से चला आरहा है। इससे स्पष्ट होता है कि आर्यसमाज की स्थापना से ५ वर्ष पूर्व ही महर्षि दयानन्द के एक शिष्य ने साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन प्रारम्भ किया था। इसी प्रकार स्वामीजी के एक ओर अन्यतम शिष्य मनीषी समर्थदान ने सन् १८८६ मे अजमेर मे 'राजस्थन समाचार" नामक पत्र का सम्पादन-प्रकाशन प्रारम्भ किया था। स्वामीजी ने जहा हिन्दी के प्रचार एव प्रसार के लिये अपने अनेक अनुयायियो को प्रेरित किया वहा उसे "आर्यभाषा" के पावन अभियान से भी अभिषिक्त किया।

स्वामीजी की अद्वितीय हिन्दी-निष्ठा का परिचय एक बार उस समय भी मिला था जब एक बार पजाब मे उनसे किसी सज्जन ने उनके समस्त ग्रन्थो का उर्दू मे अनुवाद करने की अनुज्ञा मागी थी। उस समय उन्होने बडे प्रेम से जो उत्तर दिया था वह आज भी हिन्दी की स्थिति

को अत्यन्त दृढतापूर्वक प्रस्तुत करता है। उन्होने लिखा था-"भाई ! मेरी आखे तो उस दिन को देखने के लिए तरस रही हैं जब कश्मीर से कन्याकुमारी तक सब भारतीय एक भाषा को समझने और बोलने लगेंगे ! जिन्हे सचमुच मेरे भावो को जानने की इच्छा होगी वे इस "आर्यभाषा" को सीखना अपना कर्त्तव्य समझेगे। अनुवाद तो विदेशियो के लिए हुआ करते हैं।" वास्तव मे स्वामीजी की यह भावना अक्षरश चरितार्थ हुई और समग्र देश मे उनके क्रान्तिकारी विचारो को जानने तथा समझने के लिए ही हिन्दी का प्रचलन तेजी से हुआ। अपने प्रख्यात ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' की भाषा के सम्बन्ध मे उन्होने उसके द्वितीय सस्करण की भूमिका मे यह ठीक ही लिखा है-"जिस समय मैंने यह ग्रथ 'सत्यार्थप्रकाश" बनाया था उस समय और उससे पूर्व सस्कृत भाषण करने, पठन-पाठन मे सस्कृत ही बोलने और जन्मभूमि की भाषा गुजराती होने के कारण मुझको इस भाषा का विशेष परिज्ञान नहीं था इसमे भाषा अशुद्ध बन गई थी। अब भाषा बोलने और लिखने का अभ्यास होगया। इसलिए इस ग्रथ को भाषा-व्याकरणानुसार शुद्ध करके दूसरी बार छपवाया है।

हिन्दी के व्यवहार, प्रचार तथा प्रसार के प्रति स्वामीजी कितने जागरूक रहते थे इसका ज्वलन्त प्रमाण उनका वह पत्र है जो उन्होने ७ अक्तूबर १८७८ को दिल्ली से श्री श्यामजीकृष्ण वर्मा को लिखा था-"अबकी बार भी वेदभाष्य के लिफाफे दर देवनागरी नही लिखी गई। इसलिए तुम बाबू हरिश्चन्द्र चिन्तामणि से कहो कि अभी इस पत्र के देखते ही देवनागरी जाननेवाला एक मुशी रखले जिससे कि काम ठीक-ठाक से हो, नहीं तो वेदभाष्य के लिफाफो पर रजिस्टर के अनुसार ग्राहको का पता किसी देवनागरी जाननेवाले से लिखवा लिया करे।' ये शब्द लगभग एक शती पूर्व के हैं। यह सही है कि देश की जनता ने सच्चे हृदय से महर्षि दयानन्द की इस भावना का आदर किया, किन्तु आज भी राजनीति से आक्रात वातावरण मे जहा-तहा हिन्दी-विरोध की आवाज सुनाई देजाती है। जो लोग अहिन्दी भाषियों की दुहाई देकर हिन्दी के विकास का मार्ग अवरुद्ध करते रहते हैं, वे यह कैसे भूल जाते हैं कि अतीतकाल मे राजा राममोहन राय, केशवचन्द्र सेन, जस्टिस शारदाचरण मित्र, नगेन्द्रनाथ वसु, नवीनचन्द्र राय, भूदेव मुखोपाध्याय, लोकमान्य तिलक और महर्षि दयानन्द भी अहिन्दी भाषी ही थे। यहा तक कि महात्मा गाधी भी गुजराती ही थे, जिन्होने हिन्दी का समर्थन ही नहीं किया प्रत्युत दक्षिण मे हिन्दी-प्रचार की जो ज्योति जगाई, वह उनके हिन्दी-प्रेम की ज्वलत साक्षी है। दक्षिण हिन्दी-प्रचार के समय महात्मा गांधी के दाहिने हाथ चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य तक की बीमार आखों को भी राजनीति के कारण हिन्दी का प्रकाश खटकने लगा था। महात्मा गाधी ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में प्रयुक्त करने की अपील करते हुए एक बार सही ही कहा था-"जैसे अग्रेज अपनी मातृभाषा अग्रेजी मे ही बोलते हैं और सर्वथा उसे ही व्यवहार में लाते हैं-वैसे ही मैं आपसे प्रार्थना करता हू कि आप हिन्दी को भारतमाता की एक भाषा बनाने का गौरव प्रदान करें। हिन्दी सब समझते हैं। इसे राष्ट्रभाषा बनाकर हमें अपना कर्त्तव्य-पालन करना चाहिए।"

यह महर्षि दयानन्द का ही प्रताप है कि आज हिन्दी इस रूप मे पल्लवित तथा पुष्पित होकर एक ऐसे विशाल वटवृक्ष का रूप धारण कर गई है कि इसका साहित्य किन्ही अशो मे भारत की, विश्व की बहुत-सी भाषाओ से आगे बढ गया है। महर्षि दयानन्द और उनके द्वारा सस्थापित तथा प्रवर्तित आर्यसमाज के सुधारवादी अन्दोलन के कारण देश के अधिकाश नेताओं, सुधारको, शिक्षा-शास्त्रियो और साहित्यकारो का ध्यान आर्यभाषा हिन्दी के उन्नयन की ओर आकर्षित हुआ और एक दिन वह भी आया कि जब कि शासन मे प्रचलित उर्दू तथा फारसी लिपि के स्थान पर अदालतों और विद्यालयो आदि मे हिन्दी का पठन-पाठन और व्यवहार तेजी से होने लगा। काशी के श्री रामनारायण मिश्र ने हिन्दी के इस मिशन को पूरा करने के लिए अपने दो कर्मठ युवक व साथियो (बाबू श्यामसुन्दरदास तथा ठा० शिवकुमारसिह) के सहयोग के १६ जुलाई सन् १८९३ को वहा "नागरी प्रचारिणी सभा' की स्थापना की और उसके माध्यम से कालान्तर मे एक मई सन् १९१० को अखिल भारतीय हिन्दी 'साहित्य सम्मेलन प्रयाग' की सरचना कीगई। हमारे पाठको मे से कदाचित् बहुतो को यह मालूम न होगा कि श्री रामनारायण मिश्र आर्यसमाज तथा महर्षि दयानन्द के पक्के अनुयायी एव भक्त थे। महर्षि दयानन्द के इस स्वप्न को साकार रूप देने की दिशा मे जहा **"नागरी प्रचारिणी सभा"** और **'हिन्दी साहित्य सम्मेलन'** उल्लेखनीय योगदान देरहे थे वहा आर्यसमाज के द्वारा सस्थापित अनेक गुरुकुलो और डी ए वी कालेजो की भी अभिनन्दनीय एव उल्लेखनीय भूमिका रही थी। नागरी प्रचारिणी सभा और हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने जहा समग्र देश मे हिन्दी का वातावरण तैयार किया वहा आर्यसमाज और उनकी अन्य सस्थाओ ने अनेक सुधारक, उपदेशक, प्रचारक और साहित्यकार प्रदान किये। महात्मा मुन्शीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) तथा स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती (पण्डित कृपाराम शर्मा) ने जहा "गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय" और "गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर" जैसी आदर्श शिक्षा-सस्थाओं को जन्म दिया वहा महात्मा हसराज और लाला देवराज ने भी 'डी ए वी कालेज लाहौर' तथा 'कन्या महाविद्यालय जालन्धर' जैसे क्रान्तिकारी शिक्षणालयो की स्थापना करके इस क्षेत्र की समृद्धि एव अभिवृद्धि में प्रशसनीय सहयोग दिया। इन सभी सस्थाओ मे जहा हिन्दी के माध्यम से विभिन्न विषयों की उच्चतम शिक्षा देने का प्रबन्ध किया गया वहा दूसरी ओर सस्कृत- वाङ्मय के विभिन्न अगो, उपागो तथा वेदो के विधिवत् अध्ययन की व्यवस्था भी कीगई। इसका सुपरिणाम यह हुआ कि जहा गुरुकुलो के द्वारा भारतीय सस्कृति के पारगत विद्वान् स्नातक दीक्षित हुए वहा डी ए वी कालेजो से वैदिक सिद्धान्तो के विधिवत् अध्ययन का लाभ प्राप्त कर अग्रेजी भाषा मे निष्णात युवक-समुदाय भी कार्यक्षेत्र मे अवतरित हुआ। देश को उच्चकोटि के मनीषी, विद्वान् और विचारक देने का कार्य जहा उक्त सस्थाओं के द्वारा हुआ वहा आर्यसमाज की सैद्धान्तिक भावनाओ के प्रचार के लिए देश के कोने-कोने में और भी अनेक सस्थाए स्थापित की गई। ऐसी सस्थाओ मे "गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन", "कन्या गुरुकुल देहरादून", "दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय लाहौर", "दयानन्द उपदेशक विद्यालय लाहौर", तथा "आर्य मुसाफिर विद्यालय आगरा' आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इन सस्थाओ ने जहा आर्यसमाज को अनेक उच्चकोटि के विद्वान्, वक्ता, प्रचारक, पत्रकार, लेखक और उपदेशक प्रदान किये वहा भारत तथा विदेशो मे प्रचलित विभिन्न धर्मो, सम्प्रदायो और मतो के सिद्धान्तो की जानकारी रखनेवाले अनेक शास्त्रार्थ-महारथी भी तैयार किये।

शिक्षा के क्षेत्र में नया प्रयोग करने के साथ-साथ अपने सिद्धान्तो का प्रचार करने के लिए आर्यसमाज ने पत्रकारिता के क्षेत्र मे जो क्रान्तिकारी कार्य किया उसके द्वारा हिन्दीभाषा और साहित्य की अभिवृद्धि की दिशा मे भी अत्यन्त उल्लेखनीय उपलब्धि हुई। इन पत्र-पत्रिकाओ के माध्यम से जहा हिन्दी की लोकप्रियता बढी वहा उसे ऐसे अनेक कुशल सम्पादक भी मिले जिनकी सम्पादक पटुता और लेखन-शैली का आज भी हिन्दी-साहित्य में अपना सर्वथा विशिष्ट एव महत्त्वपूर्ण स्थान है। ऐसे महानुभावो मे सर्वश्री रुद्रदत्त शर्मा सम्पादकाचार्य, साहित्याचार्य पद्मसिह शर्मा और महात्मा मुन्शीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। रुद्रदत्त शर्मा ने जहा आर्यजगत् के प्रमुख पत्र **"आर्यमित्र"** का सम्पादन अनेक वर्ष तक सफलतापूर्वक किया था वहा पण्डित पद्मसिह और महात्मा मुशीराम ने **"भारतोदय"** तथा **"सद्धर्म प्रचारक"** जैसे प्रख्यात पत्रो का सम्पादन किया था। इन दोनो महानुभावो ने अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य' सम्मेलन के क्रमश मुजफ्फरपुर और भागलपुर अधिवेशनो

(शेष पृष्ट छह पर)

वैदिक-स्वाध्याय

वह इन्द्र !

इन्द्र इत् नो महोनां दाता वाजाना नृतु ।
महॉ अभिज्ञु आयमत्।।

साम०उ० १२१।। ऋ० ८९२३।।

शब्दार्थ--**(इन्द्र इत्)** इन्द्र ही **(न)** हमे **(महोना, वाजाना दाता)** तेजो और बलो का देनेवाला तथा **(नृतु)** नचानेवाला वह **(महान्)** महान् है और **(अभिज्ञु)** अभिप्राय को जाननेवाला, अन्तर्यामी होता हुआ **(आयमत्)** इस जगत् को व्यवस्था मे बाधे हुए है।

विनय—इस ससार के जो तेजस्वी महापुरुषो हजारो लाखो लोगो के नेता होकर बडे-बडे काम कर रहे हैं, उनमे उस तेज और महाबल को उत्पन्न करनेवाले इन्द्र परमेश्वर ही हैं। इस ससार मे जो नाना आन्दोलन उठते और दबते रहते हैं, कभी कोई लहर चलती है कभी कोई तथा इन आन्दोलनो और लहरो मे उस समय के सब मनुष्य बलात् खिचे चले जाते हैं, यह सब खेल खिलानेवाले और हमे नाच नचानेवाले भी इन्द्र ही हैं। ये इन्द्र हम सबको अपना थोडा या बहुत तेज ओर बल देरहे हैं और उस द्वारा नाच नचा रहे हैं। आज जो हममे महातेजस्वी है, वह कभी कुछ दिनो मे सर्वथा निस्तेज होजाता है तथा एक तुच्छ पुरुष कुछ ही दिनो मे यशस्विता के शिखर पर पहुचा देखा जाता है। यह सब उसका खेल है। आओ, हम अपने तेज व बल का सब अभिमान त्यागकर, नम्र होकर, उस महान् इन्द्र की शरण में पड जाये। जरा देखो, वह इन्द्र कितना महान् है, जो कि अकेला हम अनन्त जीवों को कठपुतली की तरह नचा रहा है, स्थावर, जगम सभी असख्य प्रकार की सृष्टि को हिला रहा है। वह महान् इन्द्र इस ब्रह्माण्ड को नचा रहा है तो इसका यह मतलब नहीं है कि उसकी इस सृष्टि मे कुछ व्यवस्था नहीं है, मनमानी या अन्धाधुन्धी है। वह हमे नाच भी पूरी व्यवस्था के साथ, अटल सत्यनियमो के साथ नचा रहा है। इसका कारण यह है कि वह "अभिज्ञु" है, सबके अभिप्रायों को एकदम जानता है, सर्वान्तर्यामी है, इस सब ब्रह्माण्ड की वह आत्मा है। हम सब अनन्त प्राणियों के हृदय मे आत्मा की आत्मा होकर, अन्तर्यामी होकर, वह अकेला ही बैठा हुआ अनन्त-जीवरूप अनन्त चक्रों वाले इस महायन्त्र को चल रहा है। अहो, वह इन्द्र परमेश्वर कितना महान् है ! कितना महान् है ॥

राष्ट्रभाषा और भारतवर्ष

इस देश का प्राचीन नाम आर्यावर्त रहा है और इस देश के निवासी आर्य थे। सृष्टि के आरम्भ से लेकर पांच हजार वर्ष पूर्व तक आर्यों का सार्वभौम चक्रवर्ती राज रहा है। अन्य देशो में छोटे-छोटे राजा रहते थे। महाभारतकालीन इतिहास पर हम दृष्टि डाले तो सहज मे इसकी जानकारी मिलेगी। श्रीकृष्ण तथा अर्जुन अश्वतरी जिसे अग्नियान नौका कहते हैं उस पर बैठकर पाताल (अमेरिका) में जाकर महाराजा युधिष्ठिर के यज्ञ मे उद्दालक ऋषि को लेआए थे। धृतराष्ट्र का विवाह कन्धार मे हुआ। "पाण्डु" की पत्नी माद्री ईरान के राजा की कन्या थी। अर्जुन का विवाह पाताल जिसे अमेरिका कहते हैं, वहा के राजा की लडकी उलोपी से हुआ। महर्षि दयानन्द सत्यार्थप्रकाश मे उद्धृत करते हैं कि आर्यावर्त देश ऐसा है जिसके समान भूगोल मे दूसरा कोई देश नहीं हैं इसलिए इस भूमि का नाम सुवर्ण भूमि है क्योकि यही स्वर्ण आदि रत्नो को उत्पन्न करती है, इसलिए सृष्टि के आदि मे आर्यलोग इस देश में आकर बसे। "पारसमणि पत्थर" सुना जाता है। यह बात तो झूठी है परन्तु आर्यावर्त देश ही सच्चा पारसमणि है जिसको लोहेरूपी दरिद्र विदेशी छूने के साथ स्वर्ण अर्थात् धनाढ्य होजाते हैं, देखो जितनी विद्या भूगोल मे फैली है वह सब आर्यावर्त देश से मिश्रवालो ने ली, उनसे यूनानवालो ने ली, उससे रोम ने और उनसे यूरोप देशो मे तथा उनसे अमेरिका आदि देशो मे फैली है और आगे महर्षि दयानन्द बडे दु ख के साथ लिखते हैं कि ऐसे शिरोमणि देश को महाभारत के युद्ध ने ऐसा धक्का दिया कि अब तक भी अपनी पूर्व दशा में नहीं आया क्योकि जब भाई-भाई को मारने लगे तो नाश होने मे क्या सदेह है किन्तु अग्रेज और उनके पिट्ठुओ ने इस देश के इतिहास को ही बिगाडकर रख दिया और यही हालत हमारी भाषा के साथ भी जारी है। अब आप देखिए हिन्दी और सस्कृत दोनो भाषाए देवनागरी लिपि मे लिखी जाती हैं। सस्कृतभाषा उतनी ही प्राचीन है जितनी यह सृष्टि। सृष्टि के आरम्भ से लेकर लगभग तीन हजार वर्ष पूर्व तक सारे ससार मे एक ही भाषा थी वह थी सस्कृत। संसार मे केवल देवनागरी लिपि ही ऐसी है जिसमे सभी ध्वनिया हैं। हिन्दीभाषा सस्कृतभाषा का अपभ्रश है। अनन्त ज्ञान के भण्डार वेद ही हमारी वैदिक सस्कृति के आधार हैं। वैदिक सस्कृति के माननेवालो ने कभी दूसरो पर अत्याचार नहीं किए। दूसरो के धन व पदार्थ नहीं छीने। आज का मानव एकदम भ्रमित होरहा है। इस समय देश की जो दशा है उसे देखते हुए तो राष्ट्रीय एकता की परम आवश्यकता है। पजाब, असम, कश्मीर, आध्र, गुजरात की घटनाये क्या बता रही हैं। अब भी कुछ स्वार्थी लोग इस देश को खण्डित करना चाहते हैं। अपने राजनैतिक स्वार्थो को पूरा करने के लिये समाज मे जहा जातिवाद, वर्गवाद, सम्पप्रदायवाद का जहर घोल रहे हैं वहीं भाषावाद, प्रान्तवाद पर भी लोगो को लडा रहे हैं। वे एक-दूसरे प्रान्तो का सवाद नहीं चाहते, आज इस देश को सगठित करनेवाली शक्ति तथा भावना का ह्रास (लोप) होता जारहा है।

आज हमारी समस्या अग्रेजी या हिन्दी को लेकर उलझी हुई है। कुछ लोग न केवल इसी क्षेत्र मे बल्कि उच्चशिक्षा के माध्यम के रूप मे भी अग्रेजी को स्थान देने के पक्ष मे हैं उनका कहना है कि अग्रेजी माध्यम न रहने से शिक्षा का स्तर गिरेगा, ऐसी तर्कहीन भावनाए लोग प्रस्तुत कर रहे हैं। ससार मे सभी देशो की शिक्षा का स्तर अग्रेजी के कारण ही ऊचा नहीं है, इसलिए शिक्षा के माध्यम के रूप मे सर्वदा के लिए एक विदेशी भाषा को स्वीकार करना एक नासमझी है। विश्व के किसी भी देश मे ऐसा नहीं किया और कोई स्वाभिमानी राष्ट्र ऐसा कर भी नहीं सकता। अग्रेजी भारत की राजभाषा क्यो नहीं रह सकती क्योकि अग्रेजी इस देश की भाषा नहीं है और जो देश की भाषा नहीं उसे राजभाषा बनाना एक मूर्खतापूर्ण कदम है। इस गौरवपूर्ण पद पर हम किसी भारतीय भाषा को ही रख सकते हैं। इस समय देश की जो दशा है ~ देखते हुए तो राष्ट्रीय एकता की आवश्यकता गभीरता सहज ही समझ मे आजाने वाली बात है। पंजाब, असम, कश्मीर, आन्ध्र, गुजरात की घटनाए क्या बताती हैं ? जातिवाद, प्रान्तवाद, भाषावाद देश को बुरी तरह तो तोड रहा है। देश को सगठित करनेवाली बाधनेवाली शक्ति और भावना का ह्रास और लोप होता जारहा है। प्रत्येक स्वतन्त्र राष्ट्र का एक राष्ट्रध्वज होता है। राष्ट्रभाषा होती हैं। यह राष्ट्रध्वज मात्र कपडे का टुकडा नहीं और न राष्ट्रभाषा केवल भाषामात्र है। यह हमारे राष्ट्र का, राष्ट्रप्रेम का, राष्ट्रभक्ति का प्रतीक है। राष्ट्रीयता अस्मिता की सवाहक है। राष्ट्रभाषा राष्ट्र की वाणी है। महात्मा गाधी ने कहा था कि राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूगा है। राष्ट्र के हृदय की अभिव्यक्ति राष्ट्रभाषा के द्वारा ही होती है। अटक से लेकर कटक तक, कश्मीर से कन्याकुमारी तक सारा भारत एक है और इस देश को अखण्डित रखने की शक्ति राष्ट्रभाषा में है। आज हम सकल्प ले कि हिन्दी को विश्व स्तर की भाषा का स्थान दिलाने के लिए प्रयत्न करेंगे।

वैसे भी आज विश्वस्तर पर हिन्दी के लिए प्रयास होरहे हैं। विश्व के अन्य देशो मे, विश्वविद्यालयो में हिन्दी के अध्ययन-अध्यापन के लिए सुविधा दी जारही है। विदेशी विद्वान् हिन्दी में लिखने, बोलने लगे हैं। इतना ही नहीं वे शुद्ध और साफ हिन्दी बोलते हैं। इन विद्वानो के भाषण सुनने पर इस बात का प्रमाण स्वत ही मिलता है कि हिन्दी केवल भारत की राष्ट्रभाषा ही नहीं अपितु अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की भाषा बनकर रहेगी। इस समय जनसख्या की दृष्टि से हिन्दी विश्व की तीसरी भाषा का स्थान रखती है। पहले स्थान पर चीनी भाषा जिसके बोलनेवाले सबसे अधिक ९० करोड के करीब हैं। दूसरे स्थान पर अग्रेजी जिसके बोलने समझनेवाले ५२ करोड से अधिक हैं। तीसरी हिन्दी भाषा है जिसके बोलने, समझनेवाले भारतीय भाषाओ मे सबसे अधिक हिन्दीभाषी हैं। पूरे भारतवर्ष मे लगभग ४२ प्रतिशत लोग हिन्दी बोलते हैं जबकि अन्य किसी भारतीय भाषा के बोलनेवाले १० प्रतिशत से लेकर १५ प्रतिशत तक ही हैं और इन ४२ प्रतिशत हिन्दी भाषियो के अतिरिक्त भारतीय जनता का एक और बडा भाग जो कलकत्ता, मद्रास, मुम्बई जैसे महानगरो मे रहता है, अन्य भाषाभाषी होते हुए भी बोलचाल की हिन्दी आसानी से समझ लेता है और टूटी-फूटी हिन्दी भी बोल लेता है। इन सभी पहलुओ को देखते हुए हिन्दी ही राष्ट्रभाषा होने का अधिकार रखती है और यही भारत की सभी भाषाओ का प्रतिनिधित्व भी कर सकती है। इसके अतिरिक्त आप देख सकते हैं कि भारतवर्ष के बाहर भी, मॉरिशस, फिजी, वेस्टइडीज, दक्षिणपूर्वी अफ्रीका, मलाया आदि देशो मे भारत की अन्य भाषाओ की अपेक्षा हिन्दी अधिक बोली तथा समझी जाती है।

स्वतन्त्रता से पूर्व ही भारत के सतो, महात्माओ, नेताओ, राष्ट्रप्रेमियो ने हिन्दी को देश की राजभाषा स्वीकार कर लिया था। स्वामी दयानन्द, महात्मा गाधी, लाला लाजपतराय, बाल गगाधर तिलक, केशवचन्द्रसेन आदि देश के महान् नेताओ ने यह अच्छी तरह अनुभव कर लिया था कि समग्र देश को एकता के सूत्र मे बाधने की क्षमता हिन्दी मे है। इसलिए हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप मे स्वीकार कर लिया गया था। राष्ट्रभाषा राष्ट्र की वाणी है, राष्ट्र के हृदय की अभिव्यक्ति राष्ट्रभाषा के द्वारा ही होती है। देश का हर व्यक्ति यह अनुभव करेगा कि यह देश मेरा है मैं इस देश का हू तब बहुत-सी समस्याओ का समाधान सहज ही हो जाएगा। मगर यह इतना सरल कार्य नहीं है। यदि आज हम सकल्प ले कि हिन्दी मे ही लिखेगे, हिन्दी मे ही बोलेगे, हिन्दी मे ही हस्ताक्षर करेगे, अपनी गाडियो, स्कूटरो के नम्बर भी हिन्दी मे ही लिखेंगे। डाक पते भी हिन्दी मे लिखेंगे, सरकारी पत्रो का उत्तर भी हिन्दी मे लिखेगे और अपने सभी साथियो, परिचितो को इसके लिये प्रेरित करेगे, तो निश्चित ही आप हिन्दीभाषा और देश का सम्मान बढायेगे हिन्दी क्षेत्र के विश्वविद्यालयो मे उच्च शिक्षा का माध्यम हिन्दी हो, सरकारी तथा गैरसरकारी प्रशासन मे हिन्दी के प्रयोग के लिये हम सगठित होकर ज्ञापन देकर पत्र लिखकर अपना विरोध प्रदर्शित कर दबाव बनाए इसके लिए हमारा प्रयास निरन्तर जारी रहे, तभी हिन्दी को राष्ट्रभाषा का उचित स्थान मिल सकेगा अन्यथा नही।

—आचार्य यशपाल

वैदिकधर्म दीक्षा समारोह सम्पन्न

ग्राम बालन्द (रोहतक) मे दिनाक २८-२९ सितम्बर २००२ शनिवार-रविवार को वैदिकधर्म दीक्षा समारोह उल्लासपूर्ण वातावरण मे सम्पन्न हुआ। २८ सितम्बर रात्रि को प० तेजवीर ने मनोहर भजन तथा वीररस की कथा सुनाई। २९ सितम्बर को प्रात. स्वामी ओमानन्द सरस्वती की अध्यक्षता मे दीक्षा-समारोह प्रारम्भ हुआ। प० सुदर्शनदेव आचार्य के ब्रह्मत्व मे बृहद्यज्ञ हुआ। स्वामीजी महाराज ने ७५ अध्यापको छात्र-छात्राओ को यज्ञोपवीत (जनेऊ) दिये।

श्री महेन्द्रसिंह डी आर ओ. रोहतक, प० तेजवीर, प० रामचन्द्र, प० कुलदीप आदि के भजन हुये। प० वेदव्रत शास्त्री वरिष्ठ सभाउपप्रधान ने यज्ञोपवीत धारण का महत्त्व बतलाया। स्वामी ओमानन्द जी महाराज ने हरयाणा मे यज्ञोपवीत धारण के इतिहास पर प्रकाश डाला।

ग्राम बालन्द में आर्यसमाज मन्दिर (कन्या पाठशाला) के जीर्णोद्धार के लिये श्री सोमदेव शास्त्री मन्त्री आर्यसमाज ने ११०००) रुपये, प० सत्यदेव शास्त्री ने ११०००) रुपये, प० सुदर्शनदेव आचार्य ने ११००) रुपये, डा० सुधीरकुमार ने ११००) रुपये, श्री नन्दराम आर्य उपप्रधान आर्यसमाज ने २१००) रुपये, श्री भगवान्सिह कोषाध्यक्ष आ स ने २१००) रुपये का दान किया। स्वामीजी महाराज ने भी ११००) रुपये दिए तथा वक्ता छात्र-छात्राओं को सत्यार्थप्रकाश आशीर्वाद मे प्रदानकिया। समारोह बडा सफल रहा।

—सोमदेव शास्त्री, मन्त्री आर्यसमाज बालन्द (रोहतक)

महर्षि दयानन्द का मन्तव्य

वेदों की उत्पत्ति

डा. सुदर्शनदेव आचार्य, अध्यक्ष संस्कृत सेवा संस्थान, हरिसिंह कालोनी, रोहतक

ईश्वर और पुस्तक रचना

जिज्ञासु–वेदो की रचना और पुस्तक लिखने के लिए ईश्वर ने लेखनी, स्याही और दवात आदि साधन कहां से लिये ? क्योंकि उस समय कागज आदि पदार्थ तो बने नहीं थे।

सिद्धान्ती–(१) मैं आपसे पूछता हू कि हाथ आदि अगो के तथा काष्ठ-लोह आदि साधनो के बिना ईश्वर ने जगत् को कैसे रचा है ? जैसे ईश्वर ने हाथ आदि साधनो के बिना सब जगत् को रचा है वैसे वेद को भी साधनो के बिना बनाया है क्योकि ईश्वर सर्वशक्तिमान् है। (२) वेदो को पुस्तको मे लिखकर सृष्टि के आदि मे ईश्वर ने प्रकाशित नहीं किया था अपितु अग्नि, वायु, आदित्य, अगिरा के ज्ञान मध्य मे प्रकाशित किया था। ये अग्नि आदि कोई जड पदार्थ नहीं थे अपितु देहधारी मनुष्य थे क्योकि जड मे ज्ञान-कार्य असम्भव है और जहा-जहा अर्थ सम्भव नहीं होता वहा लक्षणा होती है। जैसे किसी सत्यवादी पुरुष ने किसी से कहा-**'मञ्चा क्रोशन्ति'** अर्थात् खेतो मे मचान पुकारते हैं। इस वाक्य से लक्षणा से यह अर्थ होता है कि मचान के ऊपर मनुष्य पुकार रहे हैं। इस प्रकार यहा भी जाने कि विद्या के प्रकाश का सम्भव अग्नि नामक जड पदार्थ मे नहीं हो सकता अपितु अग्नि नामक मनुष्य मे ही हो सकता है। जैसे कि शतपथ ब्राह्मण का प्रमाण है-

'तेभ्यस्तप्तेभ्यस्त्रायो वेदा अजायन्त अग्नेर्ऋग्वेदो वायोर्यजुर्वेदः सूर्यात्सामवेद' (शत० ११।५।२।३)।

ईश्वर ने उन अग्नि आदि चार ऋषियो के ज्ञान के बीच मे वेदो का प्रकाश करके उनसे ब्रह्मा आदि के बीच मे वेद का प्रकाश कराया था। (ऋ०भा०भू० वेदोत्पत्ति विषय)

वेद और ब्रह्मा

जिज्ञासु–**'यो वै ब्रह्माण विदधाति पूर्वं यो वै वेदाश्च प्रहिणोति तस्मै'** यह उपनिषद् का वचन है। इस वचन से स्पष्ट है कि ईश्वर ने ब्रह्माजी के हृदय मे वेदो का उपदेश किया आप अग्नि आदि ऋषियो के आत्मा मे प्रकाश किया यह क्यो कहते हो ?

सिद्धान्ती–(१) ईश्वर ने अग्नि आदि ऋषियो के द्वारा ब्रह्माजी के आत्मा मे वेदो को स्थापित कराया। जैसे कि मनु महाराज लिखते हैं-

अग्निवायुरविभ्यस्तु
त्रयं ब्रह्म सनातनम्।
दुदोह यज्ञसिद्धयर्थ-
मृग्यजुःसामलक्षणम्।।
(मनु० १।२३)

अर्थ–जिस परमात्मा ने सृष्टि के आदि मे मनुष्यो को उत्पन्न करके अग्नि आदि चारो महर्षियो के द्वारा चारो वेद ब्रह्मा को प्राप्त कराये और उस ब्रह्मा ने अग्नि, वायु, आदित्य और अगिरा से ऋग्, यजु, साम और अथर्व वेद को ग्रहण किया। (स०प्र० समु० ७)

(२) यदि आप कहे कि चतुर्मुख ब्रह्माजी ने वेदो को रचा है ऐसा इतिहास हम सुनते हैं तो आप ऐसा मत कहो। क्योकि इतिहास को शब्द-प्रमाण के भीतर गिना है। अर्थात् सत्यवादी विद्वानो का जो उपदेश है उसको शब्द प्रमाण मे गिनते हैं। ऐसा न्यायदर्शन ने गौतम आचार्य ने लिखा है-**'आप्तोपदेश शब्दः'** (न्याय १।६) जो शब्द प्रमाण से युक्त है वही इतिहास मानने योग्य है, अन्य नहीं।

'आप्तोपदेश शब्द' (न्याय० १।६) इस सूत्र के भाष्य मे वात्स्यायन मुनि ने आप्त का यह लक्षण किया है कि जो सदा सत्यवादी, सत्यमानी और सत्यकारी है, जिसको पूर्ण सत्य विद्या से आत्मा मे जिस प्रकार का ज्ञान है, उसके कहने की इच्छा की प्रेरणा से सब मनुष्यो पर कृपादृष्टि से सब सुख होने के लिये सत्य उपदेश का करनेवाला है और जो पृथिवी से लेकर परमेश्वर पर्यन्त सब पदार्थो को यथावत् साक्षात् करना और उसके अनुसार वर्तना है, इसी का नाम आप्ति है। इस आप्ति से जो युक्त है उसको आप्त कहते हैं। उसी के उपदेश का प्रमाण होता है, इससे विपरीत मनुष्य का नहीं।

अत सत्य वृत्तान्त का नाम इतिहास है, अनृत का नहीं। सत्य प्रमाणयुक्त जो इतिहास है वही सब मनुष्यो को ग्रहण करने योग्य है। इससे विपरीती इतिहास का ग्रहण करना किसी को योग्य नहीं। क्योंकि प्रमादी पुरुष के मिथ्या कहने का इतिहास में ग्रहण नहीं होता।

(३) इसी प्रकार व्यास जी ने चारों वेदों की संहिताओ का सग्रह किया, इत्यादि इतिहासो को भी मिथ्या ही जानना चाहिये।

(४) जो आजकल ब्रह्मवैवर्त आदि पुराण और ब्रह्मयामल आदि तन्त्र ग्रन्थ हैं, इनमे कहे इतिहासो को प्रमाण करना किसी मनुष्य को योग्य नहीं। क्योंकि इनमे असम्भव और अप्रमाण कपोलकल्पित मिथ्या इतिहास बहुत लिख रखे हैं।

(५) जो शतपथ ब्राह्मण आदि हैं उनके इतिहासो का कभी त्याग नहीं करना चाहिये।

अत चतुर्मुख ब्रह्माजी ने वेदो को रचा, ऐसा इतिहास मिथ्या है।

(६) यदि आप कहे कि वेदो मे जो सूक्त और मन्त्रो के ऋषि लिखे हैं उन्होने ही वेद रचे हैं ऐसा क्यो न माना जाये ? आपका यह कहना ठीक नहीं क्योकि ब्रह्मा आदि ने भी वेदो को कहा है। जैसाकि श्वेताश्वतर उपनिषद् मे लिखा है-**'यो ब्रह्माण विदधाति यो वै वेदाश्च प्रहिणोति तस्मै।** (६।१८)। अर्थात् जिसने ब्रह्मा को उत्पन्न किया और ब्रह्मा आदि को सृष्टि के आदि मे अग्नि आदि के द्वारा वेदो का उपदेश किया है उसी ईश्वर की शरण मे हम लोग प्राप्त होते हैं।

इसी प्रकार ऋषियो ने भी वेदो को पढा है। क्योकि जब मरीचि आदि ऋषि और व्यास आदि मुनियो का जन्म भी नहीं हुआ था उस समय मे भी ब्रह्मा जी के समीप वेदो का वर्त्तमान था।

इसमे मनु का भी प्रमाण है-

(१) **अग्निवायुरविभ्यस्तु त्रय ब्रह्म सनातनम्। दुदोह यज्ञसिद्धयर्थमृग्यजु.-सामलक्षणम्।**

(२)**अध्यापयास पितृन् शिशुराङ्गिरस कवि।**

अर्थ-अग्नि, वायु, रवि और अङ्गिरा से ब्रह्माजी ने वेदो को पढा था। जो ब्रह्माजी ने ही वेदो को उनसे पढा था तो व्यास आदि और हम लोगो की तो कथा ही क्या कहनी है।

अत स्पष्ट है कि सूक्त और मन्त्रो के जो ऋषि वेदो में लिखे हैं उन्होंने वेदो की रचना नहीं की अपितु ईश्वर ने ही वेदो को बनाया है। जिनको पढने से यथार्थ विद्या का विज्ञान होता है, जिनको पढकर विद्वान् होते हैं, जिनसे सब सुखों का लाभ होता है और जिनसे ठीक-ठीक सत्य-असत्य का विचार मनुष्यों को होता है इससे ऋग्वेद आदि संहिता का नाम 'वेद' है।

सृष्टि के आरम्भ से आज पर्यन्त और ब्रह्मा आदि से लेकर हम लोगो पर्यन्त जिससे सब सत्य विद्याओ को सुनते आते हैं इससे वेदो का 'श्रुति' नाम पडा है। किसी देहधारी ने वेदो के बनानेवाले को साक्षात् कभी नहीं देखा। इस कारण से जाना गया कि वेद निराकार ईश्वर से ही उत्पन्न हुये हैं और उनको सुनते-सुनते ही आज पर्यन्त हम लोग चले आते हैं। (ऋ०भा०भू० वेदोत्पत्ति)

ईश्वर में पक्षपात का अभाव

जिज्ञासु–ईश्वर ने अग्नि आदि चार महर्षियो के आत्मा मे ही वेदो का प्रकाश किया अन्य किसी के आत्मा मे नहीं। इससे ईश्वर मे पक्षपात प्रतीत होता है।

सिद्धान्ती–(१) अग्नि आदि चार महर्षि ही सब जीवो से अधिक पवित्र आत्मा थे। अन्य जीव उनके सदृश नहीं थे। इसलिये ईश्वर ने अपनी पवित्र विद्या का प्रकाश उन सर्वाधिक पवित्र आत्माओ मे ही किया। (स०प्र० समु० ७)

(२) इससे ईश्वर मे पक्षपात का लेश भी नही आता किन्तु उस न्यायकारी ईश्वर का साक्षात् न्याय प्रकाशित होता है क्योकि न्याय उसको कहते हैं कि जो जैसे कर्म करे उसको वैसा ही फल दिया जाये। अब जानना चाहिए कि उन्हीं चार पुरुषो का ऐसा पूर्व पुण्य था कि उनके हृदय मे वेदो का प्रकाश किया गया।

(३) यदि आप कहे कि वे चार पुरुष तो सृष्टि के आदि मे उत्पन्न हुये थे उनका पूर्व पुण्य कहा से आया ? इसका उत्तर यह है कि जीव, जीवों के कर्म और स्थूल कार्यजगत् ये तीनों अनादि हैं। जीव और कारणजगत् स्वरूप से अनादि हैं। कर्म और स्थूल कार्यजगत् प्रवाह से अनादि हैं। अत उनके पूर्व सृष्टि के पूर्व कर्म थे।

(४) यदि आप कहो कि वेद के गायत्री आदि छन्दो की रचना भी क्या ईश्वर ने ही की है ? इस शंका का समाधान यह है कि क्या गायत्री आदि छन्दो का ज्ञान ईश्वर को नहीं है ? ईश्वर को सब ज्ञान है। ईश्वर के समस्त विद्यायुक्त होने से आपकी शका निर्मूल है। (ऋ०भा०भू० वेदोत्पत्ति विषय)। (क्रमशः)

स्वामी अग्निवेश द्वारा लिखित 'होर्वस्ट आफ हेट'

घृणा और साम्प्रदायिकता का विष फैलाने वाली पुस्तक

स्वामी अग्निवेश तथा वाल्सन थम्पू रूपा द्वारा लिखी गई १४० पृष्ठ की पुस्तक 'होर्वस्ट आफ हेट' में स्वामी अग्निवेश मुस्लिम अतिवादियो का साथ देते हैं। इस पुस्तक का मूल्य १५० रुपये है। इण्डिया टुडे २४-७-२००२ में फ्रांसीसी पत्रकार फ्रान्टवा ग्वांतिया की समीक्षा प्रकाशित हुई है। इस समीक्षा का हिन्दी अनुवाद प्रसिद्ध विद्वान् डॉ० भवानीलाल भारतीय ने किया जिसे यहा प्रकाशित किया जारहा है। —सम्पादक

भारत मे स्वामी अग्निवेश एक सम्मानित व्यक्ति माने जाते हैं। कहा जाता है कि उन्होंने अनगिनत बधुवा मजदूर बच्चों को मुक्त कराया है। एक ईसाई पादरी वाल्सन थिम्पू के सहयोगी बनकर लिखी इस पुस्तक में गुजरात के दगो के दौरान मुसलमानो पर किए गए हिन्दुओं के अत्याचारो का विस्तार से विवरण दिया गया है। दुर्भाग्य की बात है कि इस पुस्तक के द्वारा दोनो कौमो के बीच घृणा की खाई बढने की ही उम्मीद है जब कि आवश्यकता दोनो सम्प्रदायो मे सौहार्द स्थापित करने की है। इस पुस्तक का तो पहला वाक्य की आपत्तिजनक है ? 'हम चाहे महात्मा गाधी के आदर्शों को भूल जाए हमे यह नहीं भूलना है कि उनका हत्यारा कौन था।" स्वामीजी की यह विचित्र सीख है कि हम गाधीजी के प्रेम और सहिष्णुता के आदर्श को चाहे भूल जाए हमे याद रखना चाहिए कि उनकी हत्या करनेवाला एक हिन्दू था। स्वामी अग्निवेश का सघ परिवार के प्रति द्वेष यहा स्पष्ट दिखाई देता है। साबरमती एक्सप्रेस के डिब्बे को जलाने का उल्लेख इस पुस्तक के १७वे पृष्ठ पर हुआ है और यहा भी उन्होने इस दुर्घटना के वे ही कारण बताए हैं जो मुसलमानों की ओर से दिए गए हैं अर्थात् कथित कारसेवको ने मुसलमान चायवालो को चाय देने के पहले जय श्रीराम का घोष करने के लिए मजबूर किया। जिन्होने इन्कार किया उनके साथ दुर्व्यवहार किया गया। ये स्वामीजी इस बात का उल्लेख क्यो नहीं करते कि १९९१ मे गोधरा के एक मदरसे के उन सभी हिन्दू अध्यापको का मुसलमानो ने कत्ल कर दिया था जो वहा पढाते थे। वे यह क्यों नहीं लिखते कि गोधरा के मुस्लिम बहुल क्षेत्रो मे बिजली की भरपूर चोरी होती है किन्तु बिजली बोर्ड के अधिकारी वहा जाने से भयभीत हैं। बजरग दल ने चाहे तलवार के जोर से दहशत फैलाई हो किन्तु कलम की ताकत से यह पुस्तक नफरत फैलाने मे बाजी लेगई।

यह तो सत्य है कि इन दगो मे ऐसी खौफनाक घटनाए भी हुई जो दिल दहलाने वाली थी और जिन्हे कभी माफ नहीं किया जा सकता। किन्तु स्वामी अग्निवेश तथा उनका सह-लेखक पादरी थम्पू यह नहीं लिखते कि दगों मे मरनेवाले पच्चीस प्रतिशत लोग हिन्दू थे। उन्हे यह भी बताना चाहिए था कि पुलिस के विवरणो से पता चलता है कि गुजरात मे घटित १५७ दगे मुसलमानों द्वारा भड़काए गए थे। उन्हे यह भी बताना चाहिए था कि साबरमती ट्रेन के हादसे के बाद सवा लाख हिन्दू जिनमे से बहुत से दलित और आदिवासी थे क्यो सडको पर उतर आए। उनके आक्रोश को क्या स्वामी ने समझा है ? इनमें उच्चवर्ग के लोग भी थे। उनके इस भयकर कर्मो की निन्दा करने के साथ लेखकों को यह भी जानना चाहिए था कि उनके इन गहराई मे पैठे क्रोध का कारण क्या था ? शताब्दियो से हिन्दू यह बताते आए हैं कि उनमे कितना धैर्य और सहनशीलता है। इस पुस्तक मे मुस्लिम मोहल्लो मे जाकर सहायता कार्य करनेवाले हिन्दुओ की भी कोई चर्चा नहीं है। अहमदाबाद के एक हिन्दू व्यापारी ने उन मुसलमानों के लिए ९० घरो का निर्माण कराया था जिनके घर जलाए गए थे।

स्वामी अग्निवेश ने दिवाध होकर मुसलमानों का पक्ष लिया है। उनके ऐसे पूर्वाग्रह पूर्ण वाक्यों को देखे - **"यह एक अविश्वसनीय सत्य है कि देशवासियो ने मुसलमानों को पूर्णतया भुला दिया।" इससे भी भयकर कथन-'क्या हम सचमुच गुजरात के मुसलमानो को दोष दे सकते हैं यदि वे नरेन्द्र मोदी की अपेक्षा दाउद इब्राहीम को पसन्द करें।"**

निष्कर्षत यह कहा जा सकता है कि यह पुस्तक मुस्लिम उग्रवादियो को ताकत देगी तथा उदार-विचारवाले मुसलमानो को जिहादी बनने की प्रेरणा देगी। पुस्तक का हिन्दू द्वेष इतना प्रबल है कि इसे पढकर उदार विचारोवाले हिन्दू भी कट्टरपंथियों के समर्थक बन जाएंगे। निश्चय ही यह पुस्तक विपरीत परिणाम देगी, शायद स्वामी, अग्निवेश ने भी ऐसा नहीं सोचा होगा जब उन्होने इसे लिखना आरम्भ किया था।

समीक्षा लेखक : फ्रान्टवा ग्वांतिया (फ्रांसीसी पत्रकार)

इण्डिया टुडे - दिनाक २४.७.२००२, अनुवादक : डॉ० भवानीलाल भारतीय

हरयाणा राष्ट्रभाषा समिति की बैठक का विवरण

रोहतक। "हरयाणा राष्ट्रभाषा समिति" की एक बैठक स्थानीय दयानन्दमठ रोहतक में सम्पन्न हुई। बैठक में हरयाणा प्रान्त मे अग्रेजी के राजकाज मे प्रयोग पर तीव्र आक्रोश व्यक्त किया गया। सविधान सम्मत व केन्द्रीय नियमो के अनुसार हिन्दीभाषी प्रान्त 'क' क्षेत्र मे आते हैं जहा शतप्रतिशत हिन्दी प्रयोग अनिवार्य है परन्तु सविधान का सरासर उल्लघन कर ४० से ८० प्रतिशत अग्रेजी का प्रयोग किया जारहा है। इससे बढकर क्या विडम्बना होगी कि अग्रेजी के वर्चस्व के कारण आज ससार के सबसे बडे लोकतन्त्र भारत देश के स्वतत्र नागरिक अपनी मातृभाषा व राष्ट्रभाषा को प्रयोग करने मे हीनता अनुभव करते हैं। हरयाणा प्रान्त की वस्तुस्थिति तो हिन्दीभाषी प्रान्तो मे सबसे बदतर है। उत्तर भारत के अन्य किसी भी प्रान्त मे प्राथमिक कक्षाओ व स्नातक स्तरीय परीक्षाओ मे अग्रेजी की अनिवार्यता नहीं है। एक हरयाणा ही है जिसमे जन्म से मरण तक लोगो को अग्रेजी से बाध दिया गया है। हरयाणा सरकार द्वारा समय-समय पर राजभाषा हिन्दी मे समस्त कार्य करने के आदेश अवश्य ही सभी कार्यालयो व विभागो मे भेजे जाते हैं लेकिन इन आदेशो की कोई भी अधिकारी व कर्मचारी कतई परवाह नहीं करता है। छोटी-छोटी दुकानो पर हिन्दी मे काम करने के लिए कम्प्यूटर हैं लेकिन हरयाणा के बडे-बडे विश्वविद्यालयो, सचिवालयो, विभागो, कार्यालयो आदि मे कई सौ सगणक हैं लेकिन सबके सब केवल अग्रेजी मे कार्य निपटाते हैं, शायद ही कोई हिन्दी मे कार्य करनेवाला भूलचूक से हो तो हो और होगा तो उस पर मिट्टी ही चढी मिलेगी। काम तो अग्रेजी वाले से ही करवाया जाता है।

अग्रेजी के प्राध्यापक श्री ओमप्रकाश जी ने कहा कि हमे अपनी मानसिकता बदलनी चाहिए तथा हिन्दी मे काम करना चाहिए लेकिन अग्रेजी के बारे मे कुछ नहीं कहना चाहिए। इसके उत्तर मे झज्जर से पधारे विधिवक्ता श्री आर्यव्रत शास्त्री ने कहा कि अग्रेजी हटेगी तभी तो उसका स्थान हिन्दी ले सकेगी, यह स्पष्ट है कि जब तक भारत के सिहासन से अग्रेजी को हटाकर वहा हिन्दी प्रतिष्ठित नहीं होगी तब तक हिन्दी प्रयोग को बढावा नहीं मिल सकता। हिन्दी के मूर्धन्य विद्वान् डा० हरिश्चन्द्र वर्मा, डा० नरेश मिश्र हिन्दी विभागाध्यक्ष म द वि रोहतक, डा० रामसजन पाण्डेय, डा० सुषमा अग्रवाल व डा० उषा गोयल जयपुर, डा० सत्येन्द्र शर्मा सतना (म प्र), डा० अश्विनी बादा (उ प्र), डा० सोमनाथ शर्मा जालन्धर, श्री मेहरसिह देशवाल व श्रीमती जगवन्ती योगाचार्य म द वि रोहतक, विधिछात्र मनोज दूहन, सुमित अहलावत, करनाल से डा० चन्द्रप्रकाश आर्य, सोनीपत से श्री धर्मवीर शर्मा व जयपाल देशवाल झज्जर से डा० राजपाल व डा० जगदेवसिह, भिवानी से धर्मवीरसिह, हिसार मे श्री ब्रह्मराज स्वामी कीर्तिदेव, रामसुफल शास्त्री, वेदप्रकाश आर्य, नारनौल से डा० शिवताजसिह, पानीपत से पूर्व प्राचार्य लाभसिह, यमुनानगर रादौर से डा० हरिसिह शास्त्री आदि ने भी अपनी उपस्थिति दी एव विचार रखे। म द वि की सैकडो छात्राओ व छात्रो ने भी बैठक मे दलबल सहित भाग लिया।

बैठक मे अग्रेजी मे आनेवाले पत्रो को वापिस भेजने, राष्ट्रीय रक्षा अकादमी व सयुक्त रक्षा सेवा परीक्षाओ मे हिन्दी विकल्प देने, वाणिज्य स्नातक व विज्ञान स्नातक कक्षाओ मे हिन्दी/सस्कृत विषय रखने विषयक प्रस्ताव पारित किए गए। शीघ्र ही समिति का एक शिष्टमण्डल माननीय मुख्यमत्री हरयाणा, माननीय राज्यपाल हरयाणा एव शिक्षामन्त्री हरयाणा के साथ-साथ प्रधानमन्त्री एव मानव ससाधन मन्त्री से इस बारे मे मिलेगा। यदि मागो पर पूर्ण आश्वासन व कार्यान्वयन नही हुआ तो न्यायालय मे याचिका डालने, धरने प्रदर्शन व अनशन का भी आयोजन करने पर विचार किया जाएगा। समिति की बैठक की अध्यक्षता सभामन्त्री व "हरयाणा राष्ट्रभाषा समिति" के अध्यक्ष आचार्य यशपाल ने की। अध्यक्ष महोदय ने समिति के कार्यक्रमो मे बढचढकर भाग लेने का आह्वान जनसाधारण से किया तथा कहा कि मैं स्वय राष्ट्रभाषा समिति के कार्यक्रमो को सफल बनाने के लिए कसर नहीं रखूगा। बैठक का सचालन श्री श्यामलाल ने किया।

समिति द्वारा नवगठित कार्यकारिणी की बैठक २० अक्तूबर २००२ को दयानन्दमठ रोहतक फिर बुलाई गई है। **—महावीर 'धीर' प्रचार सचिव**

बीड़ी, सिगरेट, शराब पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है, इनसे दूर रहें।

आर्यसमाज और हिन्दी........... (प्रथम दो का शेष)

की अध्यक्षता भी की थी। महात्मा मुशीराम की जहा हिन्दी मे लिखी आत्मकथा "कल्याणमार्ग का पथिक" साहित्य की अभूतपूर्व निधि है वहा शर्मा जी को सर्वप्रथम उनके समीक्षा ग्रन्थ "बिहारी सततई का सजीवन भाष्य" पर सम्मेलन का "मगलाप्रसाद पुरस्कार" भी सर्वप्रथम सन् १९३२ मे प्रदान किया गया था। मगलाप्रसाद पुरस्कार प्राप्त करनेवाले अन्य आर्यविद्वानो मे प्रो० सुधाकर एम ए, डॉ० त्रिलोकीनाथ वर्मा, प्रो० सत्यकेतु विद्यालकार, श्री गगाप्रसाद उपाध्याय, श्री जयचन्द्र विद्यालकार, श्रीमती चन्द्रावती लखनपाल, डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल, श्री सत्यव्रत सिद्धान्तालकार, श्री उदयवीर शास्त्री तथा यशपाल आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं, जिन्हे क्रमश उनकी "मनोविज्ञान", "हमारे शरीर की रचना", "मौर्य साम्राज्य का इतिहास", "आस्तिकवाद", "भारतीय इतिहास की रूपरेखा", "शिक्षा मनोविज्ञान", "हर्ष चरित एक सास्कृतिक अध्ययन", "समाजशास्त्र के मूल तत्त्व", "साख्यदर्शन का इतिहास" तथा "झूठा सच" आदि कृतियो पर पुरस्कार प्रदान किया गया था। इसमे से डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल को जहा उनकी "वेद-विद्या" नामक कृति पर यह पुरस्कार दुबारा मिला था वहा श्री जयचन्द्र विद्यालकार ने हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सन् १९५० मे कोटा (राजस्थान) मे सम्पन्न हुए ३८वे वार्षिक अधिवेशन की अध्यक्षता भी की थी। यहा यह तथ्य भी सर्वथा अवधारणीय है कि सम्मेलन के बम्बई मे हुए ३५वे अधिवेशन के अध्यक्ष महापडित राहुल साकृत्यायन के साहित्यिक जीवन के निर्माण मे भी आर्यसमाज का सराहनीय योगदान रहा है। राहुल का पहला हिन्दी लेख सन् १९१६ मे मेरठ के श्री रघुवीरशरण दुबलिश द्वारा सम्पादित "भास्कर" नामक मासिकपत्र मे प्रकाशित हुआ था। उन दिनो राहुल जी आगरा के "आर्य मुसाफिर विद्यालय" मे पढा करते थे और "केदारनाथ विद्यार्थी" के नाम से जाने जाते थे। इस सम्बन्ध मे राहुल जी ने अपनी आत्मकथा मे एक स्थल पर यह सही ही लिखा है-आर्यसमाज को मैंने गम्भीरता से ग्रहण किया था। वैराग्य-पन्थ की तरह "ग्रामम् गच्छन् तृणानि स्पृशति" के हल्के हृदय से नहीं स्वीकार किया था। इसलिए यथाशक्ति आर्यसामाजिक विचारो के अनुसार चलने की कोशिश करता था।

हिन्दी के प्रख्यात पत्रकार श्री बनारसीदास चतुर्वेदी ने जब "आर्यमित्र" मे सहकारी सम्पादक के रूप मे अपने पत्रकार-जीवन का प्रारम्भ किया था वहा प्रख्यात समीक्षक डा० सत्येन्द्र और कहानीकार रामचन्द्र श्रीवास्तव "चन्द्र" भी इस पत्र के सहकारी सम्पादक रहे थे। उक्त तीनो ही महानुभावो ने 'आर्यमित्र" में उन दिनो तक कार्य किया था जब वह आगरा से प्रकाशित होता था और श्री हरिशकर शर्मा उसका सम्पादन किया करते थे। यहा यह भी स्मरणीय है कि श्री शर्मा को उनकी काव्य-कृति "घात पात" पर "देव पुरस्कार" से सम्मानित किया गया था। सुप्रसिद्ध हिन्दी लेखक श्री लक्ष्मीधर वाजपेयी ने भी "सर्वानन्द" नाम से "आर्यमित्र" का कई वर्ष तक सम्पादन किया था। आर्यसमाज के व्यापक आन्दोलन से प्रभावित होकर अतीत काल मे हिन्दी के जिन अनेक महानुभावो ने हिन्दी-साहित्य मे अपना उल्लेखनीय स्थान बनाया उनमे सर्वश्री स्वामी सत्यदेव परिव्राजक, राधामोहन गोकुल जी, मूलचन्द अग्रवाल, रामजीलाल शर्मा, मातासेवक पाठक, द्वारकाप्रसाद सेवक और रामशकर त्रिपाठी आदि के अतिरिक्त प्रेमचन्द, सुदर्शन और चतुरसेन शास्त्री अग्रगण्य कहे जा सकते हैं। वैदिक वाड्मय और साहित्य की अन्य अनेक विधाओ की समृद्धि मे भी आर्यसमाज के विद्वानो का कम योगदान नहीं है। ऐसे महानुभावो मे सर्वश्री तुलसीराम स्वामी, श्रीपाद दामोदर सातवलेकर, राजाराम शास्त्री, विश्वबन्धु शास्त्री, भगवद्दत्त बी ए, गणपति शर्मा, नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ, भाई परमानन्द, पण्डित आर्यमुनि, आत्माराम अमृतसरी, रघुनन्दन शर्मा, आचार्य रामदेव, आचार्य अभयदेव, चन्द्रमणि विद्यालकार, बुद्धदेव विद्यालकार, भीमसेन विद्यालकार, यज्ञदत्त विद्यालकार, जयदेव विद्यालकार, धनराज विद्यालकार, विद्यानन्द विदेह, चन्द्रगुप्त वेदालकार और रामवतार विद्याभास्कर के नाम वरेण्य हैं। डॉ० प्राणनाथ विद्यालकार ने जहा अर्थशास्त्र और पुरातत्त्व के क्षेत्र मे अपनी अभूतपूर्व प्रतिभा का परिचय दिया था वहा साहित्य समीक्षा की दिशा मे डॉ० धीरेन्द्र वर्मा, डॉ० सूर्यकान्त शास्त्री और प्रो० विश्वेश्वर सिद्धातशिरोमणि की देन भी सर्वथा अनन्य हैं। साहित्य के जिन अन्य अनेक क्षेत्रो मे विगत वर्षो मे उल्लेखनीय व्यक्तियो ने अपनी विशिष्ट प्रतिभा प्रदर्शित की थी उनमे सर्वश्री महेशप्रसाद "मौलवी फाजिल", डॉ० रघुवीर, डॉ० मगलदेव शास्त्री, डॉ० बाबूराम सक्सेना, डॉ० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी, जगदीशचन्द माथुर, भवानीदास सन्यासी, अयोध्याप्रसाद बी ए० रिसर्च स्कालर, द्विजेन्द्रनाथ सिद्धान्तशिरोमणि, बशीधर विद्यालकार और वागीश्वर विद्यालकार आदि के नाम अगुलिगण्य हैं। पत्रकारिता के क्षेत्र में तो आर्यसमाज की प्रमुख सस्था गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय का स्थान सर्वोपरि है, जिसके अनेक स्नातको ने अपनी विशिष्ट प्रतिभा से इस क्षेत्र को सर्वथा नये आयाम प्रदान किये हैं। प्रो० इन्द्र विद्यावाचस्पति ने जहा "सत्यवादी", "सद्धर्म प्रचारक" और "अर्जुन" के सम्पादन के माध्यम से हिन्दी पत्रकारिता को उल्लेखनीय गौरव प्रदान किया वहा गुरुकुल के दूसरे प्रतिष्ठित स्नातक सर्वश्री सत्यदेव विद्यालकार, रामगोपाल विद्यालकार, कृष्णचन्द्र विद्यालकार, क्षितीश वेदालकार, डॉ० प्रशान्त वेदालकार, सत्यकाम विद्यालकार आदि की सेवाए भी सर्वथा स्पृहणीय हैं।

आर्यसमाज ने जहा साहित्य की अनेक विधाओ की समृद्धि मे अपना महत्त्वपूर्ण योगदान किया वहा काव्य के क्षेत्र में भी उसका स्थान सर्वथा विशिष्ट और चर्चनीय है। यह आर्यसमाज के सुधारवादी आदोलन का ही प्रताप था कि भारतेदु हरिश्चन्द्र ने भी अपने काव्य का विषय उन्हीं कुरीतियों को बनाया था जिन्हे आर्यसमाज देश में सर्वथा समाप्त करना चाहता था। आर्यसमाज के इस आदोलन ने राष्ट्रीय एव सामाजिक जागरण के दिनो जहा हिन्दी के अनेक प्रमुख लेखको को प्रभावित किया वहा कवि भी उसे पूर्णत आप्यायित हुए। हिन्दी साहित्य के आधुनिक युग का समग्र काव्य हमारी इस धारणा की सम्पुष्टि करता है। द्विवेदी युग के सर्वश्री मैथिलीशरण गुप्त, अयोध्यासिह उपाध्याय 'हरिऔध', गगाप्रसाद शुक्ल 'स्नेही', बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' तथा रामनरेश त्रिपाठी प्रभृति कवियो की रचनाए इसकी साक्षी हैं। यहा तक कि प्रख्यात युगान्तकारी कवि श्री सूर्यकान्त "निराला" ने "महर्षि दयानन्द और युगान्तर" नामक लेख लिखकर महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज के महत्त्व को स्वीकार किया था। आर्यसमाज के क्षेत्र मे जिन कवियो की सेवाए अविस्मरणीय रही हैं उनमे सर्वश्री नारायणप्रसाद बेताब' और नाथूराम शकर शर्मा के नाम ऐसे हैं, जिन्होने हिन्दी साहित्य के इतिहास में अपनी एक विशिष्ट छाप छोडी है। श्री 'बेताब' जहां उत्कृष्ट नाटककार तथा अभिनेता थे वहा काव्य-रचना के क्षेत्र में भी उनकी विशिष्ट देन थीं। कदाचित् हमारे बहुत से पाठको को यह विदित न होगा कि आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्सगो में गाए जानेवाले-

अजब हैरान हू भगवन्, तुम्हे क्योंकर रिझाऊ मैं,

कोई वस्तु नहीं ऐसी, जिसे सेवा में लाऊ मैं,

गीत के लेखक श्री बेताब ही थे। उन्होंने इस गीत के द्वारा जनता मे जहा निराकारोपासना की भावनाएं प्रचारित की वहां इसमे तर्क शिष्ट व्यंग्य की झलक भी दृष्टिगत होती है। "शकर" जी ने अपनी रचनाओं में आर्यसमाज की विभिन्न प्रवृत्तियों का अच्छा विश्लेषण किया है।

आर्यसमाज के इस उज्ज्वल अतीत की पावन परम्परा के अमर आलोक को देखकर हम यह निर्विवाद रूप से कह सकते हैं कि जहा उसने सर्वथा ऐतिहासिक योगदान दिया था वहा उसकी सवाहिका एव प्रेरणा-शक्ति को हिन्दी की अभिवृद्धि की दिशा में भी कम महत्त्व की नहीं कहा जा सकता। जब-जब भी हिन्दी के अस्तित्व को खतरा हुआ तब-तब ही आर्यसमाज तथा उसके अनुयायियो ने देश को दिशा देकर उसके महत्त्व को प्रतिष्ठापित करने मे अपने कर्त्तव्य का पालन किया। इसका ज्वलन्त प्रमाण सन् १९५७ मे आर्यसमाज द्वारा पजाब मे चलाया गया **"हिन्दी-सत्याग्रह"** है। अब भी हिन्दी का अस्तित्व खतरे में है। आर्यसमाज को इस दिशा मे पहल करके देश को दिशादान देना चाहिए।

—क्षेमचन्द्र "सुमन"

आर्यसमाज के उत्सवों की सूची

१	आर्यसमाज कोथकला, जिला हिसार	९-१२ अक्तूबर ०२
२	आर्यसमाज लीखी (निकट हसनपुर), जिला फरीदाबाद	११-१३ अक्तूबर ०२
३	गुरुकुल आर्यनगर जिला हिसार	१२-१३ अक्तूबर ०२
४	आर्यसमाज विकास नगर महेश्वरी जिला गुड़गाव	१९-२० अक्तूबर ०२
५	आर्यसमाज माडल कालोनी यमुनानगर	१८-२० अक्तूबर ०२
६	आर्यसमाज बेगा जिला सोनीपत	१८-२० अक्तूबर ०२
७	आर्यसमाज सालवन जिला करनाल	१८-२० अक्तूबर ०२
८	आर्यसमाज बहल जिला भिवानी	१८-२१ अक्तूबर ०२
९	आर्यसमाज झज्जर रोड बहादुरगढ (झज्जर)	१९-२० अक्तूबर ०२
१०	आर्यसमाज बीगोपुर डा० धोलेडा (महेन्द्रगढ़)	१९-२० अक्तूबर ०२
११	आर्यसमाज गगसीना जिला करनाल	१६-१८ अक्तूबर ०२
१२	आर्यसमाज कालका जिला पंचकूला	२३-२७ अक्तूबर ०२
१३	आर्यसमाज शेखुपुरा खालसा जिला करनाल	२५-२७ अक्तूबर ०२
१४	गुरुकुल कुरुक्षेत्र	२५-२७ अक्तूबर ०२
१५	कन्या गुरुकुल पचगाव जिला भिवानी	२६-२७ अक्तूबर ०२
१६	आर्यसमाज मोखरा जिला रोहतक	३० अक्तू० से १ नव० ०२
१७	आर्यसमाज कासण्डा जिला सोनीपत	२ से ४ नवम्बर ०२
१८	आर्यसमाज खरड (पजाब)	१५-१७ नवम्बर ०२
१९	आर्यसमाज जवाहरनगर पलवल कैंप, जिला फरीदाबाद	२२-२४ नवम्बर ०२

—रामधारी शास्त्री, सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता

आर्य-संसार

पत्नी प्रतिकूल क्यों है ?

यह देखकर बडा आश्चर्य होता है कि आर्यसमाज के अनेक अधिकारियो के बीवी (पत्नी), बच्चे आर्यसमाज मे नहीं आते बल्कि कहीं और पूजास्थलो पर जाते हैं। मैंने चार-पाच प्रधान/मन्त्रियो से पूछा कि आपकी धर्मपत्नी आर्यसमाज में क्यो नहीं आती ? एक ने कहा, मैं उसे जबरदस्ती खींचकर तो ला नहीं सकता। मैंने उसे कितनी बार कहा है परन्तु नही आती, वह पडोस की महिलाओ के साथ राममन्दिर मे जाती है। दूसरे ने कहा, क्या करू, बहुत समझता हू फिर भी नहीं आती, दुर्गा के मन्दिर मे जाती है। तीसरे ने बताया कि गुरुद्वारे मे जाती है, इत्थे आने को तैयार नहीं। चौथे ने स्पष्ट कहा, वो तो आर्यसमाज के नाम से ही चिढती है। जब मैं ज्यादा जोर देकर पूछता हू तो कुछ कह देते हैं कि आपका कहना मान जाये तो आप समझाकर देखलो।

मैं दो तीन अधिकारियो के घर भोजन के निमित्त गया तो उनकी श्रीमती से पूछा, आप आर्यसमाज के सत्सग मे क्यो नहीं आती ? आर्यसमाज से कुछ नफरत या नाराजगी है ? उन्होने प्रेम से कहा, नहीं ऐसा कुछ नहीं है। फिर न आने का क्या कारण है ? आपको गर्व होना चाहिए कि आपके पतिदेव आर्यसमाज मे प्रधान या मन्त्री हैं। आपको आर्यसमाज मे आना चाहिये। श्रीमती ने यह कहकर पीछा छुडाया कि मे सोचकर बताऊगी।

मैं अनेक वर्षो से इस खोज मे लगा हुआ हू कि क्या कारण है जो पत्नी पति की अनुगामी नहीं है अर्थात् साथ मिलकर नहीं चलती या कहना नहीं मानती। दीर्घ अनुभव से पता चला कि पति की उपेक्षावृत्ति (लापरवाही) और त्रुटिया इसका कारण है। निम्नलिखित कुछ तथ्यो पर ध्यान दीजिये-

(१) पति पत्नी की आवश्यकता और इच्छा की ओर ध्यान नही देता है या यू कहो कि पूर्ति नहीं करता है।

(२) पत्नी का उचित सम्मान नहीं करता है बल्कि सबके सामने डाटकर अपमान करता रहता है।

(३) पत्नी की गलती पर उसे गालिया देता है, दुर्व्यवहार करता है प्यार से समझाने की बजाय गुस्से मे धमकाता है, पीटता है।

(४) उसके किये हुये अच्छे काम की प्रशसा नहीं करता है बल्कि नुक्स (दोष) छाटता रहता है।

(५) पत्नी से सत्य को छुपाकर झूठ बोलता है। उसके सामने धूम्रपान या मद्यपान करता है। अन्य स्त्री से प्रेम करता है इत्यादि। इनके अतिरिक्त और भी कारण हो सकते हैं।

यदि कोई सज्जन कहे कि उपर्युक्त कारणो मे मेरे साथ कोई कारण नहीं घटता है फिर भी अनुकूल नहीं है। तब आपको थोडा सयम से काम लेना होगा। घर मे रहते हुए पत्नी से केवल आवश्यकतानुसार बात करो परन्तु उसको स्पर्श मत करो। कम से कम पन्द्रह बीस दिन जरा दूर रहकर देखो, इसका क्या प्रभाव होता है। इतने पर आपकी पत्नी कुछ परवाह नहीं करती तब एक सप्ताह के लिए घर मे भोजन करना बद करदो। दूध फल बिस्कुट खाकर रहो। इतना करने पर लज्जावती (शर्मदार) पत्नी अवश्य बदलेगी। इतने पर भी नहीं समझती और आपकी उपेक्षा करके मनमानी करती है तो एक ही तरीका है या तो उसके दास बन जाओ या उसके साथ रहना छोडदो। जो पत्नी अपने पति के साथ सन्मार्ग पर चलने को तैयार नहीं है वह तो कुछ भी बीज बो सकती है। उसका परिणाम पति को भी भोगना पडेगा।

—लेखक देवराज आर्यमित्र, आर्यसमाज कृष्णनगर, दिल्ली-५१

बृहद् वृष्टि यज्ञ सम्पन्न

आर्यसमाज खेडी आसरा जिला झज्जर ने १८ जुलाई २००२ से १८ सितम्बर तक दो महीने यज्ञ का अनुष्ठान किया। परिणामस्वरूप अनेक बार वर्षा हुई। बीस किलोमीटर क्षेत्र मे विशेष वर्षा का प्रभाव देखा गया। इसमे पाच मन घृत देसी (जो माताए दही मन्थन करके घरो मे तैयार करती हैं) प्रयोग किया गया। इसके अतिरिक्त पाच मन सामग्री और अन्य विशेष गुगुल आदि पदार्थ डाले गये। यज्ञ मे विशेष सहयोग देनेवाले एक महात्मा ने यज्ञ की सफलता देखकर एक पृथक् विशेष यज्ञशाला बनाने का प्रस्ताव रखा जिसका सभी यज्ञ-प्रेमियों ने सहर्ष अनुमोदन किया।

यज्ञ की सफलता पर गुरुकुल झज्जर ने एक क्विटल सामग्री आर्यसमाज के लिए भेट की। हुमायूपुर निवासी श्री मेहरसिह आर्य ने १००० रुपये यज्ञ के लिए प्रदान किये। आर्यसमाज खेडी आसरा सभी दानी महानुभावो का हृदय से आभारी है और बहुत-बहुत धन्यवाद करता है।—मन्त्री आर्यसमाज खेडीआसरा

दिव्य वेदकथा का समापन

आर्यसमाज मन्दिर हासी मे सुचारुरूप से १७ से २२ सितम्बर तक एक विशेष दिव्य वेदकथा का आयोजन किया गया जिसमे स्वामी माधवानन्द जी सरस्वती के ब्रह्मत्व मे बडे हर्षोल्लासपूर्वक प्रात एक विशाल यज्ञ के साथ अनेक यजमान दम्पतियो को यज्ञोपवीत धारण करा पुरोहित रामकिशोर शास्त्री ने परोपकारमय यज्ञ जैसा पुनीत कार्य सम्पन्न कराया। तदुपरान्त उच्चकोटि के प्रसिद्ध वैदिक भजनोपदेशक श्रीमान् जबरसिह जी खारी ने प्रतिदिन दिव्य वेदकथा का सुमधुर भजनो द्वारा प्रारम्भ कराते हुए उन्होने कहा कि ईश्वरभक्ति हमारे जीवन का प्रथम अग होना चाहिए तथा यह भी कहा कि आर्यसमाज के लोगो को वैदिक सिद्धान्तो हेतु कभी किसी कीमत पर समझौता नहीं करना चाहिए। **-मन्त्री सतीशकुमार आर्य**

शोक समाचार

आर्यसमाज बस्ती हरफूलसिह, दिल्ली के प्रधान श्री मुन्नालाल शर्मा का देहावसान २० सितम्बर की रात्रि को हृदयगति रुक जाने से होगया जिनका अन्त्येष्टि सस्कार २१-९-२००२ का निगम बोध घाट पर वैदिकरीति से सम्पन्न हुआ। उन्होने आर्यसमाज की जो सेवा की है, वह स्वर्णिम अक्षरो मे अकित होगी। उनके निधन से आर्यसमाज को जो क्षति हुई है, उसकी पूर्ति होना निकट भविष्य मे सम्भव नहीं है। २२-९-२००२ को सत्सग के पश्चात् श्रद्धाजलि अर्पित की गई। **-तिलकराज आर्य, मन्त्री**

यजुर्वेद पारायण महायज्ञ सम्पन्न

आर्यसमाज खिचडीपुर, कालोनी, दिल्ली के तत्त्वावधान मे १९ से २२ सितम्बर २००२ तक यजुर्वेद पारायण महायज्ञ का आयोजन वैदिकविद्वान् आर्य गुरुकुल नोएडा के युवा प्राचार्य डॉ० जयेन्द्रकुमार जी के ब्रह्मत्व मे सम्पन्न हुआ। इस महायज्ञ मे वेदो की मार्मिक व्यावहारिक व्याख्या कीगई एव प० ज्योतिप्रसाद शर्मा के मधुर सगीत द्वारा आर्यजनो को लाभान्वित किया गया।

तीन समाजसेवी आर्य संन्यासियों का सम्मान

परममित्र मानव निर्माण न्यास के अध्यक्ष एव गुरुकुल आश्रम आमसेना के प्रधान चौ० मित्रसेन जी आर्य के पूज्य पिता स्व० चौ० शीशराम की पुण्यस्मृति मे गुरुकुल आश्रम आमसेना के वार्षिक महोत्सव पर प्रतिवर्ष कुछ पुरस्कार नैष्ठिक ब्रह्मचारियो, वानप्रस्थियो, सन्यासियो को देने की योजना चल रही है। इस वर्ष इस कार्यक्रम के अन्तर्गत नि स्वार्थ और त्यागपूर्वक समाजसेवा मे समर्पित होकर लगे तीन आर्य वानप्रस्थी एव सन्यासियो के सम्मान करने की योजना है। सम्मान पानेवाले की आयु ५० वर्ष से अधिक हो वह चाहे सारे देश मे प्रसिद्ध न हो परन्तु अपने क्षेत्र मे एकनिष्ठभाव से कार्य कर रहा हो। अत जिन आर्यजनो की दृष्टि मे ऐसे कर्मठ त्यागी तपस्वी सन्यासी या वानप्रस्थी हैं उनका विवरण शीघ्र आचार्य गुरुकुल आश्रम आमसेना के पते पर भिजवाने का कष्ट करे। नाम भेजने की अन्तिम तिथि ३० नवम्बर तक है। इसके पीछे प्राप्त नामो पर कोई विचार नही हो सकेगा। प्राप्त नामो पर निश्चय और निर्णय करने का अधिकार गुरुकुल आश्रम आमसेना न्यास को होगा। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रत्येक सन्यासी को १५,०००-०० हजार रुपये नकद शाल श्रीफल और अभिनन्दन पत्र प्रदान किया जायेगा।

निवेदक स्वामी धर्मानन्द सरस्वती, सचालक, गुरुकुल आश्रम आमसेना खरियार रोड, नवापारा (उडीसा) ७६६१०९

वार्षिक महोत्सव

सभी सज्जनो को सूचित किया जाता है कि आपके अपने प्रिय गुरुकुल भैयापुर लाढौत जि० रोहतक का १२वा वार्षिक महोत्सव १३-१०-२००२ को हर्षोल्लास के साथ मनाया जारहा है। यह उत्सव प्रतिवर्ष अक्टूबर के दूसरे रविवार को मनाया जाना निश्चित हुआ है। कृपया इस दिन को सभी ध्यान मे रखे।

इस अवसर पर आर्यजगत् के त्यागी, तपस्वी, धुरन्धर विद्वान् एव प्रसिद्ध भजनोपदेशक तथा प्रख्यात समाजसेवी व्यक्ति पधार रहे हैं। कृपया अधिकाधिक सख्या मे पहुचे।

कार्यक्रम

सन्ध्या, हवन, उपदेश	प्रात ८-०० से १० बजे तक
भोजन	१०-०० से १२ बजे तक
व्याख्यान, भजन, उपदेश	१०-३० से ३ बजे तक

निवेदक प्रबन्धक समिति

आर्यसमाज सेक्टर-१६ फरीदाबाद का वार्षिक उत्सव सम्पन्न

दिनाक १५-९-२००२ रविवार से २२-९-२००२ रविवार तक पूरे ८ दिन तक धूमधाम से चल रहा उत्सव कार्यक्रम २२-९-२००२ को विशाल जनसभा के आयोजन के साथ दोपहर १ ३० बजे सम्पन्न होगया। आर्यसमाज मन्दिर के चारो ओर का परिसर सजावट और जगमगाहट से आकर्षण का केन्द्र बना रहा। रविवार २२-९-२००२ का कार्यक्रम ऐतिहासिक बन गया जब अमरशहीद भगत फूलसिह जी की जीवनगाथा और बलिदानी जीवन पर वक्ताओ ने रोशनी डाली। फिर अमर शहीद भगत जी का विशाल चित्र सभागार मे स्वामी श्रद्धानन्द तथा अन्य शहीदो के साथ लगाया गया। इस कार्यक्रम मे प्रो० शेरसिह, बहन प्रभातशोभा, विधायक राजेन्द्रसिह बीसला, प्राचार्य आर्यवीर भल्ला, श्रीमती नीलम गाधी प्राचार्य डी ए वी सेक्टर-३७, श्री केदारसिह उपमन्त्री श्री हरिश्चन्द्र उपमन्त्री आर्यप्रतिनिधिसभा हरयाणा, पडित सुरेशचन्द्र शास्त्री, श्री अमनसिह शास्त्री एव श्री प्रेमकुमार मित्तल (एडवोकेट), पडित बेगराज आर्य (भजनोपदेशक), आचार्य सत्यानन्द वेदवागीश ने भाग लिया तथा विशाल जनसभा को सम्बोधित किया, इसके अतिरिक्त शिवराम आर्य तथा मेवला महाराजपुर के विधायक श्री कृष्णपाल गुर्जर ने भाग लिया और अमरशहीद को भावभानी श्रद्धाजलि दी। भगत मगतूराम ने गुरुकुल के विद्यार्थियो सहित शोभा बढाई।

उत्सव के मुख्य आकर्षण–(१) २२ सितम्बर रविवार समापन के दिन ५१ हवनकुण्डो द्वारा आयोजित विराट यज्ञ। (२) अमरशहीद महात्मा फूलसिह का चित्र सत्सग सभागार मे लगवाया गया। (३) स्वतन्त्रता सेनानी कवर फतेहसिह आर्यनेता, प० देवीराम तिगाव तथा मास्टर हीरालाल (मिसा) को विशेष रूप से सम्मानित किया गया। आर्यसमाज सेक्टर-१९ के ५१ कार्यकर्त्ताओ को भी सम्मानित किया गया। (४) फरीदाबाद के विभिन्न क्षेत्रो मे महाशय बेगराज एव आचार्य सत्यानन्द वेदवागीश का प्रभावशाली कार्यक्रम रखा गया, जिसका आयोजन निम्न प्रकार हुआ।

१५ ९ २००२ को से० १९ मास्टर जगदीशप्रसाद गुप्ता, १५ ९ २००२ को से० १७ श्री दिव्य हसीजा, १६ ९ २००२ को से० १६ए श्री रमेश गिरधर, १७ ९ २००२ को न्यू अहीरवाडा श्री अशोककुमार जी गर्ग, १८ ९ २००२ को शास्त्री कालोनी श्री हरीराज त्यागी, १९ ९ २००२ को से० १८ए पार्क श्री महेशचन्द्र गुप्ता, २० ९ २००२ को हनुमाननगर श्री इन्द्रपाल जी, २१ ९ २००२ को से० १९ श्री जे पी मल्होत्रा।

इन सभी कार्यक्रमो मे आशातीत हाजरी रही, हजारो लोगो ने धर्मलाभ उठाया। कार्यक्रम के अन्त मे श्री लक्ष्मीचन्द प्रधान आर्यसमाज से० १९ ने सभी अतिथियो आगन्तुको गणमान्य लोगो का धन्यवाद किया।

—अशोककुमार आर्य, मन्त्री

वेदप्रचार कार्यक्रम सम्पन्न

आर्यसमाज अटावला जिला पानीपत में दिनांक १२ से २० सितम्बर २००२ तक सभा के भजनोपदेशक श्री रामकुमार आर्य द्वारा वेदप्रचार कार्यक्रम किया गया। उन्होने शराब, पाखण्ड, अधविश्वास, भूतप्रेत आदि के विरुद्ध वेदप्रचार किया तथा लोगो को अन्धविश्वास से दूर रहने की प्रेरणा दी। उनके विचारो से प्रभावित होकर कई लोगो ने शराब, मास, निन्दा करना आदि बुराइया त्याग दी तथा यज्ञोपवीत धारण किए। इस अवसर पर सभा को २५५१/- रुपये दान दिया गया। इस कार्यक्रम मे आर्यसमाज के प्रधान श्री जसवन्तसिह, धर्मवीर, रमेश, दिनेश आदि का बहुत सहयोग रहा।

आर्यजगत के विद्वान् नेता पं० जगदेवसिंह जयन्ती समारोह

स्थान : दयानन्दमठ, रोहतक

आपको सूचित किया जाता है कि १५ अक्टूबर २००२ मगलवार दशहरा को आर्यजगत् के विख्यात विद्वान नेता प० जगदेवसिह सिद्धान्ती का १०३वीं जयन्ती के अवसर पर एक समारोह का आयोजन किया जारहा है। अत अधिक से अधिक सख्या मे पधारकर समारोह की शोभा बढावे।

कार्यक्रम

१	बृहद्यज्ञ	–	प्रात ८ से ९ बजे
२	आर्यसगीत	–	प्रात ९ से ९-३० बजे तक
३	भजन/कविता प्रतियोगिता	–	९-३० से ११-०० बजे तक

प्रतियोगी अपना नाम १० अक्टूबर तक सभा-कार्यालय मे भेज देवे।

—आचार्य यशपाल, सभामन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ०१२६२–७६८७४, ७७८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ०१२६२–७७७२२) से प्रकाशित।
पत्र मे प्रकाशित लेख सामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३
पंजीकरणसंख्या टैक/85-2/2000
☎ ०१२६२-७७७२२
सृष्टिसवत् १, ९६, ०८, ५३, १०३
विक्रमसंवत् २०५९
दयानन्दजन्माब्द १७९

प्रधानसम्पादक : यशपाल आचार्य, सभामन्त्री
सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री

वर्ष २६ अंक ४४ १४ अक्तूबर, २००२ वार्षिक शुल्क ८०) आजीवन शुल्क ८००) विदेश में २० डॉलर एक प्रति १.७०

वैदिक आर्ष शिक्षा पद्धति के आदि प्रवक्ता के जन्मदिवस पर विशेष-

सर्वविध क्रान्ति के प्रवर्त्तक : "ब्रह्मर्षि स्वामी विरजानन्द सरस्वती"

सुखदेव शास्त्री, महोपदेशक, दयानन्दमठ, रोहतक

पजाब की वीरप्रसविनी धरती अनेक देशभक्तो व साधुसन्तो की जन्मदात्री रही है। इसी भूमि पर जन्म लिया था महान् राष्ट्रभक्त स्वामी श्रद्धानन्द, ला० लाजपतराय, भाई परमानन्द, वीर भगतसिह, सुखदेव, स्वामी स्वतन्त्रानन्द, गुरु तेगबहादुर तथा गुरु गोविन्दसिह तथा अन्य अनेक देशभक्तो ने इस वीरभूमि को अपने राष्ट्रभक्ति के कार्यो से इतिहास मे प्रसिद्ध किया था।

जन्म–इसी पजाब की वीरभूमि मे ब्रह्मर्षि स्वामी विरजानन्द का जन्म महर्षि दयानन्द ने अपने स्वलिखित चरित मे १७७९ लिखा है, अर्थात् १८३५ वा १८३६ विक्रम सवत् मे उन्होने एक ब्राह्मण परिवार मे पुनीत जन्म लेकर उसे आलोकित किया था। इसीप्रकार दण्डी जी के तत्कालीन शिष्य प० युगुलकिशोर का कथन था कि वर्त्तमान जालन्धर जिला के कर्त्तारपुर उपनगर के समीप गगापुर ग्राम में भारद्वाज गोत्रिय सारस्वत ब्राह्मण श्री नारायणदत्त के घर दण्डी जी का जन्म हुआ था। महर्षि दयानन्द व युगुलकिशोर दोनो उस समय दण्डी जी के शिष्य रहे थे। प० नारायणदत्त के यहा विरजानन्द के अतिरिक्त एक पुत्र और था, जो विरजानन्द से आयु में बडा था।

ईश्वर की कर्मफल व्यवस्था भी बडी विचित्र है कि जिस बालक के द्वारा भारत तथा ससार के सुधार का क्रान्तिकारी कार्य सम्पन्न होना था, उसे अल्प आयु मे ही नेत्रहीन होना पडा। वास्तव में ऐसा प्रतीत होता है कि परमेश्वर को भी यह अभीष्ट था कि इस महान् सुधारक को किसी प्रकार का भी बाह्य पदार्थों का आकर्षण न रहे, इस कारण से बाह्य पदार्थो मे सबसे अधिक फसानेवाले रूप ज्ञान के साधन आखो से ही रहित कर दिया। इन्हे पाच वर्ष की न्यून आयु मे ही शीतला के रोग से नेत्रहीन होना पडा।

विधाता का कैसा विचित्र विधान है कि दण्डी की आखो की अभाव की पूर्ति उसे अत्यन्त तीव्र मेधाबुद्धि प्रदान कर उसकी आखो की क्षतिपूर्ति करदी।

अति प्राचीनकाल से ही ब्राह्मण परिवारो मे यज्ञोपवीत एव वेदारम्भ सस्कार का प्रचलन था। यज्ञोपवीत तथा वेदारम्भ के समय बालक को गायत्री मन्त्र का उपदेश भी किया जाता था। आठ वर्ष की आयु मे उसके पिता नारायणदत्त ने उसे पढाना आरम्भ किया था। उसे सन्ध्या, गायत्री आदि शब्दावली, धातुरूपावली व हितोपदेश की कथाए भी याद कराई गई थीं।

माता-पिता की मृत्यु–विपत्तिया कभी अकेली नहीं आती, एक के बाद दूसरी आ खडी होती है। अन्धा होजाने का दु ख क्या कुछ कम था, आख गई तो ससार गया। अब अल्पायु मे ही माता-पिता का सहारा भी छीन लिया। विरजानन्द के दिल पर क्या बीती होगी ? आज कौन बता सकता है ? जिस बालक की आखे व माता-पिता चले जाए तो उस बालक की दयनीय दशा का अनुमान तो सरलता से लगाया जा सकता है। इस आश्रय के छिन जाने से उस अन्धे बालक को अवश्य असह्य दु ख हुआ होगा। आखो के आसू तो पहले ही समाप्त होचुके थे, अब सामने गहरा अन्धेरा था। बालक विरजानन्द की यह दशा घाव मे "क्षते क्षारमिव" नमक छिडकने के समान थी। जिसे लागे वही जाने, कौन जाने पीर पराई।

गृहत्याग–अब एक भाई का सहारा था, उसे भी विरजानन्द ने स्वय दु खी होकर छोड दिया था क्योंकि उसके बडे भाई ने लालन-पालन के बजाय विरजानन्द को ताडना आरम्भ कर दिया था। विरजानन्द की भाभी भी अपने पति से कम न थी, उसने भी विरजानन्द को अन्धा कहकर धमकाना शुरु कर दिया था। हम कह नहीं सकते कि विरजानन्द के भाई के व्यवहार को देखकर उसकी पत्नी अपने अन्धे देवर को धमकाती थी अथवा वह अपनी पत्नी की बहकाई मे आकर अपने अन्धे अपाहिज छोटे भाई को सताता था। जो भी हो यह भी अच्छा ही हुआ भाई-भाभी के अपमान भरे व्यवहार से तग होकर १२ वर्ष के अन्धे बालक विरजानन्द ने अपने घर से सदा के लिए बाहर कदम रखा।

प्रिय पाठक ! आप तो विरजानन्द के इस प्रकार घर छोडने से उसके भाई-भाभी को दोषी बताते होगे ? किन्तु हम तो उस भाई-भाभी का धन्यवाद ही करते हैं, यदि वे उससे बुरा बर्ताव न करते तो भविष्य मे भारत मे जो अनेक सुधार आरम्भ हुए और भारत की ऋषि-मुनियो की गाथा को जानने और अपनाने का शुभावसर कैसे मिलता ?

यदि विरजानन्द घर से न निकलते तो दयानन्द कैसे मथुरा पहुचते ?

वह दयानन्द आर्ष ज्ञान की ज्योति कैसे जलाता ? हम तो भाई-भाभी के कृतज्ञ हैं।

ऋषिकेश पहुचे–१२ वर्ष का अन्धा बालक घर से निकल पडा। अन्धे की लाठी मार्गदर्शक भगवान् होता है। यजुर्वेद के पन्द्रहवे अध्याय के मन्त्र सख्या २७ मे ठीक ही लिखा है "**जनस्य गोपाऽजनिष्ट**" अपने जीवन मे विकास करनेवाले के मार्गदर्शक परमात्मा ही होते हैं। वे गोपा-रक्षक हैं। मार्ग मे अनेक कष्टो को सहन करता-करता भूखा-प्यासा तीन वर्षो मे ऋषिकेश पहुचा। यही किसी कुटिया मे रहकर किसी अन्नसत्र मे भोजनकर साधना मे लीन रहने लगे। प्रात साय गायत्री का जाप करने लगे। प्रात कण्ठ तक पानी मे खडे रहकर गायत्री का जाप करते रहे थे।

काशी चले जाना–काशी मे रहकर विरजानन्द ने विद्याधर से व्याकरण का अध्ययन किया। उसके पश्चात् "गया" चले गए। यहा कुछ समय रहकर कलकत्ता चले गए। कलकत्ता से एटा जिले मे स्थित "सोरो" आगए। सोरो को त्यागकर वहा से "मथुरा" आगए।

मथुरावास–मथुरा मे आकर एक पाठशाला खोली। मथुरा के होली द्वार से जो सडक विश्रान्त घाट को जाती है, उसके पश्चिम मे यह पाठशाला थी। अब यह पाठशाला उत्तरप्रदेश आर्यप्रतिनिधिसभा की सम्पत्ति है। यहा पर सुव्यवस्थित प्रबन्ध किया गया। उन्होने अपनी पाठशाला मे आर्षग्रन्थो के पढाने का पूरा निश्चय कर लिया। अब दण्डी जी की पाठशाला मे अनार्ष ग्रन्थो का पूर्ण बहिष्कार होगया था। वे भट्टोजी दीक्षित वैयाकरण सिद्धान्त कौमुदी पर अपने शिष्यो से जूते लगवाते थे। अनार्ष ग्रन्थो के स्थान पर अष्टाध्यायी, पतञ्जलि का महाभाष्य

पढाए जाने लगे। दण्डी जी की ऋषिकृत ग्रन्थो पर कितनी आस्था थी, इसको उनका रचित एक श्लोक प्रकट करता है।

"अष्टाध्यायीमहाभाष्ये द्वे व्याकरणपुस्तके। अतोऽन्यत्पुस्तक यत्तु तत्सर्वं धूर्त्तचेष्टितम्।।

इस प्रकार पाणिनि-प्रणीत अष्टाध्यायी तथा उस पर महामुनि पतञ्जलि का रचा महाभाष्य ये दो ही व्याकरण के प्रामाणिक आर्षग्रन्थ हैं, इनके अतिरिक्त अन्य ग्रन्थ धूर्तों की रचना हैं।

इस प्रकार देखा जाय तो, ब्रह्मर्षि विरजानन्द सरस्वती ही आर्षपाठविधि की आधारशिला रखनेवाले थे। इस आर्षपाठविधि की नींव पक्की करनेवाले, इसके ऊपर ऋषिकृत ग्रन्थो के भव्य भवन के निर्माता महर्षि दयानन्द हैं। इसे आप तृतीय समुल्लास मे सत्यार्थप्रकाश में "पठनपाठनविधि" मे पढ सकते हैं। यहा लिखने मे लेख लम्बा हो जाएगा।

एक महत्त्वपूर्ण क्रान्तिकारी घटना–गुरु विरजानन्द जी की अध्यक्षता मे स्वतन्त्रता सग्राम की सभा सन् १८५५ तथा १९१२ विक्रमी मे मथुरा मे हुई थी। उसमे अपना ओजपूर्ण सम्बोधन करते हुए विरजानन्द जी ने कहा था-"हम भारतीय स्वतन्त्रता चाहते है। स्वतन्त्रता स्वर्ग है, परतन्त्रता नरक है। अंग्रेज फिरगियो ने हमारे देश को कुटिलता से लूटकर शोषण किया है। इस सभा मे मुख्यरूप से तत्कालीन नेता उपस्थित थे, जिनमे १ नाना साहब बिठूर, तात्या टोपे मध्यप्रदेश, लक्ष्मीबाई झासी की रानी, कुवरसिह बिहार, मौलवी अजीमुल्ला खा शामिल थे। (रामदत्त भाट की पोथी से उद्धृत)।

जब इस प्रकार स्वामी विरजानन्द तत्कालीन राजे महाराजे स्वतन्त्रता सेनानियो को शिक्षित करने में लगे थे, तब उनकी चर्चा राजस्थान मध्यप्रदेश आदि मे सर्वत्र फैल रही थी। शिक्षा मे आर्ष शिक्षा सर्वोपरि मान्यता प्राप्त थी।

ऐसे समय मे १४ नवम्बर १८६० को स्वामी पूर्णानन्द जी से आदेश पाकर महर्षि दयानन्द मथुरा पहुचे थे। महर्षि दयानन्द वैसे तो १८४६ मे सन्यास लेकर सारे देश मे घूमते रहे। देश की परिस्थितियो को भी उन्होने निकट से देखा था। महर्षि दयानन्द ने भी १८५७ की आजादी मे भाग लिया था। दोनो की यह सम्मति थी। महर्षि दयानन्द ने अपने गुरु विरजानन्द से आर्ष शिक्षा मे पूर्णरूप से महाविद्वान् होकर ३० मई १८६३ को वेदप्रचार की दक्षिणा देकर, गुरुजी से दीक्षा लेकर वेदप्रचार के लिए अपना जीवन समर्पित करते हुए विषपान करके ३० अक्तूबर १८८३ को अपना बलिदान राष्ट्र के लिए कर दिया।

ऐसे महान् क्रान्तिकारी गुरुवर विरजानन्द जी तथा उनके शिष्य महर्षि दयानन्द को सादर नमन। ब्रह्मर्षि विरजानन्द का १७ अक्तूबर को जन्मदिवस है और महर्षि दयानन्द का ३० अक्तूबर को महाबलिदान है।

उन दोनों नेताओ को हमारा सादर स्मरण।

क्या आप सुखी रहना चाहते हो ?

यदि आप सुखी रहना चाहते हो निम्न प्रश्नो के उत्तर जाचते हुये आत्मनिरीक्षण करो। आपका आचरण युक्त है तो नि सन्देह आप स्वस्ति के पथ पर चल रहे हो और अवश्य कल्याण होगा।

क्या आप प्रतिदिन :-

१ प्रात काल सूर्य उदय होने से एक घण्टा पूर्व नींद त्यागकर उठ जाते हो ?
२ प्रात उठकर ईश्वर का स्मरण करते हुये धन्यवाद करते हो।
३ प्रात उठकर मुह धोते हो और माता-पिता गुरुजनो से नमस्ते करके आशीर्वाद प्राप्त करते हो ?
४ भ्रमण करने जाते हो या व्यायाम करते हो ?
५ दात साफ करते हो, स्नान करते हो ?
६ प्रात सत्सग मे जाते हो ? आर्षग्रन्थो का स्वाध्याय करते हो ?
७ अपना काम (कर्त्तव्य) परिश्रम और ईमानदारी से करते हो ?
८ धूम्रपान/मद्यपान आदि कोई नशा तो नहीं करते हो ?
९ मीट, मछली, अण्डा से बचकर शुद्ध सात्विक भोजन करते हो ?
१० नाइलोन के चमकदार वस्त्रो का प्रयोग तो नहीं करते ?
११ घर मे या बाहर किसी से ईर्ष्या द्वेष तो नहीं करते ?
१२ रात को दस बजे के बाद देर तक टी वी या फिल्म तो नहीं देखते ?

इनके अतिरिक्त और भी अनेक बाते हैं जैसे ब्रह्मचर्य का पालन करना, यथायोग्य व्यवहार करना आदि। जीवन को सफल बनाने के लिये उपर्युक्त बाते सक्षिप्त मे लिखी हैं। इनके अनुसार अपनी दिनचर्या बनाकर चलोगे तो अवश्य लाभ होगा और सुखमय रहोगे। **–देवराज आर्यमित्र, आर्यसमाज, कृष्णनगर, दिल्ली-५१**

वैदिक-स्वाध्याय

हे प्यारे

इन्द्रो अंग महद् भयम् अभीषत् अप चुच्यवत्
स हि स्थिरो विचर्षणिः।। ऋ० २।४१।१०।।

शब्दार्थ–(अंग) हे प्यारे ! **(इन्द्रः)** इन्द्र परमेश्वर तो **(अभीषत्)** सामने आये हुए **(महद् भयं)** बडे भय को भी ! **(अप चुच्यवत्)** विनष्ट कर देता है। **(स हि)**व ही निश्चयपूर्वक **(स्थिरः)** स्थिर है, अचल है, शाश्वत है और **(विचर्षणिः)** सब जगत् को ठीक देखनेवाला है।

विनय–हे प्यारे ! तू क्यो घबराता है ? तेरे सामने जो भय उपस्थित है उससे बहुत बडे भय और बहुत विपत्तियां मनुष्य पर आ सकती हैं और आती हैं। परन्तु हमारे परमेश्वर उन सबको क्षण में टाल सकते हैं और टाल देते हैं। उसके सामने, उसके मुकाबिले में आये हुए महान् से महान् भय पल भर भी नहीं ठहर सकते हैं। हे प्यारे ! तू देख कि इस ससार मे एक वह इन्द्र ही स्थिर वस्तु है, वही सत्य है सनातन, अटल, अच्युत है, कभी नष्ट न होनेवाला है। शेष सबकुछ-सभी कुछ क्षणभगुर है, विनश्वर है, अशाश्वत है और चला जानेवाला है। यही एक महासत्य है जिसे कि सिखाने के लिए संसार में चौबीस घंटों की घटनाये होरही हैं। हे मनुष्य ! तू इस महासत्य पर विश्वास कर और निर्भय हो जा। वास्तव मे ससार के सब दुख, क्लेश, भय, सकट टल जानेवाले हैं, नश्वर हैं, क्योंकि ये नश्वर वस्तुओं द्वारा और अज्ञान द्वारा बने हैं। ससार मे जो जो अनश्वर है, अटल है वह तो परमेश्वर ही है। इस समय चाहे तुझे यह भय ही भय चारो तरफ नजर आता हो, पर उस अटल इन्द्र की शरण पकडने पर यह सब अभी जाता रहेगा जैसे कि सदा रहनेवाले अटल सूर्य (इन्द्र) के सामने से नष्ट होजाने वाले बादलो का भारी से भारी समूह जाता रहता है, छिन्न-भिन्न होजाता है, वह सूर्य को घेरे नहीं रह सकता। अत हे प्यारे ! तू अब उस परमेश्वर की ही शरण पकड, जोकि स्थिर है और "विचर्षणि" है–जोकि सदा रहनेवाला और इस जगत् को ठीक-ठीक देखनेवाला सर्वज्ञ है। यह समझ लेते ही तेरे सब भय मिट जायेगे। इन्द्र को स्थिर और विचर्षणि जान लेना ही उसकी शरण मे आजाना है। जिसने सचमुच उसे एकमात्र नित्य और सर्वज्ञ वस्तु करके देख लिया है वह उसे छोडकर और कहा अपना आश्रय टिका सकता है और जिसने उसके इस रूप को देख लिया उसके सामने कौनसा भय ठहर सकता है ? इसलिए, प्यारे ! तू घबरा मत, तू उसकी शरण को पकड। यह सामने आये हुए इस छोटे से भय को ही नहीं मिटा देगा, किन्तु एक दिन आएगा जबकि यह जगदीश्वर तुझसे संसार के सबसे भारी भय को, ससार-बध के महान् भय को, बार-बार जीने-मरने के महाभय को भी छुडाकर तुझे सदा के लिये अजर, अमर और अभय कर देगा।

विशाल आर्यवीर महासम्मेलन एवं आर्यसमाज नागोरी गेट हिसार का वार्षिकोत्सव समारोह

दिनांक ३० नवम्बर से ३ दिसम्बर तक

आपको सूचित किया जाता है कि आर्यवीर दल हरयाणा प्रान्त का आगामी आर्यवीर महासम्मेलन इस वर्ष ३० नवम्बर से ३ दिसम्बर तक आर्यसमाज नागोरी गेट हिसार के वार्षिकोत्सव कार्यक्रम के साथ आयोजित किया जारहा है। जिसमे आर्यजगत् के उच्चकोटि के विद्वान्, सन्यासी, भजनोपदेशक तथा राजनैतिक नेताओं को आमंत्रित किया जारहा है।

३० नवम्बर को दोपहर १ बजे विशाल शोभा यात्रा होगी तथा रात्रि आर्यवीर सम्मेलन डा० देवव्रत आचार्य प्रधान सेनापति की अध्यक्षता मे होगा।

१ दिसम्बर को प्रात ५.३० बजे से १ बजे तक चरित्र निर्माण सम्मेलन होगा तथा रात्रि को विशाल कवि सम्मेलन होगा।

२ दिसम्बर को प्रात ८ से ११ बजे तक यज्ञ, भजन एव वेद सम्मेलन होगा तथा रात्रि राष्ट्र रक्षा सम्मेलन होगा।

३ दिसम्बर को आर्यसमाज के नवनिर्मित भवन का उद्घाटन समारोह प्रात ९ से १२ बजे तक होगा।

उपरोक्त कार्यक्रम में आप सभी सादर आमंत्रित हैं आप अपनी संस्था के बैनर-झण्डे लेकर दलबल सहित भाग लेवें।

वेदप्रकाश आर्य, महामंत्री, आर्यवीर दल हरयाणा

माना गया है। वैदिक युग के पश्चात् समय ने कई करवट बदली, समाज व्यवस्था, वर्ण-व्यवस्था आदि सभी का स्वरूप बदल गया। उसी के अनुसार जहा अन्य कानून बदले व नये बने, उसी प्रकार विवाह कानून भी बदला। लोग प्रेम-विवाह भी करने लगे। अत हिन्दू-विवाह अधिनियम तथा हिन्दू कोड बिल भी समय-समय पर बने तथा उसमे आवश्यक सशोधन भी समय-समय पर होते रहे। जो भी हो, आर्यसमाज की मान्यता यही है कि विवाह दूरस्थ कुलो मे होना ही श्रेष्ठ है।

अब रहा दूसरा विचार कि लोगो को अब रिश्तों मे परेशानी आने लगी है। वह भी इसी कारण से है कि उन्होने अन्तर्विवाह किये अर्थात् अपनी ही जाति मे विवाह किये। इन्हे जाति नहीं बल्कि उपजाति कहना चाहिये। जैसे कोई जाट है तो वह जाटो मे ही विवाह करेगा, ब्राह्मण - ब्राह्मणो मे, नाई - नाइयो मे। ये विवाह भी नजदीक ही अपने-अपने क्षेत्रो ही मे हुए। अत परेशानी तो स्वाभाविक रूप से आनी ही थी। इस समस्या का समाधान अन्तर्जातीय विवाह (Intercaste marriages) है और वे भी दूर-दूर हो। कदाचित् कइयो को हमारी बात अटपटी लगे, लेकिन अब सम्मेलन मे जो प्रस्ताव पारित हुआ है, उसका क्या कारण है यह प्रस्ताव कि केवल अपना तथा माता का ही गोत्र छोडना होगा। यह तो और भी खतरनाक है। कल को यदि समस्या और भी विकराल रूप धारण कर गई तो फिर उसका क्या समाधान करेगे ? आर्यसमाज और ऋषि दयानन्द तो जन्मना जाति को मानते ही नहीं। लेकिन खेद है कि एकाध अपवाद को छोडकर आज आर्य भी तथाकथित जाति-पाति के चक्रव्यूह से बाहर नही निकल पाये। इस प्रकार आर्यसमाज ने सुधार का एक बहुत ही व्यावहारिक पक्ष छोड दिया।

मृतक की तेरहवीं का सातवें दिन किया जाना–यह कार्य क्योंकि **आर्य मर्यादाओ से बाहर है** अत इस पर इतना ही कहना है कि महर्षि दयानन्द जी महाराज के शब्दो मे, अन्त्येष्टि कर्म जो शरीर का अन्तिम सस्कार है, उसके बाद मृतक के लिये कोई कर्त्तव्य कर्म शेष नहीं रहता। यह एक गलत परिपाटी है कि आज तेरहवा, कल छमाही, फिर बरसी, फिर श्राद्धो का सिलसिला। ये सब अवैदिक बाते हैं।

जो लोग मुखिया के मरणोपरान्त परिवार मे **रस्म पगडी** का कर्म करवाते हैं, **यह मूढता का कार्य है।** बुजुर्गो को चाहिये कि अपने जीते जी अपनी पगडी अपनी सन्तान के सिर पर रखकर वानप्रस्थ ले।

गृहस्थस्तु यदा पश्येद् वलीपलितमात्मन ।
अपत्यस्यैव चापत्य तदारण्यं समाश्रयेत् ।। (मनुस्मृति ६।२)

गृहस्थ लोग जब अपने देह का चमडा ढीला और श्वेत केश होते हुए देखे और पुत्र का भी पुत्र होजाए, तब वन का आश्रय लेवे। (सस्कारविधि वान०प्र०)

खेद का विषय है कि आर्यसमाजी परिवारो मे भी यह रीति नही रही और ऐसे विषय सम्मेलनो का मुद्दा बनते हैं।

सम्मेलन का जो तीसरा मुद्दा था, वह सबसे अधिक व्यावहारिक पक्ष था। उसी पर गहन चिन्तन करके कोई ठोस कदम उठाने की योजना बननी चाहिये थी। शराब ही नहीं, अपितु न जाने कैसे-कैसे नशे करके आनेवाली पीढी को विनाश के करार पर खडा किया जारहा है। न जाने कितनी नवबालाये प्रतिदिन दहेज की बलिवेदी पर चढाई जाती हैं। न जाने कितनी ऐसी हैं जो जीवनभर मानसिक यातनाये झेलती हैं। अगर इन्हीं विषयो को लेकर आन्दोलन चलाया जाये, लोगो मे जागृति पैदा की जाये तो कितना उपहार हो। राष्ट्रोन्नति तथा समाजसुधार के क्षेत्र मे आर्यसमाज को अब शिथिलता त्यागकर आगे आना चाहिये।

विजयदशमी का महत्त्व

–प० नन्दलाल निर्भय

भारत वीरो आगया, विजयदशमी का पर्व।
क्षत्रियों के इस पर्व पर, हम सबको है गर्व।।
हम सबको है गर्व, पर्व है हमको प्यारा।
समझें इसका महत्त्व, यही है फर्ज हमारा।।
आर्यावर्त महान्, सीख सच्ची सिखलाता।
धर्म की रक्षा करो, जगत् को पाठ पढ़ाता।।
किसी समय संसार में, आर्यो का था राज।
सुन्दर था वातावरण, था तब सुखी समाज।।
था तब सुखी समाज, सभी थे वैदिकधर्मी।
करते थे नित्य यज्ञ, आर्यजन थे शुभकर्मी।।
ईशभक्त, गोभक्त, मात-पिता के थे सेवक।
कमजोरों का नहीं दबाते थे, योद्धा हक।।
वैदिक पथ को छोड़कर, व्याकुल है संसार।
दुनियांभर में मच रहा, भारी हा-हाकार।।
भारी हा-हाकार, दुखी है जनता भारी।
करते हैं नित्य जुल्म, कुकर्मी, अत्याचारी।
लाखों गऊएं नित्य, यहां जाती हैं मारी।
आतंकित हैं आज, जगत् के सब नर-नारी।।
ईश्वर के अस्तित्व को, भूल गया संसार।
मिथ्या पंथों की हुई, दुनियां में भरमार।।
दुनियां में भरमार, आर्यो कदम बढ़ाओ।
विजयदशमी का महत्त्व, सभी को तुम समझाओ।
मानवता की लाज बचाओ, धर्म निभाओ।
करो वेद प्रचार, जगत् को स्वर्ग बनाओ।।
भरत, लखन, हनुमान थे, आर्यवीर महान्।
श्रीकृष्ण, बलराम थे, आर्यावर्त की शान।।
आर्यावर्त की शान, विक्रमादित्य भोज थे।
दुनियां में विख्यात, आर्यजन किसी रोज थे।।
अर्जुन, भीम, प्रताप, शिवा, बन्दा बलधारी।
गुरु-गोविन्द, रणजीत, हरीसिंह योद्धा भारी।।
क्षत्रिय वीरों की सुनो, यही खास पहचान।
रक्षा दुखियों की करो, बनो वीर बलवान्।।
बनो वीर बलवान् राम के पुत्र दुलारे।
धनुष-बाण लो हाथ, पापियों को संघारो।।
वेद सभ्यता सदाचार की, महिमा गाओ।
'नन्दलाल' बन धर्मवीर, जग में यश पाओ।।

योगस्थली आश्रम महेन्द्रगढ़ में ५८वां वैदिक सत्संग

दिनाक २९-९-२००२ को योगस्थली आश्रम महेन्द्रगढ मे हर माह की भाति बृहद्-यज्ञ एव वैदिक सत्सग महन्त प्रबलदास जी तथा मुनि श्री रामजीलाल की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुवा।

यज्ञ का कार्य महन्त आनन्दस्वरूपदास सन्त कबीरमठ सोहला ने करवाया, यजमान का स्थान महाशय ओमकार आर्य तथा भूरसिह आर्य ने ग्रहण किया।

स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती प्रधान यतिमण्डल दक्षिणी हरयाणा ने अपने प्रवचनो मे कहा कि वस्तुत महर्षि दयानन्द जी ने स्वतन्त्र और अति प्राचीन पद्धति (ब्रह्मा से लेकर जयमनीपर्यन्त) के द्वारा वेदो को खोलने का प्रयास किया, परन्तु ऋषिजी समय से पहले ही चले गये। वेदो के विषय मे उनका प्रयत्न केवल हमारे लिए मार्गदर्शन मात्र ही रहा, क्योकि महर्षि दयानन्द जी ने यजुर्वेद का पूर्णभाष्य और ऋग्वेद के सातवे मण्डल के ६१वे सूक्त के दूसरे मन्त्र तक ही भाष्य कर सके। यदि वह अधिक समय तक जीवित रहते, तो चारो वेदो का पूर्ण भाष्य कर पाते तो उनके मार्ग का स्पष्ट निर्देशन हो सकता था। तथापि तर्क ऋषि और तपस्या के आधार पर किये गये, अर्थो पर दृष्टि रखकर उनके कार्य को आगे बढाना और पूरा करना आर्यविद्वानो का काम है, उसके लिए तपस्या भी जरूरी है, और तर्क ऋषि की समाराधना भी आवश्यक है।

आज के युग मे नारद की तरह अनेक विषयो मे निष्णान्त किसी एक विद्वान् का मिलना कठिन है। अत जबतक आज के युग मे वैज्ञानिको द्वारा लिये गये ग्रन्थो के समान वेद और वेदानुकूल ग्रन्थो के आधार पर एक-एक विद्या को सागोपाग तथा क्रमबद्ध रूप मे प्रस्तुत नही किया जाता तब तक हमारी स्थापना को मान्यता नहीं मिलेगी।

महर्षि दयानन्द जी ने आर्यसमाज की स्थापना दस अप्रैल सन् १८७५ ई० को बम्बई मे की थी और उसी दिन आर्यसमाज के दस नियम निर्धारित किये थे, उनमे से ऊपर के तीन नियमो को छोडकर बाकी सात नियमो को आज ससार की ६५ अरब जनसख्या स्वीकार करने को तैयार है, क्योकि यह सार्वभौमिक नियम हैं। महर्षि दयानन्द जी ने आर्यसमाज को वेद और योग की विशेष जिम्मेदारी दी है। आज ऋषि जी को गये ११९ वर्ष बीत गये, परन्तु इन दोनो जिम्मेदारियो को निभाने मे आर्यसमाज नगण्य है।

इसके पश्चात् ३० रोगियो का उचित निदान कर नि शुल्क दवाइया वितरण की। अन्त मे शुद्ध घी से निर्मित प्रसाद वितरण किया गया।

—महन्त आनन्दस्वरूपदास, सन्त कबीरमठ, सोहना

वैदिक सत्संग समिति दयानन्दमठ रोहतक का ३७वां सत्संग सम्पन्न
अगला सत्संग एक विराट युवा सम्मेलन के रूप में मनाया जायेगा

आर्यसमाज की प्रमुख सस्थान दयानन्दमठ रोहतक मे वैदिक सत्सग समिति द्वारा सचालित सत्सग की ३७वीं कडी सम्पन्न हुई। ६-७-२००२ रविवार को प्रात ९ बजे यज्ञ से सत्सग की शुरुआत हुई तथा फिर यज्ञप्रसाद के बाद भक्ति गीतो से बहिन दयावती आर्या प्राध्यापिका, महाशय जगदीशसिह साधी की भजन मण्डली तथा महाशय ईश्वरसिह आर्य रिण्ढाना (सोनीपत) ने वातावरण को मन्त्रमुग्ध-सा कर दिया। इसके बाद आध्यात्मिक चर्चा मे आज का विषय था सस्कार कैसे बनते हैं। वक्ता के रूप मे गाजियाबाद के दयानन्द सन्यास आश्रम के आचार्य एव वैदिक प्रवक्ता स्वामी चन्द्रवेश जी को बुलाया गया था। अपने वक्तव्य मे स्वामीजी ने कहा कि मनुष्य का जीवन सस्कारो पर टिका हुआ है। धर्म व पाप के आधार पर ही मानवीय जीवन का उत्थान व पतन सम्भव है। उन्होने सस्कारो के बारे के यजुर्वेद के २९वे अध्याय की चर्चा की। उन्होने बताया कि महाभारतकाल के बाद पठन-पाठन छूट गया। परिणामस्वरूप हमारी सस्कृति बिगडती चली गई जिससे सस्कार भी सही नही दिये जा सके। विद्वान् व्यक्ति आज भी सूर्य की भाति दीपक का कार्य कर सकते हैं। टी वी व पाश्चात्य सस्कृति पर प्रहार करते हुये स्वामी चन्द्रवेश जी ने कहा कि सारा समय टेलीविजन पर दुराचार की चर्चा सुनता व देखता है अत वैसे ही विचार अथवा सस्कार उनके बनते जारहे हैं। मानव निर्माण के लिये उन्होने महर्षि दयानन्द जी द्वारा लिखित पुस्तक 'सस्कारविधि', जिसमे सोलह सस्कारो का वर्णन है, उसे अपने जीवन मे अपनाने पर जोर दिया। जिसमे बच्चे के जन्म के समय ही सोने की शलाका से जिह्वा पर **'ओ३म्'** अक्षर लिखने का विधान व कान मे **'ओ३म्'** ध्वनि माता-पिता करे। अच्छे सस्कारो के बिना मनुष्य पशु समान हैं। उन्होने खान-पान की शुद्धि की चर्चा करते हुये कहा कि गर्भवती माताओ के द्वारा, मिट्टी आदि खाने से बच्चे पर असर पडता है, चेचक का रोग भी माता के शरीर की बीमारी है। इसीलिये खान-पान की शुद्धि अनिवार्य है।

अन्त मे इस समारोह के सयोजक श्री सन्तराम आर्य ने घोषणा की कि अगला सत्सग ३ नवम्बर २००२ को **'विराट युवा सम्मेलन'** के रूप मे मनाया जायेगा। सभी आर्यसमाजे व आर्य शिक्षण सस्थाए ज्यादा से ज्यादा सख्या मे युवको व युवतियो एव छात्रो को इस सम्मेलन मे भेजे तथा युवा पीढी को सही रास्ता दिखाया अथवा बताया जा सके। स्वामी ओमानन्द की अध्यक्षता मे यह सम्मेलन अभूतपूर्व होगा। सभी आर्यसमाजे अथवा शिक्षण सस्था अपना बैनर लगाकर पहुचे। फिर सयोजक द्वारा शान्तिपाठ का उच्चारण किया गया। शान्तिपाठ के बाद सभी ने ऋषि लगर मे मिलकर भोजन किया तथा फिर प्रस्थान। —रविन्द्र आर्य, कार्यालय मन्त्री, सार्व०आ०यु०परिषद हरयाणा

आर्यसमाज के उत्सवों की सूची

क्र.	आर्यसमाज	तिथि
१	आर्यसमाज विकास नगर महेश्वरी जिला (रेवाडी)	१९-२० अक्तूबर ०२
२	आर्यसमाज माडल कालोनी यमुनानगर	१८-२० अक्तूबर ०२
३	आर्यसमाज बेगा जिला सोनीपत	१८-२० अक्तूबर ०२
४	आर्यसमाज सालवन जिला करनाल	१८-२० अक्तूबर ०२
५	आर्यसमाज बहल जिला भिवानी	१८-२१ अक्तूबर ०२
६	आर्यसमाज झज्जर रोड बहादुगढ (झज्जर)	१९-२० अक्तूबर ०२
७	आर्यसमाज बीगोपुर डा० धोलेडा (महेद्रगढ)	१९-२० अक्तूबर ०२
८	आर्यसमाज गगसीना जिला करनाल	१६-१८ अक्तूबर ०२
९	आर्यसमाज कालका जिला पचकूला	२३-२७ अक्तूबर ०२
१०	आर्यसमाज शेखुपुरा खालसा जिला करनाल	२५-२७ अक्तूबर ०२
११	गुरुकुल कुरुक्षेत्र	२५-२७ अक्तूबर ०२
१२	कन्या गुरुकुल पचगाव जिला भिवानी	२६-२७ अक्तूबर ०२
१३	आर्यसमाज पालडा जिला महेन्द्रगढ	२६-२७ अक्तूबर ०२
१४	आर्यसमाज मोखरा जिला रोहतक	३० अक्तू० से १ नव० ०२
१५	आर्यसमाज खाण्डा खेडी जिला हिसार	३१ अक्तू० से २ नव० ०२
१६	आर्यसमाज कासण्डा जिला सोनीपत	२ से ४ नवम्बर ०२
१७	आर्यसमाज खरड (पजाब)	१५-१७ नवम्बर ०२
१८	आर्यसमाज जवाहरनगर पलवल कैंप, जिला फरीदाबाद	२२-२४ नवम्बर ०२
१९	आर्यसमाज थर्मल कालोनी पानीपत	२९ नव० से १ दिस० ०२
२०	आर्यसमाज बसई जिला गुडगाव	६ से ८ दिसम्बर ०२

—रामधारी शास्त्री, सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता

साप्ताहिक यज्ञ कार्यक्रम

सभी धर्मप्रेमी सज्जनो, आपको यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता होगी कि आपके शहर रोहतक मे आर्यसमाज शिवाजी कालोनी मे दिनाक १३-१०-२००२ से २०-१०-२००२ तक १० मन घी का साप्ताहिक यज्ञ बडी धूमधाम से होरहा है। इस अवसर पर सुप्रसिद्ध विद्वान् तथा भजनोपदेशक पधार रहे है। आप सबसे निवेदन है कि इस कार्यक्रम मे सम्मिलित होकर तन-मन-धन से सहयोग देकर धर्म लाभ उठाए और ईश्वर की पवित्र वेदवाणी के प्रचार मे सहायता करे।

१३-१०-२००२ से २०-१-२००२ तक प्रात ६ ३० से १० ३० बजे तक तथा साय ३ ३० से ६ ३० बजे तक यज्ञ, भजन तथा उपदेश।

निवेदक आर्यसमाज शिवाजी कालोनी के सभी सदस्य

विशेष सूचना
स्वामी इन्द्रवेश जी की स्वदेश वापसी १५ अक्तूबर २००२ को

दयानन्दमठ, रोहतक। आर्यसमाज के मूर्धन्य सन्यासी एव वैदिकविद्वान् स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज अपनी लगभग चार महीने की विदेशो की प्रचार यात्रा पूरी करके १५ अक्तूबर २००२ ई० विजयदशमी के दिन वापिस भारत (स्वदेश) लौट रहे हैं।

स्वामीजी अमेरिका के शिकागो तथा न्यूयार्क के अलावा इग्लैंड व इडोनिशिया आदि देशो मे प्रचार करके विजयदशमी को वापिस स्वदेश लौट रहे हैं। उपरोक्त देशो के लोगो ने स्वामीजी का हर वर्ष का कार्यक्रम तीन महीनो (जुलाई, अगस्त, सितम्बर) का प्रचार के लिए उन्ही देशो का निश्चित करने का आग्रह किया है। जिन सस्थाओ ने उनका समय चाहा था वे कृपया ध्यान दे। —सन्तराम आर्य, कार्यालयाध्यक्ष

महर्षि दयानन्द का मन्तव्य

वेदों की उत्पत्ति

डा. सुदर्शनदेव आचार्य, अध्यक्ष संस्कृत सेवा सस्थान, हरिसिंह कालोनी, रोहतक

(गताक से आगे)

वेद और श्रुति नामकरण

जिज्ञासु–वेद और श्रुति ये दो नाम ऋग्वेद आदि सहिताओ के क्यो हुये ?

सिद्धान्ती–(१) अर्थभेद से। क्योकि एक विद धातु ज्ञानार्थक है, दूसरा विद सत्तार्थक है, तीसरे विद का लाभ अर्थ है और चौथे विद का अर्थ विचार है। इन चार धातुओ से करण और अधिकरण कारक मे 'घञ्' प्रत्यय करने से 'वेद' शब्द सिद्ध होता है। विद्+घञ्। विद्-अ। वेद्+अ। वेद+सु=वेद ।

(२) और 'श्रु' धातु श्रवण अर्थ मे है। इससे करण कारक मे क्तिन् प्रत्यय के होने से श्रुतिशब्द सिद्ध होता है। श्रु+क्तिन्। श्रुति+ति। श्रुति+सु= श्रुति ।

वेदों की भाषा

जिज्ञासु–ईश्वर ने किसी देश की भाषा मे वेदो का प्रकाश न करके सस्कृतभाषा मे क्यो किया ? इससे भी ईश्वर मे पक्षपात का दोष आता है।

सिद्धान्ती–(१) ईश्वर यदि किसी देश की भाषा मे वेदो का प्रकाश करता तो वह पक्षपाती होजाता। क्योकि जिस देश की भाषा मे प्रकाश करता तो उनको सुगमता और विदेशिको को वेदो के पढने-पढाने मे कठिनता होती। इसलिये सस्कृतभाषा मे ही वेदो का प्रकाश किया। सस्कृतभाषा किसी देश की भाषा नही है।

(२) वेदभाषा अन्य सब भाषाओ का कारण है अत उसी मे ईश्वर ने वेदो का प्रकाश किया।

(३) जैसे ईश्वर की पृथिवी आदि सृष्टि सब देशोवालो के लिये समान है और वह सब शिल्पविद्या का कारण है, वैसे परमेश्वर की विद्या की भाषा सस्कृत भी एकसी है। इसके पढने-पढाने मे सब देशवालो को तुल्य परिश्रम करना पडता है। अत ईश्वर पक्षपाती नही अपितु न्यायकारी है।

वेदों का कर्त्ता : ईश्वर

जिज्ञासु–वेद ईश्वरकृत हैं, अन्यकृत नही, इसमे क्या प्रमाण है ?

सिद्धान्ती-१ वेद ईश्वरकृत हैं इसमे वेद, ब्राह्मणग्रन्थ और मनुस्मृति के प्रमाण ऊपर लिखे हैं।

२ इनके अतिरिक्त वेदो के ईश्वरकृत होने मे निम्नलिखित हेतु हैं-

(१) जैसा ईश्वर पवित्र, सर्वविद्यावित्, शुद्ध गुण-कर्म-स्वभाववाला, न्यायकारी और दयालु आदि गुणवाला है वैसे जिस पुस्तक मे ईश्वर के गुण-कर्म-स्वभाव के अनुकूल कथन हो वह ईश्वरकृत है, अन्य नहीं।

(२) जिसमे सृष्टिक्रम, प्रत्यक्ष आदि प्रमाण आप्तजनो के और पवित्रात्मा पुरुष के व्यवहार से विरुद्ध कथन न हो वह ईश्वरोक्त पुस्तक है।

(३) जैसा ईश्वर का निर्भ्रमज्ञान है वैसा जिस पुस्तक मे भ्रान्तिरहित ज्ञान का प्रतिपादन हो वह ईश्वरोक्त पुस्तक है।

(४) जैसा परमेश्वर है और जैसा सृष्टिक्रम रखा है वैसा ही ईश्वर, सृष्टि, कार्य-कारण और जीव का प्रतिपादन जिसमे हो वह परमेश्वरोक्त पुस्तक है।

(५) जो प्रत्यक्ष आदि प्रमाण विषयो से अविरुद्ध और शुद्धात्मा के स्वभाव से विरुद्ध न हो वह ईश्वरोक्त ग्रन्थ होता है।

वेद इसी प्रकार के ग्रन्थ हैं अत ये ईश्वरोक्त है। अन्य बाइबल और कुरान आदि पुस्तके ऐसी नही हैं अत वे ईश्वरोक्त नही है।

निराकार ईश्वर से वेदोत्पत्ति

जिज्ञासु-ईश्वर निराकार है, उससे शब्दरूप वेद कैसे उत्पन्न हो सकते हैं ?

सिद्धान्ती-(१) ईश्वर सर्वशक्तिमान् है। उसके विषय मे ऐसी शका करना सर्वथा व्यर्थ है। क्योकि-मुख और प्राण आदि साधनो के बिना भी वह प्राण आदि का कार्य अपने सामर्थ्य से यथावत् कर सकता है। यह दोष तो हम जीव लोगो मे आ सकता है कि मुख आदि के बिना हम मुख आदि का कार्य नही कर सकते क्योकि हम लोग अल्पसामर्थ्य वाले है।

(२) इस विषय मे दृष्टान्त यह है कि मन मे मुख आदि अवयव नही है फिर भी जैसे मन के भीतर प्रश्न-उत्तर आदि, शब्दो का उच्चारण और मानस व्यापार होता है, वैसे ही परमेश्वर मे भी जानना चाहिये।

(३) जो ईश्वर सम्पूर्ण सामर्थ्य-वाला है वह किसी कार्य के करने मे किसी का सहाय ग्रहण नही करता क्योकि वह अपने अनन्त सामर्थ्य से ही अपने सब कार्यो को कर सकता है। जैसे हम लोग बिना सहाय के कोई काम नहीं कर सकते, वैसे ईश्वर नहीं है।

(४) जब जगत् उत्पन्न नही हुआ था उस समय निराकार ईश्वर ने सम्पूर्ण जगत् को बनाया तब वेदो के रचने मे क्या शका रही ?

(५) जैसे वेदो में अत्यन्त सूक्ष्मविद्या का रचन ईश्वर ने किया है, वैसे जगत् मे भी नेत्र आदि पदार्थो का अत्यन्त आश्चर्यरूप रचन किया है तो क्या वेदो की रचना ईश्वर नहीं कर सकता ? (ऋ०भा०भू० वेदोत्पत्ति विषय)।

निराकार ईश्वर द्वारा वेदोपदेश

जिज्ञासु-जब ईश्वर निराकार है तो वेदविद्या का उपदेश मुख के बिना कैसे होसका होगा ? क्योकि वर्णो के उच्चारण मे तालु आदि स्थान तथा जिह्वा का प्रयत्न अवश्य होना चाहिये।

सिद्धान्ती-(१) ईश्वर के सर्वशक्तिमान् और सर्वव्यापक होने से जीवो को अपनी व्याप्ति से वेदविद्या का उपदेश करने मे मुख आदि की कुछ भी अपेक्षा नहीं है। क्योकि मुख और जिह्वा से वर्णो का उच्चारण अपने से भिन्न को बोध कराने के लिये होता है, अपने लिये कुछ नही। क्योकि मुख और जिह्वा से व्यापार किये बिना ही मन मे अनेक व्यवहारो का विचार और शब्दो का उच्चारण होता रहता है। मन मे भी मुख आदि अवयव नही है।

(२) कानो को अगुलियो से मूदकर देखो और सुनो कि बिना मुख और जिह्वा और तालु आदि स्थानो के कैसे-कैसे शब्द होरहे है। ऐसे ही ईश्वर ने जीवो को अन्तर्यामी रूप से वेदो का उपदेश किया है।

(३) जब परमेश्वर निराकार और सर्वव्यापक है तो वह अपनी विद्या का उपदेश जीवस्थ होने से जीवात्मा मे प्रकाशित कर देता है। फिर वह मनुष्य अपने मुख से वेदो का उच्चारण करके दूसरे का सुनाता है।

इसलिये ईश्वर मे उक्त दोष नही आता है। (क्रमश)

भजन– जिस गांव में आर्यसमाज नहीं

टेक– सुख से बसेगा देश नहीं वह जहा आर्यो का राज नहीं।
है बेकार वहा रहना जिस गाव मे आर्यसमाज नहीं।।

सच्चाई का सीधा रास्ता आर्यसमाज बताता है।
राष्ट्रप्रेम और ईश्वरभक्ति सबको यही सिखाता है।
विधवा दीन अनाथो की भी यह ही धीर बधाता है।
मानव मानव बन जाये आर्यसमाज यही चाहता है।
रोग बीमारी बढेगी वहा जहा हवन का रिवाज नही।
है बेकार वहा रहना जिस गाव मे आर्यसमाज नही।।१।।
जहा पर आर्यसमाज नही वहा लूटेगे ठग मस्टण्डे।
झाडे लावे बीर बहकावे बाधेगे डोरी गण्डे।
गगा मे जा हाड बहाने लूटे गगा के पण्डे।
भोली जनता पर चल जाते पाखण्डियो के हथकण्डे।
झूठे कपटी स्वार्थियो के होती शर्म लिहाज नही।
है बेकार वहा रहना जिस गाव मे आर्यसमाज नही।।२।।
शहर नगर घर गावो का ये आर्यसमाज है पहरेदार।
सोते हुये सभी लोगो को करता रहता है हुशियार।
मुस्लिम और ईसाई यहा पर बढते जारहे गद्दार।
इसीलिए इस भारत मे आज गौवो पर चलती कटार।
भविष्य देश का खतरे मे यदि सोचा कोई इलाज नही।
है बेकार वहा रहना जिस गाव मे आर्यसमाज नही।।३।।
आर्यसमाज नही होता तो देश आजाद कराता कौन ?
मिस्टर गाधीजी को महात्मा गाधीजी बनाता कौन ?
गाधी के लडके को फिर से हिन्दुओ मे मिलाता कौन ?
आर्यसमाज बिना कभी होता नेहरू के सिर ताज नही।
है बेकार वहा रहना जिस गाव मे आर्यसमाज नही।।४।।
आर्यो के राज बिना यह शासन भी है डावाडोल।
चोर गुण्डे बदमाशो पर कर सकते नही कट्रोल।
नकली लीडर मन्त्रियो की खुलनी जारही है पोल।
पशुओ की तरह एमपी और एमएलए भी बिकते मोल।
कब तक ऐसा गदर रहेगा इसका कोई अन्दाज नही।
है बेकार वहा रहना जिस गाव मे आर्यसमाज नही।।५।।
अन्धे बहरे लीडर होगये शासनकर्त्ता भारत के।
शराब पिला रहे गौ कटा रहे वशीभूत हो स्वार्थ के।
कुर्सी के लालच मे फसकर काम तजे परमार्थ के।
विश्वमित्र आसार बना दिये इस भारत के गारत के।
सुननेवाला आज तुम्हारी कोई भी आवाज नही।
सुख से बसेगा देश नही वह जहा आर्यो का राज नही।।६।।

रचयिता विश्वमित्र आर्य भजनोपदेशक, ग्राम-पो० लूखी, जिला रेवाडी

सर्वगोत्र महासम्मेलन — एक चिन्तन

–रामफलसिह आर्य 'अग्निहोत्री', ८७/एस-३, बी एस एल० कालोनी, सुन्दरनगर, जिला मण्डी (हि प्र)

'साप्ताहिक सर्वहितकारी' अक ४० मे हरयाणा के रोहतक नगर के छोटूराम पार्क मे आयोजित प्रथम सर्वगोत्र महासम्मेलन पर एक रिपोर्ट छपी है। इसमे लगभग चालीस गोत्रो के प्रतिनिधियो ने भाग लिया और यह प्रस्ताव पारित किया गया कि अब शादी के समय सर्वगोत्र के लडको को अपनी मा का तथा अपना गोत्र ही बचाना होगा। यदि लडका-लडकी के गोत्रो मे दादी के गोत्र का टकराव है और दादी गुजर चुकी है तो इस गोत्र को विवाद नही माना जायेगा।

दूसरा प्रस्ताव यह था कि यदि कोई व्यक्ति मृतक की तेरहवीं की रस्म सातवे दिन कराना चाहे तो वह करा सकता है। उसे रोका नही जायेगा।

इसके अतिरिक्त और भी कई समाज मे प्रचलित प्रथाओ/कुप्रथाओ जैसे शराब दहेज भ्रूण-हत्या, सस्कृति से युवापीढी का विमुख होना, महिलाओ की खराब स्थिति आदि पर इस सम्मेलन मे विचार किया गया।

पत्रिका के सम्पादक मान्यवर श्री वेदव्रत शास्त्री जी ने उपरोक्त विषय पर लेख आमन्त्रित करके एक अच्छा कार्य किया है तदर्थ वे साधुवाद के पात्र हैं।

विवाह जीवन का एक आवश्यक कार्य है और हिन्दू समाज मे इस कृत्य को धार्मिक रूप देदिया गया है। वैदिक ऋषियो ने इसके महत्त्व को भलीभाति समझा और न केवल इसे धार्मिक कर्मकाण्ड मात्र ही रहने दिया, न केवल सन्तानोत्पत्ति का रास्ता ही माना अपितु इसका निर्धारण इसलिये भी किया कि, इसका उद्देश्य यह भी रखा कि माता-पिता अपने से श्रेष्ठ सन्तान को जन्म दे। हर पीढी से आनेवाली पीढी उत्तर से उत्तम बनती जाये और मानव समाज उन्नति के पथ पर बढता चला जाये। मनुष्य और पशुओ मे यही अन्तर मुख्यरूप से है अन्यथा बच्चे तो पशु-पक्षी भी पैदा करते ही है। वैदिककाल मे तो विवाह लडके लडकी के पूर्ण युवा होने पर ही किया जाता था। यू तो बच्चे उत्पन्न करने की क्षमता किशोरावस्था मे ही आजाती है। अर्थात् जब लडके का वीर्य बनना शुरु होजाये और लडकी रजस्वला होजाये। लेकिन इस समय न तो शारीरिक विकास ही पूर्ण होता है और न ही मानसिक। अत जो सन्तान पैदा होती है वह कमजोर, रोगी तथा अल्पायु होती है। वैदिक आदर्श तो कहता है कि **स्वाना वीरतमो जायताम्** अर्थात् आनेवाली सन्तान इतनी वीर हो कि जितनी पिछली पीढियो मे एक भी न हुई हो। इसी उद्देश्य को लेकर विचार किया गया कि विवाह कहा हो, किससे हो और किससे न हो। अत स्मृतिकारो ने गोत्र प्रवर तथा सपिण्ड मे विवाह का निषेध किया। उसी परम्परा मे महर्षि दयानन्द जी महाराज ने अपने ग्रन्थो सस्कारविधि तथा सत्यार्थप्रकाश मे इस विषय पर प्रकाश डाला है। गृहाश्रम की व्याख्या करते हुए ऋषिवर सत्यार्थप्रकाश के चतुर्थ समुल्लास मे लिखते है कि जब लडके-लडकी का विवाह हो तो किन-किन कुलो मे करना चाहिए। मनुस्मृति का प्रमाण देकर वे लिखते है-

असपिण्डा च मातुरसगोत्रा च या पितु ।
सा प्रशस्ता द्विजातीना दारकर्मणि मैथुने।। (मनु० ३।५)

यही विचार महर्षि ने सस्कारविधि मे रखा। ये गोत्र प्रवर, सपिण्ड आदि क्या है इन पर विचार कर लेना चाहिये। भारतीय साहित्य के अनुसार भारद्वाज गौतम, वशिष्ठ आदि ऋषियो की सन्ताने उनकी गोत्र अर्थात् पूर्व पुरुष के नाम पर उनका गोत्र चला। आरम्भ मे तो ७-८ ही थे परन्तु कालान्तर मे इनकी सख्या हजारा मे पहुच गई। फलत कहा जा सकता है किसी परिवार का जो आदि प्रवर्त्तक था उसी के नाम पर उस परिवार का गोत्र चल पडा। इस ही गोत्र मे आगे होनेवाले लडके-लडकी के एक ही रक्त से सम्बन्धित होने के कारण भाई-बहन कहा गया। प्रवर शब्द की उत्पत्ति वृञ्-वरणे धातु से होती है, इसका अर्थ है चुन लेना, प्र=विशेष रूप से। यज्ञ के समय पुरोहित कुछ प्रसिद्ध ऋषियो को चुनकर यज्ञ मे आहुति देता था और यजमान यज्ञ के समय पुरोहित को चुनता ही है अत यजमान और पुरोहित का प्रवर एक ही मान लिया गया। एक प्रवर के होने के कारण वहा भी विवाह सम्बन्ध स्थापित नही हो सकता।

अब रहा सपिण्ड। इसका एक प्रचलित अर्थ तो यह है कि श्राद्ध करते समय जो लोग एक साथ पितरो को पिण्डदान करे वे सपिण्ड हुए। पिण्ड कहते है चावलो के गोले को। दूसरा अर्थ-एक ही शरीरवाला। पिता और पुत्र या पुत्री सपिण्ड हैं क्योकि दोनो का रक्त एक है। तीसरा अर्थ है-एक साथ भोजन करनेवाले। भाई बहन एक साथ भोजन करते ही हैं अत सपिण्ड हुए। इतनी जानकारी के बाद अब हम विवाह के मुख्य उद्देश्य पर आते हैं।

विवाह एक साधन है जिसमे पति-पत्नी के परस्पर मेल से एक श्रेष्ठ मानव का निर्माण किया जाता है। ऋषि के शब्द देखिये-"जैसे पानी मे पानी मिलने से विलक्षण गुण नहीं होता, वैसे एक गोत्र पितृ वा मातृ कुल मे विवाह होने से धातुओ मे अदल-बदल नही होने से उन्नति नहीं होती। जैसे दूध मे मिश्री वा शुण्ठी आदि ओषधियो के योग से उत्तमता होती है वैसे ही भिन्न गोत्र मातृ पितृ कुल से पृथक् वर्तमान स्त्री पुरुषो का विवाह होना उत्तम है।

उपरोक्त शब्द किस ओर सकेत कर रहे हैं ? ध्यान दीजिये। केवल मनुष्य ही नहीं अपितु पशु-पक्षियो और पेड-पौधो आदि तक मे उत्तम-उत्तम गुणोवाले पशु-पक्षी और फल-फूल आदि प्राप्त करने के लिये विभिन्न नसल के पशुओ तथा पेड-पौधो का परस्पर मेल तथा शोध के पश्चात् उन पर कलमे आदि चढाकर (पेडो पर) उत्तम फल-फूल आदि प्राप्त करने का वैज्ञानिक तरीका और नियम है। विवाह भी तो एक दृष्टि से वैज्ञानिक कार्य है उत्तम मानव प्राप्त करने का। वेद का आदेश है कि **'मनुर्भव जनया दैव्य जनम्'** अर्थात् मनुष्य बन और दिव्य सन्तान को जन्म दे। विवाह के लिये माता-पिता की छह पीढियो को छोडने का आदेश है। क्यो ? इसका सीधा सा उत्तर यह है कि जो कन्या अपने पिता के घर जन्म लेती है वह अपने माता-पिता के गुण दोष लेकर पैदा होती है लेकिन उसका विवाह होते ही उसका गोत्र बदल जाता है। इसी प्रकार जो कन्या ब्याह करके अपने कुल मे लाई गई उसका भी गोत्र पति कुल का होगया लेकिन माता-पिता से मिले गुणदोष तो उसमे विद्यमान रहे। निर्णय सिन्धु के अनुसार-

सपिण्डता तु सर्वेषां गोत्रत सप्तपौरुषी।
सपिण्डता तत पश्चात् समानोदका धर्मत ।

अर्थात् सपिण्डता सातवी पीढी से हट जाती है। सभी की सपिण्डता सातवी पीढी तक रहती है। यहा एक बात और विचारणीय है यदि किसी कुल मे विवाह होने से जो कमी माता-पिता के कारण सन्तान मे रह गई है वह दूरस्थ गोत्र की कन्या तथा वर जो कम से कम छह गोत्रो से भिन्न हो, उनमे विवाह कराने से दूर होजाती है। भारत के सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ० हरगोविन्द खुराना का शोधकार्य इसी पर था कि वशानुगत रोगो को किस प्रकार से दूर किया जा सकता है ? ऋषिवर के शब्द भी देख लीजिये-जैसे एक देश मे रोगी हो वह दूसरे देश मे वायु और खान-पान के बदलने से रोगरहित होता है वैसे ही दूर देशस्थो के साथ विवाह होने मे उत्तमता है। आचार्य यास्क के अनुसार तो **दुहिता दुर्हिता दूरे हिता भवतीति** (निरुक्त) कन्या का नाम दुहिता इसी कारण से है कि इसका विवाह दूर देश मे होने से हितकारी होता है निकट रहने मे नहीं। (चतुर्थ समु०)

उपरोक्त विषय पर आर्यसमाज के मूर्धन्य विद्वान् डॉ० सत्यव्रत सिद्धान्तालकार सस्कार चन्द्रिका मे लिखते है-सपिण्ड का अर्थ एक ही रक्त के लोग है। समान गोत्र तथा प्रवर मे विवाह न करने का विधान तो भावनात्मक है परन्तु सपिण्ड मे विवाह न करने का विधान तो भावनात्मक के साथ-साथ प्रजननिक भी है। यह तो सब कोई जानते है कि अति परिचय मे प्रेम नही रहता इसलिये भावनात्मक दृष्टि से भाई-बहन की शादी वर्जित है परन्तु यह भी ठीक है कि एक ही समान रुधिर की सन्तान मे उत्कृष्टता नही आती भिन्न रुधिर मे उत्कृष्टता आती है। इस दृष्टि मे समान गोत्र तथा प्रवर मे विवाह करना भावनात्मक दृष्टि से असगत होगा परन्तु सपिण्ड मे विवाह का निषेध तो इन दोनो दृष्टियो मे असगत है। इसीलिये हिन्दू विवाहप्रथा मे इस प्रकार के विवाह का निषेध है। अब जितनी पीढिया दूर-दूर होगी अर्थात् विवाह जितनी दूर की पीढी मे होगा, भिन्न गोत्र मे होगा, गुणो की दृष्टि से सन्तान मे उतनी ही श्रेष्ठता होगी।

सपिण्ड के विषय मे यू तो स्मृतिकारो मे मतभेद रहा है। मनु ने पिता की ओर से ७ तथा माता की ओर से भी ७ पीढियो मे विवाह का निषेध किया है। विष्णु तथा याज्ञवल्क्य स्मृति मे पिता की सात और माता की पाच पीढियो तथा वशिष्ठ स्मृति मे पिता की छह और माता की चार पीढियो को सपिण्ड मानकर विवाह का निषेध किया है।

१९५५ मे बने 'हिन्दू-विवाह अधिनियम' के अनुसार पिता की पाच तथा माता की तीन पीढियो को सपिण्ड माना गया है। अत इनमे विवाह को वर्जित

आर्य-संसार

आर्यसमाज सान्ताक्रुज का ५८वां स्थापना दिवस एवं पुरस्कार समारोह

आर्यसमाज सान्ताक्रुज मुम्बई के ५८वें स्थापना दिवस एव पुरस्कार समारोह में बाए से कैप्टन देवरत्न आर्य (पूर्व प्रधान-आर्यसमाज सान्ताक्रुज, मुम्बई), श्री धर्मपाल जी आर्य (प्रधान-केन्द्रीय आर्यप्रतिनिधिसभा, दिल्ली) तथा प० युधिष्ठिर मीमांसक स्मृति पुरस्कार प्राप्तकर्त्ता आचार्य विजयपाल जी (गुरुकुल झज्जर, हरयाणा) को रु० ११,०००/- का डी डी प्रदान करते हुए आर्यसमाज सान्ताक्रुज, मुम्बई के प्रधान डॉ० सोमदेव शास्त्री एव श्री सगीत आर्य (महामन्त्री-आर्यसमाज सान्ताक्रुज, मुम्बई)।

रविवार दिनाक २९ सितम्बर, २००२ को ५८वा आर्यसमाज सान्ताक्रुज का स्थापना दिवस एव पुरस्कार समारोह आर्यसमाज के विशाल सभागृह मे मनाया गया। सर्वप्रथम ८ बजे से ९ बजे तक बृहद्यज्ञ का आयोजन किया गया। सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधिसभा, दिल्ली के प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य जी की अध्यक्षता मे स्थापना दिवस एव पुरस्कार समारोह आरम्भ हुआ। तत्पश्चात् मन्त्रोच्चारण एव पुष्पवृष्टि के साथ अतिथि एव पुरस्कार प्राप्तकर्त्ताओ का मच पर आगमन हुआ। आर्यसमाज सान्ताक्रुज के प्रधान, डा० सोमदेव शास्त्री ने अपने स्वागत भाषण मे सभी का अभिनन्दन करते हुए हार्दिक प्रसन्नता अभिव्यक्त की। आर्यसमाज सान्ताक्रुज के उपप्रधान श्री चन्द्रगुप्त जी आर्य ने आर्यसमाज सान्ताक्रुज का परिचय देते हुए गत ५८ वर्षो के विशेष उपलब्धियो पर प्रकाश डाला। श्री सगीत आर्य (महामन्त्री, आर्यसमाज सान्ताक्रुज) ने पुरस्कारो का परिचय प्रस्तुत किया।

इस वर्ष श्री झाऊलाल शर्मा गुरुकुल सहायता पुरस्कारस्वरूप रु० ११,०००/- का डी डी , आर्ष कन्या गुरुकुल विद्यापीठ, नजीबाबाद के लिये तथा श्रीमती भागीदेवी छाबरिया गुरुकुल सहायता पुरस्कारस्वरूप रु० ११,०००/- का डी डी गुरुकुल सस्कृत महाविद्यालय, येडशी के लिये सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधिसभा, दिल्ली के प्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य के सुपुर्द किया गया। श्री राजकुमार कोहली वयोवृद्ध विद्वान् पुरस्कार प्राप्तकर्त्ता श्री कुंवर महिपालसिह जी आर्य (भजनोपदेशक, बलिया) का परिचय डा० सोमदेव शास्त्री जी ने प्रस्तुत किया। श्री कुवर महिपालसिह जी आर्य को श्री राजकुमार कोहली वयोवृद्ध विद्वान् पुरस्कारस्वरूप रु० ११,०००/- की थैली, श्रीफल एव मोती माला भेट कर सम्मानित किया गया।

श्रीमती कृष्णा गाधी आर्य युवक पुरस्कार प्राप्तकर्त्ता श्री वाचोनिधि आर्य (मन्त्री आर्यसमाज गान्धीधाम) का परिचय आर्यसमाज सान्ताक्रुज के वरिष्ठ उपप्रधान श्री विश्वभूषण आर्य ने दिया। श्री वाचोनिधि आर्य को श्रीमती कृष्णा गाधी आर्य युवक पुरस्कारस्वरूप रु० ११,०००/- की थैली, शाल, ट्राफी, श्रीफल, मोती माला भेटकर सम्मानित किया गया। अपने सम्मान केक उपलक्ष्य में बोलते हुए श्री वाचोनिधि आर्य ने कहा कि-"आर्यसमाज को समय दान देवे। आर्यसमाज गान्धीधाम के माध्यम से भूकम्प मे अनाथ हुये बच्चों एव विधवा बहनो के पुनर्वास हेतु मैं आजकल जीवन प्रभात के कार्यों को गति देरहा हू। सहयोग एवं उत्साहवर्धन के लिये आर्यसमाज सान्ताक्रुज के पदाधिकारियों का धन्यवाद करते हुये आपने दशर्नार्थ सभी को गान्धीधाम आमन्त्रित किया।"

पं० युधिष्ठिर मीमांसक स्मृति पुरस्कार प्राप्तकर्त्ता आचार्य श्री विजयपाल जी (गुरुकुल झज्जर, हरयाणा) का परिचय डा० सोमदेव शास्त्री (प्रधान, आर्यसमाज सान्ताक्रुज) ने दिया। आचार्य श्री विजयपाल जी को प० युधिष्ठिर मीमासक स्मृति पुरस्कारस्वरूप ११,०००/- की थैली, शाल, ट्राफी, श्रीफल एव मोती माला से सम्मानित किया गया। इस सम्मान के सुअवसर पर आचार्य श्री विजयपाल ने कहा कि मुझे महर्षि जी का वचन स्मरण है। विद्वान् को सम्मान विषतुल्य और अपमान अमृत के समान समझना चाहिये। परन्तु आप लोगो ने मेरे कार्यों की सराहना हेतु यह पुरस्कार मुझे प्रदान किया है। जिसके लिये मैं आप सबका अत्यन्त आभारी हू। मैं आचार्य ओमानन्द के सान्निध्य मे रहते हुए ऋषिमिशन को पूर्ण करने के लिए आजीवन सकल्पनिष्ठ हू। इसी निमित्त मैंने आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत धारण किया है। डा० सोमदेव शास्त्री जी मेरे बडे भ्राता तथा प्रेरणास्रोत हैं।

समारोह के विशेषअतिथि श्री ओम्प्रकाश जी झवर (सयुक्त मन्त्री परोपकारिणी सभा अजमेर, राजस्थान) ने अपने ओजस्वी वक्तव्य मे आर्यसमाज सान्ताक्रुज द्वारा सचालित पुरस्कार परम्परा की अत्यन्त प्रशसा की। आपने आगे कहा कि आर्यसमाज के कार्यो को यदि गति देना है तो वैदिकविद्वानो का सम्मान होना ही चाहिए।

आचार्य देवव्रत, प्राचार्य गुरुकुल कुरुक्षेत्र अमेरिकन मैडल ऑफ ऑनर से सम्मानित

समस्त आर्यजगत् को जानकर अति प्रसन्नता होगी कि गुरुकुल कुरुक्षेत्र के प्राचार्य, आचार्य देवव्रत को अमेरिकन बायोग्राफिकल इन्स्टीच्यूट द्वारा २१ अगस्त २००२ को समाजसेवा के क्षेत्र मे अति सराहनीय योगदान के लिए अमेरिकन मैडल ऑफ ऑनर से सम्मानित किया गया है।

अमेरिकन बायोग्रफिकल इन्स्टीच्यूट अपनी गहरी एव पैनी नजर द्वारा अपने प्रतिनिधियो के माध्यम से समस्त विश्व मे निष्काम भाव से समाज सेवा के क्षेत्र मे कार्यरत समाज-सेवियो की खोज करता है तथा प्रतिवर्ष समस्त विश्व के ५००० व्यक्तियो का समाजसेवा के क्षेत्र मे चयन करता है। इन ५००० व्यक्तियो मे आचार्य देवव्रत का नाम भी चयन करते हुए इन्हे अमेरिकन मैडल ऑफ ऑनर से सम्मानित किया गया है।

ध्यान रहे आचार्य देवव्रत २१ वर्ष की अल्पायु मे ही गुरुकुल कुरुक्षेत्र के प्रधानाचार्य बने। अपने २१ वर्ष के कार्यकाल मे इन्होने गुरुकुल कुरुक्षेत्र का चहुमुखी विकास करते हुए भारतवर्ष में शिक्षा के क्षेत्र मे गुरुकुल कुरुक्षेत्र को अग्रणी पक्ति मे ला खडा करने मे महत्त्वपूर्ण योगदान किया। यहा के छात्र विभिन्न खेलो मे राष्ट्रीय स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त कर चुके हैं। जिम्नास्टिक, एथलेटिक्स, कबड्डी, फुटबाल, घुडसवारी, एन सी सी निशानेबाजी आदि खेलो मे भी कीर्तिमान स्थापित कर चुके हैं। यहा की गोशाला भारतवर्ष की उच्चकोटि की गोशाला कही जा सकती है, जिसमें २० किग्रा से कम दूध देनेवाली कोई गाय नहीं नहीं है और अधिकतम दूध ४० किग्रा तक देनेवाली गाय है।

आचार्य देवव्रत के प्रयासों द्वारा गुरुकुल कुरुक्षेत्र मे अति सुन्दर स्वामी श्रद्धानन्द योग एव प्राकृतिक चिकित्सालय की स्थापना कीगई जिसमे सैंकडो रोगी प्रतिदिन सफल उपचार लेकर असाध्य रोगो से मुक्त होरहे हैं। इस चिकित्सालय मे मरीजो हेतु आवासीय सेठ ज्योतिप्रसाद आरोग्य धाम का भी निर्माण किया गया है। इस समूचे कार्य पर लगभग ५० लाख रुपये लगाए गए हैं।

गुरुकुल कुरुक्षेत्र प्रबन्धक-समिति पूर्ण एकता भाव से आचार्य देवव्रत द्वारा किये जारहे प्रयासों की प्रशसा करती है तथा अमेरिकन बायोग्राफिकल इन्स्टीच्यूट का भी धन्यवाद करती है कि जिन्होने अमेरिकन मैडल ऑफ ऑनर से आचार्य देवव्रत को सम्मानित किया है।

आचार्य देवव्रत गुरुकुल कुरुक्षेत्र के कार्य को देखने की अतिरिक्त गावो के किसानो के समग्र विकास के लिए गत ८ वर्षो से निरन्तर सघर्षशील रहते हैं। गावो मे जाकर यज्ञ एव उपदेशो के माध्यम से अनेक लोगो को धूम्रपान, शराब आदि व्यसन छुडा चुके हैं। सामाजिक कुरीतियो से मुक्त करने के लिए निरन्तर प्रयासरत रहते हैं तथा वेदप्रचार के लिए विभिन्न स्थानो पर जाकर वैदिकधर्म का प्रचार करते हैं। —डॉ० सत्यवीर विद्यालकार, प्रधान, गुरुकुल कुरुक्षेत्र

विज्ञान वरदान है अभिशाप नहीं

–कल्याणी कुण्डु, एम ए, बी एड, प्राचार्य, कन्या गुरुकुल बचगाव गामड़ी, कुरुक्षेत्र

शिक्षा प्राप्त करते हुए हमने जब निबन्ध-लेखन के क्षेत्र मे प्रवेश किया, तब से लेकर उच्चतर कक्षाओ तक हम "विज्ञान वरदान है या अभिशाप" नामक निबन्ध को एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न के रूप मे पढते आये हैं। यही नहीं, अपनी संकुचित सोच के कारण विज्ञान को वरदान व अभिशाप दोनो सिद्ध करके एक बना बनाया निष्कर्ष लिखते आये हैं ! महर्षि दयानन्द के जीवन से प्रेरणा पाकर तथा आर्ष-साहित्य के अध्ययन की ओर उन्मुख होने से अज्ञानरूपी बादल सहज छटने लगे तथा औचित्य-बोध की प्रवृत्ति जागृत हुई। विभिन्न विषयो के बारे मे सही तथ्य सामने आये और एक ऐसा ही निष्कर्म उक्त निबन्ध के बारे मे बन पडा है।

ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के प्रथम मन्त्र की महर्षि दयानन्द द्वारा प्रणीत व्याख्या को पढते ही बुद्धि मे अनायास यह भाव उभरता है कि विज्ञान एक वरदान है, अभिशाप नहीं, क्योकि ज्ञान (वह भी विज्ञान-विशिष्ट ज्ञान) कभी अभिशाप नहीं हो ही नहीं सकता, हा अज्ञान अवश्य एक अभिशाप है, यह एक सर्वस्वीकार्य तथ्य है।

ईश्वर ने पदार्थो का निर्माण जीवो के भोग हेतु किया है। भोग द्वारा ही इस संसार की सार्थकता वा उपयोगिता सिद्ध हो सकती है। विद्वज्जनो का कर्त्तव्य है कि वे तात्त्विक ज्ञान को हृदयङ्गम कर सर्व-साधारण को प्राकृतापदाओ से बचाने के उपाय आविष्कृत करे तथा दुष्ट प्राणियो से बचाने हेतु विभिन्न साधनो, अस्त्र-शस्त्रो व उपकरणो का निर्माण करे। इस प्रकार ईश्वर-प्रदत्त ज्ञान का सृजनात्मक उपयोग करके विज्ञान को वरदान बनाये, अभिशाप नहीं। क्योकि रचनाकार (ईश्वर) की रचना को प्यार करके ही हम उसका स्नेह व अनुग्रह पा सकता हैं, अन्यथा नहीं !

हमारे गुरु ईश्वर का ज्ञान वा काव्य अजर, अमर व नित्य है। हम ज्ञान के उस अथाह स्रोत निराकार ब्रह्म की उपासना करके ही अपने ज्ञान-क्षेत्र को विस्तृत करके मानवोपयोगी बना सकते हैं। कुछ इस विध ही वैदिककाल का विद्वान् विज्ञान को बरतता था।

वैदिककाल का समाज पुरुषार्थ व परमार्थ से बनी आधारशिला पर टिका हुआ था। महाभारत काल तक पुरुषार्थ से किये जानेवाले विज्ञान के उपयोग भी आध्यात्मिक भावो से सरोबार थे। **'इदन्न मम'** यह मेरा नहीं है, यह भाव ही हमारे जीवन का मूलमन्त्र था। इस विध जो विज्ञान वह प्राप्त करता था, वह अह या स्वार्थ की भावना से कोसों दूर केवल **'सर्वजनहिताय'** होता था। हमारे कर्म ईश्वर को समर्पित होने से श्रेष्ठ कर्म थे। ईश्वर ने भी कर्मानुकूल उनके ज्ञान का खूब विस्तार किया और वह विज्ञान वरदान सिद्ध हुआ।

महाभारत तक के काल मे जो भी युद्ध लडे गये वे ग्रामो व नगरो से दूर वीरान व निर्जन मैदानी भागो मे लडे गये ताकि सामान्य जन को कोई हानि या कष्ट न हो। वैसे भी ये सभी युद्ध धर्म-युद्ध ही थे। महाभारत के युद्ध में भी अर्जुन जैसे अप्रतिम योद्धा ने स्पष्ट घोषणा की थी कि वे ऐसे विनाशकारी दिव्यास्त्रों का प्रयोग नहीं करेंगे जिस्से भावी पीढी के जीवो पर प्रतिकूल प्रभाव पडे। दूसरी और प्रथम व द्वितीय विश्वयुद्ध मे सोच इसके सर्वथा विपरीत थी। शहरो को निशाना बनाकर लाखो की सख्या मे जन-हानि की गयी। महाभारत के बाद अज्ञानता के कारण आर्यजाति की भावनाए कलुषित होने लगी। धर्म का मूलरूप विलुप्त होगया। लोग इन्द्रिय-सुख मे डूब गये। पुरुषार्थ व परमार्थ को हमने तिलाञ्जलि देदी। भारतवर्ष विज्ञान के क्षेत्र मे पिछडने लगा। दूसरे देश इस क्षेत्र मे आगे निकल गये। पर आगे निकलने पर भी उनकी हालत एक मार्ग भटके हुए मुसाफिर के समान थी। दूसरो का पथ-प्रदर्शक भारतवर्ष स्वय भी उस समय पथ-भ्रष्ट होचुका था। विज्ञान की जो इमारत खडी हुई उसमे स्वार्थ और अहकार की शिलाए रखी गयी। यह इमारत बार-बार बनी व ढही और इसने सामान्य जन के हितो को चकनाचूर कर दिया। जब यह इमारत बनती तो हमे लगता कि विज्ञान एक वरदान है, और जब यह ढहती तो वही विज्ञान अभिशाप लगता ! ऐसे मे परमपिता परमेश्वर की कृपा से देव दयानन्द जैसे युग-परिवर्तनकारी ऋषि का जन्म हुआ जिसने ससार को सत्य व सुख के मार्ग का बोध कराया। इसके बावजूद भारत या ससार दु खी है तो ऐसा हमारी मूर्खता के कारण है, इसमे विज्ञान का क्या दोष है ?

भारतवर्ष का आदर्श व प्रयास सर्वदा श्रेष्ठ बनने का रहा है, निम्न बनने का नहीं ! स्वार्थ व ईर्ष्या से उत्पन्न अज्ञानता के भाव तथा झूठी आन-बान के लोभ को त्यागकर विभिन्न मतावलम्बियो को वैदिक ज्ञान को स्वीकार करना होगा। वैदिकधर्म के अनुकूल आचरण कर ज्ञान को विस्तृत करना होगा जिसका प्रवाह अवरुद्ध होगया है। हमे तप द्वारा वेदशास्त्रो का अनुशीलन कर श्रेष्ठ व बलवान बनकर ससार को पुन जताना होगा कि विज्ञान वरदान है अभिशाप नहीं तथा विज्ञान का प्रदाता सच्चिदानन्दस्वरूप परमात्मा सभी जीवो का हित चाहता है, विनाश नहीं !

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ०१२६२–७६८७४, ७७८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ०१२६२–७७७२२) से प्रकाशित।
पत्र में प्रकाशित लेख सामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा।

भारत सरकार द्वारा रजि० न० २३२०७/७३
पंजीकरणसंख्या टैक/85-2/2000
☎ ०१२६२-७७७२२
सृष्टिसवत् १, ९६, ०८, ५३, १०३
विक्रमसवत् २०५९
दयानन्दजन्माब्द १७९

प्रधानसम्पादक : यशपाल आचार्य, सभामन्त्री
सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री
वर्ष २६ अंक ४५ २१ अक्तूबर, २००२ वार्षिक शुल्क ८०) आजीवन शुल्क ८००) विदेश में २० डॉलर एक प्रति १.७०

महर्षि दयानन्द के उपकार

अभयसिंह कुण्डू, एम ए द्वय (अग्रेजी, हिन्दी),
प्राध्यापक, विद्योत्तमा व०मा० विद्यालय, करनाल

महाभारत काल के बाद लगभग साढे पाच हजार वर्षों में मानवता पर उपकार करनेवालों की यदि सूचि बनाई जाये तो सबसे ऊपर वा प्रथम स्थान निश्चित रूप से देव दयानन्द का आता है। उन्नीसवीं शताब्दी में समाज मे व्याप्त अज्ञान के तिमिर को दूर करने के लिये ही दयानन्द जैसी महान् व पुण्यात्मा को टकारा की भूमि पर अवतरित किया था। जब ऋषि दयानन्द गुर्वाज्ञा शिरोधार्य करके कार्यक्षेत्र मे उतरे, उस समय देश मे चतुर्दिक्, अज्ञानता, नास्तिकता, पाखण्डो, आडम्बरो, अवतारवाद, पैगम्बरवाद, मूर्तिपूजा, इस्लाम व इसाईयत की आधी चल रही थी। प्रज्ञाचक्षु विरजानन्द की ज्ञानभट्टी मे तपा दयानन्द इन सब बुराइयो से अकेला जूझ गया था तथा उस आदित्य ब्रह्मचारी ने सभी झूठे व अधर्मी मतो व सम्प्रदायों की चूले हिलाकर वेदोक्त सत्यमार्ग का बोध अपने प्राणो की आहुति देकर कराया था। देवदयानन्द के उपकारों के लेखनीबद्ध करना सूर्य को दीपक दिखाना है, तो भी सक्षेप मे ऋषिकृत उपकारो को दो श्रेणियो मे वर्गीकृत किया जा सकता है :-

१ दैवी उपकार।

२ व्यावहारिक उपकार। इन्हे दैवी उपकारो का प्रभाव भी कहा जा सकता है।

१. दैवी उपकार–(क) सनातन सस्कृति की रक्षा–महाभारत काल के बाद कर्मकाण्ड व ज्ञानकाण्ड (मानव समाज के आधार) के अवरुद्ध हुए स्रोतस् को खोलने का श्रेय केवल महर्षि को जाता है, जिनसे प्रेरणा पाकर अनेक भावी आर्यविद्वानो ने भी इसमे अपने प्राणो की बाजी लगाकर भी सहयोग दिया। पुरुषार्थ व परमार्थ का तथा इनके लिये आवश्यक तप व श्रद्धा का बोध कराकर ऋषि ने विभिन्न मतो व सम्प्रदायो के क्रूर पजो मे सिसकती मानवता का उद्धार कर सनातन सस्कृति का रक्षण व वर्द्धन किया।

(ख) ईश्वरीय व ऋषि ज्ञान का रक्षण–धर्मप्रचारक, महाप्राण, महामानव, ज्योतिपुरुष दयानन्द ने ही चार वेदों, छ दर्शनो, ग्यारह उपनिषदो, ब्राह्मण ग्रन्थो आदि के मूल ज्ञान के रहस्यो को विशुद्धरूप मे समाज मे प्रकट कर सम्पूर्ण मानव जाति पर भारी उपकार किया है।

२. व्यावहारिक उपकार–(क) **राष्ट्र व विश्व का उपकार**–युगान्तकारी विचारक तथा भारतीय नवजागरण के प्रखर पुरोधा व आग्नेय पुरुष, उन्नायक सूत्रधार दयानन्द का स्पष्ट मन्तव्य था कि केवल वैदिकधर्म का अवलम्बन पाकर ही विश्व समुदाय सुखी हो सकता है, अत **"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्"** का उद्घोष देकर ऋषि दयानन्द ने सारी मानवता की भलाई सोची।

(ख) शिक्षा-धर्म-सशोधक, धर्माचार्य तथा महान् शिक्षाशास्त्री इस तथ्य से बखूबी अवगत थे कि सभी बालक-बालिकाओ को आर्ष-पद्धति से शिक्षित किये बिना व्यक्ति सर्वांगीण उन्नति नहीं कर सकता, अत उन्होने गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली पर बल दिया। हमे न केवल परा व अपरा विद्या का भेद सिखलाया अपितु पाठनीय व अपाठनीय ग्रन्थो तक का उल्लेख किया। वर्तमान कलियुग मे वेदो को सर्वविद्यामयत्व व सर्वविज्ञानमयत्व न केवल सिद्ध करनेवाला अपितु वैदिक ज्ञान की प्रोज्ज्वल पावनता, प्रकर्षता व उदात्तता सिद्ध करनेवाला महान् वेदाचार्य दयानन्द ही था।

(ग) स्वाधीनता–पराधीन भारत की दुर्दशा पर दयानन्द की आत्मा सिहर उठी थी, इसीलिये बहुमुखी कृतित्व तथा बहुआयामी व्यक्तितव के धनी देव दयानन्द आजादी के लिये आवाज उठानेवाले तथा स्वदेशी राज्य को सर्वोपरि बतानेवाले प्रथम महान् क्रान्ति थे, जिनकी प्रेरणा पाकर अनगिनत वीरो ने आजादी पाने हेतु प्राणो की बाजी लगाई।

(घ) राष्ट्रभाषा–सारे भारत को एकता के सूत्र मे बाधने हेतु सम्पर्क भाषा के रूप मे हिन्दी को अपनाने पर बल देनेवालो मे ऋषि का नाम अन्यतम है।

(ङ) नारी जाति–जितना उपकार ऋषि दयानन्द ने नारी-जाति का किया, उतना अन्य सब महापुरुष मिलकर भी न कर सके। नारी को शिक्षा तथा वेद पढने का अधिकार दिलानेवाला प्रथम व्यक्ति दयानन्द था।

(च) क्षुद्रोद्धार–पतितो को गले लगानेवाला, कर्म के आधार पर वर्ण व्यवस्था का पक्षपाती भी प्रथम व्यक्ति दयानन्द था।

(छ) आर्य–अनेकता मे एकता ढूढने तथा सर्वधर्मसमभाव का नारा लगानेवाली, सभी बुराइयो व कुरीतियो मे लिप्त कायर "हिन्दुओ" को "आर्य" बनने का आह्वान सर्वप्रथम देव दयानन्द ने ही किया था तथा एदतर्थ आर्यसमाज की स्थापना की थी जिसके दस नियमो जैसे नियम ससार के किसी मत या सम्प्रदाय के नहीं ! यही नहीं, सत्य की खोज मे भटकनेवालो के लिये सत्य का अर्थ प्रकाश करनेवाला विलक्षण अमरग्रन्थ "सत्यार्थप्रकाश" लिखकर दयानन्द ने भावी पीढियो को पतित होने से बचा लिया।

सक्षेप मे आयुपर्यन्त कुरीतियो, कुसस्कारो व मिथ्याचारो के विरुद्ध सघर्ष करने, महान् कर्मवीर, वीतराग साधक, लोकमगल के विधाता, वैदिक विचारधारा के पुनरुद्धारक, आर्यो के प्राचीन जीवनदर्शन के पुरस्कर्त्ता, भारतीय राष्ट्र-समाज-धर्म-सभ्यता व सस्कृति की अपूर्व व अतुलनीय रक्षा व सेवा करने, सम्पूर्ण मानवता की भलाई सोचनेवालो मे देव दयानन्द का नाम अन्यतम है। स्वामी ओमानन्द के अमर वाक्य को उद्धृत करना अतिशयोक्ति नहीं कि–"मेरे शरीर पर जितने रोम हैं यदि उतनी बार जन्म लू और ब्रह्मचारी रहकर केवल वैदिक धर्म का प्रचार करू तब भी ऋषि दयानन्द के ऋण से उऋण नहीं हो सकता।

वैदिक-स्वाध्याय

वह सर्व हितकारी है

इन्द्रश्च मृडयाति नो, न नः पश्चात् अघं नशत्।
भद्रं भवाति न पुरः।। ऋ० २।४१।११।।

शब्दार्थ—(इन्द्र.) परमेश्वर (च) निश्चय से (नः) हमें **(मृडयाति)** सुख ही देते हैं। (न) हमारे **(पश्चात्)** पीछे **(अघं)** पाप **(न नशत्)** न लगे (न पुरः) हमारे सामने **(भद्रं)** भद्र, कल्याण ही **(भवाति)** होये, होता रहे।

विनय—भाइयो! इसमे सन्देह नहीं है कि इन्द्र भगवान् तो हमें सदा सुख ही देरहे हैं, निरन्तर हमारा कल्याण ही कर रहे हैं। फिर भी जो असुख हमारे सामने आता है, हमे दु ख देखना पडता है, उसका कारण यह है कि हमने अपने पीछे पाप को लगा रखा है और पाप का परिणाम दु ख होना अटल है, अनिवार्य है। यदि हमारे पीछे पाप न लगा हो तो हमारे सामने भद्र ही भद्र आता जाये। जब हम कोई पाप करते हैं तो समझते हैं कि वह वहीं खतम होगया। हम समझते हैं कि दो घटे पहिले किया हुआ हमारा पाप तभी दो घटे हुए उसके कर्म के साथ समाप्त होचुका, अब उसका हमसे कुछ सम्बन्ध नहीं। इस तरह हम पाप करके आगे चलते जाते हैं और चाहते हैं तथा आशा करते हैं कि आगे-आगे हमारे लिये भद्र ही भद्र आता जाये। पर हमें मालूम रहना चाहिये कि हमारा किया हुआ पाप चाहे हमारी आखो के सामने नहीं आ खडा होता हो पर वह नष्ट भी नहीं होता है। वह तो हमारे पीछे लग जाता है और तब तक हमारा पीछा नहीं छोडता है जब तक कि वह हमारे आगे अभद्र, अकल्याण व दु ख के रूप मे आकर हमे फल नहीं भुगा लेता। अत याद रखिये कि हमे न दिखाई देता हुआ, हमारे पीछे रहता हुवा ही हमारा पाप एक दिन हमारे आगे अभद्र व क्लेश के रूप मे आता है और अवश्य आता है, जैसे कि हमारा हरेक पुण्य भी पीछे रहता हुआ, दिखाई न देता हुवा, एक दिन हमारे आगे भद्र के रूप मे आता है। यह हमारी कितनी मूर्खताभरी इच्छा है कि हम चाहते तो यह हैं कि हमारा सदा भला ही होये, हमारे सामने सदा सुख, स्वास्थ्य, समृद्धि आदि ही आते जाये, पर साथ ही हम पाप करना भी नहीं छोडना चाहते! यह कैसे हो सकता है ? हमारे पीछे तो हमारा नाश करता हुआ हमारा पाप चल रहा होता है और हम मूर्खतापूर्ण आशा मे यह प्रतीक्षा करते होते हैं कि हमारे सामने सुख आता होगा। यह असभव है। अत आओ, आज से हम कम से कम आगे के लिये पाप करना तो सर्वथा त्यागदे। यदि हम विशेष पुण्य नहीं कर सकते तो कम से कम इतना तो सकल्प करले कि हम अब से एक भी पाप अपने से न होने देगे। इतना करने से भी इन्द्र भगवान् की दया से हमारे शीघ्र ही सुदिन आजायेगे, पाप का पीछा छूट जाने से भद्र के लिये मार्ग साफ होजायेगा। पर यदि हम इतना भी न कर सके तब तो इन्द्रदेव की सुख व कल्याण की वर्षा मे रहते हुए भी हमारे भाग्य में तो दु ख ही दु ख रहेगा। (वैदिक विनय से ३१ वैशाख)

महर्षि दयानन्द के उपकार

—कल्याणी कुण्डू, एम ए, बी एड., प्राचार्य,
कन्या गुरुकुल बचगांव गामड़ी, कुरुक्षेत्र

कैसे गिने गिनाए, ऐ ऋषिवर तेरे उपकार !
आर्यों की डूबती नैया को, तुम लगा गये पार !!

१. सत्य-ज्ञान की उठा पताका, ऐसी दहाड़ लगाई !
लुटी हुई अपनी अस्मिता की, याद फिर दिलाई !!
ज्ञान के स्रोतस खोल पुन., सरिता ऐसी बहाई !
मुरझाए मानवता के क्षुप की, हर कली मुस्काई !!
कुमलाहे विद्या-उपवन में, फिर से आई बहार,
कैसे गिनें गिनाएं.. ..

२ ज्ञान का स्रोत केवल वेद हैं, बात आपने समझाई !
श्रेष्ठ जनों का मार्ग यही है, सनातन संस्कृति दोहराई !!
भटके जन को झलक आपने, उसकी कुछ यों दिखलाई !
शिक्षित भाव-विभोर हुए, बुद्धि मानवों की चकराई !!
सज्जन झूमे दुर्जन सहमे, बुद्धि दानवों की चकराई !
कैसे गिनें गिनाएं.......

३. नींव बना मजबूत सृजन की, स्वयं संभाली पाग !
खुद को खपाया देश जगाया, तेरा ऐसा अनुपम त्याग !!
पराधीन थे स्वाधीन बनाये, चमकाया हमारा भाग !
आर्यों के दिल में लगे गूजने, प्रभु व राष्ट्रभक्ति के राग !!
जगद्गुरु भारत के गल मे डाला, पुन आन-बान का हार,
कैसे गिनें गिनाएं.... .

४. कुरीतिया भस्मीभूत हुईं, ज्ञान-ज्योत जो तूने जलाई !
सज्जन-रक्षा दुर्जन-ताडन हेतु, हिम्मत आर्यों की बढाई !!
'ऋषि दर्शनात्' पद चरितार्थ कर, ऋषि की पदवी पाई !
विलक्षण "सत्यार्थप्रकाश" लिखकर, मानवता की करी भलाई !!
मानव हृदय तृप्त हो गये, बहाई ज्ञान-गग की धार,
कैसे गिनें गिनाएं. ...

५ शब्दबद्ध हो नहीं सकती, ऋषि तेरे उपकारों की कहानी !
भावबद्ध होकर रहती सग, चैन पाती आर्यों की रूहानी !!
डूबती मिटती रहेगी स्वयं, वर्तमान प्रचलित शिक्षा !
सनातन रहेगी ऐ देव दयानन्द, केवल तेरी ही दीक्षा !!
तेरे उपकारो से उपकृत् हैं, दुनिया के नर-नार,
कैसे गिने गिनाए .

वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज बडा बाजार 'शहर' का ८६वा वार्षिकोत्सव १६ सितम्बर से २२ सितम्बर तक आयोजित किया गया।

धर्म के स्वरूप को सही अर्थो मे समझने व उसे जीवन पद्धति बनाने के लिए प० रामचन्द्र आर्य ने सरल व प्रेरणादायी आह्वान किया, धर्म के माध्यम से ही मानव अपने जीवन को सार्थक तथा ससार को स्वर्गमय बना सकता है।

सत्सग का अर्थ है सत्पुरुषो का सग तथा स्वाध्याय का अर्थ वेदाध्ययन। परमात्मा दोषो से रहित और सद्गुणो का भण्डार है। जो उपासना द्वारा उसके गुणो को धारण करता है वह सत्पुरुष है, उसका सग सत्सग है। साधु भी वह जो दोषो का क्षीण कर चुका हो। केवल जटा बढाने, मुडवाने, भगवा वस्त्र पहनने मात्र से साधु नहीं होजाता।

प्रसिद्ध दार्शनिक विद्वान् प्रो० रत्नसिंह द्वारा 'सुकर्मा' बनने की प्रेरणा कीगई। अर्थात् शुभकर्मो को करने की प्रेरणा करनेवाला, शुभकर्मो के लिये आह्वान करनेवाला, शुभकामनाओ हेतु सहयोग देनेवाला, शुभकर्मो को सम्पन्न करने हेतु सहयोग लेनेवाला और अन्धविश्वासो को दूर करनेवाला यह सभी 'सुकर्मा' कहलाते हैं। यह सब आर्यसमाज जैसे सत्य पर आधारित सार्वभौम सस्था के द्वारा ही सम्भव है।

आर्यसमाज के ८वे नियम "अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए" के आधार पर ब्र० हरिप्रसाद जी ने वेदमन्त्रो व दर्शनों के माध्यम द्वारा विद्याप्राप्ति और उसे उपयोगी बनाने के लिए श्रवण, मनन, निदिध्यासन, साक्षात्कार के चार चरणो की सरल व्याख्या की।

आर्यसमाज जैसी सत्य सिद्धान्तों पर आधारित सार्वभौम सस्था की ओर सबकी निगाह आज भी हैं कि वह सबका मार्ग प्रशस्त करे। स्वामी विज्ञानानन्द जी ने अपने ओजस्वी व्याख्यान द्वारा प्रेरित किया कि आर्यसमाज ही वर्तमान मे फैली अविद्या और अज्ञानता के अधकार को वेदरूपी सूर्य के प्रकाश से दूर कर सकता है जो कि उसका उद्देश्य भी है। अन्य किसी मत, सम्प्रदाय मे यह सामर्थ्य नहीं है। आवश्यकता इस बात की है कि व्यर्थ के विवादो मे समय न गवा कर सृजनात्मक उद्देश्यपूर्ण कार्यो को सम्पन्न किया जावे।

उत्सव के समापन पर सभी विद्वद्गणो, भजनोपदेशकों का समारोहपूर्वक कृतज्ञता ज्ञापन के साथ-साथ भावभीना सत्कार भी किया गया। १६ सितम्बर से आरम्भ हुआ ब्रह्म एव देवयज्ञों से समन्वित आर्यसमाज 'शहर' बडा बाजार सोनीपत का यह उत्सव २२ सितम्बर को रात्रि ११ १५ सम्पन्न हुआ।

—सुदर्शन आर्य, मन्त्री

आर्यसमाजों के लिए सूचना

प० रामसुफल शास्त्री लगभग दो वर्षो से स्वतन्त्र उपदेशक के रूप में आर्यसमाज का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। जो भी आर्यसमाजे उन्हे अपने वार्षिक उत्सव, कथा, प्रवचन तथा वेदपारायण आदि विशेष यज्ञों मे बुलाना चाहे वे निम्न पते पर सम्पर्क करें।

—पं० रामसुफल शास्त्री "वैदिक प्रवक्ता" शास्त्री भवन, लाल सडक, हांसी-१२५०३३ (हरयाणा) दूरभाष : ०१६६३-५५१२५ (नि०)

महर्षि दयानन्द का मन्तव्य

वेदों की उत्पत्ति

डा. सुदर्शनदेव आचार्य, अध्यक्ष संस्कृत सेवा संस्थान, हरिसिंह कालोनी, रोहतक

(गतांक से आगे)

मनुष्यों के द्वारा वेदरचना असम्भव

जिज्ञासु—वेदों के ईश्वर से उत्पन्न होने की कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि मनुष्य क्रमश ज्ञान बढाकर पश्चात् वेद का पुस्तक भी बना लेगे।

सिद्धान्ती—मनुष्य वेद का पुस्तक कभी नहीं बना सकते। इसमें निम्नलिखित हेतु हैं—(१) बिना कारण के कार्य की उत्पत्ति होना असम्भव है। जैसे जगली मनुष्य सृष्टि को देखकर भी विद्वान् नहीं होते और यदि उनको शिक्षक मिल जाये तो विद्वान् होजाते हैं।

(२) अब भी किसी से पढे बिना कोई भी विद्वान् नहीं होता है। इसलिये यदि ईश्वर सृष्टि के प्रारम्भ मे अग्नि आदि ऋषियो को वेदविद्या न पढाता तो और वे अन्य ब्रह्मा आदि को न पढाते तो सब लोग अविद्वान् ही रह जाते।

(३) जैसे किसी बालक को जन्म से एकान्त देश मे तथा अविद्वानो वा पशुओ के सग मे रख दिया जाये तो वह जैसा सग होगा वैसा ही बन जायेगा। जगली भील आदि मनुष्य इसका उदाहरण हैं।

(४) जब तक आर्यावर्त देश से शिक्षा नहीं गई थी तब तक मिश्र, यूनान और यूरोप आदि देशों मे रहनेवाले मनुष्यों मे कुछ भी विद्या नहीं थी।

(५) इग्लैंड के कुलुम्बस आदि पुरुष जब तक अमरीका मे नहीं गये थे तब तक वे लोग भी हजारो-लाखो- करोडो वर्षों से मूर्ख अर्थात् विद्याहीन थे। पुन सुशिक्षा के पाने से विद्वान् होगये हैं।

(६) वैसे सृष्टि के प्रारम्भ मे ईश्वर से विद्या-शिक्षा की प्राप्ति से उत्तरोत्तरकाल में विद्वान् होते आये हैं। जैसा कि योगशास्त्र मे लिखा है- 'स एष पूर्वेषामपि गुरु कालेनानवच्छेदात्' अर्थात् जैसे वर्तमान समय मे हम लोग अध्यापको से पढकर ही विद्वान् होते हैं, वैसे ईश्वर सृष्टि के प्रारम्भ में उत्पन्न हुये अग्नि आदि ऋषियों का गुरु है अर्थात् उन्हे पढानेवाला है।

(७) जैसे जीव सुषुप्ति और प्रलयकाल मे ज्ञानरहित होजाते हैं वैसा ईश्वर नहीं होता क्योकि उसका ज्ञान नित्य है। इसलिये यह निश्चित जानना चाहिये कि निमित्त के बिना नैमित्तिक अर्थ कभी सिद्ध नहीं होता है। (स०प्र० समु० ७)

ऋषियों द्वारा वेदरचना असम्भव

जिज्ञासु—ईश्वर ने अग्नि आदि ऋषियो को ज्ञान दिया होगा और उस ज्ञान से अग्नि आदि ऋषियों ने वेद बना लिये होगे।

सिद्धान्ती—अग्नि आदि ऋषियों ने वेदों की रचना नहीं की। इस विषय में निम्नलिखित हेतु हैं—

(१) ज्ञेय के बिना ज्ञान नहीं होता है। गायत्री आदि छन्द, षड्ज आदि तथा उदात्त, अनुदात्त, स्वरित स्वरो के ज्ञानपूर्वक गायत्री आदि छन्दों के निर्माण करने में सर्वज्ञ ईश्वर के बिना किसी का भी सामर्थ्य नहीं है कि इस प्रकार का सर्वज्ञान से युक्त शास्त्र बना सके।

(२) वेद को पढने के पश्चात् व्याकरण, निरुक्त और छन्द आदि ग्रन्थ ऋषि-मुनियो ने विद्याओ के प्रकाश के लिये बनाये हैं। इन्हीं के अनुसार सबको चलना चाहिये। जो कोई किसी से पूछे कि तुम्हारा क्या मत है तो यही उत्तर देना चाहिए कि हमारा मत वेद है अर्थात् वेदों में जो कहा है हम उसको मानते हैं।

जैसे माता-पिता अपने सन्तानो पर कृपादृष्टि कर उनकी उन्नति चाहते हैं, वैसे ही ईश्वर ने सब मनुष्यो पर कृपा करके वेदों को प्रकाशित किया है। जिससे मनुष्य अविद्या अन्धकार और भ्रमजाल से छूटकर विद्या और विज्ञान रूप सूर्य को प्राप्त होकर अ.ति आनन्द मे रहे और विद्या और सुखो की वृद्धि करते जाये। (स०प्र० समु० ७)।

स्वाभाविक ज्ञान से वेदरचना नहीं

जिज्ञासु—ईश्वर ने मनुष्यो को स्वाभाविक ज्ञान दिया है। वह सब ग्रन्थो से उत्तम है क्योकि उसके बिना वेदो के शब्द, अर्थ और सम्बन्ध का ज्ञान कभी नहीं हो और उस ज्ञान की क्रम से वृद्धि होगी तब मनुष्य लोग विद्या पुस्तको को भी रच लेगे।

सिद्धान्ती—मनुष्य अपने स्वाभाविक से वेदों की रचना नहीं कर सकते। इसमे निम्नलिखित हेतु हैं—

(१) जो प्रथम बालक को एकान्त मे रखने का और दूसरा वनवासियो का दृष्टान्त कहा था, क्या उनको ईश्वर ने स्वाभाविक ज्ञान नहीं दिया है ? वे स्वाभाविक ज्ञान से विद्वान् क्यो नहीं होते। इससे यह बात निश्चित है कि ईश्वर का किया उपदेश जो वेद है, उसके बिना किसी मनुष्य को यथार्थ ज्ञान नहीं हो सकता।

(२) जैसे हम लोग वेदो के पढे हुये विद्वानों की शिक्षा और उनके किये ग्रन्थो के पढे बिना पण्डित नहीं होते वैसे ही सृष्टि के आदि मे यदि ईश्वर वेदो का उपदेश नहीं करता तो आज पर्यन्त किसी मनुष्य को धर्म आदि पदार्थो की यथार्थ विद्या नहीं होती। इससे क्या जाना जाता है कि विद्वानो का शिक्षा और वेद पढे बिना केवल स्वाभाविक ज्ञान से किसी मनुष्य का निर्वाह नहीं हो सकता।

(३) जैसे हम लोग अन्य विद्वानो से वेदादिशास्त्रों के अनेक प्रकार के विज्ञान को ग्रहण करने के पश्चात् ही ग्रन्थों को भी रच सकते हैं वैसे ईश्वर के ज्ञान की अपेक्षा सब मनुष्यो के लिये आवश्यक है क्योंकि सृष्टि के आरम्भ मे पढने और पढाने की कुछ भी व्यवस्था न थी तथा विद्या का कोई ग्रन्थ भी नहीं था। उस समय ईश्वर के किये वेद-उपदेश के बिना, विद्या के न होने से कोई मनुष्य ग्रन्थ की रचना कैसे कर सकता। क्योंकि सब मनुष्यो को सहायकारी ज्ञान मे स्वतन्त्रता नहीं है और स्वाभाविक ज्ञानमात्र से विद्या की प्राप्ति किसी को नहीं हो सकती। इसलिये ईश्वर ने सब मनुष्यो के हित के लिये वेदो की उत्पत्ति की है।

(४) और जो यह कहा कि अपना स्वाभाविक ज्ञान सब वेदादिग्रन्थो से श्रेष्ठ है, भी अन्यथा है। क्योंकि स्वाभाविक ज्ञान है वह साधन कोटि मे है। जैसे मन के संयोग के बिना आख से कुछ भी नहीं दिखाई देता तथा आत्मा के सयोग बिना मन से भी कुछ नहीं होता वैसे स्वाभाविक ज्ञान है। वह वेद और विद्वानो की शिक्षा ग्रहण करने मे साधनमात्र ही है और वह पशुओ के समान व्यवहार का भी साधन है परन्तु स्वाभाविक ज्ञान धर्म अर्थ काम और मोक्ष का साधन स्वतन्त्रता से कभी नहीं हो सकता। जब ईश्वर ने प्रथम वेद रचे हैं उनको पढने के पश्चात् ग्रन्थ रचने का सामर्थ्य किसी मनुष्य को हो सकता है। उसके पढने और ज्ञान के बिना कोई भी मनुष्य विद्वान् नहीं हो सकता है।

जैसे इस समय शास्त्र को पढकर, किसी का उपदेश सुनकर और मनुष्यो का परस्पर व्यवहार देखकर ही मनुष्यो को ज्ञान होता है, अन्यथा कभी नहीं।

जैसे किसी मनुष्य के बालक को जन्म से एकान्त मे रखकर और उसे अन्न और जल युक्ति से देवो। उसके साथ भाषण आदि व्यवहार लेशमात्र भी कोई मनुष्य न करे, कि जब तक उसका मरण न हो, तब तक वह उसको उसी प्रकार से रखे तो उसे मनुष्यपने का ज्ञान नहीं हो सकता।

जैसे बडे वन मे मनुष्यो को बिना उपदेश के यथार्थ ज्ञान नहीं होता किन्तु पशु की भांति उनकी प्रवृत्ति देखने मे आती है वैसे ही वेदो के उपदेशो के बिना भी सब मनुष्यो की प्रवृत्ति होजाती। फिर ग्रन्थ रचने के सामर्थ्य का तो क्या कहना है।

इससे वेदों को ईश्वर के रचित मानने मे ही कल्याण है, अन्यथा नहीं।

(ऋ०भा०भू० वेदोत्पत्ति विषय) (क्रमश)

दहेज, नशाखोरी, भ्रूणहत्या एव भ्रष्टाचार के विरुद्ध सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के तत्त्वावधान मे

३ नवम्बर २००२ रविवार को प्रात: १० बजे रोहतक में

विराट् युवा सम्मेलन एवं अड़तीसवां वैदिक सत्संग

पांच हजार युवक तथा युवतियां संकल्प लेंगे

आप भी अपने साथियों सहित पधारकर सम्मेलन में शामिल हों।

बहनो तथा भाइयो !

आर्यसमाज के सशक्त युवा सगठन सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् की ओर से ३ नवम्बर २००२ रविवार को प्रात १० बजे से हरयाणा के प्रसिद्ध नगर रोहतक मे एक विराट् युवा सम्मेलन का आयोजन किया जारहा है जिसमे पाच हजार युवा दहेज, नशाखोरी, भ्रूणहत्या व भ्रष्टाचार को मिटाने के लिए एक साथ सकल्प लेगे। यह दृश्य देखने लायक होगा। सम्मेलन को वयोवृद्ध आर्य सन्यासी स्वामी ओमानन्द, युवको के प्रेरणास्रोत स्वामी इन्द्रवेश, क्रान्तिकारी सन्यासी स्वामी अग्निवेश, ओजस्वीवक्ता डा० वेदप्रताप वैदिक, डॉ० रामप्रकाश व राममेहर एडवोकेट आदि नेता युवको के प्रेरणा एव उद्बोधन देगे। इनके अतिरिक्त भारत के उपराष्ट्रपति माननीय श्री भैरोसिह शेखावत एव पूर्व प्रधानमत्री श्री चन्द्रशेखर जी को भी आमन्त्रित किया गया है। हरयाणा मे सामाजिक क्रान्ति लाने के लिए युवा पीढी को सगठित करना अत्यावश्यक है। अत आपसे प्रार्थना है कि आप दलबल के साथ सम्मेलन मे पधार कर अपनी भागीदारी करे।

निवेदक

जगवीरसिह	विरजानन्द	कैप्टन अभिमन्यु	प्रिं० आजादसिह	सन्तराम आर्य
अध्यक्ष	महामन्त्री	स्वागताध्यक्ष	सहसयोजक	सयोजक

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद दयानन्दमठ रोहतक (हरयाणा)

आर्यसमाज के उत्सवों की सूची

१	आर्यसमाज कालका जिला पचकूला	२३-२७ अक्तूबर ०२
२	आर्यसमाज शेखुपुरा खालसा जिला करनाल	२५-२७ अक्तूबर ०२
३	गुरुकुल कुरुक्षेत्र	२५-२७ अक्तूबर ०२
४	कन्या गुरुकुल पचगाव जिला भिवानी	२६-२७ अक्तूबर ०२
५	आर्यसमाज पालडा जिला महेन्द्रगढ	२६-२७ अक्तूबर ०२
६	आर्यसमाज मोखरा जिला रोहतक	३० अक्तू० से १ नव० ०२
७	आर्यसमाज खाण्डा खेडी जिला हिसार	३१ अक्तू० से २ नव० ०२
८	आर्यसमाज कासण्डा जिला सोनीपत	२ से ४ नवम्बर ०२
९	आर्यसमाज खरड (पजाब)	१५-१७ नवम्बर ०२
१०	आर्यसमाज जवाहरनगर पलवल कैंप, जिला फरीदाबाद	२२-२४ नवम्बर ०२
११	आर्यसमाज थर्मल कालोनी पानीपत	२९ नव० से १ दिस० ०२
१२	आर्यसमाज बसई जिला गुडगाव	६ से ८ दिसम्बर ०२

—रामधारी शास्त्री, सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता

वेद में प्राण=परमात्मा की महिमा

–स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती, आर्ष गुरुकुल कालवा

अथर्ववेद एकादश काण्ड के चतुर्थ सूक्त का देवता प्राण है। प्राण यहा परमेश्वर अर्थ मे लिया है। वेदान्त शास्त्र के निर्माता व्यासजी महाराज लिखते हैं–"अत एव प्राण:" जगत् की उत्पत्ति, स्थिति, प्रलयादि कर्त्ता होने से प्राण शब्द का अर्थ परमात्मा जानना चाहिये न कि प्राणवायु। इसलिये सब चेष्टाओ का कारण होने से परमात्मा का नाम प्राण है। यहा इस सूक्त के ६-७ मन्त्र प्रस्तुत कर रहे हैं, पाठकगण लाभ उठायेंगे।

प्राणाय नमो यस्य सर्वमिद वशे।

यो भूत. सर्वस्येश्वरो यस्मिन्त्सर्वं प्रतिष्ठितम्।। (अथर्व० ११।४।१)

अर्थ-(प्राणाय नम) चेतनस्वरूप प्राणतुल्य सर्वप्रिय और सबको प्राण देनेवाले परमेश्वर को हमारा नमस्कार है (यस्य सर्वमिद वशे) जिस प्रभु के वश मे यह सब जगत् वर्तमान है, (य भूत) जो सत्य एकरस परमार्थस्वरूप और (सर्वस्य ईश्वर) सबका स्वामी है (यस्मिन्) जिस आधारस्वरूप प्रभु मे (सर्व प्रतिष्ठिम्) यह सब चराचर जगत् स्थिर होरहा है।

भावार्थ-हे परमपूजनीय चैतन्यमय परमप्रिय परमात्मन्! आपको हमारा नमस्कार है। अनेक ब्रह्माण्ड रूप जगत् के स्वामी आप ही हैं। आपके ही अधीन यह सब कुछ है और आप ही इसके अधिष्ठान हैं, क्षण-भर भी आपके बिना यह जगत् नहीं ठहर सकता।

यदा प्राणो अभ्यवर्षीद् वर्षेण पृथिवीं महीम्।

पशवस्तत् प्र मोदन्ते महो वै नो भविष्यति।। (अथर्व० ११।४।५)

अर्थ-(यदा) जब (प्राण) जीवनदाता परमेश्वर ने (वर्षेण) वर्षा द्वारा (महीम्) बडी (पृथिवीम्) पृथिवी को (अभ्यवर्षीत्) सींच दिया (तत्) तब (पशव) 'पश्यन्तीति पशव' आखो से देखनेवाले जीवमात्र (प्रमोदन्ते) बडा हर्ष मनाते हैं। (न) हमारी (मह) बढती (वै) अवश्य (भविष्यति) होगी।

भावार्थ-प्राणिमात्र का जीवनदाता परमेश्वर जब वर्षा द्वारा पृथिवी को पानी से तर कर देते हैं तो मनुष्यादि प्राणी बडे हर्ष को प्राप्त होते हैं कि इस वर्षा से अनेक प्रकार के सुन्दर अन्न, फल व फूल उत्पन्न होकर हमे लाभदायक होगे।

नमस्ते प्राण अस्त्वायते नमो अस्तु परायते।

नमस्ते प्राण तिष्ठत आसीनायोत ते नम।। (अथर्व० ११।४।।)

अर्थ-हे (प्राण) जीवनदाता परमेश्वर (आयते) आते हुये पुरुष के हित के लिये (ते नम) आपको नमस्कार हो (परायते) बाहर जाते हुये पुरुष के हित के लिये (ते नम) आपको नमस्कार हो। (तिष्ठते) खडे हुये पुरुष के हित के लिये (नम) आपको नमस्कार हो (उत) और (आसीनाय) बैठे हुये पुरुष के हित के लिये (ते नम) आपको नमस्कार हो।

या ते प्राणप्रिया तनूर्या ते प्राण प्रेयसी।

अथो यद् भेषज तव तस्य नो धेहि जीवसे।। (अथर्व० ११।४।९)

अर्थ-(या ते प्राण प्रियातनू) हे प्राणप्रिय परमात्मन्! जो आपको स्वरूप प्यारा है (या उ ते प्राण प्रेयसी) और जो आपका स्वरूप अतिप्रिय है (अथो यद् भेषज तव) और आपका अमृतत्व प्रापक जो औषध है (तस्य नो धेहि जीवसे) वह हमे जीवन के लिये दो।

भावार्थ-हे परम प्यारे परमात्मन्। ससार-भर मे आप जैसा कोई प्यारा नही है, प्यारे से भी प्यारे आप हैं। जो महापुरुष आपसे प्यार करते हैं, उनको अमृतत्व नाम मोक्ष का साधन अपनी अनन्य भक्ति और ज्ञानरूप औषध का दान आप करते है, जिसको प्राप्त होकर वे महात्मा सदा आनन्द मे मग्न रहते हैं।

प्राण प्रजा अनु वस्ते पिता पुत्रमिव प्रियम्।

प्राणो ह सर्वस्येश्वरो यच्च प्राणति यच्च न।। (अथर्व० ११।४।१०)

अर्थ-(पिता पुत्रम् इव प्रियम्) जैसे दयालु पिता अपने प्यारे पुत्र को वस्त्र से आच्छादन करता है, वैसे ही (प्राण) चेतनस्वरूप प्राणदेव प्रभु (प्रजा अनुवस्ते) मनुष्य, पशु, पक्षी आदि प्रजाओ के शरीर मे व्याप्त होकर बस रहा है, (यत् च प्राणति) और जो जगम वस्तु चलन आदि व्यापार कर रही है (यत् च न) और जो स्थावर वस्तु वह व्यापार कर रही है (यत् च न) और जो स्थावर वस्तु वह व्यापार नहीं करती, (प्राण ह सर्वस्य ईश्वर) उस चर-अचर स्वरूप सब जगत् का चेतनस्वरूप प्राण ही ईश्वर है, अर्थात् सबका प्रेरक स्वामी है।

भावार्थ-हे परमेश्वर! आप चराचर सब जगत् मे व्याप रहे हैं, ऐसी कोई वस्तु वा स्थान नहीं जहा आपकी व्याप्ति न हो, आप ही सारे ससार के कर्त्ता हर्त्ता और स्वामी हैं, सबकी क्षण-क्षण चेष्टाओं को देख रहे हैं, आपसे किसी की कोई बात भी छिपी नहीं, इसलिये हमे सदाचारी और अपना प्रेमी बनावे जिसको देखकर आप प्रसन्न होवे।

प्राणो मृत्यु. प्राणस्तक्मा प्राण देवा उपासते।

प्राणो ह सत्यवादिनमुत्तमे लोक आदधत्।। (अथर्व० ११।४।११)

अर्थ-(प्राणो मृत्यु) प्राण ही मृत्यु है। (प्राण तक्मा) प्राण ही आनन्द देनेवाला है। (देवा. प्राण उपासते) विद्वान् लोग सबके जीवन हेतु ईश्वर की उपासना करते हैं (प्राण ह) प्राण ही निश्चय से (सत्यवादिनम्) सत्यवादी मनुष्य को (उत्तमे लोके) उत्तम शरीर मे अथवा श्रेष्ठ स्थान मे (आ दधत्) धारण कराता है।

भावार्थ-परमेश्वर ही हमारे जन्म मृत्यु का कर्त्ता और अनेकविध सुख का दाता है। प्राणरूप परमेश्वर ही सत्यवादी, सत्यकर्त्ता, सत्यमानी और सच्चाई के प्रचार करनेवाले पुरुष को उत्तम लोक प्राप्त हो कराता है। लोक शब्द का अर्थ उत्तम शरीर, उत्तम ज्ञान और उत्तम स्थान है। यह बात निश्चित है कि ऐसे पुरुष को परमात्मा उत्तमलोक आदि प्राप्त कराता है।

प्राणो विराट् प्राणो देष्ट्री प्राण सर्व उपासते।

प्राणो ह सूर्यश्चन्द्रमा: प्राणमाहु. प्रजापतिम्।। (अथर्व० ११।४।१२)

अर्थ-(प्राण विराट्) प्राण ही सर्वत्र विशेष रूप से प्रकाशमान है। (प्राण देष्ट्री) प्राण सब प्राणियो को अपने-अपने व्यापार मे प्रेरणा कर रहा है, (प्राण सर्वे उपासते) ऐसे प्राण परमात्मा की सब लोग उपासना करते हैं, (प्राण ह सूर्य) प्राण ही सब जगत् का प्रकाशक और प्रेरक सूर्य है, (चन्द्रमा) सबको आनन्द देनेवाला प्राण ही चन्द्रमा है (प्राणम् आहु प्रजापतिम्) वेद और वेदज्ञाता महापुरुष इस प्राण को ही सब प्रजाओ का जनक और स्वामी कहते हैं।

भावार्थ-हे चेतनदेव जगत्पते प्रभो! आप सब स्थानो मे प्रकाशमान होरहे हैं, आप ही सब प्राणियो को अपने-अपने व्यापारो मे प्रेर रहे हैं, आपकी ही सब विद्वान् पुरुष उपासना करते हैं, आप ही सब जगत् के प्रकाशक और प्रेरक होने से सूर्य और आनन्ददायक होने से चन्द्रमा कहलाते हैं। सब महात्मा लोग आपको ही सब प्रजाओ का कर्त्ता और स्वामी कहते हैं।

आर्यसमाज के प्रसिद्ध उपदेशक स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज

स्वर्गीय स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज का सोलहवा स्मृति दिवस १९-२० सितम्बर २००२ को महात्मा फूलू साध गोशाला उचाना खुर्द (जीन्द) मे हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज स्वामी गोरक्षानन्द जी महाराज के दीक्षा गुरु थे तथा उनको सस्कृत, दर्शन व महर्षि दयानन्द के ग्रन्थो का अध्ययन कराया। स्वामी ब्रह्मानन्द जी महान् कवि थे उन्होने ईश्वरभक्ति आदि के भजनो का निर्माण किया और कई शिष्य भी तैयार किये। आपने जागसी (सोनीपत), धरौदी (जीन्द) आदि गावो मे आश्रम बनाकर आर्यसमाज का कार्य किया। स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज की वृद्धावस्था मे स्वामी गोरक्षानन्द जी ने पूर्णरूप से सेवा की। आप ईश्वर, वेद, यज्ञ, गौ के अनन्य भक्त थे। आपने गोशाला उचाना खुर्द मे अपने व्यय से चारो वेदो से यज्ञ किये तभी से प्रतिवर्ष यज्ञ एक वेद से होता है। आपकी स्मृति मे १९ सितम्बर रात्रि मे ८ से १ बजे तक स्वामी गोरक्षानन्द जी महाराज के उद्बोधन के साथ कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। मच का सचालन स्वामी जी के शिष्य स्वामी सुखानन्द जी ने किया। इस कार्यक्रम मे स्वामी ब्रह्मानन्द जी तथा स्वामी गोरक्षानन्द जी के सभी शिष्य और कविगण उपस्थित थे। सभी ने ईश्वर गुण-गान, गो महिमा तथा स्वामी ब्रह्मानन्द जी के गुणो का वर्णन किया। २० सितम्बर प्रात ७ से ९ बजे तक स्वामी वेदरक्षानन्द जी आर्ष गुरुकुल कालवा (जीन्द) के ब्रह्मत्व मे बृहद्यज्ञ तथा दैनिक यज्ञ किया गया। कुछ विद्यार्थियो ने यज्ञोपवीत धारण किये। सभी श्रद्धालु भक्तो ने यज्ञ मे आहुतिया प्रदान की। तत्पश्चात् स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज की स्मृति मे सभा का आयोजन किया गया। जिसमे स्वामी गोरक्षानन्द जी, स्वामी वेदरक्षानन्द जी, स्वामी धर्मानन्द जी, स्वामी प्रकाशानन्द जी, प० सूरजभान जी आर्य, प० रामेश्वर जी आर्य, श्रीमती नारायणीदेवी आर्या तथा अन्य कविगणो ने श्रद्धाञ्जलि अर्पित की। शान्तिपाठ एव भोजन प्रसाद के पश्चात् कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। **–मैनेजर बाबा फूलू साध उचाना खुर्द (जीन्द)**

पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती जी की १०३वीं जयन्ती समारोह सम्पन्न

दयानन्दमठ रोहतक में आर्यप्रतिनिधिसभा हरयाणा द्वारा प० जगदेवसिह सिद्धान्ती जी की १०३वीं जयन्ती पर मंच पर विराजमान आर्यनेता व स्वामी इन्द्रवेश जी तथा सम्बोधित करते हुए।

दयानन्दमठ रोहतक। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्द-मठ रोहतक के परिसर मे बने बलिदान भवन मे आर्यसमाज के शास्त्रार्थ महारथी स्वर्गीय प० जगदेवसिह सिद्धान्ती की १०३वीं जयन्ती बडे हर्षोल्लास के साथ 'विजयदशमी' के पर्व पर मनाई गई। जैसे कि हजारों सालो से भारतीय जनमानस के हृदय-पटल पर मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी के प्रति अगाध श्रद्धा इस पर्व के अवसर पर प्रकट की जाती है तथा रावण के पुतले फूककर बुराइयो पर अच्छाई की जीत को प्रदर्शित किया जाता है, उसी कडी को मजबूत करते हुए वैदिक विचारधारा को माननेवाले मानव समाज मे स्वर्गीय प० जगदेवसिह सिद्धान्ती का नाम बडी श्रद्धा से याद किया जाता है। इस अवसर पर प्रात यज्ञ का आयोजन किया गया जो मानवमात्र के लिये सर्वोत्तम कर्म माना जाता है। आज के यज्ञ की महत्ता उस समय बढ गई जिसमे यज्ञ के ब्रह्मा के रूप मे प्रसिद्ध वैदिकविद्वान् व धाराप्रवाह सैकडो वैदिक मन्त्रो का निरन्तर उच्चारण करनेवाले प० सुखदेव शास्त्री विराजमान हुये तथा आर्यप्रतिनिधिसभा के उपप्रधान व वेदप्रचाराधिष्ठाता श्री रामधारी शास्त्री यजमान बने तथा श्री सन्तराम जी व श्री अविनाशचन्द्र शास्त्री ने सुखदेव जी का सहयोग किया। यज्ञ के बाद प० जगदेवसिह सिद्धान्ती की जयन्ती का कार्यक्रम चला इसके स्टेज का सचालन आचार्य यशपाल सभामन्त्री ने किया। सर्वप्रथम आर्यसमाज के नेता व पूर्व सासद स्वामी इन्द्रवेश जी का फूलमालाओ से स्वागत किया गया। स्वामीजी पिछले लगभग चार मास तक विदेशो मे प्रचार करने के बाद विजयदशमी के दिन ही स्वदेश लौटे हैं। श्रद्धाजलि कार्यक्रम मे मुख्यवक्ता प० सुखदेव शास्त्री, आचार्य वेदव्रत शास्त्री उपप्रधान सभा, भगवतमुनि वानप्रस्थी, श्री रामधारी शास्त्री, उपप्रधान सभा, श्री दयाकिशन आर्य तथा स्वामी इन्द्रवेश जी प्रमुख थे। इस समारोह की अध्यक्षता चौ० मनफूलसिह अहलावत, जोकि स्वतन्त्रता सेनानी रहे हैं। इस अवसर पर सभी वक्ताओ ने स्वर्गीय जगदेवसिह सिद्धान्ती की जीवनशैली की प्रशसा करते हुए उनके विचारों को अपने जीवन मे अपनाने पर बल दिया गया।

छात्रों मे प्रतिभा विकसित करने के लिए इस अवसर पर आर्य भजन एव कविता प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया जिसमे प्रथम, द्वितीय और तृतीय आनेवाले छात्रो को सभा की ओर से इनाम आर्य साहित्य के रूप मे दिये गये जिसकी व्यवस्था सभामन्त्री द्वारा कीगई। कार्यक्रम की समाप्ति के अवसर पर विराट् युवा सम्मेलन' के सयोजक श्री सन्तराम आर्य ने सूचना देते हुए ताया कि आगामी ३ नवम्बर २००२ रविवार को दयानन्दमठ रोहतक मे एक विशाल युवको का सम्मेलन होने जारहा है जिसमे आर्यसमाज के वयोवृद्ध नेता एव आर्यप्रतिनिधिसभा हरयाणा के प्रधान स्वामी ओमानन्द जी, स्वामी अग्निवेश जी, स्वामी इन्द्रवेश जी डा० वेदप्रताप वैदिक तथा डा० रामप्रकाश जी चण्डीगढ पहुच रहे हैं तथा प्रबुद्ध नेताओ मे पूर्व प्रधानमन्त्री श्री चन्द्रशेखर जी व उपराष्ट्रपति भैरोसिह शेखावत को आमन्त्रित किया गया है। इस सम्मेलन मे पाच प्रमुख विषय रखे गये हैं जिसमे भ्रूण-हत्या, नशाखोरी, भ्रष्टाचार, दहेजप्रथा तथा जनसख्या वृद्धि। अन्त में शान्तिपाठ के साथ समारोह सम्पन्न होगया।

स्वास्थ्य चर्चा—

मधुमेह

मधुमेह एक विश्वव्यापी व्याधि है, जिसकी चिकित्सा मे सभी चिकित्सा पद्धतियो के चिकित्सक लगे हुवे हैं, अब यह बात सर्वविदित होगई है, कि विश्व की सर्वाधिक प्रचलित तथाकथित सर्वसाधन सम्पन्न चिकित्सा पद्धति एलोपैथी मधुमेह (डायबिटीज) को लाइलाज घोषित कर चुकी है। ऐलोपैथी इससे हार चुकी है, और उसने कह दिया है कि जिसे यह बीमारी एक बार लग गई, वह ताजिन्दगी लगी रहेगी। ऐलोपैथी डाक्टरो का कहना है कि टोल ब्यूटामाइड (रैस्टनान) क्लोर प्रोपामाइड (डायबिटीज) ग्लाईक्लाजाइड, मैटफोरमिन, ग्लाईपीजाइड, ग्लाइविन, क्लामाइड, बाईग्वानाइड, समूह, इन्सुलिन आदि इन्जैक्शन व गोलियो आदि से मूत्रगत तथा रक्तगत शर्करा को कम किया जा सकता है। किन्तु रोग को निर्मूल नहीं किया जा सकता।

इतना कहते हुवे वे इसे भी कहते नहीं हिचकते, कि इस बीमारी की कोई चिकित्सा है ही नही, जिसे यह रोग पकड लेगा, उसे जिन्दगीभर ढोते चलना होगा, अर्थात् प्रकारान्तर से वे मधुमेह ग्रसित रोगियो को कहते रहते हैं उन्हे जिन्दगीभर एलोपैथिक चिकित्सको की शरण मे रहकर अल्पकालिक राहत के लिए लाक्षणिक चिकित्सा कराते रहना पडेगा।

यह सत्य है कि मधुमेह का प्रसार आज विश्व के सारे मानव समाज मे द्रुतगति से होता चला जारहा है। बहुत बडी सख्या मे लोग इससे ग्रसित होचुके हैं, और खान-पान-आचार-व्यवहार की अनियमितता या मनमानी के चलते ग्रसित होते जारहे हैं। हमारे देश के लोग भी अधिकाधिक सख्या मे युग की जल-वायु पाश्चात्य सभ्यता जनित असयमित जीवन-यापन के चलते प्रमेह और फिर मधुमेह जैसी भयकर बीमारी से ग्रसित होते जारहे हैं। अन्य देशो की तरह हमारे देश मे भी मधुमेहियो की बहुत बडी सख्या होगई है, एक आकडे के अनुसार भारत मे मधुमेहियो की सख्या पाच करोड है, और इनकी सख्या मे बढोतरी नित्यप्रति होती जारही है।

विशेषज्ञो का अनुमान है कि अगले बीस वर्षो मे यह सख्या तीन गुणा हो जायेगी, आज से पचास वर्ष पहले उपदश प्यूमेह (सुजाक) जैसी भयकर बीमारियो से लोग भयभीत थे, इसी प्रकार आज मधुमेह से भी लोग भयभीत हैं, ऐलौपैथी डाक्टरो का कहना तो ठीक है कि उनकी पद्धति मे मधुमेह को निर्मूल कर देने की कोई चिकित्सा नहीं है। परन्तु उनका यह कहना सर्वथा गलत है कि विश्व की किसी भी चिकित्सा पद्धति में इस रोग की चिकित्सा है ही नहीं। सत्य तो यह है कि आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति मे इसकी चिकित्सा आदि सृष्टि से ही चली आरही है, वेद का ज्ञान ईश्वर प्रदत्त ज्ञान है, और ऋषियो को सृष्टि के आदि मे ही प्राप्त होचुका था, और उन ऋषियो ने अपने समाधिज्ञान द्वारा प्रत्येक व्याधि का कारण और निवारण को प्रत्यक्ष कर लिया था।

यह तो ससार के इतिहासकार भी मानते हैं कि वेद की पुस्तक सबसे पुरानी पुस्तक है, और उन वेदो मे प्रत्येक व्याधि की चिकित्सा का विशद वर्णन है। आज के चिकित्सा शास्त्री भी यह स्वीकार करते हैं कि चिकित्साशास्त्र की सबसे पुरानी सुश्रुत और चरक संहिता ही हैं। इसलिए यह भी कहा जा सकता है, कि एकमात्र आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति ही ऐसी है, जिसमे मधुमेह को निर्मूल करने की क्षमता है। मधुमेह की चिकित्सा आयुर्वेद के चिकित्सक युगो से करते चले आरहे हैं।

—डा० ब्रह्मानन्द सरस्वती, योगस्थी आश्रम, महेन्द्रगढ-१२३०२९

महर्षि दयानन्द द्वारा मान्य सृष्टिसंवत् के समर्थन में प्रामाणिक लेख

लेखक : निहालसिंह आर्य परमार्थी, आर्यधाम, जसौर खेड़ी, हरयाणा

महर्षि दयानन्द का लेख तथा कथन सत्यार्थप्रकाश के समु० ८ अनुसार–

प्र० जगत् की उत्पत्ति मे कितना समय व्यतीत हुआ ?

उ० एक अरब, छानवे करोड, कई लाख और कई सहस्र वर्ष जगत् की उत्पत्ति और वेदो के प्रकाश होने मे हुए है। इसका स्पष्ट व्याख्यान मेरी बनाई भूमिका मे लिखा है, देख लीजिए। ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका मे।

प्र० वेदो की उत्पत्ति मे कितने वर्ष होगए हैं ?

उ० एक वृन्द, छानवे करोड, आठ लाख, बावन हजार, नौ सौ छिहत्तर अर्थात् (१९६०८५२९७६) वर्ष वेदो की और जगत् की उत्पत्ति मे होगए हैं और यह सम्वत् सतत्तरवा (७७) वर्त रहा है।

ज्ञात हो कि महर्षि दयानन्द ने यह ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका सम्वत् १९३३ वि० मे लिखी थी।

प० इतने ही वर्षों का यह निश्चय कैसे हो ? इसके प्रमाण मे महर्षि जी ने लिखा है कि–इस समय ७वे वैवस्वत मनु का वर्तमान है। इससे पूर्व छ मन्वन्तर होचुके हैं। आगे इन छवो के नाम लिखे हैं और शेष सातो मन्वन्तरो के नाम सावर्णि आदि भी लिखे हैं। जो आगे भोगेगे। सब मिलके १४ मन्वन्तर होते हैं और इकहत्तर चतुर्युगियो का नाम मन्वन्तर धरा गया है।

चारो युगो के (४३२०००९) वर्ष होते हैं। जिनका चतुर्युगी नाम है। ७१ चतुर्युगियो के तीस करोड सतसठ लाख बीस हजार वर्षो की एक मन्वन्तर सज्ञा की है। ऐसे ऐसे छ (६) मन्वन्तर मिलके (१८४०३२००००) बराबर है एक अरब चौरासी करोड, तीन लाख बीस हजार वर्ष हुए और सातवे मन्वन्तर के भोग मे यह अट्ठाईसवीं चतुर्युगी है। इस चतुर्युगी मे ४९७६ वर्षों का भोग होचुका है और बाकी चार लाख सत्ताईस हजार चौबीस वर्षो का भोग होनेवाला है जानना चाहिए कि बारह करोड पाच लाख बत्तीस हजार नौ सौ छिहत्तर वर्ष तो वैवस्वत मनु के भोग होचुके हैं और '१८६१८७०२४' वर्ष भोगने के बाकी रहे हैं। इनमे से वर्तमान वर्ष सतत्तरवा है जिसको आर्यलोग विक्रम का १९३३ वि० राम्वत् कहते हैं।

एक हजार चतुर्युगियो की ब्राह्मदिन सज्ञा रखी है उतनी ही चतुर्युगियो की रात्रि सज्ञा है अर्थात् सृष्टि के वर्तमान होने का नाम दिन और प्रलय होने का नाम रात्रि है। यह जो वर्तमान ब्राह्म दिन है इसके (१९६०८५२९७६) वर्ष सृष्टि की तथा वेदो की उत्पत्ति में भी व्यतीत हुए हैं और (२३३३२२७०२४) दो अरब, तैंतीस करोड, बत्तीस लाख, सत्ताईस हजार, चौबीस वर्ष इस सृष्टि को भोग करने बाकी हैं।

महर्षि दयानन्द ने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका मे आगे आर्यो की गणना सुविधा के लिए अर्बुद्ध, वृन्द, खरब, निखरब, शख, पद्म, सागर, अन्त्य, मध्य और परार्द्ध सत्तरह तथा उन्नीस सख्या तक आकडे दिए हैं। लिखा है कि सृष्टि की उत्पत्ति से लेके कल्पान्त की गणित विद्या को प्रसिद्ध करते चले आते हैं। अर्थात् परम्परा से सुनते-सुनाते, लिखते-लिखाते और पढते-पढाते हम लोग चले आते हैं। यही व्यवस्था सृष्टि और वेदो की उत्पत्ति के वर्षो की ठीक है और सब मनुष्यो को इसी को ग्रहण करना योग्य है।

आज पर्यन्त परमेश्वर की सृष्टि और हम लोग बने हुए हैं और बही खाते की नाईं लिखते-लिखाते, पढते-पढाते चले आए हैं। यही इतिहास आज पर्यन्त सब आर्यावर्त्त देश मे एकसा वर्तमान होरहा है और सब पुस्तको मे भी इस विषय मे एक ही प्रकार का लेख पाया जाता है। किसी प्रकार का इस विषय मे विरोध नहीं है इसीलिए इसको अन्यथा करने मे किसी का सामर्थ्य नहीं हो सकता।

यह अवश्य जानना चाहिए कि वेदो की उत्पत्ति परमेश्वर से ही हुई है और जितने वर्ष अभी ऊपर गिन आए हैं उतने ही वर्ष वेदो और जगत् की उत्पत्ति मे भी हो चुके हैं। (वेदोत्पत्ति विषय, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका)

यद्यपि महर्षि दयानन्द की प्रसिद्ध उक्त दोनो पुस्तकों मे महर्षि जी की लिखित सृष्टिकाल को बहुत आर्यविद्वान् लिख पढ और मान चुके हैं। फिर भी मैंने महर्षि जी का यह मोटा-मोटा लेख पुन सामान्य आर्य पाठकों और मतभेद रखनेवाले भाइयों के लिए लिखना पडा है।

सत्य धर्म विचार मेला चान्दापुर १८७७ ई०–चान्दापुर मे यह मेला शाहजहापुर के रईस मुन्शी प्यारेलाल कायस्थ ने मण्डल अधिकारी की स्वीकृति से लगवाया था जो पाच दिन होना था। इसमे विचार के लिए प्रमुख पाच प्रश्न थे। जिसमें महर्षि दयानन्द मौलवी मोहम्मद कासिम, पादरी जानसन आदि कई अन्य काजी और मौलवी उपस्थित थे।

पाचवा प्रश्न था कि सृष्टि को बने कितना समय हुआ। इसके उत्तर मे भी महर्षि जी ने लिखा कि इस समय ७वा वैवस्वत मन्वन्तर चल रहा है। इससे ६ पहले मन्वन्तर भी व्यतीत होचुके हो इसलिए (१९६०८५२९७६) एक अरब छानवे करोड आठ लाख बावन हजार नौ सौ छिहत्तर वर्षो का भोग होचुका है और अब दो अरब ३३ करोड बत्तीस लाख सत्ताईस हजार चौबीस वर्ष इस सृष्टि को भोग करने शेष हैं सो हमारे देश के इतिहासो मे अर्थात् स्वदेश के तत्कालीन सारे इतिहासो मे यथार्थक्रम से अर्थात् ज्यो की त्यो सब बाते लिखी हैं। ज्योतिष की रीति से भी वर्ष पत्र भी इसी नियम से बनता है। सब आर्यावर्त्त देश के इतिहास इस बात मे अविरुद्ध परस्पर सहमत हैं। जब जैनमत वालो और मुसलमानो ने इस देश की इतिहास पुस्तको को जलाया तब सब आर्य लोगो ने सृष्टि के इतिहास को कण्ठ कर लिया जो बालक से लेकर बृहद् तक नित्यप्रति उच्चारण करते हैं वह सकल्प इस प्रकार है-'ओ३म् तत् सत् श्री ब्रह्मणो द्वितीय-प्रहरार्द्धे ।'

इससे भी सृष्टि के वर्षो की गणना जान पडती है। मेला चान्दापुर मे ही महर्षि जी ने पुन कहा है कि देखो जितने १८०० वा १३०० वर्षो के भीतर ईसाइयो और मुसलमानों के मतो मे आपस के विरोध से फिरके हो गए हैं उनके सामने जो १९६०८५२९७६ वर्षो के भीतर आर्यो के मत मे बिगाड हुआ तो वह बहुत ही कम है। आप लोगों मे जितना सुधार है वह आपके मत के कारण नहीं किन्तु पार्लियामेट आदि के उत्तम प्रबन्ध से है।

मेला चान्दापुर मे अपने उसी सृष्टिकाल गणना में एक अरब ९६ करोड वर्ष वाले तथ्य कथन लेख दोबारा किया है।

प्र० मेवाड़ देश के उदयपुर नगर मे वहां के पुलिस अधिकारी तथा न्यायाधीश मौलवी अब्दुर्रहमान से शास्त्रार्थ मे सन् १८८२ ईस्वी मे भी मौलवी जी ने प्रश्न किया कि मनुष्य की उत्पत्ति कब से और अन्त कब होगा।

उ० उत्तर स्वामी जी का एक अरब छियानवे करोड कितने लाख वर्ष उत्पत्ति को हुए और दो अरब से ऊपर तक और रहेगी। इसमे महर्षि जी ने अपना वही पूर्व सृष्टिकाल एक अरब ९६ करोड वर्ष वाला मत सम्पुष्ट किया है। *(पं० लेखरामकृत महर्षि दयानन्द का जीवनचरित्र तथा महर्षि दयानन्द शास्त्रार्थ सग्रह, आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट दिल्ली से)*

मेरा उपरोक्त दिए गए विवरण का यह भाव है कि सृष्टिकाल गणना के एक अरब छियानवे करोड वर्ष वाले मत का समर्थन आर्यविद्वान् महर्षि दयानन्द की लिखी सत्यार्थप्रकाश तथा ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका इन दो रचनाओ के प्रमाण देकर तो समर्थन करते ही हैं। मैंने इससे कुछ आगे १८७७ ई० के मेला चान्दापुर के शास्त्रार्थ मे महर्षि जी के दो कथन लेख भी दिये हैं और पाचवा प्रमाण उदयपुर मे १८८२ ई० मे मौलवी अब्दुर्रहमान के साथ शास्त्रार्थ मे भी सृष्टिकाल के लिए महर्षि जी ने अपना वही मत प्रकट किया है। यह बात सर्वविदित है कि आदित्य बाल-ब्रह्मचारी चतुर्वेद ब्रह्मा महर्षि दयानन्द आप्त आर्षविद्या मे सत्यनिष्ठ आर्ष ऋतम्भरा के धनी थे इसीलिये वे सत्य वेद मत के स्थापन मे सर्वत्र शास्त्रार्थो मे विजयी रहे। ऐसे महामना विद्वानो की आर्षप्रज्ञा केवल सत्य पर ही टिकती है। उसमे भ्रान्ति को स्थान नहीं हो सकता। यदि वे एक बार भूल भी जाते तो दूसरी, तीसरी, चौथी या पाचवीं बार मे भूल-सुधार कर सकते थे परन्तु सत्य का रूप नहीं बदलता इसलिए एक अरब सतानवे करोड मतवाले सभी भाइयो से प्रार्थना है कि विचारपूर्वक आपस का यह मतभेद छोडकर महर्षि जी वाला एक अरब छियानवे करोड वर्ष मतवाला मत ही हम सब जने मानले और आगे भी मानते रहें इसी एकता सगठन मे हम सब आर्यो की शोभा प्रशसनीय है। इसीलिए मैं भी सस्कृत व्याकरण के प्रशसनीय विद्वान् 'आर्यप्रतिनिधिसभा हरयाणा के उपप्रधान श्री वेदव्रत जी शास्त्री के लिखित महर्षि मत का तथा शुभ सुझाव का हार्दिक समर्थन करता हू। जैसा कि (समानो मन्त्र समिति समानी समान मन सह चित्तमेषाम्। समानं मन्त्रमभि ।(सगठन-सूक्त मन्त्र)

आर्य-संसार

सभी देशभक्तों की सेवा में निवेदन

देशभक्त साथियो !

अब हमारे देश को स्वतन्त्र हुए ५२ वर्ष व्यतीत होचुके हैं। इससे पूर्व यहा पर ७०० वर्ष इस्लाम की तलवार हमारे ऊपर चली। १७५ वर्ष हम अग्रेजो के आधीन रहे, इस काल मे तलवार के बल पर औरंगजेब सदृश बादशाहो ने हमारा धर्म छीन लिया। बलपूर्वक हमारे पूर्वजो को इस्लाम कबूल करने को विवश किया गया। भारतवर्ष के अनेक राज्य, जिलो, गावो व शहरों के नाम बदल दिए गए। यह सब कार्य हमारे सगठन के अभाव के कारण हुआ। पश्चात् लुट-पिटकर हिन्दू समाज जब होश मे आया तब गुलामी की जजीरो को देशभक्तो ने सात समुद्र पार फेंककर देश को आजाद कराया। १५ अगस्त १९४७ को भारत वर्ष स्वतन्त्र होकर दो भागो मे भारत एव पाकिस्तान के रूप मे विभक्त होगया। देश को बटवाने मे मुस्लिम वर्ग की पूर्ण भूमिका थी। अब भी देश को विभाजित करने का षड्यन्त्र चल रहा है। देश के नेता स्वार्थी होगए हैं। राजनीतिक पार्टिया वोट के लालच मे आकर देश के हित मे बोलने पर असमर्थ होरही हैं। अधिकारीगण अपनी नौकरी बचाने के चक्कर मे कुछ भी कहने मे असमर्थ हैं। वर्तमान सरकार राष्ट्रीय गौरव बनाये रखने मे असफल सिद्ध होरही है। जो कि ससद भवन, लालकिला तथा अक्षरधाम मन्दिर, रामभक्तो के ऊपर हुए हमलो को भी सहन कर गए हैं। आगे तो देश बचाने की प्रधानमन्त्री जी पर आशा ही नहीं की जा सकती है। अब भी हम आप सब बन्धु नहीं होश मे आये तो आगे आनेवाली पीढी हम सबको कभी माफ नहीं करेगी।

बन्धुओ, ऐसी अवस्था में भी निराश होने की आवश्यकता नहीं है। आप जहा भी हो वहीं पर राष्ट्र रक्षा मे सहयोग करे। आपके गाव, शहर या रास्ता आदि का नाम गुलामी के समय से मुसलमानी अथवा अग्रेजी तरीके से हो उसे बदलकर देशभक्त शहीदो के नाम पर रखें। जो हमारे भाई तलवार के भय से धर्म परिवर्तन कर गए थे, उन्हे शुद्ध करके गोत्र तथा वशावली देखकर उन्हें अपने गले लगा लीजिए। जो बन्धु पहले ही हमारे मे मिल चुके हैं (मूले जाट आदि) उनके साथ सभी भेद-भाव छोडकर रिश्ते-नाते प्रारम्भ कर दीजिये। अपने घर मे गाय को पालिए और प्रत्येक घर में एक गाय अवश्य बधवाइये। इससे धर्मरक्षा, देशरक्षा तथा गोरक्षा तीनों ही आप करने मे समर्थ होगे।

–निवेदक : आचार्य आनन्दमित्र आर्य

वार्षिक उत्सव

आप सब सज्जनो को सूचित किया जाता है कि मेवात के सवेदनशील क्षेत्र जो कि ८५ प्रतिशत मुस्लिम आबादी वाले क्षेत्र मे गुरुकुल भादस निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। इस वर्ष गुरुकुल एव गोशाला भादस जिला गुडगाव का वार्षिक उत्सव १४-१५ दिसम्बर २००२ ई० दिन शनिवार-रविवार को बडे धूमधाम से मनाया जायेगा। आप सभी सज्जनो से निवेदन है कि अवश्य पधारे। गोरक्षा एव धर्मरक्षा मे आप अपना सहयोग अवश्य करे।

निवेदक आचार्य आनन्दमित्र आर्य, गुरुकुल एव गोशाला भादस नगीना जिला गुडगांव (हरयाणा)

आर्यसमाज दातौली जिला भिवानी का वार्षिक चुनाव

प्रधान-मा० स्वरूपसिह आर्य, उपप्रधान-श्री मोहरसिह आर्य, मन्त्री-श्री बलवीरसिह आर्य, उपमन्त्री-श्री शिवलाल आर्य, कोषाध्यक्ष-श्री दिलबाग आर्य

–जयपालसिह आर्य, सभा भजनोपदेशक

आर्यसमाज महरौली नई दिल्ली का चुनाव

प्रधान-श्री मदनलाल मुखी, उपप्रधान-श्री मोहनलाल मुखी, श्री विजयकुमार सब्रवाल, मन्त्री-वीरेन्द्रकुमार आर्य, उपमन्त्री-श्री रमेशकुमार सब्रवाल, कोषाध्यक्ष-श्री रविकुमार सलूजा, स्टोरकीपर-श्री कृष्णलाल भाटिया।

वेदप्रचार कार्यक्रम सम्पन्न

आर्यसमाज कोयकलां जिला हिसार में १० अक्तूबर २००२ तक सभा के भजनोपदेशक महाशय जयपालसिंह आर्य व सत्यपाल आर्य द्वारा वेदप्रचार किया गया। गाव के स्कूल में रात्रि को वेदप्रचार कार्यक्रम हुआ जिसमे पाखण्ड अन्धविश्वास एव सामाजिक बुराइयो के विरुद्ध प्रचार किया गया। आर्यसमाज के प्रधान श्री वेदप्रकाश आर्य व श्री सुखवीर आर्य, राजवीर आर्य ने वेदप्रचार कार्यक्रम मे काफी सहयोग दिया। इस अवसर पर सभा को २३५०/- रुपये दान दिया गया।

आर्यसमाज ढाकला जिला झज्जर का चुनाव

प्रधान-मा० ब्रह्मदेव आर्य, उपप्रधान श्री ओमप्रकाश, मन्त्री-श्री राजेन्द्रसिह, उपमन्त्री-मा० ओमप्रकाश, कोषाध्यक्ष-श्रीभगवान आर्य।

श्रीमती प्रेमसखी आर्या नहीं रहीं

महाराष्ट्र आर्यप्रतिनिधिसभा के उपप्रधान एव आर्यसमाज कुमारनगर धुलिया (उत्तर महाराष्ट्र) के प्रधान श्री लेखराज जी आर्य की सहधर्मिणी श्रीमती प्रेमसखी आर्या का शुक्रवार २३ अगस्त २००२ को साय ६-३० बजे दु:खद निधन हुआ। श्रीमती प्रेमसखी जी महिला आर्यसमाज धुलिया की मत्री रह चुकी थीं और सम्प्रति प्रधान पद का उत्तरदायित्व भी बडी कुशलता से सभाले हुई थीं। परोपकारिणी सेवाव्रती, कर्मठ, निष्ठावान्, अतिथिसेवा मे सदा अग्रणी रहनेवाली पावन-पुण्यात्मा श्रीमती प्रेमसखी जी का अपने पति के सार्वजनिक कार्यों मे बढ-चढकर सहयोग था। देहावसान के समय उनकी आयु ६० वर्ष थी। महाराष्ट्र आर्यप्रतिनिधिसभा के सरक्षक श्री दौलतराम जी चड्ढा की उपस्थिति मे २५ अगस्त को श्रद्धाजलि सभा सम्पन्न हुई।

क्या आप मांस खाते हो ?

यदि आप मीट (मास) खाते हो तो अपनी जिन्दगी बरबाद कर रहे हो। जानबूझकर अपने पाव पर स्वय कुल्हाडी मार रहे हो। मीट मछली अण्डे मनुष्य का भोजन नहीं है। इनके खाने से बुद्धि खराब होती है, शरीर मे कैंसर, टी.बी., चर्मरोग आदि भयकर बीमारिया लग जाती हैं। यदि अपना भला चाहते हो आज से ही मीट मछली अण्डे खाने छोडदो। मास से अधिक ताकत घी दूध फल और दालो मे है जो दिल-दिमाग को स्वस्थ रखते हैं। जीवन मे खुश रहना चाहते हो तो शाकाहारी बनो। मास खानेवाले व्यक्ति के दात, आत, गुर्दे आदि खराब होजाते हैं और जल्दी बुढापा आजाता है। मास खानेवाले व्यक्तियो के बच्चो की आखो मे पैदा होते ही अन्धापन आजाता है। अल्पायु (छोटी उम्र) मे उनकी आखो पर चश्मा चढ जाता है। मासाहारी और शाकाहारी प्राणियो मे जो अन्तर देखा गया है उसे निम्नलिखित पक्तियो मे पढने से मालूम होगा कि मनुष्य प्राकृतिक स्वभाव से शाकाहारी है–

१) मासाहारी पशु जीभ से चप-चप की आवाज करते हुये पानी पीते हैं जबकि शाकाहारी पशु मुह (होठो) से खींचकर पानी पीते हैं। जैसे कुत्ता, बिल्ली मासाहारी और गाय, भैंस आदि शाकाहारी को देखलो।

२) मासाहारी पशुओं के बच्चो की आखे जन्म के समय बन्द रहती है और एक मास मे खुलती हैं जबकि शाकाहारी के बच्चो की आखे जन्म लेते ही खुल जाती हैं।

३) मासाहारी पशु-पक्षी रात मे घूमते हैं क्योकि उन्हे उल्लू (मासाहारी) की तरह रात के अन्धेरे मे दिखाई देता है।

४) मासाहारी पशु-पक्षियो के दातो की बनावट नुकीली और फाडनेवाली होती है जबकि शाकाहारी के दात सीधे होते हैं।

५) मासाहारी नर-मादा जब मैथुन करते हैं तब थोडी देर के लिए जुड जाते हैं परन्तु शाकाहारी नही जुडते जैसे कुत्ता बिल्ली आदि और शाकाहारी बन्दर को देख लेना।

इस प्रकार और भी अनेक अन्तर हैं। यहा मोटे तौर पर लिखे गये हैं जिनसे स्पष्ट है कि मनुष्य शाकाहारी प्राणी है। इसके शरीर की आकृति और पाचन क्रिया को देखते हुये मास मनुष्य का भोजन नहीं है जो मास खाता है वह शराब अवश्य पीयेगा क्योंकि बिना शराब के मास आतो मे सडता रहता है। अन्त मे शायर (कवि) की चन्द शिक्षाप्रद और प्रेरणादायक पक्तियो को पढिये और मास खाना छोडिये–

हाथो से या जुबा से, किसी को न सता तू,
कुदरत के ये खिलौने, इनको न मिटा तू।
पेट भर सकती हैं जबकि एक दो रोटिया,
नोंचता फिरता है फिर क्यू बेजुबा की बोटिया।
है भला तेरा इसी मे मास खाना छोडदे।
इस मुबारिक पेट को कबरे बनाना छोड दे।।

देवराज आर्यमित्र, आर्यसमाज कृष्णनगर, दिल्ली-५१

अतुल दहिया हमारे बीच नहीं रहे

प्रिय अतुल दहिया की स्मृति मे १३ अक्तूबर को शान्तियज्ञ व प्रार्थना सभा का आयोजन किया गया जिसमें हजारो क सख्या मे नर-नारियो ने अतुल के प्रति अपनी शोक सवेदना एव शोक श्रद्धाजलि दी। प्रार्थना सभा का सारा कार्यक्रम आचार्य यशपाल मन्त्री आर्यप्रतिनिधिसभा की देखरेख मे हुआ। शान्तियज्ञ आचार्य अविनाश शास्त्री एव आचार्य रमेशचन्द जी ने सम्पन्न कराया। अतुल के फूफा श्री भूपेन्द्रसिह जी हुड्डा तथा अतुल के ताऊ ब्रिगेडियर सत्यदेवसिह जी ने आगन्तुक महानुभावो का धन्यवाद किया और हर परिस्थिति मे इनका सहयोग करेन के लिए उनका आभार प्रकट किया। अतुल का पूरा परिवार ही स्वतन्त्रता सेनानी हैं, आर्यसमाज की विचारधारा से जुडा हुआ है तथा बहुत लम्बे समय से राजनैतिक रूप से समाजसेवा के कार्य में जुटा हुआ है। आर्यप्रतिनिधिसभा हरयाणा भी इस दु ख की घडी मे परिवार के साथ है तथा ईश्वर से प्रार्थना की जाती है कि इस कष्ट को सहन करने की शक्ति एव सामर्थ्य सभी परिवारजनो को प्राप्त हो।

संक्षिप्त जीवन परिचय

अतुल दहिया, जिसको प्यार से सब लोग मोनू के नाम से जानते हैं, का जन्म चन्द्रसेन दहिया के घर १६-११-१९७९ को रोहतक मे हुआ। अतुल को सडक दुर्घटना मे २ अक्तूबर को बहुत ज्यादा चोटे लगी। मेडिकल कालेज रोहतक की सलाह के कारण इनको दिल्ली भेजा गया और वहा इलाज अपोलो हास्पिटल मे हुआ। परन्तु ईश्वर को परिवारजनो और मित्रो की कोशिशे और विनती मंजूर नहीं थी और ३ अक्तूबर को साय ८ १५ बजे प्रिय मोनू का देहान्त होगया। इस समय उसकी उम्र २३ साल की थी।

अतुल ने दसवीं और बारहवीं कक्षा डी ए वी स्कूल रोहतक से और बी कॉम यूनिवर्सिटी, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय से पास की। उसके पश्चात् कुछ समय पहले उसने सॉफ्टवेयर डवलपमेट का कार्य दिल्ली मे शुरु किया था।

मोनू छ फुट अढाई इच लम्बा, साफ रग का जवान लडका था। वह बडा ही हसमुख, मिलनसार, मददगार, आज्ञाकारी, अपने आप जिम्मेवारी से काम करनेवाला युवक था। मोनू जिस किसी से भी मिलता था, चाहे बडा हो या छोटा हो, वो इन्सान मोनू के साथ चुम्बक की तरह चिपक जाता था। जहा से भी निकलता था, किसी को अकल किसी को भैया कहता हुआ अपनी छाप छोड जाता था। वह बहुत ही समझदार और जिम्मेवार नौजवान था। वह भारतीय सस्कृति की इज्जत करता था और रिश्तो की अहमियत मानता था। अपने दायरे के लोग इसको हर समय कोई न कोई काम दे देते थे और वह खुशी से भाग-भागकर कार्य को पूरा करके सबको खुश रखता था।

अतुल मटिण्डू गाव जिला सोनीपत के विख्यात आर्यसमाजी परिवार का हिस्सा था। अतुल के पिता एक सादे सुशील स्वभाव के एडवोकेट और बिजनेसमैन हैं। इनकी माता खरर गाव से एक बडे घराने से हैं जो कि एक सादी घरेलू स्त्री हैं जो कि एक सादी घरेलू स्त्री हैं। इनके दादाजी भीमसेन जी एक स्वतन्त्रता सेनानी, आल इण्डिया खादी कमीशन से डायरेक्टर पद से रिटायर हुए हैं। इनके पडदादा चौ० शिवकर्ण, चौ० पीरूसिह जिन्होने मटिण्डू गाव मे १९१२ मे गुरुकुल की स्थापना की, के छोटे भाई थे। चौ० शिवकर्ण समाजसेवा, शिक्षा का प्रचार और लम्बे सय तक गुरुकुल, मटिण्डू की देखभाल करने के कारण पूरे इलाके मे मशहूर थे।

अतुल के फूफाजी श्री भूपेन्द्रसिह हुड्डा और उनके पिता चौ० रणबीरसिंह से आप सब भली-भाति परिचित है। यह परिवार तीन पीढियो से नि स्वार्थ समाजसेवा और राजनीति मे जुडा है। चौ० रणबीरसिह और इनके पिता चौ० मातूराम स्वतन्त्रता सग्राम मे अग्रसर रहे थे।

अतुल के दूसरे फूफाजी, श्री महेश जी खादी सेवक हैं और इनके पिता सोम भाई जी आल इण्डिया खादी कमीशन के चेयरमैन रहे हैं, स्वतन्त्रता सेनानी हैं और रचनात्मक कार्य के लिए ये जमनालाल बजाज पुरस्कार से सुसज्जित हैं।

अतुल को हमेशा गर्व रहता था कि ऐसे समाजसेवी और आर्यसमाजी परिवार का हिस्सा और वह इस विस्तृत परिवार की परम्पराओ को कायम रखकर आगे बढना चाहता था। लेकिन ३ अक्तूबर की साय ईश्वर की इच्छा अनुसार वो भगवान् को प्यारा होगया।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ०१२६२-७६८७४, ७७८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ०१२६२-७७७२२) से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० न० २३२०७/७३
पजीकरणसख्या टैक/85-2/2000
☎ ०१२६२-७७७२२
सृष्टिसवत् १,९६,०८,५३,१०३
विक्रमसवत् २०५९
दयानन्दजन्माब्द १७९

ऋषि निर्वाण विशेषांक

आर्यसमाज और हमारा समाज

ईश्वर की कृति मे कभी कोई त्रुटि नहीं होती क्योकि ईश्वर सर्वज्ञ और सर्वव्यापक है और दूसरी ओर मनुष्य हर कदम पर अनेक भूले करता है परन्तु उसे उस समय अपनी भूलो का एहसास नही होता और फिर जब कालान्तर मे उसे अपनी की हुई गलतियो का फल प्राप्त होता है तो उसका मस्तिष्क उसे (अपने स्वाभाविक अज्ञानता के कारण) मानने से इन्कार करता है कि उसने कभी कोई भूल की होगी। यहा हम स्पष्ट करना चाहते हैं कि वैदिक सिद्धान्तानुसार (वैज्ञानिक नियमानुसार) बिना किसी कारण के कोई भी कार्य नही होता और मनुष्य जब अपनी स्वतन्त्रता से जो कर्म करता है उसका फल उसे कालान्तर मे मिलता है और कर्त्ता को अवश्यमेव भुगतना पडता है।

सुलगते चुभते प्रश्न—

आज सबकी जुबान पर एक ही बात सुनने को मिलती है कि- "आर्यसमाज के पास वेदो तथा शास्त्रो का अथाह ज्ञान होने के पश्चात् भी आखिर क्या कारण है कि लोग उसकी ओर आकर्षित नहीं होते या आर्यसमाज लोगो को अपनी ओर क्यो आकर्षित नहीं कर पाता ? लोग दूसरी सस्थाओ मे अधिक जाते है और हमारे समाजो मे बहुत कम उपस्थिति होती है-क्यो ? आजकल के (तथाकथित) गुरुओ के पास अधिक मात्रा मे लोगो की भीड देखी जाती है और हमारे सन्यासियो से मिलने कोई नहीं जाता-क्यो ? क्या "मन की शान्ति" का ठेका केवल आर्यसमाज के ही पास है-क्या दूसरी सस्थाओ के लोग अशान्त हैं ? आखिर क्या कारण है कि अन्य सम्प्रदायो के मन्दिर इतने विशाल और समृद्ध हैं और हमारे समाजो मे हमेशा धन की कमी रहती है ? प्रश्न अनेक हैं परन्तु उत्तर कोई नहीं देता-क्यो ?

प्रिय सज्जनो ! प्रश्न पूछना अच्छी बात है-इससे ज्ञानवृद्धि होती है और सुधरने-सुधारने का सुअवसर मिलता है परन्तु अपने मस्तिष्क से इस गलतफहमी को निकाल दे कि आर्यसमाज उन्नति के पथ पर नही चल रहा।

भ्रम-भ्रान्तिया-अन्धविश्वास—

बाबाओ के आशीर्वाद से बाझ को भी बच्चे होजाते हैं—महात्माओ के द्वारा प्राप्त प्रसाद खाने से जिस महिला को सन्तान नहीं होती उसको होजाती है—साधुबाबा के छूमन्तर करने से या झाडफूक करने से भूत-प्रेत भाग जाते हैं—जन्मपत्री के मेल करने से विवाह सफल होजाते है—ग्रह-उपग्रह आदि के मनुष्य दुःखी अथवा सुखी होता है। पूजापाठ करने से क्रोधित ग्रह शान्त होजाते हैं—कीमती पत्थर पहनने से घर मे सुखशान्ति आती है—मुहूर्त देखकर ही घर से निकलना चाहिये। गुरुजनो की जूठन खाने से जीवन सफल होता है—गुरु की हरेक बात को बिना सोचे-समझे या प्रश्न किये बिना मानना चाहिये—मृतको का श्राद्ध अर्थात् ब्राह्मणो को खिलाना-पिलाना चाहिए—जागरण करने से मनोकामनाए पूर्ण होती हैं। सत्यनारायण का प्रसाद न खाने से सर्वनाश होता है। जादू-टोने से किसी को भी अपने वश मे या व्यक्ति विशेष की मृत्यु करवाई जा सकती है—मूर्तियो से बभूति निकलती है। बाबाओ के हाथ घुमाने या फिराने से सोने के मगलसूत्रादि आभूषण, कीमती विदेशी घडिया, बभूति अथवा फल निकलते है इस प्रकार की अनेक अनहोनी घटनाए जिनको मूर्खलोग सत्य समझते हैं—वास्तव मे ऐसा कुछ भी नहीं होता क्योकि ये सब प्रकृति नियम के विरुद्ध बाते हैं। इन अन्धविश्वासो को फैलाने मे कौन हैं—क्या आप जानते हैं ?

इनके पीछे स्वार्थी, ढोगी, फरेबी बहुरूपिये, पाखण्डी, निकम्मे, अघोरी, नकली साधु-सन्त-बाबा-महात्मा तथा मानवजाति के शत्रु होते हैं जिनको और कोई कामकाज नही होता और फोकट मे (बिना परिश्रम के नि शुल्क मे) बैठे-बिठाए हराम की मिलती है और तीनो एषणाए पूरी होती हैं।

श्रेष्ठ, सुशिक्षित और सभी समझदार लोगो का यह कर्तव्य है कि यदि वे मानवजाति का हित चाहते हैं तो वे साधरण ज्ञान रखनेवाले लोगो का मार्गदर्शन करे तथा उन्हे सावधानी बरतने को कहे। अपने बच्चो को समझाए। ये सब तब हो सकता है जबकि हम स्वय सुधरे—समाज स्वय सुधर जाएगा क्योकि समाज हमसे ही बना है—समाज से ही देश बनता है वरना समाज देश पिछड जाएगा और सर्वनाश होरहा है और आगे भी होगा फिर इसे ईश्वर भी नही रोक सकता।

समाधान एव उत्तर—

आर्यसमाज "आर्यसमाज सार्वभौम मानव निर्माण सस्था" है जिसमे ईश्वरीय ज्ञान "वेद" तथा आर्षग्रन्थो के माध्यम से मनुष्य को मनुष्य बनाया जाता है क्योकि जब तक मनुष्य मनुष्य नहीं बनता वह इस ससार मे अच्छी प्रकार से सुख नही भोग सकता और अपने परम लक्ष्य अर्थात् "मोक्ष" को प्राप्त नही कर सकता। आर्यसमाज मे सामने मूर्तिया रखकर गाने-बजाने नहीं होते जैसे कि अन्य सस्थाओ मे होते है। हमारे यहा रासलीलाए नही होती अपितु योगाभ्यास होता है। यहा किसी प्रकार का टाइम-पास नहीं होता—साधना होती है। जिन लोगो को ऐसी शिकायत है कि हमारे यहा लोग कम आते हैं उनको सच्चाई को ग्रहण करने का अनुभव नही होता है क्योकि सत्य को ग्रहण करना न तो आसान है न ही कठिन है—सत्य स्वाभाविक होता है। जिनके यहा अधिक भीड होती है वहा जाकर देखे तो सही कि वहा सत्य का पाठ कितना पढाया जाता है और क्या-क्या होता है। किसी उर्दू के शायर ने ठीक ही कहा है कि 'सच्चाई छुप नही सकती बनावट के उसूलो मे और खुशबू आ नही सकती कागज के फूलो से' अत दूर के ढोल सुहाने लागे इसलिये सत्य क्या है और असत्य क्या है—यही तो आर्यसमाज सिखाता है।

वक्त का तकाजा—

हमे दूसरो को नही स्वय को देखना है। हमारे यहा (आर्यसमाजो मे) सत्य के सुगन्धित फूल बटते है और वहा (अन्य सस्थाओ मन्दिरो तथा तथाकथित गुरुओ के पास) अन्धविश्वास के काटे बिकते है। अज्ञानता के कारण लोग काटे खरीदते है और हमारे यहा कोई भी आकर नि शुल्क अमृत का पान कर सकता है। अनेक लोगो को इस बात मे आपत्ति है कि आर्य दूसरो का खण्डन करता है इसलिये तो आर्यसमाज की उन्नति नही होती। यह धारणा शतप्रतिशत असत्य है क्योकि आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है— 'ससार का उपकार करना' इसी को मद्देनजर रखते हुए यदि मानवसमाज मे कही भी कुरीतिया पनपती है अन्धविश्वास फैलता है पाखण्ड से लोग पीडित होते है छूआछूत सतीप्रथा बलात्कार अन्याय

आदि बढते हैं तो क्या श्रेष्ठ पुरुष हाथ पर हाथ धरे अपने घर मे बैठ सकते हैं ? कदाचित् नही ? ऐसी स्थिति मे आर्यसमाज (अर्थात् श्रेष्ठ मनुष्यो का समाज) ही ऐसी सस्था है जो अपना उत्तरदायित्व समझकर खुलकर सबके सामने आती है और सत्य बात को कहने मे नहीं झिझकता। इसका अर्थ अन्य सम्प्रदाय वाले कुछ भी निकाल सकते हैं। परन्तु सत्य का मुह कोई भी बद नही कर सकता।

हम अपने सभी मित्रो से पूछना चाहते है कि–ईश्वर साकार है कि निराकार ? यदि कहो कि वह साकार है तो वह निराकार नही हो सकता और कहो कि वह परमात्मा निराकार है तो फिर मूर्तिपूजा करना पाप हुआ–है ना ? यदि परमात्मा साकार है तो उसकी सीमा निश्चित हो जाएगी अत वह इतने बडे ब्रह्माण्ड का निर्माण नही कर सकता और यदि कहो कि वह सर्वशक्तिमान् है–वह सबकुछ कर सकता है तो हम आपसे पूछते हैं कि–"क्या परमात्मा स्वय मृत्यु को प्राप्त हो सकता है ?' क्या वह अपने जैसा दूसरा ईश्वर उत्पन्न कर सकता है ? क्या वह सो सकता है, खाना खा सकता है, पानी पी सकता है, चोरी कर सकता है ? इसका उत्तर होगा–कभी नहीं। जी हा ! सर्वशक्तिमान् का अर्थ यह नही है कि वह सबकुछ कर सकता है अपितु सर्वशक्तिमान् का सही अर्थ है–वह परमात्मा अपने सभी कार्य स्वय करता है और उसे उसमे किसी की सहायता की आवश्यकता नही पडती।

आज ससार मे अनेक अन्धविश्वासो और अन्धश्रद्धाओ का बोलबाला है जिसकी आड मे अनेक पाखण्डी, कुकर्मी लोग साधारण लोगो को मूर्ख बनाकर अपना उल्लू सीधा करते है। तथाकथित बाबाओ और बापुओ की भीड मे भोले-भाले ही नही, पढे-लिखे लोग भी फस जाते है। याद रहे ! आखे प्राय धोखा खाती हैं परन्तु बुद्धिमान् मनुष्य वही है जो तर्क और ज्ञान की सहायता ले तो ही सत्य और असत्य को परखा जा सकता है। जीवन मे धन-दौलत से ही जीवन की सफलता को मापा नहीं जा सकता। हमने अनेक धनाढ्यो को देखा है–बाहर से सभी सुखी लगते है परन्तु उनके समीप जाकर देखे तो वे बहुत दु खी होते है। सर्वविदित है कि अधिक धन आने के बाद नीदे उड जाया करती है, भूख लगती है पर खाना नसीब नही होता क्योकि शान मान वाली बीमारिया सामने खडी होजाती हैं। अत ससार मे धन-दौलत ही सब कुछ नहीं है।

हमारे मित्रो ने बताया है कि जबसे उन्होने गुरु किया है और मूर्तिपूजा करनी प्रारम्भ की है तब से उनके व्यवसाय मे बढोतरी हुई है और उन्हे मन की शान्ति भी प्राप्त हुई है। क्या सच है ? हमारा उत्तर है नहीं ! क्योकि धन, दौलत, ऐश्वर्य और समृद्धि–ये सब मनुष्य को अपने प्रारब्ध, पुरुषार्थ, ज्ञान के कारण प्राप्त होते है और ईश्वर की कृपा से ही मिलते हैं। जिन सज्जनो को जड अर्थात् मूर्ति आदि साकार वस्तुओ की पूजा करने मे मन की शान्ति या सुख प्रतीत होता है वास्तव मे वह होता नही है–यह उनका भ्रम है। स्थाई सुख या शान्ति के लिए प्रभुभक्ति जिसको दार्शनिक भाषा मे "योगाभ्यास" कहते है–परमावश्यक है।

"योग" आसन करने का नाम नही है अपितु "आत्मा का परमात्मा से मिलन" को कहते हैं। जब जीव ज्ञानपूर्वक परमात्मा के सम्पर्क मे मग्न रहता है–वह योगी की परकाष्ठा होती है। जिसे योग की भाषा मे "समाधि" कहते है। आज योग के नाम पर भी अनेक प्रकार की भ्रान्तिया फैली हुई है। उठने, बैठने, लेटने या हाथ-पाव हिलाने-डुलाने का नाम योग नही है। महर्षि पतजलि के योगदर्शन को ध्यान से पढे या किसी योगाभ्यासी सन्यासी से शिक्षा प्राप्त करे। योगकक्षाओ मे केवल आसन सिखाए जाते है जो अष्टागयोग का तीसरा अग है। जिससे शरीर को स्वस्थ और लचकीला बनाया जाता है ताकि ईश्वर के ध्यान मे लम्बे समय तक बैठने मे कठिनाई न हो। स्मरण रहे कि मन, बुद्धि, चित, अहकार तथा आत्मिक उन्नति और शुद्धि के लिये योग के आठो अगो का अभ्यास करना आवश्यक है।

मन की शाति–

'मन की शाति" के पीछे अनेक कारण होते है। "मन की शान्ति"–मन के एकाग्र होने पर ही मिलती है। चचल मन को कार्य मे लगाए रखने मे मन स्थिर होता है और शान्त होता है, परमात्मा के नाम का ध्यान करने से मन स्थिर होता है, तत्त्वज्ञान होने पर मन प्रसन्न और शान्त होता है, परोपकार करने से मन की शान्ति मिलती है, ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना, उपासना से मन एकाग्र और शान्त होता है ऐसे अनेक कारण होते हैं। जब तक मनुष्य को अपने अस्तित्व का ज्ञान, ईश्वर के स्वरूप का ज्ञान तथा नश्वर सृष्टि का सही ज्ञान नहीं होजाता तब तक उसे स्थायी "मन की शान्ति" नहीं मिल सकती। क्षणिक सासारिक सुख को पाकर मनुष्य समझता है कि उसे मन की शान्ति प्राप्त होगई है–तो यह उसका भ्रम मात्र है। "मन की शाति" हासिल करने का सर्वश्रेष्ठ उपाय है–सासारिक विषयभोगादि की इच्छाओ से दूर रहना अर्थात् सभी एषणाओ का त्याग करना और यह तब सम्भव हो सकता है जब मनुष्य अपने अन्दर के काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेष, चुगली, मान-अपमान इत्यादि शत्रुओ को मार भगा नहीं देता और यह भी तभी सम्भव है जब मनुष्य को तत्त्वज्ञान (ईश्वर, जीव और प्रकृति का यथार्थज्ञान) होजाता है। विषय विकारो के होते "मन की शाति" तो बहुत दूर की बात है–मनुष्य यदि इस पृथ्वी का सम्पूर्ण साम्राज्य भी प्राप्त क्यो न करले उसका मन अशान्त ही रहेगा–वह चैन की नींद भी नहीं सो सकता।

मनुष्यमात्र का समाज–

आर्यसमाज न हिन्दुओ का मन्दिर है न ही मुसलमानो का मस्जिद, यह न तो ईसाइयो का गिरजाघर है और न ही सिक्खो का गुरुद्वारा है–सच मानो **"आर्यसमाज–मनुष्यमात्र का अद्भुत सगठन है"** जहा कोई भी आ सकता है। किसी की जाति-पाती का तो प्रश्न ही नहीं उठता। हम मनुष्य को मनुष्य ही जानते और मानते हैं। हम एक ईश्वर को अपना गुरु और आचार्य, न्यायाधीश और राजा जानते और मानते है। हम परमपिता परमात्मा को ही माता-पिता-बन्धु-सखा जानते और मानते है। हम वेदो की वाणी को ही ईश्वरीयवाणी जानते और मानते हैं। इस ससार मे जितने भी ग्रन्थ और धर्मशास्त्र उपलब्ध है उन सभी ग्रन्थो का किसी न किसी रूप मे वेदो से ही सम्बन्ध है। परन्तु खेद की बात है कि कुछ स्वार्थी लोगो ने इन ग्रन्थो मे मिलावट की है तथा अपनी अनेक बुराइयो को इन ग्रन्थो मे जोड दिया है और इतने अच्छे ढग से जोडा है कि पढे-लिखे लोग भी भ्रमित होजाते हैं कि क्या सत्य और क्या असत्य है।

रही बात भीड की, तो हमारे पाठकवृन्द जान ही सकते है कि भीड क्हा इकट्ठी हुआ करती है ? रास्ते पर मदारी खेल दिखाता है वहा भी भीड जमा होती है, जहा स्वार्थी लोग होते हैं वहा भी भीड होती है, जहा सस्ता सामान बिकता है वहा भी भीड होती है, जहा सस्ता प्रसाद बटता है, जहा हसी-मजाक होता है, जहा कहानिया सुनाई जाती हैं, जहा प्रदर्शन होता है, जहा तफरी का माहौल होता है, जहा टाइम पास होता है ऐसे अनेक स्थान हैं जहा हमेशा भीड होती है–इसका अर्थ यह नहीं कि वहा धर्मकर्म की बाते होती हैं।

सस्ती बर्तनो की दुकानो मे अधिक भीड होती है जहा चादी बिकती है वहा भीड कम होती है वैसे ही जहा सोने और हीरे के आभूषण बिकते हैं वहा वे ही लोग जाते हैं जिनके पास ऐसी वस्तुए खरीदने की शक्ति होती है। अत भीड-भडक्के की बात करनेवालो को समझ लेना चाहिये कि सत्य महगा होता है जिसे ज्ञानी लोग ही अपना सकते हैं। अत ससार मे उसे जानने-माननेवाले लोग बहुत कम मात्रा मे होते है और असत्य नि शुल्क होता है जिसे अज्ञानी लोग ही भीड जमा कर लेते हैं अत ससार मे अज्ञानियो की कोई कमी नही है।

माथे पर तिलक, गले मे माला, हाथ मे माला फेरने से या नाम मे परिवर्तन करने से कोई भी व्यक्ति ज्ञानी या धार्मिक नहीं होजाता और धर्म या ज्ञान किसी एक की धरोहर नही है क्योकि ईश्वरीय ज्ञान सब के लिये होता है। तथाकथित धर्म के ठेकेदारो के किस्से प्राय सभी ने समाचार पत्रो मे पढे ही होगे। जितने कुकर्म, पाखण्ड, अन्धविश्वास इन तथाकथित धर्मस्थानो मे होते है वैसे कही नहीं होते।

इस पृथ्वी पर यदि कोई ऐसी सस्था है जहा वैदिकधर्म अर्थात् ईश्वरीय ज्ञान का प्रचार-प्रसार होता है तो वह केवल और केवल **"आर्यसमाज"** है। जिनको तनिक भी शका हो हम उन्हे निमत्रण देते है (वैसे तो आर्यसमाज सबका है) कि वे कभी भी आर्यसमाज मे पधारे और अपनी शकाओ का समाधान कर सकते है। यह एक ऐसा समाज है जहा वेदो का पठनपाठन होता है और वैसे ही आचरण होता है। हम केवल निराकार परमात्मा, जिसने ब्रह्माण्ड की रचना की है जो इसकी स्थिति करता है और अन्त मे प्रलय करता है, उसी एक परमपिता परमात्मा की स्तुति, प्रार्थना, उपासना करते है। "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" वैदिक उद्घोष है, ईश्वर का आदेश है और यही हमारा कर्त्तव्य है। ईश्वर प्राप्ति करना ही सब मनुष्यमात्र का परमपुरुषार्थ और लक्ष्य है। जीव कर्म करने मे स्वतन्त्र है। अब यह उसकी मर्जी है, उसके अपने कर्म है कि ईश्वर की वाणी–वेदो को माने, न माने या उल्टा माने।

अधिक जानकारी के लिये सम्पर्क करे-
मदन रहेजा, मन्त्री,
आर्यसमाज सान्ताक्रुज, मुम्बई-४०००५४ (भारत)
फोन (नि०)६०४४१००
ई-मेल madanraheja@yahoo.com

कालजयी ऋषिवर ! तुम्हें प्रणाम

"तमसो मा ज्योतिर्गमय" अन्धकार पर प्रकाश की विजय का प्रेरक पर्व दीवाली ऋषि की स्मृति का भी दिवस है। इसी दिन उस महामानव ने अपना भौतिक शरीर छोडा था। जाते-जाते ससार को सत् के प्रकाश की दीवाली देगया। पुण्यात्मा ऋषि दयानन्द सत्य के पुजारी थे। सत्य के लिये जिये और सत्य पर ही शहीद होगए। उन्हे सत्यपथ से कोई विचलित नही कर सका। सत्य की रक्षा के लिए चौहद बार जहर पिया। उनका सकल्प था-**सत्य वदिष्यामि"** सत्य ही मानूगा और सत्य ही बोलूगा। उन्होने सत्य के विरुद्ध कभी समझौता नहीं किया। ऐसे प्रभु के वरद पुत्र देवदयानन्द की अमर गौरवगाथा स्मरण करने की पुण्यतिथि है-दिवाली।

ऋषिवर ! तुम्हे कोटि कोटि स्मरण और प्रणाम। तुम्हारी मगलमयी स्मृति को अनेकश नमन और श्रद्धाजलि। तुम्हे ससार से विदा हुए ११८वा वर्ष व्यतीत होरहा है। तुम्हारे नाम और स्मरण से हृदय श्रद्धा-भक्ति से भर उठता है। नेत्र सजल होकर तुम्हारे उपकारो तथा स्मृति पर अर्घ्य चढाने लगते है। तुमने न जाने कितने पतितो, भूले-भटको का उद्धार किया। तुम आजीवन विषपायी बनकर ससार को अमृत लुटाते रहे। ऋषि तुम धन्य हो। तुम्हारा महान् इतिहास प्रशसनीय है। तुम्हारे उपकार वन्दनीय है। तुम्हारा तप-त्याग तथा बलिदान स्मरणीय है। तुम्हारा व्यक्तित्व एव कृतित्व अर्चनीय है। तुम सबसे निराले थे। तुम्हारे सारे कार्य भी निराले थे। जो भी तुम्हारे सम्पर्क मे आया, वह अमूल्य हीरा बन गया। तुम्हारे अन्दर अद्भुत दैवीय चुम्बकीय शक्ति थी। शत्रु भी चरणो मे नतमस्तक होकर गया। ऋषिवर ! तुम क्या थे ? यह आजतक ससार न जान सका। सदियो के बाद भारतमाता की पीडा को समझनेवाला और उसके आसुओ को पोछनेवाला कोई महामानव था-तो ऋषिवर तुम्ही थे। तुमने अपने लिए जीवनभर कुछ न मागा, न सग्रह किया, न मठ-मन्दिर आदि बनाये। जीवनभर जहर पीते रहे, अपमान सहते गए, पत्थर खाते रहे। भूली-भटकी मानवजाति मे फैले अज्ञान, अन्धकार, ढोग, पाखण्ड, गुरुडम आदि के लिए रातो मे जागकर करुण-क्रन्दन करते रहे-

एक हूक सी दिल में उठती है,
एक दर्द जिगर मे होता है
हम रात को उठकर रोते हैं,
जब सारा आलम सोता है।।

ओ दया और आनन्द के भण्डार ! मानवता के अमर ज्ञापक ! देश धर्म, सस्कृति यज्ञ वेद आदि के उद्धारक ! आज तुम्हे क्या श्रद्धाजलि दू ? आसुओ के बिना कुछ पास नहीं है। हमने तुम्हारे स्वरूप योगदान, महत्त्व एव विशेषताओ को समझा ही नहीं। तुम्हे जाना ही नहीं। तुम्हारे उपकारो को स्वीकारा ही नही। तुमने - सारे जीवनभर कही भी चारित्रिक दुर्बलता, पद, प्रतिष्ठा, लोभ आदि नही आने दिया। जीवन मे दैवीय और चमत्कारी रूप नही आने दिया। मानव बनकर ही रहे। ऋषि के कट्टर विरोधी और आलोचक भी अन्दर से उनके प्रशसक थे। तराजू के एक पलडे पर ऋषि को और दूसरे पलडे पर ससार के सभी महापुरुषो को रख दिया जाय तो निश्चय ही ऋषि का पलडा भारी होगा, क्योकि वह मुक्तात्मा प्रभु की इच्छापूर्ति के लिए आई थी। अपनी कोई इच्छा नही थी। जैसे समस्त पर्वतो मे हिमालय की अलग पहिचान है। ऐसे ही समस्त महापुरुषो मे ऋषिवर तुम्हारी अलग आन-मान-शान और पहिचान है। तुम्हारा जीवन भी प्रेरक था, तुम्हारी मृत्यु भी प्रेरक थी। जाते-जाते भी नास्तिक गुरुदत्त को आस्तिक बनाकर, वैदिकधर्म का दीवाना देगए। तुम्हारे जीवन की एक-एक घटना मे अपार प्रेरणा भरी हुई है। तुम्हारे ग्रन्थो की एक-एक पक्ति मे नवजीवन का अमर सन्देश भरा हुआ है। घनीघोर अमावस्या की रात मे ससार को ज्ञान और प्रकाश की दीपावली देगए हो। इसी सत्यज्ञान और प्रकाश को प्रभावित एव प्रकाशित करने को जो तुमने 'आर्यसमाज' बनाया था वह तुम्हारे बाद खूब फला-फूला और बढा। जीवन तथा जगत् के प्रत्येक क्षेत्र मे आर्यसमाज के विचारो सिद्धान्तो तथा आदर्शो को सराहा गया। अलग पहिचान बनी ऋषिवर ! तुम्हारे दर्द और उद्देश्य की जिन्होने समझा। वे दीवाने, पागल और जनूनवाले होकर निकल पडे। उनकी करनी कथनी एक थी। उनका जीवन और सोच-विचार तुम्हारे से अनुप्राणित था। उसी का परिणाम रहा-सस्था सगठन, अनुयायी आदि की दृष्टि से आर्यसमाज सबसे आगे रहा है। अतीत का जितना भी गुणगान व प्रशसा की जाय, थोडी है।

मेरी श्रद्धा और आस्था के आधार ऋषिवर ! मर्मान्तिक पीडा से लिख रहा हू। तुम्हारा लगाया हुआ 'आर्यसमाज' रूपी बाग उजड और सूख रहा है ? बिखर गया। पद-स्वार्थ एव लोभ के वशीभूत होकर इसे काटा जारहा है ? आर्यसमाजरूपी बगीचे से विचारो, आदर्शो, सिद्धान्तो, तप, चरित्र, त्याग, सेवा आदि की खुशबू आनी चाहिए थी। वहा अब स्वार्थ, अहकार, आदर्शहीनता एव चरित्रहीनता की दुर्गन्धि व सडाध आरही है। जैसे मरी हुई लाश को चील, कौए, गिद्ध आदि झपटते-नोचते और खाते है, ऐसे ही महापुरुषो और आर्यसमाज के नाम पर बनी लाखो की सम्पत्ति पर छीना-झपटी होरही है। इसी कारण भावनाशील व्यक्ति आर्यसमाज से दूर होते जारहे है। सर्वत्र भटकाव बिखराव, स्वार्थगत, दलगत गन्दी राजनीति आग की तरह फैल रही है। न कोई किसी की सुनता है और न कोई किसी की मानता है। सर्वत्र अराजकता तथा अनुशासनहीनता का वातावरण पनप रहा है। रक्षक ही भक्षक बन रहे है। आर्यसमाज और उसके अनुयायियो की चारित्रिक गरिमा की साख पहिचान और विश्सनीयता मे गिरावट आरही है। जो सभा-सगठनो, सस्थाओ आश्रमो विद्वानो सन्यासियो आदि मे आकर्षण और विशेषताए होनी चाहिए, वे तेजी मे लुप्त होरही है। मन्दिर और जलसे उपस्थिति के लिए तरस रहे हैं। सस्थाए सूनी पडी है। सेवा कर्नव्य तथा त्याग की भावना कही नजर नही आती।

ऋषिवर ! क्या-क्या लिखू ? चारो ओर निराशा, हताशा छाती जारही है। जो आर्यसमाज का उद्देश्य कार्य एव भावना थी, वह टूटती जारही है। व्यर्थ की बातो विवादो उलझनो, समस्याओ आदि मे शक्ति समय, सोच और धन लग रहा है। जो होना चाहिए, वह नही होरहा है। जो नही होना चाहिए, वह होरहा है।

आर्यो ! ऋषिभक्तो ! आर्यसमाज मे आस्था रखनेवालो ! उठो ! जागो ! आखे खोलो ! सोचो ! उस योगी की आत्मा जहा भी होगी, हमसे पूछ रही होगी। आर्यो ! मैने जो सत्य सनातन वैदिकधर्म की मशाल तुम्हारे हाथो मे दी थी उसे तुमने समाज मन्दिर स्कूल दुकान, बारातघर, औषधालय आदि के कोने मे रखकर, केवल वाणी से बोलकर "वेद की ज्योति जलती रहे" "ओ३म् का झण्डा ऊचा रहे" शान्तिपाठ कर रहे हो ? जिन बातो का मैने विरोध किया था, उसी पौराणिकता गुरुडम पाखण्ड पुजापा चढावा आदि मे घूम रहे हो ? जो असली काम मानव जीवन निर्माण, चरित्रनिर्माण, सोच-विचार निर्माण जिससे व्यक्ति, परिवार समाज और राष्ट्र ऊचा उठता है उसे छोडकर भवनो, दुकानो, स्कूलो तथा एफडियो की लाइन मे खडे हो ? आर्य विचारधारा को केवल जलसे जलूस और लगर तक सीमित करते रहे हो ? चुनावी लडाई मे सभी नियम कायदे सिद्धान्त आदर्श आदि भूल जाते हो ? खान-पान आचार-विचार रहन-सहन आदि मे जो तुम्हारी अलग पहिचान है व आदर्श था वह कहा खोता जारहा है ?

क्या मेरे किए हुए कार्यो का यही प्रतिदान है ? यही स्मरण है ? यही श्रद्धाजलि है ? क्या इसीलिए मैंने सारा जीवन जहर और पत्थर खाये ? यदि यही है तो आर्यो ! मुझे माफ करो ? मैंने आर्यसमाज को बनाकर बडी भूल की ? मुझे ये उम्मीद न थी। जिस रूप मे आज का आर्यसमाज है और जिस दिशा मे जारहा है ?

आर्यो ! ऋषि निर्वाणोत्सव पर शान्तभाव से सच्चाई को समझकर जीवन जगत् और आर्यसमाज के लिए सोच सके। कुछ कर्त्तव्य सेवा त्याग, सहयोग आदि की भावना जगा सके। कुछ अपने को बदल सके। ऋषि की पीडा को समझ सके। कुछ दिशा बोध ले सके। मिशन के लिए समय शक्ति, व सोच लगा सके। स्वार्थ पद अहकार लोभ लाभ आदि मे ऊपर उठकर स्वय पद त्याग कर सके। अपने जीवन [illegible] और आर्यसमाज को सभाल सके।

तो हम सच्चे अर्थ मे ऋषिवर को श्रद्धाजलि देने के हकदार है। तभी ऋषि की जय बोलने मे सार्थकता है। अन्तस मे प्रकाश आजाय तभी दीपावली मनाने की सार्थकता है। यदि मेरे लिखित विचारो से किसी मे सोच, दृष्टि, व्यवहार, स्वभाव कर्म आदि मे परिवर्तन आजाय तभी मेरे लेखन की सार्थकता है।

—डॉ० महेश विद्यालकार

बीड़ी, सिगरेट, शराब पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है, इनसे दूर रहें।

आर्षपाठविधि के पुनरुद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती

–प्रिंसीपल डॉ० राजकुमार आचार्य

महर्षि दयानन्द सरस्वती धार्मिक सुधार और सामाजिक जागरण के साथ-साथ शिक्षा सुधार के माध्यम से समाज मे एक क्रान्तिकारी परिवर्तन लाना चाहते थे। महर्षि ने लार्ड मैकाले द्वारा प्रतिपादित शिक्षा प्रणाली का भी विरोध इसलिए किया था क्योकि इस शिक्षा पद्धति से पढा हुआ भारतवासी अपनी प्राचीन सस्कृति और सभ्यता को भूलता जारहा था तथा मानसिक और बौद्धिक रूप से पाश्चात्य सस्कृति और सभ्यता का दास बनता जारहा था। इसलिए वे अपने देश मे प्राचीन आर्षपाठविधि को पुन प्रचलित और स्थापित करना चाहते थे, क्योकि वे अनार्ष ग्रन्थो के पठन-पाठन को भारतवर्ष की अधोगति का प्रमुख कारण मानते थे। तथाकथित पण्डितजनो ने वेदादि शास्त्रो के अनर्गल अर्थ कर डाले, जिसके कारण देश मे अविद्या, अन्धकार, पाखण्ड, गुरुडम पोपलीला, जडपूजा, मूर्तिपूजा, पशुबलि, नरबलि, सतीप्रथा, बालविवाह, बहुविवाह इत्यादि अनेक सामाजिक कुरीतियो और रूढियो ने समाज पर अपना पूर्ण आधिपत्य स्थापित कर लिया। ऐसे विकराल समय मे महर्षि ने घोषणा की कि "आर्षग्रन्थो का पढना ऐसा है कि जैसे एक गोता लगाना बहुमूल्य मोतियो का पाना तथा अनार्षग्रन्थो का पढना, पहाड को खोदना और कौडी का लाभ होना"। महर्षि ने आर्षपाठविधि के अनुसार अध्ययन-अध्यापन को साकार रूप प्रदान करने के लिए फर्रुखाबाद और काशी आदि स्थानो पर सस्कृत पाठशालाए भी चलाई थीं। महर्षि के इस अथक प्रयास के विषय मे देवेन्द्र बाबू ने लिखा है कि "कृष्ण द्वैपायन व्यास के बाद पाच हजार वर्ष मे आर्षज्ञान के प्रवर्तक और आर्षज्ञान के प्रचारक स्वामी दयानन्द हुए हैं"। इस प्रकार वे केवल समाज सुधारक ही नहीं अपितु आर्षपद्धति के प्रवर्तक और पुररुद्धारक भी थे।

महर्षि दयानन्द को अनार्ष ग्रन्थो के दोष अपने गुरु विरजानन्द सरस्वती से विद्याग्रहण करते समय विदित हुए। उन्होने आर्षग्रन्थो के महत्त्व एव पठन-पाठन का विस्तृत वर्णन अपने अमरग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के तृतीय समुल्लास मे सोदाहरण किया है। उनके विचारो मे सन्तानो को गुण, कर्म, स्वभावानुरूप उत्तम विद्या और शिक्षा का प्रदान करना, माता, पिता, आचार्य और सम्बन्धियो का मुख्य कर्म है। वे आर्षविद्या के महत्त्व का प्रतिपादन करते हुए लिखते है कि-

"विद्याविलाससमनसो धृतशीलशिक्षा सत्यव्रता रहितमानमलापहारा ।
संसारदु खदलनेन सुभूषिता ये, धन्या नरा विहितकर्मपरोपकारा ।।

अर्थात् जिन पुरुषो का मन विद्या के विलास मे तत्पर रहता, सुन्दर, शील स्वभावयुक्त, सत्यभाषाणादि नियमपालनयुक्त और जो अभिमान, अपवित्रता से रहित, अन्य की मलिनता के नाशक, सत्योपदेश, विद्यादान से ससारीजनो के दु खो के दूर करने से सुभूषित वेदविहित कर्मो से पराये उपकार करने मे लगे रहते हैं, वे नर और नारी धन्य हैं तथा जो माता-पिता अपनी सन्तानो को उत्तम शिक्षा प्रदान नहीं करवाते हैं, वे माता-पिता अपनी सन्तानो के शत्रु हैं यथा-

माता शत्रुः पिता वैरी येन बालो न पाठित ।
न शोभते सभामध्ये हसमध्ये बको यथा।।

अर्थात् जो माता-पिता अपने बच्चो को नहीं पढाते हैं, वे उनके शत्रु हैं। वे बच्चे सभ्य समाज मे ऐसे ही शोभा को प्राप्त नही होते जैसे हसो के मध्य मे बगुला सुशोभित नहीं होता।

इसलिए आठ वर्ष के हो तभी लडको को लडको की और लडकियो को लडकियो की पाठशाला मे भेज देवे। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने पठन-पाठन की एक ऐसी वैदिक आर्षपाठविधि प्रस्तुत की है, जिसके अनुसार विद्यार्थी बीस या इक्कीस वर्ष मे सभी विषयो मे पारगत हो सकता है और उसका उल्लेख उन्होने सत्यार्थप्रकाश के तृतीय समुल्लास, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के पठन-पाठन विषय तथा सस्कारविधि के वेदारम्भ सस्कार मे किया है।

पठन-पाठन की इस आर्षपाठविधि मे महर्षि दयानन्द सरस्वती का प्रमुख उद्देश्य सभी विषयो का अल्प समय मे पूर्णज्ञान कराने का था। इसी हेतु अपनी इस आर्षपाठविधि मे वेद, वेदाग, दर्शन, उपनिषद्, आयुर्वेद, धनुर्वेद, गणितविद्या, शिल्पविद्या भूगोल, खगोल, ज्योतिष, व्याकरण इत्यादि वैदिक, लौकिक सभी विषयो को रखा है, किन्तु इन सभी विद्याओ का पूर्णज्ञान आर्षपाठविधिरूपी अमोघ यान के माध्यम से ही अल्प समय मे हो सकता है अन्य विधि से सैकडो वर्षो मे भी सभव नहीं है।

मनु महाराज का कथन है कि-**"एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मन:। स्व स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवा:।** अर्थात् प्राचीनकाल से यह देश (आर्यावर्त) समस्त ससार का गुरु था। यहां के ऋषि-मुनियो के विमल मस्तिष्क से प्रसृत आर्षज्ञान की ज्योति सारे भूमण्डल को आलोकित करती थी। महर्षि ने अपने जीवनकाल मे इस ज्योति को वेदो का आर्षभाष्य कर तथा अनेक आर्षग्रन्थो की सरचना कर इसे पुन आलोकित करके आर्षपाठविधि का पुनर्रुद्धार किया है।

अत हमे महर्षि दयानन्द सरस्वती के सम्पूर्ण आर्षग्रन्थो का सतत स्वाध्याय कर यथाशक्ति उनका प्रचार एव प्रसार करना चाहिए। तभी हम ऋषि ऋण से उऋण हो सकते हैं और **"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्"** का जयघोष सार्थक हो सकता है।

परोपकारिणी सभा अजमेर के तत्त्वावधान में

भव्य ऋषि मेला

प्रतिवर्ष की भाति इस वर्ष दीपावली के शुभ अवसर पर ११८वा महर्षि का बलिदान समारोह आनासागर के सुरम्य तट पर स्थित ऋषि उद्यान मे कार्तिक शुक्ला चतुर्थी, पचमी, षष्ठी सम्वत् २०५९ तदनुसार ८, ९, १० नवम्बर सन् २००२ शुक्र, शनि, रविवार को उत्साहपूर्वक मनाया जारहा है।

इस अवसर पर आर्यजगत् के मूर्धन्य सन्यासी, विद्वान्, आर्य भजनोपदेशक एव नेतागण पधार रहे हैं। जिनमे सर्वश्री स्वामी धर्मानन्द जी महाराज सस्थापक गुरुकुल आबूपर्वत, स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती सस्थापक वैदिक आश्रम पिपराली, आचार्य हरिदेव जी सचालक गुरुकुल गौतमनगर दिल्ली, प० विद्यासागर शास्त्री अलवर, डॉ० भवानीलाल भारतीय जोधपुर, प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु अबोहर, डॉ० सुरेन्द्रकुमार जी झज्जर, श्री तपेन्द्र जी आयुक्त कोटा, डॉ० सोमदेव शास्त्री प्रधान आर्यसमाज सान्ताक्रुज मुम्बई, प्रो० शेरसिह जी पूर्व केन्द्रीय मन्त्री भारत सरकार, श्री मित्रसेन जी आर्य रोहतक, श्री सुशीलकुमार जी पूना, श्री रासासिह जी सासद अजमेर, श्री रामचन्द्र बैंदा सासद फरीदाबाद विठ्ठलराव जी मत्री आर्यप्रतिनिधिसभा आध्र हैदराबाद, सत्यपाल पथिक भजनोपदेशक अमृतसर, स्वामी जगदीश्वरानन्द जी दिल्ली, सु ब काले मत्री आर्यप्रतिनिधिसभा महाराष्ट्र, राजेन्द्र जी विद्यालकार कुरुक्षेत्र हरयाणा श्री टी एस के कणन्न चेन्नई, आचार्य विद्यादेव जी टकारा, श्री धर्मबन्धु जी गुजरात, श्री धर्मपाल जी आर्य प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली, श्री बनारसीसिह जी पत्रकार दिल्ली एव अन्य महानुभाव इस अवसर पर पधार रहे हैं।

ऋषि उद्यान मे वर्षभर प्रतिदिन दोनो समय यज्ञ, वेदोपदेश एव प्रवचन होते हैं। जो महानुभाव इस इस सुअवसर का लाभ उठाना चाहे, वे लाभ उठा सकते हैं।

स्वामी सर्वानन्द	**स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती**	**गजानन्द आर्य**	**धर्मवीर**
सरक्षक	सरक्षक	प्रधान	मन्त्री

- ओ३म् यह ईश्वर का सर्वोत्कृष्ट नाम है क्योकि इसमे सब गुणो का समावेश है।
- मैंने परीक्षा करके निश्चय किया है कि धर्मयुक्त व्यवहार मे ठीक-ठीक वर्तता है उसको सर्वत्र सुख, लाभ और जो विपरीत वर्तता है वह सदा दु खी होकर अपनी हानि कर लेता है।
- कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है।

–स्वामी दयानन्द सरस्वती

आर्यसमाज के उत्सवों की सूची

१	आर्यसमाज मोखरा जिला रोहतक	३० अक्तू० से १ नव० ०२
२	आर्यसमाज खाण्डा खेडी जिला हिसार	३१ अक्तू० से २ नव० ०२
३	आर्यसमाज कासण्डा जिला सोनीपत	२ से ४ नवम्बर ०२
४	आर्यसमाज खरड (पजाब)	१५-१७ नवम्बर ०२
५	आर्यसमाज बडा बाजार पानीपत	१५-१७ नवम्बर ०२
६	आर्यसमाज रामनगर गुडगांव	१८-२४ नवम्बर ०२
७	आर्यसमाज जवाहरनगर पलवल कैंप, जिला फरीदाबाद	२२-२४ नवम्बर ०२
८	आर्यसमाज थर्मल कालोनी पानीपत	२९ नव० से १ दिस० ०२
९	आर्यसमाज बसई जिला गुडगाव	६ से ८ दिसम्बर ०२

–रामधारी शास्त्री, सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता

स्वामी दयानन्द की पुराणविषयक मान्यता

आज प्राय सभी विद्वान् १८ पुराणों को प्रमाण मानते हैं किन्तु महर्षि दयानन्द सत्यार्थप्रकाश (समु० ११) की समीक्षा मे लिखते हैं–

(१) यदि इन १८ पुराणो के कर्ता श्री वेदव्यास जी होते तो इनमे इतने गपोड़े नहीं होते क्योकि शारीरिक सूत्र (वेदान्त) और योगशास्त्र के व्यासभाष्य आदि श्री वेदव्यास द्वारा प्रोक्त ग्रन्थो के देखने से पता चलता है कि श्री वेदव्यास जी बडे विद्वान्, सत्यवादी, धार्मिक और योगी पुरुष थे, वे मिथ्याकथा कभी नहीं लिख सकते। जिन सम्प्रदायवादी लोगो ने भागवत आदि पुराण नहीं अपितु नवीन कपोलकल्पित ग्रन्थ बनाये हैं, उनमे श्री वेदव्यास जी के गुणो का लेश भी नहीं है। वेदशास्त्र के विरुद्ध असत्य लिखना श्री वेदव्यास जी जैसे विद्वानो का कार्य नहीं है किन्तु यह कार्य विरोधी, स्वार्थी और अविद्वान् लोगो का है।

पुराण की परिभाषा

महर्षि दयानन्द ने पुराण की निम्नलिखित परिभाषा की है–

(१) जो ब्रह्मा आदि के बनाये ऐतरेय आदि ब्राह्मण पुस्तक है, उन्हीं को पुराण, इतिहास, गाथा और नाराशसी आदि नाम से मानता हू, अन्य भागवत आदि को नहीं (स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश-२३)।

(२) जो प्राचीन ऐतरेय, शतपथ ब्राह्मण आदि ऋषिमुनिकृत सत्यार्थ पुस्तक है उन्ही को पुराण, इतिहास, कल्प, गाथा और नाराशसी कहते है (आर्योद्देश्यरत्नमाला-९६)।

(३) इतिहास और पुराण शिवपुराण आदि का नाम नहीं है, किन्तु **'ब्राह्मणानीतिहासान् कल्पान् नाराशसीरिति'** (आश्वलायन गृह्यसूत्र ३।३।१) यह ब्राह्मण ग्रन्थ और गृह्यसूत्रो का वचन है। ऐतरेय, शतपथ, साम और गोपथ नामक ब्राह्मण ग्रन्थो के ही इतिहास, पुराण, कल्प, गाथा, नाराशसी ये पाच नाम हैं। **इतिहास**–जैसे जनक और याज्ञवल्क्य का सवाद, **पुराण**–जैसे जगत् की उत्पत्ति का वर्णन, **कल्प–**जैसे वेद शब्दो के सामर्थ्य का वर्णन अर्थात् अर्थ निरूपण करना, **गाथा–**जैसे किसी के दृष्टान्त रूप कथा प्रसग का कहना, **नाराशसी**–जैसे मनुष्यो के प्रशसनीय अथवा अप्रशसनीय कर्मो का कथन करना। इन्हीं से वेदार्थ का बोध होता है (सत्यार्थप्रकाश समु० ११)।

समीक्षा

(२) {क} पितृकर्म अर्थात् ज्ञानी लोगो की प्रशंसा मे कुछ सुनना। अश्वमेध यज्ञ के अन्त मे भी इन ब्राह्मणग्रन्थो का ही सुनना लिखा है और जो श्री वेदव्यास जी कृत ग्रन्थ है उनका सुनना-सुनाना उनके जन्म के पश्चात् ही हो सकता है, पूर्व नही। जब श्री वेदव्यास जी का जन्म नहीं हुआ था तब भी लोग वेदार्थ को पढते-पढाते और सुनते-सुनाते थे। इसलिये सबसे प्राचीन ब्राह्मण ग्रन्थो मे ही यह कथन घट सकता है, इन नवीन, कपोलकल्पित श्रीमद्भागवत आदि और शिवपुराण आदि ग्रन्थों मे नहीं घट सकता।

{ख} श्री वेदव्यास जी ने वेद पढे थे और पढाकर वेदार्थ का प्रसार किया था इसलिये उनका नाम वेदव्यास हुआ, क्योकि व्यास आर-पार की मध्यरेखा को कहते हैं। श्री वेदव्यास जी ने ऋग्वेद के आरम्भ से लेकर अथर्ववेद के पार पर्यन्त चारों वेद पढे थे और शुकदेव तथा जैमिनि आदि शिष्यो को वेद पढाये भी थे। वैसे उनका नाम कृष्णद्वैपायन था। वे वेदो के प्रसारक होने से 'वेदव्यास' कहलाये।

{ग} जो कोई यह कहते हैं कि वेदो को श्री वेदव्यास जी ने इकट्ठा किया, यह बात यथार्थ नहीं है, क्योकि वे वेदव्यास जी के पिता पाराशर, पितामह शक्ति और प्रपितामह ब्रह्मा आदि ने भी चारो वेद पढे थे।

{घ} पुराणो मे बहुतसी बाते झूठी हैं और घुणाक्षर न्याय से सच्ची भी है। जो सच्ची हैं वे वेदादि सत्य शास्त्रो की हैं और जो झूठी हैं वे पोपो के पुराण रूप घर की हैं। इसके कुछ उदाहरण अधोलिखित है–

(१) शिवपुराण में शिव को परमेश्वर मानकर विष्णु, ब्रह्मा, इन्द्र, गणेश और सूर्य आदि को उनके दास कहा गया है।

(२) विष्णुपुराण आदि मे वैष्णवो ने विष्णु को परमात्मा माना है और शिव आदि को विष्णु का दास बतलाया है।

(३) देवी भागवत मे देवी को परमेश्वरी और शिव तथा विष्णु आदि को उनके किंकर लिखा है।

(४) गणेशखड मे गणेश को ईश्वर और शेष सबको इनका दास लिखा है।

ये सब बाते सम्प्रदायवादी लोगो की नहीं तो किनकी हैं ? एक साधारण मनुष्य की रचना मे भी इस प्रकार की परस्पर विरुद्ध बाते नहीं हो सकती। तब महाविद्वान् श्री वेदव्यास जी कृत इन तथाकथित पुराणो मे कैसे हो सकती हैं ?

इन पुराणो मे एक बात को सच्ची और दूसरी बात को झूठी और दूसरी बात को सच्ची माने तो तीसरी बात झूठी और तीसरी को सच्ची माने तो अन्य सब बाते झूठी हो जाती हैं। जैसे कि ऊपर शिवपुराण आदि मे शिव को परमेश्वर मानने आदि की बाते कही गई हैं।

सृष्टि की उत्पत्ति

शिवपुराण मे शिव से, विष्णुपुराण मे विष्णु से, देवीपुराण मे देवी से गणेशखण्ड मे गणेश से, सूर्यपुराण मे सूर्य से और वायुपुराण मे वायु से सृष्टि-उत्पत्ति लिखी है।

यह कथन सत्य नहीं, क्योकि जो जगत् की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय करनेवाले कहे गये हैं, वे शिव आदि स्वय पूर्व से उत्पन्न है और जो उत्पन्न होता है वह इस सृष्टि का कारण कभी नहीं हो सकता क्योकि उन शिव आदि के शरीरो की उत्पत्ति भी उन्हीं से हुई होगी, फिर वे स्वयरचित पदार्थ होने से तथा परिच्छिन्न भी होने से इस ससार की उत्पत्ति के कर्ता कभी नही हो सकते।

और जो सृष्टि-उत्पत्ति लिखी है वह भी बडी विलक्षण है। जैसे–शिव ने इच्छा की कि मै सृष्टि करू तो एक नारायण जलाशय उत्पन्न करके उसकी नाभि से कमल और कमल से ब्रह्मा उत्पन्न हुआ। क्या किसी वृक्ष मे किसी मनुष्य की उत्पत्ति सम्भव है ?

पुराणों में स्वविषयक कथन

यहा पुराणो के सम्बन्ध मे पुराणो के ही दो कथन विद्वानो के ज्ञानार्थ प्रस्तुत किये जाते है–

(१) वेदैर्विहीनाश्च पठन्ति शास्त्र
शास्त्रेण हीनाश्च पुराणपाठा ।
पुराणहीना कृषिणो भवन्ति
भ्रष्टास्ततो भागवता भवन्ति।।

अर्थ–वेदाध्ययन से रहित लोग साख्य आदि शास्त्रो को पढते है। शास्त्रो से हीन लोग पुराणपाठी होते है। पुराणो से विहीन लोग कृषिकार्य करने वाले होते हैं और जो कृषि कर्म से भ्रष्ट होते है वे भागवत पुराणवादी बन जाते है।

(२) स्त्रीशूद्रद्विजबन्धूना
त्रयो न श्रुतिगोचरा ।
कर्मश्रेयसि मूढाना
श्रेय एव भवेदिह।
इति भारतमाख्यान
कृपया मुनिना कृतम्।।

अर्थ–स्त्रियो, शूद्रो और द्विजो के सेवक के लिये वेद सुनने का निषेध है। अत श्रेष्ठ कर्मो के विषय मे मूढ जनो का कल्याण हो इसलिये मुनिवर वेदव्यास ने महाभारत नामक आख्यान की रचना की है। (भागवत स्कन्ध-१)।

इन पुराणो के इन कथनो से मनीषी लोग पुराणो की प्रामाणिकता का स्वय आकलन कर सकते हैं।

स्वामी दयानन्द का मन्तव्य

महर्षि दयानन्द का पुराणो के विषय मे निम्नलिखित मन्तव्य कहे जा सकते हैं–

(१) ये १८ पुराण तथा १८ उपपुराण वस्तुत पुराण नहीं है अपितु ये सम्प्रदायवादी लोगो के कपोलकल्पित नवीन ग्रन्थ हैं।

(२) ऐतरेय ब्राह्मण आदि ग्रन्थ वेदव्याख्यान ग्रन्थ ही पुराण कहाते है, ये भागवत आदि ग्रन्थ नहीं।

(३) इन १८ पुराणो तथा १८ उपपुराणो के कर्ता श्री वेदव्यास जी नही हैं। उनका कोई एक कर्ता नहीं है क्योकि इनमे परस्पर विरुद्ध कथन मिलते हैं।

(४) इन पुराणो के लेख परस्पर विरुद्ध और सत्य पर आधारित नही है अपितु असम्भव बातो से भरपूर हैं।

–डॉ० सुदर्शनदेव आचार्य, अध्यक्ष सस्कृत सेवा सस्थान, रोहतक

ऋषि जीवन गाथा

सत्य ही बोले, अमृत घोले, कर गया बेडा पार रे !
ऋषि आन बजाई बासुरिया।
देख मौत भगिनी चाचा की शंकर था चकराया।
जो आता है जाना पडता सग छोडती काया।
बदले चोले, गृह पट खोले, छोड दिया घर बार रे। ऋषि
शिव दर्शन पाने को जिसने त्यागी बड़ी हवेली।
सर्दी गर्मी भूख-पिपासा सभी मुसीबत झेली।
सहकर ओले, खाकर छोले, मन की सुनी पुकार रे। ऋषि.
विन्ध्य, हिमाचल, गगा-यमुना, कहीं पता न पाया।
जगह-जगह भगवान् बना था, पत्थर काली माया।
दर-दर डोले, शकर भोले, ढूंढे वृषभ सवार रे। ऋषि . .
नाम किसी ने था बतलाया विरजानन्द मुनि का।
यमुना तट पर मथुरा नगरी शिक्षा-धाम गुणी का।
कुटिया खोले, मुनिवर बोले, क्यो आया है मेरे द्वार रे। ऋषि .
दयानन्द के नाम से मुझको दुनिया सभी पुकारे।
पढने वेद ज्ञान भगवन् से आया हू तेरे द्वारे।
हौले-हौले, गुरुवर होले, नतमस्तक हू सरकार रे। ऋषि.
दिया ज्ञान वेदो का उसको गुरुवर विरजानन्द ने।
गुरु दक्षिणा देनी चाही दया तथा आनन्द ने।
कुछ सौ तोले, प्रियगु को ले, भेट किया उपहार रे। ऋषि
नहीं दक्षिणा चाहता ऐसी, जैसी तू है लाया।
पाखडो का घोर अधेरा सारे जग मे छाया।
बनकर शोले, अग्नि गोले, कर दे फिर उजियार रे। ऋषि .
गुरु आज्ञा सिर माथे रखू नहीं कभी घबराऊँ।
पास रहू या दूर रहू आशीष तुम्हारा पाऊँ।
दयानन्द बोले, गुरुवर भोले, आज्ञा है स्वीकार रे। ऋषि
पाखडखडिनी ओम् पताका कुम्भ मेले मे गाडी।
पिटते देख बैल बेचारे, खींच निकाली गाडी।
गुरुकुल खोले, हिन्दी बोले, गौ की सुनी पुकार रे। ऋषि . .
रोज-रोज हिन्दू बनते थे मुस्लिम और ईसाई।
बेदर्दी से काट रहे थे गौवे नित्य कसाई।
मत मारै भोले, गौ को दोह ले, झरती अमृत धार रे। ऋषि
परदेशी राजा से अच्छी हो अपनी आजादी।
छोड विदेशी बढिया कपडे पहनो मोटी खादी।
गाधी बोले, नेहरू बोले, हो अपनी सरकार रे। ऋषि .
ईश की वाणी है कल्याणी, यह उसने बतलाया।
सत्यार्थप्रकाश बनाकर, दूर अधेरा भगाया।
मन पट खोले, ईश्वर टोह ले, ईश्वर है निराकार रे। ऋषि .
आदिमूल परमेश्वर सबका, एक समझ में आता।
जन्म मरण के चक्कर में है नहीं कभी वह आता।
मुखडा खोले, कोयल बोले, तू सबका आधार रे। ऋषि ..
ऋषिभक्त तहसीलदार ने पकडा था अन्यायी।
'नहीं कैद करवाने आया' छोड़ो इसको भाई।
बन्धन खोले, दयानन्द बोले, कर ले पर उपकार रे। ऋषि
चौदह बार जहर के प्याले पीये जग की खातिर।
'तेरी इच्छा पूर्ण होवे' यही कहा था आखिर।
पड गये फोले, कुछ ना बोले, घातक से कर गया प्यार रे। ऋषि . .
धन्य-धन्य है ऋषिवर तुमको आन जगाया हमको।
देश की सेवा मे किया अर्पण तूने तन और मन को।
'हरि' भी बोले, सब ही बोले, तेरा जय जयकार रे। ऋषि.. ..

—**हरिदत्त**, आर्यसमाज प्रशान्त विहार, ए-ब्लाक, दिल्ली

३ नवम्बर को प्रातः दस बजे सर छोटूराम पार्क, रोहतक में 'विराट् युवा सम्मेलन'

बहनो तथा भाइयो !

आर्यसमाज के युवा सगठन 'सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्' की ओर से ३ नवम्बर २००२ रविवार को प्रात दस बजे से रोहतक मे एक विराट् युवा सम्मेलन का आयोजन किया जारहा है जिसमे हजारो युवा दहेज, नशाखोरी, भ्रूणहत्या एव भ्रष्टाचार को मिटाने के लिए एक साथ सकल्प लेगे। यह दृश्य देखने लायक होगा। सम्मेलन को वयोवृद्ध आर्यसन्यासी स्वामी ओमानन्द, युवको के प्रेरणास्रोत स्वामी इन्द्रवेश, क्रातिकारी सन्यासी स्वामी अग्निवेश, ओजस्वी वक्ता डा० वेदप्रताप वैदिक, डा० रामप्रकाश व राममेहर एडवोकेट आदि नेता सम्बोधित करेगे। भारत के पूर्वप्रधानमन्त्री माननीय श्री चन्द्रशेखर जी सम्मेलन के मुख्य अतिथि होगे। हरयाणा में सामाजिक क्रान्ति लाने के लिए युवापीढी को सगठित करना अत्यावश्यक है। अत आपसे प्रार्थना है कि आप दलबल के साथ सम्मेलन मे पधारे।

निवेदक–

जगवीरसिंह	**विरजानन्द**	**कैप्टन अभिमन्यु**
अध्यक्ष	महामन्त्री	स्वागताध्यक्ष
आचार्य यशपाल	**प्रिं० आजादसिंह**	**सन्तराम आर्य**
स्वागतमन्त्री	सह-सयोजक	सयोजक

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, दयानन्दमठ, रोहतक (हरयाणा)

बेदाग दयानन्द

किसी भी महान् पुरुष के नाम से पहले लगे विशेषण उसके सम्पूर्ण जीवन का लेखा जोखा होता है। जिस महान् पुरुष के जितने अधिक विशेषण लगाये जाते हो, उसका जीवन भी उतना ही महान् होता है। महर्षि दयानन्द के नाम से पहले कई विशेषणों का प्रयोग किया जाता है, जिनमे प्रमुख यह है– वेदोद्धारक, नारि-उद्धारक, अछूतोद्धारक, देशरक्षक, गोरक्षक, सस्कृतिरक्षक, पतितोद्धारक, शुद्धिसचालक, योगिराज, त्यागी, तपस्वी, परोपकारी, दयालु व बालब्रह्मचारी आदि ऋषि महर्षि व देव विशेषण तो विशेषरूप से प्रचलित हैं ही।

महाभारत युद्ध के बाद सभी वैदिक विद्वानो के समाप्त होने से वेदज्ञान प्राय लुप्त-सा होगया था। अन्य वर्णों से तो वेद पढने-पढाने का अधिकार ब्राह्मणो ने प्राय छीन ही लिया था और स्वयं भी वेदो का पढना-पढाना छोड दिया और अपना पेट भरने के लिए अठारह पुराण (जो वेदविरुद्ध हैं) रचकर उनको ही धर्मग्रन्थ बतलाकर जनसाधरण को भ्रमित करने मे लग गये थे। यहा तक भी कहना आरम्भ कर दिया था कि वेदों को तो शखासुर पाताल लेकर चला गया। वेद हैं ही कहा? ऐसे समय में देवदयानन्द का प्रादुर्भाव हुआ, उन्होंने गुरुवर विरजानन्द से आर्षग्रन्थ तथा व्याकरण पढकर यह जान लिया कि वेद ज्ञान का भण्डार है और सब सत्यविद्याओ का एकमात्र ग्रन्थ है। उन्होने अपने परिश्रम से वेदो की कुछ प्रतियां दक्षिण भारत से खोजकर मगवाई और कुछ प्रतिया जर्मनी से मगवाई। इस प्रकार चारो वेदो को उपलब्ध कर लिया और इनको ईश्वरीय ज्ञान सिद्ध करके वेदो का पढना-पढाना व सुनना-सुनाना हर व्यक्ति का परमधर्म बतलाकर वेदो की पुन स्थापना की और अपना सम्पूर्ण जीवन वेदो के प्रचार व प्रसार मे लगा दिया। इसलिये महर्षि जी को वेदोद्धारक कहना उपयुक्त है।

ऋषि जी के आने से पहले नारी जाति की बडी सोचनीय दशा थी। वह पैरो की जूती, घर मे सिर्फ काम करने की मशीन और भोग-विलास की सामग्री मात्र ही समझी जाती थी। स्त्रियो को शिक्षा देना पाप समझा जाता था। ऐसे समय में महर्षि देवदयानन्द ने मनुस्मृति के श्लोक "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता:" के आधार पर नारी को समाज व गृहस्थ मे ऊचा स्थान दिलवाया। नारी को लक्ष्मी, सम्राज्ञी, व गृहिणी आदि नामो से सुशोभित किया। उनको पढने का पुरुषो के समान अधिकार तो दिलाया ही साथ ही उसे अर्धांगिनी बताकर हर धार्मिक कार्य मे साथ रखने का विधान बताया। रानी कैकेयी राजा दशरथ के साथ युद्ध में भी गई थी, उदाहरण देकर स्त्रियो को वीरागना भी होना चाहिए, बताया। शतपथब्राह्मण का मन्त्र "मातृमान्, पितृमान्, आचार्यवान्, पुरुषो वेद." के आधार पर बालक का पहला गुरु माता को बतलाकर नारी जाति का मान व सम्मान बढाया और कहा कि अशिक्षित माता का बच्चा कभी भी होनहार व विद्वान् नहीं बन सकता। इसलिये यदि सन्तान को महान् बनाना है तो स्त्रियो को पढना-पढाना बहुत अति आवश्यक है। उसी का फल है कि आज लडकिया हर क्षेत्र मे लडको से कहीं आगे है। इसलिए नारी जाति को तो ऋषि जी का उपकार कभी भूलना नहीं चाहिए।

ऋषि जी के आने से पहले जैसी स्त्री जाति की स्थिति थी, उससे भी बदतर हमारे शूद्र कहलानेवाले भाइयो की थी। उनसे प्रेम रखना तो दूर रहा, उनकी परछाई मात्र से भी घृणा थी। उनको पढना-पढाना धार्मिक स्थानो मे प्रवेश करना, यहा तक कि कुओं से पानी भरना भी वर्जित था, इसलिए अपने धर्म मे इज्जत न होने से हमारे शूद्र भाई विधर्मी बनते जा रहे थे। ऐसी स्थिति मे स्वामी जी ने शूद्रो को हिन्दुओ का अभिन्न अग बताया। जैसे शरीर को सुचारु रूप से चलाने के लिए शरीर के सभी अगो को स्वस्थ रखना जरूरी है, एक अग में भी दोष आ जाने से शरीर स्वस्थ नहीं रह सकता, उसी प्रकार हिन्दू समाज रूपी शरीर भी तभी उन्नति व समृद्धि प्राप्त कर सकता है जबकि चारो वर्ण ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र सगठित होकर एक साथ प्रेम से रहे तभी आनन्दित व सुखी रह सकते हैं। यह बतलाकर शूद्रो को मान व सम्मान दिलवाया और उनको विधर्मी होने से बचाया। महर्षि जी ने हिन्दू (वैदिक) धर्म को बचाने के लिए जो सबसे उत्तम व आवश्यक काम किया, वह था शुद्धि आन्दोलन। जो हमारे हिन्दू भाई भय, लालच व लाचारीवश विधर्मी (मुसलमान व ईसाई) बन गये थे उनकी शुद्धि करके वापस वैदिक (हिन्दू) धर्म मे परिवर्तित किया। उतना ही नहीं जो विधर्मी भाई हिन्दू धर्म मे आना चाहते थे उनके लिए भी दरवाजे खोल दिये, इससे मुसलमानों व ईसाइयों में खलबली मच गई और वे हिंसा पर उतारू होगये। इस शुद्धि कार्य के लिए आर्यसमाज को स्वामी श्रद्धानन्द, प० लेखराम, व भक्त फूलसिंह जैसे सिह सपूतो का बलिदान भी देना पडा जो भारत के गौरवमय इतिहास में स्वर्ण अक्षरो मे लिखे जाने योग्य है।

महर्षि जी के हृदय में गऊमाता के प्रति बडी करुणा थी। गऊ को वे परिवार, समाज व राष्ट्र की धरोहर व रीढ की हड्डी मानते थे और उनकी उन्नति के लिये गऊ को परम सहयोगी व आवश्यक मानते थे। साथ ही मानवमात्र के लिये बडा उपयोगी पशु समझते थे। आर्थिक दृष्टि से गाय कितनी उपयोगी है। इसके लिए महर्षि ने एक लघु पुस्तिका "गोकरुणानिधि" लिखी जिसमे गाय के प्रति उनकी हृदय की करुणा फूट-फूटकर निकली है जो अनायास ही पाठको के हृदय को छू लेती है। गोहत्याबन्दी के लिये अपने अन्तिम काल मे लाखो भारतीयो के हस्ताक्षर करवाकर महारानी विक्टोरिया के पास लन्दन भेजे थे और उस समय के गवर्नर को भी गोहत्याबन्दी के लिये निवेदन-पत्र भी भेजा था। प्रसगवश यहा यह बतलाना भी उचित है कि स्वामी जी की प्रेरणा से और स्वामी जी के ही करकमलो से राव युधिष्ठिर के सुपुत्र राव तुलाराम ने भारत की प्रथम गऊशाला के रूप मे रिवाडी (हरयाणा) मे खुलवाई थी। उसके बाद अनेक गऊशालाए भारत के अन्य भागो मे खुलीं। आज उनकी सख्या सैकडो मे है। स्वामी जी की असमय ही मृत्यु हो जाने से वे अपनी गोहत्याबन्दी की इच्छा को पूर्ण नहीं कर सके। हमे दुख इस बात का है कि हमारे देश को स्वतत्र हुए आज करीब ५४ वर्ष होगये। यह जघन्य पाप तुष्टिकरण की कमजोर नीति के कारण अभी भी जारी है जबकि स्वतत्रता आन्दोलन के समय गोहत्याबन्दी एक अहम् विषय था, जिसके लिए हमारे अमर शहीदो ने अपने प्राणो की आहुति देकर भारत माता को परतन्त्रता की बेडियो से मुक्त करवाया था।

स्वामी जी अपने जीवन मे अनेक कुरीतियो व कुप्रथाओ जैसे सतीप्रथा, विधवाओं का विवाह न होना, जबकि विधुरो का विवाह होता था, पुरुषो के बाल व वृद्ध विवाह होना, विदेशो की यात्रा को पाप समझना, मृतक श्राद्ध, भूत-प्रेत, गण्डे डोरी, ताबीज आदि मे अन्धविश्वास होना, स्त्रीपर्दा आदि का सिर्फ डटकर विरोध ही नहीं किया बल्कि इनको हिन्दू समाज से बहिष्कार ही करवा दिया। इसीलिये स्वामी जी को उस समय के समाज सुधारक राजा राममोहनराय, ईश्वरचन्द विद्यासागर व केशवचन्द्र सेन आदि से बडा समाज सुधारक माना जाता है।

स्वामी जी जितने बडे समाज सुधारक थे उससे कहीं ज्यादा राष्ट्रभक्त भी थे। वे जानते थे कि पराधीनता मे हम अपनी आर्य सस्कृति व सभ्यता को नहीं बढा सकेगे। अग्रेजी भाषा के होते हुए हम अपनी सस्कृत व हिन्दी भाषा को उनका गौरव व सम्मानपूर्ण पद नहीं दिला सकेगे, इसलिये महर्षि दयानन्द ने अपने अमरग्रन्थ "सत्यार्थप्रकाश" मे यह लिख दिया कि विदेशियो का राज्य चाहे कितना भी अच्छा क्यो न हो, वह भी अपने राज्य से अच्छा नहीं हो सकता। सत्यार्थप्रकाश के इन्हीं विचारो को पढकर देश मे आजादी प्राप्त करने की एक लहर आई और गोपालकृष्ण गोखले, बालगगाधर तिलक व महात्मा गाधी इसी लहर से प्रभावित हुए जिनको स्वाधीनता प्राप्ति का श्रेय या यश प्राप्त है। स्वामी जी ने अपने शिष्य श्यामजीकृष्ण वर्मा को लन्दन इसलिये भेजा कि वह वहा जाकर भारतीय नवयुवकों में राष्ट्रप्रेम की भावना भरे। श्यामजीकृष्ण वर्मा ने इग्लैंड मे जाकर "इण्डिया हाउस" की स्थापना की जिसमे रहकर वीर सावरकर, देवतास्वरूप भाई परमानन्द, मदनलाल धींगडा व उधमसिह जैसे वीर क्रान्तिकारियो ने देश के लिये प्राणो तक की बाजी लगाने की प्रेरणा पाई। महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित क्रांतिकारी देशभक्त समाजसुधारक व परोपकारी सस्था आर्यसमाज ने लाला लाजपतराय, भगतसिह, रामप्रसाद बिस्मिल, असफाक उल्ला व चन्द्रशेखर आजाद जैसे क्रांतिकारियो मे देशप्रेम की भावना भरी, जिन्होने देश की आजादी के लिये हंस-हंसकर फासी के फन्दे को चूमा। काग्रेस का इतिहास इस बात का साक्षी है कि सन् १९४२ मे देश की स्वतत्रता की लडाई मे ८५ प्रतिशत आर्यसमाजी ही जेलो मे थे। यह इतिहास किसी आर्यसमाजी ने नही लिखा था, बल्कि पट्टाभि सीतारमैया ने लिखा है जो आर्यसमाजी नहीं थे।

महर्षि जी के हृदय में दु खित, असहाय, अनाथ व विधवाओं के प्रति बडा प्यार व सवेदना थी। उनके दु खो को देखकर वे द्रवित हो जाया करते थे। एक गरीब विधवा को अपने बच्चे के शव को बिना कफन के ही गगा में बहाते देखकर महर्षि जी रातभर देश की गरीबी पर रोये थे। उनकी दया उस समय पराकाष्ठा की सीमा को लाघ जाती है जब उन्होंने अपने ही हत्यारे कातिल धौडमिश्र रसोइये को क्षमादान देते हुए नेपाल भाग जाने के लिये पाच सौ रुपये अपने पास से देते हैं और कीचड में फसी बैलगाड़ी को बैलो पर दया करके स्वय को कीचड मे डालकर गाडी को बाहर निकाल देते हैं। ऐसा कोई गुण नहीं जो महर्षि दयानन्द मे नहीं था। वे परम त्यागी, तपस्वी, परोपकारी, साहसी, सन्तोषी तो थे ही साथ ही साथ वेदों के प्रकाण्ड विद्वान् व महान् योगी भी थे। वे एक घण्टा, दो घण्टा की नहीं १८ घण्टो की समाधि लगाने के अभ्यासी थे जो मोक्षपद पाने के लिये पर्याप्त है। धन्य है, हे ऋषिवर ! जिसने अपने मोक्ष को त्यागकर, मानवमात्र को मोक्ष का मार्ग दिखाने के लिये कर्मक्षेत्र मे उतरे। उन्होने अपने शरीर व आत्मा को योग-साधना, कठिन परिश्रम, सयम व सदाचार आदि गुणो से तपाकर इतना बलिष्ठ व प्रतिभाशाली बना लिया था जिससे उनके महान् व्यक्तित्व का प्रभाव हर व्यक्ति पर पडे बगैर नहीं रहता था।

इन सब गुणो के होते हुए भी उनमें एक गुण इतना विलक्षण और महान् था जिसका लोहा विरोधी भी मानते थे। वह था महर्षि जी का पूर्ण ब्रह्मचर्य। इससे डिगाने के लिये विरोधियो ने क्या नहीं किया ? उनके चरित्र पर झूठे दोष लगाये, उनको अनेक प्रकार से अपमानित करने की कोशिश की। यहा तक कि एक 'वेश्या' को धन का लालच देकर ऋषि जी का चरित्र हनन करने के लिए उनके पास भेजा। वाह रे बालब्रह्मचारी दयानन्द ! तेरे मुखमण्डल के तेज को देखकर और तेरी कोमल वाणी से मा का उच्चारण सुनकर उस वेश्या का कलुषित हृदय पिघल गया जिसको सारा ससार घृणा की दृष्टि से देखता हो, उसके स्वय के बच्चे भी मा कहने मे लज्जा महसूस करते हो, उसको एक सन्यासी मा कहता है, तो उस पतिता का हृदय कैसे नहीं बदलेगा ? अब तो वह गगा के समान पवित्र हो गई थी। जो ऋषि जी को डुबोने आई थी। वह स्वय ही अपनी आत्मग्लानि मे डूब गई और ऋषि जी के चरणो मे गिरकर क्षमायाचना की। आह ! कैसा था उस योगिराज का ब्रह्मचर्य।

वैसे तो सभी विशेषण ऋषि जी के गुणों के अनुरूप ही हैं, परन्तु एक विशेषण जो मेरे को सबसे अधिक अच्छा और सटीक लगा, जिस पर बहुत कम लोगो का ध्यान जाता है वह विशेषण है "बेदाग दयानन्द"। स्वामी जी के सम्पूर्ण जीवन पर कोई उगली उठाने की हिम्मत नहीं कर सकता। वे बेदाग थे। इसमे कोई सशय या सदेह नहीं। सबसे बडी बात तो यह है कि जिसका सारा ससार विरोधी हो। अपने स्वार्थवश सभी कामी, दुष्ट दुराचारी लोग मिलकर "दाग" लगाने पर तुले हो, ऐसी स्थिति में महर्षि दयानन्द जैसा ही पूर्ण ब्रह्मचारी, महान् चरित्रवान् व्यक्ति ही "बेदाग" रह सकता है, अन्यो के लिये मुश्किल ही नहीं असम्भव है। इस विलक्षण विशेषण को स्पष्ट करने के लिये एक घटना का जिक्र करना यहा बहुत जरूरी है जिससे इस विशेषण को समझने मे पाठको को बडी आसानी होगी।

जब महर्षि दयानन्द का देहावसान हुआ, उस समय सभी आर्यजन फूट-फूटकर रो रहे थे, तभी एक पौराणिक साधु जो हमेशा दयानन्द की बुराई करता था, गाली देते नहीं थकता था, लोगो को यह कहकर कि दयानन्द नास्तिक है, राम, कृष्ण व हमारे देवी-देवताओं को नहीं मानता है, हमारे श्राद्ध तर्पण व तीर्थस्थानो मे इसका विश्वास नहीं है, हिन्दूधर्म को नष्ट करने पर तुला है आदि दोष लगाकर बहकाया करता था, उसको भी दयानन्द की मृत्यु पर रोता देखकर लोगों के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। जिस साधु ने सारी उम्र दयानन्द को बदनाम किया हो, दयानन्द जिसको फूटी आख नहीं सुहाया हो, वह आज दयानन्द की मृत्यु पर क्यों आंसू बहा रहा है ? उसको तो आज दिल खोलकर हसना चाहिये, घी के दिये जलाने चाहिए। किसी ने उससे पूछ ही लिया कि ऐ महात्मन् ! आप तो दयानन्द के कट्टर विरोधी थे, हमेशा उसको गाली देते थे, आज उसकी मृत्यु पर क्यो रो रहे हो ? तुमको तो आज खुशी मनानी चाहिए। लड्डू बाटने चाहिए। तब उस साधु ने कहा कि मैं इसलिए नहीं रो रहा कि दयानन्द आज इस ससार से चला गया बल्कि इसलिये रो रहा हू कि हमारे बहुत प्रयास करने पर भी वह "बेदाग" चला गया। हमारी सारी काली करतूते धरी की धरी रह गई। यह घटना सुनकर मेरा मन मन्त्रमुग्ध होगया, आखो से श्रद्धा व प्रेम के आसू बह निकले और मेरे मन ने कहा वाह रे दयानन्द ! इस "बेदाग" विशेषण का तू ही सच्चा अधिकारी है।

ऋषि जी ने अपने चरित्र पर किसी प्रकार का दाग लगने नहीं दिया। यह बात अपनी जगह बिल्कुल सही है। साथ ही दयानन्द ने अपने सत्य सनातन वैदिक सिद्धान्तो से किसी प्रकार का गलत समझौता न करके, अपने सिद्धान्तो पर अडिग रहकर वैदिक सिद्धान्तो को भी "बेदाग" रखा। मूर्तिपूजा का खण्डन, वेद ईश्वरीय ज्ञान है, वेद सब सत्यविद्याओ का पुस्तक है, ईश्वर अवतार नहीं लेता आदि कई जटिल प्रश्नो पर कुछ नर्म बनने के लिए लोगो ने बहुत लालच प्रलोभन दिये। किसी ने मदिर का मठाधीश बनाने का लालच दिया तो किसी ने सस्था का प्रधान बनाने का प्रलोभन दिया लेकिन उस लगोटधारी फकीर ने सब लालच व प्रलोभनो को ठुकरा दिया और अपने वैदिक सिद्धान्तो पर अटल रहे उनसे कभी विचलित नहीं हुए और न ही कभी किसी प्रकार की आच आने दी। इसलिए भी दयानन्द इस "बेदाग" विशेषण के और भी ज्यादा अधिकारी बन जाते हैं। इस "बेदाग" विशेषण को हम देवदयानन्द के सम्पूर्ण जीवन का दर्पण कह देवे तो उचित तो है ही साथ यथार्थ भी है।

—**खुशहालचन्द्र आर्य,** १८० महात्मा गाधी रोड, (दो तल्ला) कोलकाता-७०००০७

हरयाणा राज्य गोरक्षा संघ द्वारा २ नवम्बर २००२ को महापंचायत रामलीला मैदान झज्जर में

गोप्रेमी सज्जनो ! दुलीना दुर्घटना मे राजनैतिक लोग लोगों को गुमराह कर रहे हैं। अपनी राजनीति चमकाने के लिए दलित तथा गैर-दलित का प्रश्न उत्पन्न कर समाज में भेदभाव की भारी दीवार खडी कर रहे हैं। गाय के विषय को रद्दी के बस्ते में डाल केवल एक ही समाज को तोडने का राग अलाप रहे हैं। याद रखें जिस खाई को खोद रहे हैं वह खाई उन्हीं के नुकसान का कारण बनेगी। गोमाता की हाय बक्शेगी नहीं। सभी गोभक्तो से प्रार्थना है भारी सख्या में महापंचायत मे पहुचकर गाय की रक्षा करे। याद रखें यह—

गोमाता की रक्षा है, हरयाणा की परीक्षा है।

लाखों की सख्या मे पहुचकर आपस के भाईचारा तथा गाय की रक्षा का कार्य कर पुण्य के भागी बने।

—**बलदेव, प्रधान ह०रा० गोरक्षा संघ**

सहस्राब्दी और देवदयानन्द

लेखक--**देवनारायण भारद्वाज,** सहायक कृषि निदेशक (सि नि) 'वरेण्यम्' एम आई जी ४५ पी, अवन्तिका कालोनी (ए डी ए) रामघाट मार्ग, अलीगढ

सृष्टि-काल-गणना के अनुसार हम भारतीय लगभग दो अरबवें वर्ष के समीप चल रहे हैं। युग गणना के अनुसार हम कलियुग की ५ सहस्राब्दी पार कर चुके हैं। विक्रम सम्वत् के अनुसार भी हम ५९ वर्ष से तीसरी सहस्राब्दी मे हैं, किन्तु इनके प्रति कहीं कोई शोर नहीं। ईस्वी सन् की अभी दूसरी सहस्राब्दी चल रही है कि सारा ससार तीसरी सहस्राब्दी के आगमन का बडे जोर-शोर से स्वागत समारोहो में जुट गया है। सयुक्त राष्ट्र सघ मुख्यालय न्यूयार्क मे कई दिन से चलनेवाला सहस्राब्दी विश्वशान्ति शिखर सम्मेलन ३१ अगस्त, २००० को समाप्त हुआ है और राज्याध्यक्षो एव राष्ट्राध्यक्षो का शिखर सम्मेलन भी एक सप्ताह बाद सम्पन्न होगया। परस्पर मेलमिलाप व मौज-मस्ती के अतिरिक्त कहीं कोई परिवर्तन नहीं, कोई क्रान्ति नहीं, और कहीं शान्ति नहीं। कश्मीर हो, श्रीलका हो या फिजी हो या अन्य कोई स्थान जहा पर नरसहार चल रहा था, वहा वह ज्यो का त्यो चल रहा है। इन विश्व सम्मेलनो मे सहस्रो की सख्या मे प्रतिनिधियो ने भाग लिया। भारत से भी एक विशाल दल वहा गया। भाषणो की भीड रही, कथनी व करनी मे अन्तरवश विश्वशान्ति मृगतृष्णा ही बनी रही। महात्मा गाधी की वशजा इला गाधी ने ठीक ही कहा कि "हमे अब अधिक धर्मों की नहीं बल्कि बेहतर मनुष्यो की जरूरत है।" सयुक्त राष्ट्र महासचिव कोफी अन्नान का कथन भी सटीक रहा। उन्होने कहा "इक्कीसवीं सदी मे धर्मान्धता तथा असहिष्णुता के लिए कोई स्थान नहीं है। धार्मिक नेताओ ने इन बुराइयो का कभी जोरदार विरोध नहीं किया। धर्म को प्राय राष्ट्रवाद से जोड दिया गया, जिसके कारण हिसक सघर्ष हुए तथा परस्पर प्रतिद्वन्द्वी गुटो का गठन हुआ।" महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भी विश्वशान्ति के लिये दिल्ली दरबार के समय एक सर्वधर्म सम्मेलन सन् १८७७ मे किया था। उन्होने जो निष्कर्ष निकाला था, उसका पालन तब तो नहीं हो पाया था यदि अब भी हो जाता तो विश्वशान्ति सुनिश्चित हो जाती। वे जानते थे कि विश्व के लोग जब तक तथाकथित अनेक धर्मो व मतमतान्तरो मे उलझे रहेगे तब तक परस्पर द्वन्द्व जारी रहेगे। यदि ये सब विश्व-मानव-धर्म के एक ध्वज के नीचे आजाते हैं, तो शान्ति स्थापित हो सकती है। उन्होने विभिन्न धर्माचार्यो से यही कहा था कि आप लोग ऐसी पाच-पाच बाते लिखकर ले आइये, जिनको सभी स्वीकार कर सकें। अपनी अलग-अलग पहचान समाप्त होने के भय से उक्त प्रस्ताव पारित नहीं हो सका। महर्षि को यह कहने का इसलिए अधिकार था, क्योंकि उन्होंने पाच ही नहीं १० ऐसे सूत्र आर्यसमाज के नियमो के रूप मे ससार को दिए हैं, यदि उनका पालन किया जाए तो भूमण्डल पर सर्वत्र सुख-सन्तोष एव शान्ति का साम्राज्य स्थापित हो सकता है। ससार का उपकार करना और सबकी उन्नति मे अपनी उन्नति समझना ही तो इन सूत्रो का सार है।

आर्यसमाज के इन दस नियमो मे भिन्न मतावलम्बी वेद' शब्द पर ऊपर से आपत्ति कर सकते हैं। किन्तु जब वे उसे पढेगे तो उन्हे पता चल जायेगा, कि यह तो शुद्ध ज्ञान की जीवनधारा किसी मतमतान्तर के लिए नही मनुष्यमात्र के लिए समानरूप से उपयोगी है। महर्षि का सम्पूर्ण जीवन किसी मत या सम्प्रदाय की स्थापना मे नहीं बीता, बीता तो केवल मानव निर्माण के अभियान मे बीता। उनका ५९ वर्ष की अवस्था मे मानव धर्मोद्धार हेतु बलिदान होगया। यह ५ और ९ की सख्याए भी विचित्र हैं। इन्हे जोडते हैं तो १४ बनते हैं। वे १४ वर्ष की आयु से ही बोध-शोध की इस तप शृखला से जुड गये थे। उन्होने ४×९ का परिष्कार करने के लिए अपने जीवन की बाजी लगायी थी।

१ पचमहाभूत (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश)
२ पचतन्मात्रा (गन्ध, रस, रूप, स्पर्श, शब्द)
३ पचजन (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, अन्त्यज)
४ पचायतन (माता, पिता, आचार्य, अतिथि, पति/पत्नी)
५ पचमहायज्ञ (ब्रह्म, देव, पितृ, अतिथि, बलिवैश्वदेवयज्ञ)
६ पचकोश (अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय, आनन्दमय कोश)
७ पचकर्मेन्द्रिय (हाथ, पैर, मुख, गुदा, उपस्थ)
८ पंचज्ञानेन्द्रिय (जिह्वा, नाक, आख, कान, त्वचा)
९ पंचप्राण (प्राण, अपान, व्यान, उदान, समान)

परमात्मा की समग्र चराचर सृष्टि उत्पत्ति, स्थिति एव विलय के उपरोक्त सभी बिन्दुओ से तभी प्रभावित होती है। जब उसका सयोग ५+४=९ पचक्लेश (अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष एव अभिनिवेश)+अन्त करण चतुष्टय (मन, बुद्धि, चित्त, अहकार) से होता है। उपरोक्त सभी ९ पर जब मानव सही प्रकार से नियत्रण कर लेता है, तो उसके जीवन से उपरोक्त पञ्चक्लेश तिरोहित हो जाते हैं। बचे रहते हैं ९-५=४ पुरुषार्थ चतुष्टय (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष)। नवम (९) की सख्या पूर्णता की परिचायक तो है ही नवीनता की द्योतक भी है। क्योकि 'नव' के ९ और नया दोनो ही अर्थ होते हैं। वेद भी यही कहता है। **"सनातनमेनमाहुरुताद्य स्यात् पुनर्णव "** (अथर्व० १० ८ २३) के अनुसार सनातन अनादि सदा रहनेवाला वही है जो आज (प्रतिदिन) फिर-फिर नया होने की क्षमता रखता है। वेदोक्त धर्म ही है जो सनातन और पुनर्णव है। यही मानवमात्र को **'अग्ने नय सुपथा'** (यजु० ४०/१६) ज्योतिर्मय कल्याणकारी मार्गप्रशस्त करते हुए आत्मविश्वास प्रदान करता है। मानव का महोच्चार **"अय मे हस्तो भगवानय मे भगवत्तर"** (ऋ०१०, ६० १२) मेरा एक हाथ भगवान् है और दूसरा भगवत्तर है। अर्थात् एक हाथ मे अभ्युदय है दूसरे हाथ मे नि श्रेयस है। ऐश्वर्य, धर्म, यश, श्री, ज्ञान और वैराग्य इन (६) को प्राप्त कर व्यक्ति भगवान् बन जाता है, किन्तु सत्, चित् आनन्द इन (३) को जोडकर व्यक्ति भगवान् से भगवत्तर बन जाता है। (६+३=९)यही उसकी पूर्णता है। महर्षि के जग-जन्म (स० १८८१ वि०) एव लोक निधन (स० १९४० वि०) की सख्याओ का योग करने पर भी क्रमश ९ और ५ आते है। प्रथम को इकाई द्वितीय को दहाई मानने पर सख्या ५९ ही बनती है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने मानव मात्र को धर्म, अर्थ, काम के अभ्युदय एव मोक्ष के नि श्रेयस को प्रदान करने के लिए और विश्वशान्ति का मार्ग प्रशस्त करने के लिए न केवल वेदो का उद्धार किया, प्रत्युत विनाश के कगार तक बढ गये मानव को वेदो की ओर लौटने का सन्देश दिया। **"सश्रुतेन गमेमहि मा श्रुतेन विराधिषि"** (अथर्व० १ १ ४) अर्थात् वेद के साथ मिलकर चलो उसके विरोधी मत बनो। उन्होने वेद के द्वार बिना किसी भेदभाव के सभी के लिए खोल दिये **"यथेमां वाच कल्याणीम् आ वदानि जनेभ्य."** (यजु० २६ २) आदि मत्रो के प्रमाणस्वरूप न केवल मनुष्य को वेद पढने-पढाने और सुनने सुनाने का अधिकार प्रदान किया, अपितु ऐसा करना परमधर्म बताया। सम्पूर्ण विश्व के लब्धप्रतिष्ठित पुस्तकालयो मे वेद से पुरातन कोई ग्रन्थ नहीं मिलता है। यह किसी वर्ग सम्प्रदाय देश जाति, कालविशेष की बात नही करता है। सभी को **"स्वस्ति पन्थामनु चरेम सूर्याचन्द्रमसाविव"** (ऋ० ५ ५१ १५) सूर्य चन्द्र के समान कल्याणकारी मार्गो का अनुसरण करने की प्रेरणा देता है। ज्ञान, कर्म, उपासना, विज्ञान के समृद्ध सम्पुट से परिपूर्ण चार वेद ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद के चार खण्डीय लगभग साढे बीस हजार मन्त्रो के भण्डारागार के ताले महर्षि दयानन्द ने खोलने के प्रयत्न किए। डेढ वेद का हिन्दी भाष्य करके उन्होने एक ताला खोल दिया, दूसरा खोल ही रहे थे कि उन्हे पता चला कि हम तो चक्रव्यूह मे फस गये हैं। आज के धृतराष्ट्र, दुर्योधन एव द्रोणाचार्य हमे जीवित रहने नहीं देगे। इस जीवन मे चारो द्वार हम तो खोल नहीं पायेगे। पर उन्होने चार तालियो का निर्माण कर दिया। कोई भी आइये 'ऋग्वेदभाष्यभूमिका' की ताली से वेदभाष्य का ताला खोलिये। 'सत्यार्थप्रकाश' से अपने कार्य-व्यवहार का ताला खोलिये। 'आर्याभिविनय' से अपनी उपासनामय आस्तिक्ता का ताला खोलिए और 'सस्कारविधि' से मानव निर्माण विज्ञान का ताला खोलिए। वेद और सृष्टि मे परस्पर कोई विसगति नहीं है। मध्य मे जो यह मानव है वही इन दोनो मे असन्तुलन बनाकर ससार को भार बना देता है। यदि यही **'मर्माणि ते वर्मणा'** (साम० १८७०) मनन करके मर्म को समझ जाए तो सब कुछ रक्षित हो सकता है। हे मेरे प्यारे महर्षि देवदयानन्द इन सहस्राब्दी समारोहो मे आपकी स्मृति जागकर यही कहती है कि यदि आज भी आपकी बात अनसुनी न की जाये, जानली जाये, मान ली जाये और कार्यरूप मे ढाल ली जाये तो मानव कल्याण एव विश्वशान्ति सुनिश्चित हो जाये। देश मे विज्ञान की दीपावली है। किन्तु मानव के हृद्देश मे अन्धेरा है। देव ! तुम्हे श्रद्धाजलि के अतिरिक्त हम दे ही क्या सकते हैं।

वैदिक समारोह सम्पन्न

श्रीमती निर्मला विक्रमादित्य गुप्ता परिवार द्वारा बिलासपुर (छत्तीसगढ) आर्यसमाज भवन मे दिनाक ७-८-२००२ से ११-८-२००२ तक पचदिवसीय वैदिक यज्ञ एव सत्सग समारोह का आयोजन किया गया। परोपकारिणी सभा के सचिव एव वेदो के विद्वान् डा धर्मवीर जी के आचार्यत्व मे प्रतिदिन प्रात ७-३० से ८-३० बजे तक वैदिक यज्ञ सम्पन्न कराया गया। गुप्ता परिवार के श्रीमती सीमा-सुधीर, श्रीमती प्रेमलता-सौमित्र, श्रीमती शालिनी-प्रदीप, श्रीमती सुलभा-शिवकुमार, श्रीमती स्मृति-लक्ष्मीप्रसाद, श्रीमती नारायणी-राममाधव, श्रीमती शशिप्रभा-मुकुन्दमाधव, श्रीमती रत्ना-महेश्वरप्रसाद दम्पतियो ने यजमान की भूमिका निर्वाह करते हुए आचार्यप्रवर के निर्देशानुसार विधि-विधानो का पालन करते हुए सफलतापूर्वक यज्ञ सम्पादित किया। आयोजन के पाचवे एव अतिम दिन यज्ञ की पूर्णाहुति हुई। पूर्णाहुति मे गुप्ता परिवार के अतिरिक्त बिलासपुर आर्यसमाज के एव नगर के गणमान्य परिवार के सदस्यों एव दम्पतियो ने वैदिक यज्ञ मे सम्मिलित होकर पूर्णाहुति मे नारियल, मेवे एव स्वास्थ्यवर्धक औषधियो की आहुति अत्यन्त श्रद्धापूर्वक दी। यज्ञ के समापन पर पूर्णाहुति के दिन स्वल्पाहार एव मिष्ठान्न वितरण किया गया।

वैदिक सत्सग समारोह के इन पाच दिनो मे प्रात ८-३० से ९-३० तक एव साय ८-३० से ९-०० तक प्रतिदिन महू से पधारे प० प्रकाश जी एव मडली द्वारा प्रेरणाप्रद भजन सुनाये गये। आर्यसमाज के सत्सग परिसर मे खचाखच भरे श्रोताओ ने भजनो की मुक्तकठ से प्रशसा की और इस अलभ्य आयोजन का भरपूर लाभ उठाया। भजनोपरान्त प्रतिदिन प्रात· ९-३० से १०-३० तक एव रात्रि ९-०० से १०-०० बजे तक डा धर्मवीर जी ने वेदो के अत्यन्त गूढ दर्शन को सुगम भाषा एव दैनिक जीवन के उदाहरणो से स्पष्ट करते हुए यज्ञ एव वेदो के अध्ययन को दैनिक जीवन मे स्थान देने की मार्मिक अपील की। डा धर्मवीर जी ने मनुष्य जीवन के चरम लक्ष्य प्राप्ति के लिए साधना-ईश्वर उपासना एव स्वाध्याय को अत्यन्त आवश्यक प्रतिपादित किया।

अज्ञानता का अन्त

उन्नीसवीं शताब्दी मे अज्ञान का, घोर अधेरा छाया था ।
ऐसे मे दयानन्द सत्य ज्ञान का, लेकर उजियारा आया था ॥
सनातन सस्कृति की रक्षा हेतु, बीडा अनेको ने उठाया था ।
पर केवल देव दयानन्द इसका, सच्चा मर्म समझ पाया था ॥
बाइबिल कुरान पुराणो मे, लिखा हुआ ठीक है सारा ।
भय से भीत नाम के भूखे ही तो, देते रहे यह नारा ॥
सत्य कहने वाले को तो, उठाना पडता है कष्ट बडा ।
पर घबराते नहीं वीर आर्य, पथ चाहे हो कितना भी कडा ॥
सब एक हैं तो पादरी नित्य, क्यो नहीं मन्दिर मे जाता ।
जीवन के कुछ पल वह भी, क्यो नहीं मन्दिर मे बिताता ॥
'सब ठीक है' कहने वाला, सुरा-सुन्दरी-मास क्यो न अपनाता ।
यह भी धर्म नहीं मानव-प्रतिपादित, ये तो हैं सब सम्प्रदाय ।
मानव एकता और प्रगति का, वैदिक धर्म एकमात्र उपाय ॥
महर्षि दयानन्द जब लेकर वेदो का, सनातन सदेश आया था ।
धर्म के ठेकेदारो का मन तब, विचलित हो घबराया था ॥
हृदय ग्लानि हुई उनको, भापकर दयानन्द का ज्ञान ।
खण्डित होता प्रतीत हुआ, सबको अपना झूठा मान ॥
जो वेदो का करते थे बखान, बुद्धि उनकी भी चकराई ।
पर स्वयं अपनो ने भी, साथ चलने में अनिच्छा दिखलाई ॥
ऐसा जान दयानन्द ने कर्मक्षेत्र मे, अकेले ही छलाग लगाई ।
ओज-बल और सत्य ज्ञान से, सर्वत्र वेद की पताका फहराई ॥
बुरे को बुरा भले को भला कह, दयानन्द ने ऐसी नाद गुजाई ।
लुटी मिटी हुई अपनी शान, आर्यों को फिर से याद आई ॥
आर्य-श्रेष्ठ जन बने सभी, क्या है भला इसमें बुराई ।
वेद ही सत्य ज्ञान का पुस्तक है, बात उन्होंने सहज सुझाई ॥
वेद-विद्या से सर्वत्र समाज मे, ज्ञान-पथ का विस्तार हो ।
एक का नहीं वरन् सब का, इससे भारी उपकार हो ॥
पदार्थ ज्ञान व ब्रह्म ज्ञान मिले, कैसे अनुपम यह रचना ।
सुख मिले सर्वत्र हो शान्ति, ऋषि का साकार हो सपना ॥
स्वार्थ ईर्ष्या अज्ञान छोड, तब क्यों न सत्य को अपनाते ।
उत्तर एक ही "वेदमार्ग" तप-ज्ञान-श्रद्धा से सिद्ध हो, सोच के हम घबरा जाते ॥

—कल्याणी कुण्डू, एम.ए., बी.एड., प्राचार्या,
कन्या गुरुकुल, बचगाव गामड़ी, कुरुक्षेत्र

दयालु दयानन्द

दयानन्द की दिव्य दया की जग मे अमर कहानी।
कुठित है जड यहा लेखनी, मूक हुई है वाणी।।
गोमाता पर करुणा करके करुणानिधि रचाई,
'गोकृष्यादि रक्षिणी सभा' बनाकर दया दिखाई,
कहा-'बचाओ गोधन को जो देश बचाना भाई,
धन्य धन्य हे दया तथा आनन्द के अनुपम दानी।
दयानन्द की दिव्य दया की ।
बैल धसे कीचड मे देखे हृदय पिंघलकर आया,
कोडो की भीषण चोटो से ऋषि ने त्राण दिलाया,
गाडी कीचड से खींची बैलो का प्राण बचाया,
चाह यही थी ताप-पक से मुक्त रहे सब प्राणी।
दयानन्द की दिव्य दया की ।
जाति न जगती जो न दया यह दयानन्द की होती,
यही दया बिखरी माला के मोती रही पिरोती,
इसी दया के आसू पोछे जो थी आखे रोती,
रोका उन्हे कुपथ से जो चलते थे कर मनमानी।
दयानन्द की दिव्य दया की ।
इसी दया ने पददलितो पतितो का त्राण किया है,
सुप्त आत्माओ को निज गौरव का ज्ञान दिया है,
इसी दया ने मृतको को नवजीवन दान दिया है,
इसी दया से दयानन्द की महिमा जग ने जानी।
दयानन्द की दिव्य दया की . ।
एक जननी को शिशु अक मे लेकर देखा रोती,
कफन नहीं है वस्त्र नाम को केवल एक थी धोती,
हलचल सी मच गई देख दुर्दशा देश की होती,
डोल उठा मन अचल हिमाचल नीन्द किसे थी आनी।
दयानन्द की दिव्य दया की. ।
सो न सके उस रात ऋषि आनन्दधनी वे हाय ।
पूछा सेवक ने "औषधि मगाए वैद्य बुलाए"
कहा ऋषि ने - "दर्दे दिल की कौन दवा बतलाए ?"
करुणा उन्हे रुलाती थी, जब सोते थे सब प्राणी।
दयानन्द की दिव्य दया की ।
एक अनहोनी हुई अहो जब आई सन्ध्या वेला,
धौड मिश्र जगजीवनदाता के जीवन से खेला,
किन्तु दयालु प्राण बचा गए देकर धन का थेला,
जीवन दिया मृत्यु को देखो अति विचित्र कहानी।
दयानन्द की दिव्य दया की . ।

—डॉ० कुमारी सुशीला आर्या, चरखी दादरी

पुरोहित की आवश्यकता

आर्यसमाज थर्मल कालोनी पानीपत मे एक पुरोहित की आवश्यकता है। उम्मीदवार सुयोग्य एव सभी सस्कार अच्छी प्रकार से करवाने वाला हो। निवास आदि की नि शुल्क एव सुन्दर व्यवस्था है। वेतन योग्यता के अनुसार। प्रधान/मंत्री आर्यसमाज थर्मल कालोनी पानीपत से शीघ्र सम्पर्क करे।

—रणबीरसिंह भाटी, मंत्री आर्यसमाज थर्मल कालोनी पानीपत,
दूरभाष ५६६७७५

आर्य-संसार

सत्कर्म के बिना सद्गति असम्भव

आर्यसमाज बी ब्लाक जनकपुरी नई दिल्ली मे प्रवचन करते हुए वैदिक प्रवक्ता आचार्य श्री गणेशप्रसाद विद्यालकार ने बताया कि मनुष्य-जन्म परमात्मा का दिया वरदान ही नहीं अपितु सर्वोत्तम पुरस्कार है। पुरस्कृत व्यक्ति की नैतिक जिम्मेदारी है कि वह अपने पुरस्कार की गरिमा को अक्षुण्ण रखे। इसी क्रम मे उन्होने सुकर्म पर बल देते हुए सुकर्मा बनने का सन्देश दिया। आचार्यश्री ने यह भी समझाया कि अपराध और प्रज्ञापराध किसे कहते हैं। किसे अधिक दण्ड भोगना पडता है। अपराध हुआ, समझने के पश्चात् न किए जाने का सकल्प लेना उत्तम है, परन्तु प्रकृष्ट रूप से ज्ञानवान् होने के पश्चात् भी किया गया अपराध प्रज्ञापराध की कोटि मे आजाता है। अतएव सावधान ! प्रज्ञापराधी न बने।

सत्य और असत्य के प्रसग मे उन्होने बताया कि सत्यवक्ता मानसिक रूप से स्वतन्त्र किन्तु असत्य-वक्ता मानसिक रूप से परतन्त्र रहता है। असत्य वक्ता को अपने द्वारा बोले गए असत्य को निरन्तर ध्यान मे रखना पडता है कि उसने कब तथा किससे किस प्रकार का असत्य भाषण किया है जबकि सत्यवक्ता को ऐसा कुछ नहीं करना पडता। जीवन का निचोड (सत्व) बताए बिना कैसी परिसमाप्ति अतएव उन्होने अत्यन्त मार्मिक एव हृदयग्राही पक्तिया कुछ इस प्रकार कहीं-"ओ३म् गुणगान करो, जीवन महान् करो, प्रभु के भजन मे ही लगन लगी रहे। सत्य ही आचार करो, सत्य ही विचार करो, सत्य ही व्यवहार करो, यही मानव-धर्म है।" —योगेश्वरचन्द्रार्य, प्रचारमन्त्री

श्री पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती जन्मोत्सव सम्पन्न

श्री जगदेवसिह सिद्धान्ती के जन्म-ग्राम बहराणा (झज्जर) मे १५-१०-२००२ को उनका जन्मदिन उत्साहपूर्वक मनाया गया। स्थानीय आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओ मे उनकी स्मृति मे बने श्री सिद्धान्ती-स्मारक-भवन मे प्रात ९ बजे यज्ञ के साथ यह जन्मोत्सव कार्यक्रम श्रद्धा एव उत्साह से आयोजित किया। इसी परिप्रेक्ष्य मे प० रामरख आर्य भजनोपदेशक का गाव मे दो दिन प्रभावशाली प्रचार कार्यक्रम हुवा। जन्मोत्सव कार्यक्रम का सचालन करते हुये डॉ० राजपाल बरहाणा ने श्री सिद्धान्ती जी के जीवन एव कार्यशैली तथा सामाजिक प्रभाव का दिग्दर्शन कराते हुये उपस्थित श्रोता स्त्री-पुरुषो से सिद्धान्ती जी की स्मृति मे सचालित किये गये पूर्ण नि शुल्क धर्मार्थ औषधालय, पुस्तकालय व्यायामशाला, जल-प्रबन्ध आदि जन-सेवा कार्यक्रमो की सफलता मे सहयोग की अपील की। उन्होने सिद्धान्ती जी के सहोदर भ्राता स्वर्गीय चौ० वेदमित्र जी एव उनके सुपुत्रो के अपूर्व त्याग एव उल्लेखनीय साढे नौ एकड जमीन एव लाखो रुपयो के नकद दान की भूरि-भूरि प्रशसा की। प० रामरख आर्य प्रचारक ने धार्मिक एव आध्यात्मिक कार्यक्रम प्रस्तुत करते हुये सिद्धान्ती जी के महान् जीवन से प्रेरणा लेने के लिए उपस्थितजनो को प्रेरित किया। महिलाए श्रद्धा के साथ यज्ञ-हेतु घी लेकर सम्मिलित हुई। आर्यसमाज बरहाणा हेतु कार्यक्रम मे २७०० रुपये दान रूप मे प्राप्त हुये। शान्तिपाठ एव यज्ञ-प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। —मन्त्री, आर्यसमाज बरहाणा (झज्जर)

यज्ञशाला निर्माण हेतु दान

१९४० मे जन्मे श्री हीरानन्द जी बवेजा रत्न गार्डन (शिवपुरी) गुडगाव निवासी हैं जिन्हे बाल्यकाल मे अपनी पूज्या माता श्रीमती तुलसीदेवी बवेजा से सुसस्कार मिले। शिक्षा पूर्ण करने के उपरान्त आप ३५ वर्ष तक हरयाणा राज्य बिजली बोर्ड गुडगाव के कार्यालय में अपर सचिव के पद पर सेवारत रहे आपकी यह विशेषता रही कि जहा आपकी नियुक्ति हुई पूरा सेवाकाल एक ही स्थान पर रहे और वहा से ३१ अप्रैल १९९८ में सेवानिवृत्त हुए। यह आपकी सच्चाई ईमानदारी एव नेकनियति का ही परिणाम है कि आपकी सेवानिवृत्ति पर आपके अधिकारी को भी यह कहना पडा कि आज हमारे कार्यालय से सच्चाई और ईमानदारी जारही है। आप सामाजिक कार्यकर्त्ता हैं लगभग २० वर्ष तक अपने इलाके मे आनन्द कल्याण मित्र मण्डल के प्रधान पद पर रहे, जहा रात-दिन सेवा करते हुए इलाके की काया ही पलट दी परन्तु जब आप आर्यसमाज के सम्पर्क मे आए तो उसकी विचारधारा से बहुत प्रभावित हुए और ईश्वर के सच्चे उपासक बने तथा श्री रामचन्द्र आर्य की प्रेरणा से आर्यसमाज भीमनगर के सदस्य बने तथा १२ वर्ष तक वहा कोषाध्यक्ष के कार्यभार को सुचारु रूप से सभाला। आपने अपनी धर्म की कमाई से आर्यसमाज रामनगर को यज्ञशाला निर्माण कार्य मे ५१००० रुपये दान देकर पुण्य एव यश अर्जित किया है। आप परिवारसहित सुख समृद्धि एव ऐश्वर्य को प्राप्त करते हुए इसी प्रकार निरन्तर समाजसेवा के कार्यो मे तत्पर रहे। —ओमप्रकाश चुटानी (मन्त्री)

वेदप्रचार सप्ताह सम्पन्न

आर्यसमाज गान्धीनगर मे एक सप्ताह का भव्य वेदप्रचार कार्यक्रम रविवार २२-९-२००२ को यज्ञ की पूर्णाहुति के साथ सम्पन्न हुआ। १६-९-२००२ से प्रारम्भ हुए इस वेदप्रचार सप्ताह मे प्रात ऋग्वेद यज्ञ एव साय श्री सत्यपाल जी के भजन तथा आचार्य अखिलेश्वर जी के प्रवचन हुए।

इस वर्ष का "आर्य ज्योति" सम्मान श्री रमेशकुमार मल्होत्रा जी को दिया गया। इस कार्यक्रम मे समाज के सभी अधिकारियो एव सदस्यो ने तन, मन, धन से सहयोग देकर कार्यक्रम को सफल बनाने मे सहयोग दिया। —शिवशकर गुप्त, मन्त्री

ऋषि-निर्वाण दिवस

आर्य केन्द्रीय सभा रोहतक के तत्त्वावधान मे ऋषि-निर्वाण दिवस दिनाक ३ नवम्बर, २००२ रविवार बाद दोपहर २ से ५ बजे तक आर्यनगर रोहतक के मुख्य पार्क मे आयोजित किया जारहा है। अत आपसे सानुरोध प्रार्थना है कि उक्त समारोह मे सपरिवार समय पर पधारकर अनुगृहीत करे।

निवेदक मन्त्री, आर्य केन्द्रीय सभा, रोहतक

महर्षि निर्वाणोत्सव के उपलक्ष्य में संगीत एवं भाषण प्रतियोगिता

महर्षि निर्वाणोत्सव के उपलक्ष्य मे सगीत एव भाषण प्रतियोगिता सोमवार ४ नवम्बर, २००२ को आर्य हाई स्कूल, बाबरा मोहल्ला मे आयोजित की जारही है। इस कार्यक्रम मे आप सभी सादर आमन्त्रित हैं।

निवेदक आर्यवीर दल रोहतक मण्डल

वैदिक भक्ति साधन आश्रम आर्यनगर रोहतक का स्वर्ण जयन्ती महोत्सव

सभी गुरुभक्तो एव यज्ञप्रेमियो को यह जानकर अति हर्ष होगा कि वैदिक भक्ति साधना आश्रम आर्यनगर रोहतक मे स्वर्ण जयन्ती महोत्सव ७ से १९ नवम्बर, २००२ तक (कार्तिक शुक्ला तृतीया से कार्तिक शुक्ला पूर्णमासी स० २०५९ वि०) को बडे हर्षोल्लास के साथ मनाया जारहा है। इस शुभ अवसर पर आप सब परिवार एव मित्रोसहित सादर आमन्त्रित है।

निवेदक दर्शनकुमार अग्निहोत्री (प्रधान)

गोवंश बढाओ, दूध बढ़ाओ - इनाम पाओ

सडको पर घूम रहे गोवश को गोशालाओ मे स्थान दिलाने हेतु और गोदुग्ध बढाने हेतु एक प्रोत्साहन योजना बनाई है। अक्तूबर २००२ से यह योजना हरयाणा राज्य की गोशालाओ पर लागू होगी और २००३ मे गोपाष्टमी के आसपास एक लाख रुपये से अधिक के इनाम व प्रमाणपत्र बाटे जायेगे। एक वर्ष मे तीन गोशालाओ प्रथम, द्वितीय, तृतीय को गोवश बढाने पर क्रमश ३१, २१, ११ हजार रुपये का नकद इनाम दिया जायेगा। इसी प्रकार जो गोशालाये दूध की मात्रा बढायेगी उन्हे भी क्रमश २१, ११, ५ हजार रुपये नकद इनाम दिये जायेगे। इनके अतिरिक्त राज्य के कुछ परम गोभक्तो गोसेवको एव गोरक्षको को भी सम्मानित किया जायेगा व नकद पुरस्कार दिए जाएगे। यह योजना हर वर्ष इसी प्रकार पुरस्कार स्वरूप आगे बढती जायेगी। इसमे होनेवाले व्यय की व्यवस्था एक समिति करेगी और यही समिति पुरस्कारो का निर्णय भी करेगी। इसमे ब्रह्मचारी ओमस्वरूपार्य गुरुकुल गोशाला, डिकाडला, ला० रामनिवास अग्रवाल गर्ग ट्रेडिग क० नया बाजार देहली जो कि गुरुकुल डिकाडला के भी अध्यक्ष हैं, श्री राजेन्द्रप्रसाद सिहल नरेला एव श्री हरिओम् तायल प्रबन्धक श्री गोशाला सोसायटी पानीपत होगे। इच्छुक गोशालाये सम्बन्धित प्रोफोर्मा पत्राचार द्वारा डिकाडला से प्राप्त करे। इस योजना के सयोजक ब्रह्मचारी ओमस्वरूपार्य जो कि हरयाणा गोवश रक्षा समिति के अध्यक्ष हैं, होगे अत उनसे दूरभाष सख्या ०१७४२-५९२२१७ पर सम्पर्क किया जा सकता है।

विशेष-नगरपालिकाओ की सीमा मे आनेवाली गोशालाए या जिनके पास ५ लाख रुपये फिक्स डिपोजिट मे हैं वे गोशालाए मे इस योजना मे नही आयेगी तथा उपर्युक्त योजना भारतीय नस्ल के गोवश पर ही लागू होगी।

—ब्र० ओमस्वरूप आर्य

आर्यसमाज : सर्वश्रेष्ठ समाज

–डॉ० कृष्णलाल, विश्वनीड-ई-९३७, सरस्वती विहार, दिल्ली-११००३४

अमीर-गरीब, छोटे-बडे, ऊच-नीच, बाल-युवा देश-विदेश, सभी जातियो के सच्चरित्र स्त्री-पुरुषो का एकमात्र सगठन आर्यसमाज है। आर्यसमाज चरित्र पर बल देता है। आर्यसमाज का आदर्श वाक्य है-**कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।** वह वेद पर आधारित धर्म, नीति, उपासनापद्धति, चरित्र-निर्माण चाहता है। इसी का प्रचार वह करता है। अन्धविश्वासों को छोडकर सब आर्य बने, श्रेष्ठ बने। आर्य कौन है ? जो चलता है, गति करता है, निरन्तर कार्य करता है, आलस्य मे नही रहता। आर्य केवल अपनी उन्नति के लिए प्रयत्नशील नहीं रहता है। इस विषय मे आर्यसमाज का निम्नलिखित नवम नियम स्मरणीय है-प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिए किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए। कैसी उन्नति अपेक्षित है, यह बात इससे पहले छठे नियम मे स्पष्ट करदी गई है जहा यह कहा है कि "ससार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।"

आर्यसमाज अन्य मत-मतान्तरों, सम्प्रदायो से इस बात मे भिन्न है कि जहा अन्यत्र तथाकथित भगवानो, प्रजापिताओं, आचार्यो आदि की बातो पर विश्वास करके उनका अन्धानुकरण किया जाता है, वहा आर्यसमाज के मन्तव्य ईश्वरीय वाणी वेद पर आधारित हैं। ईश्वर की वाणी मानवमात्र के व्यापक कल्याण के लिए प्रकट हुई।

अन्य सम्प्रदाय एकागी हैं, बाह्य आडम्बरो मे विश्वास करते हैं, चमत्कार दिखाकर, प्रदर्शन के द्वारा जनता मे आकर्षण पैदा करते हैं। दूरदर्शन मे एक ऐसे साधु बाबा को कुम्भ मेले मे दिखाया गया जिसकी खडावो मे उल्टी (पावो की ओर नोक वाली) कीले और इसी प्रकार आसन पर कीले लगी हुई थीं। परन्तु हाथ में सिगरेट सुलग रही थी। जो सिगरेट जैसे व्यसन को नहीं छोड सका वह औरो को उपदेश देने का अधिकारी कैसे होगया ? ऐसे आडम्बर बहुत चल रहे हैं। ये चरित्र-हीन, दिखावा करनेवाले साधु-सन्यासी समाज को कहा ले जाएगे। कई सस्थाओ मे शिविर (ध्यान शिविर) लगाते हैं और भोजन-आवास के नाम पर २५० रुपये प्रतिदिन लेते हैं। साधक आने-जाने का व्यय अपनी जेब से करते हैं और आठ-आठ, दस-दस दिन तक अपने कार्य की हानि करते हैं-सो अलग। वहा केवल व्यक्ति की आध्यात्मिक उन्नति का राग अलापते हैं। उनका उद्देश्य ही है कि व्यक्ति को समाज-परिवार से काटा जाये। वे कहते हैं कि व्यक्ति सुधरेगा तो समाज सुधरेगा। यह कभी सम्भव नहीं क्योकि समाज से व्यक्ति को पहले ही काट दिया गया। ब्रह्माकुमारियो के सत्सग मे केवल सफेद वस्त्र पहनकर जाने का नियम है। इसी प्रकार राधास्वामियो के सत्सगो में बहुत भीड होती है। आसाराम, मुरारी बापू जैसे धर्माचार्य अपनी आरती उतरवाते हैं और अन्धविश्वासो का प्रचार करते हैं। उनके प्रवचनो में जो कुछ थोडी अच्छी बात होती है वह वैदिक होती है, परन्तु वेद का नाम नहीं लेते। मुझे नहीं लगता कि इनके प्रवचनो से कुछ सुधार हुआ है। वास्तव मे बहुत बार इन बापुओ-बाबाओ के नाम पर उनके भक्तो द्वारा रात-दिन प्रचार के द्वारा अन्ध-विश्वासी लोगो की भीड इकट्ठी की जाती है। उससे पूछो कि क्या सुना, क्या समझ आया तो सब हवा। ऐसा ही रात्रि-जागरणों मे होता है। वहा बहुत से गाने-बजानेवालो को शामियाने के पीछे मदिरापान करते देखा गया है। इसके अतिरिक्त ऊंची आवाज मे ध्वनिविस्तारक चलाकर आस-पास के लोगों की नींद मे बाधा होती है।

इन सबके विपरीत आर्यसमाज आडम्बर, प्रदर्शन में विश्वास नहीं करता। उसका उद्देश्य चरित्र-निर्माण कर सबको आर्य बनाना है। यज्ञ भी प्रदर्शन है, पर्यावरण की शुद्धि के लिए, सब प्राणियो की सुख-सुविधा के लिए आदिकाल से प्रचलित हैं। श्रीराम और श्रीकृष्ण स्वय भी यज्ञ करते थे और ऋषियो द्वारा अनुष्ठित यज्ञो की रक्षा करते थे। सम्पूर्ण सृष्टि यज्ञमय है। यज्ञ सारी सृष्टि की नाभि है, उसका केन्द्र है (अय यज्ञो विश्वस्य भुवनस्य नाभि)। केवल अपने ध्यान मे केन्द्रित व्यक्ति आत्म-सीमित होकर समाज के लिए क्या कर सकता है ? आर्यसमाज व्यक्ति और समाज-जीवन के दोनो छोरो को उत्प्रेरित करता है जिससे कि व्यक्ति सन्ध्या-स्वाध्याय द्वारा आत्मोत्थान भी करे और हवन-दान (विद्या-अभय-धन) के द्वारा आत्मोत्सर्ग करके समाज का उत्थान भी करे और उसमे यह सब करते हुए दर्प की भावना न आये। वह यह मानकर चले कि इस व्यापक अर्थ मे यज्ञ प्रकृति का नियम है।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिग प्रेस, रोहतक (फोन ०१२६२-७६८७४, ७७८७४) मे छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष ०१२६२-७७७२२) से प्रकाशित।
पत्र मे प्रकाशित लेख सामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३
पंजीकरणसंख्या टैक/85-2/2000
☎ ०१२६२ -७७७२२

सृष्टिसंवत् १, ९६, ०८, ५३, १०३
विक्रमसंवत् २०५९
दयानन्दजन्माब्द १७९

प्रधानसम्पादक : यशपाल आचार्य, सभामन्त्री

सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री

वर्ष २६ अंक ४७ ७ नवम्बर, २००२ वार्षिक शुल्क ८०) आजीवन शुल्क ८००) विदेश में २० डॉलर एक प्रति १.७०

जयललिता का प्रशंसनीय कार्य—

अवैध धर्मान्तरण पर रोक

—प्रो० जयदेव आर्य—

तमिलनाडु की लोकप्रिय मुख्यमत्री कु० जयललिता ने एक अध्यादेश के द्वारा अनुचित और अवैध उपायो से धर्मान्तरण करवानेवालों के लिए कडे दण्ड की व्यवस्था की है। इस साहसिक पग के लिए हम उनका हार्दिक समर्थन करते हैं।

विरोध के स्वर—परन्तु इस देश में गत पचास वर्षो मे देशहित-विरोधी जिन शक्तियो का शासन, प्रशासन और समाज पर प्रभाव रहा है और जिस प्रकार से उन्होंने देश-विरोधी विदेशी शक्तियो के लाखो एजेण्ट, उनके समर्थक कई नेता तथा राजनीतिक दल और तथाकथित सैक्यूलर, देशभक्ति-निरपेक्ष भ्रष्ट शिक्षा के माध्यम से करोडो बुद्धिहीन, थोथे मानवतावादी नागरिक पैदा कर दिये हैं, उससे यह अनुमान लगाना सर्वथा सहज और स्वाभाविक ही था कि वे इस देशहितकारी पग के विरुद्ध अवश्य ही चिल्ल-पौं मचाएगे। तमिलनाडु के कांग्रेसी नेता राममूर्ति ने शायद सबसे पहले इस अध्यादेश की आलोचना की और फिर करुणानिधि, साम्यदलों तथा मुस्लिम और ईसाई नेताओं ने इस कानून को धार्मिक स्वतन्त्रता-विरोधी कहकर इसे वापस लेने की माग करदी है। इन लोगो ने ऐसा पहली बार किया हो, सो बात नहीं है। ये सभी लोग हमेशा से ही देश की स्वतन्त्रता, एकता, प्रभुसत्ता और सुदृढता के विरोधी रहे हैं और अब भी अपना वही पुराना खेल जारी रखे हुए हैं।

करुणानिधि द्वारा विरोध—श्री करुणानिधि और उनकी पार्टी डी ऐम के अंग्रेजीकाल की उस जस्टिस पार्टी का बचा हुआ अवशेष हैं, जो अंग्रेजी पिट्ठू और भारतीय स्वतंत्रता की विरोधी थी। नास्तिकता, अलगाववाद, ब्राह्मण-राम-हिन्दी-संस्कृत, आर्य-उत्तर भारत-विरोध आदि उसकी विशिष्ट पहचान थे। अन्नादुरई के इस दल से पृथक् होने के मूल मे इन विषयो पर उनका कुछ सैद्धान्तिक मतभेद भी था। करुणानिधि ने अपने पुत्र का नाम 'स्टालिन' रखा है, जिससे उनकी मानसिकता और विचारधारा की कुछ झलक मिलती है। उन्होने अपने शासनकाल मे लिट्टे, जिसके प्रमुख प्रभाकरण आदि ईसाई हैं, मुस्लिम लीग और आतकवादी मुल्लाओ और अमेरिकी एजेण्ट ईसाई पादरियो को फलने-फूलने और अपनी मनमानी करने की खुली छूट दे रखी थी। इसी छूट का परिणाम था कि वहा संघ के कार्यालय पर मुस्लिम आतकवादियो ने विस्फोट किया, श्री आडवाणी को भी मारने की कोशिश की और ईसाई मछुआरों ने कितने ही समय तक विश्व हिन्दू परिषद् द्वारा विवेकानन्द केन्द्र के निर्माण में असफल अडचने डालीं। गत दिनो उनके मत्रिमण्डल मे एक हिन्दू सदस्य ने जब वहां आग पर चलने के एक हिन्दू धार्मिक समारोह मे भाग लिया, तो उन्होंने उस पर कडी फटकार डाली और शायद मत्रिमण्डल से भी पृथक् कर दिया था, पर कभी अपनी पार्टी के किसी मुस्लिम सदस्य के किसी धार्मिक कृत्य पर उन्होंने चू भी की हो, ऐसा नहीं पढा-सुना। ऐसे करुणानिधि यदि लोभ-छल-बल के आधार पर हिन्दुओ का, उनमे भी अनुसूचित जातियो/जनजातियो के गरीबो का धर्म-परिवर्तन कर उन्हे अलगाववाद और आतकवाद का पाठ पढानेवाले मजहबी लोगो पर जयललिता द्वारा लगाये गये प्रतिबन्धो का विरोध करते हैं, तो इसमे आश्चर्य की कोई बात नहीं है। आज से बीस वर्ष पूर्व तमिलनाडु मे घटी 'मीनाक्षीपुरम्' की घटना से कोई पाठ सीखने को तैयार नहीं है।

कांग्रेस द्वारा विरोध—कांग्रेस द्वारा भी इस बिल का विरोध कोई अनहोनी बात नही है, विशेषकर तब, जब कांग्रेस की अध्यक्षा सोनिया गाधी पोप की एक निष्ठावान् अनुयायी है और पोप इस सहस्राब्दी मे एशिया, उसमे भी वह भी विशेषकर भारत पर ईसाइयत का झडा फहराने की घोषणा कर चुके है। आइजनहावर के समय मे विदेशमत्री डलेस द्वारा अमेरिकी साम्राज्य के विस्तार के लिए जो दुनिया मे एक अरब लोगो को ईसाई बनाने की योजना रखी गई थी, उसे मूर्त्तरूप देने मे सोनिया भी कुछ योगदान न करे, ऐसा कैसे सम्भव है? उन्होने छत्तीसगढ पर श्री अजीत जोगी को थोपकर वहा 'ईसाईकरण' के कार्यक्रम को लागू कर ही दिया और उनके जनजाति-प्रमाणपत्र के जाली पाये जाने पर भी उसके विरुद्ध कोई कार्यवाही नहीं की है। कोई सोनिया गाधी को बताए कि मध्यप्रदेश मे ही सबसे पहले ईसाई पादरियो की धर्मातरण की अवैध गतिविधियो के सीमा पार कर जाने के कारण वहा की कांग्रेसी सरकार को विवश होकर 'जस्टिस नियोगी कमीशन' नियुक्त करना पडा था और ऐसा ही अवैध-धर्मातरण-निरोधक विधेयक भी बनाना पडा था, फिर कांग्रेस जयललिता के इस बिल का विरोध किस मुह से कर सकती है?

कम्युनिस्ट सरकारो ने अपने सभी देशो मे इस्लाम और ईसाइयत के प्रचारको-पादरियो मुल्लाओ और उनके गिरजाघरो तथा मस्जिदो के साथ क्या व्यवहार किया था-इस पर कम्युनिस्ट कुछ नही बोलते, पर भारत मे वे उनके अधिकारो की रक्षा के ठेकेदार बने फिरते हैं। जहा जिन्ना की माग एक ही पाकिस्तान की थी, वहा कम्युनिस्ट तो भारत मे चारो ओर अनेक पाकिस्तान बनाने का आन्दोलन चला रहे थे। अब वे चीन के एजेण्ट होकर भी यह क्यो नही देखते कि चीन अपने सिन्क्याग प्रदेश मे उइगर मुसलमानो का आतकवाद से दूर रखने के लिए किन-किन उपायो का अवलम्बन कर रहा है और फासी दिये गये कुछ ईसाई पादरियो को सत की उपाधि देनेवाले पोप के साथ चीन की सरकार ने क्या व्यवहार किया था? उनके द्वारा शासित बगाल, केरल और त्रिपुरा मे ये तथाकथित दोनो अल्पसख्कयक समुदाय वहा हिसा और आतक का वर्षो से जो नगा नाच करते आरहे हैं, उसकी ओर तो इनकी दृष्टि जाती नही, पर तमिलनाडु मे भी वे यही स्थिति हुई देखने के लिए उनको अवैध उपायो से धर्मातरण करते रहने की छूट दिये रखना चाहते है।

ये राजनीतिक दल इस बात का उत्तर देने को तैयार नहीं हैं कि इस नीति के चलते जब आज के बहुसख्यक हिन्दू अल्पसख्यक और आज के अहिन्दू अल्पसख्यक, बहुसख्यक हो जायगे, तो सैक्यूलरिज्म, प्रजातत्र सर्वधर्म समभाव, मानवाधिकार, विचार-स्वतन्त्रता आदि मनमोहक आदर्शो का क्या होगा? जब नागालैंड मे हिन्दुओ को सभी अनुचित हथकण्डे अपनाकर ईसाई बनाया जारहा था, तो इन सभी सैक्यूलरिस्टो की जबान को लकवा मारा हुआ था और ये उनके

विरुद्ध कुछ नहीं बोल रहे थे, पर जब विश्व हिन्दू परिषद् के प्रभाव से कुछ नागाओं के वापस हिन्दूधर्म में आने की आशका जगी, तो वहा के एक ईसाई नेता ने घोषणा करदी कि यदि ऐसा हुआ, तो विद्रोह भडक उठेगा और तो और, पी ए संगमा ने भी इस धमकी का अनुमोदन कर दिया है। उधर कश्मीर मे स्व० बख्शी गुलाम मुहम्मद और फारूख अब्दुल्ला एकाधिक बार कह चुके हैं कि धारा ३७० जम्मू-कश्मीर मे मुस्लिमों का बहुमत बना रहने की गारण्टी है। अल्पसख्यक आयोग ने पिछले दिनो पजाब सरकार को यह नादिरशाही आदेश जारी कर दिया कि वह वहा पर साम्प्रदायिक सद्भाव बनाये रखने के लिए एक किन्हीं स्वा० श्रद्धानन्द और दूसरे एक नये सम्प्रदाय-प्रचारक के प्रचार पर पाबन्दी लगा दे। क्यों ? इसके विरोध मे ये लोग क्यो नहीं बोले ? नानी पालखीवाला ने अपनी एक पुस्तक (प्रकाशक राजपाल एण्ड सस) मे एक बहुत सुन्दर वाक्य लिखा है-पाकिस्तान और भारत दोनो की समस्या फण्डामैण्टेलिज्म (इस्लाम) अपनाया है और भारत ने सैक्यूलर फण्डामैण्टेलिज्म दूसरे लोगो पर अपने विचार बलात् थोपना मानवता का परम शत्रु है। हमारी भाषा ने तो 'आचार' की 'अति' को भी 'अत्याचार' माना है, फिर इस प्रकार के पक्षपातपूर्ण, आतकवादी रूढिवादी सैक्यूलरिज्म के तो 'अत्याचार' होने मे कोई सन्देह ही नहीं है।

भारत को तोडने या अल्पसख्यकों के वोटों से सत्ता में आने का स्वप्न लेनेवाले हिन्दुत्व-विरोधी ये राजनीतिक दल तो जयललिता या किसी अन्य के द्वारा भी प्रस्तावित ऐसे विधेयकों का विरोध करते ही हैं, हमारे तथाकथित राष्ट्रीय समाचार-पत्र (विशेषकर अग्रेजी के) भी इनके सुर-मे-सुर मिलाते रहते हैं। हिन्दुस्तान टाइम्स (८ अक्टूबर २००२) के अनुसार अ भा क्रिश्चियन कौंसिल ने बलात् या लालच द्वारा धर्मांतरण की बात को अन्तर्विरोधी और असभव कहकर सिरे से ही खारिज कर दिया है और उसे व्यक्ति की धार्मिक स्वतत्रता के अधिकार का उपयोग-मात्र बताया है। उन्हीं के सुर में इस पत्र का सम्पादकीय धर्मांतरण की बात को यथार्थ न मानकर 'हव्वा' बताता है और इसे राजनीतिक कदम गर्दानता है। मदुरै क्षेत्र मे हुए दलितों के धर्मांतरण में उसे कोई अनुचित आचरण दिखाई नहीं देता। वह इस अध्यादेश को धर्मप्रचार मे (विशेषकर ईसाइयत के) बाधा का वातावरण बनानेवाला बताता है, पर परावर्तन या शुद्धि-कार्यक्रमों की पारदर्शिता पर तीखी नजर रखने पर बल देता हुआ इस अध्यादेश को सामाजिक और धार्मिक समस्या को सुलझानेवाला न मानकर और अधिक उलझानेवाला ठहराता है। पर सुश्री जयललिता ने बिल्कुल ठीक ही कहा है कि इस अध्यादेश का उद्देश्य अल्पसख्यक विरोध नहीं, बल्कि कमजोर वर्गों को शोषण से बचाना है और इसके विरोधी पूर्वाग्रह से ग्रस्त हैं।

मुस्लिम और ईसाई—जो मुस्लिम और ईसाई संस्थाए इसके विरुद्ध न्यायालय मे जाने की धमकी देरही हैं, उन पर 'चोर की दाढी में तिनका' की कहावत पूर्णत चरितार्थ होती है। इस अध्यादेश के विरोधियो का कहना है कि इसका दुरुपयोग होने की आशका है, अत इसे वापस लिया जाए। यदि ऐसा है, तो फिर हम पूछते हैं कि पिछले पचास वर्षो मे इस देश मे इन लोगों के राज्य मे किस कानून का दुरुपयोग नहीं हुआ ? कांग्रेस गणना करवाये कि कांग्रेस सरकारो तथा मुस्लिमों और ईसाई पादरियों ने मिलकर आर्यसमाज के कितने प्रचारको, सम्पादकों, पत्रों, पुस्तकों पर अभियोग चलाए पर उनमें अदालतों द्वारा कितने अभियुक्त ससम्मान बरी कर दिये गये ? कितनी पुस्तकें जब्त कीगई और उनमें से कितनी अदालतो द्वारा मुक्त करदी गई ? यह भी, कि कितने मामलो में हिन्दुओं ने अपने ऊपर अत्याचार या पक्षपात की शिकायतें की, उनमें से कितनी रिपोर्ट प्रकाशित हुई और उन पर क्या कार्यवाही कांग्रेसी सरकारो ने की ? इन जैसे प्रश्नों के उत्तर और विवरण यदि एकत्रित किये जाएं, जो कई मोटे पोथे बन जाएंगे। फिर दूसरे सभी कानूनों के उल्लघन और दुरुपयोग के विवरणो की तो बात ही क्या है ! और जो अच्छे कानून बने, उनका पालन कितना हुआ ? यह एक दूसरा प्रश्न है। जब आपके सारे कानूनो की यह स्थिति रही है, तो फिर वे सभी कानून रद्द क्यों नहीं कर दिये जाते ? यदि सब प्रकार के उल्लघन-दुरुपयोग और अनुपयोग के बावजूद भी उन कानूनों से कानून की मोटी-मोटी पोथिया भरी पड़ी है, तो इस जैसे सही कानून के ही दुरुपयोग का हल्ला मचाकर उन्हें वापिस लेने की बातें क्यों की जाती हैं ? ईसाई नियोगी कमीशन की रिपोर्ट पर भी न्यायालय में गये थे, क्या वहा वे उस रिपोर्ट को झूठी सिद्ध कर सके ? यदि नहीं, तो कांग्रेसी और कम्युनिस्ट सरकारों ने उस रिपोर्ट के आधार पर सारे देश में कानून बनाकर उनका सही अनुपालन क्यों नहीं करवाया या आज भी कानून का विरोध न करके उसके सही अनुपालन पर जोर क्यों नहीं देते ? आखिर ऐसे किसी कानून के आते ही सारी दुनियाभर के मुस्लिम और ईसाई देश सरकारी स्तर पर उसके विरुद्ध मैदान मे क्यो उतर पड़ते हैं ? और मुस्लिम और ईसाई देशो में जो धार्मिक उत्पीडन और उनकी धार्मिक स्वतन्त्रता का हनन कैसे दिखलाई पडने लगा, जबकि भारत मे भी ये तथाकथित सभी अल्पसख्यक ही हिन्दुओं का उत्पीडन कर रहे हैं और भारत से बाहर अरब, पाकिस्तान, इंडोनेशिया आदि मुस्लिम और हॉलैंड, फीजी आदि ईसाई देशो में भी। क्लिंटन को भी भारत में हिन्दुओं का उत्पीड़न कभी नहीं दिखा जबकि उन्होंने हर बार ईसाइयों, सिखो और मुसलमानों का ही पीडित वर्गों में नाम लिया, जबकि वस्तुत ये वर्ग ही हिन्दुओं का उत्पीडन करते रहे हैं। अत जयललिता का यह अध्यादेश सर्वथा उचित है और उसके विरोधी राजनीति और सिर्फ राजनीति ही कर रहे हैं।

२४९, कादम्बरी से० ९, रोहिणी, दिल्ली-८५ (साभार आर्यजगत्)

वैदिक-स्वाध्याय

अश्वारोही बनो

कालो अश्वो वहति सप्तरश्मिः, सहस्राक्षो अजरो भूरिरेताः।
तमा रोहन्ति कवयो विपश्चितः, तस्य चक्रा भुवनानि विश्वा।।

अथर्व० १९.५३.१।।

शब्दार्थ—(सप्तरश्मिः) सात रस्सियोंवाला (सहस्राक्षः) हजारो धुरों को चलानेवाला (अजरः) कभी भी जीर्ण, बुड्ढा न होनेवाला (भूरिरेताः) महाबली (कालः अश्वः) समयरूपी घोडा (वहति) चल रहा है-ससार-रथ को खींच रहा है (विश्वा भुवनानि) सब उत्पन्न वस्तुएं, सब भुवन (तस्य) उसके (चक्राः) चक्र हैं-उस द्वारा चक्रवत् घूम रहे हैं। (त) उस घोडे पर (विपश्चित.) ज्ञानी और (कवय.) क्रान्तिदर्शी लोग ही (आरोहन्ति) असवार होते हैं।

विनय—कालरूपी महाबली घोडा चल रहा है। यह सब ससार को खींचे लिये जारहा है। इस विश्व के सब प्रकार के जगतो में सात तत्त्व काम कर रहे हैं (सब जगतों मे सात लोक, सात भूमिया हैं, सप्त प्रकार की सृष्टि है और प्रत्येक प्राणी में सात प्राण, सात ज्ञान और सात धातु हैं) ये ही सात रस्सिया (रश्मिया) हैं जिनसे कि यह विश्व उस कालरूपी घोडे से जुडा हुआ है। काल की महाशक्ति से जुडकर इस ब्रह्माण्ड के सब भुवन, सब लोक, सब मनुष्य, सब प्राणी, सब उत्पन्न वस्तुयें चक्र की तरह घूम रही हैं। इन असख्य भुवनो के उत्पन्न चर या अचर पदार्थों के, असख्यात अक्षों को (व्यक्ति केन्द्रो को) गति देता हुआ, यह महाशक्ति काल अपने इन भुवन-चक्रों द्वारा इस समस्त विश्व को चला रहा है। इस तरह यह संसार न जाने कब से चलाया जारहा है ! हम परम तुच्छ मनुष्यो का क्या कहना, असख्यो वर्षों की आयुवाले बहुत से सौर-मडल भी जीर्ण होकर सदा से इस अनन्तकाल में लीन होते गये हैं। परन्तु कभी जीर्ण न होता हुआ यह कालदेव आज भी अपनी उसी और उतनी ही शक्ति से इस विश्व ब्रह्माण्ड को खींचे लिये जारहा है। इस कालदेव को मेरे कोटि कोटि प्रणाम हैं। भाइयो ! क्या तुम्हे यह कभी जीर्ण न होनेवाला, सब विश्व चलानेवाला महावीर्य अश्व दीख रहा है ? पर याद रखो कि इस महावेगवान् अश्व की असवारी वे ही ले सकते हैं जो कि ज्ञानी हैं-जो कि समय को पहचानते हैं, जिनकी दृष्टि इस सबको हिलानेवाले अनन्त कालदेव के दर्शन पाकर विशाल होगई है, अतएव जो कि क्रान्तदर्शी हैं, जो कि विशाल भूत और भविष्य को दूर तक देख रहे हैं। जो अज्ञानी या अति चचल मनुष्य, स्थिर ज्ञान-प्रकाश को न पाकर क्षुद्र दृष्टिवाले और काल के महत्त्व को न पहिचाननेवाले हैं वे तो कालरथ पर नहीं चढ सकते हैं और न चढ सकने के कारण वे या तो कुचले जाते हैं या कुछ दूर तक घिसटते जाकर कहीं इधर-उधर दूर जा पडते हैं और मार्ग-भ्रष्ट होजाते हैं या इसके नीचे यूं ही पडे रहकर नष्ट होजाते हैं। इसीलिये काल नाम मृत्यु का होगया है। परन्तु वास्तव में काल तो वह महाशक्तिवाला, महावेगवाला यान है, जिस पर कि असवार होकर हम बडी जल्दी अपना मार्ग तय करके लक्ष्य पर पहुंच सकते हैं। अत: आओ, हम आज से काल के असवार बनें, अपने पल-पल, क्षण-क्षण का सदा सदुपयोग करें, इस महाशक्ति को कभी भी गंवायें नहीं और काल की इस विशालता को देखते हुवे सदा ऊंची विशाल दृष्टि से ही समय के अनुसार अपना कर्त्तव्य निश्चय किया करें। **(वैदिक विनय से २ जेष्ठ)**

सम्पादकीय–

हरिभूमि के खूंटा ठोक के मिथ्या-प्रलाप का खण्डन

रोहतक से प्रकाशित दैनिक हरिभूमि २६ १० २००२ के पृष्ठ ४ पर खूटा ठोक **"गऊ बचाओ माणस मारो"** शीर्षक से जो लेख लिखा है वह घोर आपत्तिजनक और सर्वथा मिथ्या है। इसके अनुसार "एक सवाल तो साफ सै अक गाय म्हारी माता कदे कदीमी जमाने तै नहीं सै। गाय का मास भी म्हारे पूर्वज खूब खाया करते। म्हारे पूर्वज आर्य थे या हम माना सा।"

"म्हारे ग्रथा म्ह गऊ मारके उसका भोज करण का जिकरा एक जागा नहीं कई जागा म्हारे ग्रथा म्ह कर राख्या सै। मनुस्मृति अध्याय-३ श्लोक २७१ म्ह लिख राख्या सै अक गाय, बर्धी का मास अर दूध अर दूध तै बणी चीजा तै पितरा का तर्पण करण तैं बारह साल ताहि तृप्त रहवै सैं।"

देखिये मनुस्मृति अ० ३ श्लोक २७१ इस प्रकार है–

सवत्सर तु गव्येन पयसा पायसेन च।
वार्ध्रीणसस्य मासेन तृप्तिर्द्वादशवार्षिकी।।

यहा पर बिल्कुल स्पष्ट लिखा है **"गव्येन पयसा पायसेन च"** गाय के दूध से और दूध से बनी पायस=खीर से एक वर्ष तक तृप्ति होती है। गाय के मास का यहा कोई 'जिकरा' नही है।

वार्ध्रीणस के मास से १२ वर्ष की तृप्ति लिखी है। मनुस्मृति की टीका मे कुल्लूकभट्ट ने वार्ध्रीणस शब्द का अर्थ लिखा है–ऐसा सफेद बूढ़ा बकरा जिसकी अनेक सतान हो चुकी हो, जो क्षीणशक्ति हो और पानी पीते समय जिसके लम्बे दोनो कान और जीभ जल का स्पर्श करते हो।

पाठकगण जरा विचारियेगा यहा गाय बैल और साड के मास खाने का विधायक कोई भी शब्द है ?

ध्यान रहे इस अध्याय के १२२ से २८४ सख्या तक के श्लोको मे मृतक श्राद्ध का वर्णन होने से ये श्लोक प्रक्षिप्त है। मनु ने जीवित पितरो के श्राद्ध का विधान किया है (३ ८०-८२) मृतक श्राद्ध मनु की मान्यता के विरुद्ध है। अधिक जानकारी के लिए मनुस्मृति का अनुसन्धानात्मक प्रकाशन पढिए जो कि आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, ४५५ खारी बावली दिल्ली से प्रकाशित है।

२ दूसरा मिथ्याकथन–"वशिष्ठ स्मृति के चौथे अध्याय म्ह लिख राख्या बताया अक पूजा के खातर तगडा बुलध अर बकरा पकाणा चाहिए।'

इस भाषा से प्रतीत होता है खूटा ठोक ने वशिष्ठ स्मृति देखी ही नही। वशिष्ठ स्मृति के चौथे अध्याय मे १३१ श्लोक है जिनमे गृहस्थ धर्म के अन्तर्गत विवाह, गर्भाधान और सीमन्तोन्नयन सस्कारो का वर्णन है। मैंने पूरे अध्याय का पाठ किया, किसी भी श्लोक मे तगडे बैल, बकरा पकाने की चर्चा नहीं है।

३ तीसरा प्रसग–"बृहदारण्यकोपनिषद् ६ ४ १८ म्ह लिख्या सै अक गुणीपुत्र की प्राप्ति के खातर गाय अर साड का मास खाणा चाहिए। पत्नी की गेल्या मिलकै साड अर बलद का मास घी भात की साथ खाणा चाहिए।"

बृहदारण्यकोपनिषद्, शतपथब्राह्मण का अन्तिम भाग है। उद्धृत अश गर्भाधान प्रकरण का है। इसमे गृहस्थ दम्पती इच्छानुसार श्रेष्ठ पुत्र और पुत्री की प्राप्ति के लिए अपना भोजन किस प्रकार का करे इसका विधान १४ से १८ तक की पाच कण्डिकाओ में किया गया है। मैं उन्हें यहा उद्धृत कर रहा हू–

स य इच्छेत् पुत्रो मे शुक्लो जायेत, वेदमनुब्रुवीत, सर्वमायुरियादिति क्षीरौदनं पाचयित्वा सर्पिष्मन्तमश्नीयातामीश्वरौ जनयितवै।।१४।।

अथ य इच्छेत् पुत्रो मे कपिल पिङ्गलो जायेत, द्वौ वेदावनुब्रुवीत, सर्वमायुरियादिति, दध्योदन पाचयित्वा सर्पिष्मन्तश्नीयातामीश्वरौ जनयितवै।।१५।।

अथ य इच्छेत् पुत्रो मे श्यामो लोहिताक्षो जायेत, त्रीन् वेदाननुब्रुवीत, सर्वमायुरियादित्युदौदन पाचयित्वा सर्पिष्मन्तमश्नीयातामीश्वरौ जनयितवै।।१६।।

अथ य इच्छेत् दुहिता मे पण्डिता जायेत, सर्वमायुरियादिति, तिलौदन पाचयित्वा सर्पिष्मन्त-मश्नीयातामीश्वरौ जनयितवै।।१७।।

अथ य इच्छेत् पुत्रो मे पण्डितो विजिगीथ समितिङ्गम शुश्रूषिता वाच भाषिता जायेत, सर्वान् वेदाननुब्रुवीत, सर्वमायुरियादिति माषौदन पाचयित्वा सर्पिष्मन्तमश्नीयातामीश्वरौ जनयितवा औक्ष्णेन वाऽऽर्षभेण वा।।१८।।

यदि वह चाहे कि मेरे गोरा लडका उत्पन्न हो, और एक वेद को पढे और पूरी आयु का हो तो दूध चावल पकवाकर घी के साथ वे दोनो खावे। उनके ऐसा ही पुत्र होगा।।१४।।

यदि वह चाहे कि कपिल और पिगल लडका हो और दो वेदो को पढे तथा पूरी आयुवाला हो तो दही चावल पकवाकर घी मिलाकर दोनो खावे। उनके ऐसा ही पुत्र होगा।।१५।।

यदि वह चाहे कि मेरा लडका सावला और रक्त-नेत्र हो और तीन वेदो को पढनेवाला हो तथा पूरी आयु तक जीवे तो पानी मे चावल पकवाकर घी मिलाकर दोनो खावे। उनके ऐसा ही पुत्र होगा।।१६।।

यदि चाहे कि मेरे ऐसी लडकी हो जो पण्डिता हो और पूरी आयु जीवे तो तिल और चावल पकवाकर घी मिलाकर दोनो खावे। उनके ऐसी ही पुत्री होगी।।१७।।

यदि चाहे कि मेरे ऐसा पुत्र हो जो पण्डित हो कीर्तिवाला हो, सभाओ मे उसका मान हो, वह अच्छी वाणी बोलता हो सब वेदो को जाननेवाला हो, पूरी आयु का हो तो माष=उडद चावल पकवाकर घी मिलाकर दोनो खावे तब ऐसे ही पुत्र के उत्पन्न करनेवाले होगे। औक्ष्ण विधि से अथवा आर्षभ विधि से यह सब पाक आदि कर्म करे।।१८।।

माषौदन–उडद और चावल के स्थान पर प्रेस अथवा लेखक के प्रमादवश **मासौदन** पाठ होगया है। अथवा किसी वाममार्गी ने जानबूझकर **माष** के स्थान पर **मास** पाठ कर दिया है। कुछ भी हो, यह पाठ इस प्रकरण के सर्वथा विपरीत है क्योकि १४वीं से १८वी कण्डिका तक क्षीरौदन, दध्योदन, उदौदन, तिलौदन के पश्चात् **माषौदन** ही प्रासगिक है **मासौदन** नही। इससे पूर्व के तीसरे ब्राह्मण मे **श्रीमन्थ** के निर्माण मे दश ग्राम्य धान्य १ व्रीहि, २ यव, ३ तिल, ४ माष ५ अणु, ६ प्रियगु, ७ गोधूम, ८ मसूर, ९ खल्व और १० खलकुल का उल्लेख है। इसमे तिल के बाद माष का उल्लेख है इसी क्रम मे यहां पर भी दूध, दही, जल और तिल के बाद **माष** का ही पाठ होना चाहिए, **मास** शब्द एकदम अप्रासगिक है।

मास शब्द को केवल पशु मास मे ही रूढ करना भी उचित नहीं। **"मन सीदत्यस्मिन् माननीय वा शास्त्रै"** जिससे मन प्रसन्न हो और जो शास्त्रो से माननीय हो उसे भी मास कहते हैं। इस यौगिक अर्थ से पुष्टिककारक रोगविनाशक चिकित्साशास्त्र मे वर्णित उत्तम-उत्तम औषधियो का भी ग्रहण किया जा सकता है।

इसी प्रकार उक्षा और ऋषभ शब्द को केवल बैल अथवा साड अर्थ मे रूढ मानना भी अज्ञानता ही मानी जाएगी। शास्त्रो मे उक्षा का अर्थ समुद्र और सूर्य भी है। इसी प्रकार ऋषभ का अर्थ ऋषि उत्कृष्ट गुणकर्मस्वभाववाला राजा बलवान् विज्ञानवान् (परमयोगी) भी होता है। पुरुष+ऋषभ=पुरुषर्षभ का अर्थ श्रेष्ठ पुरुष होता है। भरत+ऋषभ=भरतर्षभ= भरतवशियो मे श्रेष्ठ। यह प्रयोग महाभारत मे देखे जा सकते हैं।

जिस प्रकार तीसरे ब्राह्मण मे श्रीमन्थ का वर्णन करके अन्त मे श्रीमन्थ बनाने का विधान किया है उसी प्रकार इस चतुर्थ ब्राह्मण मे वर्णित क्षीरौदन दध्योदन उदौदन, तिलौदन और माषौदन के पकाने की विधि भी अन्त मे लिखी है वह है **औक्ष्ण** अथवा **आर्षभ**। यहा **"औक्ष्णेन वाऽऽर्षभेण वा"** शब्दो का अन्वय माषौदन मे नही है।

महाभारत शान्तिपर्व अ० ३३७ श्लोक ४५ मे स्पष्ट लिखा है–

बीजैर्यज्ञेषु यष्टव्यमिति वै वैदिकी श्रुति।
अज-सज्ञानि बीजानि च्छाग नो हन्तुमर्हथ।।४।।
नैष धर्म सता देवा यत्र वध्येत वै पशु।।५।।

ऋषियो ने कहा–हे देवताओ! यज्ञो मे बीजो द्वारा यजन करना चाहिए ऐसी वैदिक श्रुति है। बीजो का ही नाम अज है अत बकरे का वध करना उचित नहीं।

यहा यौगिक अर्थ मे बीजो को अज कहा गया है। इसी प्रकार ईश्वर का नाम भी इसीलिए अज है। **"अजो न क्षा दाधार पृथवीं"** (ऋ० १ ६७ ३) 'श नो **अज एकपाद् देवो"** (ऋ० ७ ३५ १३) इत्यादि ऋचाओ मे अज' का अर्थ अजन्मा परमात्मा है। यदि अज का लौकिक रूढ अर्थ लिया जावेगा तो बकरा पृथिवी आदि लोको को धारण नही कर सकेगा और एक सिर का बकरा धरती पर ढूढने पर भी नहीं मिलेगा।

अनड्वान् दाधार पृथिवीमुन द्याम् (अ० [illegible])
उक्षा दाधार पृथिवीमुत द्याम्
उक्षा स द्यावापृथिवी बिभर्ति (ऋ० १० ३१ ८)

"(उक्षा) शब्द को देखकर किसी ने बैल का ग्रहण किया होगा क्योकि उक्षा बैल का भी नाम है। परन्तु उस मूढ को यह विदित न हुआ कि इतने बडे भूगोल के धारण करने का सामर्थ्य बैल मे कहा से आवेगा? इसलिए 'उक्षा' वर्षा द्वारा भूगोल के सेचन करने से 'सूर्य' का नाम है।" (सत्यार्थप्रकाश समु० ८)

इसी प्रकार लोक मे अहि' शब्द का अर्थ सर्प होता है किन्तु वेद मे अहि का हर्थ 'मेघ' भी होता है। लोक मे 'पर्वत' का अर्थ पहाड समझा जाता है किन्तु वेद मे 'पर्वत' का अर्थ बादल भी होता है (निघण्टु १ १०)।

महाभारत की राजा रन्तिदेव की गाथा का खूटा ठोक ने कोई पता नहीं लिखा है। महाभारत (अनुशासन पर्व अ० १४५) मे मास-भक्षण और हिसा का निषेध निम्नलिखित श्लोको मे देखा जा सकता है–

आत्मार्थे य परप्राणान् हिस्यात् स्वादुफलेप्सया।
व्याघ्रगृध्रशृगालैश्च राक्षसैश्च समस्तु स।।

जो मनुष्य अपने स्वाद के लिए प्राणियो की हिसा करता है वह व्याघ्र, गृध्र, शृगाल और राक्षसों के तुल्य है।

सछेदन स्वमासस्य यथा संजनयेत् रुजम् ।
तथैव परमासेऽपि वेदितव्य विजानता ।।

जैसे अपने शरीर के मास को काटने से पीड़ा होती है वैसे ही बुद्धिमान् को दूसरे प्राणी के मास मे भी समझनी चाहिए।

न हि प्राणै प्रियतम लोके किचन विद्यते।
तस्मात् प्राणिदया कार्या यथात्मनि तथा परे।।

ससार मे प्राणो से प्रियतम कुछ भी नहीं है। इसलिए प्राणियो पर दया करनी चाहिए। जैसे हमे अपने प्राण प्यारे हैं वैसे ही दूसरो के भी समझने चाहिएं।

"गाय हमारी माता कदे कदीमी जमाने तै नहीं सै।"

यह कथन भी खूंटा ठोक के बुद्धिदारिद्रय को ही दर्शाता है।

वेद, पुराण, स्मृति, रामायण, महाभारत आदि प्राचीन ग्रन्थो में गोमाता का स्थान-स्थान पर वर्णन वा माहात्म्य मिलता है। देखिए ऋग्वेद (८ १०१ १५)–

माता रुद्राणा दुहिता वसूना स्वसादित्यानाममृतस्य नाभि ।
प्र नु वोच चिकितुषे जनाय मा गामनागामदितिं वधिष्ट।।
मातर सर्वभूताना गाव सर्वसुखप्रदा ।
वृद्धिमाकाङ्क्षता नित्य गाव कार्या प्रदक्षिणा ।।७।।

(महाभारत अनुशासन पर्व अ० ६९)

गौर्मे माता वृषभ: पिता मे.. . ..... ।।७।।

(महाभारत अनुशासन पर्व अ० ७६)

अन्त में मेरा यही नम्र निवेदन है हरिभूमि के सम्पादकमण्डल से कि किसी भी मिथ्या और विवादास्पद जनविरोधी लेख को प्रकाशित न करे जिससे लाखों लोगों की भावना आहत होती हो। लेखक को भी बिना प्रमाण के मिथ्या प्रलाप नहीं करना चाहिए। हमारा उद्देश्य अच्छाई फैलाना है बुराई नहीं। **"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्"** का भी यही भाव है।

–वेदव्रत शास्त्री

मारिशस से प्राप्त महर्षि दयानन्द द्वारा उद्धृत फ्रैंच ग्रन्थ

डा. भवानीलाल भारतीय, ८/४२३ नन्दनवन, जोधपुर

ऋषि दयानन्द ने अपने यशस्वी ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के ग्यारहवे समुल्लास मे फ्रैंचभाषा मे लिखी एक पुस्तक '**भारत मे बाइबिल**' अग्रेजी में '**बाइबिल इन इण्डिया**' फ्रैंच मे '**ला बाइब्लेडेन्स इण्डी**' La Bibledans Inde को उद्धृत किया है। इस पुस्तक का ऋषि के द्वारा उद्धृत अश इस प्रकार है- '**देखो, कि एक जैकालयट साहब पैरिस अर्थात् फ्रास देश निवासी अपनी 'बाइबिल इन इण्डिया' मे लिखते हैं कि सब विद्या और भलाइयो का भण्डार आर्यावर्त देश है और सब विद्या तथा मत इसी देश से फैले हैं और परमात्मा की प्रार्थना करते हैं कि हे परमेश्वर ! जैसी उन्नति आर्यावर्त देश की पूर्वकाल मे थी वैसे हमारे देश की कीजिए, लिखते हैं उस ग्रन्थ मे देख लो।**'

ऋषि दयानन्द इस पुस्तक का लेखक जैकालयट बताते हैं वस्तुत फ्रैंच उच्चारण मे यह नाम जाक्योल्यो (पूरा नाम Louis Jacolliot फ्रैंच उच्चारण मे 'ट' वर्ण अनुच्चरित रहता है)। **जाकोल्यो** या **जाक्योल्यो** भारत मे फ्रैंच उपनिवेश चन्द्रनगर (अब बगाल मे) के प्रधान न्यायाधीश थे और उन्होंने इस पुस्तक की रचना १८६८ मे की थी। इसका अग्रेजी अनुवाद १८६९ मे होगया था। स्वामी जी को इस पुस्तक का परिचय किसी अग्रेजी पठित व्यक्ति ने दिया होगा और इसके विवेचनीय विषय (भारत की महत्ता) से भी उन्हे परिचित कराया होगा। वर्षों से इस पुस्तक की मुझे तलाश थी। इसके बारे मे मुझे आचार्य वेदव्रत मीमासक (प्रसिद्ध ज्योतिष विद्याविद्) तथा प्रो० रामप्रकाश ने जानकारी भेजने के लिए कहा था। यह प्रसन्नता की बात है कि गत मारिशस यात्रा मे मैं इस पुस्तक को प्राप्त करने मे सफल रहा। आर्यसभा मारिशस के उपप्रधान श्री सत्यदेव प्रीतम ने अपने एक सम्बन्धी के पास यह पुस्तक होने की मुझे सूचना दी तथा आर्यसभा के व्यवस्थापक श्री आनन्द बधन ने इसकी सुन्दर फोटोस्टेट प्रति तैयार कराकर मुझे भेट की। एतदर्थ मैं इन दोनो महानुभावो का आभारी हू। सत्यार्थप्रकाश की मूलप्रति मे इसके लेखक का नाम भूल से गोल्डस्टकर (एक जर्मन सस्कृतज्ञ) लिखा गया था जिसे सशोधित कर सम्भवत मुन्शी समर्थदान ने जैकालयट (जाक्योल्यो) कर दिया है।

'बाइबिल इन इण्डिया' का हिन्दी अनुवाद प्रसिद्ध हिन्दी लेखक प० सन्तराम बी ए (होश्यारपुर के निकट के बजवाडा निवासी) ने किया था तथा इसकी भूमिका भाई परमानन्द ने लिखी थी। मुखपृष्ठ न होने से यह ज्ञात नहीं होता कि यह अनुवाद कब और कहा से प्रकाशित हुआ। 'बाइबिल इन इण्डिया' का महत्त्व इसी दृष्टि से है कि इसमे पुरातन भारत को समस्त विद्या बुद्धि, सभ्यता और सस्कृति का उद्गम बताया गया है। साथ ही ईसाई मान्यताओ की तुलना मे वैदिकधर्म, दर्शन और अध्यात्म को उत्कृष्ट सिद्ध किया गया है। लेखक ने इस ग्रन्थ की तैयारी मे निश्चय ही सस्कृत के विभिन्न शास्त्रो का अध्ययन किया होगा। जिस युग मे यह पुस्तक लिखी गई उस समय अधिकाश सस्कृत ग्रन्थो के यूरोपियन भाषाओ मे अनुवाद नहीं हुए थे। विलियम जोन्स तथा कोलब्रुक जैसे कुछ इने गिने विद्वान् ही सस्कृत विद्या मे प्रवेश पासके थे। अत अनुमान होता है कि इस फ्रैंच लेखक ने फ्रैंच उपनिवेश मे रहते समय सस्कृतज्ञ ब्राह्मणो से ही इन शास्त्रो का अध्ययन किया होगा।

इस दुर्लभ महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ के कथ्य का विस्तारपूर्वक परिचय देना अनुपयुक्त नहीं होगा। ग्रन्थ की भूमिका मे लेखक ने भारत की विद्याओ के अधिष्ठाता ब्राह्मणो की प्रशसा मे लिखा है–न्याय, मानवता, उत्तम श्रद्धा, दया तथा ससार से निरपेक्षता आदि सद्गुणो से वे प्राचीन ब्राह्मण सुपरिचित थे। वे अपने कथन तथा आचरण के द्वारा इन गुणो की शिक्षा दूसरो को देते थे। (पृ०२६) भारत की प्रशसा मे वे लिखते हैं–"भारत धरती ही सस्कृति का पालना है। इस माता ने ही पश्चिम के देशो मे अपनी सन्तान को भेजकर उन्हे अपनी भाषा, नीति, विधिशास्त्र, साहित्य तथा धर्म की शिक्षा की है।" (पृ २८) "प्राचीन भारत प्राचीनकाल की सभी सभ्ययाओ का गुरुदेव था।" पृ० २६ सस्कृतभाषा की प्रशसा मे लेखक ने अत्यन्त उदारता दिखाई है। वह लिखता है–'भाषाविज्ञान अब इस तथ्य को स्वीकार करता है कि प्राचीन समय की समस्त भाषा पद्धतिया सुदूर पूर्व (भारत) से लीगई थीं। भारतीयभाषा वैज्ञानिको की कृपा से ही हमारी आधुनिक (यूरोपीय) भाषाओ को अपनी व्युत्पत्ति तथा धातु मिल गये हैं।" पृ० २९ पुराकाल मे सस्कृत के भारत मे सर्वत्र बोले तथा लिखे जाने के बारे मे इस फ्रैंच मनीषी ने लिखा था–"मूसा (यहूदी पैगम्बर Moses) के कई शताब्दियो पहले तक सस्कृत आम बोलचाल तथा लेखन की भाषा थी।" पृ १५७

यूरोप मे जब सस्कृत के अध्ययन का प्रचलन आरम्भ हुआ तो इस भाषा की अद्भुत रचना प्रणाली तथा व्याकरण को देखकर वहा के प्राच्य विद्याविदो ने एक स्वर से स्वीकार किया था कि "सस्कृतभाषा ग्रीक से अधिक पूर्ण लैटिन से अधिक समृद्ध तथा दोनो से अधिक परिष्कृत है।" (सरविलियम जोन्स १७९६ का कथन) जाक्योल्यो ने सस्कृत के एक अन्य विद्वान् बोर्नफ (Burnouf-मैक्समूलर का वेदगुरु) के एक उद्धरण को प्रस्तुत किया जिसमे सस्कृत के अध्ययन का महत्त्व बताया गया है।

बोर्नफ के अनुसार "सस्कृत का अध्ययन आरम्भ कर देने के कारण हम अब ग्रीक और लैटिन भाषाओ को पहले की अपेक्षा अधिक उत्तम रीति से समझने लगे हैं। पृ० ३० आचार्य मनु की प्रशस्ति मे लेखक लिखता है–"मिस्र, हिब्रू तथा रोमन जातियो की विधि व्यवस्थाए मनु से प्रभावित हैं तथा उससे प्रेरित हैं और हमारे वर्तमान यूरोपियन कानूनो मे भी उसका प्रभाव दृष्टिगत होता है।" पृ ३१ भारतीय दर्शन की प्रशसा मे फ्रास का यह चिन्तक लिखता है- "भारतीय दर्शनशास्त्र का इतिहास ससार के दर्शनशास्त्र का सक्षिप्त इतिहास है।" पृ० ३२ अन्तत वह श्रद्धा विगलित स्वर मे भारत का स्तवन करते हुए लिखता है–"प्राचीन भारतभूमि, मानवता के जन्मस्थान, तेरी जय हो, पूजनीय तथा समर्थ सस्कृतियो की धात्री, जिसको नृशस आक्रमणो की शताब्दियो ने अभी तक विस्मृति की धूल के नीचे नही दबाया तेरी जय हो।' पृ० ३६

वेदो की महिमा का गान करते हुए लेखक ने भावभरे शब्दो मे कहा- 'वेद सनातन ज्ञान के भण्डार हैं, हमारे पूर्वजो पर ईश्वर द्वारा प्रकाशित ज्ञान के महान् सूत्र है। इनसे हम स्वय को ससार के लिए अधिक उपयोगी तथा न्यायपरायण होना सीखते है।' पृ० ४१ यह लेखक लासेन वेबर कोलब्रुक विलियम जोन्स तथा बोर्नफ आदि प्राच्य विद्याविदो के कार्य की भूरि-भूरि प्रशसा करता है तथा आशा रखता है कि भविष्य मे भी पूर्वीय विद्याओ के ऐसे पडित उत्पन्न होगे जो धर्म सदाचार तथा तत्त्वज्ञान के आधार पर एक नये युग का निर्माण करेगे। इन पाश्चात्य भारत विद्याविदों की प्रशसा करने के साथ-साथ वह इनकी न्यूनताओ को भी उजागर करने से नहीं चूकता। जाक्यौल्यो का कहना है कि जहा तक सस्कृत के ग्रन्थो का अनुवाद करने तथा उनके आशय को समझने का प्रश्न है, इसमे विलियम जोन्स तथा कोलब्रुक ही सफल हुए हैं, अन्य विद्वान् इन ग्रन्थो का वास्तविक अभिप्राय समझने मे असफल रहे। जोन्स और कोलब्रुक की आपेक्षिक सफलता का कारण है–"उनका भारत के विद्वानो के सम्पर्क मे रहना, उनसे अपने अध्ययन मे सहायता लेना तथा उनकी शिक्षा से लाभ उठाना।"

जाक्योल्यो उन विद्वानो के कथन का प्रतिवाद करते हैं जो यह मानते हैं भारत की कला, साहित्य और सभ्यता को यूनानियों ने प्रभावित किया था तथा यह भी कहते हैं यूरोपीय सभ्यता का उद्गम मिस्र की सभ्यता है और भारत ने भाषा, कला तथा नीति का ज्ञान मिस्र से प्राप्त किया। उनके विचार में ऐसा कहना पिता को पुत्र का शिष्य बताना है। (पृ० ६२) वास्तव

में भारत की कला, साहित्य और तत्त्वज्ञान ही यूनान, मिस्र और ईरान होता हुआ यूरोप को प्राप्त हुआ। वैदिक देवताओं की यूनानी देवताओं से तुलना करते हुए तुलनात्मक धर्म के अध्येताओ ने इनमें आश्चर्यजनक समानता बताई है। इसका एक उदाहरण देना ही पर्याप्त होगा। वेद मे आया 'द्यौसपितर' यूनानी देवगाथा मे 'जूपिटर' होगया। वहा यह आकाश के पिता का वाचक है। इसका एक अन्य यूनानी रूप 'जीयस' है जो हिब्रू मे 'जेहोवा' (यहूदी मत मे ईश्वर का प्रतीक) होगया। तुलनात्मक अध्ययन ने तो यह भी निष्कर्ष निकाला है कि यूनानी महाकवि होमर के महाकाव्य इलियड पर वाल्मीकीय रामायण का सीधा प्रभाव है। जर्मन विद्वान् हर्टल ने यह सिद्ध किया है कि सस्कृत की नीतिकथाओ (पचतत्र, हितोपदेश) का जब यूरोप मे प्रचार हुआ तो उनके आधार पर ही ईसप की नीतिकथाए बनीं। यूरोप की नीतिकथाए ईरान, सीरिया तथा मिस्र होकर वहा पहुची भारतीय कथाओ के अनुकरण पर लिखी गई। जाक्योल्यो ने इस तथ्य को स्वीकार किया है।

ससार की विभिन्न प्राचीन सभ्यताओ की तुलना करने के पश्चात् इस फ्रैंच विद्वान् ने यह निष्कर्ष निकाला है कि भारत की आर्यसभ्यता ही क्रमश यूनान, मिस्र तथा रोम की सभ्यताओ के रूप मे बदलती गई। इन देशो मे सामाजिक व्यवस्थाओ जिनमे विवाह, पिता-पुत्र सम्बन्ध, अभिभावकता, दत्तक विधान, ऋण, विक्रय, हिस्सेदारी मृत्युपत्र (वसीयतनामा) की परस्पर तुलना यह बताती है कि पश्चिमी सभ्यताओं मे प्रचलित उक्त सामाजिक विधान अधिकाश मे भारतीय विधि-व्यवस्थाओ से मिलते हैं। यहा 'बाइबिल इन इण्डिया' के लेखक ने मनुस्मृति के उन श्लोको को भूरिश उद्धृत किया है जो समाज और परिवार मे नारी के गौरव की स्थापना करते हैं। इन श्लोको (शोचन्ति जामयो यत्र, यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, सन्तुष्टो भार्यया भर्ता आदि) को उद्धृत करने से यह ज्ञात होता है कि उसने मानव धर्मशास्त्र का सम्यक् अध्ययन किया था।

वेदो की प्रामाणिकता विषयक इस लेखक के विचार आर्यपरम्परा मे प्राप्त एतद् विषयक विचारो से समानता रखते हैं। वह लिखता है-"प्रामाण्य की दृष्टि से यह निर्विवाद है कि वेद प्राचीनतम ग्रन्थों से भी पहले के हैं। इन पवित्र पुस्तकों मे ईश्वरीय ज्ञान भरा पडा है।" इस बारे में वह सर विलियम जोन्स के मत को प्रस्तुत करता है-We cannot refuse to the Vedas the honour of an antiquity most distant हम वेदो को अतीव प्राचीन मानने से इनकार नहीं कर सकते। कुछ वर्ष पूर्व कलकत्ता मे सर विलियम जोन्स के द्वारा रायल ऐशियाटिक सोसाइटी की स्थापना कीगई थी। इस सोसाइटी ने चारो वेदो का अंग्रेजी भाषान्तर कराने का संकल्प किया था। यह तथ्य भी लेखक से छिपा नहीं था। पृ० ९५ वैदिक दर्शनों की चर्चा के प्रसंग मे यह लेखक पूर्व मीमासा तथा उत्तर मीमांसा (वेदान्त) को सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण मानता है। उसके विचार मे जैमिनि तथा बादरायण ने भारत के पाण्डित्यपूर्ण दर्शन का समुचित विवेचन किया है। उसकी दृष्टि में पूर्व मीमासा मे धर्माधर्म विवेक है तो बादरायण व्यास ने वेदान्त मे प्रकारान्तर से तर्कवाद, सदेहवाद, मनोविज्ञान आदि को इस रूप मे प्रस्तुत किया है जिससे कभी कभी लगता है कि क्या वह भौतिक जगत् के अस्तित्व से इन्कार करने की सीमा तक तो नहीं पहुच गया है। पृ० ९७ निष्कर्षत जाक्योल्यो कहता है-"भारत ने सारे ससार पर खासतौर से प्राक्काल पर अपनी भाषा, अपनी व्यवस्था और अपने तत्त्वज्ञान के द्वारा जो अखण्डनीय प्रभाव डाला है उससे कोई पूर्वाग्रहग्रस्त व्यक्ति भी इन्कार नहीं कर सकता।" पृ० १०१ उसकी तर्कसिद्ध मान्यता है कि "रोम को यूनान ने सभ्यता सिखाई और यूनान को सिखानेवाले एशिया माइनर तथा मिस्र देश थे। इन दोनो स्थानो पर सभ्यता के कण भारत से गये थे। अत हम भारत को प्राचीन जातियो का गुरु क्यो न स्वीकार करे।" पृ० १०२ इसी तथ्य को स्वामी दयानन्द सत्यार्थप्रकाश के प्रथम सस्करण (१८७५) मे स्वीकार करते है।

आर्यजाति मे स्वीकृत चारो वर्णो की समाजव्यवस्था की झलक इस फ्रैंच विद्वान् को रोमन सामाजिक विधान मे भी मिलती है। आर्यलोग जिन्हे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र कहते थे उन्हे रोमन लोग Priest (धर्मयाजक या पुरोहित), Senator (ससद-सदस्य जो शासक या क्षत्रिय कहलाते थे), Patrician कुलीन वैश्य लोग) तथा Plebeian (साधारण, निम्न, श्रमिक) कहकर पुकारते थे। (पृ० १०९) सैमेटिक मत वालो का विचार है कि ईश्वर के एकत्व की धारणा का प्रतिपादन सर्वप्रथम मूसा (Moses) ने किया। किन्तु लेखक इससे सहमत नहीं है। इसके विपरीत वह वैदिक धर्म को विशुद्ध एकेश्वरवादी ठहराता है। इसके साथ वह यह भी मानता है कि यहूदियो की देवगाथाए तथा कर्मकाण्ड भारत से लिये गये हैं। प्रसव समय आशौच की विधि की तुलनात्मक समीक्षा के पश्चात् वे यह निष्कर्ष निकालते हैं कि मनुकथित आशौच व्यवस्था तथा यहूदियो मे प्रचलित विधि मे पर्याप्त समानता है। इसी प्रकार वह हिन्दुओं के स्थापत्य और वास्तुशिल्प की उत्कृष्टता को भी सिद्ध करता है। प्राचीन हिन्दूधर्म एक परमेश्वर को मानता था यह जाक्योल्यो की सुदृढ धारणा है। इसकी सिद्धि मे उसने वेदों में आये 'स्वयभू' (यजुर्वेद ४०।८) शब्द को उद्धृत किया तथा एकेश्वरवाद की पुष्टि मे मनु तथा महाभारत के प्रमाण पेश किये। इस प्रसग में उसने एक महत्त्वपूर्ण किन्तु गम्भीर बात लिखी है-'कितनी आश्चर्यजनक सच्चाई है कि आर्यों का ईश्वरीय ज्ञान ही लोको की क्रमिक रचना बताता है। यही वह ईश्वरीय ज्ञान है जिसकी कल्पनाए (धारणाए और विचार) आधुनिक विज्ञान के साथ पूर्णरूप से मिलती है। "The only relation which is in complete harmony with modern science " कहना नहीं होगा कि इस युग मे स्वामी दयानन्द ही पहले महापुरुष थे जिन्होंने धर्म और विज्ञान को अविरोधी बताया था तथा धार्मिक विश्वासों को विज्ञान और तर्क की कसौटी पर कसकर देखने के लिए कहा था।

यहूदी मत मे त्रित्व (Trinity) को अस्वीकार किया गया है जबकि ईसाईमत ने इसे पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के त्रैत के रूप मे मान्यता दी। त्रित की कल्पना भारतीय चिन्तन मे तो आरम्भ से ही रही है। इसके विकृत रूप अन्यत्र किसी न किसी रूप मे पाये जाते है। वैदिक सस्कृति मे नारी के गौरव तथा उसके प्रति सम्मान के भाव को लेखक ने पुन उठाया तथा एतद्विषयक अनेक शास्त्रीय प्रमाण तथा उद्धरण दिये। इसके विपरीत वह कहता है कि ईसाईमत मे नारी को कोई सम्मान नहीं दिया गया। जाक्याल्यो के शब्द हैं-**"वेदो मे स्त्री पवित्र और पूजनीय है। बाइबिल की स्त्री एक दासी मात्र और किसी किसी समय तो एक वेश्या मात्र है।** पृ० १८५

ग्रन्थ के उपसहार मे लेखक कहता है कि भारतीय धर्म की वरिष्ठता, श्रेष्ठता तथा उत्कृष्टता के रहते **पादरियो द्वारा हिन्दुओं को मतपरिवर्तन के लिए कहना दुस्साहस मात्र है।** जब किसी पादरी ने एक ब्राह्मण को ईसाई मत के पाले मे आने के लिए कहा तो उसका दो टूक उत्तर था-"मैं अपना धर्म क्यो बदलू। तुम अपने धर्म को केवल अठारह सौ वर्ष (अब दो हजार) का बताते हो परन्तु हमारा धर्म सृष्टि के आदि से निरन्तर चला आरहा है। तुम्हारा धर्म तो हमारे धर्म की तलछट है। फिर इसे मुझे ग्रहण करने के लिए क्यो कहते हो ?" पृ २१९ "भारत मे ईसाईमत का प्रचार करने के लिए आरम्भकाल के जेसुइट सम्प्रदाय के पादरियो ने यह अनुभव कर लिया था कि यहा उनके मतपरिवर्तन के साधन काम मे नहीं आयेगे। यहा उनके सामने कोई भोदू या असभ्य लोग नहीं हैं वरन् एक सर्वथा सभ्य जाति है जो अपने धर्म तथा रीति नीति को उत्तम समझती है।" पृ० २१७

'बाइबिल इन इण्डिया' के लेखक ने कतिपय क्षेत्रो मे प्रचलित इस धारणा को सत्य माना है कि ईसा अपने युवाकाल मे भारत आया था और यहा के तत्त्वज्ञानियो के चरणों मे बैठकर उसने शिक्षा प्राप्त की थी। कालान्तर मे एक रूसी लेखक निकोलस नोटोविच ने तो इस कल्पना को सघन रूप से पल्लवित किया और ईसा के भारत मे आने तथा यहा अध्ययन करने के अनेक प्रसगो को रूपायित किया। ईसा के मिस्र आने तथा अपने शिष्यो के साथ पूर्व (भारत ?) मे जाने की बात इस ग्रन्थकार ने भी लिखी है यद्यपि इसकी ऐतिहासिकता अभी सदेह के घेरे मे ही है। जाक्योल्यो ने बाइबिल मे उल्लिखित ईसा के जीवन-चरित मे घटी प्रधान घटनाओ तथा उनमे आये चमत्कारो की चर्चा करने के पश्चात् लिखा है कि 'जनता को मुग्ध करने, उन्हे ईसाई बनाने के प्रत्यक्ष उद्देश्य को लेकर चमत्कारयुक्त थे आश्चर्यजनक प्रसग ईसा के साथ बाद मे जोडे गये हैं। इनकी निदा की जानी चाहिए।" (पृ २८१) इस ग्रन्थ लेखक की दृष्टि मे ईसा के ये चरित्र लेखक वचक (ठग) मात्र है। वह लिखता है-'पूर्ववर्ती अवतारो के बनाये मार्ग का अनुगमन करते हुए इन गास्पेल लेखको (ईसा के चरित लेखको) ने चमत्कारो तथा लोकोत्तर बातो द्वारा ईसा की स्मृति को प्रतिष्ठित किया है और इस न्यायपरायण (ईसा) मनुष्य को परमेश्वर बना दिया। यद्यपि ईसा की स्वजीवन मे यह आकाक्षा कभी नहीं रही कि उसे ईश्वर बना दिया जाये।" (पृ २५५)

तुलनात्मक धर्म के कुछ अध्येताओ ने कृष्ण और क्राइस्ट के जीवन की कुछ घटनाओं मे पाये जानेवाले साम्य को लक्षित कर यह धारणा बनाई है कि पुराणो का 'कृष्ण' ही बाइबल का 'क्राइस्ट' है। इस उपपत्ति पर कोई निर्णय देना हमारा प्रयोजन नहीं है किन्तु उपर्युक्त तुलना मे जाक्योल्यो ने भी रुचि दिखाई है। देवकी की मरियम से तुलना भी इस प्रसग मे की गई है। लेखक का ईसा के जीवन मे आये चमत्कारो को मिथ्या बताना एक साहसपूर्ण सच्चाई है। उसके इस स्पष्ट कथन को देखे- हम अब उस युग मे नहीं हैं, जब लोकोत्तर बाते भी सत्य समझी जाती थीं और बेसमझे लोग उनके सामने सिर झुका लेते थे। भला कोई मनुष्य हमारे सामने आये और बाइबिल के चमत्कार दिखाये। पानी की मदिरा बनाना, पाच मछलियो और दो तीन रोटियो से दस-पन्द्रह या बीस हजार व्यक्तियो की क्षुधा तृप्ति करना, मृतको को जिलाना, बहरो को कान तथा अधो को आखे देना, क्या सब लालबुझक्कड वाली बाते नहीं हैं।" सभी मजहबो मे पाई जानेवाली शैतान की अवधारणा का भी लेखक उपहास करता है। ईसाई साधुओ के आचार-व्यवहार तथा मनूक्त वानप्रस्थियो की आचरण सहिता मे लेखक को आश्चर्यजनक समानता दिखाई देती है। (पृ २९२)

'बाइबिल इन इण्डिया' मे विवेचित

प्रसगो की एक सक्षिप्त झलक हमने यहा दिखाई है। भारतीय धर्म, विद्या, बुद्धि, सभ्यता तथा सस्कृति की उत्कृष्टता को सिद्ध करने का किसी यूरोपीय व्यक्ति का शायद पहला प्रयास था। कालान्तर मे इस विषय पर अनेक ग्रन्थ लिखे गये थे। दीवान बहादुर हरविलास शारदा रचित Hindu Superiority इसी श्रृखला की एक कडी थी। प सतराम (अनुवादक) ने ग्रन्थ के परिशिष्ट में कुछ ऐसे विदेशी विद्वानो के ग्रन्थो के उद्धरण दिये हैं जो यह सिद्ध करते हैं कि ससार को धर्म, सभ्यता और सस्कृति का प्रथम पाठ सिखानेवाले भारत के आर्य ही थे। इन विद्वानो मे कतिपय हैं-एल्फ्रेड रसेल वालेस, इमर्सन, एच पी ब्लैवेट्स्की, विक्टरकजिन, शॉपनहार, एडवर्ड कार्पेटर, मैक्समूलर, मॉरिसफिलिप, प्रो हीरेन, बॉर्नाफ, पॉल ड्यूसन, तॉल्सताय, व्हीलर विलोक्स, सर मोनियर विलियम्स सर जोन वुडरफ, डा० ऐनी बेसेन्ट, डा० जेम्स कजिन्स, रोमा रौला, हेनरी वेलेन्टाइन, बिल डुरेन्ट, सी एफ एन्ड्रूज, मॉरिस मैटरलिक बर्ट्रेण्ड रसेल, प्रो० विलियम जेम्स, सर चार्ल्स इलियट, एच जी रॉलिन्सन, विलियम बटलर यीट्स, एल डी बार्नेट, सर रोलन्डशे, डा० मेकनिकल, लुईरेनो, जार्ज बर्नार्ड शॉ, राल्फ थामस एच ग्रिफिथ, ए एल बाशम तथा बिली ग्राहम। कुछ भारतीय मनीषियो के विचार भी यहा समाविष्ट किये गये हैं-डा० राधाकृष्ण, कवि रवि ठाकुर, डा० राजेन्द्रलाल मित्र, लाला लाजपतराय, डा ताराचन्द गाजरा, योगी अरविंद तथा सरदार के एम पनिकर आदि।

ऋषि दयानन्द ने १८७५ मे प्रकाशित सत्यार्थप्रकाश के प्रथम सस्करण मे इस पुस्तक का इस प्रकार उल्लेख किया था-"**एक गोल्डस्टकर (वास्तव मे जाक्योल्यो) साहेब ने पहले ऐसा ही निश्चय किया है कि जितनी विद्या वा मत फैले हैं, भूगोल मे वे सब आर्यावर्त ही से लिए हैं।**" पृ ३०९ इससे अनुमान होता है कि स्वामी जी ने १८७५ से पहले 'बाइबिल इन इण्डिया' का परिचय प्राप्त कर लिया था।

आर्यसमाज सान्ताक्रुज वर्ष २००३ में निम्नलिखित पुरस्कारों से आर्यविद्वानों को सम्मानित करेगा

१ **वेद-वेदांग पुरस्कार**–जिस विद्वान् ने जीवनपर्यन्त वेद-वेदागो पर अनुसधान किया हो एवं ग्रन्थ लिखे हो उन्हे **"वेद-वेदाग पुरस्कार"** से सम्मानित किया जायेगा। पुरस्कार राशि २५,००१ रुपये दी जायेगी।

२ **वेदोपदेशक पुरस्कार**–वेद-वेदाग अनुसधानकर्त्ताओ के अतिरिक्त जिस विद्वान् ने जीवनपर्यन्त आर्यसमाज के उपदेशक, भजनोपदेशक अथवा कार्यकर्ता के रूप मे सेवा की उन्हे "वेदोपदेशक पुरस्कार" से सम्मानित किया जायेगा। पुरस्कार राशि १५,००१ रुपये दी जायेगी।

३ **श्रीमती लीलावती महाशय "आर्य महिला पुरस्कार"**

उपरोक्त पुरस्कार एक महिला विदुषी/कार्यकर्त्री को रुपये ११,००१, शाल एव रजत ट्राफी से सम्मानित किया जायेगा।

४ **श्रीमती शिवराजवती आर्या "बाल पुरस्कार"**

बाल पुरस्कार की राशि–आर्षपाठविधि से शिक्षा प्राप्त कर रहे भारतवर्ष मे सर्वप्रथम आये छात्र-छात्राओ को रुपये १०,००० रजत ट्राफी, शाल, श्रीफल एव मोतियो के हार से सम्मानित किया जायेगा।

जो आर्यबन्धु किसी विद्वान् के नाम उपरोक्त पुरस्कार हेतु प्रस्तावित करना चाहते हैं, वे विद्वान् के जीवन-परिचय कार्य एव लिखे गये ग्रन्थों की सूची एव प्रति सहित विस्तृत पत्र ३०-११-२००२ तक भेजने की कृपा करे।

जो विद्वान् अपने नाम का स्वय प्रस्ताव करेगे वे अयोग्य माने जायेगे। जिन विद्वानो के नाम पूर्व मे प्रस्तावित किये गये हैं, उनके नामो को पुन प्रस्तावित करने की आवश्यकता नही है।

आपके द्वारा प्रस्तावित नामो के आधार पर निर्णायक मण्डल वर्ष-२००३ के लिये वेद-वेदाग, वेदोपदेशक एव श्रीमती लीलावती महाशय "आर्य महिला पुरस्कार" के लिये विद्वान् का चयन करेगा। पुरस्कार के अन्तिम निर्णय का अधिकार आर्यसमाज सान्ताक्रुज (प०) मुम्बई की अन्तरग सभा के पास सुरक्षित होगा।

–**कैप्टन देवरत्न आर्य,** सयोजक पुरस्कार समिति एव पूर्व प्रधान आर्यसमाज सान्ताक्रुज

नया प्रकाशन

पुस्तक का नाम	**बुद्धिवर्धक योग** (दुर्बलतानाशक चिकित्सा)
लेखक	स्व० चौ० हरिसिह वैद्य (चिडी निवासी)
प्रकाशक	आचार्य प्रकाशन, दयानन्दमठ रोहतक
मूल्य	१०-०० रुपये

चिकित्सा भास्कर स्त्रीरोग चिकित्सा नेत्ररोग चिकित्सा आदि प्रसिद्ध ग्रन्थो के लेखक स्व० चौ० हरिसिह वैद्य की यह पुस्तक हस्तलिखित ग्रन्थ के आधार पर प्रथम बार प्रकाशित की गई है। कम्प्यूटर द्वारा ऑफसेट मशीन पर छपी इस सुन्दर पुस्तक मे लेखक के १११ अनुभूत बुद्धिवर्धक योगो का उल्लेख है।

आयुर्वेद शास्त्र मे ब्राह्मी, शखपुष्पी, गिलोय, बच, अश्वगन्धा, ज्योतिष्मती, बादाम आदि को बुद्धिवर्धक माना गया है। महर्षि चरक के अनुसार शखपुष्पी सबसे अधिक बुद्धिवर्धक है-**मेध्या विशेषेण च शखपुष्पी।'**

आज के विज्ञान युग मे सर्वत्र बुद्धि के ही चमत्कार को नमस्कार है। जो जितना अधिक बुद्धिमान् है वह उतना ही सभी क्षेत्रो मे अग्रणी है। '**बुद्धिर्यस्य बलं तस्य**' आदि पचतन्त्र की कथा लोकप्रसिद्ध है।

विद्यार्थी, लेखक, डाक्टर, वकील, इजीनियर आदि बुद्धिजीवी वर्ग लेखक के अनुभूत योगो से लाभ उठाकर अपनी बुद्धि और उत्तम स्वास्थ्य की वृद्धि कर सकते हैं। —**वेदव्रत शास्त्री,** आयुर्वेदाचार्य

आर्यसमाज के उत्सवों की सूची

१	वैदिक प्रचार मण्डल (आर्यसमाज) २९ रामनगर मदिर मार्ग, अम्बाला छावनी	८-१० नवम्बर ०२
२	आर्यसमाज रामनगर गुडगाव	१८-२४ नवम्बर ०२
३	आर्यसमाज बिडला लाइन्स कमलानगर दिल्ली	२२-२४ नवम्बर ०२
४	आर्यसमाज बडा बाजार पानीपत	१५-१७ नवम्बर ०२
५	आर्यसमाज जवाहरनगर पलवल कैंप, जिला फरीदाबाद	२२-२४ नवम्बर ०२
६	आर्यसमाज थर्मल कालोनी पानीपत	२९ नव० से १ दिस० ०२
७	आर्यसमाज बसई जिला गुडगांव	६ से ८ दिसम्बर ०२

—**रामधारी शास्त्री, सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता**

आर्य-संसार

विशाल कुण्ड में ५० मन घी से हवन

४ दिसम्बर से १५ दिसम्बर २००२ तक

स्थान : बस अड्डा के पास, रामलीला मैदान, रोहतक (हरयाणा)

धर्मप्रेमी आत्माओ ! आज हमारे परिवार, समाज और देश मे दुर्गुण-दुर्व्यसन बहुत ज्यादा बढ़ गए हैं। इसलिए परिवार का हर व्यक्ति एक दूसरे से असन्तुष्ट, अप्रसन्न और दुःखी रहता है। आपसी मन-मुटाव सदा बना ही रहता है। श्रीराम, श्रीकृष्ण के निरोग और शान्त देश में महादुःख, अशान्ति और भयकर रोगों की भरमार दिन-रात बढती ही चली जारही है। इसको रोकना हम सबका परम कर्त्तव्य बनता है। इस महाविनाश का मूल कारण यही है कि हमने ईश्वर का सच्चा भजन करना छोड़ दिया, हवन से हमारा कोई लेना-देना नहीं और ऋषि-मुनियों के व्यावहारिक ज्ञान से तो बिल्कुल शून्य होगए हैं। देखिए महर्षि दयानन्द सरस्वती अमरग्रन्थ सत्यार्थ-प्रकाश में लिखते हैं -"आर्यवर शिरोमणि महाशय, ऋषि, महर्षि, राजे, महाराजे लोग बहुत-सा होम करते-कराते थे। जब तक इस होम करने का प्रचार रहा, तब तक आर्यावर्त्त देश रोगों से रहित और सुखों से पूरित था, अब भी प्रचार हो तो वैसा ही हो जाय।" इन वाक्यो से प्रेरित होकर विशाल कुण्ड मे ५० मन घी से हवन किया जारहा है।

इस महान् हवन के कार्यक्रम में बडे-बडे महात्मा, विद्वान् एव भजनोपदेशक पधार रहे हैं। अत आप सभी ५ किलो घी और ५ किलो विशेष हवन सामग्री से आहुति देने के लिए स्वयं यजमान बने और अपने सम्बन्धियों को बनावे।

कार्यक्रम-पातञ्जल योग के अनुसार प्रतिदिन प्रात ६-४५ से ७ ४५ तक ध्यान योग प्रशिक्षण, प्रतिदिन प्रात ८ बजे से ९-३० बजे तक, साय ३ से ४-३० बजे तक हवन। प्रतिदिन ९-३० से दोपहर १२ बजे तक, रात्रि ७ से ९-३० बजे तक भजन एवं उपदेश।

विशेष-१ इस कार्यक्रम के लिए अवकाश अवश्य लेवे अन्यथा पुण्य लाभ से वचित रहना पडेगा। २ यजमान बनने के इच्छुक २० नवम्बर २००२ से पहले फोन ०१२६२-३५०२३ या ९८१२१४२७४५ पर सम्पर्क करे।

निवेदक महात्मा प्रभुआश्रित आर्ष गुरुकुल सुन्दरपुर (कुटिया) रोहतक (हरयाणा)

—आचार्य सत्यव्रत

गुरुकुल कुरुक्षेत्र में क्रियात्मक अध्यात्म योग प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

कुरुक्षेत्र। गुरुकुल कुरुक्षेत्र के तत्त्वावधान मे रोजड 'साबरकाठा' गुजरात से पधारे उच्चकोटि के विद्वान् व बहुमुखी प्रतिभा के धनी स्वामी सत्यपति के कुशल मार्ग नेतृत्व मे १२ अक्तूबर से १६ अक्तूबर तक क्रियात्मक आध्यात्मिक योग प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया। इस शिविर मे गुरुकुल के प्राचार्य, सभी आचार्यो व ब्रह्मचारियो ने विधिवत् प्रशिक्षण प्राप्त कर भरपूर आनन्द उठाकर अपने जीवन को सफल बनाया।

शिविर समापन के शुभावसर पर स्वामी सत्यपति परिव्राजक ने अपने उद्बोधन में कहा कि गुरुकुल कुरुक्षेत्र छात्रों मे देशभक्ति और देश पर बलिदान होने की भावना कूट-कूटकर भर रहा है। उन्होने गुरुकुल के प्राचार्य की प्रशसा करते हुए कहा कि जिस प्रकार भगवान् कृष्ण ने कुरुक्षेत्र की भूमि पर अर्जुन को कर्म करने का सन्देश दिया था, उसी का अनुसरण करते हुए आचार्य देवव्रत ने इस भूमि पर कर्म करके बच्चो को शिक्षित करने तथा उनमें नैतिक शिक्षा तथा देशभक्ति पैदा करने का कार्य किया है।

उन्होने योग के विषय में अपने उद्गार प्रकट करते हुए कहा कि योग न केवल खेल है, बल्कि योग मन की एकाग्रता एवं रोगो के निदान मे भी सहायक है। योगक्रियाओं को अल्पायु मे ही आत्मसात् करके जीवन का अभिन्न अग बना लेने से सुखद जीवन की अनुभूति होती है। आज के इस भौतिकवादी युग और भाग-दौड़ की जिन्दगी में योग का महत्त्व और अधिक बढ गया है क्योकि जहा इससे शारीरिक सुडौलता आती है वहीं योग एक चरित्रवान् राष्ट्र के प्रति समर्पित नागरिक तैयार करने में भी पूर्णरूप से सहायक सिद्ध होता है। उन्होने कहा कि योग न केवल भौतिक जीवन के लिए बल्कि आध्यात्मिक जीवन के लिए भी बेहद जरूरी है। बिना आत्मबल के राष्ट्र का विकास सभव नही है क्योकि आत्मबल के बिना व्यक्ति जहां एक और निराशावादी व कमजोर हो जाएगा वहीं पलायनवादी भी बन जाएगा। उन्होंने कहा कि मृत्यु जीवन से अधिक शाश्वत है और सभी को प्राप्त होती है, परन्तु योग की सहायता से जीवन को अमर बनाया जा सकता है।

गुरुकुल कुरुक्षेत्र ने इसी प्रकार के शिविर प्रतिवर्ष दो बार आयोजित करने का महत्त्वपूर्ण निर्णय किया है ताकि विद्यार्थियों के बौद्धिक व आध्यात्मिक ज्ञान मे वृद्धि होसके।

राष्ट्रभाषा के लिए संगठित संघर्ष की योजना

रोहतक। म०द०विश्वविद्यालय रोहतक मे नवम्बर २००२ के अन्तिम सप्ताह में विश्वविद्यालय के समस्त महाविद्यालयों के युवा छात्रो का एक विशाल राष्ट्रभाषा सम्मेलन आयोजित करके, प्रदेशभर के युवको का आह्वान किया जाएगा कि वे राष्ट्रभाषा हिन्दी की प्रतिष्ठा के लिए एकजुट होकर आगे बढे। यह निर्णय आज हरयाणा राष्ट्रभाषा समिति ने अपनी कार्यकारिणी बैठक मे किया। इस युवा सम्मेलन की तैयारी के लिए एक आयोजन समिति का भी गठन किया गया।

कार्यकारिणी ने यह भी निश्चय किया कि सरकारी स्तर पर राजभाषा हिन्दी के स्थान पर अवैधानिक रूप से अंग्रेजी के प्रयोग को जारी रखने तथा एन डी ए और सी डी एस की प्रवेश परीक्षाओं में अंग्रेजी अनिवार्यता के विरुद्ध शीघ्र ही जनहित याचिकाएं, उच्च न्यायालय में प्रस्तुत की जाए। रोहतक नगर को हिन्दीमय बनाने के लिए हिन्दी नाम पट्टों पर पुरस्कार देने तथा अन्य अनेक कार्यक्रमो को भी बैठक में सर्वसम्मति से स्वीकार किया गया।

बैठक में अनेक जिलो महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालय के प्रतिनिधियो ने बडी सख्या में उत्साहपूर्वक भाग लिया। बैठक की अध्यक्षता समिति के उपाध्यक्ष श्री महावीर धीर ने की। —श्यामलाल, सयोजक

विश्वशान्ति महायज्ञ सम्पन्न

स्वामी विद्यानन्द सरस्वती वैदिक प्रचार ट्रस्ट दिल्ली के सौजन्य से रत्नसिह पब्लिक स्कूल कौराली जिला फरीदाबाद हरयाणा मे आर्यसमाज कौराली के सहयोग से विगत दो दिन तक पाचवा वेद प्रचार तथा यजुर्वेद के मन्त्रो द्वारा विश्वशान्ति यज्ञ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर यज्ञ के ब्रह्मा डा० धर्मदेव शर्मा ने अपने सन्देश में **"यज्ञो वै विष्णु."** बताते हुए सभी कार्यो की पूर्ति करनेवाला साधन यज्ञ बताया। यज्ञ ही कामधेनु के समान है। इस यज्ञ की महिमा का महत्त्व प्रदर्शित किया। मन्त्रपाठ श्री कर्मचन्द शास्त्री, श्री शिवराम विद्यावाचस्पति, श्री चन्द्रदेव शास्त्री ने किया।

वेदप्रचार मे हजारो व्यक्तियों ने आर्यसमाज के कार्यक्रम को श्रेष्ठ बताते हुए अपने जीवन को इसके सिद्धान्तों पर चलने का सकल्प किया।

२१ कुण्डीय विराट् गायत्री महायज्ञ उल्लासमय वातावरण में सम्पन्न

नई दिल्ली। विश्वशान्ति मानव कल्याण हेतु आर्यसमाज एव वैदिक यज्ञ समिति विकास कुज के तत्त्वावधान मे आयोजित २१ कुण्डीय विराट् गायत्री महायज्ञ वैदिकविद्वान् आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी के ब्रह्मत्व मे सेन्ट्रल पार्क विकास कुज, मे उल्लासमय वातावरण मे सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर धार्मिक जगत् के महान् प्रवक्ता आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी ने विराट् जनसमूह को सम्बोधित करते हुए कहा कि ससार मे परोपकार का सबसे बडा उदाहरण यज्ञ हवन है। मनुष्य दूसरों का भला करके सुनाता व जतलाता है। अच्छे काम करके इतराता है। जिससे वैर द्वेष हो, उसका भला करने की सोच भी नहीं सकता परन्तु हवन का लाभ सबको पहुचता है, मित्र हो चाहे शत्रु।

वेदज्ञविद्वान् आचार्यश्री ने श्रद्धालुओं को सबोधित करते हुए कहा कि यज्ञकुण्ड की अग्नि में घृत की आहुति से प्रखर उष्णता की ऊर्जा तैयार होती है, जिसमे अशुद्ध वायु को शुद्ध करने तथा शरीर और मन के तनावो को भी दूर करने का अद्भुत सामर्थ्य है। यज्ञ से पर्यावरण शुद्ध, पुष्ट एव सुगन्धित होता है। यज्ञ मानव को दानशील बनाता है, तथा इससे मनुष्य सर्वहित मे अपना हित समझता है।

कार्यक्रम के अन्त में नागिया परिवार द्वारा 'दैनिक यज्ञ पद्धति' नामक पुस्तक का वितरण किया गया तथा हजारों लोगों ने ऋषि लगर ग्रहण किया।

—पुष्पलता, प्रधान

श्री स्वामी सुमेधानन्द जी द्वारा आयोजित ३५ दिवसीय वैदिक जागृति यात्रा सम्पन्न

वैदिक आश्रम पिपराली (सीकर) राजस्थान के अध्यक्ष श्रद्धेय स्वामी सुमेधानन्द जी ने राजस्थान प्रान्त के ६ जिलों सीकर, झुझनू, चुरू, हनुमानगढ, श्री गगानगर व बीकानेर में वेदप्रचार हेतु विशेष यात्रा का आयोजन किया यह यात्रा २ सितम्बर को पिपराली से प्रारम्भ हुई तथा ३१ ग्रामो में होती हुई सीकर शहर पहुची जहा दिनाक ५ व ६ अक्टूबर को भव्य समारोह के साथ समापन किया गया। यात्रा के अन्तर्गत झुझनू रावतसर व सूरतगढ मे जिला स्तरीय सम्मेलन हुए। जिनमे हजारों की उपस्थिति रही। इस यात्रा मे बिजनौर उत्तर प्रदेश से पधारे प० नरेशदत्त आर्य भजनोपदेशक अपना वेदरथ लेकर पूरे समय रहे। वैदिक प्रचारिका बहन पुष्पा शास्त्री ने अपना बहुमूल्य १५ दिन का समय दिया। प्रतिदिन प्रात काल यज्ञो का आयोजन किया गया रात्रि को वेदप्रचार तथा दिन मे विद्यालयो मे प्रचार हुआ। **–रामदेवासिंह आर्य, प्रधान आर्यसमाज सीकर**

समारोह सम्पन्न

आर्यसमाज बीगोपुर ने अपना तेरहवा वार्षिकोत्सव १९ व २० अक्तूबर २००२ वार शनिवार, रविवार को बडे हर्षोल्लास के साथ मनाया। आमन्त्रित विद्वानो ने समाज मे फैली कुप्रथाओं, युवापीढी का मार्गदर्शन तथा नारी उत्थान पर विशेष जोर दिया।

इस अवसर पर राव हरिश्चन्द्र आर्य चेरिटेबल ट्रस्ट नागपुर (उप-कार्यालय बीगोपुर) द्वारा विभिन्न सस्थाओ को दान वितरित किया गया। जिनमे दयानन्द आर्य कन्या विद्यालय नागपुर २७,३०० रुपये, आर्यसमाज धौलेडा ५१,००० रुपये, दयानन्द सेवाश्रम आर्यसमाज बीगोपुर ३५,००० रुपये, आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय खानपुर २५,००० रुपये, वैदिक आश्रम पिपराली १०,००० रुपये, पाताञ्जल योग आश्रम बहु अकबरपुर २१,००० रुपये, डा० भवानीलाल भारतीय जोधपुर ५,००० रुपये, अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम झाबुआ (म०प्र०) ५१०० रुपये, ग्राम सेवा समिति बीगोपुर १००० रुपये तथा प्रतिभाशाली छात्रो को छात्रवृत्ति प्रदान कीगई। **–फूलसिंह आर्य, मत्री आर्यसमाज बीगोपुर**

तमिलनाडु सरकार द्वारा जबरन धर्मान्तरण पर निषेध अध्यादेश का स्वागत

आर्यप्रतिनिधिसभा हरयाणा ने तमिलनाडु सरकार द्वारा जबरन धर्मान्तरण के खिलाफ लाये गये अध्यादेश का स्वागत किया है।

सभा के मन्त्री आचार्य यशपाल ने यहा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति में सभी राज्यो को तमिलनाडु सरकार का अनुकरण करने की सलाह देते हुए कहा कि यह कार्य बहुत पहले हो जाना चाहिए था। हरयाणा सरकार से भी इसी प्रकार का अध्यादेश जारी करने की माग करते हुए उन्होंने कहा कि जबरन या प्रलोभन देकर धर्मपरिवर्तन करने से विभिन्न धर्मो के बीच नफरत पैदा होती है।

उन्होने कहा कि किसी की मजबूरी का फायदा उठाकर धर्मपरिवर्तन करने से देश मे सामाजिक व राजनैतिक सकट का जन्म होता है। अत समूचे देश मे इस तरह का अध्यादेश लागू करने की जरूरत है।

दिल्ली का चुनाव

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा दिल्ली का चुनाव सर्वसम्मति से सम्पन्न हुआ। प्रधान-श्री रामनाथ जी सहगल, कार्यकर्त्ता प्रधान-श्री हरबसलाल जी कोहली, महामत्री-श्री राजीव भाटिया, मत्री-श्री सुरेन्द्र गुप्ता, कोषाध्यक्ष-श्री जी पी मालवीया।

वर चाहिये

पवार राजपूत, सुन्दर २४ वर्ष ५ फुट ३ इच बी एस-सी नॉन मेडिकल, बी एड, एम एस-सी गणित कन्या हेतु सुन्दर, सुशिक्षित, सुव्यस्थित, आर्य विचारोवाला, शाकाहारी वर चाहिए।

पता विजयपालसिह विद्यालकार
मार्केट कमेटी के साथ, नरवाना (हरयाणा)-१२६११६

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ०१२६२–७६८७४, ७७८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ०१२६२–७७७२२) से प्रकाशित।
पत्र में प्रकाशित लेख सामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३ — सृष्टिसवत् १, ९६, ०८, ५३,
पंजीकरणसंख्या टैक/85-2/2000 — विक्रमसवत् २०५९
☎ ०१२६२-७७७२२ — दयानन्दजन्माब्द १७९

प्रधानसम्पादक : यशपाल आचार्य, सभामन्त्री — सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री

वर्ष २६ अंक ४८ १४ नवम्बर, २००२ वार्षिक शुल्क ८०) आजीवन शुल्क ८००) विदेश में २० डॉलर एक प्रति १.७०

गोहत्या या राष्ट्रहत्या अथवा हरयाणा हत्या ?

सुखदेव शास्त्री "महोपदेशक", दयानन्दमठ, रोहतक

१५ अक्तूबर विजयदशमी के पवित्र पर्व पर झज्जर शहर से ३-४ किलोमीटर पर स्थित दुलीना गाव मे गोहत्या के आस्था के प्रश्न को लेकर पाच आदमियो की हत्या होने पर पूरे हरयाणा प्रदेश व सारे देश में देशव्यापी आलोचनाओ का समाचार जोर पकड गया। विशेषकर वोट की भिखारी राजनीतिक पार्टियो ने तो सारे देश को आसमान पर उठा लिया। गोहत्या की वास्तविकता का तो पता लगाने की किसी ने भी आवश्यकता नहीं समझी। इसके विपरीत वेदो-उपनिषदो व मनुस्मृति आदि मे भी प्राचीनकाल मे आर्य गोमास खाते थे, यज्ञो मे गोमास डालते थे। हजारो गाय राजा लोग कटवाते थे। ऋषि मुनि सब गाय का मास खाते थे, ऐसे लेख अखबार मे प्रकाशित हुए तो इन गाय का चमडा उतारनेवालो का क्या दोष है ?

एक ऐसा ही लेख हरयाणा के एक समाचारपत्र "हरिभूमि" मे २६ अक्टूबर शनिवार २००२ को "खूटा ठोक" लेखक के नाम से "गऊ बचाओ माणस मारो" के शीर्षक से छपा है, जिसमे वेदों व मनुस्मृति, वशिष्ठ स्मृति आदि मे तथा अन्य सारे ही वैदिक साहित्य मे गोमेध आदि यज्ञो मे गाय की बलि दी जाती थी। इस घृणित लेख पर ही उसका सप्रमाण उत्तर देने के लिए यह लेख लिखा जारहा है। आप अच्छी प्रकार से गायरक्षा सम्बन्धी वेदो व स्मृतियो के प्रमाणो से समझ जाएगे कि कभी भी आर्यो के आदिदेश आर्यावर्त के सार्वभौमिक चक्रवर्ती राज्य मे कहीं पर गोहत्या-प्राणिहत्या नहीं होती थी।

इस लेख के उत्तर मे सर्वप्रथम ऋग्वेद के प्रमाण लीजिए-जिसमे गोहत्या का पूर्णरूप से निषेध है तथा गोहत्यारो के मृत्युदण्ड का प्रावधान है-ऋग्वेद-मण्डल १०, सूक्त-८७, मन्त्र १६ मे लिखा है-

"य. पौरुषेयेणयोऽघ्न्याया भरति क्षीरमग्ने तेषा शीर्षाणि हरसापि वृश्च" अर्थात् जो राक्षस मनुष्य के मास और अघ्न्या-गाय का मास खाते हैं, राजा उनका कुल्हाडे से शिर कटवादे। ऋग्वेद म० ८-सूक्त १०१, मन्त्र १५ मे आदेश है-**"मा गामनागामदितिं वधिष्ट"** गाय निष्पाप है, उसे मत मारो।

इसी प्रकार "अध्वर" शब्द वेदो मे यज्ञ के अर्थ मे आया है, ऋग्वेद के दश हजार, पाच सौ, नवासी मन्त्रो मे इन मण्डलो, सूक्तो तथा मन्त्रो मे "अध्वर शब्द आया है, जिसका अर्थ-हिसारहित यज्ञ होता है, वे हैं-१।१।४, १।१।८, १।१४।२१, १।१९।१, १।४४।१३, १।७४।१, १।९३।१२, १।१०१।८, १।१२८।४, १।१३५।३, १।१५१।३ व ७, २।२।५, ३।१७।५, ३।२०।१ व ५, ३।२४।२, ३।५४।१२, ४।२।१०, ४।९।६, ४।१५।२, ४।३७।१, ५।४।८, ५।२८।३ व ६, ५।४४।५, ६।२।३, ६।१६।१२, ७।३।१, ७।४।१६, ८।३।५ व ७, ८।२७।१, ८।२७।२३, ८।४६।१८, ८।५०।५, ८।६६।१, ८।७०।२, ८।७१।१२, ८।६३।२३, १।६७।१, १०।७७।८, १०।१२२।७, इन मण्डल, सूक्तो में ऋग्वेद में अध्वर शब्द आया है। अब दूसरे वेद यजुर्वेद में देखिये-इसमें कम से कम ४३ स्थानो पर अध्वर शब्द का प्रयोग हुआ है, जैसे-२।४, ३।११, ६।२३, ६।२५, १५।३८, २९।२६-अध्वर-हिंसारहित यज्ञ।।

इसी प्रकार सामवेद मे अध्वर शब्द का प्रयोग सैंकडो मन्त्रो मे पाया जाता है, सामवेद पूर्वार्चिक मे-१।२।६, १।३।१, १।३।१२, २।२।६, १।६।७ मे, उत्तरार्चिक मे-६।३।४।२, ६।३।५।१ मे हिसारहित यज्ञ मे अध्वर आया है।

इसी प्रकार अथर्ववेद मे भी उदाहरण के लिये ये मन्त्र देख लीजिये-१।४।२, २।२४।३, ५।१२।२, ३।१६।६, १८।२।२, १९।४२।४। यदि चारो वेदो मे अध्वर विषयक मन्त्रो को यहा प्रस्तुत करे तो लेख बहुत लम्बा होजाएगा।

निघण्टु मे पठित शब्द "ध्वृ" धातु हिसार्थक है, "अध्वर" मे उसका निषेध है। नञ्पूर्वक "ध्वृ" धातु से घञ् प्रत्यय होकर अध्वर शब्द सिद्ध होता है।

अध्वर शब्द का निर्वचन करते हुए महर्षि यास्क ने लिखा है-अध्वर इति **यज्ञनाम-ध्वरति हिसाकर्मा तत्प्रतिषेध**, निरुक्त १८।८, अर्थात् यज्ञ का नाम अध्वर है, जिसका अर्थ हिसारहित कर्म है।

अध्वर के अतिरिक्त अनेक स्थानों पर गोहत्यारो को प्राणदण्ड दो, ऐसा यजुर्वेद ३०।१८ मे आया है जैसे **"अन्तकाय गोघातकम्"**। अथर्ववेद मे-१।१६।४ मे-**"यदि नो गा हिंसि-त त्वा सीसेन विध्याम"**-गोहत्यारो को सीसे की गोली से मार डालो। यह दण्डव्यवस्था आर्यराज्य मे गोमास के यज्ञो मे तथा गोमासभक्षण के विरुद्ध सारे ही आर्यावर्तीय भारत राष्ट्र मे अत्यन्त सख्ती के साथ सर्वत्र लागू थी। कहीं पर भी कोई भी इस आज्ञा का उल्लघन नहीं कर सकता था, जो भी करता था उसे राक्षस कहकर जाति व देश से बाह्य कर दिया जाता था। उन्हे मृत्युदण्ड तक दिया जाता था। वेदो के प्रचार मे तथा आर्यराज्य के सविधान मनुस्मृति के आधार पर सर्वत्र सुगन्धित गोघृत से यज्ञ करने पर कहीं पर भी राष्ट्रमे रोग-शोक नहीं होता था। प्रजा सुखी थी। यज्ञ की सामग्री मे अनेक रोगनिवारक सुगन्धिकारक औषधिया डाली जाती थी। जिनसे वायु प्रदूषण दूर होकर सर्वत्र सुखशान्ति का साम्राज्य था। ध्वनिप्रदूषण मन्त्रो की ध्वनि से समाप्त होता था। मानसिक प्रदूषण वैदिकविद्वानो से सत्सग में दिए गए प्रवचनो से समाप्त होजाता था। आत्मिक प्रदूषण गायत्री मन्त्र के जाप से तथा प्राणायाम से समाप्त होजाता था। इस प्रकार ये सारे के सारे लाभ यज्ञ से पूरे होते थे।

महर्षि पाणिनि ने यज्ञ की परिभाषा लिखते हुए-**"यज् देवपूजा सगतिकरण-दानेषु"** लिखा है-जिसमे विद्वानो का सत्कार, सत्सगति व दान बताया गया है।

इतने पवित्र यज्ञो मे गोमास व शराब डालकर उन्हे करना बताना क्या महान् पाप नहीं है ? सडे हुए मास व सडती हुई शराब यज्ञो मे डालना व इन्हे खाना व पीना महान् राक्षसी कार्य है।

महर्षि याज्ञवल्क्य ने यज्ञ की महिमा लिखते हुए कहा है-**"यज्ञो वै श्रेष्ठतम कर्म"** अर्थात् निश्चय से यज्ञ ही ससार मे सर्वोत्तम सर्वश्रेष्ठ कर्म है। आगे उन्होने लिखा-**"यज्ञो वै सुम्नम्"** यज्ञ सबसे बडा सुखकारक काम है।

तो चारो वेदो मे किसी भी मन्त्र मे यज्ञो मे गोमास डालना व मास खाना

व शराब पीना कहीं पर नहीं लिखा है। उसका सर्वथा निषेध ही किया है।

इसके साथ ही समाज मे गौ का महत्त्व दर्शाते हुए उसे समाज के सम्बन्ध से सम्बन्धित करते हुए, उसे सामाजिक रिश्तो मे बांधते हुए अथर्ववेद में लिखा है-

"माता रुद्राणा दुहिता वसूनां स्वसादित्यानाम अमृतस्य नाभि:।
प्र नु वोच चिकितुषे जनाय गामनागामदिति वधिष्ट।।

गाय रुद्रो की माता है, वसुओ की पुत्री और आदित्यों की बहिन है। गाय घी दूध आदि अमृत की केन्द्र है। विचारशील पुरुषो को मैंने समझाकर कह दिया है कि जो परोपकारी और हत्या न करने योग्य गाय है उसका वध मत करो, ऐसा परमात्मा का आदेश है। वेद के इन माता, पुत्री और बहन के सम्बन्धो के होते हुए कौनसा ऐसा पतित पुरुष होगा जो अपनी माता, पुत्री, बहन के सम्बन्धो वाली गाय की हत्या करदे। इन वैदिक सम्बन्धों के होते हुए नैतिकता का मूलस्रोत गाय ही मानी गई है।

यज्ञो मे गाय का भेड, बकरी का मास काटकर डालने से यज्ञ का मतलब केवलमात्र वायुमण्डल मे सडान्ध फैलाना था क्या ? क्या यह मासाहारी राक्षसों का देश था। यह सोचना भी पाप है।

प्राचीन आर्यो के आदि देश भारत में यज्ञों में कौन-कौनसी वस्तुएं आहुति रूप मे डाली जाती थी, इसका पता प्राचीन आर्यों के इतिहास से लगता है, पहले के राजाओ के राज्य मे प्रत्येक राजा के पास विद्वान् पुरोहित होते थे, जो राजा की प्रत्येक अवस्था में समस्याओ का समाधान करते थे। एक इतिहास की चर्चा आपके सामने प्रस्तुत की जाती है-

महाराजा जनक स्वय भी शास्त्रो के विद्वान् थे। जनक के दरबार मे महर्षि याज्ञवल्क्य का बहुत ही आना जाना था। शास्त्रो के विषय मे राजा जनक महर्षि याज्ञवल्क्य से अपनी राजसभा मे अनेक प्रश्न पूछा करते थे। एक दिन राजसभा मे आपस मे यज्ञ के विषय मे सवाद करते हुए राजा जनक ने महर्षि याज्ञवल्क्य से प्रश्न किया-**"तत् एतद् जनको वैदेहो याज्ञवल्क्य पप्रच्छ ?"**

वेत्याग्निहोत्र याज्ञवल्क्य ? हे याज्ञवल्क्य ! अग्निहोत्र के विषय मे जानते हो ? याज्ञवल्क्य ने उत्तर दिया-**वेद्मि सम्राडिति** ? हे राजन् ! जानता हू। जनक ने कहा-**केन जुहुयात्** ? किससे यज्ञ करे ? याज्ञवल्क्य ने कहा-**घृतेन जुहुयात्**-घी से यज्ञ करे। जनक ने कहा-**घृत न स्यात् केन जुहुयात्**-घी न हो तो किससे यज्ञ करे ? याज्ञवल्क्य ने कहा-**पयसा जुहुयात्**-दूध से यज्ञ करे। **पयोऽपि न स्यात् केन जुहुयात्** ? दूध भी न हो तो किससे हवन करे ?

याज्ञवल्क्य ने कहा-**व्रीहियवाभ्याम्**-चावल जौ से हवन करे। जनक ने कहा-**व्रीहियवौ न स्याताम्**-चावल, जौ भी न हो तो ? याज्ञवल्क्य ने कहा-**या अन्या औषधय**-अन्य औषधियो से करे। जनक ने कहा-**यदान्या औषधयो न स्यु**-अगर दूसरी औषध न हो तो किससे हवन करे ? याज्ञवल्क्य ने कहा-**वानस्पत्येन जुहुयात्**-वनस्पतियो से करे। जनक ने पूछा-अन्य वनस्पतिया भी न हो तो-किससे यज्ञ करे ? याज्ञवल्क्य ने कहा-**अद्भिरिति**-जल से करे, जनक ने कहा-**यत् आपो न स्यु: केन जुहुयात्** ? जल न हो तो किससे हवन करे ? याज्ञवल्क्य ने कहा-**सत्य श्रद्धायामिति जुहुयात्**-सत्य एव श्रद्धा से करे, **अवश्यमेव होतव्यम्**-हवन अवश्य करना चाहिए। जनक ने कहा-**वेत्याग्निहोत्र याज्ञवल्क्य** ! हे याज्ञवल्क्य आप यज्ञ के विषय मे किन-किन से यज्ञ करना चाहिए, पूर्णरूप से जानते हो। अत **धेनुशत ददामि-मैं** आपको दक्षिणा के रूप मे सौ दुधारू गाए देता हू। यह है यज्ञ का महत्त्व।

इस ऐतिहासिक उदाहरण से यह ठीक तरह से पता लगा कि-यज्ञ में कौन-कौनसी चीजो की आहुतिया दीजाती हैं। इस सवाद मे कहीं पर भी गाय के मास से यज्ञ में हवन करना नहीं आया। यज्ञ मे गाय के मास डालने प्रथा मासाहारी वाममार्गियों ने आरम्भ की थी।

महाभारत मे ऋषियो के आश्रम कुरुक्षेत्र में यज्ञ के विषय मे आपस में एक गोष्ठी आयोजित कीगई थी। उसमे तीन प्रश्न यज्ञ मे आए हुए ग्रामीण याज्ञिको ने प्रात प्रवचन के समय मे महर्षि वेदव्यास से पूछे थे। ग्रामीण आर्यो मे एक ने पूछा ? **किस्वित् यज्ञस्य आत्मा** ? हे महर्षि ! इस यज्ञ की आत्मा क्या है ? आत्मा ही आधार होती है, यह यज्ञ किसके आधार पर है ? महर्षि ने उत्तर दिया-**"स्वाहा इति यज्ञस्य आत्मा**-स्वाहा का उच्चारण ही इस यज्ञ की आत्मा है-अर्थात् श्रेष्ठ वचन, सत्यवचन मधुरवचन ही यज्ञ की आत्मा है। अत प्रत्येक मन्त्र के अन्त में **"स्वाहा"** का उच्चारण किया जाता है। दूसरे ग्रामीण ने पूछा-**किस्वित् यज्ञस्य प्राणा:** ? इस यज्ञ से प्राण कौन कहाते हैं ? ऋषि ने कहा-**इद न मम इति यज्ञस्य प्राणा:**-मन्त्र के अन्त में यह कहना कि यह मेरा नहीं है, यह स्वार्थत्याग व परोपकार की भावना है।

इन शास्त्रो के कथानको के आधार पर ही इस ऊपर लिखे लेख को अत्यन्त समर्थन एव अनुमोदन व मान्यता देते हुए हिन्दी के लब्धप्रतिष्ठ कवि कुसुमाकर जी ने कितना सुन्दर रूप कविता मे दिया है-

"चाहते हो भव-व्याधियो से निजमानस का कल कंज हरा हो,
दूध दही की बहे सरिता फिर गान गुपाल का मोह भरा हो।
नन्दिनी नन्दन में विचरे शुचिशक्ति का स्रोत सदा उभरा हो,
धाम ललाम वही "कुसुमाकर" जहां गाय को चाट रहा बछड़ा हो।।

(शेष अगले अक में)

वैदिक-स्वाध्याय

साथी बनो

त्वां जना ममसत्येषु इन्द्र, सन्तस्थाना वि ह्वयन्ते समीके।
अत्रा युजं कृणुते यो हविष्मान्, ना सुन्वता सख्यं वष्टि शूर:।।

ऋ० १० ४२ ४।। अथर्व० २० ८९ ४।।

शब्दार्थ—**(इन्द्र)** हे परमेश्वर ! **(ममसत्येषु)** 'मेरा पक्ष सच्चा है, मेरा पक्ष सच्चा है' ऐसे अपने झगडो में, स्पर्द्धाओं मे **(जना:)** मनुष्य **(त्वा)** तुझे **(वि ह्वयन्ते)** विविध प्रकार से पुकारते हैं। एव **(समीके)** युद्ध मे, सग्राम मे **(सतस्थाना.)** स्थित हुए, अडे हुए मनुष्य भी तुझे अपने-अपने पक्ष मे पुकारते हैं। परन्तु **(अत्र)** इस ससार मे, हे मनुष्यो ! **(यो हविष्मान्)** जो मनुष्य बलिदान के लिए तैयार है उसे ही वह इन्द्र **(युज कृणुते)** अपना साथी बनाता है **(शूर)** वह इन्द्र **(असुन्वता)** यज्ञ के लिये सवन न करनेवाले अनुद्यमी पुरुष के साथ **(सख्यं न वष्टि)** कभी मित्रता नहीं चाहता है।

विनय—हे परमेश्वर ! केवल राजनैतिक क्षेत्र मे ही नहीं किन्तु साहित्यिक, वैज्ञानिक, सामाजिक, धार्मिक सभी क्षेत्रो मे मनुष्य दो पक्षो मे विभक्त हुए परस्पर सघर्ष कर रहे हैं और मजेदार बात यह है कि इन कलहो, युद्धो मे दोनो पक्षवाले तुम्हारे पवित्र नाम की दुहाई देरहे हैं। प्रत्येक कहता है कि "हमारा पक्ष सच्चा है अत परमेश्वर हमारे साथ है, विजय हमारी निश्चित है।" परन्तु, हे मनुष्यो ! सत्य के साथ ऐसे खिलवाड मत करो। जरा अपने अन्दर घुसकर, अन्तर्मुख होकर, अपनी सच्ची अवस्था को देखो। 'सत्य' 'परमेश्वर' आदि परम पवित्र शब्दो का यू ही हलकेपन से उच्चारण करना ठीक नहीं है। यह पाप है। गहराई मे घुसकर, गहरे पानी मे बैठकर, सत्य वस्तु को तत्परता के साथ खोजो और देखो कि वह सत्यस्वरूप इन्द्र सदा सच्चे (वास्तविक) सत्य का ही सहायक है। इस ससार मे जो लोग हाथ मे "हवि" लिये खडे हैं, आत्म-बलिदान चढाने को उद्यत हैं, अपना सिर हथेली पर रखे फिरते हैं, उन त्यागी पुरुषो को ही वे परमेश्वर अपना साथी बनाते हैं, उन्हीं के वे सहायक होते हैं। क्योकि यह ही सच्चे होने की सच्ची पहिचान है। जिसको वास्तव मे सत्य से प्रेम है वह तो उस सत्य के लिये सिर पर कफन बाध लेता है। सत्य का सच्चा पुजारी तो भगुर शरीर की क्या, ससारभर की अन्य सब असत्य, असार वस्तुओ की बलि चढा करके भी सत्य की रक्षा करता है। अत उसे ही उस शूर, महापराक्रमी, सर्वशक्तिमान् इन्द्र की मित्रता (सख्य) और सहायता प्राप्त होती है। यदि उस शूर की मित्रता चाहते हो तो 'हविष्मान्' होओ और सवन करनेवाले होओ। जो 'असुन्वन्' है जो कि यज्ञ के लिये उद्योग करता हुआ सोम का सवन नहीं करता-कठोर परिश्रम करता हुआ सारवस्तु का, सत्य का, तत्त्व का निष्पादन नहीं करता-ऐसे पुरुष के साथ वे इन्द्र कभी मित्रता नहीं करना चाहते। अत, हे भाइयो ! ढोंग करना छोड दो, बिना जाने और बिना तह मे घुसे यू ही 'सत्य', 'परमेश्वर' आदि का नाम का पुकारना छोड दो। सत्य कभी छिपेगा नहीं। जब तुम मे सच्चाई होगी तो उसके लिये सब कुछ त्याग करने को अवश्य तैयार होगे और तुममें आगे-आगे सत्य-रस को, तत्त्वसार को, निकाल प्राप्त करने की उत्कट लगन भी होगी और तब तुम देखोगे कि तुम्हें वह परम सौभाग्य प्राप्त है, कि तुम शूर सर्वशक्तिमान् इन्द्र की मित्रता में हो, उसके 'युज्' साथ बने हुए हो। **(वैदिक विनय से २ ज्येष्ठ)**
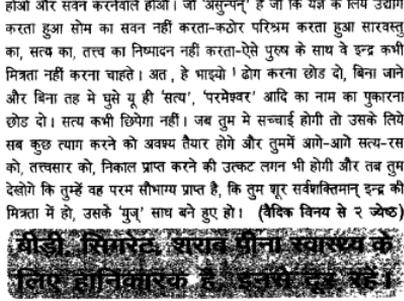
कलानौर में स्वामी दयामुनि विद्यापीठ गुरुकुल का उद्घाटन समारोह

गुरुकुल कलानौर के उद्घाटन समारोह केन्द्रीय श्रममन्त्री श्री साहिबसिह जी छात्र-छात्राओ, अध्यापको एव आर्यजनो को सम्बोधित करते हुए। मच पर आचार्य विजयपाल, सभा उपमन्त्री, प्रि० राजकुमार, श्री राममेहर एडवोकेट, आचार्य यशपाल सभामन्त्री, देवसुमन, पुष्पा शास्त्री तथा प० सुखदेव शास्त्री आदि बैठे हैं।

दिनाक १०-११-२००२ को स्वामी दयामुनि विद्यापीठ गुरुकुल कलानौर (रोहतक) का उद्घाटन एक समारोह के द्वारा सम्पन्न किया गया। सबसे पहले गुरुकुल कलानौर की यज्ञशाला पर दैनिक यज्ञ का आयोजन श्री अविनाश जी शास्त्री सभा उपदेशक व श्री सुखदेव जी शास्त्री के निर्देशन मे हुआ। यज्ञ पर आर्यसमाज कलानौर के प्रतिष्ठित सदस्य यजमान महानुभाव उपस्थित रहे।

गुरुकुल का उद्घाटन केन्द्रीय श्रममन्त्री श्री साहिब सिह जी वर्मा के कर-कमलो द्वारा किया गया। श्री वर्मा जी के साथ चौ० मित्रसेन जी सिन्धु के सुपुत्र श्री देवसुमन जी भी साथ थे। सबसे पहले गुरुकुल कलानौर पहुचने पर श्री साहिबसिह जी वर्मा का फूलमालाओ से स्वागत श्री राजकुमार जी शास्त्री प्रिसिपल, श्री सुरेन्द्रसिह जी शास्त्री की अध्यक्षता मे प्रमुख लोगो ने किया। उसके बाद उद्घाटन शिला से वस्त्र हटाकर वेदमन्त्रो के द्वारा विधि सम्पन्न हुई। वेदमन्त्र पाठ सभा के उपदेशक श्री अविनाश जी शास्त्री ने किया। इस समारोह मे जहा कलानौर, मोखरा, बौन्द, बामला, रोहद, भैंसवाल के प्रमुख प्रतिनिधि थे वहीं गुरुकुल झज्जर, कन्या गुरुकुल खरखौदा तथा स्वामी दयामुनि विद्यापीठ के छात्र-छात्राओ एव अध्यापकवर्ग भी उपस्थित थे। विशेष आमन्त्रित महानुभावो मे केन्द्रीय श्रममन्त्री श्री साहिबसिह जी वर्मा, ओजस्वी वक्ता श्री राममेहर जी एडवोकेट, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणसा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री वेदव्रत जी शास्त्री, आचार्य विजयपाल जी गुरुकुल झज्जर, आचार्य यशपाल जी मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, श्री सुखदेव जी शास्त्री महोपदेशक, प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री रामरख जी आर्य, क्रान्तिकारी उपदेशिका बहिन पुष्पा जी शास्त्री, श्री सुरेन्द्रसिह जी शास्त्री उपमन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, श्री बलबीरसिह जी शास्त्री भैंसवाल, श्री सुखबीर जी शास्त्री हनुमान कालोनी, श्री केदारसिह जी आर्य सभा उपमन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा आदि उपस्थित थे। सभी श्रोताओ ने शान्त एकाग्र होकर सभी वक्ताओ के विचारो को सुना। श्री राममेहर जी एडवोकेट ने स्वामी ओमानन्द जी, श्री साहिब जी वर्मा, चौ० मित्रसेन जी के कार्यो की प्रशसा करते हुए श्रममन्त्री जी से आर्यसमाज के कार्यो मे सहयोग करने की अपील की। आचार्य विजयपाल जी, श्री सुखदेव जी शास्त्री, आचार्य वेदव्रत जी शास्त्री, प्रिंसिपल राजकुमार जी शास्त्री ने भी आर्यसमाज, गुरुकुल शिक्षा प्रणाली एव गुरुकुलो के महत्त्व पर प्रकाश डाला। श्री रामरख जी, श्रीमती बहिन पुष्पा शास्त्री ने तो सभी श्रोताओ को मन्त्रमुग्ध कर दिया। प्रभावशाली कार्यक्रम से सभी खुश एव आश्चर्यचकित थे। पूरे आयोजन का कार्यक्रम एव व्यवस्था तथा केन्द्रीय मन्त्री श्री साहिबसिह जी का प्रोग्राम केवल ४८ घण्टे पूर्व सूचना के आधार पर किया गया था। आचार्य यशपाल जो गुरुकुल कलानौर के सस्थापक भी हैं, ने मच पर केन्द्रीय श्रममन्त्री श्री साहिबसिह वर्मा, श्री राममेहर जी एडवोकेट श्री देवसुमन जी तथा श्री आचार्य विजयपाल जी का स्वागत किया। सम्मेलन समाप्त होने पर सभी जनसमुदाय ने भोजन किया। भोजन मे देसी घी के लड्डू, पूरी सब्जी तैयार किया गया था। इस प्रकार गुरुकुल का उद्घाटन समारोह शान्तिपूर्वक सम्पन्न हुआ।

—**जयवीर आर्य**, मैनेजर गुरुकुल कलानौर

वैवाहिक विज्ञापन

खेड़ी सुलतान में बस्तीराम की स्मृति में महासम्मेलन होगा

६ नवम्बर को सभामन्त्री आचार्य यशपाल, वरिष्ठ उपप्रधान श्री वेदव्रत शास्त्री, उपदेश श्री अविनाश शास्त्री, दादा बस्तीराम के गाव खेडी सुलतान पहुचे। गाव मे प्रमुख आर्यजनो को इकट्ठा किया। दादा बस्तीराम जी की स्मृति मे गाव मे आर्य महासम्मेलन करने का विचार दिया। इस कार्यक्रम से गाव वाले बहुत खुश थे, सभी ने मिलकर सभामन्त्री जी आदि से आसपास के गावो मे आर्यसमाज का प्रचार करने व खेडी सुलतान गाव मे एक आर्य महासम्मेलन करने के लिए शीघ्र तिथि घोषित करने का आश्वासन दिया और गाव की तरफ से पूरा सहयोग करने का वचन दिया, इस तरह से २१ नवम्बर से पहले आर्य महासम्मेलन की तारी निश्चित कर घोषित कर दी जाएगी।

शराब के ठेके को लेकर महिला मंडल ने ज्ञापन सौंपा

गन्नौर। लल्हेडी रोड पर अवैध रूप से चल रहे शराब के ठेके के हटवाने के बारे मे आदर्श महिला मडल की अध्यक्ष बबीता किल्सन के नेतृत्व मे एक शिष्ट मडल ने आबकारी व कराधान विभाग के अधिकारियो से मिला। विभाग ने कार्रवाई करने का आश्वासन दिया।

आदर्श मण्डल की अध्यक्षा ने निर्णय लिया कि अगर इस दिन के अदर कोई कार्रवाई नहीं हुई तो मण्डल धरना देगा। क्योकि उक्त ठेका कन्या स्कूल के मार्ग पर स्थित है। ठेके के समीप से छात्राओ का निकलना दूभर हो जाता है। कई बार शराबियो मे लडाई झगडा हो चुका है। 'हरिभूमि' से साभार

आर्यसमाज के उत्सवों की सूची

१	ओ३म् साधना मण्डल गली न० २ शिवकालोनी, करनाल का सत्सग कार्यक्रम	१७ नवम्बर ०२
२	आर्यसमाज रामनगर गुडगाव	१८-२४ नवम्बर ०२
३	आर्यसमाज बिडला लाइन्स कमलानगर दिल्ली	२२-२४ नवम्बर ०२
४	आर्यसमाज जवाहरनगर पलवल कैंप, जिला फरीदाबाद	२२-२४ नवम्बर ०२
५	आर्यसमाज फिरोजपुर झिरका जिला गुडगाव	२३-२४ नवम्बर ०२
६	आर्यसमाज थर्मल कालोनी पानीपत	२९ नव० से १ दिस० ०२
७	आर्यसमाज बसई जिला गुडगाव	६ से ८ दिसम्बर ०२
८	आर्यसमाज गोहानामण्डी जिला सोनीपत	१३ से १५ दिसम्बर ०२

—**रामधारी शास्त्री, सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता**

पारितोषिक वितरण समारोह

आर्य सीनियर सैकेण्डरी स्कूल सिरसा मे महर्षि दयानन्द सरस्वती का निर्वाण दिवस ६ नवम्बर २००२ को वार्षिक पारितोषिक वितरण समारोह के रूप मे बडे हर्षोल्लास से मनाया गया। इस समारोह के मुख्यअतिथि भिवानी के सासद श्री अजयसिह चौटाला एव अध्यक्ष सिरसा के सासद डा० सुशील इन्दौरा थे। विशिष्ट अतिथि श्री अमीर चावला अध्यक्ष हरयाणा कर्मचारी चयन आयोग एव श्री पदम जैन प्रधान नगर परिषद् थे।

स्कूल के छात्रो ने मनमोहक एव हृदयस्पर्श सास्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। इसमे से हरयाणावी नृत्य, समूहगान, माईमस्किट तथा भागडा आदि की दर्शको ने भरपूर प्रशसा की। अन्य प्रस्तुतियो की भी सराहना कीगई।

इस अवसर पर स्कूल प्रिंसिपल श्रीकृष्णलाल वोहरा ने वार्षिक रिपोर्ट पढी। स्कूल प्रबन्धक डा० आर एस सागवान जो सिरसा जिला के प्रतिष्ठित चिकित्सक, प्रसिद्ध समाजसेवी, प्रधान आर्यसमाज कोर्ट रोड एव उपप्रधान आर्यप्रतिनिधिसभा हरयाणा हैं, ने स्कूल की उपलब्धियो को विस्तार से वर्णन किया। उन्होने बताया कि यह विद्यालय महर्षि दयानन्द सरस्वती के स्वप्नो को साकार करने मे अथक प्रयास कर रहा है। आज का वार्षिक समारोह भी हम ऋषि दयानन्द सरस्वती के निर्वाण दिवस पर मना रहे हैं। उन्होने बताया कि इस विद्यालय का शैक्षणिक, खेल एव सास्कृतिक क्षेत्र मे सराहनीय योगदान है। दशम कक्षा के छात्र कुणाल का तीरन्दाजी मे राष्ट्रीय स्तर पर भाग लेना एव दशम कक्षा के तीन छात्रो का राष्ट्रीय स्तर की हैण्डबाल टीम मे चयन होना हमारे लिए गौरव की बात है। परीक्षा परिणाम सदा उत्साहवर्धक रहते हैं।

मुख्यअतिथि श्री अजय चौटाला सासद ने प्रतिभावान् विद्यार्थियो को पुरस्कार वितरित किए। उन्होने कहा कि हमे स्वामी दयानन्द सरस्वती की तरह आदर्श जीवन जीना चाहिए तथा उनके बताए गए मार्ग पर चलकर समाज का नवनिर्माण करना चाहिए। कार्यक्रम अध्यक्ष डा० सुशील इन्दौरा ने भी स्वामी दयानन्द सरस्वती के पदचिन्हो पर छात्रो को चलने का आह्वान किया। उन्होने आगामी सत्र मे विद्यालय को ३ लाख रुपये की अनुदान राशि देने की भी घोषणा की। अन्त मे विद्यालय प्रबन्धक डा० आर एस सागवान ने नगर से आए सभी आमन्त्रित प्रबुद्ध नागरिकवृन्द एव मुख्यअतिथि व अध्यक्ष एव विशिष्ट अतिथियो का आभार प्रकट किया।

राष्ट्र प्रतीकों का सम्मान

–लेखक रामनिवास बंसल, चरखी दादरी (भिवानी)

देश हुआ आजाद राष्ट्र प्रतीको का सब मान करो।
हिन्दी राष्ट्रभाषा है सब हिन्दी का सम्मान करो।।
'वन्दे मातरम्' राष्ट्र गीत है मां की वन्दना गाई है।
भगतसिंह सुखदेव राजगुरु ने गाते फांसी पाई है।
सरस्वती वंदना करके जन-गण-मन का गान करो। हिन्दी
तीन रगो का प्यारा झडा लहर-लहर लहराता है।
'जय हिन्द' अपनी मातृभूमि की जय-जयकार कराता है।
'सत्यमेव जयते' का सब मिल करके सम्मान करो। हिन्दी
शेर, मोर, कमल हमारे राष्ट्र प्रतीक बतलाये हैं।
'अशोक चक्र' मे जाति-धर्म के ऐक्य भाव लाये हैं।
जो इनको हानि पहुचाये कठोर दण्ड विधान करो। हिन्दी
हिन्दी पढना हिन्दी लिखना हिन्दी का सब ज्ञान करो,
हिन्दी मे अभिवादन करके हाथ जोड प्रणाम करो।
धर्म जाति भाषा क्षेत्रो पर सब मिलके अभिमान करो।
हिन्दी राष्ट्रभाषा है सब हिन्दी का सम्मान करो।

दयानन्दमठ का अड़तीसवां वैदिक सत्संग एवं विराट् युवा सम्मेलन सम्पन्न

वैदिक सत्सग समिति दयानन्दमठ रोहतक द्वारा संचालित वैदिक सत्सग का ३८वा समारोह ३ नवम्बर २००२ रविवार को सम्पन्न होगया। इस सत्सग के साथ विराट् युवा सम्मेलन भी सम्पन्न हुआ। वैदिक सत्सग जो पिछले अडतीस महीनो से निरन्तर चल रहा है उसकी शुरुआत प्रात ८ बजे यज्ञ से प्रारम्भ हुई। यज्ञ श्री वेदप्रकाश साधक ने पूरा करवाया। फिर इस सत्संग के अध्यक्ष स्वामी इन्द्रवेश जी द्वारा आध्यात्मिक प्रवचन हुआ। स्वामी जी ने पिछले चार महीनो के विदेशो मे प्रचारकार्य की व्याख्या की। अन्त मे घोषणा की आध्यात्मिक विचारो की परिपक्वता के लिए एक ध्यान योग शिविर लगाया जायेगा। यह साधना शिविर २५ नवम्बर से प्रथम दिसम्बर २००२ तक चलेगा। प्रात ६ बजे से ७ ३० बजे तक तथा सायकाल ४ बजे से ५ ३० बजे तक ध्यान का कार्यक्रम चलेगा। ध्यान योग शिविर स्वामी इन्द्रवेश जी के नेतृत्व मे चलेगा। इसके सचालन मे ब्र० कृष्णदेव नैष्ठिक, वेदप्रकाश साधक ब्र० विनयकुमार तथा श्री सत्यवान आर्य व ओमप्रकाश आर्य सभा कार्यालय रोहतक श्री सन्तराम आर्य का सहयोग करेगे।

आर्यसमाज के कार्यो मे आई शिथिलता एव निराशा को दूर करने के लिए सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् की ओर से १० बजे से २ बजे तक विराट् युवा सम्मेलन किया गया। इस सम्मेलन के सयोजक सन्तराम आर्य ने बताया परिषद् इस युवा सम्मेलन के माध्यम से देश मे बढते धर्म के नाम पर पाखण्ड नशाखोरी, दहेज, जातिवाद, भ्रूणहत्या एव भ्रष्टाचार पर गहरी चिन्ता प्रकट करता है और हरयाणा के छात्र-छात्राओ, गुरुजनो एव बुद्धिजीवियो का आह्वान करता है कि क्रान्ति की मशाल जलाये एव कुरीतियो को दूर भगाये। सम्मेलन मे मच सचालन का कार्य परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगवीरसिह एडवोकेट ने किया। इस सम्मेलन की अध्यक्षता स्वामी इन्द्रवेश जी ने की तथा मुख्य वक्ताओ मे क्रान्तिकारी सन्यासी स्वामी अग्निवेश ओजस्वी वक्ता डा० वेदप्रताप वैदिक, डा० रामप्रकाश, राममेहर एडवोकट व रामधारी शास्त्री तथा स्वागताध्यक्ष कैप्टन अभिमन्यु सम्पादक हरिभूमि, आचार्य यशपाल मन्त्री आर्यप्रतिनिधिसभा हरयाणा तथा इस सम्मेलन के सयोजक व परिषद् की प्रदेश इकाई के अध्यक्ष सन्तराम आर्य ने भी अपने विचार रखे। प० रामनिवास आर्य व प० रामरिख आर्य ने क्रान्तिकारी भजन सुनाये।

इस सम्मेलन मे सभी जिला इकाइयो के प्रधान, प्रदेश इकाई के सभी पूर्व पदाधिकारीगण एव राष्ट्रीय महामन्त्री के अलावा हजारो युवको ने अपनी भागीदारी दर्ज की। आर्यप्रतिनिधिसभा का विशाल प्रागण युवा जनसमूह से सराबोर था। युवक व युवतियो के साथ उनके अभिभावक भी आए हुये थे। अन्त मे स्वामी इन्द्रवेश जी ने युवको व युवतियो से सकल्प दिलवाकर जिसके शब्द निम्न प्रकार से हैं -'

मैं ईश्वर को साक्षी करके सकल्प लेता हू कि-(१) अपनी शादी मे दहेज नही लूगा और दहेजविरोधी अभियान मे अपना सक्रिय योगदान दूगा। (२) जीवन में कभी न रिश्वत लूगा और सदैव रिश्वत लेनेवालो का विरोध करूगा। (३) शराब, सुल्फा, गाजा, स्मैक, अफीम, चरस आदि घातक नशो से सदैव अपने आपको दूर रखूगा तथा इनके विरुद्ध चलाये जानेवाले अभियान मे सक्रिय सहयोग करूगा। (४) बालिका भ्रूणहत्या एक जघन्य पाप है, इसके विरुद्ध चलाये जानेवाले अभियान मे सक्रिय रूप से भाग लूगा। ईश्वर से प्रार्थना हैं मेरे सकल्प पूरे हो।

अन्त मे सयोजक ने सभी साथियो का सहयोग के लिये तथा पधारने पर धन्यवाद किया। भोजन की व्यवस्था वैदिक सत्सग समिति दयानन्दमठ रोहतक की ओर से की गई थी। जिसे ब्र० कृष्णदेव जी व श्री चत्तरसिह आर्य साथी ने सभाला।

–रामवीर आर्य, सा०आ०परि०हर०, प्रदेश कार्यालय, दयानन्दमठ, रोहतक

मेला कपाल मोचन

गत वर्ष की भाति बिलासपुर एव कपालमोचन (यमुनानगर) मे १८-१९-२० नवम्बर २००२ को मेला कपालमोचन बडी धूमधाम से मनाया जारहा है। जिसमे आर्यप्रतिनिधिसभा हरयाणा की ओर से वेदप्रचार का कैम्प भी लगाया जारहा है। साथ मे ऋषि लगर भी चलेगा। सभी आर्यसमाजे अधिक से अधिक सहयोग करने की कृपा करे। –सभामन्त्री

पुस्तक-समीक्षा

नोट-समीक्षा के लिए पुस्तक की दो प्रतियां आनी चाहिए।

पुस्तक का नाम **मानवनिर्माण और आर्यसमाज**
सम्पादक डा० सुन्दलाल कथूरिया
प्रकाशक आर्यसमाज, बी-ब्लाक, जनकपुरी, नई दिल्ली-११००५८
इस पुस्तक मे तीन लेखकों के तीन निबन्धो का सकलन है।
आकार २०x३०÷१६ पृष्ठ सख्या ३२

१ मानवनिर्माण और आर्यसमाज (लि० डा० सुन्दरलाल कथूरिया)
२ मानवनिर्माण मे 'सत्यार्थप्रकाश' का योगदान (लि० डा० उदयभान बजाज)
३ सच्ची शान्ति का रास्ता (लि० श्री ओमप्रकाश सपरा)

मानवनिर्माण मे आर्यसमाज का और सत्यार्थप्रकाश का क्या स्थान है, कितना योगदान है यह विद्वान् लेखको ने युक्तिप्रमाणपूर्वक प्रस्तुत किया है। तीसरे निबन्ध मे श्री सपरा जी ने सच्ची शान्ति के लिए आर्यसमाज की शिक्षा, सिद्धान्त, स्वदेशप्रेम आदि के साथ-साथ भारत की अवनति के प्रमुख कारण, महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा आर्यसमाज की स्थापना, धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक सुधार, हिन्दी प्रचार, वेद अनादि ज्ञान, स्वदेशप्रेम और आर्यसमाज के सगठन पर सुन्दर विचार दिए हैं।

पुस्तक का मुखपृष्ठ, कागज, छपाई आदि सब उत्तम हैं और सबसे उत्तम कार्य है आर्यसमाज जनकपुरी का ऐसी सुन्दर लघु-पुस्तिका छपवाकर प्रचारार्थ बिना मूल्य के वितरण करना।

मन्त्र श्लोक और भाषा मे कुछ अशुद्धिया हैं भविष्य में प्रूफ सशोधन करवाकर छपवाई जानी चाहिए।

पुस्तक के पृ० ५ पर डा० कथूरिया ने आर्यसमाज की स्थापना तिथि **१० अप्रैल, १८७५,** चैत्र सुदी पाच शनिवार सवत् १९३२ लिखी है जो ठीक है किन्तु श्री ओम्प्रकाश सपरा ने इसी पुस्तक के पृष्ठ २६ पर स्थापना **७ अप्रैल १८७५** लिखी है वह तिथि ठीक करनी चाहिए।

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

पुस्तक का नाम **मनुर्भव** (मनुष्य बन)
सम्पादक डा० सुन्दलाल कथूरिया
प्रकाशक आर्यसमाज, बी-ब्लाक, जनकपुरी, नई दिल्ली-११००५८
आकार २०x३०–१६ पृष्ठ सख्या ३२

मनुर्भव (मनुष्य बन) विषय पर डा० सुन्दरलाल कथूरिया, श्रीमती प्रभा आर्या और श्रीमती विमला मलिक ने अपने निबन्धो मे विभिन्न शैली से विचार किया है। डा० कथूरिया लिखते हैं-"शक्ल-सूरत और आकार-प्रकार से तो सभी मनुष्य दीखते हैं, किन्तु वास्तव मे सब मनुष्य होते नहीं। अनेक मनुष्य हिस्र पशुओ से भी अधिक हिस्र और दानवो से भी अधिक दुर्दान्त होते हैं। तब उन्हे मनुष्य कैसे कहा जाए ?"

श्रीमती प्रभा आर्या लिखती हैं-"हमारी सम्पूर्णशक्ति निर्माण कार्य मे लग रही है और निर्माण होरहा है ईट और पत्थरो की मीनारो का अर्थात् मानव-निर्माण के स्थान पर भवननिर्माण का कार्य हमने अपना लिया है।"

"मनुष्य-निर्माण के द्वारा यदि ससार का सबसे बडा उपकार करना है तो वेद के बताए गए आदर्शो को समस्त समाज मे फैलाए।"

श्रीमती विमला मलिक लिखती हैं-"यज्ञ को विस्तृत करते हुए सूर्य का अनुसरण करो। सूर्य कभी घबराता नहीं, बादल आयें, वर्षा आये आगे-आगे बढता जाता है, प्रकाश फैलाता है, कीटाणु नष्ट करता है और हमे भी ज्ञान का प्रकाश फैलाने की प्रेरणा देता है।"

ऐतरेय ब्राह्मण में भी लिखा है **"पश्य सूर्यस्य श्रेमाण यो न तन्द्रयते चरन्। चरैवेति चरैवेति।"**

मुखपृष्ठ पर ओ३म् के वृत्त-चित्र में धृति, क्षमा, दम, अस्तेय आदि धर्म के १० लक्षण अंकित हैं। कागज छपाई भी सुन्दर है किन्तु मुद्रण की अशुद्धिया अनेक हैं। **सिद्धान्त की दृष्टि से-**"चौरासी लाख योनियो के बाद, पिछले जन्मो में किये गये पुण्यो के उदय से मानव-शरीर की प्राप्ति होती है।" डा० कथूरिया का यह कथन उचित नहीं है। प्रथम तो चौरासी लाख योनिया कौन-कौनसी हैं इनका कहीं विवरण नहीं मिलता। द्वितीय-चौरासी लाख विभिन्न भोग योनियो के बाद मनुष्य शरीर मिलना भी तर्कसंगत नहीं है। सब जीव अपने पूर्वकृत कर्मो के आधार पर अग्रिम योनि मे जन्म ग्रहण करते हैं तो क्या सभी जीवात्मा **एक बराबर** पाप-पुण्य करते हैं ? क्या मनुष्य योनि के पश्चात् पुन मनुष्य योनि मे किसी का भी पुनर्जन्म नहीं होता ? यदि ऐसा है तो जीवात्मा अनेक जन्म-जन्मान्तरो मे मोक्ष-प्राप्ति कैसे कर सकेगा ?

२ डा० कथूरिया का पृष्ठ १० पर **जीवात्मा को परमात्मा का अश** लिखना वैदिक त्रैतवाद के विरुद्ध है। देखो **"द्वा सुपर्णा सुयजा सखाया"** आदि मन्त्र। ऋषि दयानन्द सरस्वती ने आर्योद्देश्यरत्नमाला ५२ पर ईश्वर, जीव और सब जगत् का कारण ये तीन अनादि पदार्थ माने हैं।

इसी पुस्तक की भूमिका मे "मोक्ष की प्राप्ति, परब्रह्म का साक्षात्कार एव उसी की **सत्ता मे लीन होजाना"** भी सिद्धान्त विरुद्ध है। आर्योद्देश्यरत्नमाला मे-"जिससे सब बुरे काम और जन्म मरणादि दु खसागर से छूटकर सुखस्वरूप परमेश्वर को प्राप्त होके सुख मे ही रहना, वह **'मुक्ति'** कहाती है।'

यहा पर मुक्ति मे परमेश्वर को प्राप्त होके सुख मे रहना लिखा है, परब्रह्म की सत्ता मे लीन होना नहीं। लीन का भाव तो परब्रह्म मे समा जाना होगा, जिस से जीव ईश्वर एक हो जायेगे। जीव की सत्ता ही समाप्त हो जाएगी। यह मुक्ति नहीं, जीव का विनाश माना जाएगा।

जीव का परमात्मा अश मानना और उसी की सत्ता मे लीन होना नवीन वेदान्तियो की भ्रान्ति है।

मानवनिर्माण पुस्तक के पृष्ठ के २७ पर ईश्वर जीव और प्रकृति की परिभाषा मे श्री ओमप्रकाश सपरा ने **"जीव ईश्वर से नितान्त भिन्न एक परिछिन्न चेतन पदार्थ"** स्वीकार किया है।

"मनुर्भव" पुस्तक के पृष्ठ ५ और १० पर "मनुर्भव" (ऋ० १०.५३.६) के मन्त्राश को वेद का कथन न लिखकर **ऋषि का कथन** मानना भी वैदिक-परम्परा के विरुद्ध है।

पुस्तक मे अनेक स्थानो पर "अनेको मनुष्य" (पृ० २१) 'अनेको घटनाओ" (पृष्ठ २७) "अनेको विद्वान्" (पृष्ठ २९) "अनेको मिल जायेगे' (पृ० ३०) इत्यादि स्थलो पर **"अनेको"** शब्द का प्रयोग अशुद्ध है। यही नहीं मेरे पास **सर्वहितकारी साप्ताहिक** मे छपने के लिए लेख आते रहते हैं उनमे अनेक लेखक ऐसा प्रयोग करते हैं।

एक-यह सख्यासूचक शब्द है।

अनेक-(न+एक) एक नहीं बल्कि उससे अधिक। कई। हिन्दीभाषा मे द्विवचन नहीं होता।

जैसे-(१) आपको पहले भी अनेक बार समझाया गया है। (२) आकाश मे अनेक तारागण या नक्षत्र-समूह हैं। (३) आकाश मे एक चिडिया उड रही है। (४) आकाश मे अनेक चिडिया उड रही हैं।

जब 'अनेक' का ही अर्थ एक से अधिक है तो फिर **'अनेकों'** का क्या अर्थ होगा ? मुझे तो **अनेको** शब्द किसी भी हिन्दी शब्दकोश मे नहीं मिला है।

ऐसे ही **'आर्य'** एक शब्द है और **'समाज'** दूसरा शब्द है। इन दोनो के मेल से तीसरा शब्द बना है **'आर्यसमाज'**। इसका प्रयोग एक सयुक्त शब्द के रूप मे करना चाहिए, न कि **"आर्य समाज"** इस प्रकार दो टुकडो मे।

सभा, सस्था, समिति आदि शब्द स्त्रीलिग हैं किन्तु 'समाज' शब्द पुलिग है अत **हमारा आर्यसमाज प्रयोग करना चाहिए,** हमारी आर्यसमाज प्रयोग अशुद्ध है।

यद्यपि हिन्दीभाषा मे सस्कृत व्याकरण से बहुत कुछ लिया गया है पुनरपि हिन्दी का अपना पृथक् व्याकरण भी है। शैली और परम्परा भी है। सस्कृतभाषा मे पाणिनि ने **'अचो रहाभ्या द्वे'** (८ ४ ४६) सूत्र से अचुत्तर रेफ और हकार से परे 'यर' के द्वित्व का विधान किया है किन्तु हिन्दीभाषा मे आर्य्य, कार्य्य, आचार्य्य, अर्क्क, धर्म्म, कर्म्म आदि शब्दो मे य क म आदि वर्णो का द्वित्व निरर्थक होने से अनावश्यक है।

'काम करते-करते बुढिया थक गई, इत्यादि वाक्यो मे **'काम करते-२ बुढिया थक गई'** आदि मे द्वित्व प्रदर्शनार्थ २ का अक लिखना हिन्दीभाषा मे अशुद्ध है, भ्रान्तिजनक भी है। यदि कोई अनभिज्ञ व्यक्ति 'काम करते दो बुढिया थक गई' पढे तो आश्चर्य नहीं होना चाहिए।

अर्थ की प्रतीति के लिए शब्द का प्रयोग किया जाता है, जिससे सम्बद्ध व्यक्ति वक्ता वा लेखक के अभिप्राय को समझ सके। इसके लिए शुद्ध और सार्थक शब्दो का ही प्रयोग फलदायक होता है।

–वेदव्रत शास्त्री

नागपुर में वर्णव्यवस्था बनाम जाति-व्यवस्था पर ऐतिहासिक राष्ट्रीय संगोष्ठी सम्पन्न

डॉ० अम्बेडकर ने जिस शहर मे बौद्धमत को स्वीकार किया था उसी शहर मे वेदप्रचारिणी सभा नागपुर द्वारा आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय सगोष्ठी १४ व १५ सितम्बर २००२ को नागपुर के आई एम ए सभागृह मे सम्पन्न हुई। शास्त्रार्थो का युग समाप्त होने के बाद सम्भवत यह पहली बार था कि किसी बहुतही सवेदनशील मुद्दे पर विचार करने के लिये परस्पर विरोधी विचार रखनेवाले विद्वान् एक ही मच पर उपस्थित हुए हों। सगोष्ठी मे वर्णव्यवस्था बनाम जाति व्यवस्था विषय पर गम्भीर व गहन चर्चा हुई। आमन्त्रित विद्वान् देश के बहुत ही नामी विद्वान् हैं और अपने-अपने क्षेत्र मे विशेषज्ञ का स्थान रखते हैं वे थे मनुस्मृति के आधुनिक भाष्यकार डॉ० सुरेन्द्रकुमार झज्जर से, परोपकारिणी सभा के सचिव प्रो० धर्मवीर जी अजमेर से, आर्ष साहित्य ट्रस्ट व मनु सघर्ष समिति के प्रमुख आचार्य धर्मपाल जी नई दिल्ली से, एटा गुरुकुल के आचार्य डॉ० वागीश शर्मा, डॉ० अम्बेडकर और आर्यसमाज पर खोजपूर्ण पुस्तको के लेखक डॉ० कुशलदेव जी शास्त्री नादेड से, डॉ० ज्वलतकुमार शास्त्री अमेठी से, अम्बेडकर पीठ नागपुर वि०वि० के अध्यक्ष डॉ० भाऊ लोखडे, प्रो० कुमुद पावडे, श्रीमती नलिनी सोमकुवर, कार्यक्रम के अध्यक्ष थे नागपुर विश्वविद्यालय के भूतपूर्व उपकुलपति डॉ० हरिभाऊ केदार तथा मुख्यअतिथि थे भूतपूर्व आयकर आयुक्त सुभाषचन्द्र जी नागपाल पुणे से। विषय के प्रति लोगो मे इतनी रुचि थी कि दोनो दिन सभागृह खचाखच भरा रहा। प्रात दस बजे से साय छ बजे तक लोग लगातार बैठे रहे। श्रोताओं के भोजन की भी व्यवस्था कार्यक्रम स्थल पर ही की गयी थी। कार्यक्रम अत्यन्त सौहार्दपूर्ण वातावरण मे हुआ। वक्ताओं और श्रोताओ ने अत्यन्त शालीनता से वैचारिक विरोध को भी सहा।

जो मुद्दे बहुत प्रखरता से सगोष्ठी मे उभरकर सामने आये वे थे डॉ० ज्वलतकुमार शास्त्री द्वारा कहा गया कि मनुस्मृति मे जिन श्लोको पर आपत्ति की जाती है उनमे से अधिकाश ज्यो के त्यो रामायण और महाभारत मे भी हैं पर उनपर कोई नहीं चिल्लाता केवल मनुस्मृति को ही निशाना बनाया जारहा है। वेद को छोडकर अन्य सभी ग्रन्थो में लगातार प्रक्षेप होरहे हैं और हिन्दू समाज प्रक्षेपो को बहुत ही लापरवाही से मूलग्रन्थ जैसा ही सम्मान देरहा है। डॉ० सुरेन्द्रकुमार ने स्थापित किया कि जाति व्यवस्था मनुस्मृति मे नहीं है। मनुस्मृति मे प्रक्षेपो की भरमार है जिनकी पहचान सात बातें देखकर की जाती है-१ परस्पर विरोध, २ प्रसग विरोध, ३ प्रकरण विरोध, ४ शैली विरोध, ५ अवान्तर विरोध, ६ पुनरुक्ति दोष, ७ वेद विरोध, मनुस्मृति मे २६८६ श्लोक हैं। जिसमे से १२१४ शुद्ध सिद्ध होते हैं। पुरानी टीकाओ को देखकर भी प्रक्षेप सिद्ध होता है। डॉ० कुशलदेव शास्त्री ने डॉ० आम्बेडकर और आम्बेडकरी विचारधारा का विश्लेषण किया और डॉ० आम्बेडकर पर आर्यसमाज का प्रभाव बताया। डॉ० वागीश शर्मा ने सभी के लिये समाज शिक्षा और उन्नति के अवसरो और बिना भेदभाव के किसी भी व्यवसाय के अपनाने और फिर हर क्षेत्र के लाभ और हानि को बिना चीख-पुकार के अपनाने पर जोर दिया। उन्होने वर्णो को सम्मान, सत्ता सम्पन्नता और निश्चिन्तता का देनेवाला बताया। जो व्यक्ति जिस बात को पाने चलेगा वो उसके अलावा दूसरी बात नहीं पा सकता। डॉ० भाऊ लोखडे ने हिन्दू समाज को सविधान मे सशोधनो के लिये लताडते हुए कहा कि हिन्दुओं को चाहिये कि पहले अपने धर्मग्रन्थो मे जो प्रक्षेप घुस गया है उसे निकालकर बाहर करे। प्रक्षिप्त को गलत घोषित करे। प्रक्षेपो के कारण जो हानि हुई है उसकी भरपाई करने तथा समाज व्यवस्था पुन शुद्ध करने की दिशा मे कदम उठाकर अपनी ईमानदारी बतायें। अन्य किसी भी बात से समाज मे होरहे विघटन को रोका नहीं जा सकता है। प्रो० धर्मवीर जी ने कहा कि हर मुद्दे पर सकीर्ण विचार से केवल स्वत अपने परिवार और जाति तक विचार करना बन्द कर राष्ट्रीय हितो के बारे मे भी सोचना चाहिये। जो भी बात राष्ट्र के विरोध मे जाती है उसे स्वीकार नहीं करना चाहिये। धर्मपाल जी ने मनु का विरोध न करने का अनुरोध करते हुए मनु को स्त्री तथा शूद्रो के लिये किये गये श्रेष्ठ विधान को बताया साथ ही मनु सघर्ष समिति द्वारा जयपुर हाईकोर्ट मे स्थापित मनु प्रतिमा को यथास्थान रहने देने के लिये किये गये प्रयासो की चर्चा की।

समाज के विभिन्न वर्गो में बढते द्वेष तथा अलगाव को मिटाने के उद्देश्य से आयोजित यह सगोष्ठी अन्यो के लिये प्रेरणास्रोत बने और इस प्रकार के कार्य देशभर में आयोजित हों यही वेद प्रचारिणी सभा नागपुर के सचिव श्री उमेश राठी का विचार था। एक-दूसरे के दोषो को ढूढकर परस्पर सम्बन्ध खराब करने से हमारे पास केवल दोषों का ही कबाड जमा होता है आवश्यकता है कि व्यक्तिगत और सामाजिक तौर पर दूसरो के गुणो को देखकर स्वय सुधरने का प्रयास करे तभी हम गुणों के स्वामी बनेंगे और दूसरे से प्रेम बढेगा ऐसा विचार वेद प्रचारिणी सभा नागपुर के अध्यक्ष श्री नारायणराव आर्य ने रखा।

प्रो० धर्मवीर जी ने कार्यक्रम का सचालन बहुत ही चुस्त और परिस्थिति के अनुकूल किया। बिगडती हुई स्थिति का, भटकते हुए विषय को पुन रास्ते पर लाना, जख्मो पर मरहम लगाना, श्रेष्ठ विचारो की प्रशसा, हीन विचारों की भर्त्सना सभी कार्य वे साथ-साथ करते नजर आये।

कार्यक्रम की ओडियो और वीडियो रिकार्डिंग भी की गयी है साथ ही साथ एक स्मारिका का भी प्रकाशन किया गया है जो भी व्यक्ति अथवा आर्यसमाज इन्हे प्राप्त करना चाहे उन्हे ये लागत मूल्य पर उपलब्ध करवाये जायेगे ७ ओडियो कैसेट (नब्बे मिनट) २५० रुपये, ४ वीडियो कैसेट १००० रुपये व स्मारिका ५० रुपये। डाक व्यय अलग से। वे कृपया सम्पर्क करे-

श्री उमेश राठी,
३०२, अमरज्योति पैलेस,
लोकमत चौक, वर्धा रोड,
नागपुर-४४००१२

श्रवणकुमार कर्मशाना द्वारा आर्यसमाज सिरसा के सहयोग से किया वेदप्रचार

सिरसा २५ अगस्त को नगर आर्यसमाज के निमन्त्रण पर बीकानेर ने भेजे गये श्रवणकुमार कर्मशना ने ६ घरो मे पारिवारिक सत्सग, हवन किये और ३१ अगस्त ०२ को नगर आर्यसमाज बीकानेर के प्रागण मे कृष्ण जन्मोत्सव के यज्ञ की पूर्णाहुति कर वेदप्रचार सप्ताह कार्यक्रम समापन किया। इस कार्यक्रम मे श्री शिवकुमार शास्त्री कुलपति आर्य कपिल गुरुकुल कोलायत, आनन्दमुनि जी, रामगोपाल जी भजनोपदेशक पधारे। सैंकडो स्त्री-पुरुष रोजाना वेदप्रचार का लाभ उठाते, आयोजक मुख्यरूप से प्रधान शम्भुराम यादव मन्त्री महेश सोनी, पुरोहित जसकर्ण जी ने कडी मेहनत कर कार्यक्रम को सफल किया।

१७ सितम्बर को श्रीगगानगर जिले के घडसाना मण्डी आर्यसमाज की स्थापना कीगई। प्रथम दिन चौ० हरलाल जी आर्य (नहराणा) मुख्यअतिथि रूप हवन के उपरान्त ओ३म् ध्वज फहराया। इस अवसर पर आर्य ने ११०० रुपये आर्यसमाज घडसाना को ११०० रुपये गोशाला घडसाना को दान देकर कार्यक्रम को सफल बनाया।

इस कार्यक्रम मे प्रमुख विद्वान् प० भरतलाल जी शास्त्री हासी, प० श्रवणकुमार जी कर्मशाना, भजनोपदेशक प० रामगोपालजी की भजन पार्टी ने लोगो को वेदरूपी अमृत का रसास्वादन कराया। इस कार्यक्रम को घडसाना मण्डी आर्यसमाज के लोगो ने तो दिन-रात एक कर तन-मन-धन से सफल किया। परन्तु वीर तेजा जी सस्थान ने भी अपना स्थान देकर समुचित अतिथि व विद्वान् ठहरने और वेदप्रचार के पण्डाल की सुन्दर व्यवस्था की, निश्चित रूप से धन्यवाद के पात्र हैं।

दिनाक २३-९-०२ को सिरसा जिले की कालावाली मण्डी मे वेदप्रचार शुरु हुआ, जो २६ सितम्बर तक चला जिसमे रोजाना ७००-८०० स्त्री-पुरुष भाग लेते थे। कालावाली वेदप्रचार ट्रस्ट के प्रधान अशोक जी बासल मन्त्री सूरतसिह जी पूनिया की कडी मेहनत से यह कर्म सफल हुआ। इस अवसर पर स्वामी सर्वदानन्द जी कुलपति धीरणवास गुरुकुल के आध्यात्मिक प्रवचन हुए। रात्रिकालीन बैठक आर्यजगत् के प्रसिद्ध भजनोपदेशक रामनिवास जी और उनकी भजनमण्डली ने कार्यक्रम को चार चाद लगाते हुये अनेक मतमतान्तरो का वेदविरुद्ध होने पर निर्भीक रूप खण्डन किया। अपने भजनो के माध्यम से श्रोताओं को आकर्षित किया और सिद्ध करके दिखाया वेदमार्ग ही ईश्वर प्राप्ति का एकमात्र साधन है।

३० सितम्बर को सिरसा जिले की गोशालाओ के पदाधिकारियो का गोशाला सम्मेलन हुआ। इस महासम्मेलन की अध्यक्षता श्री सन्तलाल जी शर्मा अध्यक्ष जिला गोशाला सघ सिरसा ने की।

श्री हरलाल जी आर्य ने अपने निजी कोष में से प्रत्येक गोशाला को एक-एक हजार रुपये दान किये। कुल सिरसा २५ गोशाला। फतेहाबाद की एक, हनुमानगढ की तीन एक अन्य राज० गोशाला कुल मिलाकर ३० गोशालाओ के प्रतिनिधियो को यह राशि आर्य ने दानस्वरूप दी। आर्य ने मनुष्य को जीवित रहने के लिए गाय की रक्षा को अनिवार्य बताया। इस अवसर पर चौ० प्रतापसिह जी (पूर्व विधायक), डा० उमेदसिंह आर्य, चौ० केहरसिंह जी, श्री वेदपाल रिसालिया खेड़ा, मनीराम नेठ राणा, चौ० हरिसिह ढाका गोगामेडी, रूपराम बेनीवाल, माधोसिघाना, श्री रामस्वरूप जी कागदाना, रामसिह जी अरनियावाली, गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

—बालचन्द आर्य, मन्त्री आर्यसमाज सिरसा

आर्य-संसार

वेदप्रचार का प्रभाव क्यों नहीं ?

आज आर्यसमाज के अधिकारी व सदस्यगण और विद्वान् उपदेशक प्रचारक लाखों की संख्या मे हैं और वेदप्रचार भी जगह-जगह खूब होरहा है परन्तु आश्चर्य की बात है कि प्रभाव कुछ नहीं होरहा है। अज्ञानता का अन्धकार बढता ही जारहा है। इसका एक कारण तो यह है कि आर्यसमाजो मे आचरणहीन व्यक्तियों का बहुमत होगया है। अपने आपको अपने परिवार को आर्य बनाते नहीं केवल जयघोष लगाकर रह जाते हैं। दूसरा मुख्य कारण है कि प्रचार कार्य व्यवसाय-व्यापार बन गया है। प्रचार करनेवाले और करानेवालों का दृष्टिकोण धन सग्रह करना है।

इसमे वेदप्रचार की व्यवस्था करनेवालो का दोष कम है। जो प्रचारक व उपदेशक बने हुये हैं उनका उत्तरदायित्व अधिक है। इसमे सन्यासी और वानप्रस्थी भी शामिल हैं। यदि सब विद्वान् लोभ लालच को त्यागकर "मनुर्भव" की दृष्टि से प्रचार करे तो दशा और दिशा दोनो बदल सकते हैं। पर दु ख की बात तो यह है किये स्वय लोकैषणा-वित्तैषणा-पुत्रैषणा की दल-दल में फसे हुये हैं। मैं किसी का नाम लिखकर सरनाम करना नहीं चाहता, ऐसे अनेक उपदेशक हैं जो अपनी कार में आते हैं, उनके गले मे सोने की जजीर है और दोनो हाथो की अगुलियों मे अगूठियां हैं। स्वय भौतिकता मे लिप्त हैं, मचपर ईशा वास्य इद सर्व मन्त्र की व्याख्या कर रहे हैं। यम-नियमो को समझा रहे हैं, जबकि स्वय पालन नहीं करते। बताओ, ऐसे विद्वानों का क्या प्रभाव होगा ? मैं सच्ची बात कहता हू तो लोग मुझे पागल कहते हैं।

आज किसी विद्वान् उपदेशक से बात करके देखलो, वह मोटी दक्षिणा के अतिरिक्त आने-जाने का प्रथम श्रेणी का मार्ग-व्यय पहले मागता है। पाच दिन के कार्यक्रम मे आने पर ही आते ही नहाने धोने का साबुन, तेल, सेविग ब्लेड आदि सात-आठ चीजो की माग करता है। दूसरे दिन टोर्च (बैटरी) के सैल और पेन मे रिफिल भी लाकर दो। हमारी समझ मे नहीं आता आप प्रचार करने आये हो या कोटा पूरा करने आये हो। अधिक लिखकर लेख को लम्बा करना नहीं चाहता। इनकी सेवा मे कोई कमी रह गई तो प्रचार निष्फल, यदि सेवा मनचाही करदी तो प्रधान/मन्त्री चाहे कितने ही दुर्व्यसनी हो उनकी भूरि-भूरि प्रशसा करते नहीं थकते। पूर्ण आहुति के बाद वही ढाक के तीन पात वाली कहावत सिद्ध होती है। प्रचारक वही सफल है जो स्वामी श्रद्धानन्द, प० लेखराम, प० गुरुदत्त बनकर काम करेगा। मेरी प्रार्थना है, मुझे तुमसे प्यार है पढ़कर कभी नाराज न होना। —देवराज आर्यमित्र, आर्यसमाज कृष्णनगर, दिल्ली-५१

डॉ० महावीर मीमांसक का प्रो० डी.एन. झॉ को उत्तर

वेदो के उद्भट मूर्धन्य विद्वान् डॉ० महावीर जी मीमासक दिल्ली ने दिल्ली सस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार द्वारा गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय हरद्वार (उत्तरांचल) मे आयोजित अखिल भारतीय त्रिदिवसीय सम्मेलन (अक्टूबर ६-८, २००२) मे अपना शोध लेख **"वैदिक वाड्मय में अन्तरिक्ष विज्ञान"** विषय पर सस्कृत मे प्रस्तुत किया। २० पृष्ठ का यह लेख अत्यन्त उच्चकोटि का था। जिसकी भूरि-भूरि प्रशसा सभी विद्वान् श्रोताओ ने की जो देश के सभी स्थानो से पधारे थे।

अपने शोधलेख मे डॉ० साहब ने अन्तरिक्ष की परिभाषा को वैदिक वाड्मय से प्रमाण देकर स्पष्ट किया। फिर अन्तरिक्ष विज्ञान के मूलभूत बिन्दु अन्तरिक्ष स्थानीय देवताओ की सूची सप्रमाण वैदिक निघण्टु और यास्क के निरुक्त के आधार पर प्रस्तुत की जो वेद की वास्तविक और प्रामाणिक व्याख्या के लिए कई हजार वर्ष पूर्व लिखे गए थे। इसमें प्रमुख पाच देवता वायु, वरुण, रुद्र, इन्द्र और पर्जन्य का विवरण दिया।

डॉ० साहब ने सर्वप्रथम 'देवता' शब्द की परिभाषा में बतलाया कि देवता वैदिक मन्त्रों के वर्णनीय विषय को कहते हैं, न कि किसी महान् आकारवान् व्यक्तिविशेष को, जैसा कि सायण, महिधर आदि मध्यकालीन वेदभाष्यकार उन्हीं पर आधारित पाश्चात्य विद्वान् और पाश्चात्यो की दासता करनेवाले आधुनिक भारतीय विद्वानों की सर्वथा गलत धारणा है।

इसके पश्चात् डॉ० साहब ने वायु, वरुण, रुद्र, इन्द्र और पर्जन्य इन पाच देवताओं की व्याख्या की कि पांच देवता जो वैदिक मन्त्रों के वर्णनीय विषय हैं, अन्तरिक्ष में अपना कार्य व्यवहार और विश्वमण्डल में अपने कार्यों का प्रभाव फैलानेवाली भौतिक शक्तिया हैं जो वृष्टि आदि करवाने मे कार्य करती हैं। यह कोई दैत्याकार वाले पुरुष व्यक्तिविशेष नहीं हैं, जैसी कि मिथ्या धारणा इनके सम्बन्ध मे है।

इस प्रसग मे डॉ० साहब ने दिल्ली विश्वविद्यालय के इतिहास के प्रो० डी एन झा के उन लेखो का सप्रमाण जमकर खण्डन किया जो उन्होने १७-१८ दिसम्बर २००१ के अग्रेजी के हिन्दुस्तान टाइम्स मे 'Paradox of Indian Cow' और 'Mincing no words' शीर्षक से लिखे थे। डॉ० मीमासक ने प्रो० झा के उन्हीं मन्त्रों के उद्धरणो को लिया जिसमे प्रो० झा ने लिखा था कि इन्द्र देवता को तीन सौ गायो और भैंसो आदि पशुओ का मास खानेवाला वेदो मे कहा गया है। डॉ० मीमासक ने निरुक्त के हजारो वर्ष पुराने प्रमाण के आधार पर वैदिक मत्रो की व्याख्या के आधार पर स्पष्ट किया कि इन्द्र वह भौतिक शक्ति है जो अन्तरिक्ष मे मेघ को फाडकर पानी के रूप मे बदलकर भूमि पर वृष्टि के रूप मे गिराती है। '**वृष**' का अर्थ मेघ है न कि राक्षस, वैदिक '**वृषभ**' शब्द का अर्थ बादल है न कि बैल या भैंसा, '**महिष**' शब्द का अर्थ महान् है जो मेघ का विशेषण है न कि भैंसा और 'उक्षा' शब्द भी महान् आकारवाले बादल का विशेषण है न कि बैल अर्थ है। सौ और तीन सौ शब्द भी आकाश मे इन भौतिक शक्तियो द्वारा मेघ रचना मे लगनेवाले समय के लिए हैं न कि पशुओ की सख्याके लिए। डॉ० मीमासक जी ने डॉ० सन्ध्या जैन के भी लेख का खण्डन उन्हे वेदार्थ के ज्ञान से शून्य कहते हुये किया। जिसमे उन्होने **वृषभ महिष** और **उक्षा** शब्दो की व्याख्या पशु विशेष देकर की थी। आकाश मे होनेवाली इन्हीं प्राकृत घटनाओ को वेद मे इन्द्र देवता द्वारा विशालकाय मेघ को खाने, पकाने या मारने के रूप मे वर्णित किया गया है, जिसका वास्तविक अर्थ बादल को बरसाना है।

इस सम्बन्ध मे डॉ० मीमासक जी के हिन्दी और अग्रेजी के दैनिक समाचार पत्रो मे लेख शीघ्र ही पढने को मिलेंगे। **—अरुणप्रकाश वर्मा, मत्री**
आर्यसमाज हनुमानगढ रोड, नई दिल्ली-११०००१

पं० रामकुमार आर्य भजनोपदेशक की भजनमण्डली द्वारा वैदिक प्रचार

ग्राम नारा जिला पानीपत मे प्रधान लालचन्द जी आर्य के चौक मे वैदिकप्रचार लोगो ने शान्तिपूर्वक सुना। लालचन्द जी के सहयोग से प्रचार सफल रहा।

ग्राम आसन खुर्द में श्री सजयकुमार जी आर्य सुपुत्र श्री मागेराम जी आर्य ने बडी श्रद्धा से मुनादी करवाके प्रचार ही अपने ही आगन मे सुन्दर व्यवस्था की। स्त्री-पुरुषो ने ग्राम आसन मे जल्दी-जल्दी प्रचार करवाने की माग की।

ग्राम बापोली (पानीपत) मे डाक्टर धर्मवीर जी शर्मा ने बाजार मे अपनी दुकान के सामने चौक मे लोगो के बैठने की अच्छी प्रकार से व्यवस्था की। अनेक विषयो पर प्रकाश डाला गया। नारीशिक्षा, दहेजप्रथा, पाखण्ड, अन्धविश्वास तथा आपसी भाईचारे, मेल-जोल बारे प्रचार का अच्छा प्रभाव रहा।

ग्राम गोलाकला जिला पानीपत मे श्री यशपाल जी आर्य सुपुत्र श्री बुद्धराम जी आर्य ने बडी चौपाल मे वैदिकप्रचार व्यवस्था की। लोग प्रचार से काफी प्रभावित हुये।

ग्राम गोलाखुर्द मे श्री सोमपाल जी आर्य ने अपने ही आगन मे प्रचार करवाया। इन्हीं के सहयोग से प्रचार सफल हुआ।

ग्राम वैसर जिला पानीपत मे डॉ० रामकिशन जी शर्मा के सहयोग से प्रचार सम्पन्न हुआ।

आर्यसमाज सालवन का वार्षिक उत्सव सम्पन्न। स्वामी परमानन्द जी योगतीर्थ ने सफीदो रोड ठाकुर पटम्बर जी आर्य के निवास स्थान सालवन मे श्वास, दमे के रोगियो को औषधियुक्त खीर खिलाने हेतु वैदिक प्रचार का आयोजन भी किया। श्री सुमेरसिंह जी आर्य व रामनिवास जी के भी मधुर भजन हुये। पं० रामकुमार के सहायक सरदारासिह जी व बलवीरसिह वीर वीरागनाओं की गाथा व इतिहास से लोग प्रभावित किये। रोगियो को सुखद जीवन जीने के लिये सभी बुराइयों से छुटकारा पाने की प्रेरणा दीगई। दूर-दूर से आये रोगियो ने अपने-अपने ग्रामो मे भी प्रचार करवाने की माग की।

गोली जिला करनाल-श्रद्धेय वैद्य मगलदेव जी की जन्मस्थली मे वैदिक प्रचार चल रहा है। महिलाए भी बडी रुचि से वैदिक प्रचार सुनती हैं। स्त्री-पुरुष व बच्चे बडे प्रभावित होकर जयकारे बोलते हैं। अपना विशेष आर्थिक सहयोग भी देरहे हैं।

ब्रह्मवर्चस् की प्राप्ति के लिए आवश्यक है सात्विक तप

नई दिल्ली। आर्यसमाज, बी-ब्लाक, जनकपुरी मे प्रवचन करते हुए वैदिकविद्वान् आचार्य हरिप्रसाद जी आर्य ने कहा कि वह ईश्वर वर्चस्वी है और हम उससे प्रार्थना करते हैं कि वह हमे भी वर्चस्वी बनाए। यदि हम ब्रह्मवर्चस् को प्राप्त करना चाहते हैं, ब्रह्म का साक्षात्कार करना चाहते हैं तो हमे उसकी कीमत चुकानी पडेगी, क्योकि किसी भी वस्तु को प्राप्त करने के लिए उसकी कीमत चुकाना आवश्यक है और जो वस्तु जितनी बडी अथवा महत्त्वपूर्ण होगी, उसका मूल्य भी उतना ही अधिक होगा। हम परमात्मा को पाना चाहते हैं, जो श्रेष्ठतम, परमपवित्र और सर्वोत्तम है, पर उसकी प्राप्ति के लिए कोई तैयारी नहीं करते। हम देखते हैं कि आज ईश्वर को सस्ते दामो पर बेचा जारहा है, पर वह इतनी आसानी से मिलनेवाला नहीं। उसे पाने के लिए यज्ञ, अध्ययन, दान, तप, सत्य, धृति और क्षमा की सीढियो को पार करना होगा। यज्ञ, अध्ययन और दान दिखावे के लिए भी किये जा सकते हैं, किन्तु सात्विक तप, जो अत्यधिक श्रद्धा के साथ किया जाता है, आडम्बररहित होता है। ब्रह्मवर्चस एव परमात्मा की प्राप्ति-हेतु सात्विक तप की परम आवश्यकता है। द्वन्द्वो को सहन करना ही तप है। मन, वाणी और शरीर से परम श्रद्धा के साथ किया जानेवाला तप सात्विक है एव अध्यात्ममार्ग के पथिक के लिए यह नितान्त आवश्यक है। प्रधान-पद से बोलते हुए प्रो० (डॉ०) सुन्दरलाल कथूरिया ने कहा कि शास्त्रकारो ने सत्य को सबसे बडा तप कहा है तथा ब्रह्मचर्य एवं तप से मृत्यु पर विजय प्राप्त करने की बात भी कही है। विद्वान्वक्ता का धन्यवाद करते हुए उन्होने यह कामना की कि हम सब तपस्वी बने। कार्यक्रम के प्रारम्भ में श्रीमती उज्ज्वला वर्मा के सुमधुर भजन ने श्रोताओ का मन मोह लिया। कार्यक्रम का सयोजन आर्यसमाजके मन्त्री श्री जगदीशचन्द्र गुलाटी ने किया।

—योगेश्वर चन्द्रार्य, प्रचारमंत्री

दयानन्दमठ श्रद्धानन्दनगर का चौथा वार्षिक उत्सव

समारोह स्थान-दयानन्दमठ श्रद्धानन्दनगर (भतुहवा) पो० डमरापुर, वया-डी० के शिकारपुर, जिला पश्चिमी चम्पारण (बिहार)

कार्यक्रम-२० नवम्बर २००२ (बुधवार)-सामवेदीय यज्ञ प्रात· ८ बजे से १० बजे तक साय ४ बजे से ६ बजे तक, सत्सग एव प्रवचन-मध्याह्न १२ बजे से ३ बजे तक, रात्रि ७ बजे से ११ बजे तक। २१ नवम्बर २००२ (वृहस्पतिवार) सामवेदीय यज्ञ प्रात ८ बजेसे १० बजे तक साय ४ बजे से ६ बजे तक, विशेष समारोह मध्याह्न १२ बजे से दोपहर ३ बजे।

समारोह की अध्यक्षता माननीय श्री दिलीप वर्मा जी, मुख्यअतिथि माननीय सासद श्री महेन्द्र बैठा जी (भारत सरकार), विशिष्ट अतिथि-श्री महत प्रसाद जी उपप्रधान आर्यप्रतिनिधिसभा बिहार, श्री पन्नालाल आर्य प्रधान आर्यसमाज मुजफ्फरपुर, प्रखण्ड प्रमुख श्री रमेश यादव जी प्रखण्ड पचायत समिति (मैनाटाड)।

निवेदक : प्रधान स्वामी सदानन्द सरस्वती

विवाह संस्कार एवं फैशन शो के विरुद्ध रोष प्रदर्शन

१ श्री महेन्द्रसिह का विवाह सस्कार पूर्ण वैदिकरीति से कुमारी रविन्द्र कौर के साथ आर्यसमाज मन्दिर में सम्पन्न हुआ। वधू पक्ष ने २१०० रुपये आर्यसमाज मन्दिर को दान दिया।

२ २६ अक्तूबर ०२ शनिवार स्थानीय मधु पैलेस सिनेमाघर मे महिला डी ए वी कॉलेज ने फैशन शो का आयोजन किया जिसमे अर्द्ध नगी कुमारी लडकियो ने अग प्रदर्शन किया। जिसके कारण स्थानीय आर्यसमाजियो मे काफी रोष हुआ और सैंकडो आर्यसमाजियो ने सिनेमाघर के आगे जाकर इस फैशन शो के विरुद्ध नारे लगाये और कहा कि यह कार्य ऋषि दयानन्द के सिद्धान्त के विरुद्ध है एव सम्पूर्ण नारीजाति का अपमान है। सभी आर्यो ने उक्त स्थल पर गायत्री मत्र का जाप और यज्ञ किया। पुलिस उन्हे थाने लेगई और रात्रि ८ बजे सभी लोगो को छोड दिया।

यह याद रहे कि उक्त **महिला कॉलेज की प्रिंसिपल आर्यसमाज के विरुद्ध कार्य करती है।** कुछ दिन पहले कॉलेज मे साईबाबा का प्रचार करवाया। सारे नगर मे इस बात की चर्चा है।

—कृष्णचन्द्र आर्य, आर्यसमाज, प्रधान आर्यसमाज रेलवेरोड, यमुनानगर

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ०१२६२–७६८७४, ७७८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक-१२४००१ (दूरभाष : ०१२६२–७७७२२) से प्रकाशित।
पत्र में प्रकाशित लेख सामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक वेदव्रत शास्त्री का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा।